القرآن الكريم
पवित्र क़ुरआन का
सरल अनुवाद
संक्षिप्त व्याख्याओं सहित
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी
सत्यमार्ग प्रकाशन
लखनऊ

पवित्र क़ुरआन का

सरल अनुवाद

संक्षिप्त व्याख्याओं सहित

पवित्र कुरआन

सरल अनुवाद

संक्षिप्त व्याख्याओं सहित

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

हिन्दी अनुवाद

सैय्यद मु० जुबैर अहमद नदवी

प्रकाशक

सत्यमार्ग प्रकाशन

लखनऊ

तीसरा संस्करण

जनवरी – 2018

Rs.500.00

प्रकाशक

सत्यमार्ग प्रकाशन

लखनऊ

अनुवाद में प्रयुक्त हुए कुछ शब्दों की व्याख्या

1. **अल्लाह** – अकेली वह ज़ात जो हर प्रकार से उपासना की अधिकारी है। अल्लाह व्यक्तिवाचक संज्ञा है।

2. **अहले किताब** – जिन समुदायों में उनके नबी पर आसमान से किताब उतारी गयी और उसका वर्णन विद्यमान है उन्हें अहले किताब कहते हैं, जैसे यहूदी और ईसाई इत्यादि।

3. **अज़ाब** – वास्तव में अत्यधिक पीड़ा को कहते हैं और साधारणतयः मरने के बाद जो अत्यधिक पीड़ा बुराइयों के परिणामस्वरूप मनुष्य को दी जाएगी उसे अज़ाब कहते हैं।

4. **आयत** – अल्लाह की निशानी। अल्लाह की वह्य भी चूंकि अल्लाह की निशानियों में से है इसलिए कुरआन मजीद के प्रत्येक वाक्य को भी आयत कहते हैं।

5. **ईमान** – अल्लाह को उसी प्रकार मानना जिस प्रकार मानने का उसने आदेश दिया है। जिसकी व्याख्या उसने नबियों द्वारा की है।

6. **उम्मत** – लोगों के समूह को कहते हैं। साधारणतयः जब किसी नबी को किसी समुदाय में भेजा जाता तो वह समुदाय उस नबी की उम्मत कहलाती है और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) चूंकि समस्त मनुष्यों के लिए भेजे गए हैं इसलिए सारी दुनिया के लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की उम्मत हैं।

7. **आख़िरत** – मरने के बाद की ज़िन्दगी।

8. **उम्मी** – जो बिल्कुल वैसे ही हो जैसे मां के पेट से पैदा हुआ। उसने शिक्षा इत्यादि कुछ न ग्रहण की हो उसको उम्मी कहते हैं। अल्लाह के आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने चूंकि किसी से ज्ञान प्राप्त नहीं किया था इसलिए आपको उम्मी कहते हैं। आपको अल्लाह ने अपने पास से ज्ञान दिया था और उसे आपके दिल पर उतारा था।

9. **एहराम** – वे दो चादरें जो हज या उमरे की नियत करने वाला अपने शरीर पर लपेटता है।

10. **क़्यामत** – संसार एवं सम्पूर्ण सृष्टि का विनष्ट होकर एक मैदान में समस्त प्राणियों समेत हिसाब–किताब हेतु एकत्र होना।

11. **कलिमा** – एक वाक्य।

12. **काफ़िर** – वह व्यक्ति जो अल्लाह का इनकार करे।

13. **क़िब्ला** – वह स्थान जिसकी ओर मुख करके नमाज़ पढ़ी जाए, यानि काबा।

14. **ग़ैब** – जिन बातों का ज्ञान इन्द्रियों (Six Sense) द्वारा प्राप्त न हो सके उसे ग़ैब कहते हैं।

15. जिहाद – हर प्रकार का वह प्रयास जो अत्याचार को मिटाने हेतु किया जाए उसे जिहाद कहते हैं।

16. ज़कात – माल की विशेष मात्रा पर साल बीतने के बाद जो २.५ प्रतिशत माल ग़रीबों को देना अनिवार्य है उसे ज़कात कहते हैं।

17. जन्नत – मरणोपरान्त अच्छे लोगों को रहने के लिए जो सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा उसे जन्नत कहते हैं।

18. तौबा – अपने पापों पर लज्जित होकर अल्लाह से क्षमा याचना करना।

19. तक़्वा – हर कार्य में अल्लाह का ध्यान रखना और उसके आदेशों का पालन करना।

20. दीन – ईश्वर के आदेशानुसार जीवन यापन करने की विशेष शैली।

21. दोज़ख़ – मरणोपरान्त बुरे लोगो को रहने के लिए जो सर्वाधिक बुरा स्थान प्राप्त होगा उसे दोज़ख़ कहते हैं।

22. नुबूवत – जब अल्लाह दुनिया में किसी व्यक्ति को सत्यमार्ग बताने के लिए चुन लेता है और अपने फ़रिश्ते को उसके पास भेजने लगता है और उसके पास अल्लाह की तरफ़ से वह्य आने लगती है तो यह चीज़ नुबूवत कहलाती है और वह व्यक्ति नबी कहलाता है।

23. फ़िद्या – जो माल किसी मुसीबत से छुटकारा पाने हेतु दिया जाए।

24. फ़रिश्ते – अल्लाह के वे विशेष प्राणी जो न जिन्नात हैं, न इंसान हैं, न खाते हैं, न पीते हैं, उनको सिर्फ़ अल्लाह की उपासना हेतु पैदा किया गया है।

25. बैत–ए–मामूर – काबा शरीफ़ के ऊपर आसमानों में वह विशेष स्थान जहां फ़रिश्तों की बहुत बड़ी संख्या हर क्षण अल्लाह की उपासना एवं प्रशंसा करती रहती है।

26. बरकत – किसी भी बाह्य उपाय करने के बाद उससे जिस परिणाम की आशा हो उससे अधिक प्राप्त होने को बरकत कहते हैं।

27. बनी इस्राईल – इस्राईल हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम का उपनाम था उनकी संतान को बनी इस्राईल कहते हैं।

28. मुनाफ़िक़ – वह व्यक्ति जिसके हृदय में कुछ और हो और वह प्रकट कुछ और करता हो अर्थात हृदय से अल्लाह का इनकार करने वाला और उसके साथ शिर्क करने वाला हो परन्तु किसी प्रकार के लाभ हेतु स्वयं को मुसलमान प्रकट करता हो।

29. मोजिज़ा – अल्लाह के आदेश से नबी की ओर से प्रकृति के विपरीत घटित होने वाली घटना को मोअजिज़ा कहते हैं।

30. माल–ए–ग़नीमत – धर्म युद्ध के उपरान्त जो माल दुश्मन से प्राप्त हो।

31. रुहुल–अमीन / रुहुल–कुद्स – यह हज़रत जिब्रईल का उपनाम है, जो फ़रिश्तों के सरदार हैं और नबियों के पास अल्लाह की वह्य लेकर आते थे।

32. लौह–ए–महफूज़ – वह विशेष पुस्तक जिसका ज्ञान केवल अल्लाह को है और उसमें हर चीज़ का ज्ञान मौजूद है।

33. वसीयत – मनुष्य मरने से पहले जो आदेश दे।

34. वह्य – अल्लाह जो बात अपने संदेष्टा के दिल में डालता है अधिकांश फ़रिश्तों के द्वारा और कभी प्रत्यक्ष रूप से, उसे वह्य कहते हैं।

35. शरीअ़त – अल्लाह की तरफ़ से जीवन यापन हेतु आदेश दिये गए हैं और नबी ने उसकी व्याख्या की है उसको शरीअत कहते हैं।

36. शिर्क – हर प्रकार की उपासना अल्लाह के लिए विशेष है इसमें किसी प्रकार से किसी को साझीदार समझना या बनाना शिर्क कहलाता है।

37. शैतान – जिन्नात से मिलता–जुलता वह प्राणी जिसका काम ही लोगों को बहकाना और सत्यमार्ग से हटाना है।

38. सज्दा – माथे को अत्यधिक विनम्रता के साथ धरती पर टेकना।

39. सदक़ा – जो माल अल्लाह के रास्ते में ग़रीब को दिया जाए।

40. हिजरत – सत्य मार्ग पर चलने के लिए यदि अपना आवासीय स्थान छोड़कर दूसरे स्थान चले जाने को हिजरत कहते हैं।

41. हिदायत – नबियों के बताए हुए सत्य मार्ग पर चलना।

42. हलाल – वैध, जिसका करना सही हो।

43. हराम – अवैध, जिसका करना सही न हो।

44. हज – ख़ास दिनों में अल्लाह के घर काबा की परिक्रमा करना और दूसरे कुछ उन कामों के लिए निकलना जो मक्का में ही किये जाते हैं। यह इस्लाम में उसके लिए अनिवार्य है जो (इसकी) क्षमता रखता हो।

45. हश्र – क़यामत (प्रलय) के दिन समस्त प्राणियों का एकत्रित किया जाना।

﴿فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ﴾

(तो जब भी आप कुरआन पढ़ें
तो शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह चाहें)

सूरह फ़ातिहा

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है। (1) असल प्रशंसा (तारीफ़) अल्लाह के लिए है जो सारे संसारों का पालनहार है (2) बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है (3) बदले के दिन का मालिक है[1] (4) (ऐ अल्लाह) हम तेरी ही बंदगी करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं[2] (5) हमें सीधा रास्ता ले चल[3] (6) उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इनआ़म किया[4] न कि उन लोगों का जिन पर प्रकोप हुआ और न रास्ता भटक जाने वालों का[5] (7)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम– शक्ति का एक भण्डार है और अल्लाह की रहमत को आकर्षित करने का बड़ा साधन है, जो काम इसके साथ शुरु किया जाता है वह बरकत व कुबूलियत (स्वीकार्यता) के साथ पूरा होता है, यह पवित्र क़ुरआन की स्थायी आयत है, हर सूरह (अध्याय) के आरम्भ के लिए और दो सूरतों के बीच अन्तर करने के लिए उतरी है।

सूरह फ़ातिहा– "फ़ातिहा" इस सूरह को इस लिए कहते हैं कि यह पूरे पवित्र क़ुरआन की भूमिका है, इसका दूसरा नाम "उम्मुल क़ुरआन" भी है और इसको शाफ़िया, वाफ़िया और काफ़िया भी कहते हैं। इसलिए कि इसको पढ़ने से रोगों से मुक्ति (शिफ़ा) प्राप्त होती है और यह व्यापक और सम्पूर्ण भी है।

(1) अपने अधिकार द्वारा प्राप्त किये गए गुणों पर जो प्रशंसा की जाती है वह अरबी भाषा में "हम्द" कहलाती है और अधिकार सब अल्लाह ही का है। जिस किसी को भी कोई भी विशेषता प्राप्त होती है वह उसी के देने से प्राप्त होती है। तो इस प्रकार "हम्द" (प्रशंसा) का वास्तविक पात्र केवल अल्लाह ही है। "रब" उसे कहते हैं जो हर आवश्यकता को पूरा करने वाला हो, रहमान व रहीम अल्लाह के नाम हैं, रहमान में रहम (कृपा) की मात्रा के आम होने की ओर इशारा है और रहीम शब्द के द्वारा यह बताया गया है कि उसके रह्म (कृपा) की दशा अत्याधिक है। बदले के दिन का अर्थ क़यामत का दिन है, जब हर एक को उसके कर्मों का बदला दिया जाएगा। अल्लाह केवल उसका शासक ही नहीं बल्कि उसका मालिक भी है (2) ऊपर की तीन आयतों में अल्लाह की इस प्रकार से प्रशंसा (हम्द व सना) की गई है कि उनकी तिलावत (पाठ) करने वालों को एक विशेष दशा (हाल) प्राप्त हो जाती है मानो वे अल्लाह के सामने हाज़िर हैं, इसीलिए अब अल्लाह को सीधे तौर पर संबोधित किया जा रहा है कि उपासना योग्य केवल तू ही है और सहायता करने योग्य केवल तू ही है, इससे शिर्क (बहुदेववाद) की सारी जड़ें कट कर रह जाती हैं (3) यह पूरी आयत एक ही वाक्य है "इय्या क नअ़्बुदु" (हम तो तेरी ही इबादत करते हैं) में दावे का रूप था "इय्या क नस्तईन" (और तुझ ही से मदद चाहते हैं) बढ़ा देने से उसका खण्डन हो गया कि इबादत तो हम करते हैं मगर यह इबादत भी मात्र तेरी ही मदद और तौफ़ीक़ के कारण है, वरना अपने किये से क्या हो सकता था। "सिराते मुस्तक़ीम" वह सीधा रास्ता है जो उसने अपने नबियों के द्वारा अपने बन्दों को बताया है जिसका सबसे मुकम्मल और आख़िरी रूप अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बता चुके। "इहदिना" का अर्थ केवल रास्ता बताना नहीं बल्कि मंजिल तक पहुंचाना है, यह दुनिया जिसमें क़दम–क़दम पर फिसल जाने का ख़तरा है इसमें हर समय अल्लाह की हिदायत की ज़रूरत है (4) इसमें इसको स्पष्ट कर दिया गया कि यह कोई नया रास्ता नहीं बल्कि इस पर पूरी तरह से चलने वालों के नमूने मौजूद हैं और वे हैं पैग़म्बर, सिद्दीक़ीन (सच्चे), शहीद और नेक लोग (सालिहीन) जैसा कि दूसरी आयत में इसको स्पष्ट किया गया है "व मंय्युतिइल्ला ह वर्रसू ल फ़उलाइ क म अल्लज़ी न अनअमल्लाहु अलैहिम मिनननबिय्यी न वस्सिद्दीक़ी न वश्शुहदाइ वस्सालिहीन" (और जिसने अल्लाह और रसूल की बात मानी तो वे ही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने इनआ़म किया यानी पैग़म्बर व सिद्दीक़ीन, शहीद और सालिहीन यानी नेक लोग) इसमें यह भी इशारा कर दिया गया कि यह इनआम केवल अल्लाह के करम से ही मिला करता है (5) सही हदीस में है कि "मग़ज़ूबि अलैहिम" (जिन पर प्रकोप हुआ) का अभिप्राय "यहूदी" हैं जिन्होंने अल्लाह की शान में गुस्ताखियाँ (अशिष्टताएं) कीं, नबियों को क़त्ल किया और धरती पर बिगाड़ फैलाने में लगे रहे और ज़ाल्लीन (रास्ता भटक जाने वाले) से ईसाई मुराद हैं, पथभ्रष्टता की कोई शक्ल नहीं बची जिसके वे शिकार न हुए हों जिसमें सबसे बड़ी पथभ्रष्टता हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को खुदा का बेटा क़रार देना है, यह दोनों कौमें इसका विशेष मिसदाक (चरितार्थ) हैं और जो भी इनके रास्ते पर चले वह भी इसी में शामिल है।

सूरह बक़रह

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अलिफ़ लाम मीम[1] (1) यह वह किताब[2] है जिसमें कोई संदेह नहीं, राह बताती है लिहाज़ रखने (डरने) वालों को[3] (2) जो ग़ैब को मानते हैं[4] और नमाज़ क़ायम रखते हैं[5] और हमने उनको जो कुछ रोज़ी दी है उसमें से ख़र्च करते हैं[6] (3) और जो ईमान रखते हैं उस पर जो आप पर उतारा गया और उस पर (भी) जो आप से पहले उतारा जा चुका[7] और आख़िरत पर यही (लोग) विश्वास रखते हैं[8] (4)

सूरह बक़रहः– यह पवित्र क़ुरआन की सब से लम्बी सूरह है, इस्लाम की महत्वपूर्ण शिक्षाएं चाहे अक़ाएद (आस्था) से संबंधित हों या आमाल (कर्मों) से लगभग सभी इसमें आ गई हैं। हदीसों में इस सूरह की बड़ी फ़ज़ीलतें (महत्व) बयान हुई हैं, मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में है कि जिस घर में सूरह बक़रह पढ़ी जाती हो शैतान उस घर से भागता है। (1) यह "हुरूफे मक़त्तआत" (विभक्त अक्षर) कहलाते हैं इनका राज़ अल्लाह ही को मालूम है, पढ़ने वालों और सुनने वालों का ध्यान आकर्षित करने का एक साधन भी है और अरबवासियों में इसका चलन भी रहा है। (2) पवित्र क़ुरआन की ओर संकेत है कि अस्ल किताब कहलाने की योग्य वही है, जब अल्लाह का कलाम है और उसका ठीक–ठीक उतारा हुआ है तो फिर संदेह की संभावना ही समाप्त हो गई। (3) आदेश पत्र (हिदायत नामा) है यह तमाम लोगों के लिए है और इसमें सारे संसार को संबोधित किया गया है इसलिए दूसरे स्थान पर "हुदल्लिन्नास" (सारे लोगों के लिए हिदायत) बताया गया, लेकिन चूंकि इससे फ़ायदा वही लोग उठाते हैं जो अल्लाह का डर रखते हैं इसीलिए यहाँ "हुदल्लिलमुत्तक़ीन" कहा गया (4) ग़ैब का अर्थ बिन देखी चीज़ के हैं, इससे आशय हर वह छिपी चीज़ है जो आदमी अपनी बुद्धि से न पा सके, पैगम्बर ने उसके बारे में बताया हो, उसको मानना ईमान के लिए ज़रूरी है, जैसे ख़ुद अल्लाह तआला, उसकी सिफ़ात (गुण), जन्नत, दोज़ख़, फरिश्ते, हश्र व नश्र आदि। (5) अर्थात उसका हक़ अदा करने के लिए प्रयासरत रहते हैं यानी पाकी का ध्यान, जमाअत की चिंता, ख़ुशू (विनम्रता) पैदा करने की कोशिश और उसकी सुन्नतों व आदाब का ख़्याल। (6) रिज़्क अरबी भाषा में अल्लाह की हर दी हुई नेमत को कहते हैं, तक़वा वालों का गुण यह है कि वे किसी चीज़ में कंजूसी नहीं करते और ज़ाहिर है जब सब कुछ अल्लाह ही का दिया हुआ है तो कंजूसी का प्रश्न ही कैसा? (7) यहूदियों और ईसाइयों की तरह वे भेद नहीं करते बल्कि अल्लाह की उतारी हुई हर किताब पर ईमान रखते हैं कि वे अल्लाह की ओर से उतरी थीं हाँ! जिन पर वे उतरीं वे उनको सुरक्षित न रख सके और पवित्र क़ुरआन पर विशेष रूप से ईमान रखते हैं कि उसका एक–एक अक्षर अल्लाह की ओर से है पूरी तरह से सुरक्षित है और वह अंतिम किताब है जिस पर ईमान और अमल (कर्म) हर इंसान पर ज़रूरी है, आयत में यह इशारा भी है कि वह्य का सिलसिला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ख़त्म हो गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई ऐसा व्यक्ति पैदा न होगा जिस पर वह्य आने वाली हो, इसलिए कि अल्लाह तआला ने केवल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरने वाली वह्य और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले आने वाले नबियों पर उतरने वाली वह्य का उल्लेख किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद किसी की वह्य का उल्लेख नहीं किया, अगर आपके बाद भी किसी पर वह्य आती तो उसका भी उल्लेख होता। (8) आख़िरत के अक़ीदे को विशेष रूप से बयान किया जा रहा है जो इस्लाम के तीन मूल–भूत अकीदों में से एक है और "यूक़िनून" कह कर स्पष्ट कर दिया कि वे केवल ऊपर से नहीं बल्कि दिल के यक़ीन के साथ मानते हैं। दूसरों का दावा तो है मगर न वे इसकी हक़ीक़त को जानते हैं और न इस पर पूरा विश्वास रखते हैं और आख़िरत का मतलब वह जीवन है जो मरने के बाद प्राप्त होगा और हमेशा के लिए होगा और उसमें हर बंदे को दुनिया में किये हुए कर्मों का हिसाब देना होगा और कर्मों के आधार पर उसके जन्नत या दोज़ख़ में जाने का फैसला होगा। (ग़ैब) बिन देखी चीज़ों पर ईमान में यद्यपि आख़िरत भी शामिल है किन्तु अलग से इसका उल्लेख इसके विशेष महत्व के कारण किया गया है कि आख़िरत का विश्वास ही इन्सान को सही रास्ते पर रखता है और पापों से बचना इसलिए किसी हद तक आसान हो जाता है।

वही लोग अपने रब की तरफ़ से सही रास्ते पर हैं और वही लोग सफलता प्राप्त करने वाले हैं[1] (5) निश्चित ही वे लोग जिन्होंने (इन बातों को स्वीकार करने से) इनकार ही तय कर लिया है उनके लिए बराबर है आप उनको डराएं या न डराएं वे न मानेंगे (6) अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर मोहर लगा दी है, और उनकी आँखों पर परदा है[2] और उनके लिए बड़ा अज़ाब (यातना) है (7) और लोगों में कुछ वे भी हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान ले आएं हैं जबकि वे ईमान वाले नहीं हैं[3] (8) वे अल्लाह को और ईमान वालों को धोखा देना चाहते हैं[4] और (वास्तव में) वे अपने आपको धोखा देते हैं और इसका एहसास भी नहीं रखते[5] (9) उनके दिलों में रोग है तो अल्लाह ने उनके रोग को और बढ़ा दिया[6] और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है इस कारण से कि वे झूठ कहते हैं(10) और जब उनसे कहा जाता है कि ज़मीन में बिगाड़ मत करो तो वे कहते हैं कि हम तो सुधार करने वाले हैं(11) याद रखो यही हैं जो बिगाड़ करने वाले हैं लेकिन इनको एहसास भी नहीं है[7] (12) और जब उनसे कहा जाता है कि जैसे और लोग ईमान लाए हैं तुम भी ईमान ले आओ, वे कहते हैं कि क्या हम भी वैसे ही ईमान ले आएं जैसे मूर्ख लोग ईमान लाए हैं, सुन लो मूर्ख तो यही हैं लेकिन जानते नहीं[8] (13) और जब वे ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए और जब अपने शैतानों के साथ अकेले में होते हैं तो कहते हैं कि हम तो तुम्हारे ही साथ हैं (उन ईमान वालों) से तो हम मजाक़ करते हैं[9] (14) अल्लाह उनकी हंसी उड़ाता है और उनकी उदण्डता (सरकशी) में उनको ढील देता जाता है (जिसमें) वे हाथ पैर मारते रहते हैं[10] (15)

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝٥
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ۝٦ خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ ۖ وَعَلَىٰ
أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝٧ وَمِنَ النَّاسِ
مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُم بِمُؤْمِنِينَ ۝٨
يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ
وَمَا يَشْعُرُونَ ۝٩ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۖ
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۝١٠ وَإِذَا قِيلَ
لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ۝١١
أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَٰكِن لَّا يَشْعُرُونَ ۝١٢ وَإِذَا
قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ
السُّفَهَاءُ ۗ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَٰكِن لَّا يَعْلَمُونَ ۝١٣
وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ
شَيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِئُونَ ۝١٤
اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝١٥

ع – وقف لازم

منزل ١

(1) मानो जो दुआ सूरह फातिहा में की गई यह उसकी कुबूलियत (स्वीकार्यता) है, बता दिया गया कि जो उपरोक्त गुणों को अपनाएगा वह हिदायत (सीधी राह) पर होगा और वही हर प्रकार से सफल है (2) विशेष रूप से मदीने के यहूदी मुराद हैं जिन्होंने जानते–बूझते केवल हठधर्मी से इनकार किया और नहीं माने तो ऐसों के बारे में अल्लाह का यही निर्णय होता है कि वे उसी पथभ्रष्टता में रहें, फिर कोई बात उन पर असर करती ही नहीं, यह आयत बताती है कि जिद और हठधर्मी बड़ी ख़तरनाक चीज़ है जो व्यक्ति अड़ जाए कि किसी हाल में बात नहीं माननी है तो उसका अंजाम यह होता है कि अल्लाह की ओर से उसके दिल पर मोहर लग जाती है (3) यह मुनाफ़िकों (कपटाचारियों) का ज़िक्र है जो बाह्य लाभ के लिए ज़बान से इस्लाम का प्रदर्शन करते थे और भीतर से काफ़िर थे (4) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को और उनके सहाबा को धोखा देना अल्लाह ही को धोखा देना है। (5) इससे बड़ा धोखा क्या होगा कि आख़िरत की तबाही उठा रहे हैं और समझते भी नहीं (6) कुफ़्र और निफ़ाक (इनकार व कपट) का जो रोग था इस्लाम के उदय और उन्नति से उनका यह रोग और बढ़ गया (7) जो धर्म दुनिया में सुधार के लिए आया उसको कमज़ोर करना और उसको मिटाने के लिए षड़यंत्र करना, इससे बढ़ कर फसाद क्या होगा (8) "सफ़ीह" उसे कहते हैं जो अच्छे–बुरे में अंतर न कर सके, ज़ाहिर है कि उससे बड़ा मूर्ख कौन होगा जो दुनिया के नश्वर (फ़ानी) लाभ और आख़िरत के हमेशा रहने वाले फायदे में अंतर न कर सके (9) दिखाने के लिए और केवल दुनिया का लाभ उठाने के लिए ईमान वालों से कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं फिर जब अपने सरदारों से मिलते हैं तो वफ़ादारी का दम भरते हैं, "अपने शैतानों" से तात्पर्य उन सरदारों से है जो उन मुनाफ़िक़ों की साज़िशों में उनके लीडर की हैसियत रखते थे (10) फिर दुनिया में उनको होश नहीं रहता और उनकी गुमराही बढ़ती जाती है।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَت تِّجَارَتُهُمْ
وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٦﴾ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا
فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي
ظُلُمَاتٍ لَّا يُبْصِرُونَ ﴿١٧﴾ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿١٨﴾ أَوْ
كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمَاتٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ يَجْعَلُونَ
أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِم مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۚ وَاللَّهُ مُحِيطٌ
بِالْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ أَبْصَارَهُمْ ۖ كُلَّمَا أَضَاءَ لَهُم
مَّشَوْا فِيهِ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ
بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾ يَا أَيُّهَا
النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٢١﴾ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً
وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ
فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٢﴾ وَإِن كُنتُمْ فِي رَيْبٍ
مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّن مِّثْلِهِ وَادْعُوا
شُهَدَاءَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٣﴾

منزل ١

यही वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली है, तो न ही उनकी सौदागरी फायदे में रही और न ही उनको सही रास्ता मिल सका[1] (16) उनकी मिसाल उस व्यक्ति की सी है जिसने आग सुलगाई फिर जब उस (आग) ने उसके आसपास को रौशन कर दिया तो अल्लाह तआला ने उनकी रौशनी ही गुल कर दी और उनको ऐसे अंधेरे में छोड़ दिया जिसमें उनको कुछ सुझाई नहीं देता (17) बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे हैं, बस अब वे लौटेंगे नहीं[2] (18) या (उनकी मिसाल) ऊपर से बरसने वाली उस मूसलाधार वर्षा की है जिसमें अंधेरा भी है और गरज भी है और चमक भी, मारे कड़क के मौत के डर से वे अपने कानों में उँगलियाँ डाल लेते हैं और अल्लाह (तआला) ने इन्कार करने वालों को घेर रखा है (19) करीब है कि बिजली उनकी निगाहें उचक ले जाए, जब–जब उनके लिए वह चमकती है तो वे उसमें चलने लगते हैं और जब वह उन पर अंधेरी हो जाती है तो वे खड़े के खड़े रह जाते हैं और यदि अल्लाह चाहता तो उनकी सुनने की शक्ति और निगाहें छीन लेता बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत (सामर्थ्य) रखने वाला है[3] (20) ऐ लोगो! अपने उस पालनहार की बंदगी (उपासना) करो जिसने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को (भी पैदा किया) जो तुम से पहले हुए हैं[4] शायद कि तुम परहेज़गार बन जाओ (21) जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिए बिछौना और आसमान को छत बनाया और ऊपर से पानी उतारा, फिर तुम्हारी रोज़ी के लिए उससे विभिन्न फलों को पैदा किया तो अल्लाह के साथ किसी को बराबर मत बनाओ जबकि तुम्हें यह सब मालूम है[5] (22) और अगर तुम्हें उस चीज़ के बारे में शक है जिसको हमने अपने बन्दे पर उतारा तो इस जैसी एक सूरह ही बना लाओ और अल्लाह के अलावा अपने सारे मददगारों को बुला लो अगर तुम सच्चे हो (23)

(1) ईमान ला सकते थे परन्तु इसके बजाए कुफ़्र व इनकार किया तो हिदायत भी न मिल सकी और अपनी सौदागरी में वे नुकसान उठा गए (2) अल्लाह तआला मिसालों के माध्यम से बात समझाता है, यह मुनाफ़िक़ों की मिसाल है कि ईमान की रौशनी हुई और मुनाफिक़ उस समय अंधे हो गए और केवल अंधे होते तो किसी को पुकारते या बात सुनते इससे आगे बढ़कर यह कि वे गूंगे, बहरे भी बन गए तो फिर सत्य पर आने की आशा ही समाप्त हो गई (3) यह दूसरे प्रकार के मुनाफ़िकों की मिसाल है जो पूरा इनकार करने वाले न थे बल्कि शक में रहते थे, इस्लाम की बाह्य शक्ति और वैभव को देख कर कुछ कदम आगे बढ़ाते और जब लगातार विजय दिखाई न देती तो फिर पीछे हट जाते, और अपने बाह्य बचाव हेतु चिन्तित रहते, अल्लाह तआला ऐसे लोगों को भी छोड़ने वाला नहीं, सूरह के आरम्भ से यहां तक तीन प्रकार के लोगों का उल्लेख हुआ, सबसे पहले ईमान वालों का फिर काफ़िरों का, उसके बाद मुनाफिकों का (4) अब तौहीद का आमंत्रण (दावत) दिया जा रहा है जो ईमान की बुनियाद है (5) तौहीद को तर्क से समझाया जा रहा है कि सब कुछ खुद से नहीं हुआ बल्कि सब अल्लाह का पैदा किया हुआ है और उसी ने यह सब तुम्हारे लिए पैदा किया है, तो तुम्हें उसी की इबादत करनी चाहिए, "वअंतुम तअ्लमून" कह कर अरब वासियों के उस अकीदे (विश्वास) की ओर इशारा है कि सारे ब्रह्माण्ड को पैदा करना, ज़मीन व आसमान का सृजन, ऊपर से पानी बरसाना और पैदावार उगाना सब अल्लाह के काम हैं, इसके बावजूद वे यह अक़ीदा (विश्वास) रखते हैं कि उसने बहुत से काम बुतों (मूर्तियों) के हवाले कर दिये हैं, अतः वे मूर्तियों की पूजा इसीलिए करते थे ताकि वे उनकी मदद करें, अल्लाह कहता है कि जब हमने सब कुछ पैदा किया और हमें किसी की मदद की ज़रूरत नहीं तो किसी और की पूजा करना कितना बड़ा अन्याय और मूर्खता है।

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا
النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۚ أُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۗ كُلَّمَا
رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ
وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ۗ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْيٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا
فَوْقَهَا ۗ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَاَمَّا
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ
بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ۗ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾
الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۪ وَيَقْطَعُوْنَ
مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۗ اُولٰٓئِكَ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٢٧﴾ كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا
فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٨﴾
هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۗ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى
السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ۗ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٩﴾

وقف لازم

ع ٣

منزل ١

फिर अगर तुमने ऐसा नहीं किया और तुम यह कर भी न सकोगे तो उस आग से बचो जिसका ईधन इंसान और पत्थर है जिसको काफ़िरों के लिए तैयार किया गया है[1] (24) और आप उन लोगों को शुभ समाचार सुना दीजिए जो ईमान लाए और अच्छे काम किये[2] कि अवश्य उन्हीं के लिए ऐसी जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं जब रोज़ी के रूप में उनको वहाँ से कोई फल मिलेगा वे कहेंगे यह तो वही है जो हम को पहले (भी) दिया जा चुका है और उनको उससे मिलते जुलते फल दिये जाएंगे[3] और उनके लिए वहाँ पाक जोड़े होंगे और उसी में हमेशा रहेंगे (25) अल्लाह इससे नहीं शर्माता कि वह कोई भी मिसाल दे, मच्छर की या उससे ऊपर (किसी चीज़) की फिर जहाँ तक ईमान वालों का संबंध है वे जानते हैं कि यह (मिसाल) उनके पालनहार की ओर से बहुत मौक़े की (उचित) है, और रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया वे कहते हैं (कि) यह मिसाल देकर अल्लाह क्या चाहता है[4], इसके द्वारा वह बहुत से लोगों को गुमराह करेगा और बहुत से लोगों को रास्ते पर ले आएगा और इसके द्वारा गुमराह उन्हीं को करेगा जो नाफरमान (अवज्ञाकारी) हैं[5] (26) जो अल्लाह से किये हुए अहद व पैमान (प्रतिज्ञा) को पक्का करने के बाद तोड़ देते हैं[6] और अल्लाह ने जिस चीज़ को जोड़ने का आदेश दिया है उसको वे तोड़ते हैं[7] और ज़मीन में बिगाड़ करते हैं वही लोग घाटे में हैं (27) तुम कैसे अल्लाह का इनकार करते हो जबकि तुम मुर्दा थे उसने तुम्हें जीवन प्रदान किया फिर वह तुम्हें मौत देगा फिर जीवित करेगा फिर तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे (28) वही है जिसने जो कुछ भी ज़मीन में है वह तुम्हारे लिए पैदा किया फिर उसने आसमान की ओर ध्यान आकर्षित किया तो उसने ठीक–ठीक सात आसमान बनाए और वह हर चीज़ से भली–भांति अवगत है (29)

---

(1) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में जो इस्लाम विरोधी थे उन्होंने सारी कोशिशें कर डालीं लेकिन भाषा के रहस्यवेत्ता होने के बावजूद वे यह चुनौती स्वीकार कर ही न सके, इससे यह बात खुल गई कि वह इंसानी कलाम (मानव वाणी) नहीं, वे लोग जिनकी भाषा प्रामाणिक स्तर पर थी वे लोग इसकी कोशिश करें भी तो इसकी क्या हैसियत है। उन इस्लाम विरोधियों को सम्बोधित करके कहा जा रहा है कि जब तुम खूब समझते हो कि यह कलाम (वाणी) तुम्हारी सीमाओं से बाहर का है फिर इसको न मानना ढिठाई के अलावा और क्या है और इसका परिणाम जहन्नम के रूप में तुम्हारे सामने होगा, और यह उसका अंतिम रूप होगा कि लोगों को ही ईंधन बनाया जाएगा और आग भी पत्थरों से सुलगाई जाएगी (2) बिना ईमान के कोई काम विश्वसनीय नहीं, ईमान के साथ जब अच्छे काम होंगे तो ऐसी जन्नतें मिलेंगी जिनमें हर इच्छा पूरी की जाएगी जिनकी कल्पना भी इंसान के बस से बाहर है (3) दुनिया के फलों से बाहरी समानता होगी लेकिन स्वाद में धरती– आकाश का अंतर और समानता भी इसलिए होगी ताकि चाहत पैदा हो, आम मानवीय स्वभाव यही है कि जिसका आनंद ले चुका हो वह उससे बेहतर का इच्छुक होता है (4) कुछ यहूदियों और मुनाफ़िकों ने कहा कि कहाँ क़ुरआन और कहाँ यह छोटी–छोटी मिसालें? उसका जवाब दिया जा रहा है (5) केवल दुश्मनी में यह कहते थे, खूब जानते थे कि छोटी चीज़ की मिसाल छोटी चीज़ से ही दी जा सकती है (6) जो विशेष रूप से आसमानी किताबों को मानने वालों से उनकी किताबों में लिया गया कि अल्लाह को एक मानोगे, अंतिम नबी आने वाला उसको मानोगे और इससे तात्पर्य "अहद–ए–अलस्त" भी हो सकता है जो तमाम इंसानों से अल्लाह ने लिया था, उस का ज़िक्र (उल्लेख) आगे आ रहा है (7) इसका तात्पर्य संबंधियों के अधिकारों का हनन करना और संबंध तोड़ना है जिसके फलस्वरूप पारिवारिक व्यवस्था नष्ट हो जाती है और समाज बिगड़ कर रह जाता है।

और जब आपके पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं धरती में एक ख़लीफ़ा (प्रतिनिधि) बनाने वाला हूँ[1] वे बोले कि तू ऐसों को उसमें (नायब) बनाने वाला है जो उसमें बिगाड़ करेंगे और ख़ून बहाएंगे[2] और हम तेरी हम्द के साथ पवित्रता और बड़ाई बयान करते हैं, उसने कहा कि निःसंदेह मैं वह जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते (30) और उसने आदम को सारे नाम सिखा दिये[3] फिर उनको फ़रिश्तों के सामने पेश किया[4] फिर कहा कि मुझे इन सारी (चीज़ों के) नाम बता दो अगर तुम सच्चे हो[5] (31) वे बोल उठे कि तू पवित्र है हमको तो केवल उतना ही ज्ञान है जितना तूने हमको सिखा दिया, बेशक तू बड़े ज्ञान वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है (32) (अल्लाह ने) कहा ऐ आदम! इनको उन चीज़ों के नाम बता दो, फिर जब वह इनको उनके नाम बता चुके तो उसने कहा कि मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि मैं आसमानों और ज़मीन के ढके–छिपे से अवगत हूँ और उसको भी जानता हूँ जो तुम ज़ाहिर करते हो और उसको भी जानता हूँ जो तुम छिपाए रहते हो (33) और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो वे सजदे में गिर गए सिवाए इब्लीस के, उसने इनकार किया और घमण्ड में जा पड़ा और वह काफ़िरों में हो गया[6] (34) और हमने कहा कि ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी (दोनों) जन्नत में रहो और जहाँ से चाहो मज़े से खाओ (पियो) और उस पेड़ के निकट मत जाना वरना सीमा लांघने वालों में से हो जाओगे[7] (35) फिर शैतान ने उन दोनों को उससे फिसला दिया[8] तो उनको उन सब नेमतों से निकाल दिया जिनमें वे दोनों थे और हमने कहा कि उतर जाओ तुम एक दूसरे के दुश्मन (बन कर) रहोगे और ज़मीन में एक अवधि तक के लिए तुम्हारा ठहरना और कुछ फ़ायदा उठाना तय कर दिया गया है[9] (36) फिर आदम ने अपने पालनहार की ओर से कुछ शब्द प्राप्त किये तो अल्लाह ने उनकी तौबा स्वीकार कर ली, बेशक वह तो बहुत ही तौबा स्वीकार करने वाला बहुत ही रहम करने वाला है[10] (37)

---

(1) जो मेरे आदेशों को लागू करे, ज़मीन में खिलाफ़त (प्रतिनिधित्व) का यही मतलब है और यह इंसान के लिए बड़ी इज़्ज़त की बात है (2) अल्लाह ने फ़रिश्तों को मालूम करा दिया कि नई सृष्टि में हर प्रकार के लोग होंगे (3) यानी सब चीजों के नाम और उनकी विशेषताएं (4) ताकि फ़रिश्तों के सामने बात साफ़ हो जाए कि वह काम धरती के प्रतिनिधित्व का कुछ और है (5) अपने इस ख़्याल में कि तुम हर काम से संबंध रखते हो (6) मनुष्य के सबसे पहली पैदाइश के अवसर पर बड़ी इज़्ज़त की बात हुई कि फ़रिश्तों को सजदे का आदेश हुआ, कहाँ यह इज़्ज़त और कहाँ डारविन के मानव विकास का सिद्धान्त, इब्लीस जिन्नात में से था, फ़रिश्तों के साथ इबादत में लीन रहता था और शायद इसका आशावान था कि धरती पर उसको खिलाफ़त (प्रतिनिधित्व) मिले, बस उसने आदम को सजदा करने से इनकार कर दिया (7) हव्वा आदम की पत्नी थीं जिनको अल्लाह ने आदम की पसली से बनाया और जिस पेड़ से उनको रोका गया था अल्लाह ही जाने वह क्या पेड़ था और रोका जाना परीक्षा के लिए था (8) शैतान आदम को सजदा न करने से निकाला गया, उसने बदला लेने की ठानी और आदम के पास पहुँच कर कसमें खाकर विश्वास दिलाया कि रोक अब नहीं रही, बस आदम से गलती हुई (9) दो दण्ड मिले, एक जन्नत से निकाले जाने का और दूसरा धरती में आपसी दुश्मनी का (10) हज़रत आदम बेचैन हो कर फ़रियाद करने लगे तो अल्लाह ही ने माफ़ी मांगने के शब्द बताए: "रब्बना ज़लमना अनफ़ुसना व इल्लम तग़्फ़िरलना वतर हमना ल न कू नन्न मिनल ख़ासिरीन" इसमें आदम की औलाद से कहा जा रहा है कि कोई भी ग़लती हो तो तुरन्त तौबा कर लें।

قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًى فَمَن تَبِعَ
هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٩﴾
يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا
بِعَهْدِي أُوفِ بِعَهْدِكُمْ وَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٤٠﴾ وَآمِنُوا بِمَا
أَنزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُونُوا أَوَّلَ كَافِرٍ بِهِ ۖ وَلَا تَشْتَرُوا
بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا وَإِيَّايَ فَاتَّقُونِ ﴿٤١﴾ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ
وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ ﴿٤٣﴾ أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنسَوْنَ
أَنفُسَكُمْ وَأَنتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٤٤﴾ وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ
وَالصَّلَاةِ ۚ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ ﴿٤٥﴾ الَّذِينَ يَظُنُّونَ
أَنَّهُم مُّلَاقُو رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿٤٦﴾ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ
اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾
وَاتَّقُوا يَوْمًا لَّا تَجْزِي نَفْسٌ عَن نَّفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ
مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٨﴾

منزل ۱

हमने कहा कि तुम सब यहाँ से नीचे (ज़मीन में) उतर जाओ[1] फिर अगर मेरी तरफ़ से तुम्हारे पास हिदायत पहुँच जाए तो जो भी मेरी (भेजी हुई) हिदायत पर चला तो ऐसों पर न कोई डर होगा और न वे दुखी होंगे (38) और जिन्होंने इनकार किया और हमारी निशानियों को झुठलाया वही लोग आग वाले हैं, हमेशा वे उसी में रहेंगे (39) ऐ बनी इस्राईल[2]! (याकूब की संतान) मेरे उस इनआम को याद करो जो मैंने तुम पर किया और (देखो) मेरे अहद व पैमान (प्रतिज्ञा) को पूरा करो मैं भी तुम्हारे अहद[3] व पैमान को पूरा करूँगा और सिर्फ़ मुझ ही से डरो (40) और मैंने जो उतारा है उस पर ईमान लाओ जबकि वह तुम्हारे पास जो किताब है उसकी पुष्टि (तस्दीक) है[4] और उसका सबसे पहले इनकार करने वाले मत हो जाओ और मेरी आयतों के बदले थोड़ी क़ीमत मोल मत लो और मेरा ही तक़वा अपनाओ (41) और सत्य को असत्य के साथ मत मिलाओ कि सत्य को जानते–बूझते छिपा दो[5] (42) और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात देते रहो और रुकू करने वालों के साथ रुकू किया करो[6] (43) क्या तुम लोगों को भलाई के लिए कहते हो और अपने आपको भूल जाते हो जबकि तुम किताब को पढ़ते हो, भला क्या तुम समझ नहीं रखते[7] (44) और सब्र और नमाज़ के द्वारा मदद चाहो और बेशक यह (नमाज़) भारी ही है अलावा खुशूअ (विनम्रता) रखने वालों के[8] (45) जिनको यह ख़्याल रहता है कि वे अपने पालनहार से मिलने वाले हैं और उसकी ओर वे लौटकर जाने वाले हैं (46) ऐ बनी इस्राईल! (याकूब की संतान) मेरे उस इनआम को याद करो जो मैंने तुम पर किया और मैंने तुमको संसारों पर फ़ज़ीलत (प्रधानता) प्रदान की[9] (47) और उस दिन से डरो (जिस दिन) न कोई किसी के कुछ काम आ सकेगा और न उसकी सिफ़ारिश ही स्वीकार की जाएगी और न कोई फ़िद्या लिया जाएगा और न ही उन लोगों की सहायता की जाएगी (48)

(1) धरती पर उतरने का पहला आदेश शासकों के आदेश जैसा था और अब बख़्शिश के बाद जो हिदायत (निर्देश) दी जा रही है वह हकीमाना (तत्वदर्शी) है और साथ ही साथ रहने के संस्कार भी बताए जा रहे हैं (2) अब यहाँ से बनी इस्राईल (याकूब की संतान) पर अल्लाह तआला अपने इनआम को बयान कर रहा है ताकि शायद वे शर्मा कर ही ईमान की ओर आकर्षित हों, इस्राईल हज़रत याकूब का उपनाम था, उनकी संतान को बनी इस्राईल कहते हैं (3) इस अहद (प्रतिज्ञा) का उल्लेख दूसरे अवसर पर आया है, उसमें विशेष रूप से बाद में आने वाले रसूलों पर ईमान लाने और उनका साथ देने का भी उल्लेख है (4) पवित्र कुरआन में हज़रत मूसा, हज़रत ईसा और सब नबियों की पुष्टि है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बिअसत (पैगम्बर बना कर भेजा जाना) तौरेत और बाइबिल में आपके उल्लेख अनुकूल है, यहूदी सब जानते थे इसलिए कहा जा रहा है कि तुम इनकार करने की शुरुआत मत करना कि सबका वबाल तुम पर पड़े (5) यहूदियों का यह तरीक़ा था कि तौरेत के आदेशों को अपनी इच्छानुसार तोड़–मरोड़ कर पेश करते थे और बहुत सी चीज़ें छिपा जाते थे। यानी जमाअत से नमाज़ पढ़ा करो पहले किसी धर्म में ज़माअत से नमाज़ न थी और यहूदियों की नमाज़ में रुकू न था। (7) कहा जाता है कि कुछ यहूदी आलिम (ज्ञानी) चुपके–चुपके दूसरों से कहते थे कि यह सच्चे पैगम्बर हैं इनको मान लो इसलिए कि तौरेत में आपका वर्णन पढ़ चुके थे, इसी की ओर इशारा है, हाँ! आदेश आम ही है कि कहने वाला सबसे पहले अमल करे (8) इलाज बताया साथ में यह भी कह दिया कि इलाज वही करेगा जिसको ध्यान होगा और आख़िरत के बारे में सोचेगा (9) अपने समय के सबसे अच्छी उम्मत वही थे फिर लगातार हुक्म न मानने के कारण अभिशाप और प्रकोप के अधिकारी बने और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत को सबसे अच्छा करार दिया गया "कुंतुम ख़ैर उम्मतिन उख़रिजत लिन्नास"।

और (याद करो) जब हमने तुमको फ़िरऔन के लश्कर से छुटकारा दिलाया जो तुम्हें बहुत तकलीफें पहुँचाते थे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल कर देते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे और इसमें तुम्हारे पालनहार की ओर से बड़ी परीक्षा थी[1] (49) और जब हमने तुम्हारे लिए समुद्र फाड़ दिया फिर तुम्हें बचा लिया और फ़िरऔन के लश्कर को डुबो दिया और तुम सब कुछ देख रहे थे (50) और जब हमने मूसा से चालीस रातों का वादा किया फिर तुमने उनके बाद बछड़ा बना लिया और तुम उस समय अनुचित कार्य करने वाले थे[2] (51) फिर उसके बाद भी हमने तुमको माफ़ कर दिया कि शायद तुम शुक्र करने लगो (52) और जब हमने मूसा को किताब और फैसले[3] की चीज़ से नवाज़ा ताकि तुम रास्ते पर आ जाओ (53) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा: ऐ मेरी क़ौम! तुमने बछड़ा बना कर अपने ऊपर बड़ा अत्याचार किया तो अपने पैदा करने वाले से तौबा करो फिर अपनो को (अपने हाथ से) मारो, तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक तुम्हारे लिए यही बेहतर है, फिर उसने तुम्हारी तौबा स्वीकार कर ली, बेशक वह बहुत तौबा कुबूल करने वाला बहुत ही दया करने वाला है (54) और जब तुमने कहा कि ऐ मूसा! हम आपकी बात उस समय तक नहीं मानेंगे जब तक हम अल्लाह को खुली निगाहों से देख न लें तो तुम्हारी निगाहों के सामने बिजली ने तुम्हें आ दबोचा (55) फिर तुम्हारी मौत के बाद हमने तुमको दूसरी ज़िन्दगी दी कि शायद तुम शुक्र करने लग जाओ (56) और हमने तुम पर बादल की छाया की और तुम पर "मन्न व सल्वा" उतारा, खाओ उन पवित्र चीज़ों में से जो हमने तुम्हें दीं, और उन्होंने हमारा कुछ न बिगाड़ा, हाँ! वे खुद अपना ही नुक़सान करते रहे[4] (57)

(1) अब यहाँ से एक–एक कर के थोड़े संक्षेप में बनी इस्राईल पर अल्लाह के इनआम और उनकी लगातार नाफरमानियों (अवज्ञाओं) का उल्लेख है, इनका विस्तार विभिन्न सूरतों में मौजूद है, फिरऔन मिस्र के राजा की उपाधि होती थी, जहाँ बनी इस्राईल आबाद थे और फिरऔन की गुलामी में जीवन गुज़ार रहे थे किसी ने फिरऔन से कह दिया था कि बनी इस्राईल में एक लड़का पैदा होने वाला है जो तुम्हारी बादशाहत के लिए ख़तरा होगा, बस उसने आदेश दे दिया कि बनी इस्राईल के हर लड़के को क़त्ल कर दिया जाए, लड़कियों से अंदेशा न था इसलिए उनको छोड़ दिया जाता था (2) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से अल्लाह ने कहा था कि वे तूर पहाड़ पर आ कर चालीस दिन एतिकाफ़ करें तो उन्हें तौरेत दी जाएगी, हज़रत मूसा वहाँ गये, उधर सामरी ने बछड़ा बनाया और बनी इस्राईल को उसकी पूजा करने के लिए प्रेरित कर लिया, हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम आए तो उन्होंने लोगों को समझाया और तौबा करने की ताक़ीद की, उसी का एक भाग यह भी था कि जो लोग शिर्क में लिप्त हुए थे उनके करीबी लोग शिर्क करने वालों को कत्ल करें (3) यानी तौरेत के वे आदेश जिससे सत्य व असत्य अलग होता है और वे मोजिज़े (चमत्कार) जिनसे सत्य व असत्य का फैसला होता है, फ़ुरक़ान कहते हैं सत्य व असत्य में अंतर बताने वाली चीज़ को, अल्लाह की किताब को "फ़ुरक़ान" इसीलिए कहा जाता है कि वह दूध का दूध और पानी का पानी कर देती है (4) अल्लाह के इनआमों की निरंतर नाक़द्री करके अल्लाह के तिरस्कार और क्रोध के अधिकारी बने और इससे बड़ा नुकसान क्या होगा, बादलों से छाया उस समय की गई थी जब वे "सैना" नामक मरुस्थल में भटक रहे थे और "मन्न" व "सल्वा" दिया गया, "मन्न" एक बहुत ही मीठी स्वादिष्ट चीज़ होती थी जो खुद से पेड़ के पत्तों पर जम जाती थी और "सल्वा" बटेरें होती थीं जिनको वे अपने हाथों से पकड़ लेते और उनको कुछ भी मेहनत न करनी पड़ती।

وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ
رَغَدًا وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ نَغْفِرْ لَكُمْ
خَطَايَاكُمْ ۚ وَسَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ (58) فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا
غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا
مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ (59) وَإِذِ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ
فَقُلْنَا اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ
عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَشْرَبَهُمْ ۖ كُلُوا وَاشْرَبُوا مِنْ رِزْقِ
اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ (60) وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ
لَنْ نَصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا
تُنْبِتُ الْأَرْضُ مِنْ بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَ
بَصَلِهَا ۖ قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ
خَيْرٌ ۚ اهْبِطُوا مِصْرًا فَإِنَّ لَكُمْ مَا سَأَلْتُمْ ۗ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ
الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ
كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ
بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ (61)

منزل ١

और जब हमने कहा कि इस बस्ती में प्रवेश कर जाओ और इसमें जहाँ चाहो आराम से खाओ (पियो[1]) और दरवाज़े से सिर झुकाए हुए दाख़िल हो जाओ और कहते जाओ कि (हम) माफी चाहते हैं, हम तुम्हारे लिए तुम्हारी गलतियाँ माफ़ कर देंगे और बेहतर काम करने वालों को आगे हम और देंगे (58) तो उन ज़ालिमों ने जो कहा गया उसका कुछ का कुछ कर दिया, बस जिन्होंने ज़ुल्म किया उन पर हमने आसमान से अज़ाब उतारा इसलिए कि वे नाफ़रमानी (अवज्ञा) करते चले आए थे[2] (59) और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी माँगा तो हमने कहा कि अपनी लाठी को पत्थर पर मारो, बस उससे बारह जलस्रोत (चश्मे) फूट निकले, सारे लोगों ने पानी लेने की अपनी–अपनी जगह जान ली, अल्लाह की रोज़ी में से खाओ और पियो और धरती पर बिगाड़ फैलाते मत फिरो[3] (60) और जब तुमने कहा कि ऐ मूसा हम (केवल) एक ही खाने पर हरगिज़ सब्र नहीं कर सकते तो आप हमारे लिए अपने पालनहार से दुआ कीजिए कि वह ज़मीन से पैदा होने वाली चीज़ें हमारे लिए निकाल दे यानी साग और ककड़ी और लहसुन और मसूर और प्याज़, वे बोले कि जो चीज़ बेहतर है क्या तुम उसे छोड़ कर उसके बदले वह चीज़ लेना चाहते हो जो कमतर है, किसी शहर में चले जाओ, बस जो मांगते हो वह मिल जाएगा, और ज़िल्लत व रुसवाई उनके सिर थोप दी गई और वे अल्लाह के प्रकोप को लेकर पलटे, यह इसलिए हुआ कि वे अल्लाह की निशानियों का इनकार करते रहे थे और नबियों को अकारण क़त्ल करते थे, यह इसलिए हुआ कि उन्होंने हुक्म को न माना था और हद से आगे बढ़ते रहे थे[4] (61)

(1) इससे मालूम होता है कि शहर बहुत बड़ा और खूबसूरत था, फ़िलिस्तीन के पास ही कोई शहर मुराद है (2) रिवायतों में आता है कि "हित्ततुन नग़फ़िरलकुम" कहते हुए दाख़िल होने का आदेश दिया गया लेकिन जब वे "तीह" नामक घाटी में एक ज़माने तक भटकने के बाद दाख़िल हुए तो सिरों को उठाए हुए सुरीन (क्षोणी) के बल घिसटते हुए "हित्ततुन" की बजाए "हिंततुन फ़ी शईरतिन" (जौ में गेहूँ) कहते हुए दरवाज़े से दाख़िल हुए, बस अल्लाह का अज़ाब आया, कुछ हदीसों में है कि प्लेग का रोग फैला और एक समय में सत्तर हज़ार लोग मारे गए (3) तीह नामक घाटी में भटकते–भटकते प्यास से बेहाल हुए तो मूसा अ़लैहिस्सलाम से मारने–मरने पर उतारू हो गए, फिर हज़रत मूसा ने दुआ की तो दुआ क़ुबूल हुई और बारह (12) जलस्रोत (चश्मे) फूट निकले ,हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम के बारह बेटे थे हर बेटे की संतान एक कबीला बन गई थी, अल्लाह तआला ने हर कबीले के लिए अलग जलस्रोत (चश्मा) ज़ारी किया ताकि कोई उलझन सामने न आए (4) मन्न व सल्वा से तंग आ गए और लगे दाल व तरकारी मांगने, आदेश हुआ कि किसी निकटवर्ती शहर में चले जाओ जुताई करो, बुआई करो, मेहनत करो, अल्लाह के जिस क़दर इनआम हुए उन्होंने उतनी ही नाफ़रमानियां की तो उनके लिए तिरस्कार व रुस्वाई का फैसला कर दिया गया, इस्राईल की इस समय की सरकार से प्रश्न उठता है कि जब तिरस्कार व रुस्वाइयाँ उनकी नियती बन चुकी है तो उनको सत्ता कैसे प्राप्त हुई? इसका उत्तर सूरह आल–ए–इमरान में अपवाद के साथ है कि "इल्ला बि हबलिम मिनल्ला ह व हबलिम मिनन्नास" यानी वे इस्लाम में दाखिल हो जाएं या किसी शक्ति का सहारा लें तो उनकी रुस्वाई दूर हो सकती है, और यह सब जानते हैं कि इस्राईल अमेरिका और अंग्रेज़ों के सहारे पर स्थापित है।

إن الذين آمنوا والذين هادوا والنصارى والصابئين
من آمن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلهم أجرهم
عند ربهم ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون ﴿٦٢﴾ وإذ أخذنا
ميثاقكم ورفعنا فوقكم الطور خذوا ما آتيناكم بقوة و
اذكروا ما فيه لعلكم تتقون ﴿٦٣﴾ ثم توليتم من بعد ذلك
فلولا فضل الله عليكم ورحمته لكنتم من الخاسرين ﴿٦٤﴾
ولقد علمتم الذين اعتدوا منكم في السبت فقلنا لهم
كونوا قردة خاسئين ﴿٦٥﴾ فجعلناها نكالا لما بين يديها
وما خلفها وموعظة للمتقين ﴿٦٦﴾ وإذ قال موسى لقومه
إن الله يأمركم أن تذبحوا بقرة قالوا أتتخذنا هزوا
قال أعوذ بالله أن أكون من الجاهلين ﴿٦٧﴾ قالوا ادع لنا
ربك يبين لنا ما هي قال إنه يقول إنها بقرة لا
فارض ولا بكر عوان بين ذلك فافعلوا ما تؤمرون ﴿٦٨﴾
قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما لونها قال إنه يقول
إنها بقرة صفراء فاقع لونها تسر الناظرين ﴿٦٩﴾

منزل ١

बेशक वे लोग जो ईमान लाए और जो यहूदी हुए और नसारा (ईसाई) और साबी लोग सब में जो भी अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाएगा और भले काम करेगा तो उनके लिए उनके पालनहार के पास उनका बदला (सुरक्षित) है और उन पर न ख़ौफ होगा और न वे दुखी होंगे[1] (62) और जब हमने तुमसे वचन (अहद) लिया और तूर (पहाड़) को तुम्हारे ऊपर कर दिया कि हमने तुम को जो कुछ दिया है उसको मज़बूती के साथ पकड़ लो और उसमें जो कुछ है उसको ध्यान में रखो ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ[2] (63) फिर उसके बाद तुम पलट गए बस अगर तुम पर अल्लाह का फज़ल और उसकी रहमत न होती तो तुम ज़रूर नुक़सान उठा जाते[3] (64) और तुम अपने उन लोगों को खूब जानते हो जो सनीचर में हद से आगे बढ़ गए तो हमने उनसे कह दिया कि ज़लील बन्दर बन जाओ[4] (65) तो उसको हमने उसके सामने वालों के लिए भी शिक्षा (इबरत) बना दिया और उसके पीछे वालों के लिए भी और तक़वा वालों के लिए नसीहत (उपदेश) की चीज़ (बनाया) (66) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह तुम्हें यह आदेश देता है कि तुम एक गाय ज़बह करो, वे बोले कि क्या आप हमारा उपहास करते हैं? (मूसा ने) कहा मैं इससे अल्लाह की पनाह चाहता हूँ कि मैं नादानों में से हो जाऊँ[5] (67) वे बोले कि आप अपने पालनहार से हमारे लिए दुआ कर दीजिए वह साफ़–साफ़ बता दे कि वह गाय कैसी हो? उन्होंने कहा कि अल्लाह कहता है कि वह ऐसी गाय हो जो न बूढ़ी हो और न बिल्कुल नवजवान, दोनों के बीच की हो, अब तुम्हें जो आदेश दिया जा रहा है वह कर डालो (68) वे बोले कि हमारे लिए अपने पालनहार से दुआ कर दीजिए वह उसका रंग (भी) बता दे, उन्होंने का कि वह कहता है कि वह पीले (ज़र्द) रंग की गाय हो, उसका रंग शोख (चोखा) हो जो देखने वालों को भाती हो (69)

---

(1) यहूदी कहते हैं हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की उम्मत (अनुयायी) को और नसारा (ईसाई) हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की उम्मत को, और साबईन एक फ़िर्क़ा (सम्प्रदाय) है जो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को मानने का दावा करता है और फरिश्तों की भी पूजा करता है, यहाँ यह बात साफ़ कर दी गयी कि ईमान किसी सम्प्रदाय (फ़िर्क़े) की जागीर नहीं, और इसमें विशेष तौर पर यहूदियों का खण्डन किया गया है जो खुद को खुदा का बेटा और प्रिय कहते थे और समझते थे कि उन के परिवार के अलावा और किसी की माफ़ी न होगी, इस आयत में यह साफ़ हो गया कि सत्य किसी एक वंश में सीमित नहीं जो भी अल्लाह और आख़िरत पर ईमान लाएगा और भले काम की मूल शर्तें पूरी करेगा, अल्लाह के यहाँ वह बदला पाएगा, ईमान बिल्लाह एक पारिभाषिक शब्द है जब संक्षेप में इसका उल्लेख किया जाएगा तो इसमें रसूलों पर ईमान और फरिश्तों पर ईमान सब शामिल होता है और इसका मतलब ईमान से संबंधित सारी बातें होती हैं, अतः मोक्ष (नजात) पाने के लिए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाना भी ज़रूरी है, पीछे आयत न0 41–42 में बनी इस्राईल को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का आदेश दिया गया है और विभिन्न आयतों में यह आदेश मौजूद है (2) जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम तौरेत ले आए तो उन्होंने उसमें बहानेबाज़ी शुरु कर दी, हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम उनमें से 70 लोगों के साथ तूर पहुँचे थे, अल्लाह तआ़ला ने उनको प्रत्यक्ष रूप से उस पर अमल करने का आदेश दिया, मगर इसके बावजूद उन्होंने मनमानी शुरु कर दी, इस पर पहाड़ उनके ऊपर कर दिया गया, विवश होकर उनको मानना पड़ा (3) अल्लाह का फज़ल न होता तो सब मिटा कर रख दिए जाते (4) आदेश था कि सनीचर को मछली का शिकार न करें मगर मानते न थे, इसकी सज़ा में बन्दर बना दिए गए, विवरण सूरह अअ़राफ में आएगा (5) एक व्यक्ति को किसी ने मार डाला, क़ातिल का पता न चलता था तो आदेश हुआ कि गाय ज़बह करके उसका एक टुकड़ा कत्ल किए हुए व्यक्ति पर मारो वह जिन्दा हो कर क़ातिल का नाम बताएगा, यह बात उनकी समझ में न आई तो कहने लगे कि तुम हमसे हंसी करते हो, हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम बोले कि हंसी करना नादानों का काम है।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا
وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا
ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيهَا
قَالُوا الْآنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾ وَ
إِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَّارَأْتُمْ فِيهَا وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنتُمْ
تَكْتُمُونَ ﴿٧٢﴾ فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا كَذَلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَى
وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُم مِّن
بَعْدِ ذَلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ
لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ
الْمَاءُ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٧٤﴾ أَفَتَطْمَعُونَ أَن يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ
فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَهُ مِن بَعْدِ
مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾ وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا
آمَنَّا وَإِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ قَالُوا أَتُحَدِّثُونَهُم بِمَا
فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوكُم بِهِ عِندَ رَبِّكُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٧٦﴾

منزل ١

वे बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिए यह दुआ भी कर दीजिए कि वह साफ़–साफ़ बता दे कि वह कैसी हो बेशक इस गाय ने हमें शक में डाल रखा है और अल्लाह चाहेगा तो हम ज़रूर पता पा जाएंगे (70) (मूसा ने) कहा कि वह यह कहता है कि वह गाय काम काज वाली न हो कि ज़मीन जोतती हो और सिंचाई करती हो बिल्कुल साफ़–सुथरी हो, उस पर कोई धब्बा न हो, वे बोले कि अब आप ठीक–ठीक बात लेकर आए हैं, फिर उन्होंने उसको ज़बह किया और लगता न था कि वे ऐसा कर लेंगे[1] (71) और जब तुमने एक व्यक्ति को मार डाला तो उसमें तुम बात को एक दूसरे पर डालने लगे और तुम जो कुछ छिपा रहे थे अल्लाह तआला उसको ज़ाहिर करने वाला था (72) तो हमने कहा कि गाय के गोश्त को मुर्दे पर मारो, अल्लाह तआला इसी तरह मुर्दों को जीवित करता है और तुम्हें अपनी (क़ुदरत की) निशानियाँ दिखाता है ताकि तुम्हारे अन्दर समझ पैदा हो[2] (73) फिर उसके बाद (भी) तुम्हारे दिल सख़्त हो गए तो यह पत्थर की तरह हैं या उससे भी अधिक सख़्त, बेशक कुछ पत्थर भी ऐसे होते हैं कि उनसे नहरें फूट निकलती हैं और उनमें कुछ ऐसे होते हैं कि जब फटते हैं तो उनसे पानी निकल आता है और उनमें कुछ ऐसे होते हैं जो अल्लाह के डर से गिरने लगते हैं और तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है (74) क्या फिर तुम यह चाहते हो की वे तुम्हारे लिए ईमान ले आएंगे जब कि उनमें कुछ लोग अल्लाह का कलाम (वाणी) सुनते हैं और फिर समझने–बूझने के बाद भी उसमें फेर बदल (तहरीफ़) कर दिया करते हैं जब कि वे जानते हैं[3] (75) और जब वे ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम (भी) मुसलमान हुए और जब एक दूसरे के साथ तन्हाई में होते हैं तो वे कहते हैं कि क्या तुम उन लोगों की वे बातें बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोली हैं ताकि वे उससे तुम्हारे पालनहार के पास तुम पर दलील क़ायम कर लें, क्या तुम समझ नहीं रखते[4] (76)

(1) गाय का ज़बह करना उनकी अक़्ल में न आता था, बछड़े की तक़दीस (पुण्यता) भी उनकी प्रकृति में दाखिल (प्रविष्ट) थी, इसलिए बहुत ही वाद–विवाद के बाद ज़बह करने पर तैयार हुए और गाय भी जिन गुणों वाली वांछित थी वह ऐसे व्यक्ति के पास मिली जो कहा जाता है कि माँ की बहुत सेवा करता था, उससे सोने के भाव गाय खरीदनी पड़ी (2) क़त्ल करने वाले उसी के घर के थे, दौलत की लालच में उन्होंने मारा था और बात एक दूसरे पर डाल रहे थे, जब गाय के गोश्त को मुर्दे पर मारा गया तो वह अल्लाह के हुक्म से जीवित हो गया और उसने सब बता दिया, यह अल्लाह ने अपनी शक्ति की एक निशानी दिखाई ताकि उनके अन्दर मरने के बाद दोबारा जीवित होने का यक़ीन बढ़े, लेकिन उनका हाल यह हो गया था जैसा कि अगली आयत में बताया जा रहा है कि वे और सख़्त दिल हो गए, लगता था कि कोई चीज़ उन पर असर ही न करेगी, पत्थर भी प्रभावित होते हैं, नहरें जारी हो जाती हैं, स्रोत (चश्मे) फूटते हैं और कुछ नहीं तो उनमें दरार पड़ती है और उन यहूदियों का हाल यह हुआ कि कोई चीज़ उन पर असर नहीं करती थी (3) अपनी इच्छाओं के अनुसार उनमें परिवर्तन करना उनके लिए आम बात थी (4) यहूदियों में जो मुनाफ़िक़ थे वे कभी–कभार अपनी सच्चाई जतलाने के लिए तौरेत में जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उल्लेख था वह बयान कर दिया करते थे, इस पर दूसरे यहूदी उनकी निन्दा करते कि तुम खुद उनकी दलीलें दे रहे हो, यह क़यामत में तुम्हारे विरुद्ध इसी से तर्क देंगे कि तुम जानते–बूझते ईमान नहीं लाए।

أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٧﴾ وَ
مِنْهُمْ أُمِّيُّونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانِيَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا
يَظُنُّونَ ﴿٧٨﴾ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ
يَقُولُونَ هَٰذَا مِنْ عِندِ اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَوَيْلٌ
لَّهُم مِّمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُم مِّمَّا يَكْسِبُونَ ﴿٧٩﴾ وَقَالُوا
لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَةً ۚ قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِندَ
اللَّهِ عَهْدًا فَلَن يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ ۖ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا
لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٠﴾ بَلَىٰ مَن كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ
فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨١﴾ وَالَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ
فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨٢﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ
لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي
الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ
حُسْنًا وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ثُمَّ
تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنكُمْ وَأَنتُم مُّعْرِضُونَ ﴿٨٣﴾

منزل١

क्या वे जानते नहीं कि जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते (दिखाते) हैं अल्लाह खूब जानता है[1] (77) और उनमें कुछ अनपढ़ हैं जो किताब का ज्ञान नहीं रखते तमन्नाओं के अलावा और वे तो केवल अटकल मारते रहते हैं[2] (78) तो उन लोगों के लिए तबाही है जो अपने हाथों किताब लिखते हैं फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है ताकि इससे कुछ मामूली दाम प्राप्त कर लें, बस उनके लिए तबाही है उससे भी जो उन्होंने अपने हाथों से लिख लिया और उनके लिए खराबी है उससे भी जो वे कमाते हैं[3] (79) वे कहते हैं कि कुछ गिने–चुने दिनों के अलावा आग हमको छू ही नहीं सकती, आप कह दीजिए कि क्या तुमने अल्लाह से कोई अहद (वचन) लिया है कि अल्लाह अपने अहद (वचन) के विरूद्ध नहीं करेगा, या तुम अल्लाह के ज़िम्मे वह बात लगा रहे हो जिसका तुम्हें कुछ पता नहीं (80) क्यों नहीं जो भी बुराई कमाएगा और उसके गुनाह उसको घेर लेंगे तो वही लोग आग वाले हैं उसी में हमेशा रहेंगे (81) और वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए वे जन्नत वाले हैं उसी में हमेशा रहेंगे[4] (82) और जब हमने बनी इस्राईल से यह वचन लिया कि तुम केवल अल्लाह की इबादत करोगे और (हाँ) माँ–बाप के साथ अच्छे व्यवहार का अहद लिया और रिश्तेदारों और अनाथों और मोहताज़ों के साथ, और यह कि लोगों से अच्छी बात कहना और नमाज़ क़ायम करना और ज़कात अदा करना, फिर उसके बाद कुछ लोगों के अलावा तुम सब पलट गये और तुम हो बेरूख़ी करने वाले[5] (83)

(1) तौरेत में मौजूद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उल्लेख को वे मुसलमानों से छिपा भी लें तो अल्लाह उनको जानता है, उनके ज़ाहिर कर देने और छिपाने से क्या फर्क़ पड़ता है (2) जाहिलों को उनके आलिमों (ज्ञानियों) ने जो पढ़ा रखा है उसी पर खुश हैं और अटकलें लगा रहे हैं कि जन्नत में तो केवल यहूदी ही जाएंगे और हम कुछ भी करें हमारे बाप–दादा हमें बख़्शवा लेंगे, हम तो अल्लाह के चहीते हैं हमें अल्लाह अज़ाब देगा ही नहीं वगैरह–वगैरह (3) जनता की इच्छा के अनुसार वे फेर–बदल करते थे और उसको अल्लाह का आदेश क़रार देते थे, यही चीज़ उनकी तबाही के लिए काफी थी, फिर इससे बढ़कर यह कि इस पर भारी–भारी रक़में (राशियाँ) वसूल करते थे (4) यहूदियों का अल्लाह से न कोई रिश्ता है न उन्होंने कोई प्रतिज्ञा (अहद) ले रखी है जो होगा वह सबके लिए समान होगा, समस्या किसी क़ौम या खानदान से जुड़ी हुई नहीं है जो भी अल्लाह को, उसके फरिश्तों को, उसकी किताबों को, उसके रसूलों (संदेष्टाओं) को और आख़िरत के दिन को मानेगा और अच्छे काम करेगा उसके लिए ज़न्नत है चाहे वह किसी क़ौम का हो, किसी रंग–वंश का हो, और जिस को गुनाह इस प्रकार घेर लें कि दिल में भी ईमान बाक़ी न रहे तो वह हमेशा के लिए दोज़ख में डाला जाएगा, उसका संबंध किसी से भी हो, हज़रत इब्राहीम जैसे प्रिय पैगम्बर के पिता, हज़रत नूह का बेटा, खुद सबसे प्रियतम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चाचा जिन्होंने एहसान भी किए ईमान नहीं मिला तो यह ख़ानदानी संबंध दोज़ख से निकाल नहीं सकते, अतः यहूदियों का पैग़म्बरों की संतान होना उनके कुछ काम आने वाला नहीं (5) अल्लाह के आदेशों से मुँह फेरना उनके मिज़ाज (स्वभाव) में दाखिल हो गया था।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ
اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٨٤﴾
ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ
مِّنْ دِيَارِهِمْ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ؕ وَاِنْ
يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ ؕ
اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا جَزَآءُ
مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَيَوْمَ
الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا
تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ؗ
فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَ
لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ؗ
وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ
اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ
فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿٨٧﴾ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ
بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

منزل ۱

और जब हमने तुमसे यह वचन लिया कि तुम न एक दूसरे का खून बहाओगे और न अपने शहरों से अपनों को निकालोगे फिर तुम ने इक़रार किया और तुम उसके गवाह थे (84) फिर तुम ही वे लोग हो जो अपनों को क़त्ल करते हो और अपने ही कुछ लोगों को उनके शहरों से निकालते हो, गुनाह और अत्याचार करके तुम उनके विरूद्ध (दुश्मनों की) मदद करते हो और अगर वे क़ैदी बन कर तुम्हारे पास आते हैं तो तुम उनका फ़िद्या (प्राण मूल्य) देकर छुड़ाते हो जबकि उनका निकालना ही तुम पर हराम था[1], तो क्या तुम किताब के कुछ भाग को मानते हो[2] और कुछ को नहीं मानते, बस तुममें जो ऐसा कर रहा है उसका इसके अलावा बदला ही क्या है कि दुनियावी जीवन में भी उसकी रुसवाई है और क़यामत के दिन वे कठोरतम अज़ाब की ओर लौटाए जाएंगे और तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है (85) यह वे लोग हैं जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया ख़रीद ली है तो न ही उनसे अज़ाब हल्का किया जाएगा और न ही उनकी सहायता की जाएगी[3] (86) और बेशक हमने मूसा को किताब दी और उनके बाद लगातार रसूल भेजे और ईसा पुत्र मरियम को खुली निशानियां दीं[4] और रूहुल कुद्स से उनकी सहायता की फिर भी क्या (ऐसा नहीं हुआ कि) जब भी कोई रसूल तुम्हारे पास ऐसी चीज़ों के साथ आया जो तुम्हारी मनचाही न थीं तो तुम अकड़ गये तो कुछ (नबियों) को तुमने झुठला दिया और कुछ को मार डालने पर लग गए[5] (87) और बोले कि हमारे दिलों पर मोहर लगी हुई है, बात यह है कि उनके इनकार के कारण अल्लाह ने उनको धुत्कार दिया है तो इक्का–दुक्का ही वे ईमान लाते हैं[6] (88)

(1) मदीने में यहूदियों के दो समूह (ग्रुप) थे, एक बनू कुरैज़ा दूसरा बनू नज़ीर, यह दोनों आपस में लड़ा करते थे और मुश्रिकों के भी मदीने में दो समूह थे, एक औस और दूसरे खज़रज, यह दोनों भी आपस में लड़ा करते थे, बनू कुरैज़ा की दोस्ती क़बीला औस से थी और बनू नज़ीर की क़बीला खज़रज से, लड़ाइयों में हर कोई अपने दोस्त क़बीले का साथ देता था और विजयी होने की स्थिति में जब अपने ही लोग गिरफ़्तार हो कर आते थे तो वे खुद उसके लिए माल जमा करके फ़िद्या देकर उसको छुड़ाते, मानो खुद ही निकालते भी थे और फिर खुद ही फ़िद्या दे कर एहसान जता कर आबाद भी करते थे (2) फ़िद्या देकर छुड़ाना तो आदेशानुसार था लेकिन निर्वासित (जिलावतन) कर देना आदेश के विरुद्ध था (3) यानी आख़िरत के मुकाबले दुनिया को वरीयता दी वे उसकी सज़ा भुगतेंगे (4) मुर्दों को जीवित कर देना, लाइलाज रोगियों का ठीक हो जाना आदि और रूहुल कुद्स का मतलब जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम हैं जो उनको मज़बूती प्रदान करने के लिए साथ रहते थे (5) हज़रत ज़करिया और हज़रत यह्या को भी क़त्ल कर डाला (6) यहूदी कहते थे कि हमारे दिल ग़िलाफ़ में सुरक्षित हैं, हमारे दीन के अलावा और कोई बात उस पर असर नहीं करती, अल्लाह कहता है कि वे बिल्कुल झूठे हैं, उनके लगातार इनकार की वजह से अल्लाह ने उनको अपनी कृपा से दूर कर दिया, इसीलिए वे बहुत कम इस्लाम लाए हैं।

وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ
وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا
جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۫ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾
بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا
اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ
فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ
مُّهِيْنٌ ﴿٩٠﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا
نُؤْمِنُ بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَهُوَ
الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ؕ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ
اللّٰهِ مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩١﴾ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ
مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ
ظٰلِمُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ
الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ؕ قَالُوْا سَمِعْنَا
وَعَصَيْنَا ۗ وَاُشْرِبُوْا فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ؕ
قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖٓ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩٣﴾

منزل ١

और जब उनके पास अल्लाह की ओर से वह किताब आ गई जिसमें उनके पास (मौजूद) किताबों की तस्दीक़ (पुष्टि) थी और वे पहले काफ़िरों पर (उसके द्वारा) विजय चाहा करते थे तो जब वह चीज़ उनके पास पहुँच गई जिसको उन्होंने पहचान लिया तो वे उसके इनकार करने वाले हो गए, बस इनकार करने वालों पर अल्लाह की फिटकार है[1] (89) बहुत ही बुरा सौदा किया उन्होंने अपनी जानों का कि वे उस चीज़ का इनकार करने लगे जो अल्लाह ने उतारी, केवल जलन में कि अल्लाह अपनी कृपा को अपने बन्दों में जिस पर चाहता है उतारता है, तो गुस्से पर गुस्सा लेकर वे फिरे और इनकार करने वालों के लिए अपमानजनक अज़ाब है[2] (90) और जब उनसे कहा गया कि अल्लाह ने जो उतारा है उस पर ईमान ले आओ, वे बोले कि हम पर जो उतर चुका है हम उस पर ईमान रखते हैं और उसके पीछे उतरने वाले (कलाम) का वे इनकार करते हैं जब कि वह सत्य है, सच बताता है उसको भी जो उनके पास है[3], आप उनसे पूछिये कि अगर तुम ईमान वाले थे तो पहले तुम नबियों को क्यों क़त्ल करते रहते थे[4] (91) और बेशक मूसा तुम्हारे पास खुली निशानियाँ लेकर आए फिर तुमने उनके पीछे बछड़ा बना लिया[5] और तुम तो हो ही हद से गुज़र जाने वाले लोग (92) और जब हमने तुमसे पैमान (प्रतिज्ञा) लिया और तुम्हारे ऊपर तूर (पहाड़) को उठा दिया कि हमने जो कुछ तुम्हें दिया है उसको मज़बूती से थाम लो और बात सुनो, बोले कि हमने सुन लिया और न माना और उनके इनकार की वजह से बछड़े की मुहब्बत उनकी घुट्टी में पिला दी गई, आप कह दीजिए कि अगर तुम ईमान रखते हो तो तुम्हारा ईमान तुम्हें बहुत बुरी चीज़ का हुक्म देता है[6] (93)

(1) उनके पास जो किताब आई वह कुरआन मजीद है और उनके पास पहले जो किताब मौजूद थी वह तौरेत थी, उसमें अंतिम पैग़म्बर और अंतिम किताब की ख़बरें मौजूद थीं, पवित्र कुरआन उतरने से उन चीज़ों की पुष्टि हुई, इसीलिए पवित्र कुरआन को पहले की आसमानी किताबों की पुष्टि करने वाला (मुसद्दिक़) कहा गया है, पवित्र कुरआन के उतरने से पहले यहूदी जब काफ़िरों से पराजित होते थे तो अंतिम पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अंतिम किताब का वास्ता दे कर विजय की दुआ करते थे, फिर जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेअसत हुई और अंतिम किताब उतरने लगी तो जानते–बूझते इनकार कर बैठे और धिक्कारे गये (2) जिस चीज़ के बदले उन्होंने अपना सौदा किया वह कुफ़्र और इनकार है और इनकार भी केवल इस ज़िद में कि यह अंतिम नबी इस्माईल की संतान में कैसे पैदा हुआ, इसको हमारे वंश में होना चाहिए था तो एक गज़ब किताब से इनकार का हुआ और दूसरा नबी से इनकार का, और इनकार करने वालों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है (3) उनके लिए तौरेत उतरी और बाद में इंजील (बाइबिल) और कुरआन उतरा इसका इनकार कर दिया जब कि कुरआन का इनकार तौरेत का भी इनकार है इसलिए कि उसमें कुरआन का उल्लेख मौजूद है (4) अब उनसे सवाल हो रहा है कि तौरेत ही को अगर मानते थे तो फिर उन पैग़म्बरों को क्यों क़त्ल किया जो तौरेत को मानते थे जैसे हज़रत ज़करिया और हज़रत यह्या (5) जब मूसा तूर पर गए तो उनके जीते जी तुम बहक गये (6) बताया जा रहा है कि जिस तौरेत की मानने का तुम दावा करते हो उस पर तुम्हारे ईमान का यह हाल रहा है कि जब तक ज़बरदस्ती की गई माना और दिल ही दिल में नाफ़रमानी करते रहे या बाद में कह दिया कि हम तो नहीं मान सकते, हमने सुन लिया मगर हम मानने वाले नहीं, बछड़े की पूजा इसी इनकार का परिणाम थी।

قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً مِنْ
دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٩٤﴾ وَ
لَنْ يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
بِالظَّالِمِينَ ﴿٩٥﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَىٰ حَيَاةٍ ۚ وَ
مِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَ
مَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُعَمَّرَ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا
يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾ قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ
عَلَىٰ قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى
وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٩٧﴾ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَ
رُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ ﴿٩٨﴾
وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۖ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا
الْفَاسِقُونَ ﴿٩٩﴾ أَوَكُلَّمَا عَاهَدُوا عَهْدًا نَبَذَهُ فَرِيقٌ مِنْهُمْ ۚ
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٠﴾ وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْ عِنْدِ
اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ كِتَابَ اللَّهِ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾

منزل ١

आप कह दीजिए कि अगर आख़िरत का घर अल्लाह के पास दूसरों को छोड़ कर केवल तुम्हारे ही लिए है तो मौत की तमन्ना करके दिखाओ अगर तुम सच्चे हो[1] (94) और वे तो अपनी करतूतों के कारण कभी भी इसकी तमन्ना कर ही नहीं सकते और अल्लाह तआला ज़ालिमों को ख़ूब जानता है[2] (95) और आप तो उनको जीवन का सबसे अधिक लालची पाएंगे यहाँ तक की मुश्रिकों से भी बढ़ कर, उनमें एक–एक की इच्छा यह है कि काश हज़ार वर्ष की उम्र उसको दे दी जाए जब की यह चीज़ उसे अज़ाब से बचा नहीं सकती और जो भी वे करते हैं अल्लाह उसे ख़ूब देख रहा है[3] (96) आप कह दीजिए कि जो कोई जिब्रईल का दुश्मन हो तो हुआ करे उन्होंने तो अल्लाह के हुक्म से उसको आपके दिल पर उतारा, पहले (कलाम) की पुष्टि के रूप में और ईमान वालों के लिए हिदायत और शुभ समाचार के रूप में[4] (97) जो कोई दुश्मन हुआ अल्लाह का और उसके फरिश्तों और उसके रसूलों का और जिब्रईल और मीकाईल का तो बेशक अल्लाह भी इनकार करने वालों का दुश्मन है[5] (98) हमने आप पर बहुत ही खुली हुई आयतें उतारी हैं और उसका इनकार वही करेगा जो नाफ़रमान होगा (99) क्या (ऐसा नहीं हुआ कि) जब–जब उन्होंने कोई अहद (वचन) किया तो उन्हीं के कुछ लोगों ने उसको पीठ पीछे डाल दिया बल्कि उनमें अधिकांश मानते ही नहीं[6] (100) और जब उनके पास अल्लाह की ओर से पैग़म्बर आ गया जो पुष्टि (तस्दीक़) करता है उन चीज़ों की जो उनके पास हैं (यानी किताबें) तो उन्हीं किताब वालों में से एक गिरोह ने अल्लाह कि किताब को पीठ पीछे डाल दिया मानो वे (उसको) जानते ही नहीं[7] (101)

(1) यहूदी कहा करते थे कि जन्नत में तो हम ही जाएंगे, अल्लाह कहता है कि फिर मौत से क्यों डरते हो (2) यह केवल ज़बानी बातें थीं अन्दर से अपनी बुरी हरकतों को ख़ूब जानते थे (3) लम्बी आयु की तमन्ना इसलिए थी कि जब तक हो सके सज़ा से बचते रहें, इससे उनके दावे का झूठा होना पूरे तौर पर साबित हो गया कि जन्नत में हम ही जाएंगे (4) जिब्रईल सबसे बड़े फ़रिश्ते का नाम है जिनका काम नबियों तक वह्य पहुंचाना था, इनके बारे में यहूदियों का विचार यह था कि वे अज़ाब के फ़रिश्ते हैं और हमारे बड़ों को उन्होंने बहुत तकलीफ़ पहुँचाई है इसलिए उनसे ईर्ष्या करते थे और कहते थे कि अगर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर कोई और फरिश्ता वह्य लाए तो हम ईमान ले आएंगे, इसी का जवाब दिया जा रहा है (5) मीकाल या मीकाईल एक बड़े फरिश्ते का नाम है जिनके ज़िम्मे सृष्टि को रोज़ी पहुंचाना और वर्षा आदि है जैसा कि हदीसों में आता है, यहाँ साफ कह दिया गया कि अल्लाह से संबंध रखने वालों से दुश्मनी अल्लाह से दुश्मनी जैसा है (6) अल्लाह ने और उसके रसूलों ने कितने अहद व पैमान (प्रतिज्ञा) उनसे लिए और उन्होंने उनका उल्लंघन किया और उनमें बहुत से वे थे जो तौरेत को भी नहीं मानते (7) जब उन्होंने तौरेत को नज़र अंदाज़ कर दिया तो पवित्र क़ुर्आन पर क्या ईमान लाते।

बेशक मेरा हिमायती (समर्थक) अल्लाह है जिसने किताब उतारी और वह नेक बन्दों की हिमायत (समर्थन) करता है (196) और तुम उसके अलावा जिनको पुकारते हो वे तुम्हारी सहायता नहीं कर सकते और न ही वे अपने काम आ सकते (197) और अगर तुम उनको सत्य मार्ग की ओर बुलाओ तो वे सुनेंगे ही नहीं और आप उन्हें देखेंगे कि वे आपको ताक रहे हैं हालांकि वे देख नहीं सकते (198) माफ़ी का रवैया बनाइये, भलाई को करते रहिए और नादानों से किनारा कीजिए (199) और अगर कभी आपको शैतान का कचोका लगे तो अल्लाह की पनाह लीजिए बेशक वह खूब सुनने वाला खूब जानने वाला है[1] (200) बेशक परहेज़गारों का हाल यह है कि जब भी शैतान की ओर से ख़्याल छूकर भी गुज़रता है तो वे चौंक जाते हैं बस उनकी आँखें खुल जाती हैं (201) और जो उनके भाई बन्द हैं (शैतान) उनको गुमराही की ओर खींचे लिए जाते हैं फिर वे कमी नहीं करते[2] (202) और जब आप उनके पास कोई निशानी नहीं लाते तो वे कहते हैं आप क्यों न कोई निशानी चुन लाए, आप कह दीजिए मैं तो उसी के पीछे चलता हूँ जो वह्य मेरे पालनहार के पास से मुझ पर आती है, यह आपके पालनहार की ओर से बसीरत (अंतदृष्टि) की बातें हैं और हिदायत (संमार्ग) व रहमत (कृपा) है मानने वालों के लिए (203) और जब भी कुरआन पढ़ा जाए तो कान लगाकर उसे सुनो और खामोश रहो ताकि तुमपर कृपा हो[3] (204) और आप मन ही मन में सुबह व शाम अपने पालनहार को विनम्रता और भय के साथ याद करते रहिए और ऐसी आवाज़ से जो पुकार कर बोलने से कम हो, और बेख़बर न हो जाइए (205) जो भी आपके पालनहार के पास हैं वे उसकी बन्दगी से अकड़ते नहीं और उसकी पवित्रता बयान करते हैं और उसी को सज्दा करते हैं (206)

---

(1) पिछली आयतों में मूर्तिपूजकों को जो जाहिल और मूर्ख घोषित किया गया बहुत सम्भव था कि वे जाहिल इस पर गुस्सा होकर अशोभनीय हरकत करते इसीलिए माफ़ करने को कहा जा रहा है और अगर किसी समय मानवीय प्रवृत्ति के कारण उनकी किसी बुरी हरकत पर गुस्सा आए और शैतान चाहे कि दूर से छेड़ करके किसी हानिकारक कार्य पर तैयार कर दे जो उनके खुलक–ए–अज़ीम (महान सद्व्यवहार) को देखते हुए गिरी बात हो तो आप तुरन्त अल्लाह की शरण मांगिये, आपकी पवित्रता और मर्यादा के सामने उनकी कोई भी चाल सफल न होगी (2) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो मासूम (गुनाहों से सुरक्षित) हैं, शैतान का गुज़र वहाँ हो ही नहीं सकता, हाँ! परहेज़गारी का हाल यह है कि जब कभी शैतान अपना काम करना चाहता है तुरन्त सावधान हो जाते हैं और उसके नुकसान निगाहों के सामने आ जाते हैं और वे अल्लाह की शरण में आ जाते हैं और जो शैतान के भाई हैं शैतान उनको बहकाने में कोई कमी नहीं करता और यह लोग भी शैतान के अनुसरण में लगे रहते हैं (3) काफ़िर केवल ज़िद में विभिन्न प्रकार के मुअजिज़ों की मांग में लगे रहते हैं, यहाँ संकेत है कि कुरआन से बड़ा मुअजिज़ा (इलाही चमत्कार) और कौन सा होगा इसको ध्यान और शांति से सुनो, फिर आगे साधारण ज़िक्र (अल्लाह की याद) के कुछ शिष्टताओं का बयान हुआ है, फिर फरिश्तों का उदाहरण दिया गया है जो किसी समय भी अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल (असावधान) नहीं होते।

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ؕ اَلَمْ
تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۰۶﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ
مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ
وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۰۷﴾ اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا
سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿۱۰۸﴾ وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ
اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا
وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِىَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ
قَدِيْرٌ ﴿۱۰۹﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا
لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرٌ ﴿۱۱۰﴾ وَقَالُوْا لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا
اَوْ نَصٰرٰى ؕ تِلْكَ اَمَانِيُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۱﴾ بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗ
اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۱۲﴾

منزل۱

हम जब भी आयत मन्सूख (निरस्त) करते हैं या उसको भुला देते हैं तो उससे बेहतर या उस जैसी उतार देते हैं, क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह हर चीज़ पर ज़बरदस्त कुदरत (सामर्थ्य) रखने वाला है (106) क्या आप जानते नहीं कि अल्लाह ही के लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाहत (राज–सत्ता) है और तुम्हारे लिए अल्लाह के अलावा कोई भी समर्थक और मददगार नहीं[1] (107) क्या तुम चाहते हो कि अपने पैग़म्बर से वैसे ही सवाल करो जैसे मूसा से पहले सवाल किए जा चुके[2], और जो भी ईमान को कुफ़्र से बदलेगा तो वह सीधे रास्ते से भटक गया[3] (108) किताब वालों में से बहुत से (लोग) केवल अपने मन की ईर्ष्या के कारण यह चाहत रखते हैं कि काश वे तुम्हें तुम्हारे ईमान लाने के बाद काफ़िरों में पलटा दें[4] बावजूद यह कि सत्य उन के सामने खुल कर आ चुका, तो तुम लोग उनको माफ़ कर दो और उन पर ध्यान न दो यहाँ तक कि अल्लाह अपना आदेश भेज दे[5] बेशक अल्लाह हर चीज़ पर ज़बरदस्त कुदरत रखने वाला है (109) और नमाज़ की पाबन्दी रखो और ज़कात अदा करते रहो और अपने लिए तुम जो भी भलाई आगे भेज दोगे उसको अल्लाह के पास पाओगे, बेशक तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसको खूब–खूब देख रहा है[6] (110) और वे बोले कि जन्नत में तो वे ही दाख़िल होंगे जो यहूदी या ईसाई हैं, यह केवल उनकी तमन्नाएं हैं आप कह दीजिए कि अगर तुम सच्चे हो तो अपना तर्क पेश कर दो (111) हाँ लेकिन जो अपने आप को अल्लाह के हवाले कर दे और वह अच्छा काम करने वाला हो तो उसका बदला उसके पालनहार के पास है और उन पर न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे दुखी होंगे[7] (112)

---

(1) यहूदियों की एक आपत्ति थी कि तुम्हारी किताब में कुछ आयतें मंसूख (निरस्त) हुईं हैं अगर यह किताब अल्लाह की ओर से होती तो क्या जिस ऐब की वजह से आयत निरस्त की गई उस की ख़बर अल्लाह को न थी? कहा जा रहा है कि उस महानतम शासक को मालूम है कि कौन सी चीज़ कब उचित है वह जिस समय चाहे जिस चीज़ का आदेश दे और जब चाहे उससे रोक दे कि पहले वही आदेश उचित था और अब दूसरा हुक्म, अल्लाह तआला अपनी हिकमत के अनुसार परिस्थितियों में परिवर्तन करते रहते हैं और परिस्थितयों के अनुसार आदेश भी बदलते हैं बस जो भी आदेश निरस्त किया जाता है उसकी जगह ऐसा आदेश लाया जाता है जो बदले हुए हालात के लिए ज़्यादा उचित होता है और यह बदलाव अल्लाह ने जब तक चाहे किये अंततः दीन (धर्म) मुकम्मल कर दिया गया और क़यामत तक के लिए उसको चुन लिया गया अब किसी को उसमें तनिक परिवर्तन की अनुमति नहीं है (2) ज़ाहिर में ईमान वालों को सम्बोधित किया जा रहा है कि जिस प्रकार यहूदी हज़रत मूसा से गुस्ताख़ी भरे प्रश्न और बेहूदा फ़रमाइशों की भरमार करते रहे हैं जिनके उल्लेख से बाइबिल भरी पड़ी है कहीं तुम भी उसी रविश पर न चल पड़ना (3) जो कोई भी यहूदियों की बातों पर भरोसा करेगा उसका ईमान समाप्त होता रहेगा (4) खुद तो सत्य को मानते नहीं और जो मान चुके उनके बारे में कोशिश करते हैं कि वे भी उससे फिर जाएं, केवल जलन में (5) यानी जब तक हमारा आदेश न आए उनकी बातों पर सब्र किये जाओ, आख़िर यह आदेश आ गया कि यहूदियों को मदीने से निकाल दिया जाए (6) तुम जो कुछ भलाई कर रहे हो सब तुम्हारे ख़ज़ाने में जमा हो रहा है और उसकी बुनियाद पर सफलता तुम्हें मिलेगी (7) यह दीन (धर्म) सफ़लता जिस पर निर्भर करती है यह किसी क़ौम की जागीर नहीं, जो भी इस पर चलेगा चाहे वह किसी रंग व नस्ल का हो वह कामयाब होगा।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَيْءٍ ۖ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى
لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلٰى شَيْءٍ ۙ وَّهُمْ يَتْلُونَ الْكِتٰبَ ۗ كَذٰلِكَ قَالَ
الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١١٣﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ
مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ أَنْ يُّذْكَرَ فِيهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِي خَرَابِهَا ۗ
أُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ يَّدْخُلُوهَآ إِلَّا خَآئِفِينَ ۗ لَهُمْ فِي
الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١٤﴾ وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ
وَالْمَغْرِبُ ۚ فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ
عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ۖ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ ۖ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُونَ ﴿١١٦﴾ بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَ
إِذَا قَضٰٓى أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهٗ كُنْ فَيَكُونُ ﴿١١٧﴾ وَقَالَ الَّذِينَ
لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ أَوْ تَأْتِينَآ اٰيَةٌ ۗ كَذٰلِكَ
قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ۘ تَشٰبَهَتْ قُلُوبُهُمْ ۗ
قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوقِنُونَ ﴿١١٨﴾ إِنَّآ أَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ
بَشِيرًا وَّنَذِيرًا ۙ وَّلَا تُسْأَلُ عَنْ أَصْحٰبِ الْجَحِيمِ ﴿١١٩﴾

منزل ١

और यहूदी कहते हैं कि ईसाइयों की कोई बुनियाद नहीं और ईसाई कहते हैं कि यहूदियों की कोई बुनियाद नहीं जबकि वे (सब अल्लाह की) किताब को पढ़ते हैं, यही बात वे लोग भी कहते हैं जो ज्ञान नहीं रखते (बिल्कुल) उन्हीं की बात की तरह, तो अल्लाह तआला उनके बीच क़यामत के दिन फ़ैसला कर देगा उन चीज़ों में जिन में वे इख़्तिलाफ़ (झगड़ा) करते रहे हैं[1] (113) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन हो सकता है जो अल्लाह की मस्जिदों में उसका नाम लेने से रोके और उनकी बरबादी के लिए प्रयास करता रहे, ऐसों को यह हक़ नहीं कि वहाँ दाखिल हों मगर हाँ डरते–डरते, दुनिया में भी उनके लिए रुसवाई है और आख़िरत में भी उनके लिए बड़ा अज़ाब है[2] (114) और अल्लाह ही का है पूरब भी और पश्चिम भी तो तुम जिधर भी मुँह करो बस उधर अल्लाह है बेशक अल्लाह बड़ी वुसअत वाला (सर्वव्यापी) बड़े ज्ञान वाला है[3] (115) और वे कहते हैं अल्लाह ने एक लड़का बना लिया है[4], वह पवित्र है, बल्कि जो कुछ भी आसमानों और ज़मीन में है सब उसी का है, सब उसी के आज्ञाकारी हैं (116) आसमानों और ज़मीन को अस्तित्व प्रदान करने वाला है और वह जब किसी काम का फ़ैसला कर लेता है तो उससे कहता है हो जा बस वह हो जाता है[5] (117) और वे लोग जो ज्ञान नहीं रखते वे कहते हैं कि अल्लाह हमसे बात क्यों नहीं कर लेता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आ जाती, जो पहले हुए हैं वे भी यही बात कहते थे जैसे यह कहते हैं, इन (सब) के दिल एक ही जैसे हैं, हम तो निशानियाँ ज़ाहिर कर चुके उन लोगों के लिए जो विश्वास रखते हैं (118) हमने आप को सत्य के साथ खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है और जहन्नम वालों के बारे में आपसे नहीं पूछा जाएगा[6] (119)

(1) यहूदियों ने तौरेत देखकर समझ लिया कि जब ईसाई हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को खुदा का बेटा कहते हैं तो काफ़िर हो गए और ईसाइयों ने इंजील (बाईबल) पढ़ कर विश्वास कर लिया कि जब यहूदी हज़रत ईसा को नबी नहीं मानते तो वे काफ़िर हो गए, यही मक्का के मुश्रिकों का भी ख़्याल था जिनके पास किताब भी नहीं थी, सब अपने अलावा दूसरों को गलत समझते थे (2) हुदैबिया संधि के अवसर पर मुसलमानों को अल्लाह के घर जाने से मक्का के मुश्रिकों ने रोका और खुद उन्होंने अल्लाह के घर को बुतख़ाना (मूर्ति गृह) बना रखा था, यह उनके अति अहंकारपूर्ण काम थे हालांकि उनको चाहिए था कि वे आदर करते और डरते–डरते अल्लाह के घर में दाखिल होते, इसका क्रियात्मक रूप मक्का विजय के अवसर पर सामने आया जब मुसलमान जीत गये तो इन मुश्रिकों को डरते–डरते अल्लाह के घर (बैतुल्लाह) में दाखिल होना पड़ा (3) हर एक अपने क़िब्ले को बेहतर बताता था यहाँ बात साफ़ कर दी गई कि उद्देश्य किब्ला नहीं, अल्लाह है जिधर भी मुँह हो अल्लाह ध्यान देगा हाँ काबा की ओर मुँह करने का आदेश इसलिए है कि सब एकाग्रता के साथ समान तरीके पर अल्लाह की इबादत में व्यस्त हों और काबे का निर्धारण इसलिए हुआ कि पहले से अल्लाह ने इसको अपने से संबद्ध किया (4) यहूदियों ने हज़रत उज़ैर को और ईसाइयों ने हज़रत ईसा को खुदा का बेटा बताया (5) हज़रत आदम को बिना माँ–बाप के, हव्वा को बिना माँ के पैदा किया तो हज़रत ईसा को बिना बाप के पैदा करना क्या मुश्किल था (6) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इतमिनान दिलाया जा रहा है कि आपने बात पहुँचा दी अब मानना या न मानना उनका काम है आप पर कोई आरोप नहीं।

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ
قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ
الَّذِىْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۲۰﴾
اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ
بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ
اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۲﴾
وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا
عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ وَاِذِ ابْتَلٰٓى
اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّىْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ
قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِىْ ؕ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۲۴﴾ وَاِذْ جَعَلْنَا
الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَعَهِدْنَآ
اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ
السُّجُوْدِ ﴿۱۲۵﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ
اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ
كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۲۶﴾

منزل ۱

और यहूदी और ईसाई आपसे उस समय तक खुश हो ही नहीं सकते जब तक आप उनके मज़हब पर न चलने लगें, आप कह दीजिए कि अल्लाह की बताई राह ही असल राह है और अगर आप उस ज्ञान के बाद जो आपके पास आ चुका है उनकी इच्छाओं पर चले तो अल्लाह की ओर से आपका न कोई समर्थन करने वाला होगा न सहायता करने वाला[1] (120) जिन लोगों को हमने किताब दी वे उसको उसी तरह पढ़ते हैं जिस तरह उसको पढ़ने का हक़ है यही वे लोग हैं जो उस पर ईमान लाते हैं और जिसने उसका इनकार किया तो वही लोग नुक़सान में हैं (121) ऐ बनी इस्राईल! हमारे उस इनआम को याद करो जो हमने तुम पर किया और हम ही ने तुम को सारे संसारों पर बरतरी (प्रधानता) दी (122) और उस दिन से डरो जब कोई किसी के कुछ काम न आएगा और न उससे कोई बदला स्वीकार किया जाएगा और न कोई सिफ़ारिश उसको फायदा देगी और न उसकी मदद की जाएगी[2] (123) और जब इब्राहीम को उनके पालनहार ने कई बातों में आज़माया तो उन्होंने उसको पूरा कर दिखाया[3], अल्लाह ने कहा कि ज़रूर मैं तुम्हें लोगों के लिए पेशवा (पथ प्रदर्शक) बनाने वाला हूँ[4] वे बोले और मेरी औलाद में से, उसने कहा मेरा वादा अत्याचारियों को प्राप्त न होगा[5] (124) और जब हमने घर (काबा) को लोगों के लिए केन्द्र और शांति का स्थान निर्धारित किया और (आदेश दिया कि) मक़ाम–ए–इब्राहीम को नमाज़ की जगह बनाओ और इब्राहीम व इस्माईल से अहद (वचन) लिया कि मेरे घर को तवाफ़ करने वालों और एतिकाफ़ करने वालों और रूकूअ़ व सज्दा करने वालों के लिए पाक कर दो (125) और जब इब्राहीम ने दुआ की कि ऐ मेरे पालनहार! इस शहर को अमन स्थली बना दे और यहाँ वालों को फलों की रोज़ी दे जो उनमें अल्लाह को और आख़िरत के दिन को मानें, उसने कहाः और जो न मानेगा तो मैं उसको भी कुछ (दिनों) आनंद लेने का अवसर दूँगा फिर उसको घसीट कर दोज़ख के अज़ाब की ओर ले जाऊँगा और वह कैसा बुरा ठिकाना है[6] (126)

(1) यहूदियों और ईसाइयों की बड़ी संख्या विरोधियों की थी, उनके बारे में कहा जा रहा है कि वे मानने वाले हैं ही नहीं, वे तो यह चाहते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही अपना दीन छोड़ दें! आगे उनमें न्यायप्रिय लोगों का उल्लेख हो रहा है जो अपनी किताबों को पढ़ते रहे हैं और उन्होंने उनमें हेर–फेर नहीं की तो अल्लाह ने भी उनको आख़िरी किताब पर भी ईमान का अवसर प्रदान किया (2) बनी इस्राईल को अपने ज़माने में जो प्रधानता मिली उसका उल्लेख करने के बाद कहा जा रहा है कि यह मत सोचना कि हम जो भी करें हमारी सिफ़ारिश हो जाएगी और काम बन जाएगा, ऐसे लोगों के लिए वहाँ कोई बदला और कोई सिफारिश काम न आएगी (3) आग में उनको डाला गया, घर–बार छोड़ने का आदेश हुआ, पत्नी और दुध मुँहे बच्चे को मक्का में छोड़ आने का आदेश हुआ जहाँ न पानी था न खाने का सामान और फिर प्रिय सपूत को ज़बह कर देने का आदेश हुआ, हज़रत इब्राहीम हर परीक्षा में सफल हुए (4) उनके बाद सारे पैग़म्बर उनके वंश में ही हुए और सबको उनके रास्ते पर चलने का आदेश हुआ (5) बात साफ़ कर दी गई कि नुबूव्वत व इमामत (नेतृत्व) उन्हीं लोगों को मिलेगी जो उनके रास्ते पर रहेंगे, लंबे ज़माने तक इस्हाक़ की संतान में वह सिलसिला रहा है फिर जब वे बिल्कुल फिर गये तो अंतिम पैग़म्बर हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की संतान से हुए (6) हज़रत इब्राहीम की दुआ स्वीकार हुई, हाँ फलों की रोज़ी की दुआ हज़रत इब्राहीम ने केवल ईमान वालों के लिए की थी अल्लाह ने कहा कि यह दुनिया तो हम काफ़िरों को भी देंगे।

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ
اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَ
مِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ
اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا
مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَ
يُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٢٩﴾ وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ
اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ۚ
وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗۤ اَسْلِمْ ۙ
قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٣١﴾ وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَ
يَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا
وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ
الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِيْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ
اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ
وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٣﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ
وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٤﴾

منزل۱

और जब इब्राहीम व इस्माईल घर की बुनियादों को उठा रहे थे (तो यह दुआ करते जाते थे कि) ऐ हमारे पालनहार! हमसे (यह काम) स्वीकार कर ले, बेशक तू बहुत सुनने वाला बहुत जानने वाला है(127) ऐ हमारे पालनहार! हम दोनों को अपना पूरे तौर पर आज्ञाकारी बना और हमारी संतान में भी ऐसी उम्मत (सम्प्रदाय) बना जो पूरी तरह तेरी आज्ञाकारी हो और हमें हमारे मनासिक[1] बता दे और हमें माफ़ कर, बेशक तू बहुत माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है(128) ऐ हमारे पालनहार! उनमें एक ऐसा पैग़म्बर भेज दे जो उनको तेरी आयतें पढ़ कर सुनाए और उनको किताब व हिकमत (तत्वदर्शिता) की शिक्षा दे और उनका तज़किया करे, बेशक तू ही है जो ज़बरदस्त है भरपूर हिकमत वाला (तत्वदर्शी) है[2] (129) और कौन इब्राहीम की मिल्लत से मुँह मोड़ेगा उसके अलावा जिसने अपने आप को मूर्खता में डाल रखा हो और हमने तो दुनिया में उनको चुन लिया है और आख़िरत में वे भलाई करने वालों ही में होंगे[3] (130) जब उनसे उनके पालनहार ने कहा कि आज्ञाकारी बन जाओ, (नतमस्तक हो जाओ) वे बोले कि मैं तो तमाम जहान के पालनहार का हो चुका (131) और इसी की इब्राहीम ने अपने बेटों को वसीयत की और याकूब ने, कि ऐ बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यह दीन चुन लिया है तो तुम्हें हरगिज़ मौत न आए मगर इस हाल में कि तुम मुसलमान (आज्ञाकारी) हो (132) क्या तुम (उस समय) मौजूद थे जब याकूब की मौत का समय आ पहुंचा, जब उन्होंने अपने बेटों से कहा कि तुम मेरे बाद किसकी बन्दगी करोगे? वे बोले आपके माबूद (उपास्य) की, आपके बाप–दादा इब्राहीम व इस्माईल और इस्हाक़ के माबूद की, एक (ही) माबूद की और हम तो उसी के आज्ञाकारी हैं[4] (133) यह वह उम्मत है जो गुज़र चुकी, उसने जो कमाया वह उसके लिए और जो तुम कमाओगे वह तुम्हारे लिए है और वे जो कुछ किया करते थे उसकी पूछ–ताछ तुमसे न होगी[5] (134)

(1) मनसक का बहुवचन मनासिक है जिस का अर्थ है "इबादत" विशेष रूप से हज में किए जान वाले काम (2) यह दुआ हज़रत इब्राहीम और उनके बड़े सुपुत्र हज़रत इस्माईल ने की और उन दोनों के वंश में केवल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही नबी हुए इस प्रकार यह दुआ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने से स्वीकार हुई और उन लोगों का खण्डन हो गया जो नुबूव्वत को केवल इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम की ही औलाद में होना ज़रूरी समझते थे, आयत में तीन बातों को पैग़म्बर बना कर भेजे जाने के मक़सद के तौर पर उल्लेख किया गया है– 1. आयतों की तिलावत (पाठ) 2. उसके अर्थ का स्पष्टीकरण और कथनी व करनी से उसकी व्याख्या 3. उम्मत के लोगों का तज़्किया यानी उनकी अन्तरात्मा की सफ़ाई (3) यहूदियों और ईसाइयों ने अहले किताब (आसमानी किताब वाले) होने के बावजूद अपनी–अपनी किताबों में पैग़म्बरों की छवि को दागदार बनाने में कोई कमी नहीं की, इसीलिए क़ुरआन जहाँ–जहाँ पैग़म्बरों का उल्लेख करता है अधिकांशतः उन लोगों की चरित्रीय व आध्यात्मिक महानता पर भी ज़ोर देता है (4) इसमें एक ओर यहूदियों का खण्डन है जो यह कहते थे कि हज़रत याकूब ने यहूदी बनने की वसीयत की थी और दूसरी ओर मुसलमानों को चेतावनी है कि वे अपनी आने वाली नस्लों की चिंता करें और संतुष्ट होकर न बैठें (5) यहूदियों और ईसाइयों का यह विश्वास (अक़ीदा) था कि बाप–दादा की बुराईयों पर उनकी औलाद भी पकड़ी जाएगी और उनकी अच्छाइयों का औलाद को भी बदला दिया जाएगा इस का खण्डन हो रहा है।

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ
حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٣٥﴾ قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَ
الْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِىَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِىَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ
رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۫ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٦﴾ فَاِنْ
اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا
هُمْ فِىْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣٧﴾
صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫ وَّنَحْنُ لَهٗ
عٰبِدُوْنَ ﴿١٣٨﴾ قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِى اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ
اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿١٣٩﴾ اَمْ تَقُوْلُوْنَ
اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ كَانُوْا
هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ اَظْلَمُ
مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٠﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ
مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤١﴾

منزل ۱

वे कहते हैं कि यहूदी या ईसाई हो जाओ राह पर आ जाओगे, आप कह दीजिए की बल्कि हम तो एकाग्र रहने वाले इब्राहीम की मिल्लत पर हैं और वे तो शिर्क करने वालों में न थे[1] (135) तुम कह दो कि हम अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस पर जो हम पर उतारा गया और उस पर जो इब्राहीम व इस्माईल और इस्हाक़ व याकूब और (याकूब की) संतान पर उतारा गया और जो मूसा व ईसा को दिया गया और नबियों को उनके पालनहार की ओर से दिया गया, हम उनमें से किसी के बीच फर्क नहीं करते और हम उसी के फरमांबरदार (आज्ञाकारी) हैं[2] (136) तो अगर वे भी उसी तरह ईमान ले आएं जैसे तुम ईमान लाए हो तो वे राह पर आगए और अगर वे फिरे ही रहे तब तो वे बड़ी दुश्मनी में पड़े ही हैं, बस जल्द ही अल्लाह तआला तुम्हारे लिए उनसे निपट लेगा और वह बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है[3] (137) (कह दो कि हमने) अल्लाह का रंग (स्वीकार कर लिया है) और अल्लाह से बेहतर रंग किसका हो सकता है और हम तो उसी की बंदगी करने वाले हैं (138) आप कह दीजिए कि क्या तुम हमसे अल्लाह के बारे में हुज्जत करते हो जबकि वह हमारा भी पालनहार है और तुम्हारा भी पालनहार है, और हमारे लिए हमारे काम हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे काम, और हमने तो उसके लिए अपने को शुद्ध (ख़ालिस) कर लिया है[4] (139) या तुम यह कहते हो कि इब्राहीम व इस्माईल और इस्हाक़ व याकूब तथा (याकूब) की संतान यहूदी या ईसाई थे, आप कह दीजिए कि तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह[5]? और उससे बड़ा ज़ालिम कौन होगा जो अपने पास मौजूद उस प्रमाण (शहादत) को छिपाए जो अल्लाह की ओर से हो, और तुम जो कुछ करते रहते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है[6] (140) यह वह उम्मत है जो गुज़र चुकी, उसने जो कमाया वह उसके लिए है और जो तुमने कमाया वह तुम्हारे लिए है और वे जो कुछ किया करते थे उसकी पूछ–ताछ तुमसे नहीं होगी (141)

(1) इसमें यह इशारा भी हो गया कि यहूदी और ईसाई मुश्रिक हो चुके और यहां आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की मिल्लत को अपनाने का आदेश दिया जा रहा है, दूसरी आयत में "फबिहुदाहुमुक्तदिह" कह कर दूसरे पैग़म्बरों के रास्ते पर रहने के लिए कहा गया, इसलिए कि सारे पैग़म्बर एक ही रास्ते पर हैं, हज़रत इब्राहीम का ख़ास तौर पर उल्लेख इसलिए है कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वंश प्रवर्तक (जद्दे आला) हैं और उनकी शरीअत (धर्मशास्त्र) और आपकी शरीयत में बहुत से अंश भी एक जैसे हैं और उनको उस समय यहूदी, ईसाई और मुश्रिक सभी मानते थे वह "हनफ़ी मिल्लत" के प्रवर्तक हैं (2) सत्यवादियों की यह विशेषता है कि वे हर पैग़म्बर पर ईमान रखते हैं, अहले किताब (किताब वालों) का हाल यह था कि वे अपने पैग़म्बर को तो मानते थे और बहुत सारे पैग़म्बरों का इनकार करते थे (3) सारे पैग़म्बरों को और विशेष रूप से अंतिम पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मानना उनके लिए ज़रूरी है और यदि नहीं मानते तो तुम मत घबराओ अल्लाह उनसे निपट लेगा और कह दो कि हमने तो वह दीन (धर्म) स्वीकार कर लिया जो पवित्र कर देता है उसी को "सिब्ग़तुल्ला" (अल्लाह का रंग) कहा जा रहा है, इसमें ईसाइयों की रीति "बपतस्मा" का खण्डन भी हो गया जिसे वे "इस्तिबाग़" भी कहते हैं, इसका तरीका यह होता है कि किसी भी व्यक्ति को ईसाई बनाते समय उसको रंगीन पानी से स्नान कराते हैं, उनके विचार से इस तरह उस पर ईसाई धर्म का रंग चढ़ जाता है (4) यहूदियों का दावा था कि केवल हमारे काम ही स्वीकार होते हैं बाकी अल्लाह के यहां किसी की कोई हैसियत नहीं, इसका खण्डन हो रहा है (5) इन पैग़म्बरों के बारे में यहूदी और ईसाई जो अपना–अपना दावा करते थे, उसको नकारा जा रहा है (6) बात साफ़ की जा रही है कि तौरेत और इंजील में जो प्रमाण (शहादतें) मौजूद हैं यह उनको छिपाने का परिणाम है, फिर उनको डराया जा रहा है कि तुम्हारी सब करतूत अल्लाह को मालूम हैं।

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّاهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ
الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا ۚ قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ
إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٤٢﴾ وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ
عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۗ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي
كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ ۚ
وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ
لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١٤٣﴾ قَدْ نَرَىٰ تَقَلُّبَ
وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ ۖ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا ۚ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا
يَعْمَلُونَ ﴿١٤٤﴾ وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ مَا تَبِعُوا
قِبْلَتَكَ ۚ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۚ
وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ إِنَّكَ
إِذًا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٥﴾ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ
أَبْنَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤٦﴾

منزل ١

लोगों में मूर्ख अब यह कहेंगे कि किस चीज़ ने उनको उनके उस क़िब्ले से फेर दिया जिस पर (अब तक) वे थे, आप कह दीजिए कि पूरब भी अल्लाह का पश्चिम भी, वह जिसको चाहता है सीधा रास्ता चला देता है[1] (142) और इसी तरह हमने तुमको मरकज़ी (केन्द्रीय) उम्मत बनाया ताकि तुम लोगों पर गवाह रहो और पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम पर गवाह रहें[2] और जिस क़िब्ले पर आप थे वह तो हमने इसलिए रखा था कि हम देख लें[3] कि फिर–जाने वालों में कौन पैग़म्बर की राह पर चलने वाले हैं और यह तो भारी ही था उन लोगों के अलावा जिनको अल्लाह ने राह बता दी है[4] और ऐसा नहीं कि अल्लाह तआला तुम्हारे ईमान को बर्बाद कर दे[5], बेशक अल्लाह लोगों के साथ बड़ी मेहरबानी करने वाला बहुत ही दयालू है (143) हम आसमान की ओर बार–बार आपके मुंह करने को देख रहे हैं तो हम ज़रूर आपको उस क़िब्ले की ओर फेर देंगे जो आपको पसंद है, बस अब आप अपने चेहरे को मस्जिद–ए–हराम की ओर कर लीजिए[6] और तुम लोग जहां कहीं भी हो अपने मुंह को उसी की ओर कर लिया करो और बेशक जिनको किताब मिल चुकी है वे ख़ूब जानते हैं कि वह उनके पालनहार की ओर से सच्ची है और जो कुछ भी वे करते हैं अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है (144) और जिन लोगों को किताब दी गई है अगर आप उनके सामने हर प्रकार की निशानी ले आएं (तो भी) वे आपके क़िब्ले के पीछे नहीं होंगे और आप भी उनके क़िब्ले के पीछे होने वाले नहीं और न वे आपस में एक दूसरे के क़िब्ले के पीछे होने वाले हैं और अगर आप ज्ञान के आ जाने के बाद भी उनकी इच्छाओं पर चलें तब तो आप ज़रूर ज़ालिमों में हो जाएंगे[7] (145) जिनको हमने किताब दी है वे आपको उसी तरह पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं और बेशक उनमें कुछ लोग जानते–बूझते हक़ (सत्य) को छिपाते हैं (146)

---

(1) हिजरत के बाद डेढ़ साल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैतुलमक़दिस की ओर चेहरा करके नमाज़ पढ़ते रहे, उसके बाद काबे की ओर चेहरा करने का आदेश हुआ तो उस समय यहूदियों, मुश्रिकों और मुनाफ़िक़ों ने शक–संदेह पैदा करने शुरू कर दिये तो यह आयतें उतरीं कि किसी ओर चेहरा कर लेना अस्ल इबादत नहीं है, अल्लाह की बात मानना अस्ल इबादत है (2) ''वसत'' उसको कहते हैं जो बीच में हो, और केन्द्रियता (मर्कज़ीयत) रखता हो, और संतुलन के साथ क़ायम हो, यह विशेषता हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत (सम्प्रदाय) की है, इसीलिए क़यामत में जब दूसरी उम्मतें पैग़म्बरों के आने का इनकार करेंगी तो यह उम्मत उनके आने की गवाही देगी और बताएगी कि हमें अपने पैग़म्बर से यह ख़बर मिली और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मत पर गवाह होंगे (3) अल्लाह के ज्ञान में सब कुछ है, यहां इसका मतलब उस ज्ञान का प्रकट होना है, इसीलिए यहां उसका अनुवाद "देख लें" किया गया है (4) यह अस्ल क़िब्ला तो तुम्हारा क़िब्ला ही था जो हज़रत इब्राहीम के ज़माने से चला आ रहा था कुछ ज़माने के लिए बैतुल मक़दिस को निर्धारित किया गया तो वह केवल परीक्षा के लिए था कि कौन आज्ञापालन करता रहता है और कौन दीन (धर्म) से फिर जाता है (5) यहूदियों ने आपत्ति जताई और दिलों में यह दुविधा पैदा हुई कि जिन लोगों ने बैतुलमक़दिस की ओर चेहरा करके नमाज़ें पढ़ीं वह सब बर्बाद हो गईं उस पर यह आयत उतरी कि वह अल्लाह के आदेश का पालन था और यह भी अल्लाह के आदेश का पालन है (6) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दिल यही चाहता था कि काबा की ओर चेहरे करने का आदेश आ जाए, इसीलिए बार–बार आसमान की ओर चेहरा करते थे कि शायद फ़रिश्ता आदेश लेकर आ जाए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बनू सलमा नामी क़बीले में ज़ुहर की नमाज़ पढ़ रहे थे उसी बीच क़िब्ला बदले जाने का आदेश आया, ⇒

الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١٤٧﴾ وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ
مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۗ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ۭ
اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٤٨﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۭ وَاِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ۭ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا
تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٩﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۭ
وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ
حُجَّةٌ ۤ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۤ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِيْ ۤ وَلِاُتِمَّ
نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٠﴾ كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ
يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا
لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٥١﴾ فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ﴿١٥٢﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٣﴾
وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ۭ بَلْ اَحْيَاۗءٌ وَّلٰكِنْ لَّا
تَشْعُرُوْنَ ﴿١٥٤﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ
الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ۭ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾ الَّذِيْنَ اِذَآ
اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿١٥٦﴾

منزل ١

सत्य वही है जो आपके पालनहार की आर से (आया) है तो आप कहीं संदेह करने वालों में न हो जाएं[1] (147) और हर एक के लिए कोई दिशा होती है जिसकी ओर वह चेहरा करता है तो तुम भले कामों में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो, तुम जहां कहीं भी होगे अल्लाह तुम सब को हाज़िर कर देगा[2], बेशक अल्लाह (तआला) हर चीज़ पर जबरदस्त कुदरत रखने वाला है (148) आप जहां भी जाएं अपने चेहरे को मस्जिद–ए–हराम की ओर कर लिया करें और यह आपके पालनहार की ओर से बिल्कुल सत्य है और तुम जो करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है[3] (149) आप जहां भी जाएं अपने चेहरे को मस्जिद–ए–हराम की ओर कर लिया करें और तुम लोग भी जहां कहीं भी हो अपने चेहरों को उसकी ओर कर लिया करो ताकि लोगों के लिए तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई दलील न रह जाए उन लोगों के अलावा जो अन्याय करने वाले हैं तो तुम उनसे मत डरो और मुझ ही से डरो और यह (क़िब्ले का बदलना इसीलिए है) ताकि मैं तुम पर अपनी नेअ़मत पूरी कर दूं और ताकि तुम ठीक रास्ते पर आ जाओ[4] (150) जैसे कि हमने तुम में तुम्हीं में से एक रसूल भेजा जो हमारी आयतें तुम्हें पढ़ कर सुनाता है और तुम्हारा शुद्धिकरण करता है और तुम्हें किताब व हिकमत की शिक्षा देता है और तुम्हें वह बातें सिखाता है[5] जो तुम जानते न थे (151) तुम मुझे याद करते रहो मैं तुम्हें याद करता रहूंगा और मेरे लिए आभारी बनकर रहो और मेरी नाशुक्री मत करो[6] (152) ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज़ से मदद हासिल करो बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है[7] (153) और जो अल्लाह के रास्ते में मारे गए उनको मुर्दा मत कहो बल्कि (वे) ज़िन्दा हैं लेकिन तुम महसूस नहीं करते[8] (154) और हम तुमको ज़रूर परखेंगे कुछ डर से, कुछ भूख से और मालों और जानों और फलों में कमी करके और सब्र करने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए[9] (155) यह वे लोग हैं कि जब उन पर कोई मुसीबत आ पड़ती है तो कहते हैं कि बेशक हम अल्लाह ही के लिए है और हम उसी की ओर लौट कर जाने वाले हैं[10] (156)

⟹ दो रकअतें बैतुल मक़दिस की ओर चेहरा कर के पढ़ी जा चुकी थीं, दो रकअतें काबा की ओर चेहरा करके पढ़ी गईं, इसी लिए इस मस्जिद को मस्जिद–ए–क़िब्लतैन (दो क़िब्लों वाली मस्जिद) कहते हैं (7) यानी यह सब उनकी हठधर्मी है और वे जो यह कहते हैं कि आप दोबारा बैतुल मक़दिस को क़िब्ला बना लें तो हम आप की पैरवी कर लेंगे यह सब धोखा है, आप इसका ख़याल भी दिल में न लाए ।

(1) यानी अगर आप का यह विचार हो कि काश अहल–ए–किताब भी इस बात को मान लें ताकि संदेह उत्पन्न करते न फिरें तो जान लीजिए कि वे आपको पूरी तरह जानते हैं कि आप नबी हैं लेकिन वे केवल ज़िद में इसको छिपाते हैं (2) विभिन्न संप्रदायों के विभिन्न क़िब्ले रहे हैं और तुम भी जब विभिन्न क्षेत्रों से काबे की ओर चेहरा करते हो तो किसी का चेहरा पश्चिम की ओर होता है किसी का पूरब की ओर, इन चीज़ों में झगड़ा मत करो तुम जहां भी होगे अल्लाह तुमको हश्र के मैदान में जमा करेगा और जिसने बताए हुए तरीक़े के अनुसार इबादत की है वह स्वीकार की जाएगी (3) ताक़ीद बार–बार इसलिए है कि बात हर एक के दिल में उतर जाए और उसके विभिन्न कारण भी सामने आ जाएं (4) तौरेत में मौजूद है कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का क़िब्ला काबा है और अंतिम पैग़म्बर को भी उसी की ओर चेहरा करने का आदेश होगा, क़िब्ला न बदलता तो यहूदी भी इल्ज़ाम देते, मक्का के मुश्रिक भी ताना देते कि दावा है इब्राहीम की मिल्लत का और चेहरा है दूसरे क़िब्ले की ओर, अब दोनों को बहस करने का अवसर न रहा फिर भी जो ज़िद्दी लोग विभिन्न आपत्तियां कर रहे थे उनके बारे में कहा जा रहा है कि उनसे डरने की ज़रूरत नहीं अल्लाह ने तुम पर बड़ा इनआम किया और अस्ल राह बता दी ⟹

أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٧﴾
إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِن شَعَائِرِ اللَّهِ ۖ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ
شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ
مِن بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ۙ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَ
يَلْعَنُهُمُ اللَّاعِنُونَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُوا
فَأُولَٰئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٦١﴾ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ
وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿١٦٢﴾ وَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَٰنُ
الرَّحِيمُ ﴿١٦٣﴾ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ
وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنزَلَ
اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِن مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا
وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيَاحِ وَالسَّحَابِ
الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٤﴾

منزل ١

यही वे लोग हैं जिन पर उनके पालनहार की ओर से कृपा है और रहमत (दया) है और यही लोग (सीधी) राह पाने वाले हैं (157) बेशक! सफ़ा व मरवा (दोनों पहाड़ियां) अल्लाह की निशानियों में से हैं तो जो भी (अल्लाह के) घर का हज करे या उमरह करे तो उसके लिए इन दोनों का चक्कर लगाने (यानी सई करने) में कोई हरज नहीं और जो ख़ुशी से कोई भलाई करे तो निःसंदेह अल्लाह बड़ी क़द्र करने वाला ख़ूब जानने वाला है[1] (158) बेशक वे लोग जो हमारी उतारी हुई खुली निशानियों को और हिदायत (निर्देश) को छिपाते हैं बावजूद इसके कि हमने उसको लोगों के लिए किताब में साफ़–साफ़ बयान कर दिया है, यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह लानत (धिक्कार) करता है और लानत करने वाले उन पर लानत करते हैं[2] (159) हाँ जिन्होंने तौबा की और सुधार कर ली और बात साफ़ कर दी तो यह वे लोग हैं जिनकी मैं तौबा स्वीकार करता हूं और मैं बहुत तौबा स्वीकार करने वाला बहुत ही दया करने वाला हूं[3] (160) निश्चित ही जिन्होंने इनकार किया और इनकार की हालत में वे मर गए तो ये वे लोग हैं कि इन पर अल्लाह की (भी) लानत है और फरिश्तों की भी और तमाम लोगों की (161) इसी में वे हमेशा रहेंगे न अज़ाब उनसे हलका किया जाएगा और न उनको मोहलत दी जाएगी (162) और तुम्हारा मअबूद (पूज्य) तो एक ही मअबूद (पूज्य) है उस रहमान व रहीम (महाकृपालु व अति दयालु) के अलावा कोई मअबूद (पूज्य) नहीं (163) बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन के उलटफेर में और उन जहाज़ों में जो समुद्र में उन चीज़ों को लेकर चलते हैं जो लोगों को फायदा पहुंचाती है और उस पानी में जो अल्लाह ने ऊपर से उतारा फिर उससे ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा कर दिया और उसमें हर प्रकार के जानवर फैला दिए और हवा के चलाने में और उस बादल में जो आसमान और ज़मीन के बीच काम पर लगे हुए हैं ज़रूर निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सूझ–बूझ रखते हैं[4] (164)

⟹ (5) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की दुआ स्वीकार हुई और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो हज़रत इब्राहीम व इस्माईल अ़लैहिस्सलाम के वंश में से हैं नबी बनाकर भेजे गये और हज़रत इब्राहीम ने अपनी दुआ में पैग़म्बर बनाकर भेजे जाने के जिन उद्देश्यों का उल्लेख किया था वे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूरे किये और यही इस उम्मत पर अल्लाह का सबसे बड़ा इनआ़म है (6) इन इनआ़मों पर अल्लाह का शुक्र करो और, और भी ज़्यादा इनआ़मों के हक़दार बनो (7) आज्ञापालन में कठिनाई आती है तो सब्र और नमाज़ से शक्ति प्राप्त करो। (8) इस जीवन में अल्लाह उनको खिलाता–पिलाता है और वे आनंदित होते हैं, तुम इसको महसूस नहीं करते (9) शहादत सब्र का उच्चतम रूप है फिर सब्र के प्रकारों का बयान हो रहा है, सब्र करने वालों को शुभ समाचार सुनाया जा रहा है (10) आख़िरत पर इनके विश्वास का वर्णन है।

(1) सफ़ा व मरवा की सई शुरू से थी फिर जाहिलियत के ज़माने में उन पर दो मूर्तियां रख दी गईं थीं और मुश्रिक लोग यह समझने लगे थे कि सई इन मूर्तियों के लिए की जाती है जब लोग मुसलमान हुए और मूर्तिपूजा से तौबा की तो ख़्याल आया कि सफ़ा–मरवा की सई मूर्तियों के आदर में की जाती हैं इसलिए अब मुनासिब नहीं, उनको मालूम नहीं था कि यह सई तो हज के कामों में से है, जाहिलियत के ज़माने में वे मूर्तियां रखी गई थीं, अब वे हटा दी गईं, इसी संबंध में यह आयत उतरी कि उसकी सई में कोई गुनाह नहीं, यह तो वास्तव में अल्लाह की निशनियों में से हैं, उनकी सई करनी चाहिए, यह भलाई के काम हैं जो खुशी से करेगा तो अल्लाह के यहां उसका बदला है। ⟹

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ
اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ
يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ﴿۱۶۵﴾
اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَ
تَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ﴿۱۶۶﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً
فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ
حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ﴿۱۶۷﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا
مِمَّا فِي الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ
اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۶۸﴾ اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَاَنْ
تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۶۹﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ
اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ
اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۷۰﴾ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
كَمَثَلِ الَّذِيْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّۢ بُكْمٌ
عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷۱﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ
مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۷۲﴾

منزل ۱

और लोगों में वे भी हैं जो अल्लाह के अलावा औरों को (अल्लाह के) बराबर ठहराते हैं, उनसे उसी तरह मुहब्बत करते हैं जैसे अल्लाह की मुहब्बत हो और जो लोग ईमान लाए उनको अल्लाह से सबसे अधिक मुहब्बत होती है और अगर (वे) ज़ालिम उस अज़ाब को देख लें जिसको वे आगे देखेंगे (तो विश्वास कर लें) कि बेशक शक्ति तो सारी की सारी अल्लाह ही के लिए है और अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है[1] (165) जब वे लोग जिनके पीछे चला गया, वे पीछे चलने वालों से दामन झाड़ लेंगे और यह सब लोग अज़ाब को देख लेगें और उनके सब साधन टूट कर रह जाएंगे (166) और पीछे चलने वाले कहेंगे कि अगर हमको एक अवसर मिल जाए तो हम भी उनसे अपना पीछा छुड़ा लें जैसे उन्होंने हमसे पीछा छुड़ाया है, इस प्रकार अल्लाह तआला उनके कामों को उनके लिए पूर्ण रूप से हसरत बना कर दिखाएगा और वे आग से निकाले जाने वाले नहीं हैं (167) ऐ लोगो! ज़मीन में जो कुछ हलाल पाक मौजूद है उसमें से खाओ (पियो) और शैतान के पद चिन्हों पर मत चलो बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है[2] (168) वह तो तुम्हें बुराई व बेशर्मी पर आमादा (प्रेरित) करता है और इस पर (प्रेरित करता है) कि तुम अल्लाह के विरुद्ध ऐसी बातें कहो जो तुम जानते नहीं (169) और जब उनसे कहा गया कि उस चीज़ की पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारी है तो वे बोले बल्कि हम तो उस चीज़ की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप–दादा को पाया है, चाहे उनके बाप दादा कुछ भी समझ न रखते हों और न सीधी राह पर चलते हों[3] (170) और उन लोगों की मिसाल जिन्होंने कुफ़्र किया उस व्यक्ति जैसी है जो ऐसे आवाज़ें निकाले कि चीख–पुकार के अलावा कुछ न सुने, बहरे हैं गूगें हैं अंधे हैं तो उनकी बुद्धि में कोई बात आती ही नहीं[4] (171) ऐ वे लोगो जो ईमान लाए हो हमने तुम्हें जो रोज़ी दी है उसकी पाक चीज़ों में से खाओ (पियो) और अल्लाह के लिए शुक्र अदा करो अगर तुम उसी की बंदगी करते हो[5] (172)

⟹ (2) विशेषतयः यहूदी मुराद हैं जो तौरेत में आपकी पुष्टि को और क़िब्ला के बदलने और उसके अलावा चीज़ों को छिपाया करते थे (3) यानी जो वे छिपाते थे वह उन्होंने साफ़–साफ़ बयान कर दिया और अपनी पिछली बुराइयों से तौबा कर ली तो अल्लाह उनको माफ़ कर देगा और जिन्होंने तौबा नहीं की और उसी हाल में मर गए वे हर प्रकार की धित्कार व फिटकार योग्य हैं उनको ज़रा भी मोहलत न मिलेगी (4) अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में जगह जगह अपनी सृष्टि में विचार करने और अपनी शक्ति को देखने का आदेश दिया कि यह सब चीजें अल्लाह की ज़ात (व्यक्तित्व) व गुणों पर खुले प्रमाण हैं।

(1) इस सारे प्रमाणों के बावजूद बहुत से लोग बुद्धि का प्रयोग नहीं करते और अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ों को उसके साथ साझी बनाते हैं, उनसे उसी प्रकार के संबंध का प्रदर्शन करते हैं जिस प्रकार का संबंध केवल अल्लाह से होना चाहिए, जबकि ईमान वाले अल्लाह ही को अपना स्रष्टा और वास्तविक पालनहार समझते हैं और शिर्क करने वालों का हाल यह है कि दुनिया में तो सब निशानियां होते हुए भी बात समझ में नहीं आती, जब अज़ाब देखेंगे तब विश्वास हो जाएगा कि अस्ल शक्ति अल्लाह ही की है लेकिन उस समय यह सब कुछ काम न आएगा, जिनको साझी बनाया था वे भी संबंधों को तोड़ देंगे और उनकी सब आशाएं टूट कर रह जाएंगी, उस समय गुस्से में कहेंगे कि जैसा इन शरीकों ने हमसे संबंध तोड़ा है हमको भी मौक़ा मिल जाए तो हम भी उनको बता दें, ⟹

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ بِهِ
لِغَيْرِ اللَّهِ ۖ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٧٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ وَ
يَشْتَرُونَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۙ أُولَٰئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا
النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ﴿١٧٤﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ وَالْعَذَابَ
بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ نَزَّلَ
الْكِتَابَ بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِي الْكِتَابِ لَفِي شِقَاقٍ
بَعِيدٍ ﴿١٧٦﴾ لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَ
الْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ
وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ وَآتَى الْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي
الرِّقَابِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ
إِذَا عَاهَدُوا ۖ وَالصَّابِرِينَ فِي الْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَحِينَ
الْبَأْسِ ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾

منزل١

उसने तुम पर हराम कर दिया मुर्दार (मरा हुआ) और ख़ून और सुअर का गोश्त और वे (जानवर) जिनको अल्लाह के अलावा किसी और के नाम पर ज़िबह किया गया हो,[1] फिर जो मजबूर हो जाए (और वह खाये) न चाहते हुए और न हद से आगे बढ़ते हुए तो उस पर कोई पाप नहीं [2] बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है[3] (173) बेशक जो लोग अल्लाह की उतारी हुई किताब को छिपाते हैं और थोड़े मूल्य में उसका सौदा कर लेते हैं वे लोग अपने पेट को आग से भरते हैं, अल्लाह तआला क़यामत के दिन न उनसे बात करेगा और न उनको पाक करेगा और उनके लिए दुःख देने वाला अज़ाब है[4] (174) यही वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत (सन्मार्ग) के बदले गुमराही और मग़फ़िरत (मुक्ति) के बदले अज़ाब का सौदा किया है तो यह आग पर कितने ढीठ हैं (175) यह इसलिए है कि अल्लाह ने किताब को सत्य के साथ उतारा है और बेशक जिन लोगों ने किताब में मतभेद किया वे ज़रूर ज़िद में दूर जा पड़े हैं[5] (176) भलाई यह नहीं कि तुम अपने चेहरों को पूरब या पश्चिम की ओर कर लो बल्कि अस्ल भलाई तो उसकी है जो ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और फरिश्तों और किताबों और पैग़म्बरों पर और माल की चाहत के बावजूद वह माल ख़र्च करे नातेदारों और अनाथों और मोहताजों और यात्रियों और मांगने वालों पर और गुलामों की आज़ादी में और नमाज़ क़ायम करे और ज़कात दिया करे और वे जो अपने समझौतों को पूरा करने वाले हों जब वे समझौता करें और हर हाल में सब्र करने वाले सख़्ती में भी और तंगी में भी और लड़ाई के समय भी, यही वे लोग हैं जो सच्चे सिद्ध हुए और यही लोग हैं परहेज़गार[6] (177)

⟹ लेकिन समय बीत चुका होगा उनके अच्छे काम भी शिर्क की वजह से काम न आएंगे और केवल हसरत ही हसरत रह जाएगी (2) बहुत सी हलाल चीज़ों को हराम कर लिया करते थे, आयत में नियम बता दिये गये कि जो हलाल व शुद्ध बता दिया गया उसको खाओ और शैतान के चक्कर में मत पड़ो उसका तो काम ही तुम्हें गलत रास्ता पर डालना है (3) असत्यवादियों का हमेशा यही जवाब होता है कि हम बाप–दादा की रीति को कैसे छोड़ें, विचार करने का उन्हें ध्यान ही नहीं होता (4) इनकार करने वाले बुद्धि से काम ही नहीं लेते कोई सही बात सोचते ही नहीं, आवाज़ों के अलावा इसका कोई मतलब लगता है कि उनकी समझ में ही नहीं आता जैसे कोई बहरा गूंगा और अंधा हो जाए, कहां से उसको बात समझाई जाए (5) ऊपर भी हलाल चीज़ों को खाने की इजाज़त थी मगर इनकार ही करने वालों के क्या समझ में आता, अब मुसलमानों से सम्बोधन है कि यह अल्लाह के पुरस्कार हैं इनको खाओ पिओ और उसका शुक्र अदा करो।

(1) मतलब वह जो खुद मर जाए या ज़िबह व शिकार के इस्लामी तरीके के अलावा किसी और तरीके पर उसको मारा जाए या कोई जानवर उसको मार डाले बस वह हराम है मछली और टिड्डी के अलावा जैसा कि हदीस में विवरण मौजूद है और खून का मतलब वह खून है जो नसों से बहता है और ज़िबह के समय निकलता है, सुअर पूर्ण रूप से अपवित्र है, और जिस जानवर पर ज़िबह करते समय अल्लाह के अलावा किसी और का नाम लिया जाए वह भी हराम है (2) अगर जान का ख़तरा हो जाए और कुछ खाने को न मिले तो हराम चीज़ भी उतनी ही खाई जा सकती है जितने में जान बच जाए, न वह चीज़ मज़े के लिए खाई जाए और न ज़्यादा खाई जाए (3) अल्लाह इस मजबूरी के गुनाह को ज़रूर माफ़ करेगा (4) यहूदियों का उल्लेख जिनका काम ही हलाल को हराम और हराम को हलाल करना और तौरेत के निर्देशों को पैसा ले–ले कर छिपाना था, दक्षिणा (नज़रानों) के नाम पर भारी–भारी रिश्वतें लेते थे ⟹

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلٰى ۭ اَلْحُرُّ
بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ۭ فَمَنْ عُفِيَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ
شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَاۗءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ۭ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۭ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٨﴾ وَ
لَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٩﴾
كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَۨا ښ الْوَصِيَّةُ
لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٨٠﴾ فَمَنْۢ
بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَي الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٨١﴾ فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا
فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨٢﴾ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَي الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٨٣﴾ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۭ فَمَنْ كَانَ
مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰي سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۭ وَعَلَي
الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ۭ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا
فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ۭ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٤﴾

ربع

منزل ١

ऐ ईमान वालो! तुम पर क़त्ल किए गए लोगों के सिलसिले में क़िसास (बदला) तय किया गया है आज़ाद के बदले आज़ाद, ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम और औरत के बदले औरत[1] फिर जिसको अपने भाई की ओर से कुछ माफ़ी मिल जाए तो मांग भी भलाई के साथ हो और उसको अदा भी अच्छी तरह से किया जाए, यह तुम्हारे पालनहार की ओर से आसानी है[2] और मेहरबानी है, तो जो इसके बाद भी (हद से) आगे बढ़े तो उसके लिए दुःखदाई अज़ाब है[3] (178) और किसास में तुम्हारे लिए ज़िन्दगी है ऐ होश वालो! ताकि तुम सावधानी बरतने लगो[4] (179) जब तुममें किसी की मौत का समय नज़दीक आ जाए और वह माल छोड़े तो तुम पर मां–बाप और करीबी रिश्तेदारों के लिए नियमानुसार वसीयत फ़र्ज़ की जाती है, परहेज़गारों पर यह ज़रूरी है[5] (180) फिर जो सुनने के बाद भी उसमें परिवर्तन कर डाले तो इसका गुनाह उन्ही लोगों पर होगा जो परिवर्तन कर देते हैं, बेशक अल्लाह (तआला) ख़ूब सुनने वाला ख़ूब जानने वाला है[6] (181) हाँ जो वसीयत करने वाले के बारे में पक्षपात या गुनाह का आशंका रखे फिर वह उन (वारिसों) में सुलह करा दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह तआला बहुत माफ़ करने वाला बहुत ही दया करने वाला है[7] (182) ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फर्ज़ किए गए जैसा कि तुमसे पहले लोगों[8] पर फर्ज़ किये गये थे अजब नहीं कि तुम परहेज़गार बन जाओ[9] (183) गिनती के कुछ दिन हैं फिर तुम में जो बीमार हो या वह यात्रा पर हो तो वह दूसरे दिनों से गिनती (पूरी) करे और जिन लोगों के लिए उसका बोझ मुश्किल हो जाए उन पर एक मोहताज का खाना (फ़िद्या) है फिर जो खुशी से नेकी करे तो वह उसके लिए बेहतर है और तुम रोज़ा रखो यही तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो [10] (184)

⟹ (5) यह भी उनकी ढिटाई ही थी कि जो किताब सही–सही उतरी थी वे उसमें अपनी इच्छाएं चलाते थे और उसके निर्देशों को बदल डालते थे उससे बढ़कर गुमराही क्या होगी (6) अहल–ए–किताब को यह भी गर्व था कि जब हम सही किब्ला की ओर चेहरा करके नमाज़ पढ़ते हैं तो हमें फिर क्यों अज़ाब दिया जाएगा, उसको स्पष्ट किया जा रहा है कि केवल किब्ले की ओर चेहरा कर लेना काफ़ी नहीं है बल्कि अक़ीदा (विश्वास) और आमाल (कर्मों) को ठीक करन भी नजात (मुक्ति) के लिए आवश्यक है।

(1) जाहिली ज़माने का अजब रिवाज था मारता कोई और मारा कोई और जाता, कभी एक के बदले दो मारे जाते, औरत हत्या करती तो उसके बदले मर्द को क़त्ल किया जाता, कोई शरीफ़ आदमी हत्या करता तो बदला (किसास) किसी मामूली आदमी से लिया जाता, इसी को समाप्त किया जा रहा है कि जो हत्या करे उसी की हत्या की जाएगी, औरत ने हत्या की होगी तो बदले में औरत की ही हत्या की जाएगी (2) अगर क़त्ल किए हुए व्यक्ति के वारिस जान के बदले जान न लें और दीयत (मुआवज़ा) मांगे तो मांग में भी हद से आगे न बढ़ा जाए और अदाएगी तो अच्छी तरह होनी ही चाहिए (3) अगर हत्या करने वाला वाला जान बूझकर हत्या करे तो जिस व्यक्ति की हत्या हुई है उसके वारिसों को इस्लाम ने तीन अधिकार दिये हैं चाहे तो माफ़ करे दें, चाहें तो दीयत (मुआवज़ा) लें और चाहे तो ख़ून के बदले ख़ून (क़िसास) लें, यह अल्लाह की कृपा से हुआ, वरना यहूदियों में केवल क़िसास का और ईसाइयों में केवल दियत (मुआवज़ा) का आदेश था फिर अगर कोई मुआवज़ा लेकर क़त्ल भी करता है तो यह अल्लाह के अज़ाब को बुलाने वाली चीज़ है (4) इस्लाम के निजाम–ए–हुदूद व किसास (दण्ड संहिता) पर उंगलियां उठाई गईं मगर यह किसने देखा कि इससे कितनी जाने बच गईं वरना ⟹

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ
بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ
فَلْيَصُمْهُ ۭ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰي سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۭ
يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۡ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ
وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰي مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٨٥﴾ وَاِذَا
سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّىْ فَاِنِّىْ قَرِيْبٌ ۭ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا
دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ﴿١٨٦﴾
اُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَاۗىِٕكُمْ ۭ هُنَّ
لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۭ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ
تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْـٰٔنَ
بَاشِرُوْھُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۠ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى
يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۠
ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوْھُنَّ وَاَنْتُمْ
عٰكِفُوْنَ ۙ فِي الْمَسٰجِدِ ۭ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْھَا ۭ
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿١٨٧﴾

منزل١

रमज़ान का महीना वह है जिसमें कुरआन उतारा गया जो लोगों के लिये हिदायत (मार्गदर्शन) है[1] और उसमें रास्ता पाने और (सत्य–असत्य में) अन्तर करने की खुली निशानियां हैं, तो जो इस महीने को पा ले वह रोज़ा रखे और जो बीमार हो या यात्रा पर हो वह दूसरे दिनों से गिनती (पूरी) करे, अल्लाह तआला तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती नहीं चाहता और इसलिए तुम गिनती पूरी करो और अल्लाह की बड़ाई बयान करो, इस पर कि उसने तुम्हें सत्यमार्ग दिखाया (हिदायत दी) और ताकि तुम शुक्र करने लगो[2] (185) और जब आपसे मेरे बन्दे मेरे बारे में पूछें तो मैं तो क़रीब ही हूं हर पुकारने वाले की पुकार मैं सुनता हूँ[3] जब वह मुझे पुकारता है, तो उनको भी चाहिए कि वे मेरी बात माने और मुझ पर विश्वास रखें ताकि वे भाग्यशाली हों (186) तुम्हें रोज़े की रात को अपनी औरतों से संबंध बनाने की आज्ञा दे दी गई वे तुम्हारा लिबास हैं और तुम उनका लिबास हो, अल्लाह जानता है कि तुम अपने आप से खियानत (कपट) करते थे, तो उसने तुम पर कृपा की और तुम्हें माफ़ किया तो अब उनसे सम्भोग[4] करो और अल्लाह ने जो तुम्हारे लिए लिख दिया है उसको तलाश करो और खाओ पियो यहां तक कि तुम्हारे सामने सुबह की सफेद धारी काली धारी से अलग हो जाए फिर रात तक रोज़ा पूरा करो, और उनसे इस हाल में सम्भोग मत करना कि तुम मस्जिदों में एतिक़ाफ़ में बैठे हो, यह अल्लाह की (निर्धारित) सीमाएं हैं तो उनके क़रीब भी मत जाना, अल्लाह लोगों के लिए अपनी निशानियां ऐसे ही खोल–खोल कर बयान करता है कि शायद वे परहेज़गार हो जाएं[5] (187)

⟹ एक–एक हत्या से मारने–मरने का अंतहीन सिलसिला शुरू हो जाता था (5) जाहिली युग में क़ानून था कि मरने वाले का सारा माल उसकी औलाद और पत्नी को मिलता था आदेश हो रहा है कि मां–बाप और दूसरे रिश्तेदारों को भी शामिल किया जाए और इसके लिए वसीयत ज़रूरी है फिर जब मीरास (पैत्रिक संपत्ति) की आयत उतरी तो यह आदेश मंसूख़ (निरस्त) हो गया (6) मरने वाले ने सही वसीयत की लेकिन देने वालों ने उस पर अमल नहीं किया तो गुनाह उसको बदल देने वालों पर ही होगा (7) यानी अगर किसी को यह मालूम हुआ कि वसीयत करने वाले ने वसीयत में गलती की है या गलत तरीक़े से किसी की रिआयत की है और वह उसको सुधार कर वारिसों को समझा–बुझा देता है और सुलह करा देता है तो ऐसे परिवर्तन में उस पर कोई पाप नहीं होगा, बल्कि यह सवाब का काम है (8) शुरू ही से उम्मतों (सम्प्रदायों) पर रोज़े फ़र्ज़ रहे हैं और इसका वर्णन इसलिए किया जा रहा है ताकि इस उम्मत को यह एहसास न हो कि इतना मुश्किल काम जो किसी ने किया वह कैसे सम्भव है, रोज़े को फ़र्ज़ करने के लिए यह आयत उतरी, यह सन् 2 हिजरी की घटना है (9) जब जायज़ चीज़ें अल्लाह के आदेश से एक अवधि के लिए छोड़ दी गईं तो हराम व नाजायज़ से बचना कितना आसान हो जाएगा और यही तक़वा (परहेज़गारी) है (10) यह साफ करने के लिए कि रोज़ा कुछ मुश्किल नहीं, सबसे पहले बता दिया कि यह केवल कुछ ही दिन है, फिर अगर कोई बीमार है या यात्री है तो बाद में रख सकता है और जो इतना कमज़ोर हो जाए कि इसको सहन करना उसके लिए कठिन हो जाए तो उस पर रोज़े के स्थान पर फ़िदया है।

(1) पवित्र क़ुर्आन लौह–ए–महफ़ूज़ से दुनिया के आसमान पर इसी महीने में उतारा गया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसी माह हज़रत जिब्रईल के साथ पवित्र कुरआन का दौर किया करते थे इसलिए इस माह से पवित्र कुरआन को विशेष संबंध है इसीलिए तरावीह को इसमें सुन्नत किया गया (2) अल्लाह की दी हुई इन सुविधाओं पर उसका जो भी शुक्र किया जाए और जितनी भी ⟹

وَلَا تَأْكُلُوٓا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا بِهَآ
إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَالِ النَّاسِ
بِالْإِثْمِ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٨﴾ يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْأَهِلَّةِ ۖ
قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ۗ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَن
تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِن ظُهُورِهَا وَلَـٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَىٰ ۗ
وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ﴿١٨٩﴾ وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ
يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوٓا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
الْمُعْتَدِينَ ﴿١٩٠﴾ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُم
مِّنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ ۚ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا
تُقَاتِلُوهُمْ عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ يُقَاتِلُوكُمْ
فِيهِ ۖ فَإِن قَاتَلُوكُمْ فَاقْتُلُوهُمْ ۗ كَذَٰلِكَ جَزَآءُ
الْكَافِرِينَ ﴿١٩١﴾ فَإِنِ انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٩٢﴾
وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ
لِلَّهِ ۖ فَإِنِ انتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٩٣﴾

ع ٢٣

منزل ١

और आपस में एक दूसरे का माल[1] अवैध रूप से मत खाओ और न मुक़द्दमा हाकिमों के पास ले जाओ ताकि लोगों के मालों का एक हिस्सा पाप के साथ तुम हड़प कर जाओ जबकि तुम जानते हो (कि उसमें तुम्हारा हक़ नहीं है)[2] (188) वे आपसे नए चांद के बारे में पूछते हैं[3] आप कह दीजिए कि यह लोगों के विभिन्न मामलात के लिए और हज के लिए समय मालूम करने का साधन [4] हैं और नेकी यह नहीं है कि तुम घरों में पीछे से जाओ हां नेकी तो यह है कि लोग परहेज़गारी अपनाए और घरों में उनके दरवाज़ों से दाख़िल हों और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम कामयाब हो जाओ[5] (189) और अल्लाह के रास्ते में उन लोगों से लड़ो जो तुम से लड़ते हैं और हद से आगे मत बढ़ना बेशक अल्लाह तआला (हद से) बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता[6] (190) और उनको तुम जहां भी पाओ क़त्ल करो और जहां से उन्होंने तुम्हें निकाला तुम भी उन्हें निकाल बाहर करो[7] और फ़ित्ना (उपद्रव) क़त्ल से अधिक सख़्त है और उनसे तुम मस्जिदे हराम के आस–पास मत लड़ो यहां तक कि वहां भी वे तुम से लड़ने लगें, बस अगर वे तुम से लड़ें तो तुम उनको मारो, इनकार करने वालों की यही सज़ा है (191) फिर अगर वे रुक जाएं तो बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला और बहुत ही दयालु है (192) और उनसे जंग करो यहां तक कि फ़ितना (उपद्रव) न रहे और दीन केवल अल्लाह का रह जाए फिर अगर वे रुक जाते हैं तो सख़्ती तो उन्हीं लोगों पर है जो ज़ुल्म करने वाले हैं[8] (193)

⟹ उसकी बड़ाई बयान की जाए वह कम है (3) रोज़े के हुक्मों के बीच यह आयत इसकी भी अलामत है कि रोज़ा और रमज़ान दुआ क़ुबूल होने के समय हैं (4) जब शुरू में रोज़ा फर्ज़ हुआ उस समय रात को सो जाने के बाद फिर पत्नियों के पास जाने और खाने पीने की मनाही थी लोगों को इसमें बहुत कठिनाई हो रही थी, दो–एक घटनाएं ऐसी हो गईं कि अनजाने में सम्भोग भी हो गया, तो वे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तो उस पर यह आयत उतरी, और सुबह सादिक (प्रत्यूष) तक खाने–पीने और पत्नियों के पास जाने की आम इजाज़त भी दे दी गई, सम्भोग के साथ यह कह दिया कि जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए औलाद लौह–ए–महफ़ूज़ में लिख दी है उसको तलाश करो, इसमें यह भी इशारा है कि मक़सद का उद्देश्य केवल काम–वासना पूरा करना न हो, रात की शुरूआत सूर्यास्त से होती है, यह रोज़े की समाप्ति का समय घोषित कर दिया गया (5) रोज़े के दिनों में रात को सम्भोग की अनुमति दी गई लेकिन एतिकाफ़ की हालत में इसको पूरे तौर पर मना कर दिया गया।

(1) रोज़ों से परहेज़गारी का मिज़ाज बनता है, अब यहां उसको कुछ और स्पष्ट किया जा रहा है कि ह़लाल माल का रोज़ा तो केवल रोज़े के समय ही है लेकिन ह़राम माल का रोज़ा सारी उम्र का है, सूद, चोरी, विश्वासघात, रिश्वत, जुवा, अवैध क्रय–विक्रय के सारे रूप सब इसमें शामिल हैं (2) हाकिमों के सामने ग़लत गवाहियां देकर या उनको रिश्वत देकर दूसरे के माल का अपने हक़ में फैसला करा लेना मुराद है (3) रमजान के लिए भी चांद पर ध्यान दिया जाता है और हज के लिए भी, रमज़ान का उल्लेख किया गया, हज का उल्लेख आगे आता है, बीच में चांद के लिए जो सवाल हुआ था उसका जवाब उल्लिखित है (4) लोगों की कितनी ज़रूरतें इस पर निर्भर हैं, हज के महीने और हुरमत (आदर) के महीनों (अश्हुर–ए–हुरूम) की जानकारी भी इसी से होती है (5) जाहिलियत में नियम था कि एह़राम बांधकर निकल जाने के बाद घरों में दरवाज़ों से दाख़िल होने को ग़लत समझते थे, आयत में इस व्यर्थ रीति को निराधार घोषित किया जा रहा है (6) सुलह–ए–हुदैबिया नामक घटना के अवसर पर मुसलमानों को उमरह से रोक दिया गया था इसलिए दूसरे वर्ष उमरतुल क़ज़ा के अवसर पर मुसलमानों को शंका हुई कि वे दोबारा रोक न दें और हरम और अश्हुर–ए–हुरूम (आदर के महीनों) में लड़ाई मना है इस पर यह आयतें उतरीं कि ⟹

الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۹۴﴾ وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَاَحْسِنُوْا ۛ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۹۵﴾ وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ۭ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ۭ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖٓ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ ۪ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ۭ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۭ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَھْلُهٗ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۱۹۶﴾ اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۭ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ۭ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۡ وَاتَّقُوْنِ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۷﴾

منزل۱

और इज़्ज़त वाला महीना इज़्ज़त वाले महीने के बदले में है और अदब व इज़्ज़तें अदले बदले की हैं तो जो तुम पर ज़्यादती करे तो तुम उसकी उतनी ही सज़ा दो जितनी उसने तुम पर ज़्यादती की है और अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह तआला परहेज़गारों के साथ है[1] (194) और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करो और अपने हाथों तबाही में मत पड़ो और काम बेहतर तरीक़े पर करो, बेशक अल्लाह अच्छा काम करने वालों को पसंद करता है[2] (195) और हज व उमरे को अल्लाह के लिए पूरा करो फिर अगर तुम्हें रोक दिया जाए तो जो भी क़ुर्बानी का जानवर आसानी से मिल जाए (उसकी क़ुर्बानी का प्रबंध करो) और अपने सिरों को उस समय तक न मुंडाना जब तक क़ुर्बानी का जानवर अपनी जगह पहुंच जाए[3] फिर जो तुम में बीमार हो या उसके सिर कोई तकलीफ़ हो तो रोज़े का या सदक़े (दान) का या क़ुर्बानी का फ़िदया (उसके ज़िम्मे) है,[4] फिर जब तुम्हें अमन प्राप्त हो जाए तो जो हज के साथ उमरे का भी फ़ायदा उठाए[5] तो जो भी उसको क़ुर्बानी का जानवर आसानी के साथ मिल जाए (उसकी क़ुर्बानी करे) और जिसको न मिल सके तो हज के दिनों में तीन दिन के रोज़े रखे और सात दिन उस समय जब तुम वापस हो, यह पूरे दस दिन हैं, यह उसके लिए है जिसके घर वाले मस्जिद–ए–हराम के क़रीब न रहते हों, और अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि बेशक अल्लाह की सज़ा बहुत सख़्त है (196) हज के कुछ जाने पहचाने महीने हैं तो जो उनमें हज तय कर ले तो हज में न बेहयाई होने पाए न गुनाह, न लड़ाई–झगड़ा और तुम जो भी भलाई करते हो अल्लाह उसको ख़ूब जानता है और ज़ादे राह (रास्ते का सामान) ले लिया करो बस बेशक सबसे अच्छा ज़ादे राह तक़वा (परहेज़गारी) है और ऐ होश वालो! मुझसे डरा करो[6] (197)

⟹ अगर वे कोई पहल करें तो तुम भी तुर्की ब तुर्की जवाब दो, हरम में कुफ़्र व शिर्क वहां लड़ाई से ज़्यादा सख़्त चीज़ है, ज़्यादती मत करो का अर्थ यह है कि लड़ाई में औरतें, बच्चे और बूढ़े न मारे जाएं हरम में अपनी ओर से लड़ाई शुरू न की जाए (7) यानी अगर वे तुमसे लड़ते हैं तो जहां भी मिले उनको मारो, हरम में हों या हरम के बाहर, और मक्का से उन्होंने तुमको निकाला है तुम उनको निकाल बाहर करो। फ़तह–ए–मक्का (मक्का विजय) के अवसर पर इस पर अमल हुआ और हरम को मुश्रिकों से पाक कर दिया गया (8) यहां जिहाद का आदेश दिया गया है मगर इसका मक़सद किसी को इस्लाम पर मजबूर करना नहीं है, इसीलिए अगर कोई व्यक्ति कुफ़्र पर अड़ा रहे तब भी जिज़्या के द्वारा इस्लामी संविधान के अनुसार अपने धर्म पर क़ायम रह सकता है, लेकिन जज़ीरतुल अरब (अरब प्रायद्वीप) का आदेश भिन्न है यह इस्लाम का केन्द्र है, यहीं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पैग़म्बर बना कर भेजा गया, इसलिए यहां कोई काफ़िर स्थाई नागरिक के तौर पर नहीं रह सकता।

(1) इज़्ज़त वाले महीने में और हरम में अगर तुमसे कोई लड़े तो तुम भी उससे लड़ सकते हो लेकिन सीमाओ से आगे न बढ़ना (2) जिहाद में शामिल न होना और इस रास्ते में खर्च न करना उपने आपको तबाही में डालना है (3) इसको दम–ए–एहसार कहते हैं अर्थात कोई एहराम बांध कर निकला फिर उसको रोक दिया गया तो उस पर दम ज़रूरी है और वह यह कि कम से कम एक बकरी हरम में ज़िबह करवाए, उसके बाद उसका एहराम समाप्त हो जाएगा (4) सिर में कोई तकलीफ़ हो जाए तो बाल मुंडवा सकते हैं लेकिन दम देना पड़ेगा, यह दम–ए–जिनायत कहलाता है, तीन रोज़े या छः मोहताजों को खाना या एक जानवर की क़ुर्बानी ⟹

लَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ
فَاِذَآ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ
الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۪ وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ
كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۱۹۸﴾ ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ
حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۹۹﴾ فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ
فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ
النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا وَمَا
لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ﴿۲۰۰﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ
رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ
قِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ
وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۲۰۲﴾ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِىْٓ
اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِىْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ
عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ
اتَّقٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۰۳﴾

النصف

منزل ۱

तुम पर कोई पाप नहीं कि तुम अपने पालनहार का फ़ज़ल (कृपा) ढूंढो[1] फिर जब अरफ़ात से कूच करो तो मश्अर–ए–हराम (मुज़दलिफ़ा) के पास अल्लाह को याद करो और उसी प्रकार याद करो, जिस प्रकार उसने तुमको बताया है और इससे पहले तुम निश्चित रूप से भटके हुए थे[2] (198) फिर (तवाफ़ के लिए) उसी जगह से कूच करो जिस जगह से लोग कूच करते हैं और अल्लाह से माफ़ी चाहो बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला परम दयालु है[3] (199) फिर जब तुम हज के काम पूरे कर लो तो अल्लाह को याद करो अपने बाप–दादा को याद करने की तरह बल्कि उससे भी बढ़कर[4], तो लोगों में कुछ वे हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे पालनहार! हमें (बस) दुनिया में दे दे, उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं (200) और उनमें कुछ वे हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे पालनहार हमें दुनिया में भी भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें दोज़ख के अज़ाब से बचा ले (201) यही वे लोग हैं कि उनके लिए बड़ा हिस्सा है उसमें से जो उन्होंने कमाया है और अल्लाह बहुत जल्द हिसाब चुका देने वाला है[5] (202) और उन गिने चुने दिनों में अल्लाह को याद करते रहो[6], फिर जो दो ही दिन में जल्दी चला गया तो उस पर गुनाह नहीं, और जो ठहरा रहा तो उस पर गुनाह नहीं है यह उसके लिए है जो परहेज़गारी अपनाए और अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि तुम उसी के पास जमा किये जाओगे (203)

⟹ (5) तमत्तोअ् यह है कि एक ही सफ़र में उमरह करे, एहराम उतार दे फिर दूसरा एहराम बांधकर हज करे और क़िरान यह है कि एक ही एहराम से पहले उमरह करे फिर हज करे यह दूर से आने वालों के लिए है उसके बाद क़ुर्बानी ज़रूरी है, न कर सके तो दस रोज़े रखे (6) हिजरी माह "शव्वाल" के शुरू से दसवीं ज़िलहिज्जह की सुबह तक हज के महीने कहलाते थे इसलिए इसमें एहराम बांधा जाता है अगर कोई पहले से एहराम बांध ले तो मकरूह है, हज तय करने का मतलब यह है कि एहराम बांध ले, जाहिलियत के ज़माने में नियम था कि हज यात्रा में खाद सामग्री ले जाना गुनाह समझते थे और वहा पहुंचकर मांग–मांग कर खाते थे, आदेश दिया जा रहा है कि यात्रा में खाना ले लिया करो साथ ही तक़्वे की भी ताकीद की जा रही है कि बेशक खाना ज़रूरी है मगर अस्ल ले जाने वाली चीज़ तक़्वे का मिजाज़ है।

(1) फ़ज़ल (कृपा) का अर्थ व्यापार या मज़दूरी करके कमाना है, हज यात्रा में इन चीज़ों को हराम समझा जाता था, उसको नकारा जा रहा है (2) यह मुज़दलिफ़ा का उल्लेख है, मश्अरे हराम उसमें एक पहाड़ी है, उस पर ठहरना बेहतर है और सारे मुज़दलिफ़ा में मुहस्सर नामक घाटी के अलावा कहीं भी ठहरा जा सकता है, वहां मुश्रिक लोग अल्लाह को याद करते तो थे मगर शिर्क से साथ, उसी गुमराही की ओर संकेत है (3) मक्का के काफ़िरों का विचार था कि चूंकि अरफ़ात हरम की सीमा से बाहर है इसलिए हम हरम में रहने वालों को वहां जाना उचित नहीं, वे मुज़दलिफ़ा ही में ठहरे रहते और बाक़ी लोग अरफ़ात जाते, यहां आदेश दिया जा रहा है कि जहां जाकर लोग पलटते हैं तुम भी वहां तक जाकर वापस आओ (4) हज के काम रमी, तवाफ़, सई और हल्क़ आदि को पूरा करने के बाद मिना में ठहरने का उल्लेख किया जा रहा है। मुश्रिकों का तरीक़ा यह था कि वहां रह कर बज़ार लगाते और अपने बाप–दादा के गौरवशाली कामों को बयान करते, इससे रोका जा रहा है और अल्लाह को याद करने का आदेश हो रहा है (5) यह दुआओं के दिन हैं तो दुआ करने वालों की दो क़िस्मों का बयान किया गया है और इसकी ताकीद की गई है कि आदमी केवल दुनिया के चक्कर में न पड़े बल्कि आख़िरत की विशेष चिंता करे, इसलिए कि अल्लाह जल्दी हिसाब साफ कर देने वाला है (6) अर्थात ज़िलहिज्जा की 11वीं, 12वीं और 13वीं तारीखें जिनमें मिना में ठहरा जाता है और ज्यादा से ज्यादा अल्लाह को याद करने का आदेश है दो दिन रहना भी काफ़ी है लेकिन बेहतर यही है कि तीन दिन ठहरा जाए यह तक़्वे की बात है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ
اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿۲۰۴﴾ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى
فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ؕ وَاللّٰهُ
لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿۲۰۵﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ
الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۲۰۶﴾ وَمِنَ
النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَ
اللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۲۰۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ
الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۲۰۸﴾ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ
بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ﴿۲۰۹﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ
ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ؕ
وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۲۱۰﴾ سَلْ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ
اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ
مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۲۱۱﴾

منزل ۱

और लोगों में वह व्यक्ति भी है जिसकी बात दुनियावी जीवन में आपको अच्छी लगती है और उसके दिल में जो कुछ है उस पर वह अल्लाह को गवाह बनाता है जबकि वह सख़्त झगड़ालू है (204) और जब वह उठकर जाता है तो धरती पर उसकी दौड़–धूप इसलिए होती है ताकि उसमें बिगाड़ करे और खेती व नस्ल बर्बाद करे और अल्लाह बिगाड़ को पसंद नहीं करता (205) और जब उससे कहा जाता है कि अल्लाह से डरो तो उसको (झूठी) इज़्ज़त गुनाह में जकड़ लेती है, तो ऐसे व्यक्ति के लिए दोज़ख ही पर्याप्त है और वह बहुत बुरा ठिकाना है[1] (206) और (दूसरी ओर) लोगों में वह भी है जो अल्लाह की खुशी चाहते हुए अपनी जान का सौदा कर लेता है और अल्लाह ऐसे बन्दों पर बड़ा मेहरबान है[2] (207) ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ और शैतान के पद–चिन्हों पर मत चलो बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है[3] (208) फिर अगर तुम्हारे पास खुली निशानियां आने के बाद भी तुम फिसलते हो तो जान लो कि अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त है बड़ी हिकमत वाला है (209) क्या उनकी निगाहें इस पर लगी हैं कि अल्लाह बादलों की छाया में उनके पास आ जाए और फरिश्ते भी, और मामला निपटा दिया जाए? हालांकि सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटने वाले हैं[4] (210) बनी इस्राईल से पूछिए कि उनको हमने कितनी निशानियां खुली हुई दीं और जो अल्लाह की नेअमत मिलने के बाद उसको बदलता है तो अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है[5] (211)

---

(1) यह मुनाफ़िक़ों का उल्लेख है, ऊपर से बहुत अच्छे और भीतर से झगड़ा लगाने वाले, कहा जाता है कि अख़्नस बिन शुरैक नामक एक मुनाफ़िक था, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में आता तो आस्थापूर्वक मिलता और वापस होता तो लोगों को नुक़सान पहुंचाता, इस पर मुनाफ़िकों की बुराई में यह आयत उतरी (2) यह आयत मुख़्लिस (सत्यप्रिय) लोगों की तारीफ़ में उतरी, हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु की घटना इस संबंध में बयान की जाती है कि जब वह हिजरत के इरादे से निकले तो मुश्रिकों ने उनको रोक लिया, उन्होंने कहा कि मेरा सब कुछ धन दौलत ले लो और मुझे जाने दो, जब वह मदीना मुनव्वरा इसी हालत में पहुंच गये और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा, "रबि ह सुहैबुन" (सुहैब फायदे में रहे) (3) कुछ यहूदी मुसलमान हुए लेकिन अपनी पुरानी कार्य शैली को वे छोड़ना नहीं चाहते थे उस पर यह आयत उतरी कि बाह्य व आंतरिक रूप से पूरे–पूरे इस्लाम में दाख़िल हो जाओ (4) जो लोग नहीं मानते उनका कोई इलाज नहीं, अल्लाह ही उनका फ़ैसला, क़यामत में कर देगा, यह उन लोगों का जवाब है जो इस प्रकार की मांग किया करते थे कि अल्लाह हमारे सामने आकर हमें ईमान का आदेश क्यों नहीं देता, कहा जा रहा है कि अस्ल क़ीमत ग़ैब पर ईमान की है, अल्लाह तआला अगर नज़र आ जाएं तो परीक्षा क्या हुई और अल्लाह का तरीक़ा यह है कि जब ग़ैब की चीज़ें इंसान की आंखों को नज़र आ जाएं तो फिर ईमान का एतबार नहीं होता, और ऐसा उस समय होगा जब यह ब्रह्माण्ड समाप्त करके बदला व सज़ा का दौर आ जाएगा, मामला चुकाने का यहां यही मतलब है (5) यहूदियों का तो तरीक़ा ही यही रहा कि उन्होंने नेअमतों (सुख सामग्रियों) की बड़ी नाशुक्री की और दण्ड के अधिकारी बने।

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ
مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾ كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً
فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ
الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا
فِيْهِ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا
جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ
اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢١٣﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَ
لَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّتْهُمُ
الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ ﴿٢١٤﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ
خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ
السَّبِيْلِ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢١٥﴾

وقف لازم

منزل١

काफ़िरों के लिए सांसारिक जीवन सजा (संवार) दिया गया है और वे ईमान वालों का मज़ाक उड़ाते हैं जबकि वे लोग जिन्होंने तक़वा (परहेज़गारी) अपनाया वे क़यामत के दिन उनसे कहीं ऊपर होंगे और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी प्रदान करता है[1] (212) लोग (सब के सब) एक ही उम्मत थे तो अल्लाह ने पैग़म्बरों को भेजा, ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले और उनके साथ ठीक–ठीक किताब उतारी ताकि वह लोगो के बीच उन चीज़ों का फ़ैसला कर दे जिनमें वे मतभेद रखते थे और मतभेद तो उन्हीं लोगों ने किया जिनको किताब मिल चुकी थी केवल आपस की ज़िद में खुली निशानियां उनके पास आने के बाद भी, तो अल्लाह तआ़ला ने अपने हुक्म से ईमान वालों को वह ठीक–ठीक रास्ता चलाया जिसमें वे मतभेद कर रहे थे और अल्लाह जिसको चाहता है सीधा रास्ता चला देता है[2] (213) क्या तुम समझते हो कि जन्नत में (यूं ही) दाख़िल हो जाओगे और तुम पर वे हालात नहीं गुज़रेंगे जो तुमसे पहलों पर गुज़र चुके, सख़्ती और तंगी का उनको सामना करना पड़ा और उनको झिंझोड़ा गया यहां तक कि पैग़म्बर और उनके साथ ईमान लाने वाले कह उठे कि आख़िर अल्लाह की मदद कब आएगी? सुन लो बेशक अल्लाह की मदद करीब ही है[3] (214) वे आपसे पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें, आप कह दीजिए कि तुम जो भी माल खर्च करो तो उसमें माता–पिता, नातेदारों, अनाथों, मोहताजों और यात्रियों का हक़ है और तुम जो भी भलाई करते हो बेशक अल्लाह उसको ख़ूब जानता है[4] (215)

(1) मुश्रिक कमज़ोरों का मज़ाक उड़ाते थे उस पर यह आयत उतरी (2) हज़रत आदम के समय से एक ही सच्चा धर्म (दीन) रहा फिर लोगों में मतभेद शुरू हुए, अल्लाह ने किताबें उतारीं तो उनमें भी आपस की दुश्मनी के कारण तरह–तरह की बातें निकाली गईं, उन पर पूरा अमल नहीं किया गया अंततः अंतिम पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पधारे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यहूदियों और ईसाइयों के धर्म में कहीं कमी कहीं ज़्यादती से हटकर संतुलित दीन (धर्म) प्रदान किया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा अल्लाह ने सत्य मार्गदर्शन का प्रबंध किया (3) ईमान वालों को सांत्वना दी जा रही है कि यह हालात तुम से पहले भी ईमान वालों पर बीत चुके हैं फिर अल्लाह की मदद आ गई (4) यानी तुम जितना चाहो खर्च करो लेकिन इन लोगों का ख़्याल रखो।

मंज़िल १

तुम पर जंग फ़र्ज़ की गयी है हालांकि वह तुम्हारे लिए सख़्त नापसंद है और हो सकता है कि तुम किसी चीज़ को बुरा समझो और वह तुम्हारे लिए बेहतर हो, और हो सकता है कि तुम किसी चीज़ को पसंद करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते[1] (216) वे इज़्ज़त वाले महीनों में जंग के बारे में आप से पूछते हैं, आप कह दीजिए कि उनमें जंग बहुत बड़ी बात है (लेकिन) अल्लाह के रास्ते से रोकना और उसके साथ कुफ़्र करना और मस्जिद–ए–हराम से रोकना और वहां के निवासियों को वहां से निकाल देना अल्लाह के नज़दीक उस से बढ़ कर है और फ़ितना (पैदा करना) क़त्ल से ज़्यादा बड़ी चीज़ है, वे बराबर तुमसे जंग करते रहेंगे यहां तक कि अगर उनका बस चले तो वे तुमको तुम्हारे दीन से फेर देंगे, तो जो भी तुम में अपने दीन से फिरेगा फिर वह कुफ़्र ही की हालत में मरेगा, तो यही वे लोग हैं कि दुनिया व आख़िरत में उनके सारे काम बर्बाद हो गए और यही लोग दोज़ख़ वाले हैं वे हमेशा उसी में रहेंगे[2] (217) बेशक वे लोग जो ईमान लाए और वे जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, वही लोग अल्लाह की रहमत (दया) के आशावान होंगे और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला है बड़ा ही दयालु है[3] (218) वे आपसे शराब और जुवे के बारे में पूछते हैं आप कह दीजिए कि उन दोनों में बड़ा गुनाह भी है और लोगों के लिए फायदे भी हैं और उन दोनों का गुनाह उनके फायदे से कहीं ज़्यादा है[4] और वे यह पूछते हैं कि क्या खर्च करें तो आप कह दीजिए कि जो अधिक हो,[5] अल्लाह इसी तरह निशानियां खोल–खोल कर तुम्हारे लिए बयान करता है ताकि शायद तुम सोचो (219)

(1) जब तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का में रहे जंग की इजाज़त न हुई, हिजरत के बाद पहले–पहल उन लोगों से जंग की इजाज़त दी गई जो हमला करें, फिर आम इजाज़त दे दी गई लेकिन उसकी शर्तें तय कर दी गईं और यह भी बता दिया गया कि जान–माल की क़ुर्बानी मुश्किल ज़रूर है लेकिन नतीजा उसी का बेहतर होता है (2) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक टुकड़ी काफ़िरों के मुकाबले के लिए भेजी, वह हिजरी माह जमादिस्सानियह की आख़िरी तारीख़ थी, मुसलमान यही समझ कर लड़े लेकिन चांद हो गया और रजब माह की पहली तारीख़ आ गई जो इज़्ज़त वाले महीनों में शामिल है, इस पर मुश्रिकों ने बहुत बुरा भला कहा कि अब तो इज़्ज़त वाले महीनों में भी मुसलमान लड़ने लगे, मुसलमान इस पर परेशान हुए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आकर उन्होंने पूछा, उस पर यह आयत उतरी कि मुसलमानों से तो अंजाने में यह काम हुआ और बुरा कहने वालों का यह हाल है कि सुलह–ए–हुदैबियह के अवसर पर उनको न हरम का ख़याल रहा और न इज़्ज़त वाले महीनों का, उनका मक़सद तो मुसलमानों को बहकाना और सही दीन से फेरना है लिहाज़ा तुम अपने ईमान पर मज़बूती से क़ायम रहो (3) मुसलमानों को शक था कि हमें इस जिहाद का बदला मिलेगा या नहीं, आयत में बात साफ़ कर दी गई (4) शराब, जुवे की बुराइयां बयान की जाती रहीं अंततः सूरह माइदा में इसके हराम होने का एलान कर दिया गया (5) यानी जो अपने ज़रूरी खर्च से बढ़कर है वह खर्च किया जाए अगर सब दे दिया गया तो उसको बर्दाश्त करना मुश्किल है और फिर ख़तरा है कि आदमी किसी बुराई में न फंस जाए।

فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۗ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ۗ قُلْ اِصْلَاحٌ
لَّهُمْ خَيْرٌ ۗ وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ
مِنَ الْمُصْلِحِ ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٠﴾
وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ۗ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ
مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ۗ
وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ۗ اُولٰٓئِكَ
يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۖ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ
بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٢١﴾ وَ
يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ۗ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِى
الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ
مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ
الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿٢٢٢﴾ نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۖ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ۖ
وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ۗ وَ
بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٢٣﴾ وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ
تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ النَّاسِ ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٤﴾

ع

منزل ۱

दुनिया के बारे में भी और आख़िरत के बारे में भी[1] और वे आपसे अनाथों के बारे में पूछते हैं आप कह दीजिए कि उनके साथ अच्छा बर्ताव ही बेहतर है और अगर तुम उनको साथ रखते हो तो वे तुम्हारे भाई ही तो हैं और अल्लाह ख़ूब जानता है भलाई करने वाला कौन है और बिगाड़ करने वाला कौन और अल्लाह चाहता तो तुम्हें कठिनाई में डाल देता, बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है हिकमत वाला है[2] (220) और शिर्क करने वाली औरतों से जब तक वे ईमान न ले आएं निकाह मत कर लेना और एक ईमान वाली बांदी (लौंडी) शिर्क करने वाली (आज़ाद औरत) से बहुत बेहतर है चाहे तुम्हें अच्छी लगे, और न शिर्क करे वालों से (किसी मुसलमान औरत का) निकाह करना जब तक वे ईमान न ले आएं[3] और एक ईमान वाला गुलाम मुश्रिक से बेहतर है चाहे वह तुम्हें अच्छा लगे वे (मुश्रिक लोग) जहन्नम की ओर बुला रहे हैं और अल्लाह अपने हुक्म से जन्नत और (गुनाहों से) माफ़ी की ओर बुला रहा है और लोगों के लिए अपनी निशानियां खोल रहा है कि शायद वे नसीहत (शिक्षा) प्राप्त करें[4] (221) वे आप से हैज़ (मासिक धर्म) के बारे में पूछते हैं आप कह दीजिए कि वह एक गंदगी है, तो हैज़ (के दिनों) में औरतों से अलग रहो और वे जब तक पाक न हो जाएं उनके करीब मत जाओ, तो जब वे पाक हो जाएं तो जैसे अल्लाह ने तुम्हें बताया है उसके अनुसार तुम उनसे संबंध बनाओ बेशक अल्लाह तौबा करने वालों और पाक–साफ़ रहने वालों को पसंद करता है[5] (222) तुम्हारी औरतें तुम्हारे लिए खेती (की तरह) हैं तो जहां से चाहो अपनी खेती का इस्तेमाल करो[6] और अपने हक़ में आगे कुछ करते रहो और अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि तुम उससे मिलने वाले हो, और आप ईमान वालों को खुशख़बरी सुना दीजिए (223) और अल्लाह (के नाम) को अपनी कसमों का आड़ मत बनाओ (कि उसके ज़रिए) नेकी और परहेज़गारी से और लोगों में सुलह–सफ़ाई करा देने से रूक जाओ और अल्लाह ख़ूब सुनता ख़ूब जानता है[7] (224)

(1) दुनिया समाप्त हो जाने वाली मगर आवश्यकताओं की जगह है और आख़िरत बाक़ी रहने वाली और सवाब का घर है, इसलिए दोनों के बारे में सोचकर उसके हाल के मुनासिब ख़र्च करना बेहतर है (2) अनाथों के धन के बारे में सख़्त आयतें उतरी थीं तो सहाबा ने उनके खाने–पकाने को भी अलग कर दिया और बड़ी कठिनाइयां सामने आईं, उस पर यह आयत उतरी कि अलग करने की आवश्यकता नहीं बस उनके लिए भलाई का ध्यान रहे और उनको नुक़सान पहुंचाने का इरादा न हो, अंत में अल्लाह ने एहसान का उल्लेख किया कि वह चाहता तो अलग कर देने का ही आदेश देता लेकिन उसने एहसान किया कि एक साथ रहने की इजाज़त दी तो इससे ग़लत फ़ायदा मत उठाना (3) यानी अपनी बेटियों या बहनों की शादी किसी मुश्रिक से मत कर देना (4) इस्लाम के आरम्भ में मुश्रिकों से शादी की इजाज़त थी इस आयत में उसकी मनाही का एलान हो रहा है इसका कारण भी बता दिया गया कि उनके साथ रहने और प्रेम से शिर्क की धृणा कम होगी और प्रेम पैदा होगा जिसका परिणाम दोज़ख है (5) हैज़ (माहवारी) में औरत से सम्भोग हराम है लेकिन उसके साथ खाना–पीना रहना वैध है, यहूदी सम्भोग को भी वैध (यानी) कहते थे और ईसाई साथ रहने को भी हराम कहते थे (6) योनि में सम्भोग किया जाए फिर जिस ढंग से भी हो जायज़ है इसमें यहूदियों के उस विचार का खण्डन है कि योनि में पीछे से सम्भोग करने से संतान भैंगी पैदा होती है (7) नेकी न करने की क़सम खाना गुनाह है, अगर कोई ऐसा करता है तो क़सम तोड़ना और कफ़्फ़ारा दोना ज़रूरी है।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ
بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٢٥﴾ لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ
مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَاۗءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢٦﴾ وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ﴿٢٢٧﴾ وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْۗءٍ ۭ وَلَا
يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ
يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ۭ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ
بِالْمَعْرُوْفِ ۠ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ﴿٢٢٨﴾ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۠ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ
تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ۭ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ
اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَـيْـــًٔا اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۭ
فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا
فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ۭ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْھَا ۚ
وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰۗىِٕكَ ھُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٢٩﴾

منزل١

अल्लाह तुम्हारी अर्थहीन क़समों पर तुम्हारी पकड़ नहीं करेगा लेकिन तुम्हारे दिलों के अमल पर तुम्हारी पकड़ करेगा और अल्लाह बहुत (गुनाहों को) माफ़ करने वाला बड़ा बर्दाश्त करने वाला है[1] (225) जो लोग अपनी पत्नियों के पास न जाने की क़सम खाते हैं (ईला करते हैं) उनके लिए चार महीने इन्तिज़ार की मुद्दत (अवधि) है फिर अगर वे मिलाप (रुजूअ) कर लेते हैं तो बेशक अल्लाह बहुत (गुनाहों को) माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है (226) और यदि उन्होंने तलाक़ का पक्का इरादा कर लिया है तो बेशक अल्लाह बहुत सुनने वाला और ख़ूब जानने वाला है[2] (227) और तलाक़ दी हुई औरतें अपने बारे में तीन दौर (मासिक धर्म) तक इन्तिज़ार करें और उनके लिए यह वैध (जायज़) नहीं कि अल्लाह ने उनके रहम (गर्भाशय) में जो चीज़ पैदा की हो उसको वे छिपाएं अगर वे अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हों, और इस मुद्दत में उनके पति उनको वापस पाने (रुजूअ करने) का ज़्यादा हक रखते हैं अगर उन्होंने हालात के सुधार का इरादा कर लिया हो[3] और जिस तरह उनकी ज़िम्मेदारियां हैं उसी तरह नियम के अनुसार उनके अधिकार भी हैं और मर्दों को उन पर एक गुना बरतरी हासिल है[4] और बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त है, बड़ी हिकमत वाला है (228) तलाक़ तो दो ही बार है (कि उसमें) या तो नियम के अनुसार रोक ले या अच्छे बर्ताव के साथ विदा कर दे और तुम्हारे लिए जायज़ नहीं कि तुमने उनको जो कुछ दे रखा है उसमें से कुछ भी लो, मगर यह कि दोनों को इसका डर हो कि वे अल्लाह के हुक्मों को क़ायम न रख सकेंगे, तो अगर तुम्हें इस का डर हो कि वे दोनों अल्लाह के हुक्मों को कायम न रख सकेंगे (तो ऐसी दशा में) औरत जो आर्थिक मुआवज़ा दे उसमें उन दोनों पर कोई गुनाह नहीं, यह अल्लाह की तय की हुई सीमाएं हैं तो इन से आगे न बढ़ना जो अल्लाह की सीमाएं लांघता है तो वही लोग अन्याय करने वाले हैं (229)

(1) बिना सोचे समझे ज़बान से क़सम के शब्द कह दे तो यह क़सम–ए–लग़्व कहलाती है इसमें कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) नहीं है मगर इनसान को चाहिए कि वह क़सम खाने में सावधानी से काम ले और ऐसी क़सम से भी परहेज़ करे, और सोच–समझ कर कहे तो कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) ज़रूरी है (2) पत्नी के पास न जाने की क़सम खा लेने को "ईला" कहते हैं, अरबों में यह रिवाज था कि वे पत्नी के पास न जाने की क़सम खा लेते थे और इस प्रकार उसको लटका कर रखते थे कि न वह कहीं शादी कर सकती थी और न उसको पति की ओर से पत्नी के अधिकार मिलते थे, इस आयत ने यह क़ानून बना दिया, अब अगर चार माह के अन्दर अन्दर संबंध बना लिया तो कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) अदा करे अल्लाह माफ़ कर देगा और अगर चार माह गुज़र गए तो एक तलाक़ पड़ गई (3) तलाक़ के बाद औरत दूसरे मर्द से निकाह (विवाह) नहीं कर सकती जब तक कि तीन दौर हैज़ (मासिक धर्म) के पूरे न हो जाएं ताकि अगर गर्भ हो तो ज़ाहिर हो जाए व नसब (गोत्र) में समागम (इख़तिलात) न हो, हाँ अगर पति ख़ुद मिलाप करना चाहे और उसकी नीयत बुरी न हो तो इद्दत ही में संबंध बना लेना उसके लिए ठीक है (4) सारी ज़िम्मेदारी मर्द ही के ऊपर है और उसका अपने ऊपर औरत की तुलना में ज़्यादा नियंत्रण होता है इसलिए उसको बरतरी है और उसी को तलाक़ का अधिकार दिया गया है, मगर आयत में यह ताकीद की जा रही है कि तलाक़ देनी ही पड़ जाए तो ज़्यादा से ज़्यादा दो तलाक़ें देनी चाहिए क्योंकि इस दशा में पति–पत्नि के बीच संबंध बहाल होने की संभावना रहती है अतः इद्दत के दौरान पति का तलाक़ (छोड़ने) के इरादे से पलटने का अधिकार रहता है, और इद्दत के बाद दोनों की सहमति से नया निकाह नये महर के साथ ⇒

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتَّىٰ تَنْكِحَ
زَوْجًا غَيْرَهُ ۗ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ
يَتَرَاجَعَا إِنْ ظَنَّا أَنْ يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۗ وَتِلْكَ
حُدُودُ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٢٣٠﴾ وَإِذَا طَلَّقْتُمُ
النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ
أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا
لِتَعْتَدُوا ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ
وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا ۚ وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةِ
يَعِظُكُمْ بِهِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمٌ ﴿٢٣١﴾ وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ
فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضَوْا
بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ ۗ ذَٰلِكَ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ
مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ ذَٰلِكُمْ أَزْكَىٰ
لَكُمْ وَأَطْهَرُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٢﴾

منزل ١

फिर अगर वह उसको तलाक़ दे दे[1] तो उसके बाद उसके लिए वह औरत उस समय तक हलाल नहीं जब तक वह उसके अलावा किसी दूसरे पति से निकाह (विवाह) का संबंध क़ायम नहीं कर लेती, फिर अगर वह (दूसरा पति) तलाक़ दे दे तो दोनों पर रूजूअ कर लेने (मिलाप करने) में गुनाह नहीं अगर वे दोनों इसकी अधिक सम्भावना रखते हों कि वे अल्लाह की सीमाओं (क़ानून) को क़ायम रखेंगे, यह अल्लाह की तय की हुई सीमाएं (क़ानून) हैं जिनको वह बयान करता है उन लोगों के लिए जो जानते हैं (230) और जब तुम औरतों को तलाक़ दे चुको और वे अपनी (इद्दत की) मुद्दत को पहुंचें तो या तो बेहतर तरीके पर उनको रोक लो या अच्छी तरह से विदा कर दो और उनको नुक़सान पहुंचाने के लिए मत रोकना कि तुम ज़्यादती करने लग जाओ और जिसने ऐसा किया तो उसने अपने साथ जुल्म किया[2] और (देखो) अल्लाह की आयतों का खिलवाड़ मत बनाओ और अपने ऊपर अल्लाह के इनआम को याद करो और उसने जो किताब व हिकमत तुम्हें दी उसको भी, कि उसके द्वारा वह तुम्हारे लिए नसीहत का प्रबंध करता है और अल्लाह का लिहाज़ करो और जान लो कि बेशक अल्लाह हर चीज़ को खूब जानता है (231) और जब तुमने औरतों को तलाक़ दे दी फिर उन्होंने अपनी इद्दत पूरी कर ली तो तुम उनको अपने पतियों से निकाह (विवाह) करने में रूकावट मत डालो अगर वे भलाई के साथ आपस में इस पर सहमत हों[3] इसकी नसीहत की जाती है उन लोगों को जो तुममें अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, यह तुम्हारे लिए ज़्यादा सुथराई की बात है और ज़्यादा पवित्रता की और अल्लाह ख़ूब जानता है और तुम नहीं जानते (232)

⇒ हो सकता है, तीन तलाक़ों के बाद दोनों के लिए रास्ते बन्द हो जाते हैं, यह भी आदेश किया जा रहा है कि पति तलाक़ के बदले मेहर वापस करने या माफ़ करने या किसी और माल की मांग करने का अधिकृत नहीं है, लेकिन अगर औरत खुद साथ रहना न चाहती हो तो वह कुछ ले देकर अलगाव कर सकती है, इसको "खुला" कहते हैं।

(1) यह तीसरी तलाक़ है, अब औरत हमेशा कि लिए हराम (अवैध) होगी, इसके अलावा कि वह किसी दूसरे से विवाह करे फिर वह किसी वजह से तलाक़ दे दे तो वह दोबारा पहले पति के निकाह में नए निकाह के साथ आ सकती है (2) जाहिलियत के ज़माने में लोगों ने इसको खिलवाड़ बना लिया था, तलाक़ देते थे फिर निर्धारित अवधि (इद्दत) पूरी होने से पहले–पहले मिलाप कर लेते थे मतलब केवल औरत को परेशान करना होता था इसको मना किया जा रहा है (3) अगर एक या दो तलाकें दे दी हैं और औरत की निर्धारित अवधि (इद्दत) पूरी हो गई तो तलाक़ पड़ गई, इद्दत के बाद अगर पति दुबारा विवाह करना चाहे और औरत भी राज़ी हो तो रोकने की ज़रूरत नहीं बल्कि यह ज़्यादा पाकी की बात है, साथ साथ इसमें यह भी इशारा है कि शरीअत (इस्लामी क़ानून) ने विवाह के संबंध में औरत को पसंद और ना पसंद की आज़ादी दी है औरत के अभिभावकों को इस आज़ादी का आदर करना चाहिए और सद्बुद्धि वाली व्यस्क औरत पर किसी प्रकार की ज़ोर जबर्दस्ती नहीं करनी चाहिए।

وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ
يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ
لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌ ۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ
لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۗ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ
تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ؕ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ
تَسْتَرْضِعُوْٓا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّآ اٰتَيْتُمْ
بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۳۳﴾
وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ
اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ
فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۳۴﴾
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ
فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ
سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ؕ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ
حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ
اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۲۳۵﴾

ع ٣٠

منزل ١

माएं अपनी औलाद को पूरे दो साल दूध पिलाएं, यह उसके लिए है जो दूध पिलाने की अवधि पूरी करना चाहे और जिसका वह बच्चा हो उसके ज़िम्मे उस पर नियमानुसार उन औरतों का खाना कपड़ा है[1] किसी पर ताक़त से ज़्यादा भार नहीं डाला जाता, न तो मां को अपने बच्चे की वजह से नुकसान पहुंचाया जाए और न बाप को अपने बच्चे की वजह से[2] और वारिस के ज़िम्मे भी यही है[3] बस अगर वे आपस की सहमति और मश्वरे से (अवधि पूरी होने से पहले) दूध छुड़ाना चाहें तो उन दोनों पर कोई गुनाह नहीं और अगर तुम अपनी औलाद को (किसी और से) दूध पिलवाना चाहो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम को जो देना है वह तुमने भलाई के साथ दे दिया[4] और अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि तुम जो कुछ करते हो बेशक अल्लाह उसे ख़ूब देख रहा है (233) और तुम में जो लोग मर जाएं और वे पत्नियां छोड़ जाएं वे (पत्नियां) चार माह दस दिन अपने आप को रोक कर रखें फिर जब वे अपनी (इद्दत की) अवधि पूरी कर लें तो वे अपने लिए जो भी भलाई के साथ कार्यवाही करें उसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं और तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उससे पूरी तरह अवगत है[5] (234) और उसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं जो तुम उन औरतों से पैग़ाम के संबंध में इशारों से काम लो या अपने मन में उसको छिपा रखो, अल्लाह तआला जानता है कि तुम ज़रूर उनका ध्यान लाओगे लेकिन तुम उनसे चुपके से कोई वादा मत लो सिवाय इसके कि तुम कोई भली बात कह दो और उस समय तक निकाह (विवाह) के इरादे को पक्का मत करना जब तक निर्धारित अवधि पूरी नहीं हो जाती, और जान लो कि जो कुछ तुम्हारे मन में है उससे अल्लाह ख़ूब अवगत है तो उससे डरते रहो और जान लो कि अल्लाह तआला बहुत माफ़ करने वाला बर्दाश्त करने वाला है (235)

(1) अगर वह पत्नी है तो उसका अधिकार है और अगर तलाक़ दे चुका है लेकिन अभी निर्धारित अवधि (इद्दत) में है तो भी नान व नफ़क़ा (भरण पोषण) उसके ज़िम्मे है और अगर निर्धारित अवधि (इद्दत) पूरी हो चुकी लेकिन वह बच्चे को दूध पिला रही है तो भी उसके खाने कपड़े का ख़र्च का देना बच्चे के बाप पर ज़रूरी है और दूध पिलाने की अवधि दो वर्ष है जिसमें बाप के ज़िम्मे उसकी उजरत (परिश्रमिक) ज़रूरी होती है (2) जैसे माँ अकारण दूध पिलाने से इनकार कर दे या बाप बिला वजह बच्चे को मां से अलग कर दे या खाने कपड़े में तंगी करे (3) यानी अगर बच्चे का बाप ज़िंदा न हो तो दूध पिलाने के संबंध में जो ज़िम्मेदारी बाप की है वह बच्चे के वारिसों पर आएगी, यानी जो लोग बच्चे की मरने की दशा में उसके सम्पत्ति के हक़दार होंगे उन्हीं पर यह भी अनिवार्य है कि वे उस बच्चे को दूध पिलाने और उसका ख़र्च उठाने की जिम्मेदारी निभायें (4) किसी और से दूध पिलवाना तो वैध है मगर मगर मां का हक़ न काटे (5) यह उन औरतों के लिए निर्धारित अवधि (इद्दत) है जिनके पति का निधन हो चुका हो, इद्दत के बाद श्रृंगार करने और निकाह करने की उनको इजाज़त है। भलाई के साथ कार्यवाही करने का मतलब यही है कि वह दूसरा निकाह कर रही है तो यह उचित है उनको रोकने की ज़रूरत नहीं और किसी पर कोई गुनाह नहीं, इद्दत के बीच पयाम देना ठीक नहीं हां इशारों–इशारों में बात पहुंचाई जा सकती है लेकिन पक्का इराद करके और इसको ज़ाहिर करना वैध नहीं।

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ
تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۚۖ وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَ
عَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا ۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۲۳۶﴾
وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ
لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا
الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ؕ وَاَنْ تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ؕ وَ
لَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۳۷﴾
حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۗ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ
قٰنِتِيْنَ ﴿۲۳۸﴾ فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا
اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۹﴾ وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ
مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۚۖ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى
الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا
فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۴۰﴾
وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌ ۢ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿۲۴۱﴾
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۲۴۲﴾ ع

منزل ۱

और तुम पर कोई गुनाह नहीं कि उन औरतों को जिनको तुमने हाथ भी नहीं लगाया और न उनके लिए कोई महर निर्धारित किया तलाक़ दे दो और उनको नियम के अनुसार उपहार दे दो, सामर्थ्य रखने वाले के ज़िम्मे उसकी हैसियत के अनुसार और असमर्थ के ज़िम्मे उसकी हैसियत के अनुसार, अच्छे काम करने वालों के लिए यह ज़रूरी है (236) और अगर तुम उन्हें हाथ लगाने से पहले ही इस हाल में तलाक दे दो कि तुमने उनके लिए महर निर्धारित कर रखा है तो जो तुमने तय किया उसका आधा (तुम पर ज़रूरी) है मगर यह कि वे माफ़ कर दें या जिसके हाथ में निकाह की गिरह है वह माफ़ कर दे और तुम माफ़ कर दो यह तुम्हारे लिए परहेज़गारी के ज़्यादा क़रीब है और आपस के एहसान को भूल मत जाओ, तुम जो भी करते हो बेशक अल्लाह उसे ख़ूब देखता है[1] (237) सारी नमाज़ें और (विशेष कर) बीच की नमाज़ की देख रेख रखो और अल्लाह के लिए आदर के साथ खड़े हुआ करो[2] (238) लेकिन अगर तुम्हें डर हो तो पैदल या सवार (जिस तरह बन पड़े पढ़ लो) फिर जब तुम को शान्ति हासिल हो जाए तो उसी तरह अल्लाह को याद करो जैसा कि उसने तुम्हें बताया है जो तुम जानते भी न थे[3] (239) और तुममें जो लोग मर जाएं और वे पत्नियां छोड़ जाएं उनकी वसीयत अपनी पत्नियों के लिए बिना उनको निकाले हुए एक साल के ख़र्च (नफ़क़ा) की होनी चाहिए फिर अगर वे ख़ुद निकल जाएं तो जो वे अपने लिए भलाई करें उसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं और अल्लाह ज़बरदस्त है हिकमत वाला है[4] (240) और सारी तलाक दी हुई औरतों के लिए नियमानुसार कुछ फायदा पहुंचाना परहेज़गारों पर ज़रूरी है[5] (241) अल्लाह इसी तरह खोल–खोल कर तुम्हारे लिए निशानियां बयान करता है ताकि शायद तुम समझ से काम लो (242)

---

(1) अगर महर निर्धारित हुआ और हाथ लगने से पहले तलाक़ हो गई तो आधा महर देना होगा, हां अगर पत्नी माफ़ कर दे तो अलग बात है लेकिन ज़्यादा बेहतर है कि मर्द अच्छा बर्ताव करके पूरा ही महर दे दे और अगर निकाह (विवाह) के समय पूरा महर दे चुका है तो आधा वापस न ले और माफ़ कर दे यह परहेज़गारी से ज़्यादा क़रीब बात है, निकाह की गिरह (गांठ) मर्द ही के हाथ में होती है इसलिए फिर उनको संबोधित करके कहा जा रहा है कि तुम ही अच्छा बर्ताव करो यह बेहतर है (2) बीच की नमाज़ अस्र की है जैसा कि हदीसों से मालूम होता है, शुरू में नमाज़ के दौरान ज़रूरत के समय कुछ बोल देने, बात कर लेने की अनुमति थी इस आयत में उसको बिल्कुल निरस्त (मंसूख़) कर दिया गया (3) युद्ध के अवसर पर जिस तरह बन पड़े नमाज़ पढ़ लो लेकिन अमन की परिस्थिति में जो तरीक़ा बनाया गया है वही ज़रूरी है (4) बिल्कुल शुरू की बात है जब औरत एक साल तक इद्दत में रहती थी, और विरासत में उसका कोई अधिकार न था जिस तरह दूसरे नातेदारों के लिए वसीयत का आदेश था उसी प्रकार पत्नी के लिए एक वर्ष के भरण–पोषण का आदेश था, फिर जब मीरास (पैत्रिक संपत्ति) वाली आयत उतर गई तो औरतों का हिस्सा भी निर्धारित हो गया और औरत की इद्दत की अवधि भी चार माह दस दिन क़रार दी गई तो यह पुराना आदेश निरस्त हो गया (5) परहेज़गारी की बात है कि तलाक़ पाई हुई औरतों को महर के अलावा जोड़ा भी दिया जाए।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ
فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى
النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٢٤٣﴾ وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ
اللَّهِ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٤﴾ مَّن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ
قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً ۚ وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْسُطُ وَ
إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٤٥﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَإِ مِن بَنِي إِسْرَائِيلَ مِن بَعْدِ
مُوسَىٰ إِذْ قَالُوا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ ۖ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِن كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا ۖ
قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِن
دِيَارِنَا وَأَبْنَائِنَا ۖ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا
مِّنْهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٢٤٦﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ
قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًا ۚ قَالُوا أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ
عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ۚ
قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَ
الْجِسْمِ ۖ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٧﴾

وقف لازم

منزل ۱

क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो मौत के डर से अपने घरों से निकले जबकि वे हज़ारों थे तो अल्लाह ने उनसे कहा तुम सब मर जाओ, फिर उन्हें ज़िन्दा किया बेशक अल्लाह लोगों पर बहुत फ़ज़ल (कृपा) करने वाला है लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा करने वाले नहीं होते[1] (243) और अल्लाह के रास्ते में जंग करो और जान लो कि अल्लाह बहुत सुनने वाला और ख़ूब जानने वाला है[2] (244) कौन है जो अल्लाह को बेहतर कर्ज़ दे तो वह उसके लिए बढ़ा कर उसको कई गुना कर दे और अल्लाह ही तंगी भी करता है और फराख़ी (संपन्नता) भी और तुम सब उसी की ओर लौटाए जाओगे (245) भला आपने मूसा के बाद बनी इस्राईल के इज़्ज़तदार लोगों को देखा जब उन्होंने अपने पैग़म्बर से कहा कि हमारे लिए कोई बादशाह खड़ा कीजिए हम अल्लाह के रास्ते में जंग करेंगे, उन्होंने कहा कि ऐसा तो नहीं है कि अगर तुम पर जंग फर्ज़ (अनिवार्य) कर दी जाए तो तुम जंग न करो, वे बोले आख़िर हम क्यों अल्लाह के रास्ते में जंग न करेंगे जबकि हमको अपने घरों और बाल बच्चों से निकाल बाहर कर दिया गया फिर जब उन पर जंग फ़र्ज़ (अनिर्वाय) कर दी गई तो कुछ लोगों के अलावा सबके सब पीठ फेर गए और अल्लाह ज़ालिमों से ख़ूब परिचित है[3] (246) उनके पैग़म्बर ने उनसे कहा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए राजा के रूप में तालूत को खड़ा किया है वे बोले उनको हम पर बादशाही कहां से हासिल हो सकती है और हम तो उनसे ज़्यादा बादशाही के हक़दार हैं और उनको तो बड़ी मात्रा में माल भी नहीं दिया गया (पैग़म्बर ने) कहा कि अल्लाह ने उनको तुम पर चुन लिया है और उनके ज्ञान और शरीर में ज़्यादा कुशादगी है अल्लाह जिसको चाहता है अपनी बादशाही देता है और अल्लाह बहुत कुशादगी वाला ख़ूब जाने वाला है[4] (247)

(1) पहली उम्मत की कहानी है कि वे जंग के डर से घरों से भाग निकले तो अल्लाह ने उन पर मौत को थोप दिया और कुछ दिनों के बाद जीवित कर दिया ताकि वे तौबा कर लें और जान लें कि जीवन और मृत्यु अल्लाह ही के हाथ में है (2) फिर इस घटना को बयान करके अगली आयतों में जिहाद और अल्लाह के रास्ते में खर्च करने पर प्रेरित किया जा रहा है (3) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के निधन के कुछ समय बाद फिलिस्तीन की मूर्ति पूजक क़ौम ने बनी इस्राईल पर हमला करके उन्हें बुरी तरह पराजित किया और उनको उनके क्षेत्र से निकाल दिया और वह पावन पेटी भी उठा ले गए जिसको वे जंगों के अवसर पर बरकत के लिए आगे रखते थे तो वे सब बैतुल मक़्दिस में उस समय के नबी के पास एकत्र हुए और कहा कि कोई बादशाह निर्धारित कर दीजिए ताकि हम जंग कर सकें और अपनी ज़मीन वापस ले सकें, आगे आयतों में इसी घटना को और बनी इस्राईल की नाफरमानियों को बयान किया गया है (4) जब नबी ने तालूत का नाम लिया तो चूंकि वह गरीब आदमी थे और पहले से कभी उनके खानदान में बादशाही नहीं रही थी इसलिए क़ौम को बादशाही के योग्य मालूम न हुए तो उन्होंने आपत्ति की।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ
سَكِينَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ
تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٤٨﴾
فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ
فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَنْ لَمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ
اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ ۚ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ ۚ فَلَمَّا جَاوَزَهُ
هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ ۚ
قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلَاقُو اللَّهِ كَمْ مِنْ فِئَةٍ قَلِيلَةٍ
غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٢٤٩﴾ وَلَمَّا
بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ
أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٥٠﴾ فَهَزَمُوهُمْ بِإِذْنِ اللَّهِ
وَقَتَلَ دَاوُودُ جَالُوتَ وَآتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهُ مِمَّا
يَشَاءُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَفَسَدَتِ
الْأَرْضُ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٢٥١﴾ تِلْكَ
آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٥٢﴾

منزل ١

और उनके पैग़म्बर ने उनसे कहा कि उनकी बादशाही की पहचान यह है कि तुम्हारे पास वह ताबूत आएगा जिसमें तुम्हारे पालनहार की ओर से निशानी है और कुछ बची हुई चीज़ें भी हैं जो मूसा और हारून की औलाद छोड़ गई हैं उसको फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे बेशक उसमें तुम्हारे लिए निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो[1] (248) जब तालूत लश्कर को लेकर बढ़े तो उन्होंने कहा कि अल्लाह तुम्हें एक नदी के द्वारा आज़माने वाला है बस उनमें से जिसने पी लिया तो वह हमारा नहीं और जिसने उसमें से चखा भी नहीं तो वही हमारा है उसके अलावा जो अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले, बस उसमें से कुछ लोगों के अलावा सबने पी लिया फिर जब वह और उनके साथ जो ईमान वाले थे नदी पार हुए तो वे कहने लगे कि जालूत और उसकी सेना के मुक़ाबले की आज हममें शक्ति नहीं, जिन लोगों को अल्लाह से मिलने का विश्वास था उन्होंने कहा कि कितनी छोटी सेनाएं हैं जो अल्लाह के हुक्म से बड़ी सेना पर विजय पाई हैं और अल्लाह तो सब्र करने वालों के साथ है (249) और जब उनका जालूत और उसकी सेना से सामना हुआ तो उन्होंने कहा कि ऐ हमारे पालनहार! सब्र हम पर उंडेल दे और हमारे क़दमों को जमा दे और कुफ़्र करने वाली क़ौम पर हमारी मदद कर (250) बस अल्लाह के हुक्म से उन्होंने उनको (अर्थात जालूत और उसकी सेना को) पराजित कर दिया और दाऊद ने जालूत को क़त्ल कर दिया और अल्लाह ने उनको बादशाही और हिकमत (नुबुव्वत) से नवाज़ा और जो चाहा उनको सिखाया और अल्लाह अगर लोगों को एक दूसरे से चलता न करे तो ज़मीन बिगड़ कर रह जाए लेकिन अल्लाह जहानों पर फ़ज़ल (कृपा) करने वाला है[2] (251) यह अल्लाह की वह आयतें हैं जिन्हें हम आपको ठीक–ठीक सुना रहे हैं और बेशक आप रसूलों ही में से हैं (252)

---

(1) पेटी में बरकत की चीज़ें थीं वे जंगों में उसे आगे रखते थे अल्लाह उसकी बरकत से विजय प्रदान करता था उसी की वापसी को अल्लाह के पैग़म्बर ने तालूत की बादशाही की पहचान क़रार दिया, अतः जब ताबूत तालूत के माध्यम से उनको मिल गया तो उनको तालूत की बादशाही पर विश्वास हो गया (2) सख़्त गर्मी का मौसम था, अल्लाह उनकी परीक्षा लेना चाहता था, तालूत ने कहा कि जो कोई ताक़तवर जवान और बेफ़िक्र हो वह हमारे साथ चले, अस्सी हज़ार की सेना तैयार हुई लेकिन परीक्षा में सफल न हो सके और अस्सी हज़ार में से केवल कुछ सौ ही उनके साथ रह पाए और उन्होंने भी जब जालूत की सेना देखी तो हिम्मत हार गए और केवल गिने चुने लोग जमे रहे और अल्लाह ने उनको विजय प्रदान की, उन लोगों में हज़रत दाऊद भी थे, उनके पिता और भाई भी थे, हज़रत दाऊद ही ने जालूत को क़त्ल किया और तालूत के बाद वही बादशाह हुए।

تلك الرسل فضلنا بعضهم على بعض منهم
من كلم الله ورفع بعضهم درجت وآتينا عيسى ابن
مريم البينت وأيدنه بروح القدس ولو شاء الله ما اقتتل
الذين من بعدهم من بعد ما جاءتهم البينت ولكن اختلفوا
فمنهم من آمن ومنهم من كفر ولو شاء الله ما اقتتلوا
ولكن الله يفعل ما يريد ﴿٢٥٣﴾ يا أيها الذين آمنوا أنفقوا
مما رزقنكم من قبل أن يأتي يوم لا بيع فيه ولا خلة ولا
شفاعة والكفرون هم الظلمون ﴿٢٥٤﴾ الله لا إله إلا هو الحي
القيوم لا تأخذه سنة ولا نوم له ما في السموت وما في
الأرض من ذا الذي يشفع عنده إلا بإذنه يعلم ما بين
أيديهم وما خلفهم ولا يحيطون بشيء من علمه إلا بما
شاء وسع كرسيه السموت والأرض ولا يؤده حفظهما و
هو العلي العظيم ﴿٢٥٥﴾ لا إكراه في الدين قد تبين الرشد من
الغي فمن يكفر بالطاغوت ويؤمن بالله فقد استمسك
بالعروة الوثقى لا انفصام لها والله سميع عليم ﴿٢٥٦﴾

منزل١

यह वे रसूल हैं जिनमें कुछ को हमने कुछ पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी, इनमें वे भी हैं जिनसे अल्लाह ने बातचीत की और कुछ के दर्जे बढ़ाए[1] और हमने मरियम के बेटे ईसा को खुली निशानियां दीं और रूहुलकुदुस (जिब्रईल अलै0) से उनको सशक्त किया और अगर अल्लाह चाहता तो उन (रसूलों) के बाद वाले जबकि उनके पास खुली निशानियां आ चुकी थीं आपस में न लड़ते, लेकिन उन्होंने विभेद (इख़्तिलाफ़) किया तो उनमें कुछ ईमान लाए और उनमें कुछ ने इनकार किया और अल्लाह की चाहत ही होती तो वे आपस में न लड़ते, लेकिन अल्लाह तो जो चाहता है करता है[2] (253) ऐ ईमान वालो! हमने तुम्हें जो रोज़ी दी है उसमें से ख़र्च करो उस दिन के आने से पहले जिसमें न कोई लेन–देन (काम आएगा) न दोस्ती और न सिफ़ारिश और काफ़िर तो हैं ही अत्याचारी[3] (254) वही अल्लाह है उसके अलावा कोई इबादत के योग्य नहीं, वही जीता है और सब उसके सहारे जीते हैं, न उसको ऊंघ आती है और न नींद, जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का है, कौन है जो बिना उसकी इजाज़त के उसके पास सिफ़ारिश कर सके, उनका अगला–पिछला सब जानता है, उसके इल्म (ज्ञान) के किसी भाग पर भी वे हावी नहीं हो सकते मगर जितना वह चाहे, उसकी कुर्सी आसमानों और ज़मीन पर व्याप्त है और उन दोनों की निगरानी उसको थकाती नहीं और वही बुलंद व श्रेष्ठ बड़ा महान है[4] (255) दीन में कोई ज़बर्दस्ती नहीं, सत्य–असत्य से अलग हो चुका, बस जिसने ताग़ूत (सरकश शैतान) का इनकार किया और अल्लाह पर ईमान लाया तो उसने मज़बूत कड़े को थाम लिया जो टूटने वाला नहीं और बेशक अल्लाह ख़ूब सुनता और ख़ूब जानता है[5] (256)

(1) हज़रत मूसा से बात की, हज़रत ईसा को खुले चमत्कारों की शक्ति दी जिनका उल्लेख दूसरी जगह आया है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सर्वश्रेष्ठ और प्रिय बनाया और मेराज से सम्मानित किया (2) अल्लाह इस बात में सक्षम था कि वह तमाम इंसानों को ईमान लाने पर मजबूर कर देता ऐसी दशा में सभी का धर्म एक हो जाता और कोई मतभेद न होता लेकिन इससे वह सारी व्यवस्था उलट कर रह जाती जिसके लिए दुनिया बनाई गई है और इंसान को यहां भेजा है, इंसान के यहां भेजने का मक़सद परीक्षा लेना है, उसने सही और सच्चा तरीक़ा बता दिया और कह दिया कि जो उसपर चलेगा वह सफल होगा, तो कुछ लोगों ने माना और अधिकांश लोगों ने इनकार किया (3) इनकार करने वाले तो हर चीज़ से वंचित रहेंगे, जो मानने वाले हैं उनको अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करके तैयारी रखनी चाहिए (4) यह आयतल्कुर्सी कहलाती है जो कुरआन मजीद की महानतम आयत है इसमें अल्लाह की तौहीद (एकेश्वरवाद) और उसके गुणों का बयान जिस ढंग से हुआ है उसको दूसरों ने भी माना है, इससे हर प्रकार के शिर्क का खण्डन हो जाता है और दूसरे धर्म वाले इसमें किसी भी हैसियत से लिप्त हुए हैं उनका खण्डन हो जाता है (5) जब हक़ (सत्य) स्पष्ट हो गया उसकी ओर लोगों को बुलाया जा चुका तो अब किसी ज़ोर जबर्दस्ती की न ज़रूरत है न इजाज़त, हक़ (सत्य) का रास्ता खुला हुआ है जो चाहे इसमें दाख़िल हो और अल्लाह से अपने सम्बंध को मज़बूत करके अपनी मज़बूती का प्रबंध करे।

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۬ؕ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ
اِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۵۷﴾
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِيْ رَبِّهٖٓ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ
الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّيَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا
اُحْيٖ وَاُمِيْتُ ؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِيْ بِالشَّمْسِ مِنَ
الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِيْ كَفَرَ ؕ وَاللّٰهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۵۸﴾ اَوْ كَالَّذِيْ مَرَّ عَلٰى قَرْيَةٍ وَّ
هِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى يُحْيٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ
مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ
قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ
عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ
اِلٰى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى
الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ فَلَمَّا تَبَيَّنَ
لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۵۹﴾

ع وقف لازم

منزل ١

अल्लाह उन लोगों का हिमायती (सहायक) है जो ईमान लाए वह उनको अंधेरों से निकालकर रौशनी में लाता है और जिन्होंने कुफ़्र (इनकार) किया उनके दोस्त तागूत (शैतान) हैं वे उनको रौशनी से अंधेरों में ले जाते हैं वही लोग दोज़ख वाले हैं उसी में हमेशा रहेंगे (257) क्या उसे आपने नहीं देखा जिसको अल्लाह ने बादशाही दे दी तो इब्राहीम से उनके पालनहार के संबंध में बहस करने लगा जब इब्राहीम ने कहा मेरा पालनहार तो वही है जो ज़िन्दा करता है और मारता है, वह बोला मैं ज़िंदा करता हूं और मारता हूं, इब्राहीम ने कहा कि बेशक मेरा पालनहार सूरज को पूरब की ओर से लाता है तू पश्चिम की ओर से ले आ बस वह काफ़िर (नास्तिक) हक्का–बक्का रह गया और अल्लाह न्याय न करने वालों को रास्ता नहीं दिखाता[1] (258) या उस व्यक्ति के समान जो एक बस्ती से गुज़रा जो सायबानों (छतों) के बल गिरी पड़ी थी वह बोला कहां से इसको मरने के बाद अल्लाह ज़िन्दा करेगा तो अल्लाह ने ख़ुद उसको सौ साल मुर्दा रखा फिर उठा खड़ा किया, (और फिर) पूछा कितनी देर (इस हाल में) रहा, वह बोला एक दिन या दिन का कुछ भाग, कहा कि तू पूरे सौ वर्ष (इस हाल में) रहा, बस अपने खाने और पानी को देख वह नहीं सड़ा और अपने गधे को देख, (किस तरह सड़–गल कर हड्डी चूरा हो गया) और यह इसलिए है ताकि हम तुझे लोगों के लिए निशानी बनाएं और हड्डियों को देख किस तरह हम उनको उभार कर जोड़ देते हैं और फिर उस पर गोश्त चढ़ाते हैं बस जब सब कुछ उसके सामने आ गया तो बोला कि मुझे तो विश्वास है कि बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) रखने वाला है[2] (259)

(1) ऊपर सत्य व असत्य तथा प्रकाश और अंधकार के दो रास्ते बताए गये, अब उसकी मिसालें दी जा रही हैं कि पहली मिसाल हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की है, वे नमरूद के पास पहुंचे तो सज्दा न किया, वह बोला मुझे सज्दा क्यों न किया? जवाब दिया कि मैं केवल पालनहार को सज्दा करता हूं, उसने कहा मैं ही तो पालनहार हूं, उन्होंने कहा मेरा पालनहार तो जिलाता और मारता है, उस मूर्ख ने दो क़ैदी बुलाए एक को मार डाला और एक को छोड़ दिया और बोला कि मैं भी मारता हूं और जिलाता हूं, इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने कहा, सूरज को पश्चिम से ले आ, बस वह स्तब्ध रह गया (2) कहा जाता है कि हज़रत उज़ैर अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा है, बुख्त नस्सर ने जब बैतुल मक़्दिस को वीरान किया और यह वहां से गुज़रे तो उनकी ज़बान से निकला कि यह बस्ती अब कहां आबाद होगी, अल्लाह ने उनकी रूह निकाल ली, सौ वर्ष के बाद बाद जीवित हुए तो खाना पीना पास ही मौजूद था सवारी के गधे की हड़्डियां भी पड़ी थीं, वह उनके सामने ज़िन्दा हुआ और इस अवधि में बैतुल मक़्दिस दोबारा आबाद हो चुका था, उन्होंने ज़िन्दा होकर आबाद ही देखा, इसमें ईमान वालों की तसल्ली भी है और ताकीद भी कि उनको निराश होने की ज़रूरत नहीं, आज अगर वे बेहैसियत नज़र आते हैं तो कल उनकी शान होगी।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِىْ كَيْفَ تُحْىِ الْمَوْتٰى ۭ قَالَ اَوَلَمْ
تُؤْمِنْ ۭ قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ لِّيَطْمَىِٕنَّ قَلْبِىْ ۭ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً
مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ
جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا ۭ وَاعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ۝ مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِىْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۭ
وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ اَلَّذِيْنَ
يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا
مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ
يَّتْبَعُهَآ اَذًى ۭ وَاللّٰهُ غَنِىٌّ حَلِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا
تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِىْ يُنْفِقُ مَالَهٗ
رِئَاۗءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ
صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ۭ لَا يَقْدِرُوْنَ
عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝

منزل۱

और जब इब्राहीम ने कहा कि ऐ मेरे पालनहार! मुझको दिखा दे तू कैसे मुर्दों को ज़िन्दा करता है, उसने कहा क्या तुम्हें विश्वास नहीं? वे बोले, क्यों नहीं, लेकिन यह इसलिए है ताकि मेरा दिल सुकून पा जाए, उसने कहा तो फिर चार परिन्दे (पक्षी) ले लो फिर उनको अपने साथ हिला–मिला लो फिर हर पहाड़ पर अलग–अलग एक–एक टुकड़ा रख आओ फिर उनको आवाज़ दो, वे दौड़ते तुम्हारे पास चले आएंगे और जान लो कि अल्लाह जबर्दस्त (प्रभुत्वशाली) है हिकमत (तत्वदर्शिता) वाला है[1] (260) उन लोगो की मिसाल जो अपने मालों को अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते हैं उस दाने की तरह है जो सात बालियां उगाए और हर बाली में सौ दाने हों और अल्लाह जिसके लिए चाहता है ख़ूब बढ़ाता है और अल्लाह बहुत व्यापकता रखने वाला ख़ूब जानने वाला है[2] (261) जो अल्लाह के रास्ते में अपने मालों को ख़र्च करते हैं फिर ख़र्च करने के बाद उसपर न एहसान रखते हैं और न दुख (देते हैं) उनके लिए उनका बदला उनके पालनहार के पास है और उन पर न कुछ डर होगा और न वे दुखी होंगे (262) भली बात कहना और माफ़ कर देना उस ख़ैरात से अच्छा है जिसके बाद तकलीफ़ दी जाए और अल्लाह बेनियाज़[3] सहनशील है (263) ऐ ईमान वालो! एहसान जता कर और तकलीफ़ पहुंचाकर अपनी ख़ैरात को उस व्यक्ति की तरह बर्बाद मत करो, जो लोगों को दिखाने के लिए अपना माल ख़र्च करता है और वह न अल्लाह पर ईमान रखता है और न आख़िरत के दिन पर तो उसकी मिसाल उस चट्टान की तरह है जिस पर कुछ मिट्टी है फिर उस पर मूसलाधार बारिश हुई तो उसने उसको बिल्कुल चिकना छोड़ दिया वह अपनी कमाई से कुछ भी नहीं पा सकेंगे और अल्लाह इनकार करने वाले लोगों को हिदायत नहीं देता[4] (264)

(1) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने विभिन्न चार पक्षी ले कर ज़िबह किए और उसके विभिन्न अंश पहाड़ों पर रख दिये फिर पुकारा तो वह सब अंग जुड़ गए, और पक्षी ज़िन्दा होकर उनके पास चले आए, उनको यक़ीन पूरा था देखकर "हक़्कुल यक़ीन' हासिल हुआ यह मिसालें अल्लाह ने दीं कि वह जिसको चाहता है हिदायत देता है और जिसको चाहते है गुमराह करता है और अब उसके आगे फिर अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने और जिहाद करने के वर्णन हैं (2) जो दुनिया में एक के सात सौ कर देता है वह आख़िरत में कितना बढ़ाएगा लेकिन शर्त वही है जो आगे बयान हो रही है कि यह केवल अल्लाह के लिए हो, किसी पर एहसान धरने और तकलीफ़ पहुंचाने से पूरा बचा जाए (3) किसी मांगने वाले को न देना लेकिन भली बात कह देना और अच्छे तरीक़े पर माफ़ी मांगना उस देने से अच्छा है जिसके बाद एहसान जताया जाता है (4) यह मिसाल दी एहसान जताने वालों की कि दाना बोया चट्टान पर जिस पर मामूली मिट्टी है, जहां वर्षा हुई सब साफ़ कुछ भी हासिल न हुआ जो दाना डाला था वह भी गया, इसी तरह अगर ख़ैरात के साथ दिखावा या एहसान जताने की बीमारी लग जाती है तो वह सदक़े को बहा ले जाती है और सवाब (पुण्य) की उम्मीद बाक़ी नही रहती।

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَ
تَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ
فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۶۵﴾ اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ
نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ كُلِّ
الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۚ فَاَصَابَهَآ
اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ
الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۶۶﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ
طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّاۤ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۪ وَلَا
تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّاۤ
اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿۲۶۷﴾
اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَاللّٰهُ
يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۶۸﴾
يُّؤْتِى الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ
اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۲۶۹﴾

منزل۱

और उन लोगों की मिसाल जो अपने मालों को अल्लाह की ख़ुशी चाहते हुए और दिल को स्थिर रख कर ख़र्च करते हैं उस बाग़ की तरह है जो एक टीले पर हो उस पर मूसलाधार बारिश हुई तो उसने दोगुने फल दिये और अगर मूसलाधार बारिश न भी हो तो फुहार (तो है ही) और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसको ख़ूब देख रहा है[1] (265) क्या तुम में कोई यह चाहता है कि उसके पास खजूर और अंगूर का बाग़ हो जिसके नीचे नहरें जारी हों उसमें हर प्रकार के फल उसके लिए मौजूद हों और वह बूढ़ा हो चुका हो और उसके बच्चे कमज़ोर हों बस एक आग से भरा बगोला (चक्रवात) आकर उसको अपनी चपेट में ले ले और वह (बाग़) जल कर रह जाए इसी तरह अल्लाह निशानियां खोल–खोल कर बयान करता है ताकि तुम सोचो[2] (266) ऐ ईमान वालो! अपनी पाक कमाई में से और हमने जो कुछ ज़मीन से तुम्हारे लिए निकाला है उसमें से ख़र्च किया करो और नापाक माल का इरादा भी न करना कि उसमें से ख़र्च करने लगो जबकि तुम ख़ुद भी उसके लेने वाले नहीं इसके अलावा कि उसमें तुम आंख ही बन्द कर लो और जान लो कि अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है, प्रशंसा के योग्य है[3] (267) शैतान तुम्हें ग़रीबी से डराता है और बेहयाई (निर्लज्जता) पर उकसाता है अल्लाह अपने पास से माफ़ी और इनआम का तुमसे वादा करता है और अल्लाह ही गुंजाइश वाला ख़ूब जानने वाला है[4] (268) वह जिसको चाहता है समझ से नवाज़ता है और जिसको समझ मिल गई तो उसको बहुत कुछ भलाई हासिल हो गई और नसीहत तो होश वाले ही हासिल करते हैं (269)

---

(1) ख़र्च करने की मिसाल बारिश से दी और अगर ज़्यादा ख़र्च न कर सका लेकिन इख़लास (निःस्वार्थ) और दिल की मज़बूती के साथ थोड़ा भी दिया हो तो भी बहुत है, अल्लाह दिल की हालत को ख़ूब जानता है और एहसान जताने वाले की मिसाल वैसे ही है जैसे कोई चट्टान पर बोए, जितना भी दाना डाले एक बारिश में सब धुल–धुला कर बेकार (2) यह मिसाल है दिखावा करने वालों और एहसान जता कर ख़र्च करने वालों की कि जब फ़ायदा उठाने की ज़रूरत होगी सब ख़ाक हो चुका होगा, पछतावा और निराशा के सिवा कुछ हाथ न आएगा (3) ख़ैरात कुबूल होने की शर्त यह भी है कि हलाल (वैध) कमाई से दे और अच्छा दे, जो चीज़ ख़ुद किसी इस्तेमाल की न हो उसे दूसरे को देकर क्या हासिल (4) जब दिल में यह ख़्याल आए कि माल दूंगा ग़रीब हो जाऊंगा और अल्लाह के हुक्म के बाद भी बेहयाई के साथ ख़र्च न करने का ख़्याल हो तो समझ लो यह ख़्याल शैतान ने डाला है और जब ख़्याल आए कि ख़ैरात से गुनाह बख़्शे जाएंगे तो समझ लो कि यह अल्लाह की ओर से है।

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ
فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۲۷۰﴾
اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِىَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَ
تُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ
مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۷۱﴾ لَيْسَ
عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا
تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا
ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ
وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۲﴾ لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِىْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِى الْاَرْضِ يَحْسَبُهُمُ
الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ
لَا يَسْــَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ
فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۲۷۳﴾ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ
بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۷۴﴾

منزل ١

तुम जो कुछ भी ख़र्च करते हो या जो भी मन्नत मानते हो अल्लाह उसको ख़ूब जानता है और ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा[1] (270) अगर तुम सदक़ा (दान) को प्रकट कर के देते हो तो भी अच्छी बात है और अगर तुम छिपाते हो और मोहताजों के हवाले कर देते हो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, यह तुम्हारे लिए तुम्हारी बुराइयों को मिटा देगा और तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसको पूरी तरह जानता है[2] (271) उनको राह पर ले आना आपके ज़िम्मे नहीं, हां अल्लाह जिसे चाहता है राह पर ले आता है[3] और तुम जो भी माल खर्च करते हो वह तुम्हारे ही फायदे के लिये है जबकि तुम केवल अल्लाह की ख़ुशी चाहते हुए ख़र्च करते हो और तुम जो माल भी ख़र्च करोगे वह पूरा–पूरा तुमको लौटा दिया जाएगा और तुम्हारे साथ अन्याय न होगा (272) यह (हक़ है) उन ग़रीबों का जो अल्लाह के रास्ते में घिर गए हैं वे मुल्क में कहीं चल–फिर नहीं सकते, उनके न मांगने की वजह से अनजान उनको धनी समझता है आप उनकी पहचान से उनको पहचान लेंगे, वे लोगों से लग–लिपट कर नहीं मांगते और तुम जो भी माल ख़र्च करते हो तो बेशक अल्लाह उससे ख़ूब परिचित है[4] (273) जो लोग अपने मालों को दिन–रात ख़र्च करते रहते हैं छिपकर भी और खुलकर भी तो उनका बदला उनके पालनहार के पास है और उनको न कुछ डर होगा और न वे दुःखी होंगे (274)

(1) ख़ैरात देने में भी सही तरीक़ा अपनाया जाए और अगर नज़्र (मन्नत) इबादत की है तो पूरी की जाए जो ऐसा नहीं करता वही ज़ालिम है (2) अगर नियत दिखावे की न हो तो खुल्लम–खुल्ला ख़ैरात बेहतर है क्यों कि इससे दूसरों को शौक़ पैदा होगा और छिपाकर देना और भी बेहतर है कि लेने वाला न शर्माए (3) इस आयत की शान–ए–नुज़ूल (उतरने का कारण) में इस घटना का उल्लेख किया जाता है कि कुछ अंसारी सहाबा के ग़रीब रिश्तेदार थे मगर वे ग़ैर मुस्लिम थे और यह लोग इंतिज़ार कर रहे थे कि वे इस्लाम ले आएं तो यह उनकी मदद करें, इस पर यह आयत उतरी और इसमें बताया गया कि इन काफ़िरों पर भी अगर अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए ख़र्च किया जाए तो उसका भी पूरा–पूरा बदला मिलेगा, इस इंतिज़ार की ज़रूरत नही कि जब वे ईमान ले आएं तब ही ख़र्च किया जाए और साथ ही साथ यह भी स्पष्ट कर दिया गया कि रास्ता बताना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़िम्मे है लेकिन राह पर लाना अल्लाह का काम है। (4) जिहाद करने वाले जो जिहाद में लगे हैं, "असहाब–ए–सुफ़्फ़ा" जो सब कुछ छोड़कर दीन (धर्म) सीखने में व्यस्त हैं उनका सबसे पहला हक़ है। हज़रत इब्न–ए–अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि यह आयत अस्हाब–ए–सुफ़्फ़ा के बारे में उतरी जिन्होंने अपना जीवन धार्मिक ज्ञान अर्जित करने हेतु अर्पित कर दिया था और मस्जिद–ए–नबवी के पास एक चबूतरे पर आकर पड़ गये थे, चबूतरे को अरबी में "सुफ़्फ़ा" कहते हैं, इसीलिए इन लोगों का नाम अस्हाब–ए–सुफ़्फ़ा (चबूतरे वाले) पड़ गया था और इसके कारण वे कोई पेशा नही अपना सकते थे।

الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ
يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْۤا اِنَّمَا الْبَيْعُ
مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنْ جَآءَهٗ
مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ
وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۷۵﴾
يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ
كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿۲۷۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۷۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا
اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۷۸﴾ فَاِنْ
لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ
فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۹﴾ وَاِنْ
كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸۰﴾ وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ
اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۲۸۱﴾

وقف لازم

منزل ۱

वे लोग जो ब्याज खाते हैं वे ऐसे व्यक्ति की तरह खड़े होंगे जिसको शैतान ने छू कर सनकी बना दिया हो, इसलिए कि उन्होंने कहा था कि व्यापार ब्याज ही की तरह है जबकि अल्लाह तआला ने व्यापार को जायज़ (वैध) किया है और ब्याज को ह़राम (अवैध) किया, बस जिसके पास उसके पालनहार के पास से नसीहत पहुंच जाए फिर वह रुक जाए तो जो वह पहले कर चुका है वह उसी का है उसका मामला अल्लाह के हवाले है और जो दोबारा करेगा तो वही हैं दोज़ख़ के लोग उसी में वे हमेशा रहेंगे[1] (275) अल्लाह ब्याज को मिटाता है और ख़ैरात को बढ़ाता है और अल्लाह किसी नाशुक्रे गुनहगार को पसंद नहीं करता[2] (276) बेशक वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने भले काम लिये और नमाज़ क़ायम रखी और ज़कात दी उनका बदला उनके पालनहार के पास है उनको न कुछ डर होगा और न वे दुखी होंगे[3] (277) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो जो ब्याज बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो अगर तुम ईमान रखते हो (278) और अगर तुम ऐसा नहीं करते तो अल्लाह और उसके रसूल की ओर से जंग के लिए ख़बरदार हो जाओ फिर अगर तुमने तौबा कर ली तो तुम्हारे मालों का अस्ल हिस्सा तुम्हारा ही है न तुम ज़ुल्म करो और न तुम पर ज़ुल्म किया जाए[4] (279) और अगर कोई तंगी में है तो ख़ुशहाली (संपन्नता) तक उसको मोहलत है और अगर तुम ख़ैरात कर दो तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो[5] (280) और उस दिन से डरते रहो जिस दिन तुम्हें अल्लाह के पास लौटाया जाएगा फिर हर व्यक्ति को उसके कामों का बदला पूरा–पूरा दे दिया जाएगा और उनके साथ अन्याय न होगा[6] (281)

(1) यहां से ब्याज की बुराई बयान हो रही है, ब्याज ह़राम होने से पहले जो लिया जा चुका है उसकी वापसी का आदेश नहीं अल्लाह चाहेगा तो उसको माफ़ कर देगा लेकिन ह़राम होने के बाद जो ऐसा करता है वह दोज़ख़ में जाएगा। ब्याज खाने वाले आख़िरत में तो सनकी होंगे ही, जो इसके चक्कर में पड़ जाते हैं वे दुनिया में भी बावला और सनकी बन जाते हैं। (2) दुनिया में भी ब्याज का माल बेबरकत होता है और बर्बाद हो जाता है और आख़िरत में तो बदनसीबी के अलावा कुछ नहीं और जाएज़ (वैध) व्यापार में बरकत ही बरकत है (3) ब्याज लेने वाले के मुक़ाबले में यह ईमान वालों के गुण बयान हो रहे हैं (4) ब्याज के संबंध में जितनी सख़्त बात कही गई है वह किसी बुराई के बारे में कम कही गई, तौबा कर लेने के बाद अगर दूसरी पार्टी ह़राम होने से पहले लिए गए ब्याज की मांग करे तो उसकी ओर से ज़ुल्म है और अगर पहली पार्टी ह़राम होने के बाद भी ब्याज की मांग करे तो यह उसकी ओर से ज़ुल्म है (5) कर्ज़ देने वाले का अस्ल माल उसका हक़ है वह उसको ले सकता है हां अगर जिसको कर्ज़ दिया है वह ग़रीब है तो मोहलत देनी चाहिए और बेहतर है कि माफ़ करके उसी को सदक़ा कर दिया जाए (6) अस्ल यही आख़िरत का यक़ीन है जो इंसान को बुराइयों से बचने में मदद देता है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِذَا تَدَايَنۡتُمۡ بِدَيۡنٍ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى
فَاكۡتُبُوۡهُ ؕ وَلۡيَكۡتُبْ بَّيۡنَكُمۡ كَاتِبٌ ۢ بِالۡعَدۡلِ وَلَا يَاۡبَ كَاتِبٌ اَنۡ
يَّكۡتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلۡيَكۡتُبۡ ۚ وَلۡيُمۡلِلِ الَّذِىۡ عَلَيۡهِ الۡحَقُّ
وَلۡيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبۡخَسۡ مِنۡهُ شَيۡـًٔا ؕ فَاِنۡ كَانَ الَّذِىۡ عَلَيۡهِ
الۡحَقُّ سَفِيۡهًا اَوۡ ضَعِيۡفًا اَوۡ لَا يَسۡتَطِيۡعُ اَنۡ يُّمِلَّ هُوَ فَلۡيُمۡلِلۡ
وَلِيُّهٗ بِالۡعَدۡلِ ؕ وَاسۡتَشۡهِدُوۡا شَهِيۡدَيۡنِ مِنۡ رِّجَالِكُمۡ ۚ فَاِنۡ
لَّمۡ يَكُوۡنَا رَجُلَيۡنِ فَرَجُلٌ وَّامۡرَاَتٰنِ مِمَّنۡ تَرۡضَوۡنَ مِنَ
الشُّهَدَآءِ اَنۡ تَضِلَّ اِحۡدٰٮهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحۡدٰٮهُمَا الۡاُخۡرٰى ؕ وَ
لَا يَاۡبَ الشُّهَدَآءُ اِذَا مَا دُعُوۡا ؕ وَلَا تَسۡـَٔـمُوۡۤا اَنۡ تَكۡتُبُوۡهُ
صَغِيۡرًا اَوۡ كَبِيۡرًا اِلٰۤى اَجَلِهٖ ؕ ذٰلِكُمۡ اَقۡسَطُ عِنۡدَ اللّٰهِ وَاَقۡوَمُ
لِلشَّهَادَةِ وَاَدۡنٰۤى اَلَّا تَرۡتَابُوۡۤا اِلَّاۤ اَنۡ تَكُوۡنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً
تُدِيۡرُوۡنَهَا بَيۡنَكُمۡ فَلَيۡسَ عَلَيۡكُمۡ جُنَاحٌ اَلَّا
تَكۡتُبُوۡهَا ؕ وَاَشۡهِدُوۡۤا اِذَا تَبَايَعۡتُمۡ وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ
وَّلَا شَهِيۡدٌ ؕ وَاِنۡ تَفۡعَلُوۡا فَاِنَّهٗ فُسُوۡقٌ ۢ بِكُمۡ ؕ وَ
اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىۡءٍ عَلِيۡمٌ ﴿۲۸۲﴾

منزل ۱

ऐ ईमान वालो! जब तुम किसी निर्धारित अवधि तक के लिए कर्ज़ (ऋण) का लेन–देन किया करो तो लिख लिया करो और तुम्हारे बीच लिखने वाला इन्साफ़ के साथ लिखे और लिखने वाला जैसा कि अल्लाह ने उसको यह इल्म (ज्ञान) दिया है लिखने से इनकार न करे तो वह लिखे और जिस पर हक़ है वह लिखवाए और अल्लाह से जो उसका पालनहार है डरता रहे और उसमें कुछ भी कमी न करे, फिर अगर वह व्यक्ति जिस पर हक़ है कम बुद्धि वाला हो या कमज़ोर हो या लिखवा न सकता हो तो उसका वली (संरक्षक) इंसाफ़ के साथ लिखवाए और अपने लोगों में से दो को गवाह बना लो फिर अगर दोनों मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें हों उन गवाहों में से जिनको तुम पसंद करते हो कि हो सकता है उनमें कोई गड़बड़ा जाए तो एक दूसरी को याद दिला दे और जब गवाहों को बुलाया जाए तो वे इनकार न करें और (उधार मामला) छोटा हो या बड़ा जो निर्धारित अवधि से संबंधित हो तो तुम उसके लिखने में काहिली मत करो यह अल्लाह के यहां ज़्यादा न्याय की बात है और गवाही को ज़्यादा दुरुस्त रखने वाली है और इससे ज़्यादा क़रीब है कि तुम शक में न पड़ो इसके अलावा कि वह नक़द व्यापार हो जिसको तुम आपस में कर रहे हो तो तुम्हारे लिए कोई हर्ज नहीं कि तुम उसको न लिखो और जब मामला करो गवाह बना लिया करो और न लिखने वाले को कोई तकलीफ पहुंचाई जाए और न गवाह को, और अगर तुम ऐसा करोगे तो बेशक वह गुनाह तुम्हारे साथ लग जाएगा और अल्लाह से डरते रहो और अल्लाह तुम्हें सिखाता है और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानता है[1] (282)

(1) लेन देन ही आम तौर पर झगड़े का कारण बनते हैं इस्लाम ने इनके ऐसे नियम निर्धारित कर दिए हैं कि झगड़ों की जड़ ही कट जाए, यहां इस लंबी आयत में उधार लेन–देन के बारे में आदेश हो रहा है कि उन सबको ज़रूर लिख लेना चाहिए ताकि बाद में कोई मतभेद हो तो लिखी हुई चीज़ को देख लिया जाए और उस लिखित पर गवाह भी बना लिए जाएं ताकि जाली लिखित का कोई शंका न रह जाए और कोई झगड़ा बाद में पैदा न हो, हां अगर नगद मामला हो रहा हो तो इसमें लिखना ज़रूरी नहीं, लिखने वालों और गवाहों का ख़्याल भी रखा जाए कि कोई पक्ष उनको तंग न करे।

وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهَانٌ مَقْبُوضَةٌ ۖ فَإِنْ
أَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ أَمَانَتَهُ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ
رَبَّهُ ۗ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۚ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ آثِمٌ قَلْبُهُ ۗ وَ
اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨٣﴾ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ
وَإِنْ تُبْدُوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ
اللَّهُ ۖ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٨٤﴾ آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَ
الْمُؤْمِنُونَ ۚ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ ۚ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ
غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا
وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا
تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا
إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا
مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۚ
أَنْتَ مَوْلَانَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٨٦﴾

منزل ١

और अगर तुम सफ़र पर हो और तुम्हें लिखने वाला न मिले तो गिरवी को कब्ज़े में दे दिया जाए फिर अगर तुम्हें एक दूसरे पर भरोसा हो तो जिस पर भरोसा किया गया है वह उस अमानत को अदा कर दे और अल्लाह से डरता रहे जो उसका पालनहार है और तुम गवाही को मत छिपाना और जो उसको छिपाता है तो उसका दिल पापी है और तुम जो भी करते हो उसको अल्लाह ख़ूब जानता है[1] (283) और अल्लाह ही का है जो कुछ भी आसमानों में है और जो कुछ भी ज़मीन में है और तुम्हारे मन में जो भी है वह तुम ज़ाहिर करो या छिपाओ अल्लाह तुम से उसका हिसाब लेगा फिर जिसको चाहेगा माफ़ करेगा और जिसको चाहेगा सज़ा देगा और अल्लाह हर चीज़ पर ज़बर्दस्त कुदरत (सामर्थ्य) रखने वाला है[2] (284) जो कुछ रसूल पर उनके पालनहार की ओर से उतारा गया रसूल भी उस पर ईमान लाए और मुसलमान भी, सबके सब अल्लाह पर ईमान लाए और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों और उसके रसूलों पर, हम उसके रसूलों (संदेष्टाओं) में (ईमान के लिहाज़ से) अंतर नहीं करते और उन्होंने कहा हमने सुना और माना, ऐ हमारे पालनहार! हम तेरी ही माफ़ी के इच्छुक हैं और तेरी ही ओर लौटना है[3] (285) अल्लाह (तआला) किसी पर उसकी शक्ति से बढ़कर बोझ नहीं डालता जो वह करेगा वह उसके लिए है और वह जो (गुनाह) कमा लाएगा वह उस पर है, ऐ हमारे पालनहार! अगर हम भूल जाए या चूक जाएं तो हमारी पकड़ न कर और वह बोझ हम पर न डाल जो तूने हम से पहलों पर डाला था, ऐ हमारे पालनहार और वह बोझ हमसे न उठवा जिसकी हममें ताक़त न हो, और हमें माफ़ कर और हमें बख़्श दे और हम पर रहम (कृपा) कर तू ही हमारा काम बनाने वाला है बस इनकार करने वाली क़ौम पर हमारी मदद कर दे (286)

(1) अगर यात्रा में कर्ज़ और उधार का मामला किया जाए और लेख–पत्र (दस्तावेज़) के लिए कोई लिखने वाला न मिले तो कर्ज़ लेने वाले को कोई चीज़ गिरवी रख देनी चाहिए और अगर भरोसा हो तो इसकी ज़रूरत नहीं लेकिन जिस पर भरोसा किया गया है वह भी भरोसे को ठेस न पहुंचाए और हक़ पूरा–पूरा अदा कर दे (2) यह आयत उतरी तो सहाबा बहुत घबराए और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा यह आदेश बहुत कठिन है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा बनी इस्राईल की तरह इनकार मत करो बल्कि स्वीकार कर लो और अल्लाह से मदद चाहो, वे एक सुर में बोले "समिअ्ना व अतअ्ना" अल्लाह को यह बात बहुत पसंद आई और अगली आयतें उतरीं और उसमें हुक्म आया कि जो काम बस से बाहर हो जैसे गुनाह का ख़्याल आ जाना या भूल चूक वग़ैरह अल्लाह उन पर पकड़ नहीं करेगा हां जो बातें बन्दे के इरादे और इख़्तियार में है उन पर पकड़ होगी। (3) ईमान सब पर लाना ज़रूरी है इसमें कोई अंतर नहीं लेकिन मक़ाम में अंतर है इसका उल्लेख दूसरी जगह है "तिल्कर्रुसुलु फज़्ज़ल्ना बअ्ज़हुम अला बअ्ज़" (ये वे रसूल हैं जिनमें एक को दूसरे पर हमने श्रेष्ठता प्रदान की है)

सूरह आले इम्रान

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अलिफ़ लाम मीम (1) अल्लाह जिसके सिवा कोई इबादत के लायक़ (उपास्य) नहीं ज़िन्दा है हर चीज़ को थामे हुए है (2) उसने आप पर ठीक–ठीक किताब उतारी है, पहली (किताबों) के लिए पुष्टि (तस्दीक़) है और उसी ने तौरेत और इंजील उतारी (3) (इससे) पहले लोगों के लिए मार्गदर्शन के रूप में और उसी ने फ़ैसले की चीज़ उतारी[1], निःसंदेह जिन्होंने अल्लाह की आयतों का इनकार किया उनके लिए सख़्त अज़ाब है और अल्लाह ज़बरदस्त है बदला लेने वाला है (4) बेशक अल्लाह से न ज़मीन में कुछ ढका–छिपा नहीं रहता न आसमान में (5) वही है जो गर्भाशय (मां के पेट) में जैसे चाहता है तुम्हारी सूरतें बनाता है उस प्रभुत्वशाली तत्वदर्शी के अतिरिक्त कोई पूज्य (माबूद) नहीं (6) वही है जिसने आप पर किताब उतारी, उसमें मुहकम (मज़बूत व साफ़–साफ़) आयतें हैं वही किताब की अस्ल हैं और दूसरी आयतें मुतशाबेह (मिली–जुली बातें) हैं तो जिन लोगों के दिलों में टेढ़ है वे मुताशबेह आयतों के पीछे लगते हैं फ़ित्ने की चाह में और उसके (ग़लत) मतलब जानने की तलाश में जबकि उसका मतलब केवल अल्लाह ही जानता है, और पक्का इल्म (ज्ञान) रखने वाले कहते हैं हम उन पर ईमान लाए और सब ही हमारे पालनहार की ओर से है और नसीहत बुद्धिवाले ही हासिल करते हैं[2] (7) (ऐसे लोग यह दुआ करते हैं कि) ऐ हमारे पालनहार! हमें सही राह देने के बाद हमारे दिलों को टेढ़ा न कर, और अपने पास से हमें रहमत (कृपा) प्रदान कर दे, बेशक तू ख़ूब–ख़ूब देने वाला है (8)

---

(1) यानी पवित्र क़ुरआन जिसका दूसरा नाम फ़ुरक़ान भी है यानी सत्य व असत्य में फ़र्क़ करने वाली किताब (2) सूरह बक़रह में विस्तार से यहूदियों की आस्थाओं व अअ्माल (कर्मों व विश्वासों) का उल्लेख था और इस सूरह में विशेष रूप से ईसाइयों का उल्लेख है, नजरान का क़बीला जहां ईसाई आबाद थे वहाँ से एक बड़ा प्रतिनिधिमण्डल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में आया था, इस सूरह का पहला आधा भाग इसी सम्बंध में उतरा था, नजरान का जो प्रतिनिधिमण्डल (वफ़्द) आया था उसने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के खुदा का बेटा होने का एक तर्क यह भी दिया था कि खुद क़ुरआन ने उनको "कलिमतुल्लाह" (अल्लाह का शब्द) और "रूहुम्मिनल्लाह" (अल्लाह की ओर से आत्मा) कहा है, यहाँ इसको स्पष्ट किया जा रहा है कि पवित्र क़ुरआन ने साफ़–साफ़ शब्दों में बतला दिया है कि अल्लाह की संतान हो ही नहीं सकती और हज़रत ईसा को खुदा या खुदा का बेटा कहना कुफ़्र है, इन साफ़–साफ़ (मुहकम) खुली हुई आयतों को छोड़कर "कलिमतुल्लाह" की ऐसी व्याख्या करना जो मुहकम (साफ़–साफ़) आयतों के खिलाफ़ है दिल की टेढ़ की पहचान है, कलिमतुल्लाह कहने का मतलब यह है कि वह बिना बाप के केवल अल्लाह के कलिमे (शब्द) "कुन" (हो जा) से पैदा हुए थे, अब यह बात इंसान की समझ से ऊपर है कि "कुन" से पैदा करने की हालत क्या थी और प्रत्यक्ष रूप से उनकी रूह किस तरह पैदा की गई, यह चीज़ मुतशाबिहात (मिली–जुली बातों) में से है इसलिए इनकी खोजबीन में पड़ना अपने आप को बर्बादी में डालना है, पक्के ज्ञान वाले इसको समझते हैं और इस पर ईमान रखते हैं और इसके ज्ञान को अल्लाह के हवाले करते हैं।

ऐ हमारे पालनहार! बेशक तू लोगों को एक ऐसे दिन एकत्रित करने वाला है जिसमें कोई संदेह नहीं निःसंदेह अल्लाह किये गए वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता(9) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र (इनकार) किया न उनके माल उनको अल्लाह से बचाने के लिए कुछ काम आएंगे और न उनकी औलाद, और वही लोग दोज़ख़ का ईंधन होंगे[1] (10) फिरऔन वालों और उनसे पहले वालों के हाल की तरह उन्होंने हमारी निशानियां झुठलाईं तो अल्लाह ने उनके गुनाहों की वजह से उनकी पकड़ की और अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है (11) आप कुफ़्र करने वालों से कह दीजिए कि जल्द ही तुम हार जाओगे और तुम्हें दोज़ख़ में एकत्र किया जाएगा और वह कैसा बुरा ठिकाना है[2] (12) उन दो सेनाओं में तुम्हारे लिए निशानी है जिनमें मुठभेड़ हुई एक सेना अल्लाह के रास्ते में लड़ रही थी और दूसरी (ख़ुदा) का इनकार करने वाली थी वे खुली आंखों दूसरों को अपने से दो गुना देख रहे थे और अल्लाह अपनी मदद से जिसे चाहता है ताक़त पहुंचाता है बेशक इसमें निगाह रखने वालों के लिए ज़रूर सबक़ (इबरत) है[3] (13) लोगों के लिए इच्छाओं के प्रति प्रेम सुंदर कर दिया गया है औरतों की और बच्चों की और ढेरों–ढेर सोने व चांदी की और निशान लगे हुए घोड़ों और पशुओं और खेती की, यह दुनियावी जीवन से आनंद लेने के कुछ साधन हैं और सबसे अच्छा ठिकाना केवल अल्लाह ही के पास है[4] (14) आप कह दीजिए कि क्या मैं तुमको इससे बेहतर न बता दूं? उनके लिए जो तक़वा अपनाते हैं, उनके रब के पास वे बाग़ हैं जिनके नीचे से नहरें जारी हैं, वे हमेशा उसीमें रहेंगे और साफ़ सुथरी पत्नियां हैं और अल्लाह की ओर से रज़ामंदी का परवाना है और अल्लाह अपने बन्दों को ख़ूब देख रहा है (15)

رَبَّنَآ إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ
الْمِيعَادَ ﴿٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَآ
أَوْلَادُهُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ وَأُولَٰٓئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ﴿١٠﴾ كَدَأْبِ
آلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأَخَذَهُمُ
اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١١﴾ قُل لِّلَّذِينَ كَفَرُوا
سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٢﴾ قَدْ كَانَ
لَكُمْ آيَةٌ فِي فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۖ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ
كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُم مِّثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ ۚ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهِ
مَن يَشَاءُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿١٣﴾ زُيِّنَ
لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ
الْمُقَنطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ
وَالْحَرْثِ ۗ ذَٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَاللَّهُ عِندَهُ حُسْنُ
الْمَآبِ ﴿١٤﴾ قُلْ أَؤُنَبِّئُكُم بِخَيْرٍ مِّن ذَٰلِكُمْ ۚ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِندَ
رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ
مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ﴿١٥﴾

منزل ١

---

(1) नजरान का उपरोक्त प्रतिनिधि मण्डल मदीना रवाना हुआ तो उनके सबसे बड़े पादरी के ख़च्चर ने ठोकर खाई, उसके भाई ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में अपशब्द कहे, इस पर पादरी ने डांटा और कहा यही वे नबी हैं जिनका इन्तेज़ार था, भाई बोला फिर मानते क्यों नहीं वह बोला ईसाई राजाओं ने हमें बड़ा धन और सम्मान दिया है, अगर हमने मुहम्मद को माना तो सब हमसे छिन जाएगा, भाई के दिल में यह बात उतर गई और बाद में यही चीज़ उसके इस्लाम लाने का कारण बनी इस आयत में उस पादरी का जवाब भी है (2) दुनिया में हार–जीत लगी है लेकिन आख़िरत में हार ही अल्लाह का इनकार करने वालों की क़िस्मत है बस फिर उनका ठिकाना जहन्नम ही है (3) यह ग़ज़्व–ए–बद्र का हाल बयान हुआ, विवरण सूरह अन्फ़ाल में आएगा, मुश्रिकों की संख्या हज़ार से ऊपर थी और मुसलमान केवल तीन सौ तेरह थे लेकिन अल्लाह ने फ़रिश्तों की सेना भेजी, काफ़िरों को दिखता था कि मुसलामनों की सेना दुगनी है, इससे वे भयभीत हो गए और मुसलमानों को भी काफ़िरों की सेना दोगुनी लगती थी जबकि वह तीन गुना थी मगर मुसलमान अल्लाह से विजय की आशा रखते थे अंततः यही हुआ (4) इन चीज़ों में फंस कर आदमी ख़ुदा से ग़ाफ़िल हो जाता है लेकिन अगर इन चीज़ों का संतुलन के साथ यही प्रयोग हो तो बुरा नहीं है।

اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا
عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۶﴾ اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ
وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿۱۷﴾ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۸﴾ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ
الْاِسْلَامُ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْ بَعْدِ
مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۹﴾ فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ
وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا وَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِالْعِبَادِ ﴿۲۰﴾ اِنَّ
الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ
حَقٍّ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ
فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۲۱﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۲﴾

منزل۱

जो कहते हैं ऐ हमारे पालनहार! बेशक हम ईमान लाए बस तू हमारे गुनाहों को माफ़ करदे और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले(16) (यह हैं) सब्र करने वाले, सच्चाई के आदी, बंदगी में लगे रहने वाले, ख़र्च करने वाले और पिछले पहरों में गुनाहों की माफ़ी मांगने वाले[1] (17) अल्लाह ने ख़ुद इस बात की गवाही दी कि उसके अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं और फ़रिश्तें ने और इल्म (ज्ञान) वालों ने भी, वही इंसाफ़ के साथ सब व्यवस्था संभाले हुए है उस ज़बरदस्त, हिकमत वाले के अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं[2] (18) बेशक दीन (धर्म) तो अल्लाह के नज़दीक केवल इस्लाम ही है और अहल–ए–किताब (आसमानी किताब वालों) ने अपने पास इल्म (ज्ञान) आ जाने के बाद जो झगड़ा किया वह केवल आपस की ज़िद में किया, और जो अल्लाह की निशानियां झुठलाता है तो बेशक अल्लाह बहुत जल्द हिसाब चुका देने वाला है(19) फिर भी अगर वे आप से हुज्जत करें तो आप कह दीजिए मैंने और मेरी बात मानने वालों ने अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया है और आप उन लोगों से जिनको किताब दी गई और अनपढ़ लोगों से पूछिये क्या तुम भी अपने आपको (अल्लाह के) हवाले करते हो? बस अगर उन्होंने हवाले कर दिया तो उन्होंने राह पा ली और अगर फिर गए तो आपका काम तो पहुंचा देना है और अल्लाह अपने बंदों को ख़ूब देख रहा है(20) बेशक जो लोग अल्लाह की निशानियों का इनकार करते रहे हैं और नाहक़ नबियों को क़त्ल करते रहे हैं और उन लोगों को क़त्ल करते रहे हैं जो लोगों में न्याय की ताकीद करते थे तो आप उनको दुखद यातना की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए (21) ये वे लोग हैं कि दुनिया और आख़िरत में उनके सब काम बेकार गए और उनका कोई मदद करने वाला न होगा[3] (22)

(1) इन गुणों को अपनाने वालों पर अल्लाह तआला वह उपकार करेंगे जिनका बयान इससे पहली वाली आयत में हो चुका (2) ब्रह्माण्ड की व्यवस्था जो न्याय व संतुलन के साथ क़ायम है वह गवाह है, फ़रिश्ते गवाह हैं ज्ञान वाले यानी नबी (संदेष्टा) और उनकी बात पर चलने वाले गवाह हैं (3) सच्चा दीन (धर्म) शुरू से इस्लाम ही था फिर लोगों ने अपने फ़ायदे के लिए तरह–तरह की बातें निकालीं और केवल आपस की ज़िद से मतभेद पैदा किया, आपका काम केवल पहुंचा देना है और बता देना है कि हम उसी दीन पर क़ायम हैं, फिर जिन्होंने पहले भी झुठलाया और नबियों को क़त्ल किया, ईमान न होने की वजह से उनके सब काम बेकार गए और आख़िरत में उनको हक़ीक़त मालूम हो जाएगी जहां उनका कोई मददगार न होगा।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ إِلٰى كِتٰبِ
اللّٰهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيقٌ مِّنْهُمْ وَهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾
ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودٰتٍ وَغَرَّهُمْ
فِي دِينِهِم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾ فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا
رَيْبَ فِيهِ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٥﴾
قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَن تَشَاءُ وَتَنزِعُ الْمُلْكَ
مِمَّن تَشَاءُ وَتُعِزُّ مَن تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَاءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ
إِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٦﴾ تُولِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ
فِي الَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ
وَتَرْزُقُ مَن تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ
الْكٰفِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ وَمَن يَفْعَلْ
ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَن تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقٰىةً
وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهُ وَإِلَى اللّٰهِ الْمَصِيرُ ﴿٢٨﴾ قُلْ إِن
تُخْفُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ وَيَعْلَمُ مَا
فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾

منزل١

क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिनको किताब में से एक भाग दिया गया, उनको अल्लाह की किताब की ओर बुलाया जाता है ताकि वह उनके बीच फैसला करदे फिर उनमें एक गिरोह बेरूख़ी के साथ मुंह मोड़ लेता है (23) इसलिए कि वे कहते हैं आग तो हमें गिने–चुने दिनों के लिए छुएगी और जो कुछ वे गढ़ते रहते हैं उसने उनको उनके दीन (धर्म) के बारे में धोखे में में डाल रखा है[1] (24) तो भला उस समय उनका क्या हाल होगा जब हम उनको उस दिन के लिए एकत्र करेंगे जिसमें कोई शक नहीं और हर व्यक्ति को उसकी कमाई पूरी की पूरी दे दी जाएगी और उनके साथ ज़रा अन्याय न किया जाएगा (25) आप कहिए ऐ अल्लाह ऐ बादशाही के मालिक! जिसको चाहे तू बादशाही दे और जिससे चाहे बादशाही छीन ले, जिसको चाहे इ़ज़्ज़त दे और जिसको चाहे ज़लील (अपमानित) करे, भलाई तेरे ही हाथ में है और बेशक तू हर चीज़ पर पूरी कुदरत (सामर्थ्य) रखने वाला है (26) दिन पर रात को ले आए और रात पर दिन को लाए, ज़िंदा को मुर्दे से निकाले और मुर्दे को ज़िन्दा से निकाले और जिसको तू चाहे बे–हिसाब रोज़ी दे[2] (27) ईमान वाले ईमान वालों को छोड़कर काफ़िरों को अपना दोस्त न बनाएं और अगर कोई ऐसे करता है तो अल्लाह के यहां किसी गिनती में नहीं सिवाए इसके कि तुम उनसे बचाव के लिए उपाय के तौर पर कुछ कर लो और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात से ख़बरदार करता है और अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है[3] (28) आप कह दीजिए कि तुम जो कुछ अपने सीनों में छिपाते हो या उसको ज़ाहिर करते हो अल्लाह उसको जानता है और जो कुछ भी आसमानों और ज़मीन में है वह सब कुछ जानता है और अल्लाह हर चीज़ पर पूरी कुदरत (सामर्थ्य) रखने वाला है[4] (29)

(1) यानी यहूदी और ईसाई कि जो किताबें खुद उनको मिली हैं उनके अनुसार भी फ़ैसला कराने पर सहमत नहीं और इससे आगे बढ़कर यह कि यहूदी अपने को खुदा का प्रिय कहते थे और उनको ख़याल था कि उनको अज़ाब (सज़ा) होगा ही नहीं और होगा भी तो केवल सात दिनों के लिए, और ईसाइयों के यहां कफ़्फ़ारह (प्रयश्चित) के अक़ीदे ने उनके सारे पाप माफ़ कर दिए थे, आगे बात साफ़ कर दी गई कि सबको अपने–अपने कामों का हिसाब देना होगा और उसके अनुसार सज़ा पानी होगी (2) इसमें एक हलका संकेत यह भी है कि सरदारी जो यहूदियों में थी अब इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की संतान की ओर जा रही है और यह किसी की जागीर नहीं, अल्लाह तआ़ला जिसको चाहे प्रदान करे (3) जब सब शक्ति अल्लाह ही के हाथ में है तो अल्लाह के बाग़ियों और उसको इन्कार करने वालों को दोस्त बनाना कब ठीक हुआ, हां तुम अपने बचाव के लिए जो आव–भगत करो वह वैध है, इसी प्रकार उनको अल्लाह का बनाने के लिए जो प्रेम व भाईचारा किया जाए वह बेहतर है हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पूरे जीवन में यह रही है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसे लोगों के साथ एहसान का मामला किया। (4) दोस्ती यारी और आव–भगत घनिष्ट संबन्ध तक न पहुंच जाए कि शिर्क की घृणा कम होने लगे और काफ़िरों के साथ उठते–बैठते कुफ़्र व शिर्क के कामों में सहभागिता होने लगे तो अल्लाह सब जानता है और पूरी क़ुदरत (सामर्थ्य) रखता है।

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚ وَمَا عَمِلَتْ مِنْ
سُوْٓءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًا ۢ بَعِيْدًا ؕ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ
نَفْسَهٗ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ ۢ بِالْعِبَادِ ﴿۳۰﴾ قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ
يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳۱﴾ قُلْ
اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۲﴾
اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰٓى اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى
الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۳﴾ ذُرِّيَّةً ۢ بَعْضُهَا مِنْ ۢ بَعْضٍ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۳۴﴾
اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّىْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِىْ بَطْنِىْ
مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّىْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۳۵﴾ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا
قَالَتْ رَبِّ اِنِّىْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ؕ وَ
لَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّىْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّىْٓ اُعِيْذُهَا
بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿۳۶﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ
حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ؕ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا
زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ؕ
قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۷﴾

منزل ۱

जिस दिन हर व्यक्ति अपने हर भले कर्म को हाज़िर पाएगा और जो बुराई उसने की है (उसको भी सामने देखकर) वह चाहेगा कि उसके और उसकी बुराई के बीच बड़ी लम्बी दूरी होती और अल्लाह तुम्हें अपने आप से ख़बरदार करता है और अल्लाह बन्दों पर बड़ा दयालु है(30) आप कह दीजिए अगर तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरी राह चलो, अल्लाह तुमसे प्रेम करने लगेगा और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला अत्यन्त दयालु है[1] (31) आप कह दीजिए कि अल्लाह और उसके रसूल की बात मानो फिर अगर वे मुंह फेर लें तो अल्लाह इन्कार करने वालों को पसंद नहीं करता (32) बेशक अल्लाह ने आदम और नूह और इब्राहीम के घर वालों और आले इमरान[2] को सारे संसारों में चुन लिया है (33) यह एक दूसरे की संतान हैं और अल्लाह ख़ूब सुनने वाला और ख़ूब जानने वाला है (34) जब इमरान की पत्नी ने दुआ (प्रार्थना) की कि ऐ मेरे पालनहार! मेरे पेट में जो कुछ है मैंने उसको आज़ाद कर देने की मन्नत मानी है बस तू मेरी ओर से (यह मन्नत) स्वीकार कर ले बेशक तू ही ख़ूब सुनने वाला और ख़ूब जानने वाला है [3] (35) फिर जब उन्होंने उसको जना तो बोलीं कि ऐ मेरे पालनहार! मैंने तो लड़की जनी और अल्लाह ख़ूब जानता है कि उन्होंने क्या जना और लड़का (उस) लड़की की तरह हो नहीं सकता और मैंने उसका नाम मरियम रखा है और मैं उसको और उसकी संतान को शैतान मरदूद से तेरे शरण में देती हूं (36) बस उनके रब ने उनको ख़ूब—ख़ूब कुबूल किया और उनको अच्छी तरह परवान चढ़ाया और ज़करिया को उनका संरक्षक (सरपरस्त) बनाया, जब भी ज़करिया हुजरे (कोठरी) में उनके पास आते तो उनके पास खाने पीने (की चीज़ें) मौजूद पाते (एक बार) उन्होंने कहा ऐ मरियम! तेरे पास यह चीज़ें कहां से आ जाती हैं, वे बोलीं कि यह अल्लाह के पास से (आ जाती) हैं बेशक अल्लाह जिसको चाहता है बिना हिसाब के रोज़ी पहुंचाता है (37)

---

(1) अल्लाह के दुश्मनों से प्रेम व मुहब्बत से मना करने के बाद अल्लाह से प्रेम का मानक और उसकी कसौटी बताई जा रही है कि जो व्यक्ति जितना अल्लाह के रसूल (संदेष्टा) सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुयायी होगा वह उतना ही प्रेम के दावे में खरा होगा और उसका बड़ा फ़ायदा यह होगा कि अल्लाह तआ़ला उसको अपने प्रिय बना लेंगे और उसको माफ़ कर देगें (2) इमरान हज़रत मरियम के पिता का नाम था (3) पहले संप्रदायों में यह चलन था कि लड़कों को अल्लाह के लिए देने की मन्नत मानते थे फिर जब लड़का होता तो उससे दुनिया का कोई काम न लेते और वह हर समय इबादत (उपासना) करता, हज़रत मरियम की माता ने ऐसी ही मन्नत मानी थी, जब लड़की हुई तो उनको अफ़सोस हुआ, इसपर अल्लाह ने कहा "लड़का भी इस लड़की जैसा नहीं हो सकता" वे लेकर मस्जिद गईं, हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम की पत्नी उनकी मौसी (ख़ाला) थी उन्होंने उनका ज़िम्मा लिया, जब वे उनकी कोठरी में जाते तो देखते कि बे मौसम के फल मौजूद हैं, बस उस समय उन्होंने दुआ (प्रार्थना) की कि जब अल्लाह मरियम को बेमौसम मेवा दे सकता है तो बुढ़ापे में मुझे संतान क्यों नहीं दे सकता।

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً
طَيِّبَةً ۖ إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٨﴾ فَنَادَتْهُ الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ
يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ
مِّنَ اللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿٣٩﴾ قَالَ رَبِّ
أَنَّىٰ يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ ۖ قَالَ
كَذَٰلِكَ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ﴿٤٠﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَل لِّي آيَةً ۖ قَالَ
آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمْزًا ۗ وَاذْكُر رَّبَّكَ
كَثِيرًا وَسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ﴿٤١﴾ وَإِذْ قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ
يَا مَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفَاكِ عَلَىٰ
نِسَاءِ الْعَالَمِينَ ﴿٤٢﴾ يَا مَرْيَمُ اقْنُتِي لِرَبِّكِ وَاسْجُدِي وَارْكَعِي
مَعَ الرَّاكِعِينَ ﴿٤٣﴾ ذَٰلِكَ مِنْ أَنبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۚ وَمَا
كُنتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يُلْقُونَ أَقْلَامَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ وَمَا
كُنتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٤﴾ إِذْ قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ يَا مَرْيَمُ
إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ
وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٥﴾

ع

منزل ۱

वहीं ज़करिया ने अपने पालनहार से दुआ की ऐ मेरे पालनहार! अपने पास से मुझे अच्छी संतान प्रदान कर बेशक तू दुआ का ख़ूब सुनने वाला है (38) फिर एक दिन जब वे कोठरी में नमाज़ पढ़ रहे थे तो फरिश्तों ने उन्हें आवाज़ दी कि अल्लाह आपको यहया का शुभ समाचार सुनाता है जो अल्लाह के एक कलिमा की पुष्टि (तस्दीक़) करेंगे[1], सरदार होंगे और मन पर बड़ा क़ाबू रखने वाले होंगे और नेकों में एक नबी होंगे (39) उन्होंने कहा ऐ मेरे पालनहार! मेरे लड़का कैसे होगा जबकि मैं बूढ़ा हो चुका और मेरी पत्नी बांझ है, उसने कहा इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है (40) उन्होंने कहा कि ऐ मेरे पालनहार! मेरे लिए कोई निशानी बता दीजिए, उसने कहा कि तुम्हारी निशानी यह है कि तुम तीन दिन लोगों से इशारे के अलावा बात न कर सकोगे और अपने पालनहार को ख़ूब याद करो और शाम व सुबह उसकी पवित्रता बयान करो (41) और जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरियम! अल्लाह ने आपको चुन लिया है और आपको पवित्रता प्रदान की है और सारे संसारों की औरतों पर आपको चुना है (42) ऐ मरियम! अपने पालनहार की इबादत में लगी रहिये और सजदे कीजिए और रुकूअ करने वालों (झुकने वालों) के साथ रुकूअ कीजिए[2] (43) यह ग़ैब की वे ख़बरें हैं जिनको हम आपकी ओर भेज रहे हैं और आप उनके पास उस समय न थे जब वे इसलिए अपने क़लम डाल रहे थे कि कौन मरियम का संरक्षण (किफ़ालत) करेगा और उस समय भी आप उनके पास न थे जब वे झगड़ा कर रहे थे[3] (44) जब फ़रिश्तों ने मरियम से कहा था कि अल्लाह आपको अपने पास से कलिमा (शब्द) (कुन) (हो जा) की ख़ुशख़बरी देता है उसका नाम मसीह पुत्र मरियम होगा, दुनिया व आख़िरत में वह इज़्ज़त वाला होगा और (अल्लाह के दरबार में) क़रीबी लोगों में से होगा (45)

(1) अल्लाह के कलिमा का मतलब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम हैं जो बिना बाप के केवल कलिमा (शब्द) कुन (हो जा) से पैदा हुए, हज़रत यहया उनसे पहले हुए और उन्होंने हज़रत ईसा के आने की पुष्टि की (2) हज़रत मरियम के संबंध के कारण बीच में हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा बयान हुआ, अब दोबारा हज़रत मरियम अ़लैहिस्सलाम का उल्लेख हो रहा है (3) हज़रत मरियम की मां जब उनको लेकर मस्जिद गईं तो उनके हालात सुन कर सबको उनके संरक्षण (किफ़ालत) की चाहत हुई और इस पर विवाद हुआ और बात इस पर ठहरी कि वे सब बहते पानी में अपने–अपने वे क़लम डालें जिन से वे तौरेत लिखते हैं, सब ही ने डाले वे बहाव पर बहने लगे, हज़रत ज़करिया ने डाला वह उलटा बहा, बस उनके ही हक़ में फ़ैसला हो गया।

منزل١

वह गोद में लोगों से बातचीत करेगा और अधेड़ उम्र होकर भी और वह नेक लोगों में होगा[1] (46) वे बोलीं ऐ मेरे पालनहार! मुझे लड़का कहां से होगा मुझे तो किसी आदमी ने छुआ तक नहीं? उसने कहा कि इसी तरह अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है जब वह किसी चीज़ का फ़ैसला कर लेता है तो बस उससे कहता है हो जा बस वह हो जाती है (47) और वह उसे किताब व हिकमत और तौरेत व इंजील की शिक्षा देगा (48) और वह बनी इस्राईल के लिए पैग़म्बर होगा (जो लोगों से कहेगा) कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से निशानी लेकर आया हूं, मैं तुम्हारे लिए गारे से पक्षी का रूप बनाता हूं फिर उसमें फूंक मारता हूं तो वह अल्लाह के हुक्म से पक्षी बन जाता है, और पैदाइशी अंधे और कोढ़ी को ठीक करता हूं और अल्लाह ही के हुक्म से मुर्दे को ज़िंदा कर देता हूं[2] और जो कुछ तुम खाते हो और अपने घरों में इकट्ठा करके रखते हो वह सब मैं तुम्हें बता देता हूं, बेशक इसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है अगर तुम मानते हो (49) जबकि मैं उस चीज़ को भी सच बताता हूं जो मेरे सामने तौरेत (के रूप में मौजूद) है और मैं (इसलिए भी आया हूं) ताकि उन कुछ चीज़ों को जो तुम पर ह़राम की गई थीं अब मैं उनको ह़लाल करूं[3] और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की निशानी लेकर आया हूं तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो (50) बेशक अल्लाह हमारा भी पालनहार है और तुम्हारा भी पालनहार है, तो उसी की उपासना (बन्दगी) करो यही सीधा रास्ता है (51) जब ईसा ने उनके इन्कार को महसूस किया तो उन्होंने कहा कौन अल्लाह की राह में मेरी सहायता करने वाले हैं? हवारियों[4] ने कहा हम हैं मदद करने वाले अल्लाह के (दीन की), हम अल्लाह पर ईमान लाए और आप गवाह रहें कि हम मुसलमान हैं (52) ऐ हमारे पालनहार! तूने जो कुछ भी उतारा हम उस पर ईमान लाए और हमने रसूल (संदेष्टा) की बात मानी बस तू हमको मानने वालों में लिख दे (53)

(1) गोद में बात करना ज़रूर आम प्रवृत्ति के विपरीत है लेकिन अधेड़ आयु के आदमी के लिए बात करना कोई विशेष बात नहीं, हाँ हज़रत ईसा के बारे में इसका उल्लेख पवित्र कुरआन का मोजिज़ा (ईश्वरीय चमत्कार) है, इसमें उन लोगों का खण्डन किया जा रहा है जो हज़रत ईसा के फांसी पर चढ़ जाने का अक़ीदा (विश्वास) रखते हैं उनको सूली (फांसी) के लिए ले जाया गया तो वह जवान थे, अधेड़ उम्र में बात करना इस बात की ओर इशारा है कि वे उठा लिए गए अब दोबारा आएंगे अधेड़ उम्र को प्राप्त करेंगे, इस आयु में बात करने का उल्लेख इसी वास्तविकता को बयान करने के लिए किया जा रहा है, गोद में बात करने की क्षमता अल्लाह ने उनको इसलिए दी थी ताकि हज़रत मरियम की पाक दामनी (पवित्रता) स्पष्ट हो जाए (2) उस ज़माने में वैद्यों और हकीमों का ज़ोर था इसी लिए हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को वह मुअ्जिज़ा (ईश्वरीय चमत्कार) दिया गया जो इस कला के विशेषज्ञों पर उनकी श्रेष्टता सिद्ध करे, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में भाषा व व्याख्यान की बड़ी चर्चा व मांग थी इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को विशेष रूप से कुरआन पाक का अमर मुअ्जिज़ा दिया गया (3) बनी इस्राईल के लिए मूसा अ़लैहिस्सलाम की शरीअत (धर्मशास्त्र) में ऊंट का गोश्त, चरबी और कुछ पक्षी और मच्छलियों की कुछ प्रजातिया हराम थीं, हज़रत ईसा की शरीअत में उनको जायज़ (वैध) क़रार दिया गया। (4) मशहूर है कि पहले दो व्यक्ति हज़रत ईसा के अनुयायी हुए वे धोबी थे कपड़े साफ़ करने की वजह से हवारी (धोबी) कहलाते थे, हज़रत ईसा ने कहा कि तुम कपड़े क्या धोते हो आओ मैं तुम्हें दिल धोना सिखा दूं, वे साथ हो गए, उनके बाद से उनके सब मानने वाले साथियों की उपाधि हवारी पड़ गई।

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ۗ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿۵۴﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ
يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى
يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ
فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۵۵﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا
شَدِيْدًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۡ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۵۶﴾ وَاَمَّا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ۗ وَ
اللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۷﴾ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ وَ
الذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ﴿۵۸﴾ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ۗ خَلَقَهٗ
مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۵۹﴾ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا
تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۶۰﴾ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَكَ
مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَ
نِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ
عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ﴿۶۱﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ
اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۶۲﴾

منزل ۱

और उन (काफ़िरों) ने चाल चली और अल्लाह ने भी गुप्त उपाय किया और अल्लाह ही सबसे अच्छा उपाय करने वाला है[1] (54) जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा! मैं तुम्हें बुलाने वाला हूं और अपनी ओर तुम्हें उठाने वाला हूं और काफ़िरों से तुम्हें नजात देने वाला हूं और तुम्हारी बात मानने वालों को क़यामत तक काफ़िरों से बुलंद रखूंगा फिर तुम सबको मेरी ओर लौटकर आना है, बस जो कुछ तुम झगड़ा करते रहे हो मैं उसका फैसला कर दूंगा[2] (55) तो जिन्होंने इनकार किया उनको दुनिया व आख़िरत में सख़्त सज़ा दूंगा और उनका कोई मददगार न होगा (56) और जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए अल्लाह उनको उनका पूरा पूरा बदला प्रदान करेगा और अल्लाह अत्याचारियों को पसंद नहीं करता (57) यह वह आयतें हैं और हिकमत से भरा वर्णन है जो हम आपको पढ़कर सुना रहे हैं (58) बेशक अल्लाह के यहां ईसा की मिसाल आदम की तरह है अल्लाह ने उनको मिट्टी से बनाया फिर कहा हो जा तो वह हो गए[3] (59) सच्ची बात आपके पालनहार ही की है तो आप संदेह में न रह जाएं (60) फिर जो इस बारे में आपके पास निश्चित ज्ञान के बाद भी झगड़ा करें तो उनसे कह दीजिए के आओ हम अपने बेटों को बुलाएं तुम अपने बेटों को और हम अपनी औरतों को बुलाएं तुम अपनी औरतों को और हम अपने लोगों को बुलाएं, तुम अपने लोगों को, फिर मुबाहला (विनम्रता पूर्वक दुआ) करें और झूठों पर अल्लाह की लानत (धिक्कार) भेजें[4] (61) यही (घटनाओं का) सच्चा बयान है और अल्लाह के अलावा कोई बन्दगी (उपासना) के लायक़ नहीं और बेशक अल्लाह ही ज़बरदस्त है हिकमत वाला (तत्वदर्शी) है (62)

(1) यहूदियों ने हज़रत ईसा के क़त्ल का षडयत्रं शुरू किया, जाकर राजा के कान भरे, उसने गिरफ़्तारी का आदेश दे दिया, इधर अल्लाह का गुप्त उपाय अपना काम कर रहा था जिसका उल्लेख आगे आता है "मक्र" गुप्त उपाय को कहते हैं अच्छे काम के लिए हो तो अच्छा, बुरे काम के लिए हो तो बुरा है (2) अल्लाह के आदेश से हज़रत ईसा सुरक्षित आसमान की ओर उठा लिए गए, अपनी अधेड़ आयु दोबारा दुनिया में आकर वे पूरी करेंगे और क़यामत से पहले दुनिया को न्याय व इन्साफ़ से भर देंगे, यहूदी चुन चुन कर मारे जाएंगे, इस्लाम का बोल बाला होगा, वही लोग कामयाब होंगे जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की बात मानेंगे और वह खुद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत (विधान) पर चलेंगे, यह भी हक़ीक़त है कि हज़रत ईसा को मानने वाले ही ग़ालिब रहे हैं चाहे वे सही तरीक़े पर मानने वाले हों जैसे कि मुसलमान या बढ़ा चढ़ा कर मानने वाले हों जैसे ईसाई। (3) मिट्टी से उनका ढांचा तैयार किया फिर उनको चलता फिरता मानव बना दिया, यह सब अल्लाह के इरादे से हो गया, ईसाई हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहने लगे कि अगर ईसा खुदा के बेटे नहीं तो किस के बेटे हैं उस पर यह आयत उतरी कि आदम के न मां न बाप, ईसा अगर बिना बाप के अल्लाह के आदेश से पैदा हो गए तो कौन सी आश्चर्य की बात है (4) यह घटना नजरान के ईसाई ज्ञानियों के साथ सन् नौ हिजरी में घटित हुई, आपने प्रतिनिधी मण्डल का सम्मान किया और तर्क से समझाया, जब उन्होंने इन्कार किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुबाहला (अल्लाह से विनम्रता पूर्वक प्रार्थना करना और झूठे पर उसका धिक्कार भेजना) का निमंत्रण दिया और हज़रत फ़ातिमा, हज़रत अली और हज़रत हसन व हुसैन को लेकर निकले जब प्रतिनिधी मण्डल के सबसे बड़े ज्ञानी ने देखा तो कहा कि खुदा की क़सम मैं ऐसे चेहरों को देख रहा हूं कि अगर यह पहाड़ टलने की दुआ करें तो टल जाए फिर प्रतिनिधी मण्डल को संबोधित करके कहा कि इनसे मुबाहला करना पूरी बिरादरी को बर्बाद करना है अतः उन्होंने माफ़ी मांग ली, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा अल्लाह का अज़ाब (दण्ड) उनके निकट आ गया था अगर यह मुबाहला करते तो उनकी शक्लें बदल जाती।

फिर भी अगर वे मुँह फेरें तो अवश्य अल्लाह उपद्रवियों को ख़ूब जानता है (63) आप कह दीजिए कि ऐ अहल–ए–किताब ऐसी बात की ओर आ जाओ जो हममें तुम में बराबर है (वह यह) कि हम केवल अल्लाह की बन्दगी करें और उसके साथ कुछ भी साझी न ठहराएं और हममें से कोई किसी को अल्लाह के अलावा पालनहार न बना ले फिर अगर वे न मानें तो तुम कह दो कि तुम लोग गवाह रहना कि हम तो आदेश के अधीन हैं[1] (64) ऐ अहल–ए–किताब तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो जबकि तौरेत और इंजील उनके बाद उतरीं क्या तुमको समझ नहीं है (65) तुम वही तो हो जो उन चीज़ों में झगड़ चुके हो जिनकी तुम्हें कुछ ख़बर थी तो अब ऐसी चीज़ में क्यों झगड़ते हो जिसकी तुम्हें कुछ जानकारी नहीं और अल्लाह तआला जानता है और तुम नहीं जानते (66) इब्राहीम न यहूदी थे न ईसाई[2] वे तो शुद्ध मुस्लिम[3] थे और वह शिर्क करने वालों में भी न थे (67) इब्राहीम के अधिक अधिकारी तो वे हैं जिन्होंने उनका अनुसरण (पैरवी) किया और यह पैग़म्बर और जो (इन पर) ईमान लाए और अल्लाह ईमान लाने वालों का मित्र है[4] (68) अहल–ए–किताब के कुछ लोग चाहते हैं कि किसी प्रकार रास्ते से हटा दें जबकि वे ख़ुद अपने आपको गुमराह कर रहे हैं और इसका एहसास भी उनको नहीं (69) ऐ अहल–ए–किताब तुम क्यों अल्लाह की आयतों का इनकार कर रहे हो जब कि तुम देख रहे हो[5] (70)

(1) इस आयत में दो चीज़े विशेष रूप से ध्यान देने के लायक हैं एक तो तौहीद का दावा करने वालों से कहा जा रहा है कि मात्र दावा काफ़ी नहीं बल्कि वास्तविक और व्यवहारिक रूप से अपने आप को अल्लाह के हवाले कर दो, न उसके अतिरिक्त किसी की उपासना करो न उसके विशेष गुणों में किसी का साझी ठहराओ और न किसी पैग़म्बर, आलिम और गुरू (पीर) के साथ वह व्यवहार करो जो जो अल्लाह के साथ किया जाता है, दूसरी चीज़ यह है कि इस आयत में दावत (इस्लाम प्रचार) के तरीके को बताया गया है, एक दाई (इस्लाम प्रचारक) की ज़िम्मेदारी है कि वह इस्लाम के प्रचार–प्रसार का आरम्भ उन चीज़ों से करे जिनसे सामने वाला व्यक्ति भी किसी स्तर पर अवगत हो, इस से दरवाज़ा खुल जाता है और काम आसान हो जाता है (2) यहूदियों का दावा था कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम यहूदी थे और ईसाई उनको ईसाई बताते थे, मक्का के मुश्रिकों का कहना था कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के दीन (धर्म) पर हैं, यहाँ बात साफ़ की जा रही है कि यहूदी और ईसाई धर्म बाद की पैदावार हैं इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का उनसे क्या सम्बंध, तौरेत भी उनके बाद उतरी और इंजील भी (3) मुस्लिम कहते ही है उसको जो मात्र अल्लाह के लिए झुक जाए, दूसरी जगह इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ख़ुद कहते हैं "अस्लम्तु लि रब्बिलआलमीन" यही दीन–ए–इस्लाम (इस्लाम धर्म) हज़रत मूसा का भी था और हज़रत ईसा का भी, यहूदी पंथ और ईसाई पंथ बाद वालों के बनाए हुए धर्म हैं वरना सारे इंसानों के लिए एक ही धर्म था "इस्लाम" यानी अल्लाह के सामने झुक जाना, ख़ुद अल्लाह कहता है "इन्नद्दीन इंदल्लाहिल इस्लाम" धर्म तो अल्लाह के यहां केवल इस्लाम ही है (4) ज़ाहिर है कि उनसे सबसे ज़्यादा क़रीब वही होगा जो उनके रास्ते पर चलने वाला हो और यह आख़िरी उम्मत (समुदाय) नाम में भी और काम में भी सबसे ज़्यादा इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से समानता रखती है (5) यानी तुम ख़ुद तौरेत और इंजील (बाइबिल) में उस पैग़म्बर के बारे में पढ़ते हो फिर जान बूझ कर इनकार करते हो।

يٰۤاَهۡلَ الۡكِتٰبِ لِمَ تَلۡبِسُوۡنَ الۡحَـقَّ بِالۡبَاطِلِ وَتَكۡتُمُوۡنَ الۡحَـقَّ
وَاَنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿٧١﴾ وَقَالَتۡ طَّآئِفَةٌ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ اٰمِنُوۡا بِالَّذِىۡۤ
اُنۡزِلَ عَلَى الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَجۡهَ النَّهَارِ وَاكۡفُرُوۡۤا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمۡ
يَرۡجِعُوۡنَ ﴿٧٢﴾ وَلَا تُؤۡمِنُوۡۤا اِلَّا لِمَنۡ تَبِعَ دِيۡنَكُمۡ ؕ قُلۡ اِنَّ الۡهُدٰى
هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنۡ يُّؤۡتٰٓى اَحَدٌ مِّثۡلَ مَاۤ اُوۡتِيۡتُمۡ اَوۡ يُحَآجُّوۡكُمۡ
عِنۡدَ رَبِّكُمۡ ؕ قُلۡ اِنَّ الۡفَضۡلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤۡتِيۡهِ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ
وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيۡمٌ ۚ ۙ﴿٧٣﴾ يَّخۡتَصُّ بِرَحۡمَتِهٖ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ
ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِيۡمِ ﴿٧٤﴾ وَمِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ مَنۡ اِنۡ تَاۡمَنۡهُ
بِقِنۡطَارٍ يُّؤَدِّهٖۤ اِلَيۡكَ ۚ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ اِنۡ تَاۡمَنۡهُ بِدِيۡنَارٍ لَّا
يُؤَدِّهٖۤ اِلَيۡكَ اِلَّا مَا دُمۡتَ عَلَيۡهِ قَآئِمًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ قَالُوۡا
لَيۡسَ عَلَيۡنَا فِى الۡاُمِّيّٖنَ سَبِيۡلٌ ۚ وَيَقُوۡلُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ الۡكَذِبَ وَ
هُمۡ يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٧٥﴾ بَلٰى مَنۡ اَوۡفٰى بِعَهۡدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٧٦﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَشۡتَرُوۡنَ بِعَهۡدِ اللّٰهِ وَاَيۡمَانِهِمۡ ثَمَنًا
قَلِيۡلًا اُولٰٓـئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمۡ فِى الۡاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا
يَنۡظُرُ اِلَيۡهِمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيۡهِمۡ ۖ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿٧٧﴾

منزل١

ऐ किताब वालो! तुम सत्य को असत्य के साथ क्यों गडमड कर देते हो और जानते बूझते सत्य को छिपाते हो[1] (71) अहल–ए–किताब में से कुछ लोगों ने कहा कि ईमान वालों पर जो कुछ उतरा है उसको दिन के शुरू में मान लो और शाम को इनकार कर देना शायद यह (मुसलमान भी अपने धर्म से) पलट जाएं[2] (72) और मानना उसी की जो तुम्हारे धर्म पर चले आप कह दीजिए कि अस्ल बताया रास्ता तो अल्लाह ही का रास्ता है (और यह सब तुम इस ज़िद में कर रहे हो) कि तुम को जो कुछ मिला था वो किसी और को न मिल जाये या यह तुम पर तुम्हारे पालनहार के पास ग़ालिब न आ जाएं आप कह दीजिए कि सारा का सारा फज़्ल अल्लाह के हाथ में है जिसे चाहता है प्रदान कर देता है और अल्लाह तो बड़ी व्यापकता वाला और ख़ूब जानने वाला है[3] (73) जिसे चाहता है अपनी कृपा के लिए चुन लेता है और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है (74) अहल–ए–किताब में कुछ वे हैं कि आप अगर उनके पास माल का ढेर धरोहर के रूप में रखा दें तो वे आप तक उसको पहुंचा देंगे[4] और कुछ वे हैं कि अगर आप एक दीनार भी उनके पास धरोहर (अमानत) रखा दें तो वे आप तक उसको पहुंचाने वाले नहीं सिवाए इसके कि आप उनके सिर पर ही खड़े रहें[5] इसलिए कि उन्होंने कह रखा है कि अनपढ़ लोगों के बारे में हमारी कोई पकड़ नहीं होगी और वे अल्लाह पर जानते बूझते झूठ बोलते हैं[6] (75) (पकड़) क्यों नहीं (होगी हां) जो अपना इक़रार पूरा करेगा और परहेज़गारी अपनाएगा तो बेशक अल्लाह परहेज़गार लोगों को चाहता है (76) बेशक वे लोग जो अल्लाह से इक़रार का और क़समों का मामूली क़ीमतों में सौदा कर लेते हैं आख़िरत में उनके लिए कोई हिस्सा नहीं क़यामत में अल्लाह न उनसे बात करेगा और न उनकी ओर देखेगा और न उनको पाक करेगा और उनके लिए दुखद अज़ाब है[7] (77)

---

(1) तौरेत के कुछ आदेश उन्होंने बिल्कुल छोड़ दिये थे, कुछ चीज़ें बढ़ा दी थीं और बहुत सी चीज़ें वे सामने छिपाते थे (2) आसमानी किताब वाले, ज्ञान वाले समझे जाते थे और अरबवासियों पर उनकी कुछ धाक बैठी हुई थी, उन्होंने तय किया कि हम इस्लाम ज़ाहिर करके दोबारा यहूदी होने का ऐलान करें और कहें कि विचार–विमर्श और तौरेत के अध्ययन के बाद इस धर्म की पुष्टि न हो सकी तो बहुत से मुसलमान भी उखड़ जाएंगे मगर उनकी यह मक्कारी चल न सकी (3) उनकी सारी दुश्मनी इसलिए थी कि पैग़म्बर इस्राईल (याकूब) के वंश के बजाए इस्माईल के वंश में कैसे आ गया (4) सब बराबर नहीं उनमें अच्छे अमानतदार (न्यायसंगत) लोग भी हैं यही लोग बाद में मुसलमान हुए (5) यहूदियों की ज्ञानात्मक और धार्मिक चोरी के बाद धन की चोरी का उल्लेख है (6) मक्कावासियों को वे बहुत गिरा हुआ समझते थे और उनको जाहिल कहते थे और उनका विचार यह था कि ग़ैर–यहूदी के साथ और विशेष रूप से मक्का वासियों के साथ हर प्रकार का व्यवहार वैध (जायज़) है, यह यहूदी ग़ैर यहूदी के साथ कुछ भी करें उस पर कोई पूछ–ताछ नहीं और आज भी यहूदियों के पवित्र ग्रंथों में यह सब कुछ मौजूद है (7) अल्लाह ने यहूदियों से इक़रार लिया था और क़समें ली थीं कि हर पैग़म्बर की मदद करना तुम्हारा कर्तव्य है मगर वे दुनिया के लिए इससे फिर गए, बार–बार इस इक़रार को याद दिलाया जा रहा है।

وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٨﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ؕ اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِيْ ؕ قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا ؕ قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨١﴾ فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ اَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

منزل ۱

और उन में कुछ वे भी हैं जो अपनी ज़बानों से किताब में तोड़ मरोड़ करते हैं[1] ताकि तुम उसको किताब ही का हिस्सा समझो जबकि वह किताब में से नहीं है और वे कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है जबकि वह अल्लाह की ओर से नहीं होता और वे अच्छी तरह जानते बूझते अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं (78) किसी इंसान से यह हो ही नहीं सकता कि अल्लाह ने उसको किताब और हिकमत व पैग़म्बरी दी हो फिर वह लोगों से कहता फिरे कि अल्लाह को छोड़कर मेरे उपासक बन जाओ बल्कि (वह तो यही कहेगा कि) अल्लाह वाले बन जाओ चूँकि तुम किताब की शिक्षा देते हो और जैसे तुम ख़ुद उसको पढ़ते रहे हो (79) और न वह तुमसे यह कहेगा कि फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को पालनहार बना लो क्या वह तुम्हें मुसलमान होने के बाद कुफ़्र के लिए कहेगा[2] (80) और जब अल्लाह ने पैगम्बरों से यह वचन लिया कि अगर मैं तुम्हें किताब व हिकमत प्रदान करूं फिर तुम्हारे पास उस चीज़ को सच बताने वाला रसूल आ जाए जो तुम्हारे पास मौजूद है तो तुम ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर उसकी सहायता करना (और) कहा तुम इक़रार करते हो इस पर मेरी ओर से ज़िम्मेदारी उठाते हो? वे बोले हम इक़रार करते हैं, उसने कहा तो तुम गवाह रहना और मैं भी तुम्हारे साथ गवाहों में हूँ[3] (81) फिर जो कोई इसके बाद भी मुंह मोड़ेगा वही लोग नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) हैं[4] (82) तो क्या यह लोग अल्लाह के दीन (धर्म) के अलावा (किसी और) दीन (धर्म) की खोज मे हैं जबकि उसी के हुक्म में है जो कोई आसमान और ज़मीन में है खुशी खुशी या बल पूर्वक और सब उसी की ओर लौटाए जाएंगे[5] (83)

---

(1) "लवा" का अर्थ है मोड़ना यानी अपनी ज़बानों से अपनी चाहतों के अनुसार तौरेत में हेर–फेर करते रहते हैं (2) नजरान के प्रतिनिधी मण्डल के सामने कुछ यहूदियों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा, क्या तुम चाहते हो कि हम तुम्हारी पूजा करने लगें जैसे ईसाइ ईसा अ़लैहिस्सलाम को पूजते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा अल्लाह की शरण चाहता हूं इस बात से कि हम अल्लाह को छोड़कर किसी और की पूजा करें या दूसरों को इसका आमंत्रण दें इसके लिए अल्लाह ने हमको भेजा ही नहीं, इस पर यह आयतें उतरीं (3) हर पैग़म्बर से और पैग़म्बर के माध्यम से हर पैग़म्बर के अनुयायियों से यह वचन लिया गया कि जो पैग़म्बर आए तुम्हें उसको मानना है और उसका समर्थन करना है, इसमें विशेष रूप से अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर इशारा है जिनका शुभ समाचार हर किताब में दिया गया और हर पैग़म्बर ने अपने समुदाय को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने की ख़बर दी (4) पैग़म्बरों से तो मुंह मोड़ने का संदेह नही, यहां मतलब उनके अनुयायी हैं, बाइबिल में लिखा है "मूसा ने कहा ख़ुदावन्द तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए मुझ जैसा एक नबी पैदा करेगा जो कुछ वह तुमसे कहे वह सुनना और यूँ होगा कि जो व्यक्ति उसकी न सुनेगा वह समुदाय में समाप्त कर दिया जाएगा बल्कि समोईल से लेकर पिछलों तक जितने पैग़म्बरों ने बात की उन सबने उन दिनों की ख़बर दी है" (न्यु टेस्टामेंट– आमाल–ए–रुसुल ख 3, अध्याय 22–23, मुद्रित लाहौर) (5) ख़ुदा के दीन (धर्म) यानी इस्लाम सब पैग़म्बरों का दीन (धर्म) यही रहा है "व ल हु अस्लम" में इसी की ओर इशारा है और इस सत्य का व्याख्यान भी कि यह धर्म सर्वथा "समर्पण" का नाम है।

قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَاۤ اُنْزِلَ عَلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ وَ
اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَاۤ اُوْتِىَ مُوْسٰى وَ
عِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ
لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ
وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۸۵﴾ كَيْفَ يَهْدِى اللّٰهُ قَوْمًا
كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْۤا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ
الْبَيِّنٰتُ ۚ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۸۶﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ
اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۸۷﴾
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۸۸﴾
اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۸۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ
ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ﴿۹۰﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ
مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ؕ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۹۱﴾ ع ٩

منزل ١

आप कह दीजिए कि हम अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस पर जो हम पर उतारा गया और उसपर जो इब्राहीम व इस्माईल और इसहाक़ व याक़ूब और उनकी संतान पर उतारा गया और जो मूसा व ईसा और दूसरे पैग़म्बरों को उनके पालनहार की ओर से दिया गया, हम उनमें परस्पर कोई विभेद नहीं करते और हम उसी (अल्लाह) के आज्ञाकारी हैं[1] (84) जो भी इस्लाम के सिवा किसी और दीन (धर्म) को चाहेगा तो उससे वह हरगिज़ स्वीकार न किया जाएगा और वह आख़िरत में नुक़सान उठाने वालों में होगा (85) अल्लाह तआला ऐसे लोगों को कैसे हिदायत (संमार्ग) दे सकता है जिन्होंने मानने के बाद इनकार किया जबकि उन्होंने देख लिया कि पैग़म्बर सच्चे हैं और उनके पास खुली निशानियां आ चुकीं और अल्लाह ऐसे अन्याय करने वालों को हिदयात (संमार्ग) नहीं दिया करता[2] (86) ऐसे लोगों की सज़ा यही है कि उनपर अल्लाह की और फरिश्तों की और सारे लोगों की फिटकार है (87) वे उसी में पड़े रहेंगे न उनसे अज़ाब हलका किया जाएगा और न उनको मोहलत दी जाएगी (88) सिवाए उनके जिन्होंने उसके बाद तौबा कर ली और सुधार पैदा कर लिया तो निःसंदेह अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा दयालु है (89) जिन्होंने मानने के बाद इनकार किया फिर इनकार में बढ़ते चले गए उनकी तौबा कदापि स्वीकार न की जाएगी और यही लोग पथभ्रष्ट हैं[3] (90) बेशक जिन्होंने इनकार किया और इनकार करने वाले हो कर मरे तो हरगिज़ उनमें से किसी से ज़मीन भर सोना भी स्वीकार न किया जाएगा चाहे वह उसको फिद्या में दे डाले यही वे लोग हैं जिनके लिए दुखद अज़ाब है और उनकी कोई सहायता करने वाला न होगा[4] (91)

(1) ईमान लाने के लिहाज़ से सब बराबर हैं सब पर ईमान लाना समान रूप से अनिवार्य है, हाँ! उनमें जो श्रेणियों का अंतर है वह पवित्र क़ुरआन से सिद्ध होता है "तिलकर्रूसुलु फ़ज़्ज़लना बअ्ज़ुहुम अलाबाज़" यह वे रसूल हैं जिनमें कुछ को कुछ पर हमने बड़ाई प्रदान की (2) जो सो रहा हो उसको जगाया जा सकता है और जो सोने का ढोंग रचा हो उसको कौन जगा सकता है, बहुत सी घटनाएं हदीस में हैं कि यहूदियों ने आपकी सेवा में आकर विश्वास कर लिया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सच्चे पैग़म्बर हैं लेकिन जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा मान लो और ईमान ले आओ तो मुकर गए और टाल कर निकल गए (3) यहूदियों ने विशेष रूप से यही किया, इनकार किया और फिर दुश्मनी में सारी सीमाएं लांघ गए, उनके बारे में कहा जा रहा है कि उनको तौबा की भी तौफ़ीक़ न मिलेगी (4) ईमान ही सफलता की नीव है अगर यह न हो तो न दुनिया में सदक़ा ख़ैरात (दान) स्वीकार है और आख़िरत में कोई पूरी दुनिया भी बचाव के लिए बदले में देना चाहे तो कुछ लाभ नहीं, यहां बड़े–बड़े नौकर–चाकर वाले वहां असहाय पड़े होंगे।

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ وَمَا تُنْفِقُوْا
مِنْ شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۹۲﴾ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِيْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ
تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ۭ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿۹۳﴾ فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۹۴﴾ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۣ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ
حَنِيْفًا ۭ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۹۵﴾ اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ
لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۶﴾ فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ
اِبْرٰهِيْمَ ڬ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ۭ وَلِلّٰهِ عَلَي النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ
مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ۭ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ عَنِ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۷﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ڰ وَاللّٰهُ
شَهِيْدٌ عَلٰي مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۸﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَاۗءُ ۭ وَمَا اللّٰهُ
بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۹﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا
مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۰﴾

منزل ۱

तुम हरगिज़ पूरी नेकी को नहीं पा सकते जब तक तुम उस चीज़ को न ख़र्च कर दो जो तुम्हें पसंद है और तुम जो भी ख़र्च करते हो अल्लाह उसको ख़ूब जानता है[1] (92) तौरेत उतरने से पहले सब खाने बनी इस्राईल के लिए हलाल थे सिवाए उनके जो ख़ुद इस्राईल ने अपने ऊपर हराम कर लिया था, आप कह दीजिए तौरेत ले आओ और उसे पढ़ो अगर तुम सच्चे हो[2] (93) फिर उसके बाद भी जो अल्लाह पर झूठ बाँधे तो वही लोग अन्यायी हैं[3] (94) आप कह दीजिए कि अल्लाह ने तो बात सच–सच कह दी बस अब तुम इब्राहीम के दीन पर चलो जो (अल्लाह के लिए) एकाग्र थे और वे शिर्क करने वालों में न थे[4] (95) सबसे पहला घर जो लोगों के (इबादत) करने के लिए निर्धारित किया गया वही है जो मक्का में है, पावन है और सारे संसारों के लिए मार्ग दर्शक है[5] (96) उसमें खुली हुई निशानियाँ हैं मक़ाम–ए–इब्राहीम है और जो भी उसमें प्रविष्ट हुआ वह अमन से हुआ और अल्लाह के लिए उस घर का हज करना उन लोगों पर अनिवार्य है जो भी वहाँ तक रास्ते का सामर्थ्य रखते हों और जिसने इनकार किया तो अल्लाह को दुनिया की परवाह नहीं (97) आप कह दीजिए कि ऐ अहल–ए–किताब! (किताब वालों) तुम क्यों अल्लाह की निशानियों का इनकार करते हो जब कि तुम जो भी करते हो वह अल्लाह के सामने है (98) आप कह दीजिए कि ऐ अहल–ए–किताब! तुम क्यों अल्लाह के रास्ते में टेढ तलाश कर–कर के ईमान लाने वाले को उससे रोकते हो जब कि तुम (ख़ुद) गवाह हो और अल्लाह तुम्हारे बुरे कामों से बेख़बर नहीं (99) ऐ ईमान वालो! अगर तुम अहल–ए–किताब में से किसी भी गिरोह की बात मान लोगे तो वे तुम्हें ईमान लाने के बाद काफ़िर बना कर छोड़ेंगे (100)

(1) मतलब केवल धन दौलत ही नहीं बल्कि इज़्ज़त, राहत व प्रेम हर चीज़ को खर्च करना और उसकी क़ुर्बानी देना, इसमें शामिल है और इस में यहूदियों की ओर भी इशारा है जो ईमान के लिए राज सत्ता छोड़ने के लिए तैयार न थे (2) यहूदियों ने शिगूफ़ा छोड़ा कि तुम इब्राहीम के अनुयायी होने का दावा करते हो और जो चीज़ें इब्राहीम के यहाँ हराम थीं उनको हलाल समझते हो, उसी का जवाब है कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के यहाँ यह सब चीज़ें ह़लाल थीं फिर तौरेत के उतरने के समय कुछ चीज़ें हराम की गईं और याक़ूब अ़लैहिस्सलाम को कोई बीमारी थी तो उन्होंने मन्नत मानी कि अगर मैं स्वस्थ हो गया तो अपनी पसंद की चीज़ें छोड़ दूँगा, उनको ऊँट का गोश्त और दूध बहुत पसंद था वह उन्होंने छोड़ दिया, अब इस उम्मत के लिए हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के ज़माने का आदेश लौट आया और जो चीज़ें उनकी शरीअत में हलाल थीं वे इस उम्मत के लिए भी हलाल हैं (3) उनसे कहा गया कि तौरेत लाकर दिखाओ अगर तुम सच्चे हो, इस पर उनका मुंह बन गया (4) जब तुम्हारी बात गलत हुई तो अब इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के सही तरीके पर आ जाओ तुम शिर्क करते हो और वे शिर्क से पाक थे बस तुम भी शिर्क छोड़ दो और तौबा कर लो (5) यहूदियों ने कहा था कि तुम्हारा इब्राहीम से क्या संबंध, वे तो इराक़ से शाम गए और वहाँ उन्होंने बैतुल मुक़द्दस का निर्माण किया तुमने उसे छोड़ दिया, उसी का जवाब दिया जा रहा है कि सबसे पहले काबा बना फिर बैतुल मुक़द्दस, अल्लाह ने उसको शुरु से बरकत व हिदायत (संमार्ग) का उद्गम बनाया आज भी वह मक़ामे इब्राहीम वहाँ मौजूद है जिस पर हज़रत इब्राहीम के कदमों के निशान हैं, उस घर को अल्लाह ने क़यामत तक के लिए इस्लाम का केन्द्र और उसके हज को अनिवार्य (फ़र्ज़) किया।

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ
وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٠١﴾ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ
مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا وَاذْكُرُوْا
نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ
بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ
مِّنْهَا كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ وَلْتَكُنْ
مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ
تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ
عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٥﴾ يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ فَاَمَّا
الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿١٠٦﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ
فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٧﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ
نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٨﴾

ع

منزل ١

और तुम किस तरह कुफ़्र कर सकते हो जब कि तुम्हारा हाल यह है कि तुम्हें अल्लाह की आयतें पढ़–पढ़ कर सुनाई जा रही हैं और तुम्हारे बीच अल्लाह के पैग़म्बर मौजूद हैं, और जो भी अल्लाह को मज़बूती से पकड़ेगा तो वह सीधे रास्ते पर पड़ गया[1] (101) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से उसी तरह डरते रहो जैसे उससे डरना चाहिए और तुमको मौत न आए मगर इस हाल में कि तुम मुसलमान हो (102) और अल्लाह की रस्सी को तुम सब मिल कर मज़बूती से थामे रहो और फूट मत डालो और अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद रखो जब तुम आपस में दुश्मन थे तो उसने तुम्हारे दिलों को जोड़ दिया तो उसके एहसान से तुम भाई–भाई हो गए[2] और तुम जहन्नम के गढ़े के किनारे पर थे तो उसने तुम्हें उससे बचा लिया इसी तरह वह तुम्हारे लिए आयतें खोल–खोल कर बयान करता है ताकि तुम राह पर रहो (103) और तुम में एक जमात (गिरोह) ऐसी होनी चाहिए जो अच्छाई की ओर बुलाती रहे और भलाई के लिए कहती रहे और बुराई से रोकती रहे और यही लोग सफल होने वाले हैं[3] (104) और उन लोगों की तरह मत हो जाना जो निशानियाँ आने के बाद भी फूट डालने लगे विभेद में पड़ गये और ऐसे ही लोगों के लिए सख़्त अजाब है[4] (105) जिस दिन कुछ चेहरे रौशन होंगे और कुछ काले पड़ जाएंगे (उनसे कहा जाएगा) ईमान ला कर तुम काफ़िर हो गए बस अपने कुफ़्र (इनकार) के कारण अज़ाब चखो (106) और जिनके चेहरे रौशन होंगे वे अल्लाह की रहमत में जगह पाएंगे उसी में हमेशा रहेंगे (107) यह अल्लाह की वे आयतें हैं जो हम आपको ठीक–ठीक पढ़ कर सुनाते हैं और अल्लाह जहान वालों पर ज़रा भी अत्याचार नहीं चाहता (108)

---

(1) मुसलमानों को नसीहत की गई कि इन बिगाड़ करने वालों की बातों में मत आना अगर उनके इशारों पर चलोगे तो डर है कि ईमान की रौशनी से वंचित न कर दिये जाओ, फिर कहा जा रहा है कि यह सम्भव कैसे है कि कोई आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सच्चा ईमान ला कर ईमान से फिर जाए जबकि खुद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मौजूद हैं, इसके उतरने के कारण में एक घटना बयान की जाती है जिसका उल्लेख अगले फुटनोट में है (2) मदीने में कबीला औस व खज़रज की दुश्मनी बहुत पुरानी थी, थोड़ी–थोड़ी सी बात पर ऐसा युद्ध छिड़ जाता जो वर्षों चलता रहता, इस्लाम ने सबको एक कर दिया, दोनों कबीलों की यह एकता यहूदियों को तनिक न भाती थी, एक बार दोनों क़बीलों के लोग एक सभा में एकत्र थे एक यहूदी शुमास पुत्र क़ैस वहाँ से गुज़रा तो उसने फूट डालने के लिए एक उपाय किया कि एक व्यक्ति को भेजा और उससे कहा कि सभा में जा कर वह शायरी सुना दो जो दोनों कबीलों की जंग के अवसर पर कही गई है, उसने शायरी सुनानी शुरु की तो पुरानी भावनाएं भड़क उठीं और फिर से जंग की बातें होने लगीं, आप आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पता चला तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आ कर समझाया उस पर यह आयतें उतरीं, पहले इनमें यहूदियों को सम्बोधित किया गया है कि तुम्हें तो खुद ईमान लाना चाहिए था और अगर इस सौभाग्यता (खुश नसीबी) से वंचित हो तो दूसरों के लिए तो रुकावट न बनो, फिर मुसलमानों को नसीहत की गई और उन पर अल्लाह की कृपा याद दिलाई गयी है (3) आंशिक रूप से तो यह काम हर उम्मती का है लेकिन उम्मत में एक गिरोह ऐसा ज़रूरी है जो लगातार यह काम करता रहे और उसके नियम कानून से अवगत हो इस काम का एक बड़ा फायदा यह भी है कि आपस के झगड़े इससे ख़त्म होते हैं (4) यानी यहूदियों और ईसाइयों की तरह जो अपनी इच्छाओं के लिए बिखराव के शिकार हो गए।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ
الْاُمُوْرُ ۝١٠٩ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ
بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۭ وَلَوْ
اٰمَنَ اَھْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّھُمْ ۭ مِنْھُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُھُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ۝١١٠ لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى ۭ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ
الْاَدْبَارَ ۣ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝١١١ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا
ثُقِفُوْٓا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَاۗءُوْ بِغَضَبٍ
مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّھُمْ كَانُوْا
يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَاۗءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۭ ذٰلِكَ
بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝١١٢ لَيْسُوْا سَوَاۗءً ۭ مِنْ اَھْلِ
الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَاۗىِٕمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَاۗءَ الَّيْلِ وَ
ھُمْ يَسْجُدُوْنَ ۝١١٣ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ
يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ
فِي الْخَيْرٰتِ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝١١٤ وَمَا يَفْعَلُوْا
مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝١١٥

منزل ١

और आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वह अल्लाह ही का है और अल्लाह ही की ओर सारे काम लौटाएं जाएंगे (109) तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए पैदा की गई है तुम भलाई का आदेश देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर अहल–ए–किताब (किताब वाले) ईमान लाते तो उनके लिए बहुत अच्छा होता[1] उनमें कुछ तो ईमान वाले हैं मगर अधिकतर उनमें अवज्ञाकारी (नाफ़रमान) हैं (110) वे तुम को थोड़ा बहुत सताने के सिवा हरगिज़ कोई नुक़सान न पहुंचा सकेंगे और अगर वे तुम से लड़ेंगे तो तुम्हें पीठ दिखा कर भागेंगे फिर उनकी मदद न की जाएगी (111) अपमान उनके सिर थोप दिया गया चाहे वे कहीं भी पाए जाएं सिवाय अल्लाह की रस्सी के सहारे और लोगों की रस्सी के सहारे और वे अल्लाह के गुस्से के हक़दार हो चुके और पस्ती (निम्नता) उनके सिर मढ़ दी गई[2] इसलिए कि वे अल्लाह की निशानियों का इनकार करते थे और पैग़म्बरों की अनुचित रूप से हत्या कर डालते थे[3] यह इस कारण हुआ कि उन्होंने अवज्ञा (नाफ़रमानी) की और वे सीमा लांघ जाते थे (112) (हाँ) वे सब समान नहीं, किताब वालों में एक गिरोह सीधे रास्ते पर भी है वे रात के समय अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और वे सज्दे करते हैं (113) अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं भलाई की ओर बुलाते हैं और बुराई से रोकते हैं और भले कामों की ओर लपकते हैं यही वे लोग हैं जिनकी गिनती नेक लोगों में है[4] (114) और वे जो भी भलाई का काम करेंगे उसकी ज़रा सी भी नाक़द्री न की जाएगी और अल्लाह परहेज़गारों से ख़ूब अवगत है (115)

(1) ईमान लाते तो वे भी ख़ैरे उम्मत (उत्तम समुदाय) में शामिल हो जाते (2) विशेष रूप से यहूदियों का उल्लेख है, अपमान जिनकी किस्मत है, सैकड़ों वर्ष उन्होंने अपमान में गुज़ारे और हर जगह धिक्कारे गए, "हबलुम मिनल्लाह" अल्लाह की रस्सी से मुराद इस्लाम है "हब्लुम्मिनन्नास" (लोगों की रस्सी) वह है जो हर युग में उन्होंने थामने का प्रयास किया है। यही दो रास्ते हैं जिनको अपना कर वे अपमान से बच सकते हैं या तो वे इस्लाम स्वीकार कर लें या किसी बड़ी शक्ति का सहारा लें, इस युग में उन्होंने अमेरिका की रस्सी थाम रखी है और उसके बल बूते पर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं सैकड़ों वर्ष के अपमान के बाद इतिहास में यह केवल कुछ दशकों की बाहरी चमक दमक है (3) पैग़म्बर का क़त्ल जब भी होगा नाहक़ ही होगा, पवित्र क़ुर्आन ने इस बात को स्पष्ट करने के लिए इसका उल्लेख किया है कि ख़ुद इन क़ातिलों के स्तर से भी यह क़त्ल नाहक़ व अवैध थे, तत्कालीन कानून के लिहाज़ से भी क़ानून के विपरीत और नियम के विरुद्ध थे, बनी इस्राईल की इस लगातार सरकशी (उदण्डता) का वर्णन केवल पवित्र क़ुरआन ही में नहीं है बल्कि तौरेत व इंजील (बाइबिल) के पृष्ठ इससे भरे पड़े हैं, तौरेत में है: "उन्होंने ख़ुदा के पैग़म्बरों का मज़ाक़ उड़ाया और उनकी बातों को बेहैसियत जाना और उसके नबियों की हंसी उड़ाई।" (2 तवारीख 17:36 पुराना अहद नामा पृष्ठ/461 मुद्रित लाहौर) बाइबिल में है "ऐ गर्दन मारने वालो! और दिल और कान के नामख़तूनों तुम हर समय रूहुल कुदुस का विरोध करते हो, जैसे तुम्हारे बाप दादा करते थे वैसे ही तुम भी करते हो, नबियों में से किस को तुम्हारे बाप दादा ने नहीं सताया (आमाल 7:52,53 नया अहद नामा पृष्ठ 115) बाइबिल में दूसरी जगह है तुम अपने बारे में गवाही देते हो कि तुम पैग़म्बरों के कातिलों की संतान हो। देखो मैं पैगम्बरों को तुम्हारे पास भेजता हूँ उनमें से तुम कुछ को क़त्ल और फांसी दोगे और कुछ को अपने पूजा घरों में कोड़े मारोगे और शहर–शहर सताते फिरोगे" (मत्ता 32–35 अहद नामा जदीद पृष्ठ 27–28 लाहौर) (4) यहूदियों में कुछ लोग अपितु वे बहुत कम थे ईमान लाए और दोहरे बदले के हक़दार हुए, उनमें हज़रत अब्दुल्लाह पुत्र सलाम प्रसिद्ध हैं जो बड़े यहूदी आलिम थे फिर इस्लाम स्वीकार महान सहाबी बन गए।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ
مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (116)
مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هَٰذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا
صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ ۚ وَمَا
ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِنْ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ (117) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
لَا تَتَّخِذُوا بِطَانَةً مِنْ دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا وَدُّوا مَا
عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ
أَكْبَرُ ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ ۖ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ (118) هَا أَنْتُمْ أُولَاءِ
تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ وَإِذَا لَقُوكُمْ
قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوا عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ۚ
قُلْ مُوتُوا بِغَيْظِكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ (119) إِنْ
تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَإِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا
بِهَا ۖ وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا ۗ إِنَّ
اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ (120) وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ
تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ (121)

منزل ١

बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया उनका धन और उनकी संतान अल्लाह के आगे उनके कुछ भी काम न आएंगे और वही लोग दोज़ख़ वाले हैं, उसी में वे हमेशा रहेंगे (116) वे दुनिया के जीवन में जो कुछ भी ख़र्च करते हैं उसका उदाहरण ऐसा है जैसे एक हवा हो, उस में पाला हो, वह उन लोगों की खेती को मार जाए जिन्होंने अपनी जानों पर अत्याचार कर रखा है फिर वह उसको बर्बाद कर जाए और अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया वे ख़ुद अपने ऊपर अत्याचार करते हैं[1] (117) ऐ ईमान वालो! अपने अलावा किसी अन्य को भेदी मत बनाओ वे तुम्हारी तबाही के लिए कोई कमी नहीं करते, तुम जितनी भी कठिनाई में पड़ जाओ यही उनकी चाहत है, उनकी ज़बानों से बुग्ज़ (द्वेष) फूट पड़ता है और उनके सीनों में जो कुछ छिपा हुआ है वह इससे बढ़ कर है, हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ खोल दी हैं अगर तुम बुद्धि से काम लेते जाओ[2] (118) अच्छी तरह सुन लो! तुम उनसे प्रेम रखते हो और वे तुम से प्रेम नहीं करते और तुम सारी किताबों पर ईमान रखते हो[3] और वे जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान वाले हैं और जब अलग होते हैं तो क्रोध में तुम पर उंगलियाँ काट–काट खाते हैं आप कह दीजिए कि अपनी दुश्मनी में ख़ुद ही मरो, अल्लाह दिलों की बातों को ख़ूब जानता है (119) अगर तुम्हें भलाई प्राप्त होती है तो उन्हें बुरा लगता है और अगर तुम पर कोई बुराई पड़ती है तो वे ख़ुश होते हैं और अगर तुम सब्र व तक़वे पर क़ायम रहे[4] तो उनकी कोई चाल तुम्हें ज़रा भी नुकसान नहीं पहुंचा सकती बेशक जो कुछ भी वे करते हैं सब अल्लाह की शक्ति के घेरे में है (120) और (वह समय याद कीजिए) जब आप अपने घर वालों के पास से सुबह को निकले मुसलमानों को जंग के ठिकानों पर ठहराते हुए और अल्लाह ख़ूब सुनने वाला और ख़ूब जानने वाला है[5] (121)

---

(1) जो लोग दुनिया में पैसे लगाते हैं वह किस तरह बर्बाद हो जाता है उसका उदाहरण दिया जा रहा है (2) यह अल्लाह का इनकार करने वाले चाहे ज़बान से कैसी ही दोस्ती का दम भरें लेकिन यह कभी मुसलमानों के दोस्त नहीं हो सकते, उनके अन्दर इतना द्वेष भरा हुआ है कि वे कोई मौक़ा हाथ से खाली नहीं जाने देते और उनकी ज़बानों से यह प्रकट हो जाता है (3) तुम उनकी आसमानी किताबों को मानते हो और वे तुम्हारी किताब को नहीं मानते, इसका परिणाम तो यह होना चाहिए था कि उनके दिलों में तुम्हारे लिए नरम कोना होता मगर मामला इसके उलट है (4) सब्र व तक़वा सुरक्षा व सफलता के दो ज्वलंत विषय हैं, सब्र यानी हर प्रकार की अडिगता और तक़वा यानी हर प्रकार की परहेज़गारी (5) यहाँ से ग़ज़्व–ए–उहद का उल्लेख है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब के स्थान निर्धारित कर रहे थे कि कौन कहाँ खड़ा होगा।

إِذْ هَمَّت طَّائِفَتَانِ مِنكُمْ أَن تَفْشَلَا وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا ۗ وَعَلَى
اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٢٢﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنتُمْ
أَذِلَّةٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢٣﴾ إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ
أَلَن يَكْفِيَكُمْ أَن يُمِدَّكُمْ رَبُّكُم بِثَلَاثَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ
مُنزَلِينَ ﴿١٢٤﴾ بَلَىٰ ۚ إِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُم مِّن فَوْرِهِمْ
هَٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُم بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ ﴿١٢٥﴾
وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُم بِهِ ۗ وَمَا
النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١٢٦﴾ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ
الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنقَلِبُوا خَائِبِينَ ﴿١٢٧﴾ لَيْسَ لَكَ
مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٢٨﴾
وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَ
يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٩﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا أَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً ۖ وَاتَّقُوا
اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٣٠﴾ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ
لِلْكَافِرِينَ ﴿١٣١﴾ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٣٢﴾

منزل ١

और जब तुममें दो गिरोह सोचने लगे थे कि वे हिम्मत हार जाएं[1] जब कि अल्लाह ही उनकी सहयता करने वाला था, और ईमान वालों को चाहिए कि वे अल्लाह ही पर भरोसा करें (122) और अल्लाह ने बद्र में भी तुम्हारी सहायता की थी हालाँकि तुम बेहैसियत थे तो तुम अल्लाह का लिहाज़ करते रहो ताकि तुम शुक्र करने वाले बन जाओ[2] (123) और जब आप मुसलमानों से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए यह काफ़ी नहीं कि अल्लाह तीन हज़ार फरिश्ते उतार कर तुम्हारी सहायता करे (124) हाँ अगर तुम जमे रहे और परहेज़गार रहे और वे (दुश्मन) अचानक उसी समय तुम पर हमलावर हुए तो तुम्हारा पालनहार ऐसे पाँच हज़ार फरिश्तों से तुम्हारी सहायता करेगा जो (विशिष्टता) का चिन्ह रखते होंगे (125) और यह तो अल्लाह ने तुम्हारी ख़ुशख़बरी के लिए किया और इसलिए ताकि इससे तुम्हारे दिलों को सुकून मिले और सहायता तो केवल अल्लाह ही के पास से है जो ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हिकमत (तत्वदर्शिता) रखता है[3] (126) ताकि काफिरों के एक गिरोह को समाप्त कर दे या उनको अपमानित कर दे तो वे नाकाम वापस हों[4] (127) आपको इसमें कोई अधिकार नहीं अल्लाह चाहे उनको तौबा से सम्मानित करे या चाहे तो अज़ाब दे, वे हैं तो निःसंदेह अत्याचारी[5] (128) आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वह अल्लाह ही का है जिसको चाहे माफ़ कर दे और जिसको चाहे अज़ाब दे और अल्लाह तो बड़ा क्षमा करने वाला अति दयालु है (129) ऐ ईमान वालो! बढ़ा–चढ़ा कर ब्याज मत खाओ और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम कामयाब हो जाओ[6] (130) और उस आग से बचाव का उपाय करो जो काफिरों के लिए तैयार की गई है (131) और अल्लाह और पैग़म्बर की बात मानो ताकि तुम पर दया की जाए (132)

---

(1) मुनाफिक़ों का सरदार अचानक तीन सौ संख्या को लेकर अलग हो गया, इससे दो कबीलों बनू सलमा व बनू हारिसा ने कुछ कमज़ोरी महसूस की लेकिन अल्लाह ने जल्द ही उनके दिलों को जमा दिया (2) बद्र युद्ध का उदाहरण देकर समझाया जा रहा है एक ही साल पहले की बात थी, उस अवसर पर मुसलमानों की संख्या कम होने के बावजूद बहुत ज़्यादा सब्र व तकवे के कारण अल्लाह ने कैसी सहायता की, तीन सौ तेरह के मुकाबले में एक हज़ार पराजित हो गए (3) फरिश्तों को भेजने की ख़बर भी इसलिए दी गई ताकि मुसलमानों को इत्मिनान हो जाए वरना अल्लाह को किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं, अल्लाह का फैसला अकेले काफ़ी था (4) बद्र का ही चित्रण किया जा रहा है जिसमें चुन–चुन कर बदमाश काफ़िर क़त्ल किए गए, बाक़ी अपमानित हो कर वापस हुए (5) अल्लाह जिसको चाहे हिदायत दे और जिसको चाहे क़ाफिर होने की हालत में मौत दे और अज़ाब दे (6) हराम होने से पहले मुसलमान ब्याज का लेन–देन कर लिया करते थे, यहाँ पूरे तौर पर उनको समाप्त करने का आदेश दिया जा रहा है, गज़्वों (जंगो) के साथ इसका इसलिए भी उल्लेख है कि ब्याज खाने से कमहिम्मती व कंजूसी बढ़ती है।

وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ
وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۳۳﴾ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ
وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳۴﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۪ وَمَنْ يَّغْفِرُ
الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۪۟ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ
يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ
جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ
الْعٰمِلِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي
الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۳۷﴾ هٰذَا
بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۳۸﴾ وَلَا تَهِنُوْا وَ
لَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۹﴾ اِنْ
يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَتِلْكَ
الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۰﴾

منزل۱

और अपने रब की माफ़ी की ओर और ऐसी जन्नत की ओर लपको जिसकी चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है जो परहेज़गारों के लिए तैयार की गई है (133) जो खुशी और तंगी में ख़र्च करते रहते हैं और गुस्से को पी जाने वाले और लोगों को माफ करने वाले हैं और अल्लाह बेहतर काम करने वालों को पसंद करता है (134) और वे लोग जो कभी खुली बुराई कर जाते हैं या अपनी जानों के साथ अन्याय कर जाते हैं तो तुरन्त अल्लाह को याद करते हैं, बस अपने पापों की माफ़ी चाहते हैं और अल्लाह के अलावा है भी कौन जो गुनाहों को माफ करे और अपने किये पर जानते बूझते वे अड़े नहीं रहते (135) यह वे लोग हैं जिनका बदला उनके रब की ओर से माफ़ी है और ऐसी जन्नतें हैं जिनके नीचे से नहरें जारी हैं हमेशा के लिए उसी में रहेंगे और अमल (कर्म) करने वालों का बदला क्या खूब है (136) तुम से पहले भी घटनाएं हो चुकी हैं तो ज़मीन में फिर कर देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम क्या हुआ (137) यह लोगों के लिए खुली बात है और परहेज़गारों के लिए हिदायत व नसीहत है (138) और कमज़ोर मत पड़ो और न दुखी हो अगर तुम ईमान वाले हो तो तुम ही छा कर रहोगे (139) अगर तुम्हें कोई चोट लगी है तो उसी प्रकार वे लोग भी तो चोट खा चुके हैं और यह (आते–जाते) दिन हम लोगों में अदल बदल करते रहते हैं और इसलिए ताकि अल्लाह ईमान वालों को पहचान कर दे और तुम में गवाह भी बनाए और अल्लाह अत्याचारियों को पसंद नहीं करता[1] (140)

(1) शुरु की आयतों में वास्तविक उद्देश्य का उल्लेख था और उन गुणों का बयान था जो अल्लाह की प्रसन्नता के साधन हैं और बाद की आयतों में तसल्ली दी जा रही है उहद के युद्ध के अवसर पर कि अगर तुमने नुक़सान उठाया तो पहले बद्र युद्ध के अवसर पर दुश्मन भी तो नुकसान उठा चुके हैं और फिर तुम ज़मीन में चल फिर कर देखो अल्लाह का नियम यही रहा है कि शुरु में पैग़म्बरों के मानने वालों ने तकलीफ़ें उठाई हैं लेकिन अंजाम उन्हीं के हक़ में होता है और यह एक परीक्षा भी है ताकि मुख़लिस (निष्ठावान) लोग दूसरों से अलग हो जाएं और मुनाफिकों की हक़ीकत खुलकर सामने आ जाए, बस यह ज़माने का उतार–चढ़ाव है जिनसे निराश होने और दिल तोड़ने की आवश्यकता नहीं, अंततः फ़ैसला मुख़्लिसों (निष्ठावानों) ही के हक़ में होता है अगर वे सब्र व तक़्वे पर क़ायम रहते हैं, अल्लाह के यहाँ इज़्ज़त व सर बुलन्दी ऐसे ही ईमान वालों का मुक़द्दर है।

وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۴۱﴾ اَمْ
حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا
مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۴۲﴾ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ
قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۱۴۳﴾ وَمَا
مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ اَفَاۡئِنْ
مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى
عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۴﴾
وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا وَ
مَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ
الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۵﴾ وَكَاَيِّنْ
مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ فَمَا وَهَنُوْا
لِمَآ اَصَابَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا
وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۴۶﴾ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ
قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا
وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۴۷﴾

منزل۱

और इसलिए ताकि अल्लाह ईमान वालों को निखार दे और काफ़िरों को मिटा दे[1] (141) क्या तुम्हारा विचार यह है कि यूं ही तुम जन्नत में प्रवेश कर जाओगे जबकि अभी अल्लाह ने तुम में जिहाद करने वालों को परखा भी नहीं और न अडिग रहने वालों को जाना[2] (142) मौत का सामना करने से पहले तो तुम उसकी तमन्ना किया करते थे तो अब तुमने उसको आँखों के सामने देख लिया[3] (143) और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो अल्लाह के रसूल हैं उनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं अगर उनका निधन हो जाए या उनको शहीद कर दिया जाए तो क्या तुम उलटे पांव फिर जाओगे और जो भी उलटे पांव फिरेगा वह अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेगा और जल्द ही अल्लाह शुक्र करने वालों को अच्छा बदला प्रदान करेगा[4] (144) किसी जान के लिए सम्भव नहीं कि वह अल्लाह के आदेश के बिना मर जाए उसके लिए एक निर्धारित समय लिखा हुआ है, जो दुनिया का बदला चाहेगा हम उसको उसमें से दे देंगे और जो आख़िरत के बदले का इच्छुक होगा उसको हम उसमें से देंगे और हम जल्द ही एहसान मानने वालों को बदला देंगे[5] (145) कितने ऐसे पैग़म्बर हुए हैं कि उनके साथ मिलकर अल्लाह वालों ने जंग की, तो उनको अल्लाह के रास्ते में जो भी तकलीफ़ पहुँची उससे उन्होंने हिम्मत न हारी और न वे कमज़ोर पड़े और न वे दबे और अल्लाह जमने वालों को पसंद करता है[6] (146) और वे कुछ न बोले बस यही कहते रहे कि ऐ हमारे पालनहार! हमारे पापों को माफ़ कर दे और हमसे हमारे काम में जो ज़्यादती हुई (उसको माफ़ कर) और हमारे कदमों को जमा दे और काफ़िर क़ौम पर हमारी सहायता कर[7] (147)

(1) ईमान वाले इस परीक्षा में खरे उतरे और अल्लाह से लौ लगाए रहे और काफिरों की उदण्डता (सरकशी) में और बढ़ोत्तरी हुई जो अंततः उनके मिट जाने की कारण बनी (2) यानी जन्नत के जो ऊँचे स्थान तुम्हारे लिए तय हैं क्या तुम उनमें बिना परीक्षा के पहुँच जाओगे अल्लाह हर चीज़ को जानता है, यहाँ जाने का मतलब यह है कि इस दुनिया में अल्लाह का ज्ञान प्रकट हो जाए, अल्लाह जानता था कि कौन जमने वाले लोग हैं लेकिन जब उन्होंने परीक्षा की घड़ी में जम कर दिखाया तो दुनिया में यह ज़ाहिर हो गया। (3) जो लोग बद्र युद्ध में शामिल न हो सके थे उनकी तमन्ना थी कि उनको भी अल्लाह के रास्ते में जिहाद व शहादत का अवसर मिले और उन्हीं के ज़ोर देने पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने से निकले थे विशेष रूप से उन्हीं से कहा जा रहा है (4) उहद युद्ध में यह खबर उड़ गई कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद हो गये इस पर लोगों में तरह–तरह के गुमान पैदा होने लगे और बहुत से लोग हिम्मत हार बैठे, विशेष रूप से उनसे कहा जा रहा है कि आज नहीं तो एक दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया से चले जाएंगे तो क्या तुम अपना दीन छोड़ बैठोगे (5) जब हर एक का समय निर्धारित है तो किसी बड़े या छोटे की मौत सुन कर निराश और बददिल होकर बैठे न रहना चाहिए (6) यह उन मुसलमानों को लज्जा दिलाई जा रही है जिन्होंने उहद युद्ध में कुछ कमज़ोरी दिखाई कि जब दूसरी उम्मतों में ऐसे लोग गुज़रे हैं तो तुम लोग तो ख़ैरुलउमम हो (7) अडिगता (साबित कदमी) के साथ अल्लाह से दुआ भी करते रहिए।

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ
وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝١٤٨ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ
تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا
خٰسِرِيْنَ ۝١٤٩ بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ۝١٥٠
سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا
بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَ
بِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ۝١٥١ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ
اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ
فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ
مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ
ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ؕ وَ
اللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٥٢ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا
تَلْوٗنَ عَلٰۤى اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِيْۤ اُخْرٰىكُمْ
فَاَثَابَكُمْ غَمًّاۢ بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ
وَلَا مَاۤ اَصَابَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝١٥٣

منزل ۱

तो अल्लाह ने उनको दुनिया का बदला दिया और आख़िरत का बेहतर सवाब भी, और अल्लाह अच्छा काम करने वालों का पसंद करता है (148) ऐ ईमान वालो! अगर तुम काफ़िरों की बात मानोगे तो वे तुम्हें उलटे पांवों फेर देंगे, फिर तुम घाटे में पड़ जाओगे[1] (149) बल्कि अल्लाह ही तुम्हारा समर्थक है और वह मदद करने वालों में सबसे बेहतर है (150) जल्द ही हम काफ़िरों के दिलों में भय डाल देंगे इसलिए कि उन्होंने अल्लाह के साथ शिर्क किया जिसका अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा और उनका ठिकाना दोज़ख़ है और वह अन्याय करने वालों के लिए बहुत ही बुरा ठिकाना है (151) और अल्लाह ने तुम से अपना वादा पूरा कर दिया जब तुम उनको अल्लाह के हुक्म से क़त्ल कर रहे थे यहाँ तक कि जब तुम (ख़ुद ही) कमज़ोर पड़ गए और (पैग़म्बर) के हुक्म में झगड़ा करने लगे[2] और जब अल्लाह ने तुम को तुम्हारी पसंद की चीज़ दिखाई दी तो तुमने बात नहीं मानी[3] तुममें कुछ दुनिया चाहते थे[4] और कुछ आख़िरत के इच्छुक थे फिर अल्लाह ने तुम्हें उनसे फेर दिया ताकि तुम्हारी परीक्षा ले[5] और वह तो तुम्हें माफ़ कर चुका और अल्लाह तो ईमान वालों पर बड़ा मेहरबानी करने वाला है[6] (152) जब तुम ऊपर चढ़ते जा रहे थे और किसी को मुड़कर देखते भी न थे और पैगम्बर तुम्हें पीछे से आवाज़ दे रहे थे[7] तो उसने तुम्हें परेशान करने के बदले में परेशान किया ताकि तुम उस चीज़ पर दुखी न हो जो तुम्हारे हाथ से निकल गई और न उस पर जो तुम पर मुसीबत पड़ी और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसको ख़ूब जानता है[8] (153)

(1) उहद के युद्ध के बाद मुनाफ़िक़ों ने मुसलमानों को बहकाया कि फिर किसी जंग में मत आना वरना ऐसे ही मारे जाओगे, इसी की ओर इशारा है कि ऐसे लोगों की बात मानोगे तो नुकसान उठाओगे (2) वादे के अनुसार शुरु में अल्लाह ने मुसलमानों को विजय दी और बहुत से काफिर मारे गए लेकिन पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात न मानी गई और एक पहाड़ी पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो मुजाहिदीन तैनात किये थे और उनको आदेश दिया था कि वे किसी हाल में न हटें, वे विजय देख कर हटने लगे, उनके सरदार ने मना किया मगर कुछ लोगों ने न माना, तो मुश्रिकों को उधर ही से मौक़ा मिल गया और उन्होंने हमला कर दिया (3) यानी जब फ़तेह (विजय) नज़र आने लगी और माल–ए–ग़नीमत पर निगाह पड़ी तो तुम पहाड़ से उतरने लगे और सरदार के मना करने के बावजूद तुमने बात नहीं मानी (4) पहाड़ी से हटने वाले कुछ लोगों ने यह भी सोचा कि विजय हो गई है अब माल–ए–ग़नीमत (युद्ध में शत्रु धन) प्राप्त करने की बारी है (5) यानी शुरु में तुम मुक़ाबला करते रहे और आगे बढ़ते रहे और तीरंदाज़ों को जिस पहाड़ी पर तैनात किया गया था वे भी अपनी जगह जमे रहे फिर अल्लाह का फैसला परीक्षा का हुआ और तीरंदाज़ विजय को देख कर पहाड़ से उतर गये और मुक़ाबले से फिर गये नतीजा यह हुआ कि पीछे से मुश्रिकों की सेना ने हमला कर दिया और जंग का पांसा पलट गया, सत्तर सहाबा शहीद हुए ख़ुद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दाँत मुबारक शहीद हुए इससे बढ़ कर परीक्षा क्या होगी (6) जो ग़लती हुई थी अल्लाह ने माफ़ कर दी, अब किसी के लिए उनको ताना देना ठीक नहीं (7) यानी तुम भाग कर पहाड़ों पर चढ़ने लगे और अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आवाज़ दे रहे थे मगर हंगामे में सुनाई नहीं पड़ती थी अंततः कअ़ब पुत्र मालिक ने चिल्ला–चिल्ला कर पुकारा तो लोग एकत्र हुए (8) तुमने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दिल दुखाया तो उसके बदले में तुम पर परेशानी आई, आगे याद रखो कि कुछ हाथ से जाये या कोई मुसीबत आए अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अवज्ञा (नाफ़रमानी) मत करना वरना इसी प्रकार की मुसीबत में पड़ोगे।

ثم انزل عليكم من بعد الغم امنة نعاسا يغشى طآئفة
منكم وطآئفة قد اهمتهم انفسهم يظنون بالله غير الحق
ظن الجاهلية يقولون هل لنا من الامر من شيء قل ان
الامر كله لله يخفون في انفسهم ما لا يبدون لك يقولون
لو كان لنا من الامر شيء ما قتلنا ههنا قل لو كنتم في بيوتكم
لبرز الذين كتب عليهم القتل الى مضاجعهم وليبتلي
الله ما في صدوركم وليمحص ما في قلوبكم والله عليم
بذات الصدور ﴿١٥٤﴾ ان الذين تولوا منكم يوم التقى الجمعن
انما استزلهم الشيطن ببعض ما كسبوا ولقد عفا الله
عنهم ان الله غفور حليم ﴿١٥٥﴾ يايها الذين امنوا لا تكونوا
كالذين كفروا وقالوا لاخوانهم اذا ضربوا في الارض
او كانوا غزى لو كانوا عندنا ما ماتوا وما قتلوا ليجعل
الله ذلك حسرة في قلوبهم والله يحي ويميت و
الله بما تعملون بصير ﴿١٥٦﴾ ولئن قتلتم في سبيل الله
او متم لمغفرة من الله ورحمة خير مما يجمعون ﴿١٥٧﴾

منزل ١

फिर उसने ग़म के बाद तुम पर सुकून के लिए ऊँघ (नींद) उतारी वह तुममें से एक गिरोह पर हावी हो रही थी और एक गिरोह को मात्र अपनी जानों की चिन्ता थी वे अल्लाह के साथ जाहिलियत के ग़लत गुमान कर रहे थे, वे कहते थे कि क्या हमारे वश में भी कुछ है, आप कह दीजिए कि सब कुछ इख़्तियार (अधिकार) अल्लाह ही का है, वे अपने मन में वह छिपा रखते हैं जो आपके सामने प्रकट नहीं करते, कहते हैं कि हमारे बस में कुछ भी होता तो हम यहाँ न मारे जाते, आप कह दीजिए कि अगर तुम अपने घरों में भी होते तो मारा जाना जिनके लिए लिखा जा चुका था वे अपनी क़त्लगाहों (वध स्थलों) की ओर निकल ही पड़ते और अल्लाह को तो जो कुछ तुम्हारे मन में है उसकी परीक्षा लेनी थी और तुम्हारे दिलों को निखारना था और अल्लाह दिलों की बात से ख़ूब अवगत है[1] (154) दोनों सेनाओं की मुठभेड़ के दिन तुम में जो लोग पीछे हटे उनको उनके कुछ कामों के कारण शैतान ने फुसलाया और बेशक अल्लाह ने उनको माफ़ कर दिया वह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा सहनशील है[2] (155) ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने कुफ़्र किया और जब उनके भाई धरती में यात्रा के लिए निकले या जिहाद में शामिल हुए तो उन्होंने उनसे कहा कि अगर वे हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते कि अल्लाह उसको उनके दिलों की हसरत (संताप) बना दे जब कि अल्लाह ही जिलाता और मारता है और अल्लाह तुम्हारी करतूतों को ख़ूब देख रहा है[3] (156) और अगर तुम अल्लाह के रास्ते में मारे जाओगे या मर जाओ तो अल्लाह की मग़फ़िरत व रहमत उससे कहीं बेहतर है जिसे यह इकट्ठा कर रहे हैं (157)

---

(1) जंग में जो होना था हुआ फिर जो लोग रह गये थे उन पर अल्लाह की ओर से एक नींद आई उसके बाद भय समाप्त हो गया और सुकून छा गया फिर सब लोग हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आस–पास एकत्र हो गए और लड़ाई शुरु हो गई, मुनाफ़िक़ लोग बोले अब क्या होगा हमारी बात अगर मानी गई होती और यहाँ न आते तो हम मारे ही क्यों जाते, अल्लाह कहता है जिन का मरना तय था वे आकर रहते और इसका फ़ायदा यह हुआ कि मुख़लिस (निष्ठावान) और मुनाफ़िक़ (कपटी) अलग–अलग हो गए दूध का दूध और पानी का पानी हो गया (2) एक ग़लती से दूसरी गलती होती है, पहाड़ी पर ठहर न सके उसका यह नुकसान भुगतना पड़ा (3) काफ़िर और मुनाफ़िक़ मुसलमानों को बहकाते थे कि अगर आराम से बैठे रहते तो क्यों मारे जाते? ताकि उनको पछतावा हो मगर अल्लाह ने इसको उन्हीं के दिलों की हसरत बना दिया कि ईमान वालों का विश्वास अल्लाह पर क़ायम रहा कि वही जिलाता और मारता है, आगे यह भी कहा कि अगर इस रास्ते में मारे भी गए तो अल्लाह की मग़फ़िरत और पुरस्कार उसका बदला है, कहाँ उसकी तुलना दुनिया की यह पूँजी, बस जिन काफ़िरों ने चाहा था कि यह चीज़ ईमान वालों के लिए पछतावे का कारण बने वह ख़ुद इन काफ़िरों के लिए पछतावे का कारण बना दी गई।

وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِالَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ
اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ
حَوْلِكَ ۠ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ
فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿۱۵۹﴾
اِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ
يَنْصُرُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ وَمَا
كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ؕ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ
ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۱﴾ اَفَمَنِ اتَّبَعَ
رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَ
بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۶۲﴾ هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا
يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶۳﴾ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا
مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ
وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۶۴﴾ اَوَلَمَّآ
اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ؕ قُلْ
هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۶۵﴾

النصف

منزل ١

और अगर तुम मर गए या मारे गए तो निश्चित रूप से अल्लाह ही के पास इकट्ठे किये जाओगे (158) बस अल्लाह ही की कृपा थी कि आपने उन के साथ नर्मी की और अगर आप क्रूर स्वभाव (और) कठोर हृदय के होते तो वे आपके पास से कब के बिखर गए होते बस आप उनको माफ़ कीजिए और उनके लिए माफ़ी की प्रार्थना कीजिये और मामलों में उनसे परामर्श लेते रहिए फिर जब आप पक्का इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा कीजिए बेशक अल्लाह भरोसा करने वालों को पसंद करता है[1] (159) अगर अल्लाह ने तुम्हारी मदद की तो कोई तुम पर हावी न होगा और अगर उसने तुम्हें छोड़ दिया तो कौन है जो उसके बाद तुम्हारी मदद करेगा और ईमान वालो को तो केवल अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए (160) और नबी की यह शान नहीं कि वह कुछ छिपा ले और जो भी छिपाएगा वह छिपाई हुई चीज़ लेकर क़यामत के दिन हाज़िर हो जाएगा फिर जिसने जो भी किया है उसका पूरा पूरा बदला उसको दे दिया जाएगा और उन पर कुछ भी अत्याचार न किया जाएगा[2] (161) भला जो अल्लाह की मर्ज़ी पर चला हो क्या वह उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जो अल्लाह का प्रकोप ले कर पलटा हो और उसका ठिकाना दोज़ख़ हो और वह बहुत बुरा ठिकाना है[3] (162) अल्लाह के यहाँ उन लोगों के दर्जे हैं और अल्लाह उनके कामों को खूब देख़ रहा है[4] (163) बेशक अल्लाह ने ईमान वालों पर एहसान किया कि उनके बीच उन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजा जो अल्लाह की आयतें उनको पढ़ कर सुनाता है और उनके जीवन को संवारता है और उनको किताब व हिकमत (तत्वदर्शिता) की शिक्षा देता है जब कि वे इससे पहले निःसंदेह खुली गुमराही में थे[5] (164) और जिस समय तुम्हें तकलीफ़ पहुँची जब कि तुम अपने दुश्मन को दो गुनी तकलीफ़ पहुँचा चुके थे तो क्या तुम यह नहीं कहने लगे कि यह (मुसीबत) कहाँ से आई, आप कह दीजिए यह तो खुद तुम्हारे पास से आई, बेशक अल्लाह तो हर चीज़ पर पूरा सामर्थ्य रखता है[6] (165)

---

(1) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नर्मी का वर्णन है और इसी पर क़ायम रहने के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ताकीद भी की गई है और यह इशारा भी है कि एक सलाह लोगों की ओर से गलत आ गई कि मदीने से निकल कर हमला किया जाए तो हर सलाह ग़लत न होगी, आप मश्वरा करते रहें और जो राय क़ायम हो जाए अल्लाह के भरोसे उस पर अमल करें (2) इसी में ताकीद की जा रही है कि वे पैग़म्बर के विषय में थोड़े भी बुरा विचार न रखें उनकी शान बहुत ऊंची है, माल–ए–ग़नीमत (युद्ध में शत्रु धन) में कोई चादर मिल नहीं रही थी, कुछ लोगों ने सोचा कि शायद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रख ली हो, उस पर यह आयत उतरी (3) पैग़म्बर जो हर हाल में अल्लाह की मर्ज़ी के अनुसार काम करता है और दूसरों को उसकी मर्ज़ी के अधीन बनाता है क्या वह ऐसे काम कर सकता है जो अल्लाह के गुस्से को आमंत्रित करे (4) पैग़म्बर और सारे इंसान बराबर नहीं हो सकते, तुच्छ काम पैग़म्बरों से हो ही नहीं सकते, अल्लाह सब को जानता है और सबके कामों को देखता है (5) पैग़म्बर के आने के उद्देश्य बताए जा रहे हैं (6) बद्र युद्ध में तुमने सत्तर को मारा और सत्तर को क़ैदी बनाया अब अगर तुम्हारे सत्तर मारे गए तो दुखी क्यों होते हो जबकि यह भी तुम्हारी ग़लती से हुआ, पैग़म्बर का आदेश न माना और पहाड़ी से हट आए और बद्र के क़ैदियों को मुक्तिधन (फ़िद्या) ले कर छोड़ दिया जबकि अल्लाह का आदेश यह था कि अगर क़ैदियों को मुक्ति धन ले कर छोड़ा गया तो अगले साल इतने ही तुम में मारे जाएंगे तो यह सब तुमने खुद ही किया।

وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٦٦﴾ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ۭ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّا تَّبَعْنٰكُمْ ۭ
هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَىِٕذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ
مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿١٦٧﴾ اَلَّذِيْنَ قَالُوْا
لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ۭ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ
اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٦٨﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ۭ بَلْ اَحْيَاۗءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿١٦٩﴾
فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىھُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ
يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١٧٠﴾
يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٧١﴾ اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْ بَعْدِ مَآ
اَصَابَھُمُ الْقَرْحُ ۚ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْھُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٢﴾
اَلَّذِيْنَ قَالَ لَھُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْھُمْ
فَزَادَھُمْ اِيْمَانًا ۖ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿١٧٣﴾

منزل ١

और दो सेनाओं की मुठभेड़ के दिन तुम्हें जिस मुसीबत का सामना करना पड़ा वह अल्लाह ही के आदेश से हुआ ताकि वह ईमान वालों को भी परख ले (166) और उनको भी जान ले जिन्होंने निफ़ाक़ (कपटाचार) किया और उनसे कहा गया कि आओ अल्लाह के रास्ते में लड़ो या (दुश्मन को) हटाओ, वे बोले कि लड़ाई हमको मालूम होती तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते[1], उस दिन वे ईमान की तुलना कुफ़्र (इनकार) से अधिक निकट हैं, वे अपनी ज़बानों से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है और जो कुछ भी वे छिपाते हैं अल्लाह उसको खूब जानता है (167) जिन्होंने अपने भाइयों से कहा और ख़ुद बैठ रहे कि अगर वे भी हमारा साथ देते तो मारे न जाते, आप कह दीजिए बस अपने ऊपर से मौत को टाल कर दिखाओ अगर तुम सच्चे हो (168) और जो अल्लाह के रास्ते में मारे गए उनको हरगिज़ मुर्दा मत समझो बल्कि वे अपने पालनहार के पास ज़िन्दा हैं सम्मानित किये जा रहे हैं (169) अल्लाह ने अपनी कृपा से जो कुछ उनको दे रखा है उसमें मज़े कर रहे हैं और ख़ुशख़बरी देना चाहते हैं अपने बाद वालों को जो अभी तक उनसे नहीं मिले कि उन पर न कुछ भय होगा और न वे दुखी होंगे (170) वे अल्लाह की नेमत और उसकी मेहरबानी से बहुत खुश हो रहे हैं और अल्लाह ईमान वालों के बदले को बेकार नहीं करता[2] (171) वे लोग जिन्होंने चोट खाने के बाद भी अल्लाह और पैग़म्बर की बात मानी ऐसे बेहतर काम करने वालों और परहेज़गारों के लिए बड़ा बदला है[3] (172) वे लोग कि जिनसे कहने वालों ने कहा कि (मक्का के) लोगों ने तुम्हारे खिलाफ़ बड़ा जत्था इकट्ठा कर रखा है तो उनसे डरो तो इस चीज़ ने उनके ईमान में और बढ़ोत्तरी कर दी और वे बोले हमारे लिए तो अल्लाह काफ़ी है वह बहुत अच्छा काम बनाने वाला है[4] (173)

---

(1) यह मुनाफ़िक़ों (कपटियों) की बात है, इसका मतलब तो यह मालूम नहीं होता कि हम जंग के तरीक़ों से अवगत होते तो हम शरीक होते, वे जंग के तरीक़ों को खूब जानते थे, बल्कि इसका मतलब यह मालूम होता है कि अगर जंग हमारे बताए हुए नियमों और मुनासिब स्थान और उचित अवसर पर होती तो हम ज़रूर चलते, अतः हीले–बहाने करके चले गए और दिल में यह था कि मुसलमान पराजित हों तो वे खुश हों (2) शहीदों को मरने के बाद एक ख़ास जीवन प्राप्त होता है जो अन्य मुर्दों को नहीं होता, वे खाने–पीने और हर्ष व उल्लास में रहते हैं, अल्लाह के पुरस्कार पर खुशियां मनाते हैं और उन लोगों पर भी खुश होते हैं जिनको वे दुनिया में अपने पीछे जिहाद में और अन्य भले कार्यों में छोड़ कर आए हैं (3) उहद युद्ध से वापस हुए काफ़िरों के सेनाध्यक्ष अबू सुफ़ियान को ख़्याल आया कि दोबारा हमला करके मुसलमानों को समाप्त कर देना चाहिए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पता चला तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि जो लोग लड़ाई में मौजूद थे वे दुश्मनों का पीछा करने के लिए तैयार हो जाएं, सख़्त थकान और चोटों से चूर होने के बावजूद मुसलमानों ने "हमराउल असद" स्थान तक पीछा किया, उसकी ऐसी धाक बैठी कि दुश्मन हमले का इरादा छोड़ कर मक्के की ओर भागे (4) मक्का पहुंच कर अबू सुफ़ियान ने फ़िर खबर उड़ाई की हम लोग मदीने पर एक बड़ी सेना के साथ हमले की तैयारी कर रहे हैं मुसलमानों को ख़बर मिली तो उनके ईमान में और वृद्धि हुई और उन्होंने कहा "हसबुनल्लाहि व नेअ्मल वकील"।

فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ وَّاتَّبَعُوْا
رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۷۴﴾ اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ
يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۪ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷۵﴾
وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ
يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۶﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَلَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۷﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ خَيْرٌ
لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۱۷۸﴾
مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ
الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَ
لٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ
وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۹﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ
الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا
لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَ
لِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۸۰﴾

ع

منزل۱

तो वे अल्लाह की कृपा और इनआम के साथ वापस हुए उनका बाल भी बांका नहीं हुआ और वे अल्लाह की मर्ज़ी पर चले और अल्लाह बड़ा करम वाला है[1] (174) यह तो शैतान है जो तुम को अपने भाई–बंधुओं से डराता है तो तुम उनसे डरो मत और मुझ ही से डरो अगर तुम ईमान रखते हो[2] (175) और आप उन लोगों के ग़म में न पड़ें जो कुफ़्र में तेज़ी से बढ़ते जाते हैं वे अल्लाह को हरगिज़ कुछ भी नुक़सान नहीं पहुंचा सकते, अल्लाह की चाहत यही है कि उनके लिए आख़िरत में कुछ भी हिस्सा बाक़ी न रखे और उनके लिए बड़ा अज़ाब है[3] (176) बेशक जिन्होंने ईमान के बदले कुफ़्र का सौदा किया वे हरगिज़ अल्लाह को ज़रा भी नुक़सान नहीं पहुंचा सकते और उनके लिए दुखद अज़ाब है (177) और जिन्होंने कुफ़्र किया वे हरगिज़ यह न सोचें कि हम उनको जो मुहलत दे रहे हैं वह उनके लिए बेहतर है हम तो उनको ढील इसलिए दे रहे हैं ताकि वे गुनाह (पाप) में बढ़ते चले जाएं और उनके लिए अपमानजनक अज़ाब है (178) तुम जिस हाल में हो अल्लाह तआला उस हाल में ईमान वालों को उस समय तक छोड़ने वाला नहीं है जब तक पवित्र को अपवित्र से अलग न कर दे और अल्लाह तआला तुम्हें ग़ैब से अवगत भी नहीं कराएगा हाँ वह अपने पैग़म्बरों में जिस को चाहता है चुन लेता है तो तुम अल्लाह और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और अगर तुम ईमान लाते हो और परहेज़गारी अपनाते हो तो तुम्हारे लिए बड़ा बदला है[4] (179) और वे लोग जो उस माल में कंजूसी करते हैं जो अल्लाह ने उनको अपनी कृपा से प्रदान किया है वे उसको अपने लिए ज़्यादा अच्छा न समझें बल्कि यह तो उनके लिए सरा सर बुरा है जिस चीज़ में भी उन्होंने कंजूसी से काम लिया क़यामत के दिन उसका पट्टा उनको पहनाया जाएगा और आसमानों और ज़मीन का वारिस अल्लाह ही है और अल्लाह (तआला) तुम्हारे कामों की पूरी ख़बर रखने वाला है[5] (180)

---

(1) 'हमराउल असद' में मुसलमानों ने व्यापारिक लाभ भी हासिल किया और बिना लड़ाई के वापस हुए, उसकी ओर भी इशारा है और उहद ही में अबू सुफ़ियान ने अगले साल बद्र नामक स्थान पर लड़ाई का ऐलान किया था, मुसलमान समय पर सेना ले कर वहाँ पहुँचे लेकिन दुश्मन पर धाक जम गयी और वे वहाँ नहीं आए, मुसलमानों ने वहाँ भी व्यापार इत्यादि किया और लाभ कमाया और सकुशल वापस आए उसकी ओर भी इशारा है (2) जो शैतान के कहने पर चले वह खुद शैतान हैं (3) मुनाफ़िक़ों (कपटियों) का काम था कि मुसलमानों को कुछ तकलीफ़ें पहुंचती तो फ़ौरन कुफ़्र की बातें करने लगते (4) अल्लाह इसी तरह मोमिनों और मुनाफ़िक़ों (कपटियों) को अलग अलग कर देता है, वह ग़ैब की बातें नहीं बताता, हाँ जितनी बातें चाहता है अपने पैग़म्बर को बताता है। (5) जो कोई ज़कात न देगा उसका माल कोबरा साँप बन कर उसके गले में पड़ जाएगा और उसके कल्ले चीरेगा और वारिस तो अल्लाह ही है, आख़िर तुम मर जाओगे और माल उसी का होकर रहेगा, बस अपने हाथ से दो तो सवाब पाओगे।

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ
اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ
وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿١٨١﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ
اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٨٢﴾ اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا
اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا
بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ۭ قُلْ قَدْ جَاۗءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ
وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْھُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٨٣﴾
فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَاۗءُوْ
بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿١٨٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَاۗىِٕقَةُ
الْمَوْتِ ۭ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ فَمَنْ
زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۭ وَمَا
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿١٨٥﴾ لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ
اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۣ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ۭ
وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٨٦﴾

منزل ١

अल्लाह ने उन लोगों की बात सुन रखी है जिन्होंने कहा कि अल्लाह फ़क़ीर है और हम धनी हैं और उन्होंने जो भी कहा और पैग़म्बरों के जो अनुचित हत्याएं की हम सब लिख रहे हैं और हम कहेंगे कि आग के अज़ाब का मज़ा चखो[1] (181) यह सब तुम्हारी करतूतों की सज़ा है और अल्लाह बन्दों के लिए ज़रा भी अन्याय करने वाला नहीं है (182) जिन्होंने कहा कि अल्लाह ने हम को ताकीद कर रखी है कि हम किसी पैग़म्बर को उस समय तक न मानें जब तक वह हमारे सामने ऐसी क़ुर्बानी न पेश कर दे जिसको आग खा ले, आप कह दीजिए कि मुझ से पहले कितने ही पैग़म्बर खुली निशानियाँ और उस चीज़ को लेकर आ चुके हैं जो तुम कह रहे हो तो अगर तुम अपनी बात में सच्चे हो तो तुमने उनको क्यों क़त्ल किया[2] (183) फिर अगर उन्होंने आपको झुठलाया तो आपसे पहले भी पैग़म्बर झुठलाए जा चुके हैं जो खुली निशानियाँ और सहीफ़े और रौशन किताब लेकर आए[3] (184) हर जान को मौत का मज़ा चख़ना है और क़यामत के दिन तुम्हें पूरे के पूरे बदले दे दिए जाएंगे तो जो भी दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में पहुंचा दिया गया तो उसका तो काम बन गया और दुनिया की ज़िन्दगी तो धोखा के सामान के सिवा कुछ भी नहीं (185) तुम्हें अपने मालों और जानों में ज़रूर आज़माया जाएगा और तुम उन लोगों से जिन को तुम से पहले किताब मिली और मुश्रिकों से बहुत कुछ दुखदायी बातें सुनोगे फिर अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी के साथ रहो तो बेशक यह बड़ी हिम्मत के काम हैं[4] (186)

(1) जब आदेश आया कि अल्लाह को अच्छा कर्ज़ दो उस पर उन यहूदियों ने मज़ाक उड़ाया कि अल्लाह फ़क़ीर है हम धनी हैं इसलिए हमसे क़र्ज़ मांगा जा रहा है और इससे पहले कितने पैग़म्बरों का वे क़त्ल कर चुके थे, आसमानी किताबों के संदर्भ से इसका कुछ विवरण इसी सूरह की आयत 112 में गुज़र चुका है (2) पहली उम्मतों में माले ग़नीमत (युद्ध में शत्रुधन) को आग खा जाती थी और यही उसके कबूल होने की पहचान थी, इसी प्रकार वह जो अल्लाह के लिए क़ुर्बानी पेश करता उसके भी क़ुबूल होने की पहचान यही होती थी, यहूदियों ने इसको बहाना बनाया और आ कर कहा कि जब तक आप यह चीज़ नहीं दिखाएंगे हम नहीं मानेंगे, उनसे कहा गया कि जिन पैग़म्बरों ने ये चतम्कार दिखाए उनको फिर तुमने क्यों क़त्ल किया (3) यह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी जा रही है कि उनके झुठलाने पर आप दुखी न हों हर पैग़म्बर के साथ यह हुआ है (4) यह सब मुसलमानों से कहा जा रहा है, बुख़ारी शरीफ़ की एक हदीस से मालूम होता है कि यह आयत बद्र युद्ध से पहले उतरी थी और आगे जो परेशानियाँ व कठिनाइयाँ सामने आने वाली थीं उनकी ओर इसमें इशारा है, उनका इलाज सब्र व तकवा से बताया गया है और यह क़यामत तक मुसलमानों के लिए सबसे अच्छा नुस्ख़ा है।

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿١٨٧﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٨٨﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٨٩﴾ اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿١٩٠﴾ الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩١﴾ رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿١٩٢﴾ رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾

منزل ۱

और जब अल्लाह ने उन लोगों से जिनको किताब दी गई यह वचन लिया था कि तुम उसको ज़रूर लोगों के सामने खोल–खोल कर बयान कर दोगे और उसको छिपाओगे नहीं तो उन्होंने उसको पीठ पीछे डाल दिया और उसके बदले थोड़े दाम ले लिए तो कैसा बुरा सौदा वे कर रहे हैं (187) आप हरगिज़ न सोचें जो लोग अपने किए पर ख़ुश होते हैं और बिना किए प्रशंसा चाहते हैं आप उनके बारे में बिल्कुल यह न समझें कि वे अज़ाब से बच जाएंगे और उनके लिए तो खुद अज़ाब है[1] (188) आसमानों और ज़मीन पर बादशाही तो अल्लाह ही की है और अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य (कुदरत) प्राप्त है (189) बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात व दिन की चक्र में बुद्धि वालों के लिए (बड़ी) निशनियाँ हैं[2] (190) जो खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर (लेटे) अल्लाह को याद करते रहते हैं और आसमानों और ज़मीन की पैदाईश के बारे में विचार विमर्श करते हैं कि ऐ हमारे पालनहार! तूने इनको यूँ हीं नहीं पैदा किया, तू पवित्र है[3] बस तू हमें दोज़ख़ की आग से बचा ले (191) ऐ हमारे पालनहार! तूने जिसको भी दोज़ख़ में दाख़िल कर दिया बस तूने उसको अपमानित ही कर दिया और अत्याचारियों का कोई मददगार नहीं (192) ऐ हमारे पालनहार! बेशक हमने एक पुकारने वाले को ईमान की आवाज़ लगाते सुना कि अपने पालनहार पर ईमान ले आओ तो हम ईमान ले आए, ऐ हमारे पालनहार! बस तू हमारे पापों को माफ़ कर दे और हमारी बुराईयों को धो दे और नेकियों के साथ हमें मौत दे (193)

(1) वही यहूदी गलत मसले बताते, रिश्वतें खाते और अंतिम पैग़म्बर के गुणों का जो उल्लेख था वह छिपाते फिर खुश होते कि हमें कोई पकड़ नहीं सकता और अपनी प्रशंसा के इच्छुक रहते (2) चमत्कार की मांग क्या ज़रूरी है, पैग़म्बर जिसकी ओर बुलाता है यानी तौहीद की, उस की निशानियाँ सारे संसार में फैली हुई हैं (3) आयत से मालूम हुआ कि अल्लाह की सृष्टियों मे विचार विमर्श करना वही प्रशंसनीय है जिसका परिणाम अल्लाह की पहचान और आख़िरत की चिन्ता हो, बाकी जो भौतिकवादी इन सृष्टियों के तारों में उलझ जाएं और स्रष्टा तक न पहुँचें वे चाहे कैसे ही शोधकर्ता और वैज्ञानिक कहलाएं वे कुरआन की भाषा में "उलुल अल्बात" (बुद्धि वाले) नहीं हो सकते।

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ
اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۱۹۴﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ لَاۤ اُضِيْعُ
عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ
فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ
وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَ
اللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿۱۹۵﴾ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ ﴿۱۹۶﴾ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۫ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَ
بِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۹۷﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَمَا
عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿۱۹۸﴾ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ
يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ
لِلّٰهِ ۙ لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۹۹﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۟ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۲۰۰﴾

منزل ۱

ऐ हमारे पालनहार! तूने अपने पैग़म्बरों के माध्यम से हम से जो भी वादा किया वह हमें प्रदान कर दे और क़यामत के दिन हमें अपमानित न कर, बेशक तू वादे के खिलाफ़ नहीं करता (194) बस उनके पालनहार ने उनकी दुआ सुन ली कि मैं तुममें से किसी कर्म करने वाले के कर्म को हरगिज़ बर्बाद न करूँगा वह मर्द हो या औरत तुम आपस में एक[1] ही तो हो बस जिन लोगों ने हिजरत की और अपने घरों से निकाले गए और मेरे रास्ते में सताए गए, लड़े और मारे गए उनसे मैं ज़रूर उनके गुनाहों को धो दूँगा और ऐसी जन्नतों में प्रवेश कराके रहूँगा जिन के नीचे से नहरें जारी होंगी, बदले के तौर पर अल्लाह ही के पास से है और अल्लाह के पास तो बहुत अच्छा बदला है[2] (195) जिन्होंने कुफ़्र किया मुल्कों में उनका चलत–फिरत हरगिज़ आपको धोखे में न डाल दे[3] (196) यह थोड़ा सा मज़ा है फिर उनका ठिकाना दोज़ख़ है और वह बहुत बुरी रहने की जगह है (197) हाँ जिन्होंने अपने पालनहार का तक़वा अपनाया उनके लिए ऐसी जन्नतें हैं जिनके नीचे से नहरें जारी हैं वे हमेशा उसमें रहेंगे, यह मेहमानी है अल्लाह के पास से और जो कुछ अल्लाह के पास है वह नेक लोगों के लिए सबसे अच्छा है (198) और बेशक किताब वालों में से ऐसे लोग भी हैं जो अल्लाह पर और जो तुम्हारी ओर उतरा और जो उनकी ओर उतरा उस पर ईमान रखते हैं, अल्लाह के लिए उनको दिल कांपते रहते हैं, वे मामूली दाम में अल्लाह की आयतों का सौदा नहीं करते, यह वे लोग हैं कि उनका बदला उनके पालनहार के पास (सुरक्षित) है, बेशक अल्लाह बहुत जल्द हिसाब चुकाने वाला है (199) ऐ ईमान वालो! धैर्य रखो और मुकाबले में मज़बूती रखो और मोर्चों पर जमे रहो और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम कामयाब हो जाओ[4] (200)

---

(1) मर्द हो या औरत किसी की मेहनत बर्बाद नहीं होती, जो काम करेगा उसका फल पाएगा, अच्छा कर्म करके औरत भी आख़िरत के वह दर्जे प्राप्त कर सकती है जो मर्द हासिल कर सकते हैं, मर्द और औरत एक ही मानव जाति के सदस्य हैं, एक इस्लाम की बंधन में बंधे हुए हैं, सामूहिक सामाजिक व्यवस्था में सम्मिलित हैं तो कर्म और उनके फल में भी उनको एक ही समझा जाए (2) यह तो बहुत ही श्रेष्ठ कार्य है जिनके कारण अल्लाह पापों को धो देता है (3) दुनिया में काफिरों और मुश्रिकों की शक्ति, उनके प्रदर्शन, उनकी सरकारें और सारे संसार में उनको चलते फिरते तुम्हें धोखे में न डाल दे, यह उनके लिए मात्र दुनिया में है फिर आख़िरत का अज़ाब बहुत सख़्त है (4) सूरह के आख़िर में एक व्यापक नसीहत की गई है कि अगर दुनिया व आख़िरत में सफल होना चाहते हो तो कठिनाईयाँ उठा कर भी इबादत में लगे रहो, पापों से बचते रहो और इस्लाम की सीमाओं की रक्षा करते रहो और हर समय हर काम में अल्लाह से डरते रहो तो समझ लो कि तुम कामयाब हो गए।

सूरह निसा

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालू है।

ऐ लोगो! अपने रब से डरो जिसने तुम को एक अकेली जान से पैदा किया और उससे उसका जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें (दुनिया में) फैला दिए[1], और उस अल्लाह का लिहाज़ करते रहो जिसके वास्ते से तुम एक दूसरे से मांगते हो, और रिश्ते–नातों का (ख़्याल रखो) बेशक अल्लाह तुम्हारी निगरानी करने वाला है (1) और अनाथों का माल उनके माल हवाले कर दो और बुरे (माल) को अच्छे माल से बदल मत लो और उनके माल को अपने माल में मिला कर मत खाओ निश्चित ही यह बड़ा पाप है[2] (2) और अगर तुम्हें अनाथ लड़कियों के बारे में अन्याय का डर हो तो जो औरतें तुम्हें पसंद आएं[3] उनमें दो और तीन और चार तक से निकाह कर सकते हो[4] और अगर तुम्हें डर हो कि तुम बराबरी न कर सकोगे तो एक ही पर या (लौंडियों) पर (संतोष करो) जो तुम्हारी मिल्कियत में हों, इसमें लगता है कि तुम अन्याय से बच जाओगे (3) और औरतों को खुशी खुशी उनका महेर दे दिया करो और अगर वे तुम्हारे लिए खुशी से कुछ छोड़ दें तो उसे अच्छा समझ कर शौक से खाओ[5] (4) और ना समझों को अपना वह माल हवाले मत कर दो जिनको अल्लाह ने तुम्हारे लिए जिन्दगी की पूंजी बनाया है और उनको उसमें से खिलाते और पहनाते रहो और उनसे भलाई की बात कहते रहो[6] (5)

سُوْرَةُ النِّسَاءِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّسِتٌّ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعٌ وَّعِشْرُوْنَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ
وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا
وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ۝١ وَاٰتُوا الْيَتٰمٰۤى اَمْوَالَهُمْ
وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَهُمْ
اِلٰۤى اَمْوَالِكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ۝٢ وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا
تُقْسِطُوْا فِي الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ
النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا
فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَلَّا تَعُوْلُوْا ۝٣
وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ
عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓــًٔا مَّرِيْٓــًٔا ۝٤ وَلَا تُؤْتُوا
السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِيْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ
فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝٥

منزل ۱

सूरह निसाः इस सूरह में पारिवारिक नियमों और सामाज सुधार का उल्लेख है और महिलाओं के विषय में कुछ विस्तृत आदेश दिए गए हैं, इसलिए इसका नाम सूरह निसा (महिला) है। (1) आदम को पैदा किया फिर उनकी पस्ली से हव्वा को बनाया फिर उन दोनों के मिलने से दुनिया को महिला–पुरुष से आबाद कर दिया तो जो अल्लाह सारे इंसानों का स्रष्टा है उसका लिहाज़ रखो जिसके नाम पर तुम लेन–देन करते हो, बातचीत पक्की करने के लिए क़समें खाते हो और रिश्तेदारों का भी ख़याल रखो कि सब ही आदम की संतान हैं (2) अनाथ के माल में साझीदारी तो जाएज़ (वैध) है मगर सावधानी के साथ अगर असावधानी हुई तो हराम माल शामिल हो गया, नापाक–पाक से मिल गया (3) अनाथ लड़कियाँ किफ़ालत (भरण पोषण) में हों तो उनकी सुन्दरता या धन दौलत के कारण उनको मामूली महेर दे कर यह सोच कर कि और कौन पूछने वाला है, निक़ाह (विवाह) कर लेना अत्याचार है (4) जाहिलियत के ज़माने में पत्नियों की कोई संख्या निर्धारित नही थी एक व्यक्ति दस–दस, बीस–बीस पत्नियाँ रखता था, इस आयत में इसकी सीमा निर्धारित कर दी गई और वह भी इस शर्त के साथ कि इंसान सबके साथ बराबरी का बर्ताव करे और ऐसा न कर सकता हो तो एक शादी से ज़्यादा की अनुमति नहीं (5) औरतों के महेर हड़प कर जाने का रिवाज जाहिलियत के ज़माने में भी था और आज भी है इससे सख़्ती के साथ रोका जा रहा है (6) यानी अनाथ लड़का कम अक़्ल है तो उसका माल उसके हवाले न करो उसका ख़र्च उसमें से चलाओ जब समझदार बालिग़ हो जाए तो माल उसके हवाले करो लेकिन हमेशा भली बात कहते रहो यानी यह माल तुम्हारा ही है हम तुम्हारी भलाई पर ख़र्च करते हैं।

وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ
مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَآ
اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ۭ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا
فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ
فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ۭ
وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝٦ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ
الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۠ وَلِلنِّسَاۗءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا
تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ۭ
نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝٧ وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُوا
الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْھُمْ مِّنْهُ
وَقُوْلُوْا لَھُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝٨ وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ
لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا
عَلَيْهِمْ ۠ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝٩
اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا
يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ۭ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ۝١٠

ع

منزل ١

और अनाथों की देख भाल करो यहाँ तक कि वे निकाह (विवाह) की आयु को पहुँच जाएं फिर अगर तुम उनमें बुद्धि की परिपक्वता महसूस कर लो तो उनका माल उनके हवाले कर दो और इस डर से कि वे बड़े न हो जाएं तुम उस को फ़िज़ूल ख़र्ची के साथ जल्दी–जल्दी उड़ा मत डालो और जो धनी हों तो उसको पूरी तरह बचना चाहिए और जो निर्धन हों तो वह नियमानुसार खा सकता है[1] फिर जब तुम उनके माल को उनके हवाले करो तो उन पर गवाह बना लो और अल्लाह हिसाब लेने वाला काफ़ी है[2] (6) माँ–बाप और निकट संबंधी जो कुछ भी छोड़ जाएं उसमें मर्दों के लिए भी हिस्सा है और माँ–बाप और निकट संबंधी जो छोड़ जाएं उसमें औरतों के लिए भी हिस्सा है चाहे वह कम हो या अधिक, हिस्सा निर्धारित है[3] (7) और जब बँटवारे के समय संबंधी, अनाथ और निर्धन आ जाएं तो उनको भी उसमें से कुछ दे दो और उनसे अच्छी बात कहो[4] (8) और ऐसे लोगों को डरना चाहिए कि अगर वे खुद अपने पीछे कमज़ोर संतान छोड़ कर जाएं तो उन्हें उनकी (कैसी) चिंता रहे तो उन्हें चाहिए कि वे अल्लाह से डरें और ठीक–ठीक बात कहें (9) बेशक जो लोग अनाथों का माल ना हक़ खाते हैं वे दोज़ख से अपना पेट भरते हैं और वे जल्द ही भड़कती हुई आग में जा पड़ेंगे[5] (10)

(1) अनाथों के अभिभावक को क्योंकि बड़ी ज़िम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं इसलिए अगर वह निर्धन हो तो ज़रूरत भर उसमें से खुद भी इस्तेमाल कर सकता है लेकिन अगर धनी हो तो उसके लिए उसमें से खर्च कर लेना ठीक नहीं है (2) यानी आज़मा कर देख लो कि वे मामलात में परिपक्व हो गए हैं तो माल हवाले कर दो, और उससे पहले इस डर से कि अब माल हवाले करने का समय आ गया है उसको जल्दी जल्दी ख़र्च मत कर डालो (3) जाहिली युग में रिवाज था कि मृतक संपत्ति (मीरास) केवल व्यस्क पुरुषों को मिलती थी महिलाएं और बच्चे वंचित रहते थे, इसको ग़लत बताया जा रहा है आगे हिस्सों का विवरण भी दिया जायेगा (4) यह काम मुस्तहब है कि जो लोग आ गए हों थोड़ा बहुत उनको खिला पिला दिया जाए और वे वंचित न रहें चाहे मीरास (पैतृक संपत्ति) में उनका हिस्सा न हो और अगर वह माल अनाथों का है तो उन लोगों को समझा बुझा कर विदा कर दिया जाए (5) अपनी संतान की कैसी चिंता रहती है इसी तरह अनाथों की चिंता की जाए और अनाथों का माल नाहक खाते हैं वे आग से अपना पेट भरते हैं।

يُوصِيكُمُ اللّٰهُ فِيٓ اَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ فَاِنْ كُنَّ
نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ وَاِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا
النِّصْفُ وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ اِنْ
كَانَ لَهٗ وَلَدٌ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗٓ اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ
فَاِنْ كَانَ لَهٗٓ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْ
بِهَآ اَوْ دَيْنٍ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ
نَفْعًا فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا (11) وَلَكُمْ
نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ فَاِنْ كَانَ
لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ
اَوْ دَيْنٍ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ فَاِنْ
كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ
تُوْصُوْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ
وَّلَهٗٓ اَخٌ اَوْ اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ فَاِنْ كَانُوْٓا اَكْثَرَ
مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ
اَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَآرٍّ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ (12)

منزل ۱

अल्लाह तुम्हें तुम्हारी संतान (की वरासत[1]) के बारे में यह आदेश देता है कि पुरूष के लिए दो महिलाओं के हिस्से के बराबर है और अगर दो से ऊपर केवल महिलाएं हैं तो (मृतक) जो छोड़ जाए उसका दो तिहाई उनका है और अगर केवल एक ही महिला हो तो उसके लिए आधा (हिस्सा) है और माँ–बाप में से दोनों के लिए अगर (मृतक की) संतान है तो छठा हिस्सा है और अगर संतान नहीं है और केवल माँ–बाप ही वारिस हैं तो माँ का तिहाई हिस्सा है[2] और अगर उसके कई भाई हों तो उसकी माँ के लिए छठा हिस्सा है यह (सारा विभाजन) उस वसीयत के लागू करने के बाद होगा जो वह कर गया है और क़र्ज़ को अदा करने के बाद, तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटों में तुम नहीं जानते कि तुम्हारे लिए लाभ दायक कौन अधिक है, यह अल्लाह की ओर से ज़रूरी किया हुआ है बेशक अल्लाह ख़ूब जानता बड़ी हिकमत वाला है[3] (11) और जो कुछ तुम्हारी पत्नियाँ छोड़ जाएं अगर उनकी संतान न हो तो तुम्हारा आधा है और अगर उनके संतान हों तो वे जो भी छोड़ जाएं उसका चौथाई तुम्हारा है उस वसीयत के निकालने के बाद जो वसीयत वे कर जाएं या क़र्ज़ (को अदा करने) के बाद और तुम जो छोड़ जाओ उसमें उनके लिए चौथाई है अगर तुम्हारी संतान न हों, और अगर तुम्हारी संतान हो तो तुम जो भी छोड़ जाओ उसका आठवाँ हिस्सा उनका है, इस वसीयत (को निकालने) के बाद जो वसीयत तुम कर जाओ या क़र्ज़ को अदा करने के बाद और अगर कोई मृतक पुरूष या महिला, ऐसा हो कि उसके बाप बेटा न हो और उसका एक भाई या एक बहन हो तो दोनों में हर एक के लिए छठा हिस्सा है और अगर वे उससे अधिक हों तो वे सब एक तिहाई में साझीदार होंगे उस वसीयत को लागू करने के बाद जो की जा चुकी है या क़र्ज़ (को अदा करने) के बाद किसी को नुक़सान पहुँचाए बिना, यह अल्लाह की ओर से एक आदेश है और अल्लाह ख़ूब जानता है और बहुत सहनशील है[4] (12)

(1) यह दोनों विरासत की आयतें कहलाती हैं इनमें विरासत के अधिकारों को विस्तार से बयान किया गया है (2) बाक़ी दो तिहाई बाप का होगा, यह उसी दशा में है जब संतान न हो (3) इसलिए तुम इसमें दख़ल मत दो जो जिस का हिस्सा निर्धारित किया गया है अदा कर दो (4) यह पाँच मीरासें बयान की गई हैं यह सब "ज़विल फुरुज़" यानी निर्धारित हिस्से वाले कहलाते हैं फिर अगर कुछ बचता है तो वह असबा का होगा और असबा मृतक के निकट पुरुषों को कहते हैं जिनके हिस्से आयतों में निर्धारित नहीं किये गये, जैसे बेटे बेटियाँ यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से असबात में शामिल नहीं है, लेकिन बेटों के साथ मिलकर वे असबात में शामिल हो जाती हैं, इस दशा में शुरु आयत ही में यह नियम बता दिया गया है कि मर्द को औरत का दो गुना मिलेगा, इसी तरह संतान न हो और भाई बहन हों तो भी उसी प्रकार विभाजन होगा जिस प्रकार संतान में होता है विभाजन इन्साफ़ के साथ किया जाए किसी को नुक़सान न पहुंचाया जाए, इसी प्रकार मृतक को भी चाहिए कि वह मरने से पहले कोई ऐसी वसीयत न कर जाए जिससे किसी को नुक़सान पहुँचता हो लिहाज़ा वारिसों में किसी के लिए वसीयत करना जायज़ नहीं है, शरीयत ने जो जिसका अधिकार रखा है वह उसको मिलेगा इसी प्रकार किसी दूसरे के लिए भी तिहाई माल से ज़्यादा में वसीयत करना मुनासिब नहीं है, "कलालह' उसे कहते हैं जिसके न ऊपर कोई हो न नीचे।

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ﴿۱۳﴾ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ
يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۠ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۱۴﴾ وَالّٰتِيْ
يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَاۗىِٕكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا
عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِي
الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰىهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ
سَبِيْلًا ﴿۱۵﴾ وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْھُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا
وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۱۶﴾
اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَي اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْۗءَ بِجَهَالَةٍ
ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰۗىِٕكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ
عَلَيْهِمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۷﴾ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ
لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰى اِذَا حَضَرَ اَحَدَھُمُ
الْمَوْتُ قَالَ اِنِّىْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ
وَھُمْ كُفَّارٌ ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَعْتَدْنَا لَھُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۸﴾

منزل ۱

यह अल्लाह की (निर्धारित) सीमाएं हैं और जो भी अल्लाह और उसके पैग़म्बर की बात मानेगा अल्लाह उसको ऐसी जन्नतों में प्रवेश कराएगा जिसके नीचे नहरें जारी होंगी उनमें वे सदा रहेंगे यही ज़बरदस्त सफलता है (13) और जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर की नाफ़रमानी करेगा और उसकी निर्धारित सीमाओं से आगे बढ़ेगा अल्लाह उसको (दोज़ख़ की) आग में प्रवेश करा देगा उसी में वह सदैव पड़ा रहेगा और उसके लिए बड़ा अपमान जनक अज़ाब है (14) और तुम्हारी महिलाओं में जो बदकारी (व्यभिचार) करें तो उन पर अपने लोगों में से चार गवाह कर लो, फिर अगर वे गवाही दे दें तो उन (महिलाओं) को घरों में रोक रखो यहाँ तक कि उनको मौत आ जाए या अल्लाह उनके लिए कोई रास्ता निकाल दे[1] (15) और तुममें से दो अगर यह काम कर जाते हों तो तुम उनको यातना दो फिर अगर तौबा कर लें और अपने को सुधार लें तो उनकी उपेक्षा करो बेशक अल्लाह बहुत तौबा स्वीकार करने वाला बहुत ही कृपालु है[2] (16) तौबा तो अल्लाह तआला उन लोगों की स्वीकार करता है जो नादानी में बुरा काम कर जाते हैं फिर जल्द ही तौबा कर लेते हैं तो ऐसों की अल्लाह तौबा स्वीकार करता है और अल्लाह ख़ूब जानने वाला है बड़ी हिकमत वाला है (17) तौबा उनके लिए नहीं है जो बुराईयाँ किये जाते हैं यहाँ तक कि जब उनमें से किसी के पास मौत आ पहुँचती है तो वह कहता है अब मैं तौबा करता हूँ और न उन लोगों की तौबा स्वीकार होती है, जो कुफ़्र की हालत में मरते हैं ऐसों के लिए हमने दुखद अज़ाब तैयार कर रखा है[3] (18)

(1) बलात्कार की सज़ा उतरने से पहले का यह आदेश था, फिर अल्लाह ने रास्ता यह बता दिया कि विवाहित को पथराव करके मार डाला जाय और अविवाहित को सौ कोड़े लगाये जाएं (2) पुरुष बलात्कार करे या समलैंगिकता करे इसकी सज़ा पहले यही थी कि उसको कठोर यातना दी जाएं बाद में बलात्कार की सज़ा बयान कर दी गई (3) जब मौत पक्की हो जाए और आख़िरत दिखाई देने लगे तो तौबा स्वीकार नहीं होती, मौत की तकलीफ़ें जब ज़ाहिर हो जाएं या क़यामत की खुली निशानियाँ ज़ाहिर हो जाएं यानी सूरज पश्चिम से निकल आए।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَن تَرِثُوا۟ ٱلنِّسَآءَ كَرْهًا ۖ وَلَا
تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا۟ بِبَعْضِ مَآ ءَاتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّآ أَن يَأْتِينَ
بِفَٰحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوهُنَّ بِٱلْمَعْرُوفِ ۚ فَإِن كَرِهْتُمُوهُنَّ
فَعَسَىٰٓ أَن تَكْرَهُوا۟ شَيْـًٔا وَيَجْعَلَ ٱللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ﴿١٩﴾ وَإِنْ
أَرَدتُّمُ ٱسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ وَءَاتَيْتُمْ إِحْدَىٰهُنَّ قِنطَارًا
فَلَا تَأْخُذُوا۟ مِنْهُ شَيْـًٔا ۚ أَتَأْخُذُونَهُۥ بُهْتَٰنًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿٢٠﴾ وَ
كَيْفَ تَأْخُذُونَهُۥ وَقَدْ أَفْضَىٰ بَعْضُكُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ وَأَخَذْنَ مِنكُم
مِّيثَٰقًا غَلِيظًا ﴿٢١﴾ وَلَا تَنكِحُوا۟ مَا نَكَحَ ءَابَآؤُكُم مِّنَ ٱلنِّسَآءِ إِلَّا مَا قَدْ
سَلَفَ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ فَٰحِشَةً وَمَقْتًا وَسَآءَ سَبِيلًا ﴿٢٢﴾ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ
أُمَّهَٰتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَٰتُكُمْ وَعَمَّٰتُكُمْ وَخَٰلَٰتُكُمْ وَبَنَاتُ ٱلْأَخِ وَبَنَاتُ
ٱلْأُخْتِ وَأُمَّهَٰتُكُمُ ٱلَّٰتِىٓ أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَٰتُكُم مِّنَ ٱلرَّضَٰعَةِ وَ
أُمَّهَٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَٰٓئِبُكُمُ ٱلَّٰتِى فِى حُجُورِكُم مِّن نِّسَآئِكُمُ ٱلَّٰتِى
دَخَلْتُم بِهِنَّ فَإِن لَّمْ تَكُونُوا۟ دَخَلْتُم بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ
وَحَلَٰٓئِلُ أَبْنَآئِكُمُ ٱلَّذِينَ مِنْ أَصْلَٰبِكُمْ وَأَن تَجْمَعُوا۟ بَيْنَ
ٱلْأُخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٢٣﴾

منزل ١

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे लिए वैध (जायज़) नहीं कि तुम महिलाओं को ज़बरदस्ती अपनी विरासत बना लो और न (यह जायज़ है) कि तुम उनको क़ैद कर लो ताकि तुम उनको जो दे चुके हो उसमें से कुछ वसूल कर लो सिवाय इसके कि वे खुली बुराई करें, और उनके साथ अच्छी गुज़र बसर रखो, अगर तुम उनको पसंद नहीं भी करते तो हो सकता है कि तुम किसी चीज़ को ना पसंद करते हो और उसमें अल्लाह ने बहुत कुछ अच्छाई रखी हो[1] (19) और अगर तुम एक पत्नी की जगह दूसरी पत्नी बदल कर लाना चाहो और तुम एक को ढेर सा माल दे चुके हो तो उसमें से कुछ भी वापस मत लो, क्या तुम उसको मिथ्या आरोप के रास्ते से और खुला पाप करके लोगे (20) और तुम उसको कैसे ले सकते हो जब कि तुम एक दूसरे के रह चुके हो और उन औरतों ने तुम से मज़बूत वादा भी ले रखा है[2] (21) और तुम्हारे बाप जिन महिलाओं से निकाह कर चुके हों तुम उनसे निकाह (विवाह) मत करना सिवाय उसके जो पहले हो चुका, बेशक यह बड़ी अश्लीलता है और घोर अप्रसन्नता का काम है और बहुत ही बुरा रास्ता है[3] (22) तुम पर हराम की गई हैं तुम्हारी माएँ और तुम्हारी बेटियाँ और तुम्हारी बहनें और तुम्हारी फूफियाँ और मौसियाँ और तुम्हारी भतीजियाँ और तुम्हारी भाँजियाँ और तुम्हारी वे माएं जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया और दूध के रिश्ते से तुम्हारी बहनें और तुम्हारी पत्नियों की माएं और तुम्हारे पालन पोषण की सौतेली बेटियाँ जो तुम्हारी उन पत्नियों से हों जिन से तुमने संभोग किया है और अगर तुमने उनसे संभोग न किया हो तो तुम पर कोई पाप नहीं[4] और तुम्हारे उन बेटों की पत्नियाँ जो तुम से पैदा हों और यह कि तुम दो बहनों को इकट्ठा करो सिवाय उसके जो हो चुका (तो हो चुका) बेशक अल्लाह बहुत माफ करने वाला बहुत ही दयालु है (23)

---

(1) जाहिली युग का रिवाज़ था कि मरने के बाद मुर्दे की पत्नी को मुर्दे का सौतेला बेटा या भाई या कोई सगा संबंधी रख लेता था, ज़बरदस्ती निकाह कर लेता या बिना निकाह के ही रखे रहता या दूसरी जगह अपनी इच्छा से विवाह कर देता और महेर खुद वसूल कर लेता, इस बुरी रीति को समाप्त किया जा रहा है और आदेश हो रहा है कि महिलाओं के साथ अच्छा व्यवहार किया जाए, अगर कोई कमज़ोरी भी उसमें हो तो उपेक्षा की जाए, हाँ अगर खुली बुराई करे तो डाँट–डपट ज़रूरी है (2) यह भी जाहिली युग की रीति थी कि जब किसी दूसरी महिला से विवाह करना चाहते तो पत्नी पर तरह–तरह के दोष लगाकर उसको मजबूर करते थे कि वह महेर वापस कर दे फिर उसी महेर को अगले निकाह में काम में लाते थे, कहा जा रहा है कि जब तुम लाभ उठा चुके तो तुम महेर किस मुँह से माँग रहे हो, वह तुम्हारा कब रहा (3) सौतेली माओं से निकाह का आम रिवाज था उसको हराम किया जा रहा है और यह भी बताया जा रहा है कि जो हराम होने से पहले हो चुका उस पर कोई पाप नहीं अब इस से बचना ज़रूरी है (4) संभोग नहीं किया न तन्हाई हुई और उनको तलाक़ दे दी या निधन हो गया तो ऐसी परिस्थिति में उनकी बेटियों से विवाह जायज़ है।

الجزء ٥

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ
مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ۭ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ
اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ۭ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْ بَعْدِ
الْفَرِيْضَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٢٤﴾ وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ
طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ
فَتَيٰتِكُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ۭ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۚ
فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ
غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ
بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ۭ ذٰلِكَ
لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۭ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿٢٥﴾ يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦﴾ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ
عَلَيْكُمْ ۣ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿٢٧﴾
يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿٢٨﴾

منزل ١

और वे औरतें भी (तुम पर हराम की गईं) जो दूसरों के निकाह में हों सिवाय उनके जिनके तुम मालिक हुए[1], यह तुम पर अल्लाह का निर्धारित आदेश है, इनके अलावा (औरतें) तुम्हारे लिए हलाल की गईं कि तुम अपने मालों के बदले (निकाह में लाना) चाहो निकाह का रिश्ता क़ायम करने के लिए, मस्ती करने के लिए नहीं[2] फिर इस निकाह के द्वारा जब तुम उनसे लाभ उठाओ तो उनका निर्धारित अधिकार उनको दे दो[3] और तय हो जाने के बाद भी तुम दोनों जिस पर सहमत हो जाओ उसमें कोई हरज नहीं, बेशक अल्लाह ख़ूब जानने वाला बड़ी हिकमतों वाला है[4] (24) और तुममें जो आज़ाद ईमान वाली औरतों से निकाह (विवाह) की ताक़त (सामर्थ्य) न रखता हो तो वह उन ईमान वाली लौंडियों से निकाह कर ले जो तुम्हारे कब्ज़े में हों[5] और अल्लाह तुम्हारे ईमान से ख़ूब अवगत है, तुम आपस में एक ही हो तो उनके मालिकों की अनुमति से तुम उनसे निकाह कर लो और कानून के अनुसार उनको उनके महर दे दो, इस प्रकार कि वे (विधिवत रूप से) निकाह में लाई जाएं वे मस्ती करने वालियाँ न हों और न चोरी छिपे दोस्ती करने वालियाँ हों, तो जब वे निकाह में लाई जाएं फिर वे दुष्कर्म करें तो आज़ाद औरतों के लिए जो दण्ड है उसका आधा दण्ड उनके लिए है[6], (लौण्डियों से शादी की यह इजाज़त) उसके लिए है जो पाप में पड़ जाने का डर महसूस करे और तुम बर्दाश्त कर लो तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है (25) अल्लाह चाहता है कि (सब चीज़ें) तुम्हारे लिए खोल–खोल कर बयान कर दे, और पिछले लोगों के तरीके तुम को बता दे और तुम को माफ़ कर दे और अल्लाह ख़ूब जानने वाला बड़ी हिकमतों वाला है (26) और अल्लाह चाहता है कि तुम पर ध्यान दे और इच्छाओं के पीछे लगने वाले चाहते हैं कि तुम बड़े बहकावे में जा पड़ो (27) अल्लाह चाहता है कि तुमसे बोझ को हल्का कर दे जबकि इंसान कमज़ोर पैदा किया गया है (28)

---

(1) यह लौण्डियों का उल्लेख है जो जिहाद के दौरान क़ैद कर के लाई जाती थीं और उनके काफ़िर पति दारुल हर्ब में रह जाते थे, उनका निकाह उन पतियों से ख़त्म हो जाता था लिहाज़ा जब वे दारुल इस्लाम में आने के बाद एक मासिक धर्म की अवधि पूरी कर लेती थीं और उनको पिछले पतियों से गर्भ नहीं होता था तो उनसे निकाह किसी भी मुसलमान के लिए जायज़ होता था। जिन औरतों का हराम होना बयान हो चुका उनके अलावा बाक़ी सब चार शर्तों के साथ जाएज़ हैं, तलब करो यानी दोनों ओर से ईजाब व कुबूल हो जाए (2) महर देना स्वीकार हो, उद्देश्य निकाह (शादी) हो केवल काम–वासना पूरी करना मक़सद न हो, यह न हो कि कुछ अवधि निर्धारित कर ली जाए, निकाह लोगों के सामने हो कम से कम दो मर्द या एक मर्द व दो औरतें इस पर गवाह बनें इसलिए कि निकाह एक स्थायी संबंध का नाम है जिसका मक़सद केवल काम वासना पूरी करना नहीं है बल्कि एक मज़बूत पारिवारिक व्यवस्था का नाम है (3) यानी संभोग कर लिया या तन्हाई में मिले तो महर अनिवार्य होगा (4) बाद में दोनों सहमति के साथ महर कम ज़्यादा करना चाहें या औरत माफ़ करना चाहे तो इसकी आज्ञा है मगर इसका ध्यान रहे कि औरत यह काम दबाव में न कर रही हो बल्कि पूरी अपनी मर्ज़ी से करे (5) यानी वे किसी भी मुसलमान के कब्ज़े में हो मालिक की अनुमति से निकाह (शादी) कर सकता है लेकिन अगर आज़ाद महिला निकाह में है तो निकाह जाएज़ नहीं (6) यानी हर हाल में पचास कोड़े।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَأْكُلُوٓا۟ أَمْوَٰلَكُم بَيْنَكُم بِٱلْبَٰطِلِ
إِلَّآ أَن تَكُونَ تِجَٰرَةً عَن تَرَاضٍ مِّنكُمْ ۚ وَلَا تَقْتُلُوٓا۟ أَنفُسَكُمْ ۚ
إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٢٩﴾ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ عُدْوَٰنًا وَظُلْمًا
فَسَوْفَ نُصْلِيهِ نَارًا ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرًا ﴿٣٠﴾ إِن
تَجْتَنِبُوا۟ كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّـَٔاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُم
مُّدْخَلًا كَرِيمًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَتَمَنَّوْا۟ مَا فَضَّلَ ٱللَّهُ بِهِۦ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ
لِّلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا ٱكْتَسَبُوا۟ ۖ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيبٌ مِّمَّا ٱكْتَسَبْنَ ۚ
وَسْـَٔلُوا۟ ٱللَّهَ مِن فَضْلِهِۦٓ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمًا ﴿٣٢﴾ وَلِكُلٍّ
جَعَلْنَا مَوَٰلِىَ مِمَّا تَرَكَ ٱلْوَٰلِدَانِ وَٱلْأَقْرَبُونَ ۚ وَٱلَّذِينَ عَقَدَتْ
أَيْمَٰنُكُمْ فَـَٔاتُوهُمْ نَصِيبَهُمْ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ شَهِيدًا ﴿٣٣﴾ ع
ٱلرِّجَالُ قَوَّٰمُونَ عَلَى ٱلنِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ ٱللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَىٰ
بَعْضٍ وَبِمَآ أَنفَقُوا۟ مِنْ أَمْوَٰلِهِمْ ۚ فَٱلصَّٰلِحَٰتُ قَٰنِتَٰتٌ حَٰفِظَٰتٌ
لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ ٱللَّهُ ۚ وَٱلَّٰتِى تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ
وَٱهْجُرُوهُنَّ فِى ٱلْمَضَاجِعِ وَٱضْرِبُوهُنَّ ۖ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ
فَلَا تَبْغُوا۟ عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا ۗ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيرًا ﴿٣٤﴾

منزل ۱

ऐ ईमान वालो! आपस में एक दूसरे के मालों को अनुचित रूप से न खाओ सिवाय इसके कि आपस की सहमति से कोई व्यापार हो, और एक दूसरे का ख़ून मत करो बेशक अल्लाह तुम पर बहुत दयालु है (29) और जो भी सरकशी (उदण्डता) और अत्याचार के साथ ऐसा करेगा तो हम उसको आग में झोकेंगे और यह अल्लाह के लिए कुछ कठिन नहीं[1] (30) अगर तुम उन बड़ी चीज़ों से बचोगे जिनसे तुम्हें रोका गया है तो हम तुम्हारी गलतियों पर पर्दा डाल देंगे और तुम्हें सम्मान की जगह प्रवेश कराएंगे[2] (31) और अल्लाह ने तुम में एक को दूसरे पर जो बड़ाई दी है उसकी लालच में मत पड़ो, मर्दों के लिए उनके किये के अनुसार हिस्सा है और औरतों के लिए उनके किये के अनुसार हिस्सा है और अल्लाह से उसकी दया (फ़ज़्ल) मांगते रहो, बेशक अल्लाह हर चीज़ से ख़ूब अवगत है[3] (32) और हर माल के हमने कुछ वारिस निर्धारित कर दिये हैं जो भी माँ–बाप और निकटतम नातेदार छोड़ जाएं और जिनसे तुम्हारा समझौता है उनको उनका हिस्सा दे दो बेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है[4] (33) मर्द औरतों के ज़िम्मेदार हैं इसलिए कि अल्लाह ने उनमें से एक को दूसरे पर बड़ाई दी है और इसलिए कि मर्दों ने अपना माल ख़र्च किया है तो भली औरतें वे हैं जो आज्ञाकारी हों, अल्लाह की रक्षा से पीठ पीछे–पीछे रक्षा करने वाली हों और जिन औरतों की सरकशी का तुम्हें डर हो तो उनको समझाओ और उनके बिस्तर अलग कर दो और उनको चेतावनी दो फिर अगर वे तुम्हारी बात मान लें तो उनके विरुद्ध किसी रास्ते की खोज में मत पड़ो बेशक अल्लाह बहुत ही बुलंद और अधिक बड़ाई वाला है[5] (34)

(1) अब कोई यह न समझ बैठे कि हम मुसलमान हैं तो दोज़ख़ में कैसे जाएंगे, अल्लाह तआला मालिक व अधिकारी हैं उनको न्याय से कौन रोक सकता है (2) बड़े पापों के करने के बाद तौबा ज़रूरी है और बड़े गुनाह न हों तो छोटे–मोटे पापों को अल्लाह बिना तौबा के भी माफ़ कर देंगे (3) औरतों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रश्न किया था कि हर जगह मर्दों को ही संबोधित किया जाता है औरतों का उल्लेख नहीं होता और मीरास (मृतक संपत्ति) में मर्दों को दोहरा हिस्सा मिलता है, उसी का जवाब दिया गया है कि हर एक को उसके कर्म के अनुसार ही बदला मिलेगा इसमें कोई फर्क़ नहीं, बाकी हर एक को उसकी शारीरिक बनावट को देखते हुए ज़िम्मेदारियां सौंपी गई हैं (4) शुरू में जब एक–एक दो–दो लोग मुसलमान होते थे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो–दो मुसलमानों को आपस में भाई बना दिया, वही एक–दूसरे के वारिस होते, जब नातेदार मुसलमान हुए तो आदेश हुआ कि नाते के आधार पर ही मीरास (मृतक संपत्ति) बाँटी जाए और यह आयत उतरी "वउलुल अरहामि बअ़्ज़ुहुम औला बिबअ़्ज़" कि रिश्तेदार आपस में एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं और आदेश हुआ कि जिससे भाई चारा हो चुका है उनके साथ जीवन में सद्व्यवहार किया जाता रहे और मरते समय कुछ वसीयत कर दी जाए (5) मर्द जिम्मेदार हैं तो औरत को जायज़ चीज़ों से उनकी बात माननी चाहिए अगर औरत बुरा व्यवहार करे तो मर्द पहले समझाए फिर उसी घर में अलग सोए फिर न माने तो चेतावनी दे अगर देखने से लगे कि मान लिया तो फिर खोद–कुरेद में न पड़े।

और अगर तुम्हें उन दोनों के आपस के तोड़ का डर हो तो एक फ़ैसला करने वाला मर्द के परिवार से और एक फ़ैसला करने वाला औरत के परिवार से खड़ा करो अगर वे दोनों सुधार चाहेंगे तो अल्लाह तआला दोनों में जोड़ पैदा कर देगा, बेशक अल्लाह ख़ूब जानने वाला पूरी ख़बर रखने वाला है[1] (35) और अल्लाह की बंदगी करते रहो और उसके साथ कुछ भी साझीदार मत बनाओ और माँ–बाप के साथ और नातेदारों, अनाथों, मोहताजों, रिश्तेदार, पड़ोसी और अजनबी पड़ोसी, साथ बैठने वाले, यात्री और गुलामों के साथ (भी अच्छा व्यवहार करो) बेशक अल्लाह तआला इतराने वाले, अकड़ने वाले को पसंद नहीं करता[2] (36) जो कंजूसी करते हैं और लोगों को कंजूसी सिखाते हैं और उनको अल्लाह ने जो अपनी कृपा से दे रखा है उसको छिपाते हैं और हमने इनकार करने वालों के लिए अपमानजनक अज़ाब तैयार कर रखा है[3] (37) और जो अपने मालों को लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं और न अल्लाह पर ईमान रखते हैं न आख़िरत के दिन पर और शैतान जिसका दोस्त हुआ तो वह बहुत बुरा दोस्त हुआ (38) और उनको क्या नुक़सान था अगर वे अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान ले आते और उनको जो अल्लाह ने दिया है उसमें से ख़र्च करते और अल्लाह उनको ख़ूब जानता है (39) अल्लाह तआला ज़र्रा बराबर (कण मात्र) भी कमी नहीं करता और अगर सद्कर्म (नेकी) होगा तो उसका बदला दो गुना कर देगा और अपने पास से बड़ा बदला प्रदान करेगा[4] (40) तो (क्या हाल होगा) जब हम हर उम्मत से गवाह लाएंगे और उन पर आप को गवाह (बना कर पेश) करेंगे[5] (41)

(1) पहला चरण तो यह है कि पति–पत्नी ही सुधार का प्रयास करें यह न हो सके तो दोनों पक्षों के समझदार लोग सुलह कराने की कोशिश करें (2) आमतौर पर जो बड़प्पन का एहसास रखता है वह दूसरों के साथ सही व्यवहार नहीं कर पाता (3) यह आयत विशेष रूप से यहूदियों के बारे में उतरी जो खुद भी कंजूसी करते और उसकी अच्छाइयाँ बयान करते हैं और तौरेत में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उल्लेख को छिपाते हैं तो जो भी ऐसी गंदी हरकतें करेगा उसके लिए अपमानजनक अज़ाब है (4) जो ख़र्च थोड़ा बहुत करते हैं वह भी दिखावे के लिए अगर वे ईमान लाते और अल्लाह के लिए ख़र्च करते तो अपने किये पर पूरा बदला पाते (5) हर उम्मत (समुदाय) के पैग़म्बर और अच्छे लोग अपनी–अपनी उम्मतों का हाल बयान करने के लिए लाए जाएंगे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी उम्मत का हाल बताएंगे और इसका यह भी मतलब हो सकता है कि उन गवाहों पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गवाह होंगे, कुछ हदीसों में आता है कि उम्मतें साफ़ कह देंगी कि हमारे पास कोई नबी (पैग़म्बर) आया ही नहीं तो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के उम्मती गवाही देंगे कि हर क़ौम में पैग़म्बर आए हैं, उनसे पूछा जाएगा कि तुम कैसे गवाही देते हो? वे कहेंगे कि हमारे पैग़म्बर ने हमें बताया।

يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى
بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ۝٤٢ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا
مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ؕ
وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ
الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا
صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
عَفُوًّا غَفُوْرًا ۝٤٣ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ
يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ۝٤٤ وَاللّٰهُ
اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ۝٤٥
مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَ
يَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا
لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّيْنِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا
وَاَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ وَ
لٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝٤٦

ع ٤

منزل ١

जिन्होंने इनकार किया और पैग़म्बर की बात न मानी उस दिन वे चाहेंगे कि काश कि वे मिट्टी में मिला दिये गये होते और अल्लाह से वे कोई बात न छिपा सकेंगे (42) ऐ ईमान वालो! नशे की हालत में नमाज़ के निकट भी मत होना यहाँ तक कि तुम जो कहते हो उसको समझने लगो और न अपवित्रता (नापाकी) की हालत में जब तक कि तुम स्नान (गुस्ल) न कर लो सिवाय राह चलने के (कि उसका हुक्म आगे आता है) और अगर तुम बीमार हो या यात्रा पर हो या तुममें कोई शौच करके आया है या तुम पत्नियों के पास जा चुके हो फिर तुम्हें पानी न मिल सके तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम कर लो, बस अपने चेहरों और हाथों पर मसह कर लो (हाथ फेर लो) बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही क्षमा करने वाला है[1] (43) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिनको किताब का एक भाग दिया गया वे गुमराही ख़रीदते हैं और चाहते हैं कि तुम भी रास्ता भटक जाओ[2] (44) और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है और अल्लाह काम बनाने के लिए भी काफ़ी है और अल्लाह मदद के लिए भी काफी है (45) जो यहूदी हैं वे बातों को अपनी जगह से इधर–उधर करते रहते हैं और कहते हैं कि हमने सुना और न माना और आप सुनें, सुन न सकें और ज़बान को मोड़ कर और दीन पर चोटें करते हुए "राइना" कहते हैं और अगर वही लोग यह कहते हैं कि हमने सुना और माना आप सुन लें और हमारा ख़्याल करें तो उनके लिए बेहतर और ठीक होता लेकिन अल्लाह ने उनको उनके इनकार के कारण अपनी कृपा से दूर कर दिया तो वे इक्का–दुक्का ही ईमान लाते हैं[3] (46)

(1) इस आयत में तीन आदेश बताए गए हैं, एक तो यह कि नशे की हालत में नमाज़ न पढ़ना, शराब उस समय तक हराम (वर्जित) नहीं हुई थी, उससे नफ़रत दिलों में बैठाई जा रही है, दूसरा आदेश यह दिया गया कि अपवित्रता (नापाकी) की हालत में नमाज़ न पढ़ना, जब तक स्नान (गुस्ल) न कर लो, और तीसरा आदेश तयम्मुम से संबंधित है कि अगर पानी न मिले या बीमारी के कारण उसका प्रयोग कठिन हो तो पाकी (पवित्रता) का साधन पवित्र मिट्टी को क़रार दिया गया, उस पर हाथ मार कर चेहरे पर फेर लिया जाए और दूसरी बार हाथ मार कर हाथों पर कुहनियों समेत फेर लिया जाए, वज़ू की ज़रूरत हो या गुस्ल (स्नान) की दोनों में तयम्मुम का तरीक़ा यही है। (2) यहाँ से यहूदियों का उल्लेख है (3) यहूदियों का काम ही शरारत करना था, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस (सभा) में आते तो ऐसा वाक्य बोलते जिनमें बाहर कुछ होता भीतर कुछ होता, कहते कि हाँ हमने बात सुन ली फिर चुपके से कह देते कि मानी नहीं है, कहते आप सुन लें और "गैर मुस्मइन" भी कह देते कि सुनाया न जाए, कोई पूछता तो कहते कि कोई बुरी बात आपको सुना न सके और भीतर–भीतर दूसरा अर्थ उसका यह लेते कि कोई अच्छी बात आप न सुनें "राइन" (हमारा ख़्याल करें) कहते तो "राईना" खींच कर कहते जिसका मतलब है हमारे चरवाहे और यह इबरानी भाषा में गाली की तरह है, अल्लाह तआला कहता है कि इनकी इन बदमाशियों के कारण अल्लाह ने इनको अपनी कृपा और हिदायत (संमार्ग) से वंचित कर दिया तो बहुत कम ही ईमान लाएंगे, इतिहास भी इसका गवाह है कि क़ौमों में यहूदियों की क़ौम वह है जो सबसे कम मुसलमान हुए।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا
مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ
اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّاۤ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿۴۷﴾
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ
يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰۤى اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿۴۸﴾
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ
يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿۴۹﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى
اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَكَفٰى بِهٖۤ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۵۰﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ
اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ
وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰۤؤُلَآءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ﴿۵۱﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يَّلْعَنِ
اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿۵۲﴾ اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ
فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا ﴿۵۳﴾ اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ
عَلٰى مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَاۤ اٰلَ
اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿۵۴﴾

ع ٤

منزل۱

ऐ वे लोगो! जिनको किताब दी जा चुकी है, उस चीज़ पर ईमान ले आओ जिसे हमने उतारा जबकि वह उस चीज़ को भी सच बताती है जो तुम्हारे पास है, इससे पहले कि हम चेहरों को बिगाड़ दें फिर उनको पीछे फेर दें या उन पर हम वैसी ही फिटकार बरसाएं जैसी हमने सनीचर के दिन वालों पर फिटकार की और अल्लाह का आदेश तो (लागू) हो कर रहता है[1] (47) और अल्लाह इसको माफ़ नहीं करता कि उसके साथ साझी ठहराया जाए और इसके अलावा जिसको चाहता है माफ़ कर देता है और जिसने अल्लाह के साथ साझी ठहराया तो उसने अवश्य बहुत बड़ा तूफ़ान बाँधा (48) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो अपनी पाकी झाड़ते हैं जब कि अल्लाह ही जिसको चाहता है पाक (पवित्र) कर देता है और धागे के बराबर भी उनके साथ अन्याय नहीं किया जाएगा (49) आप देखिए कि वे कैसे अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं और खुले पाप के लिए यही काफ़ी है (50) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिनको किताब का एक भाग दिया गया फिर वे बुतों और तागूत (शैतान) को मानते हैं और काफिरों के बारे में कहते हैं कि वे ईमान वालों से अधिक सही रास्ते पर हैं (51) यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत (धिक्कार) की और जिस पर अल्लाह लानत (धिक्कार) करे तो आप उसका कोई मददगार न पाएंगे (52) या बादशाही में इनका कोई हिस्सा है तब तो यह लोगों को तिल बराबर भी न देंगे (53) या वे लोगों से उस बात पर हसद (ईर्ष्या) करते हैं जो अल्लाह ने उनको अपनी कृपा से दे रखा है तो हमने इब्राहीम की संतान को किताब व हिकमत दी और हमने उनको बड़ा भारी राज्य दिया (54)

(1) शुरु में अहल–ए–किताब से और विशेष रूप से यहूदियों को संबोधित किया गया है और उनको पवित्र कुरआन पर ईमान लाने का निमंत्रण दिया जा रहा है और परिचित कराने के लिए यह भी बताया जा रहा है कि पवित्र कुरआन में पिछली आसमानी किताबों की पुष्टि है, फिर न मानने पर डराया भी जा रहा है कि जिस तरह सनीचर के दिन बात न मानने वालों की सज़ा हुई वैसी ही तुम्हें सज़ा दी जा सकती है। (यह पूरी घटना सूरह अअ्राफ़ आयत नं. 163 में आएगी) फिर यहूदियों के हसद–जलन का उल्लेख है कि मुसलमानों से दुश्मनी में वे इस हद तक चले गए कि मक्का के मुश्रिकों के बारे में कहने लगे कि यह मुसलमानों से ज़्यादा बेहतर रास्ते पर हैं जब कि वे ख़ूब जानते थे कि मक्के के लोग मूर्ति पूजक हैं और किसी आसमानी किताब पर ईमान नहीं रखते लिहाज़ा उनके धर्म को बेहतर क़रार देना मूर्ति पूजा की पुष्टि है, इससे बढ़ कर अभिशाप वाला काम क्या होगा? फिर उनकी कंजूसी का उल्लेख है, फिर अंत में कहा जा रहा है कि सब इब्राहीम की संतान में तो हैं, तो यह जलन कैसी और इब्राहीम ही की संतान को तो अल्लाह ने हर युग में सम्मानित किया है, एक ज़माने तक उनके एक बेटे इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम की संतान में पैग़म्बर होते रहे अब उनके दूसरे बेटे हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की संतान में अल्लाह ने पैग़म्बरों के सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पैदा किया और पैग़म्बर बनाया, अल्लाह का काम है जिसको चाहे सम्मानित करे किसी और को इसमें क्या अधिकार?

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ؕ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ
سَعِيْرًا ﴿۵۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ؕ كُلَّمَا
نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۵۶﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ
لَهُمْ فِيْهَاۤ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۫ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ﴿۵۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ
يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ
اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
سَمِيْعًاۢ بَصِيْرًا ﴿۵۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا
الرَّسُوْلَ وَاُولِى الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ
اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ
ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿۵۹﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ
اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ
اَنْ يَّتَحَاكَمُوْۤا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْۤا اَنْ يَّكْفُرُوْا
بِهٖ ؕ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿۶۰﴾

منزل ۱

फिर उन में कुछ लोग उन पर ईमान लाए और कुछ उनके विरूद्ध हठधर्मी पर डटे रहे और दोज़ख़ जलाने के लिए काफ़ी है (55) बेशक जिन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया आगे हम उनको आग में डालेंगे, जब–जब उनकी खालें गल जाएंगी तो हम दूसरी खालों से उनको बदल देंगे ताकि[1] वे अजाब चखते रहें, बेशक अल्लाह जबर्दस्त है, हिकमत वाला है (56) और जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये उनको हम ऐसी जन्नतों में प्रवेश कराएंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी वे हमेशा उसी में रहेंगे, उन (बाग़ों) में उनके लिए पवित्र पत्नियाँ होंगी और हम उनको घनी छावों में प्रवेश कराएंगे (57) तुम्हारे लिए अल्लाह का आदेश यह है कि अमानतों (धरोहरों) को अमानत वालों तक पहुँचा दो और जब लोगों के बीच फैसला करो तो न्याय के साथ फैसला करो, निःसंदेह नसीहत है जो अल्लाह तुम्हें करता है, बेशक अल्लाह ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब निगाह रखने वाला है[2] (58) ऐ ईमान वालो! अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो और उनका जो तुम में ज़िम्मेदार हैं, फिर अगर किसी चीज़ में तुम झगड़ पड़ो तो उसको अल्लाह और रसूल की ओर फेर दिया करो अगर तुम अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो, यही बेहतर और परिणाम के लिहाज़ से ज़्यादा अच्छा है (59) क्या आपने उनको नहीं देखा जिनका दावा यह है कि वे आप पर उतारी गई (किताब) पर और जो कुछ आपसे पहले उतारा जा चुका उस पर ईमान रखते हैं लेकिन वे अपना मुकद्दमा तागूत (शैतान) के पास ले जाना चाहते हैं जबकि उनको इसका आदेश हुआ था कि वे उसका इनकार करें और शैतान यह चाहता है कि उनको बहका कर दूर जा फेंके[3] (60)

(1) अल्लाह तआला ने शरीर की खाल में ऐसे **Cells** और छोटे छोटे मुसामात (छिद्र) रखे हैं जिनके माध्यम से तकलीफ़ का एहसास दिमाग़ तक पहुँचता है जब खाल जलने से यह **Cells** नहीं रह जाते तब तकलीफ़ का एहसास भी उसी हिसाब से कम या ख़त्म हो जाता है, आयत में इस ओर इशारा है कि दोज़ख की आग से जब खाल गल जाएगी और तकलीफ का एहसास कम होने लगेगा तो अल्लाह तआला तुरन्त ही नई खाल चढ़ा देंगे कि लगातार सख़्त तकलीफ़ होती रहे (2) मक्का विजय के दिन उस्मान पुत्र तलहा से चाबी ले कर काबे को खोला गया और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भीतर गए, वापसी पर उस्मान पुत्र तलहा ने जो उस समय तक मुश्रिक थे चाबी मांगी, उस पर यह आयत उतरी और चाबी उनको वापस कर दी गई (3) बहुत से छिपे हुए मुनाफ़िक़ों ने यह कार्य प्रणाली अपनाई थी कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आने के बजाय यहूदियों से जा कर फ़ैसला कराते ताकि दे दिला कर फ़ैसला अपने पक्ष में करा लें और कुछ दुनिया हासिल हो जाए, अल्लाह तआला स्पष्ट रूप से कहता है कि यह ईमान के विरुद्ध है और शैतान इस काम में लगा रहता है, और अगर वे फ़ैसला अल्लाह के पैग़म्बर से कराएं तो दीन व दुनिया के लिए बेहतर है, ईमान वालों को आदेश है कि वे हमेशा सत्य के मुताबिक फ़ैसला करें, यहूदियों का रास्ता न अपनाएं।

और जब उनसे कहा गया कि अल्लाह की उतारी हुई (किताब) की ओर और पैग़म्बर की ओर आ जाओ तो आप मुनाफ़िक़ों को देखेंगे कि वे आपकी ओर (आने में) अटक कर रह जाते हैं (61) फिर उनका क्या हाल बनता है जब वे अपनी करतूतों के फलस्वरूप मुसीबत में पड़ते हैं तो आपके पास क़सम खाते हुए आते हैं कि हमने तो केवल भलाई करने और जोड़ पैदा करने का इरादा किया था (62) यह वे लोग हैं कि अल्लाह उनके दिलों के हाल से ख़ूब अवगत है तो आप उनसे मुंह मोड़ लिया कीजिए और उनको नसीहत कीजिए और उनसे उनके हक़ में दिल को लगती हुई कोई बात कह दीजिए (63) और हमने तो पैग़म्बर इसलिए भेजा ताकि अल्लाह के आदेश से उसकी बात मानी जाए और उन लोगों ने जिस समय अपना बुरा किया था वे अगर आपके पास आ जाते और अल्लाह से माफ़ी मांगते और पैग़म्बर भी उनके लिए माफ़ी की दुआ करते तो वे अल्लाह को बहुत ज़्यादा तौबा कुबूल करने वाला बहुत ही दयालु पाते (64) बस नहीं आपके पालनहार की क़सम वे उस समय तक ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक वे अपने झगड़ों में आपको फ़ैसला करने वाला न बना लें फिर आपके फ़ैसले पर अपने मन में कोई तंगी महसूस न करें और पूरी तरह नत्मस्तक हो जाएं[1] (65) और अगर हम उन पर यह ज़रूरी ही करार दे देते कि अपनी जानों को तबाही में डाल दो या अपने वतन से निकल जाओ तो उनमें बहुत ही कम लोग इस पर अमल करते और अगर वे उस पर अमल कर लें जिस चीज़ की नसीहत उनको की जा रही है तो उनके लिए बेहतर हो और ज़्यादा साबित क़दमी (दृढ़ता) का कारण हो (66) तब हम उनको अवश्य अपने पास से बड़े बदले से सम्मानित करें (67) और ज़रूर उनको सीधी राह चला दें[2] (68)

(1) यह मुनाफ़िक़ों का उल्लेख है उनका काम ही न मानना और बहाने बनाना था, आपको आदेश हो रहा है कि आप उनसे मुँह मोड़ लें और उनको नसीहत कर दें, अल्लाह दिलों के हाल से अवगत है और उस समय तक वे मुसलमान नहीं हो सकते जब तक वे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी हर समस्या में फैसला करने वाला न बना लें और फिर फैसला हो जाने के बाद उसको दिल व जान से मान लें (2) जो आदेश याकूब की संतान को हुआ, एक दूसरे को क़त्ल करने और वतन छोड़ने का, अगर इन मुनाफिकों से यह कह दिया जाए तो बगलें झांकने लगें तो उन्हें अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए, और आसान आदेशों को मान लेने में ज़रा कोताही न करनी चाहिए, अगर वे अपनी दशा को सुधार लेंगे तो अल्लाह भी उन को सम्मानित करेगा, उनके कदमों को जमा देगा और उनको सीधी राह चला देगा।

وَمَن يُطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُولَ فَأُولٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ
اللّٰهُ عَلَيْهِم مِّنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصّٰلِحِينَ
وَحَسُنَ أُولٰئِكَ رَفِيقًا ﴿٦٩﴾ ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ۚ وَكَفَىٰ
بِاللّٰهِ عَلِيمًا ﴿٧٠﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا حِذْرَكُمْ فَانفِرُوا
ثُبَاتٍ أَوِ انفِرُوا جَمِيعًا ﴿٧١﴾ وَإِنَّ مِنكُمْ لَمَن لَّيُبَطِّئَنَّ فَإِنْ
أَصَابَتْكُم مُّصِيبَةٌ قَالَ قَدْ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ إِذْ لَمْ أَكُن مَّعَهُمْ
شَهِيدًا ﴿٧٢﴾ وَلَئِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُولَنَّ كَأَن لَّمْ
تَكُن بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يَا لَيْتَنِي كُنتُ مَعَهُمْ فَأَفُوزَ
فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٧٣﴾ فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ الَّذِينَ يَشْرُونَ
الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۚ وَمَن يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ
فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٧٤﴾ وَمَا لَكُمْ
لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ
وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا
مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا وَاجْعَل لَّنَا مِن
لَّدُنكَ وَلِيًّا وَاجْعَل لَّنَا مِن لَّدُنكَ نَصِيرًا ﴿٧٥﴾

ع

منزل۱

और जो लोग अल्लाह और पैग़म्बर की आज्ञा का पालन करेंगे तो वे उन लोगों के साथ होंगे जिनको अल्लाह ने इनआम दिया यानी पैग़म्बर, सिद्दीक़, शहीद और नेक लोग और क्या ही ख़ूब साथी हैं[1] (69) यह फ़ज़्ल (कृपा) अल्लाह ही की ओर से है और अल्लाह का ज्ञान काफ़ी है (70) ऐ ईमान वालो! अपने लिए चौकसी के सारे साधन कर लो फिर टुकड़ियाँ बना कर निकलो या एक साथ ही निकल पड़ो[2] (71) और निश्चित ही तुम में कोई ऐसा भी है जो देर लगा ही देता है फिर तुम पर कोई मुसीबत आती है तो कहता है कि अल्लाह ने मुझ पर कृपा की जो मैं उनके साथ मौजूद न था (72) और अगर तुम्हें अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) हासिल होता है तो वह इस तरह कहने लगेगा मानो उसमें और तुम में कोई संबंध ही न था कि ऐ काश मैं भी उनके साथ होता तो बड़ी सफलता पाता[3] (73) तो जो लोग भी आख़िरत के लिए दुनिया के जीवन का सौदा करते हैं उन्हें चाहिए कि वे अल्लाह के रास्ते में लड़ें और जो भी अल्लाह के रास्ते में लड़ेगा फिर वह मारा जाए या विजय प्राप्त करे तो हम उसे आगे बड़ा बदला प्रदान करेंगे (74) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के रास्ते में उन बेबस मर्दों, औरतों और बच्चों की ख़ातिर जंग नहीं करते जो कहते हैं ऐ हमारे पालनहार! हमको इस बस्ती से निकाल ले जिसके वासी अत्याचारी हैं और हमारे लिए अपने पास से कोई समर्थक खड़ा कर दे और हमारे लिए अपने पास से कोई मददगार बना दे[4] (75)

(1) पैग़म्बर वह जिस पर वह्य आए, सिद्दीक़ वह जो पैग़म्बर की भरपूर पुष्टि करे, शहीद वह जिसका ईमान इतना शक्तिशाली हो कि उसके लिए जान दे दे, और नेक वह जिसकी तबियत नेकी (भले काम) पर चले और जो इसके लिए प्रयास करता रहे वह भी उनमें शामिल है (2) जिहाद का उल्लेख है (3) यह मुनाफिकों का उल्लेख है कि अगर मुसलमान को नुक़सान पहुँचता है तो खुश होते हैं कि हम आराम से रहे कि गए ही नहीं, और माल–ए–गनीमत (युद्ध के बाद शत्रु धन) प्राप्त होता है तो पछताते हैं कि अगर हम जाते तो हमें भी हिस्सा मिलता, मानो केवल दुनिया ही उनका जीवन–लक्ष्य है, न उनको इस्लाम में रुचि है और न मुसलमानों से कोई सम्बन्ध है, इसीलिए आगे ईमान वालों को आदेश है कि अपनी नियतें (इरादे) दुरुस्त कर लें (4) एक तो अल्लाह के रास्ते में जंग करो, दूसरे उन लोगों के लिए जंग ज़रूरी है जो मक्के में काफिरों के क़ैदी हैं और सताए जा रहे हैं उनको छुड़ाना मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है।

الذين آمنوا يقاتلون في سبيل الله ۖ والذين كفروا
يقاتلون في سبيل الطاغوت فقاتلوا أولياء الشيطان ۖ
إن كيد الشيطان كان ضعيفا (٧٦) ألم تر إلى الذين قيل
لهم كفوا أيديكم وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة فلما كتب
عليهم القتال إذا فريق منهم يخشون الناس كخشية
الله أو أشد خشية ۚ وقالوا ربنا لم كتبت علينا القتال لولا
أخرتنا إلى أجل قريب ۗ قل متاع الدنيا قليل والآخرة
خير لمن اتقى ولا تظلمون فتيلا (٧٧) أين ما تكونوا
يدرككم الموت ولو كنتم في بروج مشيدة ۗ وإن تصبهم
حسنة يقولوا هذه من عند الله ۖ وإن تصبهم سيئة
يقولوا هذه من عندك ۚ قل كل من عند الله ۖ فمال
هؤلاء القوم لا يكادون يفقهون حديثا (٧٨) ما أصابك من
حسنة فمن الله ۖ وما أصابك من سيئة فمن نفسك ۚ وأرسلناك
للناس رسولا ۚ وكفى بالله شهيدا (٧٩) من يطع الرسول
فقد أطاع الله ۖ ومن تولى فما أرسلناك عليهم حفيظا (٨٠)

منزل ١

जो ईमान वाले हैं अल्लाह के रास्ते में लड़ते हैं और जो काफ़िर हैं वे तागूत (शैतान) के रास्ते में लड़ते हैं बस शैतान के समर्थकों से लड़ो, बेशक शैतान की चाल ही कमज़ोर है[1] (76) क्या आपने उनको नहीं देखा जिनसे कहा गया कि हाथों को रोके रखो, नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करते रहो फिर जब उन पर क़िताल (लड़ाई) ज़रूरी किया गया तो उनमें एक गिरोह को लोगों का ऐसा डर महसूस होने लगा जैसे अल्लाह का डर हो या उससे भी बढ़ कर, और उन्होंने कहा कि ऐ हमारे पालनहार! हम पर आपने क़िताल (लड़ाई) क्यों ज़रूरी किया काश कि आप थोड़ी मोहलत हमको और दे देते, आप कह दीजिए दुनिया का ऐश थोड़ा ही है और जिसने अल्लाह का डर अपनाया उसके लिए आख़िरत ही बेहतर है और बाल बराबर भी तुम्हारे साथ अन्याय न होगा[2] (77) तुम जहाँ कहीं भी हो मौत तुमको आकर रहेगी चाहे तुम मज़बूत किलों ही में क्यों न हो और अगर उनको कुछ भलाई पहुँचती है तो कहते हैं यह अल्लाह की ओर से है और अगर उनको कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो कहते हैं यह तुम्हारी ओर से है, आप कह दीजिए सब अल्लाह ही की ओर से है तो इन लोगों को क्या हो गया, यह कोई बात समझने के लिए तैयार ही नहीं (78) तुमको जो भलाई मिली है वह अल्लाह की ओर से है और जो तकलीफ़ तुम को पहुँचती है वह तुम्हारे नफ़्स की ओर से है और हमने आपको लोगों के लिए पैग़म्बर बना कर भेजा है और अल्लाह गवाह (के लिए) काफ़ी है[3] (79) और जिसने पैग़म्बर का आज्ञापालन किया तो उसने अल्लाह का आज्ञापालन किया और जो फिर गया तो हमने आपको उन पर दारोग़ा बना कर नहीं भेजा (80)

(1) जब ईमान वाले अल्लाह के लिए लड़ते हैं तो उनके लिए ज़रूरी है कि वे शैतान के दोस्तों से मुक़ाबला करें और उनको डरने की ज़रूरत नहीं, अल्लाह की मदद उनके साथ है और शैतान की चाल और धोखा कमज़ोर ही है (2) मक्के में हिजरत से पहले काफ़िर मुसलमानों पर बड़ा अत्याचार करते थे, मुसलमान आ कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुक़ाबले की इजाज़त माँगते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहते कि मुझको अभी इजाज़त नहीं, अभी हाथ रोके रखो, नमाज़ पढ़ते रहो, ख़ैर–ख़ैरात करते रहो, फिर जब मदीना हिजरत हुई तो मुक़ाबले की इजाज़त मिली फिर इसका आदेश हुआ तो कुछ कमज़ोर मुसलमानों को डर महसूस हुआ और उन्होंने चाहा कि यह आदेश और देर से आता तो बेहतर होता इसी का उल्लेख है और दुनिया के बे हकीकत होने का बयान है और आगे कहा जा रहा है कि मौत से क्या डर वह तो हर हाल में अपने समय पर आकर रहेगी (3) यह मुनाफ़िकों को उल्लेख है कि अगर मुसीबत पड़े तो फ़ौरन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आरोप लगा देते कि उनकी ग़लत नीति का परिणाम है, कहा जा रहा है कि सब अल्लाह के आदेश से ही होता है, हर वस्तु का आविष्कारक वही है और आगे इसका और स्पष्टीकरण है कि हर भलाई और बुराई का आविष्कारक अल्लाह ही है मगर बन्दे को चाहिए कि नेकी और अच्छाई को अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) समझे और सख़्ती और बुराई को अपने कर्मों का बुरा फल जाने, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर इस का आरोप न लगाए वे न उसके आविष्कारक हैं और न कारण, उनका पैदा करने वाला अल्लाह है और कारण तुम्हारे कुकर्म हैं।

وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَزُوا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ
مِنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ فَأَعْرِضْ
عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٨١﴾ أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ
الْقُرْآنَ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا
كَثِيرًا ﴿٨٢﴾ وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ
وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَى أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ
يَسْتَنْبِطُونَهُ مِنْهُمْ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ
الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٨٣﴾ فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا
نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَكُفَّ بَأْسَ الَّذِينَ
كَفَرُوا وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنْكِيلًا ﴿٨٤﴾ مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً
حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِنْهَا وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ
لَهُ كِفْلٌ مِنْهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُقِيتًا ﴿٨٥﴾ وَإِذَا حُيِّيتُمْ
بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ﴿٨٦﴾ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَى يَوْمِ
الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ﴿٨٧﴾

النصف ع ١١

منزل ١

और वे कहते हैं फरमांबरदारी (आज्ञापालन) स्वीकार है फिर जब आपके पास से निकलते तो एक गिरोह रातों-रात जो बात वे कह रहे थे उसके खिलाफ़ मश्वरा करता है और वे जो कुछ रातों को मश्वरे करते हैं अल्लाह वह सब लिख रहा है, बस आप उनसे मुंह फेर लीजिए और अल्लाह पर भरोसा रखिये और काम बनाने के लिए अल्लाह ही काफ़ी है (81) भला क्या वे कुरआन पर सोच-विचार नहीं करते बस वह अगर अल्लाह के अलावा किसी और की ओर से होता तो वे उसमें बड़ा अंतर पाते[1] (82) और जब उनके पास अमन या डर की कोई बात पहुँचती है तो उसको फैला देते हैं और अगर वे उसको पैग़म्बर तक और अपने ज़िम्मेदारों तक पहुँचा देते तो उनमें जो जांच करने वाले हैं वे उसकी जांच कर लेते और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) व रहमत (दया) न होती तो कुछ के सिवा सब शैतान ही के पीछे हो लेते[2] (83) तो आप अल्लाह के रास्ते में जंग कीजिए आप पर केवल आपकी ज़िम्मेदारी डाली गयी है और ईमान वालों को भी उभारिये शायद कि अल्लाह काफ़िरों का ज़ोर रोक दे और अल्लाह बड़े ज़ोर वाला और बहुत सख़्त सज़ा देने वाला है[3] (84) जो अच्छी सिफारिश करेगा उसके लिए उसमें हिस्सा है और जो बुराई की सिफारिश करेगा उसके लिए उसमें बोझ है और अल्लाह हर चीज़ को उसका हिस्सा देने का सामर्थ्य रखता है[4] (85) और जब तुमको कोई सलाम करे तो तुम उससे बेहतर तरीक़े पर सलाम करो या उन्हीं (शब्दों) में जवाब दे दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ का हिसाब रखने वाला है[5] (86) अल्लाह जिसके सिवा कोई उपास्य (माबूद) नहीं वह ज़रूर तुम्हें क़यामत के दिन इकट्ठा करेगा इसमें कोई संदेह नहीं और अल्लाह से बढ़ कर सच्ची बात आख़िर किस की हो सकती है (87)

(1) मुनाफ़िक़ों का उल्लेख है कि आकर आज्ञापालन की बात करते हैं और चुपके चुपके मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाने की नीतियाँ बनाते हैं, जब कहा जाता है तो जवाब देते हैं कि हम सब मान लें लेकिन कुरआन अल्लाह की वाणी है इसका क्या प्रमाण है इसके जवाब में कहा जा रहा है कि अगर वह मानव वाणी (कलाम) होता तो इसमें ज़रूर अंतर व विरोधाभास मिलता, जो विचार करेगा वास्तविकता तक पहुँचेगा (2) मुनाफ़िक़ों और नासमझ मुसलमानों को चेताया जा रहा है कि हर चीज़ को सुनते ही उड़ा न दिया करें जब तक जांच न हो जाए, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी को ज़कात वसूल करने के लिए एक समुदाय के पास भेजा, वे स्वागत करने के लिए निकल कर आए तो किसी ने उनसे कह दिया कि यह तो तुम्हें मारने आ रहे हैं बस वह सज्जन वापस हो गए और यह ख़बर फैल गई कि सब इस्लाम से फिर गए और अधिकतर लोगों ने बिना जांच के राय दी कि उन लोगों से तुरंत मुक़ाबला करना चाहिए, मगर अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) और उसकी दया थी कि वह आवश्यकतानुसार निर्देश देता रहता है, अगर ऐसा न होता तो अधिकतर लोग ग़लत रास्ते पर पड़ जाते और नाहक़ उन पर हमला कर देते (3) उहद युद्ध के दूसरे साल बद्र के स्थान पर वादे के अनुसार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा के एक दल के साथ गए, अल्लाह ने ऐसी धाक बैठाई कि काफ़िरों की सेना को आने ही की हिम्मत न हुई, जाते हुए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि कोई न भी गया तो मैं अकेले जाऊँगा लेकिन मात्र एलान ही से जान दे देने वालों का एक दल तैयार हो गया (4) जिसने जिहाद के लिए शौक पैदा किया उसके लिए बदला है और जिसने रोका उस पर विपत्ति है (5) सलाम का उल्लेख है मगर जो सलाम करे उतना ही जवाब दे या "व रहमतुल्लाहि" या और "बरकातुहू" भी बढ़ा दे।

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا
اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ
فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿۸۸﴾ وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا
فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ
وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۸۹﴾ اِلَّا
الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ
جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا
قَوْمَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ
اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ فَمَا
جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿۹۰﴾ سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ
يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا رُدُّوْۤا اِلَى
الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْۤا اِلَيْكُمُ
السَّلَمَ وَيَكُفُّوْۤا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ
ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿۹۱﴾

منزل۱

फिर तुम्हें क्या पड़ी है कि तुम मुनाफिकों के बारे में दो पार्टियों में बट गए जब कि अल्लाह उन की करतूतों के कारण उन्हें उलटा फेर दिया है, क्या तुम चाहते हो कि जिसको अल्लाह ने रास्ते से हटा दिया उसको तुम राह पर ले आओ जब कि जिसको अल्लाह बेराह कर दे आप उसके लिए हरगिज़ रास्ता नहीं पा सकते[1] (88) वे तो चाहते ही हैं कि जैसे उन्होंने कुफ़्र किया तुम भी कुफ़्र करने लग जाओ फिर तुम सब बराबर हो जाओ तो तुम उनमें से किसी को उस समय तक दोस्त मत बनाना जब तक वे अल्लाह के रास्ते में हिजरत न कर लें फिर अगर वे न मानें तो तुम उनको जहाँ भी पाओ उनको पकड़ो और मारो और उनमें से किसी को दोस्त और मददगार मत बनाओ[2] (89) सिवाय उन लोगों के जो ऐसी क़ौम से मिल जाएं जिससे तुम्हारा आपस का समझौता है या वे इस हाल में तुम्हारे पास आएं कि उनके दिल इससे भर चुके कि वे तुमसे लड़ें या अपनी क़ौम से लड़ें और अगर अल्लाह चाहता तो उनको तुम पर नियंत्रण दे देता तो वे तुम से ज़रूर लड़ते, बस अगर वे तुमसे एकाग्र हो जाएं और न लड़ें और सुलह की बात कहें तो अल्लाह ने उनके विरुद्ध कोई रास्ता नहीं रखा[3] (90) कुछ दूसरे लोग तुम्हें ऐसे भी मिलेंगे जो यह चाहते हैं कि तुम्हारे साथ इत्मिनान से रहें और अपनी क़ौम के साथ भी इत्मिनान से रहें (मगर) जब उनको फ़ितने (उपद्रव) की ओर फेरा जाता है तो वे उस में पलट पड़ते हैं बस अगर वे तुमसे मुक़ाबले से बाज़ न रहें और न सुलह की बात कहें और न अपने हाथ रोकें तो तुम उनको जहाँ भी पाओ उनको पकड़ो और मार दो, यह वे लोग हैं जिन पर हमने तुम्हें खुला अधिकार दे दिया है (91)

---

(1) यह खुले हुए मुनाफ़िक़ों के बारे में कहा जा रहा है, मुसलमानों में से कुछ लोग कहते थे कि अगर यह आतें हैं तो अपनों ही की तरह इनसे व्यवहार किया जाए, शायद यह ईमान ले आएं, अधिकतर लोगों का यह कहना था कि इनसे अलग ही रहना बेहतर है, अल्लाह कहता है कि हिदायत अल्लाह के हाथ में है तुम उनके साथ वह व्यवहार करो जो आगे बयान किया जा रहा है (2) यह मुनाफ़िक़ लोग कुफ़्र पर ऐसे जमे हुए हैं कि खुद तो इस्लाम क्या स्वीकार करेंगे वे तो चाहते हैं कि तुम भी कुफ़्र करके उन्हीं जैसे हो जाओ, तो तुम्हें चाहिए कि जब तक वे इस्लाम स्वीकार करके अपना वतन छोड़ कर चले न आएं उनको दोस्त न बनाओ और पूरी तरह अलग रहो और अगर वे ईमान और हिजरत को स्वीकार नहीं करते तो उनको क़त्ल करो इसलिए कि वे अपने आप को मुसलमान बताते हैं और भीतर से मुसलमानों की जड़ें काटते हैं, विद्रोही की सज़ा क़त्ल ही है (3) अगर उन्होंने ऐसे कबीलों से सुलह कर ली जिनसे तुम्हारी सुलह है तो वे भी तुम्हारी सुलह में शामिल हो गए या खुद अगर तुम से सुलह कर लें और कहें कि न हम अपनी क़ौम के पक्षधर होकर तुम से लड़ेंगे और न तुम्हारे पक्षधर होकर अपनी क़ौम से लड़ेंगे तो उनकी सुलह स्वीकार कर लो, फिर आगे कहा जा रहा है कि उनमें वे लोग भी हैं जो सुलह करने के बाद फिर पलट जाते हैं तो उनकी रिआयत मत करना।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا
فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ۚ فَاِنْ
كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ وَاِنْ
كَانَ مِنْ قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ وَ
تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۫
تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٩٢﴾ وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا
فَجَزَاۗؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ
عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿٩٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ
عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۡ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ۭ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ
قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿٩٤﴾
لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۭ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ
بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَي الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ۭ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ
الْحُسْنٰى ۭ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَي الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٩٥﴾

منزل ١

और मुसलमान का काम नहीं कि वह मुसलमान को मार डाले सिवाय इसके कि गलती से ऐसा हो जाये और जिसने मुसलमान को गलती से मार दिया तो एक मुसलमान गुलाम को आज़ाद करना (उस पर अनिवार्य है) और खूँ–बहा (अर्थ–दण्ड) है जो उसके घर वालों के हवाले किया जाएगा सिवाय इसके कि वे माफ़ कर दें और अगर वह (मारा हुआ व्यक्ति) तुम्हारी दुश्मन क़ौम से था और वह ख़ुद मुसलमान था तो केवल एक मुसलमान गुलाम आज़ाद करना (अनिवार्य है) और अगर (मारा गया व्यक्ति) उस क़ौम से था जिसका तुम से समझौता है तो खूँ–बहा है जो उस (मारे गए व्यक्ति) के सम्बन्धियों के हवाले किया जाए और एक मुसलमान गुलाम को आज़ाद करना भी अनिवार्य है फिर जिसको यह उपलब्ध न हो तो लगातार दो महीने के रोज़े हैं अल्लाह से माफ़ कराने के लिए, और अल्लाह ख़ूब जानता है बड़ी हिकमत वाला है[1] (92) और जिसने जान बूझ कर किसी मुसलमान को मार डाला तो उसका बदला दोज़ख है वह उसी में पड़ा रहेगा और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब (प्रकोप) हुआ और उसकी फटकार हुई और उसके लिए उस (अल्लाह) ने बड़ा अज़ाब तैयार कर रखा है[2] (93) ऐ ईमान वालो! जब अल्लाह के रास्ते में यात्रा करो तो अच्छी तरह देखभाल लो और जो तुम्हें सलाम करे दुनिया के साधन की चाहत में यह मत कह दो कि तुम मुसलमान नहीं, अल्लाह के पास बहुत माल–ए–ग़नीमत है, तुम भी तो पहले उसी तरह थे तो अल्लाह ने तुम पर एहसान किया तो (ख़ूब) जांच कर लो, बेशक तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है[3] (94) मुसलमानों में से अकारण बैठे रहने वाले और अपने मालों और अपनी जानों से अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले बराबर नहीं हो सकते, अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करने वालों का अल्लाह ने दर्जा बढ़ा रखा है और भलाई का वादा अल्लाह ने सबसे किया है और अल्लाह ने बैठे रहने वालों के मुक़ाबले जिहाद करने वालों को बड़े बदले से सम्मानित किया है[4] (95)

---

(1) यह क़त्ल–ए–ख़ता (धोखे से क़त्ल) के आदेश हैं, घटना कुछ इस तरह घटी कि कुछ मुसलमानों ने मुसलमानों को हरबी (जिनसे युद्ध जारी हो) समझ कर क़त्ल कर दिया, बाद में चेते तो यह आदेश आया, क़त्ल–ए–ख़ता के और भी रूप हैं शिकार समझ कर मारा वह इंसान निकला या ग़लती से गोली चल गई और किसी को लग गई, इस प्रकार जो भी क़त्ल होगा उसमें यही आदेश है, अब जिसको मारा गया वह काफ़िर से समझौता किये हुए है तो भी यही आदेश है और अगर समझौता नहीं हुआ है तो केवल गुलाम आज़ाद करना है खूँ–बहा (अर्थ दण्ड) नहीं देना है और जो गुलाम आज़ाद नहीं कर सकता वह दो महीने के लगातार रोज़े रखे (2) महापापी इतनी लंबी अवधि तक दोज़ख में रहेगा कि मानो हमेशा वहीं रहा (3) एक युद्ध में काफ़िरों में एक मुसलमान था वह सब माल लेकर अलग हो गया और उसने सलाम किया, मुसलमानों ने समझा कि जान बचाने के लिए सलाम करता है इसलिए उसको मार डाला और उसका सब सामान ले लिया, उस पर चेताया गया और जांच लेने का आदेश दिया गया (4) हो सकता है कि दिमाग़ में आता कि जिहाद में भूल–चूक से संभव है कि कोई नाहक मारा जाए इससे बेहतर बैठे रहना है तो कहा गया कि जिहाद बड़े अज्र व सवाब (बदले) की चीज़ है और जिहाद से बैठे रहना भी अकारण उसी समय जायज़ (वैध) है जब जिहाद हर व्यक्ति के ज़िम्मे फ़र्ज़–ए–ऐन न हो।

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ﴿٩٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِیْٓ
اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ
فِى الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا
فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٩٧﴾
اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ
لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٩٨﴾
فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٩٩﴾ وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ
فِى الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ؕ وَمَنْ يَّخْرُجْ
مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ
الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ﴿١٠٠﴾ وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿١٠١﴾

منزل ١

(यानी) अपने पास से (बुलंद) दर्जों और मगफ़िरत व रहमत से, और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है (96) बेशक फ़रिश्ते जिन लोगों की रूह (आत्मा) इस हाल में निकालते हैं कि वे अपने साथ बुरा कर रहे थे (उनसे) पूछते हैं कि तुम कहाँ पड़े हुए थे वे कहते हैं कि हम ज़मीन में बेबस थे (फ़रिश्ते) कहते हैं कि क्या अल्लाह की ज़मीन चौड़ी न थी कि तुम उसमें हिजरत कर जाते बस ऐसे लोगों का ठिकाना दोज़ख है और वह पहुँचने की बुरी जगह है[1] (97) सिवाय उनके जो मर्दों, औरतों और बच्चों में बेबस हैं न वे कोई उपाय कर सकते हैं और न ही उनको रास्ता मिल रहा है[2] (98) ऐसे लोगों के बारे में आशा है कि अल्लाह उनको माफ़ कर देगा और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा दयावान है (99) और जो अल्लाह के रास्ते में हिजरत करेगा वह ज़मीन में बहुत जगह और गुंजाइश पाएगा और जो अपने घर से अल्लाह और उसके पैगम्बर की ओर हिजरत के लिए निकला फिर उसको मौत आ गई तो उसका बदला अल्लाह के ज़िम्मे होगा और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है[3] (100) और जब तुम ज़मीन में यात्रा करो तो तुम्हारे लिए कोई हर्ज नहीं कि तुम नमाज़ में क़स्र कर लिया करो अगर तुम्हें डर हो कि काफ़िर तुम्हें परेशान करेंगे, बेशक काफ़िर तुम्हारे खुले दुश्मन ही रहे हैं[4] (101)

(1) अपनी जान पर जुल्म करना कुरआन का एक पारिभाषिक शब्द है जिसका मतलब होता है कोई बड़ा पाप करना क्योंकि पाप करके इंसान अपनी जान ही को नुक़सान पहुँचाता है, इस आयत में इससे आशय वे लोग हैं जिन्होंने सामर्थ्य के बावजूद मक्के से मदीना हिजरत नहीं की थी जब कि उस समय मक्का विजय से पहले तक मक्का से मदीना हिजरत ज़रूरी क़रार दी गई थी और उसको ईमान का अनिवार्य भाग घोषित कर दिया गया था (2) यानी विवश, कमज़ोर और असहाय (3) यह मत सोचो कि रास्ते में मौत आ गई तो न इधर के रहे न उधर के, मौत अल्लाह के हाथ में है यात्रा के बाद मौत अगर तय थी तो हिजरत के सवाब (पुण्य) से तो वंचित नहीं होगे (4) क़स्र का आदेश है अर्थात् चार रकअ़त वाली नमाज़ दो रकअ़त पढ़ी जाएगी, आदेश उतरते समय काफ़िरों के भय का भी उल्लेख किया गया था, अब आदेश आम है, यात्रा की हालत में नमाज़ क़स्र के साथ पढ़ी जाएगी, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यही अमल था।

وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ
مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَاْخُذُوْٓا اَسْلِحَتَهُمْ فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا
مِنْ وَّرَآئِكُمْ وَلْتَاْتِ طَآئِفَةٌ اُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا
مَعَكَ وَلْيَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ وَدَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ
عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ
اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَنْ تَضَعُوْٓا اَسْلِحَتَكُمْ وَ
خُذُوْا حِذْرَكُمْ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٠٢﴾
فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا
وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ اِنَّ
الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿١٠٣﴾ وَلَا
تَهِنُوْا فِى ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ
يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ وَ
كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٠٤﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ
بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا ﴿١٠٥﴾

ع

منزل ١

और जब आप उनके बीच हों और उनके लिए नमाज़ खड़ी करें तो उनमें से एक गिरोह आपके साथ खड़ा हो और वे हथियार अपने साथ ले ले फिर जब वे सज्दा कर लें तो वे तुम्हारे पीछे चले जाएं और दूसरा गिरोह जिसने नमाज़ नहीं पढ़ी है वह आ जाए फिर वह आपके साथ नमाज़ पढ़े और वे भी अपने बचाव का सामान और हथियार साथ रखें, काफ़िर तो चाहते हैं कि तुम अपने हथियार और सामान से असावधान (गाफ़िल) हो जाओ तो वे एक साथ (अचानक) तुम पर टूट पड़ें[1] और तुम पर कोई पाप नहीं कि अगर तुम्हें बारिश से तकलीफ़ हो या तुम बीमार हो तो तुम अपने हथियार उतार रखो और अपने बचाव का सामान लिये रहो बेशक अल्लाह ने काफ़िरों के लिए अपमानजनक अज़ाब तैयार कर रखा है[2] (102) फिर जब नमाज़ पूरी कर लो तो खड़े और बैठे और लेटे अल्लाह को याद करते रहो फिर जब तुम्हें इत्मिनान हो जाए तो नमाज़ नियमानुसार पढ़ो, बेशक नमाज़ ईमान वालों पर निर्धारित समय पर फर्ज़ है[3] (103) और दुश्मन क़ौम का पीछा करने में हिम्मत मत हारना, अगर तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती है तो जैसे तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती है वैसे ही उन्हें भी पहुँचती है और तुम अल्लाह से वह आशा करते हो जो वे नहीं कर सकते और अल्लाह ख़ूब जानने वाला बड़ी हिकमत वाला है (104) बेशक हमने आप पर ठीक–ठीक किताब उतार दी ताकि जैसा अल्लाह ने आपको रास्ता दिखाया उसके अनुसार आप लोगों में फ़ैसला करते रहें और ख़यानत (विश्वासघात) करने वालों के पक्षधर न हो जाएं[4] (105)

(1) यह नमाज़–ए–ख़ौफ़ का बयान है, इस क्रम से पढ़ सकें तो पढ़ लें वरना जिस तरह अकेले, सवार होकर, बैठकर बन पड़े पढ़ लें और अगर यह भी संभव न हो तो कज़ा पढ़ें (2) किसी कारण हथियार उतार दिये जाएं लेकिन सुरक्षा के साधन न छोड़े जाएं और सतर्क रहा जाए (3) डर समाप्त हो जाए तो नमाज़ उसी ढंग से पढ़ी जाए जैसे कानून (शरीअत) में बताया गया है, नमाज़ के अलावा ज़िक्र ज़्यादा से ज़्यादा किया जाए (4) बिश्र नामक एक मुनाफ़िक़ ने चोरी की, आटे की बोरी में छेद था उसको पता न चला और बोरी अपने घर ले गया फिर एक यहूदी के यहाँ अमानत (धरोहर) रख आया, निशान पर पहले वे खुद पकड़ा गया लेकिन अपने बरी होने की क़समें खाने लगा और यहूदी का पता बता दिया, बोरी उसके यहाँ मिल गई तो उसने कहा कि मैंने अमानत (धरोहर) के रूप में इसको रखा है, इधर बिश्र के बिरादरी वाले बनी उबैरिक़ उसके पक्षधर हो कर आ गए, उन लोगों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आकर इतनी ज़ोरदार वकालत शुरु कर दी कि आप को शुब्हा होने लगा कि बिश्र बरी है, और चोरी यहूदी ने की है इस पर यह आयत उतरी और बिश्र की चोरी का परदा चाक कर दिया गया, जब उसको अपने राज़ फ़ाश होने का पता चला तो वह भाग कर मक्के के काफ़िरों से जा मिला और वहाँ कुफ़्र की हालत में बुरी मौत मरा।

وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۰۶﴾ وَلَا تُجَادِلْ
عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ
كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ﴿۱۰۷﴾ يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا
يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى
مِنَ الْقَوْلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ﴿۱۰۸﴾ هٰۤاَنْتُمْ
هٰۤؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فَمَنْ يُّجَادِلُ
اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿۱۰۹﴾ وَ
مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ
اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۱۰﴾ وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰى
نَفْسِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۱۱﴾ وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓـَٔةً
اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓــًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۱۱۲﴾
وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ
اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ
شَیْءٍ ؕ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ
مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿۱۱۳﴾

منزل۱

और अल्लाह से माफ़ी मांगते रहिये, बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है[1] (106) और उन लोगों की ओर से बहस न कीजिए जो अपने मन में धोखा रखते हैं बेशक अल्लाह उसको पसंद नहीं करता जो धोखेबाज़ पापी हो (107) वे लोगों से शर्माते हैं और अल्लाह से उनको शर्म नहीं आती जबकि वह उस समय भी उनके साथ है जब वे रात को ऐसी बात का मश्वरा करते हैं[2] जो उसे पसंद नहीं और वे जो कुछ करते हैं वह सब अल्लाह के वश में है (108) हाँ तुम लोगों ने दुनिया में उनकी ओर से बहस कर भी ली तो क़यामत के दिन अल्लाह से कौन उनकी ओर से बहस करेगा या कौन उनका काम बनाने वाला होगा[3] (109) और जो भी बुराई करेगा या अपने साथ अन्याय करेगा फिर अल्लाह से माफ़ी चाहेगा तो वह अल्लाह को बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु पाएगा[4] (110) और जो गुनाह कमाता है वह उसे अपने ही सिर लेता है और अल्लाह ख़ूब जानने वाला बड़ी हिकमत वाला है (111) और जिसने खुद गलती या पाप किया फिर उसको किसी निर्दोष के सिर थोप दिया तो उसने आरोप और बड़ा गुनाह अपने ऊपर लाद लिया[5] (112) और अगर आप पर अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) और उसकी रहमत न होती तो उनके एक गिरोह का इरादा तो यह था कि वह आपको रास्ते ही से हटा दे हालांकि वे तो अपने आपको गुमराह कर रहे हैं और वे आपको कुछ भी नुकसान नहीं पहुँचा सकते और अल्लाह ने आप पर किताब व हिकमत उतारी और जो आप जानते न थे वह आपको सिखाया और आप पर तो अल्लाह का बड़ा ही फ़ज़्ल (कृपा) रहा है[6] (113)

---

(1) चूँकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिमाग़ में बात आई थी कि शायद यहूदी ही गलती पर हो, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बुलंद दर्जे को देखते हुए इस पर माफ़ी मांगने का आदेश दिया जा रहा है (2) जब बात खुल गई तो हो सकता था कि अपनी दयालुता के कारण हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके लिए माफ़ी की दुआ करते तो कह दिया गया कि इन नालायक़ों के बारे में क्यों अल्लाह से ज़ोर दे देकर क्षमा चाहते हो ये तो रातों में छिप–छिप कर अवैध मश्वरे करते हैं (3) इसमें चोर की क़ौम और उसके पक्षधरों से संबोधन है (4) अत्याचार और अन्याय करने वालों के पक्ष लेने से उन अत्याचारियों को कुछ लाभ नहीं, उनको चाहिए कि तौबा करें और माफ़ी माँगें (5) पाप दोहरा होगा चोरी खुद की और आरोप दूसरे के सिर मढ़ा (6) चोर के पक्षधरों ने इस ढंग से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बात की कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी उनकी सच्चाई का विचार होने लगा और लगता था कि वे अपने पक्ष में फ़ैसला करा लेंगे लेकिन आयत उतर आई और सत्य सामने आ गया और यह पैग़म्बर की विशेषता है कि वह कभी ग़लत राय पर क़ायम नहीं रह सकता।

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّن نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ
مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ
ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١١٤﴾ وَمَن
يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَ
يَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ
جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿١١٥﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ
بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ
فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١١٦﴾ إِن يَدْعُونَ مِن دُونِهِ إِلَّا
إِنَاثًا وَإِن يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَّرِيدًا ﴿١١٧﴾ لَّعَنَهُ اللَّهُ ۘ
وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ﴿١١٨﴾
وَلَأُضِلَّنَّهُمْ وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ آذَانَ
الْأَنْعَامِ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللَّهِ ۚ وَمَن يَتَّخِذِ
الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِّن دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِينًا ﴿١١٩﴾
يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢٠﴾
أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا ﴿١٢١﴾

منزل ١

उनकी अधिकतर काना फूसियों में भलाई नहीं है हाँ कोई सद्क़ा (ख़ैरात) की बात कहे और जो भी अल्लाह की खुशी चाहते हुए ऐसा करेगा तो हम आगे उसको बड़े बदले से सम्मानित करेंगे[1] (114) और जो सही रास्ता सामने आजाने के बाद भी पैग़म्बर का विरोध करेगा और ईमान वालों के रास्ते से हट कर चलेगा तो वह जिधर भी मुँह करेगा उसी दिशा पर हम उसको डाल देंगे और उसको दोज़ख में पहुँचा देंगे और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है[2] (115) अल्लाह इसको माफ़ नहीं करता कि उसके साथ साझीदार बनाया जाए और इसके अलावा जिसको चाहेगा माफ़ कर देगा और जिसने अल्लाह के साथ साझी ठहराया बेशक वह दूर जा भटका[3] (116) अल्लाह को छोड़ कर बस वे औरतों (देवियों) को पुकारते हैं और वे तो बस सरकश शैतान की ही दुहाई देते हैं (117) जिस पर अल्लाह ने फिटकार की और उसने कहा कि मैं तेरे बन्दों में निर्धारित हिस्सा लेकर रहूँगा (118) और मैं उनको ज़रूर गुमराह करूँगा और उनको कामनाओं में रखूँगा और उनको सिखा दूँगा तो वे ज़रूर जानवरों के कान काटेंगे और उनको सिखा कर रहूँगा तो वे ज़रूर अल्लाह के बनाए रूप को बदलेंगे और जो अल्लाह के अलावा शैतान को अपना दोस्त बनाएगा उसने खुला नुक़सान उठाया (119) वह उनसे वादा करता और कामनाओं में रखता है और शैतान उनसे जो भी वादा करता है सब धोखा है (120) यही लोग हैं जिनका ठिकाना दोज़ख है और वे उससे छुटकारे का कोई रास्ता न पा सकेंगे[4] (121)

---

(1) मुनाफ़िकों का यह काम था कि वे आपस में बेहूदा काना–फूसियाँ किया करते थे, किसी की पीठ पीछे बुराई, किसी की कमी निकालना, किसी की शिकायत करना (2) आयत से दो बातें मालूम हुईं, एक तो यह कि जो ग़लत रास्ते पर पड़ कर उसको सही समझता है और सच की तलाश नहीं करता वह गुमराही में पड़ता जाता है, दूसरी यह कि ईमान वालों के रास्ते को छोड़ना रास्ता भटकना है, फ़क़ीहों (इस्लामी विधि शास्त्रियों) ने इसी से फ़िक़्ह (इस्लामी विधि शास्त्र) के एक नियम "इज्मा" के लिए तर्क निकाला है (3) जब बात साफ़ हो गई तो बजाय इसके कि चोर तौबा करता वह हाथ कटने के डर से मक्के जाकर मुश्रिकों से मिल गया, पहले माफ़ी की संभावना थी अब समाप्त हो गई, शिर्क ऐसी चीज़ है कि वह बिना तौबा के माफ़ होती ही नहीं (4) मुश्रिकों ने मूर्तियाँ बना रखी थीं जिनको महिलाओं के नाम दे रखे थे जैसे उज़्ज़ा, लात, मनात आदि, उनको पूजते थे और वास्तव में शैतान को पूजते थे, जिसने बहका कर मूर्ति पूजा में लगाया, जो पहले दिन से इंसान का दुश्मन है, और उसने अल्लाह से कहा कि मैं तेरे बन्दों को बहका कर रहूँगा, उनको लालच दूँगा, वादा करूँगा और सब गलत काम करवाऊँगा, उस समय रिवाज था कि मूर्ति के नाम पर जानवर का बच्चा छोड़ते तो उसके कान का एक भाग काट देते या छेद कर देते, अपने शरीर को गोदवाते और उसमें अपने माबूदों (उपास्यों) के नाम भरवाते, जब शैतान की सारी दुश्मनियाँ मालूम हो गईं फिर उसके बाद उसकी बात मानना अपने आप को दोज़ख के रास्ते पर डालना है, जिससे बचाव का कोई उपाय नहीं।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ
حَقًّا ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿۱۲۲﴾ لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ
وَلَاۤ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَ
لَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۱۲۳﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ
مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ
يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿۱۲۴﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ
دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ
اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿۱۲۵﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿۱۲۶﴾
وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا
يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا
تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ
وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى
بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿۱۲۷﴾

منزل ۱

और जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये उनको हम जल्द ही ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी उन्हीं में हमेशा के लिए रह पड़ेंगे, अल्लाह का सच्चा वादा है और अल्लाह से बढ़ कर सच्ची बात कहने वाला और कौन हो सकता है[1] (122) न तुम्हारी कामनाओं से कुछ होगा और न अहले किताब की कामनाओं से कुछ हुआ है जो भी बुराई करेगा उसकी सज़ा पाएगा और वह अपने लिए अल्लाह के सिवा किसी को समर्थक और मददगार न पा सकेगा[2] (123) और जो व्यक्ति भी भले काम करेगा वह मर्द हो या औरत इस शर्त के साथ कि वह ईमान वाला हो तो वे लोग जन्नत में दाखिल किए जाएंगे और रत्ती भर भी उनके साथ अन्याय न होगा (124) और उससे अच्छा दीन (धर्म) किसका हो सकता है जो अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दे और वह अच्छे काम करने वाला हो और वह एकाग्र हो कर इब्राहीमी मिल्लत की पैरवी करे[3] और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना चहेता बनाया है (125) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है वह सब अल्लाह का है और हर चीज़ अल्लाह के घेरे में है (126) और वे औरतों के बारे में आप से आदेश पूछते हैं, आप कह दीजिए कि अल्लाह तुम्हें उनके बारे में अनुमति देता है और किताब में जिन अनाथ लड़कियों के बारे में जो तुम्हें बताया जाता रहा है यह वे हैं जिनको तुम उनका अधिकार नहीं देते और उनसे तुम निकाह (विवाह) करना चाहते हो और कमज़ोर हाल बच्चों के बारे में (तुम्हें भलाई की ताकीद की गई है) और यह कि तुम अनाथों के लिए न्याय पर क़ायम रहो और तुम भलाई करोगे तो बेशक अल्लाह उसको जानता ही है[4] (127)

(1) जो शैतान की चालों से बचे और उन्होंने अल्लाह को माना और अच्छे काम किये, उनके लिए जन्नतें हैं, यह अल्लाह का वादा है और उससे बढ़ कर सच्ची बात किसकी हो सकती है (2) यहूदियों और ईसाइयों का अक़ीदा (विश्वास) है कि हम कुछ भी करें हमारे पैग़म्बर हमको बचा लेंगे, बहुत से मुसलमानों में भी यह ग़लत अक़ीदा (विश्वास) पैदा होने लगा, इसी का इनकार किया जा रहा है, साफ़–साफ़ कहा जा रहा है कि आमाल (कर्म) ही आधार है, शिर्क के बदले तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी सिफ़ारिश नहीं करेंगे और जिसकी भी आप सिफारिश करेंगे अल्लाह की इजाज़त से करेंगे (3) यह गुण सहाबा पर पूर्णरूप से सिद्ध होते हैं और जो भी उनके रास्ते पर चलेगा वह भी इसका अधिकारी होगा (4) सूरह के शुरु में अनाथों के अधिकार देने पर बल दिया गया था और कहा गया था कि अनाथ बच्ची का अभिभावक अगर समझता हो कि मैं हक अदा न कर सकूँगा तो वह निकाह (विवाह) न करे, दूसरे से कर दे, उसपर मुसलमानों ने ऐसी महिलाओं से निकाह (विवाह) बंद कर दिया था मगर अनुभव से मालूम हुआ कि कुछ स्थानों पर वली (अभिभावक) का निकाह (विवाह) कर लेना ही अच्छा होता है जो देख–रेख वह करेगा दूसरा न करेगा, तब सहाबा ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसकी अनुमति मांगी, उस पर यह आयत उतरी और अनुमति मिल गई और कह दिया गया पहले वाली मनाही भी उस हालत में थी जब उनका अधिकार न दिया जाता और अनाथों का अधिकार देने पर बल दिया गया था, तो जो भलाई करने के इरादे से निकाह (विवाह) करता है तो उसे अनुमति है।

وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ۭ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ۭ
وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ۭ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ
كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝١٢٨ وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا
بَيْنَ النِّسَاۗءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْھَا
كَالْمُعَلَّقَةِ ۭ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ۝١٢٩ وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ۭ وَكَانَ
اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ۝١٣٠ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ
وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ
اتَّقُوا اللّٰهَ ۭ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ۝١٣١ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝١٣٢ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ
اَيُّھَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي ذٰلِكَ
قَدِيْرًا ۝١٣٣ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ
ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ۝١٣٤

منزل ١

और अगर किसी औरत को अपने पति की ओर से उखड़े रहने या बेरूख़ी का डर हो तो इसमें उन दोनों के लिए कोई हरज नहीं कि वे आपस में कुछ सुलह कर लें और सुलह बेहतर है और स्वभाव में तो लालच आगे–आगे रहती है और अगर तुम भले काम करो और परहेज़गारी रखो तो बेशक अल्लाह तुम्हारे सब कामों की ख़बर रखता है[1] (128) और तुम जितना भी चाहो पत्नियों के बीच हरगिज़ बराबरी नहीं कर सकते तो तुम्हारा झुकाव पूरी तरह एक ओर न रहे कि दूसरी को अधर में लटकती छोड़ दो और अगर तुम सहमति बना लो और परहेज़गारी करो तो बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है[2] (129) और अगर दोनों अलग हो जाएं तो अल्लाह हर एक को अपनी गुंजाइश से बेनियाज़ कर देगा और अल्लाह बड़ी गुंजाइश वाला बड़ी हिकमत वाला है[3] (130) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और जिन लोगों को तुमसे पहले किताब दी जा चुकी है हम उनसे भी कह चुके और तुमसे भी कि अल्लाह से डरते रहो और अगर तुम इनकार करने वाले हुए तो बेशक जो भी आसमानों में और जो भी ज़मीन में है वह सब अल्लाह का है और अल्लाह तो बेनियाज़ प्रशंसनीय है (131) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है और काम बनाने के लिए अल्लाह काफ़ी है[4] (132) और अगर वह चाहे तो ऐ लोगो! वह तुम सबको चलता कर दे और दूसरों को ले आए और अल्लाह इस चीज़ पर पूर्ण रूप से समर्थ है[5] (133) जो कोई दुनिया का इनआम चाहता हो तो अल्लाह के पास तो दुनिया व आख़िरत दोनों जगह का इनआम है और अल्लाह ख़ूब सुनता ख़ूब नज़र रखता है[6] (134)

(1) औरत बेरूख़ी महसूस करे और वह अपने कुछ अधिकारों को छोड़ कर सुलह–सफ़ाई के साथ रहना चाहे तो यह अलग होने से बेहतर ही है, स्वभाव में लालच होता है मर्द बोझ हलका महसूस करेगा तो राज़ी हो जाएगा लेकिन मर्दों को चाहिए कि वे अच्छा व्यवहार करें और परेशान न करें (2) अगर कई पत्नियाँ हैं तो सबमें बराबरी अनिवार्य है, हाँ हार्दिक संबंध पर पकड़ नहीं है, यह न हो कि जिससे संबंध नहीं है उसको यूँ ही छोड़े रखे न अधिकार दे न अलग करे (3) अगर निभ न रही हो तो अलगाव का भी प्रावधान है, अल्लाह सबका काम बनाने वाला है (4) तीन बार कहा गया कि अल्लाह ही का है जो ज़मीन व आसमान में है, पहली बार उसकी विशालता का उल्लेख है दूसरी बार उसकी बेनियाज़ी का, अगर तुम नहीं मानते तो इससे उसका क्या नुकसान होगा वह हर चीज़ से बेनियाज़ है यानी उसको किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं और तीसरी बार काम बनाने का, अगर तुम तक़वा अपनाओ तो वह तुम्हारा काम बनाता चला जाएगा। (5) इसमें भी उसकी बेनियाज़ी का बयान है (6) अगर तुम अल्लाह की आज्ञा का पालन करो तो तुम्हें दीन व दुनिया की नेअ़मतें हासिल हों, तो उससे बढ़कर मूर्ख कौन होगा जो दुनिया के लिए आख़िरत को गंवाए।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ
وَلَوْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا
اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ
وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۳۵﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ
عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ
وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ
بَعِيْدًا ﴿۱۳۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ
ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ؕ﴿۱۳۷﴾
بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمَا ﴿۱۳۸﴾ ۙ الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ
الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ
الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ﴿۱۳۹﴾ وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ
اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا
مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ ۖ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعَا ۙ﴿۱۴۰﴾

منزل ۱

ऐ ईमान वालो! इन्साफ़ पर क़ायम रहने वाले, अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बनकर रहो चाहे वह खुद तुम्हारे ख़िलाफ़ पड़े या माँ–बाप और निकट संबन्धियों के ख़िलाफ़ पड़े, अगर कोई धनी है या मोहताज है तो अल्लाह इन दोनों का उनसे अधिक शुभचिंतक है तो तुम इच्छा पर मत चलो कि इन्साफ़ न करो और अगर तुम तोड़–मरोड़ करोगे या नज़र अंदाज़ कर जाआगे तो अल्लाह तुम्हारे कामों की ख़ूब ख़बर रखने वाला है[1] (135) ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर और उस किताब पर जो उसने अपने पैग़म्बर पर उतारी और उस किताब पर जो उसने पहले उतारी विश्वास पैदा करो और जिसने अल्लाह और उसके फरिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों और आख़िरत के दिन को न माना वह दूर जा भटका (136) बेशक वे लोग जो ईमान लाए फिर इनकार किया फिर ईमान लाए फिर इनकार में बढ़ते चले गए अल्लाह उनको हरगिज़ माफ़ करने वाला नहीं और न ही उनको रास्ता देने वाला है[2] (137) मुनाफ़िकों को ख़ुशख़बरी दे दीजिए कि निश्चित ही उनके लिए दुखदायी अज़ाब है (138) जो ईमान वालों को छोड़ कर काफिरों को अपना दोस्त बनाते हैं, क्या उनके पास वे इज़्ज़त की तलाश में हैं बस इज़्ज़त तो सब की सब अल्लाह ही के लिए है (139) और वह तो तुम पर किताब में यह बात उतार चुका कि जब भी तुम अल्लाह की आयतों का इनकार होते और मज़ाक बनते सुनो तो ऐसों के साथ मत बैठो जब तक वे उसके अलावा दूसरी बात में न लग जाएं वरना तो तुम भी उन्हीं की तरह हो जाओगे, बेशक अल्लाह मुनाफ़िकों और काफ़िरों को एक साथ दोज़ख में इकट्ठा करके रहेगा[3] (140)

---

(1) गवाही इन्साफ़ के साथ दो और उसमें अमीर व ग़रीब का भेद भी मत करो और न अपना व पराया देखो, जो बात सच हो वह कह दो, अगर उसमें किसी ग़रीब का नुकसान हो भी रहा हो तो अल्लाह उनका उनसे अधिक शुभचिंतक है और अगर तुम इधर की उधर करोगे और सच्ची बात बताने से बचोगे तो अल्लाह सब जानता है तुम्हें उसकी सजा भुगतनी पड़ेगी (2) ईमान वालों को ताक़ीद है कि वे अपने ईमान की रक्षा करें विश्वास पैदा करें ताकि कुफ़्र से नफ़रत पैदा हो जाए और जो ईमान लाकर काफ़िर हुए फिर ईमान ले आए फिर काफ़िर हो गये केवल दुनिया की लोभ में और उनका कुफ़्र बढ़ता गया तो यह लोग दूर गुमराही में जा पड़े, यह मुनाफ़िकों का उल्लेख है और यहूदियों का कि मूसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान लाए फिर बछड़ा पूज कर काफ़िर हो गए फिर तौबा की फिर ईसा अ़लैहिस्सलाम का इनकार कर काफ़िर हो गए फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इनकार करके कुफ़्र व इनकार में पक्के हो गए (3) मुनाफ़िकों का काम ही दीन (धर्म) का मज़ाक उड़ाना था, उनकी सभाएं इससे ख़ाली न होती थीं, मुसलमानों को आदेश है कि ऐसी सभाओं में बैठने से बचें वरना उन्हीं में उनकी गिनती होगी।

الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ فَإِن كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللَّهِ قَالُوا
أَلَمْ نَكُن مَّعَكُمْ وَإِن كَانَ لِلْكَافِرِينَ نَصِيبٌ قَالُوا أَلَمْ
نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُم مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَن يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ﴿١٤١﴾
إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوا
إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كُسَالَىٰ يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ
اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٤٢﴾ مُّذَبْذَبِينَ بَيْنَ ذَٰلِكَ لَا إِلَىٰ هَٰؤُلَاءِ وَلَا
إِلَىٰ هَٰؤُلَاءِ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ﴿١٤٣﴾ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ
الْمُؤْمِنِينَ أَتُرِيدُونَ أَن تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ﴿١٤٤﴾
إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَن تَجِدَ
لَهُمْ نَصِيرًا ﴿١٤٥﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللَّهِ
وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ وَسَوْفَ يُؤْتِ
اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٤٦﴾ مَّا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَذَابِكُمْ
إِن شَكَرْتُمْ وَآمَنتُمْ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ﴿١٤٧﴾

منزل ١

जो तुम्हारी ताक में रहते हैं, फिर अगर अल्लाह की ओर से तुम्हें विजय (फ़तह) प्राप्त हुई तो कहते हैं क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और अगर काफ़िरों की क़िस्मत ने साथ दिया तो उनसे कहते हैं कि क्या हमने तुम्हें घेर न रखा था और मुसलमानों से बचाया न था? बस अल्लाह ही क़यामत के दिन उनके बीच फ़ैसला कर देगा और अल्लाह हरगिज़ मुसलमानों पर काफ़िरों को कोई राह न देगा[1] (141) बेशक मुनाफ़िक़ लोग अल्लाह से चाल चल रहे हैं हालाँकि अल्लाह उन्हीं पर चालों को उलट रहा है[2] और जब नमाज़ में खड़े होते हैं तो बेदिली के साथ खड़े होते हैं (मात्र) लोगों को दिखाते हैं और अल्लाह को तो कुछ यूँ ही सा याद करते हैं (142) उसी के बीच डांवाडोल रहते हैं न इधर के न उधर के और अल्लाह जिसको गुमराह कर दे आप हरगिज़ उसके लिए रास्ता नहीं पा सकते[3] (143) ऐ ईमान वालो! मुसलमानों को छोड़कर काफिरों को अपना दोस्त मत बनाओ, क्या तुम चाहते हो कि तुम अपने खिलाफ़ अल्लाह का खुला तर्क (हुज्जत) स्थापित कर लो[4] (144) बेशक मुनाफिक़ दोज़ख़ के सबसे निचले दर्जे में होंगे और आप उनका कोई मददगार न पाएंगे (145) सिवाय उन लोगों के जिन्होंने तौबा की और सुधार कर ली और मज़बूती के साथ अल्लाह का सहारा पकड़ा और अपने दीन (धर्म) को अल्लाह के लिए ख़ालिस (शुद्ध) कर लिया तो वे लोग ईमान वालों के साथ हैं और आगे अल्लाह ईमान वालों को बड़ा बदला देने वाला है (146) अगर तुम शुक्र करने वाले बन जाओ और मान लो तो अल्लाह तुम्हें अज़ाब दे कर क्या करेगा और अल्लाह तो बड़ी क़द्र करने वाला और ख़ूब जानने वाला है[5] (147)

---

(1) दुनिया के लोभी हैं मुसलमानों की विजय होती है तो उनमें शामिल होना चाहते हैं माल–ए–ग़नीमत (युद्ध में शत्रु धन) की लालच में, और काफ़िरों की विजय हो तो उनके पास जाकर एहसान जताते हैं कि तुम हारने वाले थे और हमने तुम्हे बचाया अतः हमें उसका आर्थिक लाभ दो और उनकी असल कामना तो यह है कि मुसलमान मिट जाएं और यह क़यामत तक नहीं हो सकता, अल्लाह तआला इसका अवसर नहीं देगा (2) अपने कुफ़्र व इनकार को छिपा कर समझते थे कि धोखे में डाले रखेंगे, अल्लाह ने सब खोल दिया कि अब किसी लायक़ न रहे और खुद ऐसा धोखा खाए कि दुनिया व आख़िरत दोनों गंवा दिये (3) मुनाफिकों का हाल बयान हो रहा है कि नमाज़ भी दिखाने के लिए पढ़ते हैं ताकि मुसलमान समझे जाएं, न उनको इस्लाम पर भरोसा है और न कुफ़्र व इनकार पर, बहुत ही दुविधा और आश्चर्य में डांवाडोल हो रहे हैं (4) काफिरों से दोस्ती करना मुनाफिक़ों का काम है, तो तुम उससे दूर रहो ताकि तुम्हारे विरूद्ध कोई प्रमाण न स्थापित हो जाए, और मुनाफिक़ों का हाल अगली आयत में बयान हो रहा है (5) जो भी काफ़िर या मुनाफिक़ तौबा कर ले और सुधार कर ले तो अल्लाह दण्ड क्यों देगा, वह तो बड़ा ही दयालु और कृपालु है, तुम मान लो तो उसकी नेमतों का मज़ा उठाओ।

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ
وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿١٤٨﴾ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا
عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿١٤٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ
بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ
وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ
يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١٥٠﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَ
اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٥١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ
رُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ۗ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٥٢﴾ يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ
عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ
فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ
اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ
ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٣﴾ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ
الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا
لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِى السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿١٥٤﴾

منزل ١

अल्लाह (किसी की) बुरी बात की चर्चा पसंद नहीं करता सिवाय उसके जिसपर अत्याचार हुआ हो और अल्लाह ख़ूब सुनता जानता है[1] (148) तुम अगर भलाई खोलकर करो या छिपाकर करो या बुराई को छोड़ दो तो बेशक अल्लाह तो बहुत माफ़ करने वाला कुदरत (सामर्थ्य) रखने वाला है[2] (149) बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इनकार करते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके पैग़म्बरों में फ़र्क करें और कहते हैं कि कुछ को हम मानते हैं और कुछ को नहीं मानते और वे उसके बीच से रास्ता निकालना चाहते हैं (150) वही लोग वास्तव में काफ़िर हैं और काफ़िरों के लिए हमने अपमानजनक अज़ाब तैयार कर रखा है[3] (151) और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए हैं और उनमें किसी के बीच फ़र्क नहीं किया ऐसों को अल्लाह जल्द ही उनके बदले दे देगा और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला और बड़ा ही दयालु है (152) अहले किताब आप से मांग करते हैं कि आप उनपर आसमान से कोई किताब उतार दें तो मूसा से वे इससे बड़ी मांग कर चुके हैं तो उन्होंने कहा था कि हमें अल्लाह खुल्लम–खुल्ला दिखा दीजिए तो उनके इस नाहक़ काम की वजह से बिजली उन पर आ गिरी फिर उनके पास खुली निशानियां आने के बाद भी उन्होंने बछड़ा बना लिया तो हमने उसे माफ़ किया और हमने मूसा को खुली सत्ता प्रदान की (153) और उनसे वादा लेने के लिए हमने उनके ऊपर तूर पहाड़ को उठा दिया और हमने उनसे कहा कि दरवाज़े से सिरों को झुकाकर प्रवेश करना और हमने उनसे कहा कि सनीचर में सीमा न लांघना और हमने उनसे दृढ़ संकल्प लिया[4] (154)

---

(1) अनावश्यक लोगों की बुराइयां न ज़ाहिर की जाएं, ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) अल्लाह को बिल्कुल पसंद नहीं है, हां अगर कोई सताया हुआ है तो वह अपने बचाव के लिए अत्याचारी के अत्याचार को बयान कर सकता है और अल्लाह ख़ूब सुनता जानता है, अगर उसको न भी बयान किया गया तो अल्लाह पीड़ित का काम बनाने वाला है (2) इसमें ताकीद है कि अल्लाह शक्ति के बावजूद माफ़ करता है तो बन्दों के लिए भी माफ़ कर देना बेहतर है (3) विशेष रूप से यहूदियों का उल्लेख है जो मूसा को मानते थे, ईसा अ़लैहिस्सलाम का इनकार करते थे और जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबी बनाकर भेजे गये तो यहूदियों और ईसाइयों दोनों ने इनकार कर दिया (4) कुछ यहूदी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए और कहने लगे कि अगर आप पैग़म्बर हैं तो आसमान से लिखी लिखाई किताब लाकर दीजिए जैसा कि मूसा अ़लैहिस्सलाम लाए थे, उस पर यह आयत उतरी कि उन्होंने मूसा अ़लैहिस्सलाम से कैसी–कैसी मांगें की जो पूरी हुईं फिर भी इनकार कर गए और बछड़ा पूजने लगे और जो आदेश दिये गए उनको न माना, तूर पहाड़ उनके ऊपर कर दिया गया और कहा गया कि मानो वरना पहाड़ तुम पर गिरा दिया जाएगा तो विवश होकर माना, जब कहा गया कि शहर में झुकते हुए (विनम्रतापूर्वक) प्रवेश करो तो अकड़ते हुए और अपशब्द बकते हुए प्रवेश किया और जब कहा गया कि सनीचर के दिन का शिकार न करना तो भी न माने और हीले बहाने करके शिकार करने लगे, अल्लाह कहता है कि सारी निशानियों को देख कर भी उन्होंने न माना तो अब उनकी नई मांगों पर निशानियां दिखा भी दी जाएं तो उनको क्या हासिल।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ
بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ۭ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ
فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿155﴾ وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰي مَرْيَمَ بُهْتَانًا
عَظِيْمًا ﴿156﴾ وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ
اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ
اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ۭ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ
الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ﴿157﴾ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا
حَكِيْمًا ﴿158﴾ وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ
وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ﴿159﴾ فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا
حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
كَثِيْرًا ﴿160﴾ وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ
بِالْبَاطِلِ ۭ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿161﴾ لٰكِنِ
الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ
وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ
الْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿162﴾

ع ٢٢

منزل ١

तो उनके अहद (प्रतिज्ञा) तोड़ने, अल्लाह की आयतों का इनकार और नबियों के नाहक़ क़त्ल की वजह से और उनकी इस बात पर कि हमारे दिलों पर मोहर लगी हुई है (अल्लाह ने उनपर फिटकार की) बल्कि उनके इनकार की वजह से उनके दिलों पर मोहर लगा दी तो बहुत ही कम वे ईमान लाते हैं[1] (155) और उनके कुफ़्र और मरियम पर बड़ा लांछन लगाने की वजह से[2] (156) और उनकी इस बात पर कि हमने अल्लाह के पैग़म्बर मरियम के बेटे ईसा मसीह को क़त्ल किया जबकि उन्होंने न उनको क़त्ल किया और न सूली दी बल्कि उनको संदेह में डाल दिया गया और जो लोग भी उनके बारे में मतभेद में पड़े वे ज़रूर उनके बारे में शक में पड़े हुए हैं, अटकल मारने के अलावा उनके पास इसकी कोई जानकारी नहीं और यह तय है कि उन्होंने उन को क़त्ल नहीं किया (157) बल्कि अल्लाह ने उनको अपने पास उठा लिया और अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हिकमत वाला है[3] (158) और अहल–ए–किताब में से हर एक उनकी मौत से पहले ज़रूर उन पर ईमान लाकर रहेगा और क़यामत के दिन वे उनपर गवाह होंगे[4] (159) तो यहूदियों के अत्याचार के कारण हमने कितनी ही पवित्र चीज़ें उनपर ह़राम कर दीं जो उनके लिए ह़लाल की जा चुकी थीं और इस वजह से कि वे अधिकतर अल्लाह के रास्ते का रोड़ा बनते थे (160) और उनके ब्याज लेने की वजह से जबकि उनको इससे रोका जा चुका था और नाहक़ (अनाधिकारिक रूप से) लोगों के माल खाने की वजह से और हमने उनमें इनकार करने वालों के लिए दुखद अज़ाब तैयार कर रखा है(161) लेकिन उनमें इल्म (ज्ञान) में गहराई रखने वाले और ईमान वाले उसको भी मानते हैं जो आप पर उतारा गया और उसको भी जो आप से पहले उतारा जा चुका और हर हाल में वे नमाज़ क़ायम रखते हैं[5], और ज़कात देने वाले और अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखने वाले यह सब ऐसे ही लोग हैं जिनको हम आगे बड़े बदले से सम्मानित करेंगे (162)

(1) उनका काम लगातार नाफ़रमानियां (अवज्ञा) करना है वे ईमान लाने वाले नहीं हैं (2) हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का इनकार किया हज़रत मरियम पर अवैध संबंध का लांछन लगाया (3) यहूदी कहते हैं कि हमने ईसा को सूली (फांसी) पर चढ़ा दिया, ईसाई विभिन्न प्रकार की बातें करते हैं, कोई कहता है कि शरीर को सूली हुई पवित्र आत्मा ऊपर चली गई, कोई कहता है कि सूली (फांसी) के तीन दिन बाद उठा लिए गए और सही बात यह है कि न उनको क़त्ल किया जा सका और न सूली (फांसी) पर चढ़ाया जा सका बल्कि अल्लाह ने उनको अपने पास उठा लिया, हाँ सूली (फांसी) देने वालों को संदेह में डाल दिया गया और वह यह कि उनको सूली के लिए ले जाया जा रहा था तो शुक्रवार का दिन था और सूर्यास्त होने वाला था उसके बाद उनके सब काम बन्द हो जाते थे और सनीचर छुट्टी का दिन था इसलिए उनको फांसी की जल्दी थी, उनके यहां नियम था कि जिसको फांसी होनी होती थी वही सूली की लकड़ी लेकर चलता था, हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम कमज़ोर हो गए थे, लकड़ी उठाकर तेज़ चलना मुश्किल हो रहा था, उनमें एक मनचले ने लकड़ी उनसे ले ली और तेज़ तेज़ आगे बढ़ने लगा, जब सूली की जगह पहुंचे तो जो लकड़ी लिए हुए था उसी को पकड़ लिया गया और अल्लाह का करना कि वह ईसा अ़लैहिस्सलाम के मुशाबह (अनुरूप) कर दिया गया, बस सबने उसी को पकड़ कर सूली पर चढ़ा दिया, और उसी बीच हज़रत ईसा को उठा लिया गया, तो अपनी समझ से उन्होंने ईसा को फांसी पर लटकाया था और वास्तव में वह कोई और था (4) हज़रत ईसा जीवित हैं, दज्जाल के युग में आएंगे, उसको मारेंगे फिर सब यहूदी–ईसाई उन पर ईमान ले आएंगे और मुसलमान तो उनको पैग़म्बर मानते ही हैं (5) इससे विशेष रूप से नमाज़ का महत्व बताना मक़सद है कि अपने सारे वांछित गुणों के साथ किसी हाल में भी नमाज़ नहीं छोड़ते।

اِنَّآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ
وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ
وَالْاَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَاَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ
وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿١٦٣﴾ وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ
قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۭ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى
تَكْلِيْمًا ﴿١٦٤﴾ رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ
عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٦٥﴾
لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ
يَشْهَدُوْنَ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿١٦٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ
صَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿١٦٧﴾ اِنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ
طَرِيْقًا ﴿١٦٨﴾ اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ
عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٦٩﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاۗءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ
مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ۭ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧٠﴾

منزل ١

बेशक हमने आपकी ओर वह्य भेजी है जैसा कि हमने नूह और उनके बाद के नबियों की ओर वह्य भेजी और हमने इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उनकी संतान और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान की ओर भी वह्य भेजी और हमने दाऊद को ज़बूर दी (163) और कितने रसूल हैं जिनके हालात हम आपको पहले ही बता चुके और कितने पैग़म्बर हैं जिनके हालात हमने आपको अभी तक नहीं बताए और अल्लाह ने मूसा से अच्छे से बात की (164) यह वे रसूल हैं जो हमने भेजे शुभ समाचार सुनाने और सावधान करने के लिए ताकि इन पैग़म्बरों के बाद लोगों के लिए अल्लाह पर कोई आरोप न रह जाए और अल्लाह ज़बर्दस्त है हिकमत वाला है (165) लेकिन अल्लाह ने आप पर जो उतारा वह उस पर गवाह है, वह उसने अपने इल्म (ज्ञान) के साथ उतारा और फ़रिश्ते भी गवाह हैं और अल्लाह ही गवाही के लिए काफ़ी है[1] (166) बेशक जिन्होंने इनकार किया और अल्लाह के रास्ते में रोड़ा बने वे दूर जा भटके (167) बेशक अल्लाह काफ़िरों और हक़ दबाने वालों को हरगिज़ माफ़ करने वाला नहीं और न ही उनको रास्ता देने वाला है(168) सिवाय दोज़ख़ के रास्ते के उसी में वे हमेशा रहेंगे और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है (169) ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से पैग़म्बर सत्य लेकर आ चुका, बस ईमान ले आओ कि तुम्हारा भला हो और अगर तुम नहीं मानते तो आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वह सब अल्लाह ही का है और अल्लाह ख़ूब जानने वाला हिकमत वाला है[2] (170)

---

(1) पैग़म्बरों पर जो उतरा वह सत्य है सब पर ईमान लाना संक्षिप्त रूप से अनिवार्य है लेकिन जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरा उसमें वह इल्म (ज्ञान) है जो अल्लाह ने ज़ाहिर करने के लिए भेजा, यह विशेषता और किसी किताब को नहीं, यह किताब क़यामत तक इसी तरह क़ायम रहेगी इसकी एक–एक आयत और एक–एक शब्द को मानना अनिवार्य है (2) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अल्लाह की किताब की पुष्टि व सत्यापन और यहूदियों व ईसाईयों के गुमराह होने का एलान कर दिया गया कि सच आ चुका, सच्चे और अंतिम पैग़म्बर आ चुके, अंतिम किताब आ चुकी, मानोगे तो तुम्हारा भला है वरना अल्लाह में पूरी शक्ति है वह मानने वालों और न मानने वालों सबको जानता है, उसके अनुसार वह व्यवहार करेगा।

يَٰٓأَهۡلَ ٱلۡكِتَٰبِ لَا تَغۡلُواْ فِي دِينِكُمۡ وَلَا تَقُولُواْ عَلَى ٱللَّهِ
إِلَّا ٱلۡحَقَّۚ إِنَّمَا ٱلۡمَسِيحُ عِيسَى ٱبۡنُ مَرۡيَمَ رَسُولُ ٱللَّهِ وَكَلِمَتُهُۥٓ
أَلۡقَىٰهَآ إِلَىٰ مَرۡيَمَ وَرُوحٞ مِّنۡهُۖ فَـَٔامِنُواْ بِٱللَّهِ وَرُسُلِهِۦۖ وَلَا
تَقُولُواْ ثَلَٰثَةٌۚ ٱنتَهُواْ خَيۡرٗا لَّكُمۡۚ إِنَّمَا ٱللَّهُ إِلَٰهٞ وَٰحِدٞۖ
سُبۡحَٰنَهُۥٓ أَن يَكُونَ لَهُۥ وَلَدٞۘ لَّهُۥ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي
ٱلۡأَرۡضِۗ وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ وَكِيلٗا ﴿١٧١﴾ لَّن يَسۡتَنكِفَ ٱلۡمَسِيحُ أَن
يَكُونَ عَبۡدٗا لِّلَّهِ وَلَا ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ ٱلۡمُقَرَّبُونَۚ وَمَن يَسۡتَنكِفۡ
عَنۡ عِبَادَتِهِۦ وَيَسۡتَكۡبِرۡ فَسَيَحۡشُرُهُمۡ إِلَيۡهِ جَمِيعٗا ﴿١٧٢﴾ فَأَمَّا
ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ فَيُوَفِّيهِمۡ أُجُورَهُمۡ وَ
يَزِيدُهُم مِّن فَضۡلِهِۦۖ وَأَمَّا ٱلَّذِينَ ٱسۡتَنكَفُواْ وَٱسۡتَكۡبَرُواْ
فَيُعَذِّبُهُمۡ عَذَابًا أَلِيمٗا وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ
وَلِيّٗا وَلَا نَصِيرٗا ﴿١٧٣﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ قَدۡ جَآءَكُم بُرۡهَٰنٞ
مِّن رَّبِّكُمۡ وَأَنزَلۡنَآ إِلَيۡكُمۡ نُورٗا مُّبِينٗا ﴿١٧٤﴾ فَأَمَّا ٱلَّذِينَ
ءَامَنُواْ بِٱللَّهِ وَٱعۡتَصَمُواْ بِهِۦ فَسَيُدۡخِلُهُمۡ فِي رَحۡمَةٖ
مِّنۡهُ وَفَضۡلٖ وَيَهۡدِيهِمۡ إِلَيۡهِ صِرَٰطٗا مُّسۡتَقِيمٗا ﴿١٧٥﴾

منزل۱

ऐ अहल–ए–किताब अपने दीन (धर्म) में हद से आगे न बढ़ो और अल्लाह के बारे में वही बात कहो जो ठीक हो, बेशक मसीह मरियम के बेटे ईसा अल्लाह के रसूल हैं और उसका "कलिमा" (वाक्य) हैं जो उसने मरियम तक पहुंचा दिया और उसकी ओर से एक रूह (आत्मा) हैं तो अल्लाह को और उसके रसूलों को मानो और (ख़ुदा को) तीन मत कहो इससे बाज़ आ जाओ यही तुम्हारे लिए बेहतर होगा बेशक अल्लाह तो केवल एक ही पूजा (इबादत) के लायक़ है वह इससे पाक है कि उसकी संतान हो जो कुछ भी आसमानों में है और जो कुछ भी ज़मीन में है सब उसी का है और काम बनाने के लिए अल्लाह काफ़ी है[1] (171) मसीह को इससे हरगिज़ कोई आर (लज्जा) नहीं कि वे अल्लाह के बन्दे हों और न ही (अल्लाह के) निकटवर्ती फरिश्तों को, जिसको भी उसकी बन्दगी से आर (लज्जा) होगा और अकड़ेगा तो जल्द ही उन सबको वह अपने पास इकट्ठा करेगा (172) बस जिन्होंने माना और भले काम किये तो वह उनको उनका पूरा बदला दे देगा और अपने फ़ज़्ल (कृपा) से बढ़ाकर देगा और जिन्होंने आर (लज्जा) किया और अकड़े तो वह उनको दुखद अज़ाब देगा और वे अपने लिए अल्लाह के अलावा न कोई समर्थक पा सकेंगे और न कोई मददगार[2] (173) ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण आ चुका और हमने तुम्हारी ओर खुली रौशनी उतार दी(174) तो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उन्होंने उसको मज़बूत थाम लिया तो वह जल्द ही उनको अपनी ख़ास रहमत (दया) व फ़ज़्ल (कृपा) में दाख़िल कर देगा और उनको अपनी ओर सीधे रास्ते पर पहुंचा देगा[3] (175)

(1) अहल–ए–किताब अपने पैग़म्बरों की प्रशंसा में बढ़ा–चढ़ा कर बयान करते और हद से निकल जाते, ख़ुदा ही बना देते या ख़ुदा का बेटा कहते इसको सख़्ती से मना किया जा रहा है और आदेश हो रहा है कि अल्लाह की शान में अपनी ओर से बातें मत कहो जो पैग़म्बरों ने सच–सच बताया वह मानो, फिर विशेष रूप से ईसाइयों को चेताया जा रहा है कि अल्लाह संतान से पवित्र है, ईसा अल्लाह के पैग़म्बर हैं जिनको अल्लाह ने कलिमा (शब्द) कुन (हो जा) से रूह (आत्मा) डाल कर विशेष ढंग से पैदा किया तो उनको और उनकी मां को ख़ुदाई में साझीदार मत करो और तीन ख़ुदा मत बताओ (2) सारी सृष्टि अल्लाह की बन्दगी में लगी है और यही सबके लिए सम्मान की बात है, न ईसा अ़लैहिस्सलाम को बन्दगी से लज्जा है और न फरिश्तों को, हां! अपमान दूसरे की बन्दगी में है जैसा कि ईसाइयों ने ईसा को ख़ुदा का बेटा कहा और मक्के के मुश्रिकों ने फरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां बताया तो वे शिर्क करने के परिणाम स्वरूप अल्लाह के प्रकोप और दण्ड के हक़दार हुए (3) अंतिम किताब भी आ चुकी और अंतिम पैग़म्बर भी आ चुके और अब वही सफल होगा जो मानेगा और उनको मज़बूती से थाम लेगा ऐसे लोगों पर अल्लाह की रहमत (दया) होगी।

يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلٰلَةِ إِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ
لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَّلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ وَهُوَ يَرِثُهَا
إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ فَإِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا
تَرَكَ وَإِنْ كَانُوا إِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَاءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ
الْأُنْثَيَيْنِ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ أَنْ تَضِلُّوا وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٧٦﴾

سُوْرَةُ الْمَائِدَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَعِشْرُوْنَ آيَةً وَسِتَّ عَشَرَةَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا أَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ أُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ
الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَأَنْتُمْ حُرُمٌ إِنَّ اللّٰهَ
يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ﴿١﴾ يٰأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا
الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَا آمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ
يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا
وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ أَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَنْ
تَعْتَدُوْا وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْإِثْمِ
وَالْعُدْوَانِ وَاتَّقُوا اللّٰهَ إِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢﴾

منزل۲

वे आप से हल पूछते हैं आप कह दीजिए कि अल्लाह तुमको "कलालह" का आदेश बताता है अगर कोई व्यक्ति मर जाए उसकी औलाद न हो और उसकी एक बहन हो तो जो भी उसने छोड़ा उसमें से आधे की हक़दार होगी और अगर बहन पहले मर जाए तो वह (भाई) उसका वारिस होगा अगर उसकी संतान न हो फिर अगर दो बहनें हों तो वह जो भी छोड़ जाए उसका दो तिहाई उनका होगा और अगर कई भाई बहन हैं मर्द भी हैं और औरतें भी तो मर्द के लिए दो औरतों के हिस्से के बराबर है अल्लाह तुम्हारे लिए खोल कर बयान करता है कि बहक न जाओ और अल्लाह हर चीज़ से ख़ूब परिचित है[1] (176)

सूरह माइदा

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

ऐ ईमान वालो! अपने अहद व पैमान (प्रतिज्ञाओं व समझौतों) को पूरा करो[2], तुम्हारे लिए मवेशी चौपाए (जानवर) हलाल (वैध) किये गए हैं[3] सिवाय उन चीज़ों के जो तुम्हें आगे बताई जाएंगी हां! तुम एहराम की हालत में शिकार को जायज़ (वैध) मत समझो बेशक अल्लाह जो चाहता है आदेश करता है[4] (1) ऐ ईमान वालो! अल्लाह के शआएर (निशानियों) का अपमान मत करना[5] और न आदर के महीनों[6] का और न कुर्बानी के जानवर का और उन जानवरों का जिनके गलों में पट्टे पड़े हों [7] और न प्रतिष्ठित घर (काबा) को जाने वालों का जो अपने पालनहार के फ़ज़्ल (कृपा) और प्रसन्नता को चाहने वाले हैं और जब तुम एहराम (हज का वस्त्र) उतार दो तो शिकार कर सकते हो और तुम्हें किसी क़ौम की दुश्मनी कि उन्होंने तुम्हें मस्जिद–ए–हराम से रोका तुमको ज़्यादती पर उभार न दे [8] और (देखो) भलाई और तक़वे (के कामों) में आपस में एक दूसरे की मदद किया करो और पाप व सरकशी में एक दूसरे की मदद मत करना और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है (2)

(1) सूरह के शुरू में "कलालह" की मीरास बयान हो चुकी है सहाबा ने उसको विस्तार से जानना चाहा तो यह आयत उतरी कि कलालह वह है जिसकी न संतान हो न मां बाप हों, अब अगर उसके भाई बहन हैं तो उनको उसी नियमानुसार मिलेगा जैसे संतान को मिलता है, केवल एक भाई है तो उसको पूरा, अगर केवल एक बहन है तो उसको आधा, अगर कई बहनें हैं तो उनको दो तिहाई और अगर भाई भी हैं और बहन भी है तो भाई के दो हिस्से और बहन का एक हिस्सा, इसी तरह अगर बहन मर जाए और उसकी संतान न हो तो भाई असबा (बाप की ओर से रिश्तेदार) होकर वारिस होगा (2) ईमान वास्तव में अल्लाह के सारे क़ानूनों और आदेशों के मानने और समस्त अधिकारों को अदा करने का एक मज़बूत अहद (दृढ़ संकल्प) है (3) यहूदियों की शरारतों का परिणाम था कि बहुत सी हलाल (वैध) चीज़ें उन पर हराम (अवैध) कर दी गईं। इस उम्मत (समुदाय) के लिए वह चीज़ें हलाल (वैध) की गई हैं जैसे ऊंट, गाय, भेड़, बकरी, और इस जाति के सारे पालतू जानवर और जंगली जानवर जैसे हिरन, नील गाय आदि सिवाय उनके जिनको आगे इसी सूरह में बयान किया जाएगा (4) इस वाक्य ने सारी आपत्तियों की जड़ ही काट कर रख दी जो अपनी बुद्धि से कहते हैं फुलां जानवर क्यों हलाल है और फुलां क्यों हराम है, अल्लाह जो चाहे आदेश दे हर चीज़ उसकी हिकमत (युक्ति) से भरी है वह हमारी बुद्धि में आए या न आए (5) अल्लाह के "शआएर" यानी वे चीज़ें जो अल्लाह की महानता की विशेष निशानियां क़रार दी गई हैं यानी हरम, बैतुल्लाह, सफ़ा व मरवह, जमारात, मस्जिदें, कुर्बानी का जानवर, आसमानी किताबें वग़ैरह ⟹

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ
اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا
أَكَلَ السَّبُعُ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا
بِالْأَزْلَامِ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ الْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دِينِكُمْ
فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ
عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا فَمَنِ اضْطُرَّ فِي
مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِإِثْمٍ فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣﴾ يَسْأَلُونَكَ
مَاذَا أُحِلَّ لَهُمْ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِنَ الْجَوَارِحِ
مُكَلِّبِينَ تُعَلِّمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ
وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللّٰهَ إِنَّ اللّٰهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤﴾
الْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حِلٌّ
لَكُمْ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَهُمْ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ
مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ
مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسَافِحِينَ وَلَا مُتَّخِذِي أَخْدَانٍ وَمَنْ يَكْفُرْ
بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٥﴾

ع

منزل ٢

तुम पर हराम हुआ मुर्दा और ख़ून और सुअर का गोश्त और जिसपर अल्लाह के अलावा (किसी और) का नाम लिया गया और जो घुटकर मरा या चोट से या गिर कर या सींग मारने से और जिसको दरिन्दे (हिंसक पशु) ने खाया, सिवाय इसके कि तुमने उसको मरने से पहले ज़िबह कर लिया हो[1], और जिसको पूजे जाने वाले पत्थरों पर ज़िबह किया गया हो और यह कि तुम जूवे के तीरों से फ़ाल निकालो यह सब नाफ़रमानी (अवज्ञा) की बातें हैं, आज काफ़िर तुम्हारे दीन (धर्म) से निराश हो चुके तो उनसे मत डरो और मुझ ही से डरो, आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (धर्म) मुकम्मल कर दिया और तुमपर अपनी नेअमत (सुख–सामग्री) पूरी कर दी और दीन (धर्म) के रूप में तुम्हारे लिए इस्लाम को पसंद कर लिया[2], फिर जो भूख से व्याकुल हो गया पाप की ओर इच्छा किये बिना तो बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है[3] (3) वे आपसे पूछते हैं कि उनके लिए क्या क्या चीज़ें हलाल (वैध) हैं, आप कह दीजिए कि तुम्हारे लिए तमाम पाक (पवित्र) चीज़ें हलाल की गई हैं और जिन शिकारी जानवरों को तुमने अल्लाह के बताये हुए तरीक़े के अनुसार सिखा सिखा कर सधा लिया तो जो वे तुम्हारे लिए रख छोड़ें उसमें से खाओ और उस पर अल्लाह का नाम ले लिया करो और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है[4] (4) आज तुम्हारे लिए तमाम पाक (पवित्र) चीज़ें हलाल कर दी गईं और अहल–ए–किताब का खाना तुम्हारे लिए जायज़ (वैध) है और तुम्हारा खाना उनके लिए जायज़ है और (इसी तरह) ईमान वाली पाक दामन औरतें और उन लोगों की पाक दामन औरतें जिनको तुमसे पहले किताब मिल चुकी है (तुम्हारे लिये जायज़ हैं) जब तुम उनको निकाह की पाकी में लेते हुए उनका महर दे दो, मस्ती निकालते हुए नहीं और न चोरी छिपे प्रेम करते हुए और जो ईमान से इनकार करेगा तो उसका सब किया–धरा बर्बाद (अकारत) हुआ और वह आख़िरत में घाटा उठाने वालों में है[5] (5)

⟹ (6) विशेष रूप से ज़िल्हिज्जह और दूसरे आदर के महीने ज़ीक़ादह, मुहर्रम और रजब, इनका आदर यह है कि तक़्वा अपनाएं और विशेष रूप से हाजियों का ख़याल रखे (7) क़ुर्बानी के जानवर के गले में निशानी के रूप में पट्टा डाल देते थे (8) सुलह हुदैबिया के अवसर पर मुश्रिकों ने उमरह से रोका तो दुश्मनी में हद से आगे मत बढ़ जाना, इस्लाम में हर चीज़ की सीमाएं निधारित हैं दुश्मन के साथ भी किसी प्रकार की ज़्यादती जायज़ नहीं।

(1) ज़िबह के अलावा जानवर किसी तरह भी मर जाए वह हराम है (2) काफ़िर लोग इससे निराश हो चुके कि तुमको तुम्हारे दीन (धर्म) से फेर दें और अंसाब व अज़लाम (चढ़ावे) व मूर्तिपूजा की ओर ले जाएं, दीन (धर्म) मुकम्मल हो चुका अब उसमें संशोधन की संभावना नहीं, अल्लाह की नेअमत पूरी हो चुकी अब किसी दूसरी ओर देखने की आवश्यकता नहीं और क़यामत तक के लिए इस्लाम को संपूर्ण मानवजाति के लिए पसंद कर लिया गया, अब सफलता इसी पर निर्भर है, इन हालात में तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं वे तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते, हां! उस वास्तविक एहसान करने वाले से डरते रहो जिसके हाथ में तुम्हारी सफलता और असफलता है, यह आयत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अंतिम हज (हज्जतुल–विदा) के अवसर पर उतरी, जब एक लाख से ऊपर सहाबा आप के साथ थे और तेईस वर्षीय मेहनत के परिणाम सामने थे, दिन भी अरफ़े और जुमे का था इसीलिए जब किसी यहूदी ने हज़रत उमर रज़िअल्लाहु अन्हु से कहा, "अगर यह आयत हमारे यहां उतरती तो हम ईद मनाते, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि जिस दिन यह आयत उतरी वह दो ⟹

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا
وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ
اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ
مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ
اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا
طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ
لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰـكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَ
لِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٦ وَاذْكُرُوْا
نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِىْ وَاثَقَكُمْ بِهٖۤ ۙ اِذْ
قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ۝٧ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ
شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤى
اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۖ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٨ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝٩

منزل۲

ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने चेहरों और हाथों को कोहनियों समेत धो लिया करो और अपने सिरों का मसह कर (भीगा हाथ फेर) लिया करो और पैरों को टख़नों समेत (धो लिया करो) और अगर तुम जनाबत (अपवित्रता) की हालत में हो तो अच्छी तरह पवित्र हो लो, और अगर तुम बीमार हो या यात्रा पर हो या तुममें से कोई इस्तिन्जा (शौच) करके आया हो या तुमने औरतों से संभोग किया हो फिर तुम्हें पानी न मिले तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम करो और उससे अपने चेहरे और हाथों पर मसह कर (हाथ फेर) लो, अल्लाह तुम्हें बिल्कुल तंगी में डालना नहीं चाहता हां वह यह चाहता है कि तुम्हें पवित्र कर दे और अपनी नेअमत तुम पर मुकम्मल कर दे, शायद कि तुम शुक्र करने लग जाओ[1] (6) और अपने ऊपर अल्लाह की नेअमत और उस अहद (प्रतिज्ञा) को याद करो जो तुमसे लिया था जब तुमने कहा था कि हमने सुना और मान लिया और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह दिलों के हाल को ख़ूब जानता है[2] (7) ऐ ईमान वालो! इन्साफ़ के साथ गवाही देने को अल्लाह के लिए खड़े हो जाया करो और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें इस पर उभार न दे कि तुम इन्साफ़ न करो, इन्साफ़ करते रहो यही तक़वा से ज़्यादा निकट है और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़ूब अवगत है[3] (8) उन लोगों से अल्लाह का वादा है जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये कि उनके लिए मग़फ़िरत (माफ़ी) है और बड़ा सवाब (पुण्य) है (9)

⟹ ईदों का दिन था अरफ़ा भी था और जुमा भी (3) हलाल व हराम का क़ानून तो पूरा हो चुका अब अगर कोई विवश हो तो जान बचाने की हद तक हराम खा सकता है अल्लाह उसको माफ़ कर देंगे लेकिन अगर इसमें इच्छा हुई तो यह सख़्त गुनाह की बात है (4) हराम (अवैध) चीज़ों के बाद यह सवाल हुआ कि हलाल (वैध) चीज़ें क्या क्या हैं, इसका जवाब हुआ कि इसका क्षेत्र बहुत बड़ा है जो भी साफ़ सुथरी चीज़ हो और उसमें कोई नुक़सान न हो जायज़ है, कुछ लोगों ने शिकारी जानवर के बारे में सवाल किया था उसका विस्तार से जवाब है और चार शर्तों के साथ शिकारी जानवर के शिकार को जायज़ कहा गया कि वह जानवर प्रशिक्षित हों, दूसरे यह कि शिकार के लिए छोड़े जाएं, तीसरे यह कि वे ख़ुद उसमें से न खाएं, चौथे यह कि छोड़ते समय अल्लाह का नाम लिया जाए (5) अहल–ए–किताब के साथ दो विशेषताएं बरती गईं एक उनके ज़िबह किये हुए जानवर को हलाल रखा गया दूसरे उनकी औरतों से निकाह (विवाह) को जायज़ क़रार दिया गया लेकिन इस युग के यहूदी और ईसाई चूंकि बिल्कुल अपने दीन (धर्म) से हट गए हैं इसलिए बचना बेहतर है विशेष रूप से उनकी औरतों से शादी ईमान के लिए घातक हो सकती है इसलिए इससे बहुत बचने की ज़रूरत है, साथ–साथ यह भी स्पष्ट किया जा रहा है कि विवाह का मक़सद पारिवारिक व्यवस्था वजूद में लाना हो काम वासना मक़सद न हो और न बिना निकाह के ग़लत सम्बंध स्थापित किये जाएं।

(1) वुज़ू की ज़रूरत बार–बार पड़ती है इस लिए इसमें खुले हुए अंगों को बार बार धोने का आदेश है लेकिन अगर जनाबत (अपवित्रता) हो तो ग़ुस्ल (स्नान) ज़रूरी है और अगर ग़ुस्ल या वुज़ू के लिए पानी न मिल सके या उसका इस्तेमाल नुक़सानदायक हो तो तयम्मुम की इजाज़त दी गई, यह अल्लाह की ओर से आसानी और मेहरबानी है (2) शायद सूरह बक़रह की अंतिम आयतों की ओर इशारा है जिसमें ईमान वालों ने कहा था कि "समेअ्ना व अतअ्ना" (हमने सब आदेश सुन लिये और हम सब स्वीकार करते हैं) (3) ऐसा न्याय व इन्साफ़ जिसे कोई दोस्ती और दुश्मनी न रोक सके और जिसे अपनाने से मुत्तक़ी बनना सरल हो जाता है उसको प्राप्त करने का एक मात्र साधन ख़ुदा का डर और उसके बदला लेने का भय है और यह ख़ौफ़ "इन्नल्लाह ख़बीरुम्बिमातामलून" (अल्लाह तुम्हारे सब कामों से ख़ूब वाक़िफ़ है) के बार–बार ध्यान करने से पैदा होता है।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
الْجَحِيْمِ ۝١٠ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ
فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١١ وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ۚ
وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ۭ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّىْ مَعَكُمْ ۭ
لَىِٕنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ
بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا
لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَاۗءَ السَّبِيْلِ ۝١٢ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ
لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ
عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ
تَطَّلِعُ عَلٰي خَاۗىِٕنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ
فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝١٣

ركوع ٢

منزل ٢

और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी निशानियों को झुठलाया वही लोग दोज़ख़ वाले हैं(10) ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह के उस एहसान को याद करो जब एक क़ौम ने तुम पर हाथ उठाने चाहे तो अल्लाह ने उनके हाथ तुमसे रोक दिये और अल्लाह से डरते रहो, और ईमान वालों को चाहिए कि वे केवल अल्लाह ही पर भरोसा रखें[1] (11) और बेशक अल्लाह ने बनी इस्राईल से अहद (प्रतिज्ञा) लिया था और हमने उनमें बारह ज़िम्मेदार निर्धारित किये थे और अल्लाह ने कहा था कि मैं तुम्हारे ही साथ हूं अगर तुम नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात अदा करो और मेरे पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और उनको मज़बूत करो और अल्लाह को अच्छी तरह कर्ज़ दो[2] तो मैं ज़रूर तुम्हारी बुराइयों को मिटा दूंगा और तुम्हें ऐसी जन्नतों में दाख़िल कर दूंगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, फिर उसके बाद भी जो इनकार करे तो वह सही रास्ते से भटक गया (12) फिर उनके अहद (प्रतिज्ञा) तोड़ने की वजह से हमने उन पर फिटकार की और उनके दिलों को कठोर कर दिया, वे बातों को अपनी जगह से बदलने लगे और जो कुछ उनको नसीहत की गई थी उसका (बड़ा) हिस्सा उन्होंने भुला दिया[3] और उनमें थोड़े लोगों को छोड़ कर आपको बराबर उनकी ख़यानत का पता चलता रहता है तो आप उनको माफ़ कर दीजिए और उनको क्षमा कर दीजिए बेशक अल्लाह भलाई करने वालों से प्रेम करता है[4] (13)

(1) मक्के के काफ़िरों ने कोई कमी न छोड़ी लेकिन अल्लाह ने उनकी रक्षा की, अब उन पर विजय के बाद मुसलमानों को न्याय से ही काम लेना है जिसका निर्देश पहली आयतों में दिया जा चुका है, हो सकता है कि इससे किसी के दिल में ख़याल हो कि इस नर्म व्यवहार से तो वे फिर निडर हो जाएंगे, इसलिए कहा कि अल्लाह से डरो और उसी पर भरोसा रखो (2) खुदा को कर्ज़ देने का मतलब उसके रसूलों के समर्थन में दीन (धर्म) के रास्ते में ख़र्च करना है जिस तरह कर्ज़ देने वाला वापसी की आशा रखता है और लेने वाला अदा करने का ज़िम्मेदार होता है इसी तरह अल्लाह के रास्ते में ख़र्च की हुई चीज़ हरगिज़ कम न होगी इसकी अदाएगी अल्लाह ने अपने ज़िम्मे ले ली है (3) बनी इस्राईल के अहद तोड़ने का उल्लेख पहले हो चुका है, दिलों की सख़्ती उसी के परिणाम स्वरूप पैदा हुई फिर उन्होंने किताबों में उलट फेर की और उसका बड़ा हिस्सा भुला दिया, इसको खुद ईसाई इतिहासकारों ने भी माना है (4) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आदेश दिया जा रहा है कि अभी आप उनके बारे में कोई कार्यवाही न कीजिये, अपने समय पर अल्लाह उनसे खुद निपट लेगा।

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوٓا إِنَّا نَصٰرٰىٓ أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ
فَنَسُوا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوا بِهٖ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۗ وَسَوْفَ
يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١٤﴾ يٰٓأَهْلَ
الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا
مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوا عَنْ
كَثِيرٍ ۚ قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُورٌ وَّكِتٰبٌ
مُّبِينٌ ﴿١٥﴾ يَهْدِي بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوٰنَهٗ
سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّورِ
بِإِذْنِهٖ وَيَهْدِيهِمْ إِلٰى صِرٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٦﴾ لَقَدْ
كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوٓا إِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۚ
قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُّهْلِكَ
الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهٗ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۗ
وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ يَخْلُقُ
مَا يَشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٧﴾

منزل۲

और जो कहते हैं कि हम ईसाई हैं हमने उनसे भी अहद (प्रतिज्ञा) लिया था तो उनको जो भी नसीहत की गई उसका (बड़ा) हिस्सा वे भुला बैठे तो हमने क़यामत तक के लिए उनमें परस्पर दुश्मनी व नफ़रत डाल दी और जो कुछ भी वे करते रहते हैं अल्लाह आगे उनको सब बता देगा[1] (14) ऐ अहल–ए–किताब तुम्हारे पास हमारे पैग़म्बर आ चुके, किताब की जो चीज़ें तुम छिपाया करते थे उनमें बहुत सी चीज़ें वे तुम्हारे लिए खोल–खोल कर बयान करते हैं और बहुत सी चीज़ों को माफ़ भी कर जाते हैं[2] और तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से रोशनी और खुली किताब आ चुकी[3] (15) जो भी अल्लाह की खुशी चाहता है उसके द्वारा अल्लाह उनको सलामती के रास्तों पर डाल देता है और अपनी आज्ञा से उनको अंधेरों से निकाल कर रोशनी में ले आता है और उनको सीधा रास्ता चलाता है (16) जिन्होंने भी कहा कि अल्लाह ही मसीह पुत्र मरियम है वे निश्चित रूप से काफ़िर हो गए आप कह दीजिए कि अगर वह मसीह पुत्र मरियम और उनकी मां और ज़मीन का सब कुछ नष्ट करना चाहे तो अल्लाह के सामने कौन है जो कुछ भी अधिकार रखता हो और आसमानों और ज़मीन और उनके बीच जो भी है उसकी बादशाही अल्लाह ही की है जो चाहता है पैदा करता है और अल्लाह हर चीज़ पर पूर्ण रूप से समर्थ है[4] (17)

(1) ईसाइयों का भी वही हाल हुआ, उन्होंने भी अहद (प्रतिज्ञा) को भुला दिया तो अल्लाह ने उनमें आपसी फूट डाल दी और उनके दसियों सम्प्रदाय हुए जो एक दूसरे के जानी दुश्मन थे, विश्व युद्ध वे आपस ही में लड़े जिनमें लाखों लोग मारे गए (2) जो तथ्य उन्होंने छिपाए थे उनमें जिनका बयान ज़रूरी था वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान किया और जो अनावश्यक थे उनको नज़रअंदाज़ किया (3) ज़ाहिर में मालूम होता है कि रौशनी का मतलब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जो पूरी मानव जाति के लिए रौशनी हैं और किताब–ए–मुबीन का मतलब पवित्र क़ुरआन है जो सारी मानव जाति के लिए खुली किताब है (4) इसमें तौहीद का प्रताप है ईसा को खुदा का बेटा और मरियम को खुदाई में साझीदार बनाने वाले सुन लें सब अल्लाह के बन्दे हैं वह जो चाहे करे उससे कोई पूछने वाला नहीं और सबसे सवाल होगा सब बादशाही अल्लाह की है वह जिस तरह जिसको चाहे पैदा करे, आदम को बिना मां–बाप के, हव्वा को बिना मां के और ईसा को बिना बाप के पैदा किया तो यह उस महान व शक्तिमान की शक्ति है जिसके आगे सब झुके हुए हैं।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ
يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا ۫ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۸﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا
يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ
وَّلَا نَذِيْرٍ ؗ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ﴿۱۹﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖۗ وَّاٰتٰىكُمْ مَّا
لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۰﴾ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ
الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِكُمْ
فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۲۱﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰۤى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖۗ
وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا
فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ﴿۲۲﴾ قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ
اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ
غٰلِبُوْنَ ۬ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۳﴾

ع ٤

منزل ٢

यहूदी व ईसाई कहते हैं कि हम अल्लाह के बेटे और उसके चहेते हैं, आप पूछिये कि फिर वह तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें दण्ड क्यों देता है? कोई नहीं तुम भी उसकी सृष्टियों में से (मात्र) एक मनुष्य हो, वह जिसको चाहे माफ़ करे और जिसको चाहे अज़ाब दे और आसमानों और ज़मीन और दोनों के बीच की बादशाही अल्लाह ही की है और उसी की ओर लौट के जाना है[1] (18) ऐ अहले किताब! पैग़म्बरों के एक (लंबे) अंतराल (वक़्फ़ा) के बाद तुम्हारे पास हमारे पैग़म्बर आ गए जो तुम्हें साफ़ साफ़ बताते हैं कि कहीं तुम यह न कहने लगो कि हमारे पास न कोई खुशख़बरी देने वाला आया न डराने वाला, बस अब तो शुभ समाचार सुनाने वाला और डराने वाला तुम्हारे पास आ चुका और अल्लाह को हर चीज़ की पूरी सामर्थ्य (कुदरत) प्राप्त है[2] (19) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा था ऐ मेरी क़ौम! अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो जब उसने तुममें पैग़म्बर पैदा किये और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें वह दिया जो संसारों में किसी को न दिया था (20) ऐ मेरी क़ौम! उस पवित्र भूमि में प्रवेश करो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए तय कर दी है और उलटे पांव मत फिरो वरना घाटे में जा पड़ोगे[3] (21) वे बोले ऐ मूसा! उसमें तो बड़े ज़बर्दस्त लोग हैं और वे जब तक न निकल जाएं हम उसमें प्रवेश कर ही नहीं सकते, हां अगर वे निकल जाते हैं तो हम ज़रूर प्रवेश करने को तैयार हैं (22) डरने वालों में से दो आदमी ने जिनपर अल्लाह का इनआम था बोल पड़े दरवाज़े से हमला करके दाख़िल तो हो जाओ, फिर जब तुम वहां दाखिल हो जाओगे तो तुम ही ग़ालिब (हावी) रहोगे और अगर तुम ईमान वाले हो तो अल्लाह ही पर भरोसा रखो[4] (23)

---

(1) यहूदियों की कल्पना थी कि याकूब अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह ने अपना बेटा कहा और ईसाई ईसा को खुदा का बेटा कहते थे इसलिए अपने बारे में लगभग उनका यही ख़याल था कि हम अल्लाह के बेटे और चहेते हैं (2) हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बाद लगभग छः सौ साल कोई पैग़म्बर नहीं आया, सारा संसार विनाश के किनारे पहुंच गया तो अल्लाह ने महानतम मार्गदर्शक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजा (3) यानी शाम (सीरिया) जिसमें फिलिस्तीन भी शामिल था, वहां अमालेक़ह (एक जाति) रहते थे जो बड़े डील–डौल वाले थे, बनी इस्राईल आदेश के अनुसार चले जब क़रीब पहुंचकर उनको अमालेक़ह के डील–डौल और उनकी ताक़त का पता चला तो मुकर गये और कहने लगे कि हम कैसे इस देश में दाख़िल हो सकते हैं (4) आदेश जो भी दिया गया पहले उस पर अमल तो करो फिर अल्लाह की मदद भी आ जाएगी और तुमसे जो वादा किया गया है वह पूरा हो जाएगा, यह बात कहने वाले दो लोग हज़रत यूशअ़ और हज़रत कालिब अ़लैहिमस्सलाम थे जो हर चरण में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ रहे थे, बाद में अल्लाह ने उनको पैग़म्बरी से सम्मानित भी किया।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ
اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ
لَآ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِىْ وَاَخِىْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ
الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً
يَتِيْهُوْنَ فِى الْاَرْضِ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾
وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَىْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ
مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ قَالَ
اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٧﴾ لَئِنْ بَسَطْتَّ اِلَىَّ يَدَكَ
لِتَقْتُلَنِىْ مَآ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِىَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ اِنِّىْٓ اَخَافُ
اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنِّىْٓ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِىْ وَ
اِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾
فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٣٠﴾
فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِى الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِىْ
سَوْءَةَ اَخِيْهِ قَالَ يٰوَيْلَتٰٓى اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا
الْغُرَابِ فَاُوَارِىَ سَوْءَةَ اَخِىْ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ﴿٣١﴾

منزل٢

वे बोले ऐ मूसा! जब तक वे लोग वहां मौजूद हैं हम हरगिज़ दाख़िल नहीं हो सकते बस तुम और तुम्हारा पालनहार दोनों जाएं और लड़ें हम तो यहीं बैठे हैं (24) मूसा ने कहा ऐ मेरे पालनहार! मैं तो केवल अपने ऊपर और अपने भाई पर बस रखता हूं तू हमारे और नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) क़ौम के बीच फ़ैसला कर दे (25) उसने कहा यह (जगह) चालीस साल तक के लिए उन पर हराम (वर्जित) कर दी गई, वे ज़मीन में मारे मारे फिरेंगे बस तुम नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) क़ौम पर तरस मत खाना[1] (26) और आदम के दोनों बेटों की कहानी ठीक–ठीक उनको सुना दीजिए[2] जब दोनों ने कुर्बानी पेश की तो उनमें एक की कुर्बानी स्वीकार हुई और दूसरे की स्वीकार न हुई तो वह बोला मैं तो तुम्हें क़त्ल करके रहूंगा (पहला) बोला कि अल्लाह तो परहेज़गारों ही से कुबूल करते हैं (27) अगर तुमने मेरे क़त्ल के लिए हाथ बढ़ाया भी हो तो मैं तुम्हें क़त्ल करने के लिए हाथ नहीं बढ़ा सकता मैं तो उस अल्लाह से डरता हूं जो संसारों का पालनहार है (28) मैं चाहता ही हूं कि तुम मेरे गुनाह और अपने गुनाह (दोनों का) बोझ उठाओ फिर दोज़ख वालों में शामिल हो जाओ और ज़ालिमों की सज़ा यही है[3] (29) अतः उसके मन ने उसको अपने भाई के क़त्ल पर उभार दिया तो उसने उसको मार डाला बस वह घाटा उठाने वालों में हो गया (30) फिर अल्लाह ने एक कौवा भेजा जो ज़मीन खोदने लगा ताकि उसको दिखा दे कि वह अपने भाई की लाश को कैसे छिपाए, वह बोला हाय मेरा नास मुझसे यह भी न हो सका कि मैं इस कौवे ही की तरह हो जाता और अपने भाई की लाश को छिपा देता, बस वह पछताने लगा (31)

(1) उन्होने बात न मानी और बहुत ही अपमानजनक बात कही तो अल्लाह ने उसी सैना नामक प्रायद्वीप में उनको भटकते हुए छोड़ दिया, क्योंकि हज़रत मूसा की क़ौम थी और पैग़म्बर सर्वथा कृपाशील होते हैं, इसलिए उनको सज़ा मिलने पर हज़रत मूसा को दुख हुआ तो अल्लाह ने कहा कि नाफ़रमानों (अवज्ञाकारियों) पर दुखी मत हो (2) यह हज़रत आदम के दो बेटों की कहानी है, क़ाबील किसान था उसमें घमण्ड था और हाबील चरवाहा था और उसमें विनम्रता थी, दोनों ने कुर्बानी पेश की, हाबील की कुर्बानी निष्ठा से परिपूर्ण थी तो स्वीकार हो गई और स्वीकार होने की निशानी उस समय यह होती थी कि आग आकर कुर्बानी की चीज़ को खा लेती थी बस काबील क्रोध से भर गया और उसने अपने भाई को मार डाला फिर परेशान हुआ कि लाश का क्या करे, अल्लाह ने कौवा भेजा जो उसको व्यवहारिक शिक्षा दे गया और अपनी वास्तविकता भी उसकी समझ में आ गई। (3) यानी अगर तुमने मुझे क़त्ल किया तो पीड़ित होने के कारण मेरे पाप तो माफ़ हो जाने की आशा है बल्कि मेरे क़त्ल के कारण कुछ मेरे पाप भी तुम पर लद जाएं तो कोई अनोखी बात न होगी बस दोनों के पापों का नुक़सान तुम्हें ही होगा।

مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۛ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِى الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِى الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ﴿٣٢﴾ اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْىٌ فِى الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٣٣﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِىْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٣٦﴾

منزل ٢

इस वजह से हमने बनी इस्राईल के लिए यह तय कर दिया कि जिसने भी बिना किसी जान (के बदले) के या बिना ज़मीन में बिगाड़ के किसी को क़त्ल कर दिया तो मानो उसने सभी लोगों को क़त्ल कर डाला और जिसने किसी जान को बचा लिया उसने मानो सारे इंसानों को बचा लिया, उनके पास हमारे पैग़म्बर खुली निशानियां लेकर आ चुके फिर उसके बाद भी उनमें से अधिकतर लोग ज़मीन में ज़्यादती करने वाले ही रहे हैं[1] (32) जो लोग भी अल्लाह और उसके पैग़म्बर से जंग करते हैं और धरती में बिगाड़ पैदा करने के लिए कोशिश करते रहते हैं उनकी सज़ा यही है कि वे क़त्ल कर डाले जाएं या उनको सूली (फांसी) पर चढ़ा दिया जाए या उनके एक ओर के हाथ और दूसरे ओर के पांव काट दिए जाएं, या देश से उनको निकाल दिया जाए, यह दुनिया में उनका अपमान है और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अज़ाब (दण्ड) है[2] (33) हां जो तुम्हारी पकड़ में आने से पहले तौबा कर लें तो जान लो कि बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है (34) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और उस तक पहुंचने का वसीला ढूंढो और उसके रास्ते में जान खपाते रहो ताकि तुम सफल हो[3] (35) बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया अगर उनके पास ज़मीन भर चीज़ें हों और उतना ही और भी हो ताकि वे उसको मुक्तिदान में देकर क़यामत के दिन के अज़ाब से बच जाएं तो यह सब चीज़ें उनकी ओर से स्वीकार न होंगी और उनके लिए दुखद अज़ाब है (36)

(1) एक आदमी किसी को क़त्ल करता है तो दूसरों को भी उससे साहस होता है मानो उसने सबको क़त्ल कर दिया, इसी तरह बचाने से बचाने का रिवाज वजूद में आता है मानो वह दूसरों की सुरक्षा और जीवन का साधन बना (2) जो विद्रोह करे या डाका डाले, उसकी सज़ायें हैं, डाके में केवल क़त्ल किया तो उसकी सजा क़त्ल है, क़त्ल के साथ माल भी लूटा तो उसकी सज़ा सूली (फांसी) है और अगर केवल माल ही लूट सका क़त्ल नहीं किया तो उसकी सज़ा हाथ–पांव का काटना और अगर कोशिश की लेकिन गिरफ़्तार हो गया, न क़त्ल कर सका न लूट सका तो उसकी सज़ा देश बद्र है और हाँ देश बदर के रूप विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं एक तो यह कि उसको देश के बाहर निकाल दिया जाए दूसरे यह कि उसको जेल में डाल दिया जाए और अगर पकड़ में आ जाने से पहले तौबा कर ले और खुद अपने आप को जज के हवाले कर दे तो माफ़ी हो सकती है, हाँ हुक़ूक़ुल इबाद (लोगों के अधिकार) अदा करना ज़रूरी है (3) वसीले का मतलब हर वह नेक काम है जो अल्लाह से क़रीब होने का माध्यम बन सके, मतलब यह है कि अल्लाह से क़रीब होन के लिए नेक कामों को वसीला (साधन) बनाओ, जिहादः हर वह कोशिश है जो अल्लाह के दीन (धर्म) के लिए की जाए।

يُرِيدُونَ اَنْ يَّخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ۡ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٧﴾ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٣٨﴾ فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٩﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۛۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛۚ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ؕ وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۖۚ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٤١﴾

منزل ٢

वे चाहेंगे कि दोज़ख़ से निकल आएं और वे उससे निकलने वाले नहीं और उनके लिए स्थायी अज़ाब है (37) और जो कोई मर्द और औरत चोर हो तो उनकी करतूत के बदले में उनका हाथ काट दो अल्लाह की ओर से शिक्षाप्रद सज़ा के रूप में और अल्लाह ज़बरदस्त है हिकमत वाला है (38) फिर जो भी पाप के बाद तौबा कर ले और अपने हाल को सुधार ले तो बेशक अल्लाह उसकी तौबा स्वीकार करता है बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत दयालु है (39) क्या आप जानते नहीं कि अल्लाह ही के लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है जिसको चाहे अज़ाब दे और जिसको चाहे माफ़ करे और अल्लाह को हर चीज़ की पूरी सामर्थ्य (कुदरत) प्राप्त है[1] (40) ऐ पैग़म्बर! आप उन लोगों का ग़म न करें जो तेज़ी से कुफ़्र की ओर बढ़ते जा रहे हैं (चाहे) वे उन लोगों में से हों जो अपने मुंह से कहते हैं कि हम ईमान लाए और उनके दिल ईमान वाले नहीं और (चाहे) वे जो यहूदी हों जो झूठ के लिए कान लगाए रखते हैं दूसरे लोगों के लिए सुनते हैं, जो आप के पास नहीं आते, बात को उनके सही जगह से बदलते रहते हैं कहते हैं कि अगर तुमको यह (आदेश) मिले तो ले लेना और अगर न मिले तो बच रहना और अल्लाह जिसको फितने में डाल दे तो उसके लिए आप अल्लाह के यहां कुछ नहीं कर सकते, यही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने पवित्र करने का इरादा ही नहीं किया उनके लिए दुनिया में भी रुस्वाई है और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अज़ाब है[2] (41)

(1) चोरी की यह सज़ा है ताकि उसकी रोक थाम हो सके, जहां यह सज़ाएं लागू होती हैं वहां दो–चार को सज़ा मिलते ही चोरी का दरवाज़ा बिल्कुल बन्द हो जाता है, यह सज़ाएं इन्सानों के लिए कठिनाई और ज़हमत नहीं बल्कि पूर्णरूप से रहमत (कृपा) हैं फिर सब अल्लाह ही के दिये हुए आदेश हैं जो हर चीज़ का मालिक है और हिकमत वाला है। (2) यहूदियों में एक शादीशुदा मर्द व औरत ने व्यभिचार किया जो उनमें शरीफ़ लोगों में थे तौरेत का आदेश पथराव करके मार डालने का था, उन्होंने सोचा शायद कुर्आन का आदेश कोड़े मारने का हो इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास दूत भेजे कि अगर कोड़े की बात कहें तो मान लेना और पथराव करके मार डालने की बात कहें तो न मानना, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो बात कही जाएगी मानोगे तो उन्होंने इकरार कर लिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पथराव करके मार डालने का आदेश दिया तो वे मुकर गए और कहने लगे कि तौरेत का तो आदेश यह नहीं है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तौरेत मंगवाई जब वह जगह आई तो एक आलिम (Scholar) ने उस पर उंगली रख ली, हज़रत अब्दुल्लाह पुत्र सलाम ने उंगली उठाई और वे अपमानित हुए, उन यहूदियों का हाल यही था कि उनकी चाहत के अनुसार ग़लत बातें भी की जाएं तो भी कान लगा–लगा कर सुनते थे और उनके आ़लिम अपनी ओर से आदेश बदलते रहते थे और इसके लिए घूस लेते थे।

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ۭ فَاِنْ جَاۗءُوْكَ فَاحْكُمْ
بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ
شَيْـــًٔـا ۭ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِيْنَ ﴿۴۲﴾ وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا
حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۭ وَمَآ اُولٰۗىِٕكَ
بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۴۳﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ
يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَ
الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ
اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَاۗءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ
وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ
اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ
فِيْهَآ اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ
بِالْاَنْفِ وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوْحَ
قِصَاصٌ ۭ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ۭ وَمَنْ
لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۴۵﴾

ع ٦

منزل ۲

झूठ की ओर कान लगाए रखने वाले और मन भर कर हराम खाने वाले हैं, बस अगर वे आपके पास आएं तो या आप उनका फ़ैसला कर दीजिए या उनको टाल जाइए और अगर आप उनको टाल जाएंगे तो भी वे आपको हरगिज़ नुक़सान न पहुंचा सकेंगे और अगर आपको फ़ैसला करना है तो इन्साफ के साथ फ़ैसला कर दें बेशक अल्लाह इन्साफ करने वालों को पसंद करता है (42) और वे आप से कैसे फ़ैसले कराते हैं जबकि उनके पास तौरेत मौजूद है जिसमें अल्लाह का आदेश है फिर वे उसके बाद भी मुंह फेरते हैं और वे तो ईमान लाने वाले हैं ही नहीं[1] (43) हमने तौरेत उतारी जिसमें हिदायत (संमार्ग) और रौशनी थी उसके ज़रिये वे पैग़म्बर जो अल्लाह के फ़रमाबरदार (आज्ञाकारी) थे यहूदियों में फ़ैसला करते थे और (इसी तरह) दुरवेश और उलमा भी इसलिए कि उनको अल्लाह की किताब का रक्षक ठहराया गया था और वे इस पर गवाह भी थे तो लोगों से मत डरो और बस मुझ ही से डरो और थोड़ी क़ीमत में मेरी आयतों का सौदा मत करो और जो कोई अल्लाह की उतारी हुई (किताब) से फ़ैसला न करे तो वे ही हैं इनकार करने वाले (44) और हमने उसमें उनके लिए यह लिख दिया था कि जान के बदले जान है और आँख के बदले आँख और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और जख़्मों में बराबर का बदला है फिर जो उसको माफ़ कर दे तो वह उसके लिए गुनाह का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) है और जो कोई अल्लाह के उतारे हुए (आदेशों) के अनुसार फ़ैसला न करे तो वही लोग अत्याचारी हैं[2] (45)

(1) यानी आश्चर्य की बात है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास फ़ैसला कराने आते हैं और ख़ुद जिसको आसमानी किताब मानते हैं उसके फ़ैसले पर राज़ी नहीं तो वास्तव में उनका ईमान किसी पर नहीं न तौरेत पर न कुरआन पर, अगली आयतों में तौरेत व इंजील की प्रशंसा की गई है वे कैसी अच्छी किताबें थीं जिनकी इन नालायक़ों ने क़द्र नहीं की और उनको बर्बाद कर दिया, उनकी रक्षा उनके उलमा और संतों (अल्लाह वालों) के ज़िम्मे थी बस कुछ दिन उन्होंने उनसे फ़ैसले लिए फिर धीरे–धीरे दूसरे रास्ते पर पड़ गए, बस अल्लाह ने अंतिम और व्यापी व मुकम्मल किताब उतार दी जो उन पिछली किताबों की पुष्टि (तस्दीक़) है और उसकी रक्षा की ज़िम्मेदारी ख़ुद ली और कह दिया "व इन्ना लहू ल हा फ़िज़ून" हम ख़ुद उनकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं (2) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की शरीअत (क़ानून) में भी आदेश थे और हमारी शरीअत में भी यही आदेश हैं, उन आदेशों में भी यहूदियों ने मनमानी कर रखी थी, क़बीला "बनू नज़ीर" जो सम्मानित थे वे पूरी दियत (अर्थदण्ड) वसूल करते और ख़ुद आधी दियत (अर्थदण्ड) देते, संयोगवश बनू क़ुरैज़ा के हाथों उनका एक आदमी मारा गया उन्होंने पूरी दियत मांगी, बनू क़ुरैज़ा ने कहा वे युग बीत गए जब तुम हम पर अत्याचार करते थे अब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दौर–दौरा है अब तुम्हारा अत्याचार नहीं चलेगा, जब मुक़द्दमा आपकी अदालत में पहुंचा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया और यहूदियों में जो ज़ुल्म हो रहा था उसकी रोक–थाम भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा हो गई।

और हमने उनके पीछे ईसा पुत्र मरियम को भेजा उन से पहले की किताब तौरेत की पुष्टि (तस्दीक) करते हुए और उनको हमने इंजील (बाइबल) दी जिसमें हिदायत (मार्ग–दर्शन) थी और रौशनी थी इस तौर पर कि वह भी पहले की किताब तौरेत की पुष्टि (तस्दीक़) करने वाली थी और हिदायत और नसीहत (उपदेश) थी परहेज़गारों के लिए[1] (46) इंजील वालों को चाहिए था कि उसमें अल्लाह ने जो कुछ उतारा है उसके अनुसार ही फ़ैसला करते और जो कोई भी अल्लाह की उतारी हुई चीज़ के अनुसार फ़ैसला नहीं करता तो वही लोग नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) हैं (47) और हमने आप पर भी ठीक ठीक किताब उतार दी जो पिछली किताबों की पुष्टि (तस्दीक़) भी है और उन पर निगरां (रक्षक)[2] भी तो आप भी जो अल्लाह ने उतारा उसके अनुसार उनके बीच फ़ैसले किया कीजिए और आपके पास जो सत्य आ चुका उसको छोड़कर उन लोगों की इच्छाओं पर मत चलिए, तुममें से हर एक उम्मत (समुदाय) के लिए हमने एक शरीअ़त (क़ानून) बनाई और रास्ता बनाया[3] और अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक उम्मत (समुदाय) बना देता लेकिन वह तुम्हें उस चीज़ में आज़माना चाहता है जो उसने तुम्हें दी हैं बस तुम ख़ूबियों की ओर लपको, तुम सबको अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है फिर जिन चीज़ों में तुम मतभेद करते रहे हो वह तुम्हें उसकी ख़बर कर देगा (48) और आप तो उनके बीच जो अल्लाह ने उतारा उसके अनुसार ही फ़ैसला करते रहिए और उनकी इच्छाओं पर मत चलिये और इससे चौकन्ना रहिये कि कहीं वे आप को अल्लाह की उतारी हुई किसी चीज़ से बहका न दें फिर अगर वे मुंह मोड़ें तो आप जान लीजिये कि अल्लाह बस यह चाहता है कि उनके कुछ पापों पर उनकी पकड़ करे और बेशक लोगों में अधिकतर तो नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) ही हैं (49) क्या वे जाहिली (युग) के फ़ैसले चाहते हैं और उन लोगों के लिए अल्लाह से बेहतर फ़ैसला करने वाला और कौन हो सकता है जो यक़ीन रखते हैं[4] (50)

(1) खुद हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम अपनी ज़बान से भी तौरेत की पुष्टि (तस्दीक़) करते थे और इंजील में भी उसकी पुष्टि थी और मिलते–जुलते आदेश थे। आगे इंजील वालों से कहा जा रहा है कि उनको इस पर अमल करना चाहिए था और ख़ासतौर पर उसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में जो शुभसमाचार हैं उनको मान कर ईमान लाना चाहिए (2) मुहैमिन के कई अर्थ हैं प्रभावी, शासक, रक्षक, निगरां और हर अर्थ के लिहाज़ से कुरआन मजीद पिछली किताबों के लिए मुहैमिन है, अल्लाह की जो अमानत (धरोहर) उन किताबों में थी वह पूर्ण रूप से पवित्र क़ुर्आन में मौजूद है (3) सबके मूल एक हैं लेकिन आदेशों में अंतर है, शरीअ़त अलग–अलग है और यह भी अल्लाह की ओर से एक परीक्षा है कि आदमी जिस तरीक़े पर चलता रहा है और उसका आदी हो गया है, अब अल्लाह के आदेश से उसको छोड़ना उसके लिए मुश्किल हो जाता है बस जो अल्लाह के आदेश पर चलना चाहता है वह उसकी बात मानता है (4) यहूदियों में आपस में विवाद हुआ एक ओर उनके बड़े–बड़े उलमा (शास्त्रवेत्ता) थे वे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर कहने लगे कि आप अगर हमारे पक्ष में फ़ैसला कर दें तो हम सब यहूदी मुसलमान हो जाएंगे, यह बहुत बड़ी प्रस्तुति थी लेकिन आपने इसे ठुकरा दिया और ठीक फ़ैसला कर दिया।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰۤى اَوْلِيَآءَ ۘ
بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۱﴾ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِىْ
قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰٓى اَنْ
تُصِيْبَنَا دَآئِرَةٌ ؕ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِىَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ
فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَاۤ اَسَرُّوْا فِىْۤ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ﴿۵۲﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْۤا اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ
لَمَعَكُمْ ؕ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۵۳﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِى اللّٰهُ بِقَوْمٍ
يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۫
يُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ
فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۴﴾ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَ
رَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۵۶﴾

منزل ٢

ऐ ईमान वालो! यहूदियों और ईसाइयों को मित्र मत बनाओ वे एक–दूसरे के मित्र हैं और तुममें जो उनको मित्र बनाएगा तो वह उन्हीं में गिना जाएगा, बेशक अल्लाह नाइन्साफ़ी करने वालों को रास्ता नहीं दिखाता (51) बस आप उन लोगों को देखेंगे जिनके दिलों में रोग है वे तेज़ी के साथ उन्हीं में मिले जाते हैं, कहते हैं कि हमें डर है कि हम किसी मुसीबत में न घिर जाएं तो वह दिन दूर नहीं कि अल्लाह (मुसलमानों को) विजय प्रदान कर दे या अपने पास से कोई ख़ास आदेश भेज दे फिर उन्होंने जो अपने दिलों में छिपा रखा है उस पर उनको पछतावा हो[1] (52) और ईमान वाले कहेंगे क्या ये वही लोग हैं जो बड़े ज़ोर–शोर से क़समें खाया करते थे कि हम तो तुम्हारे ही साथ हैं, उनके सब काम बेकार गए फिर वे नुक़सान उठा गए (53) ऐ ईमान वालो! तुममें जो भी अपने दीन (धर्म) से फिरेगा तो अल्लाह आगे एक ऐसी क़ौम ले आएगा जिनसे वह प्यार करता होगा और वे उससे प्रेम करते होंगे, ईमान वालों के लिए बहुत ही नर्म और इनकार करने वालों के लिए कठोर होंगे, अल्लाह के रास्ते में वे जान खपाते होंगे और किसी निन्दा करने वाले की निन्दा का उनको भय न होगा, यह अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) है वह जिसे चाहे प्रदान करे और अल्लाह बड़ी गुंजाइश वाला ख़ूब जानने वाला है (54) तुम्हारा मित्र तो अल्लाह है और उसका पैग़म्बर है और वे लोग हैं जो ईमान लाते हैं और नमाज़ क़ायम रखते हैं और ज़कात अदा करते हैं और वे ख़ुशूअ् रखने वाले लोग हैं (55) और जो भी अल्लाह और उसके पैग़म्बर और ईमान वालों से दोस्ती रखेगा तो ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) होने वाला तो अल्लाह ही का गिरोह है[2] (56)

---

(1) यह मुनाफ़िक़ों और कमज़ोर अक़ीदा (विश्वास) रखने वालों का उल्लेख है कि वे यहूदियों व ईसाइयों से भी दोस्ती रखते थे इस डर से कि अगर मुसलमान हार गए तो वे उनके काम आएंगे, अल्लाह कहता है कि हो सकता है मुसलमानों की जीत निकट हो और अल्लाह की ओर से विशेष आदेश आने वाला हो तब तो इन मुनाफ़िक़ों के केवल पछतावा हाथ आएगा, मक्का विजय के अवसर पर पूरी तरह यह वास्तविकता सामने आ गई (2) बात साफ़ कर दी गई कि असल ईमान है और ईमान वालों से सम्बंध है, अल्लाह का फ़ैसला उस दीन और दीन वालों की हिफ़ाज़त का है जो इसमें मज़बूती के साथ रहेगा उसको किसी का भय और परवाह न होगी, वही सफल होगा।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيۡنَ اتَّخَذُوۡا دِيۡنَكُمۡ
هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ
وَالۡكُفَّارَ اَوۡلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿۵۷﴾ وَ
اِذَا نَادَيۡتُمۡ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوۡهَا هُزُوًا وَّلَعِبًا ؕ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمۡ قَوۡمٌ لَّا يَعۡقِلُوۡنَ ﴿۵۸﴾ قُلۡ يٰۤاَهۡلَ الۡكِتٰبِ هَلۡ تَنۡقِمُوۡنَ
مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنۡ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡنَا وَمَاۤ اُنۡزِلَ مِنۡ
قَبۡلُ ۙ وَاَنَّ اَكۡثَرَكُمۡ فٰسِقُوۡنَ ﴿۵۹﴾ قُلۡ هَلۡ اُنَبِّئُكُمۡ بِشَرٍّ مِّنۡ ذٰلِكَ
مَثُوۡبَةً عِنۡدَ اللّٰهِ ؕ مَنۡ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيۡهِ وَجَعَلَ
مِنۡهُمُ الۡقِرَدَةَ وَالۡخَنَازِيۡرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوۡتَ ؕ اُولٰۤئِكَ شَرٌّ
مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنۡ سَوَآءِ السَّبِيۡلِ ﴿۶۰﴾ وَاِذَا جَآءُوۡكُمۡ قَالُوۡۤا
اٰمَنَّا وَقَدۡ دَّخَلُوۡا بِالۡكُفۡرِ وَهُمۡ قَدۡ خَرَجُوۡا بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ
اَعۡلَمُ بِمَا كَانُوۡا يَكۡتُمُوۡنَ ﴿۶۱﴾ وَتَرٰى كَثِيۡرًا مِّنۡهُمۡ يُسَارِعُوۡنَ
فِى الۡاِثۡمِ وَالۡعُدۡوَانِ وَاَكۡلِهِمُ السُّحۡتَ ؕ لَبِئۡسَ مَا كَانُوۡا
يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۶۲﴾ لَوۡلَا يَنۡهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوۡنَ وَالۡاَحۡبَارُ عَنۡ
قَوۡلِهِمُ الۡاِثۡمَ وَاَكۡلِهِمُ السُّحۡتَ ؕ لَبِئۡسَ مَا كَانُوۡا يَصۡنَعُوۡنَ ﴿۶۳﴾

منزل ٢

ऐ ईमान वालो! जिन लोगों को तुमसे पहले किताब मिली उनमें जिन्होंने तुम्हारे दीन (धर्म) को हंसी और खेल बना रखा है उनको और काफ़िरों को तुम मित्र मत बनाना और अल्लाह से डरते रहना अगर तुम ईमान रखते हो (57) और जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो तो वे उसको मज़ाक़ और खेल बनाते हैं, यह इसलिए है कि वे बिना बुद्धि के लोग हैं (58) आप कह दीजिए कि ऐ अहल–ए–किताब क्या तुमको हमसे केवल इसलिए बैर है कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारे लिए उतरा और जो पहले उतर चुका जबकि तुम में अधिकतर नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) हैं (59) क्या मैं तुम्हें यह न बता दूं कि अल्लाह के यहां उससे बढ़कर किस की बुरी सज़ा है, यह वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत (धिक्कार) की और उन पर ग़ुस्सा हुआ उनमें उसने बंदर और सुअर बना दिए और जो तागूत (शैतान) के बंदे बने वे परले दर्जे के लोग हैं और सीधे रास्ते से बिल्कुल ही भटके हुए हैं (60) और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए जबकि वे कुफ़्र के साथ ही निकल गए और वे जो छिपाते हैं अल्लाह उसको ख़ूब जानता है[1] (61) उनमें से बहुतों को आप देखेंगे कि वे पाप पर, सरकशी पर और हराम खाने पर लपकते हैं, कैसी बुरी उनकी करतूत है (62) संत (दुरवेश) और उलमा उनको गुनाह की बात कहने और हराम खाने से क्यों नहीं रोकते कैसा बुरा तरीक़ा उन्होंने अपना रखा है[2] (63)

(1) अहल–ए–किताब और मुश्रिकों की दोस्ती से मना किया गया था अब स्पष्ट रूप से उसकी ख़राबियां बयान की जा रही हैं और ईमान वालों के ईमानी स्वाभिमान को जागृत किया जा रहा है क्या तुम ऐसे लोगों से दोस्ती करोगे जो अ़ज़ाब के अधिकारी हो चुके और वे परले दर्जे के लोग हैं फिर मुनाफ़िक़ों का हाल बयान हुआ कि वे आकर अपने ईमान का प्रदर्शन करते हैं जबकि वे कुफ़्र के साथ ही आए और कुफ़्र के साथ ही निकल गए और उनके दिल के हाल को अल्लाह ख़ूब जानता है (2) वे बुराइयों के दलदल में फंसते जा रहे हैं और उलमा और अल्लाह वालों का हाल यह है कि वे गुंगे हो गए हैं इसलिए कि उनके मामलात जनता से सम्बंधित हैं, सही बात कहना उनके लिए कठिन है यह यहूदियों का हाल था और इसमें इस उम्मत को भी चेताया जा रहा है।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا بِمَا
قَالُوا بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا
مِّنْهُم مَّا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا وَأَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا
لِّلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا وَاللَّهُ لَا
يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٦٤﴾ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا
عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأَدْخَلْنَاهُمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا
التَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِم مِّن رَّبِّهِمْ لَأَكَلُوا مِن
فَوْقِهِمْ وَمِن تَحْتِ أَرْجُلِهِم مِّنْهُمْ أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ وَكَثِيرٌ
مِّنْهُمْ سَاءَ مَا يَعْمَلُونَ ﴿٦٦﴾ يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنزِلَ إِلَيْكَ
مِن رَّبِّكَ وَإِن لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ
مِنَ النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٦٧﴾ قُلْ يَا أَهْلَ
الْكِتَابِ لَسْتُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ حَتَّىٰ تُقِيمُوا التَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ وَمَا
أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم مَّا أُنزِلَ إِلَيْكَ
مِن رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٦٨﴾

وقف لازم

ع

منزل ٢

और यहूदी कहते हैं कि अल्लाह का हाथ बंधा हुआ है, हाथ तो ख़ुद उनके बंध गए हैं, और अपनी बात की वजह से उन पर फिटकार हुई[1] हां अल्लाह के तो दोनों हाथ ख़ूब खुले हैं जैसे चाहता है ख़र्च करता है और आपके पालनहार की ओर से आप पर जो उतारा गया उससे उनमें से बहुतों की सरकशी और इनकार में बढ़ोत्तरी ही होती जाती है और हमने उनके बीच क़यामत तक के लिए दुश्मनी और द्वेष पैदा कर दिया है जब जब उन्होंने जंग के लिए आग भड़काई वह अल्लाह ने बुझा दी और धरती में वे फ़साद के लिए प्रयास करते रहते हैं, और अल्लाह फ़सादियों को पसंद नहीं करता[2] (64) और अगर अहल–ए–किताब ईमान ले आते और परहेज़गारी अपनाते तो ज़रूर हम उनकी बुराइयां मिटा देते और उनको नेमत के बाग़ों में ज़रूर दाख़िल करते[3] (65) और अगर वे तौरेत और इंजील की और जो भी उनपर उनके पालनहार की ओर से उतरा उसकी पाबन्दी करते तो ज़रूर उनको खाना मिलता अपने ऊपर से और अपने पैरों के नीचे से, उनमें एक गिरोह ठीक रास्ते पर चलने वाला भी है और उनमें बड़ी संख्या कैसे बुरे कामों में लगी हुई है[4] (66) ऐ रसूल! जो आपके पालनहार की ओर से आप पर उतरा है उसे पहुंचा दीजिए और अगर आपने ऐसा न किया तो आपने उसका संदेश न पहुंचाया और अल्लाह लोगों से आपकी रक्षा करेगा और अल्लाह इनकार करने वालों को रास्ता नहीं देता[5] (67) आप कह दीजिए कि ऐ अहल–ए–किताब तुम उस समय तक किसी रास्ते पर नहीं जब तक तुम तौरेत और इंजील की और उसकी जो तुम्हारे पालनहार के पास से तुम पर उतरा पाबंदी नहीं करते और आपके पास आपके पालनहार की ओर से जो भी उतरा उससे उनमें से बहुतों की सरकशी और कुफ़्र बढ़ता ही जाता है तो आप इनकार करने वाले लोगों पर तरस न खाएं (68)

(1) यहूदियों की बदतमीज़ियां हद से बढ़ी हुई थीं, कभी कहते हैं अल्लाह फ़क़ीर है हम धनी हैं, कभी कहते अल्लाह का हाथ बंध गया इसलिए हमें कुछ मिलता नहीं, अल्लाह कहता है यह उन पर लानत (फिटकार) का परिणाम है (2) केवल हठधर्मी में बात नहीं मानते और उनके इनकार में बढ़ोत्तरी होती जाती है और वे हर समय इस प्रयास में रहते हैं कि मुसलमानों के ख़िलाफ़ साजिशें करते रहें और मुसलमानों से समझौता के बावजूद वे मुश्रिकों से साठं–गाठं करते हैं और कामना करते हैं कि मुसलमानों को पराजय हो मगर अल्लाह तआ़ला उनकी हर साजिश को नाकाम कर देता है (3) पिछली सारी ख़राबियों के बावजूद अगर वे तौबा कर लें तो अल्लाह तआ़ला हर तरह उनको पुरस्कार से सम्मानित कर देगा (4) तौरेत और इंजील पर अ़मल करते तो ज़ाहिर है अल्लाह के अंतिम पैग़म्बर को भी मानते और आप ही की शरीअ़त (क़ानून) पर अमल करते (5) यानी आपका काम बिना किसी कमी–बेशी के पहुंचा देना है आप किसी का ख़्याल न करें अल्लाह तआ़ला आपकी रक्षा करेगा और हिदायत (संमार्ग दिखाना) भी अल्लाह के हाथ में है, आपका काम पहुंचाना है, अगर वे हिदायत (संमार्ग) पर नहीं आते तो आप ग़म न करें।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئُونَ وَالنَّصَارَىٰ
مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ﴿٦٩﴾ لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَأَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ
رُسُلًا ۖ كُلَّمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنْفُسُهُمْ فَرِيقًا كَذَّبُوا
وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ ﴿٧٠﴾ وَحَسِبُوا أَلَّا تَكُونَ فِتْنَةٌ فَعَمُوا وَصَمُّوا ثُمَّ
تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِنْهُمْ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا
يَعْمَلُونَ ﴿٧١﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۖ
وَقَالَ الْمَسِيحُ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُ
مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۖ
وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ
ثَلَاثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۚ وَإِنْ لَمْ يَنْتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ
لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٣﴾ أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى
اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٧٤﴾ مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا
رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ ۖ كَانَا يَأْكُلَانِ
الطَّعَامَ ۗ انْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ انْظُرْ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٧٥﴾

منزل٢

बेशक जो मुसलमान हैं और जो यहूदी हैं और साबी और ईसाई उनमें जो भी अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाएंगे और नेक काम करेंगे तो उन पर न कोई भय है और न वे दुखी होंगे[1] (69) और हमने बनी इस्राईल से अहद (प्रतिज्ञा) लिया और उनकी ओर पैग़म्बर भेजे, जब जब उनके पास पैग़म्बर ऐसी चीज़ लेकर आए जिसका उनका मन न चाहता था तो कितनों को उन्होंने झुठला दिया और कितनों का ख़ून करने लगे (70) वे समझे कि कोई परीक्षा न पड़ेगी बस वे अंधे बहरे हो गए फिर अल्लाह ने उन पर ध्यान दिया फिर भी उनमें बड़ी संख्या अंधी बहरी ही रही और वे जो कुछ करते हैं अल्लाह उसको ख़ूब देख रहा है[2] (71) और जिन्होंने भी कहा अल्लाह ही मसीह पुत्र मरियम है वे काफ़िर ही हो गए जबकि मसीह ने कहा था कि ऐ बनी इस्राईल उस अल्लाह की बन्दगी (उपासना) करो जो मेरा भी पालनहार है और तुम्हारा भी पालनहार है बेशक जो भी अल्लाह के साथ साझीदार ठहराएगा तो अल्लाह ने उसके लिए जन्नत हराम कर दी और उसका ठिकाना दोज़ख है और अन्याय करने वालों का कोई मददगार न होगा (72) बेशक वे भी काफ़िर हुए जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन का तीसरा है जबकि एक माबूद (पूज्य) के सिवा कोई भी माबूद (पूज्य) नहीं, अगर वे अपनी बातों से बाज़ नहीं आते तो उनमें इनकार करने वाले ज़रूर दुखद अज़ाब का मज़ा चखेंगे(73) फिर भला क्यों अल्लाह की ओर वे नहीं लौटते (संपर्क नहीं करते) और उससे माफी नहीं मांगते जबकि अल्लाह तो बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है (74) मरियम के बेटे मसीह तो मात्र एक पैग़म्बर हैं उनसे पहले भी पैग़म्बर गुज़र चुके और उनकी मां (अल्लाह की) एक वलीया (स्त्री) हैं, दोनों खाना खाया करते थे, आप देखिए कि हम उनके लिए कैसे निशानियां खोल खोल कर बयान करते हैं फिर आप देखिए कि वे कहां उलटे पांव फिर जाते हैं[3] (75)

---

(1) कोई मुसलमानों के नाम रख लेने से मुसलमान नहीं होता जब तक उसका ईमान अल्लाह और आख़िरत के दिन पर न हो (2) यहूदियों ने हमेशा अल्लाह के आदेशों की अवमानना की और वादा के ख़िलाफ़ किया, पैग़म्बर जब उनकी मर्ज़ी के मुताबिक़ बात कहता तो मानते वरना इतने ज़्यादा निडर हो गये थे कि कितनों को उन्होंने क़त्ल कर डाला फिर उन पर आपदा आई और बख़्तनस्सर ने उनको तबाह व बर्बाद कर दिया, एक ज़माने तक क़ैदी बने रहे और प्रतिबंध झेलते रहे फिर अल्लाह ने एहसान किया और बैतुल मक़्दिस उनको वापस मिला, कुछ समय तक तो ठीक रहे लेकिन फिर वही हरकतें शुरू कर दीं, हज़रत ज़करिया व हज़रत यहया को क़त्ल किया और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के क़त्ल के पीछे पड़ गए (3) अब यह ईसाइयों का बयान है उनमें एक सम्प्रदाय हज़रत ईसा को ख़ुदा ही कहता था और एक सम्प्रदाय तस्लीस (तीन को मिलाकर ख़ुदा) का मत रखता था इसी विश्वास व धारणा को नकारा जा रहा है, एक मोटी मिसाल दी जा रही है वे दोनों खाते पीते थे मानवीय आवश्यकताएं उनको होती थीं जो खुद मोहताज हो वह इच्छा पूर्ति कैसे कर सकता है।

قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ
وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۷۶﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ
دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ
قَبْلُ وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿۷۷﴾ لُعِنَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى
ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿۷۸﴾ كَانُوْا لَا
يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۹﴾
تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ
لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ
خٰلِدُوْنَ ﴿۸۰﴾ وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَاۤ اُنْزِلَ
اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ
فٰسِقُوْنَ ﴿۸۱﴾ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا
الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً
لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ
مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۸۲﴾

منزل۲

आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को छोड़कर ऐसों को पूजते हो जो तुम्हारे लिए किसी नफ़ा नुक़सान का मालिक नहीं और अल्लाह ही ख़ूब सुनने वाला ख़ूब जानने वाला है (76) आप कह दीजिए कि ऐ अहल–ए–किताब! अपने दीन (धर्म) में नाहक़ हद से आगे मत बढ़ो[1] और उन लोगों की इच्छाओं पर मत चलो जो पहले गुमराह हो चुके और उन्होंने बहुतों को गुमराह किया और सीधे रास्ते से भटक गए (77) बनी इस्राईल में जिन्होंने कुफ़्र किया उन पर दाऊद और ईसा पुत्र मरियम की ज़बान से फिटकार की गई इसलिए कि उन्होंने नाफरमानी (अवज्ञा) की और वे हद से आगे बढ़ते रहे (78) जो बुराई वे करते थे उससे एक दूसरे को रोकते न थे बड़े ही बुरे कामों में वे लगे हुए थे (79) उनमें बहुतों को आप देखेंगे कि वे काफ़िरों से दोस्ती रचाते हैं,[2] बड़ी ही बुरी चीज़ है जो वे अपने लिए आगे भेज चुके हैं जिससे उनपर अल्लाह का प्रकोप हुआ और वे हमेशा अज़ाब ही में पड़े रहेंगे (80) और अगर वे अल्लाह पर और पैग़म्बर पर और उसपर उतरी चीज़ पर ईमान लाए होते तो (कभी) उन (काफ़िरों) को दोस्त न बनाते लेकिन उनमें अधिकतर नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) हैं[3] (81) आप लोगों में ईमान वालों के साथ सबसे बढ़कर दुश्मनी रखने वाले यहूदियों और मुश्रिकों को पाएंगे और आप पाएंगे कि ईमान वालो के लिए दोस्ती में सबसे ज़्यादा निकट वे लोग हैं जो कहते हैं कि हम ईसाई हैं इसलिए कि उनमें बहुत से आलिम और दुरवेश हैं और वे घमण्ड नहीं करते (82)

(1) अक़ीदे (विश्वास) में हद से आगे बढ़ना यह हुआ कि ईसा को ख़ुदा का बेटा बना बैठे और कर्म में हद से आगे बढ़ना यह है कि रहबानियत (सन्यास) को अल्लाह से निकटता का साधन समझ लिया (2) उन यहूदियों की ओर इशारा है जो मदीने में आबाद थे और उन्होंने हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से समझौता कर रखा था मगर फिर भी मक्के के मुश्रिकों से छिप कर दोस्ती रखते थे और उनके साथ मिलकर मुसलमानों के ख़िलाफ़ षडयंत्र रचते थे (3) यहूदियों और ईसाईयों का संयुक्त हाल बयान हो रहा है कि उन्होंने बुराइयों में कोई कमी न छोड़ी, काफ़िरों को दोस्त बनाते और ईमान वालों से दुश्मनी करते हैं अगर वे ईमान को समझते और मानते तो अल्लाह के बाग़ियों से दोस्ती न रचाते फिर आगे बताया जा रहा है कि यहूदी और मुश्रिक मुसलमानों के सख़्त दुश्मन हैं और उनकी तुलना में ईसाई थोड़ी नरमी रखते हैं इसलिए कि उनमें उलमा (धर्म–ज्ञाता) और दुरवेश लोग भी हैं और उनमें घमण्ड नहीं है, आज भी यह एक वास्तविकता है कि यहूदियों की दुश्मनी ईसाइयो से बहुत ज़्यादा बढ़ी हुई है और वे ईसाईयों को भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ उकसाते रहते हैं, और ईसाइयों में यहूदी मानसिकता रखने वाली एक बड़ी संख्या उत्पन्न हो गई है जो मुसलमानों की सख़्त दुश्मन है।

وإذا سمعوا ما أنزل إلى الرسول ترى أعينهم
تفيض من الدمع مما عرفوا من الحق يقولون ربنا آمنا
فاكتبنا مع الشاهدين ﴿٨٣﴾ وما لنا لا نؤمن بالله وما جاءنا من
الحق ونطمع أن يدخلنا ربنا مع القوم الصالحين ﴿٨٤﴾
فأثابهم الله بما قالوا جنات تجري من تحتها الأنهار خالدين
فيها وذلك جزاء المحسنين ﴿٨٥﴾ والذين كفروا وكذبوا
بآياتنا أولئك أصحاب الجحيم ﴿٨٦﴾ يا أيها الذين آمنوا لا
تحرموا طيبات ما أحل الله لكم ولا تعتدوا إن الله لا
يحب المعتدين ﴿٨٧﴾ وكلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا و
اتقوا الله الذي أنتم به مؤمنون ﴿٨٨﴾ لا يؤاخذكم الله
باللغو في أيمانكم ولكن يؤاخذكم بما عقدتم الأيمان
فكفارته إطعام عشرة مساكين من أوسط ما تطعمون
أهليكم أو كسوتهم أو تحرير رقبة فمن لم يجد فصيام
ثلاثة أيام ذلك كفارة أيمانكم إذا حلفتم واحفظوا
أيمانكم كذلك يبين الله لكم آياته لعلكم تشكرون ﴿٨٩﴾

منزل ٢

और जब वे उस (किताब) को सुनते हैं जो पैग़म्बर पर उतरी तो आप देखेंगे कि उनकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं इसलिए कि उन्होंने सत्य को पहचान लिया, वे कहते हैं ऐ हमारे पालनहार हमने मान लिया बस तू हमें गवाही देने वालों में लिख दे (83) और हम अल्लाह पर और उस हक़ पर जो हमारे पास पहुँच चुका क्यों न ईमान लाते जबकि हम यह कामना करते हैं कि हमारा पालनहार हमें नेक लोगों में शामिल कर दे (84) बस अल्लाह ने उनके इस कहने पर उनको ऐसी जन्नतें (स्वर्ग) बदले में दीं जिनके नीचे नहरें जारी हैं उसी में हमेशा रहेंगे और अच्छे काम करने वालों का बदला यही है[1] (85) और जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही लोग दोज़ख़ (नर्क) वाले हैं (86) ऐ ईमान वालो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो पवित्र चीज़ें हलाल (वैध) कर दीं उनको हराम (अवैध) मत ठहराओ और हद से आगे न बढ़ो, हद से आगे बढ़ने वालों को अल्लाह हरगिज़ पसंद नहीं करता (87) और अल्लाह ने तुम्हें जो हलाल व पवित्र रोज़ी दी है उसमें से खाओ पियो और अल्लाह से डरते रहो जिस पर तुम्हारा ईमान है[2] (88) तुम्हारी निरर्थक कसमों पर अल्लाह तुम्हारी पकड़ नहीं करता हाँ जो पक्की कसमें तुम खाते हो उन पर अल्लाह तुम्हारी पकड़ करता है, बस इसका कफ्फारा (प्रायश्चित) यह है कि जो औसत खाना तुम अपने घर वालों को खिलाते हो वह दस मोहताजों को खिलाओ या उनको कपड़े दो या एक गुलाम आज़ाद करो फिर जिसको उपलब्ध ये चीज़ें न हों तो तीन दिन के रोज़े रखे यह तुम्हारी कसमों का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) है जब तुमने कसमें खा ली हों और अपनी कसमों की रक्षा किया करो, अल्लाह अपनी आयतें खोल–खोल कर बयान करता है, शायद कि तुम शुक्र करने वाले बन जाओ[3] (89)

(1) विशेष रूप से इसमें हब्शा (इथोपिया) के ईसाई राजा की ओर इशारा है जब मुसलमान वहाँ हिजरत कर गए और उसने शरण दे दी तो मक्का के मुश्रिक (बहुदेववादी) उसको भड़काने पहुँच गए, उसने मुसलमानों को बुलाया जब क़ुरआन मजीद उनके सामने पढ़ा गया तो वहाँ मौजूद ईसाई उलमा (धर्म–ज्ञाता) रो पड़े और वे मुसलमान हो गए, (2) ईसाई जो धर्म में हद से आगे बढ़ गये थे वह यह था कि वे रहबानियत (सन्यास) तक पहुँच गए थे उसको मना किया जा रहा है कि जो चीज़ें अल्लाह ने हलाल (वैध) की हैं वह खाओ लेकिन हद से आगे न बढ़ो और तकवा (संयम) का ख़्याल रखो बीच की राह अपनाने का निर्देश है न दुनियावी स्वादों में बहुत ज़्यादा व्यस्तता न हो और न रहबानियत (सन्यास) अपनाते हुए हलाह चीज़ें छोड़ दी जाएं (3) हलाल (वैध) को आदमी कसम खा कर हराम (अवैधानिक) कर लेता है इसी संबंध में कसम की किस्मों और उसके आदेश का बयान है अगर कोई हलाल (वैध) को हराम (अवैध) कर लेता है तो कसम तोड़े और कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) अदा करे, बेकार की बातचीत के बीच जो कसमें खा ली जाती हैं उन पर कोई कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) नहीं है लेकिन जहाँ तक सम्भव हो कसमें न खानी चाहिए यही कसमों की रक्षा है और अगर खा लेता है तो जहाँ तक संभव हो पूरी करे और अगर तोड़े तो कफ़्फ़ारा अदा करे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ
رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّمَا
يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ
وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿۹۱﴾
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا
عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۹۲﴾ لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۹۳﴾ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَ
رِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ
ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۹۴﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ
حُرُمٌ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ
يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ
مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ عَفَا اللّٰهُ
عَمَّا سَلَفَ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۹۵﴾

منزل ۲

ऐ ईमान वालो! निःसंदेह शराब, जुआ, मूर्ति और पांसे गंदे शैतान के काम हैं तो उनसे बचते रहो ताकि तुम सफल हो जाओ[1] (90) शैतान तो चाहता ही है कि शराब और जुए से तुममें दुश्मनी और नफ़रत डाल दे और अल्लाह की याद से और नमाज़ से तुम्हें रोक दे तो अब तो तुम बाज़ आ जाओगे?[2] (91) और अल्लाह के आदेशों को मानो और पैग़म्बर के आदेशों को मानो और बचते रहो फिर अगर तुमने मुँह मोड़ा तो जान लो कि हमारे पैग़म्बर का काम तो साफ़–साफ़ पहुँचा देना है (92) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये उन पर कोई पाप नहीं जो वे पहले खा चुके जब वे डरे और ईमान ले आए और उन्होंने अच्छे काम किये फिर वे डरे और विश्वास किया फिर वे डरे और उन्होंने उत्कृष्ट (आला) काम किये और अल्लाह उत्कृष्ट काम करने वालों को पसन्द करता है[3] (93) ऐ ईमान वालो! अल्लाह तुम्हें ज़रूर आजमाएगा ऐसे शिकार से जिस तक तुम्हारे हाथ या तुम्हारी नज़रें पहुँच जाती हैं ताकि अल्लाह जान ले कि कौन बिन देखे उससे डरता है तो जिसने उसके बाद भी ज़्यादती की तो उसके लिए दुखद अज़ाब (दण्ड) है[4] (94) ऐ ईमान वालो! जब तुम एहराम की हालत में हो तो शिकार मत मारो फिर तुममें जो जान बूझ कर उसको मार दे तो जो जानवर उसने मारा उसी तरह का (जानवर) उसका जुर्माना है, जिसका फ़ैसला तुममें दो इन्साफ़ करने वाले करेंगे, इस तौर पर कि वह क़ुर्बानी का जानवर काबा तक पहुँचाया जाए या ग़रीबों को खाना खिलाकर कफ़्फ़ारा अदा किया जाए या उसके बराबर रोज़े रखे जाएं[5] ताकि वह अपने किए की सज़ा पा लें, जो कुछ हो चुका वह अल्लाह ने माफ़ कर दिया और जो दोबारा यह हरकत करेगा तो अल्लाह उससे बदला लेगा और अल्लाह जबर्दस्त (प्रभुत्वशाली) है बदला लेने वाला है[6] (95)

---

(1) शराब और जुवे के बारे में पहले भी कहा जा चुका था ''व इस्मुहुमा अकबरु मिन नफ़्इहिमा'' (उनका गुनाह उनके फायदे से अधिक है) फिर आयत ''ला तक् र बुस्सलात व अंतुम सुकारा'' (नशे की हालत में नमाज़ के निकट मत जाओ) उतरी लेकिन हराम होने का स्पष्ट आदेश नहीं आया था हज़रत उमर रज़ि0 कहते थे ''अल्ला हुम्मा बइ इन लना बयानन् शाफ़ियन'' अंततः यह आयतें उतरीं जिसमें मूर्ति पूजा की तरह इस गंदगी से भी बचने की हिदायत (निर्देश) भी ''फहल अंतुम मुन्तहून'' सुनते ही हज़रत उमर रज़ि0 पुकार उठे ''इन्तहइना इन्तहइना'' लोगों ने शराब के मटके तोड़ डाले, मधुशालाएं बर्बाद कर दी गईं मदीने की नालियों में शराब बह रही थी (2) आम तौर से शराब और जुवा झगड़ों का कारण बनते हैं फिर आदमी को किसी चीज़ का होश नहीं रहता (3) संशय पैदा हुआ कि जो लोग शराब पीकर शहीद हो गए या पहले उनका निधन हो गया उनका क्या होगा, उसका जवाब है कि जब तक वे (संयम) के विभिन्न दर्जों पर आसीन रहे और हराम होने से पहले उसने शराब पी भी ली तो उनकी पकड़ न होगी वह तो अल्लाह का प्रिय है (4) हुदैबिया घटना के अवसर पर यह आदेश आया शिकार इतनी अधिक मात्रा में और निकट था कि हाथ से पकड़ सकते थे मगर वे अल्लाह के बन्दे जमे रहे (5) मसला यह है कि अगर कोई जानवर मार दिया तो उस जैसा ही कोई जानवर ऊंट, बैल, बकरी में से लेकर उसे हरम तक पहुंचाकर ज़िबह करे और ख़ुद न खाए या उस जानवर के बराबर सदक़ा कर दे और अगर इतनी हैसियत न हो तो जानवर की क़ीमत लगाकर दो सेर गेहूं के हिसाब जितने दिन बनते हों उतने दिन रोज़े रखे। (6) जान बूझ कर भी पहली गलती अल्लाह माफ़ कर देगा लेकिन अगर कोई दोबारा जानबूझ कर ग़लती करे तो अल्लाह उसको सख़्त सज़ा देगा और अगर भूल चूक कर शिकार कर लिया तो क़फ़्फ़ारा वही है हाँ पकड़ नहीं होगी।

أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ
عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ
تُحْشَرُونَ ﴿٩٦﴾ جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَامًا لِّلنَّاسِ
وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ۚ ذَٰلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمٌ ﴿٩٧﴾ اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿٩٨﴾ مَّا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ
وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٩٩﴾ قُل لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ
أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ﴿١٠٠﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِن
تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ وَإِن تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ الْقُرْآنُ تُبْدَ
لَكُمْ عَفَا اللَّهُ عَنْهَا ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٠١﴾ قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ
مِّن قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا كَافِرِينَ ﴿١٠٢﴾ مَا جَعَلَ اللَّهُ مِن
بَحِيرَةٍ وَلَا سَائِبَةٍ وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَا حَامٍ ۙ وَلَٰكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۖ وَأَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٣﴾

ع ١٣

منزل٢

समन्दर का शिकार और उसका खाना तुम्हारे लिए हलाल किया गया ताकि वह तुम्हारे और मुसाफ़िरों (यात्रियों) के लिए फ़ायदे का ज़रिया (साधन) बने और जब तक तुम एहराम की हालत में रहो तुम पर खुश्की (थलीय) का शिकार हराम (वर्जित) किया गया, अल्लाह से डरते रहो जिसके पास तुम्हें एकत्र किया जाएगा (96) अल्लाह ने काबा को जो बड़ी इज़्ज़त वाला घर है इंसानों के बाक़ी रहने का आधार बनाया है और[1] इज़्ज़त वाला महीना और हरम की कुर्बानी का जानवर और वह जानवर जिनके गलों में पट्टा डाला जाए (यह सब चीज़ें अल्लाह ने सम्मानित बनायी हैं) ताकि तुम समझ लो कि जो कुछ भी आसमानों में है और जो कुछ भी जमीन में है अल्लाह उनको खूब जानता है और अल्लाह हर चीज़ की पूरी जानकारी रखने वाला है[2] (97) जान लो बेशक अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला भी है और बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है (98) पैग़म्बर के ज़िम्मे तो पहुँचा देना है और तुम जो भी ज़ाहिर करते हो और जो भी छिपाते हो अल्लाह उसको जानता है (99) कह दीजिए कि गंदा और पाक बराबर नहीं हो सकते चाहे गंदे की अधिकता आपके अचम्भे में डाल दे तो ऐ होश वालो! अल्लाह से डरते रहो शायद तुम सफ़ल हो जाओ[3] (100) ऐ ईमान वालो! ऐसी चीजों के बारे में मत सवाल करो कि अगर वे तुम्हारे लिए खोल दी जाएं तो तुम्हें बुरी लगें और अगर तुम इस समय उनके बारे में पूछोगे जिस समय कुरआन उतर रहा है तो वह तुम्हारे लिए खोल दी जाएंगी और अल्लाह ने उनको माफ़ कर रखा है और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला बड़ा हलीम (सहनशील) है[4] (101) तुम से पहले भी एक क़ौम ने उनके बारे में सवाल किया था फिर वे उसका इनकार करने लगे[5] (102) बहीरा, साइबा, वसीला और हामी में से अल्लाह ने कुछ भी नहीं बनाया लेकिन काफ़िर अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं और उनमें अधिकतर नासमझ हैं[6] (103)

---

(1) जब तक वह घर स्थापित है इंसान बाक़ी है और जिस दिन वह घर न रहेगा क़यामत (महाप्रलय) आजाएगी (2) यानि काबा को इंसानो के बाक़ी रहने का मदार बनाने में जिन दीनी व दुनियावी उद्देश्यों की रिआयत की गयी और सोच के विपरीत जो भविष्यवाणी की गयी यह इस बात का प्रमाण है कि आसमान व ज़मीन में कोई चीज़ अल्लाह के ज्ञान की परिधि से बाहर नहीं हो सकती है (3) नापाक और गंदी चीज़ें चाहे कितनी ज़्यादा और मनमोहक नज़र आएं लेकिन उनका प्रयोग विनाशकारी ही है (4) हलाल (वैध) और हराम (अवैध) को बता दिया गया अब अकारण खोज करना अच्छा नहीं अगर अनावश्यक सवाल किए गए जब कि पवित्र कुरआन उतर रहा है तो हो सकता है कोई ऐसा कठोर कानून आ जाए जिस पर अमल कठिन हो जैसे पिछली कौमों के साथ हो चुका है (5) शायद यहूदियों की ओर इशारा है जो दीन के हुक्मों में ऐसी ही बाल की खाल निकाला करते थे और जब उस कारण से पाबन्दी लगायी जाती थी तो अमल करने से इनकार कर बैठते थे (6) यह वह जानवर हैं जिनको वे मूर्तियों के नाम पर छोड़ देते थे और उनसे लाभ उठाना हराम समझते थे। बहीरा उस जानवर को कहते थे जिसके कान चीर कर उसका दूध बुतों के नाम पर चढ़ा दिया जाता था। साइबा उस जानवर को कहते थे जो बुतों के नाम पर छोड़ दिया जाता था और उससे किसी भी तरह का फ़ायदा उठाना हराम समझा जाता था। वसीला उस ऊंटनी को कहते थे जो लगातार मादा बच्चे जनती थी उसको भी बुतों के नाम पर छोड़ दिया जाता था और हामी वह नर जानवर होता था जो विशेष संख्या में संबध स्थापित कर चुका हो, इसको भी बुतों के नाम पर छोड़ दिया जाता था।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا
حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ
شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٠٤﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ ۖ لَا
يَضُرُّكُم مَّن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۚ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُم
بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا
حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ
أَوْ آخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُم
مُّصِيبَةُ الْمَوْتِ ۚ تَحْبِسُونَهُمَا مِن بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ
إِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۙ وَلَا نَكْتُمُ
شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا إِذًا لَّمِنَ الْآثِمِينَ ﴿١٠٦﴾ فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا
إِثْمًا فَآخَرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ
الْأَوْلَيَانِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِن شَهَادَتِهِمَا وَ
مَا اعْتَدَيْنَا إِنَّا إِذًا لَّمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٧﴾ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَن يَأْتُوا
بِالشَّهَادَةِ عَلَىٰ وَجْهِهَا أَوْ يَخَافُوا أَن تُرَدَّ أَيْمَانٌ بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ ۗ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْمَعُوا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿١٠٨﴾

منزل٢

और जब उनसे कहा जाता है कि जो अल्लाह ने उतारा उसकी ओर और पैग़म्बर की ओर आ जाओ तो वे कहते हैं कि हमने जिस पर अपने बाप दादा को पाया वही हमको काफ़ी है चाहे उनके बाप–दादा ऐसे हों कि न कुछ जानते हों और न सही राह चलते हों[1] (104) ऐ ईमान वालो! अपनी चिन्ता करो तुम अगर सही रास्ता पा गए तो जो बहक गया वह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ता तुम सबको अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है तो वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या करते रहे थे[2] (105) ऐ ईमान वालो! जब तुम में किसी को मौत आ पहुँचे तो वसीयत के समय तुममें से दो विश्वसनीय गवाह हों या अगर तुम यात्रा पर हो और मौत की मुसीबत आ जाए तो तुम्हारे अलावा दूसरे (ग़ैर मुस्लिमों में से) दो (गवाह) हो जाएं अगर तुम्हें शक हो तो नमाज़ के बाद तुम इन दोनों को रोक लो तो वे दोनों अल्लाह की क़सम खाएं कि हम किसी क़ीमत पर इसका सौदा नहीं करेंगे चाहे कोई रिश्तेदार ही क्यों न हो और न हम अल्लाह की गवाही छिपाएंगे वरना तो हम गुनहगार हैं[3] (106) फिर अगर यह पता चल जाए कि गुनाह इन दोनों के ही ऊपर है तो (मृतक के) सबसे क़रीबी लोगों में से जिनका हक़ मारा गया है दो दूसरे इन दोनों की जगह खड़े हों फिर वे दोनों अल्लाह की क़सम खाकर कहें कि हमारी गवाही इन दोनों की गवाही से ज़्यादा सही है और हम हद से आगे नहीं बढ़े हैं वरना तो हम ही अन्यायी हैं[4] (107) इससे लगता है कि वे सही–सही गवाही दे देंगे या वे डरेगें कि इनकी कसमों के बाद कसमें उलटी न पड़ जाएं और अल्लाह से डरते रहो और सुनते रहो और अल्लाह तआ़ला नाफ़रमान क़ौम को राह नहीं चलाता[5] (108)

(1) विचार न करने वालों और न मानने वालों का जवाब आमतौर पर यही होता है (2) रास्ता पाना यह है कि आदमी ईमान व तकवा (संयम) अपनाए खुद बुराई से बचे और दूसरों को बचाने की कोशिश करे फिर अगर कोई नहीं मानता तो उसका कोई नुकसान नहीं, इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं है कि दूसरों की फ़िक्र ही न करे, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने इस आयत की यही व्याख्या की है (3) इस आयत में वसीयत का तरीक़ा बयान हुआ है, मुसलमान मरते समय यदि किसी को अपना माल हवाले करे तो बेहतर है कि दो मुसलमानों को गवाह बनाए और अगर यात्रा आदि हो और मुसलमान गवाह न मिलें तो गैर मुस्लिम को भी गवाह बनाया जा सकता है और यह आशंका हो कि वे यह बात छिपाएंगे तो किसी नमाज़ के बाद भीड़ में उनसे क़सम ली जाए कि जो उन्हें वसीयत की जा रही है वे उसमें से कुछ छिपाएंगे नहीं (4) मृतक के वारिसों को मालूम हो जाए कि जिसमें वसीयत की गई थी उन्होंने कुछ छिपा लिया है और वे इस्लामी गवाही से अपनी सच्चाई साबित न कर सकें तो मृतक के वारिसों को कसम दी जाएगी कि उनकी गवाही जिनसे वसीयत की गई थी उनकी गवाही से ज़्यादा स्वीकार किए जाने के हक़दार है, इसके शाने नुज़ूल में यह घटना बताई जाती है कि एक मुसलमान "बुदैल" ने दो ईसाइयों के साथ यात्रा की, शाम देश पहुँचकर बुदैल बीमार पड़ गए, उन्होंने अपने सामान की सूची बनाई और सामान में रख दी और जब बीमारी ज़्यादी बढ़ी तो दोनों ईसाइयों को वसी बनाया और कहा कि यह माल हमारे वारिसों के हवाले कर देना, वापसी पर उन्होंने वारिसों को माल हवाले कर दिया, लेकिन एक चाँदी का प्याला छिपा लिया, वारिसों को सूची मिली तो उसमें प्याले का भी उल्लेख था, पूछने पर उन्होंने इनकार कर दिया और कसम खाई कि हमने कोई चोरी नहीं की, फैसला उनके पक्ष में हो गया, कुछ समय के बाद वह प्याला उन्होंने सोनार के हाथ बेचा जब पकड़े गए तो उन्होंने कह दिया यह प्याला हमने मृतक से खरीदा था, मृतक के वारिसों ने फिर मुकद्मा किया, जब वह ईसाई मुद्दई थे उनसे गवाह मांगे गए वे प्रस्तुत न कर सके इसलिए दो वारिसों से जो मृतक के सगे संबंधी थे कसम ली गई कि प्याला मृतक की सम्पत्ति थी ⇒

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ قَالُوْا لَا عِلْمَ
لَنَا اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١٠٩﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ
اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ
الْقُدُسِ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ
وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَاِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ
كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِيْ وَ
تُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ
وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٠﴾ وَ
اِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ قَالُوْٓا
اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿١١١﴾ اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ
يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ
عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا
وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿١١٣﴾

وقف لازم

الربع

منزل٢

जिस दिन अल्लाह पैग़म्बरों को इकट्ठा करेगा फिर (उनसे) पूछेगा तुम्हें क्या जवाब मिला था वे कहेंगे हमें मालूम नहीं बेशक आप ही हैं जो ढ़की–छिपी चीज़ों को खूब जानते हैं[1] (109) जब अल्लाह कहेगा ऐ ईसा पुत्र मरियम अपने ऊपर और अपनी माँ पर मेरे एहसान को याद करो जब मैंने रूहुल कुदुस (जिबरईल) के द्वारा तुम्हारी मदद की, तुम लोगों से गोद में भी बात करते थे और अधेड़ उम्र में भी[2] और जब मैंने तुम को किताब व हिकमत (तत्वदर्शिता) और तौरेत व इंजील की शिक्षा दी और जब तुम मेरे आज्ञा से मिट्टी से पक्षी का रूप बनाते थे और उसमें फूँकते थे तो वह मेरी आज्ञा से पक्षी बन जाता था और तुम मेरी आज्ञा से पैदाइशी अंधे और कोढ़ी को ठीक कर दिया करते थे और जब तुम मेरी आज्ञा से[3] मुर्दों को निकाल खड़ा करते थे और जब मैंने बनी इस्राईल को तुम से रोक कर रखा था जब तुम उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए तो उनमें इनकार करने वालों ने कहा कि कुछ नहीं यह तो खुला जादू है (110) और जब मैंने हवारियों (साथियों) के दिल में डाला कि मुझ पर और मेरे पैग़म्बर पर ईमान ले आओ वे बोले हम ईमान ले आए और तू गवाह रह कि हम मुसलमान ही हैं (111) जब हवारियों (साथियों) ने कहा कि ऐ ईसा पुत्र मरियम क्या आप का पालनहार हम पर आसमान से भरा दस्तरख़्वान उतार सकता है उन्होंने कहा अगर तुम ईमान वाले हो तो अल्लाह से डरो (112) वे बोले हम चाहते हैं कि हम उसमें से खाएं और हमारे दिलों को संतुष्टि हो जाए और यह भी हम जान लें कि आपने हमसे सच बताया और हम इसके गवाह हो जाएं (113)

⟹ और फिर प्याले की कीमत वारिसों को दिलवाई गई (5) वारिसों को शक हो तो कसम का आदेश रखा ताकि कसम के डर से शुरु ही में झूठ न निकले फिर भी अगर उनकी बात झूठ निकले तो वारिस कसम खाएं यह भी इसलिए कि वे कसम में धोखा न करें और जानें कि अंत में हमारी कसम उलटी पड़ेगी।

(1) उम्मतों (समुदायों) के सामने पैग़म्बरों से पूछा जाएगा कि तुम्हारी दावत (बुलावे) का तुम्हारी उम्मत ने क्या जवाब दिया? तो वे कहेंगे कि हमें मालूम नहीं हम तो ज़ाहिर को जानते थे और उसके अनुसार फ़ैसला करते थे और अब फ़ैसला हक़ीक़त पर होने वाला है और हक़ीक़त को सिर्फ़ तू ही जानता है (2) अधेड़ उम्र में बात करना भी हज़रत ईसा के लिए एक मोजिज़ा इसलिए है कि वे जवानी ही में दुनिया से उठा लिए गए थे अब क़यामत के क़रीब फिर उतरेंगे और प्राकृतिक उम्र को पहुंचेंगे (3) बार–बार "बिइज़्नी" (मेरे आदेश से) दोहराने से बात साफ़ की जा रही है कि पैग़म्बरों के द्वारा जो मोजिज़े (इलाही चमत्कार) प्रकट होते हैं वह उनके हाथों से तो होते हैं मगर असल करने वाला अल्लाह है, दुनिया में जो कुछ होता है वह सब उसी के करने से होता है, कोई पैग़म्बर अपने अधिकार से मोजिज़ा प्रकट नहीं कर सकता जब तक अल्लाह का आदेश न हो और न वह अपनी हर इच्छा पूरी कर सकता है जब तक अल्लाह का आदेश न हो, पैग़म्बरों के सरदार (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सम्बोधित करके कह दिया गया कि "आप जिसको चाहें हिदायत नहीं दे सकते अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत देता है", हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के वर्णन में बार–बार "बिइज़्नी" की तकरार इसलिए भी है कि कोई उनको ख़ुदाई में शरीक न समझ ले जैसा कि ईसाइयों को धोखा हुआ, और उन्होंने हज़रत ईसा को ख़ुदा का बेटा समझ लिया और भटक गए।

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ
تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِنْكَ ۖ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ
خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿١١٤﴾ قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۖ فَمَنْ يَكْفُرْ بَعْدُ
مِنْكُمْ فَإِنِّي أُعَذِّبُهُ عَذَابًا لَا أُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١١٥﴾
وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي
وَأُمِّيَ إِلَٰهَيْنِ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ
مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ ۚ إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ ۚ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي
وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿١١٦﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ
إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ
شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ
وَأَنْتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١١٧﴾ إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِنْ
تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللَّهُ هَٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ
الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ ۚ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا أَبَدًا ۚ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١٩﴾
لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٢٠﴾

منزل۲

ईसा पुत्र मरियम ने दुआ (प्रार्थना) की ऐ अल्लाह हम पर आसमान से भरा दस्तरख़्वान उतार दे कि वह हमारे अगलों पिछलों की ईद हो जाए और तेरी एक निशानी हो और तू हमें रोज़ी प्रदान कर दे बेशक तू सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है (114) अल्लाह ने कहा मैं उसको तुम पर ज़रूर उतार दूंगा लेकिन फिर बाद में जो भी तुममें इनकार करने वाले होंगे तो मैं उनको ऐसा अज़ाब (दण्ड) दूँगा कि दुनिया में ऐसा अज़ाब मैं किसी को न दूँगा[1] (115) और जब अल्लाह कहेगा ऐ ईसा पुत्र मरियम क्या तुमने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के अलावा माबूद (पूज्य) बना लो[2] वे कहेंगे तेरी ज़ात पाक है यह मुझसे नहीं हो सकता कि मैं वह बात कहूँ जिसका मुझे कोई हक नहीं और अगर मैंने यह बात कही होती तो वह तेरी जानकारी में होती, जो भी मेरे मन में है उससे तू अवगत है और तेरे मन में जो भी है वह मैं नहीं जानता बेशक तू ढके छिपे को खूब जानता है (116) मैंने उनसे तो वही कहा था जो तूने मुझे आदेश किया कि अल्लाह की बन्दगी (उपासना) करो जो मेरा भी पालनहार है तुम्हारा भी पालनहार है और जब तक मैं उनमें रहा उन पर गवाह रहा और जब तूने मुझे उठाया तो तू ही उनकी निगरानी करने वाला रहा और तू हर चीज़ पर गवाह है (117) अगर तू उनको अज़ाब (दण्ड) देता है तो वे तेरे ही बन्दे हैं और अगर तू उनको माफ़ कर देता है तो तू ही ज़बरदस्त है हिकमत वाला है (118) अल्लाह कहेगा यह वह दिन है कि जिसमें सच्चों को उनकी सच्चाई फायदा पहुँचाएगी, उनके लिए जन्नतें हैं जिनके नीचे से नहरें जारी हैं, हमेशा के लिए वे उसी में रह पड़ेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए, यही वह बड़ी सफलता है[3] (119) आसमानों और ज़मीन और उनमें जो कुछ है उसकी बादशाही अल्लाह के लिए है और वह हर चीज़ की पूरी सामर्थ्य (कुदरत) रखने वाला है (120)

(1) कहा जाता है कि वह दस्तरख़्वान रविवार को उतरा इसलिए वह दिन ईसाइयों में इबादत (उपासना) का है लेकिन उन्होंने इसमें अल्लाह के आदेशों का खयाल नहीं किया तो अज़ाब (दण्ड) के पात्र बने, पिछली आयतों में अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर और उनकी माँ पर अपने उपकारों (एहसानों) का उल्लेख किया है (2) पिछला रुकूअ़ वास्तव में इस रुकूअ़ की भूमिका थी, पिछले रुकूअ़ के आरम्भ में पैगम्बरों से उनकी उम्मतों (समुदायों) के बारे में सवाल का उल्लेख था, यह विशेष रूप से हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से सवाल का उल्लेख है जिनको लोगों ने खुदाई का दर्जा दे रखा है, पहले उन पर अल्लाह तआला अपने उपकारों को बताएगा फिर सवाल होगा कि क्या तुमने कहा था कि हमको और हमारी माँ को भी अल्लाह के अलावा माबूद (पूज्य) बना लो हज़रत मसीह इस सवाल पर कांप उठेंगे और वे कहेंगे जो आगे आयतों में उल्लेखित है, यह सब कयामत में पेश आएगा जिसे निश्चित होने की वजह से भूतकाल वाले वाक्य में व्यक्त किया गया है। (3) अल्लाह की रज़ामन्दी उनको इस तरह मिलेगी कि उनके दिल खुश हो जाएंगे और खिल जाएंगे। उनकी हर इच्छा ऐसे पूरी होगी कि कोई इच्छा बाक़ी नहीं रहेगी।

سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّخَمْسٌ وَّسِتُّوْنَ اٰيَةً وَّعِشْرُوْنَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ
وَالنُّوْرَ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ١ هُوَ الَّذِيْ
خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰى اَجَلًا وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ
تَمْتَرُوْنَ ٢ وَهُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَ
جَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ٣ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ
رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ٤ فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ
فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ اَنْبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ٥ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ
اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ
وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ٦
وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ٧ وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ
عَلَيْهِ مَلَكٌ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ٨

منزل٢

सूरह अनआम

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

प्रशंसा सब अल्लाह के लिए हैं जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और अंधेरों को और रौशनी को बनाया फिर यह इनकार करने वाले (दूसरों को) अपने पालनहार के बराबर ठहराते हैं[1] (1) वही है जिसने तुम को मिट्टी से पैदा किया फिर एक अवधि (समय) निश्चित किया और एक निश्चित अवधि (उसकी जानकारी में) है फिर भी तुम शक में पड़ते हो[2] (2) वही अल्लाह है आसमानों में और ज़मीन में तुम्हारे छिपे और खुले को जानता है और तुम्हारे किये–धरे से भी अवगत है (3) और जब भी उनके पालनहार की निशानियों में से कोई निशानी उनके पास आती है तो वे मुँह ही फेर लेते हैं (4) बस हक़ जब उनके पास आया तो उन्होंने झुठला ही दिया तो जल्द ही उनके पास वह खबरें भी आ जाएंगी जिनका वे मज़ाक बनाते रहे हैं (5) क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले हमने कितने ऐसे सम्प्रदायों को समाप्त कर दिया जिनको हमने ज़मीन में वह पकड़ प्रदान की थी जो पकड़ हमने तुम्हें भी नहीं दी और हमने उन पर आसमान से मूसलाधार बारिश बरसाई थी और उनके नीचे से जारी नहरें बनाई थीं फिर उनके गुनाहों के कारण हमने उनको नष्ट कर दिया और उनके बाद हमने दूसरे वंशों को खड़ा कर दिया[3] (6) और अगर हम आप पर कागज़ पर लिख कर भी उतारें फिर वे अपने हाथों से छू भी लें तब भी इनकार करने वाले यही कहेंगे कि यह तो खुला हुआ जादू है[4] (7) और वे कहते हैं कि उन पर फरिश्ता क्यों न उतरा और अगर हम फरिश्ता उतार देते तो फ़ैसला ही हो जाता फिर उनको मोहलत भी न मिलती[5] (8)

---

(1) हर मुश्रिक (बहुदेववादी) क़ौम ने किसी न किसी को खुदाई साझीदार ठहराया, यहूदियों ने हज़रत उज़ैर अ़लैहिस्सलाम को और ईसाइयों ने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को खुदा का बेटा कहा (2) आदम अ़लैहिस्सलाम को मिट्टी से बनाया फिर स्त्री व पुरुष के मिलाप से गर्भ धारण होता है, बच्चा पैदा होता है, इसकी उम्र अल्लाह के यहाँ निश्चित है मौत की जानकारी अल्लाह ही को है (3) आद व समूद को कैसी शक्ति प्राप्त थी पत्थर तराशने में उनकी मिसाल नहीं थी लेकिन जब उन्होंने इनकार किया तो वे भी मिट्टी में मिला दिए गए (4) मुश्रिक (बहुदेववादी) कहते थे कि कुरआन लिखा हुआ आए, चार फरिश्ते साथ आएं तो हम मानेंगे, उसका जवाब है कि हिदायत (सत्यमार्ग प्राप्ति) जिनके भाग्य में नहीं वे छूकर भी देख लें तो जादू ही कहेंगे (5) अल्लाह की रीत यही है कि बड़ी निशानी आने के बाद अगर कौम ईमान न लाए तो फिर मोहलत नहीं मिलती।

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا
يَلْبِسُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ
بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٠﴾ قُلْ
سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾
قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قُلْ لِّلّٰهِ ۭ كَتَبَ عَلٰى
نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۭ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ اَلَّذِيْنَ
خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ
وَالنَّهَارِ ۭ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا
فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۭ قُلْ
اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٤﴾ قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ
يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾ مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَىِٕذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ۭ وَ
ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ
لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۭ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١٨﴾

منزل٢

और अगर हम पैग़म्बर को फरिश्ता बनाते तो यक़ीनन एक आदमी ही (के रूप में) बनाते और उन पर वही संदेह डालते जिस संदेह में वे पड़ रहे हैं[1] (9) और निःसंदेह आपसे पहले भी बहुत से पैग़म्बरों का मज़ाक़ बनाया जा चुका है तो उनकी हंसी करने वालों पर जो वे मज़ाक़ बनाया करते थे वह उलट पड़ा (10) आप कह दीजिए कि ज़मीन में चलो फिरो फिर देखो कि झुठलाने वालों का परिणाम (अंजाम) कैसा हुआ (11) उनसे पूछिए कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वह किस का है, आप कह दीजिए अल्लाह का है, उसने अपने आप पर रहमत (दया) अनिवार्य कर ली है, वे कयामत के दिन तुम्हें एकत्र करके रहेगा जिसमें कोई संदेह नहीं जिन्होंने अपना नुकसान कर रखा है बस वही नहीं मानते (12) रात और दिन में बसने वाली हर चीज़ उसी की है और वह सब सुनता और जानता है[2] (13) आप कह दीजिए कि क्या मैं अल्लाह के अलावा किसी और को अपना मददगार बनाऊँ जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला और वही सबको खिलाता और उसको खाने की ज़रूरत नहीं, आप कह दें कि मुझे आदेश है कि सब से पहले मैं आदेश मानूँ और आप हरगिज़ साझी ठहराने वालों में शामिल न हों (14) आप कह दीजिए कि अगर मैंने नाफ़रमानी (अवज्ञा) की तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब (दण्ड) का डर है[3] (15) उस दिन अज़ाब (दण्ड) जिससे टल गया तो उस पर अल्लाह ने रहम कर दिया और यही खुली सफ़लता है (16) और अगर अल्लाह आपको किसी तंगी (तकलीफ़) में डाल देते तो उसके अलावा उसको दूर करने वाला नहीं और अगर आपको भलाई पहुँचा दे तो वही हर चीज़ का पूरा सामर्थ्य (कुदरत) रखने वाला है[4] (17) और वह अपने बन्दों पर ज़ोर वाला है और वह हिकमत (तत्वदर्शिता) वाला पूरी ख़बर रखने वाला है (18)

(1) फरिश्ता पैग़म्बर बनाया जाता तो इंसान ही के रूप में होता ताकि लोग फ़ायदा उठा सकें और फिर उनका वही संदेह होते जो अब हो रहे हैं (2) "लिमम् माफिस्समावाति वल् अर्ज़" में जगह के एतबार से आम है और यहाँ "वलहू मा सकन फिल्लैलि वन्नहार" में समय के एतबार से आम अर्थात हर जगह और हर ज़माने में जो कुछ भी है वह सब उसी का है (3) यह आप पर रख कर दूसरों को सुनाया गया यानी खुदा के निर्दोष और प्रियतम बन्दे से किसी प्रकार की नाफ़रमानी (अवज्ञा) हो तो अल्लाह के अज़ाब की शंका होती है (4) सब अधिकार उसी को है वह जो चाहे करो।

पूछिये कि कौन सी चीज़ है जिसकी गवाही सबसे बड़ी है, कह दीजिए अल्लाह ही मेरे और तुम्हारे बीच गवाह है और इस कुरआन की वह्य (ईशवाणी) मुझ पर इसलिए की गई ताकि इसके द्वारा मैं तुम्हें और जिस तक यह पहुँचे उसे सावधान करूँ, क्या तुम इसकी गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ और भी माबूद (पूज्य) हैं, आप कह दीजिए कि मैं तो इसकी गवाही नहीं दे सकता, आप कह दीजिए कि वह केवल एक ही माबूद (पूज्य) है और तुम जो शिर्क (बहुदेववाद) करते हो उससे मेरा कोई संबंध नहीं (19) जिन लोगों को हमने किताब दी है वे पैग़म्बर को ऐसे ही पहचानते हैं जैसे अपने लड़कों को पहचानते हैं, जिन्होंने अपने आपको नुकसान में डाला तो वही ईमान नहीं लाते (20) उससे बढ़ कर अन्याय करने वाला कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या उसकी निशानियों को झुठलाए, अन्याय करने वाले सफ़ल हो ही नहीं सकते[1] (21) और जब हम उन सबको एकत्र करेंगे फिर शिर्क (बहुदेववाद) करने वालों से पूछेंगे वे तुम्हारे साझीदार कहाँ गए जिनका तुम्हें दावा था (22) फिर उनसे शरारत न बन पड़ेगी सिवाय इसके कि वे कहेंगे उस अल्लाह की कसम जो हमारा पालनहार है हम मुश्रिक (बहुदेववादी) तो न थे (23) देखिए कैसा अपने ऊपर झूठ बोल गए और जो बातें बनाया करते थे वह सब हवा हो गईं[2] (24) और उनमें वे भी हैं जो आपकी ओर कान लगाए रखते हैं और हमने उनके दिलों पर परदे डाल दिये हैं ताकि समझ न सकें और उनके कानों को भारी कर दिया है (ताकि सुन न सकें) और अगर वे सारी निशानियाँ देख लें तब भी ईमान न लाएं[3] यहाँ तक कि जब वे आपके पास बहस करने के लिए आते हैं तो उनसे कुफ़्र (इनकार) करने वाले कहते हैं कि यह तो मात्र पहलों की कहानियाँ हैं (25) और वे उससे रोकते हैं और ख़ुद भी उससे दूर रहते हैं और वे तो अपने आपको तबाह कर रहे हैं लेकिन समझते ही नहीं (26)

(1) जिस तरह अपनी संतान को पहचानने में कोई कठिनाई नहीं होती उसी तरह किताब वालों की लगातार गवाहियों से वे खूब जानते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही अंतिम पैग़म्बर हैं जिनका शुभ संदेश दिया जा चुका है लेकिन वे झूठ का पुल बाँध देते हैं (2) दुनिया में अपने शिर्क (बहुदेववाद) पर गर्व जब वास्तविकता खुली तो कैसा झूठ बकने लगे (3) यह उन लोगों का उल्लेख है जो खराबी निकालने और आपत्ति के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातों की ओर कान लगाते थे इससे फ़ायदा उठाना और सत्य को स्वीकार करना मकसद न था, उसका परिणाम यह हुआ कि सत्य को समझने से उनके दिल वंचित कर दिए गये, सत्य मार्ग का संदेश सुनना भारी मालूम होने लगा, आँखें शिक्षा–दृष्टि से खाली हो गईं कि हर प्रकार की निशानियों को देख कर भी ईमान लाने की तौफ़ीक़ (सौभाग्य) नहीं होती यह सारी मुसीबतें खुद उनकी लाई हुई हैं।

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ وُقِفُوا عَلَى النَّارِ فَقَالُوا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ
بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوا
يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَإِنَّهُمْ
لَكٰذِبُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَقَالُوْٓا إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ
بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ قَالَ أَلَيْسَ
هٰذَا بِالْحَقِّ ۚ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا
كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٠﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ۖ حَتّٰىٓ
إِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا
وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ أَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ۚ أَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٣١﴾ وَ
مَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ إِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۖ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ
يَتَّقُوْنَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٢﴾ قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ
يَقُوْلُوْنَ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى
مَا كُذِّبُوْا وَأُوْذُوْا حَتّٰىٓ أَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ
لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَإِي الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٤﴾

منزل٢

और अगर आप देखें कि जब वे दोज़ख (नरक) के सामने ठहराए जाएंगे तो कहेंगे काश कि हम दोबारा भेज दिये जाएं और हम अपने पालनहार की निशानियों को न झुठलाएं और हम ईमान वालों में हो जाएं (27) कुछ नहीं बल्कि वे जो छिपाते थे वह खुल गया और अगर वे दोबारा भेज दिए जाएं तो वही करेंगे जिससे उनको रोका गया और वे तो झूठे हैं[1] (28) और वे कहते हैं कि हमको तो यही दुनिया की ज़िन्दगी है और हम को फिर नहीं उठना (29) और अगर आप देखें जब वे अपने पालनहार के सामने खड़े किये जाएंगे, इरशाद होगा क्या यह सच नहीं है वे कहेंगे हमारे पालनहार की कसम क्यों नहीं, अल्लाह तआला कहेंगे कि तुम जो इनकार करते थे उसके कारण अज़ाब (दण्ड) का मज़ा चखो (30) जिन लोगों ने अल्लाह की मुलाकात को झुठलाया वे घाटे ही में रहे यहाँ तक कि जब उन पर अचानक क़यामत (महाप्रलय) आ पहुँचेगी तो वे कहेंगे हाय अफसोस हमने उसमें कैसी कोताही की और वे अपनी पीठों पर बोझ लादे होंगे देखो कैसा बुरा बोझ है जो वे ढ़ोते फिर रहे हैं (31) और दुनिया का जीवन तो खेल–तमाशे के सिवा कुछ नहीं और आखिरत का घर ही परहेज़गारों (संयमी लोगों) के लिए बेहतर है, फिर क्या तुम समझ से काम नहीं लेते (32) हम जानते हैं कि उनकी बातों से आपको ज़रूर दुख होता है तो वे (केवल) आप ही को नहीं झुठलाते बल्कि वे अत्याचारी लोग तो अल्लाह की निशानियों का ही इनकार करते हैं[2] (33) और आपसे पहले कितने रसूल झुठलाए जा चुके हैं तो वे झुठलाए जाने और तकलीफ़ पंहुचाए जाने पर सब्र करते रहे यहाँ तक कि हमारी मदद उनके पास आ पहुँची और अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं और आपको पैग़म्बरों के हालात भी मालूम हो ही चुके हैं[3] (34)

(1) पहले हिसाब–किताब शुरु होते ही कह चुके थे कि हम मुश्रिक (बहुदेववादी) नहीं हैं अब सब खुल गया और लगे मानने, दुनिया में भी जो सत्य छिपाते रहे थे वह भी खुलकर सब सामने आ जाएगा और वे तमन्ना करेंगे कि दोबारा हम को भेज दिया जाए हम ईमान वालों में हो जांएगे, अल्लाह कहता है सब झूठ है उनके अन्दर की बुराई फिर उभर कर सामने आ जाएगी (2) दुनिया ही को सब कुछ समझने वालों के सामने वास्तविकता खुल जाएगी और मालूम हो जाएगा कि यह खेलकूद के सिवा कुछ नहीं था बस वही क्षण काम आएंगे जो अल्लाह की बन्दगी (उपासना) में बीते (3) अल्लाह की ओर से यह सांत्वना की बातें की जा रही हैं।

और अगर आपको उनका मुँह फेरना भारी मालूम होता है तो अगर आपके बस में हो तो ज़मीन में कोई सुरंग या आसमान में कोई सीढ़ी तलाश कर लीजिए फिर उनके पास कोई निशानी ले आइए और अल्लाह चाहता तो सबको हिदायत (सत्यमार्ग) पर ले ही आता तो आप नादानी के कामों में हरगिज़ न पड़ें[1] (35) स्वीकार तो वे लोग करते हैं जो सुनते हैं और मुर्दों को अल्लाह उठाएगा फिर वे उसी की ओर लौटाए जाएंगे[2] (36) और वे बोले कि उनके पास उनके पालनहार के पास कोई निशानी क्यों नहीं आई, आप कह दीजिए कि बेशक अल्लाह निशानी उतारने का सामर्थ्य (कुदरत) रखता है लेकिन उनमें अधिकतर लोग नहीं जानते[3] (37) और धरती में चलने वाले जो भी जानवर हैं और जो पक्षी भी अपने दोनों परों पर उड़ते हैं वह तुम्हारी तरह की उम्मतें हैं, हमने किताब में कुछ कमी नहीं की, फिर वे सब अपने पालनहार के पास एकत्र किए जाएंगे (38) और जिन्होंने हमारी निशानियाँ झुठलाईं वे अंधेरों में बहरे और गूंगे पड़े हैं, अल्लाह जिसे चाहे गुमराह करे और जिसे चाहे उसे सीधे रास्ते पर कर दे[4] (39) आप कह दीजिए कि देखो अगर अल्लाह का अज़ाब (दण्ड) तुमपर आ जाए या क़यामत (महाप्रलय) तुमपर आ पहुँचे तो सच–सच बताओ कि क्या तुम अल्लाह के अलावा किसी और को पुकारोगे (40) नहीं बल्कि तुम उसी को पुकारोगे फिर जिस तकलीफ़ के लिए तुम उसको पुकारते हो अल्लाह अगर चाहता है तो उस चीज़ को दूर कर देता है और फिर तुम सारे साझीदारों को भूल जाते हो[5] (41) और हमने आपसे पहले भी उम्मतों (समुदायों) की ओर पैग़म्बर भेजे फिर हमने उनको सख़्ती और तकलीफ़ में जकड़ लिया कि वे शायद गिड़गिड़ाएं (42) फिर जब हमारा अज़ाब (दण्ड) आ पहुँचा तो वे क्यों न गिड़गिड़ाए बल्कि उनके दिल और कठोर हो गए और शैतान ने उनके कामों को उनके लिए मनमोहक बना दिया (43)

(1) अल्लाह चाहता तो बिना निशानी के सबको मुसलमान बना देता लेकिन यह अल्लाह की नीति नहीं कि सबको ईमान पर मजबूर कर दिया जाए तो आप किसी ऐसी निशानी के ख्याल में न रहें जिसका दिखाना अल्लाह का नियम नहीं इसलिए कि वांछित निशानी आ जाने के बाद अगर इसका इनकार किया जाए तो उसका अज़ाब पूरी क़ौम पर आता है जैसा कि पिछली क़ौमों के साथ हो चुका है और इस समय के मुश्रिकीन का हाल भी यही है अगर इनकी मांगी हुई निशानी आ भी जाए तो भी वे ईमान लाने वाले नहीं है और फिर उसका परिणाम सब पर अज़ाब की शक्ल में आएगा और अल्लाह को यह मंज़ूर नहीं (2) आप सबसे मान की आशा न रखें जिनके दिल में अल्लाह ने कान नहीं दिए वे सुनते ही नहीं तो कैसे मानें वे तो मुर्दों की तरह हैं, क़यामत (महाप्रलय) में विश्वास हो जाएगा (3) यानी न मानने के परिणाम में उसका क्या नतीजा होगा उससे अवगत नहीं हैं। (4) अल्लाह के सामर्थ्य की निशानियाँ हर जगह हैं हर प्रकार के जानवरों की अपनी–अपनी निर्धारित व्यवस्था है, मनुष्य की अपनी व्यवस्था है, अल्लाह पैग़म्बरों के द्वारा उनको रास्ता बताता है अगर विचार करें तो यही निशानी काफ़ी है लेकिन बहरा, गूँगा, और अंधा कैसे देखे, कैसे समझे और यह जो कहा कि हमने किताब में कोई कमी नहीं की इसका अर्थ लौह–ए–महफ़ूज़ (ईश्वरीय ज्ञान) है (5) जब मुसीबत आ पड़ती है तो अल्लाह ही की याद आती है सारे साझीदार हवा हो जाते हैं तो क़यामत (महाप्रलय) की महा विपदा को याद करो और अल्लाह को मानो ताकि यह वहाँ तुम्हारे काम आए।

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ
حَتّٰى إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَإِذَا هُمْ
مُّبْلِسُونَ ﴿٤٤﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿٤٥﴾ قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَ
أَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوبِكُمْ مَّنْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَأْتِيكُمْ بِهِ انْظُرْ
كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُونَ ﴿٤٦﴾ قُلْ أَرَءَيْتَكُمْ إِنْ
أَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ
الظّٰلِمُونَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنْذِرِينَ
فَمَنْ اٰمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٤٨﴾
وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا
يَفْسُقُونَ ﴿٤٩﴾ قُلْ لَّا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللّٰهِ وَلَا أَعْلَمُ
الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحٰى إِلَيَّ
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمٰى وَالْبَصِيرُ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ﴿٥٠﴾ ع
وَأَنْذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْ يُّحْشَرُوا إِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ
لَهُمْ مِّنْ دُونِهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٥١﴾

منزل ٢

फिर जो उपदेश (नसीहत) दिया गया था जब वे उसको भूल गए फिर हमने उनके लिए हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए, यहाँ तक कि जब वे पाई हुई चीज़ों में मस्त हो गए तो हमने अचानक उनको धर पकड़ा तो वे निराश होकर रह गए (44) तो जिन लोगो ने अत्याचार किया उनकी जड़ ही काटकर रख दी गयी और वास्तविक प्रशंसा तो अल्लाह के लिए है जो संसारों का पालनहार है[1] (45) आप पूछिए कि तुम्हारा क्या ख़्याल है अगर अल्लाह तुम्हारे कान और दृष्टि ले ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर लगा दे तो अल्लाह के अलावा कौन है वह माबूद (पूज्य) जो तुम्हें यह चीज़ें लाकर दे दे, देखिए हम बातें कैसे अलग अलग शैली में बयान करते जाते हैं फिर भी वे मुँह फेरे रहते हैं (46) आप कह दीजिए कि देखो तो अगर तुम पर बेखबरी में या ऐलानिया अल्लाह का अज़ाब आ जाए तो सिवाय अन्याय करने वालों के और कौन हलाक़ (विनष्ट) होगा[2] (47) और हम रसूलों को शुभ समाचार सुनाने वाला, डराने वाला बना कर भेजते हैं बस जो भी ईमान लाया और उसने अपने को संवार लिया तो ऐसों पर न कोई डर है और न वे दुखी होंगे (48) और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तो नाफरमानी (अवज्ञा) करते रहने की वजह से वही अज़ाब (दण्ड) का शिकार होंगे[3] (49) आप कह दीजिए कि मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के खज़ाने हैं और न ही मैं ढका–छिपा जानता हूँ और न मैं यह कहता हूँ कि मैं कोई फरिश्ता हूँ बस मैं तो जो मेरे पास वह्य (ईशवाणी) आती है मैं तो उसी पर चलता हूँ[4] आप पूछिए क्या अंधा और देखने वाला बराबर हो सकते हैं क्या तुम विचार नहीं करते[5] (50) और इस (कुरआन) के द्वारा जिन को डर है उनको सावधान कीजिए कि वे अपने पालनहार के पास इकट्ठा होंगे और उनके लिए इसके सिवा न कोई समर्थक होगा और न सिफारिश करने वाला, शायद कि वे सावधान हो जाएं (51)

(1) पापी को अल्लाह थोड़ा सा पकड़ता है अगर वह गिड़गिड़ाया और तौबा की तो बच गया और अगर पकड़ को न समझा तो ढ़ील दी जाती है यहाँ तक कि जब दुनिया में पूरी तरह मस्त हो जाता है तो अचानक पकड़ होती है अज़ाब (दण्ड) से या मौत से (2) तौबा में देर न करे जो कान और आँख और दिल है शायद फिर न मिलें या इस देरी ही में अज़ाब (दण्ड) आ जाए, तौबा कर चुका है तो बच जाएगा वरना हलाक हो जाएगा (3) यानी तुम जो अल्लाह के अज़ाब से निश्चिंत हो कर बेहूदा मांगें पैग़म्बर से करते हो और उनकी पुष्टि के लिए अपनी ओर से मानक बनाते हो खूब समझ लो दुनिया में पैग़म्बर इसलिए नहीं भेजे गए कि तुम्हारी उल्टी–सीधी मांगें पूरी करते रहें उनका काम तो डराना और खुशखबरी देना है (4) पैग़म्बर का यह दावा नहीं होता कि सारे खज़ाने उसके पास हैं वह गैब की सब बातें जानता है या वह मानव जाति के अलावा कोई और प्रजाति है फिर इसके बाद तरह तरह के मुअजिजों (चमतकारों) की मांग करना और उसके मानने और झुठलाने का मानक बनाना कहाँ तक ठीक हो सकता है (5) यद्यपि पैग़म्बर मानव जाति से अलग कोई जाति नहीं लेकिन उसके और बाकी इन्सानों के बीच ज़मीन व आसमान का अंतर है जैसे देखने वाले और अंधे का अन्तर है पैग़म्बर तो दिल की आँखें हर समय अल्लाह की खुशी और उसके प्रकाश के लिए खुली रहती हैं जिनको प्रत्यक्ष रूप से देखने से दूसरे मनुष्य वंचित हैं।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ
يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ۭ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّ
مَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۲﴾ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَاۗءِ
مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ۭ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿۵۳﴾
وَاِذَا جَاۗءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ
رَبُّكُمْ عَلٰي نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْۗءًۢا بِجَهَالَةٍ
ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ ۙ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۵۴﴾ وَكَذٰلِكَ
نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۵۵﴾ قُلْ اِنِّىْ
نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قُلْ لَّآ
اَتَّبِعُ اَهْوَاۗءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿۵۶﴾
قُلْ اِنِّىْ عَلٰي بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ۭ مَا عِنْدِيْ مَا
تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ۭ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ۭ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ
خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ﴿۵۷﴾ قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ
لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۸﴾

منزل٢

और जो लोग भी सुबह व शाम अपने पालनहार को पुकारते हैं उसकी खुशी चाहते हैं उनको आप दूर मत कर दीजिए न उनका कोई हिसाब आपके जिम्मे है और न आपका थोड़ा सा भी हिसाब उनके ज़िम्मे है, बस आप उनको दूर कर देंगे तो अन्याय करने वालों में हो जाएंगे[1] (52) इसी तरह हमने एक को दूसरे से आज़माया कि वे कहें कि क्या हम सबमें यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने अपना फ़ज़्ल (कृपा) किया, क्या अल्लाह शुक्र करने वालों से खूब अवगत नहीं[2] (53) और जब आपके पास वे लोग आएं जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो आप कहिए कि तुम पर सलामती हो तुम्हारे पालनहार ने तो अपने ऊपर रहमत (दयालुता) ज़रूरी कर रखी है तुममें जो नादानी में कोई बुराई कर बैठेगा फिर उसके बाद तौबा कर लेगा और सुधार कर लेगा तो बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है (54) और इसी तरह हम दलीलें विस्तार के साथ बयान करते जाते हैं ताकि अपराधियों का रास्ता भी खुल कर सामने आ जाए[3] (55) आप कह दीजिए कि मुझे इससे रोका गया कि तुम अल्लाह के अलावा जिसको पुकारते हो मैं उसकी बन्दगी (उपासना) करूँ, आप साफ कह दीजिए कि मैं तुम्हारी इच्छाओं पर नहीं चल सकता वरना तो मैं बहक जाऊँगा और मैं रास्ते पर नहीं रहूँगा (56) आप कह दीजिए कि मेरे पास तो मेरे पालनहार की ओर से प्रमाण (दलील) मौजूद है और तुम उसको नहीं मानते तुम्हें जिस चीज़ की जल्दी है वह मेरे पास नहीं, सरकार तो अल्लाह ही की है वही सत्य को खोलता है और वही बेहतर फैसला करने वाला है (57) आप कह दीजिए कि तुम जिस चीज़ की जल्दी मचाते हो अगर वह मेरे पास होती तो हमारा तुम्हारा फैसला कब का हो चुका होता और अल्लाह अन्याय करने वालों से खूब अवगत है[4] (58)

---

(1) काफिरों के कुछ सरदारों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि आपकी बात सुनने को हमारा दिल चाहता है मगर आपके पास तुच्छ लोग बैठते हैं हम उनके साथ बराबर नहीं बैठ सकते, इस पर यह आयत उतरी कि उनके इस बाहरी हाल का लिहाज़ ज़रूरी है अगर आप धनवानों की हिदायत (संमार्ग प्राप्ति) की चाहत में उनको अपने पास से हटाएंगे तो अन्याय होगा, न उनका हिसाब आपके ज़िम्मे है और न आपका हिसाब उनके जिम्मे है, खोज में पड़ने की ज़रूरत नहीं (2) धनवानों को गरीबों से आज़माया, वे उनको तुच्छ समझते हैं और अल्लाह के यहाँ वही सम्मानित हैं (3) करीब में "व अंजिर बिहिल्लजीन यखाफून......" में डराने का काम हो चुका था यहाँ ईमान वालों के लिए शुभ समाचार व कुशल मंगल और रहमत (दयालुता) का उल्लेख है (4) यानी मैं अल्लाह की ओर से भेजा गया हूँ सत्य के प्रमाण मेरे पास हैं तुम कितने ही बहाने करो मैं तुम्हारी इच्छाओं पर नहीं चल सकता, अब मानना और न मानना तुम्हारा काम है और जिस अज़ाब (दण्ड) की तुम्हें जल्दी है मैं उसका मालिक नहीं हूँ, वह जिस पर चाहे अज़ाब करे ओर जिसको चाहे तौबा की तौफीक़ (सौभाग्य) प्रदान करे उसकी नीतियों को वही जानता है, सब फैसले उसी के अधिकार में हैं।

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ؕ وَيَعْلَمُ مَا فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ وَمَا
تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِىْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ
وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿۵۹﴾ وَهُوَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَ
يَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ
ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۶۰﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ
فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ
الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿۶۱﴾ ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ
مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۟ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿۶۲﴾ قُلْ مَنْ
يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ لَئِنْ
اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۶۳﴾ قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ
مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿۶۴﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى
اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ
يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ
الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿۶۵﴾ وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ
لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿۶۶﴾ لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ؗ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۷﴾

منزل ۲

गैब (परोक्ष) की कुंजियाँ उसी के पास हैं वही उनको जानता है, खुश्की (थल) और तरी (जल) में जो कुछ है उससे वह अवगत है जो पत्ता भी गिरता है उसको भी वह जानता है और धरती के अंधेरों में जो दाना है और जो भी सूखा और गीला है वह सब खुली किताब में मौजूद है[1] (59) और वही है जो रात को तुम्हें मौत दे देता है और तुम दिन में जो काम काज करते हो उसको भी वह जानता है फिर वह दिन में तुम्हें उठा देता है ताकि निर्धारित अवधि पूरी हो[2] फिर उसी की ओर तुम्हें लौट कर जाना है फिर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या करते रहे थे (60) और वही अपने बन्दों पर ज़ोर रखने वाला है और वह तुम पर रक्षा के फरिश्ते भेजता है यहाँ तक कि जब मौत का समय आ पहुँचता है तो हमारे दूत उसको मौत दे देते हैं और वे थोड़ी भी कोताही नहीं करते (61) फिर वह अपने वास्तविक मालिक अल्लाह की ओर लौट जाएंगे, अच्छी तरह जान लो कि सरकार उसी की है और वह बहुत जल्द हिसाब चुका देने वाला है (62) पूछिए कि खुश्की और तरी के अंधेरों से तुम्हें कौन छुटकारा देता है, उसी को तुम गिड़गिड़ा कर और चुपके चुपके पुकारते हो कि अगर उसने हमें इससे बचा लिया तो हम ज़रूर एहसान मानेंगे (63) कह दीजिए कि अल्लाह तो तुम्हें इससे भी बचाता है और हर तकलीफ़ से बचाता है फिर भी तुम शिर्क (बहुदेववाद) करते हो[3] (64) कह दीजिए कि वह तो सामर्थ्य (कुदरत) रखता है कि तुम पर ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से अजाब (दण्ड) भेज दे या तुम्हें गिरोह में करके भिड़ा दे और एक को दूसरे से लड़ाई का मज़ा चखा दे, देखिए कि हम आयतों को किस तरह अलग अलग शैली में बयान करते हैं कि शायद वे समझ लें[4] (65) और आपकी कौम ने इस (कुरआन) को झूठ बताया जब कि वह सत्य है कह दीजिए कि मैं तुम पर दारोग़ा तो नहीं हूँ (66) हर चीज़ का एक निर्धारित समय है और आगे जल्द ही तुम्हें पता चल जाएगा[5] (67)

---

(1) यानी लौहे महफ़ूज़ (ईश्वरीय ज्ञान) गैब परोक्ष की कुंजियाँ केवल अल्लाह के पास हैं, वही उसमें से जितना चाहे जिस पर खोल दे, किसी को ताकत (सामर्थ्य) नहीं कि वह उपकरणों द्वारा परोक्ष के ज्ञान तक पहुँच सके (2) वह चाहता तो तुम सोते ही रह जाते लेकिन मौत का निर्धारित समय आने से पहले वह हर नींद के बाद तुम्हें जगाता है, यह नींद भी वास्तव में एक प्रकार की मृत्यु है अन्तर यह है कि नींद की हालत में शरीर का आत्मा से संबंध बना रहता है और मृत्यु से आत्मा का शरीर से हर प्रकार का संबंध समाप्त हो जाता है (3) मुसीबत में फँसते हो तो उसी को पुकारते हो जब नेजात मिल जाती है और राहत व आराम हासिल हो जाता है तो फिर सब भूल जाते हो (4) तीन प्रकार के अज़ाब बयान हुए एक आकाशीय जैसे पत्थर बरसना, आग बरसना, तूफान, दूसरा ज़मीनी जैसे भूकम्प आदि और यह दोनों पिछली उम्मतों (समुदायों) पर आए, इस उम्मत को अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ से इस प्रकार के आम अज़ाब से सुरक्षित रखा है, आंशिक रूप से घटनाएं हो सकती हैं, इससे इन्कार नहीं है, हाँ! अज़ाब की तीसरी किस्म इस उम्मत (समुदाय) के लिए बाकी रही और वह पार्टी बंदी, लड़ाई–झगड़ा और आपसी रक्तपात का अज़ाब है (5) यानी यह मेरा काम नहीं कि तुम्हारे झुठलाने पर खुद अज़ाब उतारूँ या उसका कोई निर्धारित समय बताऊँ, मेरा काम सावधान करना है बाकी सब अल्लाह के ज्ञान में है।

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ
يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ وَإِمَّا يُنسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ
بَعْدَ الذِّكْرَىٰ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ
مِنْ حِسَابِهِم مِّن شَيْءٍ وَلَٰكِن ذِكْرَىٰ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٦٩﴾ وَذَرِ
الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَلَهْوًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ وَ
ذَكِّرْ بِهِ أَن تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ لَيْسَ لَهَا مِن دُونِ اللَّهِ
وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ وَإِن تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا ۖ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ
أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾ قُلْ أَنَدْعُو مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا
يَنفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَانَا اللَّهُ
كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ لَهُ أَصْحَابٌ
يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۖ
وَأُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٧١﴾ وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَ
اتَّقُوهُ ۚ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٧٢﴾ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ وَيَوْمَ يَقُولُ كُن فَيَكُونُ ۚ

ع

النصف

منزل٢

और जब आप उन लोगों को देखें जो हमारी आयतों के बारे में बेहूदा बकते हैं तो आप उनसे अलग हो जाएं यहाँ तक कि वे दूसरी बातें करने लगें और अगर शैतान आपको भुला ही दे तो याद आने के बाद फिर अत्याचरी लोगों के पास मत बैठें[1] (68) और परहेज़गारों (संयमी लोग) के जिम्मे उनका कुछ भी हिसाब नहीं हाँ याद दिला देना उनका काम है कि शायद वे भी परहेज़गार (संयमी) बन जाएं[2] (69) और उन लोगों को छोड़ दीजिए जिन्होंने अपने दीन (धर्म) को खेल तमाशा बना लिया है और दुनिया के जीवन ने उनको धोखे में डाल रखा है और इस करआन से नसीहत (उपदेश) करते रहिए ताकि कोई अपने किये में फंस ही न जाए कि अल्लाह के सिवा उसका कोई समर्थक होगा न सिफारिशी और वह पूरा का पूरा फिद्या देना भी चाहे तो लिया न जाएगा, वे लोग तो अपने किए में फंस ही चुके, उनके लिए खौलता पानी है और दुखद अज़ाब (दण्ड) है इसलिए कि वे इनकार करते रहे हैं (70) कह दीजिए कि क्या हम अल्लाह को छोड़ कर उसको पुकारें जो न हमारे लाभ का न घाटे का और जबकि अल्लाह ने हमें राह दी, उसके बाद हम उलटे फिरें, जैसे किसी को शैतान ने ज़मीन में भटका दिया हो और वह हैरान हो और उसके साथी उसको रास्ते पर आने के लिए आवाज़ दे रहे हों कि हमारे पास आ जाओ, बता दीजिए कि अल्लाह की बताई राह ही असल राह है, हमें तो यही आदेश है कि हम संसारों के पालनहार के लिए आज्ञाकारी रहें[3] (71) और यह कि नमाज़ कायम रखो और उसी से डरते रहो, वही है जिसके पास तुम इकट्ठा किए जाओगे (72) और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को ठीक ठीक बनाया और जिस दिन वह कहेगा हो जा बस वह हो जाएगा।

---

(1) आपको (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) संबोधित करके पूरी उम्मत (समुदाय) को हिदायत दी जा रही है कि ऐसी बुरी मजलिसों से बचें (2) बस इतनी ज़िम्मेदारी है कि कहा जाता रहे कि शायद उनमें डर पैदा हो (3) यह आयत उन मुश्रिकों (बहुदेववादियों) के जवाब में उतरी जिन्होंने मुसलमानों से इस्लाम को छोड़ने की प्रार्थना की थी, मुसलमानों की शान तो यह है कि वे दूसरों को समझाएं, सीधी राह पर लाने की कोशिश करें उससे वास्तव में यह आशा करना फिजूल है कि वह ख़ुदा के सिवा किसी हस्ती के आगे सिर झुकाए, और अगर कोई ईमान की कमज़ोरी की वजह से ऐसा करता है तो उसका उदाहरण दिया गया है कि जब कोई रेगिस्तान में भटक रहा हो और उसके साथी उसको आवाज़ दे रहे हों फिर भी वह ख़बरदार न हो।

قَوْلُهُ الْحَقُّ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ
الشَّهَادَةِ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٧٣﴾ وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِيْمُ لِأَبِيْهِ اٰزَرَ
أَتَتَّخِذُ أَصْنَامًا اٰلِهَةً إِنِّيْ أَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٤﴾
وَكَذٰلِكَ نُرِيْ إِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُوْنَ
مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا قَالَ هٰذَا
رَبِّيْ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿٧٦﴾ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا
قَالَ هٰذَا رَبِّيْ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَأَكُوْنَنَّ
مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿٧٧﴾ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ
هٰذَا أَكْبَرُ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ إِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٨﴾
إِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَا
أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَحَآجَّهُ قَوْمُهُ قَالَ أَتُحَآجُّوْنِّيْ فِي اللّٰهِ
وَقَدْ هَدٰىنِ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهِ إِلَّا أَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْئًا
وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا أَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَكَيْفَ أَخَافُ مَآ
أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ
سُلْطٰنًا فَأَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨١﴾

وقف لازم

منزل٢

उसी की बात सच है और उस दिन उसी की बादशाही है जब सूर फूँका जाएगा, छिपे और खुले को जानता है और वह हिकमत (तत्वदर्शिता) वाला पूरी खबर रखने वाला है (73) और जब इब्राहीम ने अपने पिता आज़र से कहा क्या आप मूर्तियों को माबूद (पूज्य) बनाए बैठे हैं मैं तो आपको और आपकी क़ौम को खुली गुमराही में देखता हूँ (74) और उसी तरह हम इब्राहीम को आसमानों और ज़मीन का साम्राज्य दिखाते गए और इसलिए ताकि उनको विश्वास हो जाए (75) फिर जब रात उन पर छा गई तो उन्होंने एक सितारा देखा बोले यह मेरा पालनहार है फिर जब वह गायब हो गया तो कहा कि मैं गायब हो जाने वालों को पसंद नहीं करता (76) फिर जब चमकता हुआ चाँद देखा तो बोले यह मेरा पालनहार है फिर जब वह भी गायब हो गया तो कहने लगे अगर मेरे पालनहार ने मुझे रास्ता न दिया तो मैं ज़रूर गुमराह लोगों में हो जाऊँगा (77) फिर जब चमकता हुआ सूरज देखा तो बोले यह मेरा पालनहार है यह सबसे बड़ा है फिर जब वह भी डूब गया तो कहा ऐ मेरी क़ौम जिस को भी तुम साझीदार बनाते हो मैं उससे बिल्कुल अलग हूँ (78) मैंने तो अपना मुँह हर ओर से हटा कर उसकी ओर कर लिया जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और मैं शिर्क (बहुदेववाद) करने वालों में नहीं (79) और उनकी क़ौम उनसे बहस पर आ गई वे बोल तुम मुझसे अल्लाह के बारे में बहस करते हो जबकि वह मुझे रास्ते पर ला चुका है, उसके साथ तुम जिसे भी शरीक ठहराते हो मुझे उसका डर नहीं सिवाय इसके कि मेरे पालनहार ही की कुछ चाहत हो, मेरे पालनहार का ज्ञान हर चीज़ को समेटे हुए है, फिर क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते (80) जिसको तुम साझी ठहराते हो उसका मुझे कैसे डर हो सकता है जबकि तुम्हें इसका डर नहीं कि तुम अल्लाह के साथ साझी ठहराते हो जिसका कोई प्रमाण अल्लाह ने तुम पर नहीं उतारा, अब दोनों पक्षों में कौन ज़्यादा संतुष्ट है अगर तुम कुछ समझ रखते हो तो बताओ[1] (81)

(1) पिछले आयतों में तौहीद (एकेश्वरवाद) को नकारा गया था और मुसलमानों के धर्म से फिरने से निराश किया गया था, यहाँ हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की घटना से उस पर और ज़ोर डालना मकसद है और साथ ही साथ मुसलमानों को समझाना है कि झुठलाने वालों और विरोधियों को किस तरह समझाना चाहिए और फिर किस तरह उनसे अलग होने को जाहिर करना चाहिए और किस तरह एक ईमान वाले को केवल अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए, हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को उनकी क़ौम ने डराया था कि तुम हमारे माबूदों (पूज्यों) का अपमान करते हो तो कहीं पागल न बन जाओ उस पर उन्होंने कहा मैं उनसे क्या डरूँगा जिनके हाथ में कुछ नहीं, डरना तो तुम्हें चाहिए कि तुम उस अल्लाह के साथ शिर्क करते हो जिसके कब्ज़े में सब कुछ है तो अब बताओ वह ज़्यादा संतुष्ट होगा जिसने अपने को अल्लाह से जोड़ा या वह जो खोखले और असत्य माबूदों (पूज्यों) की रस्सी पकड़े हुए है।

الذين آمنوا ولم يلبسوا إيمانهم بظلم أولئك لهم الأمن
وهم مهتدون ﴿٨٢﴾ وتلك حجتنا آتيناها إبراهيم على قومه
نرفع درجات من نشاء إن ربك حكيم عليم ﴿٨٣﴾ ووهبنا
له إسحاق ويعقوب كلا هدينا ونوحا هدينا من قبل
ومن ذريته داود وسليمان وأيوب ويوسف وموسى و
هارون وكذلك نجزي المحسنين ﴿٨٤﴾ وزكريا ويحيى وعيسى
وإلياس كل من الصالحين ﴿٨٥﴾ وإسماعيل واليسع ويونس
ولوطا وكلا فضلنا على العالمين ﴿٨٦﴾ ومن آبائهم وذرياتهم
وإخوانهم واجتبيناهم وهديناهم إلى صراط مستقيم ﴿٨٧﴾
ذلك هدى الله يهدي به من يشاء من عباده ولو
أشركوا لحبط عنهم ما كانوا يعملون ﴿٨٨﴾ أولئك الذين
آتيناهم الكتاب والحكم والنبوة فإن يكفر بها هؤلاء
فقد وكلنا بها قوما ليسوا بها بكافرين ﴿٨٩﴾ أولئك
الذين هدى الله فبهداهم اقتده قل لا
أسألكم عليه أجرا إن هو إلا ذكرى للعالمين ﴿٩٠﴾

منزل٢

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अपने ईमान में थोड़ा भी शिर्क (बहुदेववाद) को न मिलाया, अमन तो उन्हीं के लिए है और वही लोग हिदायत पर हैं[1] (82) और यह वह प्रमाण[2] है जो हमने इब्राहीम को उनकी क़ौम के मुकाबले में प्रदान किया, जिसके चाहे हम दर्जों को बुलन्द करें बेशक आपका पालनहार हिकमत वाला खूब जानने वाला है (83) और हमने उनको इस्हाक़ और याकूब प्रदान किये और सबको हिदायत प्रदान की और उनसे पहले नूह को हमने हिदायत प्रदान की और उनकी संतान में दाऊद और सुलैमान को और अय्यूब और यूसुफ़ को और मूसा और हारून को भी और अच्छे काम करने वालों को हम यूँ ही बदला दिया करते हैं (84) और इसी तरह ज़करिया और यह्या और ईसा और इलियास को भी वे सब अच्छे लोगों में थे (85) और इस्माईल और यस्अ़ को और यूनुस को और लूत को सबको हमने तमाम जहानों पर श्रेष्टता दी (86) और उनके बाप दादा में से भी (बहुतों को हिदायत दी) और उनकी संतान और उनके भाइयों में से और हमने उनको चुन लिया और उनको सीधे रास्ते पर चलाया (87) यह अल्लाह का बताया हुआ रास्ता है वह अपने बन्दों (उपासकों) में जिसको चाहता है इस रास्ते पर चला देता है और अगर वे शिर्क (बहुदेववाद) करते तो ज़रूर उनके सारे काम बेकार चले जाते[3] (88) इन्हीं लोगों को हमने किताब और शरीअत (क़ानून) और नुबुव्वत (ईशदौत्य) दी फिर अगर इन चीज़ों को यह लोग न माने तो हमने इसको मानने के लिए ऐसे लोग नियुक्त कर दिए हैं जो इसका इनकार करने वाले नहीं हैं[4] (89) यही वे लोग हैं जिनको अल्लाह ने रास्ता चला दिया तो आप भी इन्हीं के रास्ते पर चलिए, कह दीजिए कि मैं इस पर तुम से बदला नहीं मांगता यह तो सारे जहानों के लिए एक नसीहत (उपदेश) है[5] (90)

(1) सही हदीसों में स्पष्ट रूप से मौजूद है कि अत्याचार का अर्थ शिर्क (बहुदेववाद) है इसीलिए जुल्म (अत्याचार) का अनुवाद यहाँ शिर्क से लिया गया है (2) यानि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की वह बातचीत जो ऊपर प्रमाण के रूप में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला की ओर से दिया गया था। (3) साफ़ कर दिया गया कि शिर्क इतनी गंदी चीज़ है कि अगर ऐसे ऐसे अल्लाह के निकटतम लोगों में भी ऐसी हरकत हो जाए तो उनके सारे काम बेकार हो जाएं (4) मक्का के मुश्रिकों ने नहीं माना तो अंसार और मुहाजिरीन लोगों को अल्लाह ने इस काम के लिए लगा दिया वे किसी चीज़ से मुँह नहीं मोड़ते (5) यह बता दिया गया कि सारे पैग़म्बरों का बुनियादी तौर पर रास्ता एक ही है।

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ
مِّنْ شَیْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِیْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّ
هُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِیْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِیْرًا ۚ
وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِیْ
خَوْضِهِمْ یَلْعَبُوْنَ ﴿۹۱﴾ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِیْ
بَیْنَ یَدَیْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ
بِالْاٰخِرَةِ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ یُحَافِظُوْنَ ﴿۹۲﴾ وَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِیَ اِلَیَّ وَلَمْ یُوْحَ
اِلَیْهِ شَیْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ
الظّٰلِمُوْنَ فِیْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَیْدِیْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا
اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْیَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
غَیْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰیٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۹۳﴾ وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا
فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ
وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِیْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِیْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ
لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَیْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۹۴﴾

منزل٢

और उन्होंने अल्लाह को जैसे पहचानना चाहिए था न पहचाना जब वे बोले कि अल्लाह ने इंसानों पर तो कुछ उतारा ही नहीं आप पूछिए कि मूसा जिस किताब को लोगों की हिदायत (संमार्ग) और रौशनी के लिए लेकर आए वह किसने उतारी तुम उसको पृष्ठ–पृष्ठ करके दिखाते हो और बहुत कुछ छिपा जाते हो और उससे तुम्हें वह ज्ञान मिला जो न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप दादा जानते थे[1], आप कह दीजिए कि अल्लाह ने वह (किताब) उतारी फिर उनको छोड़ दीजिए वे अपनी बक बक में लगे रहें[2] (91) और यह किताब (कुरआन) भी हम ही ने उतारी जो पूरी की पूरी बरकत है अगलों की पुष्टि (तस्दीक़) है और इसलिए उतारी ताकि आप मक्के वालों को और उसके आस पास के लोगों को डराएं, और जिनको आखिरत का विश्वास है वे इसको मानते हैं और वे लोग अपनी नमाज़ों की देख रेख रखते हैं[3] (92) और उससे बढ़कर अन्याय करने वाला कौन होगा जो अल्लह पर झूठ बाँधे या यह कहे कि मुझ पर वह्य (ईश्वाणी) की गई है जबकि उस पर कुछ भी वह्य नहीं की गयी है और वह जो यह कहे मैं भी जल्दी ही इसी तरह उतार दूँगा जैसा अल्लाह ने उतारा है और अगर आप देख लें जब यह अन्याय करने वाले मौत की कठिनाइयों में होंगे और फ़रिश्ते हाथ फैलाए (कहते) होंगे कि निकालो अपनी जान आज तुम्हें अपमानजनक दण्ड दिया जाएगा इसलिए कि तुम अल्लाह पर झूठ कहा करते थे और उसकी निशानियों से अकड़ते रहते थे (93) और अब एक–एक करके हमारे पास पहुँच गए जैसे आरम्भ में हमने तुम्हें पैदा किया था और जो कुछ हमने तुम्हें दिया था वह सब पीछे छोड़ आए और हमें तुम्हारे साथ वह सिफ़ारिशी भी दिखाई नहीं देते जिनके बारे में तुम्हारा ख़्याल था कि वे तुम्हारे मामलों में (हमारे) साझीदार हैं, तुम आपस में टूटकर रह गए और तुम जो दावे किया करते थे वे सब हवा हो गए[4] (94)

---

(1) यहूदियों ने तौरेत को अलग अलग पृष्ठों में लिख रखा था जो चीज़ें उनकी इच्छा की न होती थी वह छिपा लेते थे (2) आप बता दीजिए कि वह किताब अल्लाह ही ने उतारी फिर वे जानें और उनका काम जाने (3) उम्मुल कुरा मक्का का नाम है यानी सारे शहरों और बस्तियों का आधार, कहते हैं कि दुनिया में सबसे पहले यही जगह बनी और भौगोलिक रूप से भी इसको केन्द्र का दर्जा प्राप्त है "वमन हौलहा" उसके आप–पास से आशय पूरा अरब फिर पूरी दुनिया, दावत (इस्लाम के प्रचार) की शुरुआत मक्के से हुई फिर यह दावत पूरी दुनिया में पहुँची (4) जिनको आखिरत का ध्यान है वे मानते हैं और जो हठधर्मियों में हैं वे उल्टी–सीधी बातें करते हैं "लौ नशाउ लकुलना मिस्ल हाज़ा" हम चाहें तो हम भी ऐसी बात कह दें, उतार लाएं आदि, उनकी सज़ा का भी आगे उल्लेख है।

बेशक अल्लाह ही दाने और गुठली को फाड़ने वाला है बेजान से जानदार को निकालता है और जान वाले से बेजान को निकालने वाला है वह अल्लाह ही है फिर तुम कहाँ उल्टे फिरे जाते हो (95) सुबह की पौ फाड़ने वाला है, उसने रात को सुकून की चीज़ और सूरज चाँद को हिसाब की चीज़ बनाया, यह सब उस ज़ात का ठहराया हुआ है ज़बरदस्त, खूब जानने वाला है (96) और वही वह ज़ात है जिसने तुम्हारे लिए सितारे बनाए ताकि तुम खुश्की (थल) व तरी (जल) के अंधेरों में उससे रास्ता पा सको, हमने निशानियाँ विस्तार से बयान कर दी हैं, ऐसे लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं (97) और वही है जिसने तुमको एक अकेली जान से पैदा किया बस एक जगह ठहरने की है और एक जगह सुपुर्द[1] होने की है, हमने निशानियाँ उन लोगों के लिए खोल–खोल कर बयान कर दी हैं जो समझ रखते हैं (98) वही है जिसने आसमान से पानी उतारा फिर हमने उससे हर प्रकार की कोंपले पैदा कीं फिर उससे हमने हरा माद्दा निकाला जिससे हम जुड़े हुए दाने निकालते हैं[2] और खजूर में से लटकते हुए गुच्छे और अंगूर और ज़ैतून और अनार के बाग़, एक दूसरे से मिलते हुए भी और अलग अलग भी, जब वे फलते हैं तो उनके फलों को और पकने को देखो, इसमें ईमान वालों के लिए बहुत निशानियाँ हैं[3] (99) वे अल्लाह के साथ जिन्नों को साझी ठहराते हैं[4] जब कि अल्लाह ही ने उनको पैदा किया और उन्होंने बिना जाने बूझे अल्लाह के लिए बेटे और बेटियाँ बना लीं[5] उसकी ज़ात पाक है उनके बताए हुए गुणों से बुलंद व उच्च है (100) आसमानों और ज़मीन का नये सिरे से पैदा करने वाला है, उसके संतान कहाँ हो सकती जब कि उसकी कोई पत्नी भी नहीं, हर चीज़ को उसने पैदा किया और वह हर चीज़ का खूब ज्ञान रखता है (101)

(1) वह अव्वल हवाले होता है माँ के पेट में फिर आकर ठहरता है दुनिया में फिर हवाले होगा कब्र में फिर जा ठहरेगा जन्नत (स्वर्ग) या दोज़ख (नर्क) में (2) वनस्पति विज्ञान के ज्ञान से यह बात साफ़ हो चुकी है जब पौधों पर पानी पड़ता है तो उसमें एक हरे रंग का पदार्थ पैदा होता है जिसे अंग्रेज़ी में क्लोरोफ़िल कहते हैं यही वह पदार्थ है जिसके द्वारा वनस्पति में दाने व फल पैदा होते हैं। (3) यह सब अल्लाह की शक्ति की निशानियाँ हैं पवित्र कुरआन लोगों को बार बार इनमें विचार करने का निमंत्रण देता है (4) मुश्रिकों की एक बड़ी संख्या जिन्नों से सहायता प्राप्त करती थी और उनको खुदाई में शरीक समझती थी और यूँ भी गुमराही शैतान के गुमराह करने से होती है इसलिए भी मानो अल्लाह के अलावा की उपासना उसी की उपासना है (5) यहूदियों ने हज़रत उज़ैर को ईसाईयों ने हज़रत मसीह को खुदा का बेटा और मुश्रिकों (बहुदेववादियों) ने फरिश्तों को खुदा की बेटियाँ क़रार दे रखा था।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٠٢﴾ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ؗ وَهُوَ يُدْرِكُ
الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٠٣﴾ قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ
رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ
بِحَفِيْظٍ ﴿١٠٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ
وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ
اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ
اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ
بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾ وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا
اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ
اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ وَاَقْسَمُوْا
بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ؕ قُلْ
اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ لَا
يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٩﴾ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا
بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١٠﴾ ع

منزل٢

वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है उसके अलावा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, हर चीज़ उसी ने पैदा की बस उसी की बन्दगी (उपासना) करो और वही हर चीज़ का कारसाज़ है (102) निगाहें उसको नहीं पा सकती जब कि निगाहें उसके घेरे में हैं और वह बड़ा सूक्ष्मदर्शी और पूरी खबर रखने वाला है (102) तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे पास रौशन दलीलें आ चुकीं बस जिसने आंखें खोल लीं उसने अपना ही भला किया और जो अन्धा बन रहा तो उसका वबाल उसी पर है और मैं तुम पर कोई दारोगा नहीं हूँ[1] (104) और हम इसी तरह फेर–फेर कर निशानियाँ बयान करते हैं और इसलिए कि वे कहें कि आपने पढ़ रखा है और इसलिए कि हम उसको जानने वालों के लिए खोल दें[2] (105) आपके पालनहार की ओर से आपको जो वह्य (इलाहीवाणी) आती है उस पर चलते रहिये उसके अलावा कोई माबूद (पूज्य) नहीं और शिर्क (बहुदेववाद) करने वालों से मुँह मोड़ लीजिए (106) और अगर अल्लाह की चाहत ही होती तो वे शिर्क न करते और हमने आपको उन पर कोई दारोग़ा नहीं बनाया और न ही आप उन के कामों के ज़िम्मेदार हैं[3] (107) और जिनको वे अल्लाह के अलावा पुकारते हैं तुम उनको बुरा भला मत कहो कि वे बिना जाने बूझे दुश्मनी में अल्लाह को बुरा भला कहने लगे, इसी तरह हर उम्मत (समुदाय) के काम को हमने उनके लिए मनमोहक बना दिया है फिर अपने पालनहार की ओर उनको लौट कर जाना है फिर वह बता देगा कि वे क्या कुछ किया करते थे [4] (108) उन्होंने बड़ो ज़ोर शोर से अल्लाह की कसमें खाईं कि अगर उनके पास कोई निशानी आ गई तो वे ईमान ले ही आएंगे कह दीजिए कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं, और तुम क्या जानों अगर वे आ भी गईं तो वे ईमान लाने वाले नहीं [5] (109) और हम उनके दिलों को और निगाहों को पलट देंगे जिस तरह वे पहली बार में ईमान नहीं लाए और हम उनको उनकी सरकशी में भटकता छोड़ देंगे (110)

---

(1) यानी खुदा हमें दिखाई नहीं देता लेकिन अन्तदृष्टि द्वारा दिखाई दी जाने वाली निशानियां और प्रमाण हमारे सामने मौजूद हैं, जो आँख खोल कर देखेगा खुदा को पा लेगा और जो अंधा बन गया उसने अपना घाटा किया, मेरे ज़िम्मे नहीं कि मैं किसी को देखने पर विवश करूँ (2) विरोधी सब कुछ सुन कर कहते थे कि यह अनपढ़ हैं अवश्य ही कोई उनको यह सब बातें सिखाता है और सच्चाई को जानने वाले लोग कहते कि निसंदेह ही यह सब अल्लाह ही की ओर से है और यह पैग़म्बर सच्चे हैं (3) और अल्लाह का फैसला ही होता तो सब मुसलमान होते लेकिन अल्लाह की नीति यही है कि उसने दुनिया को परीक्षा स्थल बनाया है सही रास्ता बता दिया है, जो प्रयास करेगा उसको पा लेगा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जिम्मे पहुँचा देना है जबर्दस्ती मुसलमान बनाना नहीं है (4) यह पवित्र कुरआन का आदेश है दूसरों के झूठे माबूदों (पूज्यों) और गुरुओं को बुरा भला मत कहो इसका घाटा यह है कि वे पलट कर नासमझी में अल्लाह को बुरा भला कहने लगेंगे (5) उन्होंने मांग की थी कि सफा पहाड़ सोने का बन जाए कुछ मुसलमानों को भी ख़्याल हुआ कि उनकी इच्छा पूरी कर दी जाए तो शायद वे ईमान ले आएं, उसका जवाब भी है।

وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتَىٰ وَ
حَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا إِلَّا أَن يَشَاءَ
اللَّهُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ ﴿١١١﴾ وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ
عَدُوًّا شَيَاطِينَ الْإِنسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا ۚ وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ ۖ فَذَرْهُمْ
وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١١٢﴾ وَلِتَصْغَىٰ إِلَيْهِ أَفْئِدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُم مُّقْتَرِفُونَ ﴿١١٣﴾ أَفَغَيْرَ
اللَّهِ أَبْتَغِي حَكَمًا وَهُوَ الَّذِي أَنزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا ۚ
وَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِّن رَّبِّكَ
بِالْحَقِّ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿١١٤﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ
صِدْقًا وَعَدْلًا ۚ لَّا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١١٥﴾
وَإِن تُطِعْ أَكْثَرَ مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ
إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿١١٦﴾ إِنَّ رَبَّكَ
هُوَ أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَن سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١١٧﴾
فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِن كُنتُم بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

منزل٢

और अगर हम उनके पास फरिश्ते भी उतार देते और मुर्दे उनसे बात करते और हर चीज़ लाकर हम उनके सामने कर देते तब भी वे हरगिज़ ईमान न लाते सिवाय इसके कि अल्लाह ही चाहता लेकिन उनमें अधिकतर लोग नादानी में पड़े हुए हैं[1] (111) और इसी तरह इंसानी और जिन्नाती शैतानों में से हमने हर पैग़म्बर के दुश्मन बना रखे थे जो धोखा देने के लिए एक दूसरे को चिकनी–चुपड़ी बातों की ताक़ीद किया करते थे और अगर आपका पालनहार चाहता तो वे ऐसा न कर पाते तो आप उनको छोड़ दीजिए वे जानें और उनका झूठ (112) और (वे यह मनमोहक बातें इसलिए करते हैं) ताकि आखिरत को न मानने वालों के दिल उसकी ओर झुक जाएं और वे उसमें मगन हो जाएं और वही ग़लत काम किये जायें जो वे कर रहे हैं (113) तो क्या मैं अल्लाह के अलावा किसी और को न्याय करने वाला खोजूँ जब कि उसी ने तुम्हें खुली हुई किताब दी, और जिन लोगों को हम किताब (पहले) दे चुके हैं वे जानते हैं कि यह (कुरआन) बिलकुल ठीक ठीक आपके पालनहार की ओर से उतरा है तो आप शक करने वालों में न हो जाएं (114) और आपके पालनहार की बात सच्चाई और न्याय के साथ पूरी हो गई और अल्लाह की बातों को कोई बदल नहीं सकता और वह ख़ूब सुनने वाला जानने वाला है (115) और अगर आप दुनिया के अधिकतर लोगों की बात मान लेंगे तो वे आपको अल्लाह के रास्ते से हटा देंगे वे तो अटकल (गुमान) पर चलते हैं और वे केवल अटकल ही मारते हैं[2] (116) बेशक आपका पालनहार खूब जानता है कि कौन उसके रास्ते से हटा है और वह सही रास्ता चलने वालों से भी अवगत है (117) तो जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो[3] उसे खाओ अगर तुम उसकी आयतों को मानते हो (118)

---

(1) अगर उनकी मांगो के अनुसार बल्कि उससे बढ़कर आसमान से फरिश्ते भी आ जाएं, सारी उम्मतें (समुदाय) जो गुज़र चुकी हैं और उनके पैग़म्बर सामने लाए जाएं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुष्टि (तस्दीक़) करें तो भी वे मानने वाले नहीं सिवाय कुछ उन लोगों के जिनके बारे में अल्लाह की इच्छा हो चुकी (2) अल्लाह की व्यवस्था यही है कि अच्छाई और बुराई की शक्तियां अपना काम करती रही हैं इंसानों और जिन्नातों में शैतानी प्रवृत्ति रखने वाले बात को मोहक शैली में बनाते रहते हैं ताकि वे लोग जो आख़िरत में विश्वास नहीं रखते और सांसारिक जीवन में डूबे हुए हैं वे उनके बहकावे में आ जाएं, जहाँ तक पैग़म्बरों और उनकी बात मानने वालों का संबन्ध है वे ऐसे लोगों से बहुत दूर रहते हैं और उनके धोखे को खूब समझते हैं (3) यह आयतें इस पर उतरी कि काफ़िर कहने लगे कि मुसलमान अपना मारा खाते हें और अल्लाह का मारा नहीं खाते, यह शैतानी प्रवृति रखने वालों की चिकनी–चिकनी बातें थीं, आगे साफ़ कहा जा रहा है कि सबको मारने वाला वही है बस जिस पर उसका नाम लिया जाए और ज़बह किया जाए वह खाओ, इसके और भी फायदे बयान किये जा सकते थे कि जिसको ज़बह किया जाता है उसका सब ख़ून बह जाता है और वह गंदगी से पाक हो जाता है और जो अपनी मौत मरता है उसकी सारी गंदगी उसके गोश्त में मिल जाती है इसलिए वह हराम है, अल्लाह तआला ने यह उपाय बयान करने के बजाय यह कह दिया कि ईमान वाले हो तो बात मानो, उसकी हिकमत तुम्हारी समझ में आये या न आये इससे यह नियम सामने आ गया कि मसलेहत (युक्तियां) तलाश करना ग़लत नहीं किन्तु आज्ञापालन को उस पर निर्भर नहीं किया जा सकता।

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ
لَكُمْ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا
لَيُضِلُّونَ بِأَهْوَائِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ
بِالْمُعْتَدِينَ ﴿١١٩﴾ وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ
يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا تَأْكُلُوا
مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ
لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ ۖ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ
لَمُشْرِكُونَ ﴿١٢١﴾ أَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا
يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ
مِنْهَا ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾ وَكَذَٰلِكَ
جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَابِرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا ۖ وَمَا
يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٣﴾ وَإِذَا جَاءَتْهُمْ
آيَةٌ قَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ ۘ
اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ۗ سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا
صَغَارٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٤﴾

ع

وقف لازم

منزل۲

और क्या कारण है कि जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो वह तुम न खाओ जबकि उसने जो हराम किया वह भी विस्तार से तुम्हारे सामने बयान कर दिया सिवाय इसके कि तुम उसके लिए विवश हो जाओ, बेशक अधिकतर लोग बिना समझे बूझे अपनी इच्छाओं से गुमराह करते हैं, बेशक आपका पालनहार हद से आगे बढ़ने वालों को ख़ूब जानता है[1] (119) और खुला गुनाह भी छोड़ दो और छिपा गुनाह भी[2] बेशक जो लोग गुनाह अपने सिर लेते हैं जल्द ही उनको अपने किये की सज़ा मिल जाएगी (120) और जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो उसमें से मत खाओ और यह तो नाफ़रमानी (अवज्ञा) की बात है और शैतान तो अपने दोस्तों को भड़काते रहते हैं ताकि वे तुमसे बहस करें और अगर तुमने उनकी बात मान ली तो निश्चित ही तुम मुश्रिक हो गये[3] (121) वह व्यक्ति जो मुर्दा था तो हमने उसको जिन्दा किया और उसको रौशनी दे दी वह उससे लोगों में चलता फिरता है, क्या उसकी मिसाल उस व्यक्ति की तरह हो सकती है जो अंधेरों में पड़ा है वहाँ से निकल नहीं सकता। इसी प्रकार काफिरों के लिए उनके कामों को सुहावना बना दिया गया है (122) और इसी तरह हमने हर बस्ती में वहाँ के बड़े बड़े अपराधी रखे हैं ताकि वे वहाँ धोखा देते रहे और वे (वास्तव में) अपने ही साथ धोखा करते हैं और उनको एहसास भी नहीं होता[4] (123) और जब उनके पास कोई आयत पहुँचती है तो वे कहते हैं हम तो उस समय तक हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक हमको भी वही न मिल जाएगा जो अल्लाह के पैग़म्बरों को मिला, अल्लाह ख़ूब जानता है कि किसको अपना पैग़म्बर बनाए, अपराध करने वाले जल्द ही अपनी मक्कारियों की वजह से अल्लाह के यहाँ अपमान और कठोर अज़ाब (यातना) झेलने वाले हैं[5] (124)

(1) अल्लाह ने उन्हीं जानवरों को हलाल किया जो अल्लाह के नाम के साथ ज़बह किए गए हों अब जो भी उनसे आगे बढ़ेगा तो अल्लाह उस से समझ लेगा सिवाय यह कि भूख की वजह से मरने की आशंका हो तो आवश्यकतानुसार इसकी अनुमति है (2) यानी काफिरों के बहकावे पर न ज़ाहिर में अमल करो न दिल में शक करो, ज़ाहिरी जीवन भी पवित्र हो और अंदरून भी पाक रहे (3) अल्लाह के आदेश को न मानना भी शिर्क है (4) मक्का के सरदारों का काम भी यही था और हर ज़माने में ऐसे लोग रहे हैं जो सत्य से रोकने के लिए तरह–तरह के हीले–बहाने करते रहे हैं, मुसलमानों को तसल्ली दी जा रही है कि इससे परेशान न हों यह सारी मक्कारी और छलकपट उन्हीं पर पड़ने वाली है। (5) इन काफिरों का हाल यह है कि सच्चाई की कोई निशानी देखते हैं तो कहते हैं कि हम तो उस समय मानेंगे जब हम पर वह्य आए और हम सुनें, अल्लाह हमारे सामने आ जाए और तरह–तरह की खुराफ़ात बकते हैं न मानने का बहाना करते हैं।

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ
وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا
يَصَّعَّدُ فِى السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ فَصَّلْنَا
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۲۶﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ
وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ
جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ
اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَاۤ
اَجَلَنَا الَّذِيْۤ اَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَاۤ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾ وَكَذٰلِكَ
نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۲۹﴾
يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ
يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ
هٰذَا ؕ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰۤى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿۱۳۰﴾

منزل۲

जिसको अल्लाह हिदायत (संमार्ग) देना चाहता है उसके सीने को इस्लाम के लिए खोल देता है और जिसे गुमराह करना चाहता है उसके सीने को तंग घुटा हुआ कर देता है, मानो उसे आसमान पर ज़बर्दस्ती चढ़ना पड़ रहा हो, इसी तरह अल्लाह ईमान न लाने वालों के सिर गंदगी थोप देता है[1] (125) और यह आपके पालनहार का सीधा रास्ता है, हमने उन लोगों के लिए निशानियाँ खोल दी हैं जो नसीहत हासिल करते हैं (126) उनके लिए उनके पालनहार के पास सलामती का घर है और वही उनका दोस्त है, यह बदला है उनके कामों का जो वे करते रहे हैं (127) और जिस दिन वह सबको इकट्ठा करेगा (और कहा जायेगा) ऐ जिन्नातों का गिरोह तुम ने इंसानों में से बहुतों को गुमराह किया और इंसानों में से उनके दोस्त कहेंगे कि हमने एक दूसरे से काम निकाला[2] और तूने हमारे लिए जो समय निर्धारित किया था हम उस समय को आ पहुँचे, अल्लाह कहेगा कि दोज़ख ही तुम्हारा ठिकाना है उसी में पड़े रहो मगर जो अल्लाह ही चाहे, बेशक उनका पालनहार हिकमत (तत्वदर्शिता) वाला और खूब जानने वाला है (128) इसी प्रकार हम अत्याचारियों को उनकी करतूतों के कारण एक दूसरे के साथ मिला देंगे (129) ऐ जिन्नातों और इंसानों का गिरोह[3] क्या तुम्हीं में से तुममें बहुत से पैग़म्बर नहीं आए जो तुम को हमारी आयतें पढ़–पढ़ कर सुनाते थे और इस दिन के आने से तुम्हें डराते थे? वे बोलेंगे कि हम खुद अपने ऊपर गवाह हैं और उनको तो दुनिया की ज़िन्दगी ने धोखे में डाला और वे अपने ऊपर गवाही देंगे कि बेशक इनकार करने वाले वे खुद थे[4] (130)

(1) साधारण रूप से यह समझा जाता था कि आदमी जितना ऊपर जाएगा उसको ताज़ा हवा मिलेगी मगर यह कुर्आन का चमत्कार है कि चौदह सौ साल पहले उसने बता दिया कि ऊपर जाने से दम घुटता है, जो अब वैज्ञानिक रूप से भी प्रमाणित हो चुका है ऊपर ऑक्सीजन कम होने की वजह से दम घुटने लगता है, यह मिसाल दी गई है न मानने वालों की कि सत्य को स्वीकार करने के लिए उनके सीने तंग हो जाते हैं और शिर्क उनके सिर थुप जाता है जो सबसे बड़ी गंदगी है (2) जिन्नों और इन्सानों में से जो शैतान हैं जब पकड़े जाएंगे तो कहेंगे कि यह सब तो हमने दुनिया का काम निकालने के लिए किया था, इसका मक़सद इबादत (उपासना) न था। (3) इस आयत की वजह से कुछ लोग कहते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले जिन्नातों में भी बहुत से पैग़म्बर हुए हैं और बहुत से लोग कहते हैं कि उनके विधवत रूप से पैग़म्बर नहीं आये, इंसानों में जो पैग़म्बर आए वे ही उनमें भी तब्लीग़ (धर्मप्रचार) करते थे और जो जिन्नात मुसलमाना हो जाते वे विधवत रूप से प्रतिनिधि बन कर दूसरे जिन्नातों में तबलीग़ किया करते थे (4) इसी सूरह में आयत न023 में गुज़र चुका कि वे पहले झूठ बोलने की कोशिश करेंगे मगर जब खुद उनके हाथ पाँव गवाही देने लगेंगे तो वे भी सच कहने पर मजबूर हो जाएंगे।

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا
غٰفِلُوْنَ ۝١٣١ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ
بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝١٣٢ وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ
اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ
اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۝١٣٣ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ
لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝١٣٤ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى
مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ
عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝١٣٥ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ
مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا
هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ
لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ
يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝١٣٦ وَكَذٰلِكَ
زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ
شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ؕ
وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ۝١٣٧

منزل٢

यह इसलिए कि आपका पालनहार अत्याचार से बस्तियों को हलाक (विनष्ट) करने वाला नहीं जबकि वहां के लोग बेखबर हों[1] (131) और हर एक के लिए उनके कर्मों के अनुसार दर्जे हैं और जो भी वे करते हैं आप का पालनहार उससे बेख़बर नहीं है (132) और आपका पालनहार बेनियाज़ (निःस्पृद) है रहमत वाला (दयावान) है अगर चाहे तो तुम सबको चलता कर दे और तुम्हारे बाद जिसको चाहे (तुम्हारी) जगह पर ले आए जैसे उसने दूसरी क़ौमों के वंश में से तुम्हें खड़ा कर दिया था (133) बेशक जिसका तुमसे वादा है वह आने ही वाला है और तुम (अल्लाह को) हरा नहीं सकते (134) कह दीजिए ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम करो मैं भी कर रहा हूँ आगे तुम्हें पता चल जाएगा कि परिणाम किसके हित में है, अत्याचरी लोग तो सफ़ल हो ही नहीं सकते (135) और अल्लाह ने जो भी खेती और पशु पैदा किए उसमें से लोगों ने अल्लाह का एक हिस्सा रखा फिर वे अपने ख़्याल के अनुसार कहने लगे कि "यह अल्लाह का है और यह हमारे (ठहराए हुए) साझीदारों का है तो जो उनके साझीदारों का होता है वह अल्लाह तक नहीं पहुँचता और जो अल्लाह का होता वह साझीदारों तक पहुँच जाता, कैसे बुरे फैसले वे करते रहते हैं[2] (136) इसी तरह बहुत से मुश्रिकों के लिए उनके (ठहराए हुए) साझीदारों ने उनकी संतान के कत्ल को सुहावना बना दिया है ताकि वे उन्हें बर्बाद कर दें और उनके दीन (धर्म) को उनके लिए संदिग्ध (मश्कूक) बनादें और अगर अल्लाह की चाहत होती तो वे ऐसा न करते बस आप उनको छोड़ दीजिए वे जाने और उनका झूठ[3] (137)

(1) ऊपर आयत में आ चुका कि अल्लाह कयामत में स्वीकार करवाएगा कि हममें पैग़म्बर आए थे वह बिना सावधान किए हुए किसी को अज़ाब (दण्ड) नहीं देता (2) काफ़िर अपने जानवरों और खेती में अल्लाह का भी हिस्सा लगाते और मूर्तियों का भी फिर अगर अल्लाह का हिस्सा बेहतर देखते हैं तो वह मूर्तियों की ओर कर देते और मूर्तियों की ओर का अल्लाह की ओर न करते उनके इसी बुरे काम का उल्लेख है (3) साझीदारों का मतलब शैतान है जो उनको बहकाते और विभिन्न बहानों से वे अपनी संतान को क़त्ल करते थे लड़कियों को क़त्ल करना अधिक था लड़कों को भी अल्लाह से निकटता प्राप्त करने के लिए कत्ल करते थे और इसको इब्राहीम व इस्माईल अ़लैहिस्सलाम का तरीक़ा बताते, बताया जा रहा है कि यह दीन दुनिया की बर्बादी है और इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के धर्म के बिल्कुल खिलाफ़ है।

وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ
نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ
لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ
بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ
خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ
مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ
عَلِيْمٌ ﴿۱۳۹﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًاۢ
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ؕ
قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ
جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ
مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ
مُتَشَابِهٍ ؕ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ
حَصَادِهٖ ۖ وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۱۴۱﴾ وَ
مِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ؕ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَ
لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۴۲﴾

منزل٢

वे यह कहते हैं कि यह पशु और खेती मना है उनका ख़्याल यह है कि कोई इसको खा नहीं सकता सिवाय उसके जिसको हम चाहें, और कुछ चौपाए हैं जिन पर सवारी हराम (वर्जित) है और कुछ चौपायों पर अल्लाह का नाम नहीं लेते, उस पर झूठ बाँध कर, जल्द ही अल्लाह उनके झूठ गढ़ने की सज़ा उनको देगा (138) और वे कहते हैं कि इन चौपायों के पेट में जो है वह केवल हमारे पुरूषों के लिए है और हमारी औरतों के लिए हराम है और अगर बच्चा मुर्दा (पैदा) हो तो वे सब उसमें शरीक हो जाते हैं, जल्द ही अल्लाह उनके इस बयान की सज़ा उनको देगा, बेशक वह हिकमत (तत्वदर्शिता) वाला है खूब जानता है[1] (139) जिन लोगों ने बिना जाने बूझे मूर्खता में अपनी संतान को क़त्ल कर दिया उन्होंने बड़ा ही घाटा उठाया और जो अल्लाह ने उनको प्रदान किया वह उन्होंने हराम (वर्जित) कर लिया अल्लाह पर झूठ गढ़ते हुए, वे अवश्य भटक गए और वे रास्ते पर नहीं हैं[2] (140) वही ज़ात है जिसने (टट्टियों पर) चढ़ाए हुए और बिना चढ़ाए हुए बाग़ पैदा किये[3] और खजूर के पेड़ और खेती और उसके फल कई प्रकार के हैं और ज़ैतून और अनार एक जैसे भी और अलग अलग भी जब वह फल दें तो उसके फल खाओ और उसकी कटाई के समय तुम उसका हक़ दो, और बेजा मत उड़ाओ, फजूल ख़र्ची करने वाले उसको पसंद ही नहीं[4] (141) और चौपायों में से बोझ लादने वाले भी और छोटी काया के भी, जो अल्लाह ने तुम्हें दिया उसमें से खाओ और शैतान के पदचिन्हों पर मत चलो बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है[5] (142)

---

(1) विभिन्न प्रकार के अपनी ओर से नियम बना लिए थे किसी पर सवारी हराम समझते किसी पर अल्लाह का नाम लेना गलत कहते, कुछ विशेष जानवरों के गर्भ के बारे में धारणा थी कि अगर बच्चा जीवित पैदा हुआ तो मर्द खा सकते हैं औरतें नहीं खा सकतीं और अगर मुर्दा पैदा हुआ तो सब खा सकते हैं न जाने क्या क्या खुराफ़ात गढ़ रखी थीं (2) जैसे यह कि अगर लगातार दस बेटे पैदा हों तो दसवें को कुर्बान कर देना ज़रूरी समझते थे और नादानी में दीन व दुनिया का नुकसान करते थे (3) जो टट्टियों पर चढ़ाए जाते हैं जैसे अंगूर आदि और जो ऐसे नहीं जैसे, खजूर, आम, अमरूद आदि (4) मक्के में भी पैदावार में से कुछ दे देने का आदेश था फिर मदीने में उसको स्पष्ट रूप से बयान कर दिया गया, जिसकी सिंचाई करनी पड़े उसमें बीसवां हिस्सा वरना दसवां हिस्सा आदि (5) बोझ लादने वाले जैसे ऊँट वगैरह और छोटी काया के जैसे भेंड़ वकरी आदि, जो अल्लाह ने वैध किया वह खाओ अपनी ओर से हलाल व हराम मत बताओ।

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ؕ
قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ
اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّئُوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۴۳﴾
وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ
حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ
اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ
افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ قُلْ لَّآ اَجِدُ فِىْ مَآ اُوْحِىَ اِلَىَّ
مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ
دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا
اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ
رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۵﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ
ذِىْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَاۤ
اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَاۤ اَوِ الْحَوَايَاۤ اَوْ مَا اخْتَلَطَ
بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۱۴۶﴾

منزل ۲

आठ जोड़े (पैदा किए) , भेड़ में से दो, बकरी में से दो, पूछिये कि क्या उसने दोनों नर हराम किये या दोनों मादा, या (वह बच्चा) जो दोनों मादा अपने मातृ गर्भ में लिए हुए हैं, अगर सच्चे हो तो प्रमाण के साथ मुझे बताओ (143) और ऊँट में से दो और गाय में से दो, पूछिए कि दोनों नर उसने हराम किये या दोनों मादा या (वह बच्चा) जो दोनों मादा अपने गर्भाशय में लिए हुए हैं, क्या तुम उस समय मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम को इसका आदेश दिया था तो उससे बड़ा ज़ालिम कौन होगा जो बिना जाने बूझे अल्लाह पर झूठ गढ़े ताकि लोगों को बहकाए, बेशक अल्लाह अन्याय करने वाले लोगों को राह नहीं देता (144) कह दीजिए कि मुझ पर जो वह्य आती है उसमें तो मैं खाने वालों के लिए कोई हराम चीज़ नहीं पाता जिसे वह खाए सिवाए इसके कि वह मुर्दार हो या बहता ख़ून हो या सुअर का गोश्त हो कि वह गंदगी है या पाप (का जानवर) हो जिस पर अल्लाह का नाम पुकारा गया हो, फिर जो आख़िरी हद तक बेबस हो जाए इस तरह से कि न वह उसकी इच्छा रखता हो और न (हद से) आगे बढ़े तो आपका पालनहार बहुत माफ़ करने वाला है, बड़ा ही दयालु[1] (145) और यहूदियों पर हमने हर नाखुन वाले जानवर को हराम किया और गाय व बकरी की चरबी हराम की सिवाए उसके कि जो उन दोनों की पीठ या आंतों में हो या हड्डी के साथ लगी हुई हो, यह सज़ा हमने उनको उनकी अवज्ञा की वजह से दी और बेशक हम ही सच्चे हैं [2] (146)

(1) जो विवश हो जाए और अपनी जानका खतरा हो उसके लिए मुर्दार आदि इतना वैध है जितना काफ़ी हो, इसमें दो बातें कही गईं हैं एक तो यह कि वह मज़े के लिए न खाए दूसरे यह कि आवश्यकता से अधिक न खाए यानी सिर्फ इतना खाए कि उसकी जान बच जाए (2) यानी जो चीज़ें जायज़ हैं वह शुरु से जायज़ (वैध) चली आ रही हैं सिवाए उन चीज़ों के जो यहूदियों के बुरे कर्मों और लगातार नाफ़रमानियों की वजह से सज़ा के तौर पर उनके लिए हराम (वर्जित) कर दी गईं जैसे ऊँट, शुतुर्मुर्ग़ बत्तख़ आदि हर खुरवाला जानवर जिसकी उंगलियाँ अलग अलग न हों या वह चरबी जो पीठ या अंतों में लगी हुई न हो।

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ
بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٤٧﴾ سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا
لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ۚ
كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ
قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۖ إِنْ تَتَّبِعُونَ
إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿١٤٨﴾ قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۖ
فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٤٩﴾ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمُ
الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَٰذَا ۖ فَإِنْ شَهِدُوا
فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ
يَعْدِلُونَ ﴿١٥٠﴾ قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ ۖ أَلَّا
تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ وَلَا تَقْتُلُوا
أَوْلَادَكُمْ مِّنْ إِمْلَاقٍ ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ۖ وَلَا تَقْرَبُوا
الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۖ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي
حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٥١﴾

منزل٢

फिर अगर वे आपको झुठलाएं तो कह दीजिए कि तुम्हारा पालनहार तो बड़ी वसीअ़ (व्यापक) रहमत (दयालुता) वाला है और अपराधी लोगों से उसका अज़ाब टल नहीं सकता[1] (147) अब मुश्रिक लोग यह कहेंगे कि अगर अल्लाह चाह लेता तो न हम साझीदार ठहराते न हमारे बाप दादा और हम कुछ हराम भी न करते, इसी तरह उनसे पहले वाले भी (बहाने कर कर के) झुठला चुके हैं यहां तक कि हमारे अज़ाब का मज़ा उनको चखना पड़ा, कह दीजिए क्या तुम्हारे पास कोई प्रमाण है कि उसको हमारे सामने निकाल कर ले आओ तुम तो केवल गुमान पर चलते हो और केवल अटकल मारते रहते हो (148) कह दीजिए कि प्रमाण तो अल्लाह का है जो दिलों को छू जाने वाला है तो अगर उसकी चाहत होती तो तुम सबको हिदायत दे देता[2] (149) कह दीजिए अपने उन गवाहों को ले आओ जो गवाही देते हैं कि अल्लाह ने यह हराम किया है तो बस अगर वे गवाही दे भी दें तो आप उनके साथ गवाही न दें और उन लोगों की इच्छाओं पर न चलें जिन्होंने हमारी निशानियाँ झुठलाईं और जो आख़िरत पर विश्वास नहीं रखते और वे अपने पालनहार के बराबर ठहराते हैं[3] (150) कह दीजिए आओ जो तुम्हारे पालनहार ने तुम पर हराम किया वह मैं तुम्हें पढ़ कर सुना दूँ, उसके साथ किसी को शरीक न करना, माता–पिता के साथ सद्व्यवहार करते रहना, उपवास के डर से अपनी संतान को क़त्ल मत कर देना, हम ही तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी और बे हयाईयों के निकट भी मत होना (चाहे वह) खुली हुई हों और (चाहे) छिपी हुई, और जिस जान को अल्लाह ने हराम किया हो, उसको नाहक़ क़त्ल मत करना, यह वह चीज़ है जिसकी उसने तुम को ताकीद कर दी है, शायद कि तुम बुद्धि का प्रयोग करो[4] (151)

(1) अब तक उसकी कृपा से बचते रहे हो यह न समझना कि आगे अज़ाब टल ही गया (2) अल्लाह ने दुनिया में दोनों रास्ते रखे हैं सत्य का और असत्य का और अपने पैग़म्बरों के द्वारा बन्दों को बता दिया कि यह रास्ता सत्य का है और यह रास्ता असत्य का है अब मानना न मानना बन्दों का काम है अल्लाह की ओर से हुज्जत पूरी हो चुकी (3) अल्लाह ने जो हराम ही नहीं किया उस पर हराम होने की गवाही कौन दे सकता है सिवाए अशिष्ट झूठ गढ़ने वाले के, अगर ऐसे लोग झूठी गवाही दे भी दें तो उनकी बात स्वीकार करने के योग्य कब है, आगे उन चीज़ों का बयान है जिन को अल्लाह ने हराम किया और मुश्रिक उनमे लिप्त रहे (4) निर्धनता के भय से संतान को क़त्ल करना उनमें साधारण बात थी, हक़ के साथ यह है कि हत्यारे से किसास (बदला) लिया जाए या विवाहित बलात्कार करे तो उसको पत्थर बरसा कर मार डाला जाए या कोई इस्लाम धर्म से फिर जाए तो उसकी सज़ा भी क़त्ल है।

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتّٰى
يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ لَا نُكَلِّفُ
نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۖ وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۖ
وَبِعَهْدِ اللّٰهِ أَوْفُوا ۚ ذٰلِكُمْ وَصّٰكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٢﴾
وَأَنَّ هٰذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ
فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ ذٰلِكُمْ وَصّٰكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٥٣﴾
ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا
لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَعَلَّهُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٤﴾
وَهٰذَا كِتٰبٌ أَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُونَ ﴿١٥٥﴾ أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَائِفَتَيْنِ
مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِينَ ﴿١٥٦﴾ أَوْ تَقُولُوا
لَوْ أَنَّا أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّا أَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ
جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ
مِمَّنْ كَذَّبَ بِآيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۗ سَنَجْزِي الَّذِينَ
يَصْدِفُونَ عَنْ آيٰتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ﴿١٥٧﴾

منزل٢

और अनाथ के माल के करीब भी मत होना सिवाए उस तरीके के जो बेहतर हो यहाँ तक कि वे परिपक्वता की आयु को पहुँच जाएं[1] और नापतौल को इन्साफ़ के साथ पूरा करना, हम किसी व्यक्ति को उसकी क्षमता से अधिक पाबन्द नहीं करते और जब बात कहना तो इन्साफ़ ही से कहना चाहे अपना नातेदार ही क्यों न हो और अल्लाह के अहद (प्रतिज्ञा) को पूरा करते रहना, उसने तुमसे ताकीद की है कि शायद तुम नसीहत प्राप्त करो (152) और यही मेरा सीधा रास्ता है तो तुम इसी पर चलो और रास्तों पर मत पड़ जाना कि वे तुम्हें उसकी राह से अलग कर देंगे, यह वह चीज़ है जिसकी तुम को ताकीद की गई है शायद तुम बच निकलो (153) फिर हमने मूसा को किताब दी, भलाई करने वालों के लिए नेमत को पूरा करने के रूप में और हर वस्तु के विवरण के लिए और हिदायत और रहमत के तौर पर, शायद वे अपने पालनहार से भेंट का विश्वास पैदा करें[2] (154) और यह जो किताब है हमने उतारी है (पूर्ण रूप से) बरकत है तो तुम उसी पर चलो और डरते रहो ताकि तुम पर उसकी दया हो (155) कि तुम कहीं यह कहने लगो कि हम से पहले तो दोनों गिरोहों को किताब दी गई और हम तो उनके पढ़ने–पढ़ाने से बेख़बर ही रहे (156) या कभी यह कहने लगो कि अगर हम पर भी किताब उतरती तो ज़रूर हम उनसे बेहतर राह चलते तो बस तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण और हिदायत व रहमत आ चुकी फिर उससे बढ़ कर अन्याय करने वाला कौन होगा जो अल्लाह की निशानियाँ झुठलाए और उनसे कतराए, जो लोग भी हमारी निशानियों से कतराते हैं हम जल्द ही उनको बहुत बुरे अज़ाब की सज़ा देंगे इसलिए कि वे बराबर किनारा करते रहे[3] (157)

(1) अनाथ के माल से अनावश्यक छेड़ छाड़ करना हराम है फिर जब वे जवान हो जाएं और अपने कर्तव्यों का निर्वाहन कर सकें तो उसका माल उसके हवाले कर दिया जाए (2) तौरेत में भी सारे आदेश मौजूद थे उन्हीं की ओर इशादा है अपनी इच्छानुसार यहूदी उनमें परिवर्तन करते रहते थे (3) अंतिम किताब भी उतर चुकी, अब अरब के लोगों को यह कहने का अवसर भी नहीं रहा कि हम पर किताब नहीं उतरी तो हम ज़्यादा बेहतर अमल करते बस सबसे व्यापक और मोकम्मल किताब तुम्हें मिल चुकी खुद भी उस पर अमल करो और दूसरों को भी इस की ओर बुलाओ।

هل ينظرون الا ان تاتيهم الملئكة او ياتي ربك او ياتي
بعض ايت ربك يوم ياتي بعض ايت ربك لا ينفع نفسا
ايمانها لم تكن امنت من قبل او كسبت في ايمانها خيرا قل
انتظروا انا منتظرون ﴿١٥٨﴾ ان الذين فرقوا دينهم وكانوا شيعا
لست منهم في شيء انما امرهم الى الله ثم ينبئهم بما كانوا
يفعلون ﴿١٥٩﴾ من جاء بالحسنة فله عشر امثالها ومن جاء
بالسيئة فلا يجزى الا مثلها وهم لا يظلمون ﴿١٦٠﴾ قل انني
هدىني ربي الى صراط مستقيم دينا قيما ملة ابرهيم
حنيفا وما كان من المشركين ﴿١٦١﴾ قل ان صلاتي ونسكي و
محياي ومماتي لله رب العلمين ﴿١٦٢﴾ لا شريك له وبذلك امرت
وانا اول المسلمين ﴿١٦٣﴾ قل اغير الله ابغي ربا وهو رب كل شيء
ولا تكسب كل نفس الا عليها ولا تزر وازرة وزر اخرى ثم الى
ربكم مرجعكم فينبئكم بما كنتم فيه تختلفون ﴿١٦٤﴾ وهو الذي
جعلكم خلئف الارض ورفع بعضكم فوق بعض درجت ليبلوكم
في ما اتىكم ان ربك سريع العقاب وانه لغفور رحيم ﴿١٦٥﴾

منزل٢

वे कौन सी राह देख रहे हैं सिवाय इसके कि फरिश्ते उनके पास आ जाएं या आपका पालनहार आ जाए या आपके पालनहार की कुछ निशानियाँ पहुँच जाएं, जिस दिन भी आपके पालनहार की निशानियाँ पहुँच गईं तो किसी ऐसे व्यक्ति को उसका ईमान लाभ नहीं पहुँच सकता जो इससे पहले ईमान न लाया होगा या उसने ईमान में रहकर भलाई न कमाई हो, कह दीजिए कि तुम भी प्रतीक्षा करो हम भी इंतेज़ार कर रहे हैं[1] (158) जिन्होंने भी अपने दीन (धर्म) को बाँट दिया और खुद भी गिरोहों में बंट गए उनसे आप को क्या लेना देना, उनका मामला तो अल्लाह के हवाले है फिर वही उन्हें जता देगा जो कुछ वे किया करते थे[2] (159) अच्छाई ले कर आएगा उसको दस गुना मिलेगा और जो बुराई के साथ आएगा उसको उसके बराबर ही सज़ा मिलेगी और उनके साथ अन्याय न होगा (160) कह दीजिए मेरे पालनहार ने मुझे सीधी राह पर चलाया है (यानी) टेढ़ापन से पाक दीन (धर्म) पर इब्राहीम के तरीक़े पर जो एकाग्र थे और शिर्क करने वालों में न थे[3] (161) कह दीजिए मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी, मेरा जीना, मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है जो जहानों का पालनहार है (162) उसका कोई साझीदार नहीं और इसीका मुझे आदेश भी है और मैं सबसे पहले सिर झुकाने वाला हूँ[4] (163) कह दीजिए कि क्या मैं अल्लाह के अलावा और कोई पालनहार खोजूँ जब कि वही हर चीज़ का पालनहार है और हर व्यक्ति जो भी करेगा वह अपने ही सिर लेगा और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा फिर तुम सब अपने पालनहार की ओर लौटाए जाओगे फिर वह तुम्हें बता देगा जो आपस में मतभेद करते रहे हो[5] (164) वही है जिसने तुम्हें धरती में उत्तराधिकारी बनाया और एक का दर्जा दूसरे पर बुलन्द किया ताकि उसने जो तुमको दिया उसमें वह तुम्हारी परीक्षा ले, बेशक आपका पालनहार बहुत जल्द सज़ा देने वाला है और बेशक वह तो बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है[6] (165)

(1) पैग़म्बर आ चुके, अंतिम पैग़म्बर आ गए, अंतिम किताब उतर गई, अब क्या वे अल्लाह का और फरिश्तों का या किसी बड़ी निशानी का इन्तेज़ार कर रहे हैं बस वह तो कयामत में होगा और क़यामत या क़यामत की निशानियाँ आने के बाद किसी का ईमान स्वीकार्य नहीं (2) दीन (धर्म) सब का एक था लोगों ने अपनी इच्छा से उस को टुकड़ों में बाँट दिया और एक अल्लाह के अलावा दसियों माबूद (पूज्य) बना लिए (3) वही सही धर्म सब का था (4) यह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बुलन्द दर्जे की ओर इशारा है (5) मुश्रिक कहते थे कि तुम भी हमारे तरीक़े पर आ जाओ जो तुम्हारा पाप वह हमारे सिर, उसी का जवाब दिया जा रहा है (6) परीक्षा यह है कि धनी शुक्र करता है या नहीं और निर्धन सब्र करता है या नही।

सूरह अल आराफ़

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अलिफ़–लाम–मीम्–सॉद (1) किताब आप पर उतारी गई है ताकि आप उसके द्वारा लोगों को खबरदार करें तो आप इससे अपने मन में कोई तंगी महसूस न करें[1] और यह ईमान वालों के लिए नसीहत (उपदेश) की चीज़ है (2) तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर जो कुछ उतरा है उसी पर चलो और उसके अलावा और दोस्तों की बात मत मानो, कम ही तुम ध्यान देते हो (3) और कितनी ही बस्तियाँ हमने तबाह कर डालीं तो हमारा अज़ाब रातों रात या दोपहर को सोते में वहाँ आ पहुँचा (4) फिर जब उन पर हमारा अज़ाब आ गया तो सिवाए इस इक़रार के उनसे कुछ कहते न बना कि हम ही अत्याचारी थे (5) तो हम अवश्य उनसे भी पूछेंगे जिन के पास पैग़म्बर भेजे गए और हम पैग़म्बरों से भी पूछेंगे[2] (6) फिर हम अपने ज्ञान से सब कुछ उनको सुना देंगे और हम गायब तो थे नहीं (7) और वज़न उस दिन ठीक ठीक होगा फिर जिनके तराजू वज़नी रहे तो वही लोग सफल हुए (8) और जिनके तराजू हलके रहे तो वही लोग हैं जिन्होंने अपना नुकसान किया इसलिए कि वे हमारी निशानियों के साथ न्याय नहीं करते[3] थे (9) और हम ही ने तुम्हें धरती में नियंत्रण दिया और उसमें तुम्हारे लिए जीवन–सामग्री बनाई, कम ही तुम शुक्र करते हो (10) और हम ही ने तुम को पैदा किया फिर तुम्हारी सूरतें बनाईं[4] फिर फरिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो सब ही ने सजदा किया सिवाय इबलीस के वह सजदा करने वालों में (शामिल) न हुआ (11)

سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَتَانِ وَّسِتُّ اٰيَاتٍ وَّاَرْبَعٌ وَّعِشْرُوْنَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

الٓمّٓصٓ ۚ﴿١﴾ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ
مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾ اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ
اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۗ قَلِيْلًا مَّا
تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾ وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا
اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ﴿٤﴾ فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ
قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾ فَلَنَسْــَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ
وَلَنَسْــَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ۙ﴿٦﴾ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا
غَآئِبِيْنَ ﴿٧﴾ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ِۨالْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ
مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ۗ قَلِيْلًا مَّا
تَشْكُرُوْنَ ۧ﴿١٠﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ
اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿١١﴾

ركوع ١

منزل ٢

(1) दुश्मनों के तानों, छेड़छाड़ और बेहूदा सवालों से आप घुटन महसूस न करें आपका काम तो डराते रहना है (2) जिन उम्मतों (समुदायों) की ओर पैग़म्बर भेजे गए उनसे पूछा जाएगा "माज़ा अजब तु मुलमुर्सलीन" तुमने हमारे पैग़म्बरों की दावत (बुलावे) को कहाँ तक स्वीकार किया था और खुद पैग़म्बरों से पूछा जाएगा "माज़ा अजिबतुम" तुम्हें उम्मत (समुदाय) की ओर से क्या जवाब मिला?(3) खुद इंसान ने जो अल्लाह की मखलूक़ है ऐसी संवेदनशील तराजूवें बना दी हैं कि एक एक बिन्दू में तौला जा सकता है गर्मी और ठंढक को नापा जा सकता है तो अल्लाह तआला की तराजू का हाल क्या होगा जिसमें कर्मों को उनके गुणों के साथ तौला जाएगा (4) मानव उत्तपत्ति का उल्लेख करके उसकी प्रारंभिक उत्तपत्ति का उल्लेख किया जा रहा है जब अल्लाह ने आदम के मिट्टी के पुतले को बनाया उसको रूप दिया, रूह फूंकी फिर फरिश्तों को सजदे का आदेश हुआ बेशक यह मानव जाति का बहुत ही बड़ा सम्मान था जो अल्लाह ने फरिश्तों से कराया।

قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي
مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ﴿١٢﴾ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ
أَن تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّاغِرِينَ ﴿١٣﴾ قَالَ أَنظِرْنِي
إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٤﴾ قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿١٥﴾ قَالَ فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي
لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ لَآتِيَنَّهُم مِّن بَيْنِ أَيْدِيهِمْ
وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَن شَمَائِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ
شَاكِرِينَ ﴿١٧﴾ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُومًا مَّدْحُورًا لَّمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ
لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٨﴾ وَيَا آدَمُ اسْكُنْ أَنتَ وَزَوْجُكَ
الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا
مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ
عَنْهُمَا مِن سَوْآتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَٰذِهِ الشَّجَرَةِ
إِلَّا أَن تَكُونَا مَلَكَيْنِ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ ﴿٢٠﴾ وَقَاسَمَهُمَا إِنِّي
لَكُمَا لَمِنَ النَّاصِحِينَ ﴿٢١﴾ فَدَلَّاهُمَا بِغُرُورٍ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا
سَوْآتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِن وَرَقِ الْجَنَّةِ وَنَادَاهُمَا رَبُّهُمَا أَلَمْ
أَنْهَكُمَا عَن تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَأَقُل لَّكُمَا إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٢٢﴾

منزل٢

कहा कि जब मैंने तुझे आदेश दिया फिर तुझे सजदा करने में क्या रूकावट हुई, बोला मैं उससे अच्छा हूँ मुझे तूने आग से बनाया और उसे मिट्टी से बनाया[1] (12) कहा यहाँ से उतर जा, यहाँ[2] तू घमण्ड नहीं कर सकता, बस निकल जा, बेशक तू अपमानित है (13) बोला उस दिन तक के लिए मुझे मुहलत दे दे जिस दिन लोग उठाए जाएंगे (14) कहा तुझे मोहलत है (15) बोला जैसा तूने मुझे गुमराह किया है मैं उनके लिए भी तेरे सीधे रास्ते पर बैठूँगा (16) फिर मैं उनके सामने से और उनके पीछे से और उनके दाएं से और उनके बाएं से उनके पास आकर रहूँगा और तू उनमें अधिकतर को शुक्र करने वाला न पाएगा[3] (17) कहा यहाँ से ज़लील व ख़्वार (अपमानित) हो कर निकल जा, जो कोई तेरी बात मानेगा मैं तुम सबसे दोज़ख को भर कर रहूँगा (18) और ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों जन्नत में रहो जहाँ से चाहो खाओ (पियो) और उस पेड़ के निकट भी मत जाना वरना अन्याय करने वाले घोषित हो जाओगे (19) फिर शैतान ने दोनों को बहकाया ताकि उनकी लज्जा की जगह जो उनसे छिपाई गई थी उन दोनो के लिए खोल दे और कहा तुम्हारे पालनहार ने तो तुम्हें इस पेड़ से इसलिए रोका है कि कहीं तुम फरिश्ते न हो जाओ या हमेशा रहने वाले न हो जाओ (20) और उन दोनों से उसने कसम खाई कि मैं तो तुम दोनों का (सच्चा) शुभ चिंतक हूँ (21) बस उसने धोखा दे कर दोनों को नीचे उतार[4] ही लिया फिर जब उन दोनों ने उस पेड़ (में) से खाया तो उनके शरीर का छिपा भाग उन पर खुल गया और वे दोनों जन्नत के पत्ते स्वयं पर जोड़ने लगे और उनके पालनहार ने उनको आवाज़ दी कि क्या मैंने तुम को इस पेड़ से रोका न था और यह बताया नहीं था कि शैतान तुम दोनों का खुला दुश्मन है (22)

(1) उसने अपने ख़्याल से जल्द बाज़ी में यह बात कह दी जो उसके विनाश का कारण बनी, आग का गुण ही गर्मी, जल्दी और बड़प्पन और बिगाड़ है इबलीस का मूल आग था सजदे का आदेश सुन कर भड़क पड़ा घमण्ड के रास्ते से ईर्ष्या की आग में गिर कर दोज़ख़ की आग में जा पड़ा, इसके विपरीत आदम अ़लैहिस्सलाम से भी गलती हुई तो मिट्टी के तत्व ने खुदा के सामने झुकने व विनम्रता की राह दिखाई अतः उनकी अडिगता व अल्लाह से संपर्क ने "फिर उनके पालनहार ने उनको चुन लिया फिर उनकी ओर ध्यान दिया और हिदायत दी" का परिणाम पैदा किया (2) आसमानों में वही रह सकता है जो अज्ञाकारी हो (3) यानी जैसे इस मिट्टी के पुतले की वजह से मैं दरबार से निकाला गया मैं भी उसकी संतान को हर ओर से बहकाऊँगा और ज़्यादातर को खुदा का बाग़ी बनाऊंगा और इबलीस का यह अनुमान सही था खुद अल्लाह तआला कहता है "और इबलीस ने उन पर अपना अनुमान पूरा किया तो वे उसके पीछे हो लिए सिवाय ईमान वालों की एक गिरोह के (4) यानी उनके बुलन्द मकाम से फिसला कर उनको नीचे उतार लिया।

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ
الْخَاسِرِينَ ﴿٢٣﴾ قَالَ اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۖ وَلَكُمْ فِي
الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٢٤﴾ قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا
تَمُوتُونَ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ ﴿٢٥﴾ يَا بَنِي آدَمَ قَدْ أَنزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا
يُوَارِي سَوْآتِكُمْ وَرِيشًا ۖ وَلِبَاسُ التَّقْوَىٰ ذَٰلِكَ خَيْرٌ ۚ ذَٰلِكَ مِنْ
آيَاتِ اللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٢٦﴾ يَا بَنِي آدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطَانُ
كَمَا أَخْرَجَ أَبَوَيْكُم مِّنَ الْجَنَّةِ يَنزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْآتِهِمَا ۗ
إِنَّهُ يَرَاكُمْ هُوَ وَقَبِيلُهُ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۗ إِنَّا جَعَلْنَا الشَّيَاطِينَ
أَوْلِيَاءَ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٧﴾ وَإِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً قَالُوا وَجَدْنَا
عَلَيْهَا آبَاءَنَا وَاللَّهُ أَمَرَنَا بِهَا ۗ قُلْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ ۖ
أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾ قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ ۖ
وَأَقِيمُوا وُجُوهَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ ۚ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ﴿٢٩﴾ فَرِيقًا هَدَىٰ وَ
فَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ ۗ إِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيَاطِينَ
أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٣٠﴾

منزل٢

वे दोनों बोल उठे ऐ हमारे पालनहार! हमने अपने ऊपर (बड़ा) अत्याचार किया और अगर तूने हमें माफ़ न कर दिया और हम पर कृपा न की तो निश्चित ही हम बड़े घाटे में आ जाएंगे[1] (23) कहा उतर जाओ[2] तुम एक दूसरे के दुश्मन होगे और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठिकाना है और एक अवधि तक के लिए (तुम्हें उससे) फ़ायदा उठाना है (24) कहा उसी में तुम जियोगे और उसी में मरोगे और उसी से उठाए जाओगे (25) ऐ आदम की संतान! हमने तुम्हारे लिए लिबास उतारा कि वह तुम्हारी शर्म की जगहों को छिपाए और शोभा (का साधन) भी हो और तकवा का लिबास उससे बढ़ कर है, यह अल्लाह की निशानियाँ हैं शायद वे ध्यान दें[3] (26) ऐ आदम के बेटो! तुम्हें शैतान उसी तरह धोखे में न डाल दे जैसे उसने तुम्हारे माँ–बाप को जन्नत से निकलवाया, उनके कपड़े उतरवाए ताकि उनकी शर्म की जगहें उनको दिखा दे, वह और उसकी फौज तुम्हें वहाँ से देखती है जहाँ से तुम उनको नहीं देख सकते, हमने शैतानों को उन लोगों का दोस्त बनाया है जो ईमान नहीं रखते (27) और जब वे अशलील काम करते हैं तो कहते हैं कि हमने इसी पर अपने बाप दादा को पाया है, और अल्लाह ने हमको यही आदेश दिया है, कह दीजिए कि अल्लाह अशलीलता का आदेश नहीं देता, क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात कहते हो जो जानते नहीं [4] (28) कह दीजिए कि मेरे पालनहार ने न्याय का आदेश दिया है [5] और यह कि हर नमाज़ के समय अपने रूख़ को ठीक रखो और केवल उसी के आज्ञाकरी हो कर उसको पुकारो, जैसे उसने तुम्हें पहले बनाया फिर दोबारा बनाए जाओगे (29) एक गिरोह को अल्लाह ने रास्ता दिखाया और एक गिरोह पर गुमराही थुप गई उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर शैतानों को दोस्त बनाया और फिर यह समझते हैं कि वे हिदायत पर हैं (30)

---

(1) यह दुआ अल्लाह ही ने आदम अ़लैहिस्सलाम को सिखाई जैसा कि सूरह बकर: में गुज़र चुका है " (आदम ने अपने पालनहार से कुछ कलिमे प्राप्त किए) (2) बज़ाहिर इसमें आदम व हव्वा के साथ इबलीस को भी संबोधित किया गया है, आगे इंसान व शैतान की दुश्मनी का उल्लेख है (3) बाहरी लिबास के साथ जिस से शरीर छिपाया जाता है एक आंतरिक लिबास भी है जिससे इंसान की आंतरिक कमजोरियाँ छिपी रहती हैं (4) अरबों में एक बेहूदा रिवाज यह था कि नंगे हो कर काबा का तवाफ़ करते थे और समझते थे कि जिन कपड़ों में गुनाह होते हैं उनमें तवाफ़ नहीं किया जा सकता, जब रोका जाता तो उसको अल्लाह का आदेश बताते और पूर्वजों से उसका सम्बंध बताते उसी के खण्डन के लिए यह आयतें उतरीं (5) कबीला कुरैश के लोग "हमस" कहलाते थे और समझा जाता था कि केवल वही लेबास के साथ तवाफ़ कर सकते हैं दूसरा अगर लिबास पहनना चाहता है तो उनका लिबास पहने, अनावश्यक यह भेद था शायद इसीलिए विशेष रूप से "न्याय" का यहाँ उल्लेख किया जा रहा है।

يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا
تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِىْٓ
اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ هِىَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِى
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ
يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣٢﴾ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّىَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَ
الْاِثْمَ وَالْبَغْىَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا
وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ
اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٤﴾ يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ اِمَّا
يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِىْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ
فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٦﴾ فَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ
يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا
يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ
قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿٣٧﴾

منزل٢

ऐ आदम की संतान! हर नमाज़ के समय अपनी शोभा (की सामग्री) ले लिया करो और खाओ और पियो और अति मत करो, अल्लाह अति करने वालों को पसंद नहीं करता[1] (31) पूछिए कि किसने अल्लाह के (दिए हुए) ज़ीनत (शोभा के साधन) हराम किये जो उसने अपने बन्दों के लिए पैदा किये हैं और साफ सुथरी खाने की चीजें, कह दीजिए कि वह संसारिक जीवन में ईमान वालों के लिए हैं, कयामत के दिन तो केवल उन्हीं के लिए हैं, हम उन लोगों के लिए इसी प्रकार निशानियाँ खोल खोल बयान करते हैं जो ज्ञान वाले हैं[2] (32) कह दीजिए कि मेरे पालनहार ने हर प्रकार की अश्लीलता को हराम किया वह उनमें खुली हुई हो या छिपी हुई हो और पाप को और नाहक ज़्यादती को और इसको कि तुम उसके साथ साझी ठहराओ जिसकी अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी और यह कि तुम अल्लाह पर वह बातें लगाओ जो तुम जानते नहीं (33) और हर उम्मत (समुदाय) के लिए एक निर्धारित समय है बस जब उनका वह समय आ पहुँचता है तो वे एक क्षण के लिए भी न आगे हो सकते हैं और न पीछे (34) ऐ आदम की संतान! [3] अगर तुम्हारे पास तुम्ही में से पैग़म्बर जाएं जो मेरी आयतें तुम्हें सुनाते हों तो जिसने तकवा अपनाया और सुधार कर ली तो ऐसों पर न कोई डर है और न ही वे दुखी होंगे (35) और जिन्होंने हमारी आयतें झुठलाईं और वे उनसे अकड़े तो वे दोज़ख वाले हैं उसी में हमेशा रहेंगे (36) तो उससे बढ़ कर अन्याय करने वाला कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या उसकी निशानियों को झुठलाए ऐसों को लिखे हुए (भाग्य) से उनका हिस्सा मिल कर रहेगा[4] यहाँ तक कि जब हमारे फरिश्ते उनको मौत देने के लिए पहुँचेंगे तो वे कहेंगे कि तुम अल्लाह को छोड़ कर जिनको पुकारा करते थे वह कहाँ गए? वे कहेंगे वे सब हम से हवा हो गए और वे खुद अपने ऊपर गवाह होंगे कि इन्कार करने वाले वे खुद ही थे[5] (37)

(1) जीनत (शोभा) का सामान यानी लिबास (2) विशेष कबीलों ने अपनी अलग पहचान क लिए कुछ चीज़ें हराम कर रखी थीं साफ़–साफ़ बयान किया जा रहा है कि पवित्र चीज़ें सब ईमान वालों के लिए वैध (जायज़) हैं और दुनिया की ज़िन्दगी में सब ही उनसे आनंदित हो रहे हैं हाँ आखिरत में वह सिर्फ ईमान वाले बन्दों के लिए हैं दूसरे उनसे वंचित (महरूम) कर दिए जाएंगे (3) समस्त मानव जाति को आलमे अरवाह (आत्मालोक) में संबोधित किया गया था उसी को याद दिलाया जा रहा है (4) यानी भाग्य में अल्लाह ने जिस के लिए जो लिख दिया है वह रोज़ी मिल कर रहेगी दुनिया में अल्लाह ने काफ़िर और मोमिन में कोई भेद नहीं किया इसलिए अगर दुनिया में किसी को धन की अधिकता है तो यह उसके स्वीकृत होने का प्रमाण नही है (5) इन आयतों में आदेश है कि दुनिया ही दारुल अमल (कार्य स्थल) है जो यहाँ सही रास्ते पर चलेगा वही सफल होगा आख़िरत में सारे तथ्य खुल कर सामने आ जाएंगे और गुमराह लोग अपनी गुमराही को खुद स्वीकार कर लेंगे लेकिन यह स्वीकार करना उनके काम न आ सकेगा।

قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ
فِي النَّارِ ۖ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَّعَنَتْ أُخْتَهَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا
جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَاهُمْ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَآتِهِمْ
عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۖ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾
وَقَالَتْ أُولَاهُمْ لِأُخْرَاهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ
فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا
يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ
نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ﴿٤٠﴾ لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ
وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ﴿٤٢﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ تَجْرِي مِن
تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ ۖ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا
لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ ۖ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۖ
وَنُودُوا أَن تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

ع النصف

منزل ٢

वह कहेगा कि तुमसे पहले जिन्नातों और इंसानों में से जो गिरोह दोज़ख में जा चुके हैं तुम भी उन्हीं में दाख़िल हो जाओ, जब भी वहाँ कोई गिरोह दाखिल होगा तो वह दूसरे गिरोह पर लानत (धिक्कार) करेगा यहाँ तक कि जब सबके सब उसमें एक–एक करके गिर जाएंगे तो अगले पिछलों के लिए बद्दुआ (श्राप) करेंगे कि ऐ हमारे पालनहार! उन्होंने हमे गुमराह किया तू उनको दोज़ख का दोहरा अज़ाब दे, वह कहेगा हर एक के लिए दोहरा अजाब है लेकिन तुम जानते नहीं[1] (38) और पिछले अगलों से कहेंगे कि तुम को हम पर कोई बरतरी (श्रेष्ठता) तो है नहीं बस जो तुम करते रहे थे उसका अज़ाब (दण्ड) चखो[2] (39) बेशक जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे अकड़े उनके लिए न आसमान के दरवाज़े खोले जाएंगे और न वे जन्नत में प्रवेश कर सकेगे यहाँ तक कि ऊँट सूई के नाके में प्रवेश कर जाए और हम अपराधियों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं[3] (40) उनके लिए दोज़ख ही का बिछौना होगा और (वही) ऊपर से उनको ढ़के होगी और ज़ालिमों को हम ऐसे ही सज़ा दिया करते हैं[4] (41) और जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए और हम किसी को ताक़त से अधिक पाबंद नहीं करते[5] वे हैं जन्नत के लोग उसी में हमेशा रहेंगे (42) और हम उनके सीने का सारा गुबार छाँट देंगे[6] उनके नीचे नहरें जारी होंगी, और वे कहेंगे कि अस्ल प्रशंसाएं तो अल्लाह के लिए है जिसने हमें यहाँ तक पहुँचा दिया और अगर वह हमें न पहुँचाता तो हम हरगिज़ न पहुँच पाते, बेशक हमारे पालनहार के रसूल सच्चाई के साथ आ चुके और उनसे यह पुकार कर कह दिया जाएगा कि यही वह जन्नत है जिसका तुमको तुम्हारे कामों के बदले वारिस बना दिया गया[7] (43)

(1) पिछलों को इसलिए कि वे अगलों की गुमराही का कारण बने और अगलों को इसलिए कि उन्होंने पिछलों से शिक्षा न ली (2) यानी तुम ने हमारे लिए दोहरे अज़ाब (दण्ड) की प्रार्थना कर भी ली तो तुम्हें क्या मिला तुम्हें भी वैसे ही अज़ाब (दण्ड) का मज़ा चखना है (3) असम्भव बात के लिए यह मुहावरा है जब किसी चीज़ को बहुत जोर दे कर नकरना हो तो इस का प्रयोग करते हैं (4) यानी हर ओर से वे आग के घेरे में होंगे (5) यह व्यवहारिक वाक्य है जिससे चेताया जा रहा है कि ईमान व अच्छे काम जिस पर इतने महान बदले का वादा है ऐसे काम नहीं जो इंसान की ताक़त से बाहर हों (6) जन्नत की नेमतों (सुख सामग्रीयों) के बारे में उनसे कोई ईर्ष्या व जलन न होगा और एक दूसरे को देख कर खुश होंगे और दुनिया में जो संकोच हो रहा था वह भी न रहेगा (7) यह ऐलान करने वाला अल्लाह की ओर से कोई फरिश्ता होगा कि सारी मेहनत ठिकाने लगी और तुमने कोशिश करके खुदा की कृपा से अपने पिता आदम की पैतृक संपत्ति सदा के लिए प्राप्त कर ली।

मंज़िल २

और जन्नत वाले दोज़ख वालों को पुकार कर कहेंगे कि हमने तो, जो वादा हमारे पालनहार ने हमसे किया था वह सच्चा पाया तो क्या तुमने भी जो वादा तुमसे तुम्हारे पालनहार ने किया था वह ठीक पाया, वे कहेंगे हाँ, बस एक एलान करने वाला उनके बीच यह एलान कर देगा कि अल्लाह की लानत (फिटकार) है अन्याय करने वालों पर (44) जो अल्लाह के रास्ते से रोकते थे और उसमें टेढ़ ढूँढते थे और वे आख़िरत के इनकार करने वाले थे[1] (45) और उन दोनों के बीच एक आड़ होगी और अअ्राफ़[2] के ऊपर कुछ लोग होंगे जो सबको उनकी निशानियों से पहचानते होंगे और वे जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे कि तुम पर सलामती हो, वे अभी जन्नत में दाखिल नहीं हुए और उसकी कामना करते हैं (46) और जब उनकी निगाहें दोज़ख वालों की ओर फिरेंगी तो कहेंगे ऐ हमारे पालनहार! हमें अत्याचारियों में शामिल न कर (47) और अअ्राफ़ वाले उन लोगों को पुकार कर कहेंगे जिनको उनकी निशानियों से पहचानते होंगे कि न तुम्हारी जमा पूंजी तुम्हारे कुछ काम आयी और न तुम्हारी अकड़ जो तुम दिखाया करते थे (48) ये वही लोग हैं ना जिनके बारे में तुम कसमें खा खा कर कहा करते थे कि उन पर तो अल्लाह की रहमत (कृपा) हो ही नहीं सकती (उनसे कहा जा रहा है) कि जन्नत में दाखिल हो जाओ (जहाँ) तुम पर न कोई भय होगा और न तुम दुखी होगे[3] (49) और दोज़ख वाले जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे हमें भी कुछ पानी में से या जो रोज़ी आपको मिली है उसमें से कुछ हमें भी प्रदान हो, काफिरों के लिए तो अल्लाह ने इन दोनों चीज़ों पर रोक लगा दी है (50) जिन्होंने अपने धर्म (दीन) को खेल तमाशा बना लिया था और दुनिया के जीवन ने उनको धोखे में डाल रखा था, आज हम भी उनको भुला देते हैं जैसे वे इस दिन की मुलाक़ात को भुला बैठे थे और जैसे वे हमारी निशानियों का इनकार करते रहे थे[4] (51)

(1) यह वह बातचीत है जो जन्नत वालों और दोज़ख वालों में होगी जिससे जन्नत वालों की खुशी और इतमीनान में बढ़ोतरी होगी और दोज़ख वालों की निराशा और अभिलाषा में (2) दोज़ख और जन्नत के बीच में दीवार होगी उसके बिल्कुल ऊपरी भाग को ऐसा लगता है अअ्राफ़ कहा गया है उस पर वे लोग होंगे जिनकी अच्छाईयाँ और बुराईयाँ बिल्कुल बराबर हैं न वे जन्नत के हकदार हुए और न दोज़ख के, अंत में वे जन्नत में दाखिल कर दिए जाएंगे (3) जिन कमज़ोरों के बारे में घमण्डियों का कहना था कि "क्या यही वे लोग हैं जिनको अल्लाह ने उपकार के लिए हममें चुना है, उन्हीं कमज़ोरों की ओर इशारा करके अअ्राफ़ वाले दोज़ख वालों से कहेंगे और यह सुन सुन कर दोज़ख वालों के दिल जल जल कर और कबाब होंगे (4) दोज़ख वाले जल भुन रहे होंगे तो जन्नत वालों से भीक मांगेगे तो कहा जाएगा कि इन नेमतों (सुख सामग्रीयों) पर प्रतिबंध है जो इनकार करते रहे जैसे उन्होंने दुनिया में न माना आज उनकी कोई बात न मानी जाएगी।

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً
لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۵۲﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ
تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ
رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ
غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا
كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۵۳﴾ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۫ يُغْشِي الَّيْلَ
النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ
بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۵۴﴾ اُدْعُوْا
رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۵۵﴾ وَلَا تُفْسِدُوْا
فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ
اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ
بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَآ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا
سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ
كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۷﴾

ع

منزل ۲

और हम उनको वह किताब दे चुके जिसको हम इल्म (ज्ञान) के साथ खोल चुके हैं[1] जो ईमान वाले लोगों के लिए हिदायत (संमार्ग) व रहमत (कृपा) है (52) क्या वे लोग उसके परिणाम की प्रतीक्षा में हैं, जिस दिन उसका परिणाम सामने आ जाएगा तो जो लोग उसको पहले भुला चुके वे कहेंगे कि हमारे पालनहार के पैग़म्बर सच्चाई के साथ आ चुके, तो अब है कोई सिफारशी जो हमारी सिफारिश कर दे या हम दो बारा भेज दिए जाएं तो जो काम हम किया करते थे उसको छोड़ कर दूसरे काम करें, खुद उन्होंने अपना ही नुकसान किया और वे जो भी गढ़ा करते थे वह सब हवा हो गया[2] (53) तुम्हारा पालनहार तो वही अल्लाह है जिसने छः दिनों में आसमान और ज़मीन पैदा किए फिर वह अर्श पर विराजमान हुआ, वह रात को दिन से ढँप देता है उसके पीछे वह (दिन) लगा ही रहता है और सूरज और चाँद और तारे (बनाए) सब उसके आदेश से काम पर लगे हुए हैं[3], सुन लो उसी का काम है पैदा करना और उसी का काम है हुक्म चलाना, बड़ी बरकत वाला है अल्लाह जो संसारों का पालनहार है[4] (54) अपने पालनहार को गिड़गिड़ाते हुए और चुपके चुपके पुकारो वह हद से गुज़रने वालों को पसंद ही नहीं करता (55) और ज़मीन में उसकी सुधार के बाद बिगाड़ मत करो और उसी को डर और आशा के साथ पुकारते रहो, बेशक अल्लाह की रहमत (कृपा) बेहतर काम करने वालों से करीब ही है (56) वही है जो शुभ समाचार के रूप में अपनी रहमत (कृपा) से हवाएं चलाता है, यहाँ तक कि जब वह हवाएं भारी भारी बादल उठा लाती हैं तो हम उनको किसी मुर्दा बस्ती की ओर फेर देते हैं फिर उससे पानी उतार देते हैं फिर उससे हर प्रकार के फल निकालते हैं, इसी तरह हम मुर्दों को भी निकाल खड़ा करेंगे शायद तुम इस पर ध्यान दो (57)

---

(1) यानी हमने अपने ज्ञान के आधार पर उसमें तमाम विवरण बयान कर दिये हैं (2) यह दुनिया परीक्षा स्थल है जो करना है वह बता दिया गया उसका परिणाम कर्म के अनुसार सामने आएगा, परिणाम सामने आने के बाद फिर उसी के अनुसार मामला होगा तो अगर कोई परिणाम के इंतेजार में रहा और हाथ पर हाथ धरे बैठा रहा या गलत काम करता रहा तो उसने अपना नुकसान किया अब उसको कुछ मिलना नहीं न उसका कोई सिफारिशी होगा (3) सारी चीज़ें अल्लाह ने एक क्रम के साथ युक्ति व नीति के साथ बनाईं वह चाहता तो एक शब्द "कुन" (होजा) से सबको वजूद में ले आता लेकिन जिस तरह दुनिया में लोग एक के बाद एक पैदा हो रहे हैं और व्यवस्था चल रही है उसी तरह यह आसमान व ज़मीन भी क्रमानुसार पैदा किए गए फिर वह अर्श पर विराजमान हुआ, कैसे हुआ यह कोई नहीं जान सकता, उसके जैसा कोई नहीं हो सकता वह सुनता है, देखता है, लेकिन हमारी तरह नहीं, इसी तरह वह विराजमान हुआ लेकिन किस तरह यह वही जानता है (4) दुनिया पैदा करके उसका अधिकार समाप्त नहीं हुआ सब कुछ उसी के कब्ज़े में है किसी को उसमें हस्तक्षेप का अधिकार नहीं।

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۚ وَالَّذِي خَبُثَ
لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ۚ كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ﴿٥٨﴾
لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا
لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٩﴾
قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٦٠﴾ قَالَ
يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦١﴾
أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنْصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٢﴾
أَوَعَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِنْكُمْ
لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٦٣﴾ فَكَذَّبُوهُ فَأَنْجَيْنَاهُ
وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۚ
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ﴿٦٤﴾ وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۗ قَالَ
يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۚ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٦٥﴾
قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي
سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٦٦﴾ قَالَ يَا قَوْمِ
لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٧﴾

منزل ٢

और जो ज़मीन अच्छी होती है उसकी पैदावार तो अपने पालनहार के आदेश से निकल आती है और जो ज़मीन ख़राब हो गई हो उससे खराब पैदावार के सिवा कुछ नहीं निकलता, इसी प्रकार हम निशानियाँ फेर फेर कर उन लोगों को बताते हैं जो शुक्र करने वाले होते हैं[1] (58) हम ही ने नूह को उनकी क़ौम के पास भेजा तो उन्होंने कहा कि ऐ मेरी कौम! अल्लाह की बन्दगी करो उसके अलावा कोई तुम्हारा माबूद (पूज्य) नहीं, मुझे तो तुम्हारे ऊपर बड़े दिन के अज़ाब का डर है (59) क़ौम के सम्मानित लोग बोले तुम तो हमें साफ़ बहके हुए दिखाई पड़ते हो (60) उन्होंने कहा ऐ मेरी कौम! मैं कुछ भी बहका नहीं हूँ लेकिन मैं तो तमाम संसारों के पालनहार का भेजा हुआ हूँ (61) अपने पालनहार के संदेश तुमको पहुँचाता हूँ और तुम्हारी भलाई चाहता हूँ और अल्लाह की ओर से वह चीज़ मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते (62) क्या तुम्हें केवल इस पर आश्चर्य है कि तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार का उपदेश तुम ही में से एक व्यक्ति के द्वारा पहुँचा ताकि वह तुम्हें डराए और ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ और ताकि तुम पर रहमत (कृपा) हो (63) बस उन्होंने उनको झुठला दिया तो हमने उनको और उनके साथ नाव वालों को बचा लिया और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया उनको डुबो दिया वे थे ही अंधे लोग (64) और आद की ओर उनके भाई हूद को भेजा, उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की बन्दगी करो उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं, क्या फिर भी तुम नहीं डरोगे? (65) उनकी क़ौम के सम्मानित लोग जो इनकार कर चुके थे बोले तुम तो हमें मूर्ख दिखाई पड़ते हो और हम तो तुम्हें झूठा ही समझते हैं (66) उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! मुझमें कुछ भी मूर्खता नहीं लेकिन मैं तो संसारों के पालनहार का भेजा हुआ हूँ (67)

(1) पहले उदाहरण दिया कि जिस प्रकार बंजर जमीन में वर्षा करके अल्लाह कैसे कैसे पौधे उगा देता है उसी तरह लोग मरने के बाद उठाए जाएंगे अब यहाँ एक और उदाहरण दिया जा रहा है कि अल्लाह की हिदायत (संमार्ग) जो उसके पैग़म्बर लेकर आते हैं वर्षा की तरह है जिस प्रकार अच्छी ज़मीनें उससे खूब फायदा उठाती हैं और बंजर जमीनों में उनसे कम फायदा होता है इसी तरह इस खुदाई हिदायत (संमर्ग) से लोग अपने अपने साहस के अनुसार ही फायदा उठाते हैं, फिर उसके बाद पैग़म्बरों का वर्णन शुरु हो रहा है हज़रत आदम का उल्लेख अभी निकट में ही गुज़रा है उनके बाद हज़रत नूह साहसी पैग़म्बरों में गुज़रे हैं इस पावन वर्णन की शुरुआत उन्हीं से की जा रही है, हज़रत आदम के बाद लंबे ज़माने तक लोग तौहीद पर कायम रहे फिर कुछ महापुरुषों के लोगों ने चित्र बना लिए ताकि यादगार रहे, धीरे धीरे यहीं से मूर्ति पूजा शुरु हुई तो अल्लाह ने हज़रत नूह को भेजा, हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के वाक़िये को विस्तृत रूप से सूरः हूद में और सूरः नूह में बयान किया गया है।

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿٦٨﴾ اَوَعَجِبْتُمْ
اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ
وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ
فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾
قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ
اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧٠﴾
قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ۭ
اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا
نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۭ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ
الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٧١﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَ
قَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٢﴾
وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا
لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۭ
هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ
اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾

منزل٢

अपने पालनहार के संदेश तुम को पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा विश्वसनीय शुभचिनतक हूँ (68) क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य है कि तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की नसीहत (उपदेश) तुम्ही में से एक व्यक्ति के द्वारा पहुँची ताकि वह तुम्हें डराए और याद करो जब तुम्हें नूह की क़ौम के बाद उसने सरदारी प्रदान की और तुम्हारे डील–डौल में भी बढ़ोतरी की तो अल्लाह के इनआमों को याद करो शायद तुम सफल हो जाओ (69) वे बोले क्या तुम हमारे पास इसीलिए आए हो कि हम एक अल्लाह की इबादत करने लगें और जिनकी इबादत हमारे बाप–दादा करते चले आ रहे हैं उनको छोड़ दें बस अगर तुम सच्चे हो तो जिन चीज़ों से तुम हमका डराते हो वह ला कर दिखा दो (70) कहा कि तुम अपने पालनहार की ओर से अज़ाब और गुस्से के हकदार हो चुके, क्या तुम मुझसे उन नामों के बारे में बहस करते हो जो तुमने खुद रख लिए या तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए, अल्लाह ने उसकी कोई दलील नहीं उतारी तो तुम भी प्रतीक्षा करो[1], मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा में हूँ (71) फिर हमने उनको और उनके साथ वालों को अपनी रहमत (कृपा) से बचा लिया और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था उनकी जड़ काट कर रख दी और वे मानने वाले न थे[2] (72) और समूद की ओर उनके भाई सालेह को (भेजा) उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की बंदगी करो उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद (पूज्य) नहीं, तुम्हारे पालनहार की ओर से खुली दलील आ चुकी[3], यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है तो तुम इसे छोड़ दो यह अल्लाह की ज़मीन में खाये पिये और इसे किसी बुराई के इरादे से छूना भी नहीं तकलीफ़ न पहुँचाना वरना तुम दुखद अज़ाब का शिकार हो जाओगे (73)

---

(1) उन्होंने बहुत से खुदा बना रखे थे और उनके विभिन्न नाम रखे थे, कोई वर्षा का कोई संतान का, कोई रोज़ी का इसी तरह शिर्क के दलदल में फंसे हुए थे, (2) आद हज़रत नूह के पोते इरम की संतान में थे यह "यमन" में बसे हुए थे, अल्लाह ने इन्हें असाधारण डील डोल और ताक़त दी थी, जिस पर इनको गर्व था, हज़रत हूद इन्हीं की क़ौम के सदस्य थे लेकिन इन्होंने उनकी बात न मानी और उन पर सात रात और आठ दिन लगातार अज़ाब आया जिससे वे छिन्न भिन्न कर दिए गए, (3) समूद ने हज़रत सालेह से कहा था कि आप पत्थर की चट्टान से एक गर्भवती ऊँटनी निकाल दें तो हम आप पर ईमान ले आएंगे जब वह निशानी आ गई तो हज़रत सालेह ने कहा कि अब तो ईमान ले आओ और यह ऊँटनी अल्लाह की निशानी है इसको छेड़ना मत वरना अज़ाब का शिकार हो जाओगे।

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْ بَعْدِ عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ
فِى الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ
الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ
مُفْسِدِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ
لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا
مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٧٥﴾
قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ
كٰفِرُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَ
قَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧٧﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ
جٰثِمِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ
رِسَالَةَ رَبِّىْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٧٩﴾
وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ
بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ
شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿٨١﴾

منزل٢

और याद करो जब उसने आद के बाद तुम्हें सरदारी प्रदान की और ज़मीन में तुम्हें बसाया, तुम उसके बराबर क्षेत्रों में महल बनाते हो और पहाड़ों के मकान तराशते हो तो अल्लाह के उपकारों को याद करो और ज़मीन में बिगाड़ मचाते मत फिरो (74) क़ौम के सम्मानित लोगों ने जो घमण्ड में पड़े थे उन्होंने कमज़ोरों में ईमान लाने वालों से कहा कि तुम्हें क्या पता कि सालेह को उनके पालनहार की ओर से भेजा गया है, वे कहने लगे कि हम तो जिस चीज़ को वह लाये हैं उस पर विश्वास रखते हैं (75) वह घमण्डी लोग बोले कि जिसको तुम मानते हो हम तो उसका इनकार करते हैं (76) फिर ऊँटनी को उन्होंने मार डाला और अपने पालनहार के आदेश की अवहेलना की और बोले कि सालेह तुम जिससे डराते रहे हो अगर तुम पैग़म्बर हो तो उसे ले आओ (77) बस भूकंप ने उन्हें आ दबोचा तो वे अपने घरों में औंधे मुँह पड़े रह गए (78) फिर (हज़रत सालेह) उनसे पलटे और कहा ऐ मेरी क़ौम! मैंने अपने पालनहार का पैग़ाम तुम को पहुँचा दिया और तुम्हारा भला चाहा लेकिन तुम्हें तो भला चाहने वाले पंसद ही नही थे[1] (79) और लूत को (भेजा), जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा तुम ऐसी अश्लीलता करते हो जो दुनिया जहान में तुम से पहले किसी ने न की (80) तुम कामेच्छा पूरी करने के लिए औरतों के बजाय मर्दों के पास जाते हो बात यह है कि तुम तो हद से गुज़र जाने वाले लोग हो[2] (81)

(1) समूद को आद सानी (दूसरे आद) भी कहा जाता है यह भी बड़े डील डौल के थे और पहाड़ों को काट कर मकान बनाते थे इन्होंने ऊँटनी की मांग की थी अल्लाह की आज्ञा से हज़रत सालेह ने पहाड़ से वह ऊँटनी निकालदी, कहा जाता है कि वह इतने महान काया की थी कि जिस जंगल में चरती जानवर डर कर भाग जाते और जिस कुँएं में पानी पीती उसे खाली कर देती अंततः लोग उसको कत्ल कर डालने पर सहमत हो गए और एक अभागे ने उसे मार डाला फिर उन पर अज़ाब आया हज़रत हूद और हज़रत सालेह दोनों हज़रत इब्राहीम से पहले हुए (2) हज़रत लूत हज़रत इब्राहीम के भतीजे थे उनके साथ ही उन्होंने इराक़ से शाम प्रवास (हिज़रत) की और सदूम और उसके आस पास की बस्तियों में पैग़म्बर बना कर भेजे गए।

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۗ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ۗ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا بِالَّذِيْٓ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

उनकी क़ौम ने जवाब में केवल यह कहा कि इनको बस्ती से निकाल बाहर करो यह वे लोग हैं जो बड़े संयमी बनते हैं (82) तो हमने उनको और उनके घर वालों को बचा लिया सिवाए उनकी बीवी के वह उन्हीं पीछे रह जाने वालों में रह गई (83) और हमने उन पर और ही वर्षा की तो आप देख लीजिए अपराधियों का अंजाम कैसा हुआ[1] (84) और मदयन (वालों) की ओर उनके भाई शोएब को भेजा, उन्होंने कहा कि अल्लाह की बन्दगी करो उसके अलावा कोई तुम्हारा माबूद (पूज्य) नहीं, तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे पास खुली दलील (प्रमाण) आ चुकी, नाप तौल पूरी पूरी करो और लोगों की चीज़ों को कम करके मत दो और ज़मीन में उसके सुधार के बाद बिगाड़ मत करो, तुम्हारे लिए यही बेहतर है[2] अगर तुम मानते हो (85) और हर रास्ते पर बैठ मत जाओ कि डराते धमकाते रहो और ईमान लाने वालों को अल्लाह के रास्ते से रोकते रहो और उसमें टेढ़ तलाश करते रहो और याद करो जब तुम बहुत कम थे तो उसने तुम्हारी संख्या बढ़ाई और देख लो कि बिगाड़ करने वालों का अंजाम कैसा हुआ (86) और अगर तुम में कुछ लोग मेरी लाई हुई चीज़ पर ईमान लाए और कुछ न लाए तो सब्र करो यहाँ तक की अल्लाह हमारे बीच फैसला कर दे और वही बेहतर फ़ैसला करने वाला है (87)

(1) हज़रत लूत की क़ौम घोर अश्लीलता व कुकृतियों में लिप्त थी हज़रत लूत को उनके सुधार के लिए भेजा गया जब उन्होंने बात न मानी और कहने लगे जब ये बहुत पाक बनते हैं तो इनको बस्ती से निकाल बाहर करो तो पूरी क़ौम पर पत्थर बरसाए गए उनकी पत्नी भी चूँकि उन अपराधियों की सहायक थी और आने वाले मेहमानों की सूचना उनको देती और कुकर्म पर उभारती इसलिए वह भी उन्हीं में शामिल की गई, वर्तमान बाइबिल की शर्मनाक दुःसाहस पर शोक प्रकट करना चाहिए ऐसे पवित्रचारी पैग़म्बर से ऐसी अपवित्र हरकतें जोड़ीं कि जिसके सुनने से लज्जावान आदमी के रोंगटे खड़े हो जाएं (2) हज़रत शोऐब को मदयन भेजा गया "मदयन" हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के एक सुपुत्र का नाम है उन्हीं की संतान में हज़रत शोऐब भेजे गए, यह क़ौम दुर्व्यवहार, विश्वासघात और नाप तौल में कमी की आदी थी, हज़रत शोऐब ने उनके सामने बहुत ही सुन्दर शैली में इसकी बुराई और दुनिया व आख़िरत में उसके नुकसान बयान किए, व्यवहार के महत्व का इससे अनुमान किया जा सकता है कि पूर्णरूप से एक पैग़म्बर को इसके सुधार के लिए भेजा गया।

قال الملأ الذين استكبروا من قومه لنخرجنك
يشعيب والذين آمنوا معك من قريتنا أو لتعودن في ملتنا
قال أولو كنا كرهين ﴿٨٨﴾ قد افترينا على الله كذبا إن عدنا
في ملتكم بعد إذ نجىنا الله منها وما يكون لنا أن نعود فيها
إلا أن يشاء الله ربنا وسع ربنا كل شيء علما على الله
توكلنا ربنا افتح بيننا وبين قومنا بالحق وأنت خير
الفتحين ﴿٨٩﴾ وقال الملأ الذين كفروا من قومه لئن اتبعتم
شعيبا إنكم إذا لخسرون ﴿٩٠﴾ فأخذتهم الرجفة فأصبحوا
في دارهم جثمين ﴿٩١﴾ الذين كذبوا شعيبا كأن لم يغنوا
فيها الذين كذبوا شعيبا كانوا هم الخسرين ﴿٩٢﴾ فتولى
عنهم وقال يقوم لقد أبلغتكم رسلت ربي ونصحت لكم
فكيف آسى على قوم كفرين ﴿٩٣﴾ وما أرسلنا في قرية من نبي
إلا أخذنا أهلها بالبأساء والضراء لعلهم يضرعون ﴿٩٤﴾
ثم بدلنا مكان السيئة الحسنة حتى عفوا وقالوا قد مس
آباءنا الضراء والسراء فأخذنهم بغتة وهم لا يشعرون ﴿٩٥﴾

منزل٢

उनकी कौम के सम्मानित लोगों में जो बड़े घमण्डी थे वे बोले ऐ शोऐब! हम तुम को और तुम्हारे साथ ईमान लाने वालों को अपनी बस्ती से निकाल कर रहेंगे या तो तुम हमारे दीन (धर्म) में लौट ही आओ, उन्होंने कहा चाहे हमे यह नापसंद ही हो (88) अगर हम तुम्हारे दीन (धर्म) में लौटे जब कि अल्लाह ने हमें उससे निजात दी तो हमने अल्लाह पर बड़ा झूठ गढ़ा और हम तुम्हारे दीन (धर्म) में लौट ही नहीं सकते सिवाय इसके कि अल्लाह ही की इच्छा हो जो हमारा पालनहार है[1], हमारे पालनहार का ज्ञान हर चीज़ को समेटे हुए है, हम अल्लाह ही पर भरोसा करते हैं, ऐ हमारे पालनहार! तू हमारे और हमारी क़ौम के बीच इंसाफ़ से फ़ैसला कर दे और तू बेहतर फैसला करने वाला है (89) और उनकी क़ौम के सम्मानित लोगों में जिन्होंने इनकार किया वे बोले कि अगर तुम शोऐब के पीछे चलोगे तो तुम्हें बड़ा नुकसान उठाना पड़ेगा (90) फिर भूकंप ने उनको आ दबोचा तो वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये (91) जिन्होंने शोऐब को झुठलाया वे ऐसे हो गये कि मानो वहां वे बसे ही न थे जिन्होंने शोऐब को झुठलाया वही घाटे में रहे[2] (92) फिर वे उनसे पलटे और कहा ऐ मेरी क़ौम! मैंने अपने पालनहार के संदेश तुमको पहुँचा दिये और तुम्हारा भला चाहा, अब न मानने वाले लोगों पर क्यों दुःखी होऊँ (93) और जब भी हमने किसी बस्ती में पैग़म्बर भेजा तो वहाँ के वासियों को सख़्ती और तकलीफ़ में डाला कि शायद वे नर्म पड़ें (94) फिर हमने बदहाली की जगह खुशहाली प्रदान कर दी यहां तक कि जब वे आगे बढ़ गए और कहने लगे कि दुःख और सुख तो हमारे बाप–दादा को भी पहुँचते रहे हैं तो अचानक हमने उनको पकड़ लिया और उन्हें इसका एहसास भी न था[3] (95)

(1) यह केवल विनम्रता और भक्ति प्रकट करने के रूप में था वरना पैग़म्बर के साथ खुदा का यह व्यवहार हो ही नहीं सकता कि वह कुफ़्र व इनकार का रास्ता अपनाए (2) इस क़ौम पर तीन अज़ाब बार–बार आए जिनको "ज़ुल्लह, सैहा और रज्फ़ा" कहते हैं यानी पहले काले बादल से अंधेरा हुआ फिर उस बादल से आग और चिंगारियाँ बरसीं और उसके साथ भयानक आवाज़ों ने हिला कर रख दिया फिर तेज़ भूकंप आया और पूरी क़ौम का सर्वनाश हो गया (3) यहाँ अल्लाह ने अज़ाब का एक नियम बयान किया है कि क़ौम जब पैग़म्बर की बात नहीं मानती तो मुसीबतों में डाली जाती है ताकि उसको होश आ जाए, इस चेतावनी से अगर उनके दिल नर्म पड़ते हैं तो सख़्तियों की जगह सुख–सुविधा का दौर आता है ताकि वे आभारी हों लेकिन जब क़ौम इस तकलीफ़ और आराम को संयोग की बात करार देकर ढ़ीठ बनी रहती है और कहती है कि यह तो हमेशा से होता चला आया है तो फिर वह कठोर अज़ाब में डाली जाती है।

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰۤى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ
مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۹۶﴾ اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ
بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿۹۷﴾ اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ
يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿۹۸﴾ اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ
فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۹۹﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ
لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَاۤ اَنْ لَّوْ نَشَآءُ
اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۱۰۰﴾
تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآئِهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ
كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۱﴾ وَمَا وَجَدْنَا
لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَاِنْ وَّجَدْنَاۤ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ﴿۱۰۲﴾
ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ
فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَ
قَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۴﴾

منزل ۲

और अगर बस्तियों वाले मान लेते और परहेज़गार हो जाते तो हम आसमानों और ज़मीन की बरकतें उस पर खोल देते लेकिन उन्होंने झुठलाया तो उनकी करतूतों के बदले में हमने उनको पकड़ लिया[1] (96) तो क्या (दूसरी) बस्तियों वाले (इससे) निडर हो गए कि रातों रात हमारा अज़ाब उन पर आ पहुँचे जब वे सोते हों[2] (97) या बस्तियों वाले निर्भय हो गए कि दिन चढ़ते हमारा अज़ाब उन पर आ जाए जब वे खेल कूद में लगे हों (98) तो क्या वे अल्लाह के उपाय से निडर हो गए, अल्लाह के उपाय से तो घाटा उठाने वाले लोग ही निश्चिंत होते हैं[3] (99) जो लोग किसी ज़मीन के वहां वालों के बाद वारिस बनते हैं क्या उनके सामने यह बात नहीं खुली कि अगर हम चाहें तो उनके गुनाहों पर उनकी पकड़ कर लें और हम उनके दिलों पर मोहर लगा देते हैं तो वे सुनते ही नहीं[4] (100) यह वे बस्तियां हैं जिनकी खबरें हम आपको सुना रहे हैं, और उनके पैग़म्बर खुली निशानियाँ लेकर उनके पास आए थे तो पहले वे जिस चीज़ को झुठला चुके थे उसको उन्होंने नहीं माना अल्लाह इसी प्रकार इनकार करने वालों के दिलों पर मोहर लगा देता है[5] (101) और हमने उनमें अधिकतर लोगों में निबाह न पाया और उनमें अधिकतर हमने उल्लंघनकारी ही पाए (102) फिर उनके बाद हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सम्मानित लोगों के पास भेजा तो उन्होंने उन निशानियों के साथ इन्साफ़ न किया तो देख लीजिए कि बिगाड़ करने वालों का अंजाम कैसा हुआ[6] (103) और मूसा ने कहा कि ऐ फ़िरऔन! मैं सारे संसार के पालनहार की ओर से पैग़म्बर (हो कर आया) हूँ (104)

(1) जो लोग अल्लाह के अज़ाब में गिरफ़्तार होते हैं वे अपनी करतूतों के कारण होते हैं, अल्लाह को अपने बन्दों से कोई ज़िद नहीं, अगर वे मानें तो अल्लाह अपनी नेमतों से उन्हें मालामाल कर देगा (2) ऐसा लगता है इसका आशय मक्के के मुश्रिक हैं, विगत घटनाएं सुना कर उनको चेताया जा रहा है (3) यानी वे दुनिया की चमक–दमक में मस्त होकर अल्लाह के अज़ाब से निडर हो गये (4) जिस प्रकार पहलों को पकड़ चुके हैं उसी प्रकार इनको भी पकड़ लेंगे (4) एक बार इनकार कर दिया तो ऐसी जिद पैदा हुई कि उन्होंने माना ही नहीं (5) जो प्रतिज्ञाएं उन्होंने कीं और जब–जब कीं कभी उस पर पूरे न उतरे (6) हज़रत मूसा हज़रत याकूब ही की संतान में बड़े पैग़म्बरों में गुज़रे हैं उनकी और फ़िरऔन की घटनाएं, सत्य व असत्य की कशमकश फिर सत्य की विजय और असत्य की पराजय और बनी इस्राईल की शिक्षाप्रद कहानी पर आधारित हैं और इसमें मुसलमानों के लिए बड़ी मार्गदर्शन की बातें और शिक्षाएं हैं इसीलिए यह घटनाएं पवित्र कुरआन में विभिन्न स्थानों पर बयान की गई हैं।

حَقِيقٌ عَلَىٰٓ أَن لَّآ أَقُولَ عَلَى ٱللَّهِ إِلَّا ٱلْحَقَّ قَدْ جِئْتُكُم بِبَيِّنَةٍ
مِّن رَّبِّكُمْ فَأَرْسِلْ مَعِىَ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ﴿١٠٥﴾ قَالَ إِن كُنتَ جِئْتَ
بِـَٔايَةٍ فَأْتِ بِهَآ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿١٠٦﴾ فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ
فَإِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٠٧﴾ وَنَزَعَ يَدَهُۥ فَإِذَا هِىَ بَيْضَآءُ
لِلنَّٰظِرِينَ ﴿١٠٨﴾ قَالَ ٱلْمَلَأُ مِن قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَٰذَا لَسَٰحِرٌ
عَلِيمٌ ﴿١٠٩﴾ يُرِيدُ أَن يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿١١٠﴾
قَالُوٓا۟ أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِى ٱلْمَدَآئِنِ حَٰشِرِينَ ﴿١١١﴾ يَأْتُوكَ
بِكُلِّ سَٰحِرٍ عَلِيمٍ ﴿١١٢﴾ وَجَآءَ ٱلسَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوٓا۟ إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا
إِن كُنَّا نَحْنُ ٱلْغَٰلِبِينَ ﴿١١٣﴾ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ ٱلْمُقَرَّبِينَ ﴿١١٤﴾
قَالُوا۟ يَٰمُوسَىٰٓ إِمَّآ أَن تُلْقِىَ وَإِمَّآ أَن نَّكُونَ نَحْنُ ٱلْمُلْقِينَ ﴿١١٥﴾
قَالَ أَلْقُوا۟ فَلَمَّآ أَلْقَوْا۟ سَحَرُوٓا۟ أَعْيُنَ ٱلنَّاسِ وَٱسْتَرْهَبُوهُمْ
وَجَآءُو بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ﴿١١٦﴾ وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ
فَإِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿١١٧﴾ فَوَقَعَ ٱلْحَقُّ وَبَطَلَ مَا
كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿١١٨﴾ فَغُلِبُوا۟ هُنَالِكَ وَٱنقَلَبُوا۟ صَٰغِرِينَ ﴿١١٩﴾ وَ
أُلْقِىَ ٱلسَّحَرَةُ سَٰجِدِينَ ﴿١٢٠﴾ قَالُوٓا۟ ءَامَنَّا بِرَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿١٢١﴾

منزل ٢

इस पर क़ायम हूँ कि अल्लाह की ओर से सत्य ही कहूँ, मैं तुम्हारे पालनहार की ओर से खुली निशानी ले कर आ चुका हूँ तो बनी इस्राईल को मेरे साथ जाने दो[1] (105) वह बोला अगर तुम कोई निशानी लेकर आए हो तो उसको पेश करो अगर तुम सच्चे हो (106) तो मूसा ने अपनी लाठी डाल दी तो बस वह एक अजगर साँप बन गया[2] (107) और अपना हाथ खींचा[3] तो वह देखने वालों को चमकता हुआ नज़र आया (108) फिरऔन की क़ौम के सम्मानित लोग बोले कि यह तो ज़रूर माहिर जादूगर है[4] (109) यह चाहता है कि तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल बाहर करे तो अब तुम्हारी क्या राय है (110) वे बोले इनको और इनके भाई को मोहलत दीजिए और शहरों में हरकारे भेज दीजिए (111) वे आपके पास माहिर जादूगर ले आएं (112) और जादूगर फिरऔन के पास पहुंच गए बोले कि हमें पुरस्कार तो मिलेगा ही अगर हम ही विजयी हुए (113) उसने कहा हाँ हाँ और तुम्हारी गिनती तो करीबी लोगों में होगी (114) वे बोले ऐ मूसा तुम्ही फेंको या हम (अपनी जादू की चीज़ें) फेंकते हैं (115) कहा तुम ही फेंको तो जब उन्होंने फेंका तो लोगों की नज़रबन्दी कर दी और उन्हें भयभीत कर दिया और वे ज़बर्दस्त जादू लेकर आए (116) और हमने मूसा की ओर ''वह्य'' भेजी कि अपनी लाठी डाल दो बस वे जो ढोंग बनाकर लाए थे वह उसको निगलने लगी (117) बस सत्य प्रकट हो गया और उनका सारा किया धरा खाक में मिल गया (118) तो यहाँ आकर वे हार गए और तुच्छ (ज़लील) हो कर रह गये (119) और जादूगर सज्दे में गिर गए (120) कहने लगे कि हमने संसारों के पालनहार को मान लिया (121)

(1) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने बहुत सी नसीहतें कीं लेकिन उनमें एक महत्वपूर्ण चीज़ यह थी कि वह बनी इस्राईल को फिरऔन और उसकी क़ौम से निजात दिलाएं और उनके मूल देश ''शाम'' में उनको पहुँचा दें जिसको हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपना देश बनाया था, मिस्र में वह हज़रत यूसुफ़ के बाद आबाद हुए थे और क़िब्तियों ने उनको अपने ज़ुल्म व सितम का निशाना बना रखा था (2) यह नज़रबंदी नहीं थी बल्कि अल्लाह के आदेश से वह लाठी अजगर बन गई थी, यह पवित्र क़ुरआन का चमत्कार है कि उसको कहीं अजगर कहीं दौड़ता हुआ साँप तो कहीं साँप की दूसरी प्रजाति के शब्द से व्यक्त किया है, यह उसकी विभिन्न परिस्थितियों का बयान है कि कभी वह अज़गर बन जाता है कभी साधारण सांप की तरह दौड़ने लगता है और कभी साँप की दूसरी प्रजाति बन जाती है (3) यह भी मोअ्जिज़ा (इलाही चमत्कार) था कि लगता था हाथ से रौशनी फूट रही है (4) दोनों मोअ्जिज़े देख कर फिरऔन ने राय मश्वरा किया और यह क़रार पाया कि यह जादू है इसके मुक़ाबले के लिए देश भर के माहिर जादूगर बुलाए जाएं, वह ज़माना जादू के वर्चस्व का था, सब माहिर जादूगर आ गए उनको अपनी विजय का विश्वास था इसलिए फिरऔन से पुरस्कार माँगा।

رَبِّ مُوسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ
اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ
اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٣﴾ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ
مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا
مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا
جَآءَتْنَا ۚ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَقَالَ
الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا
فِى الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ۚ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ
وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ قَالَ مُوْسٰى
لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ
يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾
قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۗ
قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى
الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾ وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ
فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾

منزل٢

मूसा और हारून के पालनहार को[1] (122) फिरऔन बोला कि तुमने मेरी अनुमति से पहले ही इसको मान लिया यह तो ज़रूर एक चाल है जो तुम शहर में इसलिए चल रहे हो ताकि यहाँ के वासियों को यहाँ से निकाल बाहर करो जल्द ही तुम्हें पता चल जाएगा (123) मैं तुम्हारे हाथों को और पैरों को उल्टी ओर से काट डालूँगा और तुम सबको सूली पर चढ़ा दूँगा (124) उन्होंने कहा कि हमें तो अपने पालनहार के पास जाना ही है (125) और आप हमसे इसलिए बैर रखते हैं कि हमारे पालनहार कि निशानियाँ जब हमारे पास पहुँच गईं तो हमने उनको मान लिया, ऐ हमारे पालनहार! हम पर सब्र उड़ेल दे और हमें ईमान के साथ उठा[2] (126) और फिरऔन की कौम के सम्मानित लोग बोले क्या आप मूसा और उनकी क़ौम को छोड़ देंगे कि वे देश में बिगाड़ मचाते फिरें और वह आपको और आपके ख़ुदाओं को छोड़ दें, वह बोला हम अभी उनके बेटों को क़त्ल ही किये देते हैं और उनकी औरतों को छोड़ देंगे और हम तो उन पर पूरा ज़ोर रखते हैं[3] (127) मूसा ने अपनी क़ौम से कहा अल्लाह से मदद मांगो और सब्र करो, ज़मीन का मालिक अल्लाह ही है वह अपने बन्दों में जिसे चाहता है उसको वारिस बनाता है और नतीजा तो परहेज़गारों ही के पक्ष में है (128) वे बोले कि आपके आने से पहले भी हमें सताया गया और आपके आने के बाद भी, उन्होंने कहा आशा है अल्लाह तुम्हारे दुश्मन को हलाक करेगा और मुल्क में तुम्हें खलीफ़ा बनाएगा फिर वह देखेगा कि तुम कैसे काम करते हो[4] (129) और अकाल से और फलों में कमी करके हमने फिरऔन के लोगों की पकड़ की शायद वे नसीहत हासिल करें (130)

---

(1) मूसा व हारून के पालनहार (रब) कहने की ज़रूरत इसलिए पड़ी कि भ्रम न उत्पन्न हो क्योंकि फिरऔन भी अपने आपको रब (पालनहार) कहा करता था (2) जादूगरों को हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की लाठी का हाल मालूम हो चुका था और वे उसको जादू समझ कर अपनी ओर से लाठियाँ और रस्सियाँ जादू कर के लाए थे, हज़रत मूसा के कहने पर पहले उन्होंने ही कार्यवाही शुरु की, पहले ही चरण में हर ओर साँप दौड़ते दिखाई पड़ने लगे फिर जैसे मूसा अ़लैहिस्सलाम ने लाठी (असा) ज़मीन पर डाली वह तुरन्त सबको डकार गयी, जादूगरों को विश्वास हो गया कि यह जादू से ऊपर की कोई वास्तविकता है, वे बेसुध होकर सज्दे में गिर गए और फिरऔन और उसकी क़ौम अपमानित हो कर पलटी, जादुगरों को उसने धमकी दी लेकिन वे कुछ ही क्षणों में ईमान व विश्वास के उत्कृष्ट स्थान पर पहुँच चुके थे, उन्होंने साफ़ कह दिया कि जो चाहे तू कर हमें तो अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है। (3) जादूगरों के ईमान से बनी इस्राईल के सभी लोग हज़रत मूसा के साथ हो गए, बहुत से क़िब्ती साथ देने लगे तो फिरऔन के लोगों ने उसको भड़काया कि यह तो धीरे–धीरे छा जाएंगे और आपको, आपकी मूर्तियों और प्रतिमाओं को छोड़ देंगे, फिरऔन अपने को "रब्बे आला" (सबसे बड़ा पालनहार) कहता था और अपनी प्रतिमाएं और गाय आदि की मूर्तियाँ बटवा दी थीं ताकि लोग उनको पूजें (4) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश के समय भी फिरऔन लड़कों को मार डालता और लड़कियों को सेवा के लिए ज़िन्दा रखता, वही स्कीम उसने फिर शुरु की, बनी इस्राईल घबरा गए तो हज़रत मूसा ने उनको तसल्ली दी, यह आयतें उस समय उतरीं जब मुसलमानों को पवित्र मक्का में सताया जा रहा था।

فَإِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ
يَطَّيَّرُوا بِمُوسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ۗ أَلَآ إِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ
وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣١﴾ وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهٖ
مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾ فَأَرْسَلْنَا
عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ
مُّفَصَّلٰتٍ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿١٣٣﴾ وَلَمَّا
وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا يٰمُوسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ
عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ
مَعَكَ بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ ﴿١٣٤﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلٰٓى
أَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوهُ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ﴿١٣٥﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ
فَأَغْرَقْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا
غٰفِلِينَ ﴿١٣٦﴾ وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ
مَشَارِقَ الْأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِي بٰرَكْنَا فِيهَا ۖ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ
رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ ۙ بِمَا صَبَرُوا ۖ وَدَمَّرْنَا
مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ﴿١٣٧﴾

منزل٢

बस जब उन पर खुशहाली आती तो कहते कि ''यह तो है ही हमारे लिए'' और जब बदहाली का सामना होता तो उसको मूसा और उनके साथियों की नहूसत (अपशकुन) बताते, सुन लो उनकी नहूसत तो अल्लाह के यहाँ नियत है लेकिन उनमें अधिकांश बेख़बर है (131) और वे बोले कि तुम हर जादू चलाने के लिए कैसी ही निशानी ले आओ तो तब भी हम तुम को मानने वाले नहीं[1] (132) फिर हमने उन पर तूफान और टिड्डी और जूँ और मेढ़क और ख़ून कई निशानियाँ अलग अलग भेजीं फिर भी वे अकड़ते रहे और वे अपराधी लोग थे (133) जब उन पर अज़ाब आता वे कहते ऐ मूसा! जैसा तुम्हें तुम्हारे पालनहार ने बता रखा है तुम हमारे लिए दुआ कर दो अगर हमसे यह अज़ाब तुमने दूर कर दिया तो हम ज़रूर तुम्हें मान लेंगे और बनी इस्राईल को तुम्हारे साथ जाने देंगे[2] (134) फिर जब हम उनसे अज़ाब एक निर्धारित अवधि तक के लिए उठा लेते जहाँ (जिस अवधि तक) उनको पहुँचना ही था तो वे वचन भंग करने लगते[3] (135) फिर हमने उनसे बदला लिया तो उनको समुद्र में डुबो दिया इसलिए कि वे हमारी निशानियाँ झुठलाते थे और वे उनसे बेख़बर थे (136) और जिन लोगों को कमज़ोर समझा जाता था हमने उनको उस देश में पूरब–पश्चिम का वारिस बना दिया जिसमें हमने बरकत रखी थी और तुम्हारे पालनहार के नेकी का वादा बनी इस्राईल पर उनके सब्र की वजह से पूरा हुआ और फिरऔन और उसके लोग जो बनाते थे और जो चढ़ाते थे उनको हमने मलियामेट कर डाला[4] (137)

(1) अल्लाह ने पहले उनको विभिन्न मुसीबतों से आज़माया कि शायद वे सीधे रास्ते (हिदायत) पर आ जाएं लेकिन उनकी ढिठाई बढ़ती गई यहाँ तक कि जब कोई मुसीबत आती तो कहते कि यह मूसा की नहूसत (अपशकुन) है, अल्लाह कहता है कि यह खुद उनकी नहूसत है जो अल्लाह के पास है, उसका कुछ असर अभी दिख रहा है और कुछ आगे दिखेगा, जब मामूली मुसीबतों से कुछ न समझे तो बड़ी मुसीबतों का सिलसिला आरम्भ हुआ, जब कोई इस प्रकार की मुसीबत आती तो बेक़ाबू व बेचैन हो कर हज़रत मूसा से दुआ करवाते और बनी इस्राईल की आज़ादी का वादा करते फिर जैसे ही वह मुसीबत टल जाती वही हरकतें शुरु कर देते (2) हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ि0 से रिवायत की गई है कि जब फिरऔन ने बात न मानी तो तूफान आया जिससे खेतियों की तबाही का खतरा पैदा हो गया तो घबरा कर मूसा के पास पहुँचे कि तुम अपने विशेष तरीके पर दुआ (प्रार्थना) करके यह मुसीबत दूर कर दो तो हम बनी इस्राईल को तुम्हारे साथ भेज देंगे, हज़रत मूसा की दुआ से तूफ़ान थम गया और ख़ूब पैदावार हुई, फिरऔन वाले अपने वादे पर कायम न रहे तो अल्लाह ने खेतियों पर टिड्डी दल भेज दिया फिर घबरा कर मूसा के पास आए और सब वादे किये मगर फिर मुकर गए तो अल्लाह ने गल्ले में कीड़ा भेज दिया, फिर दुआ कराई और फिर मुकर गए तो अल्लाह ने उनका खाना–पीना दूभर कर दिया, मेढ़क की अधिकता हुई और पीने वाला पानी खून बन गया, सब कुछ हुआ लेकिन उनकी अकड़ न गई तो अंततः वे डुबो दिए गए और मिस्र फिर शाम की सत्ता बनी इस्राईल को अल्लाह के वादे के अनुसार प्राप्त हुई (3) मतलब यह है कि अल्लाह तआला के ज्ञान और भाग्य में उनके लिए एक समय तो ऐसा आना ही था जब वे अज़ाब का शिकार हो कर हलाक हों लेकिन इससे पहले छोटे–छोटे अज़ाब जो आ रहे थे उनको एक समय के लिए हटा लिया जाता था (4) एक शब्द से उनके गुण और कारीगरी की ओर इशारा है और दूसरे शब्द से उनके खेत और बाग़ों की ओर इशारा है विशेष रूप से अंगूर वगैरह के लिए, वे बड़ी–बड़ी टट्टिया लगा कर उन पर बेलें चढ़ाया करते थे।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ
عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ
اٰلِهَةٌ ۭ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿١٣٨﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ
فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٩﴾ قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ
اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَي الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٠﴾ وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ
فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْۗءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَاۗءَكُمْ وَ
يَسْتَحْيُوْنَ نِسَاۗءَكُمْ ۭ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَاۗءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿١٤١﴾
وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ
مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ
هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ
الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤٢﴾ وَلَمَّا جَاۗءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ
رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ۭ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى
الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى
رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ
قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٤٣﴾

منزل٢

और हमने बनी इस्राईल को नदी पार उतार दिया तो वे ऐसे लोगों के पास पहुँचे जो अपनी मूर्तियों को पूजने में मगन थे, वे बोले ऐ मूसा! जैसे इन लोगों के पूज्य हैं वेसे ही हमारे लिए भी मूर्तियाँ बना दीजिए, उन्होंने कहा तुम बड़े जाहिल लोग हो (138) अरे यह तो जिसमें लगे हैं उस पर झाड़ू फिर जाने वाली है और जो कर रहे हैं वह सब ख़ाक में मिल जाने वाला है (139) कहा कि क्या अल्लाह को छोड़ कर मैं तुम्हारे लिए दूसरा ख़ुदा तलाश करूँ जब कि उसी ने तुम्हें संसारों पर प्रतिष्ठा प्रदान की[1] (140) और (याद करो) जब हमने तुम्हें फिरऔन की सेना से बचाया वह तुम्हें बहुत बुरी सज़ाएं दिया करते थे तुम्हारे लड़कों को मार डालते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा रखते थे और उसमें तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे लिए सख़्त परीक्षा थी (141) और हमने मूसा से तीस रातों का वादा किया और उनको दस से पूरा किया तब उनके पालनहार की अवधि चालीस रात पूरी हो गई और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा कि तुम मेरी क़ौम में मेरी जगह पर रहना और (हालात) बनाए रखना और बिगाड़ करने वालों का रास्ता मत चलना (142) और जब मूसा हमारी (निर्धारित) अवधि पर पहुँच गए और उनके पालनहार ने उनसे बात की वे बोले मेरे पालनहार! तू मुझे दीदार दे मैं तुझे देख लूँ, कहा तुम मुझे देख नहीं सकते अल्बत्ता पहाड़ को देखो फिर अगर वह अपनी जगह सलामत रह गया तो आगे तुम मुझे देख लोगे फिर जब उनके पालनहार ने पहाड़ पर प्रकाश डाला उसने पहाड़ को चकनाचूर कर दिया और मूसा बेहोश होकर गिर पड़े फिर जब उनको होश आया तो बोले तू पवित्र है मैं तुझसे तौबा करता हूँ और मैं सबसे पहले मानने वाला हूँ[2] (143)

---

(1) नदी पार उतरे तो देखा कि लोग गाय की मूर्ति की पूजा करते हैं, मिस्र में मुश्रिकों के बीच रहते वे भी ढीठ हो गये थे, देखते ही ललचा गए और हज़रत मूसा से मांग कर डाली, हज़रत मूसा ने बड़े शक्तिशाली शब्दों में इसकी भर्त्सना की और उनको शर्म दिलाई कि जिस अल्लाह ने तुम्हें फिरऔन से निजात दिलाई उसको छोड़ कर तुम्हें झूठे पूज्य (माबूद) अच्छे लग रहे हैं, आगे अल्लाह तआला खुद अपने ईनामों को जता रहा है (2) जब बनी इस्राईल को आज़ादी मिली तो स्थायी संविधान की ज़रूरत महसूस हुई, इसके लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा को तीस दिन और उसका पूरक दस दिन मिलाकर पूरे चालीस दिन तूर पहाड़ पर एतिकाफ़ और इबादत का आदेश दिया, तीस दिन पूरा महीना और बड़ी अवधि है लेकिन चालीस दिन में स्वभाव/वास्तविकता परिवर्तित हुआ करती है इसलिए इसका विशेष महत्व है, जब मूसा पहुँचे तो अल्लाह ने उनको तौरेत दी और बात की, इसके स्वाद में हज़रत मूसा ऐसे लीन हुए कि अल्लाह के दर्शन की मांग कर दी, दुनिया में इसको बर्दाश्त करना संभव न था अल्लाह ने पहाड़ पर केवल एक प्रकाश ही डाला था कि वह चूर–चूर हो गया और मूसा बेहोश हो गये होश में आये तो माफ़ी मांगने लगे।

قَالَ يٰمُوْسٰۤى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ وَ
بِكَلَامِىْ ۖ فَخُذْ مَاۤ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ وَكَتَبْنَا
لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ
شَىْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ؕ
سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۱۴۵﴾ سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِىَ الَّذِيْنَ
يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ
لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ
وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَىِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿۱۴۶﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ
اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۷﴾ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ
حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ
وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۸﴾ وَلَمَّا
سُقِطَ فِىْۤ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ
لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۱۴۹﴾

منزل ٢

उसने कहा ऐ मूसा! मैंने तुम्हें अपने संदेश देकर और बात करके लोगों में चुन लिया, बस मैंने जो तुम्हें दिया है उसको पकड़ लो और शुक्र करो (144) और तख़्तियों में हमने उनके लिए सारी चीज़ों से सम्बन्धित नसीहत और हर चीज़ का विवरण लिख दिया, बस उसको मज़बूती से थाम लो और अपनी क़ौम को भी कह दो कि वे इसकी अच्छी बातें अपनाएं[1], अब आगे मैं तुम्हें अवज्ञाकारियों की जगह दिखा दूँगा[2] (145) मैं जल्द ही अपनी आयतों से ऐसे लोगों को फेर दूँगा जो ज़मीन में नाहक अकड़ते हैं और अगर वे हर तरह की निशानी देख भी लें तब भी उसको न मानें और अगर वे सीधा रास्ता देखें तो उसे रास्ता न बनाएं और अगर टेढ़ा रास्ता देखें तो उसी को रास्ता बना लें, यह इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और वे उनसे गाफ़िल रहे (146) और जिन्होंने हमारी निशानियों और आख़िरत की मुलाक़ात को झुठलाया उनके सब काम बेकार गए, वही तो बदला उनको मिलेगा जो वे करते रहे हैं[3] (147) और मूसा की क़ौम ने उनके बाद अपने गहनों से एक बछड़ा बनाया (वह) एक पुतला था जिसमें गाय की आवाज़ थी, क्या उन्होंने यह नहीं देखा कि वह न उनसे बात करता है और न कोई रास्ता दिखाता है, उन्होंने उसको बनाकर (अपने ऊपर बड़ा) ज़ुल्म किया (148) और जब उनके हाथों के तोते उड़ गए और समझ गए वे कि वे भटक गए हैं तो वे बोले कि अगर हमारे पालनहार ने हम पर कृपा न की और हमें माफ़ न कर दिया तो हम ज़रूर नुकसान उठा जाएंगे[4] (149)

(1) अल्लाह तआला ने तूर पर हज़रत मूसा को तौरेत प्रदान की और शुक्र करने पर ज़ोर दिया कि दर्शन तो न हो सका लेकिन यही क्या कम है कि पैग़म्बर बनाया गया और तौरेत दी गई और यह भी आदेश हुआ कि क़ौम को भी इसके अनुसरण का आदेश दो ताकि वे उसके अच्छे आदेशों पर चलें "बिअह्सनिहा" से या तो इससे अवगत करना है कि इसके सब ही आदेश अच्छे हैं या रुख़सत के मुकाबिले अज़ीमत वाले कामों की ओर इशारा और उनको अपनाने का आदेश है (2) यानी आखिरत में दोज़ख और दुनिया में तबाही व अपमान यही नाफरमानों की जगह है, कुछ तफसीर लिखने वाले कहते हैं कि इससे फिलिस्तीन का क्षेत्र मुराद है जो उस समय "अमालेकह" क़ौम के कब्ज़े में था और दिखाने का आशय यह कि वह इलाक़ा बनी इस्राईल के कब्ज़े में आ जाएगा जैसा कि बाद में हुआ (3) यह वे अवज्ञाकारी हैं जिन की प्रवृत्ति में अवज्ञा दाख़िल है, घमण्ड उनको अनुमति नहीं देता कि वह नबियों की बात मानें, कैसी ही निशानी देखें टस से मस न हों, हिदायत की सड़क कितनी ही साफ़ और चौड़ी हो उस पर न चलेंगे हाँ, गुमराही के रास्तों पर वासनाओं के पीछे दौड़ते चले जाएं (4) हज़रत मूसा के तूर पहाड़ पर जाने के बाद बनी इस्राईल ने एक बछड़ा तैयार कर लिया और लगे उसको पूजने, हज़रत हारून ने लाख समझाया लेकिन किसी तरह भी वे उसको छोड़ने पर तैयार न हुए।

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰٓ إِلَىٰ قَوْمِهِۦ غَضْبَٰنَ أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا
خَلَفْتُمُونِى مِنۢ بَعْدِىٓ ۖ أَعَجِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۖ وَأَلْقَى ٱلْأَلْوَاحَ
وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُۥٓ إِلَيْهِ ۚ قَالَ ٱبْنَ أُمَّ إِنَّ ٱلْقَوْمَ
ٱسْتَضْعَفُونِى وَكَادُوا۟ يَقْتُلُونَنِى فَلَا تُشْمِتْ بِىَ ٱلْأَعْدَآءَ وَ
لَا تَجْعَلْنِى مَعَ ٱلْقَوْمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿١٥٠﴾ قَالَ رَبِّ ٱغْفِرْ لِى وَلِأَخِى وَ
أَدْخِلْنَا فِى رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنتَ أَرْحَمُ ٱلرَّٰحِمِينَ ﴿١٥١﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا۟
ٱلْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۚ
وَكَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلْمُفْتَرِينَ ﴿١٥٢﴾ وَٱلَّذِينَ عَمِلُوا۟ ٱلسَّيِّـَٔاتِ ثُمَّ تَابُوا۟
مِنۢ بَعْدِهَا وَءَامَنُوٓا۟ إِنَّ رَبَّكَ مِنۢ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٥٣﴾
وَلَمَّا سَكَتَ عَن مُّوسَى ٱلْغَضَبُ أَخَذَ ٱلْأَلْوَاحَ ۖ وَفِى نُسْخَتِهَا
هُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ﴿١٥٤﴾ وَٱخْتَارَ مُوسَىٰ
قَوْمَهُۥ سَبْعِينَ رَجُلًا لِّمِيقَٰتِنَا ۖ فَلَمَّآ أَخَذَتْهُمُ ٱلرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ
لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُم مِّن قَبْلُ وَإِيَّٰىَ ۖ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ ٱلسُّفَهَآءُ
مِنَّآ ۖ إِنْ هِىَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَن تَشَآءُ وَتَهْدِى مَن
تَشَآءُ ۖ أَنتَ وَلِيُّنَا فَٱغْفِرْ لَنَا وَٱرْحَمْنَا ۖ وَأَنتَ خَيْرُ ٱلْغَٰفِرِينَ ﴿١٥٥﴾

منزل٢

और जब मूसा गुस्से और अफसोस में भरे हुए अपनी क़ौम के पास वापस आए[1] तो उन्होंने कहा तुमने मेरा बड़ा बुरा प्रतिनिधित्व किया, क्या तुम अपने पालनहार के आदेश की भी प्रतीक्षा न कर सके[2] , और तख्तियाँ तो उन्होंने एक ओर रखीं और अपने भाई का सिर पकड़ कर अपनी ओर खींचने लगे, वे बोले ऐ मेरी माँ के बेटे[3]! क़ौम ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि वे मुझे मार ही डालते अब दुश्मनों से आप मेरा मज़ाक न उड़वाइए और न मुझे जालिमों में मिलाइये (150) उन्होंने कहा ऐ मेरे पालनहार! मुझे और मेरे भाई को माफ़ कर दीजिए और अपनी कृपा में हमें दाख़िल कीजिए और आप सबसे बढ़कर कृपा करने वाले हैं[4] (151) बेशक जिन्होंने बछड़ा बनाया वे जल्दी ही अपने पालनहार के प्रकोप और दुनिया की जिन्दगी में अपमान का सामना करेंगे और हम झूठ गढ़ने वालों को ऐसी ही सज़ा देते हैं (152) और जिन्होंने बुराइयाँ कीं फिर उसके बाद तौबा कर ली और ईमान ले आए उसके बाद तो आपका पालनहार बहुत ही माफ़ करने वाला बड़ा दयालु है (153) और जब मूसा का गुस्सा ठंडा हुआ तो उन्होंने तख्तियाँ उठाईं और जो उनमें लिखा था उसमें उन लोगों के लिए हिदायत (मार्गदर्शन) व दया थी जो अपने पालनहार से डरते हैं (154) और मूसा ने हमारे (निर्धारित) समय के लिए अपने क़ौम के सत्तर मर्दों को चुना, फिर जब उन्हें भूकंप ने आ पकड़ा तो (मूसा ने) कहा कि ऐ मेरे पालनहार! अगर तू चाहता तो पहले ही उन्हें और मुझे बर्बाद कर देता, क्या तू हमारे नादानों की हरकत के कारण हमको बर्बाद कर देगा, यह तो तेरी ओर से परीक्षण है, इससे जिसे चाहे तू गुमराह करे और जिसको चाहे हिदायत (संमार्ग) दे, तू ही हमारा काम बनाने वाला है तू हमें माफ़ कर दे और हम पर दया कर और तू सबसे अच्छा माफ़ करने वाला है[5] (155)

(1) अल्लाह ने उन्हें बता दिया था कि सामरी ने तुम्हारी क़ौम को गुमराह कर दिया है (2) जिसकी अवधि केवल चालीस दिन थी (3) दया की भावना को उभारने के लिए ऐसा कहा वरना वे सगे भाई ही थे (4) हज़रत हारून से गहन पूछ ताछ हज़रत मूसा ने इसलिए की कि वह उनको ज़िम्मेदार बना कर गये थे जब उनकी विवशता का ज्ञान हुआ तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को शर्म आई और तख़्तियों को एक किनारे रख देने पर भी पछतावा हुआ तो अल्लाह से अपने लिए और अपने भाई के लिए क्षमा याचना की और तख़्तियाँ उठाईं और लोगों को समझाना–बुझाना शुरु किया (5) क़ौम ने हज़रत मूसा से कहा कि जब तक हम खुद अल्लाह की बात न सुन लेंगे न मानेंगे तो हज़रत मूसा ने सत्तर आदमियों को चुना और तूर पहाड़ पर ले गये, अल्लाह ने प्रार्थना स्वीकार कर ली और उन्होंने कलाम सुन लिया, फिर अल्लाह के दर्शन की फरमाइश कर दी इस पर तीव्र भूचाल आया और वे सब मुर्दा जैसे हो गए, इसपर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ की जो अल्लाह ने स्वीकार कर ली और सब कुशल–मंगल उठ खड़े हुए, इसका वर्णन पहले गुज़र चुका है ''सुम्म वअस्ना कुम मिम् बादि मौतिकुम ल अल्लकुम तश्कुरून'' (फिर तुम्हारे मरने के बाद हमने तुम्हें फिर उठा दिया ताकि तुम आभारी बनो)

وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا
هُدْنَآ اِلَيْكَ ؕ قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ
وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ
الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۵۶﴾ اَلَّذِيْنَ
يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا
عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ ؗ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ
وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ
الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ
عَلَيْهِمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَ
اتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۵۷﴾
قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعَا
الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ
وَيُمِيْتُ ۠ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ
يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ وَ
مِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾

منزل ۲

और हमारे लिए इस दुनिया में भी भलाई लिख दे और आख़िरत में भी, हम तेरी ही ओर झुके और उसने कहा मैं अपने अज़ाब में जिसको चाहता हूँ ग्रस्त करता हूँ और मेरी रहमत (कृपा) हर चीज़ को अपने घेरे में लिए हुए है, बस मैं उसे उन लोगों के लिए लिख दूँगा जो डरेंगे और ज़कात अदा करेंगे और जो हमारी आयतों में विश्वास रखेंगे (156) जो उस रसूल का अनुसरण करेंगे जो उम्मी[1] पैग़म्बर है जिसका (वर्णन) वे अपने पास तौरेत और इंजील में लिखा पाते हैं[2] जो उनको भलाई का आदेश देगा और उनको बुराई से रोकेगा और उनके लिए पवित्र चीज़ें हलाल करेगा और गंदी चीज़ें उन पर हराम करेगा और उनपर से उनके बोझ को और उन पर लदी हुई बेड़ियों[3] को उतारेगा बस जो उसको मानेंगे और उसका साथ देंगे और उसकी मदद करेंगे और उस नूर का अनुसरण करेंगे जो उसके साथ उतरा तो वही सफल होंगे[4] (157) कह दीजिए कि ऐ लोगो! मैं तुम सब की ओर उस अल्लाह का पैगम्बर हूँ जिसके पास आसमानों और ज़मीन की बादशाही है, उसके अलावा कोई पूज्य नहीं, वही जिलाता और मारता है, तो अल्लाह को मानो और उसके भेजे हुए उम्मी नबी को (मानो) जो अल्लाह पर और उसकी बातों पर विश्वास करता है और उसका अनुसरण करो ताकि तुम सही रास्ते पर आ जाओ (158) और मूसा की क़ौम में एक गिरोह वह भी है जो सत्य का रास्ता बताता है और उसी के अनुसार इन्साफ करता है[5] (159)

---

(1) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दुनिया व आख़िरत के लिए जो दुआ की थी वह बनी इस्राईल की अगली नस्लों के लिए भी थी इसलिए अल्लाह तआला ने उसको स्वीकार करने के समय स्पष्ट कर दिया कि बनी इस्राईल के जो लोग मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़माना पाएंगे उनको यह भलाई (नेकी) इस रूप में मिल सकेगी जब वह नबी–ए–उम्मी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाएं, फिर आगे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुणों का उल्लेख है, "उम्मी" या तो "उम" से संबंध रखता है कि जिस प्रकार बच्चा मां के पेट से पैदा होता है किसी का शिष्य नहीं होता उसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी के शिष्य नहीं रहे लेकिन ज्ञान, विद्या और तथ्य तथा रहस्य व वास्तविकताओं की वे चीज़ें बतायीं कि किसी भी प्राणी में इतनी शक्ति नहीं कि उनको बता सके। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को "उम्मी" कहा गया या यह "उम्मुल कुरा" की ओर संबंध हो जो कि मक्का मुअज़्ज़मा का उपनाम है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जन्म स्थली थी। (2) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगमन का शुभ संदेशों और गुणों और विशेषताओं का उल्लेख सब आसमानी किताबों में किया गया है और हजार काट–छाँट के बावजूद अब भी बाईबिल आदि में बहुत से संकेत पाए जाते हैं (3) यहूदियों पर जो उनकी अवज्ञा की वजह से आदेश कठोर कर दिये गये थे इस दीन (धर्म) में वह सारी चीज़ें आसान हुईं और जो अपवित्र चीज़ें उन्होंने हलाल (वैध) कर रखी थीं उनका हराम होना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ाहिर कर दिया, अतः बहुत से बोझ हलके कर दिये गये और बहुत से प्रतिबंध उठा लिए गये (4) इसका मतलब "वह्य" है (5) अधिकतर तो वे नहीं मानते लेकिन कुछ मानने वाले भी हैं जैसे अब्दुल्लाह पुत्र सलाम आदि।

وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ؕ وَاَوْحَيْنَاۤ اِلٰى
مُوْسٰۤى اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗۤ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ
فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ
مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ
الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَ
مَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ وَاِذْ قِيْلَ
لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ
شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ
لَكُمْ خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ؕ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۶۱﴾ فَبَدَّلَ
الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ
فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا
يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۶۲﴾ وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ
حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ
حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا
تَاْتِيْهِمْ ۚ كَذٰلِكَ ۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۳﴾

منزل ۲

और हमने उनको बारह बड़े–बड़े खानदानों में अलग अलग गिरोहों के रूप में बाँट दिया और जब उनकी क़ौम ने उनसे पानी मांगा तो हमने मूसा के पास वह्य भेजी कि अपनी लाठी पत्थर पर मारो बस उससे बारह स्रोत (चश्मे) फूट निकले, तमाम लोगों ने अपना अपना घाट पहचान लिया, और हमने बादलों से उन पर साया किया और उन पर मन्न व सलवा उतारा जो पवित्र चीज़ें हमने तुम्हें दे रखी हैं उनमें से खाओ और उन्होंने हमारा कुछ न बिगाड़ा और खुद अपना ही नुकसान करते रहे[1] (160) और जब उनसे कहा गया कि उस बस्ती में (जाकर) आबाद हो जाओ और वहां जहां चाहो खाओ (पियो) और कहते जाओ कि हम मग़फिरत (माफी) चाहते हैं और (शहर) के दरवाज़े से विनम्रता के साथ दाखिल हो जाओ तो हम तुम्हारी गलतियाँ माफ़ कर देंगे और हम अच्छे काम करने वालों को आगे और देंगे (161) तो उनमें अत्याचारियों ने जो उनसे कहा गया उसका कुछ का कुछ कर दिया तो हमने उनके अत्याचार के बदले में उन पर आसमान से अज़ाब उतारा[2] (162) और उनसे उस बस्ती के बारे में पूछिए जो समुद्र के सामने थी जब वे सनीचर के दिन हद से आगे बढ़ जाते थे, जब उनके सनीचर का दिन होता तो मछलियाँ ऊपर आतीं और जब वे सनीचर का दिन न मना रहे होते तो न आतीं, इस तरह हम उनकी परीक्षा लेते, इसलिए कि वे अवज्ञा किया करते थे[3] (163)

(1) सैना घाटी में जब पानी और खाने की समस्या उत्पन्न हुई तो अल्लाह ने एहसान किया और उनमें बारह बड़े परिवार बना कर प्रधान निर्धारित किये और हर परिवार के लिए मुअ्जिजे (ईलाही चमत्कार) के रूप में पानी की व्यवस्था की और मन्न व सलवा उतारा, बादलों से उन पर छाया किया और हर प्रकार से अच्छी–अच्छी चीजें दीं लेकिन वे नाशुक्री (कृतघ्नता) करते रहे (2) फिलिस्तीन जो उनका पैतृक देश था वहाँ जाकर जिहाद करने का आदेश हुआ और विजय का आश्वासन दिया गया तो भी इस क़ौम ने इससे इनकार कर दिया और कोई बात न मानी, विनम्रतापूर्वक प्रवेश करने का आदेश था तो अकड़ते हुए प्रवेश किया, माफ़ी की प्रर्थना करते हुए प्रवेश करने का आदेश था तो मज़ाक करते हुए प्रवेश किया (3) ईला के वासियों की यह कहानी है, अवज्ञा की उनको आदत थी, शनिवार का दिन यहूदियों में केवल उपासना (इबादत) का था उस दिन और कोई काम उनके लिए वैध न था, अल्लाह परीक्षा लेना चाहता था, शनिवार के दिन मछिलयाँ बहुत आतीं, रविवार को ग़ायब हो जातीं, उन्होंने पाखण्ड किया और पानी काट कर खेत बना लिये, शनिवार को जब मछलियाँ खूब आ गईं तो रास्ते बन्द कर दिये और रविवार को खूब शिकार किया, अल्लाह ने इस पर कठोर अजाब (दण्ड) भेजा और उनको बन्दर बना दिया गया।

और जब उनमें कुछ बोले कि तुम ऐसी क़ौम को क्यों नसीहत करते हो जिसको अल्लाह हलाक करने वाला है या उनको कठोर अज़ाब देने वाला है, उन्होंने कहा कि तुम्हारे पालनहार के दरबार में जिम्मेदारी से बरी होने के लिए और इसलिए कि शायद वे डरें (164) फिर जब यह लोग वह बात भुला बैठे जिसकी उन्हें नसीहत की गई थी तो जो लोग बुराइयों से रोका करते थे उनको हमने बचा लिया और अत्याचारियों को उनकी लगातार अवज्ञा के बदले में एक बहुत ही बुरे अज़ाब में ग्रस्त किया[1] (165) फिर जिस चीज़ से उनको रोका गया उससे जब वे आगे बढ़ गए तो हमने उनसे कहा कि अपमानित बन्दर बन जाओ[2] (166) और जब आपके पालनहार ने आगाह किया कि वह क़यामत तक उन पर ऐसे को अवश्य नियुक्त रखेगा जो उनको कठोर यात्नायें देता रहेगा[3], बेशक आपका पालनहार बहुत जल्द सज़ा देने वाला भी है और बेशक वह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयावान भी है (167) और हमने उनको ज़मीन में संप्रदायों में बांट कर रख दिया, उनमें भले भी थे और उनमें उसके अलावा (बुरे) भी थे और नेमतों और मुसीबतों से हमने उनकी परीक्षा ली कि शायद वे रुक जाएं (168) फिर उनके बाद अयोग्य लोग आए वे किताब के वारिस हुए, वे इस साधारण जीवन का सामान लेते और कहते कि हमारी तो मग्फ़िरत (माफ़ी) हो जाएगी और अगर फिर उनको वैसा ही सामान मिलता तो ले लेते[4], क्या उनसे किताब के विषय में प्रण (अहद) नहीं लिया गया कि वे अल्लाह पर सिवाय सच के कुछ न कहेंगे और उसमें जो लिखा है वह उन्होंने पढ़ भी लिया और परहेज़गारों के लिए तो आख़िरत की जिन्दगी ही बेहतर है, क्या फिर तुम इतनी भी बुद्धि नहीं रखते (169) और जिन्होंने किताब को थाम रखा है और उन्होंने नमाज़ कायम की है तो हम सुधार रखने वालों के बदले को बिल्कुल बर्बाद नहीं करते (170)

(1) उनमें तीन प्रकार के लोग हो गये एक बुराईयाँ करने वाले एक रोकने वाले और एक वे जो अलग–थलग रहे, आयत के आरम्भ में उन्हीं लोगों की बात कही जा रही है, बस अवज्ञाकारी तबाह किए गये और रोकने वालों को बचा लिया गया, जिस तीसरे वर्ग ने बुराई से रोकने से खामोशी अपनाई उसका अंजाम क्या हुआ उस का यहाँ कोई उल्लेख नहीं है उन्होंने खामोशी अपनाई तो अल्लाह ने भी उनके बारे में खामोशी अपनाई, लेकिन चूंकि वे बुराई को बुरा समझते थे इसलिए आशा उनकी निजात (माफ़ी) की भी है इसलिए कि यह बुराई से रोकने "नही अनिल मुनकर" की तीसरी सबसे कमज़ोर श्रेणी है कि आदमी अगर नहीं कह सकता तो दिल से बुरा समझे (2) ऐसा मालूम होता है कि यह आयत पिछली आयत की व्याख्या है कि यही सबसे बुरा अज़ाब था या शुरु में कुछ कठोर अज़ाब आया होगा जब अवज्ञा (नाफरमानी) में सब सीमाएं लांघ गए तो बन्दर बना दिये गये (3) यहूदियों का पूरा इतिहास अपमान तिरस्कार से भरा हुआ है हर युग में उन्हें अधीनता का अपमान उठाना पड़ा है, कुछ दशकों से उनको अमरीका के दामन में शरण मिली हुई है (4) घूसखोरी प्रकृति में समाई हुई थी, पैसा लेकर शरीअत (ईलाही विधान) के आदेश को बदल देते और विश्वास रखते कि हम अल्लाह के प्रिय हैं हम पकड़े नहीं जाएंगे इसलिए आगे भी घूस लेने की इच्छा रखते थे हांलांकि उनसे वचन लिया जा चुका था कि वे सत्य बात ही कहेंगे और तौरेत उनके सामने भी थी मगर फिर भी वे बाज़ न आते थे, हाँ! उनमें कुछ लोग थे जो सत्य पर कायम थे।

وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ
خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧١﴾ وَ
إِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَ
أَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَىٰ شَهِدْنَا أَنْ
تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَٰذَا غَافِلِينَ ﴿١٧٢﴾ أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا
أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِنْ بَعْدِهِمْ أَفَتُهْلِكُنَا
بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُونَ ﴿١٧٣﴾ وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ وَلَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ﴿١٧٤﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِي آتَيْنَاهُ آيَاتِنَا فَانْسَلَخَ
مِنْهَا فَأَتْبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿١٧٥﴾ وَلَوْ شِئْنَا
لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَٰكِنَّهُ أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَمَثَلُهُ
كَمَثَلِ الْكَلْبِ إِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ أَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ
ذَٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَاقْصُصِ
الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٧٦﴾ سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِينَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَأَنْفُسَهُمْ كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٧٧﴾ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ
فَهُوَ الْمُهْتَدِي وَمَنْ يُضْلِلْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٧٨﴾

ع ٢١ — معانقة ٤ عند المتاخرين ١٢

منزل ٢

और जिस समय हमने पहाड़ उनके ऊपर उठा दिया जैसे वह छत्र (सायबान) हो और वे समझे कि वह उन पर गिर ही पड़ेगा (उस समय हमने कहा) जो कुछ भी हमने तुम्हें दिया है उसको मज़बूती के साथ पकड़ लो और उसमें जो है उसको याद रखो ताकि तुम सावधानी बरतो[1] (171) और जब आपके पालनहार ने आदम की संतान की पीठों से उनका वंश निकाला और खुद उनसे अपनी जानों पर इकरार लिया कि क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ, वे बोले क्यों नहीं, हम इस पर गवाह हैं (यह इसलिए किया) कि कयामत के दिन कभी तुम कहने लगो कि हमें तो इसका पता ही न था (172) या यह कहने लगो कि पहले हमारे बाप दादा ने शिर्क किया और हम उनके बाद (उन्हीं की) संतान हैं तो क्या गुमराहों ने जो किया तू उसके बदले में हमको हलाक करेगा[2] (173) और इस प्रकार हम आयतें खोल–खोल कर बयान करते हैं कि शायद वे लौट आएं (174) और उनको उस व्यक्ति की कहानी सुना दीजिए जिसको हमने अपनी निशानियाँ दीं तो वह उनसे निकल भागा फिर शैतान उसके पीछे लग गया तो वह गुमराहों में हो गया[3] (175) और अगर हम चाहते तो उन (निशानियों) से उसको बुलंदी प्रदान करते लेकिन वह ज़मीन का हो कर रह गया और अपनी इच्छा पर चला तो उसकी मिसाल कुत्ते की तरह है अगर तुम उस पर हमला करो तो हाँपे या उसको छोड़ दो तो हाँपे, यह उन लोगों की मिसाल है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तो यह कहानी उनको सुना दीजिए शायद वे सोचें (176) उन लोगों की बहुत बुरी मिसाल है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और वे अपना ही नुकसान करते रहे (177) जिसे अल्लाह राह चला दे वही हिदायत पर है और जिसको वह गुमराह कर दे तो वही लोग घाटे में हैं[4] (178)

(1) बनी इस्राईल ने तौरेत को देख कर कहा कि इसके आदेश सख़्त हैं हम अमल नहीं कर सकते, इस पर यह घटना घटी कि तूर पहाड़ उनके ऊपर कर दिया गया और कहा गया कि अगर नहीं मानते तो पहाड़ तुम पर गिरा दिया जाएगा, मजबूर हो कर उनको प्रण लेना पड़ा (2) विशेष प्रण के बाद अब आम प्रण का उल्लेख किया जा रहा है जिसको ''अहदे अलस्त'' भी कहते हैं, अल्लाह ने आदम की पीठ से उनकी संतान निकाली जब सब लोग सामने आ गए तो सबसे अपने पालनहार होने का प्रण लिया, यही वह प्रकृति है जो हर इंसान के भीतर अल्लाह ने रखी है, फिर वह परिस्थितियों से प्रभावित होकर सब कुछ भुला देता है तो अगर कोई बाप–दादा की दुहाई देता है और अपने शिर्क को उनका अनुसरण करार देता है तो यह खुद उसकी ग़लती है, उसको चाहिए था कि वह प्रकृति (फ़ितरत) को मालूम करता जो नबियों ने हमेशा बतायी है और आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको बहुत स्पष्ट रूप से बताया है और उसी पर चल कर अपने पैदा करने वाले का हक़ अदा करता और अपने लिए नजात का सामान तैयार करता और उस पर चलता (3) अधिकतर व्याख्याकारों ने इसको बलअम पुत्र बाऊरा की कहानी क़रार दिया है जो हज़रत मूसा की क़ौम में बड़ा विद्वान (आलिम) था बाद में अल्लाह की आयतों और हिदायतों को छोड़ कर दौलत और औरत के चक्कर में आकर मूसा के मुकाबले में आ गया और हमेशा के लिए मरदूद हो गया, अगर उसको आयतों और हिदायतों पर अमल की तौफ़ीक होती तो उत्कृष्ट पदवी प्राप्त होती लेकिन उसकी मिसाल कुत्ते से दी गई है कि हर हाल में उसकी ज़ुबान लोभ में निकली रहती है इसमें बड़ी शिक्षा है उलमा–ए–सू (बुरे इस्लामी विद्वानों) के लिए जो सब कुछ ज्ञान रखते हुए भी लालच और लोभ में पड़ जाते हैं (4) आदमी कभी अपने ज्ञान पर गर्व न करे हमेशा अल्लाह से हिदायत (संमार्ग) मांगता रहे।

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ لَهُمْ قُلُوبٌ لَّا
يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَّا
يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٧٩﴾
وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا ۖ وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ
فِي أَسْمَائِهِ ۚ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٨٠﴾ وَمِمَّنْ خَلَقْنَا أُمَّةٌ
يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿١٨١﴾ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٢﴾ وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي
مَتِينٌ ﴿١٨٣﴾ أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا ۗ مَا بِصَاحِبِهِم مِّن جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ
مُّبِينٌ ﴿١٨٤﴾ أَوَلَمْ يَنظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ
اللَّهُ مِن شَيْءٍ وَأَنْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ۖ فَبِأَيِّ
حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٥﴾ مَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ ۚ وَ
يَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٨٦﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ
مُرْسَاهَا ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ رَبِّي ۖ لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ ۚ ثَقُلَتْ
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً ۗ يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ حَفِيٌّ
عَنْهَا ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ اللَّهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٧﴾

منزل ٢

और हमने दोज़ख के लिए बहुत से जिन्नात और इंसान पैदा किये हैं उनके दिल हैं, जिनसे वे समझते नहीं और आँखें हैं जिनसे वे देखते नहीं और कान हैं जिनसे वे सुनते नहीं, वे तो जानवरों की तरह हैं बल्कि उनसे गये गुज़रे हैं, वही लोग गाफ़िल (अचेत) हैं[1] (179) और अल्लाह के अच्छे अच्छे नाम हैं तो उन्हीं से उसको पुकारो और जो उसके नामों में टेढ़ अपनाते हैं उनको छोड़ दो जो वे कर रहे हैं उसकी सज़ा उनको जल्द ही मिल जाएगी[2] (180) और हमारे पैदा किए हुए लोगों में एक वह उम्मत (सम्प्रदाय) है जो सत्य का मार्ग बताती है और उसी के अनुसार इंसाफ़ करती है[3] (181) और जिन्होंने हमारी आयतें झुठलाईं हम उनको धीरे–धीरे ऐसी जगहों से पकड़ेंगे कि वे जान भी न पाएंगे (182) और मैं उनको ढील देता हूँ बेशक मेरा दांव पक्का है[4] (183) क्या वे विचार नहीं करते कि उनके साथी को कुछ भी दीवानगी नहीं वे तो खुलकर डराने वाले हैं (184) क्या उन्होंने आसमानों और ज़मीन की बादशाही में और जो चीज़ें भी अल्लाह ने पैदा कीं उनमें विचार नहीं किया और यह (नहीं सोचा) कि शायद उनका काल करीब ही आ पहुँचा हो, इसके बाद वे किस बात को मानेंगे (185) अल्लाह जिसको गुमराह कर दे उसको कोई हिदायत देने वाला नहीं वह उनको उनकी सरकशी (उदण्डता) में भटकता छोड़ देता है[5] (186) वे आपसे क़यामत के बारे में पूछते रहते हैं कि कब उसके आने का समय है, कह दीजिए उसका ज्ञान तो मेरे पालनहार के पास है वही अपने समय पर उसको ज़ाहिर कर देगा, आसमानों और ज़मीन पर वह भारी है, अचानक ही वह तुम पर आ जाएगी, वे आपसे ऐसा पूछते हैं कि मानो आप उसकी खोज में हैं कह दीजिए उसका पता अल्लाह ही को है लेकिन अधिकतर लोग बेख़बर हैं (187)

---

(1) न प्रकृति की निशानियों में विचार करते हैं न अल्लाह की आयतों का पैनी नज़र से अध्ययन करते हैं और अल्लाह की बातों को दिल खोल कर सुनते हैं जिस तरह जानवर केवल खाने–पीने और पाश्विक भावनाओं में सीमित होते हैं यही हाल उन लोगों का है और जानवरों का हाल भी यह है कि मालिक बुलाए तो आ जाते हैं, ये तो उनसे भी गए गुज़रे हैं अपने असली मालिक की ओर निगाह उठा कर नहीं देखते, यही वे लोग हैं जो मानो दोज़ख के लिए पैदा हुए हैं (2) ग़ाफ़िलों के उल्लेख के बाद अब ईमान वालों को चेताया जा रहा है कि वे हमेशा खुदा को याद रखें और उसके नामों में ग़ाफ़िलों की तरह टेढ़ न अपनाएं (3) यह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत (समुदाय) का उल्लेख है जिसको खैर–ए–उम्मत (सबसे अच्छा समुदाय) कहा गया और जिस का काम अच्छाई का आदेश देना और बुराई से रोकना है (4) अपराधियों को कभी–कभी तुरन्त सज़ा नहीं दी जाती, ढील दी जाती है फिर जब वे पूरी तरह गुमराही में डूब जाते हैं तो अचानक सख़्त पकड़ होती है (5) सारी निशानियाँ अल्लाह की कुदरत की मौजूद हैं खुद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने सारे गुणों के साथ उनकी आँखों के सामने हैं, इसके बावजूद वे मानते नहीं और आपको पागल कहते हैं (मआज़ल्लाह), बस अल्लाह जिसको गुमराह कर दे कौन उसको राह पर ला सकता है।

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِىْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ
كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۛۚ وَمَا مَسَّنِىَ
السُّوْٓءُ ۛۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۱۸۸﴾ هُوَ الَّذِىْ
خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ
فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ
دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۸۹﴾
فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ
عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹۰﴾ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۫ ﴿۱۹۱﴾
وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿۱۹۲﴾ وَاِنْ
تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ
اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿۱۹۳﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿۱۹۴﴾ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ
بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ
بِهَا ؕ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿۱۹۵﴾

منزل۲

यह भी आप बता दीजिए कि मैं अपने लिए कुछ भी नफ़ा–नुक़सान का मालिक नहीं सिवाय इसके कि जो अल्लाह चाहे और अगर मैं गैब (परोक्ष) की बात जानता तो बहुत कुछ अच्छी–अच्छी चीज़ें जमा कर लेता, और मुझे तकलीफ़ भी न पहुँचती, मैं तो उन लोगों के लिए डराने वाला और शुभ समाचार सुनाने वाला हूँ जो मानते हैं[1] (188) वही है जिसने तुम को एक अकेली जान से पैदा किया और उससे उसका जोड़ा बनाया ताकि उससे वह चैन–सुकून प्राप्त करे फिर जब उसने उसको ढ़ाँप लिया तो उससे हलका सा गर्भ धारण हुआ तो वह उसी में चलती फिरती रही फिर जब उसे बोझ हुआ तो दोनों ने अपने पालनहार से दुआ की अगर तूने स्वस्थ (संतान) हमें दे दी तो ज़रूर हम आभारी होंगे (189) फिर जब उसने उनको स्वस्थ (संतान) दे दी तो उनको जो अल्लाह ने दिया उसमें वे उसका साझी ठहराने लगे तो अल्लाह उनके साझी से पाक है[2] (190) क्या वे उसको साझी बनाते हैं जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकता और खुद उनको पैदा किया गया है (191) और न वे उनकी सहायता कर सकते हैं और न ही अपनी मदद कर सकते हैं (192) और अगर तुम उनको सही रास्ते की ओर बुलाओ तो वे तुम्हारे पीछे न चलेंगे, उनके लिए बराबर है तुम उनको बुलाओ या खामोश रहो (193) बेशक अल्लाह को छोड़कर तुम जिस को भी पुकारते हो वे तुम्हारे जैसे बन्दे (उपासक) हैं, बस तुम उन्हें पुकारो तो अगर तुम सच्चे हो तो उन्हें तुम्हारी दुआ कुबूल करनी चाहिए (194) क्या उनके पैर हैं जिनसे वे चलते हैं या उनके हाथ हैं जिनसे वे पकड़ते हैं या उनकी आँखें हैं जिनसे वे देखते हें या उनके कान हैं जिनसे वे सुनते हैं, कह दीजिए कि तुम अपने सहभागियों को बुला लाओ फिर मेरे खिलाफ़ चाल चलो और मुझे मोहलत मत दो[3] (195)

---

(1) ऊपर सबसे छिपी हुई चीज़ कयामत का वर्णन था और बता दिया गया था कि उसके समय का ज्ञान किसी को हो ही नहीं सकता, यहाँ साधारण रूप से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहलवाया जा रहा है कि मैं ढकी–छिपी बातों को नहीं जानता अगर जानता होता तो मुझे किसी अवसर पर कोई परेशानी न होती, मैं तो रास्ता बताने के लिए आया हूँ (2) हज़रत आदम व हव्वा के पैदा होने का उल्लेख किया फिर एक उदाहरण दिया कि मर्द औरत से संबंध बनाता है तो गर्भ धारण होता है, शुरु में आसानी रहती है फिर बोझ होता है तो दोनों अल्लाह से दुआ करते हैं, फिर जब स्वस्थ संतान अल्लाह प्रदान करता है तो वे अल्लाह को छोड़ कर दूसरे पर चढ़ावा चढ़ाते हैं और शिर्क करने लग जाते हैं (3) जिन मूर्तियों को तुमने उपास्य ठहराया है वे तुम्हारे काम तो क्या आते स्वयं अपनी रक्षा में भी असमर्थ हैं और उन खूबियों से भी वंचित हैं जो खुद तुम्हें प्राप्त हैं, तुम सुन सकते हो, अपने हाथ पांव हिला सकते हो वे कुछ नहीं कर सकते, तुम चीख–चीख कर थक जाओ एक शब्द अपनी ज़बान से निकाल नहीं सकते, मक्खी बैठ जाए तो उड़ाने में सक्षम नहीं फिर इसपर धमकियां देते हो कि उनका खण्डन छोड़ दो वरना संकट में पड़ जाओगे, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान से अल्लाह कहता है कि अपने सब उपास्यों को बुला लो वे सब मिलकर मेरे खिलाफ़ कार्यवाही कर लें।

मंज़िल २

बेशक मेरा हिमायती (समर्थक) अल्लाह है जिसने किताब उतारी और वह नेक बन्दों की हिमायत (समर्थन) करता है (196) और तुम उसके अलावा जिनको पुकारते हो वे तुम्हारी सहायता नहीं कर सकते और न ही वे अपने काम आ सकते (197) और अगर तुम उनको सत्य मार्ग की ओर बुलाओ तो वे सुनेंगे ही नहीं और आप उन्हें देखेंगे कि वे आपको ताक रहे हैं हालांकि वे देख नहीं सकते (198) माफ़ी का रवैया बनाइये, भलाई को करते रहिए और नादानों से किनारा कीजिए (199) और अगर कभी आपको शैतान का कचोका लगे तो अल्लाह की पनाह लीजिए बेशक वह खूब सुनने वाला खूब जानने वाला है[1] (200) बेशक परहेज़गारों का हाल यह है कि जब भी शैतान की ओर से ख़्याल छूकर भी गुज़रता है तो वे चौंक जाते हैं बस उनकी आँखें खुल जाती हैं (201) और जो उनके भाई बन्द हैं (शैतान) उनको गुमराही की ओर खींचे लिए जाते हैं फिर वे कमी नहीं करते[2] (202) और जब आप उनके पास कोई निशानी नहीं लाते तो वे कहते हैं आप क्यों न कोई निशानी चुन लाए, आप कह दीजिए मैं तो उसी के पीछे चलता हूँ जो वह्य मेरे पालनहार के पास से मुझ पर आती है, यह आपके पालनहार की ओर से बसीरत (अंतदृष्टि) की बातें हैं और हिदायत (संमार्ग) व रहमत (कृपा) है मानने वालों के लिए (203) और जब भी कुरआन पढ़ा जाए तो कान लगाकर उसे सुनो और खामोश रहो ताकि तुमपर कृपा हो[3] (204) और आप मन ही मन में सुबह व शाम अपने पालनहार को विनम्रता और भय के साथ याद करते रहिए और ऐसी आवाज़ से जो पुकार कर बोलने से कम हो, और बेख़बर न हो जाइए (205) जो भी आपके पालनहार के पास हैं वे उसकी बन्दगी से अकड़ते नहीं और उसकी पवित्रता बयान करते हैं और उसी को सज्दा करते हैं (206)

---

(1) पिछली आयतों में मूर्तिपूजकों को जो जाहिल और मूर्ख घोषित किया गया बहुत सम्भव था कि वे जाहिल इस पर गुस्सा होकर अशोभनीय हरकत करते इसीलिए माफ़ करने को कहा जा रहा है और अगर किसी समय मानवीय प्रवृत्ति के कारण उनकी किसी बुरी हरकत पर गुस्सा आए और शैतान चाहे कि दूर से छेड़ करके किसी हानिकारक कार्य पर तैयार कर दे जो उनके खुलक–ए–अज़ीम (महान सद्व्यवहार) को देखते हुए गिरी बात हो तो आप तुरन्त अल्लाह की शरण मांगिये, आपकी पवित्रता और मर्यादा के सामने उनकी कोई भी चाल सफल न होगी (2) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो मासूम (गुनाहों से सुरक्षित) हैं, शैतान का गुज़र वहाँ हो ही नहीं सकता, हाँ! परहेज़गारी का हाल यह है कि जब कभी शैतान अपना काम करना चाहता है तुरन्त सावधान हो जाते हैं और उसके नुकसान निगाहों के सामने आ जाते हैं और वे अल्लाह की शरण में आ जाते हैं और जो शैतान के भाई हैं शैतान उनको बहकाने में कोई कमी नहीं करता और यह लोग भी शैतान के अनुसरण में लगे रहते हैं (3) काफ़िर केवल ज़िद में विभिन्न प्रकार के मुअजिज़ों की मांग में लगे रहते हैं, यहाँ संकेत है कि कुरआन से बड़ा मुअजिज़ा (इलाही चमत्कार) और कौन सा होगा इसको ध्यान और शांति से सुनो, फिर आगे साधारण ज़िक्र (अल्लाह की याद) के कुछ शिष्टताओं का बयान हुआ है, फिर फरिश्तों का उदाहरण दिया गया है जो किसी समय भी अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल (असावधान) नहीं होते।

سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسٌ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّعَشْرُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝١ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ
قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى
رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝٢ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا
رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ
دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝٤ كَمَآ
اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۪ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
لَكٰرِهُوْنَ ۝٥ يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ
اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝٦ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى
الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ
تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ
الْكٰفِرِيْنَ ۝٧ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝٨

منزل٢

सूरह अन्फ़ाल

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

वे आपसे ग़नीमत के मालों का आदेश पूछते हैं आप कह दीजिए कि ग़नीमत के माल अल्लाह के और उसके पैग़म्बर के हैं तो तुम अल्लाह से डरते रहो और आपस में सुलह रखो और अल्लाह और उसके पैग़म्बर का आदेश मानो अगर तुम सचमुच ईमान वाले हो (1) ईमान वाले तो वे हैं कि जब अल्लाह का नाम आता है तो उनके दिलों की धड़कन तेज़ हो जाती है और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वे उनका ईमान बढ़ा देती हैं और वे अपने पालनहार पर ही भरोसा करते हैं (2) जो नमाज़ क़ायम रखते हैं और हमारी दी हुई रोज़ी में से ख़र्च करते हैं (3) वही वास्तव में ईमान वाले हैं उनके लिए उनके पालनहार के पास (बुलंद) दर्जे हैं और मग़फ़िरत (गुनाहों से माफ़ी) है और इज़्ज़त की रोज़ी है[1] (4) जैसे आपको आपके पालनहार ने आपके घर से हक़ के साथ निकाला जब कि मुसलमानों में एक गिरोह को यह बात नापसंद थी (5) वे सही बात के सामने आ जाने पर भी आपसे उसके बारे में हुज्जत कर रहे थे मानो उनकी आँखों के सामने उनको मौत की ओर खींचकर ले जाया जा रहा हो[2] (6) और जब अल्लाह दो गिरोहों में से एक का तुमसे वादा कर रहा था कि वह तुम्हारे हाथ लगेगा और तुम चाहते थे कि जिसमें काँटा भी न चुभे वह तुम्हारे हाथ आए और अल्लाह चाहता था कि अपने कालिमों से सच को सच कर दिखाए और काफ़िरों की जड़ काट दे (7) ताकि सच को सच कर दिखाए और झूठ को झूठा करदे चाहे अपराधियों को बुरा ही लगे (8)

(1) यह सूरह मदनी है बद्र युद्ध के बाद उतरी, यह युद्ध सत्य व असत्य का पहला युद्ध था, मुसलमानों ने तेरह साल के जीवन में जो ज़ुल्म सहे और धैर्य व अडिगता का प्रदर्शन किया वह इतिहास की अद्भुत घटना है, पवित्र मदीना हिजरत के पश्चात मुसलमानों को मुकाबले की आज्ञा मिली और यह पहली जंग इस प्रकार हुई कि अबू सुफ़ियान अपने बड़े व्यापारी क़ाफ़िले के साथ शाम से वापस हो रहे थे, जिसका बड़ा मक़सद मुसलमानों के विरुद्ध संसाधन उपलब्ध करके उनको जड़ से उखाड़ फेंकना था, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब ख़बर मिली तो उन्होंने सहाबा से मश्विरा किया और एक गिरोह तैयार करके उस काफ़िले को रोकने के मकसद से निकले, उधर मक्का वालों को आपके निकलने की ख़बर मिली तो उन्होंने विधवत रूप से मुकाबले के लिए एक बड़ी सशस्त्र सेना रवाना की, इधर चूंकि विधवत रूप से जंग करना मक़सद न था इसलिए यह तीन सौ तेरह का छोटा सा गिरोह था और जंग के सामान भी न थे, दूसरी ओर एक हज़ार की सशस्त्र सेना थी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से मश्विरा किया कि दो जत्थे तुम्हारे सामने हैं एक व्यापारिक जत्था और दूसरा एक हज़ार की फ़ौज, अल्लाह का वादा है कि दोनों में से किसी एक पर अल्लाह तुमको विजय देगा, चूँकि जंग की तैयारी न थी इसलिए कुछ लोगों की राय क़ाफ़िले की ही हुई लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की राय सेना से मुकाबले की थी, बड़े–बड़े सहाबा ने भी इसी के लिए जान क़ुर्बान कर देने वाले भाषण दिये, फिर बद्र के स्थान पर अल्लाह तआला ने मुसलमानों को खुली जीत प्रदान की और सत्तर बड–बड़े क़ुरैश के सरदार मारे गये और इतने ही क़ैदी बनाए गये, ग़नीमत के माल के बारे में कुछ विवाद जैसी परिस्थिति उत्पन्न हुई थी इसीलिए इसके बारे में प्रश्न किया गया, इस पर यह आयतें उतरीं कि वह अल्लाह और उसके पैग़म्बर का है उनके आदेशानुसार बाँटा जाएगा, मुसलमानों को चाहिये कि वे आपस में सुलह रखें अपनी राय छोड़ कर केवल अल्लाह और उसके पैग़म्बर की बात मानें, ⟹

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَٰئِكَةِ مُرْدِفِينَ ﴿٩﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾ إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُم مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ وَيُذْهِبَ عَنكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ﴿١١﴾ إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَٰئِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا ۚ سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَن يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾ ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوهُمُ الْأَدْبَارَ ﴿١٥﴾ وَمَن يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٦﴾

منزل٢

जब तुम अपने पालनहार से फरियाद करने लगे तो उसने तुम्हारी फरियाद सुन ली कि मैं ज़रूर सिलसिलेवार एक हज़ार फरिश्तों से तुम्हारी मदद करूँगा[1] (9) और यह तो अल्लाह ने केवल तुम्हारी खुश ख़बरी के लिए और तुम्हारे दिलों को संतुष्ट करेन के लिए किया और मदद तो अल्लाह ही के पास से आती है, बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत (युक्ति) वाला है (10) और जब वह अपनी ओर से सुकून के लिए तुम पर ऊंघ डाल रहा था और तुम पर आसमान से पानी उतार रहा था ताकि उससे तुम्हें पवित्र कर दे और शैतान की नापाकी तुम से दूर कर दे और ताकि तुम्हारे क़दमों को जमा दे[2] (11) और जब आपका पालनहार फरिश्तों को यह आदेश भेज रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ तो तुम ईमान वालों के कदमों को जमाओ, मैं जल्द ही काफ़िरों के दिलों में आतंक डाल दूँगा तो गर्दनों के ऊपर से मारो और उनके पोर पोर पर मारो (12) यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर से दुश्मनी मोल ली है और जो कोई अल्लाह और उसके पैग़म्बर से दुश्मनी मोल लेता है तो बेशक अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है (13) यह तो तुम चखलो और जान लो कि इनकार करने वालों के लिए दोज़ख़ का अज़ाब है[3] (14) ऐ ईमान वालो! जब काफ़िरों से जंग के मैदान में मुठभेड़ हो तो उनको पीठ मत दिखाना (15) और जो कोई उस दिन उनको पीठ दिखाएगा तो वह अल्लाह का प्रकोप ले कर पलटेगा और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और वह बहुत ही बुरी जगह जा ठहरा सिवाए इसके कि वह जंग के लिए पैंतरा बदलने वाला हो या (अपनी) फ़ौज में जा मिलने वाला हो[4] (16)

⟹ अल्लाह का नाम बीच में आ जाए तो डर व भय से काँप उठें, आयतें सुनकर उनका ईमान बढ़ता रहे यहाँ तक कि वे केवल अल्लाह ही पर भरोसा रखें और उसी के नाम पर धन–दौलत ख़र्च करें (2) यानी सोचो कि शुरु से अंत तक कैसा अल्लाह का समर्थन प्राप्त रहा, अल्लाह ने बिल्कुल उचित और सही समय पर आपको मदीने से बाहर पहुँचाया फिर सेना से मुकाबला हुआ जब कि एक गिरोह का विचार था कि सेना से मुकाबला मौत के मुँह में जाने जैसा है, इसलिए वे आपसे हुज्जत कर रहे थे और वे चाहते थे कि जब अधिकार है तो काफ़िला ही हाथ आ जाए तो बेहतर है इसमें किसी नुक़सान का डर नहीं और अल्लाह का फ़ैसला यह हो रहा था कि इस छोटे जत्थे के द्वारा एक बड़ी सेना को पराजित कर ईमानवालों का रौब दिलों में बैठा दे और सत्य का बोलबाला हो अतः ज़रूरी नहीं कि आदमी जिसको फायदेमंद समझे वह फायदेमंद हो, फ़ायदा अल्लाह और उसके पैग़म्बर के अनुसरण (इताअत) में है।

(1) सूरह आले इमरान में फौजों की संख्या तीन से पाँच हज़ार की बयान हुई है, यहाँ एक हज़ार का जो उल्लेख है वह ऐसा मालूम होता है कि अग्रगामी सैन्य टुकड़ी है फिर एक–एक हज़ार करके पाँच बार फरिश्तों के दल आते रहे, यहाँ सिलसिलेवार का शब्द इसीलिए प्रयोग हुआ है, आगे यह भी कह दिया कि फरिश्तों को तो दिल के सुकून के लिए भेजा गया, करने वाला तो केवल अल्लाह है (2) हुआ यह कि काफ़िरों ने पानी की जगहों पर कब्ज़ा कर लिया, मुसलमान जहाँ थे वहाँ रेत बहुत थी, पांव धंसते थे, पानी न होने से वजू और नहाने की दिक्कत और इससे बढ़कर पानी पीने की कठिनाइयाँ, उस समय अल्लाह ने ज़ोर का पानी बरसाया, पानी की सुविधा हो गई और रेत जम गई, धूल–धक्कड़ से भी निजात मिली और चलने–फिरने की भी आसानी हो गई, दूसरी ओर काफ़िरों के क्षेत्र में फिसलन पैदा हो गई, इसके साथ ही अल्लाह ने ईमान वालों पर ऊंघ डाल दी, उसके बाद सारा भय समाप्त हो गया और दिल मज़बूत हो गए (3) यानी यह तो दुनिया में मार पड़ी, अल्लाह के आदेश से फरिश्तों ने भी मारा और आगे दोज़ख़ का अज़ाब है (4) जंग के मैदान से भागना घोर पाप है, हाँ! कोई पैंतरा बदलने के लिए और अधिक तैयारी के लिए पलटे तो कोई हरज नहीं, इसी तरह अगर सेना की कोई टुकड़ी अलग हुई फिर वह वापस आकर फ़ौज में मिलना चाहे तो यह सही है।

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۖ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَ
لٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٧﴾ ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٨﴾ اِنْ
تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَ
اِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ
وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَلَا
تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ
شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا
يَعْقِلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ۭ وَلَوْ
اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ
وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ
تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا
مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾

ع

منزل٢

तो तुमने उनको नहीं मारा लेकिन अल्लाह ने उनको मारा और जब आपने मिट्टी फेंकी तो आपने नहीं फेंकी बल्कि अल्लाह ने फेंकी और यह इसलिए कि वे अपने पास से ईमान वालों पर ख़ूब एहसान करे, बेशक अल्लाह ख़ूब सुनने वाला जानने वाला है[1] (17) यह सब तो हो चुका और अल्लाह इन्कार करने वालों की चाल को कमज़ोर कर के रहेगा (18) अगर तुम फ़ैसला चाहते हो तो फ़ैसला तो तुम्हारे पास आ चुका है और अगर तुम बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है और अगर तुमने दोबारा हरकत की तो हम भी वही करेंगे और तुम्हारा जत्था कुछ भी तुम्हारे काम नहीं आ सकता चाहे कितना ही ज़्यादा हो और अल्लाह तो ईमान वालों के साथ है[2] (19) ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके पैग़म्बर की बात मानो और उससे मुँह मत फेरो जब कि तुम सुन रहे हो (20) और ऐसों की तरह मत हो जाना जो कहते हैं कि हमने सुन लिया जब कि वे सुनते ही नहीं (21) अल्लाह के यहाँ जानवरों में सबसे बुरे वही बहरे गूँगे हैं जो बुद्धि से काम ही नहीं लेते (22) और अगर अल्लाह उनमें किसी भलाई को जानता तो ज़रूर उन्हें सुनवा देता और अगर सुनवा दे तो वे जरूर पीठ फेर कर उलटे भागें (23) ऐ ईमान वालो! जब अल्लाह और पैग़म्बर तुम्हें ऐसे काम पर बुलाएं जो तुम्हारे लिए जीवनदाई है तो उनकी बात मानो और जान लो कि अल्लाह इंसान और उसके दिल के बीच आड़े आ जाता है और उसी की ओर तुम को एकत्र होना है[3] (24) और उस फितने से बचो जो तुममें केवल ज़ालिमों पर नहीं आएगा और जान लो कि अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है[4] (25)

---

(1) जब घमासान की जंग छिड़ गई तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुट्ठी भर कंकरियाँ काफिरों की सेना पर फेंकी, ख़ुदा की कुदरत से उसके टुकड़े हर एक की आँख में पहुँचे, सब आँखें मलने लगे, यकायक मुसलमानों ने हमला कर दिया और अल्लाह ने विजय प्रदान की (2) मक्का के मुश्रिक कहा करते थे कि फ़ैसला कब होगा, उन्हीं को सम्बोधित करके कहा जा रहा है कि एक प्रकार का फ़ैसला तुम ने बद्र के मैदान में देख लिया कि कैसी चमत्कारिक रूप से तुम को कमज़ोर मुसलमानों से सज़ा मिली, तुम अगर नहीं माने तो याद रखो कि अल्लाह ईमान वालों के साथ है, तुम ही अपमानित होगे, आगे ईमान वालों को हिदायत दी जा रही है कि अल्लाह की मदद जब ही तुम्हारे साथ होगी जब तुम अल्लाह और उसके पैग़म्बर की बात मानोगे, अल्लाह के संविधान (शरीयत) का आदेश सुन लेने के बाद न मानना अल्लाह की मदद को लौटा देने वाली चीज़ है, यह काम मुनाफिकों और काफिरों का है कि अगर उनको सुनवा भी दिया जाए जब भी मुँह फेर कर भागें (3) फिर बल दे कर यह बात कही जा रही है कि अल्लाह और पैग़म्बर तुम्हें जिस काम की ओर बुलाते हैं जैसे जिहाद वगैरह, उसी में ज़िन्दगी है, पालन में देनी मत करो, ख़ुदा जाने दिल कब किस ओर फिर जाए, अगर तुमने सुस्ती और कोताही की तो हो सकता है अल्लाह दिल पर मोहर लगा दे (4) अगर कोई बुराई फैलती है और तुम उसको नहीं रोकते तो उसके वबाल से तुम भी बच नहीं सकते तुम दामन बचाओगे बद दिली फैलेगी शिकस्त होगी तो उसका भुगतान तुम्हें भी भुगतना पड़ेगा।

وَاذْكُرُوا إِذْ أَنتُمْ قَلِيلٌ مُّسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ
أَن يَتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَآوَاكُمْ وَأَيَّدَكُم بِنَصْرِهِ وَرَزَقَكُم
مِّنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٢٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا
تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا أَمَانَاتِكُمْ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾
وَاعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَأَنَّ اللَّهَ
عِندَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَتَّقُوا اللَّهَ
يَجْعَل لَّكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَ
اللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾ وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا
لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ
وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ﴿٣٠﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا
قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَٰذَا إِنْ هَٰذَا إِلَّا
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣١﴾ وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِن كَانَ هَٰذَا
هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِندِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَاءِ
أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنتَ
فِيهِمْ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿٣٣﴾

ع

منزل٢

और याद करो जब तुम थोड़े थे, मुल्क में बे हैसियत थे डरते थे कि लोग तुम्हें उचक ले जाएंगे तो उसने तुम्हें ताक़त पहुँचाई और अपनी मदद से तुम्हें मज़बूती दी और पाक चीज़ें प्रदान कीं ताकि तुम आभारी हो[1] (26) ऐ ईमान वालो! अल्लाह और पैग़म्बर से ख़यानत मत करना और न अपनी धरोहरों में जानते बूझते खियानत मत करना[2] (27) और जाने रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद एक परीक्षा है और बड़ा बदला तो अल्लाह ही के पास है (28) ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह का लेहाज़ रखोगे तो वह तुम्हें एक विशिष्टता प्रदान करेगा और तुम्हारे पापों पर परदा डाल देगा और तुम्हें माफ़ कर देगा और अल्लाह तो बड़े फ़ज़्ल वाले हैं[3] (29) और (याद कीजिए) जब काफ़िर आपके साथ धोखा कर रहे थे ताकि आपको क़ैद करदें या क़त्ल कर डालें या निकाल बाहर करें वे अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह भी तदबीर कर रहा था और अल्लाह की तदबीर (उपाय) सबसे बेहतर है[4] (30) और जब उनको हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो कहते हैं हम ने सुनलिया हम भी चाहें तो ऐसे ही कह डालें यह तो केवल पहलों के किस्से कहानियाँ हैं[5] (31) और जब वे बोले कि ऐ अल्लाह अगर यह सच तेरी ही ओर से है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या दुखद अज़ाब हम पर ले आ (32) और जब तक आप उनमें मौजूद हैं अल्लाह हरगिज़ उनको अज़ाब नहीं देगा और अल्लाह उनको उस समय तक भी अज़ाब देने वाला नहीं है जब तक वे माफ़ी मांगते रहेंगे[6] (33)

(1) अपनी कमी और कोताही की वजह से खुदा का आदेश मानने में सुसती मत दिखाओ, अल्लाह ने तुम को मदीने में ला कर एक मदद दी और बद्र में विजय प्रदान की और तुम्हारे दुश्मनों की कमर तोड़ दी, बस अल्लाह का शुक्र करो (2) अल्लाह और पैग़म्बर से ख़ियानत उनके आदेशों को न मानना है, इसी तरह बन्दों की ओर से जो अमानतें (धरोहर) दी जाएं उनमें भी ख़ियानत से बचो इस तरह इसमें हर तरह के हुकूमुल्लाह (अल्लाह के हक़) और हुकूकुल इबाद (बन्दों के हक़) आगए (3) तकवा के जीवन से विशिष्टता प्रदान होती है आदमी दूर ही से पहचाना जाता है और अल्लाह की मदद होती है जैसे जिस तरह बद्र युद्ध के अवसर पर हुई (4) दारुल नदवा में राए–मश्विरे हो रहे थे अंततः अबू जहल की यह राय हुई कि अरब के सारे कबीलों से नवजवान चुने जाएं और वे यकायक हमला करदें ताकि खून सब में बंट जाए और हाशिम कबीले वाले मुकाबला न कर सकें, सब इसी इरादे से दरवाज़े पर एकत्र हुए, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दरवाज़े से निकल कर उनकी आँखों में मिट्टी डालते हुए चले गये और फिर वे सब बद्र के अवसर पर चुन चुन कर मारे गए (5) नज़र पुत्र हारिस ने यह बात कही और जब कुरआन ने चैलेंज दिया कि एक छोटी सूरह ही बना लाओ तो सब अपना मुँह ले कर रह गए (6) उनका बहुत बड़ा दुर्भाग्य था कि बड़े अज़ाब की मांग करने लगे लेकिन अल्लाह का इस उम्मत (समुदाय) के लिए नियम है कि वह इसको बड़े अज़ाब में ग्रस्त नहीं करेगा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वजूद की वजह से और लोगों के माफ़ी मांगने की वजह से।

وَمَا لَهُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ۚ إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ
وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ
عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَصْدِيَةً ۚ فَذُوقُوا الْعَذَابَ
بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ
أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَسَيُنْفِقُونَهَا ثُمَّ
تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ﴿٣٦﴾ لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَ
يَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا
فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٣٧﴾ قُلْ لِلَّذِينَ
كَفَرُوا إِنْ يَنْتَهُوا يُغْفَرْ لَهُمْ مَا قَدْ سَلَفَ وَإِنْ يَعُودُوا
فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا
تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ ۚ فَإِنِ انْتَهَوْا
فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٣٩﴾ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ ۚ نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿٤٠﴾

منزل ٢

भला उनमें (खूबी) क्या है कि वह उनको अज़ाब न दे जबकि वे मस्जिद–ए–हराम के लिए रूकावट बनते हैं जबकि वे उसके मुतवल्ली (व्यवस्थापक) भी नहीं उसके मुतवल्ली तो परहेज़गार लोग हो सकते हैं लेकिन उनमें अधिकतर लोग नहीं जानते (34) और काबा के पास उनकी नमाज़ सीटियाँ बजाने और तालियाँ पीटने के सिवा और कुछ भी नहीं तो जो तुम इनकार किया करते थे उसका मज़ा चखो[1] (35) इनकार करने वाले अपने मालों को इसलिए ख़र्च करते हैं कि अल्लाह के रास्ते का रोड़ा बनें, बस वे माल ख़र्च करते रहेंगे फिर वही (माल) उनके लिए पश्चाताप बन जाएंगे फिर वे पराजित होकर रह जाएंगे और जिन्होंने कुफ़्र किया वे जहन्नम की ओर हांके जाएंगे (36) ताकि अल्लाह पाक और नापाक दोनों को अलग अलग कर दे और नापाक को एक दूसरे पर रख कर सबकी गठरी बनाकर उसको दोज़ख़ में डाल दे, यही लोग नुकसान उठाने वाले हैं (37) इनकार करने वालों से कह दीजिए कि अगर वे बाज़ आ जाते तो जो कुछ हो चुका वह उनके लिए माफ़ किया जाता है और अगर फिर वही करेंगे तो (हमारा) मामला पहलों के साथ गुज़र ही चुका है[2] (38) और उनसे लड़ते रहो यहां तक कि फित्ना न रहे और दीन सारे का सारा अल्लाह ही का हो जाए[3] फिर अगर वे बाज़ आ जाएं तो अल्लाह उनके कामों को ख़ूब देखता है (39) और अगर वे न मानें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा हिमायती (समर्थक) है, क्या खूब हिमायती है और क्या ख़ूब मददगार है (40)

(1) असली नमाज़ियों को अल्लाह के घर (बैतुल्लाह) से रोकते हैं और खुद उनकी इबादत का हाल यह है कि नंगे बदन तवाफ (विशेष शैली में काबा की परिक्रमा) करते हैं, ज़िक्र (अल्लाह की याद) की जगह तालियाँ और सीटियाँ बजाते हैं, अज़ाब लाने वाला कौन काम है जो वे न करते हों बस कुछ मज़ा तो उनको बद्र युद्ध में चखाया गया और असली अज़ाब आख़िरत का है (2) इस्लाम और मुसलमानों की दुश्मनी पर वे ख़र्च करते रहे हैं, बद्र के अवसर पर और उसके बाद भी जो व्यावसायिक काफिले का लाभ हुआ था सबने उसको इसी मक़सद के लिए रखा था कि इस्लाम के रास्ते में रोड़े अटकाएं, कल यही उनके लिए पछतावा होगा और वे अफ़सोस से अपने हाथ चबाएंगे, अल्लाह तआला इनकार करने वालों को अलग करके सबकी गठरी बना कर दोज़ख़ में डाल देगा फिर जो उनमें बाज़ आ जाते हैं और मान लेते हैं उनके लिए माफ़ी है वरना न मानने वालों के साथ जो हुआ है वह उनके सामने है वही उनके साथ होगा (3) जेहाद का पहला मकसद यह है कि आदेश केवल अल्लाह का चले, सच्चा धर्म सारे धर्मों के ऊपर हो। अरब प्रायद्वीप को अल्लाह ने इस्लाम का केन्द्र बनाया है इसलिए यहां का आदेश यही है कि कोई काफ़िर या मुश्रिक मुकम्मल तौर पर यहाँ नहीं रह सकता या इस्लाम लाए या कहीं और चला जाए, इसलिए अरब प्रायद्वीप में काफिरों से उस समय तक जंग का आदेश दिया गया जब तक वे उन दो बातों में से कोई एक बात अपना न लें अलबत्ता अरब प्रायद्वीप के बाहर का आदेश इससे भिन्न है।

وَاعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَأَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهُ وَ
لِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِينِ وَابْنِ
السَّبِيلِ إِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَا أَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ
الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤١﴾
إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَ
الرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي
الْمِيعٰدِ وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا لِّيَهْلِكَ
مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ وَإِنَّ
اللّٰهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٤٢﴾ إِذْ يُرِيكَهُمُ اللّٰهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا
وَلَوْ أَرٰىكَهُمْ كَثِيرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنٰزَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ
وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٤٣﴾ وَ
إِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ
فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللّٰهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا وَإِلَى اللّٰهِ
تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤٤﴾ يٰأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً
فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٤٥﴾

منزل٢

और जान लो कि जो भी तुमने ग़नीमत का माल प्राप्त किया है उसका पाँचवा हिस्सा अल्लाह का है और उसके पैग़म्बर का और नातेदारों और अनाथों और निर्धनों का है और जो यात्रा पर हो[1] अगर तुम अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो हमने अपने बन्दे पर फैसले के दिन उतारी थी जिस दिन दो सेनाएं आमने–सामने हुईं थी[2] और अल्लाह हर चीज़ पर पूरी कुदरत (सामर्थ्य) रखता है (41) जब तुम इस किनारे पर थे और वे उस किनारे पर और काफ़िला तुम से नीचे था[3] और अगर तुम आपस में पहले से तय करते तो वादे पर न पहुँचते लेकिन यह इसलिए हुआ कि अल्लाह उस चीज़ को पूरा कर दे जिस को होना ही था ताकि जिसे हलाक़ होना है वह प्रमाण के साथ हलाक हो और जिसको ज़िन्दा रहना है व प्रमाण के साथ जिन्दा रहे और बेशक अल्लाह ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है[4] (42) और जब अल्लाह आपको सपने में उन्हें बहुत थोड़ा दिखा रहा था और अगर वह उनकी संख्या को अधिक दिखाता तो तुम लोग ज़रूर हिम्मत हार जाते और काम में झगड़ा डालते लेकिन अल्लाह ने बचा लिया बेशक वह दिलों की हालत से ख़ूब वाकिफ़ है (43) और जब मुठभेड़ के समय वह उन लोगों को तुम्हारी निगाहों में कम दिखा रहा था और उनकी निगाहों में तुम्हें कम दिखा रहा था ताकि अल्लाह उस काम को कर ही डाले जिसे होना ही था और सब काम अल्लाह ही की ओर लौटते हैं[5] (44) ऐ ईमान वालो! जब किसी फ़ौज से तुम्हारा सामना हो तो डट जाओ और अल्लाह को ख़ूब याद करो ताकि तुम सफल हो[6] (45)

---

(1) सूरह के शुरु में कहा था कि ग़नीमत का माल अल्लाह का है उसके पैग़म्बर का, यहाँ थोड़ा विस्तार से बताया जा रहा है कि जो ग़नीमत का माल काफ़िरों से लड़ कर हाथ आए उसका पाँचवाँ हिस्सा विशेष रूप से अल्लाह के लिए है जिसके प्रतिनिधि के रूप में अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसको पाँच जगहों पर ख़र्च कर सकते हैं, अपने ऊपर, अपने नातेदारों पर, अनाथों पर, निर्धनों पर और यात्रियों पर, शेष चार भाग जेहाद करने वालों पर ख़र्च किए जाएंगे (2) यानी बद्र के दिन जिसको फैसले का दिन कहा गया और उस दिन अल्लाह ने खास मदद उतारी (3) यानी मदीने की निकटवर्ती छोर पर तुम थे और दूर वाली छोर पर काफ़िरों की सेना थी और अबू सुफ़ियान का क़ाफ़िला समुद्र के किनारे–किनारे जा रहा था (4) कुरैश अपने काफ़िले की मदद को आए और तुम काफ़िले पर हमला करने के लिए निकले, काफ़िला बचकर निकल गया और दो फ़ौज़ें एक मैदान के दो किनारों पर आ पड़ीं, एक को दूसरे की ख़बर न थी, यह अल्लाह की नीति थी, तुम अगर जानबूझ कर जाते तो ऐसे समय से न पहुँचते और विजय के बाद काफ़िरों पर पैग़म्बर की सच्चाई खुल गई जो मरा वह भी सच्चा जान कर और जो जीता रहा वह भी सत्य को पहचान कर (5) मात्र अल्लाह की कृपा थी कि काफ़िर मुसलमानों को थोड़े लगे, इससे उनकी हिम्मत बनी रही और शुरु में काफ़िरों को मुसलमान कम ही नज़र आ रहे थे और वास्तविकता भी यही थी लेकिन बाद में जब फ़रिश्तों की मदद आई तो मुसलमानों की सेना काफ़िरों को दोगुना नज़र आने लगी (6) अल्लाह की याद से स्थिरता मिलती है।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ
رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا
كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَاۗءَ النَّاسِ وَ
يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٤٧﴾
وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ
الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّىْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَاۗءَتِ الْفِئَتٰنِ
نَكَصَ عَلٰي عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّىْ بَرِيْۗءٌ مِّنْكُمْ اِنِّىْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ
اِنِّىْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ۭ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾ اِذْ يَقُوْلُ
الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَاۗءِ دِيْنُهُمْ ۭ
وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَي اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٩﴾ وَ
لَوْ تَرٰٓي اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا ۙ الْمَلٰۗىِٕكَةُ يَضْرِبُوْنَ
وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٥٠﴾ ذٰلِكَ
بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٥١﴾
كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾

ع

منزل٢

और अल्लाह और उसके पैग़म्बर की बात मानो और आपस में झगड़ा मत करना वरना तुम हिम्मत हार जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और जमे रहो बेशक अल्लाह जमने वालों के साथ है[1] (46) और ऐसों की तरह मत हो जाना जो अपने घरों से इतराते हुए और लोगों को दिखाते हुए निकले और अल्लाह के रास्ते से रोकते थे जब कि अल्लाह उनके सब कामों को अपने घेरे में लिए हुए है[2] (47) और जब शैतान ने उनके लिए उनके कामों को सुन्दर बना दिया और बोला कि आज के दिन तुम पर कोई ग़ालिब (हावी) न होगा और मैं तो तुम्हारे साथ ही हूँ फिर जब दोनों सेनाएं आमने सामने हुईं तो वह उलटे पाँव भागा और बोला मेरा तुम से कोई संबंध नहीं मैं वह देख रहा हूँ जो तुम नहीं देखते मुझे तो अल्लाह से डर लग रहा है और अल्लाह की सज़ा बड़ी कठोर है[3] (48) जब मुनाफ़िक़ और दिल के रोगी कहने लगे उनको तो उनके दीन ने धोखे में डाल रखा है, और जो अल्लाह पर भरोसा करता है तो बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है हिकमत वाला है[4] (49) और अगर आप देख लेते जब फरिश्ते काफिरों की जान निकाल रहे हों उनके चेहरों और पीठ पर मारते जाते हों और (कहते जाते हो) कि जलने के अज़ाब का मज़ा चखो (50) यह फल है तुम्हारी गुज़री हुई करतूतों का और अल्लाह अपने बन्दों पर ज़रा भी अत्याचार नहीं करता (51) फ़िरऔन वालों और उनसे पहले वालों के नियमानुसार उन्होंने अल्लाह की आयतों का इनकार किया तो अल्लाह ने उनके पापों के बदले में उनको धर पकड़ा, बेशक अल्लाह बड़ी शक्ति वाला कठोर दण्ड देने वाला है[5] (52)

---

(1) सबसे बड़ी शक्ति ईमान व एकता में है, इसकी और धैर्य व अडिगता की ताकीद की जा रही है जिसमें सहाबा खरे उतरे (2) अबू जह्ल सेना लेकर बहुत धूम–धाम और बाजे–गाजे के साथ निकला था, अबू सुफ़ियान ने कहलवाया भी था कि काफ़िला ख़तरे से निकल गया है तुम वापस चले जाओ तो उसने बड़े घमण्ड के साथ कहा कि अब तो हम बद्र में मौज–मस्ती की सभा आयोजित करेंगे और अपनी शक्ति का प्रदर्शन करेंगे ताकि मुसलमानों का साहस टूट जाए (3) कुरैश की किनाना कबीले के साथ छेड़–छाड़ रहा करती थी इसलिए उनकी ओर से कुछ खतरा था, इबलीस किनाना के सरदार सुराका पुत्र मालिक के रूप में आया और बोला कि हम सब तुम्हारे साथ हैं निश्चिंत रहो, फिर जब घमासान की जंग छिड़ गई और शैतान को फरिश्ते नज़र आने लगे तो वह भागने लगा, अबू जह्ल ने कहा धोखा देकर कहाँ भागे जाते हो, बोला कि मुझे वह नज़र आ रहा है जो तुम्हें नज़र नहीं आता, मुझे तो अल्लाह से डर लग रहा है, क़तादा कहते हैं कि उसने झूठ बोला उसके दिल में खुदा का डर न था हाँ! वह जानता था कि अब कुरैश की सेना को कोई शक्ति नहीं बचा सकती इसलिए ठीक समय पर धोखा दे कर भाग गया, बाद में मुश्रिकों ने जब सुराक़ा से पूछा तो उसने कहा कि मुझे तो कुछ भी नहीं मालूम (4) मुसलमानों का निहत्था होना और फिर उनके साहस को देख कर मुनाफ़िक़ कहने लगे कि उनको अपने धर्म पर घमण्ड है, उसका उत्तर दिया जा रहा है कि यह घमण्ड नहीं, अल्लाह पर भरोसा (तवक्कुल) है (5) हमेशा से यही नियम रहा है कि जब लोग नबियों को झुठलाने पर ही अडिग रहे तो पकड़े गए।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى
يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۳﴾ كَدَاْبِ اٰلِ
فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ
بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَاۤ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿۵۴﴾
اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۵﴾
اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ
مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿۵۶﴾ فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ
مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ
خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ﴿۵۸﴾
وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ؕ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَ
اَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ
تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ
لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۶۰﴾ وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ
فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۶۱﴾

منزل ۲

यह इसलिए कि जब अल्लाह किसी क़ौम पर इनआम करता है तो उस समय तक हरगिज़ नेअ़मत को नहीं बदलता जब तक कि वे लोग ख़ुद अपने आपको नहीं बदल लेते और बेशक अल्लाह ख़ूब सुनने वाला ख़ूब जानने वाला है[1] (53) फ़िरऔन वालों और उनसे पहले वालों के नियमानुसार उन्होंने अल्लाह की निशानियाँ झुठलाईं तो उनके गुनाहों के बदले में हमने उनको विनष्ट (हलाक़) कर दिया और फिरऔन के लाव–लश्कर को हमने डुबो दिया और वे सब अत्याचारी थे (54) अल्लाह के यहाँ जीवों में सबसे बुरे वे लोग हैं जिन्होंने इनकार किया फिर वे मानते ही नहीं (55) जिनसे आपने समझौता किया फिर वे हर बार अपने समझौते तोड़ ही डालते हैं और वे डरते ही नहीं (56) तो अगर कभी आप उनको जंग में पा जाएं तो ऐसी सज़ा दें कि देख कर उनके पिछले भी भागें शायद वे शिक्षा प्राप्त करें[2] (57) और अगर आपको किसी क़ौम से धोखे का डर हो तो आप भी उनको बराबर का जवाब दीजिए बेशक अल्लाह धोखेबाज़ों को पसंद नहीं करता (58) और काफ़िर हरगिज़ यह न समझें कि वे भाग निकले वे कदापि विवश न कर सकेंगे[3] (59) और उनके लिए शक्ति से और घोड़े पाल कर हर संभव तैयारी करो कि इससे अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों पर धाक बैठा सको और उनके अलावा दूसरों पर भी जिनको तुम नहीं जानते अल्लाह उनको जानता है[4] और अल्लाह के रास्ते में तुम जो भी खर्च करोगे वह तुम्हें पूरा पूरा मिल जाएगा और तुम्हारे साथ कुछ भी अन्याय न होगा [5] (60) और अगर वे सुलह के लिए झुक जाएं तो आप भी उसके लिए झुक जाएं और अल्लाह पर भरोसा रखें बेशक वह ख़ूब सुनता जानता है (61)

---

(1) यानी जब लोग अपने असंतुलन और बुरे कामों से भलाई की प्राकृतिक योग्यताओं को बदल डालते हैं और अल्लाह की दी हुई नेअ़मतों का दुरुपयोग करने लगते हैं तो अल्लाह तआला भी अपनी नेअ़मतें उनसे छीने लेता है, यही नियम पिछली क़ौमों के साथ रहा है (2) जो लोग हमेशा के लिए कुफ्र पर तुल गए हैं और छल और विश्वासघात करते रहते हैं वे अल्लाह के यहाँ सबसे बुरे जीव हैं, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में यहूदियों का यही हाल था, समझौता करते थे और तोड़ते थे, ऐसे लोगों के बारे में कहा जा रहा है कि जब वे समझौता तोड़ कर मुकाबले पर आ जाएं तो उनको ऐसी सख़्त सज़ा दी जाएं कि उनकी पीढ़ियाँ याद रखें, आगे बताया जा रहा है कि अगर किसी क़ौम के बारे में आपको धोखे का डर हो तो आप चाहें तो समझौता समाप्त कर दें और उनको इसकी सूचना दे दें ताकि विश्वासघात की कोई घटना न हो (3) यानी काफ़िर यह न समझें कि जब मुसमलानों के यहाँ धोखा और विश्वासघात वैध नहीं तो हम ख़ूब तैयारी कर लेंगे और मुसलमानों से जीत जाएंगे (4) मुसलमानों को आदेश है कि जहाँ तक हो सके वे जिहाद के साधन उपलब्ध करें और हर युग के अनुसार शक्ति व बल प्राप्त करने के जो साधन हैं वह अपनाएं और उस पर जो हो सके खर्च करें वह पूरा अल्लाह के यहाँ जमा हो जाएगा फिर आगे कहा जा रहा है कि अगर वे मुसलमानों की शक्ति देख कर सुलह पर तैयार हों तो आप भी सुलह कर लें और उनके दिलों के हाल को अल्लाह के हवाले करके उसी पर भरोसा करें (5) इससे मतलब मुसलमानों के वे दुश्मन हैं जो उस समय सामने नहीं आये थे, बाद में सामने आए जैसे रोम व ईरान के लोग।

وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ۭ هُوَ الَّذِيْٓ
اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ۭ لَوْ اَنْفَقْتَ
مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ
اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَ
مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ
عَلَى الْقِتَالِ ۭ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا
مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝ اَلْــٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ
وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ۭ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا
مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَ
اللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰي حَتّٰي
يُثْخِنَ فِي الْاَرْضِ ۭ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ڰ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ
الْاٰخِرَةَ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ
لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ
حَلٰلًا طَيِّبًا ڮ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

منزل٢

और अगर वे आपको धोखा देना चाहेंगे तो अल्लाह आपके लिए काफ़ी है[1] उसी ने अपनी मदद से और ईमान वालों के द्वारा आपका समर्थन किया (62) और उनके दिलों को जोड़ दिया, अगर आप ज़मीन में का सब कुछ ख़र्च कर डालते तो भी उनके दिलों को न जोड़ पाते लेकिन अल्लाह ने उनको जोड़ दिया वह निःसंदेह जबरदस्त है हिकमत वाला है (63) ऐ पैग़म्बर! आपको और आपका अनुसरण करने वाले मुसलमानों के लिए अल्लाह ही काफ़ी है (64) ऐ पैग़म्बर! मुसलमानों को जंग के लिए प्रेरित कीजिए अगर तुममें बीस भी जमने वाले हुए तो वे दो सौ पर ग़ालिब आएंगे और अगर तुममें सौ हुए तो वे एक हज़ार काफ़िरों पर ग़ालिब आएंगे इसलिए कि वे नासमझ लोग हैं (65) अब अल्लाह ने बोझ को तुम से हलका कर दिया और जान लिया कि तुममें कम हिम्मती है अब अगर तुममें सौ जमने वाले हुए तो वे दो सौ पर ग़ालिब आएंगे और अगर तुममें हज़ार हुए तो वे अल्लाह के आदेश से दो हज़ार पर ग़ालिब आएंगे और अल्लाह जमने वालें के साथ है[2] (66) पैग़म्बर के लिए शोभा नहीं देता कि उसके पास कैदी रहें जब तक वह ज़मीन में खून न बहा ले, तुम दुनिया का सामान चाहते हो और अल्लाह आख़िरत चाहता है और अल्लाह ज़बरदस्त है हिकमत वाला है (67) अगर अल्लाह की ओर लिखा हुआ न होता जो पहले (लिखा जा चुका) था तो तुमने जो कुछ लिया उस पर तुम्हें ज़रूर बड़े अजाब का सामना करना पड़ता[3] (68) बस अब जो ग़नीमत का माल मिला है उसे हलाल पवित्र समझ कर खाओ और अल्लाह से डरते रहो निः संदेह अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है[4] (69)

---

(1) काफ़िर अगर धोखा देना भी चाहें तो नहीं दे सकते, अल्लाह की मदद आपके साथ है और अल्लाह ने ईमान वालों के द्वारा भी आपका समर्थन किया है और आप की मुहब्बत और समर्थन के लिए इन सबके दिलों को जोड़ दिया, सैकड़ों साल के जो झगड़े-लड़ाइयाँ चली आ रही थीं सब अल्लाह ने अपनी कृपा से समाप्त कर दी, सारी दुनिया इसके लिए खर्च कर दी जाती तो यह काम आसान न था, अल्लाह ने अपनी कृपा से इसे आसान कर दिया, अब अल्लाह ही उनके लिए और सारे मुसलमानों के लिए काफ़ी है (2) मुसलमानों को जिहाद की प्रेरणा दी जा रही है चूंकि पहले मुसलमान विश्वास में परिपक्व थे उनको आदेश था कि काफ़िर दस गुने अधिक हों तब भी मुकाबला करें बाद में जब कुछ कमज़ोरी आई तो आदेश में भी कुछ कमी कर दी गई और दो गुने के मुक़ाबले का आदेश हुआ (3) बद्र के कैदियों के संबंध में परीक्षा के रूप में अल्लाह की ओर से दो अधिकार दिए गए थे या तो उनको क़त्ल कर दिया जाए या धन लेकर छोड़ दिया जाए, इस शर्त पर कि अगले साल इतने ही मुसलमानों में मारे जाएंगे, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मश्वरा किया, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 की राय यह थी कि उनको धन लेकर छोड़ दिया जाए शायद यह मुसलमान हों या इनकी संतानें ही मुसलमान हो जाएं, इसका समर्थन आमतौर पर मुसलमानों ने किया, यह भी उनके दिमाग़ में आया कि धन की एक बड़ी मात्रा हाथ आएगी जो आवश्यकताओं में काम आएगी, दूसरी ओर हज़रत उमर और कुछ सहाबा की राय उनको क़त्ल करने देने की थी कि यह सब मुश्रिकों के सरदार हैं, यह पहला अवसर है इस समय धाक बैठ गई तो आगे भी आसानी होगी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ की राय पर अमल किया, उस पर यह आयतें उतरीं यह सहाबा की इजतिहादी ग़लती थी और ख़ासतौर पर जिन लोगों के दिमाग़ में इसका आर्थिक लाभ भी आ गया था उनको सावधान किया गया कि अगर अल्लाह की ओर से पहले ही अज़ाब का न आना तय न होता तो अज़ाब आ ही जाता और अज़ाब के न आने के कारणों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मौजूद होना, सहाबा का माफ़ी मांगना आदि विशेष रूप से हैं, और इस पहले चरण में ही क़त्ल करने का फ़ायदा था ताकि ⟹

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْۤ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰۤى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ
قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّاۤ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿۷۰﴾ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ
فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۷۱﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا
وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا
وَّنَصَرُوْۤا اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ
وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍۢ
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۷۲﴾ وَالَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ
وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿۷۳﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْۤا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ
حَقًّا ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿۷۴﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ
وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ
بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۷۵﴾

منزل۲

ऐ पैग़म्बर! आपके हाथ में जो क़ैदी हैं उनसे कह दीजिए कि अगर तुम्हारे दिलों में अल्लाह को भलाई का पता चलेगा तो जो कुछ तुम से लिया गया है, उससे बेहतर वह तुम्हें प्रदान कर देगा और तुम्हें माफ़ कर देगा और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है (70) और अगर वे आपसे धोखे का इरादा रखते होंगे तो वे इससे पहले अल्लाह से धोखा कर चुके हैं तो उसने उनको गिरफ्तार करवा दिया और अल्लाह ख़ूब जानने वाला हिकमत वाला है[1] (71) निःसंदेह जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अपने मालों और जानों से अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया और जिन लोगों ने शरण दी और मदद की वे सब एक दूसरे के मित्र हैं और जो ईमान लाए और उन्होंने हिजरत नहीं की उनसे तुम्हारा कोई रिश्ता नहीं जब तक वे हिजरत न करलें हाँ अगर वे दीन के विषय में तुम से मदद मांगें तो तुम पर मदद ज़रूरी है सिवाय इसके कि मुक़ाबला ऐसे लोगों से हो जिनसे तुम्हारा समझौता हो और अल्लाह तुम्हारे कामों पर नज़र रखे हुए है (72) और जो काफ़िर हैं वे एक दूसरे के मित्र हैं, अगर तुमने ऐसा न किया तो धरती पर फ़ित्ना और बड़ा बिगाड़ हो जाएगा[2] (73) और जो ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया और जिन्होंने शरण दी और मदद की वही वास्तव में ईमान वाले हैं उनके लिए माफ़ी है और सम्मान की रोज़ी है (74) और जो बाद में ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और तुम्हारे साथ मिल कर जिहाद किया तो वे भी तुम में शामिल हैं और अल्लाह की किताब में नातेदार एक दूसरे के अधिक हक़दार हैं अल्लाह के आदेश में निःसंदेह अल्लाह हर चीज़ से खूब अवगत है[3] (75)

⟹ दुश्मनों का सारा ज़ोर टूट जाए बाद में जब दुश्मनों का ज़ोर टूट गया तो विधवत रूप से धन लेने की आज्ञा दी गई बल्कि बिना धन के माफी का आदेश दे दिया गया (4) सावधान करने के बाद सहाबा को इस धन के प्रयोग में बहुत संकोच हुआ, इस आयत में इसकी अनुमति दी जा रही है।

(1) कुछ कैदियों ने अपने मुसलमान होने का इज़हार किया था जैसे हज़रत अब्बास आदि, उनसे कहा जा रहा है कि अल्लाह देखेगा वास्तव में अगर तुम्हारे दिल में ईमान है तो अभी जो धन लिया गया है उससे बढ़ कर तुम्हें सम्मानित किया जाएगा और जो धोखा देने के लिए ऐसा करेंगे तो वे तबाह होंगे (2) मुहाजिर और अंसार आपस में एक हैं बल्कि हिजरत के शुरु में मुवाख़ात (भाईचारगी) के संबंध के अनुसार वे एक दूसरे के उत्ताधिकारी भी होते थे और जिन मुसलमानों ने हिजरत नहीं की वे अलग हैं, हाँ! अगर वे कमज़ोर हों तो उनकी मदद की जाएगी लेकिन जिस गिरोह से मुसलमानों का समझौता हो चुका हो अगर उसके विरुद्ध वे कमज़ोर मुसलमान मदद चाहेंगे तो उनकी मदद नहीं की जाएगी और समझौते का लेहाज़ किया जाएगा (3) यानी मुहाजिरों में जितने बाद को उनमें शामिल होते जाएंगे और हिजरत करके आते जाएं वे आदेशानुसार मुहाजिरीन की सर्वप्रथम ईमान लाने वाली जमाअत में शामिल हो जाएंगे और रिश्तेदार पैतृक संपत्ति के अधिकारी होंगे इस आयत ने पहले वाले आदेश को समाप्त कर दिया जिसके अनुसार अंसार मुहाजिरीन को एक दूसरे का वारिस करार दिया गया था और रिश्ते को पैतृक संपत्ति की तकसीम का आधार बना दिया गया।

सूरह तौबा[1]

अल्लाह और उसके रसूल की ओर से उन मुश्रिकों से संबंध तोड़ लेने (विमुखता) का ऐलान है जिनसे तुमने संधि की थी (1) तो ऐ मुश्रिको! चार महीने ज़मीन में घूम फिर लो और जान लो कि तुम अल्लाह को बेबस नहीं कर सकते और अल्लाह काफ़िरों को अपमानित करके रहेगा[2] (2) और बड़े हज के दिन[3] अल्लाह और उसके रसूल की ओर से लोगों के लिए यह ऐलान है कि अल्लाह और उसके रसूल शिर्क करने वालों से विमुख (बेज़ार) हैं फिर अगर तुम तौबा कर लो तो वह तुम्हारे लिए बेहतर है और अगर तुम उलटे पाँव फिरे तो जान लो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकते और आप काफ़िरों को दुखद अज़ाब का शुभ समाचार सुना दीजिए (3) सिवाय उन मुश्रिकों के जिनसे तुमने समझौता किया फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कुछ भी कोताही नहीं की और तुम्हारे विरूद्ध किसी की मदद नहीं की तो उनके लिए समझौतों को उनकी अवधि तक पूरा कर लो निःसंदेह अल्लाह परहेज़गारों को पसंद करता है[4] (4) फिर जब आदर वाले महीने निकल जाएं तो शिर्क करने वालों को जहाँ पाओ मारो और गिरफ़्तार करो, घेरो और हर जगह उनकी घात में बैठो फिर अगर वे तौबा कर लें और नमाज़ कायम करें और ज़कात दें तो उनका रास्ता छोड़ दो निःसंदेह अल्लाह बहुत माफ करने वाला है बड़ा ही दयालु है[5] (5) और अगर मुश्रिक आप से शरण मांगे तो उसे शरण दे दीजिए यहाँ तक कि वह अल्लाह का कलाम सुन ले फिर उसे इत्मिनान के स्थान पर पहुँचा दीजिए यह इसलिए है कि यह लोग वे हैं जो जानते नहीं[6] (6)

سورة التوبة مدنية وهي مائة وتسع وعشرون آية وست عشرة ركوعا

بَرَاءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١﴾ فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِي الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢﴾ وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ وَرَسُوْلُهٗ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٤﴾ فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥﴾ وَاِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦﴾

ع

منزل ٢

(1) सूरह तौबा सूरह अन्फ़ाल ही की पूरक है, अन्फ़ाल हिजरत के शुरु समय में उतरी और सूरह तौबा अंत में, इसीलिए इसको अन्फ़ाल के बाद ही रखा गया और इस सूरह की विशेषता यह है कि इसके आरंभ में बिस्मिल्लाह नहीं है जिसकी एक वजह यह भी बताई जाती है कि इसमें मुश्रिकों के बारे में, विमुखता का आम एलान है और उसी से सूरह का आरम्भ हो रहा है इसलिए बिस्मिल्लाह इसके साथ नहीं उतरी (2) सन् 6 हिजरी में सुलह हुदैबिया के अवसर पर बनू ख़ुज़ाआ मुसलमानों के और बनू बक्र कुरैश के सहयोगी बने और युद्ध बंदी की संधि हुई लेकिन डेढ़ दो ही साल के बाद बनू बक्र ने बनू ख़ुजाआ पर हमला कर दिया और कुरैश ने उनकी मदद की, बनू ख़ुजाआ लुटे–पिटे फरियाद लेकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में पहुँचे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके उत्तर में सेना लेकर पवित्र मक्का रवाना हुए, और बड़ी आसानी से मक्का पर विजय प्राप्त हुई और जिन कबीलों ने संधि भंग की थी उनसे विमुखता का ऐलान कर दिया गया, जिन कबीलों से अनिर्धारित समझौता था और उन्होंने संधि भंग नहीं की थी उनको चार महीनों की मोहलत दी गई और अल्लाह का फैसला हुआ कि अरब प्रायद्वीप को इस्लाम का दिल करार दिया जाए और शिर्क व कुफ़्र से उसको पाक कर दिया जाए, इसकी शुरुआत मक्का विजय से हुई और अगली आयतों के द्वारा तमाम कबीलों में ऐलान कर दिया गया और उनको मुहर्रम तक की मोहलत दी जा रही है कि वे इस अवधि में या तो इस्लाम कुबूल कर ले या अपनी व्यवस्था कर लें, अरब प्रायद्वीप में वे कुफ़्र व शिर्क के साथ नहीं रह सकते। (3) बड़ा हज इसलिए कहा गया कि उमरह छोटा हज है (4) यह अपवाद उन क़बीलों के लिए था जिनकी संधि निर्धारित समय के लिए थी और वे बराबर उस पर कायम रहे जैसे बनू ज़मोरा, बनू मुदलिज आदि उनके बारे में एलान कर दिया गया कि अवधि पूरी होने तक मुसलमान भी समझौता का आदर करेंगे फिर कोई नई संधि नहीं होगी, उस समय उनके लिए भी वही रास्ता है जो दूसरों के लिए था (5) जज़ीरतुल अरब (अरब प्रायद्वीप) को काफिरों व मुश्रिकों से पाक करने के लिए युद्ध में जो कदम उठाए जाते हैं वह सब किए जाएं ताकि कोई अल्लाह का विद्रोही वहां रहने न पाए फिर जो ईमान का इज़हार करे तो संदेह करने की आवश्यकता नहीं उसका रास्ता छोड़ दो, ⟹

अल्लाह के पास और उसके पैग़म्बर के पास (संधि भंग करने वाले) मुश्रिकों की संधि कैसे बाकी रह सकती है सिवाए उनके जिनसे तुमने मस्जिद–ए–हराम के पास संधि की तो जब तक वे तुम से सीधे रहें तुम भी उनसे सीधे रहो निःसंदेह अल्लाह लेहाज़ को पसंद करता है (7) कैसे (यह संधि कायम रहे) जब कि हाल यह है कि अगर वे तुम पर गालिब आ जाएं तो वे तुम्हारे बीच न किसी नाते का ख़्याल रखते हैं न वचन का, अपनी बातों से तुम्हें राज़ी करना चाहते हैं जब कि उनके दिल इनकार ही करते रहते हैं ओर उनमें अधिकतर वचन तोड़ने वाले हैं (8) साधारण दाम में उन्होंने अल्लाह की आयतों का सौदा कर लिया है तो वे उसके रास्ते से रोकते हैं, बड़े ही बुरे काम हैं जो वे अंजाम देते रहते हैं (9) किसी मुसलमान के हक़ में न उनको किसी नाते का ख़्याल है और न क़ौल व क़रार का वही लोग ज़्यादती करने वाले हैं[1] (10) फिर अगर वे तौबा कर लें और नमाज़ कायम करें और जकात दें तो तुम्हारे धार्मिक भाई हैं और हम उन लोगों के लिए आयतें खोल–खोल कर बयान करते हैं जो जानना चाहते हैं (11) और अगर समझौता करने के बाद वे अपनी कसमें तोड़ दें और तुम्हारे धर्म (दीन) में कटाक्ष करें तो कुफ़्र के सरदारों से जंग करो उनकी कसमें कुछ (ऐतबार) नहीं (रखतीं) शायद वे बाज़ आ जाएं (12) क्या तुम ऐसे लोगों से नहीं लड़ोगे जिन्होंने अपनी कसमें तोड़ दीं और पैग़म्बर को निकाल देने की फिक्र में रहे और पहले उन्होंने ही तुम से छेड़ की शुरूआत की क्या तुम उनसे डरते हो बस अल्लाह का ज़्यादा हक़ है कि तुम उससे डरो अगर तुम ईमान वाले हो[2] (13)

⟹ नमाज़ और ज़कात विशेष रूप से ईमान की पहचानें हैं (6) अगर कोई इस्लामिक शिक्षाओं से अवगत न हो और वह सुनना चाहता हो तो उसको शरण दो और अपनी सुरक्षा में लेकर खुदा का कलाम (वाणी) और उसकी वास्तविकताएं और उसके प्रमाण सुना दो फिर अगर स्वीकार न करे तो भी उसको नुक़सान मत पहुँचाओ बल्कि सुरक्षित उसको पहुँचा दो उसके बाद वह सब काफिरों के बराबर है, इस्लाम में दाखिल करने के लिए ज़ोर जबरदस्ती न की जाए और न किसी काफ़िर को जज़ीरतुल अरब में रहने दिया जाए।

(1) पिछली आयतों में जिस विमुखता का एलान था यहाँ उसकी वजह बयान हो रही है कि उन मुश्रिकों से क्या समझौता क़ायम रह सकता है जिनका हाल यह है कि उनको थोड़ी भी शक्ति प्राप्त हो जाए तो नुकसान पहुँचाने में न नाते का लेहाज़ करें न क़ौल व करार का, चूंकि इस समय उनको शक्ति प्राप्त नहीं इसलिए ज़बानी क़ौल व क़रार करके तुम्हें खुश रखना चाहते हैं वरना उनके दिल एक मिनट के लिए इस पर राज़ी नहीं, तो ऐसे वचन भंग करने वाले लोगों से कैसे संधि की जा सकती है, हाँ! जिन कबीलों से तुम मस्जिद–ए–हराम के पास सुलह–समझौता कर चुके हो उसको पूरा करना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है यह परहेज़गारी की बात है, अतः बनू किनाना आदि जिन्होंने समझौता भंग नहीं किया था, विमुखता की घोषणा के बाद उनकी सुलह की अवधि में नौ महीने बाकी थे मुसलमानों ने उसे पूरी ईमानदारी के साथ पूरा किया, आगे आयत में बताया जा रहा है कि तमाम शरारतों के बाद अगर वे तौबा करलें और इस्लामी पहचान (शआएर) अपना लें तो इस्लामी बिरादरी में शामिल हो जाएंगे, अल्लाह उनके सब पाप माफ़ कर देगा (2) कुरैश ने समझौता भंग कर दिया था और बनू खुज़ाआ के विरुद्ध बनू बक्र का साथ दिया, पवित्र मक्का में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को निकालने की चिन्ता में रहे, निर्दोष मुसलमानों पर अत्याचार शुरु किया, आगे आयत से मालूम होता है कि जिस क़ौम की यह दशा हो उनसे जंग करने में मुसलमानों को संकोच नहीं होना चाहिए अगर उनकी शक्ति का भय हो तो ईमान वालों को सबसे बढ़ कर अल्लाह का भय होना चाहिए सब फ़ायदा नुकसान उसी के हाथ में है उसी पर भरोसा करना चाहिए।

قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ
وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٤﴾ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ۚ وَ
يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٥﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ
تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ۗ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ
شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۗ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۚۖ وَ
فِى النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ
فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٨﴾ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ
الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَ
اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ
اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾

ع ٨   وقف لازم

منزل ٢

उनसे जंग करो ताकि अल्लाह तुम्हारे हाथों से उनको अज़ाब (यातना) दे और उनको अपमानित करे और उन पर तुम्हारी मदद करे और उन लोगों के कलेजे ठंडे करे जो ईमान रखते हैं (14) और उनके दिलों की कुढ़न को दूर कर दे और अल्लाह जिसकी चाहता है तौबा स्वीकार करता है और अल्लाह ख़ूब जानता हिकमत (युक्ति) रखता है[1] (15) क्या तुम समझते हो कि तुम्हें यूँ ही छोड़ दिया जाएगा जब कि अल्लाह ने अभी तुममें उन लोगों को जाना ही नहीं जो तुम में जिहाद करते हैं और अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वालों के सिवा वे किसी को भेदी (राज़दार) नहीं बनाते और तुम्हारे हर काम की अल्लाह को ख़बर है[2] (16) मुश्रिक लोग इस लायक़ नहीं की वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें जबकि वे खुद अपने ऊपर कुफ़्र के गवाह हैं, ऐसे लोगों के सब काम बर्बाद हो गये और वे हमेशा आग ही में रहेंगे (17) अल्लाह की मस्जिदों को तो वे लोग आबाद करते हैं जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाएं और उन्होंने नमाज़ कायम की और ज़कात दी और अल्लाह के सिवा किसी से न डरे तो ऐसे ही लोगों के बारे में आशा है कि वे सही रास्ते पर होंगे (18) क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे हराम को आबाद करने को उस व्यक्ति के बराबर कर दिया है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाया और उसने अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, अल्लाह के यहाँ वे बराबर नहीं हो सकते और अल्लाह अन्याय करने वालों को हिदायत नहीं देता[3] (19) जो ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और जानों से जिहाद किया (वे) अल्लाह के यहाँ सबसे ऊँचा दर्जा रखते हैं और वही लोग सफल हैं (20)

---

(1) पिछली क़ौमों ने अवज्ञा (नाफ़रमानी) की, वे सब बर्बाद कर दिये गये, इस उम्मत (समुदाय) में अवज्ञाकारों को अल्लाह ने आम अज़ाब में गिरफ़्तार नहीं किया बल्कि ईमान वालों को उनसे जिहाद का आदेश हुआ ताकि ईमान वालों को तसल्ली हो और नाफ़रमानों को भी तौबा करने का अवसर रहे (2) जिहाद का एक उद्देश्य यह भी है कि दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है (3) मुश्रिकों को हाजियों की सेवा पर बड़ा गर्व था कुछ मुसलमानों में भी इस संबंध में वार्ता हुई तो किसी ने कहा कि इस्लाम के बाद सबसे बड़ा काम हाजियों की सेवा है इस पर यह आयतें उतरीं जिसमें बता दिया गया कि ईमान के बिना यह सब काम बर्बाद और तथ्यहीन हैं जो ईमान लाया और जिहाद किया वह उच्च कोटि का है।

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُم بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَجَنَّٰتٍ لَّهُمْ فِيهَا
نَعِيمٌ مُّقِيمٌ ﴿٢١﴾ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عِندَهُۥٓ أَجْرٌ
عَظِيمٌ ﴿٢٢﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوٓا۟ ءَابَآءَكُمْ وَ
إِخْوَٰنَكُمْ أَوْلِيَآءَ إِنِ ٱسْتَحَبُّوا۟ ٱلْكُفْرَ عَلَى ٱلْإِيمَٰنِ ۚ وَمَن
يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ إِن كَانَ
ءَابَآؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ وَإِخْوَٰنُكُمْ وَأَزْوَٰجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَ
أَمْوَٰلٌ ٱقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَٰرَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَ
مَسَٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَ
جِهَادٍ فِى سَبِيلِهِۦ فَتَرَبَّصُوا۟ حَتَّىٰ يَأْتِىَ ٱللَّهُ بِأَمْرِهِۦ ۗ وَٱللَّهُ
لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ نَصَرَكُمُ ٱللَّهُ فِى
مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۙ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ
فَلَمْ تُغْنِ عَنكُمْ شَيْـًٔا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ ٱلْأَرْضُ بِمَا
رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُم مُّدْبِرِينَ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ أَنزَلَ ٱللَّهُ سَكِينَتَهُۥ
عَلَىٰ رَسُولِهِۦ وَعَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ وَأَنزَلَ جُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا
وَعَذَّبَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ۚ وَذَٰلِكَ جَزَآءُ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٢٦﴾

منزل٢

उनका पालनहार अपने पास से दया और प्रसन्नता का उनको शुभसमाचार सुनाता है और ऐसी जन्नतों का जिसमें उनके लिए हमेशा की नेअमतें हैं (21) उसी में वे हमेशा रहेंगे निःसंदेह अल्लाह के पास तो बड़ा बदला है[1] (22) ऐ ईमान वालो! तुम अपने बापों और भाइयों को अगर वे ईमान के मुकाबले कुफ़्र को पसंद करें संरक्षक मत बनाओ और तुममें जो भी उनसे दोस्ती करेगा तो वही लोग अन्याय करने वाले हैं (23) आप कह दीजिए कि तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियाँ और तुम्हारा परिवार और वह माल जो तुमने कमा रखा है और वह करोबार जिसके ठप हो जाने का तुम्हें डर हो और वह मकान जो तुम्हें पसंद हों अगर तुम्हें अल्लाह और उसके पैग़म्बर से और उसके रास्ते में जिहाद करने से अधिक प्रिय हैं तो प्रतीक्षा करो यहां तक कि अल्लाह अपना आदेश भेज दे और अल्लाह अवज्ञाकारियों को सत्यमार्ग नहीं देता[2] (24) बेशक अल्लाह ने बहुत से अवसरों पर तुम्हारी मदद की और हुनैन के दिन भी जब तुम्हें अपनी अधिकता पर गर्व हुआ तो वह कुछ भी तुम्हारे काम न आई और धरती अपनी व्यापकता के बावजूद तुम पर तंग (संकुचित) हो गई फिर तुम पीठ फेर कर भागे[3] (25) फिर अल्लाह ने अपने पैग़म्बर पर और ईमान वालों पर ऐसी सकीनत और ऐसी सेनाएं उतारीं जो तुम्हें न दीं और इनकार करने वालों को अज़ाब दिया और यही इनकार करने वालों की सज़ा है (26)

(1) पहली आयत में तीन चीज़ों का उल्लेख था, ईमान, हिजरत और जिहाद, इस पर तीन चीज़ों की खुशख़बरी दी जा रही है, रहमत (दया) रिज़वान (प्रसन्नता) हमेशा के लिए जन्नत में रहना, आगे आयत में कहा जा रहा है कि यह नेअमतें ईमान और अल्लाह के रास्ते में जिहाद से मिलती हैं तो तुम्हारे रिश्ते–नाते इसमें रुकावट न बनें, कैसी ही करीबी नातेदारी हो अगर ईमान नहीं तो ऐसों से दोस्ती भी नहीं होनी चाहिए (2) यानी अल्लाह और उसके रसूल की बात मानने और जिहाद करने से अधिक तुम्हें दुनिया में यह साधन पसंद हैं तो ख़ुदा के अज़ाब की प्रतीक्षा करो जो इस संसार के लोभ व आराम तलबी पर आने वाला है और वह अपमान और तिरस्कार के रूप में है (3) जिहाद के समय जिस तरह अपने धन व संतान पर नज़र नहीं होनी चाहिए इसी प्रकार अपनी अधिकता पर गर्व नहीं होना चाहिए, मदद केवल अल्लाह की ओर से है जिसका अनुभव तुम बद्र, कुरैज़ा क़बीले से युद्ध और न जाने कितने अवसरों पर कर चुके हो, हुनैन की घटना यह हुई कि मक्का विजय के बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मालूम हुआ कि कबीला हवाज़िन व सक़ीफ़ बड़ा जत्था एकत्र करके मुसलमानों पर हमला करना चाहते हैं, यह समाचार मिलते ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बारह हज़ार की सशस्त्र सेना के साथ (जिनमें दो हज़ार वह भी थे जो मक्का विजय के अवसर पर मुसलमान हुए थे) तायफ़ की ओर रवाना हुए, उस समय कुछ लोगों की ज़बान से निकल गया कि आज हमें कौन हरा सकता है, यह बात अल्लाह को पसंद न आई, हवाज़िन का क़बीला तीरंदाज़ी में प्रसिद्ध था, उन्होंने इस ढंग से तीरंदाज़ी की कि मुसलमान तितर–बितर हो गये, केवल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुछ सहाबा के साथ मैदान–ए–जंग में रह गए, चारों ओर से दुश्मनों का हमला था, उस समय अल्लाह की विशेष मदद आई, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मुटठी मिट्टी उठा कर दुश्मनों की फ़ौज पर फेंकी वह सब की आँखों में पहुँची, लोग आँखें मलने लगे, इसी बीच में आपने आवाज़ दी, सहाबा ने पलट कर हमला किया और अल्लाह ने विजय प्रदान की।

ثُمَّ يَتُوبُ اللّٰهُ مِنۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَ اِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۸﴾ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿۲۹﴾ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ۨابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۳۰﴾ اِتَّخَذُوْۤا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَاۤ اُمِرُوْۤا اِلَّا لِيَعْبُدُوْۤا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۳۱﴾

منزل۲

फिर अल्लाह उसके बाद जिसे चाहे तौबा नसीब करे और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है[1] (27) ऐ ईमान वालो! शिर्क करने वाले सबके सब अपवित्र हैं बस वे इस वर्ष के बाद मस्जिदे हराम के निकट न आने पायें और अगर तुम्हें गरीबी का डर है तो अल्लाह ने अगर चाहा तो जल्द ही तुम्हें अपनी कृपा से धनी कर देगा निःसंदेह अल्लाह ख़ूब जानता हिकमत वाला है[2] (28) अहल–ए–किताब में से उन लोगों से जंग करो जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं लाते और अल्लाह और उसके पैग़म्बर की हराम की हुई चीज़ों को हराम नहीं जानते[3] न सही धर्म स्वीकार करते हैं यहाँ तक कि वे (अपने) हाथ से जिज़्या दें इस हाल में कि वे बेहैसियत हों[4] (29) यहूदी बोले कि उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं और ईसाई बोले कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं, यह उनके मुँह की बड़ है वे उन लोगों की बात से भी आगे बढ़ जाना चाहते हैं जिन्होंने उनसे पहले कुफ़्र किया, अल्लाह उन्हें बर्बाद करे यह कहाँ भटके फिर रहे हैं (30) उन्होंने अपने उलमा (धर्म ज्ञाताओं) और बुजुर्गों को और ईसा पुत्र मरियम को अल्लाह के अलावा पालनहार बना लिया जबकि उनको केवल यह आदेश था कि वे एक खुदा की उपासना करें जिसके सिवा कोई उपास्य (माबूद) नहीं उनके हर प्रकार के शिर्क से वह पवित्र है[5] (31)

(1) अतः अल्लाह ने कबीला हवाज़िन वगैरह को उसके बाद ईमान की दौलत से सम्मानित किया, खुद मालिक बिन औफ़ जो हवाज़िन क़बीले के सबसे बड़े सरदार थे मुसलमान हुए और इस्लाम के बड़े पेशवाओं में उनकी गिनती होती है। (2) मक्का विजय के बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एलान करा दिया कि आगे कोई मुश्रिक या काफ़िर मस्जिद–ए–हराम में बल्कि हरम की सीमा में प्रवेश न करे, इसलिए कि उनके दिल इतने ज़्यादा अपवित्र हैं कि वे इन पवित्र स्थलों में प्रवेश करने के योग्य नहीं, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जज़ीरतुल अरब से उनके निकाले जाने का आदेश दिया जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के युग में पूरा हुआ, इस आदेश से लोगों को खयाल हुआ कि जब लोगों का आना–जाना बन्द हो जाएगा तो आय के स्रोत भी कम हो जाएंगे, अल्लाह तआला ने फरमाया कि आगे अल्लाह तुम्हें खूब नवाज़ने वाला है (3) इससे पैग़म्बरी के मक़ाम की महानता का बोध होता है कि रसूल का हराम करना भी अल्लाह के हराम करने की तरह है (4) अहल–ए–किताब की शक्ति तोड़ने का भी आदेश हुआ, हाँ! उनके लिए उस समय यह अनुमति दी गई कि वे प्रजा बन कर जिज़्या देकर रहना चाहें तो रह सकते हैं, बाद में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जज़ीरतुल अरब (अरब प्रायद्वीप) को पूर्ण रूप से पाक करने का आदेश दिया, आगे अहल–ए–किताब की खुली गुमराहियों और शिर्क का उल्लेख है कि वे शिर्क में पहले के मुश्रिकों से भी आगे बढ़ जाना चाहते हैं, यहूदियों ने हज़रत उज़ैर को खुदा का बेटा बताया और ईसाइयों ने हज़रत ईसा को खुदाई में साझी ठहराया और अपने धर्म ज्ञाताओं और संतो को भी खुदाई का दर्जा दे दिया कि उनकी बेदलील बातें भी बड़ी सरलता से मानने लगे (5) अहल–ए–किताब अपने उलमा (धर्म ज्ञाताओं) को धार्मिक क़ानून बनाने वाले की हैसियत देते थे और समझते थे कि वे जो कह दें चाहे वह अल्लाह की किताब अनूकूल हो या न हो मानना ज़रूरी है, इस पर सख़्त पकड़ की जा रही है, इस उम्मत (समुदाय) के उलमा और इमाम लोगों ने धर्म (दीन) की जो व्याख्या और अनुवाद किया है वह दीन की बड़ी सेवा है और उनकी बात मानना आम लोगों पर अनिवार्य है जो जानते नहीं, इसलिए कि अल्लाह का कहना है "अगर तुम नहीं जानते तो याद रखने वालों से पूछ लो" यह उलमा व इमाम लोग अपनी ओर से कुछ नहीं कहते वे मात्र कुरआन व हदीस के प्रवक्ता (व्याख्याकार) हैं।

يُرِيدُونَ أَن يُطْفِـُٔوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى
اللَّهُ إِلَّا أَن يُتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿٣٢﴾ هُوَ
الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ
عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْأَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَأْكُلُونَ
أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ
وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنفِقُونَهَا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٤﴾ يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا
فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوَىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ
هَٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ فَذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَكْنِزُونَ ﴿٣٥﴾
إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِندَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي
كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا
أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ فَلَا تَظْلِمُوا
فِيهِنَّ أَنفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً كَمَا
يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٦﴾

النصف

منزل ٢

वे चाहते हैं कि अपनी फूँकों से अल्लाह की रौशनी को बुझा दें जब कि अल्लाह अपनी रौशनी पूरी करके रहेगा चाहे काफ़िरों को कैसा ही बुरा लगे (32) वही वह ज़ात है जिसने अपने पैग़म्बर को हिदायत (संमार्ग) और सच्चे दीन (धर्म) के साथ भेजा ताकि उसको हर दीन पर ग़ालिब (हावी) कर दे चाहे शिर्क करने वालों पर कैसा ही भारी हो[1] (33) ऐ ईमान वालो! (यहूदी) विद्वानों और (ईसाइ) सतों में बेशक बहुत से ऐसे हैं जो नाहक़ लोगों के माल खाते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और जो लोग भी सोना और चाँदी इकट्ठा करके रखते हैं और अल्लाह के रास्ते में उसको खर्च नहीं करते उनको दुखद अज़ाब की खुशख़बरी दे दीजिए (34) जिस दिन उसको दोज़ख़ की आग में तपाया जाएगा फिर उससे उनके माथों और उनके पहलुओं और उनकी पीठों को दाग़ा जाएगा, यही है ना जो तुमने इकट्ठा करके रखा था, बस जो भी तुम जमा करके रखते थे, अब उसका मज़ा चखो[2] (35) निःसंदेह महीनों की संख्या अल्लाह के यहां अल्लाह की किताब में, जिस दिन से उसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया बारह ही है, उनमें चार आदर वाले हैं, यही ठीक–ठीक दीन है, तो उनमें अपने साथ अन्याय न करो और सब मुश्रिकों से लड़ो जैसे वे सब तुमसे लड़ते हैं और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है[3] (36)

(1) अल्लाह ने दीन (धर्म) के सूरज को बुलन्द किया और दुश्मन ऐंठ कर रह गए (2) जो लोग भी माल इकट्ठा करते हैं और उसके आवश्यक हक़ अदा नहीं करते, ज़कात नहीं निकालते उनके लिए यह वईद (धमकी) है, अब ज़ाहिर है जो उलमा (धर्म ज्ञाता) ब्याज व रिश्वत लेकर आदेश बताया करते थे उनके बारे में बात साफ़ हो गई कि उन्होंने अपने लिए कैसा आग का ईंधन इकट्ठा कर रखा है (3) हमेशा से साल बारह महीने का रहा है फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दीन में उनमें चार महीने आदर वाले थे "ज़ीक़दह, ज़िलहिज्जह, मुहर्रम और रजब उनमें लड़ना हराम था ताकि लोगों को हज के लिए आने जाने में भी कठिनाई न हो, यह आदर का आदेश अब अधिकतर उलमा के नज़दीक बाक़ी न रहा, काफ़िरों से जंग हर मौसम में जायज़ है, आपस में ज़ुल्म करना हमेशा अवैध है, हाँ! इन महीनों में इसकी कठोरता और बढ़ जाती है और यह भी बेहतर है कि अगर कोई काफ़िर क़ौम इन महीनों का आदर करती हो तो मुसलमान भी उनसे लड़ाई में पहल न करें।

إِنَّمَا النَّسِيٓءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُ عَامًا لِيُوَاطِئُوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيُحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللَّهُ زُيِّنَ لَهُمْ سُوءُ أَعْمَالِهِمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمُ انْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ اثَّاقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ أَرَضِيتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٣٨﴾ إِلَّا تَنْفِرُوا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾ إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٠﴾ انْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

منزل٢

और महीनों का अपनी जगह से हटा देना कुफ़्र में वृद्धि करना है, इनकार करने वाले इसी से गुमराह होते हैं वे किसी साल उसको हराम कर लेते हैं और किसी साल उसे जायज़ कर लेते हैं ताकि अल्लाह के हराम किये हुए महीनों की संख्या पूरी कर लें तो वे अल्लाह की हराम की हुई चीज़ को जायज़ करते हैं, उनके बुरे कर्म उनके लिए सुहाने बना दिये गये हैं और अल्लाह इनकार करने वाले लोगों को हिदायत नहीं देता[1] (37) ऐ ईमान वालो! तुम्हें क्या हो गया है जब तुमसे कहा गया कि अल्लाह के रास्ते में निकलो तो तुम ज़मीन में ठस हो कर रह गये क्या तुम आख़िरत के मुकाबले दुनिया ही की जिन्दगी में मगन हो गए, तो दुनिया की ज़िन्दगी का सामान आख़िरत के मुकाबले बहुत ही कम है (38) अगर तुम न निकले तो वह तुम्हें दुखद अज़ाब में ग्रस्त करेगा और तुम्हारे बदले दूसरी क़ौम को ला खड़ा करेगा और अल्लाह हर चीज़ पर पूरा सामर्थ्य रखता है[2] (39) अगर तुम उनकी मदद नहीं करते तो उनकी मदद अल्लाह ने उस समय की जब उनको काफ़िरों ने निकाल दिया, दोनों में एक जब कि वे दोनों गुफ़ा में थे जब वे अपने साथी से कह रहे थे कि दुःखी न हो अल्लाह हमारे साथ है तो अल्लाह ने अपनी सकीनत (शांति) उन पर उतारी और ऐसी सेनाओं से उनको शक्ति दी जिनको तुमने न देखा और काफ़िरों की बात को नीचा किया और बात तो अल्लाह ही की ऊँची है और अल्लाह ज़बर्दस्त है हिकमत वाला है[3] (40) निकलो हलके और भारी होकर और अपने मालों और जानों से अल्लाह के रास्ते में जिहाद करो यही तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो (41)

---

(1) काफ़िरों ने एक गुमराही पर यह निकाली थी कि आपस में लड़ते, अगर मोहर्रम का महीना आ जाता तो कहते कि इस बार "सफ़र" पहले आ गया, मुहर्रम बाद में आएगा और इस बहाने से मोहर्रम में भी लड़ते रहते और हराम को हलाल करते तो इस तरह चार महीने तो बाकी रखते लेकिन उनको अपनी मनमानी से इधर से उधर करते रहते (2) अब यहाँ से ग़ज़्व–ए–तबूक का उल्लेख़ शुरु हो रहा है और इसमें निकलने पर प्रेरित किया जा रहा है और न निकलने पर उसके अज़ाब से डराया जा रहा है, यह ग़ज़वा सन् 9 हिजरी में घटित हुआ, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मालूम हुआ कि शाम का ईसाइ बादशाह रोम के सहयोग से हमला करने वाला है तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आगे बढ़कर रोकना उचित समझा, वह तीव्र गर्मी का मौसम था, फ़सल पक रही थी, छाँव अच्छी थी इस परिस्थिति में मुनाफ़िक तो बहाना करके निकल लिए, कुछ ईमान वालों से भी सुस्ती हुई जिनको बाद में बड़ा पछतावा हुआ (3) मान लो अगर तुम मदद नहीं करते तो अल्लाह ने उनकी उस समय मदद की जब उनके साथ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु थे, यह हिजरत की घटना है जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत अबूबक्र के साथ सौर गुफ़ा में थे और मुश्रिक सामुद्रिक विद्या के जानकारों की सहायता से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट पहुँच गए लेकिन अल्लाह के आदेश से गुफ़ा के मुख पर मकड़ी ने जाला लगा दिया और कबूतरी ने अण्डे दे दिए तो वे देख कर बोले कि यहाँ तो वर्षों से कोई दाखिल नहीं हुआ, हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके क़दमों को देख लिया और कहा कि अल्लाह के पैग़म्बर! अगर इन्होंने नीचे झांका तो हमें देख लेंगे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा "उन दो के बारे में तुम्हारा क्या विचार है जिनका तीसरा अल्लाह है", बस मुश्रिक असफल वापस हुए, अल्लाह ने दिखा दिया कि उसने अपनी सबसे कमज़ोर सृष्टि से बड़े–बड़े मज़बूत किलों से बढ़कर सुरक्षा का काम लिया और यहीं से ईमान वालों को समझाया जा रहा है कि तुम अपनी कमी व कमज़ोरी को न देखो, काम लेने वाला अल्लाह है, बस तुम हर हाल में सवार, पैदल, निर्धन व धनी निकल पड़ो और जिहाद करो, अगर तुमने उपरोक्त घटनाओं और तथ्यों पर विचार कर लिया तो तुम उसकी बेहतरी समझ लोगे।

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ
وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ
لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝٤٢ عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ
اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ
الْكٰذِبِيْنَ ۝٤٣ لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝٤٤ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ
فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ۝٤٥ وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ
لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ
فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝٤٦
لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا
وَّلَاَاوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ
وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٤٧

منزل۲

अगर धन निकट होता और यात्रा हल्की होती तो वे ज़रूर आपके साथ हो लेते लेकिन उन्हें यह कठिन दूरी दूर लगी और अब यह लोग अल्लाह की कसमें खाएंगे कि अगर हमारे वश में होता तो हम ज़रूर आपके साथ निकलते, यह अपने ही ऊपर मुसीबत ले रहे हैं और अल्लाह जानता है कि यह पक्के झूठे हैं[1] (42) अल्लाह आपको माफ़ करे आपने उनको अनुमति ही क्यों दी यहाँ तक कि सच्चे लोग आप पर ज़ाहिर हो जाते और झूठों को भी आप जान लेते[2] (43) वे लोग अपने मालों और जानों से जेहाद करने की छुट्टी तो आपसे नहीं लेते जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और अल्लाह डरने वालों को खूब जानता है[3] (44) छुट्टी तो आपसे वे लोग लेते हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते, उनके दिल संदेहग्रस्त हैं तो वे अपने संदेह में ही डांवाडोल हैं (45) और अगर उनका निकलने का इरादा होता तो उसके लिए कुछ तो सामान तैयार करते लेकिन अल्लाह को उनका जाना पसंद ही न आया तो उसने उनको ठस कर दिया और आदेश हुआ कि (अपाहिज) बैठने वालों के साथ बैठे रहो[4] (46) अगर वे तुम्हारे साथ निकलते भी तो तुम्हारी कठिनाइयाँ बढ़ाते और तुममें फित्ना डालने की चिन्ता में तुम्हारे बीच दौड़ते फिरते और तुममें उनके कुछ जासूस मौजूद हैं और अल्लाह अत्याचारियों से खूब अवगत है (47)

(1) यह मुनाफिकों का वर्णन है अगर उनको सुविधापूर्वक धन की आशा होती तो ज़रूर आपके साथ निकलते लेकिन कठिनाइयों को देख कर झूठी कसमें खा–खा कर बहाने करने लगे फिर वापसी के बाद उलटी कसमें खाकर अपने ही ऊपर मुसीबत बढ़ा रहे हैं (2) मुनाफिक झूठे बहाने करके जब मदीने में ठहरने की अनुमति मांगते तो हज़रत मुहम्मद सल्ल0 उनको इजाज़त दे देते और उनके छल–कपट को उपेक्षित करते, उनके बारे में कहा जा रहा है कि अगर आप अनुमति न देते तो अधिक उचित होता इसलिए कि इसके बावजूद भी वे निकलने वाले न थे, उस समय उनकी वास्तविकता खुल कर सामने आ जाती (3) ईमान वालों के दिल तो शहीद होने के शौक़ से भरे हुए हैं (4) वे तो संदेह में पड़े हुए हैं और उनका निकलने का इरादा ही नहीं वरना कुछ तो व्यवस्था करते और तुरंत ही बहाना करने न लगते, उनसे मानो कह दिया गया कि अपाहिज़ों की तरह घरों में बैठे रहो और उनके दिल की बुराई की वजह से अल्लाह को ऐसे शुभ कार्य में उनका सम्मिलित होना पसंद ही न आया, आगे कहा जा रहा है कि अगर वे निकलते भी तो मुसीबत बनते फित्ने डालते, फूट डालते, और भी सावधान किया जा रहा है कि उनके जासूस अब भी तुममें मौजूद हैं उनसे सावधान रहने की आवश्यकता है।

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا لَكَ الْأُمُورَ
حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿۴۸﴾
وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي
الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢبِالْكٰفِرِيْنَ ﴿۴۹﴾
اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ
يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَآ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ
فَرِحُوْنَ ﴿۵۰﴾ قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ
مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۱﴾ قُلْ
هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ؕ وَنَحْنُ
نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖۤ
اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۖ فَتَرَبَّصُوْۤا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿۵۲﴾ قُلْ
اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا
فٰسِقِيْنَ ﴿۵۳﴾ وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّآ
اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ
اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿۵۴﴾

منزل۲

पहले भी वे फ़ित्ने (उपद्रव) की खोज में रहे और आपके कामों में उलट फेर करते रहे यहाँ तक कि सच्चा वादा आ पहुँचा और अल्लाह का आदेश ग़ालिब होकर रहा और वे कुढ़ते ही रह गये[1] (48) और उनमें कुछ कहते हैं कि मुझे छुट्टी दे ही दीजिए और मुसीबत में न डालिए, अरे वे तो मुसीबत में पड़ ही गए और दोज़ख सारे इनकार करने वालों को घेर कर रहेगी[2] (49) अगर आपको कोई भलाई प्राप्त होती है तो उनको बुरा लगता है और अगर आप किसी कठिनाई में पड़ जाते हैं तो वे कहते हैं कि हमने अपना काम पहले ही संभाल लिया है और वे खुश–खुश वापस जाते हैं[3] (50) आप कह दीजिए कि हमको वही (तकलीफ़) पहुँचेगी जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दी है, वही हमारा मालिक है और ईमान वाले अल्लाह ही पर भरोसा करते हैं (51) आप कह दीजिए कि हमारे बारे में तुम्हें जिस चीज़ की प्रतीक्षा है वह तो दो भलाइयों में से एक है और हम तुम्हारे हक में इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि अल्लाह या तो अपने पास से तुम्हें अज़ाब दे या हमारे हाथों से तो तुम भी प्रतीक्षा करो हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा में हैं[4] (52) (यह भी) कह दीजिए कि तुम खुशी–खुशी माल खर्च करो या मारे–बाँधे, तुमसे कदापि स्वीकार न किया जाएगा निसंदेह तुम अवज्ञाकारी लोग हो (53) और उनके सदक़ों (दान) की स्वीकार्यता में केवल यही चीज़ रूकावट है कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर का इनकार किया और नमाज़ में आते भी हैं तो काहिली के साथ और खर्च भी करते हैं तो नागवारी के साथ[5] (54)

(1) हिजरत के बाद ही से मुनाफ़िक़ विभिन्न प्रकार से व्यवधान उत्पन्न करते रहे मगर जब बद्र में अल्लाह ने महान विजय प्रदान की तो मुनाफ़िक़ों के नेता अब्दुल्लाह पुत्र उबई ने कहा कि यह मामला अब रुकता हुआ नज़र नहीं आता तो बहुत से मुनाफ़िक़ों ने ऊपर–ऊपर से मुसलमानों का रूप धारण कर लिया, लेकिन भीतर–भीतर से वे जलते ही रहे और नुक़सान पहुंचाने का प्रयास करते रहे (2) मुनाफ़िक़ कहते हैं कि वहाँ ले जाकर हमको मुसीबत में न डालिए जबकि अल्लाह और पैग़म्बर की अवज्ञा करके उससे बढ़कर मुसीबत में वे पड़ चुके (3) मुनाफ़िक़ों का तरीक़ा था कि अगर विजय होती और ग़नीमत का माल प्राप्त होता तो उनको अंदर ही अंदर बुरा लगता और अगर मुसलमान शहीद होते और कठिनाईयाँ आतीं तो आपस में खुश हो कर बगलें बजाते कि हम तो अलग ही रहे, हमारे सब काम ठीक हैं, मुसीबत से हम बच गए (4) तुम बर्बादी की आशा करते हो वह हमारे लिए "शहादत" है जो भलाई है या तुम्हें ख़्याल होता है कि यह लोग शायद बच ही जाएं तो वह भी भलाई है और हम तुम्हारे निफ़ाक़ की वजह से आशावान हैं कि अल्लाह तुम्हें खुद ही अपमानित करे और अज़ाब दे या हमारे हाथों में तुम्हारा अपमान हो अतः हमें तुम्हें दोनों को एक दूसरे का परिणाम देखने के लिए प्रतीक्षारते रहना चाहिए, फिर मालूम हो जाएगा कि किसका परिणाम बेहतर हुआ (5) एक मुनाफ़िक़ ने बहाना किया था कि रूमी महिलाओं को देख कर फ़ित्ने में पड़ जाऊँगा इसलिए नहीं जा सकता हाँ! आर्थिक सहायता करता हूँ, उसका और उस जैसे मुनाफ़िक़ों का उत्तर है कि कुफ़्र के साथ जो उनके दिल के भीतर है कोई भलाई का कार्य स्वीकार्य नहीं, शेष नमाज़ में काहिली के साथ आना और अनिक्षापूर्वक ख़र्च करना यह सब कुफ़्र के बाह्य लक्षण हैं।

فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ
بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝
وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ۭ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ
يَّفْرَقُوْنَ ۝ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا
لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ
فِي الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا
مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ۝ وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ
وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَ
رَسُوْلُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ۝ اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَاۗءِ
وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي
الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۭ فَرِيْضَةً
مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ
النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ۭ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ
بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
مِنْكُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

منزل٢

ع

तो उनका माल और उनकी संतान आपको अचंभे में न डाल दे अल्लाह यही चाहता है कि इसके द्वारा उनको दुनिया के जीवन में अज़ाब दे और कुफ़्र ही की हालत में उनकी जान निकले[1] (55) और वे अल्लाह की कसमें खाते हैं कि वे तुम्ही में हैं, वे तुम में हैं ही नहीं हाँ वे डरपोक लोग हैं (56) अगर उनको कोई शरण की जगह या गुफ़ा या घुस बैठने की कोई जगह मिल जाए तो उसी की ओर रस्सियाँ तुड़ा कर भागें[2] (57) और उनमें कुछ ज़कात बांटने में आपको ताना देते हैं तो अगर उसमें से उनको मिल गया तो खुश हो गए और अगर न मिला तो बस उसी क्षण वे नाराज़ हो जाते हैं[3] (58) और अल्लाह और उसके पैग़म्बर ने उनको जो कुछ दिया क्या अच्छा होता कि वे उससे खुश होते और कहते कि अल्लाह ही हमको काफ़ी है अल्लाह अपनी कृपा से और उसके पैगम्बर हम को दे देंगे और हम तो अल्लाह ही से लौ लगाए हैं (59) ज़कात तो अधिकार है फ़क़ीरों का और मिस्कीनों (निर्धनों) का और उसके काम पर जाने वालों का और उनका जिनकी सहानुभूति करनी है और गुलामों (के आज़ाद करने) में और जो कर्ज़दारों (के क़र्ज़ चुकाने) में और अल्लाह के रास्ते में और यात्री (की आवश्यकता) में (उसको खर्च किया जाये) अल्लाह की ओर से निर्धारित है और अल्लाह खूब जानता बड़ी हिकमत वाला है[4] (60) और उनमें कुछ वे हैं जो पैग़म्बर को तकलीफ़ पहुँचाते हैं और कहते हैं यह तो (सब) सुन लेते हैं आप कह दीजिए कि वे केवल तुम्हारे भले को सुनते हैं, अल्लाह पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों (की बात) का विश्वास करते हैं और ईमान वालों के लिए सरापा रहमत हैं और जो लोग भी अल्लाह के पैगम्बर को तकलीफ़ पहुँचाते हैं उनके लिए दुखद अज़ाब है[5] (61)

(1) मदीने के मुनाफ़िक़ों का यह हाल था कि अनिच्छा पूर्वक जिहाद आदि के अवसरों पर ख़र्च करते थे और उनकी संतान में कुछ सच्चे मुसलमान होकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जिहाद में शामिल होते, यह दोनों चीज़ें मुनाफिकों की सहमति के विरुद्ध थी, इस प्रकार उनके माल व संतान दुनिया में भी उनके लिए अज़ाब (यातना) बन गए थे और अल्लाह ने उनको इसी हाल में परेशान कर दिया था कि इसी में उनकी जान निकले (2) केवल फायदा हासिल करने के लिए अपने को मुसलमान बताते हैं, ज़रा भी उनको सिर छिपाने का अवसर मिल जाए और इस्लामी सरकार का भय न रहे तो वे पूरी तरह कुफ़्र में भागें इसलिए कि उसी में उनके दिल रंगे हुए हैं (3) धन लोभी हैं ज़रा कम मिले तो ताना देने लगते हैं फिर आगे ईमान वालों का गुण बयान किया जा रहा है कि उनका उद्देश्य अल्लाह की प्रसन्नता है (4) बात साफ़ कर दी गई कि ज़कात ख़र्च करने की जगहें निर्धारित हैं जो आठ हैं, पैग़म्बर को यह अधिकार नहीं कि वह जिसको चाहें दे दें – 1. फ़क़ीरः जिनके पास कुछ न हो, 2. मिस्कीनः जिनके पास आवश्यकता भर भी न हो, 3. आमिलीनः जो सरकार की ओर से ज़कात वसूलते हैं, 4. मुवल्लफतुल क़ुलूबः इस्लाम लाने वाले लोग जिनके मनोयोग (दिल जमई) की आवश्यकता हो, 5. अर्रिक़ाबः गुलाम आज़ाद कराने में 6. ग़ारिमीनः जो किसी का कर्ज़ अपने जिम्मे ले लें या स्वयं किसी मुसीबत का शिकार हो जाएं 7. फी सबीलिल्लाहः जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद वग़ैरह में व्यस्त हों 8. इब्नुस्सबीलः यात्री जो यात्रा में परीशान हो चाहे घर का धनी हो (5) मुनाफिक आपस में बैठ कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में बुरा–भला कहते जब कोई कहता कि बात पहुँच जाएगी तो जवाब देते कि हम जाकर झूठे बहाने करके बरी हो जाएंगे, आप तो कान ही कान में जो सुनते हैं मान लेते हैं इसी का जवाब दिया जा रहा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब जानते हैं वह तुम्हारे बुरे भले को सब सुन लेते हैं और तुम्हारा भाण्डा नहीं फोड़ते वरना उनका विश्वास तो केवल ईमान वालों की बातों पर होता है।

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ
اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا
اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ
خَالِدًا فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٣﴾ يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ
اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ
قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَىِٕنْ
سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ۭ قُلْ اَبِاللّٰهِ
وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ
كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ۭ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَاۗىِٕفَةٍ مِّنْكُمْ
نُعَذِّبْ طَاۗىِٕفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٦٦﴾ اَلْمُنٰفِقُوْنَ
وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ۭ نَسُوا
اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ۭ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَعَدَ اللّٰهُ
الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ۭ هِىَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٦٨﴾

منزل ٢

वे तुम्हें राज़ी करने के लिए अल्लाह की कस्में खाते हैं जब कि अल्लाह और उसके पैग़म्बर अधिक हक़दार हैं कि वे उसको राज़ी करें अगर वे ईमान रखते हों[1] (62) क्या उन्हें पता नहीं कि जो भी अल्लाह और उसके पैग़म्बर के मुक़ाबले पर आएगा तो उसके लिए दोज़ख़ की आग है उसी में सदैव रहेगा यही बड़ा अपमान है (63) मुनाफ़िक़ डरते हैं कि उन पर कोई ऐसी सूरह न उतर आए जो उनके दिल की बातें उनके सामने खोल दे, कह दीजिए कि तुम ठट्ठा करते रहो और अल्लाह उस चीज़ को खोलने वाला है जिसका तुम्हें धड़का लगा हुआ है (64) और अगर आप उनसे पूछें तो यही कहेंगे कि हम तो गप शप में और खेल में लगे हुए थे, पूछिए कि क्या तुम अल्लाह और उसकी आयतों और उसके पैग़म्बर का मज़ाक़ बना रहे थे[2] (65) बहाने मत बनाओ ईमान लाने के बाद तुमने कुफ़्र किया, अगर हम तुम में एक गिरोह को माफ़ भी कर देंगे तो दूसरे गिरोह को सज़ा देंगे इसलिए कि वे अपराधी लोग हैं[3] (66) मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें सब एक ही हैं, बुराई सिखाते हैं और भलाई से रोकते हैं और अपने हाथों को बन्द रखते हैं, उन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने उनको भुला दिया निःसंदेह मुनाफिक़ ही अवज्ञाकारी हैं (67) अल्लाह ने मुनाफिक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और इनकार करने वालों के लिए दोज़ख की आग का वादा कर रखा है, वे हमेशा उसी में पड़े रहेंगे वही उनके लिए काफी है और उन पर अल्लह का धिक्कार (लानत) है और उनके लिए न टलने वाला अज़ाब है (68)

(1) कभी उनकी धोखे बाज़ी पकड़ी जाती है तो मुसलमानों के पास जाकर कस्में खाते हैं कि हमारी नियत बुरी न थी, कहा जा रहा है कि अगर ईमान के दावे में सच्चे हैं तो अल्लाह और उसके पैग़म्बर को छोड़ कर दूसरों की खुशी प्राप्त करने की चिंता में क्यों लगे हो (2) तबूक युद्ध के अवसर पर उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भी मज़ाक उड़ाया था और सहाबा को भी कहा कि यह जंग को खेल समझते हैं, कल सब रूमियों के दरबार में जंजीरों और हथकड़ियों में जकड़े खड़े होंगे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मालूम हुआ तो उन्होंने कहा कि हम यह धारणा थोड़ी ही रखते थे, दिल बहलाने के लिए ऐसी बातें कर लिया करते थे कि रास्ता कट जाए, यह सब बातें करते थे और डरते भी थे कि अभी कोई आयत ऐसी न उतरे जिससे वास्तविकता खुल जाए, अल्लाह कहता है कि उनकी वास्तविकता खुलने वाली है, फिर अगली आयतों में खुल कर मुनाफिकों की बुराई का वर्णन और फिर काफिरों के साथ उनके दोज़ख में जाने की धमकी का उल्लेख है जिन का काम ही तितर बितर करना अन्दर से मुसलमानों की जड़ काटना और धन बटोरना है (3) झूठे बहाने करने से कुछ नहीं होगा जो तौबा करले तो वह बचेगा या जो मज़ाक़ से दूर रहेगा तो वह भी शायद दुनिया में बच जाए बाकी सब पकड़े जाएंगे।

كَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ كَانُوٓا أَشَدَّ مِنكُمْ قُوَّةً وَأَكْثَرَ
أَمْوَٰلًا وَأَوْلَٰدًا فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلَٰقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُم
بِخَلَٰقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ مِن قَبْلِكُم بِخَلَٰقِهِمْ
وَخُضْتُمْ كَالَّذِي خَاضُوٓا أُولَٰٓئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَٰلُهُمْ فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الْخَٰسِرُونَ ﴿٦٩﴾ أَلَمْ يَأْتِهِمْ
نَبَأُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَقَوْمِ
إِبْرَٰهِيمَ وَأَصْحَٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَٰتِ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُم
بِالْبَيِّنَٰتِ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوٓا أَنفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ﴿٧٠﴾ وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَٰتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَآءُ
بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ
وَيُقِيمُونَ الصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَوٰةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ أُولَٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾
وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَٰتِ جَنَّٰتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا
الْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا وَمَسَٰكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّٰتِ عَدْنٍ
وَرِضْوَٰنٌ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٧٢﴾

منزل٢

उन लोगों की तरह जो तुमसे पहले हुए वे तुम से ज़्यादा बलवान थे और माल व संतान में भी तुमसे बढ़कर थे तो उन्होंने अपने हिस्से से फ़ायदा उठाया तो जिस तरह उन्होंने अपने हिस्से से फ़ायदा उठाया तुमने भी अपने और जहाँ उन्होंने कदम रखा तुमने भी वहीं कदम रखा, वही लोग हैं जिनके कर्म दुनिया व आख़िरत में बेकार गये और वही लोग घाटे में रहे[1] (69) क्या उनको पहले वालों की ख़बर नहीं पहुँची नूह की क़ौम और आद व समूद की और इब्राहीम की क़ौम और मदयन वालों की और उलटी बस्तियों की[2] उनके पास हमारे पैग़म्बर खुली निशानियाँ ले कर आए तो अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया लेकिन वे खुद ही अपने ऊपर अत्याचार करते रहे (70) और ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें एक दूसरे के सहायक हैं वे भलाई सिखाते हैं और बुराई से रोकते हैं और नमाज़ कायम रखते हैं और ज़कात अदा करते हैं और अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञा का पालन करते हैं यही लोग हैं जिन पर अल्लाह की कृपा होने वाली है निःसंदेह अल्लाह जबर्दस्त है हिकमत वाला है (71) अल्लाह तआला ने ईमान लाने वाले मर्दों और औरतों से ऐसी जन्नतों का वादा कर रखा है जिनके नीचे नहरें जारी होंगी हमेशा के लिए उसीमें रह पड़ेंगे और हमेशा रहने वाली जन्नतों में अच्छे–अच्छे मकानों का और अल्लाह की प्रसन्नता सबसे बढ़कर है यही बड़ी सफलता है[3] (72)

---

(1) यानी तुम भी उन्हीं की तरह आख़िरत के परिणाम से अचेत हो कर दुनिया के साधन से जितना भाग्य में लिखा हुआ है पा रहे हो और सारी चाल ढाल उन्हीं की तरह रखते हो तो समझ लो कि वे तुम से अधिक बलवान हो कर न बच सके तो तुम्हारा अंजाम क्या होगा (2) इन सब का उल्लेख सूरः आअ्राफ़ में हो चुका है सिवाय इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के अल्लाह ने विचित्र शैली में उनकी मदद की जिसे देख कर उनकी क़ौम अपमानित और असफल हुई और नमरूद बदहाली की मौत मारा गया (3) रुकूअ़ के आरम्भ से मुनाफ़िक़ों के हालात बयान हुए और उनके मुकाबले ईमान वालों का उल्लेख किया जा रहा है और उनके गुणों का बयान हो रहा है और उस पर जो अल्लाह के वादे और उसकी प्रसन्नता मिलने वाली है उसका वर्णन किया जा रहा है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ جَٰهِدِ ٱلْكُفَّارَ وَٱلْمُنَٰفِقِينَ وَٱغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَ
مَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ ﴿٧٣﴾ يَحْلِفُونَ بِٱللَّهِ مَا قَالُوا۟
وَلَقَدْ قَالُوا۟ كَلِمَةَ ٱلْكُفْرِ وَكَفَرُوا۟ بَعْدَ إِسْلَٰمِهِمْ وَهَمُّوا۟
بِمَا لَمْ يَنَالُوا۟ ۚ وَمَا نَقَمُوٓا۟ إِلَّآ أَنْ أَغْنَىٰهُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ
مِن فَضْلِهِۦ ۚ فَإِن يَتُوبُوا۟ يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۖ وَإِن يَتَوَلَّوْا۟
يُعَذِّبْهُمُ ٱللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْءَاخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ
فِى ٱلْأَرْضِ مِن وَلِىٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٧٤﴾ وَمِنْهُم مَّنْ عَٰهَدَ ٱللَّهَ لَئِنْ
ءَاتَىٰنَا مِن فَضْلِهِۦ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٧٥﴾
فَلَمَّآ ءَاتَىٰهُم مِّن فَضْلِهِۦ بَخِلُوا۟ بِهِۦ وَتَوَلَّوا۟ وَّهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٧٦﴾
فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِى قُلُوبِهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ يَلْقَوْنَهُۥ بِمَآ أَخْلَفُوا۟
ٱللَّهَ مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا۟ يَكْذِبُونَ ﴿٧٧﴾ أَلَمْ يَعْلَمُوٓا۟
أَنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَىٰهُمْ وَأَنَّ ٱللَّهَ عَلَّٰمُ
ٱلْغُيُوبِ ﴿٧٨﴾ ٱلَّذِينَ يَلْمِزُونَ ٱلْمُطَّوِّعِينَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ
فِى ٱلصَّدَقَٰتِ وَٱلَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ
فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ ۙ سَخِرَ ٱللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٩﴾

منزل ٢

ऐ नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िकों से जिहाद कीजिए और उन पर सख़्ती कीजिए और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बदतरीन जगह है (73) वे अल्लाह की क़समें ख़ाते हैं कि उन्होंने नहीं कहा जबकि वो कुफ़्र का कलिमा कह चुके और इस्लाम लाकर मुनकिर हो गये[1] और ऐसी चीज़ का इरादा किया जो उनके हाथ में न आ सकी[2] और ये सब कुछ उसी का बदला था कि अल्लाह और उसके रसूल ने उनको अपने फ़ज़्ल से मालदार कर दिया था बस अगर वे तौबा कर लेते हैं तो उनके हक़ में बेहतर होगा और अगर नहीं मानते हैं तो अल्लाह दुनिया और आख़िरत में तकलीफ़ वाला अज़ाब देगा और पूरी ज़मीन पर उनका कोई साथी और मदद करने वाला नहीं होगा[3] (74) और कुछ उनमें वे हैं जिन्होंने अल्लाह से अहद किया कि अगर अल्लाह ने हमको अपनी कृपा से दे दिया तो हम अवश्य सद्क़ा (दान) करेंगे और भले लोगों में हो जाएंगे (75) फिर जब उसने अपना फ़ज़्ल (कृपा) उनको प्रदान किया तो वे उसमें कंजूसी करने लगे और मुँह फेर के भागे (76) तो अल्लाह ने उसके फलस्वरूप उस दिन तक के लिए उन दिलों में निफ़ाक़ (कपट) पैदा कर दिया जिस दिन वे अल्लाह से मिलेंगे इसलिए कि उन्होंने अल्लाह से प्रतिज्ञा भंग (वादा खिलाफ़ी) की और इसलिए कि वे झूठ ही कहा करते थे[4] (77) क्या उन्होंने नहीं जाना कि अल्लाह उनके भेद से और उनकी काना–फूसियों से अवगत है और अल्लाह तमाम छिपी चीज़ों को ख़ूब जानता है (78) ईमान वालों में से दिल खोल कर सद्क़ा करने वालों को जो ताना देते हैं और उनपर जो केवल अपने गाढ़े की कमाई ही रखते हैं तो वे उनकी हंसी उड़ाते हैं, अल्लाह उनकी हंसी उड़ा चुका और उनके लिए दुखद अज़ाब है[5] (79)

(1) तबूक युद्ध के अवसर पर मुनाफ़िक खुलकर सामने आए इसलिए आदेश हो रहा है कि अब उनके साथ सख़्ती की जाए और हर हाल में बुराईयों को दूर कने का प्रयास किया जाए, जिहाद तलवार से भी होता है और ज़बान से भी होता है, कलम से भी होता है, बुराइयों को दूर करने का हर संघर्ष जिहाद कहलाता है, उसकी उच्चतम श्रेणी तलवार से जिहाद करना है जिसमें आदमी जान हथेली पर रख कर निकलता है (2) मुनाफ़िकों ने जो काफ़िरों वाली बातें कही थीं उन पर जब पकड़ हुई तो उन्होंने साफ़ इनकार कर दिया कुरआन गवाही दे रहा है कि उनकी ओर से जो शिकायतें पहुँची हैं वह सही हैं (3) एक बार कुछ मुनाफ़िक़ों ने तबूक युद्ध से वापसी पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शहीद करने की कोशिश की थी, हज़रत हुज़ैफ़ा और अम्मार साथ थे, हज़रत अम्मार को उन्होंने घेर लिया लेकिन हज़रत हुज़ैफ़ा ने मार–मार कर उनकी ऊँटनियों के मुँह फेर दिए चुंकि वे मुँह लपेटे हुए थे इसलिए हज़रत हुज़ैफ़ा उनको पहचान न सके बाद में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके नाम हज़रत हुज़ैफ़ा और हज़रत अम्मार को बता दिए मगर मना कर दिया कि किसी को न बताएं "व हम्मू बिमा लम यनालू" में इसी घटना की ओर संकेत है, आगे कहा जा रहा है कि उनकी सारी दुश्मनियाँ केवल इसीलिए हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ से वे धनी हो गए, मुसलमानों के साथ रहने की वजह से ग़नीमत के माल में हिस्सा पाते हैं, इन उपकारों का बदला यह दिया कि धोखेबाज़ी करने लगे (4) यहाँ एक मुनाफ़िक़ की घटना बयान की जाती है कि उसने धनी होने की हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दुआ कराई, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि थोड़ी चीज़ जिस पर तू शुक्र करे उससे ज़्यादा बेहतर है जिसके अधिकार अदा न कर सके उसने ज़िद की तो आपने दुआ कर दी, वह इतना धनी हुआ कि मदीने के बाहर जा कर आबाद हुआ, धीरे–धीरे जुमा में आना भी बन्द कर दिया जब ज़कात का वसूल करने वाला पहुँचा तो कोई कटाक्ष कर दिया, इसी पर यह आयतें उतरीं, फिर बदनामी के भय से ज़कात ले कर आया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि ख़ुदा ने तेरी ज़कात वसूल ⟹

आप उनके लिए माफी मांगें या न मांगें, सत्तर बार भी अगर आप उनके लिए माफ़ी मांगेगें तब भी अल्लाह उनको माफ़ नहीं करेगा, यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर का इनकार किया और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को राह नहीं देता (80) अल्लाह के पैग़म्बर से जुदा होकर पीछे रह जाने वाले अपने बैठ रहने पर खुश हैं और उनको अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और जानों से जेहाद करना अच्छा न लगा और वे बोले कि गरमी में मत निकलो, कह दीजिए कि दोज़ख की आग कहीं ज़्यादा गर्म है अगर वे समझ रखते हों (81) बस थोड़ा हंस लें और (फिर) अपनी करतूतों के बदले जी भर के रोते रहें (82) तो अगर अल्लाह आपको उनके किसी गिरोह के पास वापस करे फिर वे आपसे निकलने की अनुमति मांगें तो कह दीजिए कि तुम मेरे साथ कभी भी कदापि न निकलोगे और मेरे साथ किसी दुश्मन से कदापि न लड़ोगे, पहली बार बैठे रहना तुम्हें अच्छा लगा तो पीछे रह जाने वालों के साथ बैठे रहो[1] (83) और उनमें जो मर जाएं उनमें से किसी की आप कभी भी जनाज़े की नमाज़ न पढ़ें और न उसकी क़ब्र पर खड़े हों निःसंदेह उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर का इनकार किया और नाफरमानी (अवज्ञा) की हालत में मरे[2] (84) उनके माल और संतान पर आप हैरत न करें अल्लाह तो चाहता है कि इससे उनको दुनिया में अज़ाब (यातना) दे और कुफ़्र ही की हालत में उनकी जानें निकलें (85) और जब कोई सूरह उतरी कि अल्लाह पर ईमान ले आओ और उसके पैग़म्बर के साथ जिहाद करो तो उनमें हैसियत वाले लोग आपसे छुट्टी मांगते हैं और कहते हैं कि हमें छोड़ जाइये बैठे रहने वालों के साथ हम भी रह जाएंगे (86)

⟹ करने से मुझे मना कर दिया है, यह सुन कर बड़ा शोर व गुल मचाया मगर निफ़ाक़ (कपट) दिल में था, हज़रत अबू बक्र, उमर और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुम के ज़माने में भी आया मगर उन्होंने भी इनकार किया अंततः मुनाफ़िक़ बने रहने की हालत में ही हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में मर गया (5) एक बार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सद्क़ा देनं पर प्रेरित किया तो हज़रत अब्दुर्रहमान पुत्र औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु चार हज़ार दीनार लाए, हज़रत आसिम पुत्र अदी सौ वसक़ खजूरें लाए, मुनाफ़िक़ों ने उन पर कटाक्ष किया दिखावा करते हैं, फिर एक सहाबी बड़ी मेहनत से कमा कर थोड़ी सी खजूरें लाए, तो मुनाफ़िक़ उनका मज़ाक उड़ाने लगे कि ख़ून लगा कर शहीदों में शामिल होना चाहते हैं, हर एक के साथ मज़ाक करते, अल्लाह कहता है कि "अल्लाह ने उनके साथ मज़ाक़ किया" यानी मज़ाक उड़ाने के लिए ऊपर से छोड़ दिये गए हैं और भीतर ही भीतर उनकी जड़ें कट रही हैं।

(1) पापी और गलत अक़ीदा रखने वाले के बीच यही अंतर है, पापी के लिए आपका माफ़ी मांगना उसके गुनाहों की माफ़ी का साधन है लेकिन मुनाफ़िक़ गलत अक़ीदा रखने वाले के बारे में कहा जा रहा है कि आप सत्तर बार भी माफ़ी मांगें तब भी अल्लाह उनको माफ़ नहीं करेगा, इसलिए कि वे भीतर से इनकार करने वालें हैं, लेकिन आप की कृपा थी कि आपने कहा कि अगर सत्तर बार से अधिक में माफ़ी हो जाती तो मैं सत्तर बार से अधिक माफ़ी मांगता, आगे उन मुनाफ़िक़ों का उल्लेख है जो तबूक युद्ध में शामिल नहीं हुए और इस पर प्रसन्न भी हुए कि हम मुसीबत से बच गए, अल्लाह कहता है कि आगे उनके लिए रोते रहने का अवसर है, जब अल्लाह का अज़ाब सामने आएगा और दुनिया में भी अपमान का सामना करना होगा, यह भी कहा जा रहा है कि तुमने विकलांगों के साथ रहना पसंद किया अब आगे भी तुम्हें हमारे साथ युद्धों में जाने की आवश्यकता नहीं तुम्हारे दिलों का हाल मालूम हो चुका है (2) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ⟹

رَضُوا بِأَنْ يَّكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوبِهِمْ
فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٨٧﴾ لٰكِنِ الرَّسُولُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾ وَ
جَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ
كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا
عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ ۚ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾
وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ
مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۪ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ
حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ
يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا
مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

ع ٩

منزل٢

वे पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ रह जाने पर खुश हैं और उनके दिलों पर मोहर लगा दी गई तो वे समझते ही नहीं[1] (87) हाँ रसूल ने और उनके साथ ईमान वालों ने अपने मालों और जानों के साथ जिहाद किया, भलाइयाँ उन्हीं लोगों के लिए हैं और यही लोग सफल होने वाले हैं (88) उनके लिए अल्लाह ने ऐसी जन्नतें तैयार कर रखीं हैं जिनके नीचे से नहरें जारी हैं उसी में वे हमेशा रहेंगे यही बड़ी सफलता है[2] (89) और देहातों से बहाना करने वाले लोग आए कि उनको अनुमति मिल जाए और जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर से झूठ बोल चुके थे वे बैठ रहे, जल्द ही उनमें इनकार करने वाले दुखद अज़ाब से ग्रस्त होंगे[3] (90) कमज़ोरों पर और रोगियों पर और उन लोगों पर जो ख़र्च करने का सामान नहीं पाते कोई हरज नहीं जब वे अल्लाह और उसके पैग़म्बर के साथ निष्ठा रखें, अच्छे काम करने वालों पर कोई पाप नहीं और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है[4] (91) और न उन पर (कोई आरोप है) कि जब वे आपके पास आए ताकि आप उनको सवारी दे दें, आपने कहा कि मेरे पास तो कुछ नहीं कि मैं उन पर तुम्हें सवार कर दूँ (तो) वे इस हाल में वापस फिरे कि उनकी आँखों से आँसू जारी थे इस दुःख में कि उनको कुछ उपलब्ध नहीं जो वे खर्च करें (92) आरोप तो उन लोगों पर है जो धनी होकर आपसे छुट्टी चाहते हैं और इस पर खुश हैं कि पीछे रह जाने वालियों के साथ रह जाएं और अल्लाह ने उनके दिलों पर मोहर लगा दी तो वे जानते नहीं (93)

⟹ अब्दुल्लाह पुत्र उबई (मुनाफिक़ों के सरदार) के जनाज़े की नमाज़ पढ़ी, क़ब्र में उतरे और पूरी सहानुभूति का प्रदर्शन किया, मात्र इसलिए कि शायद दूसरों के दिलों में आपकी कृपा और दया को देखकर इस्लाम से प्रेम में बढ़ोतरी हो, लेकिन बाद में इस आयत से मुनाफिकों के जनाज़े की नमाज़ पढ़ने और उनके लिए क्षमा याचना से रोक दिया गया, इसलिए कि इसमें मुनाफिकों का उत्साहवर्धन और ईमान वालों के दिल टूटने की आशंका थी, इसके बाद आपने किसी मुनाफ़िक़ के जनाज़ें की नमाज़ नहीं पढ़ी।

(1) पवित्र कुरआन की सूरह में जब चेताया जाता है कि पूरे खुलूस (निष्ठा) व दृढ़ता से ईमान लाओ और अल्लाह के पैग़म्बर के साथ जिहाद करो तो मुनाफ़िक़ों की हक़ीक़त खुलने लगती है, उनमें धनी भी जी चुराते हैं और चाहते हैं कि घर में रहने वाली औरतों की तरह घरों में घुस कर बैठे रहें, उनके इसी झूठ व निफ़ाक़ (कपट) की वजह से उनके दिलों पर मोहर लगा दी गई है, कोई भली बात उनमें दाख़िल ही नहीं होती (2) मुनाफ़िक़ों के विपरीत यह मुख़्लिस (निष्ठावान) ईमान वालों की वफ़ादारी और त्याग व बलिदान और उस पर अल्लाह के वादों का बयान है (3) देहातों के लोग इजाज़त के लिए आते ऐसा लगता है उनमें दोनों तरह के लोग थे, वे लोग भी थे जो वास्तव में असमर्थ थे और वे भी थे जो बहाना करने आए थे और उनके दिल ईमान से खाली थे, उन्हीं के बारे में आगे कठोर अज़ाब की वईद (धमकी) है (4) जो लोग वास्तव में असमर्थ हैं उनकी ओर से सफ़ाई दी जा रही है कि उन पर कोई आरोप नहीं फिर आगे उन्हीं असमर्थों में प्रशंसा के तौर पर उन लोगों का उल्लेख है जिनके पास साधन नहीं थे, वे अपने शामिल न होने पर रोते हुए वापस हुए, उन्हीं के बारे में आप ने रास्ते में फरमाया था कि वे तुम्हारे साथ हर जगह शरीक़ हैं, उन्हीं असमर्थता की वजह से वे न आ सके, उसके बाद फिर मुनाफ़िक़ों की भर्त्सना का सिलसिला शुरु हो रहा है।

يَعۡتَذِرُوۡنَ اِلَيۡكُمۡ اِذَا رَجَعۡتُمۡ اِلَيۡهِمۡ ؕ قُلۡ لَّا
تَعۡتَذِرُوۡا لَنۡ نُّؤۡمِنَ لَكُمۡ قَدۡ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنۡ اَخۡبَارِكُمۡ ؕ وَ
سَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمۡ وَرَسُوۡلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوۡنَ اِلٰى عٰلِمِ الۡغَيۡبِ
وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمۡ بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۹۴﴾ سَيَحۡلِفُوۡنَ بِاللّٰهِ
لَكُمۡ اِذَا انۡقَلَبۡتُمۡ اِلَيۡهِمۡ لِتُعۡرِضُوۡا عَنۡهُمۡ ؕ فَاَعۡرِضُوۡا عَنۡهُمۡ ؕ
اِنَّهُمۡ رِجۡسٌ وَّمَاۡوٰٮهُمۡ جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ﴿۹۵﴾
يَحۡلِفُوۡنَ لَكُمۡ لِتَرۡضَوۡا عَنۡهُمۡ ۚ فَاِنۡ تَرۡضَوۡا عَنۡهُمۡ فَاِنَّ اللّٰهَ
لَا يَرۡضٰى عَنِ الۡقَوۡمِ الۡفٰسِقِيۡنَ ﴿۹۶﴾ اَلۡاَعۡرَابُ اَشَدُّ كُفۡرًا وَّ
نِفَاقًا وَّاَجۡدَرُ اَلَّا يَعۡلَمُوۡا حُدُوۡدَ مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ عَلٰى
رَسُوۡلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ﴿۹۷﴾ وَمِنَ الۡاَعۡرَابِ مَنۡ يَّتَّخِذُ
مَا يُنۡفِقُ مَغۡرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيۡهِمۡ
دَآئِرَةُ السَّوۡءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۹۸﴾ وَمِنَ الۡاَعۡرَابِ مَنۡ
يُّؤۡمِنُ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنۡفِقُ قُرُبٰتٍ
عِنۡدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوۡلِ ؕ اَلَاۤ اِنَّهَا قُرۡبَةٌ لَّهُمۡ ؕ
سَيُدۡخِلُهُمُ اللّٰهُ فِىۡ رَحۡمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۹۹﴾

منزل۲

जब तुम लोग उनके पास वापस होगे तो वे तुम्हारे सामने आकर बहाने करेंगे, कह दीजिए कि बहाने मत बनाओ हम तुम्हारी बात हरगिज़ (कदापि) नहीं मानेंगे, अल्लाह ने तुम्हारी सारी ख़बरें हमें बता दी हैं और अभी अल्लाह और उसके पैगम्बर तुम्हारा काम देखेंगे फिर तुम छिपे और खुले के जानने वाले के पास लौटाए जाओगे फिर जो कुछ भी तुम करते रहे थे वह सब तुम्हें बता देगा (94) जब तुम उनके पास वापस होगे तो वे जल्द ही तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाएंगे ताकि तुम उनको उनके हाल पर छोड़ दो तो तुम उनको इस हाल पर छोड़ ही दो, बेशक वे गंदे लोग हैं और उनका ठिकाना दोज़ख़ है बदला उनकी करतूतों का (95) वे तुमसे क़समें खाते हैं ताकि तुम उनसे राज़ी हो जाओ बस अगर तुम राज़ी हो भी जाते हो तो अल्लाह तो अवज्ञाकारी (नाफ़रमान) लोगों से राज़ी नहीं होता[1] (96) गंवार कुफ़्र और निफ़ाक़ में बहुत सख़्त हैं और इसी लायक़ हैं कि अल्लाह ने जो सीमाएं अपने रसूल पर उतारी हैं उन्हें न सीखें और अल्लाह ख़ूब जानता हिकमत रखता है (97) और कुछ गंवार ऐसे हैं जो अपने ख़र्च को टैक्स क़रार देते हैं और तुम पर बुरे दिन की प्रतीक्षा करते हैं, बुरे दिन उन्हीं पर आएं और अल्लाह ख़ूब सुनने वाला ख़ूब जानने वाला है (98) और देहात के रहने वाले कुछ वे हैं जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाते हैं और जो ख़र्च करते हैं उसको अल्लाह के पास निकटता और पैग़म्बर से दुआएं (लेने) का साधन बनाते हैं, सुन लो बेशक यह उनके निकटता ही का साधन है, अल्लाह जल्द ही उनको अपनी रहमत (कृपा) में प्रवेश करा देगा बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है[2] (99)

---

(1) जब निफ़ाक़ खुल गया तो उपेक्षा तो ठीक है लेकिन दोस्ती और प्रेम जायज़ (वैध) नहीं, ऐसे लोगों से दूर रहना ही बेहतर है (2) यह देहात के रहने वालों का वर्णन है उनमें भी हर वर्ग के लोग थे, मुख़्लिस (निष्ठावान) ईमान वाले भी, काफ़िर भी और मुनाफ़िक़ भी, हाँ! हिदायत (संमार्ग) के केन्द्र से दूर रहने और दिलों की कठोरता की वजह से उनमें कुफ़्र और निफ़ाक़ की भी कठोरता थी इसलिए "अल् अअ्राबु अशद्दु कुफ़्रौं व निफ़ाक़ा" कहा गया।

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ﴿۱۰۰﴾ وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ؕ وَمِنْ
اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ؔ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۫ لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ نَحْنُ
نَعْلَمُهُمْ ؕ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۰۱﴾
وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ؕ
عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۰۲﴾ خُذْ
مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ
اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۰۳﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ
اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَ
اَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۰۴﴾ وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ
عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ
لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۰۶﴾

منزل۲

और मुहाजिरों और अंसार में से पहले आगे बढ़ने वाले और जिन्होंने बेहतर तरीक़े पर उनका अनुसरण (पैरवी) किया अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए और अल्लाह ने उनके लिए ऐसी जन्नतें तैयार कर रखी हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं, उसी में वे सदा रहेंगे यही बड़ी सफलता है[1] (100) और तुम्हारे आस–पास के कुछ गंवार मुनाफ़िक़ हैं और कुछ मदीने वाले भी निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं, आप उनको नहीं जानते हम उनसे अवगत हैं हम उनको जल्द ही दो बार अज़ाब देंगे फिर वे बड़े अज़ाब की ओर पलटाए जाएंगे[2] (101) दूसरे वे हैं जिन्हें अपने पाप स्वीकार हैं, उन्होंने अच्छे काम के साथ कुछ दूसरे बुरे काम भी मिला रखे हैं, उम्मीद है कि अल्लाह उनको माफ़ कर देगा बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है (102) आप उनके मालों से सदक़ा ले लीजिए, आप उनको उसके द्वारा पवित्र कर देंगे और उनके लिए दुआ कीजिए आपकी दुआ उनके लिए सुकून (का कारण) हो, और अल्लाह ख़ूब सुनता है ख़ूब जानता है (103) क्या उन्होंने जाना नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और सदक़े स्वीकार करता है और अल्लाह ही बहुत तौबा स्वीकार करने वाला बड़ा ही दयालु है (104) और कह दीजिए कि काम किए जाओ तो अल्लाह और उसका पैग़म्बर और ईमान वाले तुम्हारा काम देखेंगे और जल्द ही तुम छिपे और खुले के जानने वाले के पास भेजे जाओगे फिर जो कुछ तुम किया करते थे वह सब तुम्हें बता देगा[3] (105) और कुछ वे हैं जिनका मामला अल्लाह का आदेश आने तक स्थगित है चाहे वह उन्हें दण्ड दे या उन्हें माफ़ कर दे और अल्लाह ख़ूब जानता है हिकमत रखता है[4] (106)

(1) देहात के ईमान वालों के बाद अब साबिक़ीन–ए–अव्वलीन का उल्लेख है जो ईमान में पहले दाख़िल हुए, उन्होंने हर प्रकार की क़ुर्बानियां (बलिदान) पेश की, क्रमशः वे बयान हुई हैं (2) कुछ लोगों का निफ़ाक़ बड़ा कठोर है उनके लिए दोहरा अज़ाब है एक दुनिया में अपमान और आंतरिक घुटन जो इस्लाम की उन्नति से बढ़ती ही रही, दूसरे कब्र का अज़ाब (3) इसमें विशेष रूप से उन लोगों का उल्लेख है जो गफ़लत (अचेतन) के कारण युद्ध में न निकल सके बाद में उनको बड़ा पछतावा हुआ, उनमें से कुछ लोगों ने अपने आपको खम्भों से बांध दिया फिर जब यह आयत उतरी तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी माफ़ी का एलान कर दिया और इसकी खुशी में वे सदक़े लेकर आए, फिर आगे उनको चेतावनी दी गई कि अपने कामों को ठीक रखो अल्लाह देख रहा है, गुनाहों को दोहराया न जाए यह तौबा के विरूद्ध बात है (4) जो मुसलमान सुस्ती के कारण युद्ध में नहीं गए यह उनकी दूसरी क़िस्म है, इसमें केवल तीन लोग थे उन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साफ़ साफ़ बात बता दी, उनका विवरण आगे आयेगा।

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ
وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّا الْحُسْنٰى وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ
لَكٰذِبُوْنَ (١٠٧) لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى
مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ
يَّتَطَهَّرُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ (١٠٨) اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ
عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ
عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ وَاللّٰهُ لَا
يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ (١٠٩) لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِيْ بَنَوْا
رِيْبَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّاۤ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (١١٠)
اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ
بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَ
يُقْتَلُوْنَ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ
وَالْقُرْاٰنِ وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا
بِبَيْعِكُمُ الَّذِيْ بَايَعْتُمْ بِهٖ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (١١١)

منزل٢

और जिन्होंने मस्जिद बनाई नुक़सान पहुंचाने के लिए और कुफ़्र के लिए और ईमान वालों में फूट डालने के लिए और उस व्यक्ति को घात व दांव लगाने की जगह उपलब्ध कराने के लिए जो पहले से ही अल्लाह और उसके रसूल से लड़ता रहा है और क़समें खाते हैं कि हमने तो केवल भलाई ही का इरादा किया था और अल्लाह गवाह है कि वे पक्के झूठे हैं (107) आप कभी भी उसमें न खड़े हों[1], हाँ वह मस्जिद जिसकी आधारशिला पहले ही दिन से तक़्वे पर पड़ी उसका हक़ ज़्यादा है कि आप उसमें खड़े हों उसमें वे लोग हैं जो ख़ूब पाकी को पसंद करते हैं और अल्लाह ख़ूब पवित्र रहने वालों को पसंद करता है[2] (108) भला वह जिसने अपने भवन की आधारशिला अल्लाह के डर और उसकी खुशी पर रखी वह बेहतर है या वह जिसने अपने भवन की आधारशिला खाई के ऐसे कगार पर रखी जो गिरने ही वाली है बस वह उसको लेकर दोज़ख की आग में ढह पड़ी और अल्लाह अत्याचारी लोगों को राह नहीं देता (109) उनका वह भवन जो उन्होंने बनाया बराबर उनके दिलों में कसक बना रहेगा यहां तक कि उनके दिल टुकड़े-टुकड़े हो जाएं और अल्लाह ख़ूब जानता हिकमत रखता है[3] (110) बेशक अल्लाह ने ईमान वालों से उनके मालों और जानों को इस बदले में ख़रीद लिया है कि उनके लिए जन्नत है, वे अल्लाह के रास्ते में जंग करते हैं तो मारते हैं और मारे जाते हैं, इस पर पक्का वादा है तौरेत में भी और इंजील में भी और कुरआन में भी और अल्लाह से बढ़कर क़रार में पक्का और कौन होगा बस तुम अपने उस मामले पर जो तुमने उससे कर लिया है खुशियां मनाओ और यही बड़ी सफलता है[4] (111)

(1) अबू आमिर खज़रजी नाम का एक व्यक्ति था, इस्लाम से पहले वह राहिब (सन्यासी) हो गया और मदीने में प्रभाव पैदा कर लिया, जब इस्लाम प्रबल हुआ तो वह इस्लाम का दुश्मन बन गया और हर अवसर पर मुसलमानों को नुक़सान पहुंचाने की रणनीति बनाता रहा, यह मस्जिद-ए-ज़ेरार उसके प्रस्ताव से बनाई गई और इस्लाम दुश्मन साज़िशों का उसको गुप्त अड्डा बनाने की रणनीति बनाई गई "लिमन-हारबल्लाह व रसूलहु" में उसी व्यक्ति की ओर संकेत है, यह मस्जिद, मस्जिद-ए-कुबा से कुछ दूरी पर बनाई गई और बनाने वालों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रार्थना की कि आप पहले उसमें नमाज़ पढ़ लें, आपने कहा कि तबूक़ से वापसी पर मैं आऊंगा, फिर यात्रा के दौरान ही यह आयतें उतरीं और सारी कलई खुल गई, फिर आपके आदेशानुसार वह मस्जिद के नाम से साज़िशों का अड्डा ढहाकर बरबाद कर दिया गया (2) यह मस्जिद-ए-कुबा और कुबा वासियों की प्रशंसा है, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब उनसे पूछा कि तुम पवित्रता का कौन सा तरीक़ा अपनाते हो तो उन्होंने कहा कि हम ढेलों के बाद पानी का प्रयोग करते हैं (3) उनके इस कुकृत्य की सज़ा अल्लाह ने यह दी कि मौत तक निफ़ाक़ ही उनके सिर थोप दिया गया और हिदायत की तौफ़ीक़ छिन गई, दिल के टुकड़े-टुकड़े होना मौत या क़यामत की ओर इशारा है और यहां संदेह का अर्थ निफ़ाक़ है (4) इससे अधिक लाभप्रद व्यवसाय और महान सफलता और क्या होगी कि अल्लाह ने हमारी जानों और मालों को जो उसी का है जन्नत के बदले ख़रीद लिया, अब इनका प्रयोग उसी के बताए हुए तरीक़े पर होगा तो बदले में इन्शा अल्लाह जन्नत मिलेगी।

اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ
السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۲﴾ مَا كَانَ
لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَ
لَوْ كَانُوْۤا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ
اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۱۱۳﴾ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ
اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَاۤ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗۤ اَنَّهٗ عَدُوٌّ
لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۱۴﴾ وَمَا كَانَ اللّٰهُ
لِيُضِلَّ قَوْمًۢا بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا
يَتَّقُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۱۶﴾ لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى
النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ
سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ
مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾

वे तौबा करने वाले, बन्दगी करने वाले, ह़म्द करने वाले, रोज़ा रखने वाले, रूकू करने वाले, सज्दे करने वाले, भलाई की बात कहने वाले और बुराई से रोकने वाले और अल्लाह की सीमाओं की रक्षा करने वाले और ईमान वालों को शुभ समाचार सुना दीजिए[1] (112) पैग़म्बर के लिए और ईमान वालों के लिए (अच्छा) नहीं कि वे शिर्क करने वालों के लिए माफ़ी मांगें चाहे वे उनके संबंधी ही क्यों न हों जबकि उन पर खुल चुका कि वे दोज़ख़ वाले हैं[2] (113) और अपने पिता के लिए इब्राहीम का माफ़ी मांगना तो केवल उस वादे के कारण था जो वे उनसे कर चुके थे फिर जब उन पर खुल गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वे उनसे अलग हो गए, बेशक इब्राहीम बड़े सहानुभूति करने वाले और सहनशील थे (114) और अल्लाह किसी क़ौम को हिदायत देने (राह दिखाने) के बाद पथ–भ्रष्ट नहीं करता जब तक उनको बता नहीं देता कि वे किन चीज़ों से बचें बेशक अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानता है[3] (115) बेशक अल्लाह ही के लिए आसमानों और धरती की बादशाही है, ज़िंदगी देता है और मारता है और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई समर्थक है न मददगार (116) बेशक अल्लाह पैग़म्बर पर और मुहाजिरों और अंसार पर मेहरबान हुआ जिन्होंने कठिन समय में भी पैग़म्बर का साथ दिया जबकि लगता था कि उनमें से कुछ के दिल फिर जाएंगे फिर वह उन पर मेहरबान हुआ बेशक वह तो उन पर बड़ा स्नेही और दयावान है[4] (117)

---

(1) यह उन लोगों के गुण हैं जिन्होंने अल्लाह से अपनी जान व माल का सौदा कर रखा है (2) जो ख़ुदा के विद्रोही हैं वह चाहे नातेदार ही क्यों न हों उनसे अलग होने को दर्शाया जाए, आगे हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की ओर से माफ़ी मांगी जा रही है कि उन्होंने अपने बाप के लिए जो माफ़ी मांगी थी वह उस वादे के कारण था जो उन्होंने उनसे विदा लेते समय किया था, फिर जब उनका हिदायत पर न आना मालूम हो गया तो उन्होंने अलग होने का ऐलान कर दिया, पहले दिल की नर्मी के कारण दुआ करते थे फिर जब आस टूट गई तो भी उसको पूरे तौर पर बर्दाश्त किया (3) ताकि हुज्जत पूरी हो जाए और यह कहने को न रहे कि हमारे पास कोई डराने वाला नहीं आया (4) यानी तबूक़ युद्ध, जिसमें विभिन्न प्रकार की परेशानियां थीं, संसाधन का अभाव, लंबी यात्रा, सख़्त गर्मी आदि, लगता था कि अच्छे–अच्छों का साहस जवाब दे जाएगा लेकिन अल्लाह की कृपा से सब साथ रहे।

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ۭ حَتّٰٓي اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ
الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْٓا اَنْ
لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّآ اِلَيْهِ ۭ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ۭ اِنَّ
اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١١٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ
وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١١٩﴾ مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ
حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَ
لَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ
ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ
مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ
لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾
وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ
وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢١﴾ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَاۗفَّةً ۭ فَلَوْلَا نَفَرَ
مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَاۗىِٕفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ وَ
لِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ﴿١٢٢﴾

منزل۲

और उन तीन पर भी (जिनके मामले) को पीछे रखा गया यहां तक कि जब धरती अपनी विशालता के बावजूद उन पर तंग हो गई और उनकी जानें उन पर दूभर हो गईं और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से सिवाय उसके और कहीं शरण नहीं तो फिर वह उन पर मेहरबान हुआ ताकि वे पलट आएं बेशक अल्लाह ही बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है[1] (118) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और सच्चों के साथ रहो[2] (119) और मदीने वालों के लिए और उनके आस–पास के देहात वालों के लिए (ठीक) नहीं कि वे आपको छोड़ कर पीछे रह जाएं और न यह कि वे अपनी जानों को आपकी जान से अधिक प्रिय समझें, यह इसलिए कि उनको अल्लाह के रास्ते में जो भी प्यास व थकान और भूख लगती है और वे जो भी क़दम काफ़िरों को गुस्से में लाने के लिए उठाते हैं और दुश्मनों को जो भी नुक़सान पहुंचाते हैं उस पर नेक काम लिखा जाता है, बेशक अल्लाह नेक काम करने वालों के बदले को बर्बाद नहीं करता[3] (120) और जो भी छोटा बड़ा वे ख़र्च करते हैं और जो घाटी पार करते हैं वह सब उनके लिए लिखा जाता है ताकि वे जो काम भी करते हैं अल्लाह उसका अच्छा से अच्छा बदला उनको प्रदान कर दे (121) और यह तो नहीं कि मुसलमान सब ही निकल खड़े हों तो क्यों न हर गिरोह में से एक समूह निकले ताकि वह दीन में समझ पैदा करे और ताकि वह अपनी क़ौम को जब उनके पास वापस आए तो ख़बरदार करे शायद वे बाज़ रहें[4] (122)

(1) यह तीन लोग कअ्ब पुत्र मालिक, हिलाल पुत्र उमय्या और मुरारह पुत्र रबी थे, सच्चे मुसलमान होने के बावजूद बिना किसी मजबूरी के युद्ध में शामिल न हुए और टाल–मटोल में रह गए, जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वापस आए तो यह लोग पछतावे में थे, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित होकर उन्होंने जो सच्चाई थी साफ़–साफ़ बयान कर दी और अपनी कोताही को स्वीकार किया, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़ैसला किया कि जब तक अल्लाह का कोई आदेश न आ जाए उनसे कोई बात न करे, पचास दिन इसी जुदाई में गुज़र गए, फिर यह तौबा की आयतें उतरीं और उनकी तौबा स्वीकार हुई, हज़रत कअ्ब ने अपना वाक़ेआ (घटना) ख़ुद विस्तार से बयान किया है जो हदीस की सही किताबों में मौजूद है (2) यानी सच्चों की संगत रखो और उन्हीं जैसे काम करो (3) इनमें बहुत से काम अनेच्छिक हैं लेकिन अल्लाह के यहां उन पर भी सवाब (पुण्य) मिलते हैं, आगे इच्छित कार्यों का उल्लेख है तो केवल "कुति–ब ल हुम" कहा गया कि जो भी वे करते हैं सब लिखा जा रहा है और ज़ाहिर है कि वे सब कार्य नेकी समझ कर अल्लाह से निकट होने के लिए ही किये जा रहे हैं (4) ग़ज़्वों के वर्णन के बीच ज्ञान प्राप्ति के लिए निकलने का वर्णन बड़े ही अच्छे ढंग से किया जा रहा है और इसके लिए "न फ़ र" का शब्द प्रयोग हुआ है जो बहुत महत्वपूर्ण कार्य के लिए निकलने पर बोला जाता है, इसीलिए आमतौर पर जिहाद के लिए निकलने को न फ़ र कहते हैं, तबूक युद्ध के बाद ही यह आयत उतरी और उसके बाद वाला वर्ष ही "आमुल्वुफ़ूद" कहलाता है, चारों ओर से लोग आने लगे और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से धर्म की बातें सीख कर अपने–अपने क्षेत्रों में इस्लाम के प्रचार–प्रसार के काम में लगने लगे और क़यामत तक के लिए यह एक नमूना बन गया।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ
الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ
الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۲۳﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ
اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ وَاَمَّا
الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى
رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۲۵﴾ اَوَلَا يَرَوْنَ
اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا
يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۲۶﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ
نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ۭ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ
انْصَرَفُوْا ۭ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا
يَفْقَهُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ لَقَدْ جَاۗءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ
عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ
رَّحِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ڶ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۲۹﴾

منزل۲

ऐ ईमान वालो! अपने आस–पास के काफ़िरों से लड़ो और वे ज़रूर तुम्हारे अंदर मज़बूती पाएं और जान लो अल्लाह परहेज़गारों के साथ है[1] (123) और जब भी कोई सूरह उतरती है तो उनमें कुछ वे हैं जो कहते हैं कि इसने तुममें किसके ईमान में बढ़ोत्तरी की, फिर रहे ईमान वाले तो उसने उनका ईमान बढ़ा दिया और वे खुश होते हैं (124) और रहे वे लोग जिनके दिलों में रोग है तो उसने उनकी गंदगी में और गंदगी को बढ़ा दिया और वे कुफ़्र की हालत ही में मरे[2] (125) क्या वे नहीं देखते कि हर साल वे एक बार या दो बार मुसीबत में पड़ते हैं फिर भी न तौबा करते हैं और न नसीहत प्राप्त करते हैं (126) और जब कोई सूरह उतरती है तो एक दूसरे को देखने लगते कि कोई (मुसलमान) देख तो नहीं रहा है फिर चल देते अल्लाह ने उनके दिल फेर दिये हैं, इसलिए कि वे नासमझ लोग हैं[3] (127) बेशक तुम्हारे पास तुम्हीं में से पैग़म्बर आ चुके, तुम्हारी तकलीफ़ जिनको बहुत भारी पड़ती है तुम्हारी (भलाई) के बहुत इच्छुक हैं ईमान वालों के लिए तो बड़े करूणाशील बहुत मेहरबान हैं[4] (128) फिर अगर वे मुंह फेरें तो कह दीजिए कि मुझे अल्लाह काफ़ी है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, उसी पर मैंने भरोसा किया और वही महान अर्श का मालिक है[5] (129)

(1) जिहाद फ़र्ज़–ए–किफ़ाया है, अगर शर्तें पूरी हों तो यह सिलसिला जारी रहना चाहिए और काफ़िरों का हमला हो जाए तो फिर सब पर जिहाद फ़र्ज़ (अनिवार्य) हो जाता है और जिन पर हमला हुआ है अगर वे मुक़ाबले की क्षमता न रखते हों तो आस–पास के मुसलमानों पर उनकी सहायता ज़रूरी है और जिहाद की तरतीब (क्रम) इस आयत से साफ़ ज़ाहिर होती है कि पहले चरण में दूर जाने की ज़रूरत नहीं जो दुश्मन क़रीब हैं उनसे मुक़ाबला किया जाए (2) कोई सूरह उतरती है तो मुनाफ़िक़ लोग कहते हैं "इसमें है ही क्या इससे किस का ईमान बढ़ सकता है?" और ईमान वाले उससे फ़ायदा उठाते हैं और उनके ईमान में बढ़ोत्तरी होती है और टिप्पणी और इनकार करने वालों का निफ़ाक़ और बढ़ जाता है और फिर हिदायत की तौफ़ीक़ ही समाप्त हो जाती है और फिर साल में विभिन्न अवसरों पर उन पर जो मुसीबतें आती हैं उनसे भी नसीहत नहीं प्राप्त करते (3) विशेष रूप से जब मुनाफ़िक़ों का उल्लेख होता है और उनकी वास्तविकता सामने आ जाती है तो उनके चेहरों का रंग बदल जाता है और वे नज़र बचा कर भागने का प्रायास करते हैं (4) जिस चीज़ से तुम्हें तकलीफ़ पहुंचती है वह उन पर बहुत भारी है, हर संभव तरीके पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यही चाहते हैं कि उम्मत पर आसानी हो और वह हर प्रकार के अज़ाब से सुरक्षित रहे, उम्मत की ऐसी तड़प आप के दिल में है कि लोग दोज़ख़ की ओर भागते हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कमर पकड़–पकड़ कर उधर से हटाते हैं, जिहाद का मक़सद भी ख़ून बहाना नहीं बल्कि मजबूर होकर सख़्त आपरेशन द्वारा मानव जाति के ख़राब अंगों को काट कर और ख़राब किटाणुओं को नष्ट करके उम्मत के आम स्वभाव को स्वस्थ व संतुलित रखना है (5) अगर आपकी इस महान करूणा और व्याकुलता का लोग आदर न करें तो परवाह नहीं, सारी दुनिया मुंह फेर ले तो अल्लाह आप के लिए काफ़ी है।

سورة يونس مكية وهي مائة وتسع آيات واحد عشر ركوعا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ
اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ
قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢﴾
اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ
ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْ
بَعْدِ اِذْنِهٖ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾ اِلَيْهِ
مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ
لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٤﴾
هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ
لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ
يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥﴾ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ
وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ﴿٦﴾

منزل ٣

सूरह यूनुस

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अलिफ़ लाम रॉ, यह हिकमत (तत्वदर्शिता) से भरी किताब की आयतें हैं[1] (1) क्या लोगों को इस पर आश्चर्य है कि हमने उन्हीं में से एक व्यक्ति पर वह्य की कि लोगों को डराओ, और ईमान वालों को यह शुभ समाचार दे दो कि उनके पालनहार के यहां उनका सच्चा स्थान (मर्तबा) है, इनकार करने वाले बोले कि यह तो खुला जादूगर है[2] (2) बेशक तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया[3] फिर वह अर्श पर विराजमान हुआ, वही हर काम की व्यवस्था करता है, उसकी अनुमति के बाद ही कोई सिफारिश कर सकता है, वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है तो उसी की बन्दगी किया करो फिर भी तुम विचार नहीं करते[4] (3) उसी की ओर तुम सबको लौटना है अल्लाह का वादा सच्चा है, बेशक उसी ने सृष्टि को पहली बार पैदा किया फिर वह उसे दोबारा (पैदा) कर देगा ताकि वह इन्साफ के साथ उन लोगों को बदला दे दे जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये और जिन्होंने इनकार किया उनके लिए उनके इनकार करने के बदले में खौलता पानी और दुखद अज़ाब है (4) वही है जिसने सूरज को चमक और चाँद को उजाला बनाया और उसके लिए मंजिलें निर्धारित कर दीं ताकि तुम वर्षों की संख्या और हिसाब जान लो[5] अल्लाह ने यह सब ठीक–ठीक ही पैदा किया, वह ऐसे लोगों के लिए निशानियां खोलता है जो समझ रखते हैं (5) निश्चित रूप से रात व दिन के उलट फेर में और अल्लाह ने जो कुछ भी आसमानों और ज़मीन में पैदा किया उसमें उन लोगों के लिए निशनियाँ हैं जो डरते हैं[6] (6)

---

(1) एक ओर तो सुदृढ़ व मज़बूत हैं जिनमें परिवर्तन संभव नहीं, दूसरी ओर पूरे तौर पर हिकमत (तत्वदर्शिता) हैं जिनसे हमेशा फ़ायदा उठाया जाएगा कोई दूसरी किताब इसके आदेशों को बदलने वाली नहीं (2) यानी कुरआन की वह्य को बहुत ही प्रभावशाली होने के कारण जादू कहने लगे (3) चाहता तो क्षण भर में पैदा कर देता लेकिन अल्लाह की हिकमत यही चाहती थी (4) यानी सृष्टि के सारे कामों की व्यवस्था उसी के हाथ में है कोई उसमें साझी तो क्या होता उसके दरबार में सिफ़ारिश भी उसकी अनुमति के बिना नहीं हो सकती (5) महीनों और वर्षों का हिसाब चाँद और सूरज के उलट–फेर से संबंधित है (6) अल्लाह की शक्ति की महान निशानियाँ जब सामने आती हैं तो सच्चे दिल से सोचने वाले अल्लाह की हिदायत (मार्ग दर्शन) प्राप्त करते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
وَاطْمَأَنُّوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُونَ ۝٧ أُولٰٓئِكَ
مَأْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝٨ إِنَّ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمٰنِهِمْ ۚ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ
الْأَنْهٰرُ فِي جَنّٰتِ النَّعِيمِ ۝٩ دَعْوٰىهُمْ فِيهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَ
تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ
الْعٰلَمِينَ ۝١٠ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ
لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ ۖ فَنَذَرُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي
طُغْيٰنِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝١١ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسٰنَ الضُّرُّ دَعَانَا
لِجَنْۢبِهٖٓ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ
كَأَنْ لَمْ يَدْعُنَآ إِلٰى ضُرٍّ مَسَّهُ ۚ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝١٢ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِنْ قَبْلِكُمْ
لَمَّا ظَلَمُوا ۙ وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوا
لِيُؤْمِنُوا ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۝١٣ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ
خَلٰٓئِفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ۝١٤

ع

منزل٣

बेशक जो हमारी मुलाकात की उम्मीद नहीं रखते और वे दुनिया की ज़िन्दगी में मगन और उसी पर संतुष्ट हो गए और जो हमारी आयतों (निशानियों) से बे परवाह हैं (7) ऐसे लोगों ही का ठिकाना उनकी करतूतों के कारण दोज़ख है[1] (8) हाँ जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये उनका पालनहार उनके ईमान के ज़रिये नेमतों की जन्नतों में पहुँचा देगा उनके नीचे से नहरें जारी होंगी (9) उसमें उनकी पुकार यह है कि ऐ अल्लाह तू पवित्र है और (आपसी मुलाकात की) दुआ, "सलाम" होगी और उनकी आखिरी पुकार यह होगी कि असल प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जो सारे संसारों का पालनहार है[2] (10) और जिस तरह लोग भलाई की जल्दी मचाते हैं अगर अल्लाह उसी तरह बुराई में जल्दी कर दे तो उनका काम ही तमाम हो जाए बस जो लोग हमारी मुलाकात की उम्मीद नहीं रखते हम उनको उनकी सरकशी में भटकता हुआ छोड़ देते हैं[3] (11) और जब इंसान को तकलीफ पहुँचाती है तो वह लेटे या बैठे या खड़े हुए हमें पुकारता है फिर जब हम उसकी तकलीफ़ दूर कर देते हैं तो ऐसा हो जाता है कि मानो उसने हमको उस तकलीफ में पुकारा ही न था जो उसे पहुँचती थी, इसी तरह हद से बढ़ने वालों के लिए उनके कामों को सुहावना बना दिया जाता है (12) और बेशक तुम से पहले भी नस्लों को जब उन्होंने अत्याचार किया हमने नष्ट कर डाला जब कि उनके पास उनके पैग़म्बर खुली निशानियां लेकर आए और वे ईमान लाने वाले थे ही नहीं, अपराधी लोगों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं[4] (13) फिर हमने उनके बाद तुमको धरती में नायब बनाया ताकि हम देखें कि तुम कैसे काम करते हो[5] (14)

(1) यानी जो अल्लाह की निशानियों पर उसकी शक्ति पर विचार नहीं करते और सच्चे दिल से नहीं सोचते उनका अंजाम बुरा ही होता है (2) ईमान लाने वाले और अच्छे काम करने वाले जन्नतों में होंगे और वहां की नेमतों को देख कर बार बार "सुब्हानल्लाह" कहेंगे और जब भी किसी नेमत को देख कर "सुब्हानल्लाह" कहेंगे तो वह नेमत प्रस्तुत कर दी जाएगी तो अल्लाह की तारीफ़ करेंगे और मुलाकात के समय आपस में एक दूसरे को सलाम करेंगे (3) यानी जिस प्रकार अच्छाई में जल्दी होती है उसी प्रकार अल्लाह पकड़ शुरु कर दे तो सब ही समाप्त हो जाएं लेकिन वह समय देता है कि सुधार करने वाले सुधार कर लें और बुरे लोग असावधानी में पड़े रह कर शरारत की सारी सीमाएं लांघ जाएं (4) इंसान का हाल यह है कि जब तक मुसीबत रही हर हाल में अल्लाह को पुकारता रहा और जब मुसीबत दूर हुई तो सब कुछ कहा भूल गया, वही घमण्ड व असावधानी रह गई जिसमें पहले पड़ा था (5) पैग़म्बरों के आने के बाद भी जब उन्होंने सरकशी की और ईमान न लाए तो उनको सज़ा मिली, अब आगे तुम्हारी बारी है, अब देखना है कि तुम क्या करते हो।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۵﴾ قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶﴾ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ اَتُنَبِّئُوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿۲۰﴾

منزل۳

और जब उनके सामने हमारी खुली हुई आयतें पढ़ी जाती हैं तो जिनको हमारी मुलाकात की उम्मीद नहीं वे कहते हैं इसके अलावा कोई और कुरआन लाओ या इसी को बदल डालो, आप कह दीजिए कि यह मेरा काम नहीं कि मैं इसको अपनी ओर से बदल दूँ मैं तो उसी पर चलता हूँ जो मुझ पर वह्य आती है, अगर मैंने अपने पालनहार की बात न मानी तो निश्चित रूप से मुझे बड़े दिन के अज़ाब का डर है (15) कह दीजिए अगर अल्लाह चाहता तो न मैं तुम्हारे सामने इसको पढ़ कर सुनाता और न वह तुम्हें इससे अवगत कराता, फिर मैं इससे पहले तुम्हारे बीच एक उम्र गुज़ार चुका हूँ फिर भी तुम बुद्धि से काम नहीं लेते (16) तो उससे बढ़ कर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाए, अपराधी कभी सफ़ल नहीं हो सकते[1] (17) और वे अल्लाह को छोड़ कर ऐसों को पूजते हैं जो न उनको नुक़सान पहुँचा सकते हैं और न उनको फ़ायदा पहुँचा सकते हैं और कहते हैं कि अल्लाह के पास यह सब हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को उस चीज़ की सूचना दे रहे हो जो आसमानों और ज़मीन में वह नहीं जानता, जो कुछ वे शरीक करते हैं वह उससे पवित्र है और बहुत बुलन्द है (18) और लोग तो सब एक ही उम्मत (समुदाय) थे फिर वे अलग अलग हो गए और अगर अल्लाह की ओर से निश्चित बात न हुई होती तो जिन चीज़ों में वे विरोध कर रहे हैं उसका फैसला ही हो जाता (19) और वे कहते हैं कि उन पर उनके पालनहार के पास से कोई निशानी क्यों न उतरी, तो आप कह दीजिए कि छिपी बातें अल्लाह ही के अधिकार में हैं तो तुम इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार में हूँ (20)

(1) मक्के के वासी कुरैश पवित्र कुरआन के नैतिक आदेशों से प्रभावित होते थे लेकिन जब उनके झूठे पूज्यों को असत्य बताया जाता और तौहीद का आदेश दिया जाता तो उनको अच्छा न लगता था तो वे कहते कि या तो दूसरा कुरआन ले आओ या यह भाग बदल डालो, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से उत्तर दिया जा रहा है कि मैं एक अवधि तुममें गुज़ार चुका, सादिक व अमीन (सच्चे व विश्वसनीय) कहते–कहते तुम्हारी ज़बानें न थकती थीं तो क्या तुम इसकी आशा करते हो कि मैं अल्लाह के संबंध में झूठ गढ़ूँगा, जब यह अल्लाह की वाणी है तो इसमें परिवर्तन कैसे किया जा सकता है, यह तो सबका सब इसीलिए है कि इसका अनुसरण किया जाए, यह मुझ पर भी अनिवार्य है और तुम पर भी, इसमें परिवर्तन का मुझे अधिकार नहीं और उससे बड़ा झूठा और कौन होगा जो अल्लाह के कलाम (वाणी) को बदले, आगे सावधान करने के लिए फिर शिर्क का इनकार किया जा रहा है, इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि अल्लाह की वाणी जो है वैसी ही सुनाई जाएगी, यही सच्चा रास्ता है किसी को बुरा लगता है तो खुद अपनी कमी पर विचार करे, फिर उसके बाद स्पष्टीकरण है कि सब ही तौहीद के सत्यमार्ग पर थे फिर भटक गये, अल्लाह को यही करना था वरना शुरु में ही भटकने वालों को मिटा दिया जाता, अंतिम आयत में उन लोगों का जवाब है जो मुअ्जिज़ों की मांग किया करते थे कि यह सब अल्लाह ही की ओर से है मुझे इसमें कुछ अधिकार नहीं तुमको शौक़ हो तो इन्तिज़ार करो मैं भी देखता हूँ।

وَإِذَآ أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُم مَّكْرٌ
فِىٓ ءَايَاتِنَا ۚ قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ﴿٢١﴾
هُوَ الَّذِى يُسَيِّرُكُمْ فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا كُنتُمْ فِى الْفُلْكِ وَ
جَرَيْنَ بِهِم بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَآءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ
وَجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوٓا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا
اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنجَيْتَنَا مِنْ هَٰذِهِۦ لَنَكُونَنَّ
مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّآ أَنجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِى الْأَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ ۗ يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَىٰٓ أَنفُسِكُم ۖ مَّتَاعَ الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا ۖ
ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾ إِنَّمَا مَثَلُ
الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ أَنزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهِۦ نَبَاتُ
الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّىٰٓ إِذَآ أَخَذَتِ الْأَرْضُ
زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَآ أَنَّهُمْ قَادِرُونَ عَلَيْهَآ أَتَاهَآ
أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَن لَّمْ تَغْنَ
بِالْأَمْسِ ۚ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾ وَاللَّهُ
يَدْعُوٓا إِلَىٰ دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِى مَن يَشَآءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٢٥﴾

منزل٣

और जब हम लोगों को मुसीबत पहुँचने के बाद रहमत (दया) का मज़ा चखाते हैं तो वे तुरन्त ही हमारी आयतों में बहाने करने लगते हैं, कह दीजिए कि अल्लाह की तदबीर (उपाय) सबसे तेज है, तुम जो भी चालें चल रहे हो हमारे फरिश्ते निश्चित रूप से वे सब लिख रहे हैं (21) वही है जो जल व थल में तुमको लिए फ़िरता है यहां तक कि जब तुम नाव में (सवार) होते हो और अच्छी हवा के द्वारा वे लोगों को ले कर चलती हैं और लोग उसमें मगन हो जाते हैं तो एक तीव्र आंधी उनको आ लेती है और हर ओर से लहरें उन पर उठती हैं और वे समझ लेते हैं कि वे घिर गये हैं तो वे इबादत (उपासना) में एकाग्र होकर अल्लाह को पुकारने लगते हैं कि अगर तूने हमें इससे बचा लिया तो हम ज़रूर आभारी लोगों में होंगे (22) फिर जब वह बचा लेता है तो बस वे धरती में नाहक सरकशी (उद्दण्डता) करने लगते हैं, ऐ लोगो! यह सरकशी तुम पर ही (पड़ने वाली) है, दुनिया के जीवन में मज़े उड़ा लो फिर हमारे ही पास तुमको लौट कर आना है फिर तुम जो भी करते रहे थे वह सब हम तुमको बता देंगे (23) दुनिया की ज़िन्दगी का उदाहरण ऐसा ही है जैसे हमने ऊपर से पानी बरसाया उससे धरती की हरियाली खूब घनी हो गई जिसको आदमी और पशु खाते हैं, यहाँ तक कि जब धरती की शोभा चरम पर हो जाती है और वह खूब भली लगने लगती है और उसके मालिक समझ लेते हैं कि अब वह उनके हाथों में है, तो रात में या दिन में हमारा निर्णय आ पहुंचता है बस हम उसको भूसा बना कर रख देते हैं जैसे कल कुछ वह थी ही नहीं, इसी तरह हम आयतें उन लोगों के लिए खोल खोल कर बयान करते हैं जो सोच–विचार करते हैं (24) और अल्लाह सलामती के घर की ओर बुलाता है और जिसे चाहता है सीधे रास्ते पर चला देता है[1] (25)

---

(1) आम लोगों का हाल बयान हो रहा है कि जब मुसीबत में पड़ते हैं तो अल्लाह को याद करते हैं फिर जब मुसीबत दूर हो जाती है और राहत व आराम का दौर आता है तो सब भुला देते हैं, इसको उदाहरण दे कर बताया गया है फिर इसको साफ़ किया जा रहा है कि सब कुछ अल्लाह ही के हाथ में है और इसको भी उदाहरण से समझाया जा रहा है कि एक खेती करने वाला सब कुछ तैयार कर लेता है और इरादा कर लेता है कि कल खेती काट लेगा लेकिन अचानक वह सब अल्लाह के आदेश से नष्ट हो कर रह जाती है, इसमें यह भी संदेश दिया जा रहा है कि इंसान हर हाल में अल्लाह को याद रखे राहत व आराम में पड़ कर मस्त न हो जाए, हमेशा यह दिमाग़ में रखे कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है, आज सब कुछ है कल का कोई भरोसा नहीं, और सही रास्ता अल्लाह ने बता दिया, वही सलामती के घर ले जाने वाला है और हिदायत (सत्यमार्ग दिखाना) भी उसी के हाथ में है।

मन्ज़िल ३

जिन्होंने भले काम किये उनके लिए भलाई है और बढ़ चढ़ कर है, न उनके चेहरों पर वैमनस्य (कदूरत) होगी न अपमान, यही लोग जन्नत वाले हैं वे हमेशा उसी में रहेंगे (26) और जिन्होंने बुराइयां कमाई तो हर बुराई का बदला उसी के पास है और अपमान उन पर छाएगा, कोई उनको अल्लाह से बचाने वाला न होगा, जैसे उनके चेहरों पर रात की अंधेरी परतें चढ़ा दी गई हों यह उसी में हमेशा रहेंगे (27) और जब हम सबको इकटठा कर लाएंगे फिर शिर्क करने वालों से कहेंगे कि तुम और वे जिनको तुमने शरीक किया अपनी जगह ठहरो, फिर हम उनमें फूट डाल देंगे और उनके साझीदार कहेंगे कि तुम हमारी उपासना तो करते न थे (28) बस अल्लाह हमारे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए काफ़ी है हमें तो तुम्हारी उपासना का कुछ पता ही न था (29) वहां हर व्यक्ति जो भेज चुका है उसको जाँच लेगा और वे सब अपने असली मालिक की ओर लौटा दिये जाएंगे और जो कुछ गढ़ा करते थे वह सब उनसे हवा हो जाएगा[1] (30) पूछिए कि कौन तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी पहुंचाता है या कौन है जो कान और आँखों का मालिक है और कौन निर्जीव से जीव को निकालता है और जीव से निर्जीव को निकालता है और कौन कार्य की व्यवस्था करता है तो वे (जवाब में) यही कहेंगे कि ''अल्लाह'' तो आप उनसे कहिए कि फिर तुम डरते नहीं (31) तो यही अल्लाह है जो तुम्हारा असली पालनहार है तो सत्य के बाद पथ भ्रष्टता के सिवा और है क्या? तो तुम कहाँ से पलट कर जा रहे हो (32) इसी तरह आपके पालनहार की बात अवज्ञाकारों के लिए पक्की हो चुकी कि वे ईमान लाने वाले नहीं[2] (33)

(1) जिन चीज़ों को भी अल्लाह के साथ शरीक किया गया वे सब क़यामत के भयानक दृश्यों को देख कर अपना दामन झाड़ लेंगे और शिर्क करने वालों से विमुखता प्रकट करेंगे, हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का अपने मानने वालों और ख़ुदा का बेटा कहने वालों से विमुखता का वर्णन सूरह माइदा (116–120) में गुज़र चुका, उस समय हर व्यक्ति के सामने उसके कामों की वास्तविकता आ जाएगी (2) जिन्होंने बात न मानना तय ही कर लिया और विचार करना ही नहीं चाहते कि सच क्या और झूठ क्या है, तो ऐसों के लिए ईमान संभव ही नहीं, अल्लाह ने उनके लिए पथ भ्रष्टता लिख दी है।

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ
يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿۳۴﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ
مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ
اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ
كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ
مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَمَا كَانَ هٰذَا
الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ
بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۷﴾
اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ
اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۳۸﴾ بَلْ كَذَّبُوْا
بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۳۹﴾ وَ
مِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ
بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿۴۰﴾ وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ
اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۴۱﴾

ع ٤

منزل ۳

पूछिये कि क्या है कोई तुम्हारे साझीदारों में जो पहली बार पैदा करे फिर दोबारा पैदा कर दे? कह दीजिए कि अल्लाह पहली बार भी पैदा करता है फिर वह दोबारा भी पैदा कर देगा फिर तुम कहाँ फिरे जाते हो (34) पूछिए कि क्या है कोई तुम्हारे साझीदारों में जो सही राह पर चला दे? कह दीजिए कि अल्लाह सही राह चलाता है तो क्या जो सही राह चलाए वह अनुसरण का अधिक हकदार है या वह जो खुद ही राह न पा सके जब तक उसको राह दिखा न दी जाए? तो तुम्हें क्या हो गया है तुम कैसे फ़ैसला करते हो (35) और उनमें अधिकांश तो अटकल पर चलते हैं और अटकल सत्य के मुक़ाबले में कुछ काम नहीं देता, जो वे करते हैं अल्लाह उससे अच्छी तरह अवगत है[1] (36) और यह कुरआन ऐसा नहीं कि अल्लाह के सिवा कोई उसको बना ले बल्कि यह पहले (कलाम) की पुष्टि है और संसारों के पालनहार की ओर से उस किताब का विवरण है जिसमें कोई संदेह नहीं[2] (37) या उनका कहना यह है कि उन्होंने खुद से गढ़ लिया, आप कह दें कि इस जैसी एक सूरह ही बना लाओ और अल्लाह के सिवा जिसको बुला सको बुला लो अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो[3] (38) बात यह है कि जिसके ज्ञान पर वे हावी न हो सके उसको उन्होंने झुठला दिया और अभी उसका परिणाम भी उनके सामने नहीं आया, इसी तरह उनके पहलों ने भी झुठलाया तो देख लीजिए कि अत्याचारियों का क्या अंजाम हुआ (39) और उनमें कुछ उसको मानेंगे और कुछ न मानेंगे और आप का पालनहार फसादियों से खूब अवगत है (40) और अगर वे आपको झुठलाएं तो आप कह दीजिए मेरा अपना काम है तुम्हारा अपना काम, मेरे काम से तुम्हें मतलब नहीं और तुम्हारे काम से मुझे क्या लेना देना[4] (41)

(1) जो खुद संदेह में पड़ा हुआ है और अटकलें लगा रहा है वह कैसे रास्ता बता सकता है और कैसे उसका अनुसरण किया जा सकता है (2) यानी संभवतः लौह–ए–महफ़ूज़ (3) इस चुनौती के तीन चरण हैं, पहले चरण में पूरे कुरआन को बना लाने की बात कही गई है जब वे विवश हो गए तो कहा गया केवल दस सूरतें ही बना लाओ, यह भी न कर सके तो कहा गया कि एक ही सूरत बना लाओ, लेकिन वे अरबी भाषा के विशेषज्ञ जो धर्म के कट्टर दुश्मन थे एक आयत भी न बना सके, परेशान होकर कहते कि यह जादू है, मगर इससे भी बात न बनती, खुद एक बड़ा दुश्मन कहने लगा कि कहाँ जादूगरों का कलाम और कहां यह कुरआन, हम भाषा की नोक–पलक को ठीक करने वाले हैं, दोनों में कोई जोड़ नहीं, आगे कुरआन खुद कह रहा है कि जिसकी वास्तविकता समझ न सके उसको झुठला दिया और परिणाम से अनभिज्ञ हैं, बस पहले आसमानी किताबों के झुठलाने वालों का अंजाम देख लें (4) यानी जो पहुँचाना था मैंने पहुँचा दिया अब मुझ पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं, तुम नहीं मानते तो तुम जानो।

और उनमें कुछ आपकी ओर कान लगाते हैं तो क्या आप बहरों को सुना सकते हैं चाहे वे समझ ही न रखते हों (42) और उनमें कुछ आपकी ओर ताकते हैं तो क्या आप अंधों को रास्ता बता सकते हैं चाहे उनको कुछ सुझाई न देता हो (43) अल्लाह लोगों पर कुछ भी अत्याचार नहीं करता लेकिन लोग अपने ऊपर खुद अत्याचार करते हैं[1] (44) और जिस दिन वह उन सबको इकट्ठा करेगा (उनको महसूस होगा कि) वे (दुनिया में) दिन की एक घड़ी रहे थे, आपस में एक दूसरे को पहचानते होंगे[2] बेशक जिन लोगों ने अल्लाह की मुलाक़ात को झुठलाया वे घाटा उठा गये और वे हिदायत पाने वाले थे ही नहीं (45) और जिन चीज़ों से हम उनको डरा रहे हैं अगर हम उनमें से आपको कुछ दिखा भी दें या आपको मौत दे दें (और बाद में अज़ाब के रूप सामने आएं) तो भी उनकी वापसी हमारे पास निश्चित है, फिर अल्लाह उनके सब कामों पर गवाह है जो वे करते हैं (46) और हर उम्मत (समुदाय) का एक रसूल है फिर जब उनका रसूल आ पहुंचता है तो उनके बीच इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है और उनके साथ कुछ भी अन्याय नहीं होता (47) और वे कहते हैं कि यह वादा कब पूरा होगा (बताओ) अगर तुम सच्चे हो (48) कह दीजिए कि मैं अपने लिए घाटे और फ़ायदे का मालिक नहीं, मगर उतना ही जितना अल्लाह चाहे, हर उम्मत (समुदाय) के लिए एक समय निर्धारित है फिर जब वह निर्धारित समय आ पहुँचता है तो वे एक घड़ी न पीछे हट सकते हैं, न आगे बढ़ सकते हैं (49) आप कहिए कि तुम्हारा क्या विचार है अगर उसका अज़ाब रातों रात या दिन को तुम पर आ पहुँचे तो अपराधी लोग उससे पहले क्या कर लेंगे (50) क्या फिर जब वह आ पड़ेगा तब मानोगे, अब समझ में आया और पहले तुम्हें इसकी बड़ी जल्दी थी (51) फिर अन्याय करने वालों से कहा जाएगा "हमेशा के अज़ाब का मज़ा चखो", तुम्हें बदला उसी चीज़ का दिया जा रहा है जो तुम करतूत किया करते थे[3] (52)

(1) यानी वाह्य कान और आँखें रखते हैं न दिल में सत्य की चाहत है और न अंर्तदृष्टि (बसीरत) तो आप ऐसों को कैसे सही रास्ते पर ला सकते हैं? तो ऐसों पर ज़्यादा दुखी होने की आवश्यकता नहीं (2) यानी लंबी अवधि के बाद भेंट पर पहचानने में जो कठिनाई होती है वह भी नहीं होगी, लगेगा कि कुछ क्षण ही दुनिया में गुज़ार कर आ गए हैं (3) मुश्रिक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से विभिन्न प्रकार की मांगें किया करते थे कि अज़ाब जिससे तुम डराते हो वह ले आओ, उसी का जवाब है कि अज़ाब अल्लाह कि हिकमत के अनुसार ही आएगा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन में या दुनिया से रुख़सत हो जाने के बाद, बहरहाल उनको अल्लाह के पास ही लौट कर जाना है फिर अनन्त अज़ाब का मज़ा चखना पड़ेगा।

وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَؕ قُلْ اِيْ وَرَبِّيْۤ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ۚؔ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝٥٣
وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ
لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٥٤ اَلَاۤ
اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ
اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٥٥ هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝٥٦ يٰۤاَيُّهَا
النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ۬
وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٥٧ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ
فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝٥٨ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ
اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ
لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ۝٥٩ وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝٦٠ وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ
قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ
فِيْهِ ؕ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا
فِي السَّمَآءِ وَلَاۤ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٦١

منزل ٣

वे आपसे पूछते हैं कि क्या यह सच है? कह दीजिए हाँ मेरे पालनहार की क़सम यह बिल्कुल सच है और तुम (अल्लाह को) विवश नहीं कर सकते (53) और जिस–जिस व्यक्ति ने अत्याचार किया है अगर उसके पास ज़मीन की सारी (दौलत) हो तो वह फ़िद्ये (मुक्ति धन) में पेश कर दे और वे जब अज़ाब देखेंगे तो भीतर ही भीतर पछताएंगे और इन्साफ़ के साथ उनमें फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर अत्याचार न होगा (54) याद रखो! जो कुछ भी आसमानों और ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है, याद रखो! अल्लाह ही का वादा सच्चा है लेकिन अधिकतर लोग जानते नहीं (55) वही जिलाता और मारता है और उसी की ओर तुम्हें लौटना है (56) ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से नसीहत और दिलों के रोग की शिफ़ा (आरोग्य) और ईमान वालों के लिए हिदायत और दया आ पहुँची (57) कह दीजिए कि (यह) अल्लाह की कृपा और उसकी रहमत (दया) ही से हुआ तो इससे तुम्हें खुश होना चाहिए, वे जो भी इकट्ठा करते हैं उनमें यह सबसे बेहतर है (58) आप पूछिए कि तुम्हारा क्या ख़्याल है अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो रोज़ी उतारी उसमें से तुमने कुछ हलाल (वैध) कर लिया और कुछ हराम (अवैध) कर लिया, पूछिए कि क्या अल्लाह ने तुम्हें इसकी अनुमति दी या तुम अल्लाह पर झूठ गढ़ते हो (59) और क़यामत के दिन के बारे में उन लोगों का क्या विचार है जो अल्लाह पर झूठ बांधते रहते हैं बेशक अल्लाह लोगों पर कृपा करने वाला है लेकिन उनमें अधिकतर लोग शुक्र नहीं करते हैं (60) और आप जिस हाल में भी होते हैं और कुरआन का जो पाठ आप करते हैं और तुम लोग जो कुछ भी काम करते हो बस जब तुम उसमें व्यस्त होते हो तो हम तुम पर पूरी नज़र रखते हैं और कण–मात्र भी कुछ आपके पालनहार से ओझल नहीं रहता न ज़मीन में न आसमान में और न उससे छोटा और न उससे बड़ा जो खुली किताब में न हो[1] (61)

(1) इन आयतों में पहले आख़िरत में अपराधियों की पछतावे का वर्णन है फिर पवित्र कुरआन के गुण बयान हुए हैं कि वह पूरा का पूरा रौशनी, हिदायत (मार्गदर्शन) और रोग मुक्ति का साधन है, फिर उन लोगों का वर्णन है जो उससे फ़ायदा नहीं उठाते और भटकते फिरते हैं, उसके बाद अल्लाह के सर्वज्ञान का वर्णन है, मर कर आदमी मिट्टी में मिल जाए लेकिन कण–कण उसके ज्ञान व शक्ति में है, वह दोबारा उसी तरह इन्सान को खड़ा कर देगा जिस तरह उसने पहले पैदा किया।

أَلَآ إِنَّ أَوْلِيَآءَ ٱللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾
ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَكَانُوا۟ يَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾ لَهُمُ ٱلْبُشْرَىٰ فِى ٱلْحَيَوٰةِ
ٱلدُّنْيَا وَفِى ٱلْءَاخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَٰتِ ٱللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ
ٱلْفَوْزُ ٱلْعَظِيمُ ﴿٦٤﴾ وَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّ ٱلْعِزَّةَ لِلَّهِ
جَمِيعًا ۚ هُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿٦٥﴾ أَلَآ إِنَّ لِلَّهِ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ
وَمَن فِى ٱلْأَرْضِ ۗ وَمَا يَتَّبِعُ ٱلَّذِينَ يَدْعُونَ مِن
دُونِ ٱللَّهِ شُرَكَآءَ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا ٱلظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا
يَخْرُصُونَ ﴿٦٦﴾ هُوَ ٱلَّذِى جَعَلَ لَكُمُ ٱلَّيْلَ لِتَسْكُنُوا۟
فِيهِ وَٱلنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ
يَسْمَعُونَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا۟ ٱتَّخَذَ ٱللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَٰنَهُۥ ۖ هُوَ ٱلْغَنِىُّ
لَهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۚ إِنْ عِندَكُم مِّن
سُلْطَٰنٍۭ بِهَٰذَآ ۚ أَتَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾
قُلْ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى ٱللَّهِ ٱلْكَذِبَ لَا
يُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾ مَتَٰعٌ فِى ٱلدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ
نُذِيقُهُمُ ٱلْعَذَابَ ٱلشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا۟ يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾

منزل ٣

याद रखो अल्लाह के दोस्तों पर हरगिज़ न कोई भय होगा और न वे दुःखी होंगे[1] (62) वही जो ईमान लाए और परहेज़गार रहे (63) दुनिया के जीवन में भी उनके लिए शुभ समाचार है और आख़िरत में भी, अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं यही है वह बड़ी सफलता (64) आप उनकी बातों से दुखी न हों इज़्ज़त तो सब की सब केवल अल्लाह ही के लिए है, वह ख़ूब सुनता ख़ूब जानता है (65) याद रखो जो भी आसमानों में है और जो भी ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है और जो अल्लाह के अलावा साझीदारों को पुकारने वाले पीछे लगे हैं वे केवल गुमान के पीछे लगे हैं और केवल अटकलें लगा रहे हैं (66) वही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि उसमें सुकून प्राप्त करो और दिन को रौशन बनाया, निश्चित रूप से इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सुनते हैं (67) वे बोले कि अल्लाह ने बेटा बना लिया है, वह पवित्र है वह बेनियाज़ (उसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं) है आसमानों और ज़मीनों में जो कुछ है वह उसी का है, इस बात का तुम्हारे पास कोई प्रमाण नहीं, क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात कहते हो जो तुम जानते नहीं (68) कह दीजिए जो अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं (कभी) सफल नहीं हो सकते (69) दुनिया में थोड़ा ही मज़ा है फिर हमारे ही पास लौट कर आना है फिर हम उनको कठोर दण्ड का मज़ा चखाएंगे इसलिए कि वे इनकार ही करते रहते थे[2] (70)

(1) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि अल्लाह के दोस्त कौन हैं? उत्तर दिया कि जिनको देख कर अल्लाह याद आए, उनके गुणों का बयान है कि वे ईमान वाले और परहेज़गार लोग हैं, दुनिया में भी वे सुकून से हैं और आख़िरत में भी, अगर कोई दुर्घटना भी घटित होती है तो सब्र व अल्लाह के फ़ैसले पर सहमति की शक्ति से उसके प्रभाव को समाप्त कर देते हैं और वे आख़िरत में दोज़ख़ और अज़ाब से पूरे तौर से निर्भय रहेंगे, एक हदीस में आया है कि जो लोग केवल अल्लाह तआला के लिए आपस में मुहब्बत करते हैं अल्लाह तआला उनके चेहरे क़यामत के दिन चौदहवीं के चाँद की तरह रौशन कर देगा, आम लोग भयभीत होंगे लेकिन वे निर्भय होंगे, फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ी (2) और जो अल्लाह के दुश्मन हैं उसके साथ दूसरों को साझी ठहराते हैं उनके पास केवल कथाएं और कहानियाँ हैं, प्रमाणों से वे कोसों दूर हैं, जब वे अल्लाह के यहाँ उपस्थित होंगे तो उनको अपने इस शिर्क (साझी ठहराने) और इनकार के कारण सख़्त सज़ा का सामना करना पड़ेगा।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ
مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا
اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ وَ
لَا تُنْظِرُوْنِ ۝٧١ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ اَجْرِيَ
اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝٧٢ فَكَذَّبُوْهُ
فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰۗىِٕفَ وَاَغْرَقْنَا
الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝٧٣
ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَاۗءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۭ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰي
قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ۝٧٤ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى
فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝٧٥
فَلَمَّا جَاۗءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧٦
قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاۗءَكُمْ ۭ اَسِحْرٌ هٰذَا ۭ وَلَا يُفْلِحُ
السّٰحِرُوْنَ ۝٧٧ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَاۗءَنَا
وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَاۗءُ فِي الْاَرْضِ ۭ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٧٨

وقف لازم

منزل٣

और उनको नूह की कहानी सुनाइए जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम्हें मेरा खड़ा होना और अल्लाह की आयतों के माध्यम से समझाना भारी लगता है तो मैंने अल्लाह ही पर भरोसा किया, बस तुम अपना मामला मज़बूत कर लो और अपने साझीदारों को इकट्ठा कर लो फिर तुम्हें अपने काम में कोई संदेह न रह जाए, फिर मेरे साथ (जो करना है) कर गुज़रो और मुझे मोहलत भी न दो (71) फिर अगर तुमने मुँह मोड़ा तो मैंने तुमसे कोई बदला तो मांगा नहीं है, मेरा बदला अल्लाह ही के ज़िम्मे है और मुझे यह आदेश है कि मैं आज्ञाकारी ही रहूँ[1] (72) बस उन्होंने उनको झुठलाया तो हमने उनको और उनके साथ वालों को नाव में बचा लिया और उनको हमने आबाद कर दिया और जिन्होंने हमारी निशानियाँ झुठलाईं उनको डुबो दिया, तो देख लीजिए कि जिनको डराया गया था उनका क्या अंजाम हुआ (73) फिर उनके बाद भी हमने उनकी क़ौम के पास पैग़म्बरों को भेजा और वे खुली निशानियाँ लेकर आए तो उनसे हरगिज़ यह न हुआ कि पहले जिस चीज़ को झुठला चुके थे उस पर ईमान ले आते, ऐसे ही हम हद से गुज़रने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं (74) फिर उनके बाद हमने मूसा और हारून को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सम्मानित लोगों के पास भेजा तो उन्होंने अकड़ दिखाई और वे अपराधी लोग थे (75) फिर उनके पास जब हमारे पास से सत्य पहुँच गया तो वे बोले यह तो खुला जादू है (76) मूसा ने कहा कि क्या तुम सत्य के बारे में जब वह तुम्हारे पास आ पहुँचा यह कहते हो कि यह जादू है, जब कि जादूगर सफल नहीं होते (77) वे बोले क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमें उस तरीक़े से हटा दो जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है और देश में तुम दोनों की चौधराहट हो और हम तो तुम को मानने वाले ही नहीं[2] (78)

(1) नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से कहा कि अगर तुम नहीं मानते तो हमारे साथ जो कर सको कर डालो और अगर नहीं कर सकते और इसके बाद भी बात नहीं मानते तो मेरी कोई ज़िम्मेदारी नहीं, तुम जानो, मैं तो इस्लाम पर हूँ, बस जब क़ौम ने न माना तो वे सब डुबो दिये गये, फिर उसके बाद भी जब रसूल आए तो क़ौमों ने इसी तरह उनको झुठलाया (2) हर जगह न मानने वालों की यही रट होती है कि बाप–दादा के तरीक़ों को कैसे छोड़ दें, पवित्र कुरआन ने जगह–जगह इसका उल्लेख किया है और इसकी हानियां बयान की हैं कि इसके द्वारा आदमी आमतौर से सत्य से वंचित रह जाता है।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝٧٩ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ
قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝٨٠ فَلَمَّاۤ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى
مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ
الْمُفْسِدِيْنَ ۝٨١ وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝٨٢
فَمَاۤ اٰمَنَ لِمُوْسٰۤى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ
وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ
لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝٨٣ وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ
فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ۝٨٤ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٨٥ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ
الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝٨٦ وَاَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ
لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٨٧ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَاۤ اِنَّكَ
اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ
رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰۤى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ
عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝٨٨

और फ़िरऔन बोला कि हर माहिर जादूगर को हमारे पास हाज़िर करो (79) फिर जब जादूगर आ गये तो मूसा ने उनसे कहा कि तुम्हें जो फेंकना है फेंको (80) फिर जब उन्होंने फेंका तो मूसा ने कहा कि तुम जो लाए हो वह जादू है, अल्लाह इसको जल्द ही मिटा कर रहेगा, अल्लाह तआला बिगाड़ पैदा करने वालों का काम हरगिज़ बनने नहीं देता (81) और अल्लाह सच को अपने आदेश से सच करके रहेगा चाहे अपराधियों को कैसा ही बुरा लगे[1] (82) फिर मूसा पर कोई और नहीं केवल उनकी क़ौम के कुछ नवजवान फ़िरऔन और उसके सरदारों से डरते डरते ईमान लाए कि कहीं वे उनको मुसीबत में न डाल दें और निश्चित रूप से फ़िरऔन देश में बड़ा बना हुआ था और निश्चित रूप से वह ज़्यादती करने वालों में था (83) और मूसा ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो तो उसी पर भरोसा करो अगर तुम आज्ञाकारी हो (84) बस वे बोले कि हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया, ऐ हमारे पालनहार! हमें अत्याचारी क़ौम के हाथों आज़माइश में न डाल (85) और अपनी कृपा से हमें काफ़िर क़ौम से बचा (86) और हमने मूसा और उनके भाई की ओर वह्य भेजी कि तुम दोनों अपनी क़ौम के लिए मिस्र ही में अपने मकानों को ठिकाना बनाओ और मकानों को किब्ला (की ओर) कर लो और नमाज़ क़ायम करो और (मूसा)! तुम ईमान वालों को शुभ समाचार सुना दो[2] (87) और मूसा ने कहा ऐ हमारे पालनहार! तूने फिरऔन और उसके सरदारों को दुनिया के जीवन की बड़ी शोभा–सामग्री और धन प्रदान किया है, ऐ हमारे पालनहार! इसलिए कि वे तेरे रास्ते से बहकाएं, ऐ हमारे पालनहार! उनके मालों को बर्बाद कर दे और उनके दिलों को कठोर कर दे तो वे (उस समय तक) ईमान न लाएं जब तक दुखद अज़ाब न देख लें[3] (88)

---

(1) और वही हुआ कि मूसा की लाठी उनकी सब रस्सियाँ लील गई, उसके बाद होना यह चाहिए था कि सब ईमान ले आते लेकिन जादूगरों और कुछ लोगों के अलावा और कोई ईमान न लाया (2) इसमें बनी इस्राईल को एक आदेश तो यह है कि मिस्र ही में रहें हिजरत की ज़रूरत नहीं और उनके लिए मस्जिद में नमाज़ पढ़ना ज़रूरी था और मस्जिदें वीरान कर दी गई थीं, इसलिए यह अनुमति दी गई कि घर में ही नमाज़ की जगह बना लें और वहीं नमाज़ पढ़ें, मस्जिदों में जाना ज़रूरी नहीं (3) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब निराश हो गए तो श्राप दे दिया।

قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ
الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ
فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ
اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَ
اَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩٠﴾ آٰلْــٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ
الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٩١﴾ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ
اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَلَقَدْ
بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ
فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ
مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ
قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٩٤﴾
وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ
الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا
يُؤْمِنُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٩٧﴾

منزل٣

कहा कि तुम दोनों की दुआ स्वीकार कर ली गई बस तुम दोनों जमे रहो और ऐसों का रास्ता मत चलना जो अज्ञानी हैं (89) और हमने बनी इस्राईल को नदी पार करा दिया तो फ़िरऔन और उसकी सेना ने शरारत और ज़्यादती से उनका पीछा किया यहाँ तक कि जब वह डूबने लगा तो बोला कि मैंने मान लिया कि उस पूज्य के अलावा कोई पूज्य नहीं जिसको बनी इस्रार्लल ने माना है और मैं मुसलमान हूँ (90) अब क्या होता है जब कि पहले तू अवज्ञाकार रहा और तू फसादियों में से था (91) बस आज हम तेरे शरीर को बचा लेंगे ताकि तू बाद वालों के लिए (शिक्षा की) एक निशानी हो, जबकि अधिकतर लोग हमारी निशानियों से लापरवाह ही हैं[1] (92) और हमने बनी इस्राईल को अच्छा ठिकाना दिया और साफ़ सुथरी चीज़ों की रोज़ी दी तो वे झगड़े में नहीं पड़े यहाँ तक कि ज्ञान उनके पास आ गया, वे जिन चीज़ों में झगड़ते रहे हैं क़यामत के दिन आप का पालनहार उसका फ़ैसला कर देगा[2] (93) तो अगर आपको उस चीज़ में कुछ संदेह हो जो हमने आप पर उतारी है तो आप उन लोगों से पूछ लीजिए जो आपके पहले से किताब पढ़ रहे हैं, आपके पास तो आपके पालनहार की ओर से सत्य आ चुका है तो आप हरगिज़ संदेह करने वालों में न हों (94) और हरगिज़ उन लोगों में भी न हों जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया कि आप भी घाटा उठाने वालों में हो जाएं[3] (95) बेशक जिन पर आपके पालनहार की बात तय हो चुकी वे ईमान लाने वाले नहीं (96) चाहे उनके पास हर निशानी आ जाए यहां तक कि वे दुखद अज़ाब देख लेंगे[4] (97)

(1) अल्लाह का क़ानून यही है कि अज़ाब आ जाने के बाद ईमान लाना स्वीकार नहीं होता, अल्लाह ने फ़िरऔन की लाश को सुरक्षित रखा और वह नदी के ऊपर तैरती रही ताकि सब देखने वाले देख लें कि "अ न रब्बुकुमुल्आला" (मैं तुम्हारा सबसे बड़ा पालनहार हूँ) का नारा लगाने वाला कैसा असहाय है, वर्तमान शोध यह है कि काहिरा के म्युज़ियम में जिस फ़िरऔन की लाश है वह वही फ़िरऔन है जो मूसा अ़लैहिस्सलाम के युग में डूबा, अगर यह शोध सत्य है तो यह इस उम्मत के सच्चा होने का खुला प्रमाण भी है क्योंकि यह आयत उस समय उतरी थी जब लोगों को मालूम भी नहीं था कि फ़िरऔन की लाश अब भी सुरक्षित है, वैज्ञानिक रूप से इसकी खोज बहुत बाद में हुई (2) यानी उनको आसमानी किताबों में अंतिम पैग़म्बर के वर्णन पर पूरा विश्वास था, फिर जब वह पैग़म्बर आ गया तो वे झगड़ा पैदा करने लगे (3) इसमें वास्तव में दूसरों को सुनाना मक़सद है कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चेताया जा रहा है तो दूसरों को कितना सावधान रहना चाहिए (4) अल्लाह की ओर से यह बात उन्हीं के लिए तय होती है जो अल्लाह से विद्रोह पर उतारू हो जाते हैं और उस प्राकृतिक रौशनी को बुझा देते हैं जो अल्लाह ने उनके दिलों में रखी है "जब वे टेढ़े हो गए तो अल्लाह ने उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया" ऐसे लोगों से हिदायत की तौफ़ीक़ ही छीन जी लाती है।

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ؕ لَمَّآ
اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ
اِلٰى حِيْنٍ ﴿۹۸﴾ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ
اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۹۹﴾ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ
اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا
يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا تُغْنِي
الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا
مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ
مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ
حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰۳﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ
شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۚ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰۴﴾ وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۰۵﴾ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَ
لَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۰۶﴾

منزل ۳

बस ऐसा क्यों न हुआ कि कोई बस्ती ईमान ले आती तो उसका ईमान उसके काम आता सिवाय यूनुस की क़ौम के जब वे ईमान लाए तो हमने दुनिया के जीवन में उन पर से अपमान का अज़ाब हटा दिया और एक अवधि तक उनको मज़े में रखा[1] (98) और अगर आपका पालनहार चाहता तो दुनिया के सभी लोग ज़रूर ईमान ले आते, तो क्या आप लोगों पर ज़बरदस्ती करेंगे कि वे ईमान वाले हो जाएं [2] (99) और किसी व्यक्ति के बस में नहीं कि वह अल्लाह के आदेश के बिना ईमान ले आए और अल्लाह उन लोगों पर गंदगी डालता है जो बुद्धि से काम नहीं लेते हैं (100) कह दीजिए कि देखो क्या कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और निशानियाँ और सावधान करने वाले, ऐसे लोगों को कुछ फ़ायदा नहीं पहुँचा सकते जो मानते नहीं (101) तो क्या वे उन लोगों के जैसे दिनों का इंतेज़ार कर रहे हैं जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं कह दीजिए कि तुम भी इंतेज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इंतेज़ार में हूँ (102) फिर हम अपने पैग़म्बरों और ईमान लाने वालों को नजात देते हैं, इसी प्रकार हमारे ज़िम्मे है कि हम ईमान लाने वालों को बचा लें (103) कह दीजिए कि ऐ लोगो! अगर तुम्हें मेरे दीन में कुछ संदेह है तो मैं अल्लाह के सिवा उनको नहीं पूजता जिनको तुम पूजते हो हाँ मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ जो तुम्हें मौत देता है और मुझे आदेश है कि मैं ईमान वालों में रहूँ (104) और यह कि अपने मुँह को केवल दीन की ओर ही रखना और कहीं शिर्क करने वालों में न हो जाना (105) और अल्लाह के अलावा किसी ऐसे को मत पुकारना जो तुम्हें न फ़ायदा पहुँचा सके न नुक़सान पहुँचा सके बस अगर आपने ऐसा किया तो ज़रूर आप अत्याचारियों में हो जाएंगे[3] (106)

---

(1) अल्लाह का क़ानून यही है कि अज़ाब आ जाने के बाद तौबा स्वीकार नहीं होती, हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम ने अपनी कौम को अज़ाब से डराया फिर भी जब उन्होंने न माना तो वह अज़ाब की भविष्यवाणी करके चले गये, क़ौम को जब ऐसे लक्षण नज़र आये जिनसे उनको हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम के सच्चे होने का विश्वास हो गया तो वे तौबा करने लगे और गिड़गिड़ाने लगे, अल्लाह ने उनकी तौबा स्वीकार कर ली और उन्हें अज़ाब से बचा लिया (2) अल्लाह तआला सबको ज़बरदस्ती मुसलमान बना सकता था लेकिन चूंकि दुनिया के परीक्षा गृह में हर व्यक्ति से मांग है कि वह अपने मर्ज़ी व अधिकार से ईमान लाए, इसलिए ज़बरदस्ती किसी को मुसलमान करना न अल्लाह का तरीक़ा है और न किसी और के लिए यह अमल जाएज़ है, बस जो व्यक्ति अपनी समझ का सदोपयोग करके ईमान लाना चाहता है अल्लाह उसे सामर्थ्य देता है और जो बुद्धि से काम नहीं लेता उस पर कुफ़्र की गंदगी डाल दी जाती है (3) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को संबोधित करके पूरी उम्मत का ध्यान आकर्षित किया जा रहा है।

और अगर अल्लाह तुम्हें किसी तकलीफ़ में डाल दे तो उसके सिवा कोई उसको दूर करने वाला नहीं और अगर वह तुम्हारे साथ भलाई का इरादा कर ले तो उसके फ़ज़्ल को कोई टाल नहीं सकता, वह अपने बंदों में जिसे चाहे उसे प्रदान करे और वह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही कृपालु है (107) कह दीजिए कि ऐ लोगो! तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे पास सत्य आ पहुँचा, बस जो सच्चे रास्ते पर चला तो वह अपने भले कि लिए सच्चे रास्ते पर चला और जो भटक गया तो वह अपने बुरे के लिए रास्ता भटका और मैं तुम पर कोई दारोग़ा नहीं हूँ (108) और जो वह्य आप पर आई है आप उसी पर चलते रहिए और जमे रहिए यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे और वह सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है[1] (109)

सूरह हूद

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अलिफ़ लाम रॉ, (यह वह) किताब है जिसकी आयतें जाँच ली गई हैं फिर उनको खोल दिया गया है, एक हिकमत (तत्वदर्शिता) वाले, पूरी ख़बर रखने वाले की ओर से (1) कि तुम बन्दगी केवल अल्लाह ही की करो, बेशक मैं उससे तुम्हें डराने वाला और शुभ समाचार सुनाने वाला हूँ (2) और यह कि तुम अपने पालनहार से माफ़ी मांगो और उसी की ओर पलटो तो वह तुम्हें एक निर्धारित वादे तक खूब मज़े में रखेगा और हर अधिक काम करने वाले को अधिक बदला देगा और अगर तुमने मुँह मोड़ा तो मुझे तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है (3) तुम सबको अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है और वह हर चीज़ की पूरी सामर्थ्य रखता है (4) देखो वे अपने सीनों को दोहरा रखते हैं तकि उस (अल्लाह) से छिपाए रखें, याद रखो! जब वे कपड़े पहनते हैं (तो भी) जो छिपाते और ज़ाहिर करते हैं वह (सब कुछ) जानता है वह तो सीनों के भीतर की बातों से ख़ूब अवगत है[2] (5)

(1) तब्लीग़ का जो काम मैं कर सकता था मैंने कर दिया अब मानना न मानना तुम्हारा काम है, इससे अधिक मुझे अधिकार नहीं। (2) इमाम बुखारी रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत अब्दुल्लाह पुत्र अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की यह बात लिखी है कि कुछ सहाबा बहुत ज़्यादा शर्म की वजह से शौच और संभोग के समय भी गुप्तांग खोलते हुए झिझकते थे और अपना सीना झुका लेते और गुप्तांग को छिपाने का प्रयास करते थे, उन लोगों को एक प्रकार से सावधान किया जा रहा है कि अल्लाह तआला तो हर हाल में देखता है हर चीज़ उसके सामने है इसलिए इतना ज़्यादा संकोच की ज़रूरत नहीं, यह दीन (धर्म) के प्रकृति के विरुद्ध है।

وما من دابة في الأرض إلا على الله رزقها و
يعلم مستقرها ومستودعها كل في كتب مبين ۝٦ و
هو الذي خلق السموت والأرض في ستة أيام وكان
عرشه على الماء ليبلوكم أيكم أحسن عملا ولئن قلت
إنكم مبعوثون من بعد الموت ليقولن الذين كفروا إن
هذا إلا سحر مبين ۝٧ ولئن أخرنا عنهم العذاب إلى أمة
معدودة ليقولن ما يحبسه ألا يوم يأتيهم ليس مصروفا
عنهم وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون ۝٨ ولئن أذقنا
الإنسان منا رحمة ثم نزعنها منه إنه ليئوس كفور ۝٩
ولئن أذقنه نعماء بعد ضراء مسته ليقولن ذهب
السيات عني إنه لفرح فخور ۝١٠ إلا الذين صبروا
وعملوا الصلحت أولئك لهم مغفرة وأجر كبير ۝١١
فلعلك تارك بعض ما يوحى إليك وضائق به
صدرك أن يقولوا لولا أنزل عليه كنز أو جاء معه
ملك إنما أنت نذير والله على كل شيء وكيل ۝١٢

منزل ٣

और ज़मीन में जो भी चलने फिरने वाला है, उसकी रोज़ी अल्लाह ही के ज़िम्मे है और जहाँ वह रहता है और जहाँ सौंपा जाता है उससे भी वह अवगत है, सब कुछ खुली किताब में मौजूद है[1] (6) और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया[2] और उसका अर्श पानी पर था ताकि वह तुम्हें आज़माए कि कौन तुममें सबसे बेहतर काम करने वाला है और अगर आप उनसे कहें कि तुम मरने के बाद ज़रूर उठाए जाओगे तो इनकार करने वाले निश्चित ही कहेंगे कि यह तो खुले जादू के सिवा कुछ नहीं (7) और अगर हम अज़ाब को उनसे एक निर्धारित अवधि तक टाल दें तो वे ज़रूर कहेंगे कि किसने उसको रोक रखा है, सावधान हो जाओ जिस दिन भी वह उन पर आ जाएगा तो फिर वह उनसे टलाए न टलेगा और जिस पर वे (अब तक) हंसी करते रहे थे वह सब कुछ उन्हीं पर उलट पड़ेगा (8) और अगर हम इंसान को अपने पास से रहमत (दया) का मज़ा चखाते हैं फिर उसको छीन लेते हैं तो वह बड़ा निराश, सख़्त नाशुक्रा हो कर रह जाता है (9) और अगर तकलीफ़ के बाद जो उसको पहुंच चुकी हो राहत का मज़ा चखाएं तो वह कहे कि मेरी सब तकलीफ़ें (दलिद्दुर) दूर हो गईं बेशक (उस समय) वह इतराकर डींगें मारने लगता है (10) सिवाय उन लोगों के जिन्होंने क़दम जमाए रखा और उन्होंने अच्छे काम किये ऐसों ही के लिए माफ़ी और बड़ा बदला है[3] (11) तो भला क्या आप उसमें से कुछ छोड़ बैठेंगे जो वह्य आप पर की गई है और आपका सीना इससे संकुचित होने लगेगा कि वे कहते हैं कि उन पर ख़ज़ाना क्यों न उतरा या उनके साथ फरिश्ता क्यों न आया, आप तो बस डराने वाले हैं और अल्लाह हर चीज़ का ज़िम्मेदार है[4] (12)

---

(1) जहां ज़मीन में रहा और जहाँ मरने के बाद सौंपा जाएगा वह और उसके आगे सब अल्लाह के सामने है (2) चाहता तो क्षण भर में पैदा कर देता लेकिन उसकी हिकमत यही चाहती थी (3) न मानने वाले किसी तरह भी नहीं मानते, तकलीफ़ के बाद राहत हो तो इंसान समझता है कि बस सुख ही सुख है (4) मुश्रिक लोगों का कहना था कि आप मूर्तियों को असत्य कहना छोड़ दें हमारा झगड़ा समाप्त हो जाएगा, इसी कारण कहा जा रहा है कि भला आप कुछ छोड़ तो सकते नहीं तो उनकी मांगों पर मन छोटा न कीजिए, आप संदेश पहुँचा दें फिर उनका हिसाब–किताब अल्लाह के ज़िम्मे है।

أم يقولون افتراه قل فأتوا بعشر سور مثله مفتريت و
ادعوا من استطعتم من دون الله إن كنتم صدقين ﴿١٣﴾
فإلم يستجيبوا لكم فاعلموا أنما أنزل بعلم الله وأن لا إله
إلا هو فهل أنتم مسلمون ﴿١٤﴾ من كان يريد الحيوة الدنيا و
زينتها نوف إليهم أعملهم فيها وهم فيها لا يبخسون ﴿١٥﴾
أولئك الذين ليس لهم في الآخرة إلا النار وحبط ما
صنعوا فيها وبطل ما كانوا يعملون ﴿١٦﴾ أفمن كان على
بينة من ربه ويتلوه شاهد منه ومن قبله كتب موسى
إماما ورحمة أولئك يؤمنون به ومن يكفر به من
الأحزاب فالنار موعده فلا تك في مرية منه إنه الحق
من ربك ولكن أكثر الناس لا يؤمنون ﴿١٧﴾ ومن أظلم
ممن افترى على الله كذبا أولئك يعرضون على ربهم و
يقول الأشهد هؤلاء الذين كذبوا على ربهم ألا
لعنة الله على الظلمين ﴿١٨﴾ الذين يصدون عن سبيل
الله ويبغونها عوجا وهم بالآخرة هم كفرون ﴿١٩﴾

منزل٣

क्या वे कहते हैं कि उन्होंने इसको गढ़ लिया है? कहिए तो तुम गढ़ कर इस जैसी दस सूरतें ही बना लाओ और अल्लाह के सिवा जिसको बुला सकते हो बुला लो अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो (13) फिर अगर वे तुम्हारा कहा नहीं करते तो जान लो कि वह तो अल्लाह के ज्ञान के अनुसार ही उतरा है और यह कि उसके सिवा कोई पूज्य नहीं तो क्या अब मानते हो[1] (14) जो कोई दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी शोभा चाहता हो तो हम उसी में उसके कर्मों (का बदला) पूरा–पूरा दे देंगे और उसमें उनके साथ कुछ कमी नहीं की जाएगी (15) ऐसों के लिए आख़िरत में आग के सिवा और कुछ नहीं है और दुनिया में उन्होंने जो कुछ किया–धरा सब बर्बाद हुआ और उनके सब काम मिट्टी में मिल गए (16) भला जो व्यक्ति अपने रब के खुले रास्ते पर है और उससे उसको गवाही मिलती है और इससे पहले मूसा की किताब (से भी गवाही मिल चुकी है) जो राह दिखाने वाली और रहमत है वही लोग इस (कुरआन) पर ईमान रखते हैं और जो भी गिरोह इसका इनकार करेंगे तो उनके लिए दोज़ख ही तय है तो आप इसके बारे में थोड़ा भी संदेह में न पड़ें बेशक यह आपके पालनहार की ओर से सत्य है लेकिन अधिकतर लोग मानते नहीं (17) उससे बढ़ कर अन्याय करने वाला कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे? ऐसों को उनके पालनहार के सामने पेश किया जाएगा और गवाह कहेंगे यही लोग हैं जिन्होंने अपने पालनहार पर झूठ बोला था, याद रखो! अन्याय करने वालों पर अल्लाह की फिटकार है (18) जो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उसमें कमी की खोज में रहते हैं और वही हैं जो आख़िरत का इनकार करने वाले हैं[2] (19)

---

(1) दस सूरतें कुरआन जैसी बना कर लाने की चुनौती दी गई, बाद में केवल एक ही सूरत बना कर लाने को कहा गया लेकिन मुश्रिक लोग जिनको अपनी शुद्ध भाषा पर गर्व था इस चुनौती को स्वीकार न कर सके और बेबस हो कर रह गए, उन्होंने इस्लाम को मिटाने के सारे प्रयास कर डाले, मगर यह काम उनसे हो ही न सका, मगर इसके बावजूद हठधर्मी पर जमे रहे इसलिए कि उनके सामने केवल दुनिया ही थी, अल्लाह तआला आगे फ़रमाते हैं कि उनके लिए दुनिया ही में सब कुछ है और आख़िरत में सिवाय दोज़ख़ के कुछ नहीं (2) पवित्र कुरआन खुद इसकी दलील है और तौरेत में भी इसकी भविष्यवाणी मौजूद है, तो जो इस कुरआनी रास्ते को अपनाता है वह उसको मानता है और जो नहीं मानते वही हैं जो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और इसके लिए उपाय तलाशते हैं, यही लोग दोज़ख़ी हैं।

أُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ
مِّنْ دُونِ اللّٰهِ مِنْ أَوْلِيَآءَ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ مَا كَانُوا
يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ﴿٢٠﴾ أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ
خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢١﴾ لَا جَرَمَ
أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ﴿٢٢﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ وَأَخْبَتُوا إِلٰى رَبِّهِمْ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ
فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿٢٣﴾ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمٰى وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ
وَالسَّمِيعِ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا
نُوحًا إِلٰى قَوْمِهٖٓ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٥﴾ أَنْ لَّا تَعْبُدُوٓا إِلَّا
اللّٰهَ إِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٢٦﴾ فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ
اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ وَمَا نَرٰى
لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِينَ ﴿٢٧﴾ قَالَ يٰقَوْمِ أَرَءَيْتُمْ
إِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّي وَآتٰىنِي رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ
فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ أَنُلْزِمُكُمُوهَا وَأَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُونَ ﴿٢٨﴾

منزل٣

सम्भव नहीं कि यह लोग ज़मीन में भी (अल्लाह को) बेबस कर दें और उनके लिए अल्लाह के अलावा कोई मददगार नहीं, उनके लिए अज़ाब दोगुना कर दिया जाएगा, न ही उनके बस में सुनना था और न ही वे देखते थे (20) यही लोग हैं जिन्होंने अपना घाटा किया और जो कुछ वे गढ़ा करते थे वह सब हवा हो गया (21) निश्चित रूप से यही लोग आख़िरत में सबसे अधिक घाटा उठाने वाले होंगे[1] (22) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए और वे अपने पालनहार की ओर झुक गये वही जन्नत वाले हैं वे उसी में हमेशा रहेंगे (23) दोनों पक्षों का उदाहरण ऐसा है जैसे एक अंधा और बहरा और एक देखता और सुनता, क्या दोनों का हाल एक ही जैसा है, क्या फिर भी तुम ध्यान नहीं करते (24) और बेशक हमने नूह को उनकी क़ौम के पास भेजा (उन्होंने कहा कि) मैं तुम्हें साफ़–साफ़ डराता हूँ (25) कि केवल अल्लाह की पूजा करो, मुझे तुम पर दुखद दिन के अज़ाब का डर है (26) तो सम्मानित लोग बोले जो उनकी क़ौम में इनकार करने वाले थे कि तुम तो हमें अपने जैसे इंसान दिखाई पड़ते हो और हम तो देखते हैं कि तुम्हारी बात वही लोग मानते हैं जो हममें सबसे घटिया हैं (और वह भी) शिथिल राय क़ायम करके और हमें अपने ऊपर तुम्हारी कोई बड़ाई दिखाई नहीं पड़ती बल्कि हम तो तुम्हें झूठा ही समझते हैं[2] (27) उन्होंने कहा कि ऐ मेरी कौम के लोगो! तुम्हारा क्या विचार है अगर मैं अपने पालनहार की ओर से खुले प्रमाण के साथ हूँ और उसके पास से मुझे रहमत (दया) मिलती है फिर वह तुम्हारी नज़रों से ओझल है तो क्या मैं उसको तुम्हारे सिर मढ़ दूँ जब कि तुम उसको सख़्त ना पसंद करते हो[3] (28)

---

(1) अल्लाह ने उनको सुनने और देखने की शक्ति दी थी लेकिन उन्होंने अल्लाह की किताबों और पैग़म्बरों के बारे में अपने आपको अंधा व बहरा कर लिया और घाटा उठा गए, आगे इसी का और विस्तार है कि क्या ऐसे अंधे बहरे उनके बराबर हो सकते हैं जो देखते और सुनते हैं (2) हर पैग़म्बर पर शुरु में ईमान लाने वाले कमज़ोर ही होते हैं, हिरक़्ल ने अबू सुफ़ियान से पूछा था कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने वालों में अधिकतर कौन लोग हैं? अबू सुफ़ियान ने कहा कि क़ौम के कमज़ोर लोग, हिरक़्ल बोला कि नबी पर ईमान लाने वालों में जो लोग पहल करते हैं वे कमज़ोर ही होते हैं (3) यानी मैं दिखा तो नहीं सकता और न ज़बरदस्ती कर सकता हूँ, जितना मैं कर सकता था मैंने कर दिया।

وَيٰقَوۡمِ لَاۤ اَسۡـَٔلُكُمۡ عَلَيۡهِ مَالًا ؕ اِنۡ اَجۡرِىَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا ؕ اِنَّهُمۡ مُّلٰقُوۡا رَبِّهِمۡ وَلٰـكِنِّىۡۤ اَرٰٮكُمۡ قَوۡمًا تَجۡهَلُوۡنَ ﴿۲۹﴾ وَيٰقَوۡمِ مَنۡ يَّنۡصُرُنِىۡ مِنَ اللّٰهِ اِنۡ طَرَدْتُّهُمۡ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوۡنَ ﴿۳۰﴾ وَلَاۤ اَقُوۡلُ لَـكُمۡ عِنۡدِىۡ خَزَآٮِٕنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعۡلَمُ الۡغَيۡبَ وَلَاۤ اَقُوۡلُ اِنِّىۡ مَلَكٌ وَّلَاۤ اَقُوۡلُ لِلَّذِيۡنَ تَزۡدَرِىۡۤ اَعۡيُنُكُمۡ لَنۡ يُّؤۡتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيۡرًا ؕ اَللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا فِىۡۤ اَنۡفُسِهِمۡ ۖۚ اِنِّىۡۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۳۱﴾ قَالُوۡا يٰـنُوۡحُ قَدۡ جَادَلۡتَنَا فَاَكۡثَرۡتَ جِدَالَنَا فَاۡتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنۡ كُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ﴿۳۲﴾ قَالَ اِنَّمَا يَاۡتِيۡكُمۡ بِهِ اللّٰهُ اِنۡ شَآءَ وَمَاۤ اَنۡتُمۡ بِمُعۡجِزِيۡنَ ﴿۳۳﴾ وَلَا يَنۡفَعُكُمۡ نُصۡحِىۡۤ اِنۡ اَرَدْتُّ اَنۡ اَنۡصَحَ لَـكُمۡ اِنۡ كَانَ اللّٰهُ يُرِيۡدُ اَنۡ يُّغۡوِيَكُمۡ ؕ هُوَ رَبُّكُمۡ وَاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۳۴﴾ اَمۡ يَقُوۡلُوۡنَ افۡتَرٰٮهُ ؕ قُلۡ اِنِ افۡتَرَيۡتُهٗ فَعَلَىَّ اِجۡرَامِىۡ وَاَنَا بَرِىۡٓءٌ مِّمَّا تُجۡرِمُوۡنَ ﴿۳۵﴾ وَاُوۡحِىَ اِلٰى نُوۡحٍ اَنَّهٗ لَنۡ يُّؤۡمِنَ مِنۡ قَوۡمِكَ اِلَّا مَنۡ قَدۡ اٰمَنَ فَلَا تَبۡتَـئِسۡ بِمَا كَانُوۡا يَفۡعَلُوۡنَ ﴿۳۶﴾ وَاصۡنَعِ الۡـفُلۡكَ بِاَعۡيُنِنَا وَوَحۡيِنَا وَلَا تُخَاطِبۡنِىۡ فِى الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا ۚ اِنَّهُمۡ مُّغۡرَقُوۡنَ ﴿۳۷﴾

और ऐ मेरी क़ौम! मैं इस पर तुम से कोई धन नहीं मांगता, मेरा बदल तो अल्लाह ही के ज़िम्मे है और जो ईमान ला चुके हैं मैं उनको धित्कार नहीं सकता, यह अपने पालनहार से मिलने वाले हैं लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम (बड़े) अज्ञानी लोग हो (29) और ऐ मेरी क़ौम! अगर मैं उन्हें धित्कार दूँ तो कौन मुझे अल्लाह से बचाएगा, क्या तुम विचार नहीं करते[1] (30) और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और मैं ढ़के–छिपे से भी अवगत नहीं और मैं यह भी नहीं कहता कि मैं फरिश्ता हूँ[2] और न मैं उन लोगों के बारे में जो तुम्हारी निगाहों में हीन हैं यह कह सकता हूँ कि अल्लाह उनको कभी भलाई देगा ही नहीं, उनके मन में जो भी है अल्लाह उसको ख़ूब जानता है, अगर मैं ऐसा कहूँ तो निश्चित रूप से मैं ही अन्याय करने वाला हूँ[3] (31) वे बोले ऐ नूह! तुमने हमसे बहस कर ली और बहुत बहस की अब अगर तुम सच्चे हो तो जिसकी हमें धमकी देते हो वह हमारे सामने ले आओ (32) उन्होंने कहा उसको तो अल्लाह ही अगर चाहता है लाता है और तुम (उसको) बेबस नहीं कर सकते (33) और अगर मैं नसीहत करना भी चाहूँ तो मेरी नसीहत तुम्हें फ़ायदा नहीं पहुँचा सकती, अगर अल्लाह ही ने तुम्हें गुमराह करने का फ़ैसला कर लिया हो, वही तुम सबका पालनहार है और उसी की ओर तुम सबको लौट कर जाना है (34) क्या वे कहते हैं कि उन्होंने इसको गढ़ लिया है? कह दीजिए कि अगर मैंने गढ़ भी लिया है तो मेरा पाप मेरे ज़िम्मे हैं और तुम जो अपराध करते जाते हो मेरा उससे कुछ भी संबंध नहीं[4] (35) और नूह के पास वह्य आई कि जो ईमान ला चुके उनके अलावा तुम्हारी क़ौम में हरगिज़ अब कोई ईमान न लाएगा तो तुम उनकी करतूतों पर ग़म मत करो (36) और हमारे सामने और हमारे आदेश से नाव बनाओ और ज़ालिमों के संबंध में हमसे बात मत करना वे डूब कर रहेंगे[5] (37)

(1) ईमान लाने वाले मामूली व्यवसाय वाले लोग थे, मुश्रिक लोग चाहते थे कि उनको अलग कर दिया जाए, उसी का जवाब है कि वे अल्लाह वाले लोग हैं, मैं उनको धित्कार दूँ तो उस पर मेरी पकड़ होगी फिर कौन मुझे बचाएगा (2) यह उसी अज्ञानी विचार का खण्डन है, अल्लाह के किसी पैग़म्बर या वली (मित्र) के पास हर तरह के अधिकार होने चाहिए, उसे ग़ैब (परोक्ष) की सारी बातों का ज्ञान होना चाहिए या उसे फरिश्ता होना चाहिए, हज़रत नूह ने साफ़–साफ़ इन धारणाओं का खण्डन कर दिया और विभिन्न स्थानों पर पैग़म्बरों की ज़बानी बात साफ़ कर दी गई है कि उनका काम सही बात बताना और सत्यमार्ग पर चलाना है (3) ईमान वालों के बारे में मुश्रिक लोग कहते थे कि यह सच्चे दिल से ईमान नहीं लाए, इसका जवाब है कि उनके दिल को तो अल्लाह ही जानता है, मैं कैसे यह बात कह दूँ (4) इन घटनाओं को सुन कर मक्के के मुश्रिक कहते थे कि सब गढ़ी हुई चीजें हैं, इस पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान से यह कहा जा रहा है कि तुम जो कह रहे और कर रहे हो वह तुम भुगतोगे और मेरी ज़िम्मेदारी मेरे ऊपर है (5) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम साढ़े नौ सौ वर्ष तक समझाते रहे, फिर अल्लाह का आदेश आया कि यह मानने वाले नहीं, अब तुम हमारी वह्य के अनुसार नाव तैयार करो, जल्द ही सब बाढ़ में डुबो दिये जाएंगे, वह नाव क्या थी पानी का पूरा जहाज़ था।

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ
قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ فَسَوْفَ
تَعْلَمُوْنَ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ
مُّقِيْمٌ ﴿٣٩﴾ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ
كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ
وَمَنْ اٰمَنَ وَمَاۤ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿٤٠﴾ وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ
اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤١﴾ وَهِيَ تَجْرِيْ
بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ وَنَادٰى نُوْحُ ابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ
مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٢﴾ قَالَ سَاٰوِيْۤ
اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ
اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿٤٣﴾
وَقِيْلَ يٰۤاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ
وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ مِنْ
اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٤٥﴾

منزل ٣

और वे नाव बनाने लगे और जब भी उनकी क़ौम के सम्मानित लोग उनके पास से गुज़रते वे उनका मज़ाक उड़ाते, वे बोले कि अगर तुम हमारा मज़ाक उड़ाते तो (एक समय आयेगा) जैसे तुम मज़ाक उड़ा रहे हो हम तुम्हारा मज़ाक उड़ाएंगे[1] (38) बस जल्द ही तुम्हें पता चल जाएगा कि किस पर अज़ाब आता है जो उसको अपमानित करके छोड़ेगा और किस पर हमेशा का अज़ाब उतरता है (39) यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ पहुँचा और ज़मीन उबल पड़ी हमने कहा कि उस (नाव) में हर तरह के जोड़ों में से दो–दो को सवार कर लो और अपने घर वालों को भी सिवाय उनके जिन पर आदेश लागू हो चुका और ईमान वालों को भी, और उनके साथ इक्का–दुक्का लोग ही ईमान लाए थे (40) और उन्होंने कहा कि उसमें सवार हो जाओ उसका चलना और उसका ठहरना अल्लाह ही के नाम से है, बेशक मेरा रब बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है[2] (41) और वह (नाव) उन (सब) को लेकर पहाड़ की तरह मौज में चल रही थी और नूह ने अपने बेटे को आवाज़ दी जब कि वह एक किनारे पर था कि ऐ मेरे बेटे! हमारे साथ सवार हो जाओ और काफिरों के साथ शामिल न हो (42) वह बोला कि मैं अभी किसी पहाड़ की पनाह लिए लेता हूँ वह मुझे पानी से बचा लेगा, उन्होंने कहा कि अल्लाह के आदेश से आज कोई बचाने वाला नहीं सिवाय उसके जिस पर वह दया करे, बस लहर दोनों के बीच आ गई तो वह डुबो दिये जाने वालों में रह गया (43) और आदेश आया कि ऐ ज़मीन! अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान! थम जा और पानी घट गया और काम पूरा हुआ और वह (नाव) जूदी[3] (पहाड़) पर आ लगी और कह दिया गया कि दूर हुए ज़ालिम (अल्लाह की रहमत से) (44) और नूह ने अपने पालनहार को पुकारा तो कहा ऐ मेरे पालनहार! मेरा बेटा मेरे घर ही का है और तेरा वादा सच्चा है और तू सब इंसाफ़ करने वालों से बढ़ कर इंसाफ़ करने वाला है (45)

(1) तुम यह सोच कर हंसते हो कि जहाज़ का क्या होगा, यहाँ न नदी न समुद्र और हम इसलिए हंसते हैं कि अल्लाह के आदेश से जब हर ओर पानी ही पानी होगा तो तुम्हारा क्या होगा (2) हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने ईमान वालों को तसल्ली दी कि यह जहाज़ अल्लाह के आदेश के अधीन है, डरने की ज़रूरत नहीं, अल्लाह तआला इसकी सुरक्षा करेंगे (3) जूदी पहाड़ी क्षेत्र अरारात की उस चोटी का नाम है जो उत्तरी इराक़ में स्थित है, पहाड़ियों का यह श्रृंखला कुर्दिस्तान से आरमीनिया तक फैला हुआ है, ज़मीन से इसकी ऊँचाई तीन हज़ार फिट है।

قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا
تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنِّيْۤ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ
الْجٰهِلِيْنَ ﴿۴۶﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْۤ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ
بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْۤ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۴۷﴾
قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰۤى اُمَمٍ
مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۴۸﴾
تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَاۤ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَاۤ اَنْتَ
وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛؕ فَاصْبِرْ ۛؕ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۹﴾
وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ
اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ﴿۵۰﴾ يٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ
اَجْرًا ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى الَّذِيْ فَطَرَنِيْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۵۱﴾
وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ
عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا
مُجْرِمِيْنَ ﴿۵۲﴾ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ
بِتَارِكِيْۤ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۳﴾

الوقف علی فاصبر احسن والتی ۱۲
معانقة ۚ عند المتاخرين ۱۲

منزل۳

कहा ऐ नूह! वह तेरे घर का नहीं, उसकी करतूत अच्छी नहीं है तो तुम ऐसी चीज़ का सवाल मत करो जो तुम जानते ही नहीं, मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि कहीं तुम अज्ञानियों में न हो जाओ (46) उन्होंने कहा ऐ मेरे रब! मैं इससे तेरी पनाह चाहता हूँ कि मैं तुझ से ऐसी चीज़ माँगू जो मैं जानता नहीं और अगर तूने मुझे माफ न कर दिया और मुझ पर दया न की तो मैं घाटा उठा जाऊँगा (47) कहा कि ऐ नूह! हमारी ओर से सलामती और बरकतों के साथ उतर जाओ तुम्हारे ऊपर भी और उन गिरोहों पर भी जो तुम्हारे साथ हैं, और कितनी क़ौमें हैं जिनको हम आगे ऐश देंगे फिर वे हमारी ओर से दुखद अज़ाब झेलेंगी[1] (48) यह ग़ैब की वह खबरें हैं जो हम आपको भेज रहे हैं न इससे पहले आप उनको जानते थे और न आपकी क़ौम, तो आप जमे रहें बेशक नतीज़ा परहेज़गारों ही के पक्ष में है[2] (49) और आद की ओर उनके भाई हूद को भेजा, उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की उपासना करो, तुम्हारे लिए उसके अलावा और कोई उपास्य नहीं तुम सब तो लपाड़िए हो[3] (50) ऐ मेरी क़ौम! मैं इस पर तुम से बदला नहीं मांगता मेरा बदला तो उसके ज़िम्मे है जिसने मुझे पैदा किया, क्या फिर भी तुम नहीं समझते (51) और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अपने पालनहार से माफ़ी मांगो फिर उसी की ओर पलट कर आओ वह ऊपर से तुम पर मूसलाधार वर्षा करेगा और तुम्हारी शक्ति में और शक्ति की बढ़ोत्तरी कर देगा और अपराधी हो कर मत फिरो[4] (52) वे बोले ऐ हूद! तुम कोई खुली निशानी ले कर तो आए नहीं और हम केवल तुम्हारे कहने से अपने उपासकों को छोड़ने वाले नहीं और न ही हम तुम पर विश्वास करने वाले हैं (53)

(1) यह संकेत है कि आगे फिर लोग भटकेंगे और नष्ट (हलाक) किए जाएंगे (2) पिछले तथ्य और घटनाएं जिसका ज्ञान किसी को न था उनका बयान करना खुद इस बात का प्रमाण है कि उसको यह बातें अल्लाह की वह्य से मालूम हो रही हैं (3) तौहीद ही असल है, शेष जो तुमने पूज्य (माबूद) बना रखे हैं वह सब झूठ और मनगढ़न्त बातें हैं (4) शुरु में अल्लाह तआला ने उन्हें सूखे में डाला था ताकि वे अपने असावधानी को छोड़ें और होश में आएं, हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम उसी को याद दिला रहे हैं कि यह एक सज़ा है, अब भी अगर तुम तौबा कर लो तो अल्लाह वर्षा कर देगा और तुम्हें निहाल कर देगा।

हम तो यह कहते हैं कि हमारे कुछ देवताओं ने तुम को बुराई में जकड़ लिया है[1], उन्होंने कहा कि मैं अल्लाह को गवाह बनाता हूँ और तुम भी गवाह रहना कि उससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं जिसको तुम साझी ठहराते हो (54) उसके सिवा बस तुम सब मुझ पर दांव चलाओ फिर मुझे मोहलत भी न दो (55) मैंने तो अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, जो भी चलने–फिरने वाला है उसकी चोटी उसी के हाथ में है, बेशक मेरा रब सीधी राह पर है (56) फिर भी अगर तुम मुँह मोड़ोगे तो जो तुम्हारे लिए मैं ले कर आया हूँ वह मैंने तुम्हें पहुँचा दिया है और तुम्हारे अलावा अल्लाह किसी दूसरी क़ौम को तुम्हारी जगह आबाद कर देगा और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे बेशक मेरा रब हर चीज़ का निगहबान है[2] (57) और जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हमने हूद को और उनके साथ ईमान लाने वालों को अपनी कृपा से बचा लिया और उनको हमने सख़्त अज़ाब से बचाए रखा (58) और यह थे आद जिन्होंने अपने पालनहार की निशानियों का इनकार किया और उसके पैग़म्बरों की बात न मानी और हर सरकश (उदण्ड) हठधर्मी की बात मानी (59) इस दुनिया में भी लानत उनके पीछे लग गई और क़यामत के दिन भी, सुन लो! आद ने अपने पालनहार को न माना, सुन लो! हूद की क़ौम आद को धित्कार दिया गया (60) और समूद की ओर उनके भाई सालेह को भेजा, उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की बन्दगी (उपासना) करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, उसी ने धरती से तुम्हें बनाया और उसी में तुमको बसाया तो उससे माफ़ी चाहो फिर उसी की ओर पलटो, बेशक मेरा पालनहार क़रीब ही है स्वीकार करने वाला है (61) वे बोले ऐ सालेह! हममें इससे पहले तो तुमसे बड़ी आशाएं थीं, क्या तुम हमें उसकी पूजा से रोकते हो जिसकी पूजा हमारे बाप–दादा करते चले आए, और तुम हमें जिसकी ओर बुलाते हो उसमें तो हमें संदेह है ऐसा कि दिल ही नहीं ठहरता (62)

(1) शिर्क करने वालों ने कहा कि तुम चूंकि हमारे माबूदों को बुरा–भला कहते हो इसलिए उन्होंने तुमको मुसीबत में जकड़ लिया है और तुम होश व हवास खो बैठे हो (2) हज़रत हूद ने कहा तुम जो कर सकते हो कर डालो, मैंने अपने पालनहार पर भरोसा किया, सब कुछ उसी के हाथ में है, अगर तुम नहीं मानोगे तो तबाह हो कर रहोगे और अल्लाह तआला दूसरे को तुम्हारी जगह बसा देगा और यही हुआ, न मानने के परिणाम स्वरूप वे धित्कारे गए और अज़ाब में गिरफ़्तार हुए।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ مِنْهُ
رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ
تَخْسِيْرٍ ﴿٦٣﴾ وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ
اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿٦٤﴾
فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ
مَكْذُوْبٍ ﴿٦٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿٦٦﴾
وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٦٧﴾
كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَا۠ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ اَلَا بُعْدًا
لِّثَمُوْدَ ﴿٦٨﴾ وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا
قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٦٩﴾ فَلَمَّا رَآٰ اَيْدِيَهُمْ
لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّآ
اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٠﴾ وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا
بِاِسْحٰقَ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿٧١﴾ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ
وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِيْ شَيْخًا اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٧٢﴾

منزل٣

उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम! तुम्हारा क्या ख़याल है अगर मैं अपने पालनहार की ओर से खुले प्रमाण पर हूँ और मुझे उससे रहमत (दया) मिलती है फिर अगर मैं उसकी अवज्ञा (नाफ़रमानी) करूँ तो कौन मुझे उससे बचाएगा तो सिवाय घाटा पहुँचाने के और तुम मुझे क्या दोगे (63) और ऐ मेरी क़ौम! यह ऊँटनी अल्लाह की तुम्हारे लिए एक निशानी है, तो इसे छोड़े रखो अल्लाह की ज़मीन में खाती फिरे और इसको कोई तकलीफ़ मत देना वरना जल्द ही तुम्हें अज़ाब आ पकड़ेगा (64) बस उन्होंने उसके पांव काट डाले तो (सालेह ने) कहा अपने घरों में तीन दिन मज़े कर लो, यह वादा है जिसमें ज़रा झूट नहीं (65) फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हमने सालेह को और उनके साथ ईमान लाने वालों को अपनी कृपा से बचा लिया और उस दिन के अपमान से भी (सुरक्षित रखा) बेशक आपका पालनहार शक्तिमान है ज़बरदस्त है (66) और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने दबोच लिया तो वे अपने घरों में औंधे मुँह पड़े रह गये (67) मानो वे वहां कभी बसे ही न थे, सुन लो! समूद ने अपने पालनहार का इनकार किया, सुन लो! समूद को धित्कार दिया गया[1] (68) और हमारे भेजे हुए (फरिश्ते) इब्राहीम के पास शुभ समाचार ले कर पहुँचे, उन्होंने सलाम किया (उत्तर में) उन्होंने कहा (तुम पर भी) सलाम! फिर जल्दी ही एक भुना हुआ बछड़ा ले आए (69) फिर जब उन्होंने देखा कि उनके हाथ उधर बढ़ ही नहीं रहे हैं तो उनको उनसे वहशत सी हुई और न उसे कुछ डर महसूस हुआ, वे बोले आप घबराएं नहीं हम लूत की क़ौम की ओर भेजे गए हैं (70) और उनकी पत्नी खड़ी थीं तो वे हसीं, फिर हमने उन्हें इस्हाक़ का शुभ समाचार सुनाया और इस्हाक़ के पीछे याक़ूब का (71) वे बोलीं हाय ख़ाक पड़े! क्या मैं बच्चा जनूँगी और मैं बुढ़िया और यह मेरे मियाँ भी बूढ़े, यह तो बड़ी ही आश्चर्यजनक बात है[2]! (72)

---

(1) समूद क़ौम की ओर जिसको दूसरा आद भी कहा जाता है हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम भेजे गए, जब उन्होंने शिर्क करने से मनाही की तो समूद क़ौम दुश्मन हो गई और यूं कहा कि तुमसे बड़ी आशाएं थीं सब तुमने मिट्टी में मिला दी, फिर उन्होंने निशानी की मांग की, अल्लाह ने एक ऊँटनी निकाल दी जो विशाल काया वाली थी और आदेश हुआ कि उसके चरने का और पानी पीने का एक दिन निर्धारित होगा, उस दिन अन्य जानवर घाट पर नहीं आएंगे और उसको छोड़े रखा जाए जहाँ चाहे खाए–पिये, कोई ज़रा भी उसको हाथ न लगाए, यह बात क़ौम को बर्दाश्त न हुई और एक अभागे ने उसको मार डाला, बस फिर वे अज़ाब का शिकार हुए, एक ज़बरदस्त चिंघाड़ थी उसके साथ अजीब सी कंपकपी छाने लगी और सब पड़े के पड़े रह गए (2) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम मेहमानों की बड़ी इज़्ज़त करने वाले थे, मेहमानों को देख कर व्यवस्था में लग गए, भुना हुआ बछड़ा सामने ला कर रखा, जब देखा कि वे खाते ही नहीं तो परेशान हुए, फिर जब मालूम हुआ कि फ़रिश्ते हैं तो संतोष हुआ और धर्म पत्नी भी खुश हुईं और हंस दीं, फिर फरिश्तों ने संतान का शुभ संदेश दिया।

قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ
الْبَيْتِ ؕ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿۷۳﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ
وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ لُوْطٍ ﴿۷۴﴾ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ
لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ﴿۷۵﴾ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ
جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿۷۶﴾ وَلَمَّا
جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا
يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿۷۷﴾ وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ وَمِنْ قَبْلُ
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ
لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ؕ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ
رَّشِيْدٌ ﴿۷۸﴾ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ
وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ﴿۷۹﴾ قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ
اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ﴿۸۰﴾ قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ
لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا
يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ اَصَابَهُمْ ؕ
اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ﴿۸۱﴾

منزل٣

उन्होंने कहा कि आपको अल्लाह के आदेश पर आश्चर्य है, ऐ घर वालो! तुम पर तो अल्लाह की रहमत (दया) और उसकी बरकतें हैं बेशक वह हर प्रशंसा का हक़दार बड़ी शान वाला है (73) फिर जब इब्राहीम का डर समाप्त हुआ और शुभ समाचार भी मिल गया तो वे हम से लूत की क़ौम के बारे में बहस करने लगे (74) बेशक इब्राहीम तो बड़े सहनशील, बड़े कोमल हृदय वाले, बड़े अल्लाह की ओर झुकने वाले थे (75) ऐ इब्राहीम! इसको छोड़ो, यह तो तुम्हारे पालनहार का फ़ैसला आ चुका और उन पर तो अज़ाब आकर रहेगा वह लौटने वाला नहीं[1] (76) और जब हमारे दूत लूत के पास पहुँचे तो उनका (आना) अच्छा न लगा और उन्होंने कुढ़न महसूस की और कहा आज का दिन बड़ा कठिन है (77) और उनकी क़ौम के लोग उनके पास भाग–भाग कर पहुँचे और पहले भी वह बुराइयां करते रहे थे (लूत ने) कहा ऐ मेरी क़ौम! यह मेरी बेटियां हैं, यह तुम्हारे लिए अधिक पाक हैं तो अल्लाह से डरो और मेरे मेहमानों के सिलसिले में मुझे अपमानित न करो, क्या तुममें कोई भी भला आदमी नहीं है (78) वे बोले कि तुम जानते हो कि तुम्हारी बेटियों का हमें कुछ दावा नहीं और तुम तो जानते ही हो जो हम चाहते हैं (79) उन्होंने कहा काश कि तुम पर मेरा कुछ ज़ोर होता! या मैं किसी मज़बूत आश्रय की शरण लेता (80) उन्होंने कहा ऐ लूत! हम आपके पालनहार के दूत हैं, यह आप तक हरगिज़ न पहुँच सकेंगे तो आप रात के किसी भाग में अपने घर वालों को ले कर निकल जाइए और आप में से कोई पीछे पलट कर न देखे सिवाय आपकी पत्नी के, वह भी उसी अज़ाब का शिकार होगी जिस अज़ाब का यह शिकार होंगे, सुबह का समय इनके लिए निर्धारित है, और सुबह में अब देर ही क्या है[2] (81)

---

(1) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम बड़े कोमल हृदय वाले थे, उन्होंने हज़रत लूत की क़ौम के लिए कुछ और मोहलत चाही, वे अल्लाह के बड़े लाडले पैग़म्बर थे, प्रेम से परिपूर्ण शैली में उसका उत्तर दिया गया, "इब्राहीम! यह सब छोड़ो अल्लाह का निर्णय आ चुका अब इसमें परिवर्तन नहीं हो सकता" (2) हज़रत लूत की क़ौम दुराचार और समलैंगिकता **(Homosex)** में लिप्त थी, जब हज़रत लूत के पास फरिश्ते सुन्दर नवयुवकों के रूप में आए तो क़ौम के बुरी प्रवृत्ति के लोग पहुँच गये, हज़रत लूत घबराए कि उनकी क़ौम के लोग उनके मेहमानों को वासना का निशाना न बनाएं, चूंकि वहाँ उस समय उनकी क़ौम के लोग नहीं थे इसलिए घबराहट में उनकी ज़बान से यह शब्द निकले कि मुझे कोई मज़बूत आसरा मिल जाता, उन्होंने समझाने का प्रयास किया कि हमारी क़ौम की बेटियाँ तुम में मौजूद हैं जो हमारी बेटियों ही की तरह हैं, तुम प्राकृतिक रूप में अपनी इच्छा पूरी कर सकते हो वे तुम्हारी विवाहित पत्नियाँ हैं, फिर फरिश्तों ने सूचित किया कि हम अल्लाह के दूत हैं अज़ाब लेकर आए हैं, वे हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, आप अपने परिवार को लेकर रातों–रात निकल जाएं, सुबह होते ही अज़ाब उन पर आ जाएगा, उनकी पत्नी काफ़िर थी इसलिए बता दिया गया कि वह काफ़िरों में ही रह जाएगी और बर्बाद हो जाएगी।

فَلَمَّا جَآءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا
حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مَّنضُودٍ ﴿٨٢﴾ مُّسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ ۖ وَ
مَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ﴿٨٣﴾ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ
قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ وَلَا
تَنقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ ۚ إِنِّي أَرَاكُم بِخَيْرٍ وَإِنِّي
أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ﴿٨٤﴾ وَيَا قَوْمِ أَوْفُوا
الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ
وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٨٥﴾ بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن
كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ ﴿٨٦﴾ قَالُوا يَا شُعَيْبُ
أَصَلَاتُكَ تَأْمُرُكَ أَن نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَن نَّفْعَلَ
فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ ۖ إِنَّكَ لَأَنتَ الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ ﴿٨٧﴾ قَالَ
يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَرَزَقَنِي مِنْهُ
رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ إِلَىٰ مَا أَنْهَاكُمْ
عَنْهُ ۚ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۚ وَمَا
تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿٨٨﴾

الربع

منزل٣

फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हमने वह बस्ती ऊपर की नीचे कर डाली और उस पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर परत दर परत बरसाए (82) जो आपके पालनहार की ओर से ख़ास निशान वाले थे और वह (बस्ती) इन अत्याचारियों से कुछ दूर भी नहीं[1] (83) और मद्यन की ओर उनके भाई शोऐब को भेजा, उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं और नाप–तौल में कमी मत करो, मैं तुम्हें बड़े मज़े में देख रहा हूँ और मुझे तुम पर घेर लेने वाले दिन के अज़ाब का डर है (84) और मेरी क़ौम! इंसाफ के साथ नाप–तौल को पूरा करो और लोगों की चीज़ों को कम मत करो और ज़मीन में बिगाड़ मचाते मत फिरो (85) जो अल्लाह का दिया बच रहे वह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम विश्वास रखते हो और मैं कोई तुम पर निगाह रखने वाला तो हूँ नहीं (86) वे बोले ऐ शोऐब! क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें यही सिखाती है कि जिसको हमारे बाप दादा पूजते चले आए उसको हम छोड़ दें या अपने मालों में जो चाहें वह करना छोड़ दें? तुम तो बड़े सहनशील भले इंसान हो[2] (87) उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! तुम्हारा क्या ख़्याल है अगर मैं अपने पालनहार की ओर से खुले प्रमाण पर हूँ और उससे मुझे अच्छी रोज़ी मिलती हो (फिर वह तुम्हें सुझाई नहीं देता हो तो क्या मैं ज़बरदस्ती उसको तुम्हारे सिर मढ़ दूँ)[3] और मैं नहीं चाहता कि जिससे मैं तुम्हें रोकता हूँ ख़ुद मैं उसके ख़िलाफ़ करूँ, मैं तो केवल संवारना चाहता हूँ जितना भी मैं कर सकूँ और मुझे तौफ़ीक़ (सामर्थ्य) अल्लाह ही की ओर से मिलती है उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की ओर मैं पलटता हूँ (88)

---

(1) सद्दूम की इस आबादी को फरिश्तों ने ऊपर उठा कर उलटा पटक दिया कि वह पूरी ज़मीन धंस गई, कहा जाता है कि Dead Sea आज जिस जगह है उसी जगह यह बस्ती आबाद थी, यह धरती का सबसे निचला हिस्सा है, पवित्र क़ुरआन ने जो कहा कि "हमने वह बस्ती ऊपर की नीचे कर डाली" हो सकता है कि इन शब्दों में उसके भौगोलिक परिवर्तन की ओर भी संकेत हो और इस क़ौम की अति निचली हरकतों को यह महसूस होने वाला रूप दिया गया हो, मक्के के मुश्रिक अपनी व्यावसायिक यात्राओं में वहाँ से गुज़रते थे इस लिए कहा जा रहा है कि वह ज़ालिमों से कुछ ज़्यादा दूर भी नहीं है, ऐसा लगता है ज़ालिमों से आशय मक्के के मुश्रिक हैं (2) मद्यन बड़ा उपजाऊ क्षेत्र था जहाँ हज़रत शोऐब अ़लैहिस्सलाम भेजे गए, हज़रत शोऐब अ़लैहिस्सलाम की क़ौम ग़लत विश्वासों के साथ साथ धन की हेर–फेर में लिप्त थी, उनकी वही पूंजीवादी मानसिकता थी जो आज भी पाई जाती है कि हमारा धन पूर्ण रूप से हमारी संपत्ति है, हम जो चाहें करें किसी को इसमें हस्तक्षेप की अनुमति नहीं जबकि इसके विपरीत पवित्र क़ुरआन उसको अल्लाह की संपत्ति क़रार देता है जिसको कुछ समय के लिए इंसान के अधिकार में दिया गया है इसलिए कुछ प्रतिबंध भी लगाए गए हैं, और कहाँ ख़र्च करना है इसको भी बताया गया है ताकि कोई किसी पर अत्याचार न कर सके और समाज में धन का न्यायसंगत वितरण हो सके (3) ब्रेकेट में जो बात कही गई है वह पहले वाले वाक्य का उत्तर है यहाँ उसका वर्णन नहीं है, हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के क़िस्से में उसका वर्णन है।

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ
قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ۭ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ
بِبَعِيْدٍ ﴿٨٩﴾ وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۭ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ
وَّدُوْدٌ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا
لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۡ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا
بِعَزِيْزٍ ﴿٩١﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَ
اتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَاۗءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۭ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٩٢﴾
وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰي مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۭ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ
مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۭ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّىْ
مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا جَاۗءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ
فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ ۙ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۭ اَلَا
بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾ ۧ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى
بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٦﴾ ۙ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ
فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿٩٧﴾

منزل٣

और ऐ मेरी क़ौम! कहीं हमसे तुम्हारी ज़िद तुम्हें इस हद तक न पहुँचा दे कि तुम पर भी उसी जैसी (मुसीबत) आ पड़े जो नूह की क़ौम या हूद की क़ौम या सालेह की क़ौम पर पड़ी थी और लूत की क़ौम भी तुमसे कुछ दूर नहीं[1] (89) और अपने पालनहार से माफ़ी माँगो फिर उसी की ओर पलटो बेशक मेरा पालनहार बहुत ही रहम करने वाला बड़ा ही प्रेम करने वाला है (90) वे बोले ऐ शोऐब! तुम्हारी अधिकतर बातें हमारी समझ में नहीं आतीं और हम तो देखते हैं कि तुम हम में कमज़ोर ही हो और अगर तुम्हारे भाई बन्धु न होते तो हम तुम्हें पत्थरों से मार ही डालते और तुम हम पर बलवान भी नहीं (91) उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! मेरे क़बीले का दबाव तुम पर अल्लाह से ज़्यादा है और उसको तुमने पीठ पीछे डाल रखा है बेशक जो तुम कर रहे हो वह सब मेरे पालनहार के नियंत्रण में है (92) और ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम किए जाओ, और मैं भी कर रहा हूँ, जल्द ही तुम्हें पता चल जाएगा कि अपमानजनक अज़ाब किस पर आता है और कौन झूठा है, और तुम भी इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार में हूँ[2] (93) और जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हमने शोऐब को और उनके साथ ईमान लाने वालों को अपनी रहमत (दया) से बचा लिया और चिंघाड़ ने अत्याचारियों को दबोच लिया बस वे अपने घर में औंधे मुँह पड़े रह गए[3] (94) मानो कभी वहाँ बसे ही न थे, सुन लो! मद्यन (की क़ौम) को भी धित्कार दिया गया जैसे समूद धित्कारे गये (95) और हम ही ने मूसा को अपनी निशानियों के साथ और खुले प्रमाण के साथ भेजा[4] (96) फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास तो उन (सरदारों) ने (मूसा के बजाए) फ़िरऔन की बात मानी जब कि फ़िरऔन की बात ज़रा भी ठीक न थी (97)

(1) सद्‌दूम की बस्ती मद्यन के निकट ही है और ज़माने के ऐतबार से भी बहुत दूरी नहीं है (2) हज़रत शोऐब अ़लैहिस्सलाम ने जिस शुद्ध भाषा में उनसे बात की वह एक आदर्श है इसीलिए उनको ख़तीबुल अंबिया (पैग़म्बरों में सब से अच्छे वक्ता) की उपाधि भी प्राप्त है, उन्होंने दुखती रग पर उंगली रख दी है कि क़बीला, परिवार का दबाव अधिक है और अल्लाह को तुमने पीठ पीछे डाल दिया है, जिसके नियंत्रण में सब कुछ है (3) यहाँ हज़रत शोऐब अ़लैहिस्सलाम की क़ौम का कड़क से विनश्ट (हलाक) होने का उल्लेख है, सूरह आराफ में "रज्फा" यानी भूकंप का उल्लेख है और सूरह "शुअरा" में छप्पर के अज़ाब का उल्लेख है, इब्ने कसीर लिखते हैं कि तीनों प्रकार के अज़ाब इस क़ौम के लिए इकट्ठा कर दिए गये थे, फिर हर सूरह में संदर्भ के अनुसार एक अज़ाब का उल्लेख किया गया है, विवरण अन्य तफ़सीर की बड़ी किताबों में देखा जाए (4) वह निशानियाँ और मोजिज़े (इलाही चमत्कार) ही उनकी नुबूवत के लिए खुले प्रमाण के रूप में थे या खुला प्रमाण का अर्थ उन मुअजिज़ों में से "असा (लाठी)" है, इसको अलग से इसकी महत्व व महानता की वजह से बयान किया गया।

يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَبِئْسَ الْوِرْدُ
الْمَوْرُوْدُ ﴿۹۸﴾ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ بِئْسَ
الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ﴿۹۹﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا
قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ﴿۱۰۰﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ
اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ
شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ﴿۱۰۱﴾ وَكَذٰلِكَ
اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ
شَدِيْدٌ ﴿۱۰۲﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ
ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿۱۰۳﴾ وَمَا
نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ﴿۱۰۴﴾ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا
بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ﴿۱۰۵﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي
النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ﴿۱۰۶﴾ ۙ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ
السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا
يُرِيْدُ ﴿۱۰۷﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ
السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿۱۰۸﴾

منزل ٣

क़यामत के दिन वह अपनी क़ौम के आगे—आगे होगा फिर उनको आग पर पहुँचा देगा और यह बहुत बुरा घाट है जहाँ कोई पहुँचे (98) और यहाँ (दुनिया में) भी फिटकार ने उनका पीछा किया और क़यामत के दिन भी, यह बहुत बुरा बदला है जो किसी को दिया जाए (99) यह बस्तियों की कुछ घटनाएं हैं, जो हम आपको सुना रहे हैं, कुछ उनमें बाक़ी हैं और कुछ मलियामेट हो चुकीं[1] (100) हमने उन पर अत्याचार नहीं किया मगर खुद उन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया, फिर जब आपके पालनहार का आदेश आ गया तो उनके वे पूज्य (माबूद) जिनको वे अल्लाह को छोड़ कर पुकारते थे उनके कुछ भी काम न आ सके और बर्बाद करने के सिवा उन्होंने उनको, कुछ भी न दिया (101) और उनके पालनहार की पकड़ ही ऐसी है, जब भी उसने किसी बस्ती की पकड़ की जब कि वह अत्याचारी थी बेशक उसकी पकड़ बड़ी दुखदायी है बड़ी कठोर है (102) बेशक इसमें उसके लिए एक निशानी है जो आख़िरत के अज़ाब का डर रखता हो, वह ऐसा दिन है कि उसमें सब लोग इकट्ठा किए जाएंगे और वह पेशी का दिन है (103) और हम उसको केवल एक गिनी—चुनी अवधि तक टाल रहे हैं (104) जिस दिन वह आ जाएगा तो कोई व्यक्ति उसकी अनुमति के बिना बोल न सकेगा तो उनमें कोई अभागा होगा और कोई भाग्यशाली (105) फिर जो अभागे हैं वे आग में होंगे और दहाड़ें मारते रहेंगे (106) उसी में हमेशा रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम हैं सिवाय उसके जिसको आपका पालनहार चाहे बेशक आपका पालनहार जो चाहता है कर ही डालता है (107) और जो भाग्यशाली हैं तो वे जन्नत में होंगे उसी में हमेशा रहेंगे जब तक आसमान व ज़मीन क़ायम हैं सिवाए उसके जिसको आप का पालनहार चाहे, न समाप्त होने वाली देन (बख़्शिश) है[2] (108)

---

(1) कुछ बाक़ी हैं जैसे मिस्र आदि, कुछ के खण्डहर हैं जैसे हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम का मदयन आदि और कुछ मलियामेट हो चुकीं जैसे हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की बस्तियाँ (2) "मादामतिस्समावातु वल अर्ज़" का मतलब दूसरे आसमान व ज़मीन हैं जो हमेशा रहेंगे जिसका उल्लेख इस आयत में है "यौम तुबद्दलुल अर्ज़ु ग़ैरल अर्ज़ि वस्समावात" जब इस ज़मीन और आसमानों की जगह दूसरे ज़मीन व आसमान ले लेंगे और यह अरबी भाषा की एक अभिव्यक्त शैली है जो उस समय प्रयोग में आती है जब कि किसी चीज़ के बारे में बताना हो कि वह चीज़ हमेशा रहेगी, "इल्ला माशाअ रब्बुक" कह कर साफ़ हो गया कि सब कुछ उसके अधिकार से होगा, और अभागों के लिए आगे फ़अ़आलुल्लिमा युरीद" कह कर इशारा है कि बहुत से गुनहगार अपनी सज़ा भुगत कर उसमें से निकाले जाएंगे और भाग्यशाली लोगों के बारे में "अ़ताउन ग़ैरुमजज़ूज़" कह कर स्पष्ट कर दिया कि जन्नत में प्रवेश कर के कोई निकाला नहीं जाएगा।

فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿۱۰۹﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۱۱۰﴾ وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۱۱﴾ فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۱۲﴾ وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۱۱۶﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿۱۱۷﴾

منزل۳

तो यह लोग जिसकी पूजा कर रहे हैं आप उसके बारे में धोखे में न रहें, जैसे पहले उनके बाप–दादा पूजा करते रहे हैं उसी तरह यह भी पूजा कर रहे हैं, हम बिना कमी किये उनको उनका पूरा हिस्सा दे देंगे[1] (109) और हमने मूसा को किबात दी तो उसमें भी मतभेद हुआ और अगर पहले से आपके पालनहार की ओर से कोई बात निर्धारित न होती तो उनका फ़ैसला ही हो जाता और वे उसके बारे में ऐसे संदेह में पड़े हुए हैं कि उनके दिल ठहरते ही नहीं (110) और जितने भी लोग हैं उनको आपका पालनहार उनके कामों को पूरा पूरा बदला दे कर रहेगा, उसको उनके सारे कामों की पूरी जानकारी है[2] (111) तो आप उसी तरह जमे रहें जैसे आपको कहा गया और आपके साथ वे भी जिन्होंने तौबा की, और तुम लोग हद से न बढ़ना बेशक तुम जो भी करते हो उस पर उसकी पूरी नज़र है (112) और अत्याचारियों की ओर तुम्हारा झुकाव भी न हो वरना आग तुम्हें भी पकड़ लेगी फिर अल्लाह के अलावा तुम्हारे समर्थक न होंगे फिर तुम्हारी सहायता भी न की जाएगी[3] (113) और दिन के दोनों छोर में और रात के विभिन्न भागों में नमाज़ क़ायम कीजिए बेशक नेकियाँ बुराइयों को मिटा देती हैं, यह नसीहत है याद रखने वालों के लिए (114) और जमे रहिये बेशक अल्लाह बेहतर काम करने वालों के बदल को बर्बाद नहीं करता (115) तो क्यों न आपसे पहले क़ौमों में शऊर वाले लोग हुए कि वे ज़मीन में बिगाड़ से मना करते सिवाय कुछ लोगों के जिनको हमने उनसे बचा कर रखा और अत्याचारियों को जिस ऐश में डाल दिया गया वे उसी चक्कर में लगे रहे और वे थे ही अपराधी लोग[4] (116) और आपका पालनहार ऐसा नहीं कि ज़बरदस्ती किसी बस्ती को तबाह कर दे जबकि वहाँ के लोग सुधार में लगे हों (117)

---

(1) यानी इतनी बड़ी जनसंख्या का शिर्क व मूर्तिपूजा के रास्ते पर पड़ जाना और अब तक सज़ा न पाना कोई ऐसी चीज़ नहीं कि जिससे धोखा खा कर आदमी संदेह में पड़ जाए, लोग अंधे–बहरे होकर अपने बाप–दादा के रास्ते पर चल रहे हैं, उन सब को जितना अज़ाब उनके भाग्य में लिखा है मिल कर रहेगा, उसमें कुछ कमी न होगी (2) तौरेत के आने के बाद भी बहुत लोगों ने माना और बहुत लोगों ने न माना, अल्लाह चाहता तो उसी समय इनकार करने वाले तबाह कर दिये जाते लेकिन अल्लाह ने दुनिया को परीक्षा स्थल बनाया है, इसकी वास्तविकता मरने के बाद ही सामने आएगी, जो भी अच्छे–बुरे काम कर रहा है उसका पूरा–पूरा बदला मिल जाएगा (3) आप और आपके साथ ईमान लाने वाले खुद जमे रहें और हर चीज़ में संतुलन बनाए रखें और सीमा लांघने वालों की ओर ज़रा भी झुकाव न हो और न उनसे किसी तरह की समानता अपनाई जाए वरना खुद उसी में पड़ जाने और उसके परिणाम स्वरूप आग का शिकार होने का खतरा है, पर आगे नमाज़ क़ायम करने का आदेश है और यह नियम बनाया गया है कि नेकियाँ बुराइयों को मिटाती चलती हैं, नमाज़ की प्रतिबद्धता बुराइयों से दूर करती है (4) यह ताकीद है इस उम्मत को कि हर ज़माने में इसमें ऐसे सुधारक व धर्म प्रचार करने वाले रहने चाहिये जो उम्मत को सही रास्ते की ओर बुलाते रहें।

और अगर आपका पालनहार चाहता तो सब लोगों को एक ही तरीक़े पर कर देता जब कि वे तो हमेशा मतभेद ही में रहते हैं (118) सिवाय उनके जिन पर आपके पालनहार ने दया की और इसीलिए उसने उनको पैदा किया है और आपके पालनहार की बात पूरी हुई कि हम दोज़ख को जिन्नों और आदमियों से इकट्ठे भर कर रहेंगे[1] (119) और रसूलों की जो भी घटनाओं में से हम आपको सुना रहे हैं वह इसलिए कि उससे आपके दिल को शक्ति दें और इस सिलसिले में आपके पास सही बात पहुँच गई और यह ईमान वालों के लिए नसीहत और याद देहानी (स्मरण) है[2] (120) और जो ईमान नहीं लाते उनसे आप कह दीजिए कि तुम अपनी जगह काम में लगे रहो हम भी लगे हुए हैं (121) और तुम भी इन्तिज़ार करो हम भी इन्तिज़ार कर रहे हैं (122) और आसमानों और ज़मीन के ढके–छिपे का मालिक अल्लाह ही है और सब कुछ उसी की ओर लौटता है तो आप उसी की बंदगी (पूजा) में लगे रहें और उसी पर भरोसा रखें और तुम सब जो भी करते हो आपका पालनहार उससे बेख़बर नहीं है (123)

सूरह यूसुफ़

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अलिफ़ लाम रॉ, यह खुली किताब की आयतें हैं (1) हमने इसको अरबी (भाषा का) कुरआन उतारा है ताकि तुम समझ सको[3] (2) हम इस कुरआन के ज़रिए जो हमने आपकी ओर भेजा है आपको एक बहुत ही अच्छी कहानी (उत्तम शैली में) सुनाते हैं जबकि इससे पहले आप अवगत न थे[4] (3) जब यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा कि ऐ मेरे अब्बा जान! मैंने ग्यारह सितारों और सूरज और चाँद को देखा, देखता हूँ कि वे मुझे सज्दा कर रहे हैं (4)

(1) अल्लाह की तकवीनी (चाहत) यही हुई कि सबको एक रास्ते पर न डाला जाए बल्कि दोनों रास्ते बता दिये जाएं, अब ग़लत रास्ते पर वही पड़ते हैं जो शुद्ध प्रकृति के उलटा चलते हैं और मतभेद करते हैं और जिन पर अल्लाह ने सत्यवाद के कारण दया की वे सही रास्ते पर हैं, अब जो ग़लत रास्ते पर हैं दोज़ख उन्हीं से भरी जाएगी (2) मालूम हुआ कि पैग़म्बर और सहाबा और अल्लाह के दोस्तों (वलियों) की सच्ची कहानियों से दीन पर मज़बूती से जमने में मदद मिलती है (3) पवित्र कुरआन के पहले संबोधित अरबवासी थे जिनको अपनी भाषा पर गर्व था, इसीलिए पवित्र कुरआन को शुद्ध अरबी भाषा में उतारा गया (4) मात्र हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ही की कहानी है जिसको एक ही स्थान पर बयान किया गया है और इसमें ईमान वालों के लिए बड़ा उपदेश भी है और सांत्वना भी।

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ
كَيْدًا ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٥﴾ وَكَذٰلِكَ
يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ
عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ
اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦﴾ لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ
وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّاۗىِٕلِيْنَ ﴿٧﴾ اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ
اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ۭ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِۨ ﴿٨﴾
اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَ
تَكُوْنُوْا مِنْ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ﴿٩﴾ قَالَ قَاۗىِٕلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا
يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ
اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿١٠﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰي يُوْسُفَ
وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ﴿١١﴾ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَاِنَّا
لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿١٢﴾ قَالَ اِنِّىْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَاَخَافُ
اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ﴿١٣﴾ قَالُوْا لَىِٕنْ
اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿١٤﴾

ع

منزل۳

उन्होंने कहा कि ऐ मेरे बेटे! अपना सपना अपने भाइयों को मत बताना कहीं वे तुम्हारे लिए कोई चाल चलने लग जाएं, बेशक शैतान इंसान का खुला दुश्मन है[1] (5) और इसी तरह तुम्हारा रब तुम्हें चुन लेगा और तुम्हें बातों का सही मतलब निकालना सिखाएगा और अपने उपकार तुम पर और याकूब की संतान पर पूरे करेगा जैसे उसने पहले तुम्हारे दो बाप–दादा इब्राहीम और इस्हाक़ पर उसको पूरा किया था, बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानने वाला हिकमत (तत्वदर्शिता) वाला है (6) यूसुफ़ और उसके भाइयों (की चर्चा) में पूछने वालों के लिए बेशक (बड़ी) निशानियाँ हैं[2] (7) जब (सौतेले भाई आपस में) कहने लगे कि यूसुफ़ और उसका (सगा) भाई हमारे पिता को हमसे अधिक प्यारे हैं जब कि हम मज़बूत लोग हैं बेशक हमारे पिता खुली गलती कर रहे हैं[3] (8) यूसुफ़ को क़त्ल कर दो या किसी और जगह डाल आओ ताकि तुम्हारे पिता का ध्यान केवल तुम्हारे ही लिए रह जाए और उसके बाद (तौबा करके) तुम लोग भले बन जाना (9) उनमें एक बोला कि अगर तुम्हें करना ही है तो यूसुफ़ को क़त्ल मत करो और उसको गहरे कुँवे में डाल दो कि कोई उसको उठा ले जाए (10) वे बोले ऐ अब्बा जान! आपको क्या हो गया कि यूसुफ़ के बारे में हम पर विश्वास नहीं करते और हम तो उसके शुभचिंतक ही हैं (11) कल उसको हमारे साथ भेज दीजिए ताकि खाए और खेले और हम उसकी सुरक्षा के पूरे ज़िम्मेदार हैं (12) उन्होंने कहा कि तुम्हारे उसको ले जाने से मुझे ज़रूर दुख होगा और मुझे डर है कि "कहीं उसे भेड़िया न खा जाए" और तुम उससे बेख़बर रहो (13) वे बोले की हम मज़बूत लोग हैं (फिर) अगर उनको भेड़िया खा गया तो हम बड़े निकम्मे ठहरे (14)

(1) हज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम के बारह बेटे थे उनमें दो हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम और बिनयामीन एक माँ से थे, बाक़ी दूसरी माँ से थे, हज़रत याकूब को आशंका हुई कि यह सपना सुनकर भाइयों में हसद (ईर्ष्या) न पैदा हो जाए और शैतान के बहकावे में आकर वे यूसुफ़ के विरुद्ध कोई कार्यवाही न कर बैठें, इसलिए उन्होंने हज़रत यूसुफ़ को सपना बताने से मना किया, और उसका मतलब उनको बता दिया कि एक दिन अल्लाह तुमको ऊँचा मक़ाम देगा, नबी बनाएगा कि सब भाई तुम्हारे आगे झुकने पर मज़बूर होंगे (2) कुछ हदीसों में है कि यहूदियों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह प्रश्न पुछवाया था कि बनी इस्राईल फ़िलिस्तीन से मिस्र में आकर कैसे आबाद हुए, उनका ख़्याल था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उत्तर न दे सकेंगे लेकिन अल्लाह तआला ने इतने विस्तार से पूरी घटना बयान कर दी कि परेशान हो गये और ईमान वालों को इसमें बड़ी हिकमत (युक्ति) व नसीहत की बातें हाथ आयीं (3) हज़रत यूसुफ़ और उनके भाई छोटे थे, माँ का निधन हो चुका था, हज़रत यूसुफ़ का उज्वल भविष्य उनके सामने था इसलिए स्वाभाविक रूप से हज़रत याक़ूब उन पर ध्यान देते थे, यह बात और भाइयों को गवारा न थी और वे यह समझते थे कि हम बलवान हैं, पिता जी के काम आने वाले हैं, इसके बावजूद उनका ध्यान छोटे और कमज़ोर भाइयों की ओर है, निश्चित रूप से यह अब्बा जान की ग़लती है।

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَأَجْمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ
وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِأَمْرِهِمْ هَٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ (١٥)
وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ (١٦) قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا
نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ وَمَا
أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ (١٧) وَجَاءُوا عَلَىٰ قَمِيصِهِ
بِدَمٍ كَذِبٍ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبْرٌ
جَمِيلٌ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ (١٨) وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ
فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَىٰ دَلْوَهُ قَالَ يَا بُشْرَىٰ هَٰذَا غُلَامٌ
وَأَسَرُّوهُ بِضَاعَةً وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ (١٩) وَشَرَوْهُ
بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ (٢٠)
وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ
عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ
فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَاللَّهُ غَالِبٌ
عَلَىٰ أَمْرِهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (٢١) وَلَمَّا بَلَغَ
أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ (٢٢)

منزل٣

फिर जब वे उनको लेकर गए और सबने तय कर ही लिया था कि उनको गहरे कुँवें में डाल देंगे (बस उन्होंने वह काम कर डाला) और हमने (यूसुफ़ को) बता दिया कि (एक समय आयेगा कि) तुम उनको उनका यह काम जतलाओगे और उस समय वे जानते भी न होंगे[1] (15) और रात को वे अपने पिता के पास रोते हुए आए (16) कहने लगे ऐ हमारे पिता जी! हम दौड़ का मुक़ाबला करने में लग गए और यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ गए "बस उसे भेड़िया खा गया" और आपको हमारी बात का विश्वास तो होने का नहीं चाहे हम सच्चे ही हों (17) और वे उनके कुर्ते पर झूठ–मूठ का ख़ून भी लगा लाए[2] उन्होंने कहा (नहीं) बल्कि तुमने अपनी ओर से एक बात बना ली है तो अब सब्र ही बेहतर है और जो तुम बताते हो उस पर मैं अल्लाह ही से मदद मांगता हूँ (18) और एक क़ाफ़िला आ निकला तो उन्होंने अपना पनिहारा भेजा उसने कुँवें में डोल डाला (खींचा तो) बोल उठा अरे वाह! यह तो बच्चा है और उसको उन्होंने व्यापार का माल के रूप में छिपा लिया और अल्लाह उनके सब कामों को खूब जान[3] रहा था (19) और उसको उन्होंने औने–पौने कुछ दिरहमों में बेच डाला और उसमें उनको कोई रूचि न थी (20) और मिस्र में जिसने उसको ख़रीदा उसने अपनी पत्नी से कहा कि इसको सम्मान के साथ रखना शायद इससे हमें फ़ायदा पहुँचे या हम इसको बेटा ही बना लें और इस तरह हमने यूसुफ़ को देश में शक्ति प्रदान की और ताकि हम उनको बातों की वास्तविकता सिखा दें और अल्लाह अपने काम पर पूरा नियंत्रण रखता है लेकिन अधिकतर लोग जानते नहीं (21) और जब उनकी आयु परिपक्व हो गई तो हमने उनको राज्य और ज्ञान से सम्मानित किया और हम अच्छा काम करने वालों को यूँ ही बदला दिया करते हैं[4] (22)

(1) आगे आयतों में यह बात प्रमाणित होगी कि भाई किस प्रकार उनके पास पहुँचे और उनको पहचान ही न सके, फिर यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने ही उनको बताया (2) पैग़म्बरों की संतान थे, धोखा किया वह भी सफल न हुआ, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का कुर्ता उतार कर जानवर का ख़ून उसमें लगा कर ले आए थे, कुर्ता बिल्कुल ठीक–ठाक था, हज़रत याकूब देखते ही समझ गए कि इसमें कोई चाल है, मगर सब्र के अलावा और कोई चारा ही न था (3) कहा जाता है कि हज़रत यूसुफ़ दो–तीन दिन कुंवें में रहे, उनके बड़े भाई यहूदा हर दिन चुपके से खाना पहुँचाते रहे कि मरने न पाएं और कोई काफ़िला वाला गुज़रे तो गुलाम समझ कर ले जाए और वही हुआ, उनका उद्देश्य भी उनको बाप की नज़रों से ओझल करना था (4) भाइयों ने उनको गिराना चाहा अल्लाह ने बुलंदियों पर पहुँचा दिया, अधिकतर लोग नज़र छोटी होने के कारण नहीं देख पाते कि किस प्रकार अल्लाह की व्यवस्था सबसे आगे हो जाती है।

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ
وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۚ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ ۖ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ ۖ
إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ ۖ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنْ
رَأَىٰ بُرْهَانَ رَبِّهِ ۚ كَذَٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ ۚ
إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ﴿٢٤﴾ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ
قَمِيصَهُ مِنْ دُبُرٍ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَى الْبَابِ ۚ قَالَتْ مَا جَزَاءُ
مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٥﴾
قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِي عَنْ نَفْسِي ۚ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ أَهْلِهَا
إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٦﴾
وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ
الصَّادِقِينَ ﴿٢٧﴾ فَلَمَّا رَأَىٰ قَمِيصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ
كَيْدِكُنَّ ۖ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾ يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۚ
وَاسْتَغْفِرِي لِذَنْبِكِ ۖ إِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخَاطِئِينَ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ
نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ
نَفْسِهِ ۖ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۖ إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٣٠﴾

منزل٣

और जिसके घर में वे थे उस औरत ने उनको उनकी काम–वासना के बारे में बहकाया और दरवाज़े बन्द कर दिये और बोली कि बस अब आ भी जाओ, उन्होंने कहा कि अल्लाह की पनाह! वे तो मेरे मालिक हैं उन्होंने मुझे सम्मान के साथ रखा बेशक अत्याचारी सफल नहीं हो सकते[1] (23) और उस औरत ने उनका इरादा कर ही लिया था और वह भी इरादा कर लेते अगर उन्होंने अपने पालनहार का प्रमाण न देख लिया होता, यूँ ही हुआ, ताकि हम उनसे बुराई और बेहयाई को दूर ही रखें बेशक वे हमारे चुने हुए बंदों में थे (24) और वे दोनों दरवाज़े की ओर दौड़े और उस औरत ने उनके कुर्ते को पीछे से फाड़ दिया और दरवाज़े पर ही उन दोनों का औरत के पति से सामना हुआ वह बोली जो आपकी घर वाली के साथ बुरा इरादा करे उसकी सज़ा इसके सिवा और क्या हो सकती है कि या तो वह क़ैद कर दिया जाए या कठोर दण्ड (दिया जाए)[2] (25) यूसुफ़ ने कहा कि खुद इसी ने मुझे मेरे काम–वासना के बारे में बहकाया और खुद उसके परिवार के एक गवाही देने वाले ने गवाही दी कि अगर उनका कुर्ता सामने से फटा है तो औरत सच्ची है और यह झूठे हैं (26) और अगर उनका कुर्ता पीछे से फटा है तो औरत ने झूठ बोला और यह सच्चे हैं (27) फिर जब उन्होंने कुर्ते को देखा कि वह पीछे से फटा है तो उन्होंने कहा कि यह तुम औरतों की मक्कारियाँ हैं निश्चित रूप से तुम्हारी मक्कारियाँ मामूली नही हैं (28) यूसुफ़! इसको छोड़ो और ऐ औरत! तुम अपने पाप की माफ़ी मांगो, ग़लती तुम्हारी ही है (29) और शहर की औरतों की ज़बानें खुल गईं कि मिस्र के अज़ीज़ की पत्नी अपने सेवक से काम–वासना की इच्छा करती है, वह उसके प्रेम में दीवानी हो गई है, हम तो देखते हैं कि वह साफ़–साफ़ बहक गई है (30)

---

(1) अज़ीज़–ए–मिस्र की पत्नी जिसका नाम 'जुलैख़ा' बताया जाता है उन पर दीवानी हो गई, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम उसी के घर में गुलाम थे, बचना कितना कठिन था उसकी ओर संकेत है (2) जब उसने बुराई के लिए बुलाया तो हज़रत यूसुफ ने अज़ीज़–ए–मिस्र का हवाला दिया कि उसने जो शुरु में कहा था वही किया, सम्मान से रखा, यह कैसा अत्याचार है कि उसके साथ विश्वासघात किया जाए, मगर वह पीछे पड़ गई, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम भी खतरा महसूस करने लगे, बस अल्लाह की ओर से पाप की बुराई एक प्रमाण के रूप में सामने आई, कुछ लोगों ने कहा कि अचानक हज़रत याक़ूब का चेहरा अल्लाह की ओर से सामने कर दिया गया बस भागे, उसने पीछे से दामन पकड़ लिया, वह फट गया, किसी तरह बाहर निकले तो अज़ीज़–ए–मिस्र दरवाज़े पर मौजूद था, औरत ने बात बनाने के लिए सब कुछ यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम पर डाल दिया, मगर खुदा का करना कि खुद औरत के एक निकट संबंधी ने सच्चे–झूठे होने की जो पहचान बताई उसने औरत ही को झूठा क़रार दिया, अज़ीज़–ए–मिस्र उस पर गुस्सा हुआ और बात फैल गई, शहर में इसकी चर्चा हुई कि रानी अपने गुलाम पर फिदा हो गई है, कुछ किताबों में है कि गवाही देने वाला दूध मुंहा बच्चा था, अल्लाह ने उसको बोलने की शक्ति प्रदान की, इस चमत्कारी गवाही के कारण सबको औरत के झूठे होने का विश्वास हो गया।

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً
وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ فَلَمَّا
رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا
اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ﴿۳۱﴾ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ وَ
لَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ وَلَىِٕنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَاۤ اٰمُرُهٗ
لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿۳۲﴾ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ
اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَيْهِ وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ
اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۳۳﴾ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ
كَيْدَهُنَّ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۳۴﴾ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا رَاَوُا
الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿۳۵﴾ وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ قَالَ
اَحَدُهُمَاۤ اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَعْصِرُ خَمْرًا وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَحْمِلُ فَوْقَ
رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ
الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳۶﴾ قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖۤ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا
بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ اِنِّيْ تَرَكْتُ
مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۷﴾

منزل۳

फिर जब उसने औरतों की मक्कारी सुनी तो सबको बुला भेजा और उनके लिए मसनद सजाई और उनमें से हर एक के हाथ में एक छुरी दे दी और (यूसुफ़ से) कहा कि ज़रा उनके सामने तो आओ, बस जब उन औरतों ने उनको देखा तो उनको (कल्पना से) बढ़ कर पाया (और हक्का–बक्का रह गईं) और अपने हाथ काट लिए और कहने लगीं कि हाय रे अल्लाह! यह इंसान नहीं है यह तो कोई शालीन फ़रिश्ता है (31) औरत ने कहा यही वह है जिसके बारे में तुम मुझे बुरा–भला कह रही थीं और मैंने इससे काम–वासना की चाहत की तो यह बच निकला और अगर उसने मेरा कहना न माना तो अवश्य वह जेल में डाल दिया जाएगा और बेहैसियत होकर रह जाएगा (32) यूसुफ ने कहा ऐ मेरे रब! यह जो मुझे (दुष्कर्म की ओर) बुला रही हैं उसके मुकाबले में मुझे जेल ही पसंद है और अगर तूने मुझे इनकी चाल से दूर न रखा तो मैं उनका शिकार हो जाऊँगा और नादानों में होकर रह जाऊँगा (33) बस उनकी दुआ उनके पालनहार ने सुन ली और उन औरतों की चाल उनसे दूर कर दी बेशक वह ख़ूब सुनता ख़ूब जानता है[1] (34) फिर निशानियाँ देख लेने के बाद भी लोगों की राय यही ठहरी कि यूसुफ को एक अवधि के लिए जेल में ही डाल दिया जाए[2] (35) और उनके साथ जेल में दो और नवयुवकों ने प्रवेश किया, उनमें से एक ने कहा मैं अपने आपको देखता हूँ कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ और दूसरा बोला कि मैं अपने आपको देखता हूँ कि मैं सिर पर रोटियाँ रखे हूँ, पक्षी उसमें से खा रहे हैं आप हमें इसका मतलब बता दीजिए, हम देखते हैं कि आप बड़े बुज़ुर्ग हैं[3] (36) उन्होंने कहा कि जो खाना तुम्हें मिलता है वह आने भी नहीं पायेगा कि मैं उसके आने से पहले–पहले तुम्हें इसका मतलब बता दूँगा, यह उन चीज़ों में से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाई हैं, मैंने उन लोगों के तरीक़े को छोड़ रखा है जो अल्लाह को नहीं मानते और आख़िरत का भी इनकार करते हैं (37)

---

(1) औरतें हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को देख कर खुद ही दीवानी हो गईं और ज़ुलैख़ा को अवसर मिला, साफ़ कह दिया कि मैंने इसका इरादा कर रखा था और अगर इसने न माना तो इसको जेल की हवा खानी पड़ेगी और औरतें भी उनको समझाने में लग गईं कि अपनी मालिकिन की बात मान लो, खुद उन महिलाओं का हाल यह था कि सब के दिल उन्हीं की ओर आकर्षित हो रहे थे, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने जब यह माहौल देखा तो अल्लाह से अपनी रक्षा की दुआ की और कहा कि इनसे तो जेल ही बेहतर है (2) हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के बेगुनाह होने के बहुत से प्रमाण थे परन्तु इसके बाद भी उन्होंने बेहतर यही समझा कि उनको जेल भेज दिया जाए ताकि लोग समझें कि दोष यूसुफ ही का था (3) किताबों में है कि दोनों राजा के कर्मचारी थे, एक शराब पिलाता था दूसरा रसोइया था, दोनों को राजा को ज़हर देने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था, दोनों जेल में हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के श्रद्धावान हो गये और सपने का मतलब पूछा।

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ وَاِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ
لَنَاۤ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ ؕ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَیْنَا
وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَشْكُرُوْنَ ﴿٣٨﴾ یٰصَاحِبَیِ
السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَیْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾
مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اَسْمَآءً سَمَّیْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَ
اٰبَآؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ
اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِیَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّیْنُ الْقَیِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿٤٠﴾ یٰصَاحِبَیِ السِّجْنِ اَمَّاۤ اَحَدُكُمَا
فَیَسْقِیْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَیُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّیْرُ
مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِیَ الْاَمْرُ الَّذِیْ فِیْهِ تَسْتَفْتِیٰنِ ﴿٤١﴾ؕ وَقَالَ
لِلَّذِیْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِیْ عِنْدَ رَبِّكَ ؗ فَاَنْسٰىهُ
الشَّیْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِی السِّجْنِ بِضْعَ سِنِیْنَ ﴿٤٢﴾ؒ
وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّیْۤ اَرٰی سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ یَّاْكُلُهُنَّ
سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ یٰبِسٰتٍ ؕ یٰۤاَیُّهَا
الْمَلَاُ اَفْتُوْنِیْ فِیْ رُءْیَایَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْیَا تَعْبُرُوْنَ ﴿٤٣﴾

منزل ٣

और मैंने अपने बाप–दादा इब्राहीम और इस्हाक़ व याकूब का धर्म पकड़ रखा है, हमारा यह काम नहीं कि हम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को भी साझी ठहराएं और यह हम पर और लोगों पर अल्लाह का एहसान है लेकिन अधिकतर लोग शुक्र अदा नहीं करते हैं (38) ऐ मेरे जेल के दोनों साथियो! कई माबूद (पूज्यनीय) अलग–अलग बेहतर हैं या एक अकेला अल्लाह जो ज़बरदस्त है (39) तुम अल्लाह को छोड़ कर जिसको पूजते हो वे सिर्फ़ नाम ही नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप–दादा ने रख छोड़े हैं अल्लाह ने इसकी कोई दलील नहीं उतारी, राज केवल अल्लाह का है, उसने आदेश दिया है कि तुम केवल उसी की पूजा करो, यही सीधा रास्ता है लेकिन अधिकतर लोग जानते नहीं[1] (40) ऐ मेरे जेल के दोनों साथियो! तुममें एक तो अपने मालिक को शराब पिलाएगा और जो दूसरा है तो वह फांसी (सूली) पर चढ़ाया जाएगा तो पक्षी उसका सर खाएंगे, जिस चीज़ को तुम पूछ रहे हो उसका फ़ैसला निर्धारित हो चुका है (41) और जिसके बारे में यूसुफ़ का विचार था कि वह उन दोनों में बच रहेगा उससे उन्होंने कहा अपने स्वामी के सामने मेरा वर्णन करना बस शैतान ने उसको भुला दिया कि वह अपने स्वामी से उल्लेख करे तो यूसुफ़ को जेल में कई वर्ष रहना पड़ा[2] (42) और राजा ने कहा कि मैं देखता हूँ कि सात मोटी गायें हैं जिनको सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालियाँ हैं और दूसरी सूखी हैं, ऐ दरबारियो! अगर तुम सपने का मतलब बताते हो तो मुझे मेरे सपने का मतलब बताओ (43)

(1) हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने सबसे पहले तो उनको तसल्ली दी कि मैं जल्द ही तुम्हें सपने का मतलब बताऊँगा लेकिन उनके भरोसे और संबंध के कारण ज़रूरी समझा कि उनको सत्य धर्म के विषय में समझायें, यह पैग़म्बरों की शुभ नीति है कि वे अल्लाह की ओर बुलाने का कोई भी अवसर हाथ से जाने नहीं देते (2) धर्म प्रचार का कर्तव्य निर्वाहन के बाद हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने उनको सपने का मतलब बताया कि शराब पिलाने वाला तो बहाल हो जाएगा और खाना पकाने वाला सज़ा पायेगा, उसको फाँसी दी जाएगी, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को वह्य के द्वारा इसका विश्वास हो गया, इसलिए कहा कि यह बातें निर्धारित हो चुकी हैं, जिसके बारे में उनको जानकारी थी कि वह फिर राजा का दरबारी सेवक बनेगा उससे उन्होंने कहा कि ज़रा मेरा वर्णन करना, लेकिन शैतान ने उसको भुला दिया और हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को और अधिक कई वर्ष जेल में रहना पड़ा, जब राजा ने सपना देखा तो उस व्यक्ति को हज़रत यूसुफ़ की याद आई।

قَالُوٓا أَضْغَٰثُ أَحْلَٰمٍ ۖ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ ٱلْأَحْلَٰمِ بِعَٰلِمِينَ ﴿٤٤﴾
وَقَالَ ٱلَّذِى نَجَا مِنْهُمَا وَٱدَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا۠ أُنَبِّئُكُم بِتَأْوِيلِهِۦ
فَأَرْسِلُونِ ﴿٤٥﴾ يُوسُفُ أَيُّهَا ٱلصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِى سَبْعِ بَقَرَٰتٍ
سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ سُنۢبُلَٰتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ
يَابِسَٰتٍ لَّعَلِّىٓ أَرْجِعُ إِلَى ٱلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤٦﴾ قَالَ تَزْرَعُونَ
سَبْعَ سِنِينَ دَأَبًا فَمَا حَصَدتُّمْ فَذَرُوهُ فِى سُنۢبُلِهِۦٓ إِلَّا قَلِيلًا
مِّمَّا تَأْكُلُونَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ يَأْتِى مِنۢ بَعْدِ ذَٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَأْكُلْنَ مَا
قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تُحْصِنُونَ ﴿٤٨﴾ ثُمَّ يَأْتِى مِنۢ بَعْدِ ذَٰلِكَ
عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ ٱلنَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ﴿٤٩﴾ وَقَالَ ٱلْمَلِكُ ٱئْتُونِى
بِهِۦ ۖ فَلَمَّا جَآءَهُ ٱلرَّسُولُ قَالَ ٱرْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ
ٱلنِّسْوَةِ ٱلَّٰتِى قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ إِنَّ رَبِّى بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾
قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَٰوَدتُّنَّ يُوسُفَ عَن نَّفْسِهِۦ ۚ قُلْنَ حَٰشَ
لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِن سُوٓءٍ ۚ قَالَتِ ٱمْرَأَتُ ٱلْعَزِيزِ ٱلْـَٰٔنَ حَصْحَصَ
ٱلْحَقُّ أَنَا۠ رَٰوَدتُّهُۥ عَن نَّفْسِهِۦ وَإِنَّهُۥ لَمِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿٥١﴾ ذَٰلِكَ لِيَعْلَمَ
أَنِّى لَمْ أَخُنْهُ بِٱلْغَيْبِ وَأَنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى كَيْدَ ٱلْخَآئِنِينَ ﴿٥٢﴾

منزل٣

उन्होंने कहा ये भ्रम में डालने वाले सपने हैं और इन सपनों का मतलब हम नहीं जानते (44) और उन दो (कैदियों) में जिसको रिहाई मिली थी जिसे एक ज़माने के बाद याद पड़ा वह बोल उठा कि मैं आप लोगों को इसका मतलब बताये देता हूँ थोड़ा मुझे जाने दीजिए[1] (45) ऐ यूसुफ़! ऐ सत्यमूर्ति! हमको थोड़ा मतलब बताइये उन सात मोटी गायों के बारे में जिनको सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालियों और सात दूसरी सूखी बालियों के बारे में कि मैं लोगों के पास ले जाऊँ ताकि उनको मालूम हो जाये (46) उन्होंने कहा तुम सात साल लगातार खेती करते रहो फिर जो तुम काटो उसको बालियों में रहने दो सिवाय उस थोड़े (भाग) के जो तुम खाओ (47) फिर उसके बाद सात साल बड़े कठिन आएंगे जो भी तुमने उन सालों के लिए इकट्ठा कर रखा होगा वह सब खा जाएंगे सिवाय थोड़े (भाग) के जो तुम सुरक्षित रखोगे (48) फिर वह साल आएगा जिसमें लोगों को खूब पानी मिलेगा और उसमें लोग (शीरा) निचोड़ेंगे[2] (49) और राजा ने कहा कि उनको मेरे पास ले कर आओ फिर जब दूत उनके पास पहुँचा तो उन्होंने कहा अपने मालिक के पास वापस जाओ फिर उससे पूछो कि उन औरतों की क्या कहानी है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे बेशक मेरा पालनहार उनकी चाल से अवगत है (50) राजा ने कहा कि तुम्हारी क्या कहानी है जब तुमने यूसुफ़ से उसके काम–वासना की इच्छा की थी, वे बोलीं पाक है अल्लाह! हमें तो उनमें कोई बुराई न मालूम हुई, अज़ीज़ की पत्नी कहने लगी अब तो सच खुल कर सामने आ ही गया, मैंने ही उनको उनके काम–वासना के बारे में बहकाया था और वे बेशक सच्चे हैं (51) (यूसुफ बोले) यह मैंने इस लिए किया कि वह (अज़ीज़–ए–मिस्र) जान लें कि मैंने छिप कर उनके साथ विश्वासघात नहीं किया और यह कि अल्लाह विश्वासघातियों की चाल चलने नहीं देता (52)

(1) जब राजा ने सपने का अर्थ पूछा तो दरबारियों ने माफ़ी मांग ली तब राजा के उस दरबारी को हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम याद आये, भागा–भागा जेल पहुँचा और मतलब पूछा (2) हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने जो अर्थ बताया था उसका सार यह था कि आने वाले सात सालों में मौसम ठीक रहेगा, यह सात हरी बालियाँ हैं, और फिर सात साल सूखा पड़ेगा, यह सूखी बालियां हैं, और सात सालों का इकट्ठा किया हुआ अनाज सूखे के सालों में खा जाएंगे, यह मोटी सात गायें हैं जिनको दुबली गायें खा रही हैं, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने मतलब के साथ–साथ उपाय भी बता दिया कि सात साल जम कर खेती करो और उपज बालियों में रहने दो, बस आवश्यकता अनुसार ही निकालो, सूखे के सालों में वह काम आएगा, थोड़ा बचेगा उसको फिर बो देना फिर खूब वर्षा होगी और अच्छी फसल होगी, लोग अंगूर का रस निचोड़ेंगे, जब बादशाह ने मतलब और उपाय सुना तो अचंभित हो गया और तुरंत बुलाया, मगर हज़रत यूसुफ़ ने प्रकरण साफ़ होने से पहले जाने से इनकार कर दिया और दूत से कहा कि जाकर राजा को घटना याद दिलाओ और जाँच कराओ, राजा सब जानता ही था, महिलाओं को हाज़िर किया और पूछा तो सबने स्वीकार कर लिया, उसकी पत्नी ने साफ़ स्वीकार किया कि मुझसे ग़लती हुई और यूसुफ़ सदाचारी पुरुष हैं, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने जेल से निकलने से पहले ही जाँच इसलिए करा ली कि कोई संदेह किसी के दिल में बाक़ी न रह जाए।

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِیْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا
مَا رَحِمَ رَبِّیْ ؕ اِنَّ رَبِّیْ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿٥٣﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِیْ
بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِیْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْیَوْمَ لَدَیْنَا
مَكِیْنٌ اَمِیْنٌ ﴿٥٤﴾ قَالَ اجْعَلْنِیْ عَلٰی خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّیْ حَفِیْظٌ
عَلِیْمٌ ﴿٥٥﴾ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِیُوْسُفَ فِی الْاَرْضِ ۚ یَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَیْثُ
یَشَآءُ ؕ نُصِیْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِیْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿٥٦﴾
وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَیْرٌ لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا یَتَّقُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَجَآءَ
اِخْوَةُ یُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَیْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٨﴾ وَ
لَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِیْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِیْكُمْ ۚ اَلَا
تَرَوْنَ اَنِّیْٓ اُوْفِی الْكَیْلَ وَاَنَا خَیْرُ الْمُنْزِلِیْنَ ﴿٥٩﴾ فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِیْ
بِهٖ فَلَا كَیْلَ لَكُمْ عِنْدِیْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ
اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفِتْیٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ فِیْ
رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ یَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓی اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ
یَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓی اَبِیْهِمْ قَالُوْا یٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا
الْكَیْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾

منزل ٣

और मैं अपने मन को पवित्र नहीं कहता, मन तो बुराई ही सिखाता है, हाँ मेरे पालनहार की जो कृपा हो जाए बेशक मेरा पालनहार बड़ा ही माफ़ करने वाला बहुत ही कृपालु है[1] (53) और राजा ने कहा कि उनको ले आओ मैं उनको अपना विशेष सहायक बना लूँ फिर जब उनसे बातचीत की तो कहा कि आज से तुमने हमारे पास विश्वसनीय हो कर स्थान पा लिया (54) उन्होंने कहा मुझे देश के ख़ज़ानों पर नियुक्त कर दीजिए मैं रक्षा करने वाला भी हूँ और ज्ञान भी रखता हूँ (55) और इस प्रकार यूसुफ़ को हमने देश में सत्ता प्रदान की कि वे जहाँ चाहें रहें, हम जिसको चाहते हैं अपनी कृपा से सम्मानित कर देते हैं और अच्छा काम करने वालों के बदले को बर्बाद नहीं करते (56) और बेशक आख़िरत का बदला उन लोगों के लिए बेहतर है जो ईमान ले आए और वे परहेज़गार रहे[2] (57) और यूसुफ़ के भाई आये फिर उनके पास पहुँचे तो यूसुफ़ ने उनको पहचान लिया और वे उनको पहचान न सके (58) और जब उनका सामान यूसुफ़ ने तैयार करा दिया तो कहा कि (अबकी बार) अपने सौतेले भाई को भी मेरे पास लाना, तुम देखते नहीं हो कि मैं माप–यंत्र भर–भर कर देता हूँ और मैं मेहमानदारी भी अच्छी करता हूँ (59) फिर अगर तुम उसको न लाए तो तुम्हारे लिए न मेरे पास कोई अनाज है और तुम मेरे क़रीब भी मत होना (60) वे बोले कि हम अपने बाप को इसके बारे में राज़ी करने का प्रयास करेंगे और हम ऐसा ज़रूर कर लेंगे (61) और अपने कर्मचारियों से उन्होंने कहा कि उनकी पूंजी उनके सामान में रख दो ताकि जब वे अपने घर वापस हों तो उसको पहचान लें, शायद वे फिर आएं (62) फिर जब वे अपने पिता के पास वापस पहुँचे तो उन्होंने कहा ऐ हमारे अब्बा जान! हमारा अनाज बंद कर दिया गया है तो आप हमारे भाई को हमारे साथ भेजिए तो हम अनाज ला सकेंगे और हम ज़रूर उनकी रक्षा करेंगे[3] (63)

(1) यह हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की बहुत बड़ी दास्तां है, निर्दोष सिद्ध हो जाने के बाद भी किसी बड़ाई का प्रदर्शन नहीं किया बल्कि इसका संबंध भी वास्तविक मालिक से कर रहे हैं (2) हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से जब राजा ने बात की तो उनकी युक्ति, तत्वदर्शिता और ज्ञान पर बधाई देने लगा और पूछा कि अगले वर्षों में आने वाली परिस्थितियों की ज़िम्मेदारी किसके हवाले की जाए, हज़रत यूसुफ़ ने ज़रूरी समझा कि वे इस ज़िम्मेदारी को स्वीकार करें ताकि लोगों को आसानी भी हो और एक अच्छा आदर्श सामने आये, कुछ किताबों में है कि धीर–धीरे राजा ने सारे अधिकार उन्हीं के हवाले कर दिये और ख़ुद मुसलमान भी हो गया, अंत में यह भी बता दिया गया कि आख़िरत का बदला सबसे बढ़ कर है, दुनिया की सारी सत्ता और धन उसके आगे कोई मूल्य नहीं रखता (3) सूखे के युग में दूर–दूर तक चर्चा हुई कि मिस्र में उचित मूल्य पर राशन मिल जाता है, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के भाई भी पहुँचे, हज़रत यूसुफ़ ने देखते ही उनको पहचान लिया मगर वे न पहचान सके, अनाज देने के बाद भाई कहने लगे कि हमारा एक और भाई है जो अब्बा जान की सेवा के लिए रुक गया है, उसका अनाज भी दे दीजिए, उन्होंने कहा यह नियम के विरुद्ध है, उसको लेकर आओ तो मैं दूंगा और अगर न लाये तो तुम्हारा झूठ सिद्ध होगा, फिर तुम्हें भी अनाज न मिलेगा।

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ
فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَمَّا فَتَحُوْا
مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا
نَبْغِيْ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا
وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ
مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ
يُّحَاطَ بِكُمْ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾
وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ
اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ وَمَآ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ
اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ مَا
كَانَ يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِيْ نَفْسِ
يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ
اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْٓ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾

ع

منزل٣

उन्होंने कहा कि क्या मैं उसी तरह उनके बारे में तुम पर भरोसा कर लूँ जैसा पहले उनके भाई के बारे में मैंने तुम पर भरोसा किया था बस अल्लाह ही बेहतर रक्षा करने वाला है और वह सब से अधिक दयालु है (64) और जब उन्होंने सामान खोला तो अपनी पूँजी भी मौजूद पायी जो उनको वापस कर दी गई थी, बोले ऐ पिता जी! और हमें क्या चाहिए? यह हमारी पूंजी हम ही को वापस कर दी गई, हम और अनाज ले आएंगे और अपने भाई की रक्षा करेंगे और एक ऊँट का अनाज अधिक पायेंगे, यह अनाज तो आसान है (65) उन्होंने कहा कि मैं उनको तुम्हारे साथ उस समय तक हरगिज़ नहीं भेज सकता जब तक तुम अल्लाह की ओर से मुझे यह वचन न दे दो कि तुम उनको वापस ज़रूर लाओगे सिवाय इसके कि तुम किसी कठिनाई में घिर जाओ फिर जब उन्होंने उनको वचन दे दिया तो उन्होंने कहा कि जो बातें हम कहते हैं वह अल्लाह ही के हवाले हैं[1] (66) और उन्होंने कहा कि ऐ बेटो! एक दरवाज़े से मत प्रवेश करना बल्कि विभिन्न दरवाजों से प्रवेश करना और मैं अल्लाह से तुम्हें कुछ भी नहीं बचा सकता, अधिकार अल्लाह ही का है, मैंने उसी पर भरोसा किया और उसी पर भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिए (67) और जब उन्होंने अपने पिता के बताए हुए तरीके के अनुसार प्रवेश किया, वह अल्लाह से उनको थोड़ा भी बचा नहीं सकते थे हाँ याकूब के दिल में एक इच्छा थी जो उन्होंने पूरी की और वे हमारे सिखाने से ज्ञान वाले थे, लेकिन अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते[2] (68) और जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने भाई को अपने क़रीब ही रखा कहा कि मैं तुम्हारा भाई हूँ बस जो कुछ वे करते रहे हैं उस पर दुखी न हो (69)

(1) हज़रत यूसुफ़ ने उनके साथ यह व्यवहार किया कि अनाज का मूल्य जो वे लाए थे उनके सामान में वापस रखवा दिया और वह अपने पास से सरकारी ख़ज़ाने में जमा करवा दिया ताकि वे दोबारा आएं और बिनयामीन को लेते आएं, उन्होंने हज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम को बड़ी मुश्किल से राज़ी किया कि अनाज जब ही मिलेगा जब बिनयामीन को साथ ले कर जाएंगे, बड़े कौल व क़रार के बाद हज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम राज़ी हो गये और काफ़िला रवाना हो गया (2) हज़रत याकूब के सारे ही बेटे लंबे–चौड़े और सुन्दर काया के थे, उनको ख़याल आया कि नज़र न लग जाए इसलिए कहा कि अलग–अलग दरवाज़ों से प्रवेश करना और साथ साथ बता दिया कि मैंने एक उपाय अपनाया है, होता तो सब अल्लाह ही के करने है यह हमेशा ध्यान रहे, कुछ किताबों में है कि जब सब भाई पहुँच गये तो हज़रत यूसुफ़ ने दो–दो को एक एक कमरे में ठहराया, दस हो गये, बिन्यामीन बचे थे, कहा कि यह हमारे पास ठहरेंगे बस उनको सारी बातें करने का अवसर मिल गया।

فلما جهزهم بجهازهم جعل السقاية في رحل
أخيه ثم أذن مؤذن أيتها العير إنكم لسارقون ﴿٧٠﴾ قالوا
وأقبلوا عليهم ماذا تفقدون ﴿٧١﴾ قالوا نفقد صواع
الملك ولمن جاء به حمل بعير وأنا به زعيم ﴿٧٢﴾
قالوا تالله لقد علمتم ما جئنا لنفسد في الأرض وما
كنا سارقين ﴿٧٣﴾ قالوا فما جزاؤه إن كنتم كاذبين ﴿٧٤﴾ قالوا
جزاؤه من وجد في رحله فهو جزاؤه كذلك نجزي
الظالمين ﴿٧٥﴾ فبدأ بأوعيتهم قبل وعاء أخيه ثم
استخرجها من وعاء أخيه كذلك كدنا ليوسف ما
كان ليأخذ أخاه في دين الملك إلا أن يشاء الله نرفع
درجات من نشاء وفوق كل ذي علم عليم ﴿٧٦﴾ قالوا إن
يسرق فقد سرق أخ له من قبل فأسرها يوسف في
نفسه ولم يبدها لهم قال أنتم شر مكانا والله أعلم
بما تصفون ﴿٧٧﴾ قالوا يا أيها العزيز إن له أبا شيخا
كبيرا فخذ أحدنا مكانه إنا نراك من المحسنين ﴿٧٨﴾

منزل٣

फिर जब उन्होंने उनका सामान तैयार करा दिया तो अपने भाई के सामान में पीने का प्याला रखवा दिया, फिर एक ऐलान करने वाले ने ऐलान किया क़ाफ़िला वालो! तुम चोर हो (70) उन्होंने उसकी ओर मुड़ कर पूछा तुम्हारी कौन सी चीज़ खो गई (71) उन्होंने कहा कि शाही प्याला हमें नहीं मिल रहा है और जो भी उसको ढूँढ लाएगा उसको एक ऊँट भर (अनाज) मिलेगा और मैं इसकी ज़िम्मेदारी लेता हूँ (72) वे बोले खुदा की क़सम तुम जानते ही हो हम देश में गड़बड़ करने नहीं आए और हम कभी चोर न थे (73) उन्होंने कहा कि अगर तुम झूठे हुए तो इसकी सज़ा क्या है (74) वे बोले उसकी सज़ा यह है कि जिसके सामान में भी वह मिल जाए वह खुद उसका बदला है, हम इसी तरह अत्यचारियों को सज़ा देते हैं (75) तो यूसुफ़ ने अपने भाई से पहले उनके सामान की तलाशी लेनी शुरू की फिर अपने भाई के सामान से उसे बरामद कर लिया, हमने इस तरह यूसुफ़ के लिए उपाय किया, वे राजा के क़ानून के अनुसार अपने भाई को नहीं रोक सकते थे मगर जो अल्लाह चाहे, हम जिसके चाहते हैं दर्जे बढ़ा देते हैं और हर ज्ञान वाले के ऊपर एक ज्ञान वाला है[1] (76) वे बोले कि अगर इसने चोरी की है तो इससे पहले इसके भाई ने भी चोरी की थी तो यूसुफ़ ने अपने मन ही मन में सोचा और उनके सामने प्रकट नहीं किया, कहा तुम तो अत्यन्त बुरे लोग हो और जो तुम बयान कर रहे हो अल्लाह उसको ख़ूब जानता है[2] (77) वे बोले ऐ अज़ीज़े–ए–मिस्र इनके बूढ़े बाप हैं तो आप हममें से किसी को उनकी जगह रोक लीजिए हम देखते हैं कि आप बड़े एहसान करने वाले हैं (78)

---

(1) हज़रत युसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह के आदेश से बिनयमीन को रोकने का यह उपाय किया कि शाही प्याला उनके सामान में छिपा दिया फिर अपने सेवक ढूँढने के लिए भेजा, तलाशी में वह बिनयामीन के सामान में निकला, सजा देने से पहले ही हज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम के धार्मिक क़ानून के अनुसार वे निर्धारित कर चुके थे कि जो चोर सिद्ध हो उसी को रख लिया जाए, इस तरह हज़रत यूसुफ़ को बिनयामीन को रोकने का अवसर मिल गया, अगर हज़रत यूसुफ़ देश के संविधान पर चलते तो ऐसा संभव न था इसलिए कि वहां चोर की सज़ा हलकी थी (2) जब अवसर नहीं आया तो यूसुफ़ के भाईयों ने तुरंत ही यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम पर चोरी का आरोप लगा दिया, इस पर हज़रज यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने दिल ही में सोचा कि मुझे चुरा कर तुम ले गये और कुँए में डाल आए, यह बहुत ही बुरा काम तुमने किया और आरोप हम पर।

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنۡ نَّاۡخُذَ اِلَّا مَنۡ وَّجَدۡنَا مَتَاعَنَا عِنۡدَهٗۤ
اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوۡنَ ﴿۷۹﴾ فَلَمَّا اسۡتَيۡـَٔسُوۡا مِنۡهُ خَلَصُوۡا نَجِيًّا ؕ
قَالَ كَبِيۡرُهُمۡ اَلَمۡ تَعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اَبَاكُمۡ قَدۡ اَخَذَ عَلَيۡكُمۡ
مَّوۡثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنۡ قَبۡلُ مَا فَرَّطْتُّمۡ فِىۡ يُوۡسُفَ ۚ فَلَنۡ
اَبۡرَحَ الۡاَرۡضَ حَتّٰى يَاۡذَنَ لِىۡۤ اَبِىۡۤ اَوۡ يَحۡكُمَ اللّٰهُ لِىۡ ۚ وَهُوَ
خَيۡرُ الۡحٰكِمِيۡنَ ﴿۸۰﴾ اِرۡجِعُوۡۤا اِلٰٓى اَبِيۡكُمۡ فَقُوۡلُوۡا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ
ابۡنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدۡنَاۤ اِلَّا بِمَا عَلِمۡنَا وَمَا كُنَّا
لِلۡغَيۡبِ حٰفِظِيۡنَ ﴿۸۱﴾ وَسۡـَٔلِ الۡقَرۡيَةَ الَّتِىۡ كُنَّا فِيۡهَا
وَالۡعِيۡرَ الَّتِىۡۤ اَقۡبَلۡنَا فِيۡهَا ؕ وَاِنَّا لَصٰدِقُوۡنَ ﴿۸۲﴾ قَالَ بَلۡ
سَوَّلَتۡ لَـكُمۡ اَنۡفُسُكُمۡ اَمۡرًا ؕ فَصَبۡرٌ جَمِيۡلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنۡ
يَّاۡتِيَنِىۡ بِهِمۡ جَمِيۡعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡعَلِيۡمُ الۡحَكِيۡمُ ﴿۸۳﴾ وَتَوَلّٰى
عَنۡهُمۡ وَقَالَ يٰۤاَسَفٰى عَلٰى يُوۡسُفَ وَابۡيَضَّتۡ عَيۡنٰهُ مِنَ
الۡحُزۡنِ فَهُوَ كَظِيۡمٌ ﴿۸۴﴾ قَالُوۡا تَاللّٰهِ تَفۡتَؤُا تَذۡكُرُ يُوۡسُفَ حَتّٰى
تَكُوۡنَ حَرَضًا اَوۡ تَكُوۡنَ مِنَ الۡهٰلِكِيۡنَ ﴿۸۵﴾ قَالَ اِنَّمَاۤ اَشۡكُوۡا
بَثِّىۡ وَحُزۡنِىۡۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَعۡلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۸۶﴾

ربع

منزل۳

उन्होंने कहा इससे ख़ुदा की पनाह कि जिसके पास हमें अपना सामान मिला है हम उसके अलावा किसी और को पकड़ें, तब तो निश्चित रूप से अन्यायी ठहरेंगे (79) फिर जब वे उनसे निराश हो गये तो अगल हो कर चुपके चुपके परामर्श करने लगे, उनमें से सब से बड़े भाई ने कहा कि तुम ख़ूब जानते हो कि तुम्हारे पिता तुमसे अल्लाह का वचन ले चुके हैं और पहले भी जो तुम यूसुफ़ के साथ कोताही कर चुके हो बस मैं तो यहाँ से टलने वाला नहीं यहाँ तक कि मेरे पिता ही मुझे अनुमति दें या अल्लाह मेरे लिए कोई फ़ैसला कर दे और वह सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है[1] (80) अपने अब्बा के पास लौट कर जाओ और कहो ऐ अब्बा जान! आपके बेटे ने तो चोरी की और हमने वही गवाही दी जो हम जानते हैं और पीठ पीछे की ज़िम्मेदारी तो हमारी थी नहीं (81) और उस बस्ती वालों से जहाँ हम थे और उस क़ाफ़िले से जिसके साथ हम आए हैं पूछ लीजिए और हम बिल्कुल सच ही कह रहे हैं (82) कहा (नहीं) बल्कि तुमने अपनी ओर से कोई बात बना ली है तो सब्र ही बेहतर है, अल्लाह से उम्मीद है कि वह सबको हमारे पास ले आएगा बेशक वह ख़ूब जानता हिकमत रखता है (83) और वे उनके पास से पलटे और उन्होंने कहा हाय अफसोस! यूसुफ़ पर और ग़म से उनकी आँखें सफ़ेद पड़ गईं थी वे घुट कर रह गये (84) बेटे बोले की ख़ुदा की क़सम बस आप यूसुफ़ ही की याद में लगे रहेंगे यहाँ तक कि घुल ही जायें या जान निकल ही जाये (85) वे बोले कि मैं अपने दुःख–दर्द की फ़रियाद केवल अल्लाह से करता हूँ और अल्लाह की ओर से मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते (86)

(1) पिता जी से सब वादा करके आए थे, इसलिए पहले तो बदले में किसी और को लेने की विनती की, जब वह स्वीकार न हुई तो मश्वरा करने बैठे, बड़ा भाई यहूदा उनमें कुछ नरम दिल था उसने कहा कि अब तो मुझे बाप के सामने जाते हुए शर्म आती है, तुम लोग जाओ सब हाल बताओ, हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम के सामने जब बात आई तो चूंकि उनको विश्वास था कि बिनयामीन चोर नहीं है इसलिए उन्होंने वही बात कही कि यह सब तुम्हारी कारस्तानियाँ हैं, उनका दिल बड़ा दुखी हुआ, यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का ग़म भी ताज़ा हो गया, इस पर बेटों ने निंदा की तो कहा मैं तुम से फ़रियाद नहीं करता, मैं तो अपने दुख–दर्द की शिकायत अल्लाह से करता हूँ, और मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते, इसमें यह संकेत भी था कि मुझे दोनों के जीवित होने का विश्वास है और मैं समझता हूँ अल्लाह फिर उनसे मिलाएगा, तुम इन चीज़ों को नहीं समझते।

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا
مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ
الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۷﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا
وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ
وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿۸۸﴾ قَالَ
هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿۸۹﴾
قَالُوْۤا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَاۤ اَخِيْ
قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ
لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۹۰﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ
اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ ﴿۹۱﴾ قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ
الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ؗ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۹۲﴾ اِذْهَبُوْا
بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ
وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۹۳﴾ وَلَمَّا فَصَلَتِ
الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَاۤ اَنْ
تُفَنِّدُوْنِ ﴿۹۴﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿۹۵﴾

الربع

منزل۳

ऐ मेरे बेटो! जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई का कुछ पता लगाओ और अल्लाह की रह़मत (दया) से निराश मत होना, अल्लाह की रह़मत (दया) से इनकार करने वाले ही निराश होते हैं (87) फिर जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उन्होंने कहा कि ऐ अज़ीज़–ए (मिस्र) हम और हमारे घर वाले बड़ी तंगी में पड़ गये हैं और हम थोड़ी सी पूंजी लेकर आए हैं तो आप हमें पूरा पूरा अनाज दे दीजिए और हम पर ख़ैरात (दान) कीजिए बेशक अल्लाह भी ख़ैरात करने वालों को बेहतर बदला देता है (88) यूसुफ़ बोल उठे क्या तुम जानते हो कि तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया जब कि तुम अज्ञानी थे (89) वे बोल पड़े सच बताइए क्या आप ही यूसुफ़ हैं? उन्होंने कहा हाँ मैं यूसुफ हूँ और यह मेरा भाई है, अल्लाह ने हम पर एहसान किया है, बेशक जो भी परहेज़गारी और सब्र अपनाता है तो अल्लाह बेहतर काम करने वालों के बदले को बेकार नहीं करता (90) उन्होंने कहा कि ख़ुदा की क़सम अल्लाह ही ने आपको हम पर वरीयता दी और हम ही दोषी हैं (91) उन्होंने कहा आज तुम पर कोई आरोप नहीं अल्लाह तुम्हें माफ़ करे और वह तो सबसे बढ़ कर दया करने वाला है[1] (92) मेरे इस कुर्ते को लेकर जाओ बस मेरे पिता के चेहरे पर डाल देना वे आँखों से देखते चले आएंगे और तुम सब भी अपने घर वालों के साथ मेरे पास आ जाना (93) और जब क़ाफ़िला चला तो उनके पिता कहने लगे कि मुझे तो यूसुफ़ की खुश्बू आती है अगर तुम मुझे यह न कहो कि बड़े मियाँ सठिया गए हैं (94) वे बोले ख़ुदा की क़सम आप उसी पुराने ग़लत आचरण पर क़ायम हैं[2] (95)

---

(1) हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम को हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के ज़िन्दा रहने का विश्वास था, बिनयामीन भी मिस्र में थे, अनाज भी समाप्त हो रहा था, उन्होंने बेटों से कहा कि जाओ बिनयामीन की भी ख़बर लो, यूसुफ़ का भी सुराग़ लगाओ और अल्लाह की कृपा से निराश न हो, भाई रवाना हुए पहले यूसुफ़ के पास पहुँचे और अपनी मुसीबत की कहानी सुनाई कि वे नर्म पड़ें तो बिनयामीन के बारे में बात की जाए, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम स्थिति सुन कर रो पड़े और सहसा जबान से निकल पड़ा कि यूसुफ़ के साथ जो तुमने किया वह याद है? भाई समझ गए कि हो न हो यही यूसुफ़ हैं, तुरंत अपनी ग़लती स्वीकार करनी चाही, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को यह सुनना भी गवारा न हुआ, कहा वह सब छोड़ो, अब जाओ अब्बा जान और परिवार जन को लेकर आओ, यह सब्र व शिष्टाचार की अंतिम सीमा थी, खुद ज़बान पर शिकायत का एक अक्षर भी क्या लाते! (2) यह अल्लाह की शक्ति की निशानी है कि पैग़म्बरों के मोअजिज़े उनकी ओर से नहीं होते बल्कि अल्लाह के आदेश होते हैं, ढकी–छिपी बातें भी वे उतनी ही बता सकते हैं जितनी उनको अल्लाह की ओर से जानकारी मिली हो, हज़रत यूसुफ़ कुएं में रहे, मिस्र के बादशाह बने, उनके भाई कई बार आए और गये लेकिन हज़रत याक़ूब को कुछ पता न चला, लेकिन इधर क़ाफ़िला मिस्र से रवाना हुआ, उधर कनआ़न में याक़ूब अ़लैहिस्सलाम को यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की सुगन्ध महसूस होने लगी।

فَلَمَّآ اَنۡ جَآءَ الۡبَشِيۡرُ اَلۡقٰٮهُ عَلٰى وَجۡهِهٖ فَارۡتَدَّ بَصِيۡرًا ۚ قَالَ اَلَمۡ اَقُلْ لَّـكُمۡ ۚ اِنِّىۡۤ اَعۡلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۹۶﴾ قَالُوۡا يٰۤاَبَانَا اسۡتَغۡفِرۡ لَـنَا ذُنُوۡبَنَاۤ اِنَّا كُنَّا خٰطِـــِٕيۡنَ ﴿۹۷﴾ قَالَ سَوۡفَ اَسۡتَغۡفِرُ لَـكُمۡ رَبِّىۡ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡغَفُوۡرُ الرَّحِيۡمُ ﴿۹۸﴾ فَلَمَّا دَخَلُوۡا عَلٰى يُوۡسُفَ اٰوٰٓى اِلَيۡهِ اَبَوَيۡهِ وَقَالَ ادۡخُلُوۡا مِصۡرَ اِنۡ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيۡنَ ﴿۹۹﴾ؕ وَرَفَعَ اَبَوَيۡهِ عَلَى الۡعَرۡشِ وَخَرُّوۡا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰۤاَبَتِ هٰذَا تَاۡوِيۡلُ رُءۡيَاىَ مِنۡ قَبۡلُ قَدۡ جَعَلَهَا رَبِّىۡ حَقًّا ؕ وَقَدۡ اَحۡسَنَ بِىۡۤ اِذۡ اَخۡرَجَنِىۡ مِنَ السِّجۡنِ وَجَآءَ بِكُمۡ مِّنَ الۡبَدۡوِ مِنۡۢ بَعۡدِ اَنۡ نَّزَغَ الشَّيۡطٰنُ بَيۡنِىۡ وَبَيۡنَ اِخۡوَتِىۡ ؕ اِنَّ رَبِّىۡ لَطِيۡفٌ لِّمَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡعَلِيۡمُ الۡحَكِيۡمُ ﴿۱۰۰﴾ رَبِّ قَدۡ اٰتَيۡتَنِىۡ مِنَ الۡمُلۡكِ وَعَلَّمۡتَنِىۡ مِنۡ تَاۡوِيۡلِ الۡاَحَادِيۡثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ اَنۡتَ وَلِىّٖ فِى الدُّنۡيَا وَالۡاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِىۡ مُسۡلِمًا وَّ اَلۡحِقۡنِىۡ بِالصّٰلِحِيۡنَ ﴿۱۰۱﴾ ذٰ لِكَ مِنۡ اَنۡۢبَآءِ الۡغَيۡبِ نُوۡحِيۡهِ اِلَيۡكَ ۚ وَمَا كُنۡتَ لَدَيۡهِمۡ اِذۡ اَجۡمَعُوۡۤا اَمۡرَهُمۡ وَهُمۡ يَمۡكُرُوۡنَ ﴿۱۰۲﴾

منزل۳

फिर जब शुभ समाचार देने वाला पहुँचा उसने कुर्ते को उनके चेहरे पर डाला तो उनकी आँख की रौशनी वापस आ गई, वे कहने लगे कि क्या मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि अल्लाह की ओर से मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते (96) वे बोले ऐ हमारे अब्बा जान! हमारे लिए माफ़ी की दुआ कीजिए बेशक हम ही दोषी थे (97) उन्होंने कहा कि मैं आगे तुम्हारे लिए अपने पालनहार से माफ़ी की दुआ करूँगा बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है[1] (98) फिर जब वे (सब) यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने माता–पिता को अपने पास ठहराया और कहा कि तुम सब अल्लाह की चाहत से इत्मिनान के साथ मिस्र में प्रवेश करो (99) और अपने माँ–बाप को ऊपर उन्होंने (राज) सिंहासन पर बिठाया और वह सब उनके सामने सज्दे में गिर गये और उन्होंने कहा कि मेरे अब्बा जान! यह मेरे पहले सपने का साकार रूप है मेरे पालनहार ने उसको सच कर दिखाया और उसने मुझ पर उस समय बड़ा एहसान किया जब उसने मुझे जेल से निकाला और मेरे और मेरे भाइयों के बीच शैतान के झगड़ा डाल देने के बाद भी उसने तुम्हें देहात से यहाँ पहुँचा दिया बेशक मेरा पालनहार जो चाहता है उपाय से कर लेता है, बेशक वह खूब जानता हिकमत रखता है[2] (100) ऐ मेरे पालनहार! बेशक तूने मुझे राज प्रदान किया और बातों की वास्तविकता मुझे सिखाई, ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले! दुनिया और आख़िरत में तू ही मेरा पालनहार है, मुझे मुसलमान उठाना और भले लोगों में शामिल करना (101) यह ढकी छिपी वे बातें हैं जो हम आपको बता रहे हैं और आप उनके पास नहीं थे जब उन्होंने साजिश करके अपना फ़ैसला पक्का कर लिया था (102)

---

(1) शायद प्रार्थना के स्वीकार होने के समय की प्रतीक्षा थी और उनकी गलतियों पर के चेतावनी का एक रूप भी था (2) जब क़ाफ़िला मिस्र के क़रीब आया तो हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने बाहर निकल कर स्वागत किया, माँ–बाप को अपने पास ठहराया फिर सबको लेकर मिस्र में प्रवेश किया, माँ–बाप को उन्होंने विशेष राज सिंहासन पर बैठाया, फिर सब भाई और माँ–बाप आभार की भावना से वशिभूत हो कर सजदे में गिर गये, यह उस सपने का साकार रूप हुआ, सूरज चाँद का अर्थ माँ–बाप थे और ग्यारह सितारों से ग्यारह भाई, यह आदर वाला सजदा (सजद–ए–ताज़ीमी) था जो पिछली उम्मतों मे वैध था लेकिन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीयत में इसको अवैध क़रार दिया गया, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की बहुत बड़ी शिष्टाचार व सज्जा की बात है कि इस अवसर पर भी उन्होंने कोई शिकायत नहीं की बल्कि हर अवसर बेहतर पक्ष का उल्लेख किया और भाईयों ने जो कुछ किया था उसको शैतानी काम कह कर बात समाप्त कर दी।

وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ
مِنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿١٠٥﴾
وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ﴿١٠٦﴾ اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ
تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّ
هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٠٧﴾ قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۣ عَلٰي
بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ۭ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٨﴾
وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ۭ
اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٩﴾
حَتّٰٓي اِذَا اسْتَيْـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَاۗءَهُمْ
نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَاۗءُ ۭ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١١٠﴾
لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ۭ مَا كَانَ
حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَ
تَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١١١﴾

منزل٣

और आप चाहे जितना भी चाहें अधिकतर लोग ईमान लाने वाले नहीं है[1] (103) और आप उस पर उनसे कोई बदला तो मांगते नहीं वह तो दुनिया जहान के लिए नसीहत (उपदेश) है (104) और आसमानों और ज़मीन में कितनी निशानियाँ हैं कि जिनसे वे आँख बंद कर के गुज़र जाते हैं (105) और उनमें अधिकतर लोग अल्लाह पर ईमान लाते भी हैं तो साथ साथ शिर्क भी करते जाते हैं (106) क्या वे इससे निर्भीक हो गये कि अल्लाह के अज़ाब में से कोई आफ़त उनको घेर ले या अचानक उन पर क़यामत ही आ जाए और वे एहसास भी न रखते हों (107) कह दीजिए कि यह मेरा रास्ता है, मैं और मेरी राह चलने वाले समझ बूझ कर अल्लाह की ओर बुलाते हैं और अल्लाह पवित्र है और मैं साझी ठहराने वालों में नहीं हूँ (108) और हमने आपसे पहले जिनको भी भेजा वे बस्तियों के रहने वाले कुछ इंसान ही थे हम उनकी ओर वह्य भेजते थे तो क्या वे ज़मीन में चलते फिरते नहीं कि देख लेते कि उनसे पहले वालों का क्या अंजाम हुआ और आख़िरत का घर परहेज़गारों के लिए बेहतर है, क्या अब भी तुम नहीं समझते (109) यहाँ तक कि जब रसूल निराश होने लगे[2] और (साझीदार ठहराने वालों) ने समझ लिया कि उनसे झूठ कहा गया बस (उसी समय) हमारी मदद आ पहुँची तो जिसको हम चाहते हैं बचा लिया करते हैं और हमारा अज़ाब अपराधी लोगों से टाला नहीं जा सकता (110) इन घटनाओं की व्याख्या में बुद्धिमानों के लिए अवश्य शिक्षा है, यह कोई ऐसी बात नहीं है जो गढ़ ली गई हो हाँ पिछली किताबों की पुष्टि है और हर चीज़ की स्पष्टीकरण है और ईमान वालों के लिए मार्गदर्शन व रहमत (दया) है[3] (111)

---

(1) साझी ठहराने वाले (मुश्रिकों) ने जो प्रश्न किया था कि बनी इस्राईल मिस्र में कैसे आबाद हुए, यह उसका पूरा विस्तृत उत्तर हो गया, और यह सब वे ढकी–छिपी बातें थीं जिनसे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अवगत नहीं थे, अल्लाह ने वह्य के द्वारा आपको सब कुछ बताया, इसका तक़ाज़ा यह था कि वे मुश्रिक ईमान ले आते लेकिन कह दिया गया कि उनका प्रश्न केवल हठधर्मी था वे ईमान लाने वाले नहीं हैं और उनमें जो अल्लाह को मानते भी हैं वे भी साझी ठहराते हैं, कोई उज़ैर को ख़ुदा का बेटा कहता है कोई ईसा को तो कोई फरिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ क़रार देता है, और उनको तौफ़ीक़ भी नहीं मिलती की पिछली क़ौमों से शिक्षा लें, उनकी बस्तियों के पास से गुज़रते हैं लेकिन ध्यान नहीं देते (2) अल्लाह के वादे से निराशा तो नबियों से सम्भव ही नहीं, हाँ! उसके पूरा होने का जो समय उन्होंने अपने विवेक से तय किया होगा उससे निराशा सम्भव है या मुश्रिकों के ईमान लाने से निराशा हुई होगी (3) पिछली आसमानी किताबों में जो घटनाएं बयान की गई हैं उसकी पुष्टि यह किताब है लेकिन उनमें जो हेर फेर कर दी गई है उनका स्पष्टिकरण भी है और ईमान वालों के लिए जो विचार विमर्श करते हैं मार्गदर्शन व दया है।

सूरह रअद

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अलिफ़ लाम मीम रॉ, यह (अल्लाह की) किताब की आयतें हैं और आपके पालनहार की ओर से आप पर जो कुछ उतरा है बिल्कुल सच है लेकिन अधिकांश लोग मानते नहीं (1) वही अल्लाह है जिसने आसमानों को बिना स्तंभ के बुलंद किया (जैसा कि) तुम उसे देखते हो फिर वह अर्श पर विराजमान हुआ और उसने सूरज और चाँद को काम में लगा दिया, सब एक निर्धारित अवधि तक के लिए चल रहे हैं, वही काम की व्यवस्था करता है, निशानियां खोलता है कि शायद तुमको अपने पालनहार से भेंट का विश्वास हो जाए (2) और उसी ने ज़मीन को फैला दिया और उसमें पहाड़ और नदियां बना दीं और उसमें हर–हर फल के दो–दो जोड़े रख दिये, वह रात से दिन को ढांप देता है बेशक इन चीज़ों में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो सोच विचार करते हैं (3) और ज़मीन में मिले–मिले टुकड़े हैं और अंगूर के बाग़ हैं और खेती है और खजूर के पेड़ मिले मिले भी और अलग अलग भी सब एक ही पानी से सींचे जाते हैं और उनमें हम एक को दूसरे से स्वाद में बढ़ा देते हैं बेशक इसमें बुद्धिमानों के लिए निशानियां हैं (4) और अगर आप आश्चर्य करें तो उन (काफ़िरों) की यह बात (निश्चित ही) आश्चर्यजनक है कि जब हम मिट्टी हो जाएंगे तो क्या हमें नए सिरे से पैदा किया जाएगा, उन्हीं लोगों ने अपने पालनहार का इनकार किया और उन्हीं की गर्दनों में तौक़ (हंसलियां) पड़े होंगे और यही लोग दोज़ख़ी हैं उसी में हमेशा रहेंगे[1] (5)

سُوْرَةُ الرَّعْدِ وَهِيَ ثَلٰثٌ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّسِتَّةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ؕ وَالَّذِيْۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ
عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ
كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ
بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ﴿۲﴾ وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا
رَوَاسِيَ وَاَنْهٰرًا ؕ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ
يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۳﴾ وَ
فِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ
صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَآءٍ وَّاحِدٍ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا
عَلٰى بَعْضٍ فِي الْاُكُلِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۴﴾ وَ
اِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ
جَدِيْدٍ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ فِيْۤ
اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۵﴾

منزل۳

(1) वह अल्लाह जिसने आसमान बनाया, जिसमें कोई स्तंभ दिखाई नहीं पड़ता, चाँद–सूरज सब निर्धारित व्यवस्था के अनुसार चल रहे हैं, ज़मीन में नदी–पहाड़ बनाए, पेड़ों के जोड़े पैदा किये जिनसे फलों में बढ़ोत्तरी होती है, मिले–मिले खेत हैं, एक से कुछ और पैदा हो रहा है दूसरे से कुछ और, एक काश्त के योग्य है दूसरा बंजर, बाग़ हर प्रकार के और पेड़ भी भांति–भांति, किसी के नीचे से एक धड़ कोई दो धड़ों का, खजूर के आमतौर पर पेड़ ऐसे ही होते हैं, सब एक ही पानी से सींचे जा रहे हैं, एक ही धूप से सेंके जा रहे हैं, एक ही धरती पर लगे हुए हैं, लेकिन हर एक का स्वाद अलग एक से बढ़कर एक, क्या यह सब पैदा करने वाले की शक्ति के रूप नहीं हैं, फिर भी अगर कोई कहता है कि हम मिट्टी होकर फिर कैसे उठेंगे तो यह कैसी आश्चर्यजनक बात है, इसी मिट्टी में जिस पेड़ का बीज पड़ जाए, पेड़ उग आएं, तो जब इंसान का मूल इसी से है तो क्या पैदा करने वाला उसको मिट्टी से पैदा नहीं कर सकता, बेशक जो लोग इनकार करने वाले हैं उनको अपने सृष्टा के इनकार की सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

और वे आपसे भलाई से पहले बुराई की जल्दी करते हैं जबकि इससे पहले शिक्षाप्रद घटनाएं गुज़र चुकी हैं और बेशक आपका पालनहार लोगों के अन्यायों के बावजूद उनको माफ़ भी करता है बेशक आपका पालनहार सख़्त सज़ा देने वाला भी है (6) और इनकार करने वाले कहते हैं कि उन पर उनके पालनहार की ओर से कोई निशानी क्यों न उतरी, आप तो बस डराने वाले हैं और हर क़ौम के लिए मार्गदर्शक हुए हैं[1] (7) हर स्त्री–जाति को जो भी गर्भ है और उसके गर्भाशय में जो कमी–बेशी होती है अल्लाह उसको जानता है और उसके पास हर चीज़ निर्धारित मात्रा के साथ है (8) ढके और खुले का जानने वाला बड़ाई वाला बुलंद व उच्च है (9) तुम में जो बात धीरे करे और जो ज़ोर से करे और जो रात को छिपने वाला हो और जो दिन को चलने फिरने वाला सब (उसके लिए) बराबर है (10) हर व्यक्ति के लिए उसके आगे और पीछे पहरेदार (फरिश्ते नियुक्त) हैं, जो अल्लाह के आदेश से उसकी रक्षा करते हैं, किसी भी क़ौम के साथ जो भी है अल्लाह उसको उस समय तक हरगिज़ नहीं बदलता जब तक वे ख़ुद अपने भीतर परिवर्तन न पैदा कर लें और जब अल्लाह किसी क़ौम के साथ बुराई चाह लेता है तो उसके टलने का कोई उपाय नहीं और उसके सिवा उनका कोई समर्थक भी नहीं[2] (11) वही है जो तुम्हें बिजली (की चमक) दिखाता है डर और उम्मीद के साथ और भारी बादल उठाता है[3] (12) और कड़क उसकी प्रशंसा के साथ और फरिश्ते उसके डर से पवित्रता बयान करने में लगे हैं और वह बिजलियां भेजता है तो जिस पर चाहता है गिरा देता है और वे अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं जबकि वह ज़बरदस्त शक्ति वाला है (13)

(1) मक्के के काफ़िर जल्दी मचाते थे कि जो अज़ाब तुम्हें लाना है ले आओ, जबकि उनके सामने पिछली क़ौमों की घटनाएं गुज़र चुकी थीं, अल्लाह कहता है कि वह छोटी–मोटी ग़लतियों को और बड़े–बड़े गुनाहों को अगर उनसे तौबा कर ली जाए तो माफ़ कर देता है, लेकिन जब वह पकड़ करता है तो उसकी पकड़ बड़ी सख़्त है, काफ़िर नए–नए मुअजिज़ों की मांग करते थे, कहा जा रहा है कि यह काम पैग़म्बर का नहीं अल्लाह के आदेश से ही मोअजिज़े प्रकट होते हैं, पैग़म्बर का काम रास्ता दिखाना है (2) अल्लाह की क़ुदरत (सार्मथ्य) में सब कुछ है, वही बंदों की रक्षा करता है और उस समय तक परिस्थितियां अच्छी रहती हैं जब तक बंदे सही रास्ते पर रहते हैं लेकिन जब बंदे ख़ुद ही अवज्ञा (नाफरमानी) पर उतारू हो जाएं तो फिर उसका अज़ाब (दण्ड) आता है जिसको कोई टाल नहीं सकता (3) डर बिजली के गिर जाने का और उम्मीद बारिश की।

उसी को पुकारना हक़ (सत्य) है और जिनको वे लोग उसके अलावा पुकारते हैं वे उनका कुछ जवाब नहीं दे सकते, हाँ (इसकी मिसाल ऐसी है) जैसे कोई पानी की ओर दोनों हाथ फैलाए हुए हो ताकि वह (पानी) उसके मुंह तक पहुंच जाए जबकि वह उस तक पहुंच ही नहीं सकता और काफ़िरों की पुकार तो यूं ही खोकर रह जाती है [1] (14) और आसमानों और ज़मीन में जो भी है वे और उनकी छांव चाहते न चाहते सुबह व शाम उसी को सज्दा करते हैं[2] (15) आप पूछिए कि आसमानों और ज़मीन का पालनहार कौन है? आप (ही) कह दीजिए कि अल्लाह, कहिए कि फिर भी तुमने उसके अलावा मददगार बना रखे हैं जो ख़ुद अपने नफ़ा नुक़सान के मालिक नहीं, कहिये कि क्या अंधा और आंखों वाला बराबर हैं? या अंधेरे और रौशनी एक समान हो सकते हैं? या उन्होंने अल्लाह के ऐसे साझीदार बना लिए हैं जिन्होंने अल्लाह के पैदा करने की तरह पैदा करने का काम किया? तो उनको (दोनों का) पैदा करना एक जैसा लग रहा है, कह दीजिए अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वह अकेला है ज़बरदस्त है[3] (16) उसने ऊपर से पानी बरसाया तो नाले (नदियां) अपनी अपनी गुंजाइश के अनुसार बह पड़े, फिर वह पानी का बहाव फूला हुआ झाग ऊपर ले आया, इसी तरह जो (धातु) आग पर गहना या सामान प्राप्त करने के लिए पकाते हैं उसमें भी झाग होता है, अल्लाह इसी प्रकार सत्य व असत्य का उदाहरण देता है, बस झाग तो बेकार जाता है और जो चीज़ लोगों के लिए लाभदायक होती है वह ज़मीन में बाक़ी रहती है अल्लाह ऐसे ही उदाहरण बयान करता रहता है[4] (17)

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۭ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ
لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَاۗءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ
بِبَالِغِهٖ ۭ وَمَا دُعَاۗءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝۱۴ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ
مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ
وَالْاٰصَالِ ۝۱۵ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قُلِ اللّٰهُ ۭ قُلْ
اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا
وَّلَا ضَرًّا ۭ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ڏ اَمْ هَلْ
تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ڬ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاۗءَ خَلَقُوْا
كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ۭ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ
وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝۱۶ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَسَالَتْ
اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ۭ وَمِمَّا
يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاۗءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ
مِّثْلُهٗ ۭ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ڛ فَاَمَّا
الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاۗءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ
فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ ۭ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ۝۱۷

السجدة ۳

منزل۳

(1) काम सब अल्लाह ही करता है उसी को पुकारने से काम बनता है और जो अल्लाह के अलावा दूसरों को पुकारते हैं और कभी देखने में लगता है कि उनका काम भी बन गया तो वह भी अल्लाह के बनाने से ही बनता है और अल्लाह की ओर से ढील होती है जबकि वह गुमराही ही में पड़ना चाहता है तो हम भी पीछे से एक धक्का और मारते हैं आख़िरकार वह दोज़ख़ में पहुंच जाता है (2) सज्दा करने से यहां मतलब है झुकना, हर प्राणी उसी के आदेश और इच्छा के अनुसार काम पर लगी हुई है (3) जब अल्लाह ही पालनहार है तो ऐसों को मद्दगार बनाना जो ख़ुद अपने फ़ायदा–नुक़सान के मालिक नहीं, अंधापन के सिवा और क्या है? ईमान का उदाहरण रौशनी का है और कुफ़्र अंधेरे का है, इंसान एक चीज़ बनाता है तो उसको उसके अपने बनाने पर गर्व होता है जबकि उसकी बुद्धि तो अंशों को जोड़ती है और अंश सब अल्लाह के पैदा किये हुए हैं, और मुश्रिकों ने जो पूज्य बना लिए वे तो सृष्टि वाला यह काम भी नही कर सकते (4) असत्य का उदाहरण झाग का है, शुरू में वही ज़बरदस्त और फूला हुआ नज़र आता है लेकिन कुछ ही समय के बाद वास्तविकता सामने आ जाती है, झाग बैठ जाता है और जो चीज़ लाभदायक है वह बाक़ी और क़ायम रहती है।

لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ
لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ
سُوءُ الْحِسَابِ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾ أَفَمَن يَعْلَمُ
أَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو
الْأَلْبَابِ ﴿١٩﴾ الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنقُضُونَ الْمِيثَاقَ ﴿٢٠﴾
وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَ
يَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ﴿٢١﴾ وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ
وَأَقَامُوا الصَّلَوٰةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرَءُونَ
بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾ جَنَّاتُ عَدْنٍ
يَدْخُلُونَهَا وَمَن صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ
يَدْخُلُونَ عَلَيْهِم مِّن كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾ سَلَامٌ عَلَيْكُم بِمَا صَبَرْتُمْ ۚ فَنِعْمَ
عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾ وَالَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِن بَعْدِ مِيثَاقِهِ
وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۙ أُولَٰئِكَ
لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ
وَفَرِحُوا بِالْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَوٰةُ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾

منزل٣

जिन्होंने अपने पालनहार की बात मानी उन्हीं के लिए भलाई है और जिन्होंने उसकी बात नहीं मानी अगर ज़मीन में जो कुछ है वह उनके पास हो और उतना ही और भी हो तो वह सब फ़िद्या (मुक्ति–धन) में दे दें, ऐसों ही के लिए बुरा हिसाब है और उनका ठिकाना दोज़ख़ है और वह बहुत बुरी रहने की जगह है (18) भला वह व्यक्ति जो यह जानता हो कि आप पर जो उतरा वह सच ही है, क्या उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जो अंधा हो, नसीहत तो बुद्धि वाले ही प्राप्त करते हैं (19) जो अल्लाह के अहद (प्रतिज्ञा) को पूरा करते हैं और समझौते का उल्लंघन नहीं करते (20) और जिसको अल्लाह ने जो जोड़ने का आदेश दिया वे उसको जोड़ते हैं और अपने पालनहार से डरते रहते हैं और बुरे हिसाब[1] से भयभीत रहते हैं (21) और जो अपने पालनहार की प्रसन्नता चाहते हुए जमे रहे और उन्होंने नमाज़ क़ायम की और हमने उनको जो रोज़ी दी उसमें से उन्होंने छिपकर भी और खुल्लम खुल्ला ख़र्च किया और वे भलाई से बुराई को मिटाते हैं ऐसों ही के लिए आख़िरत का घर है (22) हमेशा रहने के लिए बाग़ हैं वे (ख़ुद भी) उसमें प्रवेश करेंगे और उनके बाप दादा और उनकी पत्नियां और उनकी संतानों में जो भी (उसके) लायक़ हुए वे भी और हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उनके पास (कहते हुए) आएंगे (23) कि तुम पर सलामती हो, यह फ़ल है तुम्हारे जमे रहने का, बस आख़िरत का घर क्या ही अच्छा है (24) और जो अहद (प्रतिज्ञा) को मज़बूत करके उसको तोड़ देते हैं और अल्लाह ने जिसके जोड़ने का आदेश दिया उसको तोड़ते हैं और धरती में बिगाड़ करते हैं ऐसों के लिए फिटकार (लानत) है और उनके लिए बहुत बुरा घर है (25) और अल्लाह जिसके लिए चाहता है रोज़ी फैला देता है और जिसके लिए चाहता है कम कर देता है और वे दुनिया के जीवन में ही मस्त हो गए जबकि दुनिया का जीवन तो आख़िरत के आगे मामूली सामान से ज़्यादा कुछ नहीं[2] (26)

(1) बुरे हिसाब का मतलब हिसाब में अन्याय नहीं बल्कि सख़्ती है (2) मानने वालों और न मानने वालों का अंतर बताया जा रहा है, सही रास्ते को न मानने वालों की मिसाल अंधों की है वे इधर उधर ठोकरें खाते फिरते हैं और आख़िरत में उनके लिए तबाही है, अपने बचाव के लिए वे कुछ भी करना चाहें तो वह स्वीकार न होगा, और ईमान वाले जो अल्लाह से डरते हैं सब्र से काम लेते हैं, नमाज़ों की पाबंदी करते हैं, अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते हैं उनका हर प्रकार से स्वागत होगा, जन्नत के आठों दरवाज़ों से फ़रिश्ते उनको सलाम करके खुश आमदीद (स्वागतम) कहेंगे, आगे फिर वही बात कही जा रही है कि जिसने दुनिया के जीवन को ही सब कुछ समझ लिया उसने यह नहीं सोचा कि दुनिया भी अल्लाह के हाथ में है और आख़िरत के मुक़ाबले में उसकी कोई हैसियत नहीं है बस वह फिटकार का भागी हुआ।

और काफ़िर कहते हैं कि उन पर उनके पालनहार की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी, कह दीजिए अल्लाह जिसको चाहता है पथभ्रष्ट कर देता है और जो उसकी ओर पलटे उसको वह रास्ता देता है (27) जो ईमान लाए और अल्लाह की याद से उनके दिल संतुष्ट हैं, याद रखना! अल्लाह की याद ही से दिलों को संतोष प्राप्त होता है (28) जिन्होंने माना और भले काम किये उनको आनंद ही आनंद है और अच्छा अंजाम है[1] (29) इसी प्रकार हमने आपको एक उम्मत (समुदाय) में भेजा है इससे पहले भी उम्मतें (समुदाय) गुज़र चुकी हैं ताकि जो वह्य हमने आपकी ओर भेजी है वह आप उनको सुना दें और वे रहमान का इनकार करते हैं, कह दीजिए वही मेरा पालनहार है उसके सिवा कोई माबूद (पूजा के लायक़) नहीं उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की ओर मुझे लौट कर जाना है (30) और अगर कुरआन ऐसा होता की उससे पहाड़ चलने लगते या उससे ज़मीन टुकड़े हो जाती या उसके द्वारा मुर्दों से बात होने लगती (तो भी यह ईमान लाने वाले न थे), सच्चाई तो यह है सब अधिकार अल्लाह का है, तो क्या ईमान वाले एकाग्र नहीं हो जाते कि अगर अल्लाह चाहता तो सब लोगों को हिदायत दे देता और बराबर काफ़िरों को उनकी करतूतों के कारण कोई न कोई आफ़त लगी रहती है या उनके घरों के आस पास उतरती रहती है यहां तक कि अल्लाह का वादा आ पहुंचेगा, बेशक अल्लाह वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता[2] (31) और आप से पहले भी रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया जा चुका है तो मैंने काफ़िरों को ढील दी फिर उनको धर पकड़ा तो मेरी सज़ा कैसी (सख़्त) हुई (32) भला वह जो हर व्यक्ति के तमाम कामों पर निगाह रखे हुए है (उसको तो मानते नहीं) और अल्लाह के साझीदार ठहराते हैं, कहिये कि ज़रा उनका नाम तो बताना या तुम उसको वह जता रहे हो जो वह ज़मीन में जानता नहीं या सिर्फ़ ऊपर–ऊपर की बात है, बात यह है कि इनकार करने वालों के लिए उनका धोखा मोहक कर दिया गया और वे रास्ते से रोक दिये गए और अल्लाह जिसको गुमराह कर दे उसको कोई राह पर नहीं ला सकता (33)

(1) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अनेक चमत्कार दिये गए, फिर भी काफ़िर नए–नए मुअजिज़ों की मांग करते रहते थे, यहां कहा जा रहा है कि उनकी यह निरंतर मांग ख़ुद उनकी पथभ्रष्टता का प्रमाण है जो मानना चाहता वह ख़ुद अल्लाह से सम्पर्क साधता है और उसके नाम से सुकून प्राप्त करता है फिर हर हाल में वह संतुष्ट रहता है, दुनिया में भी उसको ईमान की मिठास महसूस होती है और आख़िरत का घर तो उसी के लिए है ही (2) ईमान वालों को कभी ख़्याल होता था कि काफ़िरों की मांगें पूरी कर दी जाएं तो शायद वे ईमान ले आएं, उसका उत्तर है, कैसे ही मुअजिज़े सामने आ जाएं यह ईमान लाने वाले नहीं, ईमान वालों को अपना दिमाग़ साफ़ कर लेना चाहिए जिसको चाहत होती है उसके लिए एक बात काफ़ी होती है, फिर यह इनकार करने वाले विभिन्न प्रकार की परेशानियों में घिरते हैं, उनकी बस्तियों के आसपास ऐसी मुसीबतें आती हैं जिससे यह भयभीत हो जाते हैं, फिर भी नहीं मानते, तो जो हठ पर अड़ जाता है उसके लिए बड़े बड़े प्रमाण भी काफ़ी नहीं, अल्लाह तआ़ला उसको गुमराही में पड़ने देता है कोई उसको सत्यमार्ग पर नहीं ला सकता।

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اُكُلُهَا دَاۗىِٕمٌ وَّظِلُّهَا ۭ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ڰ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ۭ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ۭ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ﴿٣٦﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۭ وَلَىِٕنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَاۗءَهُمْ بَعْدَمَا جَاۗءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ۭ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾ يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَاۗءُ وَيُثْبِتُ ښ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿٣٩﴾ وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۭ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ۭ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾

منزل۳

दुनिया के जीवन में भी उनके लिए अज़ाब (दण्ड) है और अख़िरत का अज़ाब (दण्ड) बहुत ही कठोर है और कोई नहीं है जो उनको अल्लाह से बचाने वाला हो[1] (34) वह जन्नत जिसका वादा परहेज़गारों से हुआ है उसकी मिसाल यह है कि उसके नीचे नहरें जारी हैं, उसके फल भी सदा (बहार) हैं और उसकी छाया भी, यह बदला है उन लोगों के लिए जिन्होंने तक़्वे को अपनाया और काफ़िरों का परिणाम दोज़ख़ है (35) और जिन्हें हमने किताब दी थी वह आप पर जो उतरा उससे ख़ुश होते हैं और कुछ गिरोह वे हैं जो उसके कुछ भाग का इनकार करते हैं, कह दीजिए कि मुझे यह आदेश है कि मैं अल्लाह की इबादत करूं और उसके साथ साझी न ठहराऊं, मैं उसी की ओर बुलाता हूं और उसी की ओर मुझे लौट कर जाना है (36) और इसी तरह हमने इसको आदेश पत्र बनाकर अरबी में उतारा है और ज्ञान आप तक पहुंच जाने के बाद भी अगर आप उनकी इच्छाओं पर चले तो अल्लाह के मुक़ाबले में न कोई आपका समर्थक होगा और न बचाने वाला[2] (37) और हमने आप से पहले भी रसूल भेजे और उनको पत्नियां और बच्चे भी दिए और किसी रसूल के बस में नहीं कि वह बिना अल्लाह के आदेश के कोई एक आयत ले आए, हर युग के लिए एक किताब है (38) अल्लाह जो चाहता है मिटाता है और जो चाहता है बाक़ी रखता है और अस्ल किताब उसी के पास है (39) और हमने उनको जिस (अज़ाब) की वईद (धमकी) सुना रखी है अगर उसका कुछ भाग आपको दिखा दें या (उससे पहले ही) आपको मृत्यु दे दें तो आपका काम तो पहुंचाना है और हिसाब हमारे ज़िम्मे है[3] (40) क्या वे देखते नहीं कि ज़मीन को हम उसके किनारे से कम कर रहे हैं और फ़ैसला अल्लाह ही करता है उसके फ़ैसले को कोई फेर नहीं सकता और वह बहुत जल्द हिसाब चुका देने वाला है[4] (41)

(1) इसमें अहल–ए–किताब के विभिन्न गिरोहों का वर्णन है, उनमें पूर्ण रूप से मानने वाले भी हैं और जो नहीं मानते वे भी इसके बड़े भाग के मानने पर मजबूर हैं, इसमें ईमान वालों के लिए तसल्ली भी है और मक्के के शिर्क करने वालों को चेतावनी भी कि तुम्हारे पास कोई किताब नहीं फिर भी तुम इसको नहीं मानते (2) जब इंसानों के सरदार और पैग़म्बरों के सरदार को अल्लाह के बन्दे (उपासक) होने की परिधि से थोड़ा भी क़दम बाहर निकालने की गुंजाइश नहीं दी गई तो किसी दूसरे का उल्लेख ही क्या (3) काफ़िरों को आपत्ति थी कि अगर यह पैग़म्बर हैं तो इनके बीवी बच्चे क्यों हैं? उसका उत्तर दिया जा रहा है कि पहले भी पैग़म्बरों के बीवी बच्चे हुए हैं ताकि इन्सान के ज़िम्मे जो ज़िम्मेदारियां हैं उसको किस प्रकार निभाया जाए उसका नमूना सामने आ सके और पैग़म्बर का काम अल्लाह के आदेशों को पहुंचाना है, युग के अनुसार अल्लाह तआला उनमें परिवर्तन करता रहता है, उम्मुल किताब अर्थात लौह–ए–महफ़ूज़ उसी के पास है, हर युग में उसने अपनी किताब उतारी, अब इस आख़िरी युग के लिए पवित्र क़ुरआन उतारा गया, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करके कहा जा रहा है कि आपका काम पहुंचा देना है न मानने वालों पर अज़ाब उनके सामने आए या न आए आपकी कोई ज़िम्मेदारी नहीं (4) इसमें एक इशारा तो काफ़िरों के लिए धीरे–धीरे धरती संकुचित होने की ओर है और शायद दूसरी वास्तविकता यह भी बताई गई है कि दुनिया की परिधि धीरे–धीरे कम हो रही है, एक समय आएगा कि सब समाप्त हो जाएगा।

और उनसे पहले भी लोग छल कर चुके हैं बस तदबीरें (उपायें) तो सब अल्लाह ही के पास हैं, हर–हर व्यक्ति जो भी करता है उसको वह जानता है और जल्द ही काफ़िरों को पता चल जाएगा कि आख़िरत का घर किसके लिए है (42) और इनकार करने वाले कहते हैं कि तुम पैग़म्बर नहीं हो, कह दीजिए कि अल्लाह और वह जिसके पास किताब का ज्ञान है हमारे तुम्हारे बीच गवाही के लिए काफ़ी हैं[1] (43)

सूरह इब्राहीम

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अलिफ़ लाम रॉ, यह किताब है जो हमने आप पर इसलिए उतारी है ताकि आप लोगों को उनके पालनहार के आदेश से अंधेरे से रौशनी में निकाल लाएं, उस रास्ते पर जो ज़बरदस्त (और) प्रशंसा के लायक़ है (1) उस अल्लाह का है जिसका सब कुछ है जो भी आसमानों और ज़मीन में है और कठोर दण्ड से इनकार करने वालों के लिए बड़ी बर्बादी है (2) जो आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया के जीवन को पसंद करते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उसमें कमी तलाश करते रहते हैं[2] ऐसे लोग दूर गुमराही में जा पड़े हैं (3) और हमने हर पैग़म्बर को उसकी क़ौम के पास उसी की ज़ुबान में भेजा ताकि वह उनके सामने (अल्लाह के आदेश) खोल खोल कर बयान कर दे, फिर अल्लाह जिसको चाहता है गुमराह करता है और जिसको चाहता है हिदायत देता है और वह ज़बरदस्त है हिकमत वाला है[3] (4) और बेशक हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि अपनी क़ौम को अंधेरों से रौशनी की ओर निकाल लाओ और उनको अल्लाह के दिन याद दिलाओ[4], बेशक इसमें हर उस व्यक्ति के लिए निशानियां हैं जो ख़ूब जमने वाला बड़ा एहसान मानने वाला हो (5)

(1) सारे छल–कपट दुनिया की हद तक हैं फिर अल्लाह उनको यहां कैसे ठिकाने लगाता है और आख़िरत में तो सब कुछ खुल कर सामने आ जाएगा, और अगर वे कहते हैं कि आप पैग़म्बर नहीं तो आपके पैग़म्बर होने पर तो खुदा गवाह है और जिनके पास आसमानी किताबें हैं अगर वे इन्साफ़ के साथ इन किताबों को देखें तो वे भी गवाह होंगे और जिन्होंने इन्साफ़ किया है उन्होंने गवाही दी है (2) यानी इस्लाम में कोई न कोई ख़राबी तलाशते रहते हैं ताकि उनको आपत्ति का अवसर मिल सके, स्पष्ट है इस सरकशी और हठ के बाद सच्चाई का रास्ता ही बन्द हो जाता है (3) मक्के के काफ़िर कहते थे कि अगर कुरआन किसी ऐसी भाषा में होता जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नहीं जानते तो यह मुअ़जिज़ा होता, हम उसको मान लेते, उसी का उत्तर दिया जा रहा है और यह साफ़ किया जा रहा है कि जो हट पर आ जाए हिदायत (संमार्ग) से दूर गुमराही में पड़ जाता है (4) "अय्यामुल्लाह" (अल्लाह के दिन) एक पारिभाषिक शब्द है, इससे आशय वे दिन हैं जिनमें अल्लाह ने विशेष और महत्वपूर्ण घटनाएं दिखाई हैं और अवज्ञाकारियों को सज़ा दी है और मानने वालों को नजात दी है।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ
اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَ
يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿٦﴾ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ
لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ﴿٧﴾ وَقَالَ
مُوْسٰٓى اِنْ تَكْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ
اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿٨﴾ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ
قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۬ۛ وَالَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۛؕ لَا
يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ؕ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْٓا
اَيْدِيَهُمْ فِيْٓ اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْٓا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ
وَاِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿٩﴾ قَالَتْ رُسُلُهُمْ
اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَدْعُوْكُمْ
لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ
قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا
عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٠﴾

منزل ٣

और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो जब उसने तुम्हें उन फ़िरऔन वालों से छुटकारा दिलाया जो तुम्हें सख़्त तकलीफ़ें देते थे और तुम्हारे बेटों को काट डालते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे और इसमें तुम्हारे पालनहार की ओर से बड़ी परीक्षा थी (6) और जब तुम्हारे पालनहार ने आगाह कर दिया कि अगर तुमने एहसान माना तो हम और देंगे और अगर तुमने नाशुक्री की तो मेरी मार बड़ी सख़्त है (7) और मूसा ने कहा कि अगर तुम और सबके सब धरती वाले इनकार कर दें तो अल्लाह बेपरवाह है सब ख़ूबियां रखता है[1] (8) क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बरें नहीं पहुंचीं जो तुमसे पहले नूह की क़ौम और आद व समूह गुज़रे हैं और जो उनके बाद हुए हैं जिनको अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, उनके पास उनके पैग़म्बर खुली निशानियां लेकर आए तो उन्होंने अपने हाथ उनके मुंह पर रख दिये और बोले तुम जो लेकर आए हो हम उसको नहीं मानते हैं और तुम हमें जिस चीज़ की ओर बुला रहे हो हम उसके बारे में ऐसे शक में पड़े हुए हैं कि दिल ठहरता ही नहीं (9) उनके पैग़म्बरों ने कहा कि क्या अल्लाह के बारे में शक है जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है? वह तुम्हें बुलाता है ताकि तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर दे और एक अवधि तक तुम्हें मोहलत दे, वे बोले तुम तो हमारे ही जैसे इंसान हो, तुम चाहते हो कि हमें उस चीज़ से रोक दो जिसकी पूजा हमारे बाप दादा करते चले आए हैं, बस कोई खुला हुआ प्रमाण हमारे सामने लाओ[2] (10)

---

(1) अल्लाह को न किसी की इबादत (पूजा) की ज़रूरत है न एहसान मानने की, जो आभारी होगा वह अपने साथ भला करेगा, हदीस–ए–क़ुदसी में हैः– अल्लाह कहता है, ऐ मेरे बन्दो! अगर तुम्हारे अगले–पिछले सब इंसान और जिन्नात सबसे बड़े परहेज़गार व्यक्ति की तरह हो जाएं तो उससे मेरी सत्ता में कुछ भी बढ़ोत्तरी न होगी और अगर सब ही सब से बुरे व्यक्ति की तरह हो जाएं तो मेरी सत्ता में थोड़ी भी कमी न होगी (2) हर पथभ्रष्ट क़ौम ने अपने पूर्वजों की दुहाई दी है और कहा है कि यह हमारे यहां होता चला आया है, और पैग़म्बरों से लगातार चमत्कार की मांग की और नहीं माना, मुंह पर हाथ रख देना बिल्कुल न सुनने और ध्यान न देने की जगह मुहावरे के रूप में बोला जाता है।

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ
عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَاۤ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ
اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَمَا لَنَاۤ اَلَّا
نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰٮنَا سُبُلَنَا ؕ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَاۤ
اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَاۤ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِىْ مِلَّتِنَا ؕ
فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۳﴾ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ
مِنْ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِىْ وَخَافَ وَعِيْدِ ﴿۱۴﴾ وَاسْتَفْتَحُوْا
وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿۱۵﴾ مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ
صَدِيْدٍ ﴿۱۶﴾ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ
مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿۱۷﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ۣ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِىْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ
لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَىْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿۱۸﴾
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ
وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿۱۹﴾ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿۲۰﴾

ع ۲

منزل۳

उनके रसूलों ने उनसे कहा हम बेशक तुम्हारे ही जैसे इंसान हैं लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में जिस पर चाहता है एहसान करता है और हम अल्लाह के आदेश के बिना तुम्हारे पास कोई प्रमाण नहीं ला सकते और ईमान वालों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा करें (11) और आख़िर क्यों न हम अल्लाह पर भरोसा करें जबकि उसने हमें हमारे रास्ते समझा दिये और तुमने जो हमें तकलीफें दी हैं उस पर हम सब्र ही करेंगे और भरोसा करने वालों को चाहिए अल्लाह ही पर भरोसा रखें (12) और इनकार करने वालों ने अपने रसूलों से कहा हम तुम्हें अपने देश से निकाल कर रहेंगे, या तो तुम हमारी ही मिल्लत (धर्म) में वापस आ जाओ, तो अल्लाह ने उनको वह्य भेजी कि हम अत्याचारियों को बर्बाद करके रहेंगे (13) और उनके बाद देश में निश्चित ही हम तुम ही को बसाएंगे और यह उसको मिलता है जो मेरे सामने खड़े होने से डरता है और मेरी वईद (धमकी) से डराता हो[1] (14) और उन्होंने फ़ैसला चाहा और (परिणाम यह हुआ कि) हर सरकश ज़िद्दी असफल हुआ (15) उसके आगे दोज़ख़ है और उसको पीप का पानी पिलाया जाएगा (16) उसे वह घूंट–घूंट पियेगा और उसे गले से उतारना उसके लिए कठिन होगा और हर ओर से मौत उसे घेर लेगी और वह मरेगा नहीं और उसके आगे कठोर दण्ड है[2] (17) अपने पालनहार का इनकार करने वालों का उदाहरण (ऐसा है कि) उनके काम रेत की तरह हैं जिस पर आंधी के दिन हवा तेज़ गुज़र जाए, जो कुछ उन्होंने किया उस पर उनका कुछ बस न चलेगा यही दूर गुमराही में जा पड़ना है (18) क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह ही ने आसमानों और ज़मीन को ठीक पैदा किया, अगर वह चाहे तो तुम्हारी छुट्टी कर दे और एक नई सृष्टि ले आए (19) और यह अल्लाह के लिए ज़रा भी कठिन नहीं[3] (20)

(1) काफ़िरों ने कहा कि तुम अपनी बड़ाई मत बताओ, चुपचाप हममें घुल–मिल कर रहो और जिन्होंने बात मानी वे भी पुराने धर्म पर आ जाएं वरना तुम सबको देश से निकाल दिया जाएगा, तो अल्लाह की ओर से वह्य आई कि यह तुम्हें क्या निकालेंगे हम ही उन्हें तबाह करके हमेशा के लिए निकाल देंगे फिर कभी यह यहां वापस न आ सकेंगे और उनके स्थान पर सच्चे वफादारों को धरती पर बसाएंगे जो हम से डरते हैं और हमारा कहना मानते हैं, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा के साथ यही हुआ, शुरू में मक्के से निकाले गए और आख़िरकार वही निकलना वहां इस्लाम के निरन्तरता का कारण बन गया (2) जब बात सीमा से आगे बढ़ गई तो पैग़म्बरों ने फ़ैसला चाहा, तो अल्लाह का अज़ाब आया और वह सब ज़िद्दी सरकश तबाह हुए, फिर आख़िरत का अज़ाब भी इसके अलावा मिलेगा, गर्म पीप जो पिलाया जाएगा लगेगा कि हर ओर कठोर यातना की चढ़ाई है, हर ओर से मौत पुकार रही है, चाहेंगे कि मौत आ जाए लेकिन वह भी न आएगी, बस एक अज़ाब के पीछे दूसरा अज़ाब आता रहेगा (3) जो काफ़िरों ने अच्छे काम भी किये उसका उदाहरण दिया गया कि जैसे कोई रेत पर महल निर्माण करे, एक हवा उसको उड़ा ले जाएगी और उनका उस पर कुछ बस न चलेगा।

और सब के सब अल्लाह के सामने पेश होंगे तो कमज़ोर लोग बड़े बनने वालों से कहेंगे कि हम तो आप ही के पैरोकार थे तो क्या आप हमें अल्लाह के अज़ाब (दण्ड) से कुछ भी बचा सकते हैं? वे कहेंगे कि अगर अल्लाह ने हमें हिदायत दी होती तो हम ज़रूर तुम्हें रास्ता बता देते, अब तो हमारे लिए बराबर है चीखें चिल्लाएं या सब्र कर लें, हमारे लिए छुटकारे का कोई उपाय नहीं (21) और जब फ़ैसला हो चुकेगा तो शैतान (अपने मानने वालों से) कहेगा सच्चाई यह है अल्लाह ने तुम से सच्चा वादा किया और मैंने भी तुम से वादा किया, फिर तुमसे वादा खिलाफ़ी की, तो तुम पर मेरा कोई अधिकार तो था नहीं सिवाय इसके कि मैंने तुम्हें बुलाया तो तुम मान गये, तो मुझ पर आरोप न लगाओ, ख़ुद अपने पर आरोप लगाओ, (आज) न मैं तुम्हारी फ़रियाद पर तुम्हारी मदद कर सकता हूं और न तुम मेरी फ़रियाद पर मेरी मदद कर सकते हो, और जो तुमने पहले मुझे साझी ठहराया मैंने (आज) उसका इनकार कर दिया, बेशक अन्याय करने वालों ही के लिए दुखद अज़ाब है[1] (22) और जो ईमान लाए और उन्होंने भले काम किये वे ऐसी जन्नतों में दाख़िल किये जाएंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, अपने पालनहार के आदेश से हमेशा उसी में रहेंगे, वहां वे आपस में एक दूसरे का स्वागत सलाम से करेंगे (23) क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह ने अच्छी बात का उदाहरण एक अच्छे पेड़ से दिया जिसकी जड़ मज़बूत है और उसकी डालियां आसमान से बातें करती हैं (24) अपने पालनहार के आदेश से वह हर समय फ़ल देता रहता है और अल्लाह लोगों के लिए उदाहरण देता है कि शायद वे नसीहत प्राप्त करें (25) और बुरी बात का उदाहरण बुरे पेड़ जैसा है जिसको ज़मीन के ऊपर ही से उखाड़ लिया गया हो, वह ज़रा भी अपनी जगह खड़ा नहीं रह सकता[2] (26)

(1) जब दोजख़ी इब्लीस को आरोपित करेंगे तो वह कहेगा कि ख़ुद तुमने अपनी मूर्खता से ख़ुदाई में साझीदार बनाया (अर्थात कुछ तो सीधे सीधे शैतान की पूजा करने लगे और बहुत से लोगों ने उसकी बात ख़ुदा की तरह मानी) वह कहेगा कि मैं इससे ख़ुद अलग हूँ, मैंने तुम्हें लालच दी तो तुम ख़ुद पीछे चल दिये कोई मेरा अधिकार तो तुम पर था नहीं, ग़लती ख़ुद तुम्हारी है कि तुमने पैग़म्बरों की बात न मानी जिन्होंने सही रास्ता दिखाया, अब ख़ुद अपनी ही भर्त्सना करो, मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूं? यहां तो तुम मेरी भी मदद नहीं कर सकते, अब हर अत्याचारी और शिर्क करने वाले को अपनी करनी की सज़ा भुगतनी है, दोज़ख़ वाले तो इस लान–तान (धित्कार) में होंगे, आगे ईमान वालों का वर्णन है कि वे एक दूसरे को ख़ुश आमदीद (स्वागतम) और सलाम करके बधाई देंगे (2) कलिमा–ए–तय्यबा से आशय कलिमा–ए–तौहीद है यानी "ला इला ह इल्लल्लाहु" और कलिमा–ए–ख़बीसा से आशय है शिर्क और कुफ़्र की बातें, कलिमा–ए–तय्यबा का उदाहरण अच्छे पेड़ से दिया गया है जिसकी जड़ें मज़बूत व स्थिर और डालियां आसमान से बातें करती हुई पूरे तौर से लाभ ही लाभ, जो उससे पूरे तौर पर जुड़ जाए उसको कोई हिला नहीं सकता, कैसी ही मुसीबत आए उसका ईमान हिल नहीं सकता, इसके विपरीत शिर्क और कुफ़्र को स्थिरता नहीं, न उसकी कोई जड़, आज कुछ और, कल कुछ और परिणाम बर्बादी के सिवा कुछ नहीं।

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٧﴾
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ
دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۗ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ
اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ
اِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾ قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ
يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿٣١﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ
مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ
بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿٣٢﴾ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا
سَاَلْتُمُوْهُ ۗ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۗ اِنَّ الْاِنْسَانَ
لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا
الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿٣٥﴾

और अल्लाह ईमान वालों को मज़बूत बात से इस दुनिया में भी मज़बूत करता है और आख़िरत में भी, और अल्लाह अत्याचारियों को गुमराह करता है और अल्लाह तो जो चाहता है करता है[1] (27) क्या आपने उनको नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत के बदले कुफ़्र किया और अपनी क़ौम को तबाही के घर ला उतारा (28) जो दोज़ख़ है, वे उसमें प्रवेश करेंगे और वह बहुत बुरा ठिकाना है (29) और उन्होंने अल्लाह के बराबर बनाए ताकि वे अल्लाह के रास्ते से बहकाएं, कह दीजिए कुछ मज़ा कर लो फिर तुम्हारा अंजाम दोज़ख़ है[2] (30) मेरे ईमान वाले बंदों से कह दीजिए कि वे नमाज़ क़ायम रखें और जो हमने उनको दिया है उसमें से छिपे और खुले ख़र्च करते रहें इससे पहले–पहले कि वह दिन आ जाए कि जिसमें न कोई ख़रीदना बेचना होगा और न दोस्ती (काम आएगी) (31) वह अल्लाह जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और ऊपर से पानी बरसाया फिर उससे तुम्हारी रोज़ी के लिए फल निकाले और तुम्हारे लिए नाव काम पर लगा दीं ताकि उसके आदेश से समुद्र में चलती रहें और तुम्हारे लिए नदियां भी काम पर लगा दीं (32) और तुम्हारे लिए सूरज और चाँद को काम में लगा दिया, वे दोनों अपने काम पर लगे हैं और रात व दिन को तुम्हारे लिए काम पर लगा दिया (33) और जो तुमने मांगा वह उसने तुम्हें दिया और अगर तुम अल्लाह के उपकार को गिनने लग जाओ तो तुम उसको गिन नहीं सकते, बेशक इंसान बड़ा ही अन्याय करने वाला और बहुत ही नाशुक्रा है[3] (34) और जब इब्राहीम ने कहा ऐ मेरे पालनहार! इस शहर को अमन वाला (शान्तिमय) बना दे और मुझे और मेरे बेटों को मूर्तियों की पूजा करने से दूर रख[4] (35)

---

(1) तौहीद का कलिमा जब दिल में रच बस जाता है तो ईमान वाला दुनिया में भी उसको छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता और क़ब्र में इसी कलिमे के कारण उसका क़दम जमा रहेगा जिसके परिणाम स्वरूप उसको असली कामयाबी हासिल होगी (2) काफ़िर सरदारों की ओर संकेत है जिन्हें अल्लाह ने नेअ़मतों से नवाज़ा लेकिन वे अल्लाह का इनकार करने और नाशुक्री के कारण दोज़ख़ के अधिकारी बने, आगे ईमान वालों को आख़िरत की तैयारी का आदेश है जहां केवल दुनिया में किए हुए काम ही फ़ायदा पहुंचाएंगे, वहां न कोई दोस्त काम आएगा और न नातेदार (3) यह अल्लाह के असीम ईनामों का वर्णन है, इस प्रकार तौहीद का प्रमाण दिया जा रहा है (4) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को यहूदी–ईसाई भी मानते थे और मक्के के मुशरिक भी, उनकी दुआ यहां उल्लेख करके चेताया जा रहा है कि हज़रत इब्राहीम तो कुफ़्र व शिर्क से इतने दूर थे, तुम आख़िर इसमें कहां से पड़ गए।

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ
تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾ رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ
ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ
وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٧﴾ رَبَّنَآ
اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ۗ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ
مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ﴿٣٨﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ
وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ۗ اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ
الدُّعَآءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ
رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ
وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ
اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۚ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ
لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿٤٢﴾ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ
رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿٤٣﴾

ركوع ٦

منزل ٣

ऐ मेरे पालनहार! इन (मूर्तियों) ने बहुत लोगों को रास्ते से हटाया तो जो मेरी राह चला तो वह मेरा है और जिसने मेरी बात न मानी तो बेशक तू बहुत माफ़ करने वाला बड़ा दयालु है (36) ऐ हमारे पालनहार! मैंने अपनी कुछ संतानों को तेरे सम्मान वाले घर के पास ऐसी घाटी में बसाया है जहां खेती के लायक़ ज़मीन नहीं, ऐ हमारे पालनहार! केवल इसलिए कि वे नमाज़ क़ायम रखें बस तू लोगों के दिलों को ऐसा कर दे कि वे उनके इच्छुक रहें और उनको फलों से रोज़ी पहुंचा ताकि वे शुक्रगुज़ार रहें (37) ऐ हमारे पालनहार! हम जो भी छिपाते और जो भी ज़ाहिर करते हैं तू उसको जानता है और न धरती में अल्लाह से कुछ छिप सकता है और न आसमान में (38) अल्लाह ही असल प्रशंसा का पात्र है जिसने बुढ़ापे में मुझे इस्माईल और इस्हाक़ प्रदान किये, बेशक मेरा पालनहार दुआ का ख़ूब सुनने वाला है (39) ऐ मेरे पालनहार! मुझे नमाज़ क़ायम करने वाला बना और मेरी संतान को भी, ऐ मेरे पालनहार! और मेरी दुआ तो सुन ही ले (40) ऐ हमारे पालनहार! जिस दिन हिसाब का मामला पेश आएगा उस दिन मुझे, मेरे मां–बाप और सारे ईमान वालों को माफ़ कर दे[1] (41) और अत्याचारी जो कर रहे हैं उससे अल्लाह को हरगिज़ असावधान मत समझना वह तो उनको उस दिन तक मोहलत दे रहा है जिसमें उनकी आंखें पत्थरा जाएंगी (42) अपने सिरों को उठाए दौड़ते होंगे पलक भी न झपका सकेंगे और उनके दिल उड़े जा रहे (हवा–रवाँ) होंगे[2] (43)

(1) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की पूरी दुआ हिकमत से परिपूर्ण और प्रभावी है, न मानने वालों के लिए उन्होंने बद्दुआ (श्राप) नहीं की, इसको अल्लाह के हवाले किया और उसके गुण मग़्फ़िरत (माफ़ी) व रहमत (दया) का हवाला दिया, अल्लाह ने उनकी यह दुआ ऐसी स्वीकार की कि दुनिया के लोग खिंच–खिंच कर वहां आते हैं और जो आता है वह उसका प्रेमी होकर जाता है और बार–बार आने की इच्छा रखता है, ख़ुद वहां कोई फल नहीं होता लेकिन सारी दुनिया के फल मौसम बेमौसम बड़ी मात्रा में वहां दिखाई पड़ते हैं, मां–बाप उनके मुश्रिक थे, उनके लिए माफ़ी की दुआ उन्होंने इसलिए की कि शायद वे ज़िंदा हों और उन्हें ईमान प्राप्त हो जाए (2) ऊपर कहा गया था कि इन काफ़िरों ने अपनी क़ौम को तबाही के किनारे ला खड़ा किया है, हो सकता है कि उनके बाहरी टीप–टाप से किसी के दिल में विचार पैदा होता, इन आयतों में उसका जवाब है कि अल्लाह ने उन्हें ढील दे रखी है, अंततः वे एक भयानक अज़ाब में पकड़े जाएंगे, आज की परिस्थितियों से उसको जोड़ कर देखा जा सकता है कि आज हर जगह काफ़िरों का ही राज है लेकिन कल क़यामत में यह लोग चेतनाहीन होकर फटी आंखों के साथ फिर रहे होंगे और हर प्रकार से अपमान उनको घेर लेगा।

وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ
الرُّسُلَ ؕ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ﴿۴۴﴾ وَّسَكَنْتُمْ
فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ
وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿۴۵﴾ وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ
وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿۴۶﴾ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ
وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۴۷﴾ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ
غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿۴۸﴾ وَتَرَى
الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿۴۹﴾ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ
قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ﴿۵۰﴾ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا
كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۵۱﴾ هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا
بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۵۲﴾ ع ۱۹

سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ ۫ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱﴾

منزل ۳

और उस दिन से लोगों को डराइये, जब अज़ाब उन पर आ पहुंचेगा तो अन्याय करने वाले कहेंगे ऐ हमारे पालनहार! थोड़ी सी अवधि के लिए हमें और मोहलत दे दे, हम तेरी बात मान लेंगे और पैग़म्बरों के रास्ते पर चलेंगे (उनसे कहा जाएगा) क्या तुमने इससे पहले क़समें खा–खा कर यह नहीं कहा था कि तुम्हारा तो पतन हो ही नहीं सकता (44) और तुम उन लोगों की बस्तियों में रहते थे जो अपने साथ अत्याचार कर चुके थे और तुम्हारे सामने खुलकर आ चुका था कि हमने उनके साथ क्या किया और तुम्हारे सामने उदाहरण भी दिये थे[1] (45) और उन्होंने अपनी चालें चलीं और उनकी चालें तो अल्लाह ही के कब्ज़े में हैं, यद्यपि उनकी कुछ चालें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी अपनी जगह से टल जाएं (46) तो अल्लाह के बारे में हरगिज़ यह न सोचना कि वह अपने पैग़म्बरों से वादा ख़िलाफ़ी करने वाला है बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है बदला लेने वाला है (47) जिस दिन ज़मीन यह ज़मीन न रहेगी और (न) आसमान (यह आसमान होगा) और एक ज़बरदस्त अल्लाह के सामने सबकी पेशी होगी (48) और आप उस दिन अपराधियों को देखेंगे कि वे बेड़ियों में जकड़े हुए होंगे (49) उनके कुर्ते गंधक के होंगे और उनके चेहरों पर आग की लपटें होंगी (50) (यह सब इसलिए होगा) ताकि अल्लाह हर–हर व्यक्ति को उसकी करतूतों का बदला दे दे बेशक अल्लाह जल्द हिसाब चुका देने वाला है[2] (51) यह लोगों के लिए एक संदेश है ताकि लोग सावधान कर दिये जाएं और ताकि जान लें कि वह तो केवल एक ही पूजनीय है और ताकि बुद्धि वाले होशियार हो जाएं (52)

सूरह हिज्र

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अलिफ लाम रॉ, यह (अल्लाह की) किताब और एक रौशन कुरआन की आयतें हैं (1)

(1) यानी तुम वही तो हो जिनकी निर्भय ज़बानें यह कहती नहीं थकती थीं कि हमारी प्रतिष्ठा व वर्चस्व को पतन नहीं, हालांकि तुम उन बस्तियों के आस–पास रहते थे जहां कैसे–कैसे इज़्ज़त वाले ख़ाक में मिल गये, इतिहास की ख़बरों और बयानों से तुम्हें उनके हालात का ज्ञान भी था कि हम उनको कैसी–कैसी सज़ाएं दे चुके हैं, फिर भी हमने पिछली क़ौमों की कहानियां पवित्र क़ुर्आन में भी सुनाईं ताकि तुम सबक़ लो, लेकिन तुम अपनी ज़िद पर जमे रहे (2) इस्लाम के इन दुश्मनों ने तो इस्लाम और मुसलमानों को मिटाने के लिए हर ज़माने में कोई कसर न छोड़ी लेकिन अल्लाह का वादा है कि सच्चाई क़ायम रहेगी, साज़िशें ऐसी थीं कि पहाड़ उनसे टल जाते लेकिन सत्य क़ायम रहा और क़ायम रहेगा, और अल्लाह के इन दुश्मनों को उस दिन पता चल जाएगा जब दुनिया दूसरी होगी और अल्लाह के नज़दीक इस दुनिया की उम्र ही क्या, पूरी दुनिया मिट जाने के बाद जो हिसाब चुकाया जाएगा वह भी अल्लाह के यहां कुछ देरी नहीं, इसीलिए इसको "सरीउल हिसाब" (जल्द हिसाब लेने वाला) फ़रमाया और इसमें ईमान वालों को तसल्ली भी हो गई कि अगर यहां दुश्मनों को सज़ा नहीं मिलती तो ज़रूरी नहीं, उनके लिए असल सज़ा की जगह आख़िरत है।

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٢﴾ ذَرْهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٣﴾ وَمَا أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُومٌ ﴿٤﴾ مَّا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٥﴾ وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ﴿٦﴾ لَّوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَائِكَةِ إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٧﴾ مَا نُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذًا مُّنظَرِينَ ﴿٨﴾ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي شِيَعِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٠﴾ وَمَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿١١﴾ كَذَٰلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٢﴾ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾ وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ﴿١٤﴾ لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ﴿١٦﴾ وَحَفِظْنَاهَا مِن كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ﴿١٧﴾ إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ مُّبِينٌ ﴿١٨﴾

منزل ٣

किसी समय वे लोग कामना करेंगे जिन्होंने कुफ़्र किया कि काश वे मुसलमान होते[1] (2) आप उनको छोड़िये, खाएं और मज़े करें और आशा उनको असावधान रखे बस आगे उनको पता लग जाएगा (3) और हमने जिस बस्ती को भी बर्बाद किया उसके लिए निर्धारित (समय) लिखा हुआ था (4) कोई भी क़ौम अपने निर्धारित समय से न आगे हो सकेगी और न पीछे (5) और वे कहते हैं कि ऐ वह व्यक्ति! जिस पर नसीहत उतरी है तुम तो निश्चित ही दीवाने हो (6) अगर तुम सच्चे हो तो फरिश्तों को हमारे पास क्यों नहीं ले आते (7) फरिश्तों को तो हम सत्य के लिए उतारते हैं और (फिर) उनको मोहलत भी न मिलती[2] (8) हम ही ने इस उपदेश (पत्र) को उतारा है और बेशक हम ही इसकी रक्षा करने वाले हैं[3] (9) हम आप से पहले भी पिछलों के विभिन्न समुदायों में पैग़म्बर भेज चुके हैं (10) और जब जब उनके पास कोई पैग़म्बर आया तो उसका मज़ाक़ उड़ाते रहे (11) अपराधियों के दिलों में हम इसको इसी प्रकार जारी कर देते हैं[4] (12) वे इस (कुरआन) पर ईमान लाने वाले नहीं और पहलों का भी यही व्यवहार रहा है (13) और अगर हम उनके लिए आसमान की ओर कोई दरवाज़ा भी खोल दें फिर वे उस पर सारे दिन चढ़ते रहें (14) तो निश्चित रूप से यही कहेंगे कि हमारी नज़रबंदी कर दी गई है बल्कि हम लोगों पर जादू चल गया है (15) और आसमान में हमने बुर्ज (तारा–समूह) बनाए और देखने वालों के लिए उनको सुंदर बनाया (16) और उनकी हमने हर फिटकारे हुए शैतान से रक्षा की (17) हां जिसने भी चोरी से सुना तो आग के एक चमकदार गोले ने उसका पीछा किया[5] (18)

---

(1) क़यामत में जब अल्लाह का इनकार करने वालों के लिए हमेशा आग में रहने का फ़ैसला कर दिया जाएगा तो वे कामना करेंगे कि काश उन्होंने सच्ची बात जान ली होती, फिर आगे एक ओर ईमान वालों को तसल्ली दी जा रही है कि अगर वे नहीं मानते तो उनको दुनिया में मस्त रहने दो, आगे उनको सब मालूम हो जाएगा और दूसरी ओर ईमान वालों को यह निर्देश भी दिया जा रहा है कि वे दुनिया के ऐश व आराम को सब कुछ न समझें, जब भी उसमें अधिकता पैदा होती है उसका परिणाम असावधानी के रूप में सामने आता है (2) यह अल्लाह की ओर से फरिश्ते उतारने की मांग का उत्तर है और कहा जा रहा है कि फरिश्ते हम उसी समय उतारते हैं जब हम अज़ाब लाते हैं, उसके बाद फिर मोहलत नहीं मिलती (3) ज़िक्र का मतलब पवित्र कुरआन है, पहले किताबें उतरीं लेकिन उनकी रक्षा उनकी क़ौमों के ज़िम्मे की गई जिसको उन्होंने पूरा नहीं किया, पवित्र कुरआन आख़िरी किताब है इसको क़यामत तक रहना है, इसलिए इसकी रक्षा का वादा अल्लाह ने खुद किया है, इसी का परिणाम है कि आज लाखों छोटे–छोटे बच्चों के सीने में यह मार्गदर्शक पुस्तक सुरक्षित है, दुनिया की शक्तियां जो भी उपाय कर लें लेकिन न वे पवित्र कुरआन को मिटा सकीं हैं और न कभी मिटा सकेंगी (4) उनकी ज़िद की वजह से न मानने को उनके दिल में जारी कर दिया, वे कुछ भी निशानी देख लें आसमान तक चढ़ जाएं लेकिन वे ईमान लाने वाले नहीं (5) बुर्ज क़िले को कहते हैं इससे आशय यहां पर सितारे हैं, संभवतः बुर्ज उनको इसलिए कहा गया है कि उनमें अधिकतर अपनी काया में इस संसार से सैकड़ों गुना बड़े हैं, पवित्र कुरआन में जहां आसमान का उल्लेख होता है वहां कभी सातों आसमानों में से कोई आसमान से आशय होता है और कभी उसका आशय आसमान की दिशा होती है, ऐसा लगता है कि यहां यही मतलब है कि आसमान की दिशा को हमने सितारों से सुसज्जित कर रखा है, शैतान हमेशा प्रयास करते रहते हैं कि आसमानी फैसलों को चोरी–छिपे सुनें और अपने दोस्तों को बताएं, अल्लाह ने उनको हमेशा से सुरक्षित बनाया है, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैग़म्बर बनाए जाने के समय से इसको और मज़बूत कर दिया गया है, और अगर कोई सुनने का प्रयास करता है तो उस पर गोले बरसते हैं, उनमें वे जो आधी–अधूरी बातें कभी सुन लेते हैं वह ज्योतिषियों और काहिनों को बताते हैं।

والأرض مددنها وألقينا فيها رواسي وأنبتنا فيها
من كل شيء موزون ﴿١٩﴾ وجعلنا لكم فيها معايش ومن
لستم له برزقين ﴿٢٠﴾ وإن من شيء إلا عندنا خزائنه وما
ننزله إلا بقدر معلوم ﴿٢١﴾ وأرسلنا الريح لواقح فأنزلنا
من السماء ماء فأسقينكموه وما أنتم له بخزنين ﴿٢٢﴾ و
إنا لنحن نحي ونميت ونحن الورثون ﴿٢٣﴾ ولقد علمنا
المستقدمين منكم ولقد علمنا المستأخرين ﴿٢٤﴾ وإن
ربك هو يحشرهم إنه حكيم عليم ﴿٢٥﴾ ولقد خلقنا
الإنسان من صلصال من حما مسنون ﴿٢٦﴾ والجان
خلقنه من قبل من نار السموم ﴿٢٧﴾ وإذ قال ربك
للملئكة إني خالق بشرا من صلصال من حما مسنون ﴿٢٨﴾
فإذا سويته ونفخت فيه من روحي فقعوا له سجدين ﴿٢٩﴾
فسجد الملئكة كلهم أجمعون ﴿٣٠﴾ إلا إبليس أبى أن يكون مع
السجدين ﴿٣١﴾ قال يإبليس ما لك ألا تكون مع السجدين ﴿٣٢﴾ قال
لم أكن لأسجد لبشر خلقته من صلصال من حما مسنون ﴿٣٣﴾

منزل ٣

और ज़मीन को हमने फैला दिया और उसमें भारी (पहाड़) रख दिये और हर चीज़ हमने उसमें पूरे संतुलन के साथ पैदा की[1] (19) और हमने उसमें तुम्हारे लिए जीवन के साधन रखे और उनके लिए भी जिनको तुम रोज़ी देने वाले नहीं हो (20) और कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिसके ख़ज़ाने हमारे पास मैजूद न हों और हम उसकी निर्धारित मात्रा ही उतारते हैं (21) और हम ही ने पानी से लदी हुई हवाएं भेजीं फिर ऊपर से पानी बरसाया तो तुम्हें उससे पिलाया और तुम उसके ख़ज़ानेदार न थे[2] (22) और हम ही हैं जो ज़िन्दा करते हैं और मारते हैं और हम ही हैं जो सबके वारिस (उत्तराधिकारी) हैं (23) और तुममें आगे निकल जाने वालों को भी हमने जान रखा है और पीछे रह जाने वालों को भी जानते हैं (24) और बेशक पालनहार ही उनको इकट्ठा करेगा निश्चित ही वह बड़ी हिकमत रखता है ख़ूब जानता है (25) और हमने इंसान को सने हुए गारे की खंखनाती मिट्टी से पैदा किया (26) और हमने उससे पहले जिन्न को लू की आग से पैदा किया (27) और जब आपके पालनहार ने फरिश्तों से कहा कि मैं सने हुए गारे की खंखनाती हुई मिट्टी से इंसान पैदा करने वाला हूं (28) फिर जब मैं उसको पूरा कर लूं और उसमें अपनी रूह (प्राण) फूंक दूं तो तुम सब उसके आगे सज्दे में गिर जाना (29) बस सब के सब फरिश्तों ने सज्दा किया (30) सिवाय इब्लीस के, उसने सज्दा करने वालों में शामिल होने से इनकार कर दिया (31) (अल्लाह ने) कहा ऐ इब्लीस! तुझे क्या हुआ कि तू सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ (32) वह बोला मैं वह नहीं कि एक इंसान को सज्दा करूं जिसे तूने सने हुए गारे की खंखनाती मिट्टी से पैदा किया[3] (33)

---

(1) अल्लाह ने समुद्र पर धरती बिछाई तो वह डोलती थी फिर उसको जमाने के लिए उस पर बड़े–बड़े पहाड़ रख दिये और हर चीज़ पूरे संतुलन के साथ पैदा की, इसमें कोई भी चीज़ कम या ज़्यादा हो तो इंसान का जीवन कठिन हो जाये, फिर हर चीज़ की रोज़ी अल्लाह ने पहुंचाई है, इंसान को भी और हर जीव को जिनको इंसान रोज़ी नहीं पहुंचा सकता (2) कितनी बड़ी मात्रा पानी की अल्लाह ने धरती में रख दी, अगर वह पानी बिल्कुल धरती की तहों में पहुंचा दे तो कौन उसको निकाल सकता है, अगलों को पिछलों को सबको जानने वाला है, फिर सबको हश्र के मैदान में जमा करेगा (3) इंसान को मिट्टी से पैदा किया जिसके स्वभाव में झुकना है और जिन्नात को आग से पैदा किया जिनके स्वभाव में उठना और अकड़ना है नम्रता को पसंद किया और घमण्ड को अपने दरबार से धिक्कार दिया।

मन्ज़िल ३

कहा तो तू निकल यहां से निश्चित ही तू मरदूद (धिक्कारा हुआ) है (34) और बदले के दिन तक तुझ पर फिटकार है (35) वह बोला ऐ मेरे पालनहार! फिर तू मुझे उस दिन तक मोहलत दे दे जिस दिन यह उठाए जाएंगे (36) कहा बस ठीक है तुझे मोहलत है (37) उसी निर्धारित समय के दिन तक (38) वह बोला ऐ मेरे रब! जैसे तूने मुझे रास्ते से हटाया है मैं भी ज़रूर उनके लिए ज़मीन में आकर्षण पैदा करूंगा और उन सबको गुमराह करके रहूंगा[1] (39) सिवाय उनमें तेरे चुने हुए बंदों के (40) कहा यह मेरी ओर (आने वाला) सीधा रास्ता है (41) रहे मेरे बंदे तो निश्चित रूप से तेरा उन पर कुछ ज़ोर न चलेगा सिवाय उनके जो टेढ़ी राहों में तेरी राह चलें (42) और दोज़ख़ उन सबका निर्धारित ठिकाना है (43) उसके सात दरवाज़े हैं और हर दरवाज़े के लिए उनमें हिस्सा बंटा हुआ है[2] (44) बेशक परहेज़गार बागों और नहरों में होंगे (45) सलाम करते हुए इत्मिनान से प्रवेश करो (46) और उनके सीनों में जो भी रंजिश (अप्रसन्नता) होगी वह भी हम दूर कर देंगे आमने सामने मसहरियों पर भाइयों की तरह (बैठे होंगे) (47) न वहां थकन का नाम होगा और न ही वे वहां से निकाले जाएंगे (48) मेरे बंदों को बता दीजिए मैं ही हूं बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दया करने वाला (49) और मेरा ही अज़ाब बड़ा दुखद अज़ाब है[3] (50) और उनको इब्राहीम के अतिथियों की कहानी सुना दीजिए (51) जब वे उनके पास आए तो उन्होंने सलाम किया (इब्राहीम ने) कहा तुमसे हमें डर महसूस होता है[4] (52)

(1) हदीस में आता है कि "जन्नत को कठिनाइयों से और दोज़ख़ को इच्छाओं से घेर दिया गया है" शैतान का यही काम है कि वह दुनिया के स्वाद और वासनाओं (इच्छाओं) को संवार कर प्रस्तुत करता है और लोगों को फुसलाता है, अल्लाह तआ़ला ने कह दिया कि मेरा सीधा रास्ता सामने है जो मेरे बंदे निष्ठा (इख़्लास) के साथ उस पर चलेंगे वे शैतान से सुरक्षित रहेंगे (2) जन्नत के भी सात दरवाज़े हैं और दोज़ख़ के भी, उनमें प्रवेश करने वालों को अल्लाह ने बांट रखा है कि कौन किस दरवाज़े से प्रवेश करेगा (3) न पापियों को निराश होने की आवश्यकता है, तौबा का दरवाज़ा हर समय खुला हुआ है और न भले लोगों को संतुष्ट होकर बैठे रहने की आवश्यकता है, हर समय डरना चाहिए, एक ओर उसकी रहमत (दया) बहुत विशाल है, दूसरी ओर उसका अज़ाब (दण्ड) भी बड़ कठोर है (4) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के डर महसूस करने की वजह यह थी कि फ़रिश्ते अजनबी लोगों के रूप में आये थे, खाना पेश किया तो वह भी उन्होंने नहीं खाया, हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम बूढ़े थे, उनके अलावा घर में केवल एक बूढ़ी महिला थीं इसलिए डरे कि कहीं यह लोग बुरे इरादे से न आये हों।

قالوا لا توجل إنا نبشرك بغلام عليم ﴿٥٣﴾ قال أبشرتموني
على أن مسني الكبر فبم تبشرون ﴿٥٤﴾ قالوا بشرناك
بالحق فلا تكن من القانطين ﴿٥٥﴾ قال ومن يقنط من
رحمة ربه إلا الضالون ﴿٥٦﴾ قال فما خطبكم أيها
المرسلون ﴿٥٧﴾ قالوا إنا أرسلنا إلى قوم مجرمين ﴿٥٨﴾ إلا آل
لوط إنا لمنجوهم أجمعين ﴿٥٩﴾ إلا امرأته قدرنا إنها لمن
الغابرين ﴿٦٠﴾ فلما جاء آل لوط المرسلون ﴿٦١﴾ قال إنكم قوم
منكرون ﴿٦٢﴾ قالوا بل جئناك بما كانوا فيه يمترون ﴿٦٣﴾ و
أتيناك بالحق وإنا لصادقون ﴿٦٤﴾ فأسر بأهلك بقطع من
الليل واتبع أدبارهم ولا يلتفت منكم أحد وامضوا
حيث تؤمرون ﴿٦٥﴾ وقضينا إليه ذلك الأمر أن دابر هؤلاء
مقطوع مصبحين ﴿٦٦﴾ وجاء أهل المدينة يستبشرون ﴿٦٧﴾
قال إن هؤلاء ضيفي فلا تفضحون ﴿٦٨﴾ واتقوا الله ولا
تخزون ﴿٦٩﴾ قالوا أولم ننهك عن العالمين ﴿٧٠﴾ قال هؤلاء بناتي
إن كنتم فاعلين ﴿٧١﴾ لعمرك إنهم لفي سكرتهم يعمهون ﴿٧٢﴾

منزل٣

वे बोले आप डरें नहीं हम तो आपको एक होशियार बेटे की ख़ुशख़बरी सुनाते हैं (53) कहा क्या हमें बुढ़ापा लग जाने के बावजूद भी तुम हमें बेटे की ख़ुशख़बरी सुनाते हो आख़िर यह ख़ुशख़बरी किस आधार पर सुना रहे हो (54) वे बोले हमने आप को ठीक–ठीक ख़ुशख़बरी सुना दी तो आप निराश न हों (55) कहा अपने रब की रहमत (दया) से तो गुमराह ही निराश होते हैं (56) कहा तो ऐ अल्लाह के दूतो! तुम्हारा अभियान क्या है (57) उन्होंने कहा हम एक अपराधी क़ौम की ओर भेजे गए हैं[1] (58) हां लूत के घर वाले इससे अलग हैं हम उन सब को बचा लेंगे (59) सिवाय उनकी पत्नी के, हमने तय कर रखा है कि वह उन्हीं लोगों में शामिल रहेगी जो पीछे रह जाने वाले हैं (60) फिर जब फ़रिश्ते लूत के घर वालों के पास पहुंचे (61) लूत ने कहा कि आप लोग तो और तरह के मालूम होते हैं (62) वे बोले बल्कि हम तो आपके पास वह चीज़ लेकर आए हैं जिसमें वे संदेह करते थे (63) और हम आपके पास अटल फ़ैसला लेकर आए हैं और हम सच ही कहते हैं (64) बस आप रात के किसी भाग में अपने घर वालों को लेकर निकल जाइये और आप उनके पीछे–पीछे चलिए और तुम में कोई मुड़ कर न देखे और जहां तुमको आदेश है वहां चले जाओ (65) और उस काम का फ़ैसला हमने उनको सुना दिया कि सुबह होते होते उन सब की जड़ कट कर रह जाएगी (66) और शहर वाले ख़ुशियां मनाते आ पहुंचे (67) (लूत ने कहा) यह सब मेरे मेहमान हैं तो मुझे ज़लील न करो (68) और अल्लाह से डरो और मेरी इज़्ज़त न खो (69) वे बोले क्या हमने तुम्हें दुनिया जहान के समर्थन से मना नहीं किया था (70) उन्होंने कहा यह मेरी बेटियां मौजूद हैं अगर तुम्हें कुछ करना ही है[2] (71) आपकी जान की क़सम[3]! वे तो अपने नशे में बिल्कुल ही धुत हो रहे थे (72)

(1) हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की क़ौम कुकर्म में लिप्त थी, हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम समझाते थे मगर वे बाज़ न आते, अंततः फ़रिश्ते अज़ाब लेकर ख़ूबसूरत नवजवानों के रूप में आ पहुंचे, क़ौम के बुरी आदत वालों ने देखा तो पहुंच गए, हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने क्योंकि अभी पहचाना न था इसलिए उनको डर हुआ कि इन मेहमानों के साथ भी दुर्व्यहार न हो, उन्होंने अपनी क़ौम के लोगों को समझाना चाहा मगर वे नशे में चूर थे, फ़रिश्तों ने हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम को संतुष्ट किया कि हम अल्लाह के दूत हैं, अज़ाब लेकर आए हैं, आप अपने घर वालों के साथ रातों–रात निकल जाइये और आप ही पीछे रहें ताकि क़ौम के सदस्यों की निगरानी हो सके और कोई पीछे मुड़ कर न देखे, उनकी पत्नी उन्हीं दुष्टों के साथ थी, उसकी बर्बादी और विनाश का भी फ़ैसला सुना दिया गया (2) हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने समझाना चाहा कि तुम्हारी पत्नियां मौजूद हैं जो हमारी बेटियों की तरह हैं तो उनसे अपनी वासना (इच्छा) पूरी करो और ग़लत काम मत करो (3) अल्लाह तआला ने पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की जान की क़सम खाई इससे आपकी उच्च पदवी की ओर संकेत है, हज़रत अब्दुल्लाह पुत्र अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने किसी को पैदा नहीं किया जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़्यादा उसके क़रीब इज़्ज़त वाला हो, और मैंने नहीं सुना कि अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अलावा किसी की जान की क़सम खाई हो।

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿۷۳﴾ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَ
اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿۷۴﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿۷۵﴾ وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ﴿۷۶﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً
لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۷۷﴾ وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ﴿۷۸﴾ فَانْتَقَمْنَا
مِنْهُمْ ۘ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿۷۹﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ الْحِجْرِ
الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۸۰﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿۸۱﴾
وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿۸۲﴾
فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ﴿۸۳﴾ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ
الْجَمِيْلَ ﴿۸۵﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿۸۶﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ
سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿۸۷﴾ لَا تَمُدَّنَّ
عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ
عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۸﴾ وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا
النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿۸۹﴾ كَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿۹۰﴾

منزل ٣

बस सूरज निकलते निकलते एक चिंघाड़ ने उनको आ दबोचा (73) तो हमने उसको उथल पुथल करके रख दिया और उन पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाए (74) बेशक इसमें वास्तविकता तक पहुंच जाने वालों के लिए निशानियां हैं (75) और वह बस्ती चलते फिरते रास्ते पर है[1] (76) उसमें ईमान वालों के लिए एक निशानी है (77) और बेशक ऐका वाले भी अन्याय करने वाले थे[2] (78) तो हमने उनसे बदला लिया और वे दोनों (बस्तियां) आम राजमार्ग पर थीं[3] (79) और बेशक हिज्र वालों ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया[4] (80) और हमने उनको अपनी निशानियां दीं तो वे उनसे मुंह फेरते रहे (81) और वे बड़े इत्मिनान के साथ पहाड़ों को काट–काट कर घर बनाया करते थे (82) बस सुबह होते होते चिंघाड़ ने उनको भी आ दबोचा (83) तो उनका यह सब किया धरा ज़रा भी उनके काम न आया (84) और हमने आसमानों और ज़मीन को और उन दोनों के बीच जो कुछ है उसको बिल्कुल ठीक पैदा किया है बेशक क़यामत आकर रहेगी बस आप अच्छे ढंग से माफ़ कर दिया कीजिए[5] (85) निश्चित ही आपका पालनहार ही सब कुछ पैदा करने वाला ख़ूब जानने वाला है (86) और निश्चित ही हमने आपको ख़ूब पढ़ी जाने वाली सात आयतें और महानता वाला क़ुरआन दिया[6] (87) हमने उनके विभिन्न गिरोहों को जो सुख सामग्री दे रखी है आप उनकी ओर ध्यान न दें और न उन पर दुखी हों और ईमान वालों के लिए अपनी भुजाएं झुकाए रखिये (88) और कह दीजिए कि मैं तो बस साफ़ साफ़ डराने वाला हूं[7] (89) जैसा कि हमने हिस्सा कर डालने वालों पर भेजा (90)

---

(1) हज़रत लूत की क़ौम की बस्तियां उरदुन के उपसागर मरदार के पास थीं, अरब के लोग जब शाम (सीरिया) की यात्रा करते तो वहां से गुज़रते थे (2) "ऐका" घने जंगल को कहते हैं ऐसा लगता है यह बस्ती जहां बाग़ थे मदयन के अलावा है, हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम को दोनों क्षेत्रों का नबी बनाकर भेजा गया था, भूगोल के माहिर मुसलमान मौजूदा मदयन के बारे में कहते हैं कि पहले इसी का नाम ऐका था, मदयन से इसकी दूरी भी ज़्यादा नहीं है, बहुत से मुफस्सिरों ने मदयन को ही ऐका कहा है, वे कहते हैं कि इसकी हरियाली की वजह से इसको ऐका कहा गया है (3) दोनों बस्तियों का मतलब है हज़रत लूत और हज़रत शुऐब की बस्तियां, दोनों ही उरदुल के आम राजमार्ग पर थीं, इससे आशय वह व्यावसायिक राजमार्ग है जो हिजाज़ होकर यमन से शाम को जाता है, क़ुरआन मजीद में उसी को "इमाम–ए–मुबीन" कहा गया है, अरब की तमाम बड़ी–बड़ी आबादियां उसी के दाएं–बाएं ओर स्थित थीं (4) हिज्र समूद क़ौम की उन बस्तियों का नाम था जिनकी ओर हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम भेजे गए थे (5) पवित्र मक्के में न युद्ध की अनुमति थी और न बदला लेने की (6) यानी सूरह फ़ातिहा जो हर नमाज़ में बार–बार पढ़ी जाती है और इसको उम्मुल क़ुरआन भी कहा गया है, यहां इसी को महान क़ुरआन कहा जा रहा है और इसको याद दिला कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को आदेश हो रहा है कि मदद अल्लाह ही की ओर से आएगी, आप उसी की ओर ध्यान दें, दुनिया वालों की ओर ध्यान न दें और ईमान वालों के साथ नरमी का व्यवहार रखें (7) यानी मैं इस क़ुरआन के द्वारा साफ़–साफ़ आदेश बताता हूं, आख़िरत से डराता हूं, आगे कहा जा रहा है कि ऐसे ही हमने पहले के सम्प्रदायों यानी यहूदियों और ईसाइयों पर भी ऐसी ही किताबें उतारीं लेकिन उन्होंने कुछ भाग को बाक़ी रखा कुछ को मिटा दिया, इस प्रकार उन्होंने उसके हिस्से कर डाले।

जिन्होंने कुरआन के हिस्से बना कर बांट डाले[1] (91) बस आपके पालनहार की क़सम हम उन सबसे पूछेंगे (92) क्या कुछ वे किया करते थे (93) तो जिसका आपको आदेश दिया जा रहा है वह आप खोल कर बयान कर दीजिए और शिर्क करने वालों से मुंह फेर लिजिए[2] (94) हम उपहास करने वालों के लिए आपकी ओर से काफ़ी हैं (95) जो अल्लाह के साथ दूसरा माबूद (पूज्य) ठहराते हैं तो जल्द ही उनको पता चल जाएगा (96) और हम ख़ूब जानते हैं कि उनकी बातों से आप का मन संकुचित होता है (97) तो आप अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ पाकी बयान करते रहिये और सज्दा करने वालों में शामिल रहिये (98) और अपने पालनहार की बन्दगी में लगे रहिये यहां तक कि निश्चित (चीज़) आपके सामने आ जाए (99)

सूरह नहल

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अल्लाह का आदेश आ ही पहुंचा तो उसमें जल्दी मत मचाओ, वह पवित्र है और जो भी वे शिर्क करते हैं उससे वह श्रेष्ठ है (1) वह अपने आदेश से जिंदगी पैदा कर देने वाली वह्य के साथ फरिश्तों को अपने बंदों में जिस पर चाहता है उतारता है कि सावधान कर दो कि मेरे अलावा कोई पूज्य नहीं बस मुझ ही से डरो[3] (2) उसने आसमानों और ज़मीन को ठीक–ठीक पैदा किया, जो भी वे शिर्क करते हैं उससे वह उच्चतर है (3) उसने इंसान को वीर्य से पैदा किया तो वह खुल कर झगड़ने पर आ गया (4) और उसने चौपाये पैदा किये जिनमें तुम्हारे लिए गर्मी पहुंचाने का साधन भी है और भी फ़ायदे हैं और उसमें से कुछ को तुम खाते भी हो[4] (5) और उनमें तुम्हारे लिए बड़ी शोभा है जब तुम उनको वापस लाते हो और जब उनको चरने के लिए छोड़ते हो (6)

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ﴿٩١﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ
أَجْمَعِينَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَ
أَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾ إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ﴿٩٥﴾ الَّذِينَ
يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ
أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿٩٧﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ
مِنَ السَّاجِدِينَ ﴿٩٨﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ﴿٩٩﴾

سُورَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَثَمَانٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَسِتَّةَ عَشَرَ رُكُوعًا

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

أَتَىٰ أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا
يُشْرِكُونَ ﴿١﴾ يُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ
مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنْذِرُوا أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ ﴿٢﴾ خَلَقَ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ تَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣﴾ خَلَقَ
الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ﴿٤﴾ وَالْأَنْعَامَ
خَلَقَهَا ۗ لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٥﴾
وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ وَحِينَ تَسْرَحُونَ ﴿٦﴾

منزل ٣

(1) यह यहूदियों और ईसाइयों ही का बयान है कि जब कुरआन उतरा तो जो भाग उनकी इच्छानुसार हुआ माना और जो अनुकूल न हुआ उसको नकार दिया और उनका मज़ाक़ उड़ाया, कोई बोला सूरह बक़रह मेरी है, सूर आल–ए–इमरान तुम्हारी है, उससे हमें कुछ लेना–देना नहीं (2) शुरू में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छिप–छिप कर इस्लाम प्रचार का कार्य करते हैं यहां खुल कर प्रचार करने का आदेश दिया जा रहा है, कहा जा रहा है कि आप अपना काम किये जाइये, लोगों के मानने न मानने की परवाह न कीजिए, सबको अपने किये का पता चल जाएगा और आपको जो तकलीफ़ पहुंचती है तो आप अल्लाह की प्रशंसा में और उसकी बंदगी में लगे रहिए जब तक वह चीज़ नहीं आ जाती जिसका आना निश्चित है यानी इस दुनिया से विदाई (3) मक्के के मुश्रिक ताना देते कि जिस अज़ाब (दण्ड) की बात करते हो ले आओ, उस पर यह आयतें उतरीं कि जल्दी मत करो एक दिन तुम्हें मक्के से निकलना है, अपमानित होना है और आख़िरत का अज़ाब अपनी जगह, और यह ऐसी निश्चित बात है कि मानो हो ही चुकी इसमें संदेह की गुंजाइश नहीं, तो शिर्क से तौबा करो और अल्लाह की नेमतों पर ध्यान दो (4) ऊन निकलता है उसके चमड़े से कैसी कैसी चीज़ें तैयार होती हैं, फिर दूध–दही, मक्खन सब नेमतें उसी से प्राप्त होती हैं।

وَتَحۡمِلُ اَثۡقَالَكُمۡ اِلٰى بَلَدٍ لَّمۡ تَكُوۡنُوۡا بٰلِغِيۡهِ اِلَّا بِشِقِّ الۡاَنۡفُسِ‌ؕ اِنَّ رَبَّكُمۡ لَرَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ۝ وَّالۡخَيۡلَ وَالۡبِغَالَ وَالۡحَمِيۡرَ لِتَرۡكَبُوۡهَا وَزِيۡنَةً‌ ؕ وَيَخۡلُقُ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۝ وَعَلَى اللّٰهِ قَصۡدُ السَّبِيۡلِ وَمِنۡهَا جَآٮِٕرٌ‌ ؕ وَلَوۡ شَآءَ لَهَدٰٮكُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ۝ هُوَ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً‌ لَّـكُمۡ مِّنۡهُ شَرَابٌ وَّمِنۡهُ شَجَرٌ فِيۡهِ تُسِيۡمُوۡنَ ۝ يُنۡۢبِتُ لَـكُمۡ بِهِ الزَّرۡعَ وَالزَّيۡتُوۡنَ وَالنَّخِيۡلَ وَالۡاَعۡنَابَ وَمِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ‌ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ يَّتَفَكَّرُوۡنَ ۝ وَسَخَّرَ لَـكُمُ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ‌ ؕ وَالنُّجُوۡمُ مُسَخَّرٰتٌ ۢ بِاَمۡرِهٖ‌ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ۝ وَمَا ذَرَاَ لَـكُمۡ فِى الۡاَرۡضِ مُخۡتَلِفًا اَلۡوَانُهٗ‌ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ يَّذَّكَّرُوۡنَ ۝ وَهُوَ الَّذِىۡ سَخَّرَ الۡبَحۡرَ لِتَاۡكُلُوۡا مِنۡهُ لَحۡمًا طَرِيًّا وَّتَسۡتَخۡرِجُوۡا مِنۡهُ حِلۡيَةً تَلۡبَسُوۡنَهَا‌ ۚ وَتَرَى الۡـفُلۡكَ مَوَاخِرَ فِيۡهِ وَلِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ۝

منزل۳

और ऐसे शहरों तक वे तुम्हारा बोझ ढो ले जाते हैं कि तुम जान जोखिम में डाल कर ही वहां पहुंच सकते थे बेशक तुम्हारा पालनहार बड़ा स्नेही बहुत ही दयालु है (7) और घोड़े व खच्चर और गधे (उसी ने पैदा किये) तुम्हारी सवारी के लिए और शोभा के रूप में और वह ऐसी चीज़ें पैदा करेगा जिनको तुम जानते भी नहीं[1] (8) और सीधी राह अल्लाह ही पर पहुंचती है और कोई टेढ़ी राह वाला भी है और अगर उसकी इच्छा ही होती तो तुम सबको सीधी राह चला देता[2] (9) वही है जिसने तुम्हारे लिए ऊपर से वर्षा की जिससे पीने का पानी (मिलता) है और उसी से पेड़ (उगते) हैं जिनमें तुम (अपने जानवर) चराते हो (10) उसी से वह तुम्हारे लिए खेती और ज़ैतून और खजूर व अंगूर और हर तरह के फल उगाता है निश्चित रूप से इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो सोच विचार करते रहते हैं (11) और उसी ने तुम्हारे लिए रात व दिन और सूरज व चाँद काम पर लगा दिये और सितारे भी उसी के आदेश पर चल रहे हैं निःसंदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं (12) और तुम्हारे लिए उसने ज़मीन में जो कुछ रंग–बिरंगी चीज़ें फैला रखी हैं निःसंदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो शिक्षा लेते हैं (13) और वही है जिसने समुद्र को काम पर लगा दिया ताकि तुम ताज़ा गोश्त खाओ और उससे वह आभूषण निकालो जो तुम पहनते हो और आप नाँव को देखें कि वे उसमें फाड़ती चल रही हैं और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल (कृपा) ढूंढो और शायद कि तुम एहसान मानो[3] (14)

(1) एक ज़माना था कि सिर्फ जानवरों ही से सवारी और सामान ढोने का काम लिया जाता था, मगर पवित्र कुरआन ने आगे बनने वाली सारी सवारियों की ओर इशारा कर दिया, मोटर, रेल, जहाज़, रॉकेट सब इसी में शामिल हैं और भी जो आगे नई–नई सवारियां बनाई जाएं (2) सीधा रास्ता अल्लाह तक पहुंचाता है, और रास्ते टेढ़े हैं, सीधा रास्ता बताने के लिए उसने पैग़म्बर भेजे और अगर उसकी इच्छा होती तो वह सबको सीधे रास्ते पर चला देता लेकिन दुनिया में इंसान से कहा गया है कि वे पैग़म्बरों के बताए हुए सीधे रास्ते पर ख़ुद से चलें, इसी से बंदों की परीक्षा होती है (3) अल्लाह तआला के असीम उपकारों व पुरस्कारों का वर्णन है, इसीलिए इस सूरह को "सूरतुन नअम" भी कहा जाता है, इनसान अपनी मेहनत से जो प्राप्त करता है वह सब अल्लाह का फ़ज़्ल (अनुग्रह) है, समुद्र में मछलियां पकड़ने वाले जाल डालत रहते, ग़ोताख़ोर वाले मोतियां निकालने के लिए डुबकी लगाते रहते यदि अल्लाह मछलियां और मोती व रत्न न पैदा करता तो किसको क्या मिलता?

وَاَلْقٰى فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا
لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵﴾ وَعَلٰمٰتٍ ۭ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۶﴾ اَفَمَنْ
يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ
لَا تُحْصُوْهَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۸﴾ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَ
مَا تُعْلِنُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ
شَيْـًٔـا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿۲۰﴾ اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَاۗءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ
اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿۲۱﴾ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۲۲﴾ لَا جَرَمَ اَنَّ
اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿۲۳﴾
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ ﴿۲۴﴾ لِيَحْمِلُوْٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ
وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ اَلَا سَاۗءَ مَا
يَزِرُوْنَ ﴿۲۵﴾ قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى
اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ
فَوْقِهِمْ وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۶﴾

منزل ۳

और उसने ज़मीन में भारी बोझ (पहाड़ों के रूप में) रख दिये कि वे तुम्हें लेकर डगमगाने न लगे और नदियां और रास्ते बना दिये ताकि तुम रास्ता पा सको (15) और पहचान भी बनाए और सितारों से भी लोग रास्ते पाते हैं[1] (16) भला जो पैदा करे वह उसके बराबर है जो कुछ न पैदा कर सके फिर भी तुम ध्यान नहीं देते (17) और अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनने लग जाओ तो गिन न सको, बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही मेहरबान है (18) और अल्लाह वह भी जानता है जो तुम छिपाते हो और वह भी जो तुम प्रकट करते हो (19) और जिनको वे अल्लाह के अलावा पुकारते हैं वे कुछ पैदा नहीं कर सकते वे तो ख़ुद ही पैदा किये गए हैं (20) बेजान हैं, उनमें ज़िंदगी नहीं और इसका भी एहसास नहीं कि वे कब उठाए जाएंगे[2] (21) तुम्हारा माबूद (पूज्य) तो एक अकेला पूज्य है तो जो भी आख़िरत को नहीं मानते उनके दिल इनकार करने वाले हैं और वे बड़े बनते हैं (22) कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता निश्चित ही अल्लाह उसको भी जानता है जो वे छिपाते हैं और (उसको भी) जो वे प्रकट करते हैं, बेशक वह बड़ा बनने वालों को पसंद नहीं करता (23) और जब उनसे कहा गया कि तुम्हारे पालनहार ने क्या उतारा वे बोले वही पहलों की मनघड़ंत कहानियां (24) नतीजा यह है कि अपने इस बोझ को क़यामत के दिन पूरा–पूरा ढोएंगे और उनका बोझ भी जिनको वे बिना जांच–परख के पथभ्रष्ट करते हैं, देखो! कैसा बुरा बोझ है[3] जो वे ढो रहे होंगे (25) उन्होंने भी चालबाज़ियां कर रखी थीं जो उनसे पहले गुज़रे हैं तो अल्लाह ने जड़ से उनकी बुनियाद उखाड़ फेंकी तो ऊपर से छत उन पर ढह गई और ऐसी जगह से उन पर अज़ाब (दण्ड) आया जिसका उनको ख़याल भी न था[4] (26)

---

(1) सितारों को देख कर दिशाएं निर्धारित की जाती हैं और उनसे रास्ते पहचानना आसान हो जाता है, यह ज्योतिष विज्ञान से अलग विषय है जिसे विषय बनाकर वैज्ञानिक शोध भी जारी है और ज्योतिषियों का ज्ञान सरासर अंधविश्वास पर आधारित है कि वे सितारों को देखकर लोगों के भाग्य बताते हैं और शुभ व अशुभ को उससे संबंधित समझते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे सख़्ती से मना किया है (2) अल्लाह जिसने सारी नेमतें दीं उसको छोड़कर ऐसी मूर्तियों को और देवी–देवताओं को पूज रहे हो जो कण मात्र किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते, वे ख़ुद अल्लाह की एक सृष्टि हैं और उनको यह भी नहीं पता कब हश्र क़ायम होगा, अल्लाह कहता है कि जो नहीं मानते वे अपने दिलों के दरवाज़ों को बंद कर लेते हैं और अकड़ते हैं इसलिए इसका दण्ड उनको भुगतना होगा (3) पवित्र क़ुरआन को पहलों का उपन्यास कह कर दूसरों की पथभ्रष्टता का कारण बनने वाले अपना भी बोझ ढोएंगे और उन पथभ्रष्ट होने वालों की विपत्ति भी उनके सिर पर आएगी जिनको उन्होंने गुमराह किया (4) अर्थात लोगों को पथभ्रष्ट करने का जो षडयंत्र आज रचा जा रहा है पहले दूसरी क़ौमें अपने अपने पैग़म्बरों के साथ यह सब कर चुकी हैं मगर जब ख़ुदा का आदेश आया तो उनकी नीव हिल गई और जो साजिशों के गगनचुंबी महल उन्होंने खड़े किये थे उनके नीचे वे ख़ुद गड़ कर रह गये।

फिर क़यामत के दिन वह उनको अपमानित करेगा और कहेगा मेरे वे साझीदार कहां हैं जिनके लिए तुम झगड़ा किया करते थे[1] वे लोग जिनको ज्ञान मिला है वे कहेंगे कि आज तो अपमान और बुराई काफ़िरों के लिए तय है (27) जिनकी रूहें (प्राण) फरिश्ते इस हाल में निकालते रहे कि वे अपनी जानों (प्राणों) पर अत्याचार करने वाले थे बस वे हथियार डाल देंगे (और कहेंगे कि) हम तो कोई बुराई करते ही न थे, क्यों नहीं? बेशक तुम जो भी करते रहे थे अल्लाह उसको ख़ूब जानता है (28) बस दोज़ख़ के दरवाज़ों में हमेशा वहां रहने के लिए प्रवेश कर जाओ, बस अहंकारियों के लिए कैसा ही बुरा ठिकाना है (29) और परहेज़गारों से कहा गया कि तुम्हारे पालनहार ने क्या उतारा? वे बोले भलाई ही भलाई, जिन्होंने भलाई की इस दुनिया में भी उनके लिए भलाई है और आख़िरत का घर तो बेहतर है ही और परहेज़गारों के लिए क्या ही अच्छा घर है (30) हमेशा रहने वाले ऐसे बाग़ जिनमें वे प्रवेश कर जाएंगे उनके नीचे नहरें होंगी उनके लिए वहां वह सब कुछ है जो वे चाहेंगे, अल्लाह ऐसे ही परहेज़गारों को बदला दिया करता है (31) जिनको फरिश्ते इस हाल में मौत देते हैं कि वे साफ़ सुथरे हैं कहते हैं कि तुम पर सलामती हो, जो काम तुम करते थे उसके बदले में जन्नत में प्रवेश कर जाओ (32) क्या उनको इस बात का इंतेज़ार है कि फरिश्ते उनके पास आ जाएं या आप के पालनहार का फ़ैसला ही आ जाए, उनसे पहले वालों ने भी यही किया और अल्लाह ने उनके साथ अन्याय नहीं किया, हां वे ख़ुद अपने साथ अत्याचार करते रहे थे (33) तो उनके बुरे काम उन्हीं पर आ पड़े और जो वे मज़ाक़ उड़ाया करते थे वह उन्हीं पर उलट पड़ा[2] (34)

(1) यह प्रश्न ख़ुद उन्हीं के लिए अपमान का कारण बनेगा, वे उत्तर क्या दे पाएंगे, ज्ञानी, पैग़म्बर और भले लोग कहेंगे कि हम तो कहते थे कि यह दिन शिर्क करने वालों के लिए अपमान व तिरस्कार का है, जब उनसे कुछ न हो सकेगा तो कहने लगेंगे कि हमने तो बुराई की ही नहीं, अल्लाह तआला कहेगा जो तुम कहते थे उसको हम ख़ूब जानते हैं, बस वे दोज़ख़ में पहुंचा दिये जाएंगे, आगे ईमान वाले बंदों का उल्लेख है कि उनसे पवित्र क़ुरआन के बारे में पूछा जाएगा तो वे कहेंगे, वह तो सर्वथा भलाई है फिर उन पर होने वाले अल्लाह के पुरस्कारों का वर्णन है (2) जन्नत की अच्छाइयां बयान करने के बाद असावधानों को चेताया जा रहा है जो आख़िरत से बिल्कुल बेपरवाह हैं कि क्या उनको इसकी प्रतीक्षा है कि जिस समय फरिश्ते जान निकालने आ जाएंगे या क़यामत क़ायम हो जाएगी या वे अज़ाब में गिरफ्तार कर लिए जाएंगे तब मानेंगे और अपनी सुधार की चिंता करेंगे, जबकि उस समय के ईमान से या तौबा से कुछ फ़ायदा नहीं, पिछले इनकार करने वालों का भी यही हाल हुआ, वे अंत तक पैग़म्बरों के विरोध पर तत्पर रहे, उनका मज़ाक़ उड़ाते रहे, अंततः सब उन्हीं पर उलट पड़ा, जो बोया था वह काटा, ख़ुद उन्होंने अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारी।

وقال الذين أشركوا لو شاء الله ما عبدنا من دونه
من شيء نحن ولا آباؤنا ولا حرمنا من دونه من شيء
كذلك فعل الذين من قبلهم فهل على الرسل إلا
البلاغ المبين ﴿٣٥﴾ ولقد بعثنا في كل أمة رسولا أن
اعبدوا الله واجتنبوا الطاغوت فمنهم من هدى الله
ومنهم من حقت عليه الضلالة فسيروا في الأرض فانظروا
كيف كان عاقبة المكذبين ﴿٣٦﴾ إن تحرص على هداهم
فإن الله لا يهدي من يضل وما لهم من ناصرين ﴿٣٧﴾ و
أقسموا بالله جهد أيمانهم لا يبعث الله من يموت
بلى وعدا عليه حقا ولكن أكثر الناس لا يعلمون ﴿٣٨﴾
ليبين لهم الذي يختلفون فيه وليعلم الذين كفروا
أنهم كانوا كاذبين ﴿٣٩﴾ إنما قولنا لشيء إذا أردناه أن نقول
له كن فيكون ﴿٤٠﴾ والذين هاجروا في الله من بعد ما
ظلموا لنبوئنهم في الدنيا حسنة ولأجر الآخرة أكبر لو
كانوا يعلمون ﴿٤١﴾ الذين صبروا وعلى ربهم يتوكلون ﴿٤٢﴾

منزل ٣

और जिन्होंने शिर्क किया वे बोले कि अगर अल्लाह चाहता तो हम उसके सिवा किसी को न पूजते न हम न हमारे बाप दादा और न हम उसके (आदेश के) बिना कोई चीज़ हराम (निषेध) ठहराते, इसी तरह उनसे पहले भी लोगों ने किया, तो पैग़म्बर के ज़िम्मे क्या है बस यही साफ़ साफ़ पहुंचा देना (35) और हमने हर उम्मत (सम्प्रदाय) में कोई न कोई पैग़म्बर (इस संदेश के साथ) भेजा कि अल्लाह की बन्दगी करो और तागूत (शैतान) से बचो तो किसी को अल्लाह ने राह दी और किसी के सिर गुमराही थोप दी गई, तो ज़मीन में घूमो फिरो फिर देखो कि आख़िर झुठलाने वालों का अंजाम कैसा हुआ (36) अगर आपको उनकी हिदायत (संमार्ग) का शौक़ है तो अल्लाह किसी को गुमराह करके हिदायत नहीं देता और उनका कोई मददगार नहीं (37) वे पूरी शक्ति के साथ अल्लाह की क़समें खाते हैं कि जो मर जाएगा उसको अल्लाह नहीं उठाएगा, क्यों नहीं यह उसका किया हुआ वादा है जो बिल्कुल सच्चा है, हां अधिकांश लोग जानते नहीं (38) ताकि इस बारे में उनके मतभेद को उनमें प्रकट कर दे और ताकि काफ़िर जान लें कि वे ही झूठे थे (39) जब हम किसी चीज़ का इरादा करते हैं तो हमारी ओर से सिर्फ़ इतनी बात होती है कि हम उससे कहते हैं कि हो जा! बस वह हो जाती है (40) और जिन लोगों ने अत्याचार सहने के बाद अल्लाह के लिए हिजरत की हम उनको दुनिया में भी अवश्य अच्छा ठिकाना देंगे और आख़िरत का बदला बहुत बड़ा है, काश वे जान लेते (41) जिन्होंने सब्र से काम लिया है और जो अपने पालनहार पर भरोसा रखते हैं[1] (42)

(1) उनका यह कहना कि अल्लाह चाहता तो हम शिर्क न करते, सरासर हठधर्मी वाली बात थी, अल्लाह ने अपने पैग़म्बरों के द्वारा सच्चा रास्ता बता दिया और कहा कि जो चाहे रास्ते पर चले और जो चाहे हठधर्मी अपनाए, फिर परिणाम से अवगत करा दिया, फिर उसके बाद अल्लाह का यह काम नहीं कि वह ज़बरदस्ती किसी को ईमान दे दे, इसीलिए उनकी इस बात का उत्तर केवल यह दिया गया कि पैग़म्बर का काम साफ़–साफ़ पहुंचा देना है और हमने हर क़ौम में हिदायत लेकर पैग़म्बर भेजे हैं (कि अल्लाह की बन्दगी करो और तागूत यानी मूर्तियों और शैतानों के रास्ते पर चलने से बचो) फिर न मानने वालों का अंजाम भी तुम्हारे सामने है, इसके बाद भी जो नहीं मानते और पूरी हठधर्मी के साथ आख़िरत का इनकार करते हैं तो ऐसों को आप भी चाहने के बावजूद सही रास्ते पर नहीं ला सकते, आख़िरत के दिन सब सच व झूठ सामने आ जाएगा, उस समय काफ़िरों का अपने झूठ पर होने का विश्वास हो जाएगा और जो अत्याचार सहे हैं हमारे लिए कुछ कठिन नहीं आज नहीं तो कल हम दुनिया में भी उनको अच्छा ठिकाना देंगे और उनका असल घर तो आख़िरत में है, यह उन लोगों के लिए है जो सब्र करते रहे और अल्लाह पर भरोसा करते रहे।

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِيْٓ إِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا أَهْلَ
الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٣﴾ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَأَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ
الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٤﴾
أَفَأَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ أَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْأَرْضَ
أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٤٥﴾ أَوْ يَأْخُذَهُمْ
فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٤٦﴾ أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ فَإِنَّ
رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤٧﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ
يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ
دٰخِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِنْ
دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٩﴾ يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ
وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا إِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ
إِنَّمَا هُوَ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَإِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٥١﴾ وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا أَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَمَا بِكُمْ
مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْـَٔرُوْنَ ﴿٥٣﴾
ثُمَّ إِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ إِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾

منزل ٣

और हमने आपसे पहले भी इंसानों ही को पैग़म्बर बनाकर भेजा जिन पर हम वह्‌य उतारते थे बस अगर तुम नहीं जानते तो याद रखने वालों से पूछ लो (43) (उनको हमने) खुली निशानियां और सहीफ़े (दिये) और नसीहत (की किताब) आप पर इसलिए उतारी ताकि आप लोगों के लिए उन चीज़ों को खोल दें जो उनकी ओर उतारी गई हैं[1] और शायद वे विचार करें (44) तो क्या बुरी बुरी चालें चलने वाले इससे निश्चिन्त हो गए कि अल्लाह उनको ज़मीन में धंसा दे या ऐसी जगह से उन पर अज़ाब आ पड़े जिसके बारे में उन्होंने सोचा भी न हो (45) या वह उनको चलते फिरते पकड़ ले तो वे बेबस नहीं कर सकते (46) या उन्हें डराते–डराते पकड़ ले तो आपका पालनहार निश्चित रूप से बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है[2] (47) क्या उन्होंने देखा नहीं कि अल्लाह ने जो चीज़ भी पैदा की उसकी छाया दाएं और बाएं झुकती है अल्लाह के लिए सज्दा करती हुई और वे सब विनम्रता (आजिज़ी) में हैं (48) और आसमानों में और ज़मीन में जितने भी जीव हैं और सब फ़रिश्ते अल्लाह ही को सज्दा करते हैं और वे अकड़ते नहीं (49) वे अपने पालनहार का अपने ऊपर डर रखते हैं और जो कहा जाता है वह कर डालते हैं[3] (50) और अल्लाह ने कहा कि दो–दो पूज्य (माबूद) मत बनाओ वह तो सिर्फ़ एक ही पूज्य है तो बस मुझ ही से डर रखो (51) और उसी का है जो आसमानों और ज़मीन में है और उसकी आज्ञापालन हर हाल में ज़रूरी है, तो क्या अल्लाह के अतिरिक्त किसी दूसरे का डर रखते हो[4] (52) और तुम्हें जो भी नेअ़मत प्राप्त है तो वह अल्लाह की ओर से है फिर जब तुम्हें घाटा पहुंचता है तो तुम उसी से फ़रियाद करते हो (53) फिर जब वह तुमसे नुक़सान को दूर कर देता है तो तुममें एक गिरोह फिर अपने पालनहार के साथ शिर्क शुरू कर देता है (54)

---

(1) यानी हमने आपको ऐसी किताब दी है जो पिछली किताबों का सारांश और पैग़म्बरों के ज्ञान का स्मृति–पत्र है, आपकी पदवी यह है कि आप सारे संसार के लोगों के लिए इस किताब के विषयों को ख़ूब खोल–खोल कर बयान करें, इससे हदीस का महत्व मालूम होता है, पवित्र क़ुरआन के विवरण हमें हदीस से ही मालूम होते हैं, अगर हदीस न हो तो पवित्र क़ुरआन समझना और उस पर पूरा अमल सम्भव ही नहीं है (2) दुनिया में लोग हर प्रकार की बुराइयां कर रहे हैं लेकिन वह तुरंत पकड़ नहीं करता बल्कि ढील देता है (3) कैसी ही ऊंची चीज़ हो और कैसा ही घमण्डी सरकश इंसान हो हर चीज़ की छाया नीचे की ओर जाती है और अल्लाह को सज्दा करती है, जो लोग सूर्य की पूजा करते हैं वे उसकी ओर मुंह करके खड़े होते हैं लेकिन उनकी छाया उनके पीछे अल्लाह के लिए झुक जाती है (4) यह सज्दे की आयत है जो इसकी तिलावत (पाठ) करे या इसे किसी दूसरे से पढ़ता सुने तो उस पर सज्दा करना वाजिब (अनिवार्य) हो जाता है, इसे सज्द–ए–तिलावत कहते हैं, हां! केवल अनुवाद पढ़ने से या आयत देखने से सज्दा वाजिब (अनिवार्य) नहीं होता।

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾ وَيَجْعَلُونَ
لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ ۗ تَاللَّهِ لَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنتُمْ
تَفْتَرُونَ ﴿٥٦﴾ وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنَاتِ سُبْحَانَهُ ۙ وَلَهُم مَّا يَشْتَهُونَ ﴿٥٧﴾
وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٥٨﴾
يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِن سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهِ ۚ أَيُمْسِكُهُ عَلَىٰ هُونٍ أَمْ
يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ ۗ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٥٩﴾ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۖ وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٠﴾
وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِم مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِن دَابَّةٍ وَلَٰكِن
يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ
سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٦١﴾ وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ
أَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ أَنَّ لَهُمُ الْحُسْنَىٰ ۖ لَا جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَ
أَنَّهُم مُّفْرَطُونَ ﴿٦٢﴾ تَاللَّهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ
فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي
اخْتَلَفُوا فِيهِ ۙ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٦٤﴾

ع

منزل٣

ताकि हमने उसको जो कुछ दिया है वह उसकी नाशुक्री करने लगे, तो मज़े कर लो फिर आगे तुम्हें पता चल जाएगा (55) और वे ऐसों के लिए हमारी दी हुई रोज़ी में से हिस्सा लगाते हैं जिनको जानते भी नहीं, अल्लाह की क़सम जो भी तुम झूठ बांध रहे हो ज़रूर उसके बारे में तुमसे पूछा जाएगा[1] (56) और वे अल्लाह के लिए लड़कियां ठहराते हैं, वह पवित्र है और अपने लिए वह जो दिल चाहता है (57) और जब उनमें किसी को लड़की का शुभसमाचार सुनाया जाता है तो उसका चेहरा काला पड़ जाता है और वह घुट कर रह जाता है (58) जो बुरा शुभसमाचार उसे मिला उसके कारण लोगों से मुंह छिपाए फिरता है (सोचता है कि) उसे अपमान सहन करके रहने दे या मिट्टी में दबा दे, देखो कैसे बुरे फ़ैसले वे किया करते हैं[2] (59) जो आख़िरत को नहीं मानते उनकी बुरी मिसाल है और अल्लाह की मिसाल बहुत ही बुलंद है और वह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी (हिकमत) वाला है (60) और अगर अल्लाह लोगों को उनके अत्याचार के बदले में पकड़ ही लेता तो ज़मीन में कोई चलता फिरता बाक़ी न छोड़ता लेकिन वह तो एक निर्धारित अवधि के लिए उनको मोहलत देता है फिर जब वह अवधि आ जाएगी तो एक घड़ी न पीछे हो सकेंगे न आगे (61) और अल्लाह के लिए वह चीज़ें गढ़ते हैं जिनसे ख़ुद घृणा करते हैं और उनकी ज़बानें झूठ में रंगी रहती हैं कि सब भलाई उन्हीं के लिए है, साबित हो चुका कि निश्चित रूप से उनके लिए आग है और वे (उसी की ओर) बढ़ाए जा रहे हैं (62) अल्लाह की क़सम हमने आपसे पहले कितनी उम्मतों (सम्प्रदायों) में पैग़म्बर भेजे तो शैतान ने उनके काम उनके लिए सुहावना बना दिये तो आज भी वही उनका मित्र है और उनके लिए दुखद अज़ाब है[3] (63) और हमने किताब आप पर इसलिए उतारी ताकि आप उनके मतभेदों को उनके लिए खोल दें और ताकि मानने वालों के लिए हिदायत (संमार्ग) और रहमत (दया) हो[4] (64)

---

(1) अरब के मुश्रिक अपनी खेतियों और पशुओं में एक भाग मूर्तियों के नाम पर चढ़ावा के लिए निर्धारित करते थे उसी की ओर संकेत है कि जिन मूर्तियों की उनको वास्तविकता भी मालूम नहीं अल्लाह की दी हुई रोज़ी को उनके लिए चढ़ावा चढ़ा देते हैं (2) अरब के कुछ क़बीले फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियां बताते थे, कहा जा रहा है कि जो चीज़ तुम अपने लिए पसंद नहीं करते उसको अल्लाह से जोड़ते हो? तुम्हारे फ़ैसले कैसे अनोखे और दुर्भाग्यपूर्ण हैं, उसकी हिकमत न होती तो एक क्षण में वह तुम सबको समाप्त कर देता लेकिन दुनिया में मोहलत दे रहा है और पकड़ के लिए उसने क़यामत का दिन निर्धारित कर रखा है, उस दिन सब कुछ सामने आ जाएगा (3) सब बुराइयां करते थे और कहते थे कि जब हम अल्लाह के यहां जाएंगे तो हमारे लिए आनंद ही आनंद होगा, शैतान ने उनके शिर्क को और कुकृत्यों को उनकी नज़र में अच्छा बना दिया है इसलिए वे ऐसी बातें करते हैं, इसके बदले में उनको दुखद अज़ाब का मज़ा चखना पड़ेगा (4) विभिन्न रास्तों पर चलने वालों के सामने सही और सच्चा रास्ता आ जाए और फिर मानने वालों को सही रास्ता मिल जाए और वे रहमत (दया) के हक़दार हों।

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ
مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾
وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا
حَسَنًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى
النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾
ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ يَخْرُجُ مِنْۢ
بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ۛ وَمِنْكُمْ مَّنْ
يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ
قَدِيْرٌ ﴿٧٠﴾ وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ
فُضِّلُوْا بِرَآدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ؕ اَفَبِنِعْمَةِ
اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّ
جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٢﴾

منزل ٣

और अल्लाह ही ने ऊपर से पानी बरसाया तो उससे ज़मीन के बेजान होने के बाद जान डाल दी बेशक इसमें उन लोगों के लिए एक निशानी है जो बात सुनते हैं (65) और निश्चित रूप से तुम्हरे लिए चौपायों में भी सोचने समझने का बड़ा साधन है, उनके पेट में जो गोबर और ख़ून है उसके बीच से हम तुमको शुद्ध दूध पिलाते हैं[1], पीने वालों के लिए स्वादिष्ट (66) और खजूर और अंगूर के फलों से (भी शिक्षा प्राप्त करो) जिससे तुम शराब और पवित्र रोज़ी तैयार करते हो बेशक इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो बुद्धि से काम लेते हैं[2] (67) और आपके पालनहार ने मधुमक्खी को आदेश भेजा कि पहाड़ो में और पेड़ों में और जहां वे छत्ता डालते हैं घर बना ले (68) फिर हर प्रकार के फलों से (रस) चूस ले फिर अपने पालनहार के (सुझाए हुए) रास्तों में आसानी के साथ चली जा, उसके पेट से विभिन्न रंगों का एक पेय निकलता है जिसमें लोगों के लिए शिफा (आरोग्य) है बेशक इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो विचार करते हैं[3] (69) और अल्लाह ने ही तुम को पैदा किया फिर वह तुम्हारी आत्मा को निकाल लेता है और तुमसे कुछ निकम्मी उम्र तक पहुंचा दिये जाते हैं जिसके फलस्वरूप वे अवगत होकर भी चीज़ों से बेख़बर हो जाते हैं बेशक अल्लाह ख़ूब जानता है सामर्थ्य रखता है[4] (70) और अल्लाह ही ने तुममें से किसी को किसी पर रोज़ी में बड़ाई प्रदान की है तो जिनको भी बड़ाई प्राप्त है वे अपने ग़ुलामों (सेवकों) को अपनी रोज़ी लौटा ही नहीं देते कि फिर वे उसमें बराबर ही हो जाएंगे[5] तो क्या फिर वे अल्लाह की नेमत का इनकार करते हैं (71) और अल्लाह ने तुम्ही में से तुम्हारी पत्नियां बनाईं और तुम्हारी पत्नियों से तुम्हें बेटे और पोते दिये और पवित्र चीज़ों में से तुम्हें रोज़ी दी, तो क्या फिर वे झूठ को मानते हैं और अल्लाह की नेमत की वे नाशुक्री करते हैं[6] (72)

---

(1) यह अल्लाह की कुदरत की बड़ी निशानी है, आयत में जिस क्रम से दूध बनने का उल्लेख है आज वह वैज्ञानिक शोध से भी सिद्ध हो चुका है, जानवर चारा खाता है, वह गोबर बनता है फिर जब आंतों में से होकर गुज़रता है तो पौष्टिक सामग्री उन आंतों की मोटी खाल में चली जाती है और वहां से ख़ून के द्वारा पूरे शरीर में पहुंचती है फिर थनों की कोशिकाओं में वह धीरे–धीरे दूध के रूप में चली जाती है (2) जब यह आयत उतरी उस समय तक शराब हराम नहीं हुई थी, लेकिन इसी आयत में पवित्र रोज़ी के मुकाबले में उसका वर्णन करके एक बारीक संकेत इस ओर कर दिया कि शराब पवित्र रोज़ी नहीं है (3) मधुमक्खी का फूलों से रस चूसना फिर बहुत ही सूक्ष्मदर्शिता के साथ ऊंची जगहों पर छत्ते तैयार करना अल्लाह की कुदरत की बड़ी निशानियों में से है, कौन है जो इस छोटे से कीड़े के दिल में यह बात डालता है और जो काम बड़ी बुद्धि वाले नहीं कर पाते वह काम एक छोटा सा कीड़ा करता है? (4) अत्यंत बुढ़ापे को निकम्मी उम्र कहा गया है, जब आदमी की सारी शक्तियां उदासीन और बेकार हो जाती हैं और सब कुछ जानने–सीखने के बाद वह इस उम्र में सब कुछ भूल जाता है इसमें मानव के पतन और समाप्ति की ओर संकेत देकर अल्लाह के ज्ञान व शक्ति के बाक़ी रहने को बयान किया गया है (5) यानी तुममें कोई यह नहीं करता कि अपने ग़ुलामों को अपने धन इस प्रकार दे दे कि दोनों बराबर हो जाएं, तो तुम अल्लाह के ग़ुलामों के विषय में यह कैसे मानते हो कि अल्लाह ने अपनी शक्ति उनको दी और ख़ुदा में साझीदार बना लिया (6) बस जब सब कुछ अल्लाह की ओर से है तो फिर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को पूजना कितनी बड़ी नाशुक्री है।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٧٣﴾ فَلَا تَضْرِبُوْا
لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٤﴾ ضَرَبَ
اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ
مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ؕ هَلْ
يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَضَرَبَ
اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ
كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيْ
هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٦﴾
وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَاۤ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا
كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٧٧﴾
وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّ
جَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾
اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ
اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٧٩﴾

منزل۳

और अल्लाह के अलावा वे ऐसों को पूजते हैं जो आसमानों और ज़मीन में उनकी रोज़ी के कुछ भी मालिक नहीं और न वह उनके बस में है (73) बस तुम अल्लाह के लिए मिसालें मत गढ़ो बेशक अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते[1] (74) अल्लाह एक उदाहरण देता है (एक ओर) एक ग़ुलाम है जो किसी मिलिक्यत (स्वामित्व) में है किसी चीज़ पर उसका बस नहीं और (दूसरी ओर) वह व्यक्ति है जिसको हमने ख़ूब रोज़ी दी है तो वह छिपकर और खुलकर उसमें से ख़र्च करता रहता है क्या वे बराबर हो सकते हैं? प्रशंसा असल अल्लाह ही के लिए है लेकिन उनमें अधिकतर लोग जानते ही नहीं (75) और अल्लाह एक और उदाहरण देता है, दो आदमी हैं उनमें एक गूंगा है किसी चीज़ पर उसका बस नहीं और वह अपने स्वामी पर एक बोझ है, वह उसको जहां भी भेजता है वह कुछ भला करके नहीं लाता क्या यह व्यक्ति उस दूसरे आदमी के बराबर हो सकता है जो न्याय का आदेश देता है और वह ख़ुद सीधी राह पर है (76) और आसमानों और ज़मीन का ढका छिपा अल्लाह ही के पास है और क़यामत का मामला तो बिल्कुल आंख झपकने की तरह है या उससे भी निकट, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर पूरा सामर्थ्य रखता है (77) और अल्लाह ने तुमको अपनी मांओं के पेट से निकाला तुम कुछ जानते न थे और तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनाये ताकि तुम शुक्रगुज़ार (आभारी) रहो (78) क्या उन्होंने पक्षियों को आकाश की फ़िज़ा में काम पर लगे नहीं देखा, अल्लाह के अतिरिक्त कौन है जो उनको थामे हुए है? बेशक इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो मानते हैं (79)

---

(1) अरब के मुश्रिक अपने शिर्क के समर्थन में यह उदाहरण देते थे कि जिस प्रकार यहां राजा अकेला अपनी सरकार नहीं चला सकता उसके बहुत से काम अपने मंत्रियों को सौंपने पड़ते हैं इसी प्रकार अल्लाह ने भी ख़ुदाई के बहुत से काम दूसरों को सौंप दिए हैं, हम इसीलिए ख़ुदाई में साझीदार इन देवताओं को पूजते हैं, इस आयत में बताया जा रहा है कि अल्लाह का उदाहरण किसी भी सृष्टि से देना अत्यंत अज्ञानता और मूर्खता की बात है फिर आगे आयतों में दो उदाहरणों से बताया गया है कि प्राणियों में परस्पर इतना बड़ा अंतर है कि कोई बहुत उच्च कोटी का है कोई बहुत साधारण तो स्रष्टा और सृष्टि में कितना बड़ा अंतर होगा, फिर किसी सृष्टि को स्रष्टा के साथ पूजा में कैसे साझीदार बनाया जा सकता है? फिर आगे इंसानों पर अल्लाह के पुरस्कारों का और अल्लाह की शक्ति का बयान है।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ
الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ
وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَاۤ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا
اِلٰى حِيْنٍ ﴿٨٠﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ
مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ
وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ
لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ
الْمُبِيْنُ ﴿٨٢﴾ يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ
الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٣﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا
يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ
ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٥﴾ وَ
اِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هٰۤؤُلَآءِ
شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا
اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ
يَوْمَئِذِ ۣ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٨٧﴾

منزل٣

और अल्लाह ही ने तुम्हारे घरों को तुम्हारे लिए सुकून का स्थान बनाया और तुम्हारे लिए चौपायों की खालों से ऐसे शिविर बनाए जो तुम्हें यात्रा के समय और डेरे डालते समय हल्के–फुल्के लगते हैं और उनके ऊन से और उनके रोएं से और उनके बालों से बहुत सारे घरेलू सामान और प्रयोग की ऐसी चीज़ें बनाईं जो एक अवधि तक लाभ पहुंचाती हैं (80) और अल्लाह ने अपनी पैदा की हुई वस्तुओं से तुम्हारे लिए छांव बनाई और पहाड़ों में तुम्हारे छिपने के स्थान (बनाए) और तुम्हारे लिए ऐसे कुर्ते (बनाए) जो तुम्हें गर्मी से बचाते हैं और ऐसे कुर्ते भी जो तुम्हारे युद्ध में तुम्हारे बचाव का काम करते हैं, अल्लाह इसी प्रकार अपनी नेअमत तुम पर पूरी करता है कि शायद तुम आज्ञाकारी बन जाओ[1] (81) फिर अगर वे मुंह फेरते हैं तो आपका काम तो साफ़ साफ़ पहुंचा देना ही है[2] (82) वे अल्लाह के एहसान को जान कर फिर उससे अंजान बनते हैं और उनमें अधिकांश नाशुक्रे हैं (83) और जिस दिन हम हर उम्मत (सम्प्रदाय) में से एक गवाह खड़ा करेंगे फिर काफ़िरों को न (माफ़ी मांगने की) अनुमति दी जाएगी और न उनको तौबा का अवसर दिया जाएगा[3] (84) और जब अत्याचारी अज़ाब देख लेंगे तो फिर न वह उनसे कम किया जाएगा और न उनको मोहलत दी जाएगी (85) और जब मुश्रिक अपने साझीदारों को देखेंगे तो कहेंगे ऐ हमारे रब! यही हमारे वह साझीदार हैं जिनको हम तेरे अतिरिक्त पुकारा करते थे तो वे उन पर बात को पलट देंगे कि निश्चित रूप से तुम्ही झूठे हो (86) और वे उस दिन अल्लाह के सामने हथियार डाल देंगे और जो कुछ गढ़ा करते थे वह सब उनसे हवा हो जाएगा (87)

(1) यह सब अल्लाह के पुरस्कारों का वर्णन है, अरबों में शिविरों (ख़ेमों) का बड़ा चलन था, यात्राओं में वही काम आते थे, वस्त्रों की सबको आवश्यकता होती थी विशेष रूप से कवचों का भी उल्लेख है कि वे योद्धा लोग थे (2) सारी नेअमतें अल्लाह ने उनको दीं और धर्म (दीन) की सबसे बड़ी नेमत प्रदान की जो आपके द्वारा उनको प्राप्त हुई, इसके बाद भी अगर वे नहीं मानते और मुंह मोड़ते हैं तो आप दुखी न हों, आप का काम पूरा हुआ, अब अगर वे नहीं मानेंगे तो ख़ुद भुगतेंगे (3) हर क़ौम का पैग़म्बर गवाह बनकर खड़ा होगा और बताएगा कि सत्य उन तक पहुंचाया गया था, जब तौबा कर लेने और बाज़ आ जाने का समय था तो उन्होंने नहीं माना, अब उसका समय समाप्त हो गया, अज़ाब सामने है, अब वह टलने वाला नहीं, अल्लाह उनको अपमानित करने का प्रबंध भी करेगा कि उनके सब देवी–देवताओं को एकत्र कर देगा, उनको देखकर मुश्रिक कहेंगे कि ऐ हमारे पालनहार! हम इन्हीं को तेरे अतिरिक्त पुकारते थे, अल्लाह तआला इन मूर्तियों को भी उस दिन बोलने की शक्ति प्रदान करेगा और वे साफ़ कहेंगे कि तुम झूठे हो, हमें तुम्हारे इस काम से क्या सरोकार, वे भी यह कह कर दामन झाड़ लेंगे और वे सब शिर्क करने वाले असहाय होकर रह जाएंगे

الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله زدنهم عذابا
فوق العذاب بما كانوا يفسدون ﴿٨٨﴾ ويوم نبعث في كل
امة شهيدا عليهم من انفسهم وجئنا بك شهيدا
على هؤلاء ونزلنا عليك الكتب تبيانا لكل شيء و
هدى ورحمة وبشرى للمسلمين ﴿٨٩﴾ ان الله يامر
بالعدل والاحسان وايتاي ذي القربى وينهى عن
الفحشاء والمنكر والبغي يعظكم لعلكم تذكرون ﴿٩٠﴾ و
اوفوا بعهد الله اذا عهدتم ولا تنقضوا الايمان
بعد توكيدها وقد جعلتم الله عليكم كفيلا ان الله
يعلم ما تفعلون ﴿٩١﴾ ولا تكونوا كالتي نقضت غزلها
من بعد قوة انكاثا تتخذون ايمانكم دخلا بينكم ان
تكون امة هي اربى من امة انما يبلوكم الله به وليبينن
لكم يوم القيمة ما كنتم فيه تختلفون ﴿٩٢﴾ ولو شاء
الله لجعلكم امة واحدة ولكن يضل من يشاء
ويهدي من يشاء ولتسئلن عما كنتم تعملون ﴿٩٣﴾

ع

منزل٣

जिन्होंने इनकार किया है और अल्लाह के रास्ते से रोका है हम उनको अज़ाब पर अज़ाब देंगे इसलिए कि वे बिगाड़ मचाते रहते थे (88) और जब हम हर उम्मत (सम्प्रदाय) में उन्हीं में से एक गवाह उन पर खड़ा करेंगे और उन सब पर आप को गवाह लाएंगे[1] और हमने आप पर किताब उतारी जिसमें हर चीज़ का विवरण है और मुसलमानों के लिए हिदायत व दया (रहमत) और शुभसमाचार है (89) बेशक अल्लाह न्याय का और भलाई करने का और नातेदारों को देने (दिलाने) का आदेश करता है और अश्लीलता से और अशिष्ट काम से और सरकशी से रोकता है वह तुम्हें नसीहत करता है कि शायद तुम ध्यान दो[2] (90) और जब भी प्रतिज्ञा करो तो अल्लाह की प्रतिज्ञा को पूरा करो और क़समों को पक्का करके तोड़ा मत करो जबकि अल्लाह को तुम अपने ऊपर गवाह बना चुके, तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उससे ख़ूब अवगत है (91) और उस महिला की तरह मत हो जाओ जिसने बड़ी मेहनत से सूत कातकर फिर उसको उधेड़ कर छिन्न भिन्न कर डाला[3] कि अपनी कसमों को आपस के बिगाड़ का माध्यम बनाओ केवल इसलिए कि कुछ लोग दूसरों से अधिक लाभ प्राप्त कर लें इससे तो अल्लाह तुम्हारा परीक्षण करता है और वह अवश्य क़यामत के दिन उन वस्तुओं को खोल देगा जिसमें तुम झगड़ते रहे हो (92) और अगर चाहता तो अल्लाह तुम सब को एक ही उम्मत (सम्प्रदाय) बना देता लेकिन वह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट करता है और जिसे चाहता है संमार्ग दिखाता (हिदायत देता) है और तुम जो कुछ करते हो उसके बारे में तुमसे अवश्य पूछताछ होगी (93)

(1) सारे पैग़म्बर अपनी क़ौमों पर गवाही के लिए पेश होंगे और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी उम्मत के लिए गवाही देंगे और पैग़म्बरों के लिए भी गवाही देंगे (2) ऊपर पवित्र क़ुरआन को "तिब्यानन् लिकुल्लि शैइन" कहा गया था यह आयत उसका नमूना है, हज़रत अब्दुल्लाह पुत्र मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह तआला ने हर एक भलाई व बुराई के बयान को इस आयत में इकट्ठा कर दिया है, हज़रत उमर पुत्र अब्दुल अज़ीज़ की आदत थी कि वे इस आयत को जुमे के ख़ुत्बे में अवश्य पढ़ा करते थे, आज भी उस पर अमल हो रहा है, आयत में तीन चीज़ों का आदेश है, एक न्याय जिसका मतलब यह है कि आदमी सारे अक़ायद (विश्वासों) व कामों में शिष्टाचारों और मामलों आदि में संतुलन व न्याय के साथ हो, दुश्मन के साथ भी न्याय का व्यवहार हो, अन्दर व बाहर एक जैसा हो, दूसरे एहसान– जिसका अर्थ यह है कि आदमी खुद भलाई की मूर्ति बनकर दूसरों के लिए भलाई चाहे, न्याय व इन्साफ़ से थोड़ा बुलंद होकर माफ़ करने की आदत डाले, तीसरी बात नातेदारों से संबंधित है कि उनके साथ थोड़ा बढ़कर शिष्टता का व्यवहार किया जाए, और इस आयत में जिन तीन चीज़ों से रोका गया है वे सारी बुराइयों के तीन आधार हैं, इससे हर बुराई की जड़ कट कर रह जाती है (3) मक्का में एक पागल महिला थी जो दिन भर सूत कातती शाम को सब उधेड़ डालती, यह महिला उन लोगों के लिए मसल (कहावत) बन गई जो अच्छा काम करके बिगाड़ दे, यहां यह उपमा उन लोगों के लिए प्रयोग हुई है जो ज़ोर–शोर से किसी बात की क़सम खाकर उसको तोड़ दें मात्र सांसारिक साधारण लाभ के लिए। आगे आयत में "दख़लन" का शुद्ध प्रयोग हुआ है जिसका प्रयोग अरबी भाषा में आंतरिक दुश्मनी और बिगाड़ के लिए होता है, इसलिए यहां इसका अनुवाद ''बिगाड़'' से किया गया।

और अपनी क़समों को आपस में उपद्रव पैदा करने का साधन मत बनाओ कि कहीं कोई क़दम जमने के बाद उखड़ न जाए और तुम्हें अल्लाह के रास्ते से रोकने के कारण बुरा मज़ा चखना पड़े और तुमको बड़ा अज़ाब (दण्ड) हो[1] (94) और अल्लाह की प्रतिज्ञा (अहद व पैमान) को थोड़ी क़ीमत में बेच मत डालो, जो भी अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए बहुत बेहतर है अगर तुम जानते हो (95) तुम्हारे पास जो भी है वह समाप्त हो जाएगा और जो अल्लाह के पास है वह बाक़ी रहने वाला है और जो भी क़दम जमाए रखेंगे हम ज़रूर उनको उनके बेहतर कामों का बदला प्रदान करेंगे (96) ईमान की हालत में जो भी भला काम करेगा वह मर्द हो या औरत हम उसको ज़रूर पवित्र जीवन प्रदान करेंगे और जो कुछ वे किया करते थे उनके उत्तम कामों का बदला हम उनको ज़रूर प्रदान करेंगे (97) तो जब भी आप कुरआन पढ़ें तो शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह चाहें[2] (98) बेशक उसका उन लोगों पर कुछ भी ज़ोर नहीं जो ईमान लाए और वे अपने पालनहार ही पर भरोसा रखते हैं (99) उसका ज़ोर तो उन लोगों पर है जो उससे दोस्ती रचाते हैं और जो उसके कारण शिर्क करने वाले हैं (100) और जब हम एक आयत को दूसरी आयत से बदलते हैं और अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वह क्या उतारे तो वे (काफ़िर) कहते हैं बेशक तुम्हीं तो गढ़–गढ़ कर लाने वाले हो, बात यह है कि उनमें अधिकांश लोग जानते नहीं[3] (101) कह दीजिए इसको आपके पालनहार की ओर से रूहुल क़ुदुस ठीक–ठीक ले कर आए हैं ताकि वे ईमान वालों का क़दम जमाए रखें और हिदायत (मार्गदर्शन) व शुभ समाचार हो मुसलमानों के लिए (102)

(1) अगर तुम क़समें तोड़ोगे और उसको दुनिया कमाने का साधन बनाओगे तो हो सकता है कि दूसरों की भी पथ–भ्रष्टता का करण बनने और उसके कारण तुम्हें दोहरा भुगतान भुगतना पड़े, साधारण लाभ के लिए अल्लाह की प्रतिज्ञा को तोड़ मत डालो, तुम्हारे लिए जो अल्लाह के पास है वह कहीं बेहतर है, बस जो ईमान के साथ भलाई करता रहेगा तो उसको हम दुनिया में भी सुकून का जीवन देंगे और आख़िरत में भी उसका अच्छा बदला प्रदान करेंगे (2) हर अच्छे काम के समय शैतान आकर उससे रोकने का प्रयास करता है और पवित्र क़ुर्आन का पाठ उच्चतम कार्यों में से है इसलिए इससे पहले अल्लाह की शरण में आ जाने का विशेष आदेश है फिर ऐसे लोगों पर शैतान का कुछ भी बस नहीं चलता (3) परिस्थितियों के अनुसार जब अल्लाह तआला आदेशों में परिवर्तन करते और कोई आयत निरस्त (मंसूख) होती है तो मुश्रिक उस पर आपत्ति करते थे, उसका उत्तर दिया जा रहा है कि अल्लाह अधिक बेहतर जानता है कि कौन से समय कौन सा आदेश उतारा जाए फिर इसका अतिरिक्त स्पष्टीकरण भी है, इसको हज़रत जिब्रईल अल्लाह के पास से ठीक ठीक लेकर आते हैं ताकि लोगों को सही रास्ता मिल जाए।

ولقد نعلم انهم يقولون انما يعلمه بشر لسان الذي
يلحدون اليه اعجمي وهذا لسان عربي مبين ﴿١٠٣﴾
ان الذين لا يؤمنون بايت الله لا يهديهم الله ولهم
عذاب اليم ﴿١٠٤﴾ انما يفتري الكذب الذين لا يؤمنون
بايت الله واولئك هم الكذبون ﴿١٠٥﴾ من كفر بالله من
بعد ايمانه الا من اكره وقلبه مطمئن بالايمان ولكن
من شرح بالكفر صدرا فعليهم غضب من الله ولهم
عذاب عظيم ﴿١٠٦﴾ ذلك بانهم استحبوا الحيوة الدنيا
على الاخرة وان الله لا يهدي القوم الكفرين ﴿١٠٧﴾
اولئك الذين طبع الله على قلوبهم وسمعهم وابصارهم
واولئك هم الغفلون ﴿١٠٨﴾ لا جرم انهم في الاخرة هم
الخسرون ﴿١٠٩﴾ ثم ان ربك للذين هاجروا من بعد
ما فتنوا ثم جهدوا وصبروا ان ربك من بعدها
لغفور رحيم ﴿١١٠﴾ يوم تاتي كل نفس تجادل عن
نفسها وتوفى كل نفس ما عملت وهم لا يظلمون ﴿١١١﴾

ربع

منزل٣

और हमें खूब मालूम है कि वह (आपके बारे में) यह कहते हैं कि उनको तो एक आदमी सिखाता पढ़ाता है (जबकि) वे जिससे अकारण संबंध बताते हैं उसकी भाषा तो ग़ैर अरबी है और यह खुली हुई अरबी भाषा है[1] (103) निश्चित रूप से जो अल्लाह की आयतों को नहीं मानते अल्लाह तआला भी उनको राह नहीं देता और उनके लिए दुखद अज़ाब है (104) झूठ तो वे लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों को नहीं मानते और वास्तव में वही झूठे हैं (105) जिसने भी अल्लाह को मानने के बाद इनकार किया वह नहीं जिसको मजबूर किया गया हो और उसका दिल ईमान पर संतुष्ट हो हाँ जो दिल खोल कर इनकार करने वाला हुआ तो ऐसों पर अल्लाह का प्रकोप है और उनके लिए बड़ा अज़ाब (दण्ड) है[2] (106) यह इसलिए कि उन्होंने दुनिया का जीवन आख़िरत के मुक़ाबले में पसंद कर लिया और बेशक अल्लाह ऐसे नाशुक्रे (कृतघ्न) लोगों को हिदायत नहीं देता (107) यही वे लोग हैं जिनके दिलों और कानों और आँखों पर अल्लाह ने मोहर लगा दी है और यही लोग गाफ़िल (असावधान) हैं (108) अवश्य आख़िरत में वही घाटा उठाने वाले हैं (109) फिर आप का पालनहार उन लोगों के लिए जिन्होंने आज़माइश (परीक्षा) में पड़ने के बाद हिजरत की, फिर जिहाद किया और क़दम जमाए रखा बेशक आपका पालनहार इसके बाद तो निश्चित रूप से बहुत ही माफ़ करने वाला अति दयालु है[3] (110) जिस दिन हर व्यक्ति अपने बारे में बहस करता आएगा और हर व्यक्ति को उसने जो भी किया वह पूरा पूरा दे दिया जाएगा और उनका हक़ नहीं मारा जाएगा (111)

(1) पवित्र मक्के में एक लोहार था जिसने इंजील पढ़ी थी, वह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातें बहुत ध्यान से सुनता था, रोम का रहने वाला था, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कभी उसके पास बैठ जाते थे, कुछ काफिरों ने यह कहना शुरु कर दिया कि आप कुरआन उसी से सीखते हैं, किसी ने उससे जाकर पूछा भी तो उसने कहा कि मैं क्या सिखाऊँगा? मैं तो खुद सीखता हूँ, इस आयत में उसी निरर्थक आरोप का वर्णन है कि वह कुरआन जो बड़े से बड़े सुभाषी के बस से बाहर है वह एक ग़ैर अरब (अज़मी) जिसकी असली भाषा भी अरबी नहीं भला वह बना कर लाएगा (2) जिसको कुफ़्र के शब्द कहने पर मजबूर कर दिया जाए और वह दिल में पूर्ण संतुष्टि रखते हुए ज़बान से कोई ऐसा शब्द कह भी दे तो वह असमर्थ है (3) काफिरों और मुश्रिकों के वर्णन के बाद ईमान वालों का वर्णन है जिन्होंने तकलीफें सहीं, फिर हिजरत की और जिहाद किया कि वे कर्म हैं कि उनकी मग़फ़िरत निश्चित है और अंतिम आयत में स्पष्ट कहा गया है कि यह उस दिन की बात है जब हर व्यक्ति अपने बचाव के लिए उपाय करना चाहेगा लेकिन हर व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार बदला मिलेगा और उसमें कोई कमी न होगी।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَىِٕنَّةً
يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ
اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا
يَصْنَعُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ
فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ فَكُلُوْا مِمَّا
رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ
كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۱۴﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَ
الدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَاۤ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ
اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾
وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا
حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ
الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿۱۱۶﴾ؕ
مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ
هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا
ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۱۸﴾

منزل ۳

और अल्लाह एक बस्ती का उदाहरण देता है जो बड़ी शान्ति और चैन से थी, हर ओर से उसकी रोज़ी बड़ी प्रचुरता से चली आती थी फिर उसने अल्लाह की नेमतों की नाशुक्री की तो अल्लाह ने उनकी करतूतों के बदले उनको डर और भूख का लिबास पहना कर मज़ा चखा दिया (112) और उनके पास उन्हीं में से एक रसूल आ चुके थे तो उन्होंने उनको झुठलाया तो अज़ाब ने उनको आ दबोचा और वे अन्यायी थे[1] (113) बस अल्लाह ने तुम्हें जो हलाल पवित्र रोज़ी दी है उसमें से खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो अगर तुम उसी की इबादत करते हो (114) उसने निश्चित रूप से तुम पर मुर्दार और ख़ून और सुअर का गोश्त और (वे जानवर) जो अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के नाम पर ज़िबह किया जाए हराम कर दिया, हाँ जो बेक़रार हो जाए न चाहत रखे और न हद से आगे बढ़े तो अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है (115) और तुम्हारी ज़बानें जो झूठ बोला करती हैं उनसे यह मत कहो कि यह हलाल है और यह हराम ताकि अल्लाह पर झूठ बाँधो बेशक जो भी अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं तो वे सफल नहीं होते[2] (116) मज़ा थोड़ा सा है और उनके लिए दुखद अज़ाब है (117) और जो यहूदी हैं उन पर भी हमने वही चीज़ें हराम कीं जो हम पहले आप से बयान कर चुके हैं और हमने उनके साथ अन्याय नहीं किया, हाँ वे ख़ुद अपने ऊपर अत्याचार करते रहे थे (118)

(1) यह अल्लाह तआला ने आम उदाहरण दिया है जो बस्तियाँ ख़ुशहाल थीं जब उन्होंने अवज्ञा की तो अज़ाब (दण्ड) में गिरफ़्तार हुईं और इसमें पवित्र मक्के के मुश्रिकों की ओर भी संकेत है कि वे हर प्रकार से ख़ुशहाल थे मगर जब उन्होंने हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इनकार किया तो सूखे से ग्रस्त हुए फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही से दुआ कराई, फिर बद्र युद्ध में बड़ा घाटा उठाया, अंततः मक्का उनके हाथ से निकल गया (2) यानी अपनी ओर से हलाल (वैध) हराम (अवैध) का फैसला मत करो, मक्का के क़ाफ़िर अपने आप को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दीन के अनुयायी कहते थे और बहुत सी वे चीज़ें जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने से हलाल चली आ रही थीं उनको हराम कहते थे।

وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ﴿۱۵﴾ لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ
بِهٖ ﴿۱۶﴾ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ﴿۱۷﴾ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ
قُرْاٰنَهٗ ﴿۱۸﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ﴿۱۹﴾ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ
الْعَاجِلَةَ ﴿۲۰﴾ وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿۲۱﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿۲۲﴾
اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿۲۳﴾ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍۭ بَاسِرَةٌ ﴿۲۴﴾ تَظُنُّ
اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿۲۵﴾ كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿۲۶﴾
وَقِيْلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿۲۷﴾ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿۲۸﴾ وَالْتَفَّتِ
السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿۲۹﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ِالْمَسَاقُ ﴿۳۰﴾
فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ﴿۳۱﴾ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿۳۲﴾
ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿۳۳﴾ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿۳۴﴾
ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿۳۵﴾ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ
يُّتْرَكَ سُدًى ﴿۳۶﴾ اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿۳۷﴾
ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ﴿۳۸﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ
الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿۳۹﴾ اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ
يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ﴿۴۰﴾

منزل ۷

चाहे कितने बहाने पेश करे[1] (15) आप उस (कुरआन को पढ़ने में) जल्दी–जल्दी अपनी ज़बान को न हिलाएं (16) उसको सुरक्षित करना और पढ़ना हमारी ज़िम्मेदारी है (17) फिर जब हम (जिब्रईल की ज़बानी) उसको पढ़ें तो आप उसको पढ़ने के साथ–साथ रहें (18) फिर उसकी व्याख्या भी हमारे ज़िम्मे है[2] (19) बात यह है कि तुम्हें तत्काल चीज़ (यानी दुनिया) से प्यार है (20) और आख़िरत को तुम भुला देते हो (21) उस दिन बहुत से चेहरे खिल रहे होंगे (22) अपने पालनहार को देखते होंगे (23) और बहुत से चेहरे कुरूप होंगे (24) समझ रहे होंगे कि (आज) उनकी कमर तोड़कर रख दी जाएगी (25) कोई नहीं जब जान हंसली को आ लगेगी[3] (26) और कहा जाएगा कि है कोई झाड़–फूँक करने वाला[4] (27) और वह समझ लेगा कि जुदाई का समय आ पहुँचा (28) और पाँव पर पाँव चढ़ जाएंगे[5] (29) उस दिन आपके पालनहार की ओर हाँक कर ले जाया जाएगा (30) बस उसने न माना, न नमाज़ पढ़ी (31) लेकिन झुठलाया और मुँह फेरा (32) फिर अकड़ता हुआ अपने घर वालों की ओर चल दिया (33) तेरे लिए तबाही पर तबाही है (34) (हाँ) फिर तेरे लिए तबाही पर तबाही है (35) क्या इन्सान समझता है कि उसको यूँ ही छोड़ दिया जाएगा (36) क्या वह वीर्य की एक बूँद नहीं था जो (माँ के गर्भाशय में) टपकाया गया (37) फिर वह लोथड़ा बन गया फिर (अल्लाह ने उसको) बनाया तो संतुलित बनाया (38) बस उसने उससे दोनों जोड़े बनाए पुरुष भी और स्त्री भी (39) भला उसको इसमें सामर्थ्य (कुदरत) न होगी कि वह मुर्दों को फिर से जीवित कर दे (40)

(1) इनसान अपनी हक़ीक़त ख़ूब समझता है अपनी ग़लतियों को भी जानता है लाख बहाने बनाए (2) शुरु में जब हज़रत जिब्रईल (अ0) आयतें लेकर उतरे और आप (स0) के सामने पढ़ते तो आप (स0) जल्दी–जल्दी अपनी ज़बान से अदा करते ताकि कुछ छूटने न पाये और इसमें आप (सल्ल0) को दिक्कत होती, इस पर यह आयतें उतरीं कि इसका आप (स0) के सीने में सुरक्षित करना और आपकी ज़बान से अदा करवाना फिर उसकी व्याख्या व विवरण सब हमारे ज़िम्मे है, बस जब हम जिब्रईल (अ0) के माध्यम से आयतें पढ़ें तो आप ध्यान से सुन लें और उसके बाद अपनी पवित्र ज़बान से अदा करें (3) अर्थात क़यामत का वह दिन दूर नहीं, जब आदमी मरा, उसकी क़यामत उसके सामने है (4) जब हर प्रकार के बाहय इलाज से निराशा हो जाती है तो आदमी को झाड़–फूँक की सूझती है इसमें उसकी मौत के निकट होने की ओर इशारा है (5) मौत के समय की तकलीफ़ों की ओर इशारा है और अगली आयत में आख़िरत की यात्रा के आरम्भ होने का वर्णन है।

سورة بني اسرائيل مكية وهي مائة واحدى عشرة آية واثنا عشر ركوعا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِيْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ① وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ② ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ③ وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ فِي الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا ④ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ ؕ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ⑤ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ⑥ اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ ۫ وَاِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا ؕ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِيَسُوْٓءٗا وُجُوْهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا ⑦

منزل ۴

सूरह बनी इस्राईल

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

पवित्र है वह जो अपने बन्दे को रातों–रात मस्जिद–ए–हराम से मस्जिद–ए–अक़्सा ले गया, जिसके आसपास हमने बरकत रखी है ताकि हम उनको अपनी निशानियाँ दिखा दें बेशक वह ख़ूब सुनता ख़ूब जानता है[1] (1) और हमने मूसा को किताब दी और उसको बनी इस्राईल के लिए पथ प्रदर्शक बना दिया कि तुम मेरे अलावा और किसी को काम बनाने वाला मत ठहराना (2) कि तुम उनकी संतान हो जिनको हमने नूह के साथ सवार कर दिया था निश्चित रूप से वे बड़े शुक्र गुज़ार (कृतज्ञ) बंदे थे[2] (3) और हमने नविश्ता (भाग्य) में तय करके बनी इस्राईल को आगाह कर दिया था कि तुम ज़रूर धरती में दो बार बिगाड़ करोगे और बड़ी सरकशी (उदण्डता) दिखाओगे (4) फिर जब उन दोनों में से पहला वादा आ पहुँचा तो हमने तुम पर अपने ऐसे बन्दों को मुसल्लत किया जो बड़े योद्धा थे बस वे शहरों के बीच घुस गये और यह तो एक ऐसा वादा था जिसे पूरा होना ही था[3] (5) फिर हमने तुम्हें दोबारा उन पर वर्चस्व दिया और धन व सन्तान से तुम्हारी सहायता की और तुम्हें बड़े (लाव–लश्कर) वाला बना दिया (6) अगर तुमने भला किया तो अपना ही भला किया और अगर तुमने बुराई की तो अपने ही लिए की फिर जब दूसरा वादा आ पहुँचा (तो फिर हमने दूसरे दुश्मनों को तुम पर मुसल्लत किया) ताकि वे तुम्हारा हुलिया बिगाड़ दें[4] और मस्जिद (ए–अक़्सा) में घुस जाएं जैसे पहले घुसे थे और जिस पर नियंत्रण पाएं उसे नष्ट कर डालें (7)

---

(1) इस आयत में मेराज की घटना की ओर संकेत है, जब हज़रत जिब्राईल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रातों रात बुर्राक़ पर सवार कराके पहले मस्जिद–ए–हराम से मस्जिद–ए–अक़्सा ले गए, यह यात्रा का पहला चरण था इसको "इस्रा" कहा जाता है फिर मस्जिद–ए–अक़्सा से सातों आसमानों की सैर कराई, नबियों से मुलाकातें हुईं, फिर जन्नत के एक विशेष पेड़ "सिद्रतुल मुंतहा" तक ले गए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रत्यक्ष रूप से अल्लाह से बातें करने का गौरव प्राप्त हुआ, पाँच नमाज़ों का उपहार उम्मत (मुस्लिम समुदाय) के लिए मिला और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वापस आए, यात्रा का यह दूसरा चरण मेराज कहलाता है, और कभी पूरी यात्रा को भी इस्रा या मेराज कह दिया जाता है, सही हदीसों से मालूम होता है और पवित्र क़ुरआन की शैली भी यही बताती है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह यात्रा शरीर और आत्मा दोनों के साथ थी, यह कोई सपना नहीं था, मस्जिद–ए–अक़्सा फ़िलिस्तीन में स्थित है जो शाम (सीरिया) देश का एक भाग था, अल्लाह ने इस पूरे देश को बाहरी व आंतरिक हर प्रकार की बरकतों से सम्मानित किया है, पूरा देश बहुत ही हरा भरा, पैदावार की बहुतायत और दूसरी ओर पैग़म्बर लोग भी यहीं रहते थे और यहीं उनकी क़ब्रें हैं (2) इसमें याद दिलाया जा रहा है कि तुम उन लोगों की संतान हो जिनको हमने नूह के साथ बचा लिया था तो तुमको इस पर आभारी होना चाहिए और केवल उसी अल्लाह की उपासना करनी चाहिए (3) इस आयत में बख़्त नस्र के द्वारा की गई तबाही का वर्णन है जो बाबुल का राजा था, उसने बनी इस्राईल को बुरी तरह क़त्ल किया और बचे हुए लोगों को ग़ुलाम बनाकर अपने साथ बाबुल ले गया, यह घटना सन् 586 ई0 पू0 की है (4) लगभग 70 वर्ष तक वे बख़्त नस्र की ग़ुलामी में रहे फिर ईरान के राजा ने बाबुल पर हमला करके उसको जीत लिया और यहूदियों पर तरस खा कर उनको दोबारा फ़िलिस्तीन में आबाद कर दिया, इस प्रकार उन्हें दोबारा ख़ुशहाली मिली परन्तु जब उन्होंने अवज्ञाओं में सीमा लांघी तो एक बार फिर उन पर दुश्मन को मुसल्लत किया गया, यह दूसरी तबाही सन् 70 ई0 में रूमी सम्राट तैताउस (Titus) के हाथों हुई, यूँ तो बनी इस्राईल का इतिहास तबाहियों और बर्बादियों की एक निरंतर गाथा है लेकिन यह दो तबाहियाँ इतिहास के पन्नों पर बहुत गहरे शब्दों में अंकित हैं।

عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ
لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ۝٨ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ اَقْوَمُ وَ
يُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ۝٩
وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝١٠
وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ۝١١
وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ
النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ
وَالْحِسَابَ ؕ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ۝١٢ وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ
طٰٓئِرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ؕ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ۝١٣
اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ۝١٤ مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا
يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ
وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ۝١٥ وَاِذَآ اَرَدْنَآ
اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا
الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ۝١٦ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ
بَعْدِ نُوْحٍ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ۝١٧

منزل٤

शायद अब तुम्हारा पालनहार तुम पर दया कर दे और अगर तुमने फिर वही हरकत की तो हम फिर वही सज़ा देंगे और हमने दोज़ख को काफ़िरों के लिए जेल बनाया है[1] (8) बेशक यह कुरआन उस रास्ते पर ले जाता है जो बिल्कुल सीधा है और उन ईमान वालों को जो नेक काम करते हैं बड़े बदले की खुशखबरी देता है (9) और जो आख़िरत को नहीं मानते उनके लिए हमने बड़ा दुखद अज़ाब तैयार कर रखा है (10) और इंसान बुराई उस तरह मांगता है जिस तरह भलाई मांगता है और इन्सान बड़ा ही जल्दी मचाने वाला है[2] (11) और हमने रात और दिन को दो निशानियों के रूप में रखा है बस रात की निशानी को हमने प्रकाशहीन कर दिया और दिन की निशानी को रौशन बनाया है ताकि तुम अपने पालनहार की कृपा (फ़ज़ल) तलाश करो और सालों की संख्या और हिसाब जान लो और हर हर चीज़ हमने पूरी तरह खोल दी है[3] (12) और हर इंसान के कर्मों को हमने उसकी गर्दन में लगा दिया है और क़यामत के दिन हम उसको एक लिखित रूप में निकाल कर उसके सामने कर देंगे जिसे वह खुला हुआ पाएगा[4] (13) अपना आमाल नामा (कर्म–पत्र) खुद ही पढ़ आज अपना हिसाब लेने के लिए तू खुद ही काफ़ी है (14) जिसने सीधे रास्ते को अपनाया तो वह अपने लिए अपनाया और जो गुमराह हुआ तो अपने ही बुरे के लिए गुमराह हुआ और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा और हम उस समय तक अज़ाब नहीं देते जब तक कोई रसूल न भेज दें (15) और जब हमने किसी बस्ती को बर्बाद कर देने का इरादा किया तो वहाँ के ऐश करने वालों को आदेश दिये तो उन्होंने उसमें नाफ़रमानी (अवज्ञा) की तब बात उन पर पूरी हो गई बस हमने उसको तबाह व बर्बाद कर डाला (16) और नूह के बाद हमने कितनी ही नस्लें बर्बाद कर दीं और आपका पालनहार अपने बन्दों के गुनाहों की ख़ूब ख़बर रखने, देखने के लिए काफ़ी है (17)

---

(1) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की शरीअत (धर्म शास्त्र) को न मान कर पहले विनाश का शिकार हुए फिर हज़रत ईसा के साथ बुरा व्यवहार करके दूसरा विनाश उनका भाग्य बना, अब यह तीसरा चरण है, अल्लाह के अंतिम पैग़म्बर आ चुके हैं अगर तुम मान लोगे तो तुम पर अल्लाह की कृपा होगी और न मानने के परिणाम स्वरूप फिर तुम्हारा वही अंजाम होगा जो पहले दो बार हो चुका है, बस इस कुरआन को मानो जो सच्चे और सीधे रास्ते की ओर बुलाता है (2) काफ़िर कहते थे कि हमारे कुफ़्र पर अज़ाब (दण्ड) आना है तो आ ही जाए यह उनकी इसी बात की ओर संकेत है कि यह लोग जल्दी में अज़ाब (दण्ड) की बुराई को इस प्रकार मांग रहे हैं कि जैसे अच्छी चीज़ मांगी जाती है (3) रात और दिन का क्रम अल्लाह की कुदरत और रहमत की बड़ी निशानियों में है, रात अल्लाह ने आराम के लिए बनाई और दिन काम के लिए (4) यानी हर व्यक्ति के काम उसके नाम–ए–आमाल (कर्म–पत्र) में सुरक्षित किये जा रहे हैं, क़यामत में सब खुला हुआ सामने होगा।

जो भी दुनिया चाहता है तो हमे उसमें से जो चाहते हैं जिसके लिए चाहते हैं तत्काल उसको दे देते हैं फिर हमने उसके लिए दोज़ख तय कर रखी है जिसमें वह अपमानित होकर घुस जाएगा (18) और जिसने आख़िरत को चाहा और उसने ईमान के साथ उसके लिए जो प्रयास करना चाहिए उसके अनुसार प्रयास किया तो ऐसे लोगों का प्रयास निश्चित रूप से ठिकाने लगा है (19) हम सबको इनको भी और उनको भी आपके पालनहार की देन (बख़्शिश) में से भर भर कर देते रहते हैं और आपके पालनहार की देन (बख़्शिश) पर कोई रोक नहीं है[1] (20) देखिए कैसे हमने उनमें कुछ को कुछ पर बड़ाई दी और आख़िरत के दर्जे तो बहुत बड़े हैं और फ़ज़ीलत (श्रेष्टता) में वे बहुत बढ़ कर हैं[2] (21) अल्लाह के साथ किसी को साझी मत ठहराइए वरना तिरस्कृत और बेबस होकर बैठे रहेंगे (22) और आपके पालनहार का यह फ़ैसला है कि तुम सब सिर्फ़ उसी की बन्दगी करो और माँ–बाप के साथ अच्छा व्यवहार (करो) अगर तुम्हारे पास उन दोनों में से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जाएं तो उनसे "उफ़" भी मत करना और न ही उनको झिड़कना और उन दोनों से आदर के साथ बात करना (23) और उन दोनों के सामने पूरी की पूरी कृपा बन कर नर्मी के साथ झुके रहना और दुआ करते रहना कि ऐ हमारे पालनहार! इन दोनों पर कृपा कर जैसे इन्होंने बचपन में हमें पाला (24) तुम्हारे दिलों में जो भी है उससे तुम्हारा पालनहार ख़ूब अवगत है अगर तुम नेक हो तो वह भी रुजू करने (पलटने) वालों को बहुत माफ़ करता है (25) और नातेदार उसका अधिकार देते रहें और निर्धन और यात्री को भी और ग़लत काम में बिल्कुल ख़र्च न करें (26) निश्चित रूप से फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले तो शैतान ही के भाई–बंधु हैं और शैतान अपने पालनहार का नाशुक्रा (कृतघ्न) है (27) और अगर कभी आपको उनसे कतराना पड़े जबकि आपको अपने पालनहार की कृपा की तलाश हो जिसके आप आशावान भी हों तो आप उनसे नर्म बात कह दें[3] (28) और न ही अपने हाथ को अपनी गर्दन में जकड़ कर रखें और न उसको पूरी तरह खोल ही दें कि आपको निन्दा और अभिलाषा के साथ बैठ रहना पड़े (29)

---

(1) यह दोनों प्रकार के लोगों का उल्लेख है, अल्लाह की दया–कृपा दुनिया में सब बन्दों के साथ है हाँ! आख़िरत में वह केवल ईमान वालों के साथ होगी (2) दुनिया में कोई धनी है, कोई निर्धन, कोई पढ़ा–लिखा है, कोई जाहिल, एक को दूसरे पर बड़ाई प्राप्त है लेकिन आख़िरत की बड़ाई और प्रतिष्ठा बहुत बढ़ कर है (3) यानी अगर ज़रूरतमंद को कुछ देने से इसलिए इनकार करना पड़े कि उस समय आप के पास कुछ न हो लेकिन उम्मीद हो कि आगे अल्लाह तआला अपनी कृपा से ज़्यादा माल प्रदान कर देंगे तो ऐसी हालत में उस ज़रूरतमंद से नर्म अन्दाज़ में माफ़ी मांग लें (4) उनको संबोधित करके पूरी उम्मत (सम्प्रदाय) को आदेश दिये जा रहे हैं केवल अल्लाह की बन्दगी, माँ–बाप के साथ अच्छा व्यवहार, हर हक़ वाले को उसका हक़ अदा करना, ख़र्च करने में संतुलन और बीच का रास्ता अपनाना, न ही आदमी ऐसा कंजूस बन जाए कि कुछ निकलना ही कठिन हो और न ही ऐसा हाथ खोल दे कि बाद में पछताना पड़े।

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ
خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٣٠﴾ وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُهُمْ
وَإِيَّاكُمْ ۚ إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْئًا كَبِيرًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنَىٰ ۖ إِنَّهُ كَانَ
فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ﴿٣٢﴾ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا
بِالْحَقِّ ۗ وَمَن قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهِ سُلْطَانًا فَلَا يُسْرِف
فِّي الْقَتْلِ ۖ إِنَّهُ كَانَ مَنصُورًا ﴿٣٣﴾ وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي
هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۖ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ
مَسْئُولًا ﴿٣٤﴾ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۚ
ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٣٥﴾ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۚ إِنَّ
السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ﴿٣٦﴾ وَلَا
تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّكَ لَن تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَن تَبْلُغَ الْجِبَالَ
طُولًا ﴿٣٧﴾ كُلُّ ذَٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِندَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ﴿٣٨﴾ ذَٰلِكَ مِمَّا
أَوْحَىٰ إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۗ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ
فَتُلْقَىٰ فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا مَّدْحُورًا ﴿٣٩﴾ أَفَأَصْفَاكُمْ رَبُّكُم بِالْبَنِينَ وَ
اتَّخَذَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا ۚ إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ﴿٤٠﴾

منزل ٤

निश्चित रूप से आपका पालनहार जिसके लिए चाहता है रोज़ी को फैला देता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग कर देता है निश्चित रूप से वह अपने बन्दों की पूरी ख़बर रखता, खूब नज़र रखता है [1] (30) और ग़रीबी के डर से अपनी संतान को क़त्ल मत कर देना, उनको और तुम्हें रोज़ी हम ही देते हैं निश्चित रूप से उनको मार डालना बड़ी चूक है (31) और बलात्कार के निकट भी मत होना निश्चित रूप से वह बेहयाई और (इच्छा पूरी करने का) बहुत ही बुरा रास्ता है [2] (32) और जिस जान को अल्लाह ने इज़्ज़त दी है उसको नाहक मत मारो और जो अत्याचार के साथ मारा गया तो हमने उसके अभिभावक (वली) को अधिकार दिया है बस वह क़त्ल में सीमा को पार न करे, उसकी तो मदद होनी ही चाहिए[3] (33) और अनाथ के माल के निकट भी न जाना सिवाय उस तरीके के जो सबसे बेहतर हो यहाँ तक कि वह अपनी जवानी को पहुंच जाए और प्रतिज्ञा को पूरा करना निश्चित रूप से प्रतिज्ञा के बारे में पूछ–गछ होनी है[4] (34) और जब नापना तो पूरा पूरा नापना और सही तराजू से तौलना यही बेहतर है और परिणाम इसी का अच्छा है (35) और जिसकी तुम्हें जानकारी नहीं उसके पीछे मत पड़ो, निश्चित रूप से कान और आँख और दिल इन सबके बारे में पूछा जाएगा (36) और धरती में अकड़ कर मत चलो, न तुम ज़मीन ही को फाड़ सकते हो और न ही लम्बे होकर पहाड़ों तक पहुंच सकते हो (37) यह सारी चीज़ें (ऐसी हैं कि) इनकी ख़राबी आपके पालनहार के निकट बहुत ही अप्रिय है [5] (38) यह सब कुछ हिकमत (तत्वदर्शिता) की वे बातें हैं जो आपके पालनहार ने आपको बताई हैं, और अल्लाह के साथ किसी दूसरे को पूज्य मत बना लो कि फिर दोज़ख में अपमान व धित्कार के साथ डाले जाओ (39) फिर क्या तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें बेटे चुन कर दिये और ख़ुद फरिश्तों को बेटियाँ बना लिया निश्चित रूप से तुम बहुत बड़ी बात कहते हो [6] (40)

---

(1) वह ख़ूब जानता है कि किसके लिए अधिक रोज़ी मुनासिब है और किस के लिए कम (2) यह वे बुराइयाँ हैं जो जाहिलियत के ज़माने में आम थीं, ग़रीबी के डर से संतान को क़त्ल कर देना, बेहयाई और अश्लीलता और लूटमार जाहिलियत के ज़माने की ख़ास बीमारियाँ थीं और आज भी यह जाहिलियत (अज्ञानता) नये चोले में हमारे सामने है (3) किसी को क़त्ल करने का हक केवल कुछ परिस्थितियों में होता है, उनमें सबसे महत्वपूर्ण परिस्थिति यह है कि किसी व्यक्ति को अन्यायपूर्ण क़त्ल कर दिया गया हो तो क़त्ल किये हुए व्यक्ति के वलियों (अभिभावकों / उत्तराधिकारियों) को यह हक होता है कि वे न्यायिक प्रक्रिया के बाद क़िसास (बदला) लें और क़ातिल को क़त्ल किया जाये (4) अनाथ का माल एक धरोहर है और उसमें वही काम वैध है जिसमें अनाथ का फ़ायदा हो, फिर जब वह बालिग़ हो जाए और अपना अच्छा–बुरा समझने लगे तो वह धन उसी के सुपुर्द कर दिया जाए (5) लगातार सात आयतों में उन बुराइयों का उल्लेख है जो समाज के लिए नासूर के समान हैं, समाज सुधार उनको दूर किये बिना सम्भव नहीं (6) बेटियों को लज्जा का कारण समझते थे और फिर अल्लाह से उनको जोड़ते थे, इससे अधिक ख़तरनाक और बुरी बात क्या होगी?

ولقد صرفنا في هذا القرآن ليذكروا وما يزيدهم إلا نفورا ﴿٤١﴾ قل
لو كان معه آلهة كما يقولون إذا لابتغوا إلى ذي العرش سبيلا ﴿٤٢﴾
سبحانه وتعالى عما يقولون علوا كبيرا ﴿٤٣﴾ تسبح له السماوات السبع
والأرض ومن فيهن وإن من شيء إلا يسبح بحمده ولكن لا
تفقهون تسبيحهم إنه كان حليما غفورا ﴿٤٤﴾ وإذا قرأت القرآن
جعلنا بينك وبين الذين لا يؤمنون بالآخرة حجابا مستورا ﴿٤٥﴾
وجعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفي آذانهم وقرا وإذا
ذكرت ربك في القرآن وحده ولوا على أدبارهم نفورا ﴿٤٦﴾ نحن
أعلم بما يستمعون به إذ يستمعون إليك وإذ هم نجوى إذ
يقول الظالمون إن تتبعون إلا رجلا مسحورا ﴿٤٧﴾ انظر كيف ضربوا
لك الأمثال فضلوا فلا يستطيعون سبيلا ﴿٤٨﴾ وقالوا أإذا كنا
عظاما ورفاتا أإنا لمبعوثون خلقا جديدا ﴿٤٩﴾ قل كونوا حجارة
أو حديدا ﴿٥٠﴾ أو خلقا مما يكبر في صدوركم فسيقولون من
يعيدنا قل الذي فطركم أول مرة فسينغضون إليك
رءوسهم ويقولون متى هو قل عسى أن يكون قريبا ﴿٥١﴾

الربع

منزل ٤

और हमने इस कुरआन में फेर–फेर कर समझाया है ताकि वे नसीहत प्राप्त करें और वे हैं कि इसकी वजह से और बिदकते जाते हैं (41) पूछिए कि अगर उसके साथ और पूज्य भी होते जैसा कि वे कहते हैं तो वे ज़रूर अर्श वाले के विरूद्ध रास्ता निकालते[1] (42) वह पवित्र है और उनकी बातों से बहुत बुलन्द है (43) सातों आसमानों और ज़मीन और उनमें जो कुछ है सब उसी की तस्बीह (गुणगान) में लगे हैं लेकिन तुम उनकी तस्बीह समझते नहीं[2] बेशक वह बड़ा बर्दाश्त करने वाला, बहुत माफ़ करने वाला है (44) और जब आप कुरआन की तिलावत करते हैं तो हम आपके बीच और आख़िरत को न मानने वालों के बीच एक छिपे हुए पर्दे की आड़ कर देते हैं (45) और उनको दिलों पर ओट कर देते हैं ताकि वे उसको न समझें और उनके कानों को बोझल कर देते हैं और जब आप कुरआन में एक अकेले पालनहार का वर्णन करते हैं तो वे बिदक कर पीछे को भागते हैं (46) हम ख़ूब जानते हैं जब वे आपकी ओर कान लगा लगा कर सुनते हैं कि वे क्यों उसकी ओर कान लगा रहे हैं और जब वे आपस में काना फूसी करते हैं, जब अन्यायी यह कहने लगते हैं तुम तो ऐसे व्यक्ति के पीछे लग रहे हो जिस पर जादू चल गया है (47) और देखिए वे आपके बारे में कैसी बातें बनाते हैं बस वे गुमराह हो चुके अब वे रास्ता न पा सकेंगे [3] (48) और वे कहते हैं क्या जब हम हड्डियाँ और चूरा हो जाएंगे तो क्या हमको नये सिरे से उठाया जाएगा (49) कह दीजिए कि तुम पत्थर बन जाओ या लोहा (50) या ऐसी कोई सृष्टि बन जाओ जिसको तुम अपने दिलों में बड़ा (सख़्त) समझते हो, (फिर भी तुम्हें दोबारा ज़िन्दा किया जाएगा) बस वे झट कहेंगे कि कौन हमें दोबारा ज़िन्दा करेगा? कह दीजिए वही जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया, फिर वे आपके सामने अपने सिरों को मटकाते हुए बोलेंगे कि ऐसा कब होगा? कह दीजिए कि कदाचित कि वह समय क़रीब ही आ गया हो[4] (51)

(1) एक माबूद (पूज्य) होने का यह खुला हुआ एक प्रमाण है कि अगर और भी पूज्य होते तो निश्चित ही वह अपनी शक्ति से आसमान वाले ख़ुदा पर चढ़ाई भी कर सकते थे, और अगर यह कहा जाए कि इसकी उनमें शक्ति नहीं वे ख़ुद अल्लाह के अधीन हैं तो फिर वे ख़ुदा ही क्या हुए (2) एक तस्बीह तो उनका अपने काम पर लगा देना है और दूसरे वास्तव में गुणगान और प्रशंसा करते रहना है और यह संवेदना अल्लाह ने हर सृष्टि में रखी है, पत्थर भी इससे ख़ाली नहीं (3) पवित्र कुरआन मानवीय प्रकृति को आवाज़ देता है और उसका पाठ उसके भीतर एक प्रकाश पैदा कर देता है, फिर जो लोग वंचित रहते हैं उसका कारण यह है कि उन्होंने हठधर्मी और ज़िद की ओट खड़ी कर रखी है तो उनको इस सूर्य का प्रकाश कहां से मिले, वे डरते हैं कि कहीं इसकी रौशनी उन पर पड़ न जाए, इसी हठधर्मी को यहां छिपा हुआ पर्दा कहा गया है जो इन्कार तय कर लेने वालों पर डाल दिया जाता है और अगर ग़लती से कोई सुन भी लेता है तो विभिन्न प्रकार की बातें बनाता है और हठधर्मी नहीं छोड़ता, ऐसे लोगों के लिए गुमराही का फ़ैसला हो जाता है (4) जिस अल्लाह ने पहली बार पैदा कर दिया उसके लिए दोबारा पैदा कर देना क्या कठिन है।

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهٖ وَتَظُنُّونَ إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا
قَلِيلًا ﴿٥٢﴾ وَقُلْ لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ
بَيْنَهُمْ إِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا ﴿٥٣﴾ رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ
إِنْ يَّشَأْ يَرْحَمْكُمْ أَوْ إِنْ يَّشَأْ يُعَذِّبْكُمْ وَمَا أَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ﴿٥٤﴾
وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ
النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُورًا ﴿٥٥﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ
مِّنْ دُونِهٖ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ﴿٥٦﴾ أُولٰٓئِكَ
الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ
رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُونَ عَذَابَهٗ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ﴿٥٧﴾ وَإِنْ
مِّنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا
شَدِيدًا كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُورًا ﴿٥٨﴾ وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُّرْسِلَ
بِالْاٰيٰتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ وَاٰتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً
فَظَلَمُوا بِهَا وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ إِلَّا تَخْوِيفًا ﴿٥٩﴾ وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ
أَحَاطَ بِالنَّاسِ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِي أَرَيْنٰكَ إِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَ
الشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْاٰنِ وَنُخَوِّفُهُمْ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ﴿٦٠﴾

منزل ۴

जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तो तुम उसकी प्रशंसा करते चले आओगे और तुम अटकल लगाओगे कि बहुत कम तुम्हारा (दुनिया में) ठहरना हुआ (52) और मेरे बन्दों से कह दीजिए वे वही बात कहें जो बेहतर हो, बेशक शैतान उनके बीच फूट डालता रहता है, निश्चित रूप से शैतान इनसान का खुला दुश्मन है[1] (53) तुम्हारा पालनहार तुमसे ख़ूब अवगत है अगर चाहेगा तो तुम पर दया करेगा, और चाहेगा तो अज़ाब देगा और आपको हमने उन पर दारोग़ा बना कर नहीं भेजा[2] (54) और आसमानों और ज़मीन में जो कोई भी है आपका पालनहार उसको ख़ूब जानता है और हमने कुछ नबियों को कुछ दूसरों पर बड़ाई प्रदान की है और हमने दाऊद को ज़बूर दी (55) कह दीजिए कि उसके अलावा जिसको तुम (पूज्य) समझते हो उसको पुकारो तो न वे तुमसे तकलीफ़ दूर कर सकते हैं और न कोई परिवर्तन पैदा कर सकते हैं (56) यह लोग जिनको वे पुकारते हैं वे ख़ुद अपने पालनहार तक पहुंचने का वसीला (साधन) ढूंढते रहते हैं कि कौन ज़्यादा क़रीब हो जाए और उसकी कृपा के आशावान रहते हैं और उसके अज़ाब से डरते रहते हैं बेशक आपके पालनहार का अज़ाब (दण्ड) डरने ही की चीज़ है[3] (57) और कोई बस्ती ऐसी नहीं है जिसको हम क़यामत के दिन से पहले नष्ट न कर डालें या कठोर दण्ड में न ग्रस्त करें, यह किताब में लिखा हुआ है[4] (58) और हमारे लिए रूकावट ही क्या थी हम निशानियाँ भेज ही देते मगर पहले भी लोग उनको झुठला ही चुके और समूद को हमने एक खुली (निशानी के) रूप में ऊँटनी प्रदान की तो उसके साथ भी उन्होंने अन्याय किया और निशानियाँ तो हम डराने ही के लिए भेजते हैं[5] (59) और जब हमने आपसे कहा कि आपका पालनहार लोगों को घेरे में ले चुका है और आपको जो कुछ हमने दिखाया वह हमने लोगों की परीक्षा के लिए ही दिखाया और उस पेड़ को भी (परीक्षा बना दिया) जिसको कुरआन में मलऊन (तिरस्कृत) बताया गया है और हम उनको डराते हैं तो उनकी सरकशी बढ़ती ही जाती है (60)

---

(1) इसमें ईमान वालों को ताकीद है कि वे कभी गुस्से में न आएं और काफ़िरों से भी अच्छे ढंग से बात करें वरना बात बनने के बजाए बिगड़ती है (2) यानी आपका काम पहुँचा देना है, सत्य मार्ग पर ले आना नहीं (3) जिन्नात और फ़रिश्ते जिनको मुश्रिक पूजते थे, उन लोगों के बारे में कहा जा रहा है कि वे ख़ुद अल्लाह की निकटता की खोज में और इबादत व बन्दगी में लगे रहते हैं, वसीले से तात्पर्य अल्लाह से क़रीब होने का रास्ता है (4) अगर विरोधियों और काफ़िरों की बस्ती है तो वह अज़ाब का शिकार हो कर रहेगी और अगर विरोधियों की बस्ती नहीं है तो क़यामत से पहले पहले सबको समाप्त होना ही है (5) मांगी हुई निशानियाँ आने के बाद अगर कोई क़ौम ईमान नहीं लाती तो वह तबाह हो जाती है, मुश्रिक लोग जिन निशानियों की मांग कर रहे थे उनकी ओर इशारा है कि वह इसलिए नहीं दिखाई जा रही हैं कि उसके बाद न मानने के कारण आम बर्बादी है और इस उम्मत के बारे में अल्लाह का फ़ैसला है कि इस पर आम अज़ाब नहीं आएगा, फिर आगे दो निशानियों का वर्णन है, एक मेराज का जिसके विषय में मुश्रिकों ने अपने संतोष के लिए दो प्रश्न भी किये और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सारे उत्तर दिये लेकिन इसके बावजूद उन्होंने न माना, दूसरे ज़क्कूम पेड़ के बारे में कहा गया कि वह आग में पैदा होता है तो मुश्रिकों ने हंसी उड़ाई, यह न सोचा कि जिस शक्ति ने आग पैदा की है अगर वह उसी में कोई ऐसा पेड़ पैदा कर दे जिसके गुण साधारण पेड़ों से अलग हों तो भला इसमें आश्चर्य की क्या बात है?!

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوٓا إِلَّآ إِبْلِيسَ قَالَ
ءَأَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا ﴿٦١﴾ قَالَ أَرَءَيْتَكَ هَٰذَا الَّذِي كَرَّمْتَ
عَلَيَّ لَئِنْ أَخَّرْتَنِ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَٰمَةِ لَأَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهُۥٓ إِلَّا
قَلِيلًا ﴿٦٢﴾ قَالَ اذْهَبْ فَمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ
جَزَآءً مَّوْفُورًا ﴿٦٣﴾ وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُم بِصَوْتِكَ
وَأَجْلِبْ عَلَيْهِم بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْأَمْوَٰلِ
وَالْأَوْلَٰدِ وَعِدْهُمْ ۚ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَٰنُ إِلَّا غُرُورًا ﴿٦٤﴾ إِنَّ عِبَادِي
لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَٰنٌ ۚ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ﴿٦٥﴾ رَّبُّكُمُ الَّذِي
يُزْجِي لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِۦٓ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ بِكُمْ
رَحِيمًا ﴿٦٦﴾ وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَن تَدْعُونَ
إِلَّآ إِيَّاهُ ۖ فَلَمَّا نَجَّىٰكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ ۚ وَكَانَ الْإِنسَٰنُ
كَفُورًا ﴿٦٧﴾ أَفَأَمِنتُمْ أَن يَخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ
عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ وَكِيلًا ﴿٦٨﴾ أَمْ أَمِنتُمْ أَن
يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ
الرِّيحِ فَيُغْرِقَكُم بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِۦ تَبِيعًا ﴿٦٩﴾

منزل ۴

और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो वे सब सज्दे में गिर गए सिवाए इब्लीस के, वह बोला क्या मैं उसको सज्दा करूँ जिसे तूने मिट्टी से पैदा किया (61) कहने लगा भला बताइये क्या यही वह (सृष्टि) है जिसे तूने मुझ पर बड़ाई दी, अगर तूने मुझे क़यामत तक के लिए मोहलत दे दी तो मैं उसकी संतान को सिवाय कुछ के अपने नियंत्रण में करके रहूँगा[1] (62) कहा जा फिर उनमें से जो भी तेरी राह पर चलेगा तो दोज़ख़ में तुम सबकी सज़ा है भरपूर सज़ा (63) और अपनी आवाज़ से जिनको फुसला सके फुसला और उन पर अपने घुड़सवार और पैदल सेना भी चढ़ा ला और उनके मालों और संतान में जाकर हिस्सा लगा और उनसे (ख़ूब) वादे कर, और शैतान जो भी उनसे वादे करता है वह धोखा ही धोखा है[2] (64) रहे मेरे ख़ास बंदे[3] तो उन पर तेरा कुछ बस न चलेगा और आप का पालनहार काम बनाने के लिए काफ़ी है (65) तुम्हारा वह पालनहार जो तुम्हारे लिए समुद्र में नाव चीरता ले चलता है ताकि तुम उसकी कृपा प्राप्त करो, बेशक वह तुम पर बहुत दयालु है (66) और जब समुद्र में तुम पर मुसीबत आती है तो सिवाय उस ज़ात के जिसको भी तुम पुकारते हो सब गुम हो जाते हैं फिर जब वह तुम्हें बचा कर सूखे में ले आता है तो फिर तुम मुँह मोड़ते हो और इंसान बहुत ही नाशुक्रा (कृतघ्न) है (67) भला क्या तुम्हें इस बात का डर नहीं रहा कि वह सूखे ही के भाग में तुम्हें धंसा दे या तुम पर कंकड़ियों भरी आंधी भेज दे, फिर तुम अपने लिए कोई काम बनाने वाला न पा सको (68) या तुम इससे निश्चिन्त हो गये कि वह दोबारा तुम्हें वहीं (समुद्र में) ले जाए तो तुम पर उखाड़ फेंकने वाली तेज़ हवा भेज दे बस तुम्हें तुम्हारी नाशुक्री (कृत्घ्नता) के बदले में डुबो दे फिर तुम्हें कोई हमारा पीछा करने वाला भी न मिले [4] (69)

---

(1) ''इह तनक'' का अर्थ लगाम देना भी है और पूर्ण रूप से उखाड़ फेंकना भी है (2) आवाज़ से बहकाने का मतलब गाने–बजाने जैसी वह शैतानी आवाज़ें जो इंसान को ग़लत रास्ते पर डाल देती हैं, आयत में शैतानी सेना का उल्लेख है जिसमें उसकी संतान के अलावा बुरे जिन्नात और इन्सान भी शामिल हो जाते हैं, इसमें यह भी संकेत है कि जो लोग अपना धन ग़लत ख़र्च करते हैं वह शैतान का हिस्सा बनता है (3) यानी आज्ञाकारी बंदे (4) उसी अल्लाह ने तुम्हारे लिए समुद्र और नदियाँ बनाईं तो उसमें यात्रा करते हो और उससे फ़ायदा उठाते हो, फिर जब कभी तूफ़ान में घिर जाते हो तो उसी एक खुदा को पुकारते हो, फिर जब वह बचा लेता है तो तुम दोबारा उसके साथ दूसरों को साझी ठहराने लगते हो, जिस अल्लाह ने बचाया, क्या तुम्हें अब इसका डर नहीं रहा कि वह तुम्हें दोबारा तबाह कर दे, फिर उसके बाद कौन तुम्हारी सहायता कर सकता है?

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ﴿٧٠﴾ يَوْمَ
نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۢ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ
يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧١﴾ وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ
اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٧٢﴾ وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ
عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ
خَلِيْلًا ﴿٧٣﴾ وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ﴿٧٤﴾
اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ
عَلَيْنَا نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾ وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ
مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٧٦﴾ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا
قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ﴿٧٧﴾ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ
الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۭ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ
مَشْهُوْدًا ﴿٧٨﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ
رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿٧٩﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ
اَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿٨٠﴾

منزل۴

और निश्चित रूप से हमने आदम की संतान को सम्मान प्रदान किया और थल और जल (समुद्र) में उनको सवारी दी और उनको अच्छी-अच्छी रोज़ी दी और अपनी सृष्टियों में बहुतों पर उनको ख़ास रुत्बा प्रदान किया (70) जिस दिन हम हर प्रकार के लोगों को उनके पेशवाओं के साथ बुलाएंगे फिर जिनको भी उनका परवाना (आमाल का) दाएं हाथ में मिल गया तो वे लोग (मज़े ले लेकर) अपना नाम-ए-आमाल (कर्म-पत्र) पढ़ेंगे और ज़रा सा भी उनके साथ अन्याय न होगा (71) और जो इस दुनिया में अंधा (बन कर) रहा तो वह आख़िरत में भी अंधा होगा और अधिक गुमराह होगा[1] (72) और हो सकता था कि हमने आप पर जो वह्य भेजी है उसके बारे में वे लोग आपको फ़ित्ने में डाल देते ताकि आप उसके अलावा हम पर कुछ और गढ़ लाएं और जब तो वे आपको ज़रूर दोस्त बना लेते (73) और अगर हमने आपको जमाया न होता तो हो सकता था कि आप कुछ थोड़ा उनकी ओर झुक जाते (74) तब तो हम आपको दुनिया व आख़िरत में दोहरा मज़ा चखा देते फिर आपको हम पर कोई मददगार न मिलता[2] (75) और क़रीब है कि वे आपको ज़मीन में डगमगा दें ताकि वहां से आपको निकाल दें और तब तो वे आप के पीछे कुछ ही रह पाएंगे[3] (76) आपसे पहले हम जो पैग़म्बर भेज चुके हैं उनके साथ भी यही नियम रहा है और आप हमारे नियम में कोई परिवर्तन न पाएंगे[4] (77) सूरज ढलने से रात के अंधेरे तक नमाज़ क़ायम कीजिए और फ़ज्र के क़ुर्आन (का ध्यान रखिए) निश्चित ही फ़ज्र का क़ुर्आन उपस्थिति (के समय) का होता है[5] (78) और रात के कुछ भाग में जगे रहा कीजिए यह आपके लिए वृद्धि है, आशा है कि आपका पालनहार आपको मक़ाम-ए-महमूद (बहुत ही प्रशंसा वाले मक़ाम) पर आसीन करेगा (79) और यह दुआ कीजिए कि ऐ मेरे पालनहार! मुझे सच्चाई के साथ प्रवेश करा और सच्चाई के साथ ही निकाल और अपने पास से मुझे ऐसी शक्ति प्रदान कर जो सहायक हो[6] (80)

(1) पहले इन्सान की इज़्ज़त और महानता का वर्णन किया कि यह सब हमने प्रदान किया, अब जो शुक्रगुज़ार (आभारी) होगा उसका नाम-ए-आमाल दाएं हाथ में होगा और जिसने दुनिया में अल्लाह की निशानियों से मुँह मोड़ा वह आख़िरत में उसकी सज़ा भुगतेगा (2) इन आयतों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दृढ़ता और महानता को स्पष्ट किया गया है, मुश्रिकों ने डर और लालच के द्वारा हर सम्भव प्रयास करके यह चाहा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तौहीद और आख़िरत के संदेश में कुछ परिवर्तन कर दें ताकि मुश्रिकों के पैतृक दीन और प्राचीन झूठी कल्पनाओं से टकराव समाप्त हो जाए, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके हर प्रयास व प्रस्ताव को ठुकरा दिया और वे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विचारों में हलका सा लोच पैदा करने में भी सफल न हो सके, असत्य की ओर थोड़ा झुकाव होने पर दोगुने अज़ाब की वईद (धमकी) पैग़म्बर को संबोधित करके उम्मत (मुस्लिम सम्प्रदाय) को सावधान करने के लिए दी गई है (3) पवित्र मक्के में मुश्रिकों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रहने न दिया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिजरत कर गये लेकिन कुछ ही वर्षों में उन सबको भी वहां से निकलना पड़ा और पवित्र मक्का विजय हुआ और उसके अगले वर्ष सारे शिर्क और कुफ़्र करने वालों को वहां से निकलने का आदेश दे दिया गया (4) यही नियम रहा है कि जब किसी पैग़म्बर को बस्ती में रहने न दिया गया तो बस्ती वाले ख़ुद न रहे (5) सूरज ढलने से रात के अंधियारे तक चार नमाज़ें क़रीब-क़रीब होती हैं, उनकी ओर इशारा है और फ़ज्र का अलग से ज़िक्र है इसलिए कि इसमें और दूसरी नमाज़ों में अंतराल होता है और कठिनाई भी इसमें अधिक है,

⟹

फिर उसे मौत दी तो बर्ज़ख़ (क़ब्र) वाले जीवन में पहुँचा दिया (21) फिर जब वह चाहेगा उसको दोबारा जीवित कर देगा (22) ख़बरादार (उसका हाल यह है कि) उसको जो आदेश मिला वह उसने अब तक पूरा नहीं किया[1] (23) तो इंसान अपने खाने ही को देख ले (24) हमने ही ऊपर से मूसलाधार पानी बरसाया (25) फिर जगह–जगह धरती फाड़ी (26) तो उसमें से अनाज उगाया (27) और अंगूर और तरकारियाँ (28) और ज़ैतून और खजूर (29) और घने बाग़ (30) और मेवा और चारा (31) तुम्हारे और तुम्हारे पशुओं के फ़ायदे के लिए (32) फिर जब कान फाड़ने वाली वह आवाज़ आएगी (33) जिस दिन आदमी अपने भाई से भागेगा (34) और अपने माँ और बाप से (35) और अपनी पत्नी और बच्चों से (36) हर व्यक्ति का उस दिन ऐसा हाल होगा जो उसके होश खो देगा (37) उस दिन कुछ चेहरे खिले हुए होंगे (38) हंसते खुशियाँ मनाते (39) और कुछ चेहरे उस दिन ऐसे होंगे कि उन पर खाक पड़ी होगी (40) काली छाया ने उनको ढाँक रखा होगा (41) यही वे लोग हैं जो इनकार करने वाले हैं बुरे काम करने वाले हैं (42)

सूरह तकवीर

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

जब सूरज लपेट[2] दिया जाएगा (1) और जब सितारे टूट–टूट कर गिर जाएंगे (2) और जब पहाड़ चलाए जाएंगे (3) और जब गाभिन ऊँटनियों को बेकार छोड़ दिया जाएगा[3] (4) और जब सब जानवर इकट्ठे कर दिये जाएंगे[4] (5) और जब समुद्र धौंके जाएंगे[5] (6) और जब लोगों के गिरोह कर दिये जाएंगे[6] (7)

(1) अल्लाह की नेमतों का ज़िक्र हुआ, अब इंसान की नाफ़रमानी (अवज्ञा) का वर्णन है, आगे फिर अल्लाह की नेमतों का उल्लेख किया जा रहा है कि शायद उसको शिक्षा प्राप्त हो, सूरह के अंत में इनसान के अंजाम का उल्लेख है, जिस दिन कोई किसी के काम न आएगा, केवल आदमी का अमल (कर्म) ही उसको अच्छे या बुरे अंजाम तक पहुँचाएगा, अल्लाह की मानने वाले अच्छे काम करने वाले मज़े करेंगे और इनकार करने वाले कुकर्मी कठोर यातना (अज़ाब) से ग्रस्त होंगे (2) इस सूरह में क़यामत के हालात बयान हुए हैं, सूरज के लपेटे जाने की हक़ीक़त अल्लाह ही जानता है, ऐसा लगता है इससे यह मतलब है कि उसकी रौशनी छीन ली जाएगी और दूसरी जगहों पर सूरज, चाँद, सितारों, ग्रहों के एक–दूसरे में गथ–मथ जाने का भी उल्लेख है (3) गाभिन ऊँटनी अरबों में सबसे अधिक मूल्यवान धन समझी जाती थी, क़यामत के दिन हर व्यक्ति ऐसी परिस्थिति में होगा कि किसी को बड़ी से बड़ी दौलत संभालने का होश भी न रहेगा और वे चीज़ें मारी–मारी फिरेंगी (4) यह क़यामत के भयावह दृश्य का बयान है कि जंगली जानवर भी मारे घबराहट के एक जगह इकट्ठे हो जाएंगे, जैसा कि साधारण रूप से घोर आपदा के समय होता है (5) उनमें आग लगा दी जाएगी (6) मानने वाले अलग और इनकार करने वाले अलग।

أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِّن زُخْرُفٍ أَوْ تَرْقَىٰ فِي السَّمَاءِ ۚ وَلَن نُّؤْمِنَ
لِرُقِيِّكَ حَتَّىٰ تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَّقْرَؤُهُ ۗ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّي هَلْ
كُنتُ إِلَّا بَشَرًا رَّسُولًا ﴿٩٣﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَن يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ
الْهُدَىٰ إِلَّا أَن قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَّسُولًا ﴿٩٤﴾ قُل لَّوْ كَانَ فِي
الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يَمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ
مَلَكًا رَّسُولًا ﴿٩٥﴾ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٩٦﴾ وَمَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَن
يُضْلِلْ فَلَن تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِهِ ۖ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمْيًا وَبُكْمًا وَصُمًّا ۖ مَّأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ كُلَّمَا خَبَتْ
زِدْنَاهُمْ سَعِيرًا ﴿٩٧﴾ ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُم بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا وَقَالُوا
أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٩٨﴾
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَىٰ
أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيهِ فَأَبَى الظَّالِمُونَ
إِلَّا كُفُورًا ﴿٩٩﴾ قُل لَّوْ أَنتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا
لَّأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنفَاقِ ۚ وَكَانَ الْإِنسَانُ قَتُورًا ﴿١٠٠﴾

ع النصف ع

منزل ٤

या सोने का आपका कोई घर हो या आप आसमान पर चढ़ जाएं और हम तो आपके चढ़ जाने को भी उस समय तक न मानेंगे जब तक आप कोई ऐसी किताब लेकर न उतरें जिसको हम पढ़ सकें, कह दीजिए मेरा पालनहार पाक है, मैं क्या हूँ एक इन्सान हूँ जिसे पैग़म्बर बनाया गया है[1] (93) और लोगों के पास हिदायत आने के बाद मान लेने से केवल यही चीज़ रुकावट बनती है कि वे कहते हैं कि क्या अल्लाह ने इन्सान को पैग़म्बर बना दिया (94) कह दीजिए कि अगर ज़मीन में फ़रिश्ते होते जो आराम से चल फिर रहे होते तो ज़रूर हम उन पर आसमान से फ़रिश्ते को पैग़म्बर बना कर उतार देते (95) कह दीजिए कि अल्लाह ही हमारे तुम्हारे बीच गवाह काफ़ी है, बेशक वह अपने बंदों की ख़ूब ख़बर रखता है, अच्छी तरह निगाह रखता है (96) जिसको अल्लाह हिदायत प्रदान कर दे वही हिदायत पर है और जिसे वह गुमराह कर दे तो आप अल्लाह के अलावा उसके लिए कोई मददगार न पाएंगे और उनको हम क़यामत के दिन उनके चेहरों के बल अंधा, गूंगा और बहरा करके उठाएंगे, उनका ठिकाना दोज़ख होगा, जब जब वह धीमी पड़ने लगेगी हम उन पर उसको और भड़का देंगे (97) यह उनकी सज़ा इसलिए है कि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और कहा कि जब हम हड्डी चूरा हो जाएंगे तो क्या हमें नये सिरे से उठाया जाएगा (98) क्या उनको दिखाई नहीं देता कि वह अल्लाह जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया वह इस पर क़ुदरत (सामर्थ्य) रखता है कि उन जैसा पैदा कर दे और उसने उनके लिए एक निर्धारित अवधि रख दी है जिसमें ज़रा संदेह नहीं फिर भी अन्यायकारी लोग इनकार ही किये जाते हैं[2] (99) कह दीजिए अगर तुम मेरे पालनहार की रहमत (दया) के ख़ज़ानों के मालिक होते तो ख़र्च के डर से रोके ही रखते और इंसान तो है ही बहुत संकीर्ण हृदय (तंग दिल) वाला[3] (100)

---

(1) मक्के के मुश्रिक विभिन्न प्रकार की मांगे किया करते रहते थे, अंत में इसका आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से जवाब दिया जा रहा है कि "मैं कोई ख़ुदा नहीं हूँ कि सब काम मेरे अधिकार में हों, मैं तो एक इंसान हूँ जिसको पैग़म्बर बनाया गया, अल्लाह ने जो मोअजिज़े (ईश चमत्कार) मुझे प्रदान किए उनसे अधिक मैं अपने अधिकार से कुछ नहीं कर सकता" फिर आगे आयत में कहा कि आमतौर से यही चीज़ सत्य मार्ग अपनाने में रुकावट बनती है कि अल्लाह ने इंसान को पैग़म्बर बना दिया, इसके आगे इसका उत्तर है कि इंसान का मार्ग दर्शन इंसान ही कर सकता है, हाँ! अगर दुनिया में फ़रिश्तों की आबादी होती तो ज़रूर फरिश्तों को रसूल बना कर उतार दिया जाता (2) जिसने इतने बड़े–बड़े आसमान और ज़मीन, पहाड़ व समुद्र पैदा कर दिये उसके लिए छोटी सृष्टि का पैदा करना क्या मुश्किल है "आसमानों और ज़मीन का पैदा करना इंसानों के पैदा करने से बड़ी चीज़ है" (3) रहमत (दया) के ख़ज़ानों का मतलब यहाँ वे तमाम रहमत के ख़ज़ाने हैं जिनके द्वारा बंदों पर अल्लाह की रहमत (दया) होती है चाहे भौतिक हो या अभौतिक, विशेष रूप से पैग़म्बरी की ओर इशारा है कि अगर तुम्हें अधिकार होता तो तुम कहाँ गवारा कर सकते थे कि मक्के व तायफ़ के बड़े मालदारों को छोड़ कर वह्य और पैग़म्बरी का यह अमूल्य धन हाशिम की संतान के एक अनाथ को मिल जाए और अगर यह धन तुम्हारे पास ही रहता तो जिस प्रकार तुम मालों में कंजूसी करते हो उसी प्रकार इसके प्रचार–प्रसार में भी कंजूसी करते।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ
فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿١٠١﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ
اَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّكَ
يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ﴿١٠٢﴾ فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَ
مَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا ﴿١٠٣﴾ وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اسْكُنُوا
الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا ﴿١٠٤﴾ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ
وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۗ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿١٠٥﴾ وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ
لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ﴿١٠٦﴾ قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ
لَا تُؤْمِنُوْا ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ
يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾ وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ
وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿١٠٨﴾ وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ
خُشُوْعًا ﴿١٠٩﴾ قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ۗ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ
الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ
سَبِيْلًا ﴿١١٠﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ
شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿١١١﴾

منزل ٤

और हमने मूसा को नौ खुली निशानियाँ दी थीं[1] बस बनी इस्राईल से पूछ लीजिए जब वे उनमें आये थे तो उनसे फ़िरऔन ने कहा कि ऐ मूसा! हमें तो यही लगता है कि तुम पर जादू चल गया है (101) कहा कि तुम तो जानते हो कि इन चीज़ों को किसी और ने नहीं आसमानों और ज़मीन के पालनहार ने समझाने के लिए उतारा है और ऐ फ़िरऔन! मैं तो समझता हूँ कि तू विनष्ट (हलाक) होकर रहेगा (102) बस उसने चाहा कि देश में उनके क़दम उखाड़ दे तो हमने उसको और उसके साथ वालों को (सबको) डुबो दिया (103) और उसके बाद हमने बनी इस्राईल से कह दिया कि तुम देश में रहो फिर जब आख़िरी वादा आ पहुँचेगा तो हम तुम सबको समेट कर ले आएंगे (104) और ठीक ठीक उसे हमने उतारा है और ठीक ठीक ही वह उतरा भी है और आपको तो हमने शुभ समाचार देने वाला और ख़बरदार करने वाला बनाकर भेजा है[2] (105) और हमने कुरआन के टुकड़े टुकड़े (भाग) रखे हैं ताकि आप लोगों को ठहर ठहर कर सुना दें और हमने उसको थोड़ा थोड़ा करके उतारा है[3] (106) कह दीजिए तुम इसको मानो या न मानो जब यह उन लोगों को पढ़ कर सुनाया जाता है जिनको पहले से ज्ञान दिया गया है तो वे ठोढ़ियों के बल सज्दे में गिर जाते हैं (107) और कहते हैं कि हमारा पालनहार पाक है, निश्चित ही हमारे पालनहार का वादा पूरा होना ही है (108) और वे रोते हुए ठोढ़ियों के बल गिर जाते हैं और यह चीज़ उनकी विनम्रता (खुशूअ) को और बढ़ा देती है[4] (109) कह दीजिए तुम (उसको) अल्लाह या रहमान कहो, जो कह कर उसको पुकारो उसके सब ही नाम अच्छे हैं, और आप अपनी नमाज़ में आवाज़ न अधिक ऊँची करें और न अधिक नीची और बीच का तरीका अपनाएं[5] (110) और कह दीजिए असल प्रशंसा तो अल्लाह के लिए है जिसने न किसी को बेटा बनाया और न बादशाही में कोई उसका साझी है और न कमज़ोरी के कारण कोई उसका सहायक है और आप उसकी बड़ाई ही बयान करते रहें (111)

(1) वे नौ निशानियाँ ये थीं, असा (छड़ी) , सफ़ेद चमकदार हाथ, अकाल वाले वर्ष, फलों की कम पैदावार, तूफ़ान, टिड्डी, खटमल, मेंढ़क, ख़ून। सूरः अअ्राफ़ में इसका विवरण गुज़र चुका है (2) यह कुछ उन मुश्रिकों के संदेहों का उत्तर है जो कहा करते थे कि कुरआन की आयतों में रास्ते ही में परिवर्तन हो जाता है (3) तत्वदर्शिता व आवश्यकता के अनुसार थोड़ा–थोड़ा उतरा फिर आयतों और सूरतों को अलग अलग रखा ताकि पाठ और याद करना भी सरल हो (4) इससे आशय वे लोग हैं जिनको तौरेत व इंजील का सही ज्ञान था और स्वभाव में न्याय था, जब उन्होंने कुरआन सुना तो कह उठे यही वह अंतिम वाणी (कलाम) है जिसका वादा किया गया था, जो अंतिम पैग़म्बर पर उतर रहा है और वे सज्दों में गिर जाते हैं और इससे उनकी खुशूअ (विनम्रता) में और बढ़ोतरी होती है (5) अरब के मुश्रिक अल्लाह के नाम "रहमान" को नहीं मानते थे, जब मुसलमानों से यह नाम सुनते तो कहते कि यह लोग हमको मना करते हैं और खुद ही दो खुदाओं को पुकारते हैं "अल्लाह को और रहमान को" इस आयत में इसी ग़लत बात का जवाब दिया जा रहा है कि रहमान भी अल्लाह ही का नाम है और उसके और भी नाम हैं उनमें से किसी नाम से उसको पुकारा जा सकता है, इससे तौहीद पर कोई आंच नहीं आती, आगे कुरआन की तिलावत (पाठ) के समय बीच की आवाज़ रखने का निर्देश हो रहा है, कुछ हदीसों में है कि ऊँची आवाज़ से नमाज़ों में तिलावत की जाती तो मुश्रिक लोग विभिन्न प्रकार से मज़ाक उड़ाते तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हलकी आवाज़ में तिलावत (पाठ) शुरु कर दी, उस पर यह आयत उतरी कि न बहुत ऊँची आवाज़ हो और न बहुत नीची, फिर सूरः का समापन शुद्ध तौहीद के उल्लेख पर हो रहा है कि वह हर ऐब और कमज़ोरी से पवित्र है उसको किसी की मदद की ज़रूरत नहीं।

सूरह कहफ़[1]

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अस्ल प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने अपने बन्दे पर किताब उतारी और उसमें कोई जटिलता नहीं रखी (1) (जीवन व्यवस्था को) ठीक रखने वाली, ताकि लोगों को उसके सख़्त अज़ाब से डराए और उन ईमान वालों को जो अच्छे काम करते हैं शुभसमाचार दे दे कि उनके लिए अच्छा बदला है (2) वे उसी में हमेशा रहेंगे (3) और उन लोगों को ख़बरदार कर दे जो कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बना लिया है (4) उन्हें इसकी कुछ भी जानकारी नहीं और न उनके बाप दादा को है[2], बहुत भारी बात है जो उनके मुँह से निकल रही है, जो वे बक रहे हैं वह सरासर झूठ है (5) अगर उन्होंने यह बात न मानी तो लगता है कि आप उनके पीछे अपनी जान खपा देंगे[3] (6) ज़मीन पर जो भी है उसको हमने उसके लिए शोभा बना दिया है ताकि हम जाँच लें कि उनमें कौन बेहतर से बेहतर काम करने वाला है (7) और निश्चित रूप से ही उस पर जो भी है उसको हम चटियल मैदान कर देने वाले हैं (8) क्या आप का विचार है कि गुफ़ा और तख़्ती वाले हमारे निशानियों में एक अचम्भा थे[4] (9) जब वे नवजवान गुफ़ा के पास आए तो उन्होंने दुआ की कि ऐ हमारे पालनहार! अपने पास से हमें रहमत (दया) से सम्मानित कर और हमें अपने (इस) मामले में भलाई प्रदान कर दे (10) बस हमने गुफ़ा में कुछ वर्षों के लिए उनको कान थपक कर सुला दिया (11)

سُوْرَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَعَشْرُ اٰيَاتٍ وَاثْنَا عَشَرَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ۜ ① قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ ② مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۙ ③ وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۗ ④ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ۭ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۭ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ⑤ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ⑥ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ⑦ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ۭ ⑧ اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ⑨ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ⑩ فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ۙ ⑪

منزل ۴

(1) इस सूरह के उतरने की पृष्ट भूमि यह घटना बताई जाती है कि मक्के के सरदारों ने यहूदी विद्वानों से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में पुछवाया था तो उन्होंने कहा कि उनसे तीन सवाल करो, अगर वे सही जवाब दें तो वे पैगम्बर हैं, एक गुफ़ा में छिपने वाले नवयुवकों के बारे में, दूसरे उस व्यक्ति के बारे में जिसने पूरब से पश्चिम तक पूरी दुनिया की यात्रा की, और तीसरे रूह (आत्मा) के बारे में, उन सरदारों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर ये तीन प्रश्न किये, दो प्रश्नों के उत्तर में यह सूरह उतरी और अंतिम प्रश्न का उत्तर सूरह इस्रा में दिया गया है (2) कोई ज्ञानात्मक नियम या शोध न उनके पास न उनके पूर्वजों के पास था जिनके अनुसरण में वे इतनी भारी बात कह रहे हैं (3) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुश्रिकों के विरोधात्मक व्यवहार और लगातार इन्कार से बड़ी चोट लगती थी, आपको तसल्ली दी जा रही है कि आपने अपना काम कर दिया और दुनिया तो परीक्षा स्थल है, कुछ सफल होंगे और कुछ असफल, तो आप उनके न मानने पर परेशान न हों, आगे यह सब चमक–दमक समाप्त हो जाएगी और सबको अपने किये का बदला मिल जाएगा (4) यानी अल्लाह की महान शक्ति के सामने असहाब–ए–कहफ़ (गुफा वालों) की कहानी कुछ अचंभा नहीं जिसे हद से अधिक आश्चर्यजनक समझा जाए, "रक़ीम" लिखी हुई तख़्ती को कहते हैं, इसके विभिन्न अर्थ बयान किए गए हैं, बहुत से लोगों की राय है कि उनके मरने के बाद उनके नामों की तख़्ती वहां लगा दी गई थी इसलिए उनको "अस्हाबुर्रक़ीम" (तख़्ती वाले) कहा जाता है, कुछ लोग उस गुफ़ा के नीचे वाली घाटी का नाम रक़ीम बताते हैं, कुछ लोग उस पहाड़ का नाम रक़ीम बताते हैं जिसमें यह गुफ़ा थी, अल्लाह ही बेहतर जानता है।

ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَيُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا ﴿۱۲﴾
نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ۭ اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ
وَزِدْنٰهُمْ هُدًى ﴿۱۳﴾ وَّرَبَطْنَا عَلٰي قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا
رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا۟ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلٰـهًا لَّقَدْ
قُلْنَآ اِذًا شَطَطًا ﴿۱۴﴾ هٰٓؤُلَاۗءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ لَوْ
لَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۢ بَيِّنٍ ۭ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى
عَلَي اللّٰهِ كَذِبًا ﴿۱۵﴾ وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ
فَاْوٗٓا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ
مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿۱۶﴾ وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ
كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ
وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ۭ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ
الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿۱۷﴾ وَ
تَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ڰ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَ
ذَاتَ الشِّمَالِ ڰ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ۭ لَوِ اطَّلَعْتَ
عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿۱۸﴾

منزل ۴

फिर हमने उनको उठाया ताकि हम जान लें कि जितनी अवधि तक वे ठहरे उसको दोनों पक्षों में से कौन अधिक ठीक गिनने वाला है (12) हम आपको उनकी कहानी ठीक ठीक सुनाते हैं, वे कुछ नवजवान थे जो अपने पालनहार पर ईमान लाए और हमने उनको अधिक सूझ बूझ से सम्मानित किया (13) और उस समय हमने उनके दिलों को शक्ति दी जब वे खड़े हुए और कहने लगे हमारा पालनहार आसमानों और ज़मीन का पालनहार है, उसके सिवा हम किसी पूज्य को बिल्कुल नहीं पुकारते (अगर हमने ऐसा किया) तो हमने ज़रूर बड़ी लचर बात कही (14) यह हमारी क़ौम के लोग हैं जिन्होंने उसके अलावा पूज्य बना रखे हैं, वे अपने लिए कोई खुला प्रमाण क्यों नहीं ले आते, बस उससे बढ़ कर अन्यायी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे (15) और (ऐ साथियो!) जब तुम उनसे और जिनको वे अल्लाह के सिवा पूजते हैं अलग हो गये तो अब (चल कर) गुफ़ा में शरण लो, तुम्हारा पालनहार तुम्हारे लिए अपनी रहमत (दया) खोल देगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे काम में आसानी उपलब्ध कराएगा[1] (16) और आप देखें कि सूरज जब निकलता तो उनकी गुफ़ा की दाईं ओर से होकर गुज़र जाता और जब डूबता तो उनसे कतरा कर बाईं ओर से निकल जाता और वे उसके एक खुले स्थान में थे, यह अल्लाह की एक निशानी है, जिसको अल्लाह हिदायत दे (सत्यमार्ग दिखाए) वही सत्य मार्ग पर है और जिसको पथ भ्रष्ट कर दे तो आपको उसके लिए कोई सहायक नहीं मिल सकता जो उसका मार्ग–दर्शन करने वाला हो (17) और आप (उनको देखते) तो उनको जागता समझते जब कि वे सो रहे थे और हम उनको दाएं–बाएं करवट देते रहते थे और उनका कुत्ता दोनों हाथ पसारे चौखट पर (बैठा) था, अगर आप उनको झांक कर देखते तो पीठ फेर कर भाग निकलते और निश्चित रूप से आपके भीतर उनका आतंक समा जाता (18)

(1) यह कुछ नवजवान थे जो एक मुश्रिक राजा के ज़माने में तौहीद (एकेश्वरवाद) के क़ायल थे, राजा को मालूम हुआ तो उसने बुलवा कर पूछा, अल्लाह ने उनको हिम्मत दी और उन्होंने खुलकर तौहीद का न सिर्फ़ यह कि इक़रार किया बल्कि उसकी ओर बुलाया भी, राजा उनका दुश्मन हो गया लेकिन तुरन्त क़त्ल नहीं किया बल्कि मोहलत दी, तो उन्होंने आपस में विचार–विमर्श करके एक गुफ़ा में जाकर शरण ली और अल्लाह पर भरोसा किया, अल्लाह ने उनको वहां गहरी नींद सुला दिया, तीन सौ नौ वर्ष वे वहां सोते रहे, अल्लाह ने अपनी शक्ति से उनको हर प्रकार से सुरक्षित रखा, धूप उनके दाएं–बाएं हो कर गुज़र जाती ताकि उनको तकलीफ़ न हो और आवश्यकता अनुसार गर्मी भी मिलती रहे, अल्लाह ने उनकी व्यवस्था ऐसी रखी कि वे करवट भी लेते रहे, देखने से महसूस होता कि जाग रहे हैं और एक कुत्ता गुफ़ा के मुँह पर आकर बैठ गया कि देखने वाले को भय हो और कोई उनको परेशान न कर सके, पूरा राज्य उनके विरोध पर उतर आया तो अल्लाह ने अपने पास से उनकी सुरक्षा का प्रबंध किया इसलिए कि वे बहुत ही साहसी ईमान वाले नवजवान थे।

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ۭ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ
كَمْ لَبِثْتُمْ ۭ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۭ قَالُوْا رَبُّكُمْ
اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ۭ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ
اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ
مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿۱۹﴾
اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ
فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿۲۰﴾ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا
عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا
رَيْبَ فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا
عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۭ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ۭ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا
عَلٰٓي اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿۲۱﴾ سَيَقُوْلُوْنَ
ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ
رَجْمًۢا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۭ قُلْ
رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۣ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ
اِلَّا مِرَاۗءً ظَاهِرًا ۠ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ﴿۲۲﴾

منزل ۴

और इसी प्रकार हमने उनको उठा दिया ताकि वे एक दूसरे से पूछें, उनमें एक बोला कितनी अवधि तक तुम लोग ठहरे होगे (कुछ) बोले एक–आध दिन हम ठहरे होंगे, (दूसरों) ने कहा जितनी अवधि तक तुम ठहरे तुम्हारा पालनहार उसको ख़ूब जानता है, अपने इन सिक्कों के साथ किसी को शहर भेजो तो वह ख़ूब देख भाल ले कि अधिक पवित्र भोजन वहाँ कहाँ (मिल सकता) है तो वह उसमें से कुछ खाना तुम्हारे लिए ले आए और वह सावधानी बरते और हरगिज़ किसी को तुम्हारी भनक न लगने दे (19) निश्चित रूप से अगर तुम्हारी सूचना उन्हें मिल गई तो वे तुम्हें पत्थर मार मार कर मार डालेंगे या अपने दीन पर वापस ही तुम्हें लौटा देंगे और तब तो तुम हरगिज़ कभी सफल न हो सकोगे[1] (20) और इसी तरह हमने उनकी ख़बर खोल दी ताकि लोग जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और क़यामत में कोई संदेह नहीं है[2], जब वे अपनी बात में आपस में झगड़ने लगे तो बोले कि उन पर कोई भवन बना दो, उनका पालनहार उनको बेहतर जानता है जो उनके मामले में ग़ालिब आए (प्रभावी रहे), उन्होंने कहा कि हम तो उनके पास एक मस्जिद बनाएंगे (21) अब वे कहेंगे कि वे तीन थे चौथा उनका कुत्ता था और (कुछ लोग) कहेंगे कि वे पाँच थे छठा उनका कुत्ता था, (जैसे) बिन देखे तीर चलाना और कुछ लोग कहेंगे कि वे सात थे और आठवां उनका कुत्ता था, कह दीजिए कि मेरा पालनहार उनकी संख्या ख़ूब जानता है तो उनकी ख़बर कम ही लोगों को है तो आप उनके बारे में केवल सरसरी बात कीजिए और उनमें किसी से उनके बारे में मत पूछिए [3] (22)

(1) सैकड़ों साल सोने के बाद अल्लाह की क़ुदरत से उनको ऐसा महसूस हो रहा था कि एक दिन सोए हैं, अब उनको भूख लगी तो उन्होंने अपने एक साथी को खाने के लिए भेजा और समझाया कि सावधानी से शहर में जाएं और जहां ह़लाल और पवित्र खाना मिले देख भाल कर वहां से लाएं, वे सज्जन वहां पहुँचे तो दुनिया बदल चुकी थी, यह भी अचम्भे में पड़े और जिस दुकानदार को सिक्का दिया वह भी तीन सौ साल पुराना सिक्का देख कर संदेह में पड़ा और उनको लेकर राजा के पास पहुँचा, इस अवधि में क्रांति आ चुकी थी, तौह़ीद (एकेश्वरवाद) में विश्वास रखने वाले राजा की सरकार थी, उसने जब सिक्का देखा तो उसको ख़याल हुआ कि यह तो वही नवजवान मालूम होते हैं जो तीन सौ साल पहले ग़ायब हो गये थे, पुष्टि जब हुई तो उसने उनका बड़ा सम्मान किया, फिर वे उसी गुफ़ा में गए और वहीं उनकी मौत हुई (2) कुछ किताबों से मालूम होता है कि उस ज़माने में कुछ लोगों को मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने पर संदेह था और राजा चाहता था कि उनको किसी खुले प्रमाण से लाजवाब किया जाए, अल्लाह ने यह प्रमाण उसके लिए उपलब्ध कर दिया (3) इस आयत से यह शिक्षा मिलती है कि जिस मामले पर कोई व्यावहारिक समस्या निर्भर न हो उसके बारे में अनावश्यक तर्क–वितर्क नहीं करना चाहिए, असहाब–ए–कहफ़ (गुफ़ा वाले) की घटना से वास्तविक शिक्षा सत्य पर क़ायम रहने की मिलती है, उन की संख्या क्या थी इसमें पड़ने की आवश्यकता नहीं, हाँ! इशारा इसमें अवश्य दे दिया गया कि अंतिम बात ज़्यादा सही है।

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّيْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ
اللّٰهُ ۡ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ
رَبِّيْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾ وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ
ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا
لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ۭ مَا
لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ۡ وَّلَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾
وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۭ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ
وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ
يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ
وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَ
لَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ
اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿٢٨﴾ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۣ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ
وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۙ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ
اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۭ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ
كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ ۭ بِئْسَ الشَّرَابُ ۭ وَسَاۗءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾

الثلثة

منزل ٤

और किसी चीज़ के बारे में यह हरगिज़ न कहिए कि उसको मैं कल करने वाला हूँ (23) हाँ (यह कहिए) कि अल्लाह चाहेगा तो (कर लूंगा) और जब दिमाग़ से उतर जाए तो अपने पालनहार को याद कीजिए और कहिए कि आशा है कि मेरा पलनहार इससे अधिक भलाई की राह मुझे सुझा देगा[1] (24) और वे अपनी गुफ़ा में तीन सौ साल ठहरे और नौ साल उससे अधिक[2] (25) कह दीजिए कि अल्लाह ख़ूब जानता है कि वे कितने समय तक रहे, आसमानों और ज़मीन का ढ़का–छिपा उसी के पास है, क्या ही ख़ूब वह देखता है और क्या ख़ूब सुनता है, उसके अलावा उनका कोई मददगार नहीं और न वह किसी को अपने अधिकार में साझी बनाता है (26) और आपके पालनहार की किताब की आप पर जो वह्य हुई है वह पढ़ कर सुनाइए, उसकी बातें कोई बदल नहीं सकता और उसके अलावा आपको कहीं शरण का स्थान मिल नहीं सकता (27) और आप उन्हीं लोगों के साथ अपने आपको लगाये रखिये जो सुबह व शाम अपने पालनहार को पुकारते हैं, उसकी प्रसन्नता की चाहत में और दुनिया की शोभा के लिए उनसे अपनी आँखें न फेर लीजिए, और उसकी बात न मानिए जिसके दिल को हमने अपनी याद से गाफ़िल कर रखा है और वह अपनी इच्छा के चक्कर में पड़ा है और उसका मामला हद से आगे बढ़ चुका है[3] (28) और कह दीजिए कि सत्य तुम्हारे पालनहार की ओर से (आ चुका) है तो जो चाहे माने और जो चाहे इन्कार करे, निश्चित ही हमने अत्याचारियों के लिए ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसकी क़नातें उनको अपने घेरे में ले लेंगी और जब वे पानी मांगेंगे तो तेल की तलछट जैसे पानी से उनकी फरियाद पूरी की जाएगी जो चेहरों को झुलसा कर रख देगा, कैसा बुरा पानी है और कैसा बुरा आराम का स्थान है (29)

---

(1) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जब असहाब–ए–कहफ़ (गुफ़ा वालों) की कहानी पूछी गई तो आपने कह दिया था कि जल्द ही बता दूंगा मगर उसके बाद बहुत दिनों तक हज़रत जिब्रईल न आए, इस पर मुश्रिकों ने हंसना शुरु किया और आप दुखी हुए, अंततः यह आयतें उतरीं जिसमें गुफ़ा वालों की कहानी है और साथ ही साथ यह भी कह दिया गया कि किसी चीज़ का वादा "इन्शा अल्लाह" कहे बिना न करना चाहिए और भूल जाए तो याद कर ले (2) सूर्य की तिथि के अनुसार तीन सौ साल और चन्द्रमा की तिथि के अनुसार तीन सौ नौ साल की, आगे बताया जा रहा है कि मात्र अनुमान से इन बहसों में पड़ने से फ़ायदा नहीं अल्लाह ही उसको बेहतर जानता है (3) रिवायतों में है कि कुछ कुरैश के सरदारों ने आपसे कहा कि पहले नीच लोगों को अपने पास से हटा दीजिए ताकि सरदार आपके पास बैठ सकें, ग़रीब मुसलमानों को नीच कहा, और धनी काफिरों को सरदार, इस पर यह आयत उतरी, इसमें उन सहाबा की बड़ी श्रेष्ठता है जो ग़रीबी व निर्धनता की हालत में भी और कठिनाइयाँ सह कर आपके साथ थे, खुद आपको आदेश हो रहा है कि आप उनको अपने साथ ही रखें, आगे साफ़–साफ़ बताया जा रहा है कि सच्चा और सीधा सफलता का रास्ता बता दिया गया, अब मानना और न मानना तुम्हारा काम है, इसके बाद न मानने वालों का कठोर दण्ड और मानने वालों के बदले और पुरस्कार का वर्णन है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ
أَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾ أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَ
يَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ
فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۚ نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾ وَاضْرِبْ
لَهُمْ مَثَلًا رَجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ
وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ
آتَتْ أُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِنْهُ شَيْئًا ۚ وَفَجَّرْنَا خِلَالَهُمَا نَهَرًا ﴿٣٣﴾
وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا
أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ
ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ قَالَ مَا أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هَٰذِهِ أَبَدًا ﴿٣٥﴾
وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِنْ رُدِدْتُ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ
خَيْرًا مِنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾ قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ
أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ
سَوَّاكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾ لَٰكِنَّا هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي أَحَدًا ﴿٣٨﴾

منزل٤

निश्चित रूप से जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये तो जो अच्छा काम करे उसके बदले को हम बिल्कुल बर्बाद नहीं करते (30) ऐसों ही के लिए हमेशा की जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वहाँ उनको सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और वे हरे पतले और मोटे रेशम के कपड़े पहने, मसहरियों पर टेक लगाए वहाँ बैठे होंगे, क्या ख़ूब बदला है और कैसी सुन्दर आराम की जगह है (31) और आप उनके सामने उन दो आदमियों का उदाहरण पेश कीजिए जिनमें से एक को हमने अंगूर के दो बाग़ दिये और उन दोनों को खजूर के पेड़ों से घेर दिया और दोनों के बीच खेती रखी (32) दोनों बाग़ अपने फल देते और उनमें ज़रा भी कमी न होती और दोनों के बीच से हमने नहर निकाल दी (33) और उसको फल मिला तो वह बात करते हुए अपने साथी से कहने लगा कि मैं माल में भी तुम से अधिक हूँ और जत्थे में भी तुम से अधिक मज़बूत हूँ (34) और वह अपने बाग़ में गया और वह अपनी जान पर अत्याचार कर रहा था बोला कि मैं नहीं समझता कि यह कभी बर्बाद भी होगा (35) और मैं नहीं समझता कि क़यामत आएगी और अगर मैं अपने पालनहार के पास लौटाया गया तो भी वापस होने पर मुझे इससे बेहतर ही जगह मिलेगी (36) उसके साथी ने उससे बात के दौरान कहा क्या तुम उस ज़ात का इनकार करते हो जिसने तुमको मिट्टी से फिर पानी की बूंद से बनाया फिर एक आदमी बना कर खड़ा कर दिया (37) लेकिन (मैं तो यही कहूँगा) कि वह अल्लाह ही मेरा पालनहार है और मैं अपने पालनहार के साथ किसी को साझी नहीं मानता[1] (38)

(1) ऊपर एक ओर कुरैश के सरदारों और दूसरी ओर निर्धन दुर्दशा वाले मुख़्लिस (निष्ठावान) ईमान वालों का वर्णन था, फिर ईमान व कुफ़्र (इनकार) के दो अलग–अलग रास्तों का बयान और उनके परिणाम का उल्लेख था, अब उसका उदाहरण पेश किया जा रहा है और विशेष रूप से चेतावनी दी जा रही है कि दुनिया का सम्मान व शक्ति सफलता का प्रमाण नहीं है, यह एक धोखा है जिसमें आदमी ग्रस्त होकर आख़िरत को भुला देता है, सफलता की कुंजी ईमान है जो वास्तविक सफलता की गारंटी है, काफ़िर को अपने बाग़ पर गर्व था, वह समझता था कि जब उसको सब कुछ मिला हुआ है तो यही उसकी सफलता है, वह यह नहीं मानता था कि यह एक परीक्षा है कि वह अपने मालिक को पहचानता है या उसको भुला देता है? इसीलिए ईमान वाले ग़रीब साथी ने उसको उदाहरण से समझाया कि अपनी वास्तविकता न भूलो तुम को अल्लाह ने क्या से क्या बना दिया, मैं तो उसी एक ज़ात को मानता हूँ और उसके एक होने में विश्वास रखता हूँ।

और क्यों न जब तुमने अपने बाग़ में प्रवेश किया और मुझे तुमने धन व संतान में अपने से कमज़ोर देखा तो तुम यह कहते कि जो अल्लाह ने चाहा (वह हुआ) ताक़त सब अल्लाह ही के कब्ज़े में है (39) तो अब हो सकता है कि मेरा पालनहार तुम से बेहतर बाग़ मुझे प्रदान कर दे और उस पर आसमान से कोई आफ़त भेज दे तो वह चटियल मैदान होकर रह जाए (40) या उसका पानी भीतर तहों में चला जाए तो तुम उसको तलाश भी न कर सको (41) और (यही हुआ) उसके फल (आफ़त के) घेरे में आ गए बस उसने जो कुछ उसमें ख़र्च किया था उस पर हाथ मलता रह गया और वे सब अपनी टट्टियों के बल गिरे पड़े थे और वह कह रहा था काश कि मैंने अपने पालनहार के साथ किसी को शरीक न किया होता[1] (42) और न उसका कोई जत्था हुआ जो अल्लाह के सिवा उसकी सहायता करता और न ही वह ख़ुद बदला ले सका (43) यहाँ (यह बात खुल गई कि) सब अधिकार अल्लाह ही का है, जो सत्य है, वही बेहतर पुरस्कार देने वाला और वही बेहतर बदला देने वाला है (44) और उनके सामने सांसारिक जीवन का उदाहरण पेश कीजिए, जैसे पानी हो जो हमने ऊपर से उतारा हो बस उससे ज़मीन की उपज ख़ूब घनी हो फिर वह भूसा भूसा हो जाए, हवाएं उसको उड़ाती फिरें और अल्लाह तो हर चीज़ पर पूरी कुदरत (सामर्थ्य) रखने वाला है[2] (45) धन और बेटे सांसारिक जीवन की शोभा हैं और बाक़ी रहने वाले सत्कर्म आपके पालनहार के नज़दीक बदले के एतबार से अधिक बेहतर और आशा के एतबार से भी अधिक उत्तम हैं[3] (46) और जिस दिन हम पहाड़ों को सरका देंगे और आप धरती को देखेंगे कि खुली पड़ी है और हम सब को एकत्र करेंगे और उनमें से एक को भी नहीं छोड़ेंगे[4] (47)

(1) धन अल्लाह की नेमत है लेकिन अकड़ने और कुफ़्र बकने से आफ़त आती है, चाहिए था कि बाग़ में प्रवेश करते समय "माशा अल्लाहु लाकुव्व त इल्ला बिल्लाह" कहता, हदीसों में है कि आदमी को जब अपने घर में ख़ुशहाली नज़र आये तो यही शब्द कहे (2) यह दुनिया की अस्थाई बहार का उदाहरण दिया गया है जैसे ही सूखी ज़मीन पर पानी पड़ा वह हरी–भरी हो गई और लहलहाने लगी, आँखों को भली लगने लगी मगर कुछ ही दिन गुज़रे कि पीली पड़ने लगी, अंततः काँट–छाँट कर बराबर कर दी गई (3) मरने के बाद धन–संतान काम नहीं आते केवल नेकियाँ काम आती हैं, "अल बाक़ियातुस्सॉलिहात" में हर वह कार्य या कथन आता है जो अल्लाह की मुहब्बत या पहचान या आज्ञापालन की ओर ले जाने वाला हो, अतः इसी धन और संतान को अगर अल्लाह की धरोहर समझ कर अल्लाह की इबादत और धर्म प्रायणता का साधन बना लिया जाए तो इनकी गिनती भी "अल्बाक़ियातुस्सालिहात" में होने लगती है (4) हश्र का चित्रण है, जब पहाड़, नदियाँ, टीले सब समाप्त हो चुके होंगे और सारे इनसान हश्र के मैदान में लाकर एकत्र किये जाएंगे, आयतों से मालूम होता है कि पहले पहाड़ सरकाए जाएंगे फिर उनको भूसा बना कर उड़ा दिया जाएगा।

وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ
اَوَّلَ مَرَّةٍۢ ؗ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾ وَوُضِعَ
الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَ
يَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً
وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ وَ
لَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿٤٩﴾ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا
لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ
اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗۤ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ
لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾ مَاۤ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ
الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ
زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ
مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَ
لَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ
لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾

منزل ٤

और उन सबको आपके पालनहार के सामने पंक्तिबद्ध पेश कर दिया जाएगा (अंततः) तुम हमारे पास आ ही गए जैसे हमने तुमको पहली बार पैदा किया था, लेकिन तुमने यह समझा था कि हम तुम्हारे लिए कोई वादा निर्धारित नहीं करेंगे (48) और परवाना (आमाल का (कर्मपत्र) सामने) रख दिया जाएगा तो आप अपराधियों को देखेंगे कि उसमें जो कुछ (लेखा–जोखा) है उससे कांप रहे होंगे और कह रहे होंगे कि हाय हमारा दुर्भाग्य! यह कैसी किताब है कि कोई छोटी बड़ी चीज़ इसने ऐसी नहीं छोड़ी जो गिनी न हो, और वे अपना सब किया धरा मौजूद पाएंगे और आप का पालनहार किसी के साथ अन्याय नहीं करेगा[1] (49) और जब हमने फरिश्तों से कहा था कि आदम को सज्दा करो तो उन सबने सज्दा किया सिवाय इब्लीस के वह जिन्नों में से था तो उसने अपने पालनहार का आदेश न माना, क्या फिर भी तुम मुझे छोड़ कर उसको और उसकी संतान को दोस्त बनाते हो? हालांकि वे सब तुम्हारे दुश्मन हैं, अत्याचारियों के लिए कैसा बुरा बदल है[2] (50) न हमने आसमानों और धरती को पैदा करते हुए उन्हें हाज़िर किया था और न खुद उनको पैदा करते हुए, और हम बहकाने वालों को मददगार नहीं बनाते[3] (51) और जिस दिन वह कहेगा कि बुला लो मेरे उन साझियों को जिनको तुमने (साझी) समझा था तो वे आवाज़ें देंगे बस वे उनको कोई जवाब न दे सकेंगे और हम उनके बीच विनाश का एक गड्ढ़ा आड़ देंगे (52) और अपराधी लोग आग देखेंगे तो समझ लेंगे कि उनको उसी में गिरना है और उससे वापसी का उनको कोई रास्ता न मिलेगा (53) और इस कुर्आन में हमने लोगों के लिए हर तरह के उदाहरण फेर फेर कर बयान किये हैं और इन्सान है कि सबसे अधिक झगड़ालू है[4] (54)

---

(1) नाम–ए–आमाल (कर्मपत्र) हर एक को दिया जाएगा, उनमें अपराधी अपनी बुराइयों का विवरण देख कर कांप रहे होंगे और ईमान वाले खुशी में अपना आमाल नामा एक दूसरे को दिखाते फिरेंगे (2) इब्लीस जिन्नों में से था, इबादत में तरक़्क़ी करके फरिश्तों के गिरोह में शामिल हो गया था, इसलिए फरिश्तों को सज्दे का आदेश हुआ तो उसको भी हुआ, उस समय उसकी वास्तविक प्रवृत्ति रंग लाई, घमण्ड करके अल्लाह की फ़रमांबरदारी (आज्ञाकारिता) से भाग निकला, आदम के आगे सिर झुकाना अपनी शान के विरुद्ध समझा, आश्चर्य है कि आज आदम की संतान अपने पालनहार के स्थान पर उसी अपने अनादिकालिक दुश्मन और उसकी संतान को अपना दोस्त और शुभचिन्तक बनाना चाहती है, इससे बढ़ कर अन्याय और अत्याचार क्या होगा (3) यानी न दुनिया के पैदा करते समय उनसे परामर्श लिया गया और न ही वे उस समय मौजूद थे और न खुद उनको पैदा करते समय उनसे पूछा गया और न ही वे उस समय मौजूद थे, फिर आख़िर उनको खुदाई में कैसे साझीदार बना लिया गया (4) यानी पवित्र कुरआन किस तरह विभिन्न शीर्षकों और भाँति–भाँति के प्रमाणों से समझाता है मगर इंसान कुछ ऐसा झगड़ालू है कि साफ़ और सीधी बातों में भी झूठे तर्क–वितर्क किये बिना नहीं रहता और विभिन्न प्रकार की मांग आरम्भ कर देता है कि फुलाँ चीज़ दिखाओ तो मानूंगा।

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا
رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ
الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ
وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا
بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾ وَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ
يَدٰهُ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰي قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ
اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا
اِذًا اَبَدًا ﴿٥٧﴾ وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا
كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۭ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا
مِنْ دُوْنِهٖ مَوْىِٕلًا ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا
لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى
اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ
بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا
جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَاۗءَنَا ۡ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

منزل ٤

और लोगों के लिए कोई रूकावट है ही नहीं कि वे ईमान ले आएं और अपने पालनहार से माफ़ी मांगें जब कि हिदायत उनके पास आ चुकी सिवाय इसके कि (उनको यह इंतेज़ार हो कि) पहलों का नियम उन पर भी लागू हो जाए या अज़ाब उनके सामने ही आ जाए[1] (55) और पैग़म्बरों को तो हम शुभ समाचार देने वाला और डराने वाला बना कर भेजते हैं और जिन्होंने इन्कार किया वे असत्य को लेकर झगड़ा करते हैं ताकि उसके द्वारा सत्य के क़दम डगमगा दें और मेरी निशानियों को और जिससे उनको डराया गया उसको उन्होंने मज़ाक बना रखा है (56) और उससे बढ़ कर अत्याचारी कौन होगा जिसको उसके पालनहार की आयतों से नसीहत की जाए तो वह उससे मुँह मोड़ ले और अपना किया धरा सब भूल जाए, हमने उसके समझने से उनके दिलों पर परदे डाल दिये हैं और उनके कानों में डाट (दे रखी) है और अगर आप उनको सीधी राह की ओर बुलाएं तब भी वे हरगिज़ सही रास्ते पर कभी न आएंगे (57) और आपका पालनहार बड़ा माफ़ करने वाला और बहुत कृपालु है, अगर वह उनकी करतूतों पर उनकी पकड़ कर लेता तो तुरन्त ही उनको अज़ाब से ग्रस्त कर देता लेकिन उनके लिए एक निर्धारित वादा है, उससे बच कर वे कहीं हरगिज़ शरण न पा सकेंगे (58) और यह सब बस्तियाँ हैं कि जब उन्होंने अत्याचार किया तो हमने उनको तबाह कर दिया और हमने उनकी तबाही के लिए एक निर्धारित समय रखा था (59) और (याद कीजिए) जब मूसा ने अपने सेवक से कहा कि मैं बराबर लगा ही रहूँगा यहाँ तक कि दो समुद्रों के संगम पर पहुँच जाऊँ या मुद्दतों चलता ही रहूँ[2] (60) फिर जब वे दोनों दो समुद्रों के संगम पर पहुँचे तो वे अपनी मछली भूल गये, बस उसने सुरंग बनाते हुए नदी की राह ली (61) फिर जब वे दोनों आगे बढ़े तो उन्होंने अपने सेवक से कहा कि हमारा खाना तो लाओ अपनी इस यात्रा से तो हम थक गये (62)

---

(1) सारे प्रमाण पूरे हो चुके, अब उनके पास अपने कुफ़्र पर इसके सिवा कोई प्रमाण नहीं रह गया कि वे पैग़म्बर से यह मांग करने लगे कि अगर हम असत्य पर हैं तो जिस तरह असत्य वादियों पर पहले अज़ाब आ चुका उसी तरह अज़ाब ले आओ, आगे अल्लाह तआला कहता है कि पैग़म्बर का काम अज़ाब लाना नहीं है, उसका समय अल्लाह की ओर से निर्धारित है, पैग़म्बर का काम मानने वालों को शुभसमाचार देना और इन्कार करने वालों को सावधान करना है, फिर हठधर्मों की हालत बयान की जा रही है कि वे अल्लाह की आयतों का मज़ाक उड़ाते हैं, वे किसी तरह भी ईमान नहीं लाएंगे मगर अल्लाह तुरन्त पकड़ नहीं करता, उनके लिए अज़ाब का जो समय निर्धारित है, उस समय वे उसका शिकार होंगे, फिर उनको डराने के लिए उदाहरण दिया जा रहा है कि उनके निकट ही कितनी बस्तियाँ हैं कि जब उन्होंने न माना तो उनको तबाह कर दिया गया, विशेष रूप से आद व समूद की बस्तियाँ जो शाम व यमन के रास्ते पर पड़ती थीं (2) ऊपर उल्लेख हुआ था कि अहंकारी काफ़िर ग़रीब मुसलमानों के साथ बैठना अपनी शान के विरुद्ध समझते थे, इसी पर दो लोगों की कहावत सुनाई, फिर दुनिया का उदाहरण और इब्लीस का घमण्ड से तबाह होने का बयान हुआ, अब हज़रत मूसा और ख़िज़्र की कहानी को बयान किया जा रहा है कि अल्लाह वाले अगर सबसे अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) भी हों तो कहते नहीं और कभी ग़लती से कह जाएं तो चेताया जाता है, कहानी आगे आ रही है।

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَاۤ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّىْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ ۡ وَ
مَاۤ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى
الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰۤى اٰثَارِهِمَا
قَصَصًا ﴿٦٤﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَاۤ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا
وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰۤى
اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ
مَعِىَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾
قَالَ سَتَجِدُنِىْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَاۤ اَعْصِىْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾
قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِىْ فَلَا تَسْـَٔلْنِىْ عَنْ شَىْءٍ حَتّٰۤى اُحْدِثَ
لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ فَانْطَلَقَا ٚ حَتّٰۤى اِذَا رَكِبَا فِى السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ؕ
قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾
قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ لَا
تُؤَاخِذْنِىْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِىْ مِنْ اَمْرِىْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾
فَانْطَلَقَا ٚ حَتّٰۤى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ
نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

منزل۴

वे बोले आपको ध्यान है जब हम चट्टान के निकट ठहरे थे तो मैं मछली भूल गया और शैतान ही है जिसने मुझे उसको भुला दिया और उसने तो नदी में आश्चर्यजनक रूप से अपनी राह ली (63) उन्होंने कहा वही तो वह जगह है जिसकी हमें तलाश थी, फिर वे दोनों अपने पद्चिन्हों को पहचानते हुए वापस लौटे (64) तो (वहाँ) उन्होंने हमारे (विशेष) बन्दों में से एक बन्दे को पाया जिसको हमने अपने पास से रहमत (कृपा) से सम्मानित किया था और अपने पास से विशेष ज्ञान सिखाया था (65) मूसा ने उनसे कहा कि क्या मैं आपके साथ इसलिए रह सकता हूँ कि जो भलाई आपको सिखाई गई है आप वह मुझे भी सिखा दें (66) वे बोले कि आप मेरे साथ बिल्कुल सब्र न कर सकेंगे (67) और आप उस चीज़ पर सब्र भी कैसे कर सकते हैं जो आपके ज्ञान परिधि में नहीं (68) (मूसा ने) कहा कि अगर अल्लाह ने चाहा तो आगे आप मुझे सब्र करने वाला ही पाएंगे और मैं आपकी किसी मामले में अवज्ञा (नाफ़रमानी) न करूंगा (69) उन्होंने कहा अगर आप मेरे साथ चलते हैं तो जब तक मैं खुद ही किसी बात का उल्लेख आरम्भ न कर दूँ आप मुझ से किसी चीज़ के बारे में न पूछें[1] (70) फिर वे दोनों चले यहाँ तक कि जब नाव में सवार हुए तो उन्होंने उस (के एक तख़्ते) को तोड़ दिया, (मूसा) बोले आपने इसलिए तोड़ा है कि नाव वालों को डुबो दें, आपने तो बड़ा ग़ज़ब कर डाला (71) उन्होंने कहा क्या मैंने आपसे कहा नहीं था कि आप मेरे साथ सब्र कर ही न सकेंगे (72) (मूसा ने) कहा मेरी भूल पर पकड़ न कीजिए और मेरे मामले में मुझे तंगी में न डालिए (73) फिर वे दोनों चले यहाँ तक कि जब एक लड़के से मिले तो उन्होंने उसको मार डाला (मूसा) बोल पड़े आपने एक निर्दोष जान को बिना किसी जान के मार डाला, निश्चित रूप से ही आपने बड़ा अनुचित कार्य किया (74)

(1) हदीस में है कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम अपनी क़ौम को नसीहतें कर रहे थे कि एक व्यक्ति ने प्रश्न किया कि ऐ मूसा! धरती पर आपसे बड़ा कोई आलिम (ज्ञानी) है?उन्होंने कहा नहीं, यह उत्तर इस एतेबार से सही था कि वे बड़े पैग़म्बरों में थे लेकिन अल्लाह को यह वाक्य पसंद न आए और वह्य आई कि जिस जगह दो नदियाँ मिलती हैं उसके पास हमारा एक बन्दा है जो तुम से अधिक ज्ञान रखता है, हज़रत मूसा ने प्रार्थना की कि मुझे उनका पता बता दिया जाए ताकि मैं वहाँ जा कर उनसे लाभ उठा सकूँ, आदेश हुआ कि उसकी खोज में निकलो तो तल कर एक मछली साथ ले लेना, जहाँ वह मछली खो जाये समझ लेना वहीं हमारा बन्दा मौजूद है, हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम नवजवान शिष्य व सेवक हज़रत यूशा को लेकर निकले जो खुद भी नबी और बाद में हज़रत मूसा के उत्तराधिकारी हुए, हज़रत मूसा ने मछली ज़ंबील (टोकरी) में साथ ली और यूशा से कहा कि इसका ध्यान रखना, चलते–चलते एक जगह आराम करने के लिए लेटे, हज़रत मूसा को नींद आ गई, हज़रत यूशा ने देखा कि मछली निकल कर सुरंग बनाती हुई समुद्र में चली गई, जब हज़रत मूसा जागे तो कहना भूल गए और आगे बढ़ गये, अब हज़रत मूसा को थकान और भूख का एहसास हुआ, जब सेवक से खाना मांगा तो उनको वह आश्चर्यजनक घटना याद आई, हज़रत मूसा ने कहा कि वही तो हमारा वांछित स्थान था, अब पैरों के चिन्ह देखते हुए वापस लौटे, वहाँ हज़रत ख़िज़्र से भेंट हुईं, जब हज़रत मूसा ने मुद्दा रखा तो उन्होंने कहा कि तुम्हारी ज्ञान परिधि अलग है और हमारी अलग, साथ रहना कठिन है, मूसा की जिद पर उन्होंने कहा ठीक है मगर मेरे बिना कहे तुम खुद कुछ न पूछना, अब यात्रा आरम्भ हुई।

उन्होंने कहा, क्या मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि तुम हरगिज़ मेरे साथ सब्र कर ही नहीं सकते (75) वे बोले इसके बाद अगर मैंने आप से कुछ पूछा तो आप मुझे साथ न रखिएगा, निश्चित रूप से मेरे बारे में आप उज़्र (असमर्थता) की हद तक पहुँच गये (76) फिर दोनों चले यहाँ तक कि एक बस्ती वालों के पास पहुँचे तो दोनों ने वहां वालों से खाने को मांगा तो उन लोगों ने उनकी मेहमानी करने से इन्कार कर दिया फिर उनको उस बस्ती में एक दीवार मिली जो गिरने ही वाली थी तो उन्होंने उसको ठीक कर दिया (मूसा) ने कहा, अगर आप चाहते तो इस पर कुछ मेहनताना तय कर लेते (77) उन्होंने कहा कि बस यह मेरे और आपके बीच अलगाव (का समय आ गया) है, अब मैं उन चीज़ों की हक़ीक़त आपको बता देता हूँ जिन पर आप सब्र न कर सके[1] (78) रही नाव तो वह कुछ गरीबों की थी जो समुद्र में काम करते थे तो मैंने चाहा कि उसको ऐबदार कर दूँ और उनके पीछे एक राजा था जो ज़बरदस्ती हर नाव ले लिया करता था (79) रहा लड़का तो उसके माँ–बाप ईमान वाले थे तो हमें डर हुआ कि वह उन दोनों को सरकशी और कुफ़्र करके तंग न कर दे (80) तो हमने चाहा कि उनका पालनहार उनको ऐसा बदल प्रदान करे जो पवित्रता में उससे बेहतर हो और सद्व्यवहार में उससे बढ़ कर हो (81) और रही दीवार तो वह शहर के दो अनाथ बच्चों की थी और उसके नीचे उनका ख़ज़ाना था और उनके पिता भले (इंसान) थे तो आपके पालनहार ने चाहा कि वे दोनों पक्की उम्र को पहुँच जाएं और अपना ख़ज़ाना निकाल सकें, यह केवल आपके पालनहार की कृपा से हुआ और मैंने अपनी राय से कुछ नहीं किया, यह है हक़ीक़त उन बातों की जिन पर आपसे सब्र न हो सका (82) और वे आपसे ज़ुलक़रनैन के बारे में पूछते हैं, आप कह दीजिए कि आगे मैं तुम्हारे सामने उनका कुछ हाल पढ़ कर सुनाता हूँ (83)

---

(1) यह तीन घटनाएं घटित हुईं, हज़रत ख़िज़्र प्राकृतिक मामलों पर नियुक्त थे और हज़रत मूसा तशरीई (शरीअत के) पैग़म्बर थे, सही बुख़ारी में है कि हज़रत ख़िज़्र ने हज़रत मूसा से कह दिया था कि अल्लाह तआला ने मुझे ऐसा ज्ञान दिया है जो आपके पास नहीं और आपको ऐसा ज्ञान दिया है जो मेरे पास नहीं, तीनों घटनाओं में हज़रत ख़िज़्र ने अल्लाह के दिये हुए अपने ज्ञान के अनुसार काम किया, हज़रत मूसा तशरीई पैग़म्बर थे, उन्होंने अल्लाह के दिये हुए अपने ज्ञान के अनुसार तुरन्त टोक दिया, अंत में बात यही ठहरी कि दोनों के रास्ते अलग–अलग हैं और निबाह कठिन है, फिर हज़रत ख़िज़्र ने तीनों घटनाओं की हक़ीक़त बयान कर दी, जिसका संबंध पूर्ण रूप से अल्लाह के तकवीनी (प्राकृतिक) व्यवस्था से था, जिसके लिए अल्लाह ने फरिश्ते नियुक्त कर दिये हैं, हज़रत ख़िज़्र भी उसी प्राकृतिक शक्ति पर अल्लाह की ओर से नियुक्त थे, बाहरी धार्मिक व्यवस्था (निजाम–ए–शरीअत) से उसका कोई संबंध नहीं था, दुनिया में सारे इन्सान अल्लाह के दिये हुए धर्म व्यवस्था के पाबंद हैं, प्राकृतिक व्यवस्था परोक्ष के परदे में है, उसका इन्सान पाबन्द नहीं है।

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِن كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ فَأَتْبَعَ
سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ
حَمِئَةٍ وَوَجَدَ عِندَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِمَّا أَن
تُعَذِّبَ وَإِمَّا أَن تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ أَمَّا مَن ظَلَمَ
فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾ وَأَمَّا مَنْ
آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءً الْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا
يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ
عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَل لَّهُم مِّن دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذَٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا
بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ
وَجَدَ مِن دُونِهِمَا قَوْمًا لَّا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوا يَا ذَا
الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ
نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَن تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ مَا
مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ
رَدْمًا ﴿٩٥﴾ آتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ
انفُخُوا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ آتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾

منزل٤

हम ने उनको ज़मीन में सत्ता दी थी और हर प्रकार के साधन उनको प्रदान किये थे (84) तो वे एक रास्ते पर चल दिये[1] (85) यहाँ तक कि वे जब सूरज के डूबने के स्थान पर पहुँचे तो उसे एक दलदल वाले स्रोत में डूबता हुआ महसूस किया और वहाँ उनको एक क़ौम मिली, हमने कहा कि ज़ुलक़रनैन! चाहे उन्हें दण्ड दो चाहे उनके साथ अच्छा व्यवहार करो[2] (86) उन्होंने कहा कि जिसने भी अत्याचार किया तो हम शीघ्र ही उसको दण्ड देंगे फिर वह अपने पालनहार के पास लौटाया जायेगा तो वह उसे कठोर दण्ड देगा (87) और जो कोई ईमान लाया और अच्छे काम किये तो उसके लिए बदले के रूप में भलाई है और हम भी अपने आदेश में उससे नरमी से बात करेंगे (88) फिर वे एक राह पर चल दिये (89) यहाँ तक कि जब सूरज निकलने के स्थान पर जा पहुँचे तो उन्होंने उसे एक ऐसी क़ौम पर निकलते देखा कि उनके और उसके बीच हमने कोई आड़ नहीं रखी थी[3] (90) यही हुआ और उनके पास जो कुछ था हमको उसकी पूरी ख़बर थी (91) फिर वे एक और राह पर हो लिए (92) यहाँ तक कि जब दो पहाड़ों के बीच पहुँचे तो दोनों के बीच में उन्होंने एक समुदाय पाया जो मानो कोई बात समझते ही न थे[4] (93) वे बोले ऐ ज़ुलक़रनैन! निश्चित रूप से याजूज व माजूज ने ज़मीन में उपद्रव मचा रखा है, तो क्या हम आपको कोई पूंजी दें कि आप हमारे और उनके बीच कोई रोक बना दें(94) उन्होंने कहा कि जो मुझे मेरे पालनहार ने शक्ति दे रखी है वह बहुत बेहतर है बस तुम मेहनत से मेरी मदद करो, मैं तुम्हारे और उनके बीच एक मज़बूत दीवार बना देता हूँ(95) तुम लोहे की चादरें मुझे लाकर दो यहाँ तक कि जब उन्होंने पहाड़ों की दोनों छोरों को मिला दिया तो उन्होंने कहा कि दहकाओ, फिर जब उसे अंगारा बना दिया तो कहा कि मुझे दो मैं उस पर पिघला हुआ तांबा उंडेल दूँ[5] (96)

---

(1) मुश्रिकों ने जो तीन प्रश्न किये थे उनमें एक यह भी था कि उस व्यक्ति का हाल बताएं जिसने दुनिया में पूरब से पश्चिम तक यात्रा की, यहाँ से उस राजा का उल्लेख है, उसका नाम ज़ुलक़रनैन क्यों पड़ा इस का कहीं विवरण नहीं मिलता, हाँ! शाह अब्दुल कादिर रहमतुल्लाहि अलैहि फरमाते हैं कि क्योंकि दुनिया को दोनों छोरों की उसने यात्रा की थी इसलिए उसको ज़ुलक़रनैन कहते हैं, नये शोधकर्ताओं का मत यह है कि यह ईरान का राजा सायरस था जिसने बनी इस्राईल को बाबुल के निर्वासन से निकाल कर दोबारा फ़िलिस्तीन में आबाद किया था, पवित्र क़ुरआन में उसकी तीन लम्बी यात्राओं का वर्णन है, एक अति पश्चिम में, एक अति पूर्व में और तीसरी यात्रा के सम्बन्ध में कहा जाता है कि अति उत्तर में हुई थी (2) यह काफ़िर लोग थे, अल्लाह ने अधिकार दिया कि चाहो तो सबको सज़ा दो और चाहो तो समझाओ–बुझाओ और अच्छा व्यवहार करो, ज़ुलक़रनैन ने दूसरा तरीक़ा अपनाया कि मैं समझाऊँगा फिर जो न मानेगा वह भुगतेगा और जो मानेगा मैं उसके साथ अच्छा व्यवहार करूँगा (3) लगता है कि वे जंगली लोग थे, छतों के बनाने का रिवाज उनमें नहीं था, धूप उन पर पड़ती थी, उससे बचने का कोई उपाय उनके पास नहीं था (4) यह ज़ुलक़रनैन की तीसरी यात्रा है, इसकी दिशा पवित्र क़ुर्आन ने निर्धारित नहीं की लेकिन अधिकतर तफ़सीर (व्याख्या) लिखने वालों का मत यही है कि यह अति उत्तरी क्षेत्र की यात्रा थी (5) दोनों पहाड़ों के बीच जो खुली जगह थी वहां लोहे की बड़ी–बड़ी चादरें रख कर ख़ूब गर्म कर दिया, फिर उस पर पिघला हुआ तांबा डाल दिया ताकि वह ख़ूब मज़बूत हो जाए।

فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ
هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ
وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ
فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ
عَرْضَا ﴿١٠٠﴾ الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا
لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾ اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا
عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾
قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ اُولٰۗىِٕكَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَاۗىِٕهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا
نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾ ذٰلِكَ جَزَاۗؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا
وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿١٠٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا
لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ
لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

منزل٤

बस वे (याजूज व माजूज[1]) न ही उस पर चढ़ सकते थे और न उसमें सेंध लगा सकते थे (97) (ज़ुलक़रनैन ने) कहा यह मेरे पालनहार की कृपा है फिर जब मेरे पालनहार का वादा आ पहुँचेगा तो वह उस को चूर चूर कर देगा और मेरे पालनहार का वादा सच्चा है (98) और उस दिन हम उनको इस हाल में छोड़ेंगे कि वे आपस में गुत्थम–गुत्था हो रहे होंगे और सूर फूँकी जाएगी तो हम उन सबको इकट्ठा कर लेंगे (99) और उस दिन दोज़ख़ को हम काफ़िरों के बिल्कुल सामने ले आएंगे (100) जिनकी आँखों पर हमारी नसीहत से पर्दा पड़ा हुआ था और वे सुनने की शक्ति नहीं रखते थे (101) क्या फिर भी काफ़िरों को यह ख़्याल है कि वे मुझे छोड़ कर मेरे बन्दों को काम बनाने वाला बना लेंगे, निश्चित ही हमने दोज़ख़ को काफ़िरों की मेहमानी के लिए तैयार कर रखा है (102) कह दीजिए कि क्या हम तुम्हें बताएं कि कामों में सबसे अधिक घाटा किसने उठाया (103) यह वे लोग हैं जिनके प्रयास दुनिया के जीवन में बेकार हो गए और वे समझते रहे कि वे बहुत अच्छा काम कर रहे हैं[2] (104) यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने पालनहार की निशानियों और उसकी मुलाक़ात का इनकार किया तो उनके सारे कर्म बेकार हो गये तो हम क़यामत के दिन उनको कुछ भी वज़न न देंगे (105) उनका दण्ड वही दोज़ख़ है इस कारण कि उन्होंने इनकार किया, और मेरी आयतों का और मेरे पैग़म्बरों का मज़ाक उड़ाया (106) (हाँ) निश्चित ही जिन्होंने माना और अच्छे काम किये उनकी मेहमानी के लिए फ़िरदौस की जन्नतें होंगी (107) हमेशा उसी में रहेंगे, उसे छोड़ कर कहीं जाना न चाहेंगे (108) आप कह दीजिए कि यदि समुद्र मेरे पालनहार की बातें लिखने के लिए रोशनाई (स्याही) बन जाए तो निश्चित रूप से समुद्र समाप्त हो जाएगा और मेरे पालनहार की बातें समाप्त न होंगी चाहे हम उस जैसा और (समुद्र) क्यों न उसकी मदद के लिए ले आएं[3] (109)

---

(1) याजूज–माजूज दो जंगली क़बीले थे जो उन पहाड़ों के पीछे रहते थे और थोड़े–थोड़े अंतराल पर आकर उस क्षेत्र में लूट–मार करते थे, उस क्षेत्र के लोग उनसे परेशान थे, लोगों के कहने पर ज़ुलक़रनैन ने बीच के दर्रे में लोहे की दीवार बना दी और क्योंकि वह मुवह्हिद (एकेश्वरवादी) राजा था इसलिए उसको अल्लाह की कृपा क़रार दिया और बता दिया कि हर चीज़ को समाप्त होना है, यह मज़बूत दीवार भी समाप्त हो जाएगी, फिर आगे अल्लाह तआला ने क़यामत का वर्णन किया है कि क़यामत से पहले याजूज–माजूज का ऐसा रेला निकलेगा कि वे मौज़ों की तरह ठाठें मारते हुए सामने आ जाएंगे फिर सूर फूँकी जाएगी और इंकार करने वालों को दोज़ख़ का सामना करना पड़ेगा (2) यहां यह बात साफ़ हो गई कि कैसा ही अच्छा काम हो लेकिन अगर ईमान न हो तो वह बर्बाद हो जाता है और क़यामत के दिन उसकी कोई हैसियत नहीं (3) अल्लाह की विशेषताएं, उसके गुण, उसकी शक्ति और युक्ति, तात्पर्य यह है कि उसका बयान अनंत है, समुद्रों को रौशनाई बनाकर भी वे लिखे जाएं तो समुद्र के समुद्र समाप्त हो जाएं लेकिन उसके गुण व विशेषताओं का बयान समाप्त नहीं हो सकता।

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ
يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿١١٠﴾

سُوْرَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٌ وَّتِسْعُوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿١﴾ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ﴿٢﴾ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ
نِدَآءً خَفِيًّا ﴿٣﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ
شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿٤﴾ وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ
وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ﴿٥﴾ يَّرِثُنِيْ
وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ﴿٦﴾ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ
بِغُلٰمِ ِۨ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ﴿٧﴾ قَالَ رَبِّ اَنّٰى
يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ
عِتِيًّا ﴿٨﴾ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ
مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ﴿٩﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ
اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ﴿١٠﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ
مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿١١﴾

منزل۴

कह दीजिए कि मैं तो तुम्हारे जैसा एक इन्सान हूँ[1] मेरे पास यह वह्य आती है कि तुम्हारा माबूद (उपास्य) केवल एक उपास्य है, तो जो अपने पालनहार से मुलाकात की आरजू रखता हो उसे चाहिए कि वह अच्छे ही काम करे और अपने पालनहार की बंदगी में किसी को भी साझी न ठहराए (110)

सूरह मरियम

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालू है।

कॉफ़. हा. या. ऐन. सॉद. (1) यह वर्णन है अपने बन्दे ज़करिया पर आपके पालनहार की कृपा का (2) जब उन्होंने अपने पालनहार को चुपके–चुपके पुकारा (3) बोले ऐ मेरे पालनहार! मेरी हड्डियाँ तक कमज़ोर हो गईं और सिर बुढ़ापे से पक गया और ऐ मेरे पालनहार! मैं तुम्हें पुकार कर कभी वंचित नहीं रहा (4) और मुझे अपने पीछे भाई बन्दों का डर है और मेरी पत्नी बाँझ है अपने पास से मुझे एक वारिस (उत्तराधिकारी) प्रदान कर दे (5) जो मेरा भी वारिस बने और याकूब की संतान का भी वारिस हो और ऐ मेरे पालनहार! उसे पसंदीदा (गुणों वाला) बना[2] (6) ऐ ज़करिया! हम तुम्हें एक बच्चे का शुभ समाचार सुनाते हैं जिस का नाम यहया है, इससे पहले हमने उसके नाम का नहीं बनाया (7) वे बोले ऐ मेरे पालनहार! मेरा बच्चा किस प्रकार होगा? जबकि मेरी पत्नी बांझ है और मैं भी बुढ़ापे की इस इंतेहा को पहुंच गया हूँ कि गूदा सूख़ चुका है (8) कहा, ऐसा ही होगा, तुम्हारे पालनहार ने कहा है कि यह तो मेरे लिए साधारण बात है और मैंने पहले तुम को भी तो पैदा किया जब कि तुम कुछ न थे (9) वे बोले ऐ मेरे पालनहार! मुझे कोई निशानी दे दीजिए, कहा तुम्हारी निशानी यह है कि तुम तीन रात लोगों से स्वस्थ होने के बावजूद बात न कर सकोगे (10) फिर वे मेहराब से अपनी क़ौम के पास आए तो इशारे से उनसे कहा कि सुबह व शाम तस्बीह (अल्लाह की पवित्रता का बयान करने) में लगे रहो[3] (11)

(1) यानी मैं खुद भी तुम्हारी तरह इंसान हूँ, मेरे ज्ञान का स्रोत अल्लाह से जुड़ा हुआ है, मैं खुदा नहीं कि खुद ब खुद सारे ज्ञान व कौशल प्राप्त कर लूं, मेरा काम तौहीद (एकेश्वरवाद) की ओर लोगों को बुलाना है, बस जो भी आख़िरत की सफलता चाहता हो वह अच्छी ज़िन्दगी अपनाए और हर प्रकार से शिर्क से बचे, इसमें विशेष रूप से इशारा है कि जिस प्रकार दूसरी कौमों ने अपने पैग़म्बरों को खुदाई में साझीदार समझ लिया और भटक गये कहीं ऐसा न हो कि तुम भी अपने पैग़म्बर को खुदाई का दर्जा दे बैठो और तुम भी दूसरी उम्मतों (समुदायों) की तरह गुमराह हो जाओ (2) हज़रत जकरिया अ़लैहिस्सलाम ने दुआ इसलिए की कि जो उनके संबंधी नातेदार मौजूद थे उन्होंने दूसरा रास्ता अपना लिया था और उनको चिन्ता थी कि मेरे बाद इस तौह़ीद की दावत का वारिस कौन होगा, विरासत का आशय उसी मिशन की विरासत (उत्तराधिकार) है जो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से होती हुई हज़रत याकूब तक फिर हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम तक पहुँची थी (3) अल्लाह पर विश्वास था, दुआ इसीलिए की लेकिन सांसारिक नियमानुसार उन्होंने चाहा कि गर्भ की कोई निशानी भी बता दी जाए, अल्लाह तआला ने निशानी यह रखी कि स्वस्थ होने के बावजूद वे लोगों से तीन दिन तक बात न कर सकेंगे।

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ﴿١٢﴾ وَّحَنَانًا
مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۗ وَكَانَ تَقِيًّا ﴿١٣﴾ وَّبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ
جَبَّارًا عَصِيًّا ﴿١٤﴾ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ
يُبْعَثُ حَيًّا ﴿١٥﴾ وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا
مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۗ فَاَرْسَلْنَآ
اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾ قَالَتْ اِنِّىْٓ اَعُوْذُ
بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ﴿١٨﴾ قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ
لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ﴿١٩﴾ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّلَمْ
يَمْسَسْنِىْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ
هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ
اَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿٢١﴾ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾
فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِىْ مِتُّ
قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ﴿٢٣﴾ فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ
اَلَّا تَحْزَنِىْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾ وَهُزِّىْٓ
اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾

وقف لازم — الربع

منزل ٤

ऐ यह्या! किताब को मज़बूती से थाम लो और हमने बचपन ही में उनको बुद्धिमानी प्रदान की[1] (12) और अपने पास से स्नेहपूर्ण प्रवृति और पवित्रता (दी) और वे परहेज़गार थे (13) और मां–बाप के आज्ञाकारी थे और सरकश नाफरमान न थे[2] (14) और उन पर सलाम है उस दिन जब वे पैदा हुए और उस दिन जब उनका निधन होगा और उस दिन जब वे ज़िन्दा उठाए जाएंगे (15) और किताब में मरियम का भी वर्णन कीजिए जब वे अपने घर वालों से अलग होकर पूर्वी दिशा की ओर एक स्थान पर चली गईं (16) फिर उन्होंने उनसे पर्दा कर लिया तो हमने उनके पास अपना फरिश्ता भेजा बस वह एक मुकम्मल इंसान के रूप में उनके सामने आ गया (17) वे बोलीं अगर तू डर रखता है तो मैं तुझसे रहमान की पनाह मांगती हूँ (18) उसने कहा कि मैं तो आपके पालनहार का भेजा हुआ हूँ ताकि आपको एक पवित्र बच्चा दूँ (19) वे बोलीं मुझे बच्चा कहां से होगा मुझे किसी इंसान ने छुआ तक नहीं और न मैं बदचलन हूँ (20) कहा, ऐसा ही होगा आपके पालनहार का कहना ये है कि वह मेरे लिए साधारण बात है और इसलिए ताकि हम उसको लोगों के लिए एक निशानी और अपने पास से एक रहमत (करूणा) बना दें और यह एक निर्धारित काम है(21) फिर जब उनका गर्भ ठहर गया तो वे उसे लेकर अलग दूर किसी स्थान पर चली गईं (22) फिर प्रसव–पीड़ा के कारण वे एक खजूर के तने के पास आ गईं, उनकी ज़बान से निकला काश कि मैं इससे पहले ही मर चुकी होती और भूली बिसरी हो चुकी होती(23) बस उनके नीचे ही से उसने आवाज़ दी कि दुखी न होइए आपके पालनहार ने आपके नीचे एक स्रोत बना दिया है(24) और पेड़ों की टहनी पकड़ कर अपनी ओर हिलाइये आपके पास ताज़ा खजूरें गिरेंगी[3] (25)

---

(1) किताब से तात्पर्य तौरेत और दूसरी आकाशीय पुस्तकें हैं, आदेश हुआ कि खुद कार्य करो और दूसरों से कराओ (2) हज़रत यह्या को आपके समकालीन यहूदियों ने बदनाम कर रखा था और अजीब–अजीब नैतिक ख़राबियां आपसे जोड़ देते थे जिनका कुछ वर्णन मौजूदा इंजीलों (बाइबिलों) में भी मौजूद है, यहूदियों की इन्हीं दुष्टताओं का पर्दाफाश करने के लिए कुरआन ने हज़रत यह्या के विशेष गुणों का वर्णन किया है (3) हज़रत आदम को बिना माँ–बाप के बनाया, हज़रत हव्वा को बिना मां के बनाया और हज़रत ईसा को निशानी के रूप में बिना बाप के पैदा किया, घटना इस प्रकार घटित हुई कि वे इबादत (उपासना) में एकाग्रता के लिए घरवालों से अलग होकर पूर्वी दिशा में चली गई थीं, हज़रत ज़करिया ने उनका भरणपोषण अपने ज़िम्मे ले लिया था, वहीं वे इबादत में लगी रहतीं और अल्लाह की ओर से उनको रोज़ी पहुँचती रहती, वहीं एक दिन हज़रत जिब्रईल अ़लैहिस्सलाम एक सुन्दर नवयुवक के रूप में सामने आ गये तो वे घबरा गईं और उनको अल्लाह से डराने लगीं तो उन्होंने बताया मैं एक बच्चे का शुभ समाचार सुनाने आया हूँ, फिर जब गर्भधारण हुआ तो वे दूर किसी स्थान पर चली गईं और जब दर्द बढ़ा तो एक खजूर के तने का सहारा लेने वहां आ बैठीं, उस समय दर्द की तकलीफ़, अकेलेपन व बेकसी और आगे की बदनामी के डर से एक दम बेचैन हो गईं और उनके मुँह से ये शब्द निकल गये कि काश मैं पहले ही मर चुकी होती और भूली बिसरी हो जाती, अल्लाह ने उनकी सुख सांतवना का प्रबंध किया, वह खजूर का पेड़ बुलंदी पर था, नीचे से फरिश्ते ने आवाज़ दी कि तुम्हारे नीचे स्रोत (चश्मा) जारी है और खजूर का पेड़ भी, उसको हिलाओ ताज़ा खजूरें तुम पर गिरेंगी, खाओ–पियो और दुखी न हो।

فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ
فَقُوْلِيْٓ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ﴿۲۶﴾
فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۭ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ﴿۲۷﴾
يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ﴿۲۸﴾
فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ۭ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿۲۹﴾
قَالَ اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ ۣ اٰتٰىنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا ﴿۳۰﴾ وَّجَعَلَنِيْ
مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۠ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ
حَيًّا ﴿۳۱﴾ وَّبَرًّۢا بِوَالِدَتِيْ ۡ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا شَقِيًّا ﴿۳۲﴾ وَالسَّلٰمُ
عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ﴿۳۳﴾ ذٰلِكَ
عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿۳۴﴾ مَا كَانَ
لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۭ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ
لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۳۵﴾ وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا
صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۳۶﴾ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ
لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۳۷﴾ اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ ۙ
يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۳۸﴾

منزل ۴

तो खाइये पीजिए और अपनी आँखें ठंडी कीजिए फिर अगर इन्सानों में कोई भी दिखाई पड़े तो कह दीजिए कि मैंने रहमान के लिए रोज़े की मन्नत मानी है तो आज मैं किसी इन्सान से बात न करूंगी[1] (26) फिर वे उन्हें लिए हुए क़ौम के सामने आईं, वे कहने लगे ऐ मरियम! तूने बड़ी ओछी हरकत की (27) ऐ हारून की बहन! न तेरा बाप बुरा आदमी था और न तेरी माँ दुष्चरित्र (बदकार) थी[2] (28) बस उन्होंने उस (बच्चे) की ओर इशारा किया उन्होंने कहा कि हम उस बच्चे से कैसे बात करें जो गोद में है (29) वे बोल पड़े कि बेशक मैं अल्लाह का बन्दा हूँ उसने मुझे किताब दी है और मुझे पैग़म्बर बनाया है (30) और मैं जहां भी रहूं मुझे पूरा का पूरा बरकत बनाया है और जब तक जीवित रहूं मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद की है (31) और अपनी मां के साथ सद्व्यवहार करने की (ताकीद की है) और उसने मुझे अकड़ने वाला बदबख़्त नहीं बनाया[3] (32) और सलाम है मुझ पर उस दिन जब मैं पैदा हुआ और उस दिन जब मैं मरूंगा और उस दिन जब मैं ज़िन्दा उठाया जाऊँगा (33) ये हैं मरियम के सुपुत्र ईसा उस सत्य बात के साथ जिसमें वे लोग झगड़ते हैं[4] (34) अल्लाह की शान को शोभा नहीं देता कि वह कोई लड़का बनाए, वह पवित्र है, जब वह किसी चीज़ का निर्णय करता है तो बस उससे कहता है कि हो जा! तो वह हो जाती है(35) और बेशक अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा पालनहार है तो उसी की बन्दगी करो, यही सीधा रास्ता है(36) फिर भी उनके विभिन्न गिरोहों ने अलग–अलग रास्ते अपना लिये तो जिन्होंने इन्कार किया उनके लिए बड़े दिन के देखने के समय बर्बादी है(37) जब वे हमारे पास आएंगे तो अच्छी तरह सुनते होंगे और अच्छी तरह देखते होंगे लेकिन आज अन्यायी लोग खुली गुमराही में हैं[5] (38)

(1) यानी इशारे से कह देना कि आज मेरा चुप का रोज़ा (मौन व्रत) है, यह पिछली क़ौमों में वैध (मशरूअ) था, इस अंतिम शरीयत (धर्मशास्त्र) में नहीं है (2) यह हारून कौन थे? सम्भव है हज़रत मरियम के कोई भाई हों जिनकी पाक दामनी मशहूर रही होगी या हो सकता है कि हज़रत मूसा के भाई हज़रत हारून से आशय हो जो अपनी परहेज़गारी और पवित्रता के लिए इस्राइलियों में मिसाल थे (3) हज़रत ईसा की इस पूरी बातचीत से एक ओर ईसाइयों के विश्वास कि हज़रत ईसा अल्लाह के बेटे हैं का खण्डन हो जाता है, उन्होंने कहा कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ और दूसरी ओर यहूदियों के आरोपों का खण्डन हो गया जो वे हज़रत मरियम पर लगा रहे थे, बच्चे का गोद में बात करना स्वाभाविक रूप से दुश्मनों को चुप कराने के लिए था (4) कोई ख़ुदा का बेटा बता रहा है तो कोई विभिन्न प्रकार के आरोप लगा रहा है, इन सबके विपरीत जो सही–सही बात थी वह बता दी गयी (5) दुनिया में जब सच्ची बात बताई जाती है तो लोग अंधे–बहरे बन जाते हैं और सच्ची बात सुनने को तैयार नहीं होते, कल क़यामत में क्या ख़ूब देखेंगे और सुनेंगे मगर वह दृश्य कुछ और होगा जिससे कलेजे फट जाएंगे और चेहरे काले हो जाएंगे, आज कल का देखना–सुनना सोच–विचार करना और सच्ची बात तक पहुँचना बचाव का साधन है लेकिन हश्र का दिन हिसाब का दिन है, अमल का नहीं ,उस दिन कहेंगे भी कि दुबारा हमें दुनिया में भेज दिया जाये हम अच्छे काम करके आयेंगे तो फटकार दिया जाएगा कि इसका समय गुज़र गया।

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَاِلَيْنَا
يُرْجَعُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا
نَّبِيًّا ﴿٤١﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَ
لَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْـًٔا ﴿٤٢﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ قَدْ جَآءَنِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ
يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْۤ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾ يٰۤاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ
اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ
يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾ قَالَ اَرَاغِبٌ
اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ﴿٤٦﴾
قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ﴿٤٧﴾ وَ
اَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ عَسٰۤى اَلَّا
اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّيْ شَقِيًّا ﴿٤٨﴾ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾
وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰۤى اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾

منزل۴

और उनको पछतावे के दिन से डराइये जब काम पूरा हो चुकेगा और वे हैं कि गफ़लत में पड़े हैं और वे मानते ही नहीं (39) निश्चित ही ज़मीन और उसमें जो भी है उसके वारिस हम ही रह जाएंगे और हमारी ही ओर सबको लौटाया जाएगा (40) और इस किताब में इब्राहीम का भी वर्णन कीजिए बेशक वे सत्यवान थे, पैग़म्बर थे[1] (41) जब उन्होंने अपने पिता से कहा ऐ मेरे पिताश्री! आप ऐसी चीज़ों को क्यों पूजते हैं जो न सुनें और न देखें और न आपके कुछ काम आ सकें (42) मेरे पिता! मुझे वह ज्ञान मिला है जो आपको नहीं मिला आप मेरे साथ हो जाएं, आपको मैं सीधे रास्ते पर ले चलूंगा (43) पिता जी! शैतान के आगे न झुक जाइए बेशक शैतान रहमान का नाफ़रमान है (44) ऐ मेरे पिता! मुझे डर लगता है कि रहमान की ओर से आप अज़ाब का शिकार न हो जाएं तो आप शैतान के मित्र होकर रह जाएं(45) वे बोले ऐ इब्राहीम! क्या तू मेरे खुदाओं से बेज़ार (विमुख) है, अगर तू बाज़ न आया तो पत्थर मार मार कर तुझे मार डालूंगा और तू मुझसे एक अवधि के लिए दूर हो जा(46) उन्होंने कहा कि आपको सलाम हो, मैं जल्द ही आपके लिए अपने पालनहार से माफ़ी मागूंगा बेशक वह मुझ पर बड़ा मेहरबान है[2] (47) और मैं आप लोगों से भी अलग होता हूँ और अल्लाह के अलावा आप लोग जिस को पुकारते हैं उनसे भी और अपने पालनहार से प्रार्थना करता हूँ, उम्मीद है कि मैं अपने पालनहार को पुकार कर वंचित न रहूंगा(48) फिर जब वे उनको और उनके उपास्यों को छोड़ कर अलग हो गए तो हमने उनको इस्हाक़ और याक़ूब प्रदान किये और सबको हमने पैग़म्बर बनाया [3] (49) और अपनी रहमत (दया) से उनको सम्मानित किया और उनकी सच्चाई का बोलबाला किया(50) और इस किताब में मूसा का भी वर्णन कीजिए बेशक वे चुने हुए थे और रसूल थे नबी थे(51)

(1) सिद्दीक़ का अर्थ है बहुत अधिक सच कहने वाला जो अपनी बात को अमल से सच कर दिखाए और जिसके दिल में सच्चाई को स्वीकार करने की श्रेष्ठ योग्यता मौजूद हो, जो बात खुदा की ओर से पहुंचे वह बिना झिझक उसके दिल में उतर जाए, शक संदेह की गुंजाइश ही न रहे (2) सूरः तौबा में अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम के इस वादे का संदर्भ दिया है, वहां ये साफ़ है कि जब उनको पता चल गया कि यह ईमान लाने वाले नहीं हैं तो वे उनके लिए दुआ (प्रार्थना) करने से रुक गये (3) अर्थात अल्लाह के रास्ते में हिजरत की और अपनों से दूर हुए तो अल्लाह ने प्रेम व स्नेह के लिए उनसे बेहतर अपने दिये, यहां हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम का उल्लेख शायद इसलिए नहीं है कि वे बचपन ही में अलग कर दिये गए थे, उनका स्थायी रूप से वर्णन आगे आएगा।

وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿۵۲﴾ وَ
وَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿۵۳﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ
اِسْمٰعِيْلَ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿۵۴﴾ وَ
كَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿۵۵﴾
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿۵۶﴾ وَّرَفَعْنٰهُ
مَكَانًا عَلِيًّا ﴿۵۷﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ
مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ
وَاِسْرَآءِيْلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ
الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ﴿۵۸﴾ فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ
اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿۵۹﴾
اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ
الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْئًا ﴿۶۰﴾ جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِيْ وَعَدَ
الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿۶۱﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ
فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿۶۲﴾
تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿۶۳﴾

السجدة

منزل۴

और हमने उनको तूर की दाईं ओर से आवाज़ दी और करीब से बात करके उनको निकटता प्रदान की (52) और अपनी रहमत से उनके भाई हारून को नबी बनाकर उन्हें प्रदान किया (53) और इस किताब में इस्माईल का भी वर्णन कीजिए बेशक वे वादे के सच्चे थे और रसूल थे नबी थे[1] (54) और वे अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का आदेश दिया करते थे और अपने पालनहार के पसंदीदा थे (55) और इस किताब में इदरीस का भी वर्णन कीजिए बेशक वे सच्चाई की मूर्ति (अत्यन्त सत्यवान) थे, नबी थे (56) और हमने उनको बुलंद मकाम तक पहुंचाया था[2] (57) यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह का इनआम हुआ, नबियों में से आदम की संतान में और (उनकी संतान में) जिनको हमने नूह के साथ सवार किया और इब्राहीम और इस्राईल (याकूब) की संतान में से और उनमें से जिनको हमने सत्य मार्ग दिखाया (हिदायत दी) और उनको चुन लिया, जब रहमान की आयतें उनको सुनाई जाती हैं तो सज्दों में रोते हुए गिर जाते हैं[3] (58) फिर उनके बाद उनके कुपुत्र उत्तराधिकारी हुए जिन्होंने नमाज़ें बर्बाद कीं और वे इच्छाओं के पीछे लग गए तो आगे वे कजी (कुटिलता) में पड़ जाएंगे[4] (59) हाँ! जिन्होंने तौबा की और ईमान लाए और अच्छे काम किये तो ऐसे लोग जन्नत में प्रवेश करेंगे और उनके साथ ज़रा भी अन्याय न होगा (60) ऐसी हमेशा रहने वाली जन्नतें जिनका रहमान ने अपने बंदों से बिना देखे वादा कर रखा है और वह तो ऐसा ही है कि उसके वादे पर पहुँचना निश्चित है (61) उसमें सच्चाई के सिवा कोई और व्यर्थ बात न सुनेंगे और वहां सुबह व शाम उनकी रोज़ी उनके लिए (पेश) होगी (62) यह वह जन्नत है जिसका वारिस हम अपने बंदों में उसको बनाएंगे जो परहेज़गार होगा[5] (63)

(1) सबसे बढ़ कर वादे का सच्चा होना उनका उस समय स्पष्ट हुआ जब हज़रत इब्राहीम ने उनको ज़बह करने के लिए लिटाया तो उन्होंने सब्र का जो वादा किया था वह पूरा कर दिखाया और उफ़ तक न की, यही इस्माईल अ़लैहिस्सलाम हमारे नबी अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पितामह हैं (2) हर पैग़म्बर उच्च कोटि और बुलंद मकाम पर ही होता है लेकिन अपने युग में उनको विशेष स्थान प्राप्त था (3) बड़ा कमाल यही है कि बन्दगी में पूर्णता प्राप्त हो जो अल्लाह के विशेष बन्दों की रीति रही है (4) इस आयत में नमाज़ छोड़ने वालों के लिए धमकी है कि यह बुरी आदत गुमराही तक पहुँचा देती है (5) हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम आरम्भ में जन्नत ही में रहे, अब दोबारा उनकी संतान में परहेज़गार लोग वहां प्रवेश करेंगे मानो वह आदम अ़लैहिस्सलाम की विरासत थी जो उनको मिली, फिर यह स्वामित्व का सबसे मज़बूत रूप है जिसमें कोई दूसरा अपनी ओर से परिवर्तन नहीं कर सकता।

وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا
وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾ رَبُّ السَّمَٰوَٰتِ وَ
الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ هَلْ تَعْلَمُ
لَهُ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾ وَيَقُولُ الْإِنسَانُ أَإِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾
أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَٰهُ مِن قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ﴿٦٧﴾
فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَٰطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ
جِثِيًّا ﴿٦٨﴾ ثُمَّ لَنَنزِعَنَّ مِن كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَٰنِ
عِتِيًّا ﴿٦٩﴾ ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾ وَإِن
مِّنكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّي
الَّذِينَ اتَّقَوا وَّنَذَرُ الظَّٰلِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ
ءَايَٰتُنَا بَيِّنَٰتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ ءَامَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ
خَيْرٌ مَّقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ
أَحْسَنُ أَثَٰثًا وَرِءْيًا ﴿٧٤﴾ قُلْ مَن كَانَ فِي الضَّلَٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ
الرَّحْمَٰنُ مَدًّا حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا
السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضْعَفُ جُندًا ﴿٧٥﴾

ع ٤

منزل ٤

और (जिबरईल ने कहा कि) हम तो आपके पालनहार के आदेश से ही उतरते हैं, हमारे आगे–पीछे और दोनों के बीच जो कुछ है सब उसी का है और आपका पालनहार भूलने वाला नहीं है[1] (64) वह आसमानों और ज़मीन का और दोनों के बीच जो भी है उन सब का पालनहार है तो आप उसी की इबादत करें और उसी की इबादत में लगे रहें, क्या उस नाम का और भी कोई है जिससे आप अवगत हैं (65) और इनसान कहता है जब मैं मर जाऊँगा क्या फिर जीवित करके उठाया जाऊँगा (66) क्या इंसान को याद नहीं रहा कि पहले भी हमने ही उसको पैदा किया और वह कुछ भी न था[2] (67) तो आपके पालनहार की क़सम हम उन सबको और शैतानों को इकट्ठा करके रहेंगे फिर दोज़ख के आसपास घुटनों के बल उनको हाज़िर करके रहेंगे (68) फिर हर गिरोह में से खींच कर उनको लाएंगे जो रहमान पर सबसे अधिक सरकश (उदण्ड) थे (69) फिर हम उन लोगों को खूब जानते हैं जो उसमें झोंके जाने के अधिक पात्र हैं (70) और तुममें से हर एक को उस पर से होकर गुज़रना है, आपके पालनहार का यह निश्चित निर्णय है[3] (71) फिर हम उन लोगों को नजात दे देंगे जिन्होंने ईशभय (तक़्वा) अपनाया और अत्याचारियों को उसी में घुटनों के बल छोड़ देंगे (72) और जब उनके सामने हमारी आयतें साफ़–साफ़ सुनाई जाती हैं तो काफ़िर ईमान वालों से कहते हैं कि दोनों पक्षों में से किसका मक़ाम बेहतर है और किसकी सभाएं अच्छी हैं (73) और हमने उनसे पहले भी कितनी कौमें हलाक कर दीं जो सामान और दिखलावे में अधिक बेहतर थीं (74) कह दीजिए कि जो गुमराही में है रहमान उसको और ढील देता जाता है यहां तक कि जब वे उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वादा है या अज़ाब या क़यामत फिर खूब मालूम हो जाएगा कि सबसे बुरा स्थान किसका था और सेना किसकी अधिक कमज़ोर थी[4] (75)

---

(1) एक बार हज़रत जिबरईल कई दिन तक न आये, आप पर इसका प्रभाव पड़ा, काफ़िरों ने भी मज़ाक उड़ाना शुरु कर दिया, अतः जब हज़रत जिबरईल आए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इतने दिन न आने का कारण पूछा और कहा कि आप बार–बार आयें तो बेहतर है, इस पर अल्लाह तआला ने हज़रत जिबरईल को यह उत्तर बताया कि हमारा उतरना अल्लाह के आदेश से ही होता है, वही आसमान व धरती और उनके बीच की हर चीज़ का मालिक है और सारी मसलेहतों (हितों) को जानता है, देर होती है तो किसी मसलेहत (आवश्यकता) से, हर चीज़ उसके सामने है वह किसी चीज़ को भूलने वाला नहीं है, आप केवल उसी की इबादत में लगे रहें, और क्या है कोई जो उस जैसे गुण वाला हो और उसके नाम, उसके गुणों में, और जब कोई नहीं तो इबादत के योग्य कौन हो सकता है (2) जब अनास्तित्व से वजूद प्रदान किया तो समाप्त करके दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है (3) इससे आशय पुल सिरात है जो दोज़ख़ पर बना हुआ है, हर एक को उस पर से गुज़रना है, भले लोग ऐसे गुज़र जाएंगे कि उनको कोई तकलीफ़ न होगी और काफ़िर और बुरे कार्य करने वाले लोग उसमें गिरा दिये जाएंगे, फिर जिनके दिलों में ईमान होगा वे एक अवधि के बाद निकाल लिए जाएंगे और काफिर व मुश्रिक हमेशा उसी में पड़े रहेंगे (4) अर्थात वे काफ़िर व मुश्रिक दुनिया की बाहरी शोभा व साज–सज्जा का हवाला देते हैं लेकिन यह नहीं देखते कि कैसे–कैसे आन–बान वाले मिट गये, यह अल्लाह की ओर से ढील होती है अंततः या तो वह दुनिया ही में पकड़ कर लेता है या फिर आख़िरत का अज़ाब निश्चित है, उस समय सारी हक़ीक़त खुल जाएगी।

وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ۭ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ
خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿۷۶﴾ اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ
بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿۷۷﴾ اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ
عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿۷۸﴾ كَلَّا ۭ سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ مِنَ
الْعَذَابِ مَدًّا ﴿۷۹﴾ وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ﴿۸۰﴾ وَاتَّخَذُوْا
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ﴿۸۱﴾ كَلَّا ۭ سَيَكْفُرُوْنَ
بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿۸۲﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّآ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ
عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿۸۳﴾ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿۸۴﴾
يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿۸۵﴾ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ
اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿۸۶﴾ لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ
الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿۸۷﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿۸۸﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـــًٔا
اِدًّا ﴿۸۹﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ
هَدًّا ﴿۹۰﴾ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿۹۱﴾ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿۹۲﴾
اِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّآ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿۹۳﴾ لَقَدْ
اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿۹۴﴾ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿۹۵﴾

ع ۷

وقف لازم

منزل ۴

और जो हिदायत (संमार्ग) पर आए अल्लाह उनकी हिदायत को और बढ़ाता जाता है और अच्छे बाक़ी रहने वाले काम आपके पालनहार के नज़दीक सवाब (पुण्य) की दृष्टि से भी बेहतर हैं और नतीजे के एतबार से भी बेहतर हैं (76) भला आपने उसको भी देखा जिसने हमारी निशानियों का इन्कार किया और बोला कि मुझे तो धन व संतान मिलकर रहेंगे[1] (77) वह ग़ैब (परोक्ष) झाँक कर देख आया है या रहमान से वचन ले रखा है (78) हरगिज़ नहीं, जो बक रहा है अभी हम उसको लिख लेते हैं और उसके लिए अज़ाब (दण्ड) को बढ़ाते ही जाएंगे (79) और वह जो कह रहा है वह हमारे ही पास पहुँचेगा और हमारे पास वह अकेला आएगा (80) और अल्लाह को छोड़ कर उन्होंने माबूद (उपास्य) बना रखे हैं ताकि वे उनकी मदद करें (81) हरगिज़ नहीं जल्द ही वे खुद उनकी उपासना का इन्कार कर देंगे और उल्टे उनके विरोधी हो जाएंगे[2] (82) क्या आपने नहीं देखा कि हमने काफ़िरों पर शैतान छोड़ रखे हैं जो उन्हें बराबर उकसाते रहते हैं (83) तो आप उनके विरुद्ध जल्दी न करें हम उनके लिए (उनकी हरकतें) गिन रहे हैं (84) जिस दिन हम परहेज़गारों को मेहमान बना कर रहमान के पास इकट्ठा करेंगे (85) और अपराधियों को हांक कर प्यासा दोज़ख़ की ओर ले जाएंगे[3] (86) सिफ़ारिश उनके बस में न होगी सिवाय उसके जिसने रहमान की अनुमति ली हो (87) और वे कहते हैं रहमान ने बेटा बना लिया (88) बेशक तुम बड़ी गंभीर बात ले कर आए हो (89) क़रीब है कि आकाश इस से फट पड़ें और धरती तबाह हो जाए और पहाड़ टूट कर गिर पड़े (90) कि उन्होंने रहमान के लिए संतान होने का दावा किया है (91) और रहमान की शान के अनुकूल नहीं कि वह संतान बनाए (92) आसमानों और धरती में जो भी है वह रहमान के पास बन्दा बन कर ही आएगा[4] (93) बेशक उसने सबको गिन रखा है और अच्छी तरह गिन लिया है (94) और सबके सब उसकी सेवा में क़यामत के दिन अकेले हाज़िर होंगे (95)

---

(1) बुख़ारी शरीफ़ में एक घटना है कि हज़रत ख़ब्बाब ने मक्के के एक सरदार आस बिन वायल के यहाँ मज़दूरी की थी, कुछ पैसे बाक़ी थे, वह लेने गये तो उसने कहा कि ईमान छोड़ दो तो दूँगा, उन्होंने कहा कि तुम मर कर दोबारा ज़िन्दा हो जाओ तब भी मैं ईमान न छोड़ूँगा, इस पर वह बोला कि मैं मर कर दोबारा ज़िन्दा हूँगा तो वहां भी मेरे पास बहुत सा धन और संतान होगी वहीं दे दूँगा, उस पर यह आयत उतरी (2) शैतान तो खुले रूप में अपने अलग होने को ज़ाहिर कर देंगे और हो सकता है कि अल्लाह उन देवी–देवताओं को भी ज़बान दे दे और वे भी अलग होने को ज़ाहिर कर दें जिनको वे दुनिया में पूजा करते थे (3) जिस तरह प्यासे पशु घाट पर ले जाए जाते हैं उसी तरह अपराधियों को दोज़ख़ में प्यासा उतारा जाएगा और कोई सिफ़ारिश करने वाला न होगा, हाँ! पैग़म्बर व भले लोग जिनको अनुमति होगी वही सिफ़ारिश कर सकेंगे मगर वह भी काफ़िरों के लिए न होगी (4) ईसाई अल्लाह की दया विशेषता को न समझ सके और उन्होंने यह अक़ीदा (विश्वास) अपना लिया कि अल्लाह ने सबको बख़्शने के लिए मआज़ अल्लाह! हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को बेटा बना कर सूली चढ़वाया और तीन दिन के लिए दोज़ख़ में भेज दिया, मसीही धर्म के इस सारे बुनियादी फलसफे के खण्डन के लिए एक शब्द रहमान काफ़ी है यानी वह पूरे तौर पर रहम करने में समर्थ है, उसको किसी बदला या प्रायश्चित की ज़रूरत नहीं।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَٰنُ
وُدًّا ﴿٩٦﴾ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنذِرَ
بِهِ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هَلْ تُحِسُّ
مِنْهُم مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾

سُورَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

طه ﴿١﴾ مَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَىٰ ﴿٢﴾ إِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَن
يَخْشَىٰ ﴿٣﴾ تَنزِيلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمَاوَاتِ الْعُلَى ﴿٤﴾
الرَّحْمَٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَىٰ ﴿٥﴾ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَىٰ ﴿٦﴾ وَإِن تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ
فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ﴿٧﴾ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَاءُ
الْحُسْنَىٰ ﴿٨﴾ وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَىٰ ﴿٩﴾ إِذْ رَأَىٰ نَارًا فَقَالَ
لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّي آتِيكُم مِّنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ
أَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ﴿١٠﴾ فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يَا مُوسَىٰ ﴿١١﴾ إِنِّي أَنَا
رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٢﴾

منزل٤

बेशक जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये रहमान उनके लिए प्रेम पैदा कर देगा[1] (96) तो हमने आपकी ज़बानी इसको आसान इसलिए कर दिया ताकि आप इसके द्वारा परहेज़गारों को शुभ समाचार सुना दें और झगड़ालू क़ौम को सावधान कर दें (97) और उनसे पहले हमने कितनी कौमों को हलाक कर दिया, क्या किसी की आहट आप महसूस करते हैं या उनमें किसी की भनक आप सुनते हैं[2] (98)

सूरह ताॅ. हा.

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

ताॅ. हा.[3] (1) कुरआन हमने आप पर इसलिए नहीं उतारा कि आप कष्ट में पड़ें (2) हाँ! यह डर रखने वालों के लिए नसीहत के रूप में (उतारा) है (3) उसका उतारा हुआ है जिसने ज़मीन और बुलंद आसमान पैदा किए (4) रहमान अर्श पर विराजमान हुआ (5) सब उसी का है जो आसमानों में है और ज़मीन में है और दोनों के बीच है और जो कुछ ज़मीन के नीचे है (6) और अगर आप बुलन्द आवाज़ से कहें तो वह तो चुपके से कही हुई बात से और बहुत ही गुप्त बात से भी अवगत है (7) (वही) अल्लाह है जिसके अलावा कोई माबूद (उपास्य) नहीं, अच्छे-अच्छे नाम उसी के हैं (8) और क्या आपको मूसा का वाक़ेया पहुँचा?[4] (9) जब उन्होंने आग देखी तो अपने घर वालों से कहा कि ज़रा ठहरो मुझे आग महसूस हो रही है शायद उसमें से तुम्हारे पास कुछ अंगारे ले आऊँ या आग के पास मुझे किसी रास्ते का पता मिल जाए(10) फिर जब वे वहाँ पहुँचे तो आवाज़ आई ऐ मूसा!(11) मैं ही तुम्हारा पालनहार हूँ, तो तुम अपने जूते उतार दो तुम पवित्र घाटी तुवा में हो(12)

(1) यानी उनसे प्रेम करेगा और सृष्टि (मख़लूक़) के दिल में उनका प्रेम पैदा करेगा, हदीस में आता है कि अल्लाह जब किसी बन्दे से प्रेम करते हैं तो जिबरईल से कहते हैं कि मैं फुलां बन्दे से प्रेम करता हूँ तुम भी करो, वे आसमानों में इसका ऐलान करते हैं फिर ज़मीन में उसका प्रेम उतार दिया जाता है परन्तु उसकी शुरुआत खुदापरस्तों (ईश भक्तों) से होती है वरना आरम्भ में केवल जनता में लोकप्रियता प्राप्त होना और बाद में कुछ अल्लाह के नेक बन्दों का किसी भ्रान्ति से उसकी ओर झुकाव अल्लाह के दरबार में स्वीकार होने का प्रमाण नहीं (2) यानी किसी की ज़िद और झगड़े से दुखी होने की ज़रूरत नहीं, कितने ऐसे लोग समाप्त हो गये आज कोई उनका नाम लेवा नहीं (3) इसको आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नामों में भी गिना गया है और कुछ मुफस्सिरों (टीकाकारों) ने इसको हुरुफ़-ए-मुक़त्तआत में शामिल किया है, आगे आपको तसल्ली दी जा रही है कि किसी के न मानने और ज़िद करने से आप दुखी न हों और न आपको इतनी तकलीफ़ उठाने की आवश्यकता है कि रात-रात भर जाग कर इबादत (उपासना) में व्यस्त रहें, अतः इसके उतरने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रात के आरम्भिक भाग में सोने और अंतिम भाग में इबादत करने का मामूल (नियम) बना लिया (4) यहाँ से हज़रत मूसा की मदयन से वापसी का विवरण और आगे की घटनाओं का वर्णन है, मदयन में ठहरने की अवधि में हज़रत शुऐब की सुपुत्री से उनका विवाह हुआ, कई वर्ष रह कर वे पत्नी को लेकर मिस्र वापस जा रहे थे, सैना नामक मरुस्थल में रास्ता भूल गये, जाड़ा बहुत पड़ रहा था, परेशान हो गये, इसी परेशानी में दूर आग दिखाई पड़ी, वहाँ पहुँचे तो आश्चर्यजनक दृश्य देखा, आग पेड़ में थी और पेड़ हरा भरा था, आग जितनी भड़कती थी पेड़ और लहलहाता था, इसी बीच आवाज़ आई जो उन्होंने सुनी, तूर पहाड़ के दामन में जो घाटी है उसका नाम तुवा, है अल्लाह ने उसको पवित्रता प्रदान की, इसीलिए उनको जूते उतारने का आदेश हुआ।

وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ﴿١٣﴾ اِنَّنِیْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ
اَنَا فَاعْبُدْنِیْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِیْ ﴿١٤﴾ اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ
اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعٰى ﴿١٥﴾ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا
مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ﴿١٦﴾ وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ﴿١٧﴾
قَالَ هِیَ عَصَایَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِیْ وَلِیَ فِيْهَا
مَاٰرِبُ اُخْرٰى ﴿١٨﴾ قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ﴿١٩﴾ فَاَلْقٰىهَا فَاِذَا هِیَ حَيَّةٌ
تَسْعٰى ﴿٢٠﴾ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ٚ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى ﴿٢١﴾
وَاضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً
اُخْرٰى ﴿٢٢﴾ لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ﴿٢٣﴾ اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ
طَغٰى ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِیْ صَدْرِیْ ﴿٢٥﴾ وَيَسِّرْ لِیْٓ اَمْرِیْ ﴿٢٦﴾ وَاحْلُلْ
عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِیْ ﴿٢٧﴾ يَفْقَهُوْا قَوْلِیْ ﴿٢٨﴾ وَاجْعَلْ لِّیْ وَزِيْرًا مِّنْ
اَهْلِیْ ﴿٢٩﴾ هٰرُوْنَ اَخِی ﴿٣٠﴾ اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِیْ ﴿٣١﴾ وَاَشْرِكْهُ فِیْٓ اَمْرِیْ ﴿٣٢﴾
كَیْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٤﴾ اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا
بَصِيْرًا ﴿٣٥﴾ قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ﴿٣٦﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا
عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ﴿٣٧﴾ اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ مَا يُوْحٰٓى ﴿٣٨﴾

ع ١٢

منزل ۴

और मैंने तुम्हें चुन लिया है[1] तो जो वह्य तुम्हें की जा रही है उसे ध्यान से सुनो (13) बेशक मैं ही अल्लाह हूँ मेरे अलाव कोई माबूद (उपास्य) नहीं तो मेरी बन्दगी (उपासना) करो और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम करो (14) बेशक क़यामत आ कर रहेगी, क़रीब था कि मैं उसको छिपा ही जाता[2] ताकि हर व्यक्ति को उसकी मेहनत का बदला मिल जाए (15) तो जो उसको मानता न हो और वह अपने इच्छा के पीछे लगा हो वह तुम्हें हरगिज़ इससे रोक न दे कि तुम भी विनाश में जा पड़ो (16) और ऐ मूसा! तुम्हारे दाएं हाथ में क्या है (17) वे बोले यह मेरी छड़ी है इस पर मैं टेक लगाता हूँ और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ और भी इसमें मेरे दूसरे काम हैं (18) कहा ऐ मूसा इसको डाल तो दो (19) बस उन्होंने डाल दिया तो वह दौड़ता हुआ साँप बन गई (20) कहा इसको उठा लो और डरो नहीं हम अभी इसको पहली हालत पर लौटा देंगे (21) और अपना हाथ बग़ल में समेटो तो वह बिना रोग के[3] रौशन होकर निकल आएगा, (ये) दूसरे चिन्ह के रूप में है (22) ताकि हम तुम्हें अपनी बड़ी निशानियाँ दिखा दें (23) फ़िरऔन के पास जाओ वह बड़ा सरकश (उदण्ड) हो गया है (24) वे बोले ऐ मेरे पालनहार! मेरे सीने को मेरे लिए खोल दे (25) और मेरा काम मेरे लिए आसान कर दे (26) और मेरी ज़बान के गिरह को भी खोल दे[4] (27) ताकि वे मेरी बात समझ सकें (28) और मेरे घर का एक मददगार मेरे लिए नियुक्त कर दीजिए (29) हारून को जो मेरा भाई है (30) उससे मेरी शक्ति बढ़ा दीजिए (31) और उसे मेरे काम में साझी बना दीजिए (32) ताकि हम ख़ूब तेरी तस्बीह करें (33) और ख़ूब तुझे याद करें[5] (34) बेशक तू ही हम पर नज़र रखने वाला है (35) कहा मूसा! तूने जो मांगा वह तुम्हें दिया गया (36) और हमने एक और अवसर पर भी तुम पर एहसान किया था (37) जब हमने तुम्हारी माँ को इल्हाम के द्वारा वह बात बताई थी जो अब वह्य के द्वारा (तुम को) बताई जा रही है[6] (38)

(1) यानी पैग़म्बरी के लिए (2) यानी उसके आने का समय गुप्त रखना चाहता हूँ और अगर ज़रूरत न होती तो सिरे से इसका वर्णन ही न किया जाता और संक्षेप में ज़ाहिर करने की सबसे बड़ी ज़रूरत यह थी कि सब उसकी चिंता और तैयारी में लग जाएं, अगर सिरे से उसका उल्लेख ही न किया जाता तो उसकी चिंता ही कौन करता, आगे हज़रत मूसा को यह हिदायत की जा रही है कि कोई तुम्हें उसकी तैयारी से गफ़लत में डाल दे, ऐसे लोगों से दूर रहना ही बेहतर है, जब मूसा को यह आदेश हुआ तो और कोई किस गिनती में है?(3) तात्पर्य यह है कि हाथ की सफ़ेदी किसी रोग के रूप में न थी, कुरआन को इसका स्पष्टीकरण इसलिए करना पड़ा कि तौरत वालों ने घटना के असल रूप को बिगाड़ कर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को सफ़ेद दाग़ का रोगी बताया है, इसके शब्दों में "जब उसने उसे (यानी हाथ को) निकाल कर देखा तो उसका हाथ कोढ़ से बर्फ़ की तरह सफ़ेद था" (ख़ुरूज–6) किताब–ए–मुक़द्दस पृष्ठ 57 मुद्रित लाहौर (4) कहते हैं कि बचपन में उनकी ज़बान जल गई थी इसलिए उसमें कुछ हकलाहट पैदा हो गई थी (5) अच्छे साथी उपलब्ध हों तो अल्लाह की याद और तस्बीह का आनंद दोहरा हो जाता है (6) इसका विवरण आगे आ रहा है।

اَنِ اقْذِفِيْهِ فِي التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّيْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّيْ ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى عَيْنِيْ ﴿۳۹﴾ اِذْ تَمْشِيْٓ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ يَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰٓى اُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ فُتُوْنًا ۚ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ ۚ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى ﴿۴۰﴾ وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِيْ ﴿۴۱﴾ اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِيْ وَلَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ ﴿۴۲﴾ اِذْهَبَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿۴۳﴾ فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ﴿۴۴﴾ قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ﴿۴۵﴾ قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِيْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ وَاَرٰى ﴿۴۶﴾ فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿۴۷﴾ اِنَّا قَدْ اُوْحِيَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿۴۸﴾ قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ﴿۴۹﴾ قَالَ رَبُّنَا الَّذِيْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ﴿۵۰﴾ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ﴿۵۱﴾

منزل۴

कि उसको एक संदूक़ में रखो फिर उसको नदी में डाल दो तो नदी उसको तट पर ला डालेगी (फिर होगा यह कि) उसको वह व्यक्ति उठा लेगा जो मेरा भी दुश्मन होगा और उसका भी और मैंने अपनी ओर से तुम पर प्रियता (महबूबियत) उतार दी थी और (ये) इसलिए किया (ताकि) तुम्हारा मेरी विशेष निगरानी में पालन–पोषण हो[1] (39) और जब तुम्हारी बहन चलती है और (पहुँच कर) कहती है कि क्या मैं ऐसे घर वालों का पता न बताऊँ जो उसको पाल लेंगे तो (इस तरह) हमने तुम्हें तुम्हारी माँ के पास वापस पहुँचा दिया ताकि उनकी आँखें ठंडी हों और वे दुखी न हों, और तुमने एक व्यक्ति को मार डाला था तो हमने तुम्हें मुसीबत से बचाया और तुम्हें बार–बार जाँचा[2] तो तुम कई वर्ष मद्यन वालों में रहे फिर निर्धारित समय पर ऐ मूसा! तुम पहुँचे हो (40) और मैंने तुम्हें खास अपने लिए बनाया है (41) तुम और तुम्हारे भाई दोनों मेरी निशानियों के साथ जाओ और मेरी याद में कोताही न करना[3] (42) दोनों फ़िरऔन के पास जाओ निश्चित रूप से वह सरकशी (उदण्डता) पर उतर आया है (43) तो तुम दोनों उससे नर्म बात करना शायद वह नसीहत प्राप्त करे या डर जाये (44) वे दोनों बोले ऐ हमारे पालनहार! हमें आशंका है कि वह हम पर अत्याचार न करे या सरकशी (उदण्डता) पर उतारू न हो जाए (45) कहा तुम दोनों डरो नहीं मैं तुम्हारे साथ हूँ, सुनता भी हूँ और देखता भी हूँ (46) बस दोनों उसके पास जाओ तो उससे कहो हम दोनों आपके पालनहार के भेजे हुए हैं तो बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दीजिए और उनको तकलीफें मत दीजिए, हम आपके पालनहार की निशानी ले कर आपके पास आये हैं[4] और सलामती उस पर है जो हिदायत (सत्यमार्ग) की राह चले (47) बेशक यह वह्य हम पर आई है कि जो भी झुठलाएगा और मुँह फेरेगा उसके लिए अज़ाब (दण्ड) है (48) वह बोला ऐ मूसा! तो तुम्हारा पालनहार कौन है (49) कहा हमारा पालनहार वह है जिसने हर चीज़ को उसका रूप प्रदान किया फिर उसका मार्गदर्शन किया[5] (50) वह बोला तो पहली क़ौमों की क्या कहानी है (51)

(1) किसी ज्योतिषी ने फ़िरऔन से कह दिया था कि बनी इस्राईल में एक बच्चा पैदा होने वाला है जो तुम्हारे राज को समाप्त कर देगा, उसने आदेश जारी कर दिया कि जो बच्चा पैदा हो मार दिया जाए, जब हज़रत मूसा पैदा हुए तो उनकी माँ को डर हुआ कि कहीं यह भी मार न दिये जाएं, तो अल्लाह ने उनको इल्हाम (ईश्वरीय संकेत) किया, हज़रत मूसा की माँ ने उसके अनुसार कर तो लिया मगर परेशान हुईं और वे बेटी से कहा कि जाकर मालूम करो, सन्दूक़ बहता–बहता फ़िरऔन के महल के निकट पहुँचा, उसकी पत्नी ने देखा तो बच्चे को देख कर हक्का–बक्का रह गई और फ़िरऔन को राज़ी कर लिया कि हम इसको बेटा बना कर रखें, लेकिन बच्चा दूध ही नहीं पीता था, सब परेशान थे इधर हज़रत मूसा की बहन वहाँ पहुँच गईं, उन्होंने अपनी माँ का पता बताया कि वह बहुत माहिर दाई हैं, बच्चा उनका दूध पी लेगा, इस प्रकार अल्लाह ने बच्चे को उसकी माँ तक सुरक्षित पहुँचा दिया (2) इन परीक्षाओं का विवरण सूरः क़सस में आएगा (3) इससे बड़ी शिक्षा यह मिलती है कि दाओ़ी (इस्लाम प्रचारक) को कभी भी अल्लाह की याद से गाफ़िल न होना चाहिए (4) इससे दावत (आवाहन) का एक महत्वपूर्ण नियम यह सामने आता है कि सम्बोधित (सामने वाला) कितना सरकश हो लेकिन बात हमेशा नर्मी से की जाए, वह असर किये बिना नहीं रहती (5) हर वस्तु को पूर्ण रूप से पैदा किया फिर उसको अपने काम पर लगा दिया, चाँद, सूरज, सितारे, ग्रह, सौरमण्डल और संसार की सब चीज़ें इसी निर्धारित व्यवस्था पर चल रही हैं और इसमें सेकेण्डों का भी अंतर नहीं है।

قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ ۖ لَا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنْسَى ﴿٥٢﴾
الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَ
أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْ نَبَاتٍ شَتَّىٰ ﴿٥٣﴾
كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِأُولِي النُّهَىٰ ﴿٥٤﴾ مِنْهَا
خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَىٰ ﴿٥٥﴾ وَلَقَدْ أَرَيْنَاهُ
آيَاتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَىٰ ﴿٥٦﴾ قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا
بِسِحْرِكَ يَا مُوسَىٰ ﴿٥٧﴾ فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِثْلِهِ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ
مَوْعِدًا لَا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾ قَالَ مَوْعِدُكُمْ
يَوْمُ الزِّينَةِ وَأَنْ يُحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾ فَتَوَلَّىٰ فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ
كَيْدَهُ ثُمَّ أَتَىٰ ﴿٦٠﴾ قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرَىٰ ﴿٦١﴾ فَتَنَازَعُوا أَمْرَهُمْ
بَيْنَهُمْ وَأَسَرُّوا النَّجْوَىٰ ﴿٦٢﴾ قَالُوا إِنْ هَٰذَانِ لَسَاحِرَانِ يُرِيدَانِ أَنْ
يُخْرِجَاكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيقَتِكُمُ الْمُثْلَىٰ ﴿٦٣﴾
فَأَجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوا صَفًّا ۚ وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَىٰ ﴿٦٤﴾
قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِمَّا أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَىٰ ﴿٦٥﴾

منزل ٤

कहा उसका ज्ञान किताब में मेरे पालनहार के पास है मेरा पालनहार न चूकता है न भूलता है[1] (52) जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिए आराम करने की जगह बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते निकाल दिये और ऊपर से पानी बरसाया फिर हमने उससे भाँति–भाँति के पौधों के जोड़े उगा दिये (53) खाओ और अपने जानवरों को चराओ निश्चित ही उसमें बुद्धि वालों के लिए निशानियाँ हैं (54) उसी से हमने तुम्हें पैदा किया और उसी में तुम्हें लौटा देंगे और दूसरी बार फिर उसी से निकालेंगे (55) और हमने उसको अपनी सब निशानियाँ दिखाईं तो उसने झुठलाया और इनकार किया[2] (56) बोला मूसा! क्या तुम हमारे पास इसलिए आए कि अपने जादू के बल पर हमको हमारे देश से निकाल दो (57) हम भी तुम्हारे मुक़ाबले में ऐसा ही जादू लाकर रहेंगे बस अब किसी खुले मैदान में अपने और हमारे बीच मुक़ाबले का ऐसा समय निर्धारित कर लो जिसका उल्लंघन न हम करें न तुम करो (58) कहा मेले के दिन तुम लोगों से वादा तय है और यह कि लोग दिन चढ़े इकट्ठा हो जाएं (59) बस फिरऔन लौटा तो उसने सारे उपाय कर लिए फिर आया[3] (60) मूसा ने उन (जादूगरों) से कहा अभागियो! अल्लाह पर झूठ न गढ़ो वरना वह तुम्हें अज़ाब से मिटा कर रख देगा और जिसने भी झूठ गढ़ा वह नाकाम हुआ (61) बस वे आपस में अपने इस मामले में झगड़ने लगे और चुपके–चुपके गुप्त वार्ता करने लगे (62) (अंततः) वे बोले निश्चित रूप से यह दोनों जादूगर हैं ये चाहते हैं कि अपने जादू के ज़ोर से तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल दें और तुम्हारी शानदार संस्कृति समाप्त कर दें (63) तुम अपने उपाय पूरे कर लो फिर पंक्तिबद्ध होकर मुकाबले पर आ जाओ और जो आज विजयी हुआ वह सफ़ल हो गया (64) वे बोले मूसा! तुम पहले (अपनी छड़ी / डण्डा) डालते हो या हम ही पहले डालें (65)

---

(1) यानी जिस चीज़ की ओर तुम बुलाते हो अगर वह सत्य है तो पिछली क़ौमों के हालात बताओ, उनमें से बहुतों ने खुले प्रमाण के बावजूद इस सत्य को क्यों स्वीकार नहीं किया और स्वीकार न करने की दशा में वे सब हलाक क्यों नहीं कर दी गईं, हज़रत मूसा ने कह दिया यह सब विवरण अल्लाह को मालूम है फिर वह अपनी बुद्धि से निर्णय करता है कि किसको सज़ा यहीं देनी है और किसको आख़िरत में, वह न भूलता है न चूकता है, सब उसकी शक्ति में है (2) सारी निशानियाँ और मोअ़जिज़े (ईश्वरीय चमत्कार) देखने के बाद भी न माना और बात बनाने के लिए जादूगर बताया और लोगों को जोश दिलाने के लिए कहने लगा कि यह तुमको अपने जादू के बल पर निकाल बाहर कर देना चाहते हैं (3) देश के माहिर जादूगरों को बुलवा कर पूरी तैयारी करके निर्धारित समय पर आ गया, हज़रत मूसा ने जादूगरों को समझाया तो उनमें खलबली मच गई, बहुत से कहने लगे कि यह जादूगर तो मालूम नहीं होते लेकिन फिरऔ़न के दबाव में आकर अंततः वही बात फिर दोहराने लगे जो फिरऔ़न पहले कह चुका था और कहने लगे कि आज पूरी शक्ति लगा दो, पहले ही चरण में काम पूरा हो जाए और तुम ही सफल हो।

قَالَ بَلْ أَلْقُوا ۖ فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِن سِحْرِهِمْ
أَنَّهَا تَسْعَىٰ ﴿٦٦﴾ فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَىٰ ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ
إِنَّكَ أَنتَ الْأَعْلَىٰ ﴿٦٨﴾ وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۖ إِنَّمَا
صَنَعُوا كَيْدُ سَاحِرٍ ۖ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ﴿٦٩﴾ فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ
سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَىٰ ﴿٧٠﴾ قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ
أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۖ فَلَأُقَطِّعَنَّ
أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ فِي جُذُوعِ النَّخْلِ
وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَىٰ ﴿٧١﴾ قَالُوا لَن نُّؤْثِرَكَ عَلَىٰ مَا
جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا ۖ فَاقْضِ مَا أَنتَ قَاضٍ ۖ
إِنَّمَا تَقْضِي هَٰذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾ إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا
خَطَايَانَا وَمَا أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۗ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿٧٣﴾
إِنَّهُ مَن يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَ
لَا يَحْيَىٰ ﴿٧٤﴾ وَمَن يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ
لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَىٰ ﴿٧٥﴾ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ مَن تَزَكَّىٰ ﴿٧٦﴾

منزل٤

कहा नहीं तुम ही डालो बस (जब उन्होंने डाला तो) उनकी रस्सियाँ और उनकी लाठियाँ मूसा को उनके जादू के ज़ोर से दौड़ती हुई लगने लगीं (66) तो मूसा को भीतर ही भीतर कुछ डर महसूस हुआ[1] (67) हमने कहा डरो मत ऊँचा तो निश्चित रूप से तुम ही को रहना है (68) और जो तुम्हारे हाथ में है वह डाल दो जो कुछ वे बनाकर लाए हैं वह सब को निगल जाएगा, वे तो जो कुछ बना कर लाए हैं वह जादू की चाल है और जादूगर कहीं से भी आएं वे सफल नहीं हो सकते (69) बस जादूगर सज्दे में गिर गये, कहने लगे कि हम हारून व मूसा के पालनहार पर ईमान लाए[2] (70) (फ़िरऔन) बोला मेरी अनुमति के बिना ही तुम इन पर ईमान ले आए बेशक यही तुम्हारा सरग़ना (प्रमुख) है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है तो मैं तुम्हारे हाथों और पैरों को विपरीत दिशाओं से काट कर रख दूँगा और खजूर के तनों में तुम्हें सूली पर लटका दूँगा और अवश्य तुम्हें मालूम हो जाए कि हममें से किसका अज़ाब अधिक कठोर और चिर स्थायी है (71) वे कहने लगे जो प्रमाण हमारे पास आ चुके और जिसने हमें पैदा किया हम उस पर आपको हरगिज़ वरीयता नहीं दे सकते तो आपको जो निर्णय करना हो कीजिए, आपका निर्णय तो इस दुनिया ही के जीवन तक है (72) हम अपने पालनहार पर ईमान ला चुके ताकि वह हमारे दोषों को और आपने जिस जादू पर हमें मजबूर किया है उसको माफ कर दे और अल्लाह ही बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है (73) बेशक जो कोई अपने पालनहार के पास अपराधी बन कर आएगा तो उसके लिए दोज़ख़ ही है, उसमें न मरेगा[3] न जियेगा (74) और जो ईमान की हालत में उसके पास आएगा, भले काम उसने कर रखे होंगे तो ऐसे लोगों ही के लिए ऊँचे दर्जे हैं (75) हमेशा रहने वाले बाग़ जिनके नीचे नहरें जारी हैं वे हमेशा उसमें रहेंगे और यह बदला है उसका जो पाक हुआ[4] (76)

(1) चूँकि जादूगरों का करतब हज़रत मूसा के मुअ़जिज़े से ज़ाहिरी रूप में मिलता–जुलता था इसलिए उनको यह डर हुआ कि कहीं लोग धोखे में न पड़ जाएं और असा (छड़ी) को भी जादू न समझ बैठें (2) जादूगर कला में माहिर थे, तुरन्त समझ गये कि यह जादू नहीं हो सकता, उससे ऊपर की कोई चीज़ है और हज़रत मूसा अल्लाह के रसूल हैं अतः वे तुरन्त सज्दे में गिर गये और ईमान ले आए, अल्लाह ने लम्हों में उनको कहीं से कहीं पहुँचा दिया जो इस जादू के बदले दुनिया के इच्छुक थे अब दीन के लिए हर तरह का जानी व माली बलिदान देने के लिए तैयार हो गए (3) मौत तो वहां आनी नहीं मगर जीना हज़ार मरने से बदतर (4) कुफ़्र से शिर्क से और बुराइयों से दूर हुआ और पवित्रता अपनाई।

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِى فَٱضْرِبْ
لَهُمْ طَرِيقًا فِى ٱلْبَحْرِ يَبَسًا لَّا تَخَٰفُ دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ ﴿٧٧﴾
فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِۦ فَغَشِيَهُم مِّنَ ٱلْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ﴿٧٨﴾
وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُۥ وَمَا هَدَىٰ ﴿٧٩﴾ يَٰبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ قَدْ
أَنجَيْنَٰكُم مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوَٰعَدْنَٰكُمْ جَانِبَ ٱلطُّورِ ٱلْأَيْمَنَ
وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ ٱلْمَنَّ وَٱلسَّلْوَىٰ ﴿٨٠﴾ كُلُوا۟ مِن طَيِّبَٰتِ مَا
رَزَقْنَٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا۟ فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِى ۖ وَمَن
يَحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِى فَقَدْ هَوَىٰ ﴿٨١﴾ وَإِنِّى لَغَفَّارٌ لِّمَن
تَابَ وَءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا ثُمَّ ٱهْتَدَىٰ ﴿٨٢﴾ وَمَآ أَعْجَلَكَ
عَن قَوْمِكَ يَٰمُوسَىٰ ﴿٨٣﴾ قَالَ هُمْ أُو۟لَآءِ عَلَىٰٓ أَثَرِى وَ
عَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ ﴿٨٤﴾ قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا
قَوْمَكَ مِنۢ بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ ٱلسَّامِرِىُّ ﴿٨٥﴾ فَرَجَعَ
مُوسَىٰٓ إِلَىٰ قَوْمِهِۦ غَضْبَٰنَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَٰقَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ
رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ ٱلْعَهْدُ أَمْ أَرَدتُّمْ أَن
يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُم مَّوْعِدِى ﴿٨٦﴾

منزل ٤

और हमने मूसा को वह्य की कि रातों रात मेरे बन्दों को लेकर निकल जाओ बस, समुद्र में (लाठी) मार कर सूखा रास्ता बना लेना, न तुम्हें पकड़े जाने का डर होगा और न (डूब जाने का) भय (77) तो फ़िरऔन ने अपनी सेना के साथ उनका पीछा किया बस समुद्र ने उनको अच्छी तरह से अपनी लपेट में ले लिया[1] (78) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को भटका कर छोड़ा और रास्ते पर न लाया (79) ऐ बनी इस्राईल! हमने तुमको तुम्हारे दुश्मन से बचाया और तूर का दायाँ भाग (तौरेत देने के लिए) तुम से तय किया और तुम पर मन व सल्वा उतारा (80) हमारी दी हुई पवित्र रोज़ी में से खाओ और उसमें हद से आगे न बढ़ना वरना तुम पर मेरा प्रकोप उतरेगा और जिस पर मेरा प्रकोप उतर गया तो वह रास्ते से गया (81) और बेशक मैं उसके लिए बड़ी माफ़ी रखता हूँ जिसने तौबा की और ईमान लाया और भले काम किये फिर सही रास्ते पर रहा (82) और ऐ मूसा! अपनी क़ौम से पहले जल्दी क्यों आ गये (83) बोले वे मेरे पीछे ही हैं और मैं तेरे पास ऐ मेरे पालनहार! जल्दी इसलिए आया ताकि तू खुश हो[2] (84) कहा तुम्हारे (आने के) बाद हमने तुम्हारी क़ौम को आज़माइश में डाल दिया है और उनको सामिरी ने गुमराह कर दिया है (85) बस मूसा गुस्से में भरे अफ़सोस के साथ क़ौम की ओर पलटे कहा ऐ मेरी क़ौम! क्या तुमसे तुम्हारे पालनहार ने अच्छा वादा नहीं किया था या फिर तुम्हें मुद्दत लम्बी मालूम हुई या तुमने इरादा ही कर लिया था कि तुम पर तुम्हारे पालनहार का प्रकोप उतरे तो तुमने वादे को पूरा न किया[3] (86)

(1) फ़िरऔन के जादूगरों के ईमान लाने के बाद हज़रत मूसा एक ज़माने तक फ़िरऔन को समझाते रहे और विभिन्न प्रकार के मुअ़जिज़े (ईश्वरीय चमत्कार) दिखाते रहे लेकिन उसने मानने से इन्कार कर दिया और हुज्जत पूरी हो गयी तो अल्लाह ने हज़रत मूसा को आदेश दिया कि वे रातों रात बनी इस्राईल को लेकर मिस्र से निकल जाएं और समुद्र रास्ते में पड़े तो अपनी लाठी उस पर मार कर सूखे रास्ते बना लें और यही हुआ, जब वे लोग निकल गये और फ़िरऔन को पता चला तो वह अपनी सेना के साथ पीछा करने के लिए निकला, समुद्र के किनारे पहुंच कर उसने सूखे रास्ते देखे तो वह भी उसमें घुस गया जब हज़रत मूसा अपनी क़ौम के साथ पार हो गये और फ़िरऔन अपनी सेना के साथ बीच में पहुंचा तो बस अल्लाह ने आदेश दिया कि दोंनो ओर के समुद्र मिल जाएं, इस प्रकार फ़िरऔन अपनी पूरी सेना के साथ डुबा दिया गया (2) सैना के रेगिस्तान में ठहरने के समय अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा को तूर पहाड़ पर बुलाया था ताकि वे वहां चालीस दिन एतिकाफ़ (विशेष ठहराव) करें तो उन्हें तौरेत प्रदान की जाए, बनी इस्राईल के कुछ चुने हुए लोगों को भी लाने का आदेश था, हज़रत मूसा तेज़ चले और विचार था कि साथी भी आ जाएंगे लेकिन वे न आए और वहां सामरी नामक एक जादूगर ने (जो मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) था और मुसलमान बन कर हज़रत मूसा के साथ रहता था) क़ौम को गुमराही में डाल दिया (3) चालीस दिन की अवधि होती ही क्या है लेकिन फिर भी तुम सब्र न कर सके या तुमने जान बूझ कर गाय की पूजा शुरु कर दी जिसके कारण अल्लाह के प्रकोप के भागी हो गये।

वे बोले हमने अपने अधिकार से आपके वादे को नहीं तोड़ा बल्कि क़ौम के आभूषणों का हम पर बोझ था तो हमने उसको फेंक दिया फिर इसी प्रकार सामिरी ने भी कुछ डाला (87) फिर उसने उनके लिए एक बछड़ा बना कर निकाला, एक शरीर था जिसकी गाय की आवाज़ थी, बस वे कहने लगे कि यही तो तुम्हारा और मूसा का माबूद (उपास्य) है, वे तो इसे भूल गये (88) क्या वे यह नहीं देखते कि वह न उनकी बात का उत्तर देता है और न उनके नफ़ा नुक़सान का मालिक है (89) और पहले हारून उनसे कह चुके थे कि ऐ मेरी क़ौम! तुम इसके कारण परीक्षा में पड़ गये और तुम्हारा पालनहार तो रह्मान है तो मेरे पीछे चलो और मेरी बात मानो (90) वे बोले हम तो उस समय तक इसी में लगे रहेंगे जब तक मूसा हमारे पास लौटकर नहीं आ जाते (91) मूसा ने कहा ऐ हारून! तुम्हें किस चीज़ ने रोका जब तुमने उन्हें गुमराह होते देखा (92) तो तुम मेरे पीछे न चले क्या तुमने मेरी बात ठुकरा दी (93) वे बोले ऐ मेरी माँ के सुपुत्र! मेरे सिर और दाढ़ी को मत पकड़िए मुझे अंदेशा इसका था कि आप कहेंगे कि तुमने बनी इस्राईल को टुकड़ों में बाँट दिया और मेरी राय का इन्तिज़ार न किया (94) मूसा ने कहा अच्छा तो सामिरी! तेरी कहानी क्या है (95) वह बोला मेरी नज़र ऐसी चीज़ की ओर पड़ी जो उन्होंने नहीं देखी बस मैंने फरिश्ते के पद–चिन्ह से एक मुटठी ले ली फिर उस (बछड़े) में डाल दी और इस प्रकार मेरे मन ने मुझे पढ़ाया (96) कहा अच्छा तू जा, जीवन भर कहता फिरेगा कि मुझे कोई हाथ न लगाए और तेरा समय निर्धारित है वह तुझ से टल नहीं सकता और अपने उस उपास्य का (अंजाम) देख जिस पर तू जमा बैठा था, हम ज़रूर उसको जला डालेंगे फिर उसकी राख समुद्र में बिखेर कर रख देंगे[1] (97)

(1) बनी इस्राईल के साथ आभूषणों की बड़ी मात्रा थी जो या तो उनको युद्ध में माल–ए–ग़नीमत के रूप में प्राप्त हुई या किसी और रूप में, वे उनको अपने प्रयोग के लायक नहीं समझते थे, तो हज़रत हारून से परामर्श करके उन्होंने उस बोझ से छुटकारा प्राप्त करने के लिए उनको एक स्थान पर फेंक दिया, सामिरी लोगों को बहकाने के लिए ताक में रहता था उसने चाल चली, किसी अवसर पर उसने एक फरिश्ते को घोड़े पर देखा था कि जहाँ वह घोड़ा पाँव रखता है वहां हरियाली उग आती है उसने समझ लिया कि इसमें जीवन के लक्षण हैं, उसने वहीं से कुछ मिट्टी उठा ली और जहां लोगों ने आभूषण फेंके थे वहीं उसने वह मिट्टी डाल दी फिर उनको पकाकर बछड़ा बनाया तो उसमें बछड़े की आवाज़ निकलने लगी, उसको अवसर मिल गया और उसने लोगों को उसकी ओर फेर दिया, हज़रत हारून ने लोगों को बहुत समझाया मगर चूंकि हज़रत मूसा ने जाते समय ताकीद की थी कि क़ौम को एक रखना, इसलिए उन्होंने बहुत ज़्यादा सख़्ती न की ताकि बिखराव न हो, अतः जब मूसा पलटे तो जोश में पहले हारून की निन्दा करने लगे, उन्होंने अपनी मजबूरी पेश की तो वे सामिरी की ओर पलटे, जब सच्चाई मालूम हुई तो इसका दण्ड अल्लाह के आदेशानुसार यह निर्धारित किया कि तू राजा बनने का सपना देख रहा था अब जीवन भर अछूत बन कर रहेगा, फिर बछड़े की ओर ध्यान दिया और सबके सामने उसको जला कर उसकी राख समुद्र में डाल दी ताकि उसकी वास्तविकता सबके सामने आ जाए, फिर लोगों को धर्मोपदेश दिया।

إِنَّمَآ إِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِي لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾ كَذٰلِكَ
نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِن لَّدُنَّا
ذِكْرًا ﴿٩٩﴾ مَّنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾ خٰلِدِينَ
فِيهِ وَسَآءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ
الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾ يَتَخَافَتُونَ بَيْنَهُمْ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا
عَشْرًا ﴿١٠٣﴾ نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِن
لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾ وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ﴿١٠٥﴾
فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَّا تَرٰى فِيهَا عِوَجًا وَلَآ أَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَئِذٍ
يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ
فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾ يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ
لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ وَقَدْ
خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾ وَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَا يَخَافُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾ وَكَذٰلِكَ أَنزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّ
صَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾

منزل٤

तुम्हारा माबूद (उपास्य) तो केवल अल्लाह है जिसके अलावा कोई उपास्य नहीं, उसका ज्ञान हर चीज़ को समेटे हुए है (98) इसी तरह हम आपको गुज़रे हुए किस्से सुनाते हैं और हमने अपने पास से आपको उपदेश (की किताब) दी है[1] (99) जिसने भी उससे मुँह मोड़ा तो वह क़यामत के दिन बोझ उठाएगा (100) उसी में हमेशा रहेंगे और क़यामत के दिन वह बोझ उनके लिए बहुत बुरा है (101) जिस दिन सूर फूँका जाएगा और उस दिन हम अपराधियों को इस हाल में इकट्ठा करेंगे कि उनकी आँखें[2] फटी–फटी होंगी (102) आपस में चुपके–चुपके कहेंगे कि शायद तुम दस दिन ठहरे होगे (103) वे जो कहते हैं हम उसको खूब जानते हैं, बस उनमें सबसे बेहतर तरीक़ा रखने वाला कहेगा कि तुम एक दिन से अधिक नहीं ठहरे[3] (104) और वे पहाड़ों के बारे में आप से पूछें तो बता दीजिए कि मेरा पालनहार उनको उड़ा कर बिखेर देगा (105) फिर ज़मीन को ऐसा चटियल मैदान कर देगा (106) कि न उसमें कोई ऊँच–नीच नज़र आएगी न कोई टीला (107) उस दिन सब बुलाने वाले के पीछे हो जाएंगे, उससे मुँह न मोड़ सकेंगे और रहमान के सामने आवाज़ें दब कर रह जाएंगी तो बस सिवाय क़दमों की आहट के आपको कुछ सुनाई न देगा (108) उस दिन कोई सिफारिश काम न आएगी हाँ! जिसको रहमान ही की ओर से अनुमति हो और वह उसकी बात पसंद करे (109) वह उनका अगला–पिछला सब जानता है, वे उसको अपने ज्ञान की परिधि में नहीं ला सकते[4] (110) और उस जीवित, क़ायम हस्ती के सामने सब चेहरे झुक गये और जिसने अत्याचार का बोझ उठाया वह नाकाम हुआ[5] (111) और जो भले काम करेगा और वह ईमान वाला होगा तो उसको न किसी हक मारे जाने का भय होगा न कमी का (112) और इसी प्रकार हमने इसको अरबी कुरआन उतारा है और बदल–बदल कर धमकियाँ सुना दी हैं कि शायद वे डरें या उनके लिए कोई नसीहत पैदा कर दे[6] (113)

(1) ठीक–ठीक पिछली घटनाओं का सुना देना खुद सच्चाई का प्रमाण है (2) ''ज़ुर्क़'' नीली आँखों को कहते हैं, नीली आँखों वाले दुश्मन की अरबों में अति घृणित दुश्मन समझा जाता था, क़यामत के दिन अपराधी बहुत ही घृणित होंगे जिसके परिणाम स्वरूप उन पर भय व आतंक होगा इसी कारण से अनुवाद फटी–फटी आँखों से किया गया है (3) यानी आख़िरत की भयानकता को देख कर कहेंगे कि दुनिया तो बहुत जल्द समाप्त हो गई, उसमें एक सप्ताह या दस दिन ही रहना हुआ होगा, जो अधिक बुद्धिमान होगा वह कहेगा कि श्रीमान दस दिन कहां एक ही दिन समझो, इसको अधिक बुद्धिमान और अच्छे तरीके वाला इसलिए कहा कि दुनिया के पतन व समापन और आख़िरत के स्थायित्व व निरंतरता को इसने दूसरों से अधिक समझा (4) अल्लाह के व्यक्तित्व व गुणों को कोई नहीं जान सकता, वह इससे बहुत बुलन्द है (5) जो दुनिया में अकड़ता रहा वहां वह भी पस्त होकर रहेगा, अत्याचार का सबसे बड़ा रूप शिर्क है, अल्लाह कहता है ''बेशक शिर्क बहुत बड़ा अत्याचार है'' और इसमें दूसरे पाप भी शामिल हैं, हर एक अत्याचारी की खराबी उसके अत्याचार की हालत के एतबार से होगी (6) चूंकि इसके सबसे पहले संबोधित अरब थे इसलिए अरबी में कुर्आन उतारा गया ताकि इसको पढ़ कर खुदा से डरें और परहेज़गारी का रास्ता अपनाएं।

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ
يُّقْضٰۤى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۫ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِىْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾ وَلَقَدْ عَهِدْنَاۤ
اِلٰۤى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِىَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٥﴾ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰۤىِٕكَةِ
اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿١١٦﴾ فَقُلْنَا يٰۤاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا
عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿١١٧﴾ اِنَّ
لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿١١٨﴾ وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾
فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰۤاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ
الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾ فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا
وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۫ وَعَصٰۤى اٰدَمُ رَبَّهٗ
فَغَوٰى ﴿١٢١﴾ ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾ قَالَ اهْبِطَا
مِنْهَا جَمِيْعًۢا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّىْ هُدًى ۙ
فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَاىَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ اَعْرَضَ
عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِىْۤ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾
قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾

منزل٤

तो वह अल्लाह जो वास्तविक सम्राट है वह बहुत बुलन्द है और आप अपनी ओर की गई वह्य पूरी होने से पहले कुर्आन पढ़ने में जल्दी न किया करें और दुआ करें कि ऐ मेरे पालनहार! मेरे ज्ञान को बढ़ा दे[1] (114) और हमने पहले आदम से वचन लिया था तो वे भूल गये और हमने उनमें जमाव न पाया (115) और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया सिवाय इब्लीस के, उसने इनकार कर दिया (116) तो हमने कहा कि ऐ आदम! यह तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का दुश्मन है तो वह तुम दोनों को कहीं जन्नत से निकाल न दे तो फिर तुम कठिनाई में पड़ जाओ (117) यहां तुमको यह (आराम) है कि न तुम भूखे रहते हो न नंगे (118) और न तुम यहाँ प्यासे रहते हो और न धूप में तपते हो (119) बस शैतान ने उनको फुसलाया, बोला ऐ आदम! क्या मैं तुम्हें ऐसे पेड़ का पता न बताऊँ जो हमेशा के जीवन और ऐसी बादशाही दे जिसको ग्रहण न लगे (120) तो उन दोनों ने उसमें से खा लिया बस उनकी शर्म की जगहें उनके लिए खुल गईं तो वे उन पर जन्नत के पत्ते जोड़ने लगे और आदम ने अपने पालनहार की बात न मानी तो रास्ते से हट गये (121) फिर उनके पालनहार ने उनको चुन लिया तो उनकी तौबा कुबूल कर ली और राह दे दी[2] (122) कहा तुम दोनों यहां से नीचे उतरो, तुम एक दूसरे के दुश्मन बन कर रहोगे फिर अगर मेरे पास से तुम्हारे लिए मार्गदर्शन आए तो जिसने मेरे मार्गदर्शन की पैरवी की तो वह न गुमराह होगा और न वंचित (123) और जिसने मेरी नसीहत से मुँह मोड़ा तो उसके लिए तंग ज़िंदगी है और उसे हम क़यामत में अंधा करके उठाएंगे[3] (124) वह कहेगा ऐ मेरे पालनहार! तूने मुझे अंधा क्यों उठाया मैं तो देखने वाला था[4] (125) वह कहेगा इसी तरह मेरी निशानियाँ तेरे पास आई थीं तो तूने उन्हें भुला दिया था और ऐसा ही आज तुझे भुलाया जा रहा है (126)

---

(1) जब हज़रत जिबरईल आकर आपको आयतें सुनाते तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जल्दी–जल्दी पढ़ने लगते ताकि भूल न हो, उस पर यह आयतें उतरीं कि आप पूरी वह्य सुन लें इसकी सुरक्षा हमारे ज़िम्मे है, सूरः कियामह में भी यही बात कही गई है, आगे ज्ञान में बढ़ोतरी की दुआ सिखाई गई है, इससे ज्ञान का महत्व और उसकी व्यापकता का अंदाज़ा होता है (2) हज़रत आदम के दाना खाने और धरती पर उतारे जाने और उनकी तौबा स्वीकार होने का उल्लेख है, इसका विवरण सूरः बकरह और सूरः आराफ़ में आ चुका है (3) यह तंग ज़िंदगी दुनिया में भी होती है कि हज़ार साधनों के बावजूद इंसान घुटन महसूस करता है और बर्ज़खी जीवन में तंगी और सख़्ती झेलनी पड़ेगी (4) यह शुरु का उल्लेख है फिर रौशनी वापस कर दी जाएगी ताकि वह दोज़ख़ और उसकी भयानकता को देख सके।

وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ وَلَعَذَابُ
الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿۱۲۷﴾ اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ
الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿۱۲۸﴾
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿۱۲۹﴾
فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ
وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ
لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿۱۳۰﴾ وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا
مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ۬ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَرِزْقُ رَبِّكَ
خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿۱۳۱﴾ وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ لَا
نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿۱۳۲﴾ وَقَالُوْا
لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ
الْاُوْلٰى ﴿۱۳۳﴾ وَلَوْ اَنَّاۤ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا
رَبَّنَا لَوْلَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ
اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ﴿۱۳۴﴾ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ
فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ﴿۱۳۵﴾

منزل ۴

और जो सीमा से आगे बढ़ता है और अपने पालनहार की आयतों को नहीं मानता हम उसको ऐसे ही सज़ा दिया करते हैं और आख़िरत की सज़ा बहुत कठोर और चिर स्थाई है (127) तो क्या उनको समझ न आई कि उनसे पहले कितनी ऐसी क़ौमों को हमने हलाक कर दिया जिन घरों में यह चल–फिर रहे हैं बेशक इसमें बुद्धिमानों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं (128) और अगर पहले से आपके पालनहार की निश्चित बात न होती और निर्धारित समय न होता तो (अज़ाब आकर) दबोच ही लेता[1] (129) तो जो वे कहते हैं आप उस पर सब्र करते रहें और सूर्योदय से पहले और उसके डूबने से पहले अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ तस्बीह (पवित्रता बयान) करते रहिए और रात के भागों में तस्बीह कीजिए और दिन के पहरों में ताकि आपको खुशी प्राप्त हो[2] (130) और उस ओर नज़र उठाकर भी न देखिए जो उनके विभिन्न वर्गों को हमने दुनिया की चमक इसलिए दे रखी है ताकि उसमें हम उनको आज़माएं और आपके पालनहार की रोज़ी तो बहुत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है[3] (131) और अपने घर वालों को नमाज़ का आदेश कीजिए और खुद उसमें लगे रहिए हम आपसे रोज़ी नहीं मांगते, रोज़ी तो हम आपको देंगे और परिणाम परहेज़गारी के पक्ष में है (132) और वे कहते हैं कि अपने पालनहार के पास से वे निशानी क्यों नहीं लाते? तो क्या उनके पास पहली किताबों का खुला प्रमाण नहीं आ चुका[4] (133) और अगर हम उनको इससे पहले किसी सज़ा के द्वारा हलाक कर देते तो वे ज़रूर कहते कि ऐ हमारे पालनहार! तूने हमारे पास रसूल क्यों न भेजा तो हम अपमानित व रूस्वा होने से पहले ही आपकी आयतों का अनुसरण करते (134) कह दीजिए सभी इंतेज़ार कर रहे हैं तो तुम भी इंतेज़ार करो, बस जल्द ही तुम्हें पता चल जाएगा कि कौन लोग सीधे रास्ते वाले हैं और किसने हिदायत (संमार्ग) पाई (135)

(1) यानी उन मुश्रिकों की दुष्टताएं ऐसी हैं कि तुरन्त वे अज़ाब का शिकार हो जाते लेकिन अल्लाह ने उसका समय निर्धारित कर रखा है इसलिए उनको समय मिला हुआ है, अतः आप उनकी बातों पर सब्र करते रहिए और नमाज़ों की पाबन्दी कीजिए कि सब्र और नमाज़ ही अल्लाह से सहायता प्राप्त होने के सबसे महत्वपूर्ण साधन हैं (2) इस आयत में पाँचों नमाज़ों और तहज्जुद की ओर इशारा है (3) यहूदियों, ईसाइयों, मुश्रिकों और दूसरी क़ौमों को जो ऐश का साधन मिला हुआ है वह केवल परीक्षा के लिए है और आपको जो धन प्राप्त है जैसे कुर्आन, पैग़म्बरी का दर्जा, बड़ी–बड़ी विजय, आख़िरत के उच्चतम दर्जे, इनके सामने इन नश्वर चीज़ों की हैसियत क्या है?अतः न आप उनके झुठलाने और मुँह मोड़ने से व्याकुल हों और न इनके धन–दौलत की ओर देखें (4) इस प्रकार भी कि उन विगत आकाशीय ग्रंथों में आपके आने का वर्णन मौजूद है और इस प्रकार भी कि उनके तथ्यों और घटनाएं सब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उम्मी होने के बावजूद आपकी पवित्र ज़बान से जारी हो रही हैं, इतनी बड़ी निशानी आने के बावजूद मानते नहीं और अगर पहले ही अज़ाब आ जाता तो बहाना करते कि अगर पहले ही रसूल आ जाता और हम को सावधान कर देता तो हमें क्यों आख़िरत का अपमान उठाना पड़ता, अतः कुरआन न आता तो यूँ कहते और अब आ चुका तो दूसरी मनगढंत निशानियों की मांग है, उनका मक़सद हिदायत प्राप्त करना नहीं, अनावश्यक बहाने तलाशना है, तो आप उनसे कह दीजिए कि हम सब इंतेज़ार करते हैं आगे क्या वास्तविकता सामने आती है, फिर खुल जाएगा कि कौन सही रास्ते पर क़ायम था।

سُوْرَةُ الْاَنْبِيَآءِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّاثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً وَّسَبْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ
مُّعْرِضُوْنَ ﴿١﴾ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ
وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٢﴾ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ۗ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ
هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿٣﴾
قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٤﴾
بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۢ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۖ فَلْيَاْتِنَا
بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٥﴾ مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ
اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ
فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧﴾ وَمَا جَعَلْنٰهُمْ
جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ﴿٨﴾ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ
الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٩﴾ لَقَدْ
اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠﴾ وَكَمْ قَصَمْنَا
مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿١١﴾

الجزء ١٧ — ع ١

منزل ٤

सूरह अम्बिया

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

लोगों के लिए उनके हिसाब का समय क़रीब आ चुका और वे हैं कि असावधानी की हालत में मुँह फेरे हुए हैं (1) जब कभी उनके पालनहार के पास से नसीहत की कोई नई बात उनको पहुंचती है तो खिलवाड़ करते हुए उसको इस हाल में सुनते हैं कि (2) उनके दिल ग़ाफ़िल (असावधान) हैं और अत्याचारी चुपके–चुपके कानाफूसी करते हैं यह तो तुम्हारे ही जैसे इंसान हैं क्या तुम देखते–भालते जादू में पड़ोगे (3) कहा मेरा पालनहार आकाश और धरती की हर बात से अवगत है और वह ख़ूब सुनता, ख़ूब जानता है (4) (यही नहीं) बल्कि वे बोले यह तो परेशान ख़्वाब की बातें हैं बल्कि खुद इन्होंने गढ़ लिया है नहीं यह तो कवि हैं (वरना) तो हमारे पास कोई निशानी[1] लेकर आएं जिस प्रकार पहले लोग भेजे गये (5) इनसे पहले भी कोई बस्ती ईमान न लाई जिसको हमने हलाक किया तो क्या यह ईमान लाएंगे (6) और आपसे पहले भी हमने आदमियों को रसूल बनाया जिनकी ओर हम वह्य भेजते थे बस अगर तुम नहीं जानते तो याद रखने वालों से मालूम कर लो (7) और हमने उनका ऐसा शरीर नहीं बनाया कि वे खाना न खाते हों और न वे ऐसे थे कि हमेशा ज़िन्दा रहें[2] (8) फिर हमने अपने किये वादे को सच कर दिखाया तो हमने उनको और जिनको हमने चाहा नजात (मुक्ति) दी और सीमा से आगे बढ़ जाने वालों को नष्ट कर डाला (9) बेशक हमने तुम पर ऐसी किताब उतारी है जिसमें तुम्हारा वर्णन है भला तुम समझ से काम क्यों नहीं लेते[3] (10) और कितनी बस्तियों को जो अत्याचारी थीं हमने जड़ से उखाड़ फेंका और उनके बाद दूसरी क़ौम को बसा दिया (11)

---

(1) हिसाब की घड़ी सिर पर खड़ी है और उनका हाल यह है कि कुरआन के बहुमूल्य उपदेशों को मात्र खेल–तमाशे की हैसियत से सुनते हैं, और उसको भिन्न प्रकार का नाम देते हैं, कभी जादू कहते हैं कभी शायरी कहते हैं, कभी परेशान करने वाले ख़्वाब बताते हैं, कभी कहते हैं कि यह अपनी ओर से गढ़ लाए हैं तथा और भी निशानियों की मांग करते हैं, अल्लाह कहता है कि इनसे पहले ही कितनी बस्तियाँ नष्ट (तबाह) कर दी गईं और ईमान न लाईं तो अब क्या ये ईमान लाएंगे जिन्होंने तय कर लिया है कि उन्हें मानना ही नहीं है (2) पैग़म्बर इंसानों में ही चुन कर भेजे गये, उनकी भी मानवीय आवश्कयताएं होती थीं, हमेशा रहने के लिए उन्हें दुनिया में नहीं भेजा गया (3) ज़िक्र का अनुवाद नसीहत (उपदेश) से भी किया गया है और तज़किरा (वर्णन) से भी, वर्णन का मतलब वह है जो एक ताबेई हज़रत अहनफ़ बिन क़ैस रहमतुल्लाहि अलैहि ने बयान किया है कि उन्होंने कुरआन खोल कर अपना तज़किरा ढूँढ़ना आरम्भ किया जब काफिरों और मुश्रिकों का उल्लेख आया तो उन्होंने पनाह मांगी कि मैं इनमें तो नहीं फिर जब साबिक़ीन–ए–अव्वलीन और विशेष बन्दों का वर्णन आया तो उन्होंने कहा कि यह भी मेरा मरतबा नहीं फिर एक आयत पर नज़र पड़ी "कुछ वे हैं जिनको अपने पाप स्वीकार हैं उन्होंने अच्छे कामों के साथ बुरे काम भी कर रखे हैं आशा है कि अल्लाह उनको माफ़ कर देगा" तुरन्त बोले कि हाँ यह मेरा वर्णन (तज़किरा) मौजूद है, मानो पवित्र क़ुरआन एक आईना है जिसमें हर व्यक्ति अपना चेहरा देख सकता है और अपनी तस्वीर पढ़ सकता है।

فَلَمَّآ أَحَسُّوا۟ بَأْسَنَآ إِذَا هُم مِّنْهَا يَرْكُضُونَ ﴿١٢﴾ لَا تَرْكُضُوا۟ وَ
ارْجِعُوٓا۟ إِلَىٰ مَآ أُتْرِفْتُمْ فِيهِ وَمَسَٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُونَ ﴿١٣﴾
قَالُوا۟ يَٰوَيْلَنَآ إِنَّا كُنَّا ظَٰلِمِينَ ﴿١٤﴾ فَمَا زَالَت تِّلْكَ دَعْوَىٰهُمْ حَتَّىٰ
جَعَلْنَٰهُمْ حَصِيدًا خَٰمِدِينَ ﴿١٥﴾ وَمَا خَلَقْنَا ٱلسَّمَآءَ وَٱلْأَرْضَ
وَمَا بَيْنَهُمَا لَٰعِبِينَ ﴿١٦﴾ لَوْ أَرَدْنَآ أَن نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّٱتَّخَذْنَٰهُ
مِن لَّدُنَّآ إِن كُنَّا فَٰعِلِينَ ﴿١٧﴾ بَلْ نَقْذِفُ بِٱلْحَقِّ عَلَى ٱلْبَٰطِلِ
فَيَدْمَغُهُۥ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۚ وَلَكُمُ ٱلْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾
وَلَهُۥ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ وَمَنْ عِندَهُۥ لَا يَسْتَكْبِرُونَ
عَنْ عِبَادَتِهِۦ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ﴿١٩﴾ يُسَبِّحُونَ ٱلَّيْلَ وَٱلنَّهَارَ
لَا يَفْتُرُونَ ﴿٢٠﴾ أَمِ ٱتَّخَذُوٓا۟ ءَالِهَةً مِّنَ ٱلْأَرْضِ هُمْ يُنشِرُونَ ﴿٢١﴾
لَوْ كَانَ فِيهِمَآ ءَالِهَةٌ إِلَّا ٱللَّهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحَٰنَ ٱللَّهِ رَبِّ
ٱلْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٢٢﴾ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ
يُسْـَٔلُونَ ﴿٢٣﴾ أَمِ ٱتَّخَذُوا۟ مِن دُونِهِۦٓ ءَالِهَةً ۖ قُلْ هَاتُوا۟
بُرْهَٰنَكُمْ ۖ هَٰذَا ذِكْرُ مَن مَّعِىَ وَذِكْرُ مَن قَبْلِى ۗ
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ٱلْحَقَّ ۖ فَهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٢٤﴾

फिर जब उन्होंने हमारे अज़ाब की आहट पाई तो लगे वहां से भागने (12) भागो मत और जिन भोग–विलास और कोठियों में मस्त थे उधर ही वापस जाओ ताकि तुम से पूछा जाए[1] (13) वे बोले हाय हमारा दुर्भाग्य हम ही अत्याचारी थे (14) फिर यही उनकी पुकार रही यहां तक कि हमने उनको भूसे की राख बना दिया (15) और हमने आसमान व धरती और उनके बीच जो भी है इस तमाशे के लिए नहीं पैदा किया (16) अगर हम कोई खेल करना चाहते तो अपने पास ही कर लेते अगर हमें करना होता (17) बल्कि हम सच्चाई को झूठ पर फेंक कर मारते हैं तो वह उसका सिर फोड़ डालती है बस वह मिट कर रह जाता है और तुम जो बातें बनाते हो उसमें तुम्हारे ही लिए बर्बादी है[2] (18) और उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और जो उसके पास हैं वे उसकी उपासना (बन्दगी) से न अकड़ते हैं और न उकताते हैं (19) रात व दिन तस्बीह (पवित्रता बयान करने) में लगे रहते हैं थकते नहीं (20) क्या उन्होंने धरती में उपास्य (माबूद) बना रखे हैं वे उनको ज़िन्दा करेंगे (21) अगर दोनों (आसमानों व ज़मीन) में अल्लाह के अतिरिक्त और पूज्य होते तो दोनों की व्यवस्था बिगड़ कर रह जाती बस जो बातें बनाते हैं अल्लाह उनसे पवित्र है जो अर्श का मालिक है (22) वह जो करता है उससे कोई पूछने वाला नहीं और इन सब से पूछताछ होगी[3] (23) क्या उन्होंने उसके अतिरिक्त पूज्य (माबूद) बना रखे हैं! कह दीजिए अपना प्रमाण ले आओ, यह मेरे साथ वालों की नसीहत (की किताब मौजूद) है और यह मुझसे पहले वालों की नसीहत की (किताबें) भी हैं, लेकिन बात यह है कि उनमें अधिकांश सच्चाई को समझते ही नहीं तो वे मुँह मोड़े हुए हैं (24)

---

(1) कटाक्ष के तौर पर यह बात कही जा रही है कि अब कहाँ भाग रहे हो अपनी उन्हीं भोग–विलास में जाओ और अपने नौकर–चाकरों को जवाब दो (2) यह दुनिया कोई खेल–तमाशे के लिए नहीं पैदा की गई बल्कि यहां तो सच व झूठ का युद्ध जारी है, सच्चाई जब झूठ पर पड़ती है तो उसका भेजा निकाल देती है लेकिन हर चीज़ अल्लाह के यहाँ एक व्यवस्था के साथ चल रही है, जब समय आयेगा वास्तविकता सामने आ जाएगी (3) यह तो तौहीद (एकेश्वरवाद) की बहुत खुली हुई दलील है कि ब्रह्माण्ड की पूरी व्यवस्था एक नियम के अंतर्गत चल रही है, अगर एक के अतिरिक्त और खुदा भी होते तो निश्चित ही वे भी खुदाई अधिकार चलाना चाहते जिसके फलस्वरूप सारी व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो कर रह जाती, इस बौद्धिक प्रमाण के बाद आगे आयत में आकाशीय पुस्तकों का संदर्भ दे कर पुस्तकीय प्रमाण की ओर भी संकेत किया है कि हर आकाशीय पुस्तक में तौहीद (एकेश्वरवाद) की ओर बुलाया गया है परन्तु लोग उनमें विचार ही नहीं करते।

منزل٤

और हमने आपसे पहले जो रसूल भेजा उसको बता दिया कि मेरे अलावा कोई पूज्य नहीं तो केवल मेरी ही उपासना (बन्दगी) करो (25) और वे कहते हैं कि रहमान ने बेटा बना लिया, वह पवित्र है, हाँ! (वे उसके) सम्मानित बंदे हैं (26) वे उससे आगे बढ़ कर बोल नहीं सकते और उसके आदेशानुसार ही काम करते हैं (27) उनके आगे–पीछे जो कुछ है वह सब जानता है और वे किसी की सिफारिश नहीं कर सकते मगर हाँ! जिसके लिए उसकी इच्छा हो और वे उसके डर से काँपते रहते हैं (28) और उनमें जो यह कहे कि उसके अलावा मैं उपास्य (माबूद) हूँ तो उसको हम दोज़ख़ की सज़ा देंगे, हम ज़ालिमों को ऐसे ही सज़ा दिया करते हैं[1] (29) क्या इनकार करने वालों ने नहीं देखा कि आसमान और ज़मीन ठोस थे तो हमने उनको फाड़ा और हर ज़िंदा चीज़ हमने पानी से बनाई तो फिर वे क्यों नहीं मानते[2] (30) और ज़मीन में हमने भारी पहाड़ बना दिये कि वह उनको लेकर डोलने न लगे और उसमें हमने खुले रास्ते बना दिये ताकि वे राह पाएं (31) और आसमान को हमने सुरक्षित छत बना दिया और वे हैं कि उसकी निशानियों से मुँह मोड़े बैठे हैं (32) और वही है जिसने रात व दिन और सूरज व चाँद पैदा किये सब (अपने) कक्ष (मदार) में तैर रहे हैं[3] (33) और आपसे पहले भी हमने किसी इंसान के लिए हमेशा रहना तय नहीं किया भला अगर आपका निधन हो गया तो क्या वे हमेशा रहेंगे (34) हर जान को मौत का मज़ा चखना है और हम तुम्हें भलाई और बुराई में परीक्षा के लिए डालते (मुब्तिला करते) हैं और लौट कर तुम्हें हमारे ही पास आना है (35)

(1) मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) फरिश्तों को खुदा की बेटियाँ कहते थे, ईसाई हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को खुदा का बेटा घोषित करते हैं, यहूदी हज़रत उज़ैर के बारे में ऐसी ही कल्पना करते हैं, सबको नकार दिया गया और बताया गया कि यह सब अल्लाह के नेक बन्दे हैं और मान लो अगर कोई भी अपने को खुदा बनाए तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है (2) अरबी भाषा में रत्क़ बँधे हुए बड़े ढेर को कहते हैं, इसकी दो प्रकार से व्याख्या की गई है एक तो ये कि सब धरती, सूरज, चन्द्रमा, सितारे व ग्रह आदि एक बड़े ढ़ेर के रूप में थे फिर अल्लाह ने उसको फाड़ कर यह सब चीज़ें बनाईं, और दूसरा मतलब यह बताया जाता है कि यह ज़मीन का ही गोला है पहले यह बिल्कुल ठोस था अल्लाह ने उसको पैदावार के लायक बनाया, पानी को जीवन का मूल घोषित किया गया है और यह बात ज्ञान रखने वालों के सामने आ चुकी है (3) यह सब अल्लाह की शक्तियों का वर्णन है, "फ़लक़" का यहाँ मतलब अंतरिक्ष है, अल्लाह ने हर ग्रह के लिए अंतरिक्ष में एक निर्धारित रास्ता बना दिया है, सब उसके बताए हुए रास्ते पर चल रह हैं, एक क्षण के लिए कोई इधर से उधर नहीं हो सकता, वरना छणों में यह दुनिया समाप्त हो जाए और क़यामत में यही होगा कि यह सब सूरज, चाँद, सितारे आदि एक दूसरे से टकरा कर तबाह हो जाएंगे और क़यामत आ जाएगी, अगली आयत में इंसान की अपनी क़यामत यानी मौत का वर्णन है और दुश्मनों से कहा जा रहा है कि अगर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु होगी तो क्या वे उसके बाद हमेशा ज़िंदा रहेंगे, मौत सबको आनी है और अल्लाह के दरबार में हाज़िर होना है और दुनिया की राहत और मुसीबत सब परीक्षा के लिए है।

وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا
الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۶﴾
خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ؕ سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿۳۷﴾
وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۳۸﴾ لَوْ يَعْلَمُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا
عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۳۹﴾ بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً
فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۴۰﴾
وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا
مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۴۱﴾ قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ
وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۴۲﴾
اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ
اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿۴۳﴾ بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ وَ
اٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي
الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۴۴﴾ قُلْ اِنَّمَآ
اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۖ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿۴۵﴾

ع

منزل۴

और जब भी काफ़िर आपको देखते हैं तो आपका मज़ाक़ ही उड़ाने लगते हैं कि क्या यही वह व्यक्ति है जो तुम्हारे माबूदों (उपास्यों) का उल्लेख इस प्रकार करता है (कि उनको असत्य बताता है) और खुद उनका हाल यह है कि वे रहमान के उल्लेख का ही इनकार किये बैठे हैं[1] (36) इंसान की रचना जल्दबाज़ी के साथ की गई है, हम अपनी निशानियाँ तुम्हें जल्द ही दिखा देंगे तो तुम जल्दी मत मचाओ (37) और वे कहते हैं यह वादा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो (38) काश कि काफ़िर जान लेते कि जब वे अपने चेहरों से आग रोक न सकेंगे और न अपनी पीठों से और न उनकी मदद की जाएगी (39) बल्कि वह अचानक उनको आ दबोचेगी तो उनका होश उड़ा देगी फिर वे न उसको टाल सकेंगे और न उन्हें मोहलत दी जाएगी[2] (40) आपसे पहले भी रसूलों का मज़ाक उड़ाया जा चुका है फिर उनका मज़ाक उड़ाने वालों पर वही (अज़ाब) पलट पड़ा जिसका वे मज़ाक़ उड़ाया करते थे (41) पूछिए कि कौन दिन व रात रहमान से तुम्हारी रक्षा करता है, बात यह है कि वे अपने पालनहार की याद से भी मुँह मोड़े हुए हैं[3] (42) या उनके उपास्य हैं जो उनको हमसे बचाते हैं वे खुद अपनी मदद तो कर नहीं सकते और न हमारी ओर से उनका साथ दिया जाता है (43) बल्कि हमने उनको और उनके बाप–दादा को सुख सुविधा की सामग्री प्रदान की यहाँ तक कि (उसी में) उन्होंने लम्बी–लम्बी आयु गुज़ारी भला क्या वे नहीं देखते कि हम धरती को उसके किनारें से कम करते जा रहे हैं, भला फिर वे हावी (ग़ालिब) होंगे[4] (44) कह दीजिए मैं तो वह्य के द्वारा तुम्हें डराता हूँ और बहरों को जब भी डराया जाए वे बात सुनते ही कब हैं (45)

---

(1) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब उनके झूठे उपास्यों (माबूदों) की असत्यता बयान करते तो वे मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) आपका मज़ाक उड़ाते और अल्लाह को नहीं मानते जो सबका वास्तविक उपास्य है (2) आज उनको अज़ाब की जल्दी है और जब अज़ाब आ जाएगा तो सारा अभिमान धरा रह जाएगा, पहले भी रसूलों को झुठलाने वालों का यही परिणाम हो चुका है (3) यानी रहमान के गुस्से और अज़ाब से तुम्हारी रक्षा करने वाला दूसरा कौन है? केवल उसकी विशाल कृपा है जो तुरन्त अज़ाब नहीं उतारता लेकिन फिर भी रहमान की रक्षा का उनको एहसास व इकरार नहीं, भोग–विलास में पड़े हुए हैं और जब भी कोई उपदेश (नसीहत) की बात की जाती है तो मुँह फेर लेते हैं कि कहाँ यह बातें शुरु कर दीं और वे समझते हैं कि उनके उपास्य (माबूद) उनको बचा लेंगे, उनका हाल तो यह है कि वे अपने ही काम नहीं आ सकते, शायद इसका कारण यही है कि बाप–दादा से ऐश करते चले आए हैं, अभी तक अज़ाब (ईश्वरीय दण्ड) का कोई झटका नहीं लगा है इसलिए बेफ़िक्री में मस्त हैं लेकिन क्या ये नहीं देखते कि उनकी परिधि संकुचित होती चली जा रही है (4) इसमें एक इशारा तो यह है कि इस्लाम फैलता जा रहा है, अरब प्रायद्वीप (जज़ीरतुल अरब) धीरे–धीरे इस्लाम की छत्रछाया में आ रहा है और काफ़िरों और मुश्रिकों का क्षेत्र संकुचित होता जा रहा है अधिकांश तफ़सीर लिखने वालों (व्याख्याकारों) ने यही मतलब लिया है, दूसरा संकेत इस धरती के धीरे–धीरे सिमटने की ओर भी हो सकता है नया विज्ञान इसको स्वीकार करता है।

وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝٤٦ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۭ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ۭ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ۝٤٧ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاۗءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝٤٨ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ۝٤٩ وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ۭ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝٥٠ وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ۝٥١ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ۝٥٢ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَاۗءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ۝٥٣ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَاۗؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٥٤ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ۝٥٥ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ڮ وَاَنَا عَلٰي ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝٥٦ وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝٥٧

منزل۴

और अगर एक थपेड़ा भी आपके पालनहार के अज़ाब का उनको छू जाए तो ज़रूर यही कहेंगे हाय हमारा दुर्भाग्य! बेशक हम ही अन्यायी थे (46) और क़यामत के दिन हम इंसान की तुलाएं स्थापित करेंगे तो किसी पर ज़रा भी अत्याचार न होगा और अगर राई के दाने के बराबर भी कुछ होगा तो हम उसे ला कर उपस्थित करेंगे और हिसाब लेने के लिए हम काफ़ी हैं[1] (47) और निश्चित ही हमने मूसा और हारून को फ़ैसले की चीज़ दी थी और वह परहेज़गारों के लिए रौशनी और नसीहत (उपदेश) थी[2] (48) जो बिन देखे अपने पालनहार से डरते रहते थे और वे क़यामत का भय रखते थे (49) और यह पावन उपदेश है जिसे हमने उतारा है तो क्या तुम इसका भी इनकार करने वाले हो (50) और पहले हमने इब्राहीम को उनके लायक़ सूझ–बूझ प्रदान की थी और हम उनसे ख़ूब अवगत थे (51) जब उन्होंने अपने पिता और अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि यह क्या मूर्तियाँ हैं जिन पर तुम जमे बैठे हो (52) वे बोले हमने अपने बाप–दादा को इनकी उपासना करते पाया है (53) उन्होंने कहा बेशक तुम भी और तुम्हारे बाप–दादा भी खुली गुमराही में रहे हैं (54) वे बोले क्या वास्तव में तुम हमारे पास सच्चाई लेकर आए हो या यूँ ही तमाशा करते हो[3] (55) कहा क्यों नहीं तुम्हारा पालनहार आसमानों और ज़मीन का पालनहार है जिसने उनको पैदा किया और मैं इस पर गवाह हूँ (56) और (उन्होंने दिल ही दिल में कहा) ख़ुदा की कसम! मैं तुम्हारे चले जाने के बाद तुम्हारी मूर्तियों से ज़रूर एक चाल चलूँगा (57)

(1) यह तुलाएं इस तरह स्थापित की जाएंगी कि सब देख लें, आज जबकि ठण्डा–गर्म मापने और छोटी से छोटी और हलकी से हलकी चीज़ के मापने के उपकरण मौजूद हैं तो कर्मों के मापने की कल्पना कुछ भी कठिन नहीं रही (2) सच्चाई व झूठ का वह एक पैमाना था जिसको सामने रख कर परहेज़गार रौशनी और नसीहत (उपदेश) प्राप्त कर सकते हैं लेकिन उनमें अधिकांश ने ध्यान नहीं दिया, और अब यह मार्गदर्शन (हिदायत) व उपदेश (नसीहत) की पावन पुस्तक उतरी है जो क़यामत तक के लिए सच्चाई व झूठ का पैमाना है, अब मानना और न मानना तुम्हारा काम है (3) अपनी क़ौम के विश्वास (अक़ीदे) के विरुद्ध इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की बात सुन कर वे यह कहने लगे कि तुम गंभीरता से ये बात कह रहे हो या कोई मज़ाक है? इस पर इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि ये मेरा विश्वास है और मैं इस पर गवाह हूँ।

فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٨﴾
قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٩﴾ قَالُوْا
سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا
فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالُوْٓا
ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٢﴾ قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ
كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٣﴾ فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى
اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾ ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى
رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾ اُفٍّ
لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾
قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٦٨﴾
قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ وَاَرَادُوْا
بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ﴿٧٠﴾ وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا
اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ
اِسْحٰقَ ۭ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ﴿٧٢﴾

منزل٤

फिर उन्होंने उनमें बड़ी मूर्ति के अतिरिक्त सबके टुकड़े–टुकड़े कर डाले कि शायद वे इससे पलटें (58) वे बोले हमारे पूज्यों के साथ यह हरकत किसने की है बेशक वह अत्याचारियों में से है (59) कुछ लोगों ने कहा कि एक नवजवान को हमने उनकी चर्चा करते सुना है उसको इब्राहीम कहते है[1] (60) वे बोले उसको लोगों की आँखों के सामने लाओ ताकि लोग अच्छी तरह देख लें (61) उन्होंने पूछा ऐ इब्राहीम! क्या तुमने हमारे माबूदों (पूज्यों) के साथ यह हरकत की है (62) कहा बल्कि उनके इसी बड़े ने की (होगी) बस अगर बोलते हों तो ख़ुद ही उनसे पूछ लो (63) फिर उन्होंने अपने दिल ही दिल में सोचा और कहने लगे कि अन्यायी तो तुम ही हो (64) फिर उनके सिर झुक गये (और कहने लगे) तुम तो जानते ही हो कि यह बोलते नहीं[2] (65) (इब्राहीम ने) कहा तो क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ों को पूजते हो जो तुम्हें ज़रा भी फ़ायदा न पहुँचा सकती हैं और न नुकसान (66) धिक्कार तुम पर भी और उन पर भी जिनको तुम अल्लाह को छोड़ कर पूजते हो क्या तुम इतनी समझ नहीं रखते (67) वे बोले अगर तुम्हें कुछ करना हो तो उसको जला दो और अपने पूज्यों की मदद करो (68) (अतः उन्होंने उनको आग में डाल दिया और) हमने आदेश दिया ऐ आग! इब्राहीम के लिए ठंडी हो जा और पूरी की पूरी सलामती (मंगल) बन जा (69) और उन्होंने उनके साथ बुरा चाहा था मगर हमने उन्हीं को घाटे में ला डाला (70) और उनको और लूत को बचा कर ऐसी जगह पहुँचा दिया जिसमें संसारों के लिए बरकत रखी (71) और उनको हमने इस्हाक़ तथा और भी अधिक कृपा स्वरूप याक़ूब प्रदान किये और सबको सदाचारी बनाया (72)

---

(1) कोई मेले का दिन था, सारी क़ौम उसमें शामिल होने चली गई, हज़रत इब्राहीम नहीं गये थे, जब सब चले गये तो मूर्तिघर में जाकर उन्होंने सारी मूर्तियाँ तोड़ डालीं और बड़ी मूर्ति छोड़ कर कुल्हाड़ी उसकी गर्दन में लटका दी, उद्देश्य उनका यह था कि लोग अपनी आँखों से मूर्तियों की विवशता देख लें कि जो खुद अपनी रक्षा नहीं कर सकतीं वह दूसरों के क्या काम आएंगी और बड़ी मूर्ति को छोड़ा इसलिए ताकि जिस प्रकार समस्याओं में बड़े से संपर्क किया जाता है उसी प्रकार उससे संपर्क करें या खुद इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को यह कहने का अवसर रहे कि बड़ा मौजूद है कुल्हाड़ी उसकी की गर्दन में पड़ी है उसी से पूछो और इसके परिणाम स्वरूप उनकी असत्यता क़ौम के सामने आ सके, अतः जब वे वापस आये तो कहने लगे हो न हो यह इब्राहीम हो सकते हैं जो पहले ही उनको असत्य बताया करते थे (2) हज़रत इब्राहीम के इस ढंग से वे सोचने पर विवश हो गये और उनके दिलों ने गवाही दी कि दोष वास्तव में हमारा ही है, लेकिन पुरानी आस्था को छोड़ने की हिम्मत न हुई अवाक होकर सिर तो झुका दिया लेकिन कहा कि इब्राहीम तुम तो जानते ही हो कि ये बोलती नहीं, बस हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को साफ़–साफ़ सत्य बात पेश करने का अवसर मिल गया लेकिन वह क़ौम शिर्क पर जमी हुई थी, सब कुछ देख लेने के बाद भी हज़रत इब्राहीम से बदला लेने पर तैयार हो गई, उनको आग में डाल दिया मगर अल्लाह के आदेश से वह आग गुलज़ार (पुष्प वाटिका) बन गई मगर फिर भी सिवाय उनके भतीजे हज़रत लूत के और कोई ईमान न लाया, हाँ! राजा इससे प्रभावित और भयभीत हो गया और उसने और कोई कार्यवाही नहीं की और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम हज़रत लूत को लेकर इराक़ से शाम (सीरिया) चले गये, शाम को कुरआन में विभिन्न स्थानों पर बरकत वाली जगह कहा गया है।

وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ
الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿٧٣﴾
وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ
كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ﴿٧٤﴾
وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾ وَنُوْحًا
اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ
الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ
اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَدَاوٗدَ
وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ
الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ
وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۡ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ
يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۭ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ
لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ
شٰكِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖٓ
اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۭ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿٨١﴾

منزل٤

और हमने उनको पेशवा बनाया कि वे हमारे आदेश से रास्ता बताते थे और हमने उनको भलाइयाँ करने, नमाज़ क़ायम रखने और ज़कात देने की वह्य (ईशवाणी) भेजी और वे हमारी ही बन्दगी किया करते थे (73) और लूत को हमने आदेश (अर्थात पैग़म्बरी) और ज्ञान से सम्मानित किया और उस बस्ती से उनको मुक्ति दी जहाँ बड़ी गन्दी हरकतें हुआ करती थीं बेशक वह बड़ी बुरी नाफ़रमान क़ौम थी[1] (74) और उनको हमने अपनी रहमत (कृपा) में दाख़िल किया, बेशक वे सदाचारी लोगों में से थे (75) और नूह (का वर्णन कीजिए) पहले जब उन्होंने पुकारा था तो हमने उनकी दुआ सुन ली फिर उनको और उनके घर वालों को बड़ी तक़लीफ़ से मुक्ति दी (76) और उस क़ौम पर उनकी मदद की जिसने हमारी निशानियाँ झुठलाईं, बेशक वह बुरी क़ौम थी तो हमने उन सबको डुबो कर रख दिया (77) और दाऊद व सुलैमान (को भी याद कीजिए) जब वे दोनों खेत के बारे में फ़ैसला कर रहे थे जब उसमें लोगों की बकरियाँ रात को रौंद गईं और हम उनके फ़ैसले के समय मौजूद ही थे (78) तो हमने सुलैमान को वह फ़ैसला सुझा दिया[2] और प्रत्येक को हमने आदेश (यानी पैग़म्बरी) और ज्ञान से सम्मानित किया और हमने दाऊद के साथ पहाड़ों को मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया वे और पक्षी (उनके साथ) तस्बीह़ (पवित्रता बयान) करते थे और करने वाले हम ही थे[3] (79) और हमने उनको तुम्हारे लिए कवच बनाने की कला सिखाई थी ताकि तुम्हारे युद्धों में वह तुम्हारी रक्षा कर सके तो क्या तुम एहसान मानते हो (80) और सुलैमान के लिए तेज़ चलती हवा को मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया था वह उनके आदेश से ऐसी धरती तक चलती थी जिसमें हमने बरकत डाली थी और हम हर चीज़ के खूब जानने वाले हैं (81)

---

(1) लूत अ़लैहिस्सलाम की क़ौम नैतिक अराजकता और समलैंगिकता में लिप्त थी, पवित्र क़ुरआन में कई स्थानों पर उनकी इस अनैतिकता और फिर उस पर अल्लाह के अज़ाब (दण्ड) का वर्णन है (2) कहानी ये हुई कि किसी की बकरियाँ एक व्यक्ति के खेत को रात में घुस कर बर्बाद कर गईं, उसने हज़रत दाऊद की अदालत में मुकद्मा किया, उन्होंने अपनी शरीअत के अनुसार यह फ़ैसला किया कि खेत का जितना नुक़सान हुआ उसके बराबर बकरियाँ उसको दे दी जाएं, और वह नुक़सान इतना ज़्यादा हुआ था कि उसकी भरपाई में सारी बकरियां चली जाएं, हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि मेरे दिमाग़ में एक और बात भी आती है, वह ये है कि खेत वाला अपना खेत बकरी वाले को दे दे और वह उसमें मेहनत करके उसको उसी प्रकार कर दे जिस प्रकार बकरियों के बर्बाद करने से पहले था और इस बीच बकरी वाला अपनी बकरियाँ खेत वाले को दे दे जब तक खेत उसको वापस न मिल जाए उस समय तक खेत वाला बकरियों का दूध आदि प्रयोग करता रहे, इस पर दोनों खुश हो गए, यह एक सुलह का रूप था और हज़रत दाऊद का निर्णय क़ानून के अनुसार था इसलिए अल्लाह ने दोनों के बारे में कहा कि हमने दोनों को ज्ञान व हिकमत (तत्वदर्शिता) से सम्मानित किया ,इससे यह भी मालूम हुआ कि फैसला करने वाला अगर सुलह का उपाय निकाले तो अधिक बेहतर है (3) हज़रत दाऊद को अल्लाह ने बड़ी मनमोहक आवाज़ प्रदान की थी, जब वे ज़बूर पढ़ते और अल्लाह की प्रशंसा सुर के साथ करते तो पहाड़ और पक्षी भी उनके साथ तस्बीह (पवित्रता बयान) करने लगते थे, लोहे को भी अल्लाह ने उनके लिए नर्म कर दिया था जिससे वे कवच तैयार करते थे, हज़रत सुलैमान के लिए हवा काम में लगा दी गई थी महीनों की यात्रा वे हवा के द्वारा घण्टों में कर लिया करते थे।

وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٨٢﴾ وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٨٣﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَكَذٰلِكَ نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾ وَزَكَرِيَّاۤ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٨٩﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۫ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿٩٠﴾

منزل۴

और शैतानों में भी कुछ (उनके अधीन कर दिये थे) जो उनके लिए डुबकी लगाते थे और इसके अलावा दूसरे काम काज करते थे और हम ही ने उनको थाम रखा था[1] (82) और अय्यूब (का वर्णन कीजिए) जब उन्होंने अपने पालनहार को पुकारा कि मैं बड़ी तकलीफ में पड़ गया और तू सबसे बढ़ कर दया करने वाला है (83) फिर हमने उनकी प्रार्थना सुन ली और उनकी सब तकलीफ़ दूर कर दी और उनके घर वाले उन्हें दे दिये और उनके साथ उतना ही और दिया अपनी विशेष कृपा से और ताकि इबादतगुज़ारों (उपासकों) के लिए नसीहत रहे[2] (84) और इस्माईल और इद्रीस और जुलकिफ़्ल[3] (का वर्णन कीजिए) सब ही सब्र करने वाले थे (85) और हमने उनको अपनी रहमत (कृपा) में दाख़िल किया था निश्चित ही वे अच्छे लोग थे (86) और मछली वाले (का भी वर्णन कीजिए) जब वे गुस्सा होकर चले गए, समझे कि हम उन पर तंगी नहीं करेंगे बस अंधेरों ही में (खुदा को) पुकार उठे कि तेरे अलावा कोई पूज्य नहीं, तू पवित्र है, मैं ही अत्याचारियों में था[4] (87) तो उनकी दुआ भी हमने सुन ली और उनको घुटन से छुटकारा दिया और हम ईमान वालों को ऐसे ही बचा लिया करते हैं (88) और ज़करिया (का वर्णन कीजिए) जब उन्होंने अपने पालनहार को पुकारा कि ऐ मेरे पालनहार! मुझे अकेला न छोड़िए और सबसे बेहतर वारिस[5] तो आप ही हैं (89) तो उनकी दुआ भी हमने सुन ली और उनको यहया प्रदान किया और उनके लिए उनकी पत्नी को ठीक कर दिया बेशक वे सब लोग भले कामों को बढ़–चढ़ कर किया करते थे और आशा व भय में हमें पुकारते थे और हमारे लिए ख़ुशू (विनम्रता) रखने वाले थे (90)

(1) कुछ उद्दण्ड और बदमाश जिन्नातों को भी जो शैतानों में शामिल थे अल्लाह ने उनके अधीन कर दिया था वे उनसे भारी–भारी काम लेते थे जो मनुष्य के वश से बाहर होते थे, इस का विवरण सूरह सबा में आएगा (2) हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम गंभीर रोग से ग्रस्त हुए, धन–दौलत व संतान सब समाप्त हो गये परन्तु वे सब्र करते रहे और दुआ करते रहे, अंततः अल्लाह ने उनको सारी भलाइयाँ और नेमतें लौटा दीं और स्वस्थ कर दिया और संतान व धन को दोगुना कर दिया (3) जुल्किफ़्ल का वर्णन केवल यहीं एक स्थान पर आया है, यही लगता है कि वे भी पैग़म्बर थे, कुछ व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरीन) का विचार है कि पैग़म्बर तो नहीं थे परन्तु ऊँचे दर्जे के वली (ईशभक्त) थे (4) यह हज़रत यूनुस का वर्णन है जिसका वर्णन सुरह यूनुस में गुज़र चुका है कि जब क़ौम ने उनकी बात न मानी तो वे श्राप देकर चले गये और कह गये कि तीन दिन के भीतर अज़ाब आ जाएगा, उनके जाने के बाद क़ौम में डर पैदा हुआ और सब एक मैदान में निकल कर रोने–धोने लगे, अल्लाह को दया आई और क़ौम को अज़ाब से बचा लिया गया, उधर हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम के इस जल्दी चले जाने के कारण अल्लाह की ओर से प्रताड़ना हुई और एक मछली उनको निगल गई मगर वे अल्लाह के आदेश से सुरक्षित रहे और उसी अंधेरे और तंगी में व्याकुल होकर दुआ की, अल्लाह ने दुआ स्वीकार कर ली और मछली ने किनारे पर आकर उनको उगल दिया और वे सकुशल अपनी क़ौम के पास पहुँच गये (5) यानी सारी बातें आप ही की ओर लौटती हैं और हर चीज़ आपके कब्ज़े में है।

وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَ
جَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾ اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ
اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖۗ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٢﴾ وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ
بَيْنَهُمْ ۭ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ
وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾ وَ
حَرٰمٌ عَلٰي قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾ حَتّٰٓي اِذَا
فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾
وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ۭ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ
كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾ اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
حَصَبُ جَهَنَّمَ ۭ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَاۗءِ
اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۭ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيْهَا
زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ
لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ اُولٰۗىِٕكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ
حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٢﴾

منزل ٤

और (उसको भी याद कीजिए) जिसने अपनी सतीत्व (इफ़्फ़त) की रक्षा की और हमने उसमें अपने पास से रूह़ (आत्मा) फूँक दी और उसे और उसके बेटे को सारे संसारों के लिए एक निशानी बना दिया[1] (91) यह तुम्हारा गिरोह (जमाअत) एक ही गिरोह है और मैं तुम्हारा पालनहार हूँ तो मेरी इबादत करो (92) और उन्होंने अपने बीच अपने मामले में काँट–छाँट कर डाली (हालांकि) सबको लौट कर हमारे ही पास आना है[2] (93) तो जो भलाइयाँ करेगा और वह ईमान वाला होगा तो उसकी मेहनत की नाक़द्री न होगी और हम उसके लिए लिखने वाले हैं (94) और सम्भव नहीं जिस बस्ती को हमने हलाक कर डाला कि वे लौट कर आएं (95) यहाँ तक कि जब याजूज और माजूज को खोल दिया जाएगा और वे हर बुलन्दी से उमड पड़ेंगे (96) और सच्चा वादा क़रीब आ चुकेगा तो बस काफिरों की निगाहें फटी की फटी रह जाएंगी (वे कहेंगे) हाय हमारा दुर्भाग्य! बेशक हम ही इससे असावधान थे बल्कि अत्याचारी हम ही थे[3] (97) तुम और तुम जिसकी उपासना (इबादत) करते हो बेशक सब दोज़ख का ईंधन हैं, तुम्हें वहां जाना ही है[4] (98) अगर यह खुदा होते तो वहां प्रवेश न करते जब कि सब उसी में हमेशा रहेंगे (99) वहां वे चींखते–चिल्लाते होंगे और वहां उनको (कान पड़ी) आवाज़ सुनाई न देगी (100) बेशक जिसको हमारी ओर से पहले ही भलाई मिल गई वे लोग उससे दूर रखे जायेंगे (101) उसकी आहट भी न सुनेंगे और जो उनकी इच्छा होगी उसी में हमेशा रहेंगे[5] (102)

---

(1) हज़रत मरियम और उनके सुपुत्र ईसा जिनको बिना बाप के पैदा करके अल्लाह ने अपनी शक्ति/क्षमता की एक निशानी बना दिया (2) अल्लाह भी एक और शरीअत के मूल–भूत नियम भी समान, हर पैग़म्बर ने तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत दी (बुलाया) और आख़िरत की ओर ध्यान दिलाया लेकिन लोगों ने मनमानी करके मतभेद पैदा किया और अलग–अलग रास्ते अपना लिए (3) याजूज–माजूज का निकलना क़यामत की एक निशानी है फिर और निशानियाँ भी आती जाएंगी और लोगों की आँखें फटी की फटी रह जाएंगी (4) पत्थर की जिन मूर्तियों को पूजते हो वह सब दोज़ख का ईंधन बनेंगी ताकि उनका असहाय होना तुम देख लो और शारीरिक यातना के साथ मानसिक यातना का स्वाद भी तुम्हें चखना पड़े (5) दोज़ख से सत्यवादियों को इतना दूर रखा जाएगा कि उसका एहसास भी उनको न हो और वे जिस प्रकार ऐश के साथ ज़िंदगी गुज़ारना चाहें गुज़ारें।

(उस दिन की) बड़ी घबराहट भी उनको दुखी न करेगी और फ़रिश्ते उनका स्वागत करने आएंगे (और कहेंगे) यही तुम्हारा वह दिन है जिस का तुमसे वादा किया जाता था (103) जिस दिन हम आसमान को किताबी दफ़्तर की तरह लपेट देंगे जिस प्रकार शुरू में हमने उसको बनाया था दोबारा उसी प्रकार हम उसको कर देंगे यह हमारे ज़िम्मे है हम करके रहेंगे (104) और हमने उपदेश (नसीहत) के बाद ज़बूर में लिख दिया था कि ज़मीन के वारिस मेरे भले बन्दे होंगे (105) उसमें बेशक इबादत करने वाले बन्दों के लिए पूरी तब्लीग़ (प्रचार) है[1] (106) और हमने आपको सारे संसारों के लिए दया (रहमत) बना कर भेजा है[2] (107) कह दीजिए कि मुझ पर वह्य (ईलाही वाणी) आती है कि तुम्हारा उपास्य (माबूद) केवल एक उपास्य है तो क्या तुम मानते हो? (108) फिर अगर वे मुँह फेरें तो कह दीजिए तुम सबको बराबर मैंने सावधान कर दिया और मैं नहीं जानता कि तुमसे जिस चीज़ का वादा है वह क़रीब है या दूर (109) बेशक वह बुलन्द आवाज़ की बातें भी जानता है और उसको भी जानता है जो तुम छिपाते हो[3] (110) और मैं नहीं जानता शायद वह तुम्हारे लिए परीक्षा हो और एक अवधि तक के लिए थोड़ा सामान[4] (111) (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने) कहा ऐ मेरे पालनहार! तू ही सच्चाई के साथ निर्णय कर दे और हमारा पालनहार बड़ा दयालु है, उसी से सहायता चाही जाती है उन बातों पर जो तुम बयान करते रहते हो[5] (112)

सूरह हज

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

ऐ लोगो! अपने पालनहार से डरो बेशक क़यामत का भूकंप एक बड़ी चीज़ है (1)

---

(1) ईमान वाले बन्दों से यह अल्लाह का वादा था जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत (सम्प्रदाय) के द्वारा हुआ, धरती के बड़े भूभाग पर न्याय व इंसाफ़ क़ायम हुआ और ईमान वाले बन्दों ने उस पर राज किया, अब यह भविष्यवाणी दोबारा क़यामत के निकट हज़रत ईसा और इमाम मेंहदी के द्वारा पूरी होगी (2) पूरी दुनिया विनाश के रास्ते पर पड़ गई थी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी मुक्ति का प्रबन्ध किया और इन्सानों को इंसानियत का पाठ पढ़ाया, कमज़ोरों और पीड़ितों की सहायता करना सिखाया, महिलाओं को उनका स्थान बताया, दोस्त–दुश्मन सब आपकी करुणा– सागर से लाभांवित हुए यहां तक कि पशु व पक्षी भी इससे वंचित न रहे और आपके द्वारा दिए गए आदेशों का सब को लाभ पहुँचा (3) अंतिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सार्वभौमिकता के बयान के साथ–साथ तौहीद (एकेश्वरवाद) को बयान किया जा रहा है कि उनकी महान दया का सार तौहीद (एकेश्वरवाद) है (4) यानी अगर तुम नहीं मानते तो दुनिया में आराम से रहना भी एक परीक्षा है, कुछ दिनों की बात है फिर अल्लाह के दण्ड का सामना करना पड़ेगा (5) अंततः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कह दिया और यही पैग़म्बरों का तरीक़ा है, वे सारे मामले उसी अल्लाह के हवाले करते हैं और उसी पर भरोसा करते हैं और उसी से मदद चाहते हैं।

जिस दिन तुम उसको देखोगे कि हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी और हर गर्भवती महिला अपने गर्भ को गिरा देगी और आपको दिखाई देगा कि लोग नशे में हैं जब कि वे नशे में न होंगे बल्कि अल्लाह का अज़ाब है ही बड़ी कठोर चीज़[1] (2) और लोगों में कुछ वे हैं जो अल्लाह के बारे में बिना जाने बूझे झगड़ते हैं और हर उदण्ड (सरकश) शैतान के पीछे चल देते हैं (3) जिसके लिए तय है कि जो कोई उसको दोस्त बनाएगा तो वह उसको बहका देगा और भड़कती हुई (दोज़ख़ के) अज़ाब तक पहुंचा देगा (4) ऐ लोगो! अगर तुम्हें उठाए जाने में शक है तो (विचार तो करो) हमने तुम को मिट्टी से फिर वीर्य से फिर ख़ून के टुकड़े से फिर बोटी से पैदा किया[2] पूरी तरह बना कर और पूरी तरह न बना कर भी ताकि तुम्हारे लिए हम बात खोल दें और गर्भाशयों में हम जिसको जितना चाहते हैं एक निर्धारित अवधि तक के लिए ठहराते हैं फिर तुम्हें बच्चा बना कर निकालते हैं ताकि फिर तुम भरी जवानी को पहुँच जाओ और तुम में कुछ उठा लिए जाते हैं और कुछ निकम्मी उम्र तक पहुँचाए जाते हैं कि जानते–बूझते भी कुछ समझते नहीं[3] और धरती को तुम देखोगे कि वह सूखी है फिर जब हमने उस पर वर्षा की तो लहलहा गई और फूली–फली और हर प्रकर के सुदृश्य पौधे उसने उगा दिये[4] (5) यह (सब इसीलिए है) कि अल्लाह ही सत्य है और वही मुर्दों को जीवित करेगा और वह हर चीज़ की बड़ी सामर्थ्य (कुदरत) रखता है[5] (6)

(1) यह क़यामत की भयानकता का वर्णन है फिर आगे शैतान की बात मानने वालों के लिए कठोर परिणाम का उल्लेख है (2) जो लोग मरने के बाद जीवित होने को कठिन समझते हैं उनसे कहा जा रहा है कि अपनी रचना पर ही विचार कर लो कि अल्लाह तआला ने किस प्रकार आश्चर्यजनक चरणों से गुजारकर इस मंज़िल तक पहुँचाया, तुम्हारा वजूद न था, तुम्हें अनास्तित्व से अस्तित्व प्रदान किया, जान डाली, भला जो अनास्तित्व से अस्तित्व में ला सकता हो उसके लिए दोबारा उठा कर खड़ा कर देना क्या कठिन है? (3) बच्चा मुकम्मल होकर माँ के पेट से निकलता है और कभी नामुकम्मल भी रह जाता है और गर्भ गिर जाता है या उसी कमी के साथ वह पैदा होता है, यह सब उसकी निशानियाँ हैं, फिर पैदा होने वाले कभी बचपन ही में समाप्त हो जाते हैं वरना जवानी को पहुंचते हैं और कुछ इतनी लम्बी आयु के होते हैं कि सब कुछ भूल जाते हैं और जो कुछ उन्होंने सीखा होता है वह भूल जाते हैं और उनकी हालत बच्चों जैसी हो जाती है, हदीस में ऐसी निकम्मी उम्र से पनाह मांगी गई है (4) कुछ मरने के बाद की निशानियों में से यह महत्वपूर्ण निशानी है कि एकदम मरी हुई ज़मीन में एक वर्षा से कैसी जान पड़ जाती है तो जो अल्लाह मुर्दा धरती को जीवित कर सकता है क्या वह एक मानव को मरने के बाद नहीं जीवित कर सकता? (5) यानी यह सारी घटनाएं अल्लाह की शक्ति, युक्ति (हिकमत) और एक होने के प्रमाण हैं।

وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ
فِى الْقُبُوْرِ ۝٧ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ
وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝٨ ثَانِىَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝٩ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ
بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝١٠ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ
فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ اطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ انْقَلَبَ عَلٰى
وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝١١
يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ هُوَ
الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۝١٢ يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗٓ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ؕ
لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ۝١٣ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝١٤ مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ
يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى
السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ۝١٥

ع

منزل٤

और क़यामत आ कर रहेगी इसमें कोई संदेह नही और अल्लाह उन सबको उठाएगा जो कब्रों में हैं (7) और कुछ लोग वे हैं जो ज्ञान और हिदायत (मार्गदर्शन) और रौशन किताब के बिना अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं (8) इतरा–इतरा कर, ताकि अल्लाह के रास्ते से फेर दें, उनके लिए दुनिया में भी अपमान है और क़यामत के दिन जलाने वाले अज़ाब (दण्ड) का हम उनको स्वाद चखाएंगे[1] (9) यही (बदला) है उसका जो तुमने अपने हाथों से भेजा है और अल्लाह अपने बंदों पर ज़रा भी अत्याचार नहीं करता (10) और कुछ लोग वे हैं जो दूर ही दूर से अल्लाह की इबादत करते हैं फिर अगर उनको कोई दुनियावी फ़ायदा हासिल हुआ तो उससे संतुष्ट हो गए और अगर परीक्षा हुई तो उलटे फिर गये, उन्होंने दुनिया भी खोई और आख़िरत भी और यही तो खुला हुआ घाटा है[2] (11) अल्लाह को छोड़ कर ऐसों को पुकारते हैं जो उनको न नुक़सान पहुँचा सकते हैं न फ़ायदा और यही परले दर्जे की पथ भ्रष्टता है (12) ऐसों को पुकारते हैं जिनका नुक़सान फ़ायदा से अधिक निकट है, निश्चित ही वे बुरे सहायक और बुरे साथी हैं[3] (13) बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए ऐसी जन्नतों में प्रवेश कराएगा जिनके नीचे नहरें जारी होगीं बेशक अल्लाह जो चाहता है करता है (14) जो समझता है कि अल्लाह दुनिया व आख़िरत में उनकी मदद करेगा ही नहीं तो वह किसी ज़रिये से आकाश तक पहुँच जाए फिर (वह्य व मदद) का सिलसिला काट दे तो देखें कि उसके उपाय से उसका गुस्सा ठंडा पड़ा[4] (15)

(1) खुली हुई दलीलों को सुनने के बावजूद बहुत से लोग केवल ज़िद और दुश्मनी में झगड़ते हैं और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, न उनके पास कोई प्रमाण है न तर्क, अल्लाह तआला उसको अपमानित करके रहेगा और आख़िरत का अज़ाब इसके अतिरिक्त है, इसमे विशेष रूप से मक्का के मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) का उल्लेख है कि उन्होंने कोई कसर न छोड़ी लेकिन अंततः अल्लाह ने उनको अपमानित किया (2) हिज़रत (देश त्याग) के बाद बहुत सी ऐसी घटनाएं घटीं कि कुछ लोग दुनियावी लाभ के लिए ईमान लाए लेकिन जब उनकी आशा पूरी न हुई तो फिर काफ़िर हो गए आमतौर से मुनाफ़िकों (कपटाचारियों) ने यह शैली अपनाई थी जिधर लाभ देखते उधर हो लेते ऐसे लोगों को चेतावनी दी जा रहा है (3) यानी जिनको अल्लाह के साथ साझी ठहराते हैं उनका फ़ायदा क्षणिक है और नुक़सान तुरन्त और अनिवार्य है और कयामत में शिर्क करने वाले भी उन साझिदारों के बारे में कहेंगे कि "लबिसल मौला व–ल बिसल अशीर"(4) इसका मतलब यह बयान किया गया है कि आसमान पर चढ़ जाएं तो अल्लाह की ओर से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जो वह्य आ रही है उसको जाकर काट दें और ज़ाहिर है कि ऐसा सम्भव नहीं, बस तो अपने गुस्से में घुट–घुट कर मरें और क्यों कि अरबी में गला घोंट कर आत्म हत्या करने के लिए भी यह व्यंजन प्रयोग किया जाता है, अर्थात जो यह समझता है कि अल्लाह अपने पैग़म्बर की सहायता नहीं करेगा तो अब वह क्रोध और झुंझुलाहट में पड़ा रहेगा, वह आत्म हत्या करके देख ले कि उसका गुस्सा ठंडा पड़ा या नहीं।

और इसी प्रकार हमने इसको खुली आयतों (के रूप में) उतारा है और अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत देता है (16) बेशक जो ईमान लाए और जो यहूदी हुए और साबी[1] और जो ईसाई और मजूसी[2] और शिर्क करने वाले हैं बेशक अल्लाह क़यामत के दिन इन सबका फ़ैसला कर देगा, बेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है[3] (17) भला आपने नहीं देखा कि सब ही अल्लाह के लिए सज्दा करते हैं जो भी आसमानों और ज़मीन में हैं और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़ और पेड़ और पशु और बहुत से इंसान भी[4] और बहुत से वे हैं जो अज़ाब (दण्ड) के अधिकारी हो चुके और जिसको अल्लाह अपमानित कर दे उसको कोई सम्मान नहीं दे सकता, बेशक अल्लाह जो चाहता है वही करता है (18) यह दो पक्ष हैं[5] जो अपने पालनहार के बारे में झगड़े तो जिन्होंने इनकार किया उनके लिए आग का लिबास तैयार किया गया है उनके सिर के ऊपर से खौलता पानी डाला जाएगा (19) उससे उनके पेट की सारी वस्तुएं और खालें गल जाएंगी (20) और उनके लिए लोहे के हथौड़े होंगे (21) जब भी तकलीफ़ से वे निकलना चाहेंगे उसी में ढकेल दिए जाएंगे और (कहा जाएगा कि) जलती आग का स्वाद चखो (22) बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये ऐसी जन्नतों में प्रवेश कराएगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी वहां उनको सोने के कंगन और मोती से सजाया जाएगा और वहां उनका लिबास रेशम का होगा (23)

(1) एक समुदाय था जो सितारों को पूजता था, हर्रान उसका विशेष केन्द्र था, हज़रत ईसा के बाद उनमें ईसाई धर्म भी फैला लेकिन एक बड़ी संख्या पुराने धर्म पर अंत तक क़ायम रही (2) यह लोग आग को पूजते हैं और दो सृष्टा मानते हैं एक भलाई का जिसका नाम यज़दाँ है और दूसरा बुराई का जिसका नाम अहरमन है (3) इस आयत में साफ़–साफ़ कह दिया गया है कि क़यामत में सब की कलई खुल जाएगी सब अल्लाह के सामने हैं, जिन्होंने अल्लाह को माना वे सफल होंगे वरना अपने किये की सज़ा उन्हें भुगतनी पड़ेगी (4) अल्लाह की सब सृष्टि अल्लाह की प्रशंसा में और सज्दा करने में व्यस्त है, हम उसको समझ नहीं पाते, वह अल्लाह की आज्ञापालन से तनिक मुँह नहीं मोड़ती, अल्लाह ने जिसको जिस काम पर लगा दिया वह उसमें व्यस्त है हाँ! मनुष्यों में बहुत से बात मानने वाले और अल्लाह के आगे झुकने वाले भी हैं और बहुत से उदण्डी (सरकश) भी (5) एक पक्ष ईमान वालों का और एक इनकार करने वालों का।

وَهُدُوٓا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۖ وَهُدُوٓا إِلَىٰ صِرَاطِ
الْحَمِيدِ ﴿٢٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ
وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ
فِيهِ وَالْبَادِ ۚ وَمَن يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ
عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٥﴾ وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَن لَّا
تُشْرِكْ بِي شَيْئًا وَطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَ
الرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿٢٦﴾ وَأَذِّن فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا
وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِن كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ﴿٢٧﴾ لِّيَشْهَدُوا
مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي أَيَّامٍ مَّعْلُومَاتٍ
عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّن بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۖ فَكُلُوا مِنْهَا
وَأَطْعِمُوا الْبَائِسَ الْفَقِيرَ ﴿٢٨﴾ ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ
وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٢٩﴾
ذَٰلِكَ وَمَن يُعَظِّمْ حُرُمَاتِ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ عِندَ رَبِّهِ ۗ
وَأُحِلَّتْ لَكُمُ الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ ۖ فَاجْتَنِبُوا
الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ ﴿٣٠﴾

ع

منزل٤

और उनको पवित्र कलाम (वाणी) की हिदायत (मार्ग दर्शन) मिली और प्रशंसनीय (अल्लाह) का रास्ता मिला (24) बेशक जिन्होंने कुफ़्र (इनकार) किया और वे अल्लाह के रास्ते से और उस मस्जिद–ए–ह़राम से रोकते हैं जिसको हमने (सारे) लोगों के लिए बनाया है वहाँ के रहने वाले हों या दूर से आने वाले सब बराबर हैं और जो उसमें शरारत से टेढ़ का इरादा भी करेगा तो हम उसे दुखद अज़ाब (दण्ड) चखाएंगे[1] (25) और जब हमने इब्राहीम को (अल्लाह के) घर का स्थान बता दिया[2] (और आदेश दिया) कि मेरे साथ किसी को साझी मत करना और मेरे घर को तवाफ़ करने वालों और खड़े होने वालों और रूकु व सज्दा करने वालों के लिए पवित्र रखना (26) और लोगों में हज के लिए ऐलान कर दो, वे पैदल भी आएंगे और ऐसी दुबली–पतली ऊँटनियों पर भी आएंगे जो हर सुदूर रास्तों से चली आती होंगी (27) ताकि वे अपने फ़ायदों के लिए उपस्थित रहें और मालूम दिनों में चौपायों में से उन जानवरों पर अल्लाह का नाम लें जो अल्लाह ने उन्हें दिये हैं तो उसमें से खाओ और दुखी मोहताज़ को भी खिलाओ[3] (28) फिर उन्हें चाहिए कि वे अपना मैल–कुचैल दूर कर लें और अपनी मन्नतें पूरी करें और (प्राचीनतम) घर का प्रतिबद्धता के साथ तवाफ़ (इस्लामी परिक्रमा) करें (29) यह है (अल्लाह का आदेश) और जो भी अल्लाह की (निर्धारित) सम्मानित चीज़ों का आदर करता है तो यह उसके लिए उसके पालनहार के निकट बेहतर है और चौपाये तुम्हारे लिए हलाल किये गये हैं सिवाय उनके जिनको बताया जाता रहा है तो मूर्तियों की गंदगी से बचो और झूठ बात से बचो[4] (30)

(1) काबा और हज के स्थान, अरफात, मुज़दलिफ़ा और मिना सब सारे लोगों के लिए बराबर हैं, हर एक ईमान वाले को वहां आने का अधिकार है, फिर अगर कोई किसी को रोकता है और ग़लत इरादे करता है तो उसके लिए कठोर दण्ड है, यह विशेष रूप से उस सम्मानित स्थल के आदर की बात है कि वहां पाप का इरादा भी पाप है (2) बैतुल्लाह (अल्लाह का घर) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से पहले ही बन चुका था मगर फिर धीरे–धीरे उसके लक्षण मिट गए थे, अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को वह स्थान बताया और फिर उन्होंने अपने सुपुत्र इस्माईल अ़लैहिस्सलाम के साथ मिल कर उसको निर्मित किया और अल्लाह के आदेश से हज की आवाज़ लगाई जो अल्लाह ने दुनिया के कोने–कोने में पहुँचा दी, वह दिन है और आज का दिन हज़ारों लाखों आदमी खिंचे चले आते हैं, बार–बार आते हैं मगर दिल नहीं भरता, अच्छी सवारियाँ न भी हों तो साधारण सवारियों से आते हैं, "दुबली–पतली ऊँटनियों" में इसकी ओर इशारा है और सुदूर से यात्रा की ओर भी इशारा है कि लंबी दूरी की वजह से वे दुबली हो जाती हैं (3) असल तो आख़िरत के लाभ हैं मगर साथ–साथ और भी लाभ प्राप्त हो जाते हैं और हज़ में क़ुर्बानी का बहुत महत्व है इसलिए विशेष रूप से उसको बयान किया और गोश्त कहाँ प्रयोग होगा इसको भी बयान कर दिया कि खुद भी खाओ और गरीबों को भी खिलाओ और विशेष रूप से अल्लाह का नाम लेने का उल्लेख किया कि इन दिनों में ज़िक्र (अल्लाह की याद) का बड़ा पुण्य है और अल्लाह के नाम पर क़ुर्बानी करना बड़े सवाब (पुण्य) की बात है, क़ुर्बानी के बाद बाल बनवा लिए जाएं, नाखून कटवा लिए जाएं और सब मैल–कुचैल साफ़ कर लिया जाए, सिर मुँडाने के बाद फिर तवाफ़–ए–ज़ियारत है जो हज के फ़र्ज़ों में से है, आगे उसका वर्णन किया जा रहा है। (4) क़ुर्बानी के उल्लेख के अवसर पर यह बात साफ़ कर दी गई कि जिन जानवरों को मूर्तियों के नाम पर छोड़ कर उसको हराम समझा जाता है वे सब अपनी ओर से गढ़ी हुई बातें हैं, अल्लाह ने जो जानवर हलाल किये हैं, सूरह माईदा में उनको बताया जा चुका है, वह सब हलाल हैं, तो मूर्तियों की अपवित्रता से भी बचो और झूठी बात कहने से भी बचो।

حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا
خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ
مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿۳۱﴾ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ
تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿۳۲﴾ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ
مَحِلُّهَاۤ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿۳۳﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا
لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ
فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗۤ اَسْلِمُوْا ؕ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿۳۴﴾
الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى
مَاۤ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِى الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۳۵﴾
وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ
فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا
فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا
لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۳۶﴾ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا
دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا
لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳۷﴾

ع

منزل۴

शुद्ध अल्लाह के होकर उसके साथ साझी न ठहराकर, और जिसने अल्लाह के साथ साझी ठहराया तो मानो वह आकाश से गिरा तो पक्षियों ने उसे नोच डाला या हवा ने उसको कहीं दूर ले जाकर फेंक दिया[1] (31) यही (बात) है और जिस ने अल्लाह की निशानियों का आदर किया तो निश्चित ही यह दिल के तक़्वे की बात है[2] (32) उन (जानवरों) में तुम्हारे लिए एक निर्धारित अवधि तक के लिए लाभ है फिर बैत–ए–अतीक़ के निकट उनको पहुँचना है[3] (33) और हर क़ौम के लिए हमने क़ुर्बानी रखी है ताकि वे उन चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उन्हें अल्लाह ने दिए है (और क़ुर्बानी करें) बस तुम्हारा सिर्फ़ पूज्य एक ही है तो उसी के लिए झुक जाओ और नम्रता अपनाने वालों को शुभ समाचार दे दीजिए (34) जिनका हाल यह है कि जब (उनके सामने) अल्लाह का उल्लेख होता है तो उनके दिलों की धड़कन तेज़ हो जाती है और जो तकलीफ़ उनको पहुँचती है उस पर सब्र करने वाले हैं और नमाज़ को क़ायम रखने वाले हैं और हमने जो रोज़ी उनको दी है उसमें से खर्च करते रहते हैं (35) और क़ुर्बानी के जानवरों को हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानियों में से बनाया है, उनमें तुम्हारे लिए भलाई है तो उनको पंक्तियों में खड़ा करके उन पर अल्लाह का नाम लो फिर जब वे अपने पहलू के बल गिर जाएं तो उनमें से खाओ और सब्र से बैठे रहने वालों को भी खिलाओ और बेक़रारी दिखाने वालों को भी, इसी प्रकार हमने उनको तुम्हारे नियंत्रण में दे दिया है ताकि तुम एहसान मानो[4] (36) अल्लाह को उनका गोश्त और ख़ून कदापि नहीं पहुँचता, हाँ! उसको तो तुम्हारे (दिल) का तक़वा पहुँचता है[5] अल्लाह ने इसी प्रकार उनको तुम्हारे नियंत्रण में कर दिया है ताकि तुम्हें अल्लाह ने जो हिदायत प्रदान कर दी[6] उस पर उसकी बड़ाई बयान करो और आप बेहतर काम करने वालों को शुभ समाचार दे दीजिए (37)

(1) ईमान का उदाहरण आकाश से दिया गया है, जिसने साझी ठहराया मानो वह आकाश से गिरा और इच्छाओं ने उसको नोच डाला फिर शैतान ने कहीं दूर ले जाकर फेंक दिया (2) अल्लाह की निशानियाँ वे चीज़ें हैं जो अल्लाह से विशेष संबंध रखती हैं, हज के मकामात इसमें विशेष रूप से शामिल हैं (3) बैत–ए–अतीक़ का आशय समस्त हरम है, क़ुर्बानी का जानवर वहाँ पहुँचा कर क़ुर्बान किया जाता है और जब तक उसको क़ुर्बानी के लिए ख़ास न किया जाए उससे दूसरे लाभ उठाए जा सकते हैं फिर आगे उसी क़ुर्बानी के संबंध में स्पष्ट कर दिया कि केवल अल्लाह ही के लिए होना चाहिए अगर उस पर अल्लाह के अलावा किसी और का नाम लिया गया तो शिर्क है (4) क़ुर्बानी के जानवरों के साथ भी अच्छा व्यवहार करने का आदेश है इसलिए कि अल्लाह के नाम पर उनको ज़िबह होना है, ऊँट को ज़िबह करने का तरीक़ा "नहर" है, उसको क़िब्ला (काबा) की ओर मुँह करके खड़ा करते हैं और एक हाथ उसका बाँध कर उसकी छाती पर जख़्म लगाया जाता है ताकि सारा ख़ून निकल जाए बस वह फिर गिर पड़ता है, उसके टुकड़े करके खाओ, हर प्रकार के ज़रूरतमंदों को खिलाओ जो अपनी आवश्यकता ज़ाहिर न करते हों और संतुष्ट रहते हों, उनको भी और जो आवश्यकता ज़ाहिर कर दें उनको भी (5) क़ुर्बानी का उद्देश्य (फलसफ़ा) बयान कर दिया गया, गोश्त खाना–खिलाना और ख़ून बहाना उद्देश्य नहीं मूल उद्देश्य अल्लाह की ख़ुशी और बलिदान की भावना है (6) हर काम बेहतर तरीक़े पर हो यहाँ तक कि ज़िबह भी बेहतर तरीक़े पर किया जाए जिसका हदीस में इस तरह आदेश दिया गया है, "कि जब तुममें कोई ज़िबह करे तो छुरी तेज़ करले और जानवर को आराम दे" (और उसको तकलीफ़ न पहुँचाएं)।

إِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ
خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ﴿۳۸﴾ اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ
عَلٰي نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ﴿۳۹﴾ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ
اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ۭ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ
بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ
فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۭ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ
عَزِيْزٌ ﴿۴۰﴾ اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا
الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۭ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ
الْاُمُوْرِ ﴿۴۱﴾ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ
وَّثَمُوْدُ ﴿۴۲﴾ وَقَوْمُ اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ﴿۴۳﴾ وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ
مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۴۴﴾
فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰي عُرُوْشِهَا
وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿۴۵﴾ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ
لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا
تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ﴿۴۶﴾

منزل۴

बेशक अल्लाह ईमान वालों का संरक्षण करता है, अल्लाह किसी विश्वासघाती नाशुक्रे को पसंद नहीं करता (38) जिन (मुसलमानों) से युद्ध किया जा रहा हो उनको भी अब (युद्ध की) अनुमति दी जाती है इसलिए कि उन पर बहुत अत्याचार हो चुका और अल्लाह उनकी सहायता करने की पूरी सामर्थ्य रखता है[1] (39) जिनको अनुचित रूप से उनके घरों से केवल इसलिए निकाला गया कि वे कहते हैं कि हमारा रब अल्लाह है और अगर अल्लाह लोगों की शक्ति एक दूसरे से घटाता न रहता तो ख़ानक़ाहें और गिरजा और पूजा स्थल और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का ख़ूब नाम लिया जाता है मिटा कर रख दिये जाते और जो अल्लाह (के दीन) की सहायता करेगा अल्लाह उसकी ज़रूर सहायता करेगा। निश्चित रूप से अल्लाह पूरी शक्ति रखता है ज़बरदस्त है[2] (40) ये वे लोग हैं जिनको अगर हम धरती में बल प्रदान करें तो वे नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें और भलाई का आदेश दें और बुराई से रोकें और सारे कामों का अंजाम अल्लाह ही के हाथ में है[3] (41) और अगर वे आपको झुठलाते हैं तो आपसे पहले नूह की क़ौम और आद व समूद भी (अपने पैग़म्बरों को) झुठला चुके हैं (42) और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम भी (43) और मदयन वाले भी, और मूसा भी झुठलाए गए तो मैंने काफिरों को ढील दी फिर उनको धर पकड़ा तो मेरी सज़ा कैसी कठोर हुई (44) और कितनी बस्तियों को हमने नष्ट (हलाक) कर दिया कि वे अत्याचार पर तत्पर थीं तो वे छतों के बल गिर पड़ी हैं और कितने कुँवे बेकार और कितने मज़बूत महल (खण्डर) पड़े हैं (45) क्या वे धरती में चले–फिरे नहीं कि उनके दिल ऐसे होते जिनसे वे विचार कर सकते या कान होते जिनसे वे सुन सकते तो आँखें अंधी नहीं होतीं लेकिन वे दिल अंधे हो जाते हैं जो छातियों के भीतर हैं (46)

(1) मुसलमान पवित्र मक्का में तेरह वर्षों तक अत्याचार सहते रहे मगर उनको हाथ उठाने की अनुमति न दी गई, हिज़रत के बाद यह पहली आयत है जिसमें मुसलमानों को युद्ध की अनुमति दी जा रही है और इससे पहले यह खुशख़बरी भी दे दी गई कि अल्लाह मुसलमानों ही की मदद करेगा, बद्र युद्ध में इसक प्रथम प्रदर्शन हुआ जब एक हज़ार की सेना तीन सौ तेरह निहत्थे मुसलमानों के हाथों अल्लाह की मदद से पराजित हुई (2) इसमें जिहाद का लाभ बयान किया गया है, सारे पैग़म्बरों ने अल्लाह की इबादत के लिए उपासना स्थल बनाये, हज़रत ईसा के मानने वालों ने ख़ानकाहें और गिरजाघर निर्माण कराये, जिनको सौमअह और बीअह कहा जाता है, हज़रत मूसा के अनुयायियों ने जो उपासना स्थल बनाये उनको "सलवात" कहा गया है और मुसलमानों के उपासना स्थल को मस्जिद कहा जाता है, अपने–अपने ज़माने में अगर सत्यवादियों को मुकाबले की अनुमति न होती तो यह सब उपासना स्थल ढ़ा दिये जाते और उनका नामोनिशान मिट जाता, यहाँ ये भी स्पष्ट कर दिया गया कि उपासना स्थलों में कम ही अल्लाह का नाम लिया गया, हाँ! मस्जिदों में अल्लाह का ख़ूब नाम लिया जाता है (3) इस आयत में जिहाद का उद्देश्य स्पष्ट किया गया है कि शक्ति प्राप्ति सरकार व सत्ता के लिए नहीं बल्कि अल्लाह के क़ानून को लागू करने के लिए है।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ۚ وَاِنَّ يَوْمًا
عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ
اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿٤٨﴾ قُلْ
يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَاۤ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾ وَالَّذِيْنَ سَعَوْا
فِيْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنَا
مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّاۤ اِذَا تَمَنّٰۤى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ
فِيْۤ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ
اٰيٰتِهٖ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٢﴾ لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ
فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ۗ وَ
اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾ وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ
قُلُوْبُهُمْ ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٤﴾
وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ
السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿٥٥﴾

منزل٤

वे आपसे अज़ाब की जल्दी करते हैं और अल्लाह हरगिज़ अपने वादे के ख़िलाफ़ न करेगा और आपके रब के पास एक दिन तुम्हारी गिनती के अनुसार एक हज़ार साल का है (47) और कितनी ऐसी बस्तियाँ हैं जिनको हमने ढील दी हालांकि वे अत्याचारी थीं फिर हमने उनको दबोच लिया और हमारे ही पास लौट कर आना है[1] (48) कह दीजिए ऐ लोगो! मैं तो तुम्हारे लिए खुल कर डराने वाला हूँ (49) तो जो ईमान लाए और उन्होंने भले काम किये उनके लिए माफ़ी और सम्मान की रोज़ी है (50) और जो हमारी निशानियों को नीचा दिखाने के प्रयास में लगे हैं वही लोग दोज़ख़ी हैं[2] (51) और आप से पहले हमने जो भी रसूल और नबी भेजे जब वे पढ़ते तो शैतान उनकी पढ़ी हुई चीज़ में संदेह डाल देता तो शैतान जो संदेह डालता है अल्लाह उसको दूर कर देता है फिर अल्लाह अपनी आयतों को सुदृढ़ कर देता है और अल्लाह खूब जानता है और हिकमत रखता है[3] (52) ताकि शैतान जो वसवसह (बुरा विचार) डालता है उसको उन लोगों के लिए परीक्षा बना दे जिनके दिलों में रोग है और जिनके दिल कठोर हैं और निस्संदेह अत्याचारी लोग परले दर्जे के विरोध में लगे हैं (53) और ताकि ज्ञान वाले जान लें कि वह आपके पालनहार की ओर से सत्य ही है तो वे उस पर ईमान ले आएं फिर उनके दिल उसके लिए झुक जाएं और निस्संदेह अल्लाह ईमान वालों को सीधा रास्ता दिखाता ही है (54) और क़ाफिर बराबर उसके बारे में संदेह ही में रहेंगे यहां तक कि अचानक उन पर क़यामत आ जाएगी या उन पर उस दिन का अज़ाब आ पहुंचेगा जिसमें छुटकारे की कोई गुंजाइश नहीं (55)

---

(1) विगत क़ौमों के उदाहरण उनके पास हैं, ढील सबको मिली लेकिन कोई बच न सका इसके बावजूद भी यह अज़ाब की जल्दी करते हैं जबकि हिसाब व किताब का दिन बड़ा कठोर है और सांसारिक गिनती के लिहाज़ से उसकी अवधि एक हज़ार वर्ष की है (2) अल्लाह की निशानियों को नीचा दिखाने का प्रयास हर युग में हुआ है, आज भी बड़ी–बड़ी शक्तियाँ इसी में लगी हैं लेकिन उन्हें अपने अंजाम की ख़बर नहीं, पवित्र कुरआन ने उनके दोज़ख़ी होने की घोषणा की है, दुनिया में चाहे बच कर निकल जाएं लेकिन दोज़ख़ के अजाब से नहीं बच सकते (3) पवित्र कुरआन की आयतों में मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) के दिलों में शैतान विभिन्न प्रकार के संदेह पैदा करता, तो अल्लाह तआला सुदृढ़ (मुहकम) आयतों से उनको दूर कर देता है बस वह मुतशाबेह आयतें न मानने वालों के लिए परीक्षा हैं और वे उनको लेकर विभिन्न प्रकार की उल्टी–सीधी बातें निकालते हैं और कहीं से कहीं पहुंचा देते हैं और मानने वाले उसको सत्य समझते हैं, इसी को दूसरी जगह इस प्रकार कहा, अनुवाद– "वही है जिसने आप पर किताब उतारी, इसमें मुहकम (सुदृढ़) आयतें हैं वह किताब की मूल हैं और दूसरी आयतें मुतशाबेह हैं बस जिन लोगों के दिलों में टेढ़ है वे मुतशाबेह आयतो के पीछे लग जाते हैं फित्ने की चाहत में और उसका मतलब जानने की इच्छा में जब कि उसका मतलब केवल अल्लाह ही जानता है और सुदृढ़ ज्ञान रखने वाले कहते हैं कि हम उन पर ईमान लाए, सब हमारे पालनहार ही की ओर से है और उपदेश बुद्धिमान ही प्राप्त करते हैं।"

الملك يومئذ لله ۗ يحكم بينهم ۗ فالذين امنوا و
عملوا الصلحت في جنت النعيم ﴿٥٦﴾ والذين كفروا و
كذبوا بايتنا فاولئك لهم عذاب مهين ﴿٥٧﴾ والذين
هاجروا في سبيل الله ثم قتلوا او ماتوا ليرزقنهم
الله رزقا حسنا ۗ وان الله لهو خير الرزقين ﴿٥٨﴾
ليدخلنهم مدخلا يرضونه ۗ وان الله لعليم
حليم ﴿٥٩﴾ ذلك ۚ ومن عاقب بمثل ما عوقب به
ثم بغي عليه لينصرنه الله ۗ ان الله لعفو غفور ﴿٦٠﴾
ذلك بان الله يولج اليل في النهار ويولج النهار
في اليل وان الله سميع بصير ﴿٦١﴾ ذلك بان الله هو
الحق وان ما يدعون من دونه هو الباطل وان
الله هو العلي الكبير ﴿٦٢﴾ الم تر ان الله انزل
من السماء ماء فتصبح الارض مخضرة ۗ ان
الله لطيف خبير ﴿٦٣﴾ له ما في السموت وما
في الارض ۗ وان الله لهو الغني الحميد ﴿٦٤﴾

منزل٤

उस दिन बादशाही केवल अल्लाह की[1] है, उनके बीच वही फ़ैसला करेगा तो जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए वे नेमतों की जन्नतों में होंगे (56) और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुठलाईं तो ऐसों के लिए अपमानजनक अज़ाब है (57) और जिन्होंने अल्लाह के रास्ते में घर बार छोड़ा फिर वे मारे गये या उनका निधन हो गया उनको अल्लाह ज़रूर अच्छी जीविका (रोज़ी) प्रदन करेगा और निस्संदेह अल्लाह ही सबसे बेहतर जीविका देने वाला है (58) वह ऐसी जगह उनको ज़रूर प्रवेश कराएगा कि वे उससे खुश हो जाएंगे और निस्संदेह अल्लाह ख़ूब जानता है सहनशील है (59) यह तो है ही और जिसने उतना ही बदला लिया जितनी उसको तकलीफ़ पहुँचाई गई फिर उस पर अत्याचार किया गया तो अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा निस्संदेह अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा क्षमाशील है[2] (60) यह इसलिए कि अल्लाह ही है जो रात को दिन पर लाता है और दिन को रात पर लाता है और अल्लाह ख़ूब–ख़ूब सुनता ख़ूब देखता है[3] (61) यह इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है और उस के अलावा वे जिसको पुकारते हैं वे असत्य हैं और अल्लाह ही उच्च है बड़ा है (62) क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह ने ऊपर से वर्षा की तो धरती हरी–भरी हो जाती है निस्संदेह अल्लाह बड़ा मेहरबान है ख़ूब जानकारी रखता है (63) आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब उसी का है और अल्लाह ही है जो बेनियाज़ है (जिसे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं) प्रशंसनीय गुणों वाला है[4] (64)

(1) उस दिन जाहिरी तौर पर भी किसी को कोई अधिकार न होगा (2) मक्के में तेरह वर्ष पूर्ण रूप से हाथ रोके रखने का आदेश था फिर मदीने में मुकाबला करने की अनुमति दी गई, अब यहां जो भी अत्याचार करे पीड़ित को बदला लेने का अधिकार दिया जा रहा है मगर उतना ही जितना उस पर अत्याचार हुआ हो और ऊपर अल्लाह के गुण ''हलीम'' (सहनशील) का उल्लेख करके संकेत दे दिया गया कि माफ़ कर देना बेहतर है, बदला लेने के बाद अगर अत्याचारी फिर अत्याचार करता है तो अल्लाह की मदद का वादा है (3) जो इतनी बड़ी शक्ति वाला है क्या वह इसकी सामर्थ्य नहीं रखता होगा कि वह एक पीड़ित क़ौम या पीड़ित व्यक्ति की सहायता करे, आयत में यह भी संकेत है कि परिस्थितियाँ रात–दिन की तरह पलटा खाने वाली हैं जिस प्रकार अल्लाह तआला रात को दिन में ले लेता है उसी प्रकार कुफ़्र की धरती को इस्लाम में प्रवेश करा देगा, आगे बंजर धरती पर वर्षा का उदाहरण देकर ये संकेत भी है कि शीघ्र ही वह कुफ़्र की सूखी व वीरान ज़मीनों को इस्लाम की वर्षा से हरा–भरा बना देगा (4) जब वह हर वस्तु का मालिक है तो जो चाहे करे हाँ! वह करता वही है जो पूरी की पूरी हिकमत (युक्ति) और मसलेहत (उचित) हो, उसके सारे काम प्रशंसनीय हैं, उसमें सारे गुण प्रशंसनीय विद्यमान हैं।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ
فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۭ وَيُمْسِكُ السَّمَاۗءَ اَنْ تَقَعَ عَلَي الْاَرْضِ
اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٥﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ
اَحْيَاكُمْ ۡ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۭ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ﴿٦٦﴾
لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي
الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ۭ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٦٧﴾
وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٨﴾ اَللّٰهُ
يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمْ
تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ فِيْ كِتٰبٍ ۭ
اِنَّ ذٰلِكَ عَلَي اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٧٠﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا
لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ عِلْمٌ ۭ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ
مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٧١﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِيْ
وُجُوْهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ۭ يَكَادُوْنَ يَسْطُوْنَ بِالَّذِيْنَ
يَتْلُوْنَ عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۭ قُلْ اَفَاُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكُمْ ۭ
اَلنَّارُ ۭ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٢﴾

منزل۴

क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह ही ने धरती की सारी चीज़ों को तुम्हारे वश में कर दिया है और नावों को भी जो समुद्र में उसी के आदेश से चलती हैं और आकाश को उसी ने थाम रखा है कि धरती पर आ न पड़े हाँ! मगर (जब) उसी का आदेश हो, बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है[1] (65) और वही है जिसने तुम्हें जीवन प्रदान किया फिर वह तुम्हें मौत देगा, फिर वह (दोबारा) तुम्हें ज़िन्दा करेगा, बेशक इंसान बड़ा नाशुक्रा है (66) हर सम्प्रदाय (उम्मत) के लिए हमने उपासना का एक तरीक़ा रखा है वे उसी पर चल रहे हैं तो इस समस्या में उन्हें आपसे झगड़ना न चाहिए और आप तो अपने पालनहार की ओर बुलाते जाइए निस्संदेह आप ही सीधे रास्ते पर हैं[2] (67) और अगर वे आप से झगड़ें तो कह दीजिए कि तुम जो कर रहे हो अल्लाह उसको ख़ूब जानता है (68) तुम जिन बातों में विभेद कर रहे हो क़यामत के दिन अल्लाह तुम्हारे बीच इस समस्या में फ़ैसला कर देगा (69) क्या आपको नहीं मालूम कि आसमान व ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह सब जानता है, ये सब किताब में मौजूद है निस्संदेह यह सब अल्लाह के लिए आसान है[3] (70) और वे अल्लाह को छोड़ कर (दूसरों की) उपासना करते हैं जिसका अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा और जिसका उन्हें ज्ञान भी नहीं और अन्याय करने वालों का कोई मददगार नहीं (71) और जब उनके सामने साफ़–साफ़ हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो आप काफ़िरों के चेहरों पर नागवारी महसूस करेंगे, लगता है कि वे उन लोगों पर हमला ही कर बैठेंगे जो उनके सामने हमारी आयतों को पढ़ते हैं, कह दीजिए कि मैं इससे नागवार चीज़ न बता दूं, आग है जिसका वादा अल्लाह ने काफ़िरों से कर रखा है और वह बहुत बुरा ठिकाना है[4] (72)

---

(1) यह केवल अल्लाह की कृपा है कि उसने आसमान, ज़मीन, चाँद, सूरज, सितारे और सारी सृष्टि को मनुष्य के काम पर लगा रखा है, अन्तरिक्ष में सब बिना सहारे के परिक्रमा कर रहे हैं तनिक भी कोई इधर से उधर हो जाए तो सारी व्यवस्था अस्त–व्यस्त हो जाए और जब अल्लाह का आदेश होगा और क़यामत आएगी तो सब कुछ समाप्त हो जाएगा उसका चित्रण दूसरी आयतों में मौजूद है (2) सारे पैग़म्बरों ने तौहीद (एकेश्वरवाद) का निमंत्रण दिया और धर्म के मूल नियम सबके समान रहे हैं हाँ! इबादत के रूप विभिन्न युगों में भिन्न–भिन्न रहे हैं, जिनके अनुसार वे सम्प्रदाय (उम्मतें) एक अल्लाह की उपासना करती रही हैं, अंतिम रसूल (संदेष्टा) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सारी दुनिया के लिए भेजा गया और एक विशेष शरीअत दी गई लेकिन मूल धर्म सदा से एक ही रहा, अल्लाह के अतिरिक्त किसी की उपासना को निर्धारित नहीं किया गया इसलिए तौहीद जैसे सर्वमान्य कामों में झगड़ा करना किसी के लिए किसी हाल में उचित नहीं, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करके कहा जा रहा है कि अगर फिर भी लोग नहीं मानते तो आप अपना काम किये जाइये और उनका मामला अल्लाह के हवाले कर दीजिये, ऐसे हठधर्मी लोगों का इलाज अल्लाह के पास है (3) हर वस्तु का वजूद अल्लाह के ज्ञान से जुड़ा हुआ है और लौह–ए–महफ़ूज़ में लिखा हुआ है (4) कुछ वे हैं कि तौहीद (एकेश्वरवाद) की बात सुन कर बहुत क्रोधित होने लगते हैं और लगता है कि सच्चाई की ओर बुलाने वालों पर हमला ही कर बैठेंगे और ऐसा कर भी जाते हैं, उनसे कहा जा रहा है कि आगे की चिंता करो और अपनी सोचो कि शिर्क के परिणाम स्वरूप तुम्हारा क्या अंजाम होने वाला है।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ
تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ
اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ
مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ﴿۷۳﴾ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ
حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِیٌّ عَزِيْزٌ ﴿۷۴﴾ اَللّٰهُ يَصْطَفِیْ مِنَ
الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿۷۵﴾
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ
الْاُمُوْرُ ﴿۷۶﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَ
اعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۩ ﴿۷۷﴾
وَجَاهِدُوْا فِی اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا
جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِی الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ
اِبْرٰهِيْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ مِنْ قَبْلُ وَفِیْ هٰذَا
لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى
النَّاسِ ۖۚ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا
بِاللّٰهِ ؕ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿۷۸﴾

منزل ۴

ऐ लोगो! एक उदाहरण दिया गया है तो उसे ध्यान से सुनो, जिनको तुम अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हो वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते चाहे वे सब उसके लिए एकट्ठा हो जाएं और अगर मक्खी उनकी कोई वस्तु ले उड़े तो उससे छीन भी नहीं सकते, लचर है ऐसा मांगने वाला भी और वह भी जिससे मांगा जा रहा है[1] (73) उन्होंने अल्लाह को जैसा पहचानना चाहिए था न पहचाना बेशक अल्लाह तो बड़ी शक्ति वाला ज़बरदस्त है[2] (74) अल्लाह फरिश्तों में भी संदेश वाहक चुनता है और मुनष्यों में भी बेशक अल्लाह ख़ूब सुनता खूब जानता है (75) उनके आगे–पीछे हर वस्तु से वह अवगत है और सब काम उसी की ओर लौटते हैं (76) ऐ ईमान वालो! रूकू करो और सज्दा करो और अपने पालनहार की इबादत करो और भले काम करो शायद तुम्हें सफ़लता प्राप्त हो (77) और अल्लाह के रास्ते में जैसा चाहिए प्रयास करते रहो, उसी ने तुम्हें चुना है और तुम्हारे लिए दीन में कोई तंगी नहीं रखी, अपने बाप इब्राहीम की (मिल्लत पर क़ायम रहो) उन्होंने ही तुम्हारा नाम मुसलमान रखा, पहले (किताबों में) भी और इस (किताब) में भी ताकि रसूल तुम पर गवाह बनें और तुम लोगों पर गवाह बनो[3] तो नमाज़ क़ायम रखो, ज़कात देते रहो और अल्लाह को मज़बूती के साथ थामे रहो वही तुम्हारा काम बनाने वाला है तो क्या ख़ूब बनाने वाला है और क्या ख़ूब मददगार है (78)

(1) मक्खी एक बहुत ही साधारण जीव है, उसका उदाहरण दिया जा रहा है कि जिन को अल्लाह के साथ साझीदार ठहराया जा रहा है वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते और मूर्तियों का हाल यह है कि यदि मक्खी उन पर बैठ जए तो उड़ा भी नहीं सकते, ऐसों से मांगना कैसी शर्मनाक और मूर्खता की बात है (2) शिर्क की बुराई करने के बाद ईमान वालों को संबोधित किया जा रहा है कि तुम अपने असली कार्य में लगे रहो केवल अपने पालनहार की इबादत करो उसी के आगे माथा टेको और उसी की खुशी के लिए दूसरे भलाई के कार्य करते रहो और इसके प्रयास में लगे रहो, तुम्हारा नाम मुस्लिम रखा गया और तुमसे पहले भी पैग़म्बरों के मानने वाले मुस्लिम ही थे मगर यह उपाधि तुम्हारी ही ठहरी तो इसकी लाज रखो (3) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी उम्मत (सम्प्रदाय) के मोमिनों के पक्ष में गवाही देंगे कि यह लोग ईमान लाए थे और मुसलमान दूसरी उम्मतों के बारे में गवाही देंगे कि पैग़म्बरों ने उनको अल्लाह का संदेश पहुंचा दिया था और जब प्रश्न होगा कि तुम क्या जानो तो उत्तर में यह उम्मत (सम्प्रदाय) कहेगी कि हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें बताया।

सूरह मोमिनून

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

बेशक ईमान वाले सफ़ल हो गए (1) जो अपनी नमाज़ों में विनम्रता (ख़ुशू) अपनाते हैं[1] (2) और जो फ़ुज़ूल ख़र्ची में नहीं पड़ते (3) और जो ज़कात के कार्य को जारी रखने वाले हैं[2] (4) और जो अपने गुप्तांग (शर्मगाह) की रक्षा करने वाले हैं (5) सिवाय अपनी पत्नियों या उन (लौंडियों) के जिनके वे मालिक[3] हो चुके हैं तो (इसमें) उन पर कोई निंदा नहीं (6) जो इसके अतिरिक्त चक्कर में पड़ेगा तो ऐसे ही लोग सीमा लांघे हुए हैं (7) और जो अपनी धरोहरों और प्रतिज्ञा का लिहाज़ रखने वाले हैं (8) और जो अपनी नमाज़ों का ध्यान रखने वाले हैं[4] (9) यही लोग हैं जो वारिस होने वाले हैं (10) जो (जन्नतुल) फिरदौस के वारिस होंगे उसी में हमेशा रहेंगे[5] (11) और हमने इनसान को मिट्टी के जौहर से बनाया है (12) फिर उसे एक सुरक्षित स्थान में वीर्य के रूप में रखा (13) फिर वीर्य को खून का लोथड़ा बनाया फिर खून के लोथड़े को मांस का टुकड़ा किया फिर मांस के टुकड़े को हड्डियों का रूप दिया फिर हड्डियों पर मांस चढ़ाया फिर उसे एक नया रूप बना कर अस्तित्व प्रदान किया, तो कैसा बरकत वाला है अल्लाह जो सबसे उत्तम पैदा करने वाला है[6] (14) फिर उसके बाद तय बात है कि तुम्हें मरना है (15) फिर तुम्हें अवश्य क़यामत के दिन उठाया जाएगा (16) और हमने तुम्हारे ऊपर सात तल बनाए और हम सृष्टि से ग़ाफ़िल (बेख़बर) नहीं हैं[7] (17)

---

(1) ख़ुशू कहते हैं विनम्रता के साथ दिल को अल्लाह की ओर लगाए रखना (2) ज़कात का अर्थ है पवित्र करना, ज़कात के भुगतान से धन पवित्र होता है और शुद्धिकरण से इंसान का मन–मस्तिष्क पवित्र होता है, यहाँ ज़कात से आशय धन की ज़कात भी हो सकता है और तज़किया (शुद्धिकरण) का कार्य भी (3) अब ऐसी लौंडियों का अस्तित्व विलुप्त हो गया (4) पाबन्दी (प्रतिबद्धता) भी करते हैं और उसकी शिष्टता का ध्यान भी रखते हैं (5) मुसनद अहमद में आता है इस सूरह की प्रारंभिक दस आयतों में जो बातें उल्लेख की गई हैं यदि कोई व्यक्ति वे बातें अपने भीतर पैदा करले तो वह सीधा जन्नत में जाएगा, जन्नत का वारिस ऐसे लोगों को इसलिए कहा गया है कि विरासत में कोई अपनी ओर से परिवर्तन नहीं कर सकता, वह एक निश्चित वस्तु है (6) मानव उत्पत्ति अल्लाह की शक्ति की एक निशानी है, अल्लाह की किताब में उत्पत्ति का जो क्रम चौदह सौ वर्ष पहले बयान हुआ था आज दुनिया उसको मानने पर विवश है, फिर प्राण डाल कर अल्लाह ने उसको एक नई शान प्रदान की, परन्तु कह दिया कि यह एक मध्यवर्ती काल है फिर तुम्हें मरना है और अल्लाह के सामने हाज़िर होना है (7) परत/तल (तबक) हर उस वस्तु को कहते हैं जो एक दूसरे के ऊपर हो, इसीलिए इसका अर्थ आकाश भी लिया गया है और ग्रहों के रास्ते या घेरे भी लिया गया है, मानो धरती के ऊपर परत दर परत सात घेरे हैं।

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِی الْاَرْضِ ۖ وَاِنَّا عَلٰی
ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ﴿۱۸﴾ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِیْلٍ وَّ
اَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِیْهَا فَوَاكِهُ كَثِیْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَشَجَرَةً
تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَیْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِیْنَ ﴿۲۰﴾ وَ
اِنَّ لَكُمْ فِی الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۚ نُسْقِیْكُمْ مِّمَّا فِیْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِیْهَا
مَنَافِعُ كَثِیْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَعَلَیْهَا وَعَلَی الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿۲۲﴾
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰی قَوْمِهٖ فَقَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ
مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۲۳﴾ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ
قَوْمِهٖ مَا هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ یُرِیْدُ اَنْ یَّتَفَضَّلَ عَلَیْكُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ
اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۖۚ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِیْۤ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِیْنَ ﴿۲۴﴾ اِنْ هُوَ
اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰی حِیْنٍ ﴿۲۵﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِیْ
بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿۲۶﴾ فَاَوْحَیْنَاۤ اِلَیْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْیُنِنَا وَ
وَحْیِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِیْهَا مِنْ كُلٍّ
زَوْجَیْنِ اثْنَیْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَیْهِ الْقَوْلُ
مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِیْ فِی الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿۲۷﴾

وقف لازم

ع

منزل۴

और हमने ठीक अनुमान के अनुसार ऊपर से पानी बरसाया तो उसको धरती में ठहरा दिया और निश्चित ही हम उसको गायब कर देने का अधिकार भी रखते हैं (18) फिर उससे हमने तुम्हारे लिए खजूर और अंगूर के बाग़ खड़े कर दिये, उसमें तुम्हारे लिए ख़ूब फल हैं और उसी में से तुम खाते हो (19) और वह पेड़ जो सैना पर्वत में निकलता है तेल भी देता है और खाने वालों के लिए सालन भी[1] (20) और तुम्हारे लिए चौपायों (पशुओं) में भी अवश्य शिक्षा है, उन के पेट से हम तुम्हें (अच्छा दूध) पिलाते हैं और उनमें तुम्हारे लिए बहुत से फ़ायदे हैं और उनमें से तुम खाते भी हो (21) और उन पर और नाव पर तुम्हें सवार भी किया जाता है[2] (22) और हमने नूह को उनकी क़ौम के पास भेजा तो उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई उपास्य नहीं फिर क्या तुम डरते नहीं (23) उनकी क़ौम के काफिरों में से सम्मानित लोग बोले यह तो तुम्हारे ही जैसे मनुष्य हैं, यह तुममें बड़े बनना चाहते हैं और अगर अल्लाह की चाहत ही होती तो वह फरिश्ते उतारता, हमने पहले अपने बाप–दादा से तो इस प्रकार नहीं सुना (24) यह तो पागल जैसा आदमी मालूम होता है तो थोड़ी प्रतीक्षा कर लो (25) कहा ऐ मेरे पालनहार! जैसे उन्होंने मुझे झुठलाया है तू ही मेरी सहायता कर[3] (26) तो हमने उनको वह्य भेजी कि हमारे सामने और आदेश के अनुसार नाव बनाओ फिर जब हमारा अज़ाब आ पहुँचे और तंदूर उबल पड़े तो उसमें हर एक (जीव) के दो–दो जोड़ों को और अपने घर वालों को सवार कर लो सिवाय उनके जिनके बारे में पहले ही (हलाकत की) बात हो चुकी है और उनमें जिन्होंने अत्याचार किया उनके बारे में मुझ से बात मत करना, वे डूब कर रहेंगे[4] (27)

(1) अर्थात ज़ैतून का पेड़ जो बड़ी संख्या में सीरिया के क्षेत्र में होता है, उसका तेल बड़ा लाभकारी और मूल्यवान समझा जाता है और सालन के रूप में भी प्रयोग होता है (2) पशु के पेट से खून और गोबर के बीच से ऐसा साफ़ दूध निकलना अल्लाह की शक्ति की निशानियों में से है, मनुष्य के लिए वह बड़ा वरदान (नेमत) है फिर इन पशुओं का गोश्त भी भोजन के रूप में प्रयोग होता है और फिर कितने जानवर सवारी के लिए प्रयोग होते हैं (3) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम साढ़े नौ सौ वर्ष दावत की मेहनत करते रहे मगर जब लोगों ने बात न मानी तो उन्होंने अल्लाह से दुआ की कि इन अभागियों के विरुद्ध मेरी सहायता कर क्योंकि ये मुझे झुठलाने से रुकने वाले नहीं, औरों को भी पथभ्रष्ट करेंगे (4) परिवार में भी उन्हीं को सवार कराना जो ईमान वाले हैं और कुफ़्र (नकारने) के कारण जिनकी बर्बादी निश्चित हो चुकी है उनको मत सवार करना।

فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ
الَّذِي نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ ﴿٢٨﴾ وَقُلْ رَّبِّ أَنْزِلْنِي مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا
وَّأَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ﴿٢٩﴾ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّإِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ﴿٣٠﴾
ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِينَ ﴿٣١﴾ فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا
مِّنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ
الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِلِقَاءِ الْاٰخِرَةِ وَأَتْرَفْنٰهُمْ
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مَا هٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ
وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ﴿٣٣﴾ وَلَئِنْ أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا
لَّخٰسِرُونَ ﴿٣٤﴾ أَيَعِدُكُمْ أَنَّكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظٰمًا أَنَّكُمْ
مُّخْرَجُونَ ﴿٣٥﴾ هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ ﴿٣٦﴾ إِنْ هِيَ إِلَّا
حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٣٧﴾ إِنْ هُوَ
إِلَّا رَجُلٌ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٣٨﴾ قَالَ
رَبِّ انْصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِينَ ﴿٤٠﴾
فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَاءً فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ
الظّٰلِمِينَ ﴿٤١﴾ ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا اٰخَرِينَ ﴿٤٢﴾

ع ٢

منزل ٤

फिर जब तुम और तुम्हारे साथ वाले नाव पर ठीक से सवार हो जाएं तो कहना कि मूल प्रशंसा तो अल्लाह की है जिसने हमें अत्याचारी क़ौम से छुटकारा दिया (28) और कहना कि ऐ मेरे पालनहार! मुझे बरकतों के साथ (नाव से) उतार और तू ही सबसे अच्छा उतारने वाला है (29) निस्संदेह इसमें निशनियां हैं और हम हैं जाँचने वाले (30) फिर उनके बाद हमने दूसरी क़ौमों को ला खड़ा किया (31) तो उनमें भी हमने उन्हीं में से एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई माबूद (उपास्य) नहीं भला तुम डरते नहीं[1] (32) उनकी क़ौम के सम्मानित लोग बोले जिन्होंने कुफ़्र किया था और आख़िरत की भेंट को झुठलाया था और जिनको हमने सांसारिक जीवन के ऐश में डाल रखा था कि यह तो तुम्हारे ही जैसे मनुष्य हैं जो तुम खाते हो वही यह खाते हैं और जो तुम पीते हो वही यह पीते हैं (33) और अगर तुम अपने ही जैसे मनुष्य के अनुयायी बन गये तब तो तुम अवश्य घाटे ही में रहे (34) क्या वह तुम को डराता है कि जब तुम मिट्टी और हड्डी रह जाओगे तो तुम्हें निकाला जाएगा (35) बड़ी ही दूर की बात है जिससे तुम्हें डराया जा रहा है (36) बस यही हमारा सांसारिक जीवन है हम मरते हैं और जीते हैं हमें उठाया–बैठाया नहीं जाएगा (37) यह व्यक्ति तो अल्लाह पर झूठ बांधता है और हम इसकी बात मानने वाले नहीं हैं (38) उन्होंने दुआ की ऐ मेरे पालनहार! जिस प्रकार यह मुझे झुठला रहे हैं इस पर तू ही मेरी सहायता कर (39) कहा थोड़ी ही देर में ये पछताते रह जाएंगे (40) बस एक चिंघाड़ ने सच्चे वादे के अनुसार उनको आ दबोचा तो हमने उनको कूड़ा– करकट बना कर रख दिया, बस अत्याचारी क़ौम धुत्कार दी गयी (41) फिर उनके बाद हमने दूसरी क़ौमें ला खड़ी कीं (42)

(1) ऐसा लगता है कि यह हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम का उल्लेख है जिन्हें समूद नामक क़ौम की ओर भेजा गया क्योंकि आगे आ रहा है कि उनकी क़ौम को चिंघाड़ ने नष्ट (हलाक) किया, यह अज़ाब हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम ही पर आया था।

ما تسبق من أمة أجلها وما يستأخرون ﴿٤٣﴾ ثم أرسلنا
رسلنا تترا كل ما جاء أمة رسولها كذبوه فأتبعنا بعضهم
بعضا وجعلناهم أحاديث فبعدا لقوم لا يؤمنون ﴿٤٤﴾ ثم
أرسلنا موسى وأخاه هارون بآياتنا وسلطان مبين ﴿٤٥﴾
إلى فرعون وملإيه فاستكبروا وكانوا قوما عالين ﴿٤٦﴾ فقالوا
أنؤمن لبشرين مثلنا وقومهما لنا عابدون ﴿٤٧﴾ فكذبوهما
فكانوا من المهلكين ﴿٤٨﴾ ولقد آتينا موسى الكتاب لعلهم
يهتدون ﴿٤٩﴾ وجعلنا ابن مريم وأمه آية وآويناهما إلى
ربوة ذات قرار ومعين ﴿٥٠﴾ يا أيها الرسل كلوا من الطيبات
واعملوا صالحا إني بما تعملون عليم ﴿٥١﴾ وإن هذه أمتكم أمة
واحدة وأنا ربكم فاتقون ﴿٥٢﴾ فتقطعوا أمرهم بينهم زبرا
كل حزب بما لديهم فرحون ﴿٥٣﴾ فذرهم في غمرتهم حتى
حين ﴿٥٤﴾ أيحسبون أنما نمدهم به من مال وبنين ﴿٥٥﴾ نسارع
لهم في الخيرات بل لا يشعرون ﴿٥٦﴾ إن الذين هم من خشية
ربهم مشفقون ﴿٥٧﴾ والذين هم بآيات ربهم يؤمنون ﴿٥٨﴾

منزل ٤

कोई क़ौम अपने निर्धारित समय से न आगे बढ़ सकती है न पीछे हो सकती है[1] (43) फिर हमने लगातार रसूल भेजे, जब भी किसी सम्प्रदाय (उम्मत) के पास रसूल आता वे उसको झुठला देते तो हम भी एक के बाद दूसरी क़ौम लाते रहे और उनको हमने क़िस्से–कहानियाँ बना दिया तो जो क़ौम ईमान नहीं लाई वह धुत्कार दी गई[2] (44) फिर हमने अपनी निशानियों और खुले प्रमाण के साथ मूसा और उनके भाई हारून को भेजा (45) फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास तो उन्होंने अकड़ दिखाई और वे बहुत ऊँचे बनने वाले लोग थे (46) तो वे बोले हम अपने जैसे दो आदमियों पर ईमान ले आएं और उनकी क़ौम हमारी गुलामी करती है[3] (47) बस उन्होंने उन दोनों को झुठला दिया तो वे भी तबाह लोगों में शामिल हो गये (48) और हमने मूसा को किताब इसलिए दी थी कि शायद वे लोग सत्यमार्ग (हिदायत) पर आ जाएं (49) और हमने मरियम के बेटे और मरियम को एक निशानी बनाया और दोनों को एक टीले पर ठहराया जहाँ सुकून भी था और स्रोत भी[4] (50) ऐ पैग़म्बरो! पवित्र वस्तुएं खाओ और भले काम करो तुम जो करते हो वह हम जानते हैं[5] (51) और यह तुम्हारी उम्मत (सम्प्रदाय) सब एक ही उम्मत है और मैं तुम्हारा पालनहार हूँ तो मुझ ही से डरो (52) फिर लोगों ने अपने मामले को टुकड़ों में बाँट दिया, हर गिरोह के पास जो है वह उसी में मस्त है[6] (53) तो उनको थोड़े दिन नशे में रहने दीजिए (54) क्या वे समझते हैं कि हम दुनिया में उनको जो धन व संतान दिये जा रहे हैं (55) तो उनको जल्दी–जल्दी भलाइयाँ पहुँचा रहे हैं, बात यह है कि उनको एहसास ही नहीं[7] (56) निःसंदेह जो अपने पालनहार के डर से काँपते रहते हैं (57) और जो अपने पालनहार की निशानियों में विश्वास करते हैं (58)

(1) इनकार के फलस्वरूप जिस क़ौम के लिए विनाश का जो समय निर्धारित था वह उसी समय हलाक की गयी (2) अर्थात रसूलों का तांता बाँध दिया, एक के बाद एक पैग़म्बर भेजते रहे और झुठलाने वालों में भी एक को दूसरे के पीछे चलता करते रहे (3) फ़िरऔन ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम बनी इस्राईल को गुलाम बना रखा था तो अल्लाह ने क़ौम को फ़िरऔन से नजात दी और उनके मार्ग दर्शन के लिए तौरेत उतारी लेकिन बहुत कम लोगों ने उसको माना (4) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का बिना बाप के हज़रत मरियम अलैहिस्सलाम के पेट से पैदा होना अल्लाह की बड़ी निशनियों में से है (5) पवित्र खाने का बड़े अच्छे अन्दाज़ में पहले वर्णन किया कि वह भले कार्य करने में सहयोग करता है उससे सदकर्म का सामर्थ्य प्राप्त होता है, हराम खाने से अच्छे कामों के करने का सामर्थ्य छिन जाता है (6) सारे पैग़म्बरों ने तौहीद (एकेश्वरवाद) की ओर बुलाया फिर उनकी क़ौमों ने उसको भुला दिया और वे अलग–अलग रास्ते पर हो गये और हर क़ौम अपने ही तरीक़े में मस्त है किसी को विचार करने का भी सौभाग्य नहीं होता (7) दुनिया में हर प्रकार की सुख–सुविधा और संसाधन के फलस्वरूप काफ़िरों को भ्रान्ति हो रही है उन्होंने दुनिया ही को सब कुछ समझ लिया है जब कि असल आख़िरत की नेमतें हैं फिर आगे ईमान वालों के गुणों का बयान है और अंत में बताया गया है कि यह लोग हैं जो भलाई को बटोरने में लगे हैं।

और जो अपने पालनहार के साथ साझीदार नहीं ठहराते (59) और उनको जो देना है वह देते हैं और उनके दिल इससे काँपते रहते हैं कि उनको अपने पालनहार के पास वापस जाना है (60) यही वे लोग हैं जो बढ़–चढ़ कर भलाइयाँ करते रहते हैं और वे उसमें बाज़ी मारने वाले हैं (61) और हम किसी पर भी उसकी क्षमता से अधिक बोझ नहीं डालते और हमारे पास किताब (मौजूद) है जो सच–सच बात बताती है, और उनके साथ ज़रा भी अन्याय न होगा (62) बल्कि उन (काफ़िरों) के दिल इस ओर से बेहोश हैं और उसके अतिरिक्त उनके और काम लगे हैं जिनको वे कर रहे हैं[1] (63) यहाँ तक कि जब हम उनके अय्याश लोगों को अज़ाब के शिकंजे में कसेंगे तो उस समय वे हाहाकार मचाएंगे (64) आज मत चीखो–चिल्लाओ, तुमको हमारी ओर से कुछ मदद न मिलेगी (65) बात यह है कि मेरी आयतें तुम्हें सुनाई जाती थीं तो तुम उल्टे पैर भागते थे (66) उससे अकड़ कर कहानियों में व्यस्त हो कर बकवास किया करते थे[2] (67) क्या उन्होंने बात पर विचार ही नहीं किया या उनके पास कोई ऐसी चीज़ आ गई जो उनके पहले बाप–दादा के पास नहीं आई थी (68) या अपने रसूल को पहचाना ही नहीं तो उनका इनकार कर बैठे[3] (69) या वे कहते हैं कि उनको कुछ जुनून है, बात यह है कि वे सच्चाई को लेकर आए हैं और उनमें अधिकांश सच्चाई ही से नफ़रत करते हैं[4] (70) और अगर सच्चाई उनकी चाहतों के अनुसार हो जाए तो आसमान व ज़मीन और उनमें सब कुछ बिगड़ कर रह जाए बल्कि हमने उनके पास उनका उपदेश (किताब) पहुँचा दिया है तो वे अपने उपदेश से मुँह फेर रहे हैं (71) क्या आप उनसे कोई शुल्क मांग रहे हैं तो आपके पालनहार का मुआवजा बेहतर है और वह सबसे अच्छी रोज़ी (जीविका) देने वाला है[5] (72) और आप तो उनको सीधे रास्ते की ओर बुलाते हैं (73) और जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते निश्चित ही वे रास्ते से किनारा करने वाले हैं (74)

(1) यानी आख़िरत के हिसाब–किताब से असावधान हैं और दुनिया के दूसरे धंधों में पड़े हुए हैं, जिनसे निकलने का समय ही नहीं मिलता कि आख़िरत की ओर ध्यान दें (2) मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) की आदत थी कि रात में एकत्र होकर क़िस्से–कहानियाँ कहते और पवित्र क़ुरआन के बारे में विभिन्न प्रकार की टिप्पणी करते, कोई शायरी बताता कोई कुछ और (3) समस्त अरब आपके हालात से अवगत था, सादिक़ (सच्चा) व अमीन (विश्वसनीय) कहते–कहते जिनकी ज़बाने न थकती थीं, अब अचानक वह (अल्लाह की पनाह) झूठा हो गया (4) उनका दिल जानता था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सच्चाई लेकर आए हैं लेकिन चूँकि उससे उनकी चाहतें आहत होती थीं इसलिए उनको बुरी लगती थीं और स्वीकार न करते थे, अल्लाह आगे कहता है कि सच बात उनको बुरी लगती हैं तो यह सच्चाई उनके अधीन नहीं हो सकती वरना पूरी व्यवस्था अस्त–व्यस्त हो कर रह जाएगी (5) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो केवल अल्लाह के लिए बुलाते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी शुल्क नहीं माँगा बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम को सख़्त क़ुर्बानियाँ देनी पड़ीं।

وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ
وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٧٦﴾ حَتّٰۤى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ
اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ
وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾ وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي
الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ
وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٨٠﴾ بَلْ قَالُوْا
مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٨١﴾ قَالُوْۤا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّ
عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٨٢﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا
مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨٣﴾ قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ
وَمَنْ فِيْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٤﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا
تَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ
الْعَظِيْمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٨٧﴾ قُلْ مَنْۢ
بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾

ع

منزل۴

और अगर हम उन पर रहम कर दें और उन्हें जो तकलीफ़ है वह दूर कर दें तो ज़रूर वे अपनी उदण्डता (सरकशी) में घुस कर हाथ–पाँव मारने लगेंगे (75) और हमने उनको अज़ाब में पकड़ा भी है तो न वे अपने पालनहार के लिए झुके और न वे गिड़गिड़ाते हैं[1] (76) यहाँ तक कि जब हम उन पर कठोर दण्ड का दरवाज़ा खोल देंगे तो वहां उनकी सारी आशाएं टूट कर रह जाएंगी[2] (77) और वही है जिसने तुम्हारे कान और आँखें और दिल बनाए, कम ही तुम एहसान मानते हो (78) और वही है जिसने तुम्हें धरती में फैला दिया और उसी के पास एकट्ठा करके तुम लाए जाओगे (79) और वही जिलाता है और मारता है और रात व दिन का बदलना उसी का काम है क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते (80) बल्कि उन्होंने भी वही कहा जो उनसे पहले लोग कह चुके हैं (81) बोले क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डी हो जाएंगे क्या हमें फिर उठाया जाएगा (82) यह वादा इससे पहले हमसे और हमारे बाप–दादा से भी किया जा चुका है यह केवल पहलों (पूर्व के लोगों) की मनगढंत कहानियाँ हैं[3] (83) पूछिए कि धरती और धरती में जो कुछ है वह किसका है (बताओ) अगर तुम ज्ञान न रखते हो (84) वे तुरन्त यही कहेंगे कि अल्लाह का, फिर भी तुम ध्यान नहीं रखते (85) पूछिए सातों आकाशों और महान अर्श का मालिक कौन है (86) वे तुरन्त यही कहेंगे कि अल्लाह के हैं, कहिए फिर भी तुम डर नहीं रखते (87) पूछिए हर चीज़ की बादशाही किसके हाथ में है और वह पनाह देता है और उसके मुकाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता (बताओ) अगर तुम जानते हो (88) वे तुरन्त यही कहेंगे कि अल्लाह के हाथ में, आप कह दीजिए तो कहां का जादू तुम पर चल जाता है[4] (89)

---

(1) यानी तरह–तरह की मुसीबतों में उनको डाला गया लेकिन वे ढिटाई के साथ अपनी उदण्डता में लगे रहे, एक बार पवित्र मक्का में सख़्त सूखा पड़ा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ से ही दूर हुआ, यमामा वासियों ने एक बार अनाज–भोजन बंद कर दिया, आप ही की सिफारिश से दोबारा जारी हुआ मगर वे अपनी उदण्डता से न रुके (2) ऐसा मालूम होता है कि इससे आशय आख़िरत का अज़ाब है (3) अल्लाह की दी हुई नेमतों पर कुछ ध्यान नहीं करते बस पुराने लोगों का अंध अनुसरण किये जा रहे हैं, वही पुराने संदेह दोहराते हैं कि मिट्टी में मिलने और चूरा–चूरा हो जाने के बाद हम कैसे उठाए जाएंगे (4) जब सब कुछ उसी के कब्ज़े में हैं तो क्या तुम्हारी मुट्ठी भर मिट्टी उसके कब्ज़े से बाहर होगी।

बात यह है कि हम तो सच उन तक पहुँचा चुके हाँ! वे झूठे हैं (90) न अल्लाह ने कोई लड़का बनाया और न उसके साथ कोई और खुदा है (अगर ऐसा होता) तो हर खुदा अपनी सृष्टि ले कर चल देता और सब एक दूसरे पर चढ़ दौड़ते[1], अल्लाह उन सारी चीज़ों से पवित्र है जो वे बयान करते रहते हैं (91) वह छिपे और खुले का जानने वाला है बस वह श्रेष्ठ है उन सारी वस्तुओं से जिनको वे साझी ठहराते हैं (92) कहिए ऐ मेरे पालनहार! तेरा उनसे जो वादा है अगर वह मुझे दिखा (93) तो ऐ मेरे पालनहार! मुझे अत्याचारी लोगों में मत बना (94) और बेशक हम जो उनसे वादा करते हैं वह आपको दिखाने में हम समर्थ हैं (95) बुराई को आप दूर करते रहें ऐसे ढ़ंग से जो अति उत्तम हो, वे जो भी कहा करते हैं हम उसको ख़ूब जानते है[2] (96) और कहिए कि ऐ मेरे पालनहार! मैं शैतान के वसवसों (झांसे) से तेरी पनाह चाहता हूँ (97) और इससे भी मैं तेरी पनाह चाहता हूँ ऐ मेरे रब! कि वे मेरे पास आएं (98) यहां तक कि जब उनमें किसी पर मौत आ खड़ी होगी तो वह कहेगा ऐ मेरे पालनहार! मुझे वापस लौटा दे (99) ताकि मैं जो (दुनिया) छोड़ आया हूँ उसमें (फिर जाकर) अच्छे काम कर लूँ, हरगिज़ नहीं यह एक बोल है जो वह बक रहा है और उनके पीछे एक पर्दा है उस दिन तक जब वे उठाए जाएंगे[3] (100) फिर जब सूर फूँकी जाएगी तो उस दिन वहां न आपस में रिश्ते–नाते होंगे और न कोई किसी को पूछेगा[4] (101) तो जिसकी (भले कामों की) तराज़ू भारी रही तो वही लोग सफल हो गए (102) और जिनकी तराज़ू हल्की रही तो यह वे लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों का नुक़सान किया हमेशा दोज़ख में रहेंगे (103) आग उनके चेहरों को झुलसा रही होगी और उसमें उनके चेहरे बिगड़ चुके होंगे (104)

(1) अर्थात धरती व आकाश और कण–कण का अकेला मालिक वही अल्लाह है न उसे बेटे की आवश्यकता है न मददगार की, न उसकी सरकार व आज्ञापालन में कोई साझीदार है जिसे एक कण का स्थाई अधिकार हो, अगर ऐसा होता तो प्रत्येक अधिकार प्राप्त शासक अपनी प्रजा को लेकर अलग हो जाता और अपने गिरोह इकट्ठा करके दूसरे पर चढ़ाई कर देता और दुनिया की यह सुदृढ़ व्यवस्था कुछ दिन भी क़ायम न रहती, सूरह अंबिया में यह आयत गुज़र चुकी है "अगर उन दोनों (आसमान और ज़मीन) में अल्लाह के अतिरिक्त कोई और उपास्य होता तो दोनों बर्बाद होकर रह जाते (2) पहले कहा गया कि हमको सामर्थ्य प्राप्त है हम तुम्हारी आँखों के सामने उनको सज़ा दे दें फिर कहा जा रहा है कि आपके उच्च्य आचार–व्यवहार और महानता की मांग है कि उनकी बुराई को भलाई से दूर कर दें, उनके बेहूदा बकवास से उत्तेजित न हों, हम उसको खूब जानते हैं, अपने समय पर उनको पता चल जाएगा, आपकी नर्मी का लाभ यह होगा कि बहुत से लोग मोहित होकर आपकी ओर झुक जाएंगे और दावत (इस्लाम–प्रचार) का मक़सद पूरा होगा (3) और इसी बीच के पर्दे को जो दुनिया के जीवन और आख़िरत की ज़िंदगी के बीच में होगा आलम–ए–बर्ज़ख़ कहते हैं (4) बर्ज़ख़ के बाद क़यामत की घड़ी है, दूसरी सूर फूँके जाने के बाद सारी सृष्टि को मैदान में ला खड़ा किया जाएगा उस दिन कोई किसी के काम न आएगा त्राहि–त्राहि मची होगी।

أَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿١٠٥﴾ قَالُوا
رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ﴿١٠٦﴾ رَبَّنَا
أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ﴿١٠٧﴾ قَالَ اخْسَئُوا فِيهَا
وَلَا تُكَلِّمُونِ ﴿١٠٨﴾ إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِنْ عِبَادِي يَقُولُونَ
رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٠٩﴾
فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا حَتَّىٰ أَنْسَوْكُمْ ذِكْرِي وَكُنْتُمْ مِنْهُمْ
تَضْحَكُونَ ﴿١١٠﴾ إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا أَنَّهُمْ هُمُ
الْفَائِزُونَ ﴿١١١﴾ قَالَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ﴿١١٢﴾
قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَاسْأَلِ الْعَادِّينَ ﴿١١٣﴾
قَالَ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا لَوْ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١٤﴾
أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾
فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ
الْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ
لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿١١٧﴾
وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١١٨﴾

منزل ٤

क्या मेरी आयतें तुम्हारे सामने पढ़ी नहीं जाती थीं तो तुम उनको झुठला दिया करते थे (105) वे कहेंगे ऐ हमारे पालनहार! हमारी बदक़िस्मती हम पर हावी हो गई और हम गुमराह लोग थे (106) ऐ हमारे रब! इससे हमें निकाल दे फिर अगर हमने दोबारा वही किया तो अवश्य हम अन्याय करने वालों में हों (107) वह कहेगा इसी में धंसे रहो और मुझसे बात भी मत करना (108) मेरे बन्दों में से एक गिरोह कहा करता था कि ऐ हमारे पालनहार! हम ईमान लाए बस तू हमें माफ़ कर दे और हम पर दया कर और तू सबसे बेहतर दयालु है (109) तो तुमने उनका मज़ाक उड़ाया यहाँ तक कि इसी चक्कर में हमारी याद भी भूल गये और तुम उन पर हँसते थे (110) आज उनके सब्र का बदला हमने उनको यह दिया कि वही लोग सफल हैं[1] (111) वह कहेगा ज़मीन में कितन वर्ष रहे होंगे (112) वे कहेंगे एक दिन या दिन का कुछ भाग, गिनने वालों से पूछ लीजिए (113) कहेगा बेशक रहे तो तुम कम ही थे काश कि उसको तुम जान लेते[2] (114) क्या तुमने यह समझ रखा है कि हमने तुम को यूँ ही पैदा कर दिया और तुम पलटकर हमारे पास नहीं आओगे (115) तो वह अल्लाह इससे बहुत बुलन्द है, जो राजा है, सत्य है, उसके अतिरिक्त कोई पूजनीय नहीं, सम्मानित अर्श का मालिक है (116) और जो भी अल्लाह के साथ दूसरे पूजनीय को पुकारेगा जिसका उसके पास कोई प्रमाण नहीं तो उसका हिसाब उसके पालनहार के पास होगा, काफ़िर कदापि सफ़ल नहीं हो सकते (117) और आप कहिए कि ऐ मेरे पालनहार! माफ़ कर दे और दया कर और तू सबसे बेहतर दयालु है[3] (118)

---

(1) दुनिया में जब मुसलमान दुआ और इस्तिग़फ़ार (क्षमा–याचना) में व्यस्त होते तो उनका मज़ाक उड़ाते थे जैसे सिर पर कोई शासक नहीं है जो ऐसी घोर उत्पातों की सजा दे सके, बेचारे मुसलमानों ने उस समय सब्र किया, आज देखते हो कि तुम्हारे विरुद्ध उन्हें कैसे–कैसे सम्मानित किया गया और ऐसे मुक़ाम पर पहुँचा दिया गया जहाँ वे हर प्रकार से सफ़ल और विभिन्न प्रकार के आनंद और खुशियाँ उन्हें प्राप्त हैं (2) यानी वास्तव में दुनिया की आयु थोड़ी ही थी लेकिन इस बात को अगर पैग़म्बरों के कहने से दुनिया में समझ लेते तो कभी इस नश्वर सम्पत्ति पर अहंकारी बन कर परिणाम से असावधान न होते (3) "अ फ़ ह सिब्तुम" से सूरह के अंत तक की आयतें बड़ी फ़ज़ीलत (महत्ता) और पुण्य रखती हैं, जिसका प्रमाण कुछ हदीसों में भी मिलता है।

سُوْرَةُ النُّوْرِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اَرْبَعٌ وَّسِتُّوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا تِسْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُوْنَ ① اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا
مِائَةَ جَلْدَةٍ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ
تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ
مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ② اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً وَّ
الزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى
الْمُؤْمِنِيْنَ ③ وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا
بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ
شَهَادَةً اَبَدًا وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ④ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا
مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑤ وَالَّذِيْنَ
يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ
فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍ بِاللّٰهِ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑥
وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ⑦

منزل۴

सूरह नूर

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

यह सूरह है जो हमने उतारी है और इसके (आदेश) हमने अनिवार्य किये हैं और इसमें हमने खुली आयतें उतार दी हैं ताकि तुम याद रखो (1) व्यभिचारी औरत और व्यभिचारी मर्द दोनों में हर एक को सौ–सौ कोड़े लगाओ[1] और अगर तुम अल्लाह और आख़िरत के दिन में विश्वास करते हो तो उन दोनों के साथ अल्लाह के दीन (धर्म) में तुम्हारे भीतर ज़रा नर्मी पैदा न होने पाए और उन दोनों के दण्ड के समय मुसलमानों का एक गिरोह अवश्य उपस्थित रहे (2) व्यभिचारी मर्द सिर्फ़ व्यभिचारी औरत या मुश्रिक औरत से ही विवाह करता है और व्यभिचारी औरत से व्यभिचारी मर्द या मुश्रिक (अनेकश्वरवादी) ही विवाह करता है, ईमान वालों के लिए उसको हराम कर दिया गया[2] (3) जो लोग पाक दामन स्त्रियों पर आरोप लगाते हैं फिर चार गवाह नहीं लाते तो ऐसे लोगों को अस्सी कोड़े मारो और कभी उनकी गवाही स्वीकार न करना यही लोग अवज्ञाकारी हैं[3] (4) हाँ! उनमें जो इसके बाद तौबा कर लें और (अपनी परिस्थितियाँ) सुधार लें तो बेशक अल्लाह बहुत (गुनाहों को) माफ़ करने वाला अति दयालु है (5) और जो लोग अपनी पत्नियों पर आरोप लगाते हैं और उनके लिए खुद उनके अलावा कोई गवाह न हो तो ऐसे किसी (मर्द) की गवाही यह है कि वह अल्लाह की क़सम के साथ चार बार गवाही दे कि बेशक वह सच्चा है (6) और पाचवीं बार (यह कहे) कि अगर वह झूठा हो तो उस पर अल्लाह की लानत (अभिशाप) हो (7)

---

(1) यह व्यभिचार की सजा है उसके लिए जो अविवाहित हो और विवाहित के लिए पत्थर मारना (रज्म) है, इसका विवरण सही हदीसों में है, फिर व्यभिचार को सिद्ध करने के लिए चार गवाहों की शर्त है उनमें एक भी कम हो जाए तो बाक़ी पर क़ज़फ़ की सज़ा जारी की जाएगी, सारे प्रमाण उपलब्ध हो जाने के बाद फिर नर्मी न होनी चाहिए और सज़ा जारी करते समय मुसलमानों का एक बड़ा समूह वहां मौजूद रहे ताकि यह सज़ा शिक्षाप्रद हो (2) व्यभिचारी का निबाह व्यभिचारी के साथ ही होता है, व्यभिचारी मुश्रिक से भी उसका जोड़ बैठ जाता है यद्यपि शरीअत में इसकी अनुमति नहीं कि कैसा ही व्यभिचारी हो उसके लिए मुश्रिक से विवाह वैध नहीं, और अगर कोई सदाचारी व्यभिचारी से विवाह करे तो विवाह हो जाता है यद्यपि उस सदाचारी के लिए खतरा पैदा हो जाता है कि कहीं वह व्यभिचार में लिप्त न हो जाए, और अगर व्यभिचारी तौबा कर ले तो कोई हरज नहीं (3) जिन पर क़ज़फ़ की सजा जारी हो चुकी हो उनकी गवाही कदापि स्वीकार नहीं की जाएगी, उसके लिए यह भी सज़ा का भाग है।

وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ
لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۸﴾ وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ كَانَ
مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۹﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ
تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۰﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ؕ لَا
تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ؕ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ
مِنَ الْاِثْمِ ۚ وَالَّذِیْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۱﴾ لَوْلَآ
اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا
هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۲﴾ لَوْلَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا
بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِیْ مَآ اَفَضْتُمْ فِيْهِ
عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۴﴾ اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا
لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿۱۵﴾ وَ
لَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ
هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۶﴾ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖۤ اَبَدًا اِنْ
كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷﴾ وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۸﴾

منزل۴

और महिला से दण्ड इस प्रकार टल सकता है कि वह अल्लाह की क़सम के साथ चार बार गवाही दे कि वह झूठा है (8) और पाँचवीं बार यह कहे कि अगर वह सच्चा हो तो उस (महिला) पर अल्लाह का प्रकोप उतरे[1] (9) और अगर तुम पर अल्लाह की कृपा और दया न होती (और यह बात न होती) कि निःसंदेह अल्लाह बहुत तौबा स्वीकार करने वाला बड़ी हिकमत वाला है (तो तुम बड़ी परेशानी में पड़ जाते) (10) बेशक जिन लोगों ने आरोप लगाया वह तुम ही में से एक टोला है[2] तुम उसको अपने लिए बुरा न समझो वह तुम्हारे लिए तो बेहतर ही है[3] (हाँ) उनमें से हर एक के लिए वह पाप है जो उसने कमाया और उनमें जो बड़ा भाग लिया उसके लिए बड़ा अज़ाब है[4] (11) ऐसा क्यों न हुआ कि जब तुमने सुना तो मुसलमान पुरूष और मुसलमान महिलाएं अपने बारे में अच्छा गुमान रखते और कहते कि यह तो खुला हुआ आरोप है (12) (फिर आरोप लगाने वाले) इस पर चार गवाह क्यों न लाए, बस अगर वे गवाह नहीं लाए तो अल्लाह के यहां वही झूठे हैं (13) और अगर तुम पर दुनिया व आख़िरत में अल्लाह की कृपा और दया न होती तो जिस चीज़ में तुम पड़ गए थे उसमें तुम्हें बड़े अज़ाब का शिकार होना पड़ता (14) जब तुम उसकी एक दूसरे से चर्चा करने लगे थे और अपने मुंह से तुम ऐसी बात कह रहे थे जिसका तुम्हें पूरा ज्ञान भी न था और तुम उसको साधारण समझ रहे थे जब कि वह अल्लाह के यहां बड़ी संगीन बात थी (15) ऐसा क्यों न हुआ कि जब तुमने वह बात सुनी तो तुमने कह दिया होता कि हम को अधिकार नहीं पहुँचता कि हम ऐसी बात मुँह से निकालें, तू पवित्र है, यह तो बड़ा आरोप है (16) अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है कि कहीं दोबारा ऐसी हरकत न कर बैठना अगर तुम ईमान रखते हो (17) और अल्लाह तुम्हारे लिए आयतों को खोल कर बयान करता है और अल्लाह ख़ूब जानता है हिकमत रखता है(18)

(1) अगर कोई पति अपनी पत्नी पर आरोप लगाए और चार गवाह प्रस्तुत न करे तो नियमानुसार उस पर क़ज़फ़ की सज़ा ज़ारी होनी चाहिए लेकिन पति–पत्नी के विशेष संबंध के कारण उनके लिए अल्लाह तआला ने एक विशेष शैली निर्धारित की है जिसका पारिभाषिक शब्द है "लेआन" उसका विस्तृत बयान यहां किया गया है, बेहतर यह है कि लेआन से पहले काज़ी दोनों को अल्लाह से डराए और वास्तविकता को स्वीकार करने के लिए समझाए, अगर पत्नी क़सम खाने के स्थान पर स्वीकार कर ले तो उस पर व्यभिचार की सज़ा लागू होगी और अगर पति अपने झूठ को स्वीकार कर ले तो उस पर "हद–ए–क़ज़फ़" (झूठा आरोप लगाने की सज़ा) जारी होगी और अगर दोनों क़समें खा लें तो दुनिया में किसी पर कोई सज़ा लागू न होगी। हाँ! क़ाज़ी दोनों के मध्य निकाह समाप्त कर देगा और अगर कोई बच्चा पैदा हो, और पति उसे अपना बच्चा मानने से इनकार कर दे तो वह केवल माँ से जोड़ा जाएगा, आगे आयत में इसको अल्लाह की कृपा घोषित किया गया है इसलिए कि अगर पति–पत्नी के बीच वही समान झूठा आरोप लगने का नियम होता तो बड़ी कठिनाई होती (2) यहाँ से आयत नं0 26 तक इफ़्फ़ की घटना का बयान है, बनी मुस्तलिक वाले युद्ध में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा आपके साथ थीं, वापसी में एक स्थान पर पड़ाव डाला गया, हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ज़रूरत से जंगल चली गईं थीं, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मालूम नहीं था, आपने सेना को रवाना होने का आदेश दे दिया, वे जिस हौदज पर सवार थीं वह लोगों ने उठा कर ऊँट पर रख दिया, वे अनुमान नहीं लगा सके कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा उसमें नहीं हैं, जब वापस आईं तो क़ाफ़िला जा चुका था, वे इन्तिज़ार में उसी स्थान पर बैठ गईं, ⟹

إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَن تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٩﴾
وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٠﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ وَمَن يَتَّبِعْ خُطُوَاتِ
الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ ۚ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ
وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَىٰ مِنكُم مِّنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَن يَشَاءُ ۗ
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢١﴾ وَلَا يَأْتَلِ أُولُو الْفَضْلِ مِنكُمْ وَالسَّعَةِ أَن
يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ
وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿٢٢﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوا
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾ يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ
أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾ يَوْمَئِذٍ يُوَفِّيهِمُ
اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ﴿٢٥﴾ الْخَبِيثَاتُ
لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَاتِ ۖ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ
لِلطَّيِّبَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۖ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٢٦﴾

منزل۴

बेशक जो लोग यह चाहते हैं कि ईमान वालों में अश्लीलता फैले, उनके लिए दुनिया व आख़िरत में दुखद अज़ाब है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते (19) और अगर तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती और यह कि अल्लाह बड़ा मेहरबान अति दयालु है (तो क्या कुछ न होता) (20) ऐ ईमान वालो! शैतानों के पदचिन्ह पर मत चलो और जो शैतानों के पदचिन्ह पर चलता है तो वह तो अश्लीलता और बुराई पर प्रेरित करता है और अगर तुम पर अल्लाह की कृपा और दया न होती तो तुममें से किसी की भी शुद्धिकरण न होता लेकिन अल्लाह ही जिसका चाहता है शुद्धिकरण कर देता है और अल्लाह खूब सुनता जानता है (21) और तुममें से बड़ाई और गुंजाइश वाले नातेदारों मोहताजों और अल्लाह के रास्ते में हिज़रत करने वालों को न देने की क़सम न खा बैठें, उन्हें चाहिए कि माफ़ कर दें और दरगुज़र करें, क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें माफ़ कर दे और वह बड़ा माफ़ करने वाला अति दयालु है[1] (22) निश्चित रूप से जो लोग पाक दामन भोली–भाली मुसलमान औरतों पर आरोप लगाते हैं वे दुनिया व आख़िरत में फिटकारे (तिरस्कृत) हुए हैं और उनके लिए बड़ा अज़ाब है (23) जिस दिन उनकी ज़बानें और उनके हाथ और उनके पाँव उनके विरूद्ध उनकी करतूतों की गवाही देंगे (24) उस दिन अल्लाह उनको ठीक–ठीक पूरा–पूरा बदला देगा और उनको पता चल जाएगा कि बेशक अल्लाह ही सत्य है, बात खोल देने वाला है (25) अपवित्र महिलाएं अपवित्र पुरूषों के लिए हैं और अपवित्र पुरूष अपवित्र महिलाओं के लिए हैं, और पवित्र महिलाएं पवित्र पुरूषों के लिए हैं और पवित्र पुरूष पवित्र महिलाओं के लिए हैं, यह लोग उस बात से पवित्र हैं जो (मुनाफ़िक) बकते–फिरते हैं उनके लिए माफ़ी है और सम्मान की रोज़ी है[2] (26)

⟹ काफ़िलों का नियम यह था कि एक व्यक्ति काफ़िलों के पीछे रखा जाता था ताकि वह देखता आए कि कोई चीज़ गिरी पड़ी तो नहीं रह गई, इस क़ाफ़िले में हज़रत सफवान बिन मुअ़तल रज़ियल्लाहु अन्हु इस काम पर नियुक्त थे, जब वे वापस होने लगे तो उन्होंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को बैठे हुए देखा और उनको घटना की बात मालूम हुई, उन्होंने अपना ऊँट बैठा दिया हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा उस पर सवार हो गईं और वह खुद उसकी नकेल थामे आगे–आगे चलते रहे यहाँ तक कि वे पवित्र मदीना पहुँच गईं, यहूदी और मुनाफ़िक (कपटाचारी) ताक में रहते थे उन्होंने इसको एक तूफ़ान का रूप दे दिया और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर एक घिनौना आरोप लगा दिया, मुनाफिक़ों का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई ने इसको इतना मशहूर कर दिया कि दो–चार भोले–भाले मुसलमान भी उसके धोखे में आ गए और कई दिनों तक लोगों में निराधार बातें फैलाई जाती रहीं, अंततः यह आयत उतरी जिनमें हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की पूरे तौर से बरी होने के साथ–साथ उन लोगों को घोर चेतावनी दी गईं हैं, जो उस में शामिल थे (3) यद्यपि यह घटना देखने में बहुत दुखदायी थी लेकिन परिणाम के लिहाज़ से इसको बेहतर इसलिए कहा जा रहा है कि इसके द्वारा उन लोगों के चेहरे से पर्दा उठा गया जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परिवार के विरूद्ध साजिश रचा करते थे, दूसरे हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का बुलन्द मुक़ाम सबके सामने आ गया, तीसरे इससे मुसलमानों को जो पीड़ा पहुँची उससे वे महान सवाब (पुण्य) के हकदार हुए (4) यानी मुनाफिक़ों का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई।

(1) हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर तूफ़ान उठाने वालों में खुद मुसलमान भी नादानी में शामिल हो गए थे उनमें एक हज़रत मिस्तह भी थे जो एक ग़रीब मुहाजिर थे, हज़रत अबू बक्र के रिश्तेदार भी थे, हज़रत अबू बक्र उनकी सहायता किया करते थे, ⟹

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَدْخُلُوا۟ بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّىٰ تَسْتَأْنِسُوا۟
وَتُسَلِّمُوا۟ عَلَىٰٓ أَهْلِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا۟
فِيهَآ أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ ۖ وَإِن قِيلَ لَكُمُ ٱرْجِعُوا۟
فَٱرْجِعُوا۟ ۖ هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ ۚ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨﴾ لَّيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ
أَن تَدْخُلُوا۟ بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَٰعٌ لَّكُمْ ۚ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ
وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٢٩﴾ قُل لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا۟ مِنْ أَبْصَٰرِهِمْ وَيَحْفَظُوا۟
فُرُوجَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ خَبِيرٌۢ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٣٠﴾ وَقُل
لِّلْمُؤْمِنَٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَٰرِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ
زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا ۖ وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ ۖ وَلَا
يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ ءَابَآئِهِنَّ أَوْ ءَابَآءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ
أَبْنَآئِهِنَّ أَوْ أَبْنَآءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَٰنِهِنَّ أَوْ بَنِىٓ إِخْوَٰنِهِنَّ أَوْ
بَنِىٓ أَخَوَٰتِهِنَّ أَوْ نِسَآئِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَٰنُهُنَّ أَوِ ٱلتَّٰبِعِينَ غَيْرِ
أُو۟لِى ٱلْإِرْبَةِ مِنَ ٱلرِّجَالِ أَوِ ٱلطِّفْلِ ٱلَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا۟ عَلَىٰ
عَوْرَٰتِ ٱلنِّسَآءِ ۖ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِن
زِينَتِهِنَّ ۚ وَتُوبُوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ ٱلْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣١﴾

منزل ۴

ऐ ईमान वालो! अपने घरों के अलावा और घरों में उस समय तक प्रवेश न करो जब तक आहट न ले लो और घर वालों से (अनुमति के लिए) सलाम न कर लो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है शायद तुम ध्यान रखो (27) फिर अगर तुम्हें वहां कोई न मिले तो भी बिना अनुमति प्रवेश न करो और अगर तुमसे लौट जाने के लिए कहा जाए तो लौट जाओ यह तुम्हारे लिए अधिक सुथराई की बात है और तुम जो भी करते हो अल्लाह उसको खूब जानता है[1] (28) (हाँ) इस में कोई हरज नहीं कि तुम ऐसे ग़ैर आवासीय मकानों में प्रवेश करो जहां तुम्हें लाभ उठाने का अधिकार हो, और तुम जो भी प्रकट करते हो और जो छिपाते हो अल्लाह सब जानता है[2] (29) ईमान वालों से कह दीजिए कि अपनी नज़रें नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें[3] यह उनके लिए अधिक पवित्रता की बात है, बेशक उनके सब कामों की अल्लाह खूब जानकारी रखता है (30) और ईमान वालियों से कह दीजिए कि वे भी अपनी निगाहें नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें और अपना श्रृंगार प्रकट न करें सिवाय उसके जो प्रकट हो ही जाए[4] और अपने सीनों पर अपनी ओढ़नियाँ डाल लें और अपना श्रृंगार किसी पर प्रकट न होने दें सिवाय अपने पतियों के या अपने पिता के या पतियों के बाप के या अपने बेटों के या अपने पतियों के बेटों के या अपने भाइयों के या भतीजों के या भांजों के[5] या अपनी महिलाओं के[6] या उनके जो अपने हाथों की मिल्कियत में हों[7] या ऐसे पुरुषों के जो (तुफ़ैली) के रूप में लगे रहते हों स्त्रियों की ओर उनको कोई ध्यान न हो[8] या उन बच्चों के जो स्त्रियों की लज्जा के स्थानों से अभी अवगत नहीं हुए[9] और महिलाएं अपने पैर ज़मीन पर ज़ोर से न रखें कि उनका छिपा हुआ श्रृंगार खुल जाए[10] और ऐ ईमान वालो! तुम सब अल्लाह की ओर पलटो ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो (31)

⇒ हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के बरी होने की आयत उतरी तो हज़रत अबू बक्र ने क़सम खा ली कि अब मिस्तह की सहायता न करूँगा, इस पर यह आयत उतरी, हज़रत अबू बक्र ने सुना तो सहायता दुबारा जारी कर दी बल्कि कुछ हदीसों में है कि दोगुनी कर दी (2) पवित्र औरतों पर आरोप लगाना बहुत ही बुरे गुनाहों में से हैं, फिर उनमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों में किसी पर आरोप लगाना कितना बड़ा गुनाह होगा, आलिमों ने स्पष्ट किया है कि इन आयतों के उतरने के बाद जो व्यक्ति हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर आरोप लगाए वह काफ़िर, कुरआन को झुठलाने वाला और इस्लाम से बाहर है।

(1) यहाँ से समाज में अश्लीलता फैलने के मूल कारणों पर पहरा बैठाने के लिए कुछ आदेश दिये जा रहे हैं, देखने में यह छोटी–छोटी बातें हैं लेकिन समाज पर उनके बड़े गहरे प्रभाव पड़ते हैं (2) ग़ैर आवासीय मकानों से आशय वह सार्वजनिक स्थल हैं जहां से सबको लाभ उठाने की अनुमति होती है जैसे– मुसाफ़िर खाने, अस्पताल, डाक घर, स्कूल, मदरसे, बड़े–बड़े बाज़ार, होटल आदि, लेकिन आयत के अंत में सावधान किया जा रहा है कि ऐसी जगहों में भी सावधानी अनिवार्य है (3) बुरी नज़र आमतौर से व्यभिचार की पहली सीढ़ी है इससे बड़ी–बड़ी अश्लीलताओं का दरवाज़ा खुलता है, इसीलिए सबसे पहले इस दरवाज़े को बंद कर दिया गया है (4) हर प्रकार के प्राकृतिक और स्वार्जित श्रृंगार का छिपाना औरत पर ज़रूरी है सिवाय उसके जो मजबूरी में प्रकट करना पड़े, जैसे– हथेलियां, पैर और आवश्यकता के समय चेहरा (5) बाप में दादा, परदादा, नाना, परनाना भी शामिल हैं और बेटे में पोते नवासे (नाती) भी शामिल हैं भतीजों और भांजों में चाचा और मामू भी शामिल हैं, यह सब "महरम" कहलाते हैं इनसे पर्दा नहीं है (6) अपनी महिलाओं का उल्लेख करके उन औरतों को अलग कर दिया गया ⇒

وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ ؕ اِنْ
يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۳۲﴾
وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ
فَضْلِهٖ ؕ وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ
اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۖۗ وَّاٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْۤ اٰتٰىكُمْ ؕ وَلَا
تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ؕ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿۳۳﴾ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ
خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۴﴾ اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ
زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ
مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِیْٓءُ وَلَوْ
لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ
يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۳۵﴾ فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ
اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿۳۶﴾

منزل۴

और तुम में जो अविवाहित हों उन का विवाह कर दो और अपने गुलामों और लौंडियों में जो भले हों उनका भी (विवाह कर दो) अगर वे आवश्यकता वाले होंगे तो अल्लाह अपनी कृपा से उनको समृद्ध कर देगा और अल्लाह बड़ी गुंजाइश वाला, खूब जानने वाला है[1] (32) और जिनका विवाह न हो पा रहा हो उन्हें चाहिए कि पवित्र जीवन गुज़ारें यहां तक कि अल्लाह उनको अपनी कृपा से समृद्ध कर दे और तुम्हारे गुलामों–लौंडियों में से जो मुकातब बनना चाहें (आज़ादी का परवाना हासिल करना चाहें) तो अगर तुम्हें उनमें भलाई मालूम होती हो तो उनको मुकातब बना लो और (ऐ ईमान वालो!) अल्लाह ने तुम्हें जो माल दिया है उसमें से उन्हें भी दे दो[2], और अपनी लौंडियों को अगर वे विवाह के बंधन में बंधना चाहती हों तो दुनियावी जीवन के कुछ सामान कमाने के लिए उनको व्यभिचार पर मजबूर मत करो और जो उन पर ज़बर्दस्ती करेगा तो अल्लाह उन पर ज़बर्दस्ती के बाद (उनके लिए) बहुत माफ करने वाला अति दयालु है[3] (33) और हमने तुम्हारी ओर साफ़–साफ़ आयतें और तुमसे पहले गुज़रे हुए लोगों के उदाहरण और परहेज़गार लोगों के लिए नसीहत (उपदेश) उतार दी है (34) अल्लाह आसमान और ज़मीन का प्रकाश है, उसके प्रकाश का उदाहरण ऐसा है जैसे कोई ताक़ हो उसमें चिराग जल रहा हो, चिराग़ शीशे में हो और शीशा ऐसा जैसे झिलमिल करता सितारा, उसे पावन वृक्ष ज़ैतून (के तेल) से जलाया गया हो, जो न पूरब हो न पश्चिम, लगता हो कि उसका तेल खुद जल उठेगा चाहे आग उसको छुए भी ना, वह प्रकाश ही प्रकाश है, अल्लाह जिसको चाहता है अपने प्रकाश की ओर मार्ग दिखा देता है और अल्लाह लोगों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करता है और अल्लाह हर चीज़ से भली–भांति अवगत है[4] (35) उन घरों में जिनके बारे में अल्लाह का आदेश है कि उनको बुलन्द रखा जाए और उनमें उसका नाम लिया जाए, उनमें सुबह व शाम उसकी तस्बीह बयान करते रहते हैं (36)

⇒ जो व्यभिचारी हों उनसे पर्दा ही उचित है (7) यानी अपनी लौंड़ियाँ और कुछ पूर्वजों का कहना है कि इसमें गुलाम भी शामिल हैं (8) इससे आशय वे बूढ़े लोग हैं जो पुराने सेवक होते हैं और खिलाने–पिलाने के लिए लगे रहते हैं, स्त्रियों की उनमें कोई इच्छा नहीं होती (9) वे छोटे बच्चे जो अभी स्त्री–पुरुष के यौन संबंधों से बेख़बर हों (10) इस प्रकार न चलें कि आभूषणों की आवाज़ दूसरों को सुनाई दे।

(1) अश्लीलता और व्यभिचार की रोक–थाम का यह बहुत अच्छा रास्ता है मनुष्य के भीतर जो यौन इच्छा है वह विवाह करके वैध रूप से पूरी की जाए, इस आयत में यह कहा जा रहा है कि जो व्यस्क स्त्री–पुरुष विवाह के योग्य हों और उस समय के खर्चे उनके पास मौजूद हों तो उनका विवाह ज़रूर कर देना चाहिए, पवित्रता के लिए यदि विवाह किया जाएगा तो अल्लाह तआला आगे भी ज़रूरतों को पूरा करेगा और जिनके पास निकाह के ज़रूरी ख़र्चे भी नहीं हैं तो उनको यह आदेश है कि जब तक विवाह हेतु व्यवस्था न हो सके वे पवित्र जीवन गुज़ारें और हदीस में इसके लिए रोज़े रखने को कहा गया है (2) जब गुलामों–लौंडियों का रिवाज था उस समय वे अपने स्वामियों से मामला कर लेते थे कि इतना धन देकर वे आज़ाद हो जाएंगे इसको ''मुकातबत'' कहते थे, आयत में स्वामियों को प्रेरित किया गया है कि अगर गुलाम लौंडी ऐसा मामला करना चाहें तो वे स्वीकार कर लें और आम मुसलमानों को प्रलोभन दिया (उभारा) जा रहा है कि ऐसे गुलामों और लौंडियों की आर्थिक सहायता करें ताकि वे आज़ादी प्राप्त कर सकें (3) इस्लाम से पूर्व (अज्ञानताकाल) में लोग अपनी लौंडियों से पेशा कराके पैसा कमाते थे, इस घिनौनी रीति को समाप्त किया जा रहा है, साथ–साथ यह बताया जा रहा है कि वे लौंडियाँ मज़बूरी में यह कार्य कर रही हैं ⇒

रِجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَوٰةِ وَ
إِيتَآءِ الزَّكَوٰةِ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ﴿٣٧﴾
لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ
مَن يَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ
بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ الظَّمْآنُ مَآءً حَتَّىٰ إِذَا جَآءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَ
وَجَدَ اللَّهَ عِندَهُ فَوَفَّىٰهُ حِسَابَهُ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٣٩﴾ أَوْ
كَظُلُمَٰتٍ فِي بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَغْشَىٰهُ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ
سَحَابٌ ظُلُمَٰتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكَدْ
يَرَىٰهَا وَمَن لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِن نُّورٍ ﴿٤٠﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ
اللَّهَ يُسَبِّحُ لَهُ مَن فِي السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ صَٰٓفَّٰتٍ كُلٌّ قَدْ
عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٤١﴾ وَلِلَّهِ مُلْكُ
السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿٤٢﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُزْجِي سَحَابًا ثُمَّ
يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَٰلِهِ وَيُنَزِّلُ
مِنَ السَّمَآءِ مِن جِبَالٍ فِيهَا مِن بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَن يَشَآءُ وَ
يَصْرِفُهُ عَن مَّن يَشَآءُ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهِ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ﴿٤٣﴾

منزل٤

वे लोग जिनको व्यापार और क्रय–विक्रय अल्लाह की याद से, नमाज़ कायम रखने और ज़कात देते रहने से ग़ाफिल नहीं करती वे उस दिन से डरते रहते हैं जिस दिन दिल और निगाहें उलट–पलट जाएंगी[1] (37) ताकि अल्लाह उनके कामों का बहुत ही बेहतर बदला उनको दे दे और अपनी कृपा से उन (के बदले) में और बढ़ोतरी कर दे और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी प्रदान करता है (38) और जिन्होंने इनकार किया उनके काम ऐसे हैं जैसे मैदान में रेत, प्यासा उसको पानी समझे यहाँ तक कि जब उसके पास आ जाए तो वहाँ कुछ भी न पाए और अपने पास अल्लाह को पाए तो वह उसका सब हिसाब साफ़ कर दे और अल्लाह बहुत जल्द हिसाब चुका देने वाला है[2] (39) (या उसका उदाहरण) गहरे समुद्र में ऐसे अंधेरों का है जिनको लहरों ने ढक रखा है, उसके ऊपर भी लहर है उसके ऊपर बादल छाए हैं, अंधेरों पर अंधेरे हैं, जब वह अपना हाथ निकाले तो लगता नहीं कि उसको सुझाई देगा और जिसको अल्लाह रौशनी न दे तो उसके लिए रौशनी कहां[3] (40) क्या आप नहीं देखते कि जो भी आसमानों और ज़मीन में हैं सब अल्लाह ही की तस्बीह में लगे हैं और पंख फैलाए हुए उड़ते परिन्दे भी, सब अपनी उपासना और तस्बीह को खूब जानते हैं और वे जो कर रहे हैं अल्लाह उसको खूब जानता है[4] (41) और अल्लाह ही के लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है और परिणाम अल्लाह ही के हाथ में है (42) क्या आपने देखा कि अल्लाह बादलों को लाता है फिर उनको जोड़ता है फिर उनको तह पर तह कर देता है तो आप बारिश को देखेंगे कि उनके बीच से निकलती है और आसमान में (बादलों के) जो पहाड़ होते हैं उनसे ओले बरसाता है तो जिस पर चाहता है उस पर गिराता है और जिससे चाहता है उनकी दिशा फेर देता है उसकी बिजली की चमक लगता है कि आँखें उचक ले जाएगी (43)

⟹ अतः उन पर ना कोई सज़ा है ना गुनाह (4) यहाँ अल्लाह के नूरे हिदायत का उदाहरण चिराग से दिया गया है कि यहाँ मक़सद उस हिदायत (संमार्ग) का उदाहरण देना है जो पथभ्रष्टता के अंधेरों के बिल्कुल बीच में रास्ता दिखा दे, चिराग़ हमेशा अंधेरे के बीचो बीच रौशनी पैदा करता है, और अल्लाह का फ़ैसला यही है कि दुनिया में अंधेरा भी है और रौशनी भी तो इस दुनिया में जो कुछ रौशनी है वह अल्लाह के नूरे हिदायत से ही मिलती है, न पूरबी न पश्चिमी अर्थात वह बाग़ के बीच वाले पेड़ के फल हों जो अधिक मूल्यवान होते हैं, अच्छे ज़ैतून की विशेषता यह है कि इतना चमकीला होता है कि दूर से रौशन मालूम होता है।

(1) यह उन लोगो का वर्णन है जिनको अल्लाह ने हिदायत का नूर प्रदान किया था, यह लोग मस्जिदों में नमाज़ की स्थापना करते हैं जिनके बारे में अल्लाह का बयान है कि उनको श्रेष्ठ समझ कर इनका सम्मान किया जाए, फिर आगे इनके संतुलन का वर्णन किया कि न यह सन्यास लेते हैं कि दुनिया छोड़ दें और न दुनिया में ऐसे व्यस्त होते हैं कि आख़िरत को भूल जाएं, संसार की अत्यधिक व्यस्तता भी इनको अल्लाह की याद से अचेत (ग़ाफ़िल) नहीं कर सकती है (2) रेगिस्तान में जो रेत चमकती हुई नज़र आती है आदमी उसको पानी समझकर उसकी तरफ़ दौड़ता है लेकिन वास्तव में वह कुछ नहीं होता, उसको 'सराब' कहते हैं इसी तरह अल्लाह का इनकार करने वाले जो दूसरों की पूजा पुण्य (नेकी) समझ कर करते हैं वह सराब का सा एक धोखा है (3) यह अंधकार का एक बहुत स्पष्ट उदाहरण है वर्तमान खोज से यह बात और साफ़ हो जाती है कि समन्दर के अन्दर का जो अंधेरा है वह बहुत सख़्त और भयावह होता है और वहां रौशनी का कोई गुज़र नहीं, इसी तरह अल्लाह का इनकार करने वाले अंधेरे में भटक रहे हैं जब तक कि वे अल्लाह के हिदायत के नूर से रौशनी नहीं प्राप्त करेंगे, भटकते रहेंगे। ⟹

अल्लाह ही रात व दिन को आगे–पीछे लाता है निश्चित रूप से इसमें निगाह रखने वालों के लिए (बड़ी) शिक्षा है (44) और अल्लाह ने हर जीवधारी को पानी से पैदा किया तो उनमें कुछ पेट के बल रेंगते हैं और कुछ दो पैरों पर चलते हैं और कुछ चार पैरों पर चलते हैं और अल्लाह जो चाहता है पैदा कर देता है निश्चित ही वह सब कुछ कर सकता है (45) हमने वे आयतें उतार दी हैं जो वास्तविकता को खोल–खोल कर बयान करने वाली हैं और वह जिसे चाहता है सीधा रास्ता चला देता है (46) वे कहते हैं हम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए और हमने बात मानी फिर उनमें से एक गिरोह इसके बाद भी मुँह मोड़ लेता है और ऐसे लोग हरगिज़ मानने वाले नहीं हैं (47) और जब उनको अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाया जाता है कि वे उनमें फैसला कर दें तो उनमें एक गिरोह एक दम मुँह फेर लेता है (48) और अगर सत्य उनको मिलने वाला होता है तो वे उनकी ओर बड़े आज्ञाकारी बन कर चले आते हैं (49) उनके दिलों में रोग है या वे संदेह में पड़ गये हैं या उनको इसका डर है कि अल्लाह और उसके रसूल उनके साथ अन्याय करेंगे यह बात है कि वे खुद अन्याय करने वाले हैं[1] (50) ईमान वालों की बात तो यही होती है कि जब उनको अल्लाह और उसके रसूल की ओर फैसले के लिए बुलाया जाता है तो वे कहते हैं कि हमने सुन लिया और मान लिया और यही लोग सफ़ल हैं (51) और जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर की बात मानेगा और अल्लाह से डर और तक़्वा पैदा करेगा तो यही लोग सफल हैं (52) और वे अल्लाह की बड़ी ज़ोर से क़समें खाते हैं कि अगर आप उनको आदेश द दें तो वे ज़रूर निकलेंगे आप कह दीजिए कि क़समें मत खाओ, (तुम्हारे) आज्ञापालन का सबको पता है, बेशक जो तुम करते हो अल्लाह उसको अच्छी तरह से जानता है[2] (53)

⟹ (4) सृष्टि का कण–कण एक एहसास रखता है और अपने ख़ास तरीक़े से अल्लाह की तस्बीह में लगा रहता है, जिसको अल्लाह ही जानता है, आगे अल्लाह ने अपने प्राणियों को जिन कामों पर लगा दिया है उनका वर्णन है कि वे अल्लाह की इताअत में लगे हैं, पलटते नहीं है।

(1) यह मुनाफ़िक़ों का उल्लेख है कि जब मतलब निकलता था तो आगे–आगे दिखाई पड़ते और कहीं बाहरी घाटा होता तो दूर–दूर तक दिखाई न पड़ते, इसी संदर्भ में एक घटना भी लिखी जाती है कि बिश्र नामक एक मुनाफ़िक़ का एक यहूदी से झगड़ा हुआ, उसमें यहूदी हक पर था वह जानता था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सही फ़ैसला करेंगे, उसने मुनाफ़िक से कहा कि चलो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़ैसला करा लें लेकिन मुनाफ़िक ने एक यहूदी सरदार से फ़ैसला कराने का प्रस्ताव रखा, उसके बारे में यह आयतें उतरीं (2) जब जिहाद का समय न होता तो मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) मुँह भर–भर कर बड़ी–बड़ी क़समें खाते कि जिहाद के अवसर पर हम आपके साथ रहेंगे फिर जब समय आता तो वे बहाने करके निकल लेते, इसीलिए कहा जा रहा है कि तुम्हारे आज्ञापालन का सबको पता है।

قُلۡ اَطِيۡعُوا اللّٰهَ وَاَطِيۡعُوا الرَّسُوۡلَ ۚ فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَاِنَّمَا عَلَيۡهِ
مَا حُمِّلَ وَعَلَيۡكُمۡ مَّا حُمِّلۡتُمۡ ؕ وَاِنۡ تُطِيۡعُوۡهُ تَهۡتَدُوۡا ؕ وَمَا عَلَى
الرَّسُوۡلِ اِلَّا الۡبَلٰغُ الۡمُبِيۡنُ ﴿۵۴﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡكُمۡ وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسۡتَخۡلِفَنَّهُمۡ فِى الۡاَرۡضِ كَمَا اسۡتَخۡلَفَ الَّذِيۡنَ
مِنۡ قَبۡلِهِمۡ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمۡ دِيۡنَهُمُ الَّذِى ارۡتَضٰى لَهُمۡ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمۡ
مِّنۡۢ بَعۡدِ خَوۡفِهِمۡ اَمۡنًا ؕ يَعۡبُدُوۡنَنِىۡ لَا يُشۡرِكُوۡنَ بِىۡ شَيۡـئًا ؕ وَمَنۡ
كَفَرَ بَعۡدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓـئِكَ هُمُ الۡفٰسِقُوۡنَ ﴿۵۵﴾ وَاَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَ
اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيۡعُوا الرَّسُوۡلَ لَعَلَّكُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ ﴿۵۶﴾ لَا تَحۡسَبَنَّ
الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مُعۡجِزِيۡنَ فِى الۡاَرۡضِ ۚ وَمَاۡوٰٮهُمُ النَّارُ ؕ وَلَبِئۡسَ
الۡمَصِيۡرُ ﴿۵۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لِيَسۡتَاۡذِنۡكُمُ الَّذِيۡنَ مَلَكَتۡ
اَيۡمَانُكُمۡ وَالَّذِيۡنَ لَمۡ يَبۡلُغُوا الۡحُلُمَ مِنۡكُمۡ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ؕ مِنۡ
قَبۡلِ صَلٰوةِ الۡفَجۡرِ وَحِيۡنَ تَضَعُوۡنَ ثِيَابَكُمۡ مِّنَ الظَّهِيۡرَةِ
وَمِنۡۢ بَعۡدِ صَلٰوةِ الۡعِشَآءِ ۛ ثَلٰثُ عَوۡرٰتٍ لَّكُمۡ ؕ لَيۡسَ عَلَيۡكُمۡ وَ
لَا عَلَيۡهِمۡ جُنَاحٌۢ بَعۡدَهُنَّ ؕ طَوّٰفُوۡنَ عَلَيۡكُمۡ بَعۡضُكُمۡ عَلٰى
بَعۡضٍ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الۡاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ﴿۵۸﴾

ع

منزل ۴

कह दीजिए अल्लाह की बात मानो और रसूल की बात मानो फिर अगर तुम मुँह फेरोगे तो जो काम उनके ज़िम्मे किया गया वह उनके ऊपर है और जो तुम्हारे ज़िम्मे किया गया वह तुम्हारे ऊपर है, और अगर तुम उनकी बात मानोगे तो हिदायत (संमार्ग) पा जाओगे और रसूल के ज़िम्मे तो साफ़–साफ़ पहुँचा देना ही है (54) तुममें जो लोग ईमान लाए और उन्होंने भले काम किये उनसे अल्लाह का वादा है कि अल्लाह तआला उनको ज़रूर ज़मीन में शासक बनाएगा जैसा उसने उनके पहलों को शासक बनाया और उनके लिए उनके उस दीन को ज़रूर शक्ति प्रदान करेगा जिसको उसने उनके लिए पसंद कर लिया है और ज़रूर उनके डर को इत्मिनान से बदल देगा[1] (बस) वे मेरी इबादत करते रहें, मेरे साथ किसी को साझी न ठहराएं और जिसने इसके बाद भी इनकार किया तो वही लोग अवज्ञाकारी हैं (55) और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात देते रहो और पैगम्बर की बात मानते रहो ताकि तुम पर रहमत (दया) हो (56) और जिन्होंने इनकार किया उनको कदापि यह मत समझना कि वे ज़मीन में (कहीं भाग कर हमें) बेबस कर देंगे उनका ठिकाना तो दोज़ख है और वह बहुत ही बुरा अंजाम है (57) ऐ ईमान वालो! जो लोग तुम्हारे अधीन (गुलाम) हैं और जो तुममें अभी बुद्धि की सीमा को नहीं पहुँचे उनको (घरों में आते हुए) तीन अवसरों पर अनुमति लेनी चाहिए, फज्र की नमाज़ से पहले और जिस समय तुम ज़ोहर की गर्मी में अतिरिक्त कपड़े उतार देते हो और इशा की नमाज़ के बाद यह तो समय तुम्हारे परदे के हैं, इन (वक्तों) के बाद न तुम्हारे लिए कोई हरज है और न उनके लिए, उनका भी तुम्हारे पास आना–जाना लगा रहता है, तुम्हारा भी एक दूसरे के पास, अल्लाह तआला इसी प्रकार अपनी आयतें खोल–खोल कर बयान करता है और अल्लाह ख़ूब जानता हिकमत रखता है[2] (58)

(1) मुसलमानों ने पवित्र मक्के में बहुत अत्याचार सहा था, पवित्र मदीना में हिज़रत के बाद भी हमलों का डर लगा रहता था, एक सहाबी ने प्रश्न किया कि क्या कभी वह समय आएगा कि हम हथियार खोल कर चैन व सुकून से रह सकेंगे, उस पर यह आयतें उतरीं, अतः इस वादे के अनुसार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग ही में पूरा अरब प्रायद्वीप इस्लाम के अधीन हो चुका था और प्रथम चारों उत्तराधिकारियों (खुलफा) के युग में आधी दुनिया तक इसकी सीमाएं फैल चुकी थीं, लेकिन इस राज व सत्ता की शर्त भी अल्लाह की ओर से लगा दी गई, जब तक मुसलमानों ने इन शर्तों को पूरा किया वे दुनिया की सबसे बड़ी ताक़त बन कर रहे और जब वे शर्तें भुला दीं तो ताश के पत्तों की तरह बिखर कर रह गये (2) व्यस्कों को तो आदेश था कि किसी के घर में बिना अनुमति प्रवेश न करें लेकिन बच्चे और गुलाम व लौंडियाँ इससे अलग थे, अतः उनका घरों में आना–जाना बहुत था, इससे भी कभी लोगों को तकलीफ़ और बेपरदगी होती थी, यहाँ तीन वक्तों में बच्चों और लौंडियों को भी बिना अनुमति प्रवेश करने से रोक दिया गया, यह आराम के समय होते हैं और इनमें आदमी निःसंकोच केवल आवश्यक कपड़ों में रहना चाहता है, आगे यह भी कह दिया गया कि यह बच्चे बड़े हो जाएं तो इनके लिए वही आदेश है जो ऊपर गुज़र चुका, किसी भी समय में उनके लिए दूसरों के घरों में जाने की अनुमति नहीं है।

وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٩﴾ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ اللَّاتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَن يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ ۖ وَأَن يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٦٠﴾ لَّيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ أَن تَأْكُلُوا مِن بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخْوَالِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَالَاتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكْتُم مَّفَاتِحَهُ أَوْ صَدِيقِكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا ۚ فَإِذَا دَخَلْتُم بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِندِ اللَّهِ مُبَارَكَةً طَيِّبَةً ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٦١﴾

منزل٤

और जब बच्चे तुममें बुद्धि की सीमा को पहुंच जाएं तो वे भी उसी प्रकार अनुमति लिया करें जिस प्रकार उनके अगले लोग अनुमति लेते रहे हैं, अल्लाह तआला इसी प्रकार अपनी आयतों को साफ़–साफ़ तुम्हारे लिए बयान करते हैं और अल्लाह ख़ूब जानता हिकमत रखता है (59) औरतों में से वे घर बैठने वालियाँ जिनके (बुढ़ापे के कारण) विवाह की आशाएं समाप्त हो चुकीं, उनके लिए कोई हरज नहीं कि वे अपने अधिक कपड़े उतार दें इस प्रकार कि वे श्रृंगार का प्रदर्शन न कर रही हों और सावधानी बरतना ही उनके लिए अच्छा है और अल्लाह ख़ूब सुनता है ख़ूब जानता है[1] (60) न अंधे पर कोई आरोप है और न लंगड़े पर कोई आरोप है और न रोगी पर कोई आरोप है और न तुम पर कि तुम अपने घरों में खाओ या अपने बाप–दादा के घरों में या अपनी माओं के घरों में या अपने भाइयों के घरों में या अपनी बहनों के घरों में या अपने चाचाओं के घरों में या अपनी फूफियों के घरों में या अपने मामुओं के घरों में या अपनी खालाओं के घरों में या तुम जिसका ख़ज़ाना रखने वाले हो या अपने मित्र के यहाँ, तुम पर कोई पाप नहीं कि तुम एक साथ खाओ या अलग–अलग[2], तो जब घरों में प्रवेश करो तो अपनों को सलाम करो यह अल्लाह की ओर से (भेंट की) दुआ (नियत) है शुभ है पवित्र है[3] अल्लाह तआला इसी प्रकार आयतें साफ़–साफ़ बयान करता है ताकि शायद तुम बुद्धि से काम लो (61)

(1) बूढ़ी औरतों के लिए अनुमति है कि वे बिना चादर या बुर्के के घर से निकल सकती हैं इस शर्त के साथ कि वे बनाव–श्रृंगार न करें मगर सावधानी परदे ही में है (2) इस्लाम ने सहाबा का मिजाज ऐसा सावधानी बरतने वाला बना दिया था कि वे छोटी से छोटी चीज़ों का ध्यान रखते थे, निकलने का ध्यान यह था कि सब के साथ खाने में कहीं दूसरों को कष्ट न हो, इसी प्रकार आम लोगों का ख़्याल था कि कैसा ही प्रिय या निकट मित्र हो उसकी अनुपस्थिति में उसके घर वाले कुछ दावत आदि करना चाहें तो खाना उचित नहीं, इसलिए कि घर का मालिक मौजूद नहीं, इस प्रकार कुछ लोग जिहाद पर जाते तो घर की कुंजियाँ ऐसे मजबूर लोगों के हवाले कर जाते जो जिहाद में जाने के योग्य न होते और उनसे कह जाते कि आप कोई चीज़ खाना चाहें तो अनुमति है, इसके बावजूद यह लोग सावधानी बरतते, इस पर यह आयतें उतरीं कि ऐसे निःसंकोच के अवसरों पर जब कि मालूम है कि नातेदार या मित्र खुश होगा, इतनी बारीकी से काम लेना कठिनाई में डाल सकता है, इसलिए इसका स्पष्टीकरण नहीं है, हाँ! अगर मालूम हो कि बिना अनुमति खाने से घर के मालिक को तकलीफ़ होगी तो सावधानी बरती जाए (3) परस्पर भेंट के लिए ''अस्सलामुअलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह्'' से बेहतर दुआ हो ही नहीं सकती।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا
مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ ۚ إِنَّ
الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ
فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَنْ لِمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ
وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٦٢﴾ لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ
الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ
يَتَسَلَّلُونَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ
أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ
يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾

ع ٩ / ١٥

سُورَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَىٰ عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا ﴿١﴾
الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ
لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهُ تَقْدِيرًا ﴿٢﴾

منزل ٤

बेशक ईमान वाले तो वे हैं जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर विश्वास रखते हैं और जब वे पैगम्बर के साथ किसी सामूहिक कार्य पर होते हैं तो वे बिना उनकी अनुमति के चले नहीं जाते, बेशक जो लोग आपसे अनुमति लेते हैं वही लोग हैं जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान रखते हैं फिर अगर वे आपसे अपने किसी भी काम के लिए अनुमति लें तो आप जिस को चाहें अनुमति दे दें और उनके लिए अल्लाह से माफ़ी चाहें बेशक वह बहुत माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है[1] (62) तुम पैग़म्बर के बुलाने को ऐसा मत समझो जैसे आपस में एक दूसरे को बुलाते हो, अल्लाह उन लोगों को ख़ूब जानता है जो तुममें चुपके से खिसक लेते हैं तो जो लोग भी उनके आदेश की अवहेलना करते हैं वे सावधान रहें कि वे किसी संकट में न पड़ जाएं या कहीं दुखद दण्ड उनको न आ दबोचे[2] (63) अच्छी तरह सुन लो! जो कुछ भी आसमान और ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है, तुम जिस हालत पर भी हो उसको भी वह ख़ूब जानता है और उस दिन को भी कि जब वे सब उसकी ओर लौटाए जाएंगे तो उन्होंने जो कुछ किया है वह सब उनको जतला देगा और अल्लाह हर चीज़ को अच्छी तरह जानता है[3] (64)

सूरह फ़ुरक़ान

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

वह बड़ी बरकत वाला है जिसने अपने बन्दे पर फ़ैसले (की किताब) उतारी ताकि वह सारे संसार को सावधान करने वाला हो (1) वह ज़ात (अल्लाह) कि आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी के पास है और उसने न कोई लड़का बनाया और न बादशाही में उसका कोई साझीदार है और उसने हर चीज़ पैदा की तो उसे विशेष अंदाज़ से बनाया[4] (2)

---

(1) यह आयत ख़न्दक युद्ध के अवसर पर उतरी थी जब अरब के कबीलों ने मिल कर पवित्र मदीने पर चढ़ाई का इरादा किया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रुकावट के लिए ख़न्दक खोदने के लिए मुसलमानों को एकत्र किया, सारे ही लोग इसमें लग गए, किसी को जाना होता तो अनुमति लेकर जाता लेकिन मुनाफ़िक़ लोग एक तो आए ही न थे और आते भी तो बहाने से निकल लेते, इस आयत में उनकी भर्त्सना और मुख़्लिस (निष्ठावान) मुसलमानों की प्रशंसा की गई है (2) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बुलाने से उपस्थित होना फ़र्ज़ (अनिवार्य) था, फिर बिना अनुमति उठ कर चले जाने की अनुमति न थी, आगे फिर मुनाफ़िक़ों की निन्दा है कि वे चुपके–चुपके खिसक लेते हैं, यह उनके लिए बड़ी कठिनाई का कारण हो सकता है (3) सृष्टि से छिपा कर कुछ कर लो, अल्लाह से कुछ छिपाया नहीं जा सकता, जो जैसा करेगा छिप कर करे या खुल कर उसका बदला उसको दिया जाएगा (4) यानी हर वस्तु को एक विशेष अनुमान में रखा कि उससे वही विशेषताएं व कार्य प्रकट होते हैं जिनके लिए वह पैदा की गई है, वह अपनी सीमा व परिधि से बाहर क़दम नहीं निकाल सकती।

उसको छोड़ कर उन्होंने ऐसे कितने उपास्य (माबूद) बना लिए जो किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते और वे ख़ुद प्राणी हैं और वे न अपने किसी नुक़सान के मालिक हैं न किसी फ़ायदे के और न मौत व ज़िन्दगी उनके अधिकार में है और न दोबारा जी उठना (3) और इनकार करने वाले कहते हैं कि यह तो मनगढ़न्त है, जो वे गढ़ लाते हैं और कुछ दूसरे लोगों ने इस पर उनकी मदद की है, बस यह (काफ़िर) लोग अत्याचार और झूठ पर उतर आए हैं (4) वे कहते हैं यह पहलों की कहानियाँ हैं, जो उन्होंने लिख रखी हैं, फिर वही सुबह व शाम उनको पढ़ कर सुनाई जाती हैं[1] (5) कह दीजिए इसको उसने उतारा है जो आसमानों और ज़मीन के हर भेद को जानता है बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है (6) और वे कहते हैं कि यह कैसे पैग़म्बर हैं खाना खाते हैं और बाज़ारों में चलते–फिरते हैं, कोई फ़रिश्ता उनके साथ क्यों नहीं उतार दिया गया कि वह उनके साथ डराने को रहता (7) या उनको ख़ज़ाना दे दिया जाता या उनका कोई बाग़ होता जिससे वे खाया करते, और यह अत्याचारी कहते हैं कि ऐसे व्यक्ति की बात मान रहे हो जिस पर जादू कर दिया गया है (8) देखिए ये आपके लिए कैसे–कैसे उदाहरण देते हैं बस वे पथभ्रष्ट हो चुके, अब वे रास्ता पा नहीं सकते[2] (9) वह बड़ी बरकत वाला है अगर वह चाहता तो आपके लिए इससे बेहतर ऐसे बाग़ बना देता जिनके नीचे नहरें बह रही होतीं और आपके लिए बहुत से महल बना देता (10) बात यह है कि यह तो क़यामत ही को झुठलाते हैं और जिसने क़यामत को झुठलाया हमने उसके लिए दहकती आग तैयार कर रखी है[3] (11)

(1) मक्का के मुश्रिक (अनेकश्वरवादी) यह कहते थे कि कुछ यहूदियों की सहायता से कुछ कहानियां लिख ली गईं हैं वही दोहराई जाती रहती हैं, पवित्र क़ुरआन ने ख़ुद ही इसका उत्तर विभिन्न जगहों पर दिया है और चुनौती दी है कि अगर यह मानव रचित कलाम (वाणी) है तो इस जैसी एक छोटी सी सूरह ही बना लाओ, वे अनादि कालिक दुश्मन जो अरबी भाषा के सबसे बड़े महारथी थे इस चुनौती को स्वीकार न कर सके और विवश होकर रह गये (2) जो लोग पैग़म्बरों की प्रतिष्ठा में इस प्रकार की अनादरता करके के पथभ्रष्ट होते हैं उनके सत्य मार्ग पर आने की कोई आशा नहीं (3) ये जिन चीज़ों की मांग कर रहे हैं अल्लाह के लिए उनका पूरा करना क्या कठिन है लेकिन उनमें सत्य की खोज की इच्छा ही नहीं, सारी बातें मात्र शरारत और तंग करने के लिए करते हैं, क़यामत का उनको विश्वास नहीं, इसकी सजा उन्हें भुगतनी पड़ेगी।

إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ﴿١٢﴾
وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ
ثُبُورًا ﴿١٣﴾ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا
كَثِيرًا ﴿١٤﴾ قُلْ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ
الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ﴿١٥﴾ لَّهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ
خَالِدِينَ ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُولًا ﴿١٦﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ
وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ أَأَنتُمْ أَضْلَلْتُمْ
عِبَادِي هَٰؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ﴿١٧﴾ قَالُوا سُبْحَانَكَ
مَا كَانَ يَنبَغِي لَنَا أَن نَّتَّخِذَ مِن دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَ
لَٰكِن مَّتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا قَوْمًا
بُورًا ﴿١٨﴾ فَقَدْ كَذَّبُوكُم بِمَا تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا
وَلَا نَصْرًا ۚ وَمَن يَظْلِم مِّنكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ﴿١٩﴾
وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ
الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ ۗ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ
لِبَعْضٍ فِتْنَةً أَتَصْبِرُونَ ۗ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ﴿٢٠﴾

ع ٢ / ١٧

منزل ٤

जब वे उनको दूर से देखेंगे तो वे उसके बिफरने और फुंकारने की आवाजें सुनेंगे[1] (12) और जब वे उसमें बेड़ियों में जकड़ कर किसी तंग जगह डाल दिए जाएंगे तो वहां मौत को पुकारेंगे (13) आज एक ही मौत को मत पुकारो बल्कि बार–बार मौत को पुकारते रहो (14) पूछिए यह बेहतर है या वह हमेशा रहने वाली जन्नत जिसका मुत्तक़ियों (संयमी लोगों) से वादा किया गया है, वह उनके लिए बदला है और अंतिम रहने का स्थान है (15) वहां जो चाहेंगे मिलेगा उसी में हमेशा रहेंगे यह आपके रब के ज़िम्मे पक्का वादा है (16) और जब हम उनको और जिनको वे अल्लाह के अलावा पुकारते हैं इकट्ठा करेंगे तो वह कहेगा क्या तुमने मेरे बन्दों को बहकाया, या वे ख़ुद ही रास्ता बहक गए[2] (17) वे कहेंगे तू पवित्र है, हमें यह शोभा नहीं देता था कि हम तुझे छोड़ कर दूसरों को समर्थक बनाते, किन्तु तूने उनको और उनके बाप–दादा को भोग–विलास की सामग्री दी, यहां तक की वे (तेरी) याद ही भुला बैठे और यह लोग बर्बाद होकर रहे (18) बस अब तुम्हारे इन (उपास्यों ही ने) तुम्हारी बात झुठला दी तो अब न तुम अज़ाब को फेर सकते हो और न मदद ले सकते हो और तुममें जो भी अत्याचार करेगा हम उसको बड़े अज़ाब का मज़ा चखाएंगे (19) और आपसे पहले हमने जो रसूल भेजे वे सब खाना खाते और बाज़ारों में चलते–फिरते ही थे और हमने तुम्हें एक दूसरे के लिए आज़माइश बनाया है[3] (देखना है कि) तुम धैर्य रखते हो (या नहीं) और आपका पालनहार सब देखता है (20)

(1) वह आग दोज़ख़ियों को देख कर जोश और गुस्से से भर जाएगी और उसकी क्रोधित आवाज़ों और भयंकर फुंकारों से बड़े–बड़े वीरों और साहसियों की हालत ख़राब हो जाएगी (2) अल्लाह तआला उन पत्थरों को भी बोलने की शक्ति प्रदान कर देंगे जिनकी वे पूजा करते थे, वे और उनके अलावा पैग़म्बर या फरिश्ते या बुज़ुर्ग (संत) जिनको उन्होंने खुदाई का दर्जा दे दिया था, सब ही अपने को अलग और बरी होने को प्रकट कर देंगे (3) पैग़म्बर हैं काफ़िरों का ईमान जांचने को और काफ़िर हैं ईमान वालों के सब्र की परीक्षा लेने को, अब देखें कि तुम काफ़िरों की तकलीफ़ देने पर सब्र करते हो या नहीं, और अल्लाह सब कुछ देख रहा है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا
الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ۭ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا
كَبِيْرًا ﴿٢١﴾ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَ
يَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٢٢﴾ وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ
فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٣﴾ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا
وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿٢٤﴾ وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ
تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ الْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ۭ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى
الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿٢٦﴾ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ
يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِيْ لَمْ
اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾ لَقَدْ اَضَلَّنِيْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِيْ ۭ
وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ
اِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ
نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿٣١﴾
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً
وَّاحِدَةً ۚ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿٣٢﴾

منزل٤

और जो हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते वे बोले कि फरिश्ते हमारे सामने उतर क्यों नहीं आये या हम अपने पालनहार ही को देख लेते, बेशक अन्दर से उनमें अकड़ पैदा हो गई और उन्होंने बड़ी सरकशी (उदण्डता) की (21) जिस दिन वे फरिश्तों को देखेंगे उस दिन अपराधियों के लिए कोई खुशी की बात न होगी और वे कहेंगे (काश कि) रूकावट वाली कोई ओट हो जाती[1] (22) और जो काम उन्होंने किए हम उसकी ओर ध्यान देंगे फिर उनको बिखरा हुआ भूसा कर देंगे[2] (23) उस दिन जन्नत वालों का ठिकाना सबसे बेहतर होगा और राहत की जगह भी बहुत खूब होगी (24) और जिस दिन बादल के साथ आसमान फट पड़ेगें और फरिश्ते उतर पड़ेंगे[3] (25) उस दिन असल बादशाही रहमान की होगी और वह दिन काफिरों के लिए बड़ा कठोर दिन होगा (26) उस दिन अत्याचारी अपने हाथ काट काट खाएगा कहेगा काश कि मैं भी पैग़म्बर के साथ राह पर लग लेता (27) हाय! मेरा दुर्भाग्य काश कि फुलाँ को मैंने मित्र न बनाया होता (28) उपदेश (पुस्तक) आ जाने के बाद उसने मुझे उससे बहका दिया और शैतान है ही इंसान को ज़लील करने वाला (29) और पैग़म्बर कहेंगे कि ऐ मेरे पालनहार! मेरी क़ौम ने इस कुरआन को पीठ पीछे डाल रखा था (30) और इसी तरह हमने हर पैग़म्बर के लिए अपराधियों को दुश्मन बनाया है और आपका पालनहार हिदायत और मदद के लिए काफ़ी है[4] (31) और काफ़िरों ने कहा उन पर कुरआन पूरा–पूरा एक साथ ही क्यों नहीं उतार दिया गया, इस तरह (हमने इसलिए किया) ताकि इससे आपके दिल को जमा दें और हमने इसको ठहर–ठहर कर पढ़वाया है[5] (32)

(1) यहाँ तो फरिश्ते उनको दिखाई नहीं देंगे और जब दिखाई देंगे तो वे उनको दोज़ख में डालने के लिए आये होंगे इसलिए वे पनाह मांगेगे (2) जो काम उन्होंने अच्छे समझ कर किए होंगे वह ईमान न होने के कारण बिल्कुल बेहैसियत हो कर रह जाएंगे (3) बादल की तरह एक चीज़ उतरती हुई दिखाई पड़ेगी जिसमें अल्लाह तआला की तजल्ली (विशेष प्रकाश) होगी, आसमान फट कर उसको जगह दे देंगे और फिर फरिश्तों का तांता बंध जाएगा (4) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी जा रही है कि मक्के के काफिरों की दुश्मनी उनके साथ नई नहीं है बल्कि हर पैग़म्बर के साथ यही हुआ है फिर अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत से सम्मानित करता है और पैग़म्बरों की मदद करता है (5) थोड़ा–थोड़ा उतारने की हिकमत यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को काफ़िरों की ओर से जो रोज़–रोज़ नई तकलीफ़ें पहुँचती रहती हैं, हम कोई नई आयत उतार कर तसल्ली का साधन उपलब्ध करा देते हैं।

وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَٰكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا ﴿٣٣﴾ الَّذِينَ
يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ أُولَٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ
سَبِيلًا ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهُ أَخَاهُ هَٰرُونَ
وَزِيرًا ﴿٣٥﴾ فَقُلْنَا اذْهَبَا إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَٰتِنَا فَدَمَّرْنَٰهُمْ
تَدْمِيرًا ﴿٣٦﴾ وَقَوْمَ نُوحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ أَغْرَقْنَٰهُمْ وَجَعَلْنَٰهُمْ لِلنَّاسِ
آيَةً ۖ وَأَعْتَدْنَا لِلظَّٰلِمِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٣٧﴾ وَعَادًا وَثَمُودَا۟ وَأَ
صْحَٰبَ الرَّسِّ وَقُرُونًا بَيْنَ ذَٰلِكَ كَثِيرًا ﴿٣٨﴾ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ
الْأَمْثَٰلَ ۖ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيرًا ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ أَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي
أُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۚ أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوا لَا
يَرْجُونَ نُشُورًا ﴿٤٠﴾ وَإِذَا رَأَوْكَ إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا
الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ﴿٤١﴾ إِن كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ آلِهَتِنَا لَوْلَا
أَن صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۚ وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ
مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾ أَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَىٰهُ أَفَأَنتَ
تَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًا ﴿٤٣﴾ أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ
أَوْ يَعْقِلُونَ ۚ إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَٰمِ ۖ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٤﴾

منزل٤

और वे जब भी आपके सामने कोई मिसाल लाते हैं तो हम सही बात और उससे बेहतर उत्तर उसका बता देते हैं[1] (33) जिनको उनके मुँह के बल दोज़ख़ की ओर इकट्ठा किया जाएगा वे बहुत ही बुरा स्थान रखते हैं और सबसे बढ़ कर पथभ्रष्ट हैं (34) और हमने मूसा को किताब दी और उनके साथ उनके भाई हारून को सहायक बनाया (35) तो हमने कहा कि तुम दोनों ऐसी क़ौम के पास जाओ जिसने हमारी निशानियाँ झुठलाई हैं फिर हमने उनको तबाह कर डाला (36) और नूह की क़ौम ने भी जब झुठलाया तो उनको भी हमने डुबो दिया और उनको लोगों के लिए एक निशानी बना दिया और अत्याचारियों के लिए हमने दुखद अज़ाब तैयार कर रखा है (37) और आद और समूद और कुँए वाले[2] और उनके बीच कितनी क़ौमों को (हमने हलाक किया) (38) और हमने हर एक को उदाहरण दे कर (समझाया) और जब वे न माने तो हर एक को बर्बाद करके रख दिया (39) और वे उस बस्ती से हो आए हैं जिस पर हमने बहुत बुरी वर्षा की[3] क्या वे उसको देखते नहीं रहे, बात यह है कि उनको जी उठने की उम्मीद ही न थी (40) और जब भी आपको देखते हैं तो आपका मज़ाक उड़ाते हैं, क्या यही हैं वे जिनको अल्लाह ने पैग़म्बर बना कर भेजा है (41) यह तो हमको हमारे उपास्यों से हटा ही देते अगर हम उन पर जमे न रहते, आगे उनको पता चल जाएगा जिस समय वे अज़ाब देखेंगे कि कौन गुमराही में पड़ा हुआ था (42) क्या उसको आपने देखा जिसने अपनी इच्छाओं को अपना उपास्य बना रखा है, क्या आप उसका ज़िम्मा ले सकते हैं (43) या आपका विचार यह है कि उनमें अधिकांश लोग सुनते और समझते हैं वे तो बिल्कुल जानवरों की तरह है बल्कि उनसे भी अधिक गुमराह हैं[4] (44)

---

(1) यह उसका दूसरा फ़ायदा है कि जब कोई नई आपत्ति काफ़िरों की ओर से आती है तो किसी नई आयत के द्वारा उसका उत्तर उपलब्ध करा दिया जाता है (2) "असहाबुर्रस्स" का शाब्दिक अर्थ है "कुँएं वाले" उनको भी अवज्ञा के कारण हलाक किया गया, शेष विवरण न पवित्र कुरआन में है और न सही हदीसों में, ऐतिहासिक बातों में बहुत भिन्नता है (3) यानी क़ौम–ए–लूत (4) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इच्छा रहती थी कि जो लोग कुफ़्र पर अड़े हुए हैं वे ईमान ले आएं, कुरआन ने विभिन्न स्थानों पर आपको तसल्ली दी है कि बात पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी आप की है, जिन्होंने अपनी इच्छाओं को अपना खुदा बना रखा है उनकी कोई जिम्मेदारी आपके ऊपर नहीं, उनको आप कैसे सही रास्ते पर ला सकते हैं जो जानवरों से गए गुज़रे हैं, जानवर भी अपने पालनहार के आगे सिर झुका देते हैं मगर ये तो अपने अच्छे–बुरे को न समझतें हैं न समझना चाहते हैं।

भला आपने अपने पालनहार को देखा कि कैसे उसने छाया लंबी कर दी और अगर वह चाहता तो उसे ठहरा रखता फिर सूरज को हमने उस पर पहचान बनाया (45) फिर धीरे–धीरे हमने उसको अपनी ओर समेट लिया[1] (46) और वही है जिसने तुम्हारे लिए रात को लिबास और नींद को आराम बनाया और दिन को जागने की चीज़ बनाई (47) और वही है जिसने अपनी रहमत (दया) यानी बारिश से पहले हवाओं को शुभ समाचार के साथ भेजा और हम ही ने आसमान से सुथरा पानी उतारा (48) ताकि हम उससे मुर्दा बस्ती में जान डाल दें और अपनी सृष्टियों में से बहुत से जानवरों और इंसानों को पिलाएं (49) और हम ही ने उसको उनके बीच बांट दिया ताकि वे ध्यान दें फिर भी अधिकांश लोगों ने इनकार ही किया[2] (50) और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में कोई डराने वाला भेज देते[3] (51) तो आप काफ़िरों की बात मत मानिए और इस (कुरआन) के द्वारा मुकाबला करते रहिए (52) वही है जिसने दो नदियों को मिला कर इस प्रकार चलाया है यह मीठा प्यास बुझाने वाला है और यह नमकीन खारी है और दोनों के बीच एक पर्दा और रूकावट वाली ओट बना दी[4] (53) और वही है जिसने पानी से इंसान को पैदा किया तो उसको वंशागत और ससुराली नाते वाला बना दिया और आपका पालनहार सब कुछ कर सकता है (54) वे अल्लाह को छोड़ कर ऐसों को पूजते हैं जो उनको न फ़ायदा पहुँचा सकते हैं और न नुक़सान और काफ़िर तो है ही अपने पालनहार का विरोधी[5] (55) और हमने आपको बस शुभ समाचार सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है (56) आप कह दीजिए कि मैं इस पर तुमसे कुछ भी बदला नहीं मांगता मगर हाँ! यह कि जो चाहे अपने पालनहार का रास्ता पकड़ ले[6] (57)

(1) यह अल्लाह की शक्ति की निशानियों का वर्णन है, सूर्योदय होता है उस समय छाया लंबी दिखाई पड़ती है फिर धीरे–धीरे वह सिमट जाती है यहाँ तक कि आधे दिन के समय वह बहुत थोड़ी रह जाती है फिर लंबी होनी शुरु होती है यहाँ तक कि सूरज छिप जाता है, छाया का घटना–बढ़ना सूरज पर निर्भर करता है, इसलिए सूरज को रास्ता बताने वाला कहा (2) समुद्र से भाप का उठना, पहाड़ों पर बर्फ का जमना फिर उसका पिघल–पिघल कर नदियों और नहरों के रूप में जारी होना और बादलों का विभिन्न क्षेत्रों में जाकर अल्लाह के आदेश से बरसना, यह सब उसकी शक्ति की निशानियाँ हैं (3) अल्लाह चाहे तो अब भी पैग़म्बरों की बहुतायत कर दे लेकिन उसकी चाहत ही यह हुई कि अब अंत में सारे संसार के लिए अकेले हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पैग़म्बर बना कर भेजे, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करते हुए अल्लाह ने कहा कि आप काफ़िरों की परवाह न कीजिए, इस कुरआन के द्वारा मुश्रिकों से पूरा मुकाबला करते रहिए (4) नदी जब समुद्र से मिलती है तो दूर तक दोनों का पानी अलग दिखाई पड़ता है, रंग में भी अंतर और स्वाद में भी अंतर (5) सारी नेमतों के बाद भी एक इनकार करने वाला यह नहीं सोचता कि मैं किसका विरोध कर रहा हूँ (6) यानी यही मेरी खुशी है कि लोग सही रास्ते पर आ जाएं मैं इस पर कोई बदला नहीं मांगता।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ ۚ وَكَفَىٰ بِهِ
بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا ﴿٥٨﴾ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَٰنُ فَاسْأَلْ
بِهِ خَبِيرًا ﴿٥٩﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَٰنِ قَالُوا وَمَا
الرَّحْمَٰنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ﴿٦٠﴾ تَبَارَكَ الَّذِي
جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُّنِيرًا ﴿٦١﴾
وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ أَرَادَ أَن يَذَّكَّرَ
أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ﴿٦٢﴾ وَعِبَادُ الرَّحْمَٰنِ الَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ
هَوْنًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ﴿٦٣﴾ وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ
لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ﴿٦٤﴾ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا
عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾ إِنَّهَا سَاءَتْ
مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٦٦﴾ وَالَّذِينَ إِذَا أَنفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ
يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾ وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ
مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا
بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ﴿٦٨﴾

منزل٤

उस ज़िन्दा पर भरोसा रखिए जिसको कभी मौत नहीं और उसकी प्रशंसा के साथ वंदना (तस्बीह) करते रहिए और वह अपने बंदों के पापों की पूरी जानकारी रखता है (58) जिसने आसमानों और ज़मीन को और उनके बीच जो कुछ है उसको छः दिन में पैदा किया फिर वह अर्श पर विराजमान हुआ, वही रहमान है तो आप उसकी शान उसकी जानकारी रखने वाले से पूछ लीजिए[1] (59) और जब उनसे कहा जाता है कि रहमान को सज्दा करो तो वे कहते हैं कौन है रहमान? क्या आप जिसको कहते हैं उसको हम सज्दा करने लगें और (इस बात से) वे और ज़्यादा बिदकने लगते हैं[2] (60) वह बरकत वाला है जिसने आसमान में बुर्ज (नक्षत्र) बनाए और उनमें प्रकाशमान चिराग़ रौशनी बिखेरने वाला चाँद बनाया[3] (61) वही है जिसने रात और दिन को आगे पीछे किया (इसमें उपदेश है) उसके लिए जो उपदेश प्राप्त करना चाहे या शुक्र करने का इरादा करे (62) और रह़मान के खास बंदे वे हैं जो ज़मीन पर दबे पाँव चलते हैं और जब नादान लोग उनके मुंह लगते हैं तो वे साहब–सलामत कर लेते हैं (63) और जो अपने पालनहार के लिए सज्दे करके और खड़े रह–रह कर रातें बिता देते हैं (64) और जो यह दुआ करते रहते हैं कि ऐ हमारे पालनहार! दोज़ख के अज़ाब को हमसे फेर दीजिए बेशक उसका अज़ाब बड़ी सज़ा है (65) बेशक वह बहुत ही बुरा ठिकाना और बहुत बुरा रहने का स्थान है (66) और जो खर्च करते हैं तो न फ़ुज़ूल खर्ची करते हैं और न तंगी और वे संतुलन पर कायम रहते हैं (67) और अल्लाह के साथ और किसी पूज्य को नहीं पुकारते और किसी ऐसी जान को जिसे अल्लाह ने हराम कर दिया हो क़त्ल नहीं करते[4] सिवाय हक़ के और ज़िना (व्यभिचार) नहीं करते और जो ऐसा करेगा वह बड़े पाप में जा पड़ेगा (68)

---

(1) वे जानकारी रखने वाले फरिश्ते हैं और सबसे बढ़ कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, आपके माध्यम से लोगों को समझाया जा रहा है और सबसे बढ़ कर ख़बर रखने वाला वह खुद है (2) मक्का के मुश्रिक यद्यपि अल्लाह में विश्वास रखते थे किन्तु अल्लाह के लिए रह़मान के नाम को स्वीकार नहीं करते थे इसलिए जब अल्लाह का उल्लेख रह़मान के नाम के साथ होता तो बड़ी बद्तमीज़ी से इस पावन नाम का खण्डन करते थे (3) बुरुज से आशय सितारे भी हो सकते हैं या जिनको अंतरिक्ष विज्ञानी नक्षत्र कहते हैं वे भी हो सकते हैं इसका विवरण सूरह हिज्र (पृष्ठ:236) में गुज़र चुका है (4) जैसे कत्ल–ए–अमद (जानबूझ कर क़त्ल करने) के बदले क़त्ल करना या व्यभिचार की सज़ा में विवाहित को पत्थरों से मार डालना या जो व्यक्ति दीन (धर्म) से विद्रोह करके मुर्तद (इस्लाम से बाहर) हो जाए उसको क़त्ल करना।

يُضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهِ مُهَانًا ﴿٦٩﴾ اِلَّا مَنْ
تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ
حَسَنٰتٍ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا
فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ وَ
اِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿٧٢﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ
يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا
مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿٧٤﴾
اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ﴿٧٥﴾
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٧٦﴾ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ
رَبِّيْ لَوْلَا دُعَاۤؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾

سُوْرَةُ الشُّعَرَاۤءِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَتَانِ وَسَبْعٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّاَحَدَ عَشَرَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
طٰسٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ
نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ
مِّنَ السَّمَاۤءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ﴿٤﴾

منزل ٥

क़यामत के दिन उसका अज़ाब (दण्ड) दोगुना कर दिया जाएग और हमेशा वह उसी में अपमानित हो कर पड़ा रहेगा (69) मगर हाँ! जो तौबा कर ले और ईमान ले आए और अच्छे काम करे तो ऐसों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों से बदल देगा और वह तो बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है (70) और जो तौबा करता है और अच्छे काम करता है तो वह निश्चित ही अल्लाह की ओर पूर्ण रूप से लौट आता है[1] (71) और जो झूठ में शामिल नहीं होते[2] और जब व्यर्थ कामों के पास से गुज़रते हैं तो शरीफ़ों की तरह गुज़र जाते हैं (72) और जब उनके पालनहार की आयतों से उनको नसीहत की जाती है तो उन पर बहरे और अंधे होकर नहीं गिरते[3] (73) और जो यह दुआ करते रहते हैं कि ऐ हमारे पालनहार! हमारी पत्नियों और हमारी संतान से हमको आँखों की ठंडक प्रदान कर और हमें परहेज़गार लोगों का पेशवा बना दे[4] (74) ऐसों ही को उनके जमे रहने के बदले में उच्च भवन दिये जाएंगे और सलाम व दुआ से उनका स्वागत किया जाएगा (75) उसी में हमेशा रहेंगे वह क्या ख़ूब ठिकाना है और क्या खूब रहने का स्थान है (76) आप कह दीजिए कि तुम्हारे पालनहार को तुम्हारी कोई परवाह नहीं अगर तुम उसको न पुकारो बस तुम तो झुठला ही चुके हो अब आगे यह (झुठलाना तुम्हारे) गले पड़ कर रहेगा[5] (77)

सूरह शुअरा

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

तॉ. सीन. मीम. (1) यह खुली किताब की आयतें हैं (2) शायद आप अपनी जान को विनाश में डाल देंगे कि वे ईमान नहीं लाते (3) अगर हम चाहते तो हम आसमान से कोई निशानी उतार देते तो उनकी गर्दनें उसके समाने झुक कर रह जातीं[6] (4)

---

(1) पहले उल्लेख था काफ़िर के पापों का, यह उल्लेख है इस्लाम में गुनाह करने का (2) यानी न झूठ बोलें न झूठी गवाही दें और न झूठे कामों और पाप की सभाओं में शामिल हों (3) अर्थात बहुत ही चिंतन–मनन और ध्यानपूर्वक सुनते हैं और सुनकर प्रभावित होते हैं, मुश्रिकों की तरह पत्थर की मूर्ति नहीं बन जाते (4) यानी पत्नी व संतान को ऐसी शराफ़त व संस्कार प्रदान कर जिन्हें देख कर आँखें ठंडी हों और हमें ऐसा बना दे कि लोग हमारा अनुसरण करके परहेज़गार बन जाएं और हमारा परिवार तकवा व तहारत (परहेज़गारी व पवित्रता) में हमारा अनुसरण करे (5) तुम्हारे फ़ायदे–नुकसान की बातें बता दी गईं अब बन्दे को चाहिए कि घमण्डी और निडर न हो खुदा को उसकी क्या परवाह, फिर तुम में जिन्होंने झुठला ही दिया, शीघ्र ही यह झुठलाना उनके गले का हार बनेगा, उसकी सजा से उनको किसी तरह छुटकारा न मिल सकेगा (6) अल्लाह चाहता तो ज़बर्दस्ती सबको मुसलमान बना देता लेकिन चूँकि यह दुनिया परीक्षा स्थल है इसलिए हर व्यक्ति पर इसकी ज़िम्मेदारी है कि वह ख़ुद प्रमाणों पर विचार करे ईमान का रास्ता अपनाए, बस आपको भी इतना व्याकुल नहीं होना चाहिए कि जान ही चली जाए।

وَمَا يَأْتِيهِم مِّن ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمَٰنِ مُحْدَثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْهُ
مُعْرِضِينَ ﴿٥﴾ فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَنبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٦﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ
زَوْجٍ كَرِيمٍ ﴿٧﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٨﴾
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٩﴾ وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنِ
ائْتِ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠﴾ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۚ أَلَا يَتَّقُونَ ﴿١١﴾ قَالَ رَبِّ
إِنِّي أَخَافُ أَن يُكَذِّبُونِ ﴿١٢﴾ وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنطَلِقُ لِسَانِي
فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَارُونَ ﴿١٣﴾ وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنبٌ فَأَخَافُ أَن يَقْتُلُونِ ﴿١٤﴾
قَالَ كَلَّا ۖ فَاذْهَبَا بِآيَاتِنَا ۖ إِنَّا مَعَكُم مُّسْتَمِعُونَ ﴿١٥﴾ فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ
فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾ أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٧﴾
قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ فِينَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِينَ ﴿١٨﴾
وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾ قَالَ فَعَلْتُهَا
إِذًا وَأَنَا مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٢٠﴾ فَفَرَرْتُ مِنكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي
رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢١﴾ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ
أَنْ عَبَّدتَّ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٢﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٣﴾

منزل٥

और उनके पास रहमान के पास से जो कोई नयी नसीहत आती है उससे वे मुँह ही मोड़ लेते हैं (5) बस उन्होंनें (इस नई नसीहत को भी) झुठला दिया तो वे जिस चीज़ का मज़ाक उड़ाते हैं आगे उनको इसकी वास्तविकता का पता चल जाएगा (6) क्या उन्होंने ज़मीन में देखा नहीं कि हमने उसमें कैसे कैसी भली प्रकार की जोड़ेदार वस्तुएं उगा दीं (7) बेशक उसमें निशानी है फिर भी उनमें अधिकतर ईमान नहीं लाते (8) और बेशक आपका पालनहार ही ज़बर्दस्त है बहुत ही दयालु है (9) और जब आपके पालनहार ने मूसा को आवाज़ दी कि अत्याचारी लोगों के पास जाओ (10) फिरऔन की क़ौम के पास भला वे डरते नहीं (11) उन्होंने कहा मेरे पालनहार! मुझे आशंका है कि वे मुझे झुठलाएंगे (12) और मेरी छाती तंग (संकीर्ण) होने लगती है और मेरी ज़बान भी नहीं चलती तो हारून को (यह) संदेश भेज दीजिए (13) और मेरे ज़िम्मे उनका एक अपराध भी है तो मुझे आशंका है कि वे मुझे क़त्ल ही कर डालेंगे[1] (14) आदेश हुआ हरगिज़ नहीं तुम दोनों मेरी निशानियों के साथ जाओ हम तुम्हारे साथ हैं (सब) सुन रहे हैं (15) बस तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ तो कहो कि हम संसारों के पालनहार का संदेश लाए हैं (16) कि बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दो[2] (17) वह बोला कि क्या बचपन में हमने तुम्हें पाला–पोसा नहीं था और अपनी आयु के कई वर्ष तुमने हममें गुज़ारे (18) और तुमने वह हरकत की जो कर गये और तुम बड़े ना शुक्रे (कृतघ्न) हो(19) उन्होंने कहा कि हाँ! मैं व हरकत कर बैठा था जब मुझे रास्ता नहीं मिला था (20) फिर जब मुझे तुम्हारा डर हुआ तो मैं तुम्हारे पास से निकल गया तो मेरे पालनहार ने मुझे फ़रमान दिया और मुझे रसूलों में शामिल कर दिया[3] (21) और यही वह एहसान है जिसका बोझ तुम मुझ पर रख रहे हो कि तुमने बनी इस्राईल को गुलाम बना रखा है (22) फिरऔन बोला संसारों का पालनहार आख़िर है क्या (23)

(1) कहा जाता है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़ुबान में कुछ हकलाहट थी यह विवशता उन्होंने पेश की और उस घटना का भी उन्होंने हवाला दिया जब उन्होंने पीड़ित को बचाने के लिए अत्याचारी को एक मुक्का मारा तो वह मर गया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर क़त्ल का आरोप लगा (2) बनी इस्राईल हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की संतान को कहा जाता है, यह फ़िलिस्तीन के क्षेत्र कनआन के रहने वाले थे, हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम जब मिस्र के शासक हुए तो उन्होंने सबको वहीं बुलवा लिया फिर जब कुछ समय के बाद सरकार की व्यवस्था बदली और फ़िरऔन का सिलसिला शुरु हुआ तो उन्होंने बनी इस्राईल पर अत्याचार करना शुरु किया (3) इसका विवरण सूरह तॉहा में गुज़र चुका।

कहा वह आसमानों और ज़मीन का और दोनों के बीच का सबका पालनहार है अगर तुम विश्वास करो (24) उसने अपने दरबारियों से कहा अरे सुनते भी हो (25) उन्होंने कहा तुम्हारा भी पालनहार है और तुम्हारे गुज़रे हुए बाप–दादा का भी (26) वह बोला जो पैग़म्बर तुममें भेजा गया है वह तो बिल्कुल ही दीवाना लगता है (27) उन्होंने कहा पूरब व पश्चिम और उनके बीच का पालनहार है अगर तुम बुद्धि रखते हो[1] (28) बोला अगर तुमने मेरे अलावा किसी और को उपास्य ठहराया तो मैं अवश्य तुम्हें क़ैद में डाल दूँगा (29) कहा चाहे मैं कोई खुली हुई चीज़ ले आऊँ (30) बोला सच्चे हो तो ले आओ (31) तो उन्होंने अपनी लाठी डाल दी बस वह साफ़–साफ़ अजगर बन गया (32) और अपना हाथ खींचा तो वह देखने वालों के लिए सफेद (चमकदार) हो गया (33) उसने अपने दरबारियों से कहा यह निश्चित ही माहिर जादूगर है (34) यह अपने जादू के बल पर तुम्हें अपने देश से निकाल देना चाहता है तो तुम्हारी क्या राय है (35) उन्होंने कहा इसको और इसके भाई को मोहलत दीजिए और शहरों में हरकारे (दूत) दौड़ा दीजिए (36) वे हर माहिर जादूगर को ले आएं (37) अतः जादूगर एक निर्धारित दिन के वादे पर इकट्ठा किये गये (38) और लोगों से कहा गया तुम भी इकट्ठा हुए होते (39) ताकि अगर वे जादूगर हावी हो जाएं तो हम उन्हीं के रास्ते पर चलें (40) फिर जब जादूगर आ गए तो उन्होंने फ़िरऔन से कहा कि अगर हम विजयी हुए तो हमें कुछ पुरस्कार भी मिलेगा (41) बोला हाँ–हाँ तब तो तुम ज़रूर ख़ास लोगों में गिने जाओगे (42) मूसा ने कहा तुम्हें जो डालना हो डालो (43)

(1) फ़िरऔन की ओर से सारे संसारों के पालनहार की वास्तविकता का प्रश्न किया गया था, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के उत्तर का सार (खुलासा) यह था कि उसकी वास्तविकता को कौन समझ सकता है, हाँ! वह गुणों से पहचाना जाता है, इसलिए उन्होंने उसके गुणों को बयान किया, इस पर फ़िरऔन ने उनको पागल–दीवाना कहा कि प्रश्न वास्तविकता का था उत्तर में उसके गुणों का बयान है, इस पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने और भी उसके गुण बयान करके कहा कि बुद्धि का प्रयोग तुम्हें करने की आवश्यकता है, वह शक्ति, बुद्धि से बहुत ऊपर है हाँ! उसके गुणों से उसको पहचाना जाता है जिसके लिए बुद्धि की बन्द खिड़कियाँ खोलने की ज़रूरत है।

فَأَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ
الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾ فَأَلْقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿٤٥﴾
فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ﴿٤٦﴾ قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾ رَبِّ مُوسَىٰ
وَهَارُونَ ﴿٤٨﴾ قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي
عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم
مِّنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٩﴾ قَالُوا لَا ضَيْرَ إِنَّا إِلَىٰ
رَبِّنَا مُنقَلِبُونَ ﴿٥٠﴾ إِنَّا نَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطَايَانَا أَن كُنَّا أَوَّلَ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥١﴾ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي إِنَّكُم مُّتَّبَعُونَ ﴿٥٢﴾
فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿٥٣﴾ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ
قَلِيلُونَ ﴿٥٤﴾ وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَائِظُونَ ﴿٥٥﴾ وَإِنَّا لَجَمِيعٌ حَاذِرُونَ ﴿٥٦﴾
فَأَخْرَجْنَاهُم مِّن جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٧﴾ وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٥٨﴾ كَذَٰلِكَ
وَأَوْرَثْنَاهَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٥٩﴾ فَأَتْبَعُوهُم مُّشْرِقِينَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا تَرَاءَى
الْجَمْعَانِ قَالَ أَصْحَابُ مُوسَىٰ إِنَّا لَمُدْرَكُونَ ﴿٦١﴾ قَالَ كَلَّا إِنَّ مَعِيَ
رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٦٢﴾ فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اضْرِب بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ
فَانفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ﴿٦٣﴾ وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ الْآخَرِينَ ﴿٦٤﴾

منزل ٥

तो उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ फेंकीं और बोले फ़िरऔन का प्रताप (सलामत रहे) ग़ालिब (विजयी) तो हम ही रहेंगे (44) फिर मूसा ने अपनी लाठी डाली तो बस वे जो कुछ बना कर लाते थे उसको निगलने लगी[1] (45) बस जादूगर सज्दे में गिर गए बोले हम संसारों के पालनहार पर ईमान लाए (46) मूसा व हारून के पालनहार पर (47) (फिरऔन) बोला तुमने हमारी अनुमति से पहले इनको मान लिया निश्चित ही यही तुम्हारा सरगना है जिसने तुम को जादू सिखाया है अभी तुम्हें पता चल जाता है (48) मैं तुम्हारे हाथ–पाँव विपरीत दिशाओं से काट डालूँगा और तुम सबको सूली पर चढ़ा दूँगा (49) वे बोले कोई नुकसान नहीं हमें तो अपने पालनहार ही की ओर पलट कर जाना है (50) हमें तो उम्मीद यह है कि हमारा पालनहार हमारी ग़लतियाँ माफ़ कर दे कि हम सब से पहले ईमान लाने वालों में हैं (51) और हमने मूसा के पास वह्य भेजी कि तुम हमारे बंदों को रातों रात लेकर निकल जाओ तुम्हारा पीछा भी ज़रूर किया जाएगा (52) फिर फ़िरऔन ने हरकारे (दूत) दौड़ा दिए (53) कि यह मुट्ठी भर लोग हैं (54) और बेशक इन्होंने हमें गुस्से में भर दिया है (55) और हम सब चौकन्ने हैं (56) फिर हमने उनको बागों और स्रोतों से निकाल बाहर किया (57) और खज़ानों और सम्मान के स्थान से[2] (58) यूँ ही हुआ और उसका वारिस हमने बनी इस्राईल को बनाया (59) फिर सूरज निकलते–निकलते वे उनके पीछे हो लिए (60) तो जब दोनों गिरोहों का आमना सामना हुआ तो मूसा के साथियों ने कहा कि अब तो हम पकड़े गये[3] (61) मूसा ने कहा हरगिज़ नहीं मेरा पालनहार मेरे साथ है वह अभी मुझे रास्ता देगा (62) तो हमने मूसा को वह्य की कि अपनी लाठी समुद्र पर मारो बस वह फट गया तो हर टुकड़ा यूँ हो गया मानो बड़ा पहाड़ है (63) और हम इस जगह पर दूसरों को भी करीब ले आए[4] (64)

---

(1) जादूगरों ने रस्सियाँ डालीं तो लगा कि साँप दौड़ रहे हैं लेकिन हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने जैसे ही अपनी लाठी डाली उनका सारा ढोंग समाप्त हो गया, वे माहिर जादूगर थे उनको विश्वास हो गया कि यह जादू से आगे की कोई चीज़ है, उनके इस विश्वास ने उनको सज्दे में गिरा दिया और वे कहने लगे कि हम ईमान लाते हैं, फ़िरऔन गुस्से से अनियंत्रित हो गया और औल–फौल बकने लगा, उन्होंने बड़े इत्मिनान से कहा कि हमें अल्लाह का विश्वास है, उसी की ओर हमें लौट कर जाना है तो तुम्हें जो करना हो कर लो (2) हज़रत मूसा और उनकी क़ौम का पीछा करने के लिए फ़िरऔन और उसकी क़ौम बड़ी शान से निकली और अंततः सब डूब गये, सारे बाग़ और महल धरे रह गये और आगे चल कर सब बनी इस्राईल के हिस्से में आए (3) बहर–ए–कुलजुम के किनारे पहुँच कर बनी इस्राईल पार होने का विचार कर रहे थे कि पीछे से फ़िरऔन की सेना दिखाई पड़ी, घबरा कर कहने लगे कि अब तो हम मारे गये, हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उनको तसल्ली दी फिर अल्लाह के आदेशानुसार लाठी समुद्र पर मारी तो उसमें बारह रास्ते इस प्रकार निकल आए कि पानी दाएं–बाएं पहाड़ की तरह खड़ा हो गया, बनी इस्राईल उससे पार होने लगे, पीछे फ़िरऔन की सेना भी पहुँची (4)। अल आख़िरीन अलिफ़ लाम के साथ अज़ाब दी हुई क़ौम के लिए इस्तेमाल हुआ है, जो ईमान वाले हैं वही अल्लाह के अपने हैं, बाक़ी सब बेगाने, पराए और दूसरे हैं, अल्लाह की रहमत से दूरी को बताने के लिए भी यह विशेष कुरआनी अंदाज़ है।

और हमने मूसा और उनके सब साथियों को बचा लिया (65) फिर दूसरों को डुबो दिया[1] (66) बेशक इसमें एक निशानी है फिर भी उनमें अधिकतर लोग नहीं मानते (67) और बेशक आपका पालनहार ज़बर्दस्त है बहुत ही दयालु है (68) और उनको इब्राहीम का हाल पढ़ कर सुनाइये (69) जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा तुम किस चीज़ को पूजते हो (70) वे बोले हम मूर्तियों की पूजा करते हैं तो इसी में लगे रहते हैं[2] (71) उन्होंने पूछा कि जब तुम पुकारते हो तो क्या वे तुम्हारी (बात) सुनते हैं (72) या तुम्हें कुछ फ़ायदा या नुकसान पहुँचा सकते हैं (73) वे बोले बात यह है कि हमने अपने बाप–दादा को ऐसा ही करते पाया है (74) उन्होंने कहा भला तुमने कुछ देखा भी जिनकी तुम पूजा करते रहे हो (75) तुम और तुम्हारे पुराने पुरखे (76) मेरे तो वे सब के सब दुश्मन हैं सिवाय संसारों के पालनहार के (77) जिसने मुझे पैदा किया फिर वही मुझे रास्ता देता है (78) और जो मुझे खिलाता है और मुझे पिलाता है (79) और जब मैं बीमार होता हूँ तो वही मुझे स्वस्थ करता है (80) और जो मुझे मारेगा फिर जिलाएगा(81) जिससे मैं आशा लगाए हुए हूँ कि वह बदले के दिन मेरे पाप क्षमा कर देगा (82) ऐ मेरे पालनहार! मुझे फ़रमान प्रदान कर और भले लोगों के साथ मुझे शामिल कर दे[3] (83) और आने वालों में मेरा सच्चा बोल बाक़ी रख[4] (84) और उन लोगों में से बना जो नेमत वाली जन्नत के वारिस होंगे (85) और मेरे पिता को माफ़ कर दे बेशक वे पथभ्रष्टों में थे[5] (86) और जिस दिन लोग उठाए जाएंगे उस दिन मुझे अपमानित न कर (87) जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद (88) मगर हाँ! जो अल्लाह के पास पाक दिल लेकर आएगा (89) और जन्नत परहेज़गार लोगों के करीब कर दी जाएगी (90)

(1) फ़िरऔन की सेना ने जब देखा कि बारह रास्ते बने हुए हैं तो वह भी पीछे हो ली, लेकिन जब बनी इस्राईल पार हो गये और फ़िरऔन बीच में पहुँचा तो अल्लाह ने समुद्र को अपने मूल रूप में लौटा दिया (2) पूरी क़ौम मूर्ति पूजक थी और चूँकि मूर्ति बनाने वाले भी थे इसलिए पूरा समय उसी में लगाते थे (3) अल्लाह की बडाइयों और कृपाओं का उल्लेख करके दुआ शुरु कर दी और यही अल्लाह की उत्तम इबादत है (4) यानी ऐसे कार्य करने का सामर्थ्य दे कि आने वाली पीढ़ियाँ प्रशंसा करें और इसी रास्ते पर चलें, अल्लाह ने यह दुआ ऐसी स्वीकार की कि खुद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि मैं इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ करता हूँ और आज भी इब्राहीम अलैहिस्सलाम की याद ज़बान पर जारी है और यह मुसलमान हर नमाज़ में ''कमासल्लैत अलाइब्राहीम और कमाबारकत अला इब्राहीम'' पढ़ते हैं (5) यह दुआ उन्होंने की मगर जब उनका अल्लाह का दुश्मन होना खुल कर सामने आ गया तो उनसे अलगाव की घोषणा की। ''फ़लम्मा तबय्यन लहू अंनहू अदुउललिल्लाहि तबर्र अ मिंहु''।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِلْغَاوِينَ ﴿٩١﴾ وَقِيلَ لَهُمْ أَيْنَمَا كُنتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٩٢﴾
مِن دُونِ اللَّهِ هَلْ يَنصُرُونَكُمْ أَوْ يَنتَصِرُونَ ﴿٩٣﴾ فَكُبْكِبُوا فِيهَا
هُمْ وَالْغَاوُونَ ﴿٩٤﴾ وَجُنُودُ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ﴿٩٥﴾ قَالُوا وَهُمْ فِيهَا
يَخْتَصِمُونَ ﴿٩٦﴾ تَاللَّهِ إِن كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٩٧﴾ إِذْ نُسَوِّيكُم بِرَبِّ
الْعَالَمِينَ ﴿٩٨﴾ وَمَا أَضَلَّنَا إِلَّا الْمُجْرِمُونَ ﴿٩٩﴾ فَمَا لَنَا مِن شَافِعِينَ ﴿١٠٠﴾
وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٢﴾
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ
لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ
أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٠٧﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَ
أَطِيعُونِ ﴿١٠٨﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ
الْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١١٠﴾ قَالُوا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ
الْأَرْذَلُونَ ﴿١١١﴾ قَالَ وَمَا عِلْمِي بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾ إِنْ حِسَابُهُمْ
إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي ۖ لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾ إِنْ أَنَا
إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١١٥﴾ قَالُوا لَئِن لَّمْ تَنتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ
مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾ قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾

منزل ٥

और दोज़ख गुमराहों के सामने प्रकट की जाएगी (91) और उनसे कहा जाएगा जिनकी तुम पूजा करते थे वे कहाँ हैं (92) सिवाय अल्लाह के, क्या वे तुम्हारी मदद कर सकते हैं या वे अपना ही बचाव कर सकते हैं (93) फिर वे और बहके हुए लोग उसमें मुँह के बल डाल दिए जाएंगे[1] (94) और इब्लीस की सारी सेनाएं भी (95) और व उसमें झगड़ते हुए कहेंगे (96) खुदा की क़सम हम खुली गुमराही में थे (97) जब हम तुम्हें संसारों के पालनहार के बराबर ठहरा रहे थे (98) और हमें केवल इन अपराधियों ने बहकाया[2] (99) तो अब न हमारा कोई सिफारिशी है (100) और न कोई निःस्वार्थी मित्र है (101) तो काश कि हमें एक अवसर और मिल जाता तो हम ईमान ले आते (102) बेशक इसमें एक निशानी है फिर भी उनमें अधिकांश लोग मानते नहीं (103) और बेशक आपका पालनहार ही ज़बर्दस्त है बहुत ही दयालु है (104) नूह की क़ौम ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया (105) जब उनके भाई नूह ने कहा कि क्या तुम डरते नहीं (106) मैं तुम्हारे लिए विश्वसनीय पैग़म्बर हूँ (107) तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो (108) और मैं इस पर तुमसे कोई पारिश्रमिक नहीं मांगता मेरा अज्र संसारों के पालनहार ही के ज़िम्मे है (109) तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो (110) वे बोले भला हम तुम पर ईमान लाएंगे? जब कि तुम्हारा अनुसरण तो बहुत ही घटिया लोगों ने किया है (111) उन्होंने कहा मैं क्या जानूँ कि वे क्या काम करते हैं(112) उनका हिसाब मेरे पालनहार ही के ज़िम्मे है काश तुम्हें एहसास होता (113) और मैं ईमान वालों को धुत्कार नहीं सकता[3] (114) मैं तो साफ़–साफ़ डराने वाला हूँ (115) वे बोले ऐ नूह! अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर पत्थर मार–मार कर मार डाले जाओगे (116) वे पुकार उठे ऐ मेरे पालनहार! मेरी क़ौम ने मुझे झुठलाया दिया (117)

---

(1) यानी उन बहके हुए लोगों के साथ उनके झूठे उपास्यों को भी दोज़ख में डाला जाएगा, उनमें कुछ वे हैं जिन्होंने खुद खुदाई का दावा किया और कुछ पत्थर की मूर्ति हैं और यह इसलिए होगा ताकि गुमराह अपने उपास्य का परिणाम देख लें (2) इससे आशय वे बड़े–बड़े सरदार हैं जिन्होंने बहकाया (3) कोई क्या काम करता है देखने में साधारण व्यवसाय ही क्यों न हो अगर वह ईमान लाया तो वह विश्वसनीय है, किसी पैग़म्बर का काम नहीं कि उनको धुत्कार दे और अगर मान लिया जाए उनके पास कोई सांसारिक हित है भी तो मैं उसका ज़िम्मेदार नहीं, उसका हिसाब–किताब अल्लाह के ज़िम्मे है।

فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَّنَجِّنِي وَمَن مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾
فَأَنجَيْنَاهُ وَمَن مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١١٩﴾ ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ
الْبَاقِينَ ﴿١٢٠﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٢١﴾ وَ
إِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٢﴾ كَذَّبَتْ عَادٌ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾ إِذْ
قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٢٤﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٢٥﴾
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٢٦﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢٧﴾ أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ ﴿١٢٨﴾ وَ
تَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ ﴿١٢٩﴾ وَإِذَا بَطَشْتُم بَطَشْتُمْ
جَبَّارِينَ ﴿١٣٠﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٣١﴾ وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُم بِمَا
تَعْلَمُونَ ﴿١٣٢﴾ أَمَدَّكُم بِأَنْعَامٍ وَبَنِينَ ﴿١٣٣﴾ وَجَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٣٤﴾ إِنِّي
أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٣٥﴾ قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَظْتَ
أَمْ لَمْ تَكُن مِّنَ الْوَاعِظِينَ ﴿١٣٦﴾ إِنْ هَٰذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣٧﴾ وَمَا
نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿١٣٨﴾ فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَ
مَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٤٠﴾
كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٤١﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٤٢﴾

منزل٥

तो मेरे और उनके बीच कोई खुला फैसला कर दे और मुझे और मेरे ईमान वाले साथियों को बचा ले (118) तो हमने उनको और उनके साथियों को जो भरी नाव में थे बचा लिया (119) फिर (उसके) बाद बाकी सबको डुबो दिया (120) बेशक इसमें एक निशानी है फिर भी उनमें अधिकांश लोग नहीं मानते (121) और बेशक आपका पालनहार ही ज़बरदस्त है बहुत ही दयालु है (122) आद ने भी पैगम्बरों को झुठलाया (123) जब उनके भाई हूद ने उनसे कहा भला तुम डरते नहीं[1] (124) बेशक मैं तुम्हारे लिए विश्वसनीय संदेश लाने वाला हूँ (125) तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो (126) और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता, मेरा बदला केवल संसारों के पालनहार के जिम्मे है (127) क्या तुम हर टीले पर एक स्मारक बना कर तमाशा करते हो[2] (128) और ऐसे बड़े–बड़े महल बनाते हो जैसे हमेशा तुम्हें रहना है (129) और जब किसी की पकड़ करते हो तो बड़े अत्याचारी व दमनकारी बन कर पकड़ करते हो (130) तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो (131) और उससे डरो जिसने वे चीज़ें तुम्हें प्रदान कीं जिनको तुम जानते हो (132) तुम्हें चौपाये भी दिए और बेटे भी (133) और बाग़ भी और स्रोत (चश्मे) भी (134) मुझे तो तुम पर बड़े दिन के अज़ाब का डर है (135) वे बोले हमारे लिए सब बराबर है तुम नसीहत करो या न करो (136) यह तो केवल पुरानों की एक आदत है[3] (137) और हमें तो अज़ाब (दण्ड) होने का ही नहीं (138) बस उन्होंने उनको झुठला दिया तो हमने उनको हलाक कर दिया, निश्चित रूप से इसमें एक निशानी है फिर भी उनमें अधिकांश लोग मानने वाले नहीं हैं (139) और बेशक आपका पालनहार ही ज़बर्दस्त है वह बहुत ही दयालु है (140) समूद ने भी पैगम्बरों को झुठलाया[4] (141) जब उनके भाई सालेह ने उनसे कहा भला तुम डरते नहीं (142)

---

(1) आद क़ौम का कुछ विवरण सूरह आराफ़ आयत नं0 71 में गुज़र चुका है (2) वे केवल शान बघारने के लिए ऊँची जगहों पर अपना स्मारक बनाते थे, दूसरी उनकी शरारत यह थी कि वे वहाँ बैठ कर नीचे से गुज़रने वालों के साथ अनुचित हरकतें किया करते थे, आगे आयत में ''मसाने'' की बुराई की गई है, इससे आशय हर प्रकार की शान व शौकत (वैभव) वाली बड़ी–बड़ी बिल्डिगें, किले और महल हैं जो केवल शान बघारने के लिए बनाए जाते थे, फिर आगे इस बात पर चेताया जा रहा है कि अपने लिए तो तुम पानी के समान पैसा बहाते हो लेकिन गरीबों के साथ तुम्हारा व्यवहार बड़ा अत्याचार पूर्ण है कि थोड़ी सी बात पर यदि किसी की पकड़ कर ली तो उसको अत्याचार की चक्की में पीस डाला (3) यानी पहले भी लोग नसीहतें करते चले आए हैं, तुम एक परंपरा पूरी कर रहे हो, हम उसकी ओर ध्यान देने वाले नहीं (4) सूरह आराफ़ में समूद का वर्णन भी गुज़र चुका है।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٤٣﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٤٤﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ
مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٤٥﴾ أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هَاهُنَا
آمِنِينَ ﴿١٤٦﴾ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٤٧﴾ وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ ﴿١٤٨﴾
وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فَارِهِينَ ﴿١٤٩﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٥٠﴾
وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٥١﴾ الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَ
لَا يُصْلِحُونَ ﴿١٥٢﴾ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٥٣﴾ مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ
مِثْلُنَا فَأْتِ بِآيَةٍ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٥٤﴾ قَالَ هَٰذِهِ نَاقَةٌ
لَهَا شِرْبٌ وَلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَعْلُومٍ ﴿١٥٥﴾ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ
عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥٦﴾ فَعَقَرُوهَا فَأَصْبَحُوا نَادِمِينَ ﴿١٥٧﴾ فَأَخَذَهُمُ
الْعَذَابُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٥٨﴾
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٥٩﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٦٠﴾
إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٦١﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٦٢﴾
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٦٣﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٤﴾ أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٥﴾ وَ
تَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ﴿١٦٦﴾

منزل٥

मैं तुम्हारे लिए विश्वसनीय संदेश लाने वाला हूँ (143) तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो (144) और मैं इस पर तुम से बदला नहीं मांगता मेरा बदला तो संसारों के पालनहार के ज़िम्मे है (145) क्या यहां जो कुछ है इसी में तुमको आराम से रहने दिया जाएगा (146) बाग़ों में और स्रोतों (चश्मों) में (147) खेतों में और खजूर के बाग़ों में जिनके गुच्छे ख़ूब गुथे हैं (148) और तुम पहाड़ों से शानदार मकान काटते रहोगे (149) बस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो (150) और उन हद से गुज़र जाने वालों की बात मत मानो (151) जो धरती में बिगाड़ करते हैं और सुधार कार्य नहीं करते (152) वे बोले बेशक तुम पर जादू कर दिया गया है (153) तुम केवल हमारे ही जैसे मनुष्य हो फिर अगर तुम सच्चे हो तो कोई निशानी ले आओ (154) उन्होंने कहा यह ऊँटनी है पानी पीने की एक बारी इसकी है और एक निर्धारित दिन तुम्हारी बारी है[1] (155) बुरे इरादे से इसको छूना भी नहीं वरना बड़े दिन का अज़ाब तुम्हें दबोच लेगा (156) फिर उन्होंने उसकी कोंचें काट दीं फिर पछताते रह गये (157) बस अज़ाब ने उनको दबोच लिया बेशक इसमें एक निशानी है फिर भी उनमें अधिकांश मानने वाले नहीं (158) और बेशक आप का पालनहार ही ज़बर्दस्त है अति दयालु है (159) लूत की क़ौम ने पैग़म्बरों को झुठलाया (160) जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा भला तुम डरते नहीं (161) मैं तुम्हारे लिए विश्वसनीय संदेश लाने वाला हूँ (162) तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो (163) और मैं इस पर तुम से कोई बदला नहीं मांगता मेरा बदला केवल संसारों के पालनहार के ज़िम्मे है(164) क्या दुनिया जहान में तुम मर्दों से इच्छा पूरी करते हो[2] (165) और तुम्हारे पालनहार ने तुम्हारे लिए जो तुम्हारी पत्नियाँ पैदा की हैं उनको तुमने छोड़ रखा है बात यह है कि तुम सीमा लांघ कर हद से आगे बढ़ जाने वाले लोग हो (166)

(1) उनकी फरमाइश पर एक आश्चर्यजनक ऊँटनी पहाड़ से निकली जो अल्लाह की एक निशानी थी, हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम ने कह दिया कि एक दिन घाट पर केवल यही जाएगी दूसरा कोई जानवर न आए और एक दिन तुम अपने जानवरों को पानी पिलाना, लेकिन नाफ़रमान क़ौम ने बात न मानी और उनमें एक अभागे ने ऊँटनी को मार डाला, बस भयानक चिंघाड़ के रूप में अज़ाब आया जिसने उनके कलेजे फाड़ दिए (2) दुनिया में यह अप्राकृतिक कार्य हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की क़ौम में ही पाया जाता था, इसका कुछ विवरण सूरह आराफ़ में गुज़र चुका है।

قَالُوا لَئِن لَّمْ تَنتَهِ يَا لُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ﴿١٦٧﴾ قَالَ إِنِّي
لِعَمَلِكُم مِّنَ الْقَالِينَ ﴿١٦٨﴾ رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٦٩﴾ فَنَجَّيْنَاهُ وَ
أَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٧٠﴾ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿١٧١﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٧٢﴾
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنذَرِينَ ﴿١٧٣﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٧٤﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٧٥﴾
كَذَّبَ أَصْحَابُ لْـَٔيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧٦﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا
تَتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٧٨﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٧٩﴾
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٠﴾
أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ﴿١٨١﴾ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ
الْمُسْتَقِيمِ ﴿١٨٢﴾ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ
مُفْسِدِينَ ﴿١٨٣﴾ وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٨٤﴾
قَالُوا إِنَّمَا أَنتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٨٥﴾ وَمَا أَنتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَ
إِن نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿١٨٦﴾ فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَاءِ
إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٨٧﴾ قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨٨﴾ فَكَذَّبُوهُ
فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٨٩﴾

منزل ٥

वे बोले लूत अगर तुम बाज़ न आए तो निश्चित रूप से निकाल बाहर किये जाओगे (167) उन्होंने कहा कि मैं तो तुम्हारे काम से बहुत ही विरक्त हूँ (168) ऐ मेरे पालनहार! मुझे और मेरे घर वालों को उनकी करतूतों से नजात दे (169) तो हमने उनको और उनके सब घर वालों को बचा लिया (170) सिवाय बुढ़िया के जो पीछे रह जाने वालों में रह गई[1] (171) फिर हमने और सबको तहस–नहस कर दिया (172) और उन पर एक ज़बदस्त वर्षा कर दी तो जिनको डराया गया था उनकी वर्षा बहुत ही बुरी थी[2] (173) निश्चित रूप से इसमें एक निशानी है फिर भी उनमें अधिकांश मानने वाले नहीं (174) और निश्चित रूप से आपका पालनहार ही ज़बरदस्त है बहुत ही दयालु है(175) बाग़ वालों ने[3] भी पैग़म्बरों को झुठलाया (176) जब शुऐब ने उनसे कहा कि भला तुम डरते नहीं (177) मैं तुम्हारे लिए विश्वसनीय संदेश लाने वाला हूँ (178) तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो (179) और मैं तुमसे इस पर कोई बदला नहीं मांगता बदला तो मेरा केवल सारे संसारों के पालनहार के ज़िम्मे है (180) नाप पूरी–पूरी करो और घाटा पहुंचाने वाले मत बनो (181) और ठीक तराजू से वज़न किया करो (182) और लोगों को उनकी चीज़ों कम मत दिया करो और धरती में बिगाड़ मचाते मत फिरो (183) और उससे डरो जिसने तुम्हें भी पैदा किया और पिछले जन को भी (184) वे बोले निश्चित रूप से तुम पर जादू कर दिया गया है (185) और तुम हो ही क्या सिवाय इसके कि हमारे ही जैसे मनुष्य हो और हम तो तुम्हें झूठा ही समझते हैं (186) फिर अगर तुम सच्चे हो तो आसमान से कुछ टुकड़े ही हम पर गिरा दो (187) उन्होंने कहा तुम जो कर रहे हो मेरा पालनहार सब जानता है (188) बस उन्होंने झुठलाया तो छाया वाले दिन के अज़ाब ने उनको आ दबोचा, निश्चित रूप से वह बड़े दिन का अज़ाब था[4] (189)

(1) यानी लूत अ़लैहिस्सलाम की पत्नी जो बुरे लोगों में शामिल थी और उनका साथ देती थी, अज़ाब से पहले जब हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम को वहाँ से निकल जाने का आदेश हुआ तो अल्लाह के आदेश से वह उन्हीं अपराधियों के साथ रही और जब अज़ाब आया तो यह भी उसका शिकार हुई (2) यह वर्षा पत्थरों की थी जैसा कि दूसरी आयतों में स्पष्ट रूप से आया है (3) ''ऐका'' घने बाग़ को कहते हैं, हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम को जिस बस्ती की ओर भेजा गया वह घने जंगल के पास थी, उसका नाम मदयन था, विवरण सूरह आराफ़ में गुज़र चुका है (4) उन्होंने मांग की कि आसमान से एक टुकड़ा उन पर गिरा दिया जाए, हुआ यह कि कई दिन सख़्त गर्मी के बाद बादल का एक बड़ा टुकड़ा बस्ती के निकट आया, उसके नीचे ठण्डी हवा चल रही थी, सारी बस्ती उसके नीचे इकट्ठा हो गई, बस बादल ने उन पर अंगार बरसाने शुरु कर दिए, जिसके फलस्वरूप पूरी बस्ती हलाक हो गई, पवित्र कुरआन में इसको ''छाया वाले दिन का अज़ाब'' कहा गया है।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٩٠﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ
لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٩١﴾ وَإِنَّهُ لَتَنزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٩٢﴾ نَزَلَ بِهِ
الرُّوحُ الْأَمِينُ ﴿١٩٣﴾ عَلَىٰ قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ ﴿١٩٤﴾ بِلِسَانٍ
عَرَبِيٍّ مُّبِينٍ ﴿١٩٥﴾ وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٩٦﴾ أَوَلَمْ يَكُن لَّهُمْ آيَةً أَن
يَعْلَمَهُ عُلَمَاءُ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٩٧﴾ وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ﴿١٩٨﴾
فَقَرَأَهُ عَلَيْهِم مَّا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١٩٩﴾ كَذَٰلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ
الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٠٠﴾ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٢٠١﴾ فَيَأْتِيَهُم
بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٠٢﴾ فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنظَرُونَ ﴿٢٠٣﴾
أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٢٠٤﴾ أَفَرَأَيْتَ إِن مَّتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ﴿٢٠٥﴾ ثُمَّ
جَاءَهُم مَّا كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٢٠٦﴾ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يُمَتَّعُونَ ﴿٢٠٧﴾
وَمَا أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ ﴿٢٠٨﴾ ذِكْرَىٰ وَمَا كُنَّا
ظَالِمِينَ ﴿٢٠٩﴾ وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيَاطِينُ ﴿٢١٠﴾ وَمَا يَنبَغِي لَهُمْ وَمَا
يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢١١﴾ إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ﴿٢١٢﴾ فَلَا تَدْعُ مَعَ
اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ﴿٢١٣﴾ وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ
الْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٤﴾ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾

منزل٥

बेशक इसमें एक निशानी है फिर भी अधिकांश लोग मानने वाले नहीं (190) और निश्चित रूप से आप का पालनहार ही बहुत ही ज़बर्दस्त है, अति दयालु है (191) और निस्संदेह (यह कुरआन) संसारों के पालनहार का उतारा हुआ है (192) रूहुल अमीन इसको लेकर उतरे हैं (193) आपके दिल पर ताकि आप डराने वाले हों (194) साफ़ अरबी भाषा में (195) और निश्चित रूप से पहलों की (किताबों) में भी इसका वर्णन है (196) क्या यह प्रमाण उनके लिए (प्रयाप्त) नहीं है कि बनी इस्राईल के उलमा (ज्ञानी) इसको जानते हैं[1] (197) और अगर हम इसको अजमियों (गैर अरब) में से किसी पर उतारते (198) फिर वह उनके सामने इसको पढ़ता तो भी वे ईमान लाने वाले नहीं थे[2] (199) अपराधियों के दिलों में हम इसको इसी प्रकार पिरोए जा रहे हैं (200) वे इस पर ईमान नहीं ला सकते जब तक दुखद अज़ाब न देख लें (201) बस वे अचानक उन पर आ जाएगा और वे समझ ही न सकेंगे (202) फिर कहेंगे कि क्या हमें मोहलत मिल सकती है[3] (203) क्या फिर वे हमारे अज़ाब के लिए जल्दी मचाते हैं (204) भला आप देखिए तो, अगर हम उनको कुछ वर्ष भोग विलास (ऐश व इशरत) दे भी दें (205) फिर जिस चीज़ का उनसे वादा है वह उन पर आ पड़े (206) तो वे जिस ऐश में रहे वह उनके क्या काम आ सकता है[4] (207) और हमने जो बस्तियाँ भी हलाक कीं सब में डराने वाले आ चुके (208) नसीहत के लिए, और हम कोई अत्याचार करने वाले तो थे नहीं (209) और इस (किताब) को शैतान लेकर नहीं आए (210) और न यह उनकी औकात है और न यह उनके बस की बात है (211) वे तो सुन पाने से वंचित किए जा चुके[5] (212) बस आप अल्लाह के साथ किसी और माबूद को मत पुकारें, नहीं तो आप भी अज़ाब में पड़ जाएंगे (213) और अपने निकट संबंधियों को सावधान[6] कीजिए (214) और ईमान वालों में जो आपका अनुसरण करें उनके साथ स्नेह पूर्ण व्यवहार कीजिए (215)

(1) हर आसमानी किताब में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी की गई, यहूदी ख़ूब जानते थे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही वह अंतिम पैग़म्बर हैं जिन का उल्लेख तौरेत में किया गया है, उनमें जो मुसलमान हुए वे खुल कर साफ़ तौर पर बताते थे और चिंहित करते थे और जो ईमान नहीं लाए थे वे भी निजी सभाओं में कभी–कभी इसका वर्णन करते थे और इससे भली–भांति अवगत थे (2) अर्थात अगर यह अरबी कुरआन किसी गैर अरब पर उतरता और वह अरबी न जानने के बावजूद इस प्रकार फ़रफ़र पढ़ कर सुनाता तब भी यह लोग ईमान न लाते क्यों कि ईमान न लाने का कारण यह नहीं है कि प्रमाणों में उनको कुछ कमी दिखाई पड़ी है बल्कि ईमान लाने का कारण उनकी ज़िद है कि कैसे ही प्रमाण सामने आ जाएं, ईमान लाना ही नहीं, आगे अल्लाह कहता है कि उनके दिलों में इसको पिरोये जा रहे हैं यानी न मानने पर भी कुरआन तीर की तरह छेदता हुआ उनके दिलों में दाखिल हो रहा है जिससे यह और बिलबिला रहे हैं और हठधर्मी बनते जा रहे हैं। (3) आज वे अज़ाब की जल्दी मचाते हैं और कल जब अज़ाब आ पड़ेगा तो मोहलत मांगेगे (4) भोग विलास में पड़ कर वे आख़िरत को भुला बैठे हैं, कल जब सच सामने आ जाएगा तब उनकी समझ में आएगा कि भोग विलास से आख़िरत में क्या मिला (5) यह उन लोगों का खण्डन है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज्योतिषी और जादूगर कहा करते थे और कहते थे कि उनके पास जिन्न और शैतान खबरें पहुँचाते हैं, जवाब में कहा जा रहा है कि न शैतान ऐसी अच्छी बातों को पसंद करते हैं ⇒

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢١٦﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ
الرَّحِيمِ ﴿٢١٧﴾ الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٢١٨﴾ وَتَقَلُّبَكَ فِي السَّاجِدِينَ ﴿٢١٩﴾
إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢٢٠﴾ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ﴿٢٢١﴾
تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢٢٢﴾ يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾
وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢٢٤﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ
يَهِيمُونَ ﴿٢٢٥﴾ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٦﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانتَصَرُوا مِن بَعْدِ مَا
ظُلِمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنقَلَبٍ يَنقَلِبُونَ ﴿٢٢٧﴾

سورة النمل مكية وهي ثلاث وتسعون آية وسبع ركوعات

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

طس ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿١﴾ هُدًى وَبُشْرَىٰ
لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٢﴾ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَ
هُم بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ﴿٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
زَيَّنَّا لَهُمْ أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُونَ ﴿٤﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ
لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ﴿٥﴾

منزل٥

फिर अगर वे आपकी बात न मानें तो बता दीजिए कि मैं तुम्हारे कामों से बरी हूँ (216) और उस ज़बरदस्त, खूब दया वाले पर भरोसा रखिए (217) जो उस समय भी आपको देखता है जब आप खड़े होते हैं (218) और नमाज़ियों के साथ आपका उठना बैठना भी (उसकी नज़र में है) (219) निश्चित रूप से वह खूब सुनता खूब जानता है (220) मैं तुम को बताऊँ कि शैतान किन लोगों पर उतरते हैं (221) वे हर लपाड़िए पापी पर उतरते हैं (222) जो सुनी बात ला डालते हैं और आधिकांश उनमें झूठे होते हैं[1] (223) और कवियों के पीछे तो बहके हुए लोग ही लगते हैं[2] (224) भला आपने देखा नहीं कि वे हर मैदान में हैरान फिरा करते हैं (225) और वह कहते हैं जो करते नहीं (226) सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए और अल्लाह को खूब याद किया और अत्याचार सहने के बाद ही उन्होंने उसका बदला लिया, और जल्द ही अत्याचारियों को पता चल जाएगा कि किस अंजाम की ओर उनको पलट कर जाना है[3] (227)

सूरह नम्ल

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

तॉ सीन, यह कुरआन की और एक खुली किताब की आयतें हैं (1) ईमान वालों के लिए मार्गदर्शन और शुभसमाचार हैं (2) जो नमाज़ क़ायम रखते हैं और ज़कात अदा करते हैं और आख़िरत के दिन पर पूरा विश्वास रखते हैं (3) बेशक जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके लिए हमने उनके कामों को सुन्दर बना दिया है तो वे उसी में हाथ पाँव मारते रहते हैं (4) वही लोग हैं जिनके लिए बड़ा अज़ाब (दण्ड) है और आखिरत में वही लोग सबसे बड़ा घाटा उठाने वाले हैं (5)

⟹ और न ये उनके वश में हैं, वे इससे पूर्ण रूप से वंचित हैं (6) यह वह आयत है जिसमें सबसे पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तबलीग़ (धर्म प्रसार) का आदेश हुआ, अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने परिवारजनों को एकत्र किया और उनको सत्यमार्ग (धर्म) की ओर आने की दावत (निमन्त्रण) दी, इससे यह भी मालूम हुआ कि दावत की शुरुआत परिवार वालों से करना चाहिए।

(1) शैतानों का काम ही यह था कि वे ज्योतिषियों और जादूगरों के पास आकर सुनी–सुनाई बातें दोहराया करते थे (2) यह मक्का के काफ़िरों के दूसरे प्रोपगण्डे का खण्डन है कि (अल्लाह की पनाह) आप कवि हैं, बता दिया गया कि कवियों में लीडर बनने की योग्यता नहीं होती, वे काल्पनिक घाटियों में ही भटकते रहते हैं और आमतौर पर गुमराह लोग ही उनको अपना लीडर बनाते हैं (3) इसमें उन कवियों को अलग कर दिया गया है जिन्होंने शायरी (काव्य) को भलाई का माध्यम बनाया, विशेष रूप से हज़रत हस्सान पुत्र साबित और हज़रत अब्दुल्लाह पुत्र रवाहा रज़ि0 जैसे लोग इसमें शामिल हैं जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भरपूर प्रतिरक्षा की और मक्का के काफ़िरों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में जो अपमानजनक छन्द कहे थे और अत्याचार की हद कर दी थी उसका उन्होंने भरपूर जवाब दिया "मिमबादिमा ज़ुलिमू" का वर्णन यहाँ इसी संबंध में है, आगे उन अत्याचारियों को चेतावनी दी जा रही है जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में अपमान किया कि खूब समझ लें कि उनका क्या अंजाम होने वाला है।

وَإِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْآنَ مِن لَّدُنْ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ٦ إِذْ قَالَ مُوسَىٰ
لِأَهْلِهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا سَآتِيكُم مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ آتِيكُم بِشِهَابٍ قَبَسٍ
لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ٧ فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَن بُورِكَ مَن فِي النَّارِ وَ
مَنْ حَوْلَهَا وَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ٨ يَا مُوسَىٰ إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٩ وَأَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ
وَلَّىٰ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ يَا مُوسَىٰ لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَيَّ
الْمُرْسَلُونَ ١٠ إِلَّا مَن ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوءٍ فَإِنِّي
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ١١ وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ
غَيْرِ سُوءٍ فِي تِسْعِ آيَاتٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ إِنَّهُمْ كَانُوا
قَوْمًا فَاسِقِينَ ١٢ فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ آيَاتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوا هَٰذَا
سِحْرٌ مُّبِينٌ ١٣ وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا
فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ١٤ وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُودَ
وَسُلَيْمَانَ عِلْمًا وَقَالَا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ
الْمُؤْمِنِينَ ١٥ وَوَرِثَ سُلَيْمَانُ دَاوُودَ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا
مَنطِقَ الطَّيْرِ وَأُوتِينَا مِن كُلِّ شَيْءٍ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِينُ ١٦

منزل ٥

और निश्चित रूप से आपको कुरआन हिकमत वाले और खूब जानने वाले के पास से मिल रहा है (6) (वह समय याद कीजिए) जब मूसा ने अपनी पत्नी से कहा कि मुझे आग दिखाई पड़ी है मैं जल्द ही या तो वहां से कोई ख़बर लाता हूँ या कुछ आग ही सुलगा कर ले आता हूँ ताकि तुम ताप सको[1] (7) फिर जब वे वहाँ पहुँचे तो आवाज़ आई कि जो कुछ आग में है और जो कुछ उसके आस–पास है उसमें बरकत रख दी गई है और अल्लाह पवित्र है जो संसारों का पालनहार है (8) ऐ मूसा! मैं ही वह अल्लाह हूँ जो ग़ालिब है हिकमत रखता है (9) और अपनी लाठी डाल दो फिर जब (मूसा ने) उसको लहराते देखा जैसे कोई पतला साँप[2] हो वे पीछे खिसके और उन्होंने मुड़ कर भी न देखा, ऐ मूसा! डरो नहीं निश्चित रूप से मेरे पास रसूल डरा नहीं करते(10) हाँ अल्बत्ता जो अत्याचार कर बैठे फिर बुराई के बदले अच्छाई करे तो निश्चित रूप से मैं बड़ा क्षमा करने वाला और बहुत ही दयालु हूँ[3] (11) और अपना हाथ अपने गिरेबान में डालो वह बिना किसी रोग के सफेद (चमकता) निकल आएगा, फ़िरऔन और उसकी क़ौम के लिए नौ निशानियों में (यह भी है) वे हैं ही बड़े नाफरमान (अवज्ञाकारी) लोग (12) फिर जब उनके पास हमारी रौशन निशानियाँ पहुंच गईं तो वे बोले यह तो खुला जादू है (13) और उन्होंने केवल अत्याचार और घमण्ड में उनका इनकार किया जब कि भीतर से वे उनको मान रहे थे तो देखिए कि फसादियों का क्या अंजाम हुआ[4] (14) और हमने दाऊद और सुलैमान को ज्ञान दिया और उन्होंने कहा वास्तविक प्रशंसा तो अल्लाह ही की है जिसने अपने बहुत से ईमान वाले बंदों पर हमें श्रेष्टता प्रदान की (15) और सुलैमान दाऊद के उत्तराधिकारी हुए ओर उन्होंने कहा ऐ लोगो! हमें पक्षियों की बोली सिखाई गई है और हर चीज़ हमें दी गई है बेशक यह (उसकी) खुली हुई कृपा है[5] (16)

(1) मदयन से मिस्र वापसी के अवसर पर यह घटना घटी, दूसरी आयतों में इसके विवरण मौजूद हैं, जो आग हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को दिखाई पड़ी थी वास्तव में वह एक नूर (प्रकाश) था और उसमें फरिश्ते थे (2) पवित्र कुरआन में कहीं सुअबान (अजगर) कही "हय्यह" (आम साँप) कहीं जान (पतला साँप) के शब्द आते हैं इससे मालूम होता है कि लाठी डालते समय आवश्यकतानुसार साँपों के विभिन्न रूप बनते थे और जादूगरों के सामने जब वह सांप बना था तो भी उसके रूप बदलते रहे थे (3) अर्थात अल्लाह तआला के यहां पैग़म्बरों को कोई हानि पहुंचने की कोई आशंका नहीं होती हाँ! किसी से कोई दोष हो गया हो तो उसे पकड़ की आशंका होती है लेकिन जब ऐसा कोई व्यक्ति तौबा और माफ़ी मांगने के बाद वह अपनी परिस्थितियाँ सुधार लेता है तो अल्लाह तआला उसे माफ़ कर देते हैं (4) इन मोअजिज़ों को देख कर वे समझ गये कि यह जादू से ऊपर कोई चीज़ है, भीतर से उनके दिल गवाही दे रहे थे मगर दुश्मनी में उन्होंने मानने से इनकार कर दिया, परिणाम स्वरूप हलाक किये गए (5) यह हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम पर अल्लाह का पुरस्कार था कि उनका शासन इन्सानों के साथ जिन्नों और जानवरों व पक्षियों पर भी था और वे उनकी बोली अल्लाह की आदेश से समझते थे और उनसे बात करते थे।

और सुलैमान के लिए उनके सारी सेवाएं एकत्र की गईं जिन्नात भी इन्सान भी और पक्षी भी, फिर उनकी सफ़बंदी की जाने लगी[1] (17) यहाँ तक कि जब वे चींटियों की घाटी में पहुंचे तो एक चींटी बोली ऐ चींटियो! अपने बिलों में घुस जाओ कहीं सुलैमान और उनकी सेना तुम्हें कुचल न डाले और उन्हें पता भी न चले (18) तो उसकी बात से सुलैमान मुस्कुरा कर हंस पड़े और कहने लगे कि ऐ मेरे रब! मुझे तौफीक़ (सामर्थ्य) देता रख कि मैं तेरे इस पुरस्कार पर आभारी होऊँ जो तूने मुझ पर और मेरे माता पिता पर किया और मैं तुझे खुश करने वाले भले काम करूँ और अपनी दया से मुझे अपने भले बंदों में शामिल कर (19) और उन्होंने पक्षियों की हाज़िरी ली तो कहा क्या बात है हुदहुद नज़र नहीं आता? क्या वह कहीं गायब हो गया है (20) मैं उसको कठोर दण्ड दे कर रहूँगा या ज़िबह ही कर डालूँगा या वह मेरे सामने साफ प्रमाण प्रस्तुत करे[2] (21) फिर कुछ ही देर वे ठहरे होंगे (कि वह आकर) कहने लगा मैं ऐसी जानकारी लेकर आया हूँ जो आपको भी नहीं मालूम, और मैं आपके पास सबा की एक निश्चित खबर लेकर आया हूँ[3] (22) मैंने पाया कि एक महिला उन पर राज करती है और सारी चीज़ें उसको मिली हुई हैं, और उसका एक ज़बरदस्त सिंहासन है[4] (23) मैंने उसको और उसकी क़ौम को पाया कि वे अल्लाह को छोड़ कर सूरज को सज्दा करती है और शैतान उनके कामों को उनके लिए सुन्दर बना दिया है फिर उनको (सही) रास्ते से रोक रखा है तो वे सही रास्ते पर नहीं चलते[5] (24) कि वे उस अल्लाह को सज्दा नहीं करते जो आसमानों और ज़मीन से छिपी चीज़ निकाल लेता है और तुम जो छिपाते हो और प्रकट करते हो वह सब जानता है (25) वह अल्लाह जिसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं (जो) महान सिंहासन का मालिक है (26)

(1) हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की सेना में जिन्न व इन्सान, जानवर, पक्षी सब थे मगर उनका विशेष परीक्रम होता था, कोई अपने स्थान से इधर से उधर नहीं हो सकता था, एक बार हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम अपनी पूरी सेना के साथ चींटियों की एक बड़ी बस्ती के पास से गुज़रे तो रक्षक चींटियों ने सब चींटियों को सावधान कर दिया, हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने जब उसकी बात समझ ली तो अत्यधिक प्रसन्नता व अल्लाह के आभार की भावनाएं जोश में आ गईं, शुक्र भी अदा किया और दुआ भी की (2) उसी सेना में हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने पक्षियों की हाज़िरी ली तो हुदहुद ग़ैरहाज़िर मिला (3) हज़रत सुलैमान को उस देश का हाल मालूम न था एक हुदहुद से मालूम हुआ, उसके द्वारा अल्लाह ने चेता दिया कि बड़े से बड़े इंसान का ज्ञान भी सर्व ज्ञान नही हो सकता जिनके बारे में अल्लाह ने कहा "व ल कद आ तैना दाऊ द व सुलैमा न इल्मा" उनको एक पक्की सूचना हुदहुद ने आकर दी (4) सबा की रानी को बिल्क़ीस बताया जाता है, यह यमन में सबा क़ौम की शासिका थी, उसका ऐसे हीरों से सुसज्जित सिंहासन था कि उस समय किसी राजा के पास न था (5) हुदहुद ने यह सब बातें बता कर मानो हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम को उस क़ौम के विरुद्ध जिहाद पर प्रेरित कर दिया।

قَالَ سَنَنظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾ اذْهَب بِّكِتَابِي
هَٰذَا فَأَلْقِهْ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾ قَالَتْ
يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ إِنِّي أُلْقِيَ إِلَيَّ كِتَابٌ كَرِيمٌ ﴿٢٩﴾ إِنَّهُ مِن سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿٣٠﴾ أَلَّا تَعْلُوا عَلَيَّ وَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣١﴾
قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي أَمْرِي مَا كُنتُ قَاطِعَةً أَمْرًا
حَتَّىٰ تَشْهَدُونِ ﴿٣٢﴾ قَالُوا نَحْنُ أُولُو قُوَّةٍ وَأُولُو بَأْسٍ شَدِيدٍ
وَالْأَمْرُ إِلَيْكِ فَانظُرِي مَاذَا تَأْمُرِينَ ﴿٣٣﴾ قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ
إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعِزَّةَ أَهْلِهَا أَذِلَّةً ۖ وَ
كَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٣٤﴾ وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِم بِهَدِيَّةٍ فَنَاظِرَةٌ بِمَ
يَرْجِعُ الْمُرْسَلُونَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَانَ قَالَ أَتُمِدُّونَنِ بِمَالٍ فَمَا
آتَانِيَ اللَّهُ خَيْرٌ مِّمَّا آتَاكُم بَلْ أَنتُم بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُونَ ﴿٣٦﴾ ارْجِعْ
إِلَيْهِمْ فَلَنَأْتِيَنَّهُم بِجُنُودٍ لَّا قِبَلَ لَهُم بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُم مِّنْهَا
أَذِلَّةً وَهُمْ صَاغِرُونَ ﴿٣٧﴾ قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَيُّكُمْ يَأْتِينِي بِعَرْشِهَا
قَبْلَ أَن يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣٨﴾ قَالَ عِفْرِيتٌ مِّنَ الْجِنِّ أَنَا آتِيكَ
بِهِ قَبْلَ أَن تَقُومَ مِن مَّقَامِكَ ۖ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ﴿٣٩﴾

منزل ٥

उन्होंने कहा हम अभी देखे लेते हैं कि तू सच कहता है या झूठा है (27) मेरा यह पत्र लेकर जा और उनके पास डाल कर हट जा, फिर देख कि वे उत्तर में क्या करते हैं (28) वह बोली ऐ दरबारियो! मेरे सामने एक प्रतिष्ठित पत्र आया है (29) वह सुलैमान की ओर से है और वह उस अल्लाह के नाम से है जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है (30) कि मुझ पर बड़ाई मत दिखाओ और आज्ञाकारी बन कर मेरे पास आ जाओ[1] (31) उसने कहा मेरे दरबारियो! मेरे मामले में मुझे मश्वरा दो मैं कोई निर्णय नहीं करती जब तक तुम मेरे सामने मौजूद न हो (32) वे बोले हम शक्तिशाली हैं और कड़ा युद्ध लड़ सकते हैं और फैसला आप ही को करना है तो आप देख लें कि आप को क्या आदेश देना है (33) उसने कहा कि राजा जब किसी बस्ती में (विजयी होकर) प्रवेश करते हैं तो उसको तबाह करके छोड़ते हैं और वहां के सम्मानित लोगों को अपमानित करते हैं और ऐसा ही कुछ यह भी करेंगे (34) और मैं उनको उपहार भेजती हूँ फिर देखती हूँ कि दूत क्या उत्तर लाते हैं[2] (35) फिर जब वह सुलैमान के पास पहुँचा तो उन्होंने कहा क्या तुम धन से मेरी मदद करना चाहते हो, बस जो मुझे अल्लाह ने दे रखा है वह उससे बेहतर है जो उसने तुम्हें दिया है हाँ तुम ही अपने उपहार से खुश रहो (36) उनके पास जाओ हम उनके यहाँ ऐसी सेना लेकर जाएंगे जिसका वे सामना भी न कर सकेंगे और वहां से उनको अपमानित करके निकाल देंगे और वे बेहैसियत होकर रह जाएंगे (37) कहा ऐ दरबारियो! तुम में कौन है जो उसके आज्ञाकारी होकर आने से पहले–पहले मुझे उसका सिंहासन ला दे[3] (38) एक देव के समान शरीर वाला जिन्न बोला मैं आपके अपने स्थान से उठने से पहले उसे आपके पास लाकर प्रस्तुत कर दूंगा और मैं इसकी शक्ति भी रखता हूँ विश्वसनीय भी हूँ (39)

(1) लगता है कि यह क्षेत्र भी हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के शासन में शामिल रहा था किसी समय वहाँ के वासियों ने गुप्त रूप से अलग सरकार स्थापित कर ली थी, इसीलिए जब हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम को हुदहुद ने इसकी सूचना दी तो उन्होंने विस्तृत बात करने के बजाय सबा की रानी को उदण्डता से बाज़ रहने और आज्ञाकारी बनने का आदेश दिया (2) मुश्रिक होने के बावजूद उसमें समझ थी, उसने धन से परीक्षा ली कि अगर वह शासन के इच्छुक हों तो उपहार स्वीकार करेंगे और अगर उपहार स्वीकार नहीं करते तो हमें उनकी आज्ञाकारिता स्वीकार कर लेनी चाहिए (3) हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने यह इसलिए चाहा ताकि रानी के सामने उनका यह मोअजिज़ा प्रकट हो कि इतना भारी सिंहासन रानी के आने से पहले ही हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के पास पहुँच गया।

قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ
اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ
هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۣ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ۭ وَمَنْ
شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ
كَرِيْمٌ ﴿٤٠﴾ قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ
مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٤١﴾ فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا
عَرْشُكِ ۭ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَ
كُنَّا مُسْلِمِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ
اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٤٣﴾ قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ
فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۭ قَالَ اِنَّهٗ
صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ۥ قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَ
اَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰى
ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ
يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ
الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾

منزل ٥

वह व्यक्ति जिसके पास पुस्तक का ज्ञान था वह बोल उठा कि मैं आपकी पलक झपकने से पहले लाकर उसे आपकी सेवा में हाज़िर करता हूँ[1] फिर जब उन्होंने उसको अपने पास मौजूद पाया तो कहने लगे यह मेरे पालनहार की कृपा है ताकि वह मुझे आज़मा कर देखे कि मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्री करता हूँ जिसने शुक्र किया वह अपने लिए शुक्र करता है और जिसने नाशुक्री की तो मेरा पालनहार बड़ा बेनियाज़ (निःस्पृह) है खूब कृपा करने वाला है (40) उन्होंने कहा कि उसके लिए सिंहासन में कुछ नयापन पैदा कर दो हम देखते हैं कि वह पता चला लेती है या वह उन लोगों में होती है जिनको कुछ पता नहीं चलता[2] (41) फिर जब वह आई तो कहा गया कि क्या तुम्हारा सिंहासन ऐसा ही है वह बोली मानो यह वही है और हमको इससे पहले ही जानकारी मिल चुकी है और हम आज्ञाकारी हो चुके हैं[3] (42) और उसको ग़ैर अल्लाह की इबादत ने (सत्य की पहचान से) रोक रखा था और वह इनकार करने वाले लोगों में थी (43) उससे कहा गया कि इस महल में प्रवेश करो तो जब उसने उसको देखा तो उसको गहरा पानी समझा और अपनी दोनों पिण्डिलियाँ खोल दीं उन्होंने कहा यह तो पारदर्शी शीशों से सुसज्जित एक महल है, वह बोली ऐ मेरे पालनहार! मैंने अपने साथ बड़ा अन्याय किया और मैं सुलैमान के साथ अल्लाह के लिए मुसलमान होती हूँ जो संसारों का पालनहार है[4] (44) और हमने समूद की ओर उनके भाई सालेह को भेजा कि अल्लाह की बंदगी करो तो वे दो पक्ष बन कर परस्पर झगड़ने लगे[5] (45) उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम! तुम्हें अच्छाई से पहले बुराई की जल्दी क्यों होती है काश कि तुम अल्लाह से माफ़ी मांगते ताकि तुम पर दया होती[6] (46)

(1) किस ने यह बात कही, इस संबंध में विभिन्न बातें कही गई हैं, देखने में तो ज़्यादा सही बात यह मालूम होती है कि वह हज़रत सुलैमान के मंत्री थे जो बड़े ज्ञानी और अल्लाह के नामों और कलाम (वाणी) के प्रभाव से अवगत थे, हज़रत सुलैमान ने जब सिंहासन मौजूद पाया तो अल्लाह का शुक्र अदा किया कि वाह्य संसाधनों से कुछ न हुआ, यह केवल अल्लाह की कृपा से हुआ कि मेरे मित्र इस मक़ाम पर पहुंचे कि उनमें से चमत्कार प्रकट होने लगे (2) बिल्क़ीस की परीक्षा लेने के लिए हज़रत सुलैमान ने ऐसा किया (3) यानी मुझे आपके दूतों से जो परिस्थितियाँ मालूम हुईं उनकी वजह से मुझे पहले ही आपकी सच्चाई का ज्ञान हो चुका था और हमने आपकी आज्ञाकारिता का इरादा कर लिया था, आगे अल्लाह तआला ने मानो उसकी प्रशंसा की कि वह खुद समझदार थी लेकिन झूठे उपास्यों के ख़्याल और काफ़िरों की संगत ने उसको ग़लत रास्ते पर डाल दिया था, पैग़म्बर की संगत में पहुँचते ही वह सही रास्ते पर आ गई (4) हज़रत सुलैमान ने दुनियादारों पर रोब डालने के लिए एक ऐसा शीशे का महल बनवाया था जिसके आंगन में पानी का जल कुण्ड था, उसके ऊपर पारदर्शी शीशे की छत थी या वह पूरा शीशा ही ऐसा था कि बहता हुआ पानी नज़र आता था, रानी बिल्क़ीस जब महल में प्रवेश करने करने लगी और वह आंगन आया तो पानी समझ कर उसने पाएंचे चढ़ा लिए, हज़रत सुलैमान ने चेताया कि यह पानी नहीं शीशा है, तुरन्त उसने अपनी बुद्धि की कमी को स्वीकार किया और वह यह भी समझ गई कि जिस संसाधन पर उसकी क़ौम को गर्व था यहाँ उससे बढ़ कर मौजूद है और इससे भी अवगत हुई कि सूरज की चमक दमक पर उसको खुदा समझ लेना ऐसा ही धोखा है जैसे आदमी शीशे की चमक देख कर पानी समझ ले, तुरंत हो उसने अपनी ग़लती को स्वीकार किया और मुसलमान हो गई (5) एक पक्ष थोड़े ईमान लोने वालों का, बाक़ी बेईमान लोगों का, विवरण सूरह आराफ़ में आ चुका है (6) जब हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने अज़ाब से डराया तो क़ौम ने तुरन्त अज़ाब की मांग कर डाली, इसके उत्तर में हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने यह बात कही।

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ۚ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ
اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ
فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿۴۸﴾ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَ
اَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۴۹﴾
وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۵۰﴾ فَانْظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۵۱﴾ فَتِلْكَ
بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۵۲﴾
وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿۵۳﴾ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ
لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿۵۴﴾ اَئِنَّكُمْ
لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ
تَجْهَلُوْنَ ﴿۵۵﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْٓا اٰلَ
لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿۵۶﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ
اَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۡ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿۵۷﴾ وَاَمْطَرْنَا
عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿۵۸﴾ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ
عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ۭ ءٰۗاللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۵۹﴾

ع ۴ ۱۹

منزل ۵

वे बोले हम तो तुम को और तुम्हारे साथ वालों को अशुभ समझते हैं, उन्होंने कहा तुम्हारा बुरा भाग्य अल्लाह के कब्ज़े में है लेकिन तुम फ़ित्ने में पड़ गए हो[1] (47) और शहर में नौ व्यक्ति थे जो बिगाड़ करते फिरते थे और सुधार से उनका कोई लेना देना न था[2] (48) वे बोले अल्लाह की क़सम खाओ कि हम रातों रात सालेह और उनके घर वालों को मार डालेंगे और फिर उसके वारिस से कह देंगे कि उनके घरवालों के मारे जाने के समय हम तो थे नहीं और हम सच ही कहते हैं (49) और एक चाल उन्होंने चली और एक उपाय हमने भी और वे समझ भी न सके (50) तो आप देख लीजिए कि उनकी चाल का अंजाम क्या हुआ हमने उनको और उनकी क़ौम को तहस–नहस कर डाला[3] (51) तो ये उनके घर उलटे पड़े हैं इसलिए कि उन्होंने अत्याचार किया निश्चित रूप से इसमें जानने वालों के लिए निशानी है[4] (52) और जो ईमान लाए थे उनको हमने बचा लिया और वे परहेज़गार लोग थे (53) और लूत (का भी उल्लेख कीजिए) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि क्या तुम देखते भालते अश्लीलता करते रहते हो (54) तुम महिलाओं को छोड़ कर पुरूषों से अपनी इच्छा पूरी करते हो बात यह है कि तुम अज्ञानता पर उतारू हो (55) बस उनकी क़ौम का उत्तर केवल यह था कि लूत के मानने वालों को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो यह लोग बड़े पवित्र बनते हैं (56) तो हमने उनको और उनके घर वालों को बचा लिया सिवाय उनकी पत्नी के उसको हमने पीछे रह जाने वालों में तय कर दिया था (57) और हमने उन पर विशेष वर्षा की तो जिनको डराया जा चुका उनकी वर्षा बुरी थी[5] (58) आप कह दीजिए असल प्रशंसा तो अल्लाह की है और सलाम हो उसके उन बंदों पर जिनको उसने चुन लिया, अल्लाह बेहतर है या वे जिनको यह लोग साझी ठहराते हैं[6] (59)

---

(1) यानी आपकी पैग़म्बरी का दावा करने के बाद क़ौम दो भाग में बंट गई, इसको उनका अशुभ संकेत समझते हैं (2) नौ सरदार थे जिनके साथ उनके जत्थे थे, उन्हीं लोगों में से किसी ने हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की ऊँटनी को मारा था (3) वे अपनी साज़िश पूरी कर भी न पाए थे कि अज़ाब (दण्ड) का शिकार हो गये (4) "ऐकह" पर गुज़र चुका, फुट नोटः– सूरह हिज्र पृष्ठ नं0 267 (5) हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की घटनाएं पहले भी विभिन्न सूरतों में गुज़र चुकी हैं (6) यह पूरा भाषण तौहीद (एकेश्वरवाद) के प्रमाणों के साथ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माध्यम से उम्मत को पहुंचाया गया, शुरु में हिदायत की गई कि इसकी शुरुआत अल्लाह की प्रशंसा और उसके प्रिय बंदों पर सलाम भेज कर किया जाए, और उसके द्वारा शिष्टता (अदब) सिखाया गया कि जब भी कोई भाषण देना हो तो उसकी शुरुआत अल्लाह की प्रशंसा और पैगम्बरों पर दुरूद व सलाम से किया जाए।

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ
السَّمَآءِ مَآءً فَأَنْبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَا كَانَ
لَكُمْ أَنْ تُنْبِتُوْا شَجَرَهَا ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ٦٠
أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ أَنْهٰرًا وَّجَعَلَ
لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ٦١ أَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ
وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْأَرْضِ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ
قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ٦٢ أَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَ
الْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ
ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ٦٣ أَمَّنْ يَّبْدَؤُا
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ
ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ٦٤
قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللّٰهُ
وَمَا يَشْعُرُوْنَ أَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ٦٥ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي
الْاٰخِرَةِ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ٦٦

منزل٥

भला किसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और तुम्हारे लिए ऊपर से वर्षा की तो उससे बहार से भरे बाग़ उगा दिये, तुम्हारे बस में नहीं था कि तुम उसके पेड़ ही उगा दो, क्या अल्लाह के साथ कोई उपास्य और भी है, कोई नहीं बल्कि यह लोग हैं ही रास्ते से हट जाने वाले (60) भला कौन है जिसने ज़मीन को ठहरने का स्थान बनाया और उसके बीच नहरें निकालीं और उसके लिए पहाड़ बनाए और दो समुद्रों के बीच आड़ बना दी क्या अल्लाह के साथ भी कोई ख़ुदा है कोई नहीं लेकिन उनमें अधिकांश लोग जानते नहीं (61) भला कौन है जो व्याकुल की फ़रियाद सुनता है जब वह उसको पुकारता है और तकलीफ़ दूर कर देता है और तुम को उसने ज़मीन में खलीफ़ा बना रखा है? क्या और कोई उपास्य भी है अल्लाह के साथ, बहुत कम तुम ध्यान देते हो (62) भला कौन है जो तुम्हें थल और जल के अँधेरों में रास्ता बताता है और कौन अपनी दया से पहले शुभ सूचना देती हुई हवाएं भेजता है क्या अल्लाह के अतिरिक्त और कोई ख़ुदा भी है, जिनको भी वे साझी ठहराते हैं उनसे अल्लाह बहुत बुलंद है (63) भला कौन है जो आरम्भ में पैदा करता है फिर वह दोबारा पैदा करेगा और कौन तुम्हें आसमान व ज़मीन से रोज़ी पहुँचाता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और भी ख़ुदा है? कह दीजिए अगर तुम सच्चे हो तो अपना प्रमाण ले आओ (64) बता दीजिए कि आसमानों और ज़मीन में ढकी छिपी चीज़ का जानने वाला कोई नहीं केवल अल्लाह है और उनको इसकी जानकारी भी नहीं कि वे कब उठाए जाएंगे[1] (65) बात यह है कि आख़िरत के बारे में उनका ज्ञान बिल्कुल ठप पड़ गया है[2] बल्कि वे उसके विषय में संदेह में हैं बल्कि वास्तविकता यह है कि वे इस संबंध में अंधे हैं (66)

(1) पिछली आयतों में अल्लाह का व्यक्तित्व और गुणों की यकताई को अति प्रभावी शैली में ढंग बदल–बदल कर प्रस्तुत किया गया है, उसकी शक्ति का वर्णन कर–करके यह बयान किया गया है कि कोई आधिकारिक शक्ति जिससे यह काम बन पड़े और इसी कारण से वह उपास्य बनने के योग्य हो? जब नहीं तो यह मालूम हुआ कि यह मुश्रिक लोग (अनेकेश्वरवादी) मात्र अज्ञानता और ना समझी से शिर्क और सृष्टि पूजा की गहरी खाई में गिरते चले जा रहे हैं, ढकी–छिपी चीज़ें जिनको ग़ैब कहते हैं उनको केवल अल्लाह ही जानता है, इसलिए आलिमुलग़ैब (परोक्ष का ज्ञानी) केवल वही है, हाँ अपने विशेष बंदों अर्थात पैग़म्बरों को वह जितना चाहता है बता देता है और उसका सबसे अधिक ज्ञान अल्लाह ने अपने सबसे प्रिय पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिया मगर आलिमुल ग़ैब (परोक्ष का ज्ञानी) केवल अल्लाह है, वह कुल ढकी–छिपी बातें जानता है, उसके सिवा कोई ऐसा नहीं जो सब जानता हो (2) सारे उनके शोध चलते रहते हैं, ज्ञान व कला की गाड़ी दौड़ती रहती है मगर जैसे ही आख़िरत का उल्लेख होता है लगता है कि उनकी गाड़ी भस्ट हो गई अब एक क़दम भी आगे नहीं बढ़ सकती।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوٓا ءَإِذَا كُنَّا تُرَٰبًا وَءَابَآؤُنَآ أَئِنَّا
لَمُخْرَجُونَ ﴿٦٧﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا هَٰذَا نَحْنُ وَءَابَآؤُنَا مِن
قَبْلُ إِنْ هَٰذَآ إِلَّآ أَسَٰطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾ قُلْ سِيرُوا
فِى الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٦٩﴾
وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُن فِى ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿٧٠﴾
وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٧١﴾ قُلْ
عَسَىٰٓ أَن يَكُونَ رَدِفَ لَكُم بَعْضُ الَّذِى تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٧٢﴾
وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا
يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا
يُعْلِنُونَ ﴿٧٤﴾ وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِى السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِى
كِتَٰبٍ مُّبِينٍ ﴿٧٥﴾ إِنَّ هَٰذَا الْقُرْءَانَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِىٓ
إِسْرَٰٓءِيلَ أَكْثَرَ الَّذِى هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٧٦﴾ وَإِنَّهُۥ
لَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾ إِنَّ رَبَّكَ
يَقْضِى بَيْنَهُم بِحُكْمِهِۦ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٧٨﴾
فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ﴿٧٩﴾

منزل٥

और काफ़िर कहते हैं कि क्या जब हम और हमारे बाप–दादा मिट्टी हो जाएंगे तो क्या हम निकाले जाएंगे (67) इसका वादा हमसे और हमारे बाप–दादा से पहले भी किया जा चुका है, यह तो सिर्फ पहलों की कथाएं हैं (68) कहिए कि ज़रा ज़मीन में घूम फिर कर देखो कि अपराधियों का अंजाम कैसा हुआ[1] (69) और आप न उन पर दुखी हों और न उनकी चालों से दिल को छोटा करें (70) और वे कहते हैं कि सच्चे हो तो बताओ यह वादा कब पूरा होगा (71) कह दीजिए कि वे कुछ चीज़ें जिनकी तुम्हें जल्दी है हो सकता है तुम्हारे पीछे आ ही चुकी हों[2] (72) और निश्चित रूप से ही तुम्हारा पालनहार लोगों पर बड़ी कृपा वाला है लेकिन अधिकांश लोग एहसान नहीं मानते (73) और बेशक आपका पालनहार उनके सीनों की छिपी बातें और जो वे प्रकट करते हैं सब जानता है (74) और आसमान व ज़मीन की कोई चीज़ ऐसी नहीं है जो खुली किताब में मौजूद न हो (75) बेशक यह कुरआन बनी इस्राईल को अधिकतर वे बातें सुनाता है जिनमें वे मतभेद करते हैं[3] (76) और निश्चित रूप से वह ईमान वालों के लिए हिदायत व रहमत है (77) आपका पालनहार अपने आदेश से उनके बीच ज़रूर फैसला कर देगा और वह ज़बरदस्त है खूब जानता है (78) तो आप अल्लाह ही पर भरोसा करते रहें निश्चित रूप से आप ही खुले सत्य पर हैं[4] (79)

(1) कितने अपराधियों को दुनिया में शिक्षाप्रद सज़ाएं मिल चुकी हैं, पैग़म्बरों की बातें पूरी हो कर रहीं, इसी प्रकार दोबारा उठने और आख़िरत के बदले और दण्ड की जो सूचना पैग़म्बर देते चले आए हैं वह पूरी हो कर रहेगी (2) अर्थात घबराओ नहीं वादा पूरा होकर रहेगा और कुछ नहीं कहा जा सकता कि संभव है वादे का कुछ भाग निकट आ ही गया हो, अतः बद्र में कुरैश के बड़े–बड़े सरदार मारे और मुश्रिक बहुत बुरी तरह से पराजित हुए (3) यह भी कुरआन की सत्यता का प्रमाण है कि जिन मामलों में बनी इस्राईल के बड़े–बड़े विद्वानों में मतभेद रहा पवित्र कुरआन ने उसकी वास्तविकता साफ कर दी (4) यानी आप किसी के मतभेत या झुठलाने से प्रभावित न हों, खुदा पर भरोसा करके अपना काम किए जाएं, जिस सही और साफ़ रास्ते पर आप चल रहे हैं उसमें कोई खटका नहीं, आदमी जब सच्चे रास्ते पर हो और एक अल्लाह पर भरोसा रखे फिर क्या ग़म है!

إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا
وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٨٠﴾ وَمَا أَنتَ بِهَادِي الْعُمْيِ عَن ضَلَالَتِهِمْ
إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُم مُّسْلِمُونَ ﴿٨١﴾ وَ
إِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ
تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ﴿٨٢﴾ وَ
يَوْمَ نَحْشُرُ مِن كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّن يُكَذِّبُ
بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿٨٣﴾ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوا قَالَ أَكَذَّبْتُم
بِآيَاتِي وَلَمْ تُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَّاذَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾
وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِم بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ لَا يَنطِقُونَ ﴿٨٥﴾
أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لِيَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٨٦﴾ وَيَوْمَ يُنفَخُ
فِي الصُّورِ فَفَزِعَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ
إِلَّا مَن شَاءَ اللَّهُ وَكُلٌّ أَتَوْهُ دَاخِرِينَ ﴿٨٧﴾ وَتَرَى الْجِبَالَ
تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ صُنْعَ اللَّهِ
الَّذِي أَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ﴿٨٨﴾

منزل ٥

आप मुर्दों को हरगिज़ न सुना सकेंगे और न उन बहरों को आप पुकार सुना सकते हैं जो मुँह फेर कर चल दें (80) और न आप अंधों को उनकी गुमराही से राह पर ला सकते हैं, आप केवल उन्हीं को सुना सकते हैं जो हमारी आयतों को मानते हैं तो वे मुसलमान हैं[1] (81) और जब बात उन पर आ पड़ेगी तो हम उनके लिए ज़मीन से ऐसा जानवर निकालेंगे जो उनसे बातें करेंगे कि लोग हमारी निशानियों पर विश्वास नहीं करते थे[2] (82) और जब हम हर उम्मत में से एक गिरोह उन लोगों का इकट्ठा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाते थे तो वे पंक्तिबद्ध खड़े कर दिये जाएंगे (83) यहाँ तक कि जब वे (सब) उपस्थित हो जाएंगे तो वह कहेगा क्या तुमने मेरी निशनियों को झुठलाया जब कि तुमने उनको पूरी तरह से जाना भी नहीं या तुम क्या कर रहे थे (84) और उनके अत्याचार के कारण बात उनके सिर पर थुप जाएगी तो वे बोल भी न सकेंगे (85) क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम ही ने रात बनाई ताकि वे उसमें सुकून प्राप्त करें और दिन को रौशन बनाया निश्चित रूप से उसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो मानते हैं (86) और जिस दिन सूर फूँका जाएगा तो आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं सब के सब दहल जाएंगे सिवाय उनके जिनको अल्लाह चाहे और सब उसके पास विनम्रता पूर्वक उपस्थित हो जाएंगे (87) आप पहाड़ों को देखते हैं तो उनको खड़ा समझते हैं जबकि वे बादलों के समान चल रहे होंगे, यह अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर चीज़ को स्थिरता प्रदान की निश्चित रूप से तुम जो करते हो वह उसकी पूरी ख़बर रखता है[3] (88)

---

(1) जिस प्रकार मुर्दे को संबोधित करना या किसी बहरे को पुकारना जब कि वह मुँह मोड़ कर जा रहा हो बिल्कुल बेकार है यही हाल उन न मानने वालों का है जिनके दिल मुर्दा हो चुके हैं और कान बहरे हो गये हैं, उनको कोई भी उपदेश दिया जाए वह काम नहीं करता, हाँ! जो सुनना चाहता है और विचार करता है, फिर मानता है उसके लिए यह किताब हिदायत के दरवाज़े खोलती चली जाती है (2) क़यामत के निकट एक जानवर निकलेगा जो लोगों से बातें करेगा कि अब क़यामत क़रीब है, शायद उसके द्वारा यह दिखलाने का उद्देश्य हो कि जो बात तुम पैग़म्बरों के द्वारा न मानते थे आज वह जानवर की ज़बान से माननी पड़ रही है मगर उस समय मानना लाभदायक न होगा, केवल झुठलाने वालों को जाहिल घोषित कराना है और बेवकूफ़ क़रार देना उद्देश्य होगा (3) आज यह पहाड़ जो खड़े दिखाई पड़ते हैं कल क़यामत के दिन बादलों की तरह उड़ते फिर रहे होंगे।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ
اٰمِنُوْنَ ﴿٨٩﴾ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ۗ هَلْ
تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ
الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ۫ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ
الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩١﴾ وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ
وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ
سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ ع

سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّتِسْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

طٰسٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ
مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ فِرْعَوْنَ
عَلَا فِي الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً
مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۗ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ
الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤﴾ وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا
فِي الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥﴾

منزل٥

जो अच्छाई ले कर आया तो उसे उससे बेहतर मिलेगा और वे लोग उस दिन की घबराहट से सुरक्षित होंगे[1] (89) और जो बुराई लेकर आएगा तो ऐसों को मुँह के बल दोज़ख़ में ढकेल दिया जाएगा, तुम्हें उसी करतूत की तो सज़ा मिल रही है जो तुम करते रहे थे (90) मुझे आदेश है कि मैं उस शहर के पालनहार ही की इबादत करता रहूँ जिसे उसने आदरणीय बनाया और सब उसी का है और मुझे आदेश है कि मैं आज्ञाकारी ही रहूँ (91) और मैं क़ुर्आन का पाठ करता रहूँ तो जिसने राह पा ली वह अपने लिए राह पाता है और जो गुमराह हुआ तो आप कह दीजिए कि मैं तो ख़बरदार कर देने वालों में हूँ (92) और कह दीजिए कि वास्तविक प्रशंसा तो अल्लाह ही के लिए है वह जल्द ही तुमको अपनी निशानियाँ दिखा देगा तो तुम उन्हें पहचान लोगे[2] और तुम लोग जो कुछ करते हो आपका पालनहार उससे बेख़बर नहीं है (93)

सूरह क़सस

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

तॉ. सीन. मीम. (1) यह खुली किताब की आयतें हैं (2) हम आपके सामने उन लोगों के लिए जो मानते हों मूसा और फ़िरऔन की कहानी ठीक ठीक सुनाते हैं (3) निश्चित रूप से फ़िरऔन ने ज़मीन में सिर उठा रखा था और वहां के वासियों को उसने टुकड़ियों में बाँट दिया था, उनमें एक गिरोह का उसने ज़ोर घटा रखा था, उनके लड़को को ज़बह कर डालता था और लड़कियों को ज़िन्दा छोड़ देता था निश्चित रूप से वह फसादियों में से था[3] (4) और हम यह चाहते थे कि ज़मीन में जिन का ज़ोर घटा दिया गया है हम उन पर एहसान करें और उनको पेशवा (नायक) बनाएं और उन्हीं को (ज़मीन का) वारिस करें (5)

---

(1) एक नेकी का बदला कम से कम दस गुना अधिक मिलेगा (2) अल्लाह तआला अपनी शक्ति और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सत्यता की बहुत सी निशानियाँ दिखलाता रहा है, जिन्होंने माना उनके लिए सफलता है, और आगे भी क़यामत की निशानियाँ सामने आएंगी जिनको लोग देख कर पहचान लेंगे और सुधार करेंगे, क़यामत की बड़ी निशानियाँ आ जाएंगी जिनको देख कर हर इन्कार करने वाला पहचान लेगा किन्तु उस समय का मानना स्वीकार नहीं होगा, क्योंकि ईमान लाने का समय बीत चुका होगा (3) फ़िरऔन ने बनी इस्राईल को मिस्र में ग़ुलाम बना रखा था फिर जब किसी ज्योतिषी ने उससे यह कह दिया कि अब जो बच्चे पैदा हो रहे हैं उनमें किसी इस्राइली के द्वारा उसके राज का पतन होगा तो उसने आदेशपत्र जारी कर दिया कि बनी इस्राईल में पैदा होने वाले हर बच्चे को क़त्ल कर दिया जाए, और बच्चियाँ छोड़ दी जाएं, उसने अपना उपाय किया और अल्लाह का फ़ैसला कुछ और ही था, अल्लाह को जिस बच्चे के हाथों उसके राज का पतन करवाना था उसको उसी के घर में पलवाया।

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا
مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ۝٦ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ
اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ وَلَا
تَحْزَنِيْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٧
فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ۭ اِنَّ
فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِـِٕيْنَ ۝٨ وَقَالَتِ
امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ۭ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ
عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩
وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ۭ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ
لَوْلَآ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠
وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۡ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ
لَا يَشْعُرُوْنَ ۝١١ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ
هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ
نٰصِحُوْنَ ۝١٢ فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ
وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝١٣

منزل ٥

और धरती में उनको शक्ति प्रदान की और फ़िरऔन और हामान को और दोनों की सेनाओं को उन्हीं के हाथों से वह चीज़ें दिखा दीं जिससे उनको खतरा लगा हुआ था (6) और हमने मूसा की माँ को आदेश भेजा कि उनको दूध पिलाती रहो फिर जब तुम्हें उनके बारे में डर हो तो उनको नदी में डाल देना और न डरना और न दुखी होना हम उनको तुम्हारी ही ओर लौटाने वाले हैं और उनको पैग़म्बर बनाने वाले हैं[1] (7) फिर फ़िरऔन के घर वालों ने ही उनको उठा लिया इसलिए कि नतीजा यह होना था कि वे उनके दुश्मन हों और दुःख का कारण बनें, निश्चित रूप से फ़िरऔन व हामान और उनकी सेनाओं के लोग चूक गये (8) फ़िरऔन की पत्नी ने कहा यह मेरी और आपकी आँखों की ठंडक है इसको क़त्ल न कीजिए हो सकता है यह हमारे काम आए या हम इसको बेटा ही बना लें और उन्हें (अंजाम की) कुछ ख़बर न थी (9) और मूसा की माँ का दिल उदास होने लगा, अगर हमने उनके दिल को बांध न दिया होता तो क़रीब था कि वे इसका इज़हार कर ही देतीं (यह इसलिए हुआ) ताकि वे विश्वास किए रहें (10) और उन्होंने उनकी बहन से कहा ज़रा उसके पीछे–पीछे चली जा तो वह उनको दूर से देखती गई और उन लोगों को एहसास भी न हुआ (11) और हमने पहले ही दूध पिलाने वालियों को उनपर रोक रखा था तो (मूसा की बहन) बोलीं क्या हम ऐसे घर वालों का पता न बताएं जो आपके लिए इसको पालें और वह उसके शुभचिंतक भी हों (12) अतः हमने उनको उनकी माँ के पास वापस लौटा दिया ताकि उनकी आँखें ठंढ़ी हों और वे दुखी न हों और ताकि जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा ही है लेकिन उनमें अधिकतर लोग जानते नहीं[2] (13)

---

(1) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पैदा हुए तो उनकी माँ चिंता में पड़ गईं कि कैसे उनकी रक्षा की जाए, अल्लाह का आदेश आया कि ख़तरा महसूस करना तो उनको एक पेटी बना कर उसमें रख कर नील नदी में डाल देना, रक्षा करना हमारा काम है, उन्होंने ऐसा ही किया, वह पेटी बढ़ती हुई फ़िरऔन के महल के सामने पहुंच गई, बच्चे को दखे कर लोग आश्चर्य चकित रह गए, फ़िरऔन की पत्नी हज़रत आसिया ने फ़िरऔन को राज़ी कर लिया कि उसको बेटा बना लिया जाए, इस तरह अल्लाह ने फिरऔन के घर में उनके पालन–पोषण की व्यवस्था कर दी (2) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को नील नदी में डालने के बाद उनकी माँ का बुरा हाल होने लगा, बुरे–बुरे विचार परेशान करने लगे, बहन से कहा कि ज़रा जाकर देखो कि पेटी कहां पहुंची, वे पीछे–पीछे गईं, फ़िरऔन के महल में पहुंचीं, वहां की परिस्थिति यह थी कि मूसा किसी दाई को मुंह लगाने को तैयार न थे, सब परेशान थे मूसा की बहन को अवसर प्राप्त हो गया, उन्होंने कहा कि एक दूध पिलाने वाली बहुत साफ़–सुथरी है, बच्चा शायद उसका दूध पी ले, आदेश हो तो उपस्थित कर दूं, इस प्रकार वह बहाने से अपनी माँ को ले आईं, हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम उनको देखते ही लिपट गये, इस प्रकार अल्लाह ने उनको उनकी माँ के पास वापस लौटा दिया।

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ
نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤﴾ وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ
اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۫ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا
مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ مِنْ
عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۫ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ
اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَاغْفِرْ لِىْ
فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦﴾ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَىَّ
فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٧﴾ فَاَصْبَحَ فِى الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا
يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِى اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ ؕ قَالَ
لَهٗ مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِىٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾ فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ
بِالَّذِىْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِىْ
كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا
فِى الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ
رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۫ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ
يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّىْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢٠﴾

منزل٥

और जब वे अपनी पक्की उम्र को पहुँच गये और अंग–अंग उपयुक्त हो गये तो हमने उनको हिकमत और ज्ञान से सम्मानित किया और अच्छे काम करने वालों को हम ऐसे ही बदला दिया करते हैं[1] (14) और उन्होंने शहर में ऐसे समय प्रवेश किया जब वहां के लोग बेख़बर थे तो उन्होंने दो आदमियों को झगड़ता पाया, एक उनकी जाति का था और एक दुश्मनों में था तो उनकी जाति के आदमी ने उस आदमी के विरूद्ध सहायता चाही जो उनके शत्रुओं में था बस मूसा ने उसको एक मुक्का मार दिया तो उसका काम ही तमाम कर दिया, कहने लगे कि यह तो शैतानी काम हुआ निश्चित रूप से वह दुश्मन है खुला गुमराह करने वाला[2] (15) उन्होंने पुकारा ऐ मेरे पालनहार! मैंने अपनी जान पर अत्याचार किया बस तू मुझे माफ़ कर दे तो अल्लाह ने उनको माफ़ कर दिया बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है (16) उन्होंने कहा ऐ मेरे पालनहार! तूने मुझ पर इनआ़म किया तो अब मैं हरगिज़ अपराधियों का मददगार न बनूंगा (17) फिर शहर में भय और आशंका की हालत[3] में उन्होंने सुबह की बस जिसने कल मदद मांगी थी वह (फिर) मदद के लिए पुकार रहा था, मूसा ने उससे कहा निश्चित रूप से तू ही खुला हुआ ग़लत रास्ते पर है (18) फिर जब उन्होंने चाहा कि उसको पकड़ें जो उन दोनों का दुश्मन था वह बोला ऐ मूसा! कल तुमने जैसे एक जान ली है आज मेरी जान लेना चाहते हो, तुम ज़मीन में पहलवान बन कर रहना चाहते हो, और तुम यह नहीं चाहते कि सुधार करने वालों में शामिल हो (19) और शहर के किनारे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया और बोला ऐ मूसा! दरबार में लोग तुम्हारे क़त्ल के मश्वरे कर रहे हैं बस तुम निकल जाओ निश्चित रूप से मैं तुम्हारे शुभचिंतकों में हूँ[4] (20)

(1) बचपन ही से होनहार थे, जवान हुए तो अल्लाह ने विशेष ज्ञान व तत्वदर्शिता से सुशोभित किया (2) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने मात्र चेताना चाहा था किन्तु संयोग वश वह मुक्का ऐसा लगा कि उसका काम ही तमाम हो गया, हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को पछतावा हुआ कि बात हद से आगे बढ़ गई और यही पैग़म्बरों की शान होती है, पैग़म्बरी से पहले भी वह एक एक चीज़ का हिसाब–किताब करते हैं (3) कहा जाता है कि जिस क़िब्ती को हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने मारा था वह फ़िरऔन के यहाँ काम करने वालों में था इसलिए हज़रत मूसा को डर लगा रहा कि कहीं तत्काल कोई कार्यवाही न शुरु हो जाए (4) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने हाथ तो उस मिस्री क़िब्ती की ओर बढ़ाया था कि उसे मारने से रोकें लेकिन जब इस्राईली ने यह वाक़या सुना कि गलती तुम्हारी ही है तो वह समझा कि उसे मारने के लिए हाथ बढ़ा रहे हैं, कल की कहानी उसके सामने पेश आ चुकी थी तो तुन्त ही चीख उठा कि क्या आज मुझे मारना चाहते हो, इस प्रकार छिपा हुआ रहस्य खुल गया और बात फ़िरऔन तक पहुंच गई, वहाँ मंत्रणा हुई कि एक ग़ैर क़ौम का आदमी इतना सिर चढ़ गया कि वह शासक समुदाय के सदस्यों और सरकारी कर्मचारियों को क़त्ल कर डाले, ऐसे आदमी को तुरन्त क़त्ल देना चाहिए, वहाँ फ़िरऔन के निकटवर्ती लोगों में एक आदमी हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का शुभचिंतक था, वह भागता हुआ पहुंचा और हज़रत मूसा को सूचित किया।

فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ نَجِّنِىْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢١﴾
وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّىْۤ اَنْ يَّهْدِيَنِىْ سَوَآءَ
السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾ وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ
النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۖ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ
قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسْقِىْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ وَاَبُوْنَا
شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰىۤ اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّىْ
لِمَاۤ اَنْزَلْتَ اِلَىَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾ فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِىْ عَلَى
اسْتِحْيَآءٍ قَالَتْ اِنَّ اَبِىْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ؕ
فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ نَجَوْتَ مِنَ
الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰۤاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ اِنَّ خَيْرَ
مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِىُّ الْاَمِيْنُ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنِّىْۤ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ
اِحْدَى ابْنَتَىَّ هٰتَيْنِ عَلٰۤى اَنْ تَاْجُرَنِىْ ثَمٰنِىَ حِجَجٍ ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ
عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَيْكَ ؕ سَتَجِدُنِىْۤ اِنْ
شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِىْ وَبَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ
قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَىَّ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٢٨﴾

منزل٥

बस वे वहाँ से डरते डरते देखते भालते निकल गये, दुआ की, ऐ मेरे पालनहार! अत्याचारी लोगों से मुझे बचा ले (21) और जब वह मदयन की ओर चल पड़े तो कहने लगे आशा है कि मेरा पालनहार मुझे सीधा चला देगा[1] (22) और जब मदयन के घाट पर पहुँचे तो लोगों की भीड़ देखी जो पानी पिला रहे हैं और उनसे हट कर दो स्त्रियां देखीं जो अपने जानवरों को रोक रही हैं तो उन्होंने कहा तुम्हारा क्या मामला है वे बोलीं कि जब तक चरवाहे चले नहीं जाते हम पिला नहीं सकते और हमारे पिता बहुत बूढ़े हैं[2] (23) तो उन्होंने उन दोनों के (लिए उनके जानवरों को) पानी पिला दिया फिर पलट कर छाया में आ गये तो दुआ की कि ऐ मेरे पालनहार! जो भलाई भी तू भेज दे मैं उसका मोहताज हूँ (24) तो उन दोनों में से एक लजाती हुई आई, बोली मेरे पिता आपको बुला रहे हैं ताकि आपने हमारे लिए जो पानी पिला दिया था उसका आपको बदला दें तो जब वे उनके पास पहुँचे और उनको पूरी घटना कह सुनाई तो उन्होंने कहा डरो नहीं तुम अत्याचारी लोगों से बच कर निकल आए हो[3] (25) दोनों में से एक ने कहा ऐ पिता श्री! इनको मज़दूरी पर रख लीजिए आप जिसको भी मज़दूरी पर रखेंगे उनमें सर्वोत्तम वह है जो बलवान हो अमानतदार हो[4] (26) उन्होंने (मूसा को संबोधित करके) कहा मैं तो यह चाहता हूँ कि तुमसे अपनी दोनों बेटियों में से एक का विवाह कर दूँ इस शर्त पर कि तुम आठ साल मेरी मज़दूरी करो फिर अगर तुम दस पूरे कर दो तो यह तुम्हारी ओर से है और मैं तुमको कष्ट में डालना नहीं चाहता, अल्लाह ने चाहा तो तुम मुझे नेक लोगों में पाओगे (27) मूसा ने कहा यह मेरे आपके बीच तय ठहरा, दोनों अवधियों में से मैं जो भी पूरी कर दूं तो मुझ पर कोई ज़बरदस्ती नहीं होगी और हम जो बात कह रहे हैं अल्लाह उसका ज़िम्मेदार है (28)

(1) मदयन हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की बस्ती थी और वह क्षेत्र फ़िरऔन के राज से बाहर का था, इसलिए हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने वहां जाने का इरादा किया (2) यह हज़रत शुऐब की बेटियां थीं उन्होंने बताया कि मर्दों में घुस कर पिलाना हमारे लिए उचित नहीं और हमारे पिता बुढ़ापे के कारण खुद आ नहीं सकते तो हम प्रतीक्षा करते हैं, जब सब पिला चुकते हैं तो हम अपने जानवरों को पिलाते हैं, हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की प्रवृत्ति में नेकी थी उन्होंने उनके जानवरों को पानी पिला दिया और उनके हवाले करके छाया में बैठ गये और दुआ की (3) हज़रत शुऐब ने जब पूरी कहानी सुनी तो हज़रत मूसा को तसल्ली दी कि तुम्हें अब डरने की आवश्यकता नहीं, तुम फ़िरऔन की सीमा से बाहर आ गये हो (4) यह उनकी बुद्धिमत्ता का कमाल है कि मज़दूरी पर रखे जाने वाले कि लिए उन्होंने दो गुण बताये और अल्लाह ने उनका वाक्य लिख कर एक नियम प्रदान किया कि एक अच्छे कर्मचारी की यही पहचान है और चूंकि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में दोनों चीज़ों का अनुभव हो चुका था इस लिए उन्होंने इसकी गवाही दी।

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ مِن جَانِبِ
الطُّورِ نَارًا قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّي آتِيكُم
مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿٢٩﴾
فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ مِن شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ
الْمُبَارَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَن يَا مُوسَىٰ إِنِّي أَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٠﴾
وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلَّىٰ
مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ يَا مُوسَىٰ أَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ إِنَّكَ مِنَ
الْآمِنِينَ ﴿٣١﴾ اسْلُكْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ
غَيْرِ سُوءٍ وَاضْمُمْ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذَانِكَ بُرْهَانَانِ
مِن رَّبِّكَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٣٢﴾
قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَن يَقْتُلُونِ ﴿٣٣﴾
وَأَخِي هَارُونُ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسَانًا فَأَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْءًا
يُصَدِّقُنِي إِنِّي أَخَافُ أَن يُكَذِّبُونِ ﴿٣٤﴾ قَالَ سَنَشُدُّ
عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطَانًا فَلَا يَصِلُونَ
إِلَيْكُمَا بِآيَاتِنَا أَنتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغَالِبُونَ ﴿٣٥﴾

منزل ٥

फिर जब मूसा वह अवधि पूरी कर चुके और अपनी पत्नी को लेकर चले तो तूर की ओर उनको आग दिखाई दी, अपने घर वालों से कहा ठहरो मैंने आग देखी है शायद मैं तुम्हारे पास वहाँ से कोई ख़बर लाऊँ या आग का अंगारा ले आऊँ ताकि तुम ताप सको[1] (29) फिर जब वे वहाँ पहुँचे तो मैदान की दाईं ओर शुभ स्थान में एक पेड़ से आवाज़ आई कि ऐ मूसा! मैं ही अल्लाह हूँ संसारों का पालनहार (30) और अपनी लाठी डाल दो तो जब उन्होंने उसे लहराते देखा जैसे पतला साँप हो तो वे पीछे भागे और मुड़ कर भी न देखा (आदेश हुआ) ऐ मूसा! आगे आओ और डरो मत तुम्हें कोई ख़तरा नहीं (31) अपना हाथ अपने गिरेबान में डालो वह बिना किसी ख़राबी के सफेद (चमकता) निकल आएगा और अपने बाज़ू (बाहें) अपनी ओर समेट लो भय (दूर करने)[2] के लिए बस तुम्हारे पालनहार की ओर से फ़िरऔन और उसके दरबारियों के लिए यह दो ज़बर्दस्त प्रमाण हैं बेशक वे नाफ़रमान लोग हैं (32) उन्होंने कहा ऐ मेरे पालनहार! मैंने उनके एक आदमी को क़त्ल कर दिया था तो मुझे डर है कि वे मुझे मार डालेंगे (33) और मेरे भाई हारून की ज़बान मुझसे अधिक साफ़ है तो उन्हें भी मेरे साथ पुश्तपनाह (सहायक) के रूप में भेज दीजिए वे मेरा समर्थन करेंगे। मुझे डर है कि वे मुझे झुठला न दें (34) कहा हम तुम्हारे भाई को तुम्हारे लिए सहायक बनाए देते हैं और तुम दोनों को ऐसी शक्ति प्रदान करेंगे कि वे तुम्हें हाथ भी न लगा सकेंगे, हमारी निशानियों से, तुम और तुम्हारे अनुयायी ही गालिब आने (विजयी होने) वाले हैं[3] (35)

---

(1) किताबों में आता है कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दस वर्ष पूरे किये फिर हज़रत शुऐब ने अपनी एक सुपुत्री से जिनका नाम "सफ़ूरा" आता है उनका विवाह कर दिया, उसके बाद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपनी माँ के पास मिस्र जाने का इरादा किया, रास्ते में सख्त जाड़े से बेहाल होने लगे, एक पेड़ के पास आग दिखाई पड़ी तो पत्नी से कह कर उसकी ओर लपके कि कुछ मिल जाए, वहाँ पहुँचे तो पैग़म्बरी से सम्मानित किए गए और दो निशानियाँ दी गईं, एक असा (लाठी) और दूसरी यद–ए–बैज़ा (चमकता हाथ) (2) यानी बांह (बाज़ू) को पार्श्व (पहलू) से मिला लो, साँप आदि का डर जाता रहेगा, शायद आगे भी भय दूर करने का यह उपाय बताया हो (3) अल्लाह ने उनकी दोनों प्रार्थनाएं स्वीकार कीं हज़रत हारून को उनको साथ किया और ऐसा प्रताप प्रदान किया कि फिरऔन कुछ न कर सका।

فلما جاءهم موسى بآياتنا بينات قالوا ما هذا إلا سحر
مفترى وما سمعنا بهذا في آبائنا الأولين ﴿٣٦﴾ وقال
موسى ربي أعلم بمن جاء بالهدى من عنده ومن تكون
له عاقبة الدار إنه لا يفلح الظالمون ﴿٣٧﴾ وقال فرعون
يا أيها الملأ ما علمت لكم من إله غيري فأوقد لي
يا هامان على الطين فاجعل لي صرحا لعلي أطلع إلى
إله موسى وإني لأظنه من الكاذبين ﴿٣٨﴾ واستكبر
هو وجنوده في الأرض بغير الحق وظنوا أنهم إلينا
لا يرجعون ﴿٣٩﴾ فأخذناه وجنوده فنبذناهم في اليم
فانظر كيف كان عاقبة الظالمين ﴿٤٠﴾ وجعلناهم أئمة
يدعون إلى النار ويوم القيامة لا ينصرون ﴿٤١﴾
وأتبعناهم في هذه الدنيا لعنة ويوم القيامة هم
من المقبوحين ﴿٤٢﴾ ولقد آتينا موسى الكتاب
من بعد ما أهلكنا القرون الأولى بصائر
للناس وهدى ورحمة لعلهم يتذكرون ﴿٤٣﴾

ع

منزل ٥

फिर जब मूसा उनके पास हमारी खुली निशानियों के साथ पहुंचे तो वे कहने लगे कुछ नहीं यह तो एक जादू है जो गढ़ लिया गया है और ऐसा तो हमने अपने पहले बाप दादा में नहीं सुना[1] (36) और मूसा ने कहा कि मेरा पालनहार ख़ूब जानता है कि कौन उसके पास से हिदायत लेकर आया है और आकिबत (परलोक) का घर किसके लिए होगा, अत्याचारी तो सफल हो ही नहीं सकते (37) और फ़िरऔन बोला ऐ दरबारियो! मैं तो अपने सिवा तुम्हारे लिए कोई खुदा जानता नहीं, तो ऐ हामान, मेरे लिए मिट्टी को आग दे कर पकाओ फिर मेरे लिए एक ऊँचा भवन बनाओ ताकि मैं मूसा के खुदा को झाँक कर देख सकूं और मैं तो उसे झूठा ही समझता हूँ[2] (38) और उसने और उसकी सेनाओं ने देश में नाहक़ अकड़ दिखाई और वे समझे कि वे हमारी ओर लौट कर नहीं आएंगे (39) तो हमने उसको और उसकी सेना को पकड़ा फिर समुद्र में फेंक दिया तो देखिए कि अत्याचारियों का क्या अंजाम हुआ (40) और उनको हमने ऐसा सरदार बनाया था कि वे दोज़ख़ की ओर बुलाते थे और क़यामत के दिन उनकी कुछ सहायता न होगी (41) और दुनिया में फिटकार हमने उनके पीछे लगा दी और क़यामत के दिन वही लोग अपमानित होंगे (42) और पहली क़ौमें विनष्ट (हलाक) करने के बाद हमने मूसा को किताब दी लोगों के लिए बसीरत (अंतर्दृष्टि) की बातों और हिदायत (मार्गदर्शन) और दया के रूप में ताकि शायद वे नसीहत हासिल करें[3] (43)

---

(1) हर इनकार करने वाले की दलील होती है कि यह तो नई बात है हमारे बाप–दादा तो इस रास्ते पर न थे (2) यानी ज़मीन में तो कोई खुदा मुझे दिखाई नहीं पड़ता, आसमान में भी देख लो यह बात मज़ाक के रूप में उसने कही या हो सकता है कि पागल हो गया हो कि ऐसे हास्यास्पद प्रस्ताव सोचने लगा हो (3) तौरेत के उतरने के बाद ऐसे अज़ाब कम आए जिसमें पूरी पूरी कौमें विनष्ट की गईं हों, इसके स्थान पर जिहाद का तरीक़ा शुरु किया गया, इसलिए कि कुछ लोग शरीअत के आदेशों पर क़ायम रहे उन्हीं को ज़िम्मेदारी दी गई, यह किताब तौरेत लोगों के मार्गदर्शन के लिए दी गई, पवित्र कुरआन के बाद आकाशीय पुस्तकों में सबसे अधिक आदेश इसी में बयान किये गये थे लेकिन इसके मानने वालों ने इसको नष्ट कर दिया।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا
كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِينَ ﴿٤٤﴾ وَلٰكِنَّا أَنْشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ
الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيٰتِنَا ۙ
وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا
وَلٰكِنْ رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَا أَتٰهُمْ مِنْ نَذِيرٍ
مِنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْلَا أَنْ تُصِيبَهُمْ
مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ
إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيٰتِكَ وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾ فَلَمَّا
جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا لَوْلَا أُوتِيَ مِثْلَ مَا
أُوتِيَ مُوسٰى ۚ أَوَلَمْ يَكْفُرُوا بِمَا أُوتِيَ مُوسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ
قَالُوا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۗ وَقَالُوا إِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُونَ ﴿٤٨﴾
قُلْ فَأْتُوا بِكِتٰبٍ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ أَهْدٰى مِنْهُمَا أَتَّبِعْهُ
إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿٤٩﴾ فَإِنْ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّمَا
يَتَّبِعُونَ أَهْوَاءَهُمْ ۚ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰهُ بِغَيْرِ
هُدًى مِنَ اللّٰهِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِينَ ﴿٥٠﴾

منزل٥

और आप (तूर के) पश्चिमी भाग में मौजूद नहीं थे जब हमने मामला मूसा के हवाले किया था और न आप देखने वालों में थे (44) लेकिन हमने क़ौमें पैदा कीं फिर उन पर लंबी उम्रें बीत गईं और न आप मदयन वालों में रह कर हमारी आयतें उनको सुना रहे थे लेकिन हम ही पैग़म्बर भेजने वाले हैं (45) और न आप तूर की (पश्चिमी) छोर पर थे जब हमने आवाज़ दी लेकिन आपके पालनहार की कृपा है ताकि आप ऐसे लोगों को डराएं जिनके पास आपसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया शायद वे नसीहत हासिल करें[1] (46) और ताकि यह न हो कि अपने करतूतों के कारण वे किसी मुसीबत में ग्रस्त कर दिये जाएं तो यह कहने लगें कि ऐ हमारे पालनहार! आपने हमारी ओर पैगम्बर क्यों नहीं भेज दिया कि हम आपकी आयतों का अनुसरण (पैरवी) करते और ईमान वालों में शामिल हो जाते (47) फिर हमारे पास से जब सत्य उनके पास आ ही गया तो कहने लगे, उनको वह क्यों न दिया गया जो मूसा को दिया गया था, क्या इससे पहले मूसा को जो दिया गया उसका इनकार उन्होंने नहीं किया था? उन्होंने कहा कि यह दोनों जादू हैं जो एक दूसरे के सहायक हैं और उन्होंने कहा कि हम तो प्रत्येक का इनकार करते हैं[2] (48) आप कहिए अगर तुम सच्चे ही हो तो अल्लाह के पास से कोई किताब ले आओ जो इन दोनों से अधिक हिदायत (संमार्ग) वाली हो, मैं उसी का अनुसरण करने लगूँगा (49) फिर अगर वे आपका उत्तर नहीं देते तो जान लीजिए कि वे बस अपनी इच्छाओं पर चलते हैं और उससे बढ़ कर पथभ्रष्ट कौन होगा जो अल्लाह की हिदायत को छोड़ कर अपनी इच्छा पर चले बेशक अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता[3] (50)

---

(1) इन आयतों में पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई स्पष्ट करने के लिए प्रमाण दिये गए हैं कि हज़रत मूसा की जो कहानियाँ पवित्र कुर्आन में बयान की गईं हैं न आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन घटनाओं के समय उपस्थित थे और न इनको मालूम करने का आपके पास कोई साधन था, इसके बावजूद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतने विस्तार से घटना बयान कर रहे हैं, इससे यह बात साफ़ हो जाती है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जो वह्य आती थी उसके द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन घटनाओं को बयान करते थे (2) पैग़म्बर न भेजते तो कहते कि पैग़म्बर क्यों न भेजा, अब पैग़म्बर आए तो कहते हैं कि इनको मूसा की तरह मुअ़जिज़े क्यों न दिये गये और तौरेत ग्रंथ की तरह इकट्ठा क्यों न उतर आई, इस पर अल्लाह तआला कहता है कि मूसा ही को उन्होंने कब माना, फिर मक्का के मुश्रिकों को जब पता चला कि तौरेत में इससे मिलते–जुलते आदेश थे और उसमें शिर्क का इन्कार किया गया है तो कहने लगे कि वह भी जादू था और यह भी जादू है और हम किसी को नहीं मानते (3) आकाशीय ग्रंथों में यह दो सबसे बड़ी और प्रसिद्ध ग्रंथ हैं पवित्र कुर्आन और तौरेत, मक्का के मुश्रिकों से कहा जा रहा है कि अगर तुम दोनों को जादू बता रहे हो तो इस जैसी किताब बनाओ हम भी उसी को मान लेते हैं और जब यह लोग मुकाबले में कोई चीज़ बना कर नहीं लाते हैं और न हिदायत स्वीकार करते हैं तो यह इस बात का प्रमाण है कि वे हिदायत पर चलना नहीं चाहते और जो हिदायत चाहता ही नहीं अल्लाह उसको हिदायत नहीं देता।

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥١﴾ الَّذِينَ
آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ مِن قَبْلِهِ هُم بِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾ وَإِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ
قَالُوا آمَنَّا بِهِ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّنَا إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ﴿٥٣﴾
أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُم مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَيَدْرَءُونَ
بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٥٤﴾ وَإِذَا سَمِعُوا
اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ
سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِي الْجَاهِلِينَ ﴿٥٥﴾ إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ
أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَمُ
بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾ وَقَالُوا إِن نَّتَّبِعِ الْهُدَىٰ مَعَكَ نُتَخَطَّفْ
مِنْ أَرْضِنَا أَوَلَمْ نُمَكِّن لَّهُمْ حَرَمًا آمِنًا يُجْبَىٰ إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ
كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّن لَّدُنَّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾
وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ بَطِرَتْ مَعِيشَتَهَا فَتِلْكَ مَسَاكِنُهُمْ
لَمْ تُسْكَن مِّن بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ﴿٥٨﴾ وَ
مَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُو
عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ﴿٥٩﴾

منزل ٥

और हम एक एक करके (हिदायत की) बात उनको पहुँचाते रहे हैं कि शायद वे नसीहत प्राप्त करें[1] (51) जिनको हमने इससे पहले किताब दी थी वे उस पर ईमान लाते हैं (52) और जब (यह किताब) उनके सामने पढ़ी जाती है तो वे कहते हैं कि हम इस पर ईमान लाए, निश्चित रूप से यह हमारे पालनहार की ओर से सच ही है, हम तो इससे पहले से इसको मानते थे[2] (53) उन लोगों को दोहरा बदला दिया जाएगा उनके सब्र की वजह से और इसलिए कि वे बुराई को अच्छाई से मिटाते हैं और जो हमने उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं (54) और जब व्यर्थ बात सुनते हैं तो उसे टाल जाते हैं और कहते हैं कि हमको हमारे काम और तुमको तुम्हारे काम, तुम्हें सलाम, हम जाहिलों के पीछे नहीं पड़ते(55) आप जिसको चाहें उसको हिदायत नहीं दे सकते, हाँ अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत देता है और वह हिदायत (संमार्ग) पाने वालों को ख़ूब जानता है[3] (56) वे कहते हैं कि अगर हम हिदायत (संगार्म) पर आ जाएंगे तो अपने देश से निकाल दिये जाएंगे, क्या हमने उनको अमन देने वाले हरम में स्थान नहीं दिया, जहाँ रोज़ी के रूप में हमारे पास से हर प्रकार के फल खिंचे चले आते हैं लेकिन उनमें अधिकतर जानते नहीं[4](57) और कितनी ऐसी बस्तियों को हमने उजाड़ दिया जिन्हें अपने पर गर्व था तो यह उनके मकान (खाली पड़े) हैं उनके बाद वे थोड़े दिनों ही आबाद रह सके और वारिस तो हम ही हैं (58) और आपका पालनहार बस्तियों को उस समय तक विनष्ट (हलाक) नहीं करता जब तक उनके केन्द्रीय स्थान में पैग़म्बर नहीं भेज देता जो हमारी आयतें उनको पढ़ कर सुनाएं और हम बस्तियों को जब ही हलाक करते हैं जब वहाँ के रहने वाले अत्याचारी हों[5] (59)

(1) यानी हमारी वह्य का क्रम पहले से चला आता है और कुरआन को हमने क्रमशः उतारा ताकि हर अवसर के अनुसार समय पर निर्देश दिये जा सकें और तुम्हें समझने और विचार करने का अवसर रहे (2) यह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और कुरआन की सच्चाई का एक और प्रमाण है कि जिन लोगों को पहले किताबें मिल चुकी हैं उनमें सत्य को चाहने वाले ईमान ले आते हैं और उन्होंने इसको माना है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शुभ समाचार पिछली किताबों में मौजूद है और वे पहले ही से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मानते थे, आगे उनके बारे में कहा जा रहा है कि उनको सब्र और अडिगता के कारण दोहरा बदला मिलेगा, पहले भी सही धर्म पर अडिग रहे फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पैगम्बरी मिली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी ईमान लाए (3) अबू तालिब मुसलमानों के शुभचिन्तक थे, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहुत चाहा कि कलिमा पढ़ लें लेकिन नसीब में नहीं था (4) मुश्रिक कहने लगे कि हम मुसलमान हुए तो सारा अरब हमारा दुश्मन हो जाएगा, इसका उत्तर यह दिया जा रहा है कि तुम हरम के पड़ोस में हो, शिर्क व कुफ़्र के बावजूद तुम्हें शरण मिली तो ईमान व तक़्वा अपनाने के बाद शरण न मिलेगी, फिर आगे सावधान कर दिया कि अरब की दुश्मनी से क्या डरते हो अल्लाह के अज़ाब से डरो, देखते नहीं कि कितने न मानने वालों का क्या अंजाम हुआ (5) काफ़िर कहा करते थे कि अल्लाह को हमारी शैली पसंद नहीं तो वह हमें हलाक क्यों नहीं कर डालता, इसका जवाब दिया जा रहा है कि अल्लाह पहले अपना कोई पैग़म्बर उनके केन्द्रीय स्थान पर भेजता है अगर वे उसकी बात मान लेते हैं तो सुरक्षित रहते हैं वरना उन्हें दण्ड दिया जाता है।

وَمَآ أُوتِيتُم مِّن شَىۡءٍ فَمَتَٰعُ ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَا وَزِينَتُهَاۚ وَمَا
عِندَ ٱللَّهِ خَيۡرٌ وَأَبۡقَىٰٓۚ أَفَلَا تَعۡقِلُونَ ٦٠ أَفَمَن وَعَدۡنَٰهُ وَعۡدًا
حَسَنًا فَهُوَ لَٰقِيهِ كَمَن مَّتَّعۡنَٰهُ مَتَٰعَ ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَا ثُمَّ هُوَ
يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ مِنَ ٱلۡمُحۡضَرِينَ ٦١ وَيَوۡمَ يُنَادِيهِمۡ فَيَقُولُ أَيۡنَ
شُرَكَآءِيَ ٱلَّذِينَ كُنتُمۡ تَزۡعُمُونَ ٦٢ قَالَ ٱلَّذِينَ حَقَّ عَلَيۡهِمُ
ٱلۡقَوۡلُ رَبَّنَا هَٰٓؤُلَآءِ ٱلَّذِينَ أَغۡوَيۡنَآ أَغۡوَيۡنَٰهُمۡ كَمَا غَوَيۡنَاۖ تَبَرَّأۡنَآ
إِلَيۡكَۖ مَا كَانُوٓاْ إِيَّانَا يَعۡبُدُونَ ٦٣ وَقِيلَ ٱدۡعُواْ شُرَكَآءَكُمۡ
فَدَعَوۡهُمۡ فَلَمۡ يَسۡتَجِيبُواْ لَهُمۡ وَرَأَوُاْ ٱلۡعَذَابَۚ لَوۡ أَنَّهُمۡ
كَانُواْ يَهۡتَدُونَ ٦٤ وَيَوۡمَ يُنَادِيهِمۡ فَيَقُولُ مَاذَآ أَجَبۡتُمُ
ٱلۡمُرۡسَلِينَ ٦٥ فَعَمِيَتۡ عَلَيۡهِمُ ٱلۡأَنۢبَآءُ يَوۡمَئِذٖ فَهُمۡ لَا
يَتَسَآءَلُونَ ٦٦ فَأَمَّا مَن تَابَ وَءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحٗا فَعَسَىٰٓ أَن
يَكُونَ مِنَ ٱلۡمُفۡلِحِينَ ٦٧ وَرَبُّكَ يَخۡلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخۡتَارُۗ مَا
كَانَ لَهُمُ ٱلۡخِيَرَةُۚ سُبۡحَٰنَ ٱللَّهِ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشۡرِكُونَ ٦٨ وَرَبُّكَ يَعۡلَمُ
مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمۡ وَمَا يُعۡلِنُونَ ٦٩ وَهُوَ ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَۖ لَهُ
ٱلۡحَمۡدُ فِي ٱلۡأُولَىٰ وَٱلۡأٓخِرَةِۖ وَلَهُ ٱلۡحُكۡمُ وَإِلَيۡهِ تُرۡجَعُونَ ٧٠

और तुम्हें जो कुछ भी दिया गया है वह सांसारिक जीवन की सामग्री और उसकी शोभा है और जो अल्लाह के पास है वह कहीं अधिक उत्तम है और बाक़ी रहने वाला है तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते (60) भला हमने जिससे अच्छा वादा कर रखा हो फिर वह उसको प्राप्त करने वाला हो वह उसके समान हो सकता है जिसको हमने दुनिया के जीवन की कुछ सामग्री दे रखी है फिर क़यामत के दिन वह उन लोगों में होगा जो गिरफ़्तार करके लाए जाएंगे[1]? (61) और जिस दिन वह (अल्लाह) उनको पुकार कर कहेगा कि कहाँ हैं मेरे वे साझीदार जिनका तुम दावा किया करते थे (62) बात जिनके सिर थुप चुकी होगी वे बोलेंगे ऐ हमारे पालनहार! यही है जिनको हमने बहकाया, जैसे हम बहके वैसे ही उनको बहकाया, हम तेरे सामने दस्तबर्दार (विरक्त) होते हैं, यह हमें पूजते नहीं[2] (63) थे और कहा जाएगा कि जिनको तुम साझी ठहराते थे उनको बुलाओ फिर वे उनको पुकारें तो वे उनको कोई जवाब न देंगे और अज़ाब को देख लेंगे, काश वे रास्ते पर आ गए होते (64) और जिस दिन वह उनको आवाज़ देकर पूछेगा कि तुमने पैगम्बरों को क्या जवाब दिया (65) तो उस दिन बातें उनको सुझाई न देंगी तो वे एक दूसरे से पूछ न सकेंगे (66) फिर जिसने तौबा कर ली और वह ईमान ले आया और उसने अच्छे काम किये तो आशा है कि वह सफलता प्राप्त करने वालों में होगा (67) और आपका पालनहार जो चाहता है पैदा करता है और (जिसे चाहता है) चुन लेता है खुद उनको अधिकार नहीं होता, अल्लाह इससे पवित्र है और बहुत बुलंद है जिसको वे साझी ठहराते हैं[3] (68) और उनका पालनहार हर चीज़ को जानता है जिसको सीनों में छिपाते हैं और जिसको वे प्रकट करते हैं (69) वही अल्लाह है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, दुनिया व आख़िरत में असल प्रशंसा उसी के लिए है और आदेश भी उसी का चलता है और उसी की ओर तुम्हें लौट कर जाना है (70)

---

(1) दुनिया में काफ़िर और मुश्रिक कितना ही आगे बढ़ जाएं मगर यह सब यहीं धरा रह जाएगा, उन उच्चकोटी के ईमान वालों से उनका क्या जोड़ जो आख़िरत के अनंत जीवन में आनंद लेंगे (2) ऐसा लगता है इसका अर्थ शैतान है जिनको काफिरों ने पूज्य बना रखा था, वे आखिरत में इन पूजकों से अलग हो जाएंगे (3) काफ़िर व मुश्रिक कहा करते थे कि पैग़म्बर का चुनना ही था तो किसी धनी सम्मानित व्यक्ति का चुनाव होता, इसी का जवाब दिया जा रहा है कि अल्लाह जिसको चाहता है चुनता है, इसमें किसी दूसरे को कोई अधिकार नहीं।

पूछिए तुम्हारा क्या विचार है अगर अल्लाह तुम्हारे ऊपर हमेशा के लिए क़यामत तक रात ही मुसल्लत कर देता तो अल्लाह के सिवा कौन उपास्य है जो तुम्हारे लिए (दिन की) रौशनी ला सकता है तो तुम सुनते नहीं (71) (इसी तरह) पूछिए तुम्हारा क्या विचार है अगर अल्लाह तुम्हारे ऊपर हमेशा के लिए क़यामत तक दिन ही मुसल्लत कर देता तो अल्लाह के सिवा कौन पूज्य है जो तुम्हारे लिए रात ला सकता जिसमें तुम आराम पाते, क्या तुम देखते नहीं (72) और यह उसकी दया है कि उसने तुम्हारे लिए रात व दिन (दोनों) बनाए ताकि उसमें तुम सुकून भी प्राप्त करो और उसकी कृपा (फ़ज़्ल) को भी तलाश कर सको और ताकि तुम एहसान मानो (73) और जिस दिन वह आवाज़ देगा कि मेरे वे साझीदार कहाँ हैं जिनका तुम्हें दावा था (74) और हम हर उम्मत (समुदाय) में से गवाह लेकर आएंगे फिर कहेंगे अपना प्रमाण ले आओ तो वे जान लेंगे कि सत्य अल्लाह के साथ है और जो कुछ वे गढ़ा करते थे वह सब उनसे हवा हो जाएगा (75) निश्चित रूप से क़ारून मूसा की क़ौम में से था तो उसने उन पर सरकशी (उद्‌दण्डता) की और हमने उसको इतने ख़ज़ाने दे रखे थे कि उनकी कुंजियाँ बलवान पहलवानों को थका देती थीं, जब उसकी कौम ने उससे कहा कि इतराओ मत, अल्लाह इतराने वालों को पसंद नहीं करता (76) और तुम्हें अल्लाह ने जो दिया है उससे आख़िरत के घर की चाह में लगो और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूलो और जैसे अल्लाह ने तुम्हारे साथ भलाई की है तुम भी (दूसरों के साथ) भलाई करो और ज़मीन में बिगाड़ मत चाहो निश्चित रूप से अल्लाह फसादियों को पसंद नहीं करता[1] (77)

(1) क़ारून बनी इस्राईल का एक सदस्य था लेकिन कुछ रिवायतों से मालूम होता है कि वह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का चचेरा भाई भी था, शुरु में फ़िरऔन ने उसको अपना पेशकार बनाया था तो उसने ख़ूब धन समेटा, हज़रत मूसा की पैग़म्बरी के बाद चूंकि वह बनी इस्राईल ही का एक सदस्य था, ऊपरी रूप से उसने भी हज़रत मूसा को पैग़म्बर मान लिया लेकिन भीतर ही भीतर घमण्ड में पड़ा रहा, अंततः अल्लाह ने उसको विनष्ट (हलाक) कर दिया।

قَالَ إِنَّمَآ أُوتِيتُهُۥ عَلَىٰ عِلْمٍ عِندِىٓ ۚ أَوَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ ٱللَّهَ قَدْ
أَهْلَكَ مِن قَبْلِهِۦ مِنَ ٱلْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ
جَمْعًا ۚ وَلَا يُسْـَٔلُ عَن ذُنُوبِهِمُ ٱلْمُجْرِمُونَ ﴿٧٨﴾ فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِۦ
فِى زِينَتِهِۦ ۖ قَالَ ٱلَّذِينَ يُرِيدُونَ ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا يَـٰلَيْتَ لَنَا
مِثْلَ مَآ أُوتِىَ قَـٰرُونُ إِنَّهُۥ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٧٩﴾ وَقَالَ ٱلَّذِينَ
أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ ٱللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ ءَامَنَ وَعَمِلَ صَـٰلِحًا ۚ
وَلَا يُلَقَّىٰهَآ إِلَّا ٱلصَّـٰبِرُونَ ﴿٨٠﴾ فَخَسَفْنَا بِهِۦ وَبِدَارِهِ ٱلْأَرْضَ فَمَا
كَانَ لَهُۥ مِن فِئَةٍ يَنصُرُونَهُۥ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَمَا كَانَ مِنَ
ٱلْمُنتَصِرِينَ ﴿٨١﴾ وَأَصْبَحَ ٱلَّذِينَ تَمَنَّوْا۟ مَكَانَهُۥ بِٱلْأَمْسِ يَقُولُونَ
وَيْكَأَنَّ ٱللَّهَ يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ وَيَقْدِرُ ۖ
لَوْلَآ أَن مَّنَّ ٱللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ۖ وَيْكَأَنَّهُۥ لَا يُفْلِحُ
ٱلْكَـٰفِرُونَ ﴿٨٢﴾ تِلْكَ ٱلدَّارُ ٱلْـَٔاخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا
يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِى ٱلْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۚ وَٱلْعَـٰقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٨٣﴾
مَن جَآءَ بِٱلْحَسَنَةِ فَلَهُۥ خَيْرٌ مِّنْهَا ۖ وَمَن جَآءَ بِٱلسَّيِّئَةِ فَلَا
يُجْزَى ٱلَّذِينَ عَمِلُوا۟ ٱلسَّيِّـَٔاتِ إِلَّا مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾

منزل ٥

वह बोला यह तो मेरे ज्ञान से मुझे मिला है, क्या उसे पता नहीं कि अल्लाह ने उससे पहले कितनी ऐसी क़ौमों को हलाक कर दिया जो उससे अधिक बलवान और अधिक धन वाली थीं और अपराधियों से उनके अपराध के विषय में पूछा न जाएगा[1] (78) तो वह अपनी सज–धज के साथ अपनी क़ौम के सामने निकला तो जो सांसारिक जीवन को चाहते थे वे कहने लगे काश कि हमें भी वह प्राप्त होता जो क़ारून को प्राप्त है बेशक वह तो बड़ा भाग्यशाली है (79) और जिनको ज्ञान प्राप्त था उन्होंने कहा तुम्हारा नाश हो, अल्लाह सवाब (पुण्य) ईमान लाने वालों और अच्छे काम करने वालों के लिए कहीं बेहतर है और यह चीज सब्र करने वालों ही को मिला करती है[2] (80) फिर हमने उसको उसके घर समेत धरती में धंसा दिया तो उसके लिए कोई गिरोह ऐसा नहीं हुआ जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी मदद करता और न वह ख़ुद अपना बचाव कर सका (81) और अब वे लोग जो कल उसके स्थान पर होने की कामना कर रहे थे कहने लगे कि बेशक अल्लाह अपने बंदों में जिसके लिए चाहता है रोज़ी बढ़ा देता है, और जिसके लिए चाहता है कम कर देता है, अगर अल्लाह ने हम पर एहसान न किया होता तो वह हमें भी धंसा देता, हो न हो इन्कार करने वाले सफल नहीं हो सकते[3] (82) यह आख़िरत का घर हमने उन लोगों के लिए तैयार किया है जो धरती में बड़ाई के इच्छुक होते हैं और न बिगाड़ के, और अंजाम परहेज़गारों ही के पक्ष में है(83) जो भी नेकी ले कर आएगा तो उसको उससे बेहतर (बदला) मिलेगा और जो बुराई लेकर आएगा तो बुराइयां करने वालों को वैसे ही सज़ा मिलेगी जैसे वे काम करते रहे हैं[4] (84)

(1) यानी अल्लाह तआला को अपराधियों की स्थिति का पूरा ज्ञान है उसको हालात जानने के लिए पूछने की आवश्यकता नहीं हाँ! प्रश्न–उत्तर उनका अपराध उन पर सिद्ध करने के लिए होगा (2) चीज़ से आशय वह बात भी हो सकती है जो आलिमों ने की यानी सब्र करने वालों के ही दिलों में ऐसी ज्ञानमयी बात डाल दी जाती है और इससे आशय पुण्य और जन्नत भी हो सकता है कि यह नेमतें सब्र करने वालों को ही प्राप्त होती हैं और सब्र एक पारिभाषिक शब्द है जिसका अर्थ यह है कि मनुष्य अपनी हर प्रकार की इच्छाओं पर नियंत्रण रख कर अल्लाह की आज्ञाकारिता पर अडिग रहे (3) यानी यह दुनिया की चमक दमक सब कुछ नहीं यह तो बड़ी परीक्षा सिद्ध हुई जिसमें क़ारून असफल हो गया, अल्लाह तआला जिसको चाहता है दुनिया देकर आज़माता है और जिसको चाहता है तंगी में रख कर परीक्षा लेता है, सब अल्लाह की ओर से है (4) यानी पुण्य का बदला कम से कम दस गुणा मिलेगा और बुराई का पाप उतना ही मिलेगा जितनी बुराई की गई।

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ ۚ
قُل رَّبِّي أَعْلَمُ مَن جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ
مُّبِينٍ ﴿٨٥﴾ وَمَا كُنتَ تَرْجُو أَن يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ
إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾
وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أُنزِلَتْ إِلَيْكَ ۖ
وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۖ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٨٧﴾ وَلَا تَدْعُ
مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۘ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا
وَجْهَهُ ۚ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٨﴾

سُورَةُ الْعَنكَبُوتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعٌ وَسِتُّونَ آيَةً وَسَبْعُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
الم ﴿١﴾ أَحَسِبَ النَّاسُ أَن يُتْرَكُوا أَن يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا
يُفْتَنُونَ ﴿٢﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ
الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ ﴿٣﴾ أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ
يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَن يَسْبِقُونَا ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٤﴾ مَن كَانَ
يَرْجُو لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ لَآتٍ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٥﴾

منزل ٥

ثلاثة ارباع الجزء ٥ وقف لازم

बेशक जिसने आप पर कुरआन का आदेश भेजा वह ज़रूर आपको पहली जगह दोबारा लाकर रहेगा, कह दीजिए मेरा पालनहार उसको भी खूब जानता है जो हिदायत को लेकर आया है और उसको भी जो खुली हुई गुमराही में है[1] (85) आपको उम्मीद भी न थी कि आपको किताब मिलेगी, यह केवल आपके पालनहार की कृपा है तो आप हरगिज़ काफ़िरों के मददगार न हों (86) और वे हरगिज़ आपको अल्लाह की आयतों से न रोकें जबकि वे आप पर उतर चुकीं हैं और आप अपने पालनहार की ओर बुलाते रहें और हरगिज़ मुश्रिकों के साथ न हों[2] (87) और अल्लाह के साथ किसी उपास्य को न पुकारें, उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, उसके सिवा हर चीज़ नाश हो जाने वाली है आदेश उसी का चलता है और उसी की ओर तुम सबको लौट कर जाना है[3] (88)

सूरह अनकबूत

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अलिफ़ लाम मीम (1) क्या लोगों ने यह समझा है कि वे इतना कह कर छूट जाएंगे कि हम ईमान लाए हैं, और उनको आज़माया नहीं जाएगा (2) और हम उनसे पहले वालों को भी आज़मा चुके हैं तो अल्लाह पूरी तरह जान कर रहेगा कि उनमें कौन लोग सच्चे हैं और वे निश्चित रूप से झूठों को भी जान कर रहेगा[4] (3) क्या बुराइयां करने वाले समझते हैं कि वे हमसे बच कर निकल भागेंगे बड़ा ही बुरा फ़ैसला है जो वे कर रहे हैं[5] (4) जो अल्लाह से मिलने का आशावान है तो अल्लाह का निर्धारित समय तो आकर रहेगा और वह ख़ूब सुनता ख़ूब जानता है (5)

(1) यह आयत उस समय उतरी जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पवित्र मक्के से हिजरत करके मदीना जा रहे थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर काबे की जुदाई का बड़ा असर था, उस समय यह आयत उतरी कि एक दिन आप फिर पहली जगह आएंगे, आठ वर्षों के बाद यह वादा पूरा हुआ और आपने विजय प्राप्त कर पवित्र मक्का में प्रवेश किया (2) यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दीन (धर्म) के काम में क़ौम की रिआयत न करें बस उनको अपने पालनहार की ओर बुलाते रहिये और आयतें सुनाते रहिये, अल्लाह के आदेश पहुँचाने में किसी की रिआयत न कीजिये (3) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को संबोधित करके औरों को सुनाया जा रहा है (4) अल्लाह को सब मालूम है लेकिन वह हुज्जत (तर्क) पूरी करने के लिए परखता है (5) पहली दो आयतें मुसलमानों से संबंधित थीं जो काफिरों की यातनाओं में गिरफ़्तार थे और यह आयत उन काफिरों से संबंधित है जो मुसलमानों को सताते रहे थे कि वे मुसलमानों की सख़्तियों को देख कर संतुष्ट न रहें और यह न समझें कि वे हमसे बच कर निकल आएंगे, उनकी पकड़ जब होगी तो उसकी सख़्ती के आगे मुसलमानों की परेशानियाँ कोई हैसियत नहीं रखेंगी, आगे ईमान वालों को संतुष्ट किया जा रहा है कि उनको अल्लाह तआला से मिलने की उम्मीद है और वह समय आने ही वाला है, वहां उनके लिए राहत ही राहत है।

وَمَنْ جٰهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ؗ وَلَيُسْئَلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝

منزل ۵

और जो मेहनत करता है वह अपने लिए मेहनत करता है निश्चित रूप से अल्लाह तआला तो सारे संसारों से बेनियाज़ (उसको किसी की आवश्यकता नहीं) है[1] (6) और जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये हम ज़रूर उनकी बुराइयों को दूर कर देंगे और जो वे करते हैं उसका बेहतरीन बदला उनको ज़रूर देंगे (7) और हमने इन्सानों को उसके माँ–बाप के साथ अच्छे व्यवहार करने का ताकीद के साथ आदेश दिया है और अगर वे तुम पर जोर डालें कि तुम मेरे साथ साझी ठहराओ जिस का तुम्हें कोई ज्ञान नहीं तो उनकी बात मत मानना, मेरी ही ओर तुम सबको लौट कर आना है फिर मैं बता दूंगा जो तुम किया करते थे[2] (8) और जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो उनको हम नेक लोगों में दाख़िल कर देंगे (9) और लोगों में कुछ वे हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह पर ईमान लाए फिर जब उनको अल्लाह के लिए सताया जाता है तो वे लोगों के सताने को अल्लाह के अज़ाब की तरह घोषित कर देते हैं और अगर आपके पालनहार की मदद आ गई तो निश्चित रूप से यही कहेंगे कि हम तुम्हारे ही साथ तो थे, क्या अल्लाह को पता नहीं जो कुछ दुनिया जहान के सीनों में है[3] (10) निश्चित रूप से अल्लाह ईमान वालों को भी अच्छी तरह जान कर रहेगा और मुनाफिकों को भी अच्छी तरह जान कर रहेगा (11) और काफिरों ने ईमान वालों से कहा कि हमारे रास्ते पर चलो और तुम्हारे पापों का बोझ तो हम उठा लेंगे जब कि वे उनके पापों का बोझ ज़रा भी उठाने वाले नहीं हैं, निश्चित रूप से वे तो झूठे हैं (12) हाँ अपना बोझ और अपने बोझ के साथ और भी कितने बोझ वे ज़रूर ढोएंगे और जो झूठ गढ़ा करते करते थे उसके बारे में क़यामत के दिन उनसे ज़रूर पूछताछ होगी[4] (13)

(1) यानी अल्लाह को किसी की आज्ञापालन व इबादत से क्या लाभ, और पाप से क्या नुकसान, हाँ! बन्दा जितनी मेहनत करेगा उसका फल दुनिया व आख़िरत में खाएगा (2) पवित्र मक्का में मुसलमान होने वालों को उनके माँ–बाप ज़बर्दस्ती शिर्क पर आमादा करते थे और कहते थे कि इस्लाम में माँ–बाप की बात मानने का आदेश है हमारी बात मानना तुम्हारे लिए अनिवार्य है, इस पर यह सैद्धान्तिक निर्देश दिये गये कि जहाँ तक संभव हो माँ–बाप के साथ सद्व्यवहार किया जाता रहे लेकिन अगर वे शिर्क और अल्लाह की नाफरमानी की बात कहें तो उनकी बात मानना अपने आपको बर्बाद व विनष्ट (हलाक) करना है (3) यह कुछ ऐसे कमज़ोर लोगों का वर्णन है कि जब उनको सताया गया तो उन्होंने उसको बहुत सख़्त समझा तो मुश्रिकों से मिल गये और मुसलमानों से मुनाफिक़त (कपट) की फिर जब मुसलमानों को जीत मिलनी शुरु हुई तो आ–आ कर कहने लगे कि हम तो आपके साथ ही थे, आगे अल्लाह कहता है कि यह परीक्षा दूध का दूध और पानी का पानी कर देने के लिए हैं (4) यानी यहाँ बहुत डींगें मार रहे हैं कि हम तुम्हारा बोझ भी ढोएंगे मगर आख़िरत में वास्तविकता खुल जाएगी फिर वहां अपनी पथ भ्रष्टता की सज़ा भी भुगतेंगे और जिनकी पथ भ्रष्टता का वे साधन बने उसकी सज़ा भी उनको अतिरिक्त दी जाएगी।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ
إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ١٤
فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ١٥
وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ذَٰلِكُمْ
خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ١٦ إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ
دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا إِنَّ الَّذِينَ
تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا
عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ إِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ١٧ وَإِنْ تُكَذِّبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِنْ
قَبْلِكُمْ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ١٨
أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ
إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ١٩ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ
فَانْظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنْشِئُ
النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ٢٠
يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَشَاءُ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ٢١

منزل ٥

और हमने नूह को उनकी क़ौम के पास भेजा तो वे पचास छोड़ एक हज़ार वर्ष उनमें रहे फिर तूफ़ान ने उनको आ दबोचा और वे अत्याचारी लोग थे[1] (14) तो हमने उनको और नाव वालों को बचा लिया और उसको दुनिया जहान के लिए एक निशानी बना दिया (15) और इब्राहीम को (भेजा) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह की उपासना करो और उससे डरो, तुम्हारे लिए यही बेहतर है अगर तुम समझ रखते हो (16) अल्लाह को छोड़ कर तुम मूर्तियों को पूजते हो और झूठ गढ़ते हो निश्चित रूप से तुम जिनकी पूजा करते हो वे तुम्हारे लिए ज़रा भी रोज़ी के मालिक नहीं हैं बस रोज़ी को अल्लाह के पास तलाश करो और उसी की इबादत करो और उसी का अधिकार मानो, उसी की ओर तुम्हें लौटाया जाएगा[2] (17) और अगर तुम झुठलाते हो तो तुम से पहले भी कितनी क़ौमें झुठला चुकी हैं और पैग़म्बर का काम तो साफ़ साफ़ पहुंचा देना है(18) भला इन्होंने देखा नहीं कि अल्लाह सृष्टि को शुरू में किस प्रकार पैदा करता है वह फिर दोबारा पैदा कर देगा निश्चित रूप से अल्लाह के लिए यह सरल है (19) कहिए कि ज़मीन में चल फिर कर देखो, उसने शुरू में सृष्टि को किस प्रकार पैदा किया फिर अल्लाह ही वह दूसरी उठान भी उठाएगा निश्चित रूप से अल्लाह को हर चीज़ पर पूरी सामर्थ्य प्राप्त है[3] (20) जिसको चाहे अज़ाब दे और जिस पर चाहे दया करे और उसी की ओर तुम को पलटना है (21)

(1) हज़रत अब्दुल्लाह पुत्र अब्बास रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम चालीस वर्ष की उम्र में पैग़म्बर बनाए गए, साढ़े नौ सौ वर्ष दावत (धर्म प्रचार) का काम करते रहे, फिर तूफ़ान के बाद साठ वर्ष और जीवित रहे (2) शाह अब्दुल क़ादिर साहब रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हैं कि अधिकतर सृष्टि रोज़ी के पीछे ईमान देती है, अतः जान लो कि अल्लाह के अतिरिक्त रोज़ी कोई नहीं देता, वही अपनी खुशी के अनुकूल देता है, अतः उसी के कृतज्ञ (शुक्रगुज़ार) बनो और उसी की इबादत करो (3) जब कुछ न होने के बावजूद उसने सब कुछ पैदा कर दिया तो अब मरने के बाद दोबारा पैदा करना क्या कठिन है।

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۡ وَمَا
لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۲۲﴾ وَالَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖٓ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِيْ
وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۳﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ
اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ
وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۡ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ
مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۵﴾ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّيْ مُهَاجِرٌ
اِلٰى رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۶﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ
وَيَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ
وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿۲۷﴾ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ
الْفَاحِشَةَ ۡ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۸﴾

منزل۵

और तुम न ज़मीन में (उसको) हरा सकते हो न आसमान में और न तुम्हारे लिए अल्लाह के अतिरिक्त कोई समर्थक है और न मददगार[1] (22) और जिन्होंने अल्लाह की आयतों और उसकी भेंट का इन्कार किया वही लोग मेरी दया से निराश हो चुके और उन्हीं लोगों के लिए दुखद अज़ाब है[2] (23) बस उनकी क़ौम का उत्तर केवल यह था कि उनको क़त्ल कर दो या जला दो तो अल्लाह ने उनको आग से बचा लिया इसमें निश्चित रूप से उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो मानते हैं (24) और उन्होंने कहा कि तुमने अल्लाह को छोड़ कर मूर्तियों को अपना रखा है केवल सांसारिक जीवन में आपस की मित्रता के लिए, फिर क़यामत के दिन तुम एक दूसरे का इनकार करोगे और एक दूसरे पर धिक्कार करोगे और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख होगा और तुम्हारा कोई मददगार न होगा[3] (25) तो लूत उन पर ईमान ले आए और उन्होंने कहा कि मैं अपने पालनहार के लिए हिजरत कर जाने वाला हूँ बेशक वह ज़बर्दस्त है हिकमत रखता है[4] (26) और हमने उनको (यानी इब्राहीम को) इसहाक़ और याकूब प्रदान किये और उनकी संतान में पैग़म्बरी और किताब को क़ायम रखा और दुनिया में हमने उनको उनका बदला दिया और आख़िरत में वे ज़रूर भले लोगों में हैं[5] (27) और लूत को (पैग़म्बर बनाया) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा निश्चित रूप से तुम ऐसी गंदी हरकत करते हो कि दुनिया जहान में तुम से पहले किसी ने न की (28)

(1) जिसको अल्लाह सज़ा देना चाहे वह कहीं भी जाकर बच नहीं सकता (2) जिन्होंने अल्लाह की बातों का इनकार किया और उससे मिलने की आशा नहीं रखी उन्हें अल्लाह की रहमत की आशा कैसे हो सकती है, अतः वे आख़िरत में भी निराश और वंचित ही रहेंगे, यह मानो "माकान यरजू लिका अल्लाहि फइन्न अजलल्लाहि ल आतिन" का प्रतिबिम्ब हुआ (3) इसका मतलब तो यह है कि राष्ट्रीय एकता व अखण्डता बनाए रखने के लिए तुमने यह मूर्ति पूजा अपना ली है और परस्पर संबंधों के लिए तुम इस पर क़ायम हो या संभव है कि इससे मूर्ति पूजकों को अपनी मूर्तियों से जो प्रेम है वह मतलब लिया गया हो जैसे दूसरे स्थान पर आया है "वे उनसे इस प्रकार प्रेम करते हैं जैसे अल्लाह से" यानी वे अपनी मूर्तियों से ऐसा प्रेम करते हैं जैसे अल्लाह से (4) हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के भतीजे थे बस मात्र वही ईमान लाए बाद में पैग़म्बर हुए (5) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के बाद सब पैग़म्बर उन्हीं की संतान में आते रहे, इसीलिए उनको "अबुल अंबिया" (पैग़म्बर के पितामह) भी कहा जाता है।

اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ وَتَاْتُوْنَ
فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ۭ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا
ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ رَبِّ
انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَلَمَّا جَاۗءَتْ رُسُلُنَآ
اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا اَهْلِ هٰذِهِ
الْقَرْيَةِ ۚ اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ اِنَّ فِيْهَا
لُوْطًا ۭ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗٓ
اِلَّا امْرَاَتَهٗ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَمَّآ اَنْ جَاۗءَتْ
رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْۗءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا
لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا
امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓي اَهْلِ
هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاۗءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٣٤﴾
وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِلٰى
مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ
ارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٣٦﴾

منزل٥

क्या तुम पुरूषों[1] (से इच्छा पूरी करने के लिए उन) के पास जाते हो और डाके डालते हो[2] और अपनी महफिल में घिनावनी हरकत करते हो बस उनकी क़ौम ने जवाब में केवल इतना कहा कि सच्चे हो तो अल्लाह का अज़ाब ले आओ (29) उन्होंने दुआ की ऐ मेरे पालनहार! फसादियों पर मेरी मदद कर (30) और जब हमारे संदेश वाहक इब्राहीम के पास शुभ समाचार ले कर आये तो उन्होंने कहा कि हम इस बस्ती वालों को हलाक करने वाले हैं निश्चित रूप से वहां के वासी बड़े पापी हो रहे हैं (31) वे बोले उसमें तो लूत भी हैं, उन्होंने कहा हम जानते हैं कि उसमें कौन है हम उनको और उनके घर वालों को ज़रूर बचा लेंगे सिवाय उनकी पत्नी के वह पीछे रह जाने वालों में है (32) और जब हमारे संदेश वाहक लूत के पास पहुँचे तो वे उनको देख कर परेशान हो गये और उनके कारण उन्होंने बहुत घुटन महसूस की, उन्होंने कहा कि आप न डरें न घबराएं हम आपको और आपके घर वालों को बचाने वाले हैं सिवाय आपकी पत्नी के वह पीछे रह जाने वालों में है[3] (33) हम आसमान से इस बस्ती वालों पर उनकी नाफ़रमानियों (अवज्ञाओं) के कारण अज़ाब (दण्ड) उतारने वाले हैं (34) और हमने उसकी कुछ खुली निशानी उन लोगों के लिए छोड़ दीं जो बुद्धि से काम लेते हैं[4] (35) और मदयन में हमने उनके भाई शुऐब को भेजा तो उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की उपासना (बंदगी) करो और आख़िरत के दिन की आशा रखो और धरती में बिगाड़ मचाते मत फिरो (36)

---

(1) लूत अ़लैहिस्सलाम की क़ौम का रोग समलैंगिकता था, यह उसी का वर्णन है (2) राह मारने से आशय डाका जनी भी हो सकती है, यह उनमें प्रचलित रही होगी इसके साथ कुकर्म से भी यात्रियों के राह मारते थे और इसका यह मतलब भी हो सकता है, प्राकृतिक रास्ते को छोड़ कर संतान न बढ़ाने का क्रम ख़त्म कर रहे थे, तो उसकी राह मार रहे थे (3) फरिश्ते सुंदर नव युवकों के रूप में पहुंचे थे, हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने पहचाना नहीं, इसलिए बहुत परेशान हुए कि क़ौम के लोग अपमान का कारण बनेंगे, फरिश्तों ने देख कर उनको तसल्ली दी कि आपको डरने की आवश्यकता नहीं हम तो इस दुराचारी क़ौम को तबाह करने आए हैं (4) उनकी उल्टी हुई बस्ती की कुछ निशानियाँ मक्के वालों को शाम (सीरिया) की यात्रा में दिखाई पड़ती हैं।

فَكَذَّبُوْهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ
جٰثِمِيْنَ ﴿٣٧﴾ وَعَادًا وَّثَمُوْدَا۟ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ
وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ
وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَلَقَدْ
جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوْا
سٰبِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ فَمِنْهُمْ مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ
حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَّنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا
بِهِ الْأَرْضَ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَغْرَقْنَا وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ
وَلٰكِنْ كَانُوْا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ أَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ اتَّخَذَتْ بَيْتًا وَ
إِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾
إِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ وَهُوَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ وَمَا
يَعْقِلُهَآ إِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضَ بِالْحَقِّ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾

وقف لازم

ع

منزل ٥

तो उन्होंने उनको झुठलाया दिया बस भूकंप ने उनको आ पकड़ा तो वे अपने घरों मे औंधे पड़े रह गए (37) और आद व समूद को भी (हमने हलाक किया) और उनके मकानों से तुम पर वह चीज़ प्रकट हो चुकी है[1] और शैतान ने उनके कामों को उनकी दृष्टि में सुन्दर बना कर उनको सही रास्ते से रोक दिया और वे देखते भालते लोग थे[2] (38) और क़ारून व फ़िरऔन और हामान (को भी हमने विनष्ट किया) और मूसा उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए तो उन्होंने ज़मीन में घमण्ड किया और वे जीत न सके (39) तो सब को ही हमने उनके पापों के बदले में पकड़ा तो कुछ पर कंकरी युक्त आंधी भेज दी और कुछ को चिंघाड़ ने आ दबोचा और कुछ को हमने ज़मीन में धंसा दिया और कुछ को डुबो दिया और अल्लाह उन पर हरगिज़ अत्याचार नहीं करता लेकिन वे खुद अपने ऊपर अत्याचार करते रहे थे[3] (40) जो लोग अल्लाह को छोड़कर मित्र बनाते हैं उनका उदाहरण मकड़ी का है जो घर बनाए और घरों में सबसे कमज़ोर मकड़ी ही का घर है काश कि वे जानते[4] (41) अल्लाह को छोड़कर वे जिस चीज़ को भी पुकारते हैं अल्लाह उसको ख़ूब जानता है और वह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हिकमत (युक्ति) वाला है (42) और यह उदाहरण हैं जो हम लोगों के लिए दे रहे हैं और उनको जानने वाले ही समझते (43) अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को ठीक ठीक पैदा किया निश्चित रूप से इसमें ईमान वालों के लिए बड़ी निशानी है (44)

(1) यानी इन बस्तियों के खण्डहर तुम देखते रहते हो, इनसे शिक्षा प्राप्त करो (2) यानी दुनिया के काम की समझ–बूझ रखते थे और अपनी दृष्टि में बुद्धिमान थे लेकिन शैतान के बहकावे से न बच सके (3) पत्थरों की वर्षा लूत अ़लैहिस्सलाम की क़ौम पर हुई, तीव्र आंधी आद क़ौम पर आई, चिंघाड़ से समूद क़ौम तबाह हुई, कारून को ज़मीन में धंसा दिया गया और नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम डुबो दी गई, इसी प्रकार फ़िरऔन और उसकी सेना को डुबो दिया गया (4) काश उनको यह मालूम होता कि जिन झूठे खुदाओं पर वे भरोसा किये हुए हैं वे मकड़ी के जाले से अधिक कमज़ोर हैं और उन्हें कोई फ़ायदा न पहुंचा सकते।

और जो किताब आप पर वह्य के द्वारा उतारी गई है उसको पढ़ते रहें ओर नमाज़ को क़ायम रखें बेशक नमाज़ अश्लीलता और बुराई से रोकती है[1] और अल्लाह को याद करना तो सबसे बड़ी चीज़ है और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह वह सब जानता है (45) और किताब वालों से अच्छे तरीके पर ही बहस करो उनमें जालिमों के अतिरिक्त[2] और कह दो कि हमारे लिए जो उतरा है हमने उसको भी माना और जो तुम्हारे लिए उतरा उसको भी, और हमारा ख़ुदा और तुम्हारा ख़ुदा एक ही है और हम उसके आज्ञाकारी हैं[3] (46) और इसी तरह हमने आप पर किताब उतारी है तो हमने जिनको किताब दी है वे उसको मानते हैं और कुछ लोग इन (मूर्तिपूजकों) में भी हैं जो मानते हैं और हमारी आयतों का इनकार वही लोग करते हैं जो काफिर हैं[4] (47) और आप इससे पहले न कोई किताब पढ़ते थे और न अपने हाथ से लिखते थे वरना असत्यवादी संदेह में पड़ ही जाते[5] (48) बल्कि वे खुली आयतें हैं जो ईमान वालों के सीनों में हैं और हमारी आयतों का इनकार ज़ालिम ही करते हैं[6] (49) और वे कहते हैं कि उनके पास उनके पालनहार की ओर से निशानियाँ क्यों न आयीं? कह दीजिए कि निशानियां तो अल्लाह ही के अधिकार में हैं और मैं तो साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ (50) क्या यह उनके लिए काफ़ी नहीं है कि हमने आप पर किताब उतारी है जो उनको सुनाई जाती है निस्संदेह उसमें मानने वालों के लिए दया (रहमत) और नसीहत (उपदेश) है[7] (51) कह दीजिए कि हमारे तुम्हारे बीच गवाही के लिए काफ़ी है वह आकाशों और धरती में जो कुछ है उससे अवगत है और जिन्होंने असत्य को माना और अल्लाह का इनकार किया वही लोग घाटा उठाने वाले हैं(52)

(1) नमाज़ में अल्लाह ने यह असर रखा है कि शर्तों व शिष्टता (आदाब) के साथ तथा विनम्रता और ध्यान लगा कर पढ़ी जाए, फिर उसमें कुरआन पाठ और दुआएं और अपनी दासता को प्रकट करने की मांग भी यही है कि मस्जिद के बाहर भी आदमी सच्चा बंदा बन कर रहे, आगे अल्लाह को याद करने के महत्व का बयान है और दूसरी जगह "नमाज़ मुझे याद करने के लिए कायम करो" कह कर अल्लाह के याद करने के महत्व को और और भी स्पष्ट कर दिया गया है, नमाज़ में जो अल्लाह को याद करते हैं वह सबसे अच्छा है (2) अर्थात मुश्रिकों का धर्म सर्वथा गलत है और अहले किताब (किताब वालों) का धर्म वास्तव में सच्चा था, उन्होंने बाद में बिगाड़ा तो उनसे बहस करने में सावधानी बरतो और नरमी से बात करो, हां! उनमें जो अन्याय और हठधर्मी पर उतारू हो जाएं तो उसके साथ उचित कठोरता का बर्ताव कर सकते हो (3) यह तरीक़ा धर्म प्रचार की युक्ति (हिकमते दावत) का है कि संयुक्त बातों का वर्णन करो कि हमारा तुम्हारा उपास्य (माबूद) भी एक है जो किताबें तुम्हारे लिए उतरीं हम उन पर ईमान रखते हैं हाँ! तुमने उनमें परिवर्तन कर दिये और पैग़म्बरों को ख़ुदा का मुकाम दे दिया, यह विरोध की बात है वरना हमारा मूल एक ही था (4) जिन किताब वालों ने अपनी किताब को ठीक–ठीक समझा है वे न्याय प्रिय हैं, वे इस किताब को मान रहे हैं और दूसरी वास्तविकता पर विचार करने वाले मुश्रिक भी मान रहे हैं (5) यह किताब तो ऐसी है कि हज़ारों चैलेंज़ों के बावजूद बड़े–बड़े ज़बान के महारथी एक आयत प्रस्तुत न कर सके और इसका बड़ा मोअजिज़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर इसका अवतरित होना है, आपकी पवित्र आयु के चालीस वर्ष मक्का वालों के साथ बीते वे सब जानते थे कि आप न पढ़ना जानते थे और न लिखना, अगर ऐसा होता तो असत्यवादियों को संदेह उत्पन्न करने का अवसर मिलता किन्तु जबकि आपका उम्मी (अनपढ़) होना सर्वमान्य है तो इस संदेह की भी जड़ कट गई (6) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के भी दिल पर उतरी और लाखों लोग उस समय से आज तक अपने ⇒

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۚ وَلَوْلَآ أَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ
وَلَيَأْتِيَنَّهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٣﴾ يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۚ وَ
إِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٥٤﴾ يَوْمَ يَغْشَاهُمُ الْعَذَابُ مِن
فَوْقِهِمْ وَمِن تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٥﴾
يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ أَرْضِي وَاسِعَةٌ فَإِيَّايَ فَاعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾
كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۖ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُم مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي مِن
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ نِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿٥٨﴾ الَّذِينَ
صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٥٩﴾ وَكَأَيِّن مِّن دَابَّةٍ لَّا تَحْمِلُ
رِزْقَهَا اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٠﴾ وَلَئِن
سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٦١﴾ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ
مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٢﴾ وَلَئِن
سَأَلْتَهُم مَّن نَّزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ
مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٣﴾

ع

منزل٥

और वे आप से अजाब (दण्ड) की जल्दी मचाते हैं और अगर उसका पहले से निर्धारित समय न होता तो उन पर अज़ाब (दण्ड) आ ही जाता और निश्चित ही वह उन पर अचानक आ पहुँचेगा और वे समझ भी न पाएंगे (53) वे आपसे अजाब की जल्दी मचाते हैं जब कि दोज़ख़ काफ़िरों को घेरती जा रही है (54) जिस दिन अजाब उनको ऊपर से और पैरों के नीचे से घेर लेगा और कहा जाएगा कि जो तुम किया करते थे उसका मज़ा चखो (55) ऐ मेरे वे बंदो! जो ईमान लाए हो, निश्चित ही मेरी धरती चौड़ी है तो बस मेरी ही इबादत करो[1] (56) हर जीवधारी को मौत का स्वाद चखना है फिर हमारी ही ओर तुम लौटाए जाओगे (57) और जो ईमान लाए और उन्होंने भले काम किए उनको हम जन्नत की ऊपरी मंजिलों के कक्षों (बालाखानों) में जगह देंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी उसी में हमेशा रह पड़ेंगे, काम करने वालों के लिए क्या ही खूब बदला है (58) जिन्होंने धैर्य रखा और अपने पालनहार पर भरोसा करते रहे (59) और कितने जानवर हैं जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते अल्लाह ही उनको और तुमको भी रोज़ी पहुंचाता है और वह खूब सुनता और खूब जानता है[2] (60) और अगर आप उनसे पूछें कि किसने आकाशों और धरती को पैदा किया और सूरज और चाँद काम पर लगा दिये तो वे निश्चित ही यही कहेंगे कि अल्लाह ने तो फिर वे कहाँ से उलटे पाँव फिरे जाते हैं[3] (61) अल्लाह अपने बंदों में जिसके लिए चाहता है रोज़ी खोल देता है और जिसके लिए चाहता है कम कर देता है, निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ से भली–भांति अवगत है (62) और अगर आप उनसे पूछें कि किसने आकाश से पानी बरसाया फिर उसने धरती में उसके बंजर हो जाने के बाद जान डाल दी तो वे निश्चित ही यही कहेंगे कि अल्लाह (ने) कह दीजिए कि असल प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है किन्तु उनमें अधिकांश बुद्धि से काम नहीं लेते (63)

⟹ सीने में सुरक्षित रखते हुए चले आ रहे हैं और लिखित रूप में इसके अतिरिक्त है (7) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अनेक मुअजिज़े अल्लाह की आज्ञा से दिखाए किन्तु उनकी मांग निरंतर नये मोअजिज़े की थी कहा जा रहा है कि मोअजिज़ा तो अल्लाह के अधिकार में है और सबसे बड़ा मोअ़जिज़ा (इलाही चमत्कार) यह कुरआन है जो तुम्हें सुनाया जा रहा है।

(1) जब सहाबा पर अत्याचार के पहाड़ तोड़े गये और धर्म पर चलना उनके लिए बहुत कठिन बना दिया गया तो यह अनुमति दी गई कि वे ऐसे क्षेत्रों में हिजरत (प्रवास) करके चले जाएं जहाँ धर्म पर चलना सम्भव हो, आगे सांत्वना के शब्द भी हैं कि यदि तुम्हारे लिए संबंधियों से जुदाई दुखद हो रही हो तो मौत को याद करो, दुनिया में जुदाई एक दिन होनी ही है फिर सब अल्लाह के सामने एकत्र किये जाओगे (2) अगर तुम हिज़रत (प्रवास) से अपनी आर्थिक परेशानी को लेकर डर रहे हो तो सोचो कि रोज़ी अल्लाह ने हर एक की अपने ज़िम्मे ली है, कोई अपनी रोज़ी के लिए नहीं फिरता, जो जहाँ रहेगा मेहनत करेगा और अल्लाह तआला उसको सम्मानित करेंगे (3) इस स्वीकृति की मांग थी की ईमान लाते किन्तु उलटे पाँव फिरे जाते हैं और ईमान लाने से डरते हैं कि फिर हमारे लिए भी आर्थिक साधनों को कम कर दिया जाएगा, इसीलिए अल्लाह तआला आगे कहता है कि रोज़ी सब हमारे हाथ में है, हम जिसको चाहते हैं देते हैं और इसकी युक्तियों (हिकमतों) से हम ही अवगत हैं, फिर आगे इसका प्रमाण भी दिया जा रहा है कि बंजर ज़मीन किस प्रकार खेती के योग्य होती है और कौन पानी बरसाता है, इसका उत्तर लगभग सबके यहाँ यही है कि "अल्लाह" फिर इस प्रमाण के बावजूद वे बुद्धि का प्रयोग क्यों नहीं करते?

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ؕ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ
لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۶۴﴾ فَاِذَا رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا
اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ
يُشْرِكُوْنَ ﴿۶۵﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚۙ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ
يَعْلَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ
مِنْ حَوْلِهِمْ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ ﴿۶۷﴾
وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ
لَمَّا جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿۶۸﴾ وَالَّذِيْنَ
جٰهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۶۹﴾

سُوْرَةُ الرُّوْمِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتُّوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الٓمّٓ ﴿۱﴾ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿۲﴾ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ
غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ﴿۳﴾ فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ؕ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ
قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ؕ وَيَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۴﴾
بِنَصْرِ اللّٰهِ ؕ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۵﴾

وقف لازم

منزل ٥

और यह दुनिया का जीवन तो खेल–कूद है और निःसंदेह आखिरत का घर ही असल जीने (का स्थान) है, काश कि वे जान लेते (64) जब वे नाव पर सवार होते हैं तो विश्वास को अल्लाह के लिए विशुद्ध करके उसी को पुकारते हैं फिर जब वह उनको थल (खुश्की) में सुरक्षित पहुंचा देती है तो वे शिर्क करने लगते हैं[1] (65) जो हमने उनको प्रदान किया है उसका खूब इनकार कर लें और खूब मजे उड़ा लें आगे उनको पता चल जाएगा (66) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने (उनके शहर को) शान्तिमय हरम बनाया है, और उनके आसपास के लोग उचके जा रहे हैं फिर क्या वे असत्य को मानते हैं और अल्लाह की नेमत (उपकार) का इनकार करते हैं (67) तो उससे बढ़ कर अन्याय करने वाला कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या सत्य को अपने पास आने के बाद झुठलाए, क्या दोज़ख़ में इनकार करने वालों का ठिकाना नहीं है[2] (68) और जो भी हमारे लिए मेहनत करेगा तो हम ज़रूर उसके लिए अपने रास्ते खोल देंगे और निःसंदेह अल्लाह बेहतर काम करने वालों ही के साथ है (69)

सूरह रूम

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अलिफ़ लाम मीम (1) रूमी पराजित हो गये (2) निकटवर्ती धरती[3] में और वे पराजित हो जाने के बाद भी जल्दी ही विजय प्राप्त कर लेंगे[4] (3) कुछ ही वर्षों में, बागडोर सब अल्लाह ही के हाथ में है पहले भी और बाद में भी और उस दिन ईमान वाले खुशियाँ मनाएंगे (4) अल्लाह की मदद से, वह जिसकी चाहता है मदद करता है और वह ज़बर्दस्त भी है और बड़ा मेहरबान भी (5)

(1) मक्का के मुश्रिक भी एक अल्लाह को मानते थे और कठोर विपदा में उसी को पुकारते थे, किन्तु जब विपदा समाप्त हो जाती थी तो पूजा (इबादत) में दूसरों को भी शामिल करते थे यह कितना बड़ा अन्याय था कि अल्लाह की दी हुई नेमतों से लाभ उठा रहे हैं और दूसरे के आगे माथा टेक रहे हैं, अल्लाह कहता है कि आगे उनको जब पता चल जाएगा (2) जब उनसे ईमान की बात की जाती तो कहते कि सारा अरब जो हमारा आदर करता है वह हमारा दुश्मन हो जाएगा, इसी का एक उत्तर है कि अल्लाह ने उनको एक शान्तिमय शहर में बसाया है कि वहां मार काट व लूट की हिम्मत करने को कोई सोचता भी नहीं, जब कि दूसरे शहरों में दिन–दहाड़े मारकाट व लूट होती रहती है, तो जिस अल्लाह ने हरम को यह पवित्रता दी और फिर तुम्हें शिर्क के बावजूद वहां बसाए रखा, क्या वह ईमान के बाद तुम्हारी रक्षा नहीं करेगा, फिर एक सैद्धान्तिक बात शुभ समाचार के रूप में बता दी कि जो भी अल्लाह के लिए मेहनत करेगा अल्लाह तआला उसके लिए रास्ते खोलते चले जाएंगे, यहाँ तक कि वह अपनी मंजिल तक पहुंच जाएगा (3) क़रीबी ज़मीन से तात्पर्य शाम व फ़िलिस्तीन का क्षेत्र है जो रूमी साम्राज्य में मक्का से निकट थे, अदना अलअर्ज़ ढलान वाली जगहों को भी कहते हैं, शाम (सीरिया) व फ़िलिस्तीन की यह जगह मक्का मुकर्रमा के मुक़ाबले में ढलान में भी है इसलिए भी इसको अदना अलअर्ज़ कहा गया है (4) इस आयत की ऐतिहासिक पृष्ठि भूमि यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रसूल बनाए जाने के समय दुनिया में दो बड़ी सरकारें थी जिनमें घोर युद्ध चल रहा था, रोम और ईरान, रूमी ईसाई थे और ईरानी आग के पूजक थे, मक्के के मुश्रिकों को ईरान से सहानुभूति थी और संयोग वश इन दिनों में ईरान ने रूम के बड़े शहरों पर कब्ज़ा कर लिया था यहां तक कि बैतुलमुक़द्दस पर भी उसका कब्जा हो गया था, रूमी निरंतर पराजित होते जा रहे थे इस पर मुश्रिक मुसलमानों का भी मज़ाक उड़ाते थे कि देखो जिन पर किताब उतरी वे किस प्रकार अपमानित हो रहे हैं खुद मुसलमान उस समय इतनी कमज़ोर स्थिति में थे कि

⇒

وَعْدَ اللّٰهِ ۭ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَعْلَمُوْنَ ۝٦ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ښ وَهُمْ عَنِ
الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ۝٧ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۣ مَا خَلَقَ اللّٰهُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ وَ
اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَاۗئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ۝٨ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا
فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ
كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ
مِمَّا عَمَرُوْهَا وَجَاۗءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۭ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ
وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝٩ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ
اَسَاۗءُوا السُّوْۗآٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٠
اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝١١ وَيَوْمَ
تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝١٢ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ
مِّنْ شُرَكَاۗىِٕهِمْ شُفَعٰۗؤُا وَكَانُوْا بِشُرَكَاۗىِٕهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝١٣
وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ۝١٤ فَاَمَّا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ۝١٥

ع

منزل٥

अल्लाह का वादा है, अल्लाह अपने वादे के विरूद्ध नहीं करता किन्तु अधिकांश लोग नहीं जानते हैं (6) वे सांसारिक जीवन के ऊपर को जानते हैं और आखिरत (परलोक) से वे बिल्कुल ग़ाफिल (असावधान) हैं (7) भला वे मन में विचार नहीं करते कि अल्लाह ने आकाशों और धरती को और उनके बीच में जो भी है उसको ठीक–ठीक और निर्धारित समय के साथ ही पैदा किया है, फिर भी लोगों में अधिकांश अपने पालनहार से भेंट का इनकार करने वाले हैं (8) क्या वे धरती में चल फिर कर देखते नहीं कि उनसे पहले वालों का क्या अंजाम हुआ, वे इनसे अधिक बलवान थे उन्होंने धरती (रहन सहन और खेती बाड़ी) को योग्य बनाया था और इसको उससे अधिक आबाद किया था जितना इन्होंने आबाद किया है और उनके पास उनके रसूल खुली निशानियों के साथ आये थे तो अल्लाह उनके साथ अन्याय नहीं करता, लेकिन वे स्वयं अपना बुरा कर रहे हैं (9) फिर बुरा करने वालों का अंजाम बुरा ही हुआ कि उन्होंने अल्लाह कि आयतों को झुठलाया और वे उनका मज़ाक उड़ाते थे (10) अल्लाह ही पहली बार पैदा करता है फिर वही उसको दोहरा देगा फिर उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे (11) और जिस दिन कयामत (महाप्रलय) आएगी (उस दिन) अपराधियों की आस टूट कर रह जाएगी (12) और उनके साझियों में कोई उनका सिफारिशी न बन सकेगा और वे स्वयं अपने शरीकों का इनकार कर देंगे (13) और जिस दिन कयामत आएगी उस दिन वे विभिन्न गिरोहों में बंट जाएंगे (14) रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने भले काम किये वे बाग़ में होंगे उनकी मेहमानी (अतिथि सत्कार) की जाएगी (15)

⟹ कुछ बोलना कठिन था उस समय पवित्र कुरआन ने यह आश्चर्यजनक भविष्यवाणी की कि आने वाले कुछ वर्षों में मामला उलटने वाला है, रूमी विजयी होंगे और उस दिन मुसलमानों को भी विजय प्राप्त होगी और उसकी खुशियाँ मनाएंगे, जिस समय यह भविष्यवाणी की गई थी किसी भी भविष्यवाणी का पूरा होना इससे अधिक असम्भव नहीं हो सकता था, रूमी राज सत्ता की समाप्ति बिल्कुल निकट थी और मुसलमान असहाय थे, अतः मक्का के मुश्रिकों ने इस भविष्यवाणी का बहुत मज़ाक उड़ाया, उमय्या बिन खलफ़ ने हज़रत अबूबक्र से शर्त लगाई कि यदि तीन वर्षों में रूमी विजयी हो गये तो मैं तुम्हें दस ऊँट दूँगा वरना तुम देना, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पता चला तो आपने फरमाया कि अरबी शब्द "विज़्उन" से आशय तीन से लेकर नौ साल तक है तो तुम शर्त नौ साल की रख लो और ऊँटों की संख्या भी बढ़ा दो, उन्होंने उमय्या पुत्र खलफ़ से बात की, वह इस बात पर सहमत हो गया और ऊँटों की संख्या सौ कर दी गई, हालात के अनुसार उसको विश्वास था कि रूमी कभी विजयी न हो सकेंगे, परन्तु उसके सात वर्ष बाद ठीक बद्र युद्ध के दिन जब मुसलमान जीत की खुशियाँ मना रहे थे कि रूमियों की जीत की ख़बर भी आ गई, और इस प्रकार पवित्र कुरआन की भविष्यवाणी सच्ची सिद्ध हुई और मुसलमानों को दोहरी खुशी मिली, उमय्या पुत्र ख़लफ़ बद्र में मारा जा चुका था, उसके बेटों ने शर्त पूरी की और हज़रत अबूबक्र को सौ ऊँट ला कर दिये, दो पक्षीय शर्त के हराम (निषेध) होने का उस समय एलान हो चुका था और इसको जुवा घोषित किया जा चुका था इसलिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र को वे ऊँट सद्का (दान) कर देने का आदेश दिया।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ
فَاُولٰٓئِكَ فِى الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ١٦ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ
تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ١٧ وَلَهُ الْحَمْدُ فِى السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ١٨ يُخْرِجُ الْحَىَّ مِنَ
الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَىِّ وَيُحْىِ الْاَرْضَ بَعْدَ
مَوْتِهَا ۚ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ١٩ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ
تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ٢٠ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ
لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ
مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ٢١
وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ
وَاَلْوَانِكُمْ ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ٢٢ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ
مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاۗؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّ فِىْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ٢٣ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ
خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَيُحْىٖ بِهِ الْاَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَآ ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ٢٤

منزل٥

और जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को और आखिरत (परलोक) की भेंट को झुठलाया तो ऐसे लोग अज़ाब में गिरफ़्तार किये जाएंगे (16) तो अल्लाह ही की तस्बीह (पवित्रता) का बखान है जब तुम सुबह करते हो और जब तुम शाम करते हो (17) और उसी की हम्द (प्रशंसा) है आकाशों और धरती में और पिछले पहर भी और उस समय में जब तुम दोपहर (ज़ुहर) करते हो (18) वह जीवित को मुर्दे से निकालता है और मुर्दे के जीवित से निकालता है[1] और धरती को बंजर हो जाने के बाद जीवित कर देता है और इसी प्रकार तुम भी निकाले जाओगे[2] (19) और यह उसकी निशानियों में से है कि उसने तुमको मिट्टी से बनाया फिर अब तुम इंसान हो फल–फूल रहे हो (20) और यह भी उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्ही में से जोड़े बनाए ताकि तुम उससे सुकून प्राप्त करो और तुम्हारे बीच आपस में प्रेम और मेहरबानी रख दी निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो सोच–विचार करते हैं[3] (21) और आकाशों और धरती का पैदा करना और तुम्हारी भाषाओं और रंगों का विभिन्न होना भी उसकी निशानियों में से है, निस्संदेह इसमें बुद्धिमानों के लिए निशानियाँ हैं (22) और रात और दिन में तुम्हारा सोना और तुम्हारा उसकी कृपा को तलाश करना भी उसकी निशानियों में से है निःसंदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सुनते हैं (23) और यह भी उसकी निशानियों में से है कि वह तुम्हें बिजली दिखाता है डर और आशा में[4] और आकाश से वर्षा करता है तो उससे धरती में मुर्दा हो जाने के बाद जान डाल देता है, निःसंदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं[5] (24)

(1) इसका उदाहरण यह भी है कि अण्डे से मुर्गी निकलती है और मुर्ग़ी से अण्डा यह सब अल्लाह की शक्ति की निशानियाँ हैं (2) जिस प्रकार मृत धरती हरी–भरी हो जाती है, इसी प्रकार मनुष्य मिट्टी में मिलने के बाद दोबारा अल्लाह की अनुमति से उठ खड़ा होगा और पहले भी वह मिट्टी से पैदा किया गया (3) यह भी अल्लाह की कुदरत है कि निकाह के बाद पत्नी से असाधारण प्रेम हो जाता है, जवानी में मोहब्बत का जोश होता है फिर बुढ़ापे में सहानुभूति व दया की बढ़ोत्तरी हो जाती है (4) डर इसका कि बिजली गिर न पड़े और आशा वर्षा की कि इससे ज़मीन हरी–भरी होगी, नवीन साइंस ने बिजली के बारे में एक और रहस्योघाटन किया है कि उसकी कड़क से बारिश के पानी में बड़ी मात्रा में नाइट्रोजन मिल जाता है और इससे ज़मीन के उपज शक्ति कई गुना बढ़ जाती है (5) आयत नं./19 से आयत नं./27 तक अल्लाह की शक्तियों और बंदों पर उसके इनामों का लगातार उल्लेख है कि अगर सच्चे दिल से उन पर विचार किया जाए तो मनुष्य एक अल्लाह की खुदाई और उसकी शक्ति व युक्ति का विश्वास किए बिना नहीं रह सकता फिर इसके बाद संभव नहीं है कि उस खुदा के साथ दूसरों को उसकी खुदाई में साझी ठहराये।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ
دَعْوَةً ۖۗ مِّنَ الْاَرْضِ ۖ اِذَاۤ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ۝٢٥ وَلَهٗ مَنْ فِى
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ۝٢٦ وَهُوَ الَّذِىْ يَبْدَؤُا
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ؕ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى
فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٢٧ ضَرَبَ لَكُمْ
مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ
مِّنْ شُرَكَآءَ فِىْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ
كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٢٨
بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِىْ
مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝٢٩ فَاَقِمْ وَجْهَكَ
لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِىْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ؕ لَا
تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٠ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝٣١ مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا
دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ۝٣٢

منزل٥

और यह भी उसकी निशानियों में है कि आकाश व धरती उसके आदेश से स्थापित हैं फिर वह जैसे ही तुम्हें आवाज़ देगा धरती से तुम निकल पड़ोगे (25) और उसी का है जो आकाशों और धरती में है सब उसी के आगे झुके हुए हैं (26) और वही सर्वप्रथम पैदा करता है फिर वही उसको दोबारा जिन्दा करेगा और यह उसके लिए बहुत आसान है और आकाशों और धरती में उसी की सबसे ऊँची शान है और वह ज़बरदस्त है युक्तिवान (हिकमत वाला) है (27) वह तुम्हारे लिए तुम्हारे भीतर ही एक उदाहरण देता है, हमने तुम्हें जो रोज़ी दी है क्या तुम्हारे गुलामों में कोई उसमें साझी है कि तुम सब उसमें बराबर हो, जैसे तुम आपस में एक दूसरे से डरते हो उनसे भी उसी प्रकार डरने लगो[1], हम इसी प्रकार उन लोगों के लिए खोल–खोल कर निशानियाँ बयान करते हैं जो बुद्धि रखते हैं (28) किन्तु अत्याचारी बिना जाने बूझे अपनी इच्छाओं पर चल पड़े हैं तो जिसको अल्लाह पथभ्रष्ट कर दे उसको कौन रास्ता दिखा सकता है और ऐसे लोगों की कोई मदद करने वाला न होगा (29) तो आप दीन के लिए एकाग्र (यकसू) हो कर मुँह को उसी की ओर कर लीजिए, अल्लाह की बनाई प्रकृति पर (चलते रहिए) जिस पर उसने सारे लोगों को डाल दिया है, अल्लाह की बनाई वस्तु में परिवर्तन नहीं हो सकता, यही सीधा रास्ता है लेकिन अधिकांश लोग नहीं समझते[2] (30) सब उसी की ओर ध्यान करके (रूजू होकर) रहो और उससे डरते रहो और नमाज़ कायम रखो और शिर्क करने वालों में मत हो जाना (31) जिन्होंने अपने दीन को बाँट दिया और वे स्वयं सम्प्रदायों में बंट गये हर गिरोह अपने अपने तरीक़े पर मगन है[3] (32)

---

(1) कोई व्यक्ति इसको गवारा नहीं कर सकता कि गुलाम–सेवक बिल्कुल उसके बराबर हो जाएं और उनसे उसी प्रकार डरना पड़े जिस प्रकार दो आजाद आदमी कारोबार में साझी एक दूसरे से डरते हैं, हर व्यक्ति अपने गुलाम को गुलाम ही की तरह रखना चाहता है, बस जब यह अपने लिए गवारा नहीं करते तो अल्लाह तो सबसे बढ़ कर धनी है वह किसी की साझेदारी कैसे गवारा कर सकता है जब कि सब उसकी सृष्टि और गुलाम हैं (2) हर एक को अल्लाह ने इस्लाम की प्रकृति पर पैदा किया है इस वास्तविक प्रकृति को बदला नहीं जा सकता किन्तु इस पर धूल–धब्बा इस प्रकार जम जाता है कि वह प्रकृति छिप जाती है जब भी व धूल साफ़ होती है प्रकृति अपनी चमक के साथ प्रकट होती है, माहौल के प्रभाव से इंसान गलत रास्ते पर पड़ जाता है किन्तु वह हट छोड़ कर सच्चे दिल से सोचे तो सच्चाई तक पहुंच जाता है (3) इंसान प्रारम्भ में संसार में आया तो सत्य धर्म के साथ आया फिर धीरे–धीरे लोगों ने अलग अलग राहें निकाल लीं और उसी में मस्त हो गये और यह भूल गये कि असल रास्ता कौन सा है।

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُم مُّنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا
أَذَاقَهُم مِّنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُم بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾ لِيَكْفُرُوا
بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾ أَمْ أَنزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا
فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾ وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا
بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ﴿٣٦﴾
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي
ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾ فَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَ
الْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ
اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾ وَمَا آتَيْتُم مِّن رِّبًا لِّيَرْبُوَ
فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُو عِندَ اللَّهِ ۖ وَمَا آتَيْتُم مِّن زَكَاةٍ
تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ ﴿٣٩﴾ اللَّهُ الَّذِي
خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۖ هَلْ مِن
شُرَكَائِكُم مَّن يَفْعَلُ مِن ذَٰلِكُم مِّن شَيْءٍ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا
يُشْرِكُونَ ﴿٤٠﴾ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي
النَّاسِ لِيُذِيقَهُم بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤١﴾

منزل ٥

और जब लोगों को तकलीफ़ का सामना हो तो वे पलट कर अपने पालनहार को पुकारें और जब वह अपने पास से उन पर दया कर दे तो उनमें एक गिरोह अपने पालनहार के साथ शिर्क करने लगे (33) कि हमने उसको जो कुछ दिया है उसका वह इनकार करने वाला हो जाए बस मज़े उड़ा लो फिर शीघ्र ही तुम्हें पता चल जाएगा (34) क्या हमने उनके लिए कोई प्रमाण उतारा है जो यह शिर्क करने को कहता है जो वे अल्लाह के साथ कर रहे हैं (35) और जब हम लोगों को कृपा (रहमत) का स्वाद चखाएं तो वे मस्त हो जाएं और अगर उनके करतूतों के कारण उनको तकलीफ़ पहुंचे तभी वे आस तोड़ लें (36) भला वे देखते नहीं अल्लाह जिसके लिए चाहता है रोज़ी बढ़ा देता है और जिसको चाहता है नाप–नाप कर देता है, निश्चित ही उसमें विश्वास करने वालों के लिए निशानियाँ हैं (37) बस संबंधी और गरीब और यात्री को उनका अधिकार देते रहिए[1] अल्लाह की प्रसन्नता चाहने वालों के लिए यही बेहतर है और वही लोग सफ़ल हैं (38) और तुम जो ब्याज पर देते हो कि वह लोगों के धन में बढ़ता रहे तो वह अल्लाह के यहाँ बढ़ता नहीं और तुम अल्लाह की प्रसन्नता के लिए जो ज़कात देते हो तो वही लोग हैं जो कई गुना करने वाले हैं[2] (39) वह अल्लाह जिसने तुम को पैदा किया फिर तुम्हें रोज़ी दी फिर वह तुम्हें मारेगा फिर जिलाएगा क्या तुम्हारे साझीदारों में है कोई ऐसा जो इन कामों में कुछ भी कर सके, वह पवित्र है और जो वे शिर्क करते हैं उससे बहुत बुलंद है (40) लोगों के हाथों की कमाई है कि थल और जल में बिगाड़ फैल गया है ताकि वह उनके कुछ करतूतों का मज़ा चखा दे, शायद वे बाज आ जाएं[3] (41)

(1) उनको देते समय धन की कमी की शंका न होनी चाहिए इसलिए कि पिछली आयत में कहा जा चुका है रोज़ी का बढ़ना–घटना सब अल्लाह के अधिकार में है (2) यह पहली आयत है जिसमें ब्याज़ की भर्त्सना हुई है, इस समय इसके हराम होने को साफ़–साफ़ बयान नहीं किया गया था, यहाँ यह कहा गया है कि ब्याज आदमी धन बृद्धि के लिए लेता है किन्तु वास्तव में इससे धन घटता है, इसलिए कि सर्वप्रथम तो इसमें बरकत नहीं होती और इधर–उधर खर्च हो जाता है और दूसरी बात यह कि यह आखिरत में घाटे के सिवा कुछ नहीं और जो सद्क़ा–खैरात और ज़कात देने वाले हैं उनके धन में पहले तो दुनिया में बरकत होती है और फिर वह आखिरत में कई गुना मिलेगा, सूरह आले इमरान में कहा गया है कि सद्के का सवाब सात सौ गुना तक मिलता है और अल्लाह जिसके लिए चाहते हैं और भी बढ़ा देते हैं (3) दुनिया की विपदाएं बुरे कामों का परिणाम होती हैं, उनका ज़ाहिरी (दिखाई देने वाला) कारण कुछ भी हो इसलिए इस समय तौबा करना चाहिए और माफ़ी मांगनी चाहिए।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ ۭ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٢﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَىِٕذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٣﴾ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٤﴾ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَاۗءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ۭ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَاۗءِ كَيْفَ يَشَاۗءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ﴿٤٩﴾

منزل ٥

कह दीजिए कि तुम धरती में चलो फिरो देखो कि पहलों का अंजाम क्या हुआ, उनमें अधिकांश लोग शिर्क करने वाले थे (42) तो आप अपनी दिशा को सीधे रास्ते पर क़ायम रखें इससे पहले कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ पहुंचे जो टल ही नहीं सकता, उस दिन लोग अलग अलग होंगे (43) जिसने इनकार किया उसका इनकार उसके सिर और जिन्होंने अच्छे काम किऐ वे अपने लिए रास्ता बना रहे हैं (44) ताकि अल्लाह ईमान लाने वालों और अच्छे काम करने वालों का अपनी कृपा से बदला दे दे, निस्संदेह वह इनकार करने वालों को पसंद नहीं करता (45) और यह उसकी निशानियों में से है कि वह शुभ समाचार देती हवाएं भेजता है ताकि तुम्हें अपनी कृपा का स्वाद चखाए और ताकि नाव उसके आदेश से चलती रहें और ताकि तुम उसका फज़्ल ढूँढते रहो और शायद तुम शुक्र करने वाले हो जाओ[1] (46) और हमने आपसे पहले भी अपनी अपनी क़ौम की ओर रसूल भेजे तो वे खुली निशानियाँ ले कर आए फिर जिन्होंने अपराध कर रखे थे उनसे हमने बदला लिया और ईमान वालों की सहायता करना तो हम पर अनिवार्य ही था (47) अल्लाह ही है जो हवाएं भेजता है तो वे बादलों को उठाती हैं फिर वह आसमान जिसे चाहता है उन्हें फैला देता है तो आप देखेंगे कि उसके बीच से पानी निकलता है फिर जब वह अपने बंदों में जिसके लिए चाहता है उसको पहुंचा देता है तो वे खुश हो जाते हैं (48) यद्यपि वे पहले ही से उन पर बरसने से पहले निराश हो रहे थे[2] (49)

(1) इन हवाओं के अनगिनत लाभ हैं जिनमें नावों और जहाज़ों का चलना भी है, अगर हवाएं न हों तो ये जहाज चलने कठिन हो जाएं और यह मालवाहक जहाज़ ही विश्व व्यापार और अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा साधन हैं (2) इंसान का हाल बयान हुआ है कि विपदा पर तुरन्त निराश और कृपा मिलते ही तुरन्त खुशियाँ मनाने लगता है।

तो अल्लाह की रहमत के आसार तो देखिए कि वह मुर्दा ज़मीन को कैसे ज़िन्दा करता है बेशक वह ही है जो मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है और वह हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखता है[1] (50) और अगर हम कोई (नुक़सान पहुंचाने वाली) हवा भेजें फिर वे खेती पीली होते देख लें तो उसके बाद वे नाशुक्री करने लगेंगे (51) तो आप मुर्दों को सुना नहीं सकते और न बहरों को पुकार सुना सकते हैं जब वे मुंह फेर–फेर कर भाग रहे हों (52) और न आप अंधों को उनकी गुमराही से राह पर ला सकते हैं, आप उन्हीं को सुना सकते हैं जो हमारी आयतों को मानते हों फिर वे आज्ञाकारी हों[2] (53) वह अल्लाह जिसने तुम्हें कमज़ोरी के साथ पैदा किया फिर कमज़ोरी के बाद ताक़त दी फिर ताक़त के बाद कमजोरी और बुढ़ापा हावी कर दिया, वह जो चाहता है पैदा करता है और वह खूब जानता पूरी कुदरत रखता है[3] (54) और जिस दिन कयामत आएगी उस दिन अपराधी लोग क़सम खाएंगे कि वे एक घड़ी से ज़्यादा नहीं ठहरे, इसी तरह वे भटकते रहते थे[4] (55) और जिनको ज्ञान और ईमान की दौलत मिली वे कहेंगे बेशक तुम अल्लाह के लिखे के अनुसार हश्र के दिन तक ठहरे तो यही हश्र का दिन है लेकिन तुम तो जानने की कोशिश ही न करते थे[5] (56) बस आज अत्याचारियों को उनका सफ़ाई पेश करना काम न आएगा और न उनसे तौबा चाही जाएगी (57) और हमने लोगों के लिए इस कुरआन में हर तरह की मिसालें दे डालीं और अगर आप उनके सामने कोई निशानी ले भी आएं तो इनकार करने वाले बेशक यही कहेंगे कि तुम झूठ बना लाते हो[6] (58)

---

(1) जो ज़मीन कुछ घंटे पहले सूखी और आकर्षण से खाली थी और उसमें खाक उड़ रही थी कि अचानक अल्लाह की रहमत से लहलहाने लगी, बारिश ने उसकी गुप्त शक्तियों को उभार दिया, इसी तरह वह मुर्दा दिलों में जान डाल देता है और ईमान की खेती लहलहाने लगती है और इसी तरह खाक में मिलने के बाद इनसानों को दोबारा हश्र के मैदान में खड़ा कर देगा, आगे फिर इंसान की नाशुक्री का वर्णन है, सब नेमतों के बाद एक सख़्त हवा चल जाए, खेती पीली पड़ जाए और नुक़सान नज़र आने लगे तो वह नेमतें भूल कर नाशुक्री पर उतर आता है (2) यानी जो सुनना ही न चाहे देखना ही न चाहे आप उसको न सुना सकते हैं और न सही रास्ता दिखा सकते हैं (3) बच्चा कमज़ोर पैदा हुआ, फिर जवानी की ताक़त आई, बुढ़ापे में फिर वही कमज़ोरी, यह सारा क्रम अल्लाह की हिकमत और मसलहत (नीति) के साथ है और हर जगह अल्लाह की व्यवस्था यही चलती है, न ताक़तवर हमेशा ताक़तवर रहता है और न कमज़ोर हमेशा कमज़ोर रहता है (4) जब मुसीबत सिर पर खड़ी नज़र आएगी तो दुनिया की और बर्ज़ख की ज़िन्दगी थोड़ी मालूम होने लगेगी, जिस तरह यहां झूठ बक रहे हैं इसी तरह दुनिया में उल्टी सीधी बातें किया करते थे और उस समय दुनिया ही को सब कुछ समझ रखा था (5) ईमान वाले कहेंगे कि दुनिया के बाद बर्ज़ख की ज़िन्दगी अल्लाह के आदेशानुसार पूरी हुई, एक मिनट की कमी नहीं हुई और अब जिस दिन का वादा था वह आ पहुंचा, अगर तुमने इसको माना होता और तैयारी की होती तो आज तुम्हारे हालात कुछ और होते, अब न कोई उज़्र क़ुबूल होगा और न तौबा के लिए कहा जाएगा इसका समय गुज़र चुका (6) ज़िद और दुश्मनी के नतीजे में दिलों पर मोहर लग जाती है तो हर चीज़ में कीड़े नज़र आते हैं फिर तौफ़ीक़ छीन ली जाती है।

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٩﴾ فَاصْبِرْ
اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٦٠﴾
سُوْرَةُ لُقْمٰنَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعٌ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣﴾
الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ
يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٦﴾
وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ
فِيْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٧﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ﴿٨﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٩﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى
فِى الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ
وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ﴿١٠﴾

منزل ٥

इसी तरह अल्लाह न समझने वालों के दिलों पर मोहर लगा देता है (59) तो आप सब्र करते रहें बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है और विश्वास न रखने वाले आपको आपे से बाहर न कर दें[1] (60)

सूरह लुक़मान

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अलिफ़ लाम मीम (1) ये सुदृढ़ किताब की आयतें हैं (2) अच्छे काम करने वालों के लिए हिदायत (मार्गदर्शन) व रहमत हैं (3) जो नमाज़ दुरुस्त रखते हैं और ज़कात देते हैं और आख़िरत में पूरा विश्वास करते हैं (4) वही लोग अपने पालनहार की ओर से हिदायत (संमार्ग) पर है और वही लोग कामयाब हैं (5) और लोगों में कुछ अल्लाह से ग़ाफ़िल करने वाली बातों के ख़रीददार बनते हैं ताकि वे जानबूझ कर अल्लाह के रास्ते से हटा दें और उसका मज़ाक़ उड़ाएं, ऐसे ही लोगों के लिए अपमानजनक अज़ाब है[2] (6) और जब ऐसे व्यक्ति के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वह अकड़ कर मुँह फेर लेता है जैसे उसने सुना ही न हो मानो उसके दोनों कान बहरे हैं, तो आप उसको दुखद अज़ाब का शुभ समाचार दे दीजिए (7) बेशक जिन्होंने माना और भले काम किये उनके लिए नेमत भरे बाग़ हैं (8) हमेशा उसी में रहेंगे, अल्लाह ने सच्चा वादा कर रखा है और वही ज़बर्दस्त है हिकमत (तत्वदर्शिता) वाला है (9) तुम देखते हो कि उसने आसमानों को बिना स्तम्भ के पैदा किया है और ज़मीन में भारी बोझ (पहाड़ों के रूप में) रख दिये हैं कि वह तुम्हें ले कर डोलने न लगे और उसमें हर प्रकार के जानवर फैला दिये और हमने ऊपर से पानी उतारा तो उसमें हर प्रकार के उत्तम जोड़े उगा दिये (10)

(1) यानी जब उन अभागों की दुश्मनी इस हद तक पहुंच गई तो आप उनकी शरारत से दुखी न हों, अल्लाह ने जिस मदद का वादा किया है वह करके रहेगा, आप अपने काम पर जमें रहें, यह ग़लत विश्वास रखने वाले आपको ज़रा भी अपने काम से हिला न सकेंगे (2) पवित्र मक्के का एक व्यापारी नज़्र पुत्र हारिस ईरान से ईरानी राजाओं के किस्से–कहानियों की किताबें ले कर आया और एक लौण्डी भी साथ लाया और लोंगो से कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हें आद व समूद की कहानियां सुनाते हैं मैं तुम्हें उससे बेहतर कहानियां सुनाता हूं, लोग उसके आस–पास इकट्ठा होने लगे, उसी अभागे की ओर इशारा है, इससे यह नियम भी सामने आ गया कि हर वह खेल–तमाश जो अल्लाह से बेख़बर कर दे ''लह्वल हदीस'' में शामिल है।

هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ بَلِ
الظّٰلِمُوْنَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١١﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ
لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ
حَمِيْدٌ ﴿١٢﴾ وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ
اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿١٣﴾ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ
اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ
اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿١٤﴾ وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰۤى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ
بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۫ وَّاتَّبِعْ
سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾ يٰبُنَيَّ اِنَّهَاۤ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ
فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا
اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿١٦﴾ يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ
بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَاۤ اَصَابَكَ ؕ
اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٧﴾ وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا
تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴿١٨﴾

منزل٥

यह है अल्लाह का बनाया हुआ, अब मुझे दिखाओ कि उसके अलावा औरों ने क्या बनाया है बल्कि अन्यायी लोग खुली गुमराही में हैं (11) और हमने लुक़मान को हिकमत दी कि अल्लाह का हक़ पहचानो और जो सच्चाई को पहचानेगा वह अपने लिए सच्चाई को पहचानेगा और जो सच्चाई को नहीं पहचानता तो अल्लाह भी बड़ा बेनियाज़ है प्रशंसनीय गुणों वाला है[1] (12) और (याद करो) जब लुक़मान ने अपने बेटे से नसीहत करते हुए कहा, ऐ मेरे बेटे! अल्लाह के साथ शिर्क मत करना निश्चित ही शिर्क एक बहुत बड़ी नाइन्साफ़ी है (13) और हमने इंसान को उसके माँ–बाप के बारे में (अच्छे सुलूक की) ताकीद की, उसकी माँ ने थक–थक कर उसका बोझ उठाया और दो सालों में उसका दूध छुड़ाया कि मेरा हक़ पहचानो और अपने माँ–बाप का हक़ पहचानो, लौट कर मेरे ही पास आना है (14) और अगर वे तुम्हें इस पर मजबूर करें कि तुम मेरे साथ शिर्क करो जिसका तुम्हें कोई ज्ञान नहीं तो उनकी बात मत मानना और दुनिया में उनके साथ अच्छा बर्ताव किये जाना और उसका रास्ता चलना जिसने मुझसे लौ लगा रखी है[2] फिर तुम सबको मेरे ही पास लौट कर आना है फिर मैं तुम को बतला दूंगा जो तुम किया करते थे (15) (लुक़मान ने कहा) ऐ मेरे बेटे! अगर राई बराबर भी कोई दाना हो फिर वह किसी चट्टान में हो या आसमानों या ज़मीन में (कहीं भी) हो, अल्लाह उसको लाकर हाज़िर कर देगा, बेशक अल्लाह बड़ा सूक्ष्मदर्शी पूरी ख़बर रखने वाला है[3] (16) ऐ मेरे बेटे! नमाज़ क़ायम रखो, भलाई की ताकीद करते रहो और बुराई से रोकते रहो और तुम्हें जो तकलीफ़ पहुंचे उस पर सब्र करते रहो बेशक ये बड़े हिम्मत के काम हैं (17) और लोगों के लिए गाल मत फुलाओ और न ज़मीन में अकड़ कर चलो, निःसंदेह किसी अकड़ने वाले इतराने वाले को अल्लाह पसंद नहीं करता[4] (18)

---

(1) हज़रत लुक़मान पैग़म्बर नहीं थे, बड़े ज्ञानी अल्लाह के वली आदमी थे, उनकी बुद्धिमता की कहानियां अरबों में भी मशहूर थीं, अरब कवियों ने उनका वर्णन बड़े आदर के साथ किया है, अल्लाह तआला ने यहां यह बात साफ कर दी कि लुक़मान जिनकी हिकमत व दानाई (बुद्धिमतता) का लोहा तुम भी मानते हो वे भी तौहीद के पक्षधर थे, और तुम अपनी औलाद को अगर वे ईमान ले आएं, शिर्क पर मजबूर करते हो जब कि लुक़मान ने अपने बेटे को शिर्क से बचने की ताकीद की, फिर बीच में अल्लाह ने वह नियम भी बना कर दिया कि माँ–बाप के साथ अच्छा सुलूक ज़रूरी है चाहे वे मुश्रिक ही क्यों न हों लेकिन अगर वे शिर्क पर मज़बूर करना चाहें तो उनसे अच्छे अंदाज़ से माफ़ी मांग ली जाए, अल्लाह की नाफ़रमानी करके किसी का अनुपालन करना जायज़ नहीं लेकिन इसके बावजूद उनके साथ अच्छा सुलूक किया जाता रहे (2) इससे महत्वपूर्ण नियम यह मालूम हुआ कि अल्लाह वालों के साथ रहना और उनके रास्ते पर चलना, कामयाबी की कुंजी है, कभी–कभी आदमी अपने ज्ञान व अध्ययन से जो समझता है वह सही नहीं होता, इसलिए आफ़ियत का रास्ता यही है कि वे उलमा जो अल्लाह वाले हों जिनकी ज़िंदगी पूर्ण रूप से मात्र अल्लाह वाली हो उनका अनुसरण किया जाए (3) यह अल्लाह के सर्वज्ञानी होने का बयान है (4) यह हज़रत लुक़मान की वह नसीहत है जिस को अल्लाह ने सारे मुसलमानों के लिए राह–ए–अमल के रूप में वर्णन किया है।

وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ۚ إِنَّ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ
لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ﴿١٩﴾ أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا
فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً ۗ وَمِنَ النَّاسِ
مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُنِيرٍ ﴿٢٠﴾ وَ
إِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا
عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿٢١﴾
وَمَنْ يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ
بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ ۗ وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿٢٢﴾ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا
يَحْزُنْكَ كُفْرُهُ ۚ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٢٣﴾ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ
عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٢٤﴾ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ
لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٥﴾ لِلَّهِ مَا
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ أَنَّمَا
فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِنْ بَعْدِهِ
سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٧﴾

منزل ٥

और बीच की चाल चलो[1] आवाज़ धीमी रखो[2] बेशक सबसे बुरी आवाज़ गधों की आवाज़ है (19) भला तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने आसमानों व ज़मीन की सारी चीज़ों को तुम्हारे काम में लगा रखा है और तुम पर अपनी ज़ाहिरी और अप्रकट नेमतों की बारिश कर रखी है, फिर भी लोगों में कुछ बिना समझे बूझे और बिना रौशन किताब के अल्लाह की बात में झगड़ते हैं (20) और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो उतारा है उसका अनुसरण करो तो वे कहते हैं कि हम तो उसका अनुसरण करेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है क्या तब भी कि जब शैतान उनको भड़कती आग की ओर बुला रहा हो (21) और जिसने अपने को अल्लाह के हवाले कर दिया और वह नेकी पर हुआ तो उसने निश्चित ही मज़बूत कड़ा थाम लिया और हर काम का अंजाम अल्लाह ही के हाथ में है (22) और जिसने इनकार किया तो उसका इनकार आपको ग़म में न डाल दे उन सबको हमारी ही ओर लौट कर आना है फिर जो कुछ उन्होंने किया वह सब हम उनको बता देंगे बेशक अल्लाह सीनों की बातों को भी खूब जानता है (23) हम उनका कुछ काम चला देंगे फिर उनको सख़्त अज़ाब में खींच कर लाएंगे (24) और अगर आप उनसे पूछें कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया तो वे निश्चित रूप से यही कहेंगे कि अल्लाह ने, कह दीजिए कि असल प्रशंसा तो अल्लाह के लिए है लेकिन अधिकतर लोग जानते नहीं[3] (25) आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह का है बेशक अल्लाह ही है जो बेनियाज़ है प्रशंसनीय गुणों वाला है (26) और ज़मीन में जितने पेड़ हैं अगर वे क़लम बन जाएं और समन्दर उसकी स्याही हो जाएं, सात समन्दर उसके बाद और हों तो भी अल्लाह की बातें खत्म न हों, बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त है हिकमत वाला (तत्वदर्शी) है (27)

---

(1) न इतना तेज़ चले कि दौड़ने के क़रीब पहुंच जाए और न इतने धीमे कि सुस्ती कहलाने लगे, आदेश है कि नमाज़ के लिए भी आदमी जा रहा हो तो सुकून–इत्मिनान से चले, दौड़ने न लगे (2) जिनको सुनाना हो वे इत्मिनान से सुन लें अकारण आवाज़ बुलंद न की जाए, मालूम हुआ कि लाउडस्पीकर का भी अनावश्यक प्रयोग इस्लामी संस्कारों और शिक्षाओं के विरुद्ध है (3) मक्का के मुश्रिक भी अल्लाह को पालनहार मानते थे लेकिन इबादत (उपासना) में दूसरों को उसके साथ शरीक करते थे।

(उसके के लिए) तुम सबको पैदा करना और मरने के बाद जिलाना सिर्फ़ एक जान के पैदा करने और जिलाने की तरह है[1] बेशक अल्लाह खूब सुनता खूब देखता है (28) भला आपने नहीं देखा कि अल्लाह दिन पर रात को और रात पर दिन को दाख़िल करता है और उसने सूरज और चाँद को काम पर लगा दिये हैं सब निर्धारित अवधि के लिए चले जा रहे हैं और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है (29) इसलिए कि अल्लाह ही सच है और उसके अलावा जिसको वे पुकारते हैं सब झूठ है और अल्लाह ही बुलंद है बड़ा है (30) भला आपने देखा नहीं कि ज़हाज़ समुद्र में अल्लाह की नेमत को लेकर चलते हैं ताकि वह तुम्हें अपनी निशानियों में से कुछ दिखा दे, बेशक इसमें सारे सब्र–शुक्र करने वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं[2] (31) और जब बादलों की तरह मौज ने उनको ढ़ांप लिया तो वे लगे पुकारने अल्लाह को उसी के लिए बंदगी को शुद्ध करके, फिर जब उसने उनको सूखे में पहुंचा कर बचा लिया तो उनमें कुछ ही सीधे रास्ते पर रहते हैं बाक़ी फिर शिर्क करने लगते हैं और हमारी निशानियों का इनकार वही लोग करते हैं जो बात के झूठे हैं ना शुक्रे हैं (32) ऐ लोगो! अपने पालनहार का लिहाज़ करो और उस दिन से डरो जब बाप न बेटे के काम आएगा और न बेटा ही अपने बाप के कुछ काम आ सकेगा[3] बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, तो तुम्हें दुनिया की ज़िंदगी धोखे में न डाल दे और न अल्लाह के बारे में वह धोखेबाज़ तुम्हें धोखा दे पाए (33) बेशक अल्लाह ही के पास क़यामत की जानकारी है और वही बारिश बरसाता है और गर्भाशय के अंदर जो कुछ है उसको जानता है और कोई भी नहीं जानता कि कल वह क्या करेगा और कोई नहीं जानता कि किस जगह उसकी मौत होगी निःसंदेह अल्लाह खूब जानता पूरी ख़बर रखता है[4] (34)

---

(1) सारे जहां को पैदा करना और एक इंसान को पैदा करना उसके लिए बराबर है (2) इन्तिज़ार की घड़ियां भी गुज़ारनी पड़ती हैं फिर नेमतें मिलती हैं तो इसकी मांग यह है कि शुक्र किया जाए और एहसान माना जाए (3) दुनिया की मुसीबत के बाद आख़िरत की मुसीबत का उल्लेख है, दुनिया की मुसीबत में इतना होश रहता है कि माँ–बाप को अपने बच्चों की चिंता रहती है और कभी–कभी वे अपनी जान देकर उनकी जान बचाना चाहते हैं और आख़िरत का हाल यह बयान हुआ कि वहां किसी को किसी की चिंता न होगी, उस दिन का असल ध्यान चाहिए कि वहां कामयाबी कैसे मिले, आगे बता दिया कि उसकी शक्ल यही है कि आदमी दुनिया के धोखे में न पड़े और शैतान जो सबसे बड़ा धोखेबाज़ और फ़रेबी है उससे हर समय सावधान रहे और शिर्क से बचता रहे (4) यह चीज़ें "मफ़ातीहुल ग़ैब" कहलाती हैं, क़यामत कब आएगी, बारिश कब और कहां होगी, गर्भाशय में क्या है, किस तरह है, मौत कब और कहां आएगी, अल्लाह के अलावा इसका विवरण कोई नहीं जानता, ग़ैब की कुंजियां उसी के पास हैं, आज गर्भाशय के अल्ट्रासाउण्ड से जो कुछ मालूम होता है पहली बात तो यह कि आधी–अधूरी मालूमात होती है, दूसरी बात यह कि वह ज्ञान मशीनों से देख कर हासिल होता है, ग़ैब से उसका कोई संबंध नहीं।

सूरह सज्दा

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अलिफ़ लाम मीम (1) उस किताब का उतारा जाना जिसमें कोई शक ही नहीं जहानों के पालनहार की ओर से है (2) क्या वे कहते हैं कि उन्होंने उस को गढ़ लिया है, नहीं वह आपके पालनहार की ओर से बिल्कुल ठीक–ठीक ही उतरी है ताकि आप उन लोगों को डराएं जिनके पास आपसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया, शायद वे रास्ते पर आ जाएं[1] (3) वह अल्लाह जिसने आसमानों और ज़मीन को और उन दोनों के बीच जो कुछ है उसको छः दिनों में पैदा किया फिर वह अर्श पर विराजमान हुआ, तुम्हारे लिए उसके सिवा न कोई समर्थक है न कोई सिफ़ारिशी क्या फिर भी तुम नसीहत हासिल नहीं करते (4) वह आसामान से ज़मीन तक काम की व्यवस्था करता है कि वह सब उसी की ओर उठ जाता है उस दिन जिस की मात्रा तुम्हारी गिनती के अनुसार एक हज़ार साल[2] की है (5) वह है छिपे और खुले का जानने वाला, ज़बर्दस्त, बहुत ही दयालु (6) जिसने हर चीज़ बहुत खूब पैदा की और इंसान की पैदाइश मिट्टी से शुरू की (7) फिर उसका वंश एक निचोड़े हुए साधारण पानी से चला[3] (8) फिर उसको ठीक–ठीक बनाया और उसमें अपने पास से रूह फूंकी, और तुम्हारे लिए कान, आँख और दिल बनाए, बहुत थोड़ा है जो तुम शुक्र करते हो[4] (9) और वे बोले जब हम ज़मीन से घुल–मिल जाएंगे तो क्या फिर नए रूप में आएंगे, बात यह है कि वे अपने पालनहार से मुलाक़ात का इनकार करने वाले हैं (10)

سُوْرَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢﴾ اَمْ
يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ
اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣﴾ اَللّٰهُ
الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ
ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ؕ
اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤﴾ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ
يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗۤ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٥﴾
ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦﴾ الَّذِيْۤ اَحْسَنَ
كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ﴿٧﴾ ثُمَّ جَعَلَ
نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٨﴾ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ
رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا
تَشْكُرُوْنَ ﴿٩﴾ وَقَالُوْۤا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ
خَلْقٍ جَدِيْدٍ ؕ بَلْ هُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٠﴾

منزل ٥

(1) अरब में जब से मूर्तिपूजा फैली उसके बाद से वहां कोई पैग़म्बर नहीं आया, यह उसी की ओर इशारा है (2) ज़मीन से आसमान तक सब अल्लाह ही के अधिकार में है फिर क़यामत के दिन जो हज़ार बरस का होगा सब चीज़ें उठा ली जाएंगी और नया दौर शुरु होगा, दूसरा इसका मतलब यह भी बयान किया गया है कि दुनिया में सब काम हो रहे हैं और कुछ–कुछ कामों के परिणाम हज़ार–हज़ार बरस में निकलते हैं तो यह तुम्हारे नज़दीक लम्बी अवधि है, अल्लाह के यहां इसकी हैसियत एक दिन से ज़्यादा नहीं (3) वीर्य की बूँद जो मानव जीवन का साधन बनती है एक अपवित्र पानी है जो मानव शक्ति का एक निचोड़ होता है, इंसान जो कुछ खाता–पीता है उसी से उसका सार तैयार होता है (4) गर्भाशय में बच्चे का रूप बनाने वाला, उसको सुंदरता प्रदान करने वाला, उसके अंग–अंग बनाने वाला और फिर उसमें रूह फूंकने वाला अल्लाह ही है, इंसान का वजूद उसी सृष्टा का वरदान है, लेकिन फिर भी इनसान शुक्र नहीं करता और उसके साथ शरीक ठहराता है।

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ
تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ
رَبَّنَاۤ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ
لَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ
لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۳﴾ فَذُوْقُوْا بِمَا
نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا
سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۱۵﴾ تَتَجَافٰى
جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّمِمَّا
رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۱۶﴾ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ
اَعْيُنٍ جَزَآءً بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۷﴾ اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ
فَاسِقًا لَا يَسْتَوٗنَ ﴿۱۸﴾ اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ
جَنّٰتُ الْمَاْوٰى نُزُلًا بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا
فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ كُلَّمَاۤ اَرَادُوْۤا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَاۤ اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَ
قِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿۲۰﴾

منزل ٥

कह दीजिए कि मौत का फ़रिश्ता तुम्हारी रूह (प्राण) कब्ज़ करेगा जो तुम पर नियुक्त है फिर तुम अपने पालनहार की ओर लौटाए जाओगे (11) और अगर आप देखें जब अपराधी अपने पालनहार के पास सिर झुकाए (कहते) होंगे ऐ हमारे पालनहार! हमने खूब देख लिया और सुन लिया बस हमें दुनिया में दोबारा भेज दीजिए, हम अच्छे काम करेंगे, हमे पूरा विश्वास हो चुका है (12) और अगर हम चाहते ही तो हम हर व्यक्ति को उसका रास्ता दे ही देते लेकिन मेरी ओर से यह बात तय हो चुकी कि मैं दोज़ख को इनसान और जिन्नात सबसे भर कर रहूंगा[1] (13) तो अब तुम जो उस दिन की मुलाकात को भुला बैठे थे उसका मज़ा चखो (14) हमारी निशानियों को मानने वाले तो वे हैं कि जब वे निशानियाँ उनको याद दिलाई जाती हैं तो वे सज्दे में गिर पड़ते हैं और अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ तस्बीह (पाकी बयान) करते हैं और वे अकड़ नहीं दिखाते (15) उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं[2] वे अपने पालनहार को भय और उम्मीद से पुकारते रहते हैं और हमने उनको जो कुछ दिया उसमें से ख़र्च करते हैं (16) तो कोई भी नहीं जानता कि उनके उन कामों के बदले में क्या कुछ उनकी आँखों की ठंडक छिपा रखी गई है जो वे करते रहे हैं[3] (17) भला जो ईमान ला चुका क्या वह उसकी तरह होगा जो नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) हो, वे बराबर नहीं हो सकते (18) रहे वे लोग जिन्होंने माना और अच्छे काम किए तो उनके लिए मेहमानी के रूप में जन्नतों का ठिकाना है उन कामों के बदले जो वे किया करते थे (19) और जिन्होंने अवज्ञा की तो उनका ठिकाना दोज़ख़ है, जब जब वे उसमें से निकलने का इरादा करेंगे वहीं पलटा दिए जाएंगे और उनसे कहा जाएगा दोज़ख का वह मज़ा चखो जिसको तुम झुठलाया करते थे (20)

---

(1) असल मकसद तो इंसान की परीक्षा है कि वह अपनी समझ से काम लेकर पैग़म्बरों की बात मानता है कि नहीं, अल्लाह का फैसला यह है कि जो परीक्षा में सफ़ल होगा वही सफल क़रार दिया जाएगा और जो नासमझी से काम लेगा तो ऐसे लोगों से दोज़ख भरी जाएगी वरना देखेने के बाद तो हर व्यक्ति मानने पर मजबूर होगा और फिर आज़माइश ही कम रह जाएगी, इसीलिए जब सब देख लेने के बाद काफ़िर कहेंगे कि हमें दोबारा भेज दीजिए तो अल्लाह कहेगा कि अगर ऐसे ही हमें हिदायत (संमार्ग) पर लाना होता तो परीक्षा क्यों ली जाती, सब ही को हम हिदायत पर ले आते (2) यानी रातों को वे नमाज़े पढ़ते हैं, इसमें फ़र्ज़ भी शामिल है और तहज्जुद की नफ़्ल नमाज़ भी (3) अल्लाह के ख़ज़ाने में ऐसे लोगों के लिए कैसी–कैसी नेमतें छिपी हुई हैं वह इंसानों के विचार व कल्पना से बहुत ऊपर है जो न आँखों ने देखा न कानों ने सुना और न दिल में उनका ख़्याल आया।

وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ
الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ
بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾
وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُن فِي مِرْيَةٍ
مِّن لِّقَائِهِ ۖ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٣﴾ وَ
جَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۖ وَ
كَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾ أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ
كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَاكِنِهِمْ ۚ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ
الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ
أَنْعَامُهُمْ وَأَنفُسُهُمْ ۖ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ
هَٰذَا الْفَتْحُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٨﴾ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنفَعُ
الَّذِينَ كَفَرُوا إِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٢٩﴾ فَأَعْرِضْ
عَنْهُمْ وَانتَظِرْ إِنَّهُم مُّنتَظِرُونَ ﴿٣٠﴾

منزل٥

और हम उनको ज़रूर बड़े अज़ाब से पहले क़रीबी अज़ाब का मज़ा चखाएंगे शायद वे पलटें[1] (21) और उससे बढ़ कर अन्याय करने वाला कौन होगा जिसको आयतों के द्वारा नसीहत की जाए फिर वह उनसे मुँह फेरे, हम ऐसे अपराधियों से बदला लेकर रहेंगे (22) और निश्चित ही हमने मूसा को किताब दी तो आप उसके मिलने के बारे में शक न करें[2] और हमने उसको बनी–इस्राईल के लिए मार्गदर्शन बनाया (23) और हमने उनमें से कुछ लोगों को जब उन्होंने सब्र किया पेशवा बना दिया जो हमारे आदेश से रास्ता बताते रहे और वे हमारी आयतों पर विश्वास रखते थे (24) निश्चित आपका पालनहार ही उनके बीच क़यामत के दिन उन चीज़ों का फ़ैसला कर देगा जिनमें वे मतभेद करते चले आए हैं (25) क्या यह बात उनकी हिदायत (संमार्ग) के लिए काफ़ी न हुई कि हमने उनसे पहले कितनी नस्लों को हलाक कर डाला जिनके घरों में वे चल फिर रहे हैं, बेशक इसमें निशानियाँ हैं[3], फिर भी क्या वे कान नहीं धरते (26) क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम पानी को चटियल मैदान में ले जाते हैं तो उससे खेती उगती है जिससे उनके जानवर और वे खुद खाते हैं फिर क्या वे देखते नहीं (27) और वे कहते हैं कि यह फ़ैसला कब है (बताओ) अगर तुम सच्चे हो (28) कह दीजिए फ़ैसले के दिन काफ़िरों को उनका ईमान कुछ काम न जाएगा और न उनको मोहलत मिलेगी (29) तो आप उनका ख़्याल छोड़िए और इन्तिज़ार कीजिए वे भी इन्तिज़ार में हैं (30)

(1) आखिरत के बड़े अज़ाब से पहले इस दुनिया में जो मुसीबतें और आफ़तें आती हैं उनका बड़ा भाग इसीलिए होता है कि आदमी में अपनी बुराइयों का एहसास पैदा हो, और वह अल्लाह की ओर पलट कर तौबा करे, इसके बाद भी एहसास पैदा न हो तो इससे बढ़ कर और क्या महरूमी (वंचन) होगी (2) तौरेत हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को दी गई इसमें संदेह करने की आवश्यकता नहीं (3) आद व समूद की बस्तियों से मुश्रिक शाम (सीरिया) व यमन की यात्राओं में गुज़रते थे तो उन खण्डहरों में जाकर घूमते–फिरते भी थे और वे निशानियाँ उनकी आँखों के सामने से गुज़रती थीं।

سُوْرَةُ الْاَحْزَابِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثٌ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّتِسْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱﴾ وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۲﴾ وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ
وَكِيْلًا ﴿۳﴾ مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ
اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـىِٔـيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ
اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ
يَهْدِى السَّبِيْلَ ﴿۴﴾ اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ
فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْۤا اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ؕ وَ
لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَاۤ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ ۙ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۵﴾ اَلنَّبِىُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ
اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى
بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّاۤ اَنْ
تَفْعَلُوْۤا اِلٰۤى اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿۶﴾

منزل٥

सूरह अहज़ाब

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

ऐ नबी! अल्लाह ही से डरते रहिए और काफ़िरों व मुनाफ़िकों की बात मत मानिए, निश्चित तौर पर अल्लाह खूब जानता है हिकमत (युक्ति) रखता है[1] (1) और आपके पालनहार की ओर से जो आपको आदेश दिया जा रहा है उस पर चलते रहिए, तुम जो भी करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है (2) और अल्लाह ही पर भरोसा रखिए और अल्लाह काम बनाने वाला क़ाफ़ी है (3) अल्लाह ने किसी व्यक्ति के पहलू में दो दिल नहीं रखे और न उसने तुम्हारी उन पत्नियों को जिनसे तुम ज़िहार (पत्नी को माता की उपमा देना) करते हो तुम्हारी माँ बनाया और न तुम्हारे मुँह बोले बेटों को तुम्हारी संतान बनाया, यह सब तुम्हारे अपने मुँह की बातें हैं और अल्लाह ही ठीक बात कहता है और वही रास्ता दिखाता है[2] (4) उनको अपने बापों के संबंध से पुकारो, यही अल्लाह के यहाँ इंसाफ़ की बात है, फिर अगर तुम उनके बापों को नहीं जानते तो वे तुम्हारे धार्मिक भाई हैं और तुम्हारे दोस्त हैं, और जो तुमसे चूक हो जाए उसमें तुम पर कोई पाप नहीं लेकिन जो तुम दिल से जान बूझ कर करो (उस पर तुम्हारी पकड़ है) और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है) (5) नबी का ईमान वालों पर उनकी जानों से अधिक अधिकार है, और आप की पत्नियाँ उनकी माँएं हैं, और अल्लाह के आदेश में मुसलमानों और हिज़रत करने वालों से अधिक आपस के सम्बंधियों का एक दूसरे पर अधिकार है सिवाय इसके कि तुम अपने दोस्तों के साथ एहसान करो, यह किताब का लिखा है[3] (6)

---

(1) कभी–कभी काफ़िरों और मुश्रिकों की ओर से आपको मश्वरे दिये जाते और मुनाफ़िक (कपटी) इसका समर्थन करते और उसकी खूबियां बयान करते हालांकि वे भीतर से मुसलमानों को नुकसान पहुंचाने वाले मश्वरे होते थे, यहां आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एकाग्र रहने का आदेश है कि आप इन मश्वरों पर कान न धरें, अल्लाह ने हर एक के पहलू में एक ही दिल रखा है, जब वह एक व्यक्ति की ओर और उसके आदेशों की ओर ध्यान दिये हुए हैं तो दूसरी ओर ध्यान देने की अवश्यकता नहीं (2) ''जाहिलियत'' युग का रिवाज था कि पत्नी को माँ की तरह कह दिया तो वह माँ बन गई, किसी अजनबी को बेटा बना लिया तो वह वास्तविक बेटा बन गया, आयत में दोनों को नकारा गया है, ''ज़िहार'' का आदेश सूरह मुजादलह में आएगा, मुँहबोले बेटे का आदेश यहीं आगे आ रहा है कि उनको उनके बाप के सम्बन्ध से पुकारो और बाप मालूम न हो तो भी उनसे अच्छा मैत्रीय व्यवहार करो, बेटा कह देने से वह वास्तविक संतान की तरह नहीं हो सकता कि उसको पैतृक सम्पत्ति में अधिकार मिले, तो जिस तरह एक पहलू में दो दिल नहीं हो सकते इसी तरह दो माँएं नहीं हो सकतीं और न दो क़िस्म के बेटे हो सकते हैं, एक इंसान का वास्तविक हो और दूसरा ज़ुबानी ऐलान से बेटा बन जाए (3) यह बात साफ़ की जा रही है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सारे मुसलमानों को अपनी जान से अधिक प्रिय हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की धर्म पत्नियां उम्मत (मुस्लिम समुदाय) की माएं हैं लेकिन यह एक सम्मान के रूप में है इसक मतलब यह नहीं है कि इस रिश्ते को आधार बना कर उत्तराधिकार चलाया जाए, उत्तराधिकार के लिए खूनी रिश्ते की ज़रूरत और महत्व है और ज़ाहिर है कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियाँ माँ होने के बावजूद वे पैतृिक सम्पत्ति में हिस्सा नहीं पातीं तो एक मुँहबोले बेटे कैसे हिस्सा पा सकते हैं।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ
وَمُوْسٰى وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۪ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿۷﴾
لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَاَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۸﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ
فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرًا ﴿۹﴾ اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ
زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَـنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ
الظُّنُوْنَا ﴿۱۰﴾ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ﴿۱۱﴾
وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۱۲﴾ وَاِذْ قَالَتْ طَّاۤىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ يٰۤاَهْلَ
يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ
يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۭ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا
فِرَارًا ﴿۱۳﴾ وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُىِٕلُوا الْفِتْنَةَ
لَاٰتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوْا بِهَآ اِلَّا يَسِيْرًا ﴿۱۴﴾ وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ
مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ۭ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْـُٔوْلًا ﴿۱۵﴾

منزل٥

और जब हमने सारे पैग़म्बरों से उनके अहद (प्रतिज्ञा) लिए और आपसे और नूह से और इब्राहीम से और मूसा से और ईसा पुत्र मरयम से और उनसे हमने बहुत ही दृढ़ संकल्प लिया था (7) ताकि सच्चों से उनकी सच्चाई के बारे में पूछ ले और उसने काफ़िरों के लिए दुखद अज़ाब तैयार कर रखा है[1] (8) ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह के इनआम को याद करो, जब सेनाएं तुम पर चढ़ आईं तो हमने उन पर हवा भेजी और ऐसी सेनाएं भेजीं जिन्हें तुमने नहीं देखा और तुम जो कर रहे थे अल्लाह उसको देख रहा था[2] (9) जब वे तुम पर तुम्हारे ऊपर से और नीचे से चढ़ आए[3] और जब निगाहें डगमगाने लगीं और कलेजे मुँह को आ गये और तुम अल्लाह से तरह–तरह के गुमान करने लगे (10) उस समय ईमान वालों की परीक्षा हो कर रह गई और उनको झिंझोड़ कर रख दिया गया (11) और जब मुनाफ़िक़ और दिल के रोगी कहने लगे कि अल्लाह और उसके रसूल ने जो हमसे वादा किया था वह सब धोखा था[4] (12) और जब उनमें एक गिरोह ने कहा कि ऐ यसरब वालो! तुम टिक नहीं सकते तो अब लौट चलो और उनमें कुछ लोग नबी से यह कह कह कर अनुमति लेने लगे कि हमारे घर खुले पड़े हैं जब कि वे खुले नहीं थे, उनका मक़सद तो भाग लेना था (13) और अगर वहां (मदीने में) चारों ओर से चढ़ाई हो जाए तो तुरंत स्वीकार कर लें और (उस समय) घरों में थोड़ा ही ठहरें (14) जब कि वे पहले से संकल्प ले चुके थे कि वे पीठ पीछे नहीं भागेंगे और अल्लाह के संकल्प की पूछ होनी है[5] (15)

(1) अल्लाह ने पैग़म्बरों से संकल्प लिया कि वे सच्ची बात उम्मत तक पहुंचा दें ताकि उसके बाद उनसे पूछ–पाछ हो सके और सच्चों का सच्चाई पर रहना साफ़ और ज़ाहिर हो और इनकार करने वालों को सच्चाई से इनकार करने पर सज़ा दी जाए (2) यह खंदक़ युद्ध का उल्लेख शुरु हो रहा है जिसको अहज़ाब युद्ध भी कहा जाता है इसलिए कि इसमें बनू नज़ीर के यहूदियों की साज़िश से कुरैश, बनू गुतफ़ान, बनू मुर्रह, बनू अश्जा, बनू किनाना, बनूफ़ुज़ारह ने मिल कर विशाल सेना तैयार की, सेना जब पवित्र मदीना रवाना हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से मश्वरा किया, उन्होंने गड्ढ़ा खोदने का मश्वरा दिया, घोर कठिनाई और उपवास की हालत में सहाबा ने साढ़े तीन मील लंबा और पाँच गज़ गहरा गड्ढ़ा खोदा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुद उपवास की हालत में भी इसमें शरीक रहे, सारी सेनाओं ने आकर गड्ढ़े के पार डेरा डाल दिया और एक महीने तक मुसलमानों पर बड़ी कठिन परिस्थितियाँ गुजरीं, अंततः अल्लाह ने घोर बर्फ़ीली आँधी भेजी जिससे उनके तंबू उखड़ गए, हाँडियाँ उलट गईं, सवारी के जानवर बिदक कर भागने लगे, इस प्रकार अल्लाह की मदद से इस मुसीबत से निजात मिली और वे सेनाएं घेराबंदी समाप्त करके चली गईं (3) ऊपर से तो वे सेनाएं थीं ही साथ ही बनू क़ुरैज़ह ने भी समझौते का उल्लंघन किया और वे भी उन सेनाओं से मिल गए उस समय मुसलमानों की कड़ी परीक्षा हुई और अनैच्छिक रूप से कुछ ग़लत चिंताएं आने लगीं जो ईमान के विरुद्ध नहीं (4) कुछ मुनाफ़िक़ कहने लगे कि पैग़म्बर साहब तो कहते थे कि मेरा धर्म पूरब व पश्चिम में फैलेगा और फ़ारस व रूम के महल भी मुझे दिखलाए गए, यहाँ तो मुसलमान शौच के लिए भी नहीं निकल सकते, वह वादे कहां गये? (5) ऐसी कठिन परिस्थितियों से मुनाफ़िक़ों के पोल खुल गई और बहाने कर–कर के भागने लगे कि हमारे घर असुरक्षित हैं, अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अगर अभी उनको मुसलमानों के खिलाफ़ फसाद भड़काने के लिए बुलाया जाए तो थोड़ी देर भी वे घरों में न टिकें तुरंत इस काम के लिए तैयार हो जाएं।

قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَاِذًا
لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٦﴾ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ
اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۚ وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ
اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧﴾ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ
لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَلَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٨﴾ اَشِحَّةً
عَلَيْكُمْ ۚ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ
اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ
سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ۗ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا
فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ۗ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٩﴾ يَحْسَبُوْنَ
الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ
بَادُوْنَ فِى الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ۗ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا
قٰتَلُوْٓا اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢٠﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ
لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ﴿٢١﴾ وَلَمَّا رَاَ
الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَ
صَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ﴿٢٢﴾

منزل٥

कह दीजिए कि अगर तुम मौत या क़त्ल होने से भागते हो तो तुम्हें भागना हरगिज़ काम न देगा और फिर भी तुम थोड़ा ही ऐश कर सकोगे (16) पूछिए कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकेगा अगर वह तुम्हारे लिए बुराई का इरादा कर ले, या (कौन है जो उसकी रहमत को रोक सकता है) अगर वह मेहरबानी ही का इरादा कर ले और वे अपने लिए न कोई समर्थक पा सकेंगे और न मददगार (17) और अल्लाह उन लोगों को खूब जानता है जो तुम में रोड़ा अटकाते हैं और अपने भाइयों से कहते हैं कि हमारे पास चले आओ और खुद बहुत ही कम जंग में शरीक होते हैं[1] (18) हाल यह है कि वे तुम पर बड़े हरीस (लोभी) हैं फिर जब डर का समय आता है तो आप देखेंगे कि वे डगर–डगर करती आँखों से आपको तकते हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी तारी होने लगे, फिर जब डर खत्म हो जाता है तो वे माल की लालच में आपसे मिल कर बड़ी तेज़–तेज़ ज़बानें चलाते हैं यह लोग हरगिज़ ईमान नहीं लाए, बस अल्लाह ने उनके सब काम बेकार कर दिये और यह अल्लाह के लिए बड़ा आसान है (19) वे समझते हैं कि सेनाएं अभी नहीं गईं और अगर सेनाएं आ ही पड़ेंगी तो वे चाहेंगे कि बद्दुओं में जाकर देहात में रहें, तुम्हारी खबरें मालूम करते रहें और अगर तुम्हारे बीच हों तो बहुत ही कम जंग करें[2] (20) निश्चित रूप से तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में बेहतरीन आदर्श मौजूद हैं इसलिए कि जो अल्लाह और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता हो और उसने अल्लाह को याद किया हो[3] (21) और जब ईमान वालों ने सेनाएं देखीं तो बोले इसी का तो हमसे अल्लाह ने और उसके रसूल ने वादा किया था और अल्लाह ने और उसके रसूल ने सच कहा और उनका ईमान और बात मानने की भावना और बढ़ गई (22)

---

(1) यह एक मुनाफ़िक़ की ओर इशारा है जो अपने घर में खाने–पीने में व्यस्त था और उसका एक भाई जो मुखलिस (निष्ठावान) मुसलमान था जिहाद में जाने के लिए तैयार था वह उससे कह रहा था कि कहाँ मुसीबत में पड़ रहे हो, आओ इत्मिनान से खाओ–पियो और रहो (2) यह मुनाफ़िक़ों का हाल बयान हो रहा है कि जंग के अवसरों पर लगता है कि उनको साँप सूंघ गया, आपको ऐसी निगाहों से देखते हैं कि लगता है कि मौत की बेहोशी तारी है, इस डर से कि आप कहीं जंग में शरीक होने का आदेश न दे दें और जब माल–ए–ग़नीमत (शत्रुधन) हासिल होता है तो माल की लालच में आकर आप से बातें बनाते हैं, जंग के अवसरों पर अकसर उनकी चाहत यही होती है कि वे देहातों में रहें और ख़बरें मालूम करते रहें, विजय प्राप्त होने पर तुरन्त हाज़िर हो जाएं और माल–ए–ग़नीमत में हिस्सा लगाने का उपाय करें (3) यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अडिगता देखो कि सबसे ज़्यादा चिंता और आशंका आपको है मगर क़दम बिल्कुल न डगमगाए, जो लोग आखिरत के सवाब (पुण्य) की उम्मीद रखते हैं और अल्लाह को ख़ूब याद करते हैं उनके लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का व्यक्तित्व बेहतरीन आदर्श और नमूना है, हर कथनी व करनी में उठने–बैठने में साहस व अडिगता में और हर मामले में चाहिए कि उन्हीं का अनुसरण हर हाल में किया जाए।

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ
مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿۲۳﴾ لِّيَجْزِيَ
اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ
يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۲۴﴾ وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۭ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۭ
وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿۲۵﴾ وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا
تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿۲۶﴾ وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَ
اَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَـُٔوْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿۲۷﴾
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿۲۸﴾
وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ
اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۲۹﴾ يٰنِسَاۗءَ
النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ
لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۳۰﴾

منزل ۵

उन्हीं ईमान वालों में वे लोग भी हैं कि उन्होंने अल्लाह से जो अहद (संकल्प) किया है वह पूरा कर दिखाया तो कुछ ने अपना ज़िम्मा पूरा कर दिया और कुछ इन्तिज़ार में हैं और वे ज़रा भी नहीं बदले[1] (23) ताकि अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे दे और मुनाफ़िक़ों को चाहे तो अज़ाब (दण्ड) दे या चाहे तो उनको तौबा की तौफ़ीक़ प्रदान कर दे, बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है (24) और अल्लाह ने काफ़िरों को गुस्से में भरा वापस कर दिया कुछ भलाई उनके हाथ न लगी और मुसलमानों की ओर से जंग के लिए खुद अल्लाह काफ़ी हो गया और अल्लाह बड़ी ताक़त रखता है ज़बर्दस्त है (25) और अहल–ए–किताब में जो मददगार हुए उनको अल्लाह ने उनके किलों से ला उतारा और उनके दिलों में धाक बिठा दी, कितनों को तुम क़त्ल कर रहे थे और कितनों को क़ैदी बना रहे थे[2] (26) और उनकी ज़मीनों, उनके शहरों और उनके मालों का अल्लाह ने तुमको वारिस बनाया और ऐसी जगहों का जहां तुमने कभी क़दम भी न रखा था, और अल्लाह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत (सामर्थ्य) रखता है[3] (27) ऐ नबी अपनी पत्नियों से कह दीजिए कि अगर तुम दुनिया का जीवन और उसकी शोभा चाहती हो तो आओ तुम्हें कुछ सामान ही दिला दूं और तुम्हें बेहतर तरीक़े पर विदा कर दूँ (28) और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल को और आख़िरत के घर को चाहती हो तो निश्चित रूप से अल्लाह ने तुम में अच्छे काम करने वालियों के लिए बड़ा बदला तैयार कर रखा है[4] (29) ऐ नबी की पत्नियो! तुम में किसी ने खुली अश्लीलता की तो उसके लिए दोहरा अज़ाब होगा और यह अल्लाह के लिए आसान है (30)

(1) मुनाफ़िक़ सेनाओं को देख कर फ़रार हो गए और ईमान वालों में और बढ़ोतरी हुई और वे पहाड़ की तरह जमे रहे, कुछ लोगों ने जान का उपहार प्रस्तुत कर दिया और कुछ लोग इन्तिज़ार में रहे, कठिन परिस्थितियां उनको ज़रा भी हिला न सकीं (2) यह बनू क़ुरैज़ह का उल्लेख है जिन्होंने मुसलमानों से किये हुई समझौते की तोड़ कर मुश्रिकों का साथ दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़न्दक युद्ध के बाद उनकी घेराबंदी की, अंततः वे किले से उतर आए और इस बात पर राज़ी हुए कि हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु उनका जो भी फैसला कर दें वे इस पर राज़ी हैं, हज़रत मुआज़ (रज़ि0) ने तौरात के अनुसार यह फ़ैसला किया कि सब योद्धा मार दिये जाएं और औरतों और बच्चो को क़ैदी बना लिया जाए अतः ऐसा ही हुआ (3) अल्लाह ने बनू क़ुरैज़ह के मालों का मुसलमानों को वारिस बनाया और आगे ख़ैबर का वादा भी हुआ, जहाँ मुसलमानों के क़दम अभी तक नहीं पहुंचे थे, हिजरत के सातवें साल वह भी विजय हो गया और वह भी ज़मीन मुसलमानों को मिली (4) इसकी पृष्ठि भूमि यह है कि ख़न्दक और बनू क़ुरैज़ह की विजय के बाद वे धर्म पत्नियाँ जिन्होंने हमेशा तंगी में जीवन गुज़ारा था आप से गुज़ारा–भत्ते में कुछ बढ़ोतरी की मांग की और उनमें से कुछ की ज़बान से यह भी निकल गया कि कैसर व किसरा की पत्नियाँ हर तरह से ऐश करें और हम लोग ऐसी तंगी में रहें, यद्यपि यह कोई पाप की बात न थी मगर उनकी प्रतिष्ठा के लिहाज़ से यह मांग उनके लिए शोभा न देती थी और क़ुरआन मजीद में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को निर्देश दिया गया कि धर्म–पत्नियों से बात साफ़ कर लें, अगर उनको पैग़म्बर के साथ रहना है तो उन्हें अपना सोचने का अंदाज़ बदलना होगा, उनका मक़ाम दूसरी औरतों से बुलंद है, उनकी निगाहों के सामने अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण होना चाहिए, इसके साथ ही उनको अधिकार दे दिया गया कि अगर वे दुनिया चाहें तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अलग हो जाएं, इस दशा में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनको उपहार देकर बेहतर तरीक़े पर विदा कर देंगे, धर्म–पित्नियों के सामने जब यह अधिकार रखा गया तो सबने एक ज़बान हो कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहने को अपना लिया, चाहे इसके लिए कैसी ही तंगी बर्दाश्त करनी पड़े।

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا
نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾ يٰنِسَآءَ
النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ
بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾
وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى
وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ
وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ
مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾
اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ
وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ
وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَ
الْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ
فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّ
الذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٣٥﴾

منزل ٥

और तुममें जो अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञाकारी रहेंगी और अच्छे काम करती रहेंगी हम उसको उसका बदला भी दोगुना देंगे और हमने उसके लिए इज़्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है (31) ऐ पैग़म्बर की पत्नियो! तुम हर किसी औरत की तरह नहीं हो[1] अगर तुम परहेज़गारी रखो, बस दब कर बात मत करना कहीं वह व्यक्ति जिसके दिल में रोग है उम्मीद न करने लग जाए और माकूल बात कहो[2] (32) और अपने घरों में मर्यादा के साथ रहो[3] और गुज़रे हुए जाहिलियत के युग की तरह बन–ठन कर मत निकलना[4] और नमाज़ क़ायम रखना और ज़कात देती रहना और अल्लाह और उसके रसूल की बात मानती रहना, ऐ (नबी के) घर वालो! निश्चित रूप से अल्लाह यही चाहता है कि तुम से मैल–कुचैल को दूर कर दे और तुम्हें पूरी तरह साफ कर दे[5] (33) और तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतें और हिकमत की जो बातें सुनाई जाती हैं उनको याद रखो बेशक अल्लाह बड़ा हिकमत वाला और हर चीज़ की ख़बर रखने वाला है (34) निश्चित रूप से आज्ञाकारी मर्द और आज्ञाकारी औरतें और बंदगी करने वाले मर्द और बंदगी करने वाली औरतें और सच्चे मर्द और सच्ची औरतें और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें और ख़ुशू (विनम्रता) रखने वाले मर्द और ख़ुशू रखने वाली औरतें और सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले मर्द और रक्षा करने वाली औरतें और अल्लाह को खूब याद करने वाले मर्द और खूब याद करने वाली औरतें उन सब के लिए अल्लाह ने माफ़ी और बड़ा बदला तैयार कर रखा है[6] (35)

(1) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की धर्म पत्नियों का मक़ाम आम औरतों से बुलंद है, अगर वे तक़वा अपनाएंगी तो उनको दोगुना बदला मिलेगा, और अगर गुनाह करेंगी तो उसका अज़ाब भी दोगुना होगा, इससे मालूम हुआ कि जिस व्यक्ति को पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जितनी नज़दीकी हो उसे उतना ही एहतियात करना चाहिए (2) इस आयत में नामहरम मर्दों के साथ औरतों की बातचीत का नियम बताया गया है कि वे आवाज़ में नज़ाकत पैदा न करें बल्कि फीके अंदाज़ में बात करें ताकि किसी के दिल में ख़्याल जड़ न पकड़ ले (3) इससे साफ़ मालूम होता है कि औरत का असल मक़ाम उसका अपना घर है, यद्यपि उसके लिए ज़रूरत के समय पर्दे के साथ निकलना दुरुस्त है मगर आयत के इस टुकड़े से यह नियम सामने आता है कि औरत की असल ज़िम्मेदारी घर और परिवार का निर्माण है, और ऐसी गतिविधियाँ जो इस मक़सद को ख़त्म करती हों वे ना मुनासिब हैं, और उनसे समाज का संतुलन बिगड़ जाता है (4) पहली जाहिलियत से आशाय है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैग़म्बरी से पहले का ज़माना, जिसमें औरतें खुलेआम बनाव–श्रृंगार करके निकलती थीं और इससे दूसरी जाहिलियत की ओर भी संकेत होता है, जिसके रूप और निशानियाँ हमारी आँखों के सामने हैं कि इसने पहली जाहिलियत को भी मात दे दी है (5) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की धर्म पत्नियों का उल्लेख चल ही रहा है वे अहल–ए–बैत में दाखिल हैं ही उनके अलावा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुपुत्रियाँ और उनकी संतान भी अहल–ए–बैत में दाखिल हैं, एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा, अज़रत अली, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी चादर में ढ़ाँप लिया और यह आयत तिलावत की और कहा कि यह मेरे अहल–ए–बैत (घर वाले) हैं (6) पवित्र क़ुरआन में दिये गये आदेश मर्दों के लिए भी हैं और औरतों के लिए भी, किंतु कुछ औरतों का विचार यह था कि विशेष रूप से औरतों के लिए कोई खुश ख़बरी होती उस पर यह आयत उतरी।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ
يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ
ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ؕ٣٦ وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْۤ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ
عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ
مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ؕ فَلَمَّا
قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ
حَرَجٌ فِيْۤ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَكَانَ اَمْرُ
اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ٣٧ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ
سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرَا ۙ٣٨
الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا
اللّٰهَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ٣٩ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ
وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمًا ٤٠ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۙ٤١ وَّ
سَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ٤٢ هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ
لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ٤٣

منزل ٥

और जब अल्लाह और उसके रसूल किसी मामले में फ़ैसला कर दें तो किसी ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरत के लिए गुंजाइश नहीं कि वे अपने मामले में अधिकृत रहें और जिसने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की तो वह खुली गुमराही में पड़ गया[1] (36) और जब आप उससे यह बात कर रहे थे जिस पर अल्लाह ने एहसान किया और आपने भी उस पर एहसान किया कि अपनी पत्नी को अपने पास ही रखो और अल्लाह से डरो और आपके मन में वह बात थी जो अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था और आपको लोगों (के कहने सुनने) का लिहाज़ था जबकि अल्लाह का ज़्यादा हक़ है कि आप उसका लिहाज़ रखें, फिर जब जैद उससे ग़रज़ पूरी कर चुके तो हमने उसको आपके निकाह में दे दिया ताकि ईमान वालों के लिए अपने मुँह बोले बेटों की पत्नियों के संबंध में जबकि वे उनसे अपनी ग़रज़ पूरी कर चुके हों कोई तंगी न रहे और अल्लाह का आदेश तो होकर रहना ही था[2] (37) नबी के लिए उस चीज़ में कोई हर्ज नहीं जो अल्लाह ने उनके लिए तय कर दी, जो पहले गुज़र चुके उनके संबंध में भी अल्लाह की व्यवस्था यही थी और अल्लाह का फ़ैसला पूरी तरह निर्धारित है (38) जो अल्लाह के संदेश पहुंचाते थे और उसी से डरते थे और अल्लाह के सिवा किसी से डर न रखते थे और किफ़ायत करने के लिए अल्लाह ही क़ाफ़ी है (39) मुहम्मद सल्ल0 तुम्हारे मर्दों में किसी के बाप नहीं लेकिन व अल्लाह के रसूल और पैग़म्बरों पर मोहर हैं और अल्लाह हर चीज़ से खूब अवगत है[3] (40) ऐ ईमान वालो! अल्लाह को ख़ूब याद करो (41) और सुबह व शाम इसकी पाबंदी करो (42) वही है जो तुम पर रहमत करता है और उसके फ़रिश्ते रहमत की (दुआ करते हैं) ताकि वह तुम्हें अंधेरों से निकाल कर रौशनी में ले आए और वह तो ईमान वालों के लिए बड़ा मेहरबान है (43)

(1) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ सहाबा का रिश्ता कुछ महिलाओं से लगा दिया लेकिन महिलाओं या उनके रिश्तेदारों ने परिवार के ऊँच–नींच या आर्थिक अंतर की वजह से रिश्ता मंजूर न किया, उस पर यह आयत उतरी, और इसमें यह नियम बता दिया गया कि अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी चीज़ का आदेश दे दें तो उसकी अवमानना गुमराही है, ईमान वालों के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात मानना हर हाल में ज़रूरी है (2) हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज़ाद किये हुए गुलाम थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पैग़म्बरी से पहले उनको अपना बेटा बना लिया था, इसलिए वे ज़ैद पुत्र मुहम्मद कहलाते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी शादी अपनी फूफी जाद बहन ज़ैनब से करनी चाही तो उनको संकोच हुआ, लेकिन जब ऊपर वाली आयत उतरी तो वे राज़ी हो गईं, मगर निभ न सकी और कुछ ही दिनों में उन्होंने तलाक़ देने का इरादा किया, इसी बीच आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वह्य आई कि ज़ैद तलाक़ दे देंगे और आपको अल्लाह के आदेश से उनसे निकाह करना होगा, ताकि मुँहबोले बेटे की पत्नी को जो बुरा समझा जाता था इस रिवाज का प्रेक्टिकल रूप से खात्मा हो, हज़रत ज़ैद ने जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तलाक़ का उल्लेख किया तो हर सम्भव आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको रोकना चाहा, यद्यपि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जानते थे कि वे तलाक़ देंगे, लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस ख़्याल से इसको छिपाया कि मैंने ज़ैद ही से उनका निकाह कराया, अब वे तलाक़ दें और मैं निकाह करूँ तो लोग क्या कहेंगे, जब तक अंतिम आदेश नहीं आ जाता मुझे विवाह का ही

⇒

मंज़िल ५

जिस दिन वे उससे मिलेंगे उनका स्वागत सलाम से होगा और उसने उनके लिए बड़ी इज़्ज़त का बदला तैयार कर रखा है (44) ऐ नबी! हमने आपको गवाही देने वाला और शुभसमाचार सुनाने वाला और सावधान करने वाला बना कर भेजा है (45) और अल्लाह के आदेश से उसकी ओर बुलाने वाला और रोशनी बिखेरने वाला चिराग (बनाया है) (46) और आप ईमान वालों को शुभ समाचार दे दीजिए कि उनको अल्लाह की ओर से बड़ा फ़ज़ल (कृपा) हासिल होने वाला है (47) और काफ़िरों और मुनाफ़िकों की बात मत मानिए और उनको तकलीफ़ पहुंचाने की परवाह मत कीजिए और अल्लाह पर भरोसा रखिए और अल्लाह ही काम बनाने के लिए काफी है (48) ऐ ईमान वालो! जब तुम ईमान वाली औरतों से निकाह करो फिर उनको हाथ लगाने से पहले तलाक दे दो तो तुम्हारे लिए उनके ज़िम्मे कोई इद्दत (विशेष समयावधि) नहीं है[1] जिसकी गिनती तुम्हें गिननी पड़े बस तुम उन्हें कुछ दे दिला दो और अच्छी तरह विदा करो[2] (49) ऐ नबी! हमने आपके लिए आपकी पत्नियों को हलाल किया जिनके महेर आप दे चुके और जिन लौण्डियों के आप मालिक हुए जो अल्लाह ने माल–ए–ग़नीमत के तौर पर आपको दी हों और आपके चचा की बेटियाँ और आप की फूफी की बेटियाँ और आपके मामू की बेटियां और आपकी खाला की बेटियाँ जिन्होंने आपके साथ वतन छोड़ा और कोई भी ईमान वाली औरत अगर वह पैग़म्बर के लिए अपने आपको पेश कर दे अगर पैग़म्बर उससे निकाह करना चाहें, (यह आदेश) सिर्फ़ आपके लिए है सब मुसलमानों के लिए नहीं, हमने उन पर उनकी पत्नियों और लौण्डियों के बारे में जो ज़रूरी कर रखा है वह हम जानते हैं (और आपके लिए अलग आदेश इसलिए हैं) ताकि आप पर कोई तंगी न रहे और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है[3] (50)

⟹ मश्वरा देना चाहिए, अंततः हज़रत ज़ैद ने तलाक़ दे ही दी और आयत का यह टुकड़ा ''ज़व्वजना कहा'' कि हमने उनसे आपका निकाह करा दिया'' भी उतरा (3) आयत से बात साफ़ हो गई कि मुँहबोला बेटा वास्तव में बेटा नहीं होता और "ख़ातमुन्नबिय्यीन'' कह कर यह अक़ीदा (विश्वास) भी साफ़ बयान कर दिया गया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगमन से पैग़म्बरों के क्रम पर मोहर लग गई, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैग़म्बरी क़यामत तक के लिए है, अब कोई नया पैग़म्बर आने वाला नहीं है।

(1) हाथ लगाने का मतलब विदाई और पत्नी के साथ तन्हाई में समय बिताना है, अगर इससे पहले तलाक़ दे दी तो इद्दत ज़रूरी नहीं, तलाक़ दी हुई औरत तुरन्त निकाह कर सकती हैं (2) इससे आशय तलाक के बाद विदा करते समय एक जोड़ा है जिसका पारिभाषिक शब्द है ''मुतअह'' यह हर सूरत में मर्द को देना चाहिए चाहे विदाई से पहले तलाक़ हो या विदाई के बाद, यह महर के अलावा है, और इसलिए है ताकि यह अलगाव भी सद्व्यवहार के साथ हो (3) इस आयत में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए विशेष आदेश बयान किये जा रहे हैं, पहला आदेश चार पत्नियों से अधिक विवाह करने का है, दूसरा यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी अहल–ए–किताब औरत से विवाह नहीं कर सकते और न किसी ऐसी औरत से जिसने हिजरत न की हो जब कि आम मुसलमानों को इसकी अनुमति दे दी गई थी, और तीसरा विशेष आदेश यह है कि अगर कोई औरत आपसे बिना महर के विवाह करना चाहे और आप सहमत हों तो कर सकते हैं मगर व्यवहारिक रूप से आपने इस छूट पर कभी अमल न किया।

تُرْجِي مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤْوِي إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ ۖ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ
مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ
وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَا آتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا
فِي قُلُوبِكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ﴿٥١﴾ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ
مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ
حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
رَقِيبًا ﴿٥٢﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ
إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرَ نَاظِرِينَ إِنَاهُ وَلَٰكِنْ إِذَا
دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ
لِحَدِيثٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِي مِنْكُمْ ۖ
وَاللَّهُ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ ۚ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا
فَاسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ۚ ذَٰلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۚ
وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تَنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ
مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ﴿٥٣﴾ إِنْ
تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٥٤﴾

منزل٥

आप उनमें जिनको चाहें अलग करें और जिनको चाहें अपने आपसे क़रीब करें और जिनको आपने अलग किया हो उनमें भी जिनको चाहें (दोबारा क़रीब कर लें)[1] इससे लगता है कि उन सबकी आँखें ठंडी होंगी और वे दुखी न होंगी, और आपने उन्हें जो दिया है उस पर सबकी सब खुश होंगी और तुम्हारे दिलों में जो भी है अल्लाह तआला जानता है और अल्लाह खूब जानता है सहनशील है[2] (51) अब इसके बाद आपके लिए और औरतें दुरूस्त नहीं हैं और न इन (पत्नियों) की जगह और पत्नियाँ (वैध हैं) चाहे उनकी खूबी आपको भा जाए सिवाय उन (लौण्डियों) के जिसके आप मालिक हो जाएं, और अल्लाह हर चीज़ पर निगरानी रखता है[3] (52) ऐ ईमान वालो! पैग़म्बर के घरों में प्रवेश मत करो जब तक तुम्हें खाने के लिए अनुमति न मिल जाए उसके पकने की राह तकते न रहो, हाँ जब तुम्हें बुलाया जाए तो प्रवेश करो फिर खा चुको तो अपनी अपनी राह लो, बातों में मन लगाते मत बैठो, निश्चित रूप से यह चीज़ नबी को तकलीफ़ पहुँचाती है बस वे तुमसे शर्म करते हैं और अल्लाह को ठीक बात कहने में कोई शर्म नहीं, और जब तुम कोई सामान माँगो तो परदे के पीछे से उनसे माँग लो, यह चीज़ तुम्हारे दिलों के लिए भी ज़्यादा पवित्रता का साधन है और उनके दिलों के लिए भी और तुम्हें इसकी अनुमति नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ पहुंचाओ और न यह कि उनके बाद उनकी पत्नियों से विवाह करो, बेशक यह अल्लाह के यहाँ बड़ी संगीन बात है[4] (53) तुम अगर कुछ ज़ाहिर करते हो या उसे छिपाते हो तो निश्चित रूप से अल्लाह हर चीज़ को खूब जानता है[5] (54)

---

(1) यह चौथा विशेष आदेश है जो दिया जा रहा है, आम मुसलमानों पर अनिवार्य है कि अगर एक से अधिक पत्नियाँ हों तो उनके साथ बराबरी की जाए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इससे अलग किया जा रहा है कि आप जब चाहें जिसके साथ चाहें रहें, लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी भी इस छूट का फ़ायदा नहीं उठाया और बराबरी का मामला किया यहाँ तक कि बीमारी की हालत में भी बराबरी करते रहे, जब बीमारी सख़्त हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अनुमति ले कर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के यहाँ ठहरे (2) जब धर्म पत्नियों को मालूम हो जाएगा कि अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बराबरी को अनिवार्य नहीं किया और उसके बावजूद आप सब का अधिकार बराबर अदा करेंगे तो इससे हर एक को ख़ुशी होगी (3) धर्म पत्नियों ने जिस सहनशीलता और बर्दाश्त के साथ जीवन गुज़ारा फिर अधिकार के समय भी सबने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहने को अपनाया और तंगी के साथ ज़िन्दगी को पसंद किया, उसके बदले में अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आदेश दिया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब कोई विवाह न करें और जो पत्नियाँ हैं उनको बाक़ी रखें (4) हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वलीमा किया, कुछ लोग पहले ही से आ कर बैठ गए और कुछ बाद तक बैठे रहे, जिससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की व्यस्तता में अंतर पड़ा और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ पहुंची, इसकी मनाही की गई, और परदे का आदेश भी आ गया कि लोग धर्म पत्नियों के सामने न आएं, कोई चीज़ मांगनी भी हो तो परदे के पीछे से मांगें (5) विशेष रूप से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की धर्म पत्नियों से विवाह के बारे में भी चेताया जा रहा है कि इसका ख़्याल भी दिल में न आए कि फिर खुद इन धर्म पत्नियों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन के बाद अभूतपूर्व परहेज़गारी और सहनशीलता और अल्लाह पर भरोसे के साथ ज़िन्दगियाँ गुज़ार दीं वह सारी उम्मत (मुस्लिम समुदाय) की औरतों के लिए एक आदर्श हैं।

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْٓ اٰبَآئِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآئِهِنَّ وَلَآ اِخْوَانِهِنَّ
وَلَآ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا
مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيْدًا (55) اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۭ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا (56) اِنَّ الَّذِيْنَ
يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ
لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا (57) وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ
بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا (58) يٰٓاَيُّهَا
النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ
عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ۭ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۭ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا (59) لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ
الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ
لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَآ اِلَّا قَلِيْلًا (60) مَّلْعُوْنِيْنَ
اَيْنَمَا ثُقِفُوْٓا اُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا (61) سُنَّةَ اللّٰهِ فِي
الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا (62)

منزل ٥

न उन औरतों पर कोई पाप है कि वे अपने बापों के सामने हो, न अपने बेटों, के न अपने भाइयों के, न अपने भतीजों के, न अपने भांजों के और न अपनी औरतों के और न अपनी मिल्कियत के गुलाम लौण्डियों के और तुम सब अल्लाह से डरती रहो निश्चित रूप से अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है (55) बेशक अल्लाह और उसके फरिश्ते रसूल पर दुरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो! तुम भी उन पर दुरूद भेजा करो और खूब सलाम पढ़ा करो[1] (56) जो लोग भी अल्लाह और उसके रसूल को तकलीफ़ पहुंचाते हैं उन पर दुनिया व आखिरत में अल्लाह ने फ़िटकार की है और उनके लिए दुनिया व आखिरत में अपमानजनक सज़ा तैयार कर रखा है (57) और जो भी ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों पर बिना उनके कुछ किये आरोप लगाते हैं तो ऐसों ने बड़ा बुहतान और खुला पाप अपने सिर लिया (58) ऐ पैग़म्बर! अपनी पत्नियों और अपनी बेटियों से और मुसलमानों की पत्नियों से कह दीजिए कि वे अपनी ओढ़नियाँ अपने ऊपर लटका लिया करें[2] इसमें लगता है कि पहचान पड़ें तो उनको तकलीफ न दी जाए और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है[3] (59) अगर मुनाफ़िक और वे लोग जिनके दिलों में रोग है और मदीने में बुराई फैलाने वाले बाज़ न आए तो हम आपको उनके पीछे लगा देंगे फिर वहां वे कुछ ही समय आपके साथ रह पाएंगे (60) वे फिटकारे हुए लोग, जहां कहीं मिलेंगे पकड़ें जाएंगे और अच्छी तरह मारे जाएंगे (61) यह अल्लाह का नियम उन लोगों में भी रहा जो पहले गुज़र चुके हैं और आप अल्लाह के नियम में कोई बदलाव न पाएंगे[4] (62)

(1) पैग़म्बर पर दुरूद का मतलब है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए आदर और प्रशंसा के साथ अल्लाह की दया और कृपा चाहना, फिर ''सलात'' का संबंध जिससे होगा उसके मक़ाम व मर्तबे के लिहाज़ से उसके अर्थ निर्धारित होंगे, अल्लाह की ''सलात'' रहमत भेजना और फ़रिश्तों और मुसलमानों की ''सलात'' रहमत की दुआ करना है (2) इस आयत ने साफ़ कर दिया कि परदे का आदेश केवल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की धर्म पत्नियों के लिए नहीं है बल्कि वह तमाम मुस्लिम औरतों के लिए है वे जब भी बाहर निकलें तो वे अपनी चादरों को अपने चेहरों पर लटका कर उन्हें छिपा लिया करें, इसका रूप जो भी अपनाया जाए, मक़सद यह है कि आँखों के अलावा बाकी चेहरा छिपा हुआ होना चाहिए (3) कुछ मुनाफ़िक़ औरतों को रास्ते में छेड़ा करते थे, यहाँ परदे की यह हिकमत बयान की गई कि वह शरीफ़ और सदाचारी औरतों की पहचान भी होगी, फिर उसके बाद मुनाफ़िकों को उन्हें छेड़ने और सताने की हिम्मत न होगी (4) मुनाफ़िकों को चेतावनी दी गई है कि उन्होंने अपनी ग़लत हरकतें न छोड़ीं तो उनकी मुनाफिकत साफ़ ज़ाहिर हो जाएगी, फिर उनके साथ दुश्मनों जैसा व्यवहार किया जाएगा और वे मदीने में न रह सकेंगे।

يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ اللَّهِ ۚ وَمَا
يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ﴿٦٣﴾ إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ
وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ﴿٦٤﴾ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَّا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا
نَصِيرًا ﴿٦٥﴾ يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَا أَطَعْنَا
اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَا ﴿٦٦﴾ وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا
فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا ﴿٦٧﴾ رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ
لَعْنًا كَبِيرًا ﴿٦٨﴾ ع يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا
مُوسَىٰ فَبَرَّأَهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا ۚ وَكَانَ عِندَ اللَّهِ وَجِيهًا ﴿٦٩﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ﴿٧٠﴾ يُصْلِحْ
لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٧١﴾ إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَن يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَ
حَمَلَهَا الْإِنسَانُ ۖ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٧٢﴾ لِّيُعَذِّبَ اللَّهُ
الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ
اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٧٣﴾ ع

منزل٥

लोग आपसे क़यामत के बारे में पूछते हैं, बता दीजिए कि इसकी जानकारी सिर्फ़ अल्लाह को है और आप को क्या पता, हो सकता है क़यामत करीब ही हो (63) बेशक न मानने वालों पर अल्लाह ने फिटकार की है और दहकती आग उनके लिए तैयार कर रखी है (64) हमेशा उसी में रहेंगे न उनको कोई समर्थक मिलेगा और न मददगार (65) जिस दिन उनके चेहरे आग में उलटे जाएंगे, वे कहेंगे काश कि हमने अल्लाह की बात मान ली होती और रसूल का कहा कर लिया होता (66) और कहेंगे ऐ हमारे पालनहार! हमने सरदारों और अपने बड़ों की बात मानी तो उन्होंने हमें गुमराह किया (67) ऐ हमारे पालनहार! उनको दोहरा अज़ाब दे और उन पर बड़ी फिटकार बरसा (68) ऐ ईमान वालो! उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने मूसा को परेशान किया फिर अल्लाह ने उनको उस आरोप से बरी कर दिया जो उन्होंने लगाया और वे अल्लाह के यहाँ इज़्ज़तदार थे[1] (69) ऐ ईमान वालो! अल्लाह का लिहाज़ रखो और जंची तुली बात कहो (70) वह तुम्हारे लिए तुम्हारे कामों को बना देगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे पापों को माफ़ कर देगा और जो भी अल्लाह और उसके रसूल की बात मानेगा तो उसने बड़ी सफ़लता प्राप्त की (71) हमने अमानत को आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने रखा तो उन्होंने उसको उठाना स्वीकार न किया और उससे डर गये और इनसान ने उसे उठा लिया बेशक वह बड़ा निडर व नादान ठहरा [2] (72) ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और शिर्क करने वाले मर्दों और शिर्क करने वाली औरतों को सज़ा दे और ईमान वाले मर्दों और औरतों की तौबा कुबूल करे और अल्लाह तो बहुत माफ़ करने वाला बड़ा दयालु है (73)

(1) बनी इस्राईल ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को तरह–तरह से सताया और उन पर आरोप लगाये, यहाँ मुस्लिम समुदाय को सम्बोधित करके कहा जा रहा है कि तुम अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में कहीं ऐसी हरकत न कर बैठना (2) अमानत का मतलब यहां शरीअत के आदेशों को अपनाने की ज़िम्मेदारी अर्थात अपनी आज़ाद मर्ज़ी से अल्लाह के आदेशों का अनुपालन की ज़िम्मेदारी लेना, आदेशों की पाबंदी पर जन्नत का वादा और नाफ़रमानी पर जहन्नम की धमकी दी गई, बड़ी–बड़ी सृष्टि उसको उठाने से डरती मगर इनसान ने इस धरोहर (अमानत) के बोझ को उठा लिया ''ज़लूमन'' उसको इसीलिए कहा गया कि उसको अपने ऊपर भी तरस न आया और ''जहूल'' इसलिए कहा गया कि अंजाम से भी वह बेखबर रहा, यह गुण विशेष रूप से उन लोगों का है जो धरोहर लेकर भूल गये, आगे उसका विवरण दे दिया कि उसके नतीजे में जो भी नाफ़रमानी करेगा खुल करके या छिप कर, उसको सज़ा मिलेगी और जो अनुसरण और पालन करेगा वह सफल होगा और अल्लाह की ओर उसको रहमत व मगफ़िरत का परवाना मिलेगा।

سُوْرَةُ سَبَاٍ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعٌ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ
الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ① يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي
الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ
فِيْهَا ؕ وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ ② وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا
السَّاعَةُ ؕ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ
مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَلَاۤ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ
وَلَاۤ اَكْبَرُ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ③ لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ④ وَالَّذِيْنَ
سَعَوْ فِيْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ
اَلِيْمٌ ⑤ وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ
رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِيْۤ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ⑥
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ
اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ⑦

منزل ٥

सूरह सबा

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

असल प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिस की शान यह है कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब उसी का है और आख़िरत में भी प्रशंसा उसी की है और वही हिकमत वाला है पूरी ख़बर रखता है (1) जो कुछ ज़मीन के अन्दर जाता है और जो उससे निकलता है और जो आसमान से उतरता है और जो उसमें चढ़ता है वह हर चीज़ को जानता है और वही बहुत रहम करने वाला माफ़ करने वाला है (2) और जिन्होंने बात न मानी वे बोले क़यामत हम पर नहीं आएगी, बता दीजिए क्यों नहीं मेरे उस पालनहार की क़सम जो ढ़के छिपे को जानने वाला है वह तुम पर आकर रहेगी, आसमानों और ज़मीन में कोई कण भी उससे छिप नहीं सकता, और न उससे छोटी कोई चीज़ है और न उससे बड़ी जो खुली किताब में न हो (3) ताकि वह मानने वालों और अच्छे काम करने वालों को बदला दे दे, ऐसे लोगों ही के लिए माफ़ी और इज़्ज़त की रोज़ी है[1] (4) और जिन्होंने हमारी निशानियों को नीचा दिखाने के लिए कोशिश की ऐसे लोगों के लिए दुखद सज़ा का अज़ाब है[2] (5) और जिनको ज्ञान मिला वे देख रहे हैं कि आपके पालनहार की ओर से आप पर जो उतरा है वही ठीक है और वही रास्ता बताता है उस ज़बरदस्त ख़ूबियों वाले का (6) और न मानने वाले कहते है कि हम तुम्हें ऐसे व्यक्ति के बारे में बताएं जो यह ख़बर देता है कि जब तुम पूरी तरह चूर–चूर कर दिये जाओगे तो फिर तुम्हें नया बनाया जाएगा[3] (7)

(1) क़यामत इसलिए आकर रहेगी कि हर आदमी को अपने किये का बदला मिल जाए (2) जिनका काम ही यह है कि वे पवित्र क़ुरआन का, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का और इस्लामी प्रतीकों का मज़ाक़ उड़ाते हैं और उनको नीचा दिखाने के काम में व्यस्त हैं (3) जो अल्लाह कण–कण का मालिक है जो चाहे ज़मीन के भीतर ले जाए और जो चाहे निकाले, एक इंसान के मर कर मिट्टी में मिल जाने के बाद उस अल्लाह के लिए उसका निकालना क्या कठिन है, जो लोग सच्चे दिल से सोचते हैं वे पैग़म्बरों की बताई हुई इस वास्तविकता को मानते हैं और जो सच्चे दिल से नहीं सोचते और न सोचना चाहते हैं उनका जवाब वही होता है जो आगे आयात में आ रहा है।

اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِالْاٰخِرَةِ فِى الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ﴿۸﴾ اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا
بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ
بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ﴿۹﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ؕ
يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ﴿۱۰﴾ اَنِ اعْمَلْ
سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِى السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرٌ ﴿۱۱﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَ
اَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ؕ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ
رَبِّهٖ ؕ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿۱۲﴾
يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ
وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ؕ وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ
الشَّكُوْرُ ﴿۱۳﴾ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى مَوْتِهٖٓ
اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ
اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِى الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿۱۴﴾

منزل۵

क्या उसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है या उसको कुछ पागलपन है? बात यह है कि जो आख़िरत को नहीं मानते वे अज़ाब में हैं और गुमराही में दूर जा पड़े हैं[1] (8) भला उन्होंने अपने सामने और अपने पीछे आसमान और ज़मीन को नहीं देखा अगर हम चाहेंगे तो ज़मीन में उनको धंसा दें या आसमान के कुछ टुकड़े उन पर गिरा दें, निश्चित रूप से इसमें हर अल्लाह की तरफ़ लौटने (तौबा करने) वाले बंदे के लिए एक निशानी है (9) और हमने दाऊद को अपने पास से फ़ज़्ल प्रदान किया, ऐ पहाड़ो! उनके साथ तस्बीह पढ़ो और ऐ पक्षियो! तुम भी, और हमने तुम्हारे लिए लोहे को नर्म कर दिया[2] (10) कि बड़ी-बड़ी कवचें बनाओ और ठीक अनुमान से कड़ियाँ जोड़ो, और अच्छे काम करो निश्चित रूप से तुम जो भी करते हो मैं उस पर पूरी निगाह रखता हूँ (11) और हमने सुलैमान के लिए हवा को काम में लगा दिया उसकी सुबह की यात्रा भी एक महीने (की दूरी) की होती थी और शाम की यात्रा भी एक महीने (की दूरी)[3] की, और उनके लिए हमने तांबे का स्रोत बहा दिया और जिन्नों में कितने उनके पालनहार के आदेश से उनके सामने काम में लगे रहते और जो भी उनमें हमारे आदेश से हटता हम उसको आग का अज़ाब चखाते (12) वे उनके लिए जो चाहते बना देते किले और प्रतिमाएं और हौज़ जैसी (बड़ी-बड़ी) लग्नें और जमी जमाई देगें, ऐ दाऊद के परिवार वालो! पूरे तौर पर सरापा शुक्र (कृतज्ञ) बन कर काम किये जाओ और मेरे बंदों में कई एहसान मानने वाले हैं (13) फिर हमने जब उन पर मौत तारी कर दी तो उनको मौत का पता दीमक से चला जो उनकी लकड़ी खाती रही फिर जब वे गिरे तो जिन्नों के सामने बात आई कि अगर वे ढके छिपे को जानते तो अपमान की तकलीफ़ में न पड़े रहते[4] (14)

(1) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आरोप लगाते हैं जब कि वे खुद गुमराही के नतीजे में अज़ाब के भागी हो गये और वे इतने बुद्धिहीन हो चुके कि वे सत्य को समझने की योग्यता ही खो बैठे और यह भुला बैठे कि सब ज़मीन व आसमान अल्लाह की मिल्कियत (स्वामित्व) में हैं, जिसको चाहे वह धंसा दे और जिस पर चाहे ऊपर से कोई टुकड़ा गिरा दे फिर कौन बचा सकता है (2) हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम का लहन (खूबसूरत आवाज़) मशहूर है, जब वे हम्द (प्रशंसा) व तस्बीह को लय से पढ़ते तो अल्लाह के आदेश से पहाड़ और पक्षी भी उनकी आवाज़ में आवाज़ मिलाते, दूसरा उनका मुअजिज़ा यह था कि लोहा उनके हाथ में नरम हो जाता था और उस ज़माने में जंगों (युद्धों) का ज़ोर था, लोग उनमें जिरहों का प्रयोग करते थे, अल्लाह ने उनको यह गुण और कौशल दिया था कि वे जैसी चाहते ज़िरह तैयार कर लेते थे (3) हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह ने यह ताक़त दी थी कि महीने भर की यात्रा घण्टों में तय हो जाती, दूसरा जो मुअजिज़ा यह था कि तांबे को जिस तरह चाहते पिघला लेते थे, इस प्रकार उससे हर तरह की कृतियाँ तैयार हो जाती थीं, चित्रों से आशय ऐसा लगता है निर्जीव चीज़ों के चित्र हैं, इसलिए कि तौरेत से मालूम होता है कि जीवों के चित्र उन की शरीअत (धर्मशास्त्र) में भी अवैध थे (4) दुष्ट जिन्नात हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की निगरानी ही में काम करते थे, जब उन्होंने "बैतुल मक्दिस" का निमार्ण शुरु किया तो एक लाठी के सहारे निगरानी के लिए खड़े हो गये और अल्लाह कि आदेश से इसी हाल में उनका निधन हो गया, लेकिन शरीर इस तरह रहा कि जिन्नात उनको ज़िन्दा समझते रहे यहाँ तक कि काम पूरा होने के क़रीब हो गया तो लकड़ी को दीमक चाट गई और शरीर गिर पड़ा, इस तरह जिन्नातों को यह एहसास हुआ कि अगर वे ढकी-छिपी बात जानते होते तो हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की मौत की जानकारी हो जाती और वे इस दुखद काम से छुटकारा पाते।

बेशक (क़ौम) सबा के लिए जहाँ वे रहते थे वहीं एक निशानी मौजूद थी, दाएं और बाएं दो बाग़ थे, अपने पालनहार का दिया खाओ और उसके आभारी हो, शहर भी खूब और पालनहार भी माफ़ करने वाला[1] (15) फिर उन्होंने मुँह मोड़ा तो हमने उन पर शक्तिशाली बाढ़ छोड़ दी और उनके दो बाग़ों को ऐसे दो बाग़ों मे बदल दिया, जो बुरे स्वाद वाले फलों, छांव के पेड़ों और सिदरह[2] के कुछ पेड़ों वाले थे (16) यह हमने उनको उनकी नाशुक्री का बदला दिया और ऐसे नाशुक्रों को हम सज़ा ही देते हैं (17) और हमने उनके बीच और उनकी बस्तियों के बीच जिनमें हमने बरकत रखी है[3], (क्रमवार) बस्तियाँ बसाई थी जो नज़र आती थीं और उनमें यात्रा को (मंजिलों में) बांट दिया था, उनमें रातों और दिनों में निर्भय होकर यात्रा करो (18) बस वे कहने लगे ऐ हमारे पालनहार! हमारी यात्राओं (कि मंज़िलों) को दूर–दूर कर दे, और उन्होंने अपने साथ अन्याय किया तो हमने उनको पुरानी कहानी बना दी और उनको टुकड़े–टुकड़े कर डाला, निश्चित रूप से इसमें हर ज़माने वाले हक़ को स्वीकार करने वाले के लिए निशानियां हैं (19) और वास्तविक रूप से इब्लीस ने उनके बारे में अपना विचार सही कर दिया, बस वे उसी के पीछे हो लिए सिवाय ईमान वालों के एक गिरोह के[4] (20) और उसका उन पर कोई दबाव न था लेकिन यह इसलिए हुआ ताकि हम जान लें कि कौन आख़िरत पर ईमान रखता है, कौन उसके बारे में संदेह में पड़ा है और आपका पालनहार हर चीज़ पर पूरी नज़र रखता है[5] (21) कह दीजिए कि अल्लाह के अलावा तुम जिसका दावा करते हो उनको पुकारो वे आसमानों व ज़मीन में कण मात्र किसी चीज़ के मालिक नहीं और न उनका उन दोनों में कोई हिस्सा है और न उनमें कोई उसका मददगार है (22)

(1) क़ौम–ए–सबा यमन में आबाद थे, उसको हर तरह की खुशहाली हासिल थी, दोनों तरफ हरे–भरे बाग़ थे, रास्ते शान्तिपूर्ण थे, वे अपनी खुशहाली में मस्त हो गए, अल्लाह ने उनके सुधार के लिए पैग़म्बरों को भेजा लेकिन वे अपनी कुकृत्यों से बाज़ न आए तो अल्लाह ने "मआरिब" का बांध उन पर खोल दिया, जिसके नतीजे में वे तितर–बितर हो कर रह गये (2) "सिदरह" के शोध के लिए सूरह अन्नज्म का हाशिया पृष्ठ सं0 527 को देखें (3) इससे आशय शाम (सीरिया) देश है जहां यमन वासियों का व्यवसायिक आवागमन रहा करता था, अल्लाह का करना कि यमन से शाम तक लगातार बस्तियाँ थीं और ऐसे दूरी पर थीं कि आदमी सुबह निकले तो दोपहर तक किसी बस्ती में पहुंच कर खाये पिये और आराम करे, अस्र (शाम) को चले तो रात को मंजिल मिल जाए, और यह सारी बस्तियाँ रास्ते पर ही थीं, दूर से नज़र आ जाती थीं, अल्लाह का दिया आराम उनको न भाया और उन्होंने खुद अपने लिए बद्दुआ की कि यात्रा का पता नहीं चलता, मंजिलें दूर हो जातीं और यात्रा की परेशानियाँ हों तो यात्रा मालूम हो (4) इब्लीस ने कहा था कि मैं आदम की संतान को जड़ से उखाड़ फेंकूंगा, वह विचार इस क़ौम के नाफ़रमानों (अवज्ञाकारों) पर सच्चा साबित हुआ और सब उसी के पीछे लग लिए सिवाय कुछ ईमान वालों के (5) ऐसा नहीं था कि इब्लीस को कोई ताक़त व दबाव हासिल हो, उसका काम केवल बहकाना था, जिससे गुनाह की इच्छा पैदा होती है, मगर कोई व्यक्ति गुनाह पर मजबूर नहीं होगा, अगर कोई व्यक्ति शरीअत पर जम जाए तो शैतान उसका कुछ भी नहीं कर सकता, और शैतान की बहकाने की योग्यता भी इस परीक्षा के लिए दी ताकि खुल जाए कि कौन उसी राह पर चलता है और कौन उसको अपना दुश्मन समझता है और ईमान व नेक कामों पर क़ायम रहता है।

وَلَا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ حَتَّىٰ إِذَا فُزِّعَ
عَن قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْكَبِيرُ ﴿٢٣﴾ قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ وَ
إِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٤﴾ قُل لَّا تُسْأَلُونَ
عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نُسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٥﴾ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ
بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ﴿٢٦﴾ قُلْ أَرُونِيَ الَّذِينَ أَلْحَقْتُم
بِهِ شُرَكَاءَ كَلَّا بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً
لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾ وَيَقُولُونَ
مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٩﴾ قُل لَّكُم مِّيعَادُ يَوْمٍ لَّا
تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٠﴾ وَقَالَ الَّذِينَ
كَفَرُوا لَن نُّؤْمِنَ بِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَوْ
تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
الْقَوْلَ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنتُمْ
لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿٣١﴾ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا أَنَحْنُ
صَدَدْنَاكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ جَاءَكُم بَلْ كُنتُم مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾

منزل ٥

और उसके पास उसी की सिफ़ारिश काम आएगी जिसके लिए उसने अनुमति दी हो, यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाती है तो वे कहते हैं कि तुम्हारे पालनहार ने क्या कहा, वे जवाब देते हैं कि सच ही कहा और वह बुलंद है बड़ा है[1] (23) पूछिए! आसमानों और ज़मीन से तुम्हें कौन रोज़ी देता है, कह दीजिए अल्लाह (के सिवा कौन है) और निश्चित रूप से हम या तुम सही रास्ते पर हैं या खुली गुमराही में हैं[2] (24) कह दीजिए कि हमारी ग़लतियों की पूछ तुमसे न होगी और तुम जो करते हो उसकी पूछ–ताछ हमसे न होगी (25) कह दीजिए कि हमारा पालनहार हम सबको इकटठा करेगा फिर हमारे बीच ठीक–ठीक फैसला कर देगा और वह खूब फ़ैसला करने वाला खूब जानने वाला है (26) कहिए ज़रा मुझे उन साझेदारों को दिखाओ जिनको तुमने उसके साथ मिला रखा है, कोई नहीं वह अल्लाह ज़बर्दस्त है हिकमत रखता है (27) और हमने आपको सारे ही लोगों के लिए खुशखबरी सुनाने वाला और खबरदार करने वाला बना कर भेजा है लेकिन अधिकतर लोग जानते नहीं (28) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो बताओ कि यह वादा कब पूरा होगा (29) बता दीजिए कि तुम्हारे लिए एक दिन निर्धारित है, उससे तुम न एक क्षण के लिए पीछे हो सकते हो और न आगे हो सकते हो (30) और इनकार करने वाले कहते हैं न तो हम इस कुरआन को कभी मानेंगे और न इससे पहले की किताबों को मानेंगे और अगर आप देख रहे होते जब लोग अपने पालनहार के पास ला खड़े किये गए होंगे तो बात को एक दूसरे पर डाल रहे होंगे, जिनको कमज़ोर जाना गया वे घमण्डियों से कहेंगे अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान ले आते (31) घमण्डी कमज़ोरों से कहेंगे क्या हमने सही रास्ते से रोका उसके तुम्हारे पास आ जाने के बाद, बात यह है कि तुम ही अपराधी थे (32)

---

(1) आयत नं0 22–23 में मुश्रिकों के विभिन्न माबूदों का खण्डन किया गया है, उनमें कुछ तराशे हुए मूर्तियों को खुदा मानते थे और समझते कि प्रत्यक्ष रूप से वही हमारी आवश्यकताएं पूरी करते हैं, आयत नं0 22 में इसको नकारा गया कि वे आसमानों और ज़मीन में कण मात्र भी किसी चीज़ के मालिक नहीं अल्लाह के साथ उनका कोई साझी नहीं, वह मूर्तियों को अल्लाह का मददगार समझते थे इसी आयत के अंत में इसको भी नकार दिया गया कि उसका कोई मददगार नहीं, तीसरा गिरोह उन मुश्रिकों का था जो इन मूर्तियों को सिफ़ारिशी समझता था, आयत नं0 23 में इसकी वास्तविकता भी बयान कर दी गई कि उसके दरबार में उसको सिफ़ारिश का हक हासिल होगा जिसको अनुमति दी जाएगी, बिन अनुमति किसी को सिफ़ारिश का हक़ हासिल नहीं, फरिश्तों का हाल यह है कि वे कांपते और भयभीत रहते हैं जब अल्लाह की ओर से उनको आदेश मिलता है तो मदहोश हो जाते हैं फिर जब घबराहट दूर होती है तो एक दूसरे से पूछते है कि अल्लाह ने क्या कहा फिर उसके अनुसार कार्य करते हैं (2) सच्चाई का रास्ता एक ही है बहुत से लोगों के दिमाग़ में यह बात आ जाती है कि सब रास्ते एक ही मंज़िल की ओर जाते हैं, यह बिल्कुल ग़लत है, सच्चाई के रास्ते के अलावा जो कुछ है वह झूठ है।

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَ
النَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَنَا أَن نَّكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَندَادًا ۚ وَأَسَرُّوا
النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَالَ فِي أَعْنَاقِ الَّذِينَ
كَفَرُوا ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٣﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ
مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ كَافِرُونَ ﴿٣٤﴾ وَ
قَالُوا نَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿٣٥﴾ قُلْ
إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾ وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُم بِالَّتِي تُقَرِّبُكُمْ
عِندَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ
جَزَاءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ﴿٣٧﴾ وَ
الَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ
مُحْضَرُونَ ﴿٣٨﴾ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ
مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ وَمَا أَنفَقْتُم مِّن شَيْءٍ فَهُوَ
يُخْلِفُهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٣٩﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا
ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهَٰؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٤٠﴾

منزل٥

और जिन्हें कमज़ोर समझा गया वे घमण्डियों से कहेंगे हाँ ये तो रात और दिन का धोखा था जब तुम हमको कहा करते थे कि हम अल्लाह का इनकार करें और उसके बराबर ठहराएं[1] और जब वे अज़ाब को देखेंगे तो अन्दर ही अन्दर पछताएंगे और जिन्होंने इनकार किया उनकी गर्दनों में हम हंसली (तौक़) डाल देंगे, उनको वही बदला मिलेगा जो वे किया करते थे (33) और जब भी हमने किसी बस्ती में डराने वाला भेजा तो वहां के ऐश परस्तों ने यही कहा तुम जिस चीज़ को लेकर आए हो हम उसको नहीं मानते (34) और उन्होंने कहा कि हम तो माल व संतान में बहुत ज़्यादा हैं और हमें तो अज़ाब होगा ही नहीं (35) बता दीजिए कि निश्चित रूप से मेरा पालनहार जिसके लिए चाहता है रोज़ी बढ़ा देता है (जिसको चाहता है) नाप–नाप कर देता है लेकिन अधिकतर लोग जानते नहीं (36) और तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान वे नहीं कि तुम्हारा मर्तबा हम से क़रीब करें, हाँ जो ईमान लाया और उसने भले काम किये तो वही लोग हैं जिनके लिए उनके कामों के बदले दोगुना बदला है और वे बालाखानों (अटारियों) में इत्मिनान से होंगे[2] (37) और जो हमारी निशानियों को नीचा दिखाने के लिए कोशिश करते रहते हैं वही लोग अज़ाब में गिरफ़्तार होंगे (38) कह दीजिए निश्चित रूप से मेरा पालनहार अपने बंदों में जिसके लिए चाहता है रोज़ी को बढ़ा देता है और जिसको चाहता है नाप–नाप कर देता है और तुम जो भी खर्च करते हो वह उसका बदला प्रदान करता है और वह सबसे अच्छी रोज़ी देने वाला है (39) और जिस दिन उन सब को इकट्ठा करेगा फिर फ़रिश्तों से कहेगा क्या तुम्हारी ही पूजा यह लोग किया करते थे (40)

(1) यानी रात–दिन तुम्हारा यही काम था कि लोगों को बहकाओ और उनको शिर्क में लिप्त करो, ज़ाहिर में आरोप एक दूसरे पर लगाएंगे लेकिन अंदर ही अंदर पछताएंगे (2) लोगों को हमेशा अपने माल व संतान पर घमण्ड रहा है, और यह समझते रहे हैं कि जब दुनिया में अल्लाह ने हमको इतना सब कुछ दिया है तो आख़िरत में भला क्यों वंचित रहेंगे, कह दिया गया कि इसका संबंध तो अल्लाह की चाहत से है, अल्लाह से करीब होने से इस का कोई संबंध नहीं, यह चीज़ें दुनिया की हद तक हैं, आख़िरत में तो केवल ईमान और अच्छे काम ही फ़ायदा पहुंचाएंगे और अल्लाह के करीबी होने में मददगार होंगे।

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ
الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ
لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۭ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ
النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا
بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ
يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ۭ وَقَالَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٣﴾
وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ
مِنْ نَّذِيْرٍ ﴿٤٤﴾ وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ
مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۣ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٥﴾ ع قُلْ اِنَّمَآ
اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ
تَتَفَكَّرُوْا ۣ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ
بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ
فَهُوَ لَكُمْ ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيْدٌ ﴿٤٧﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٤٨﴾

منزل٥

वे कहेंगे हम तेरी तस्बीह करते हैं, तू हमारा समर्थक है यह नहीं, हाँ यह खुद जिन्नों को पूजा करते थे, अक्सर उन्हीं पर विश्वास रखते थे[1] (41) तो आज तुममें कोई एक दूसरे के घाटा व नुकसान का मालिक न होगा और हम ज़ालिमों से कहेंगे उस आग के अज़ाब का मज़ा चखो जिसको तुम झुठलाया करते थे (42) और जब उनके सामने साफ़–साफ़ हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं कि यह आदमी सिर्फ यह चाहता है कि तुम्हें उन चीज़ों से रोक दे जिनको तुम्हारे बाप–दादा पूजा करते थे, और कहते हैं कि कुछ नहीं सिर्फ़ यह एक झूठ है जो गढ़ लिया गया है और जिन्होंने इनकार किया जब हक उनके पास पहुंचा तो उन्होंने कहा कि यह कुछ नहीं सिर्फ़ एक खुला हुआ जादू है (43) और हमने उनको किताबें नहीं दी जिनको वे पढ़ते हैं और न आपसे पहले हमने उनके पास कोई डराने वाला भेजा[2] (44) और इनसे पहले वाले भी झुठला चुके हैं और हमने उनको जो दिया ये उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचे फिर उन्होंने हमारे पैग़म्बरों को झुठलाया तो हमारी पकड़ कैसी (सख़्त) हुई[3] (45) कह दीजिए कि मैं तुम्हें एक नसीहत करता हूँ (वह यह) कि तुम अल्लाह के वास्ते तो दो–दो एक–एक उठ खड़े हो फिर सोचो तुम्हारे साथी को कुछ भी पागलपन नहीं, वह तो तुम्हें आगे (आने वाले) एक सख़्त अज़ाब से डराने वाला है[4] (46) कह दीजिए कि मैंने जो तुमसे बदला मांगा हो वह तुम्हारा है मेरा बदला तो सिर्फ़ अल्लाह के ज़िम्मे है और वह हर चीज़ पर नज़र रखने वाला है (47) कह दीजिए कि बेशक मेरा पालनहार सच्चाई (दिलों में) डालता जाता है जो ढके छिपे का खूब जानने वाला है (48)

(1) जिन्न का मतलब यहां शैतान हैं, मुश्रिकों का हाल यह था कि वे शैतानों से बहुत से काम निकाला करते थे और उनके कहने पर चलते थे, शैतानों ने ही उनको शिर्क का विश्वास सिखाया था, इस तरह वे वास्तव में शैतानों ही की इबादत करते थे (2) यह लोग पवित्र कुरआन को मनगढ़ंत कह रहे हैं जबकि हाल यह है कि मनगढ़ंत खुद उनका धर्म है, उनके पास न पहले किताबें आईं और न पैग़म्बर आए, उन्होंने अपने ख़्याल से गढ़–गढ़ कर धर्म बना लिया, अब यह आसमानी किताब उतरी है, उनको तो चाहिए था कि इस पर शुक्र अदा करते और इसकी क़द्र करते थे कि बजाय इसके इसको मनगढंत बता रहे हैं (3) यानी इसको मन गढ़ंत बता रहे हैं (3) यानी जैसी लंबी–लंबी उम्रें, शारीरिक शक्तियाँ और भोग–विलास उनको दिया गया तुम्हें उसका दस्वां हिस्सा भी नहीं मिला, लेकिन जब उन्होंने पैग़म्बरों का विरोध किया तो देख लो कैसा उनका अंजाम हुआ, सब धरा रह गया (4) यानी इंसाफ़ के साथ उठ खड़े हो और कई–कई मिलकर भी मश्वरा कर लो और अलग एकांत में भी सोचो कि जिस व्यक्तित्व (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने चालिस साल तुममें गुज़ारे, उसकी सच्चाई व सदाचारिता और समझ–बूझ को तुम सबने माना, अब अचानक तुम क्या यह सोच सकते हो कि अल्लाह माफ़ करे वह दीवाना हो गया, क्या कोई दीवाना ऐसी हिकमत की बातें कर सकता है, इतनी महान रणनीति पेश कर सकता है जो तुमको सख़्त ख़तरों से सावधान कर रहा है, प्रमाणों व साक्ष्यों से तुम्हारा भला बुरा समझा रहा है, यह काम पागलों के नहीं, उन महान पैग़म्बरों के होते हैं जिनको मूर्खों ने हमेशा पागल कहा है, फिर आगे इसको भी साफ़ कर दिया गया कि वह दुनिया भी नहीं चाहते, हर आफर वे ठुकरा चुके और कह चुके कि मेरा बदल केवल अल्लाह के ज़िम्मे है जो कुछ तुम देना दिलाना चाहते हो वह सब अपने पास रखो।

قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ﴿٤٩﴾ قُلْ إِن ضَلَلْتُ فَإِنَّمَآ أَضِلُّ عَلَىٰ نَفْسِي ۖ وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحِيٓ إِلَيَّ رَبِّيٓ ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ﴿٥٠﴾ وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ فَزِعُوا فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٥١﴾ وَقَالُوٓا ءَامَنَّا بِهِۦ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِن مَّكَانٍۭ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾ وَقَدْ كَفَرُوا بِهِۦ مِن قَبْلُ ۖ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِن مَّكَانٍۭ بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾ وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِم مِّن قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُّرِيبٍۭ ﴿٥٤﴾

سُورَةُ فَاطِرٍ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَٰٓئِكَةِ رُسُلًا أُولِيٓ أَجْنِحَةٍ مَّثْنَىٰ وَثُلَٰثَ وَرُبَٰعَ ۚ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١﴾ مَّا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِن رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۖ وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهُۥ مِنۢ بَعْدِهِۦ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢﴾ يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ هَلْ مِنْ خَٰلِقٍ غَيْرُ اللَّهِ يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ۚ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٣﴾

منزل ٥

कह दीजिए सच्चाई आ चुकी है और झूठ का न आरम्भ शेष रहा न अन्त[1] (49) कह दीजिए यदि मैं पथभ्रष्ट हुआ तो अपने बुरे को पथभ्रष्ट होता हूँ और अगर रास्ता पा गया तो उस वह्य से हुआ जो मेरा पालनहार मुझ पर करता है बेशक वह खूब सुनता और करीब है[2] (50) और अगर आप देखते जब वे घबरा जाएंगे तो फिर वे छूट न पाएंगे और करीब जगह ही से पकड़ लिए जाएंगे[3] (51) और कहेंगे कि हम ईमान ले आए और उतनी दूर से कहां वह चीज़ उनके हाथ आ सकेगी (52) और पहले वे इनकार कर ही चुके और दूर ही से बिना देखे तुक्के मारा करते थे[4] (53) और उनके और उनकी चाहतों के बीच पर्दा[5] पड़ जाएगा जैसे पहले उनके रास्ते पर चलने वालों के साथ हो चुका बेशक वे ऐसे शक में पड़े हुए थे जो उनको चैन न लेने देता था (54)

सूरह फ़ातिर

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

असल प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जो आसमान और ज़मीन को नये सिरे से पैदा करने वाला, फरिश्तों को संदेशवाहक बनाने वाला है, जिनके बाजू हैं दो–दो, तीन–तीन और चार–चार, सृष्टि में वह जो चाहता है बढ़ोत्तरी करता है बेशक अल्लाह हर चीज़ पर पूरी कुदरत (सामर्थ्य) रखता है (1) अल्लाह लोगों के लिए जो अपनी रहमत खोल दे तो कोई उसे रोकने वाला नहीं और जो रोक ले तो उसके बाद कोई भेजने वाला नहीं और वह ज़बरदस्त है हिकमत वाला है (2) ऐ लोगो! अपने ऊपर अल्लाह के इनआम को याद करो, है कोई पैदा करने वाला अल्लाह के अलावा जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी पहुंचाए, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं तो तुम कहाँ पलटे जाते हो? (3)

---

(1) यानी सच्चा धर्म आ पहुंचा अब उसकी शक्ति को कोई रोक नहीं सकता, मक्का विजय के अवसर पर यह आयत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र ज़बान पर थी (2) अगर मैं झूठ कहता हूँ तो इसमें मेरा ही तो नुकसान है, अब मैं जो सही रास्ता बताता हूँ उस पर अल्लाह ने मुझे चलाया और इसके लिए वह्य भेजी (3) यह काफ़िर यहां डींगे मारते हैं, वहाँ हालत ख़राब होगी और मौक़े पर ही धर लिए जाएंगे (4) वहाँ आँखों से देख कर कहेंगे कि हम ईमान लाते हैं, जब कि मौक़ा दूर निकल चुका होगा, अब उनका हाथ इतनी दूर कहाँ पहुंच सकता है कि वहां से ईमान उठा लाएं, जब समय था तो उस वक़्त मानते ही न थे और तुक्के मारते रहते थे (5) यानी जिस चीज़ की इच्छा रखते होंगे जैसे स्वीकृत ईमान, या नजात या दुनिया में वापसी, स्वाद व आराम, इन सारी चीज़ों और उनके बीच ज़बर्दस्त रुकावट खड़ी कर दी जाएगी फिर कभी वे इन चीज़ों तक पहुंच न सकेंगे।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ
الْاُمُوْرُ ﴿٤﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَا ۥ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿٥﴾ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ
عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿٦﴾ اَلَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ
مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿٧﴾ اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ
اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ
عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٨﴾ وَاللّٰهُ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ
الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ﴿٩﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ
جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ؕ وَ
الَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَمَكْرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ
يَبُوْرُ ﴿١٠﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ
اَزْوَاجًا ؕ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ
مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖۤ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١١﴾

منزل٥

और वे अगर आपको झुठलाते हैं तो आपसे पहले कितने पैग़म्बरों को झुठलाया जा चुका है और सब काम अल्लाह ही तक पहुंचते हैं (4) ऐ लोगो! अल्लाह का वादा सच्चा है तो तुम्हें दुनिया की ज़िन्दगी धोखे में न डाल दे और न अल्लाह के बारे में वह धोखेबाज़ तुम्हें धोखा दे सके[1] (5) बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो उसे दुश्मन बना कर रखो, वह अपने गिरोह को इसलिए बुलाता है कि वे दोज़ख़ी बन जाएं (6) जिन्होंने इनकार किया उनके लिए सख़्त अज़ाब है और जो ईमान लाए और उन्होंने भले काम किए उनके लिए बख़्शिश है और बड़ा बदला है (7) भला जिसके लिए उसके बुरे काम सुन्दर बना दिए गए हों तो उनको वह अच्छा समझे (वह भले आदमी की तरह कैसे हो सकता है) बस अल्लाह तो जिसको चाहता है गुमराह करता है और जिसको चाहता है रास्ता दिखा देता है तो आपकी जान उन पर दुखी हो होकर विनाश में न पड़ जाएं, बेशक जो वे कर रहे हैं अल्लाह उसको खूब जानता है[2] (8) और अल्लाह ही है जो हवाएं भेजता है तो वे बादलों को उठा लाती हैं फिर उनको बंजर ज़मीन में हका ले जाते हैं और उससे ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा कर देते हैं (लोग) इसी तरह उठाए जाएंगे[3] (9) जो भी इज़्ज़त चाहता हो तो इज़्ज़त तो सब अल्लाह ही के हाथ में है[4], अच्छी बातें सब उसी के पास पहुंचती हैं और अच्छा काम उसको ऊपर उठाता है[5] और जो बुराइयों के लिए चालें चलते हैं उनके लिए सख़्त अज़ाब है और ऐसे लोगों की चालें बिल्कुल बर्बाद हो जाती हैं (10) और अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर वीर्य से फिर तुम्हारे जोड़े बनाए और जो भी स्त्री के पेट में रहता है और जो भी वह जनती है वह सब उसकी जानकारी में है और जो भी उम्र वाला उम्र पाता है और उसकी उम्र में जो कमी होती है वह सब किताब में लिखा हुआ है निश्चित रूप से सब अल्लाह के लिए आसान है (11)

---

(1) यानी शैतान जिसका काम ही है फ़रेब और धोखा देना (2) ऊपर भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी गई है कि अगर वे नहीं मानते तो आप दुखी न हों, पिछले पैग़म्बरों के साथ भी यही हुआ, पक्षपाती और जिद्दी लोग नहीं मानते तो उनको अल्लाह के हवाले कीजिए, वहीं पहुंच कर सब बातों का फ़ैसला हो जाएगा और यहां और ज़्यादा ताकीद है कि ऐसे हठधर्मी के पीछे आप अपने आपको भुला न दें अल्लाह उनकी करतूतें जानता है, वह खुद उनका भुगतान कर देगा, आप दुखी न हों (3) जिस तरह पानी पड़ने से ज़मीन से पौधे निकलते हैं उसी तरह जब अल्लाह का आदेश होगा ज़मीन से मुर्दे जी उठेंगे (4) काफ़िरों ने दूसरे माबूद इसलिए ठहराए थे कि उनकी इज़्ज़त होगी और मुनाफ़िक़ों ने उनसे दोस्ती इसलिए रचाई थी, यहां बात साफ़ कर दी गई कि दुनिया और आख़िरत की इज़्ज़त सब अल्लाह के कब्ज़े में है जिसको मिलेगी वहीं से मिलेगी, असल उसी का अनुपालन है, असली इज़्ज़त उसी से हासिल होती है (5) सुथरा कलाम यानी अल्लाह की याद, दुआ व मुनाजात, तिलावत, ज्ञान व नसीहत आदि विशेष रूप से कल्म–ए–तैय्यबा, कि इसका इक़रार ही आदमी को ऊँचा करता है लेकिन नेक कामों की ज़रूरत है जो उसको बुलंदियों की चर्म सीमा तक पहुंचा देता है।

وَمَا يَسْتَوِى الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَ
هٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ
حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ
فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲﴾ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ
فِى الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِىْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا
يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ﴿۱۳﴾ اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ
سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ؕ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ؕ
وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ﴿۱۴﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى
اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿۱۵﴾ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ
وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿۱۶﴾ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿۱۷﴾ وَ
لَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا
لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَىْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ؕ اِنَّمَا تُنْذِرُ
الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ
وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۸﴾

منزل ٥

और दो नदियाँ एक जैसी नहीं होती यह मीठी है, प्यास बुझाती है, इसका पानी रास आता है और यह नमकीन है खारा है और एक से तुम ताज़ा गोश्त खाते हो[1] और गहने निकालते हो जो तुम पहनते हो और आप उसमें जहाज़ों को फाड़ता चलता देखेंगे ताकि तुम उसकी कृपा तलाश करो और शायद तुम एहसान मानो (12) वह दिन पर रात को लाता है और रात पर दिन को लाता है, और सूरज और चांद उसने काम पर लगा दिये हैं, सब एक निर्धारित अवधि के लिए चक्कर लगा रहे हैं, वही है अल्लाह तुम्हारा पालनहार, उसी की बादशाही है और उसके अलावा तुम जिनको पुकारते हो वे खजूर की गुठली के एक छिलके के भी मालिक नहीं (13) अगर तुम उनको पुकारो तो वे तुम्हारी आवाज़ न सुनें और अगर सुन भी लें तो वे तुम्हारा जवाब न दें और क़यामत के दिन तो वे तुम्हारे शिर्क का भी इनकार कर देंगे, और उस खूब ख़बर रखने वाले की तरह आपको कोई बता नहीं सकता (14) ऐ लोगो! तुम अल्लाह के मोहताज हो और अल्लाह ही है जो बेनियाज़ (आवश्यकता से पाक) है तारीफ के लायक़ है (15) अगर वह चाहे तो तुम को चलता कर दे और एक नई सृष्टि ले आए[2] (16) और यह अल्लाह के लिए कुछ भी कठिन नहीं (17) और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा और अगर कोई बोझ तले दबा अपना बोझ उठाने को बुलाए तो भी कोई उसमें से ज़रा भी बोझ न उठा पाएगा चाहे रिश्तेदार ही क्यों न हो, आप तो उन्हीं लोगों को डरा सकते हैं जो बिना देखे अपने पालनहार से डरते रहते हैं और उन्होंने नमाज़ क़ायम कर रखी है और जो भी संवरा वह अपने लिए संवरता है और अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है[3] (18)

---

(1) समुद्रों और नदियों का पानी एक जैसा नहीं होता किसी का खारा किसी का मीठा, हां! उनमें मछलियाँ हाती हैं जिनका ताज़ा गोश्त लोग खाते हैं, और उनमें नाव और बड़े–बड़े जहाज़ चलते हैं जो कारोबार का बड़ा साधन हैं, यह सब इंसानों पर अल्लाह के एहसान हैं (2) यानी तुम न मानो तो वह ताक़त रखता है कि वह तुम सबको नष्ट करके ऐसी सृष्टि पैदा कर दे जो फ़रिश्तों की तरह हमेशा उसकी महिमा गान में लगी रहे लेकिन उसकी चाहत यह है कि ज़मीन में यह सब सिलसिले चलते रहें और अंत में हर एक अपने कर्म का फल पाये (3) जिसने अपने आपको संवार लिया और अल्लाह का आज्ञाकारी बंदा बन गया उसके इस कर्म का फ़ायदा उसी को मिलेगा।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ﴿١٩﴾ وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ﴿٢٠﴾
وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ ﴿٢١﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ
إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَن يَشَاءُ وَمَا أَنتَ بِمُسْمِعٍ مَّن فِي
الْقُبُورِ ﴿٢٢﴾ إِنْ أَنتَ إِلَّا نَذِيرٌ ﴿٢٣﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ
بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ﴿٢٤﴾
وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ جَاءَتْهُمْ
رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ
أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٢٦﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ
اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا
أَلْوَانُهَا وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بِيضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ
أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ﴿٢٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَابِّ
وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَٰلِكَ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ
مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ﴿٢٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ
يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا
رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّن تَبُورَ ﴿٢٩﴾

منزل ٥

और अंधा और देखने वाला बराबर नहीं हो सकते (19) और न अंधेरे और रौशनी बराबर हैं (20) और न छाया और तपन (21) और न ही ज़िन्दा और मुर्दे बराबर हो सकते हैं अल्लाह जिसे चाहता है सुना देता है और जो क़ब्रों में (मरे पड़े) हैं आप उनको सुना नहीं सकते[1] (22) आप तो सिर्फ़ सावधान करने वाले हैं (23) हमने आपको सच्चाई के साथ खुशखबरी देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है और कोई क़ौम ऐसी नहीं है जिसमें सावधान करने वाला न गुज़रा हो (24) और अगर वे आपको झुठलाते हैं तो इनसे पहले वाले भी झुठला चुके हैं उनके पास उनके पैग़म्बर खुली निशानियां और सहीफ़े (छोटी किताबें) और रौशन किताब लेकर आए थे[2] (25) फिर हमने इनकार करने वालों की पकड़ की तो मेरी पकड़ कैसी सख़्त थी (26) भला आपने देखा नहीं कि अल्लाह ही ने ऊपर से बारिश बरसाई फिर हमने विभिन्न रंगों के फ़ल पैदा कर दिये और पहाड़ों में भी कुछ टुकड़े सफ़ेद और लाल विभिन्न रंगों के हैं और कुछ काले भुजंग (27) और इसी तरह आदमी और जानवरों और चौपायों में भी विभिन्न रंगों के हैं, अल्लाह से उसके वही बंदे डरते हैं जो ज्ञान रखते हैं बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त है बहुत माफ़ करता है[3] (28) बेशक जो लोग अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं और उन्होंने नमाज़ क़ायम कर रखी है और हमारी दी हुई रोज़ी में से छिप कर और खुल कर ख़र्च करते हैं वे ऐसे व्यवसाय के आशावान हैं जो मंदी नहीं पड़ सकता[4] (29)

(1) यह प्रभावी उदाहरण है काफ़िर और ईमान वाले का, एक अंधा और एक आँख वाला, एक के पास रौशनी और एक अंधेरों में भटकता हुआ, एक दोज़ख़ की तपन और आग में और दूसरा बाग़ों की छाँव में, एक ज़िंदा दिल रखने वाला सत्य व असत्य को समझने वाला और एक मुर्दा दिल जिस पर किसी बात का असर न हो, अंत में कह दिया कि उनका हाल तो यह है कि जैसे कि मुर्दे क़ब्रों में पड़े हों आप कुछ भी कहते रहें उन पर कोई असर पड़ने वाला नहीं (2) कुछ पैग़म्बरां को संक्षिप्त सहीफ़े (ग्रंथ) और कुछ को विस्तृत किताबें दी गईं (3) अल्लाह की कुदरत की यह सब नौरंगिया हैं जो लोग ग़ौर करते हैं और उनसे अल्लाह की कुदरत पर दलील पकड़ते हैं वे अल्लाह से डरते हैं (4) दुनिया में आदमी व्यवसाय में माल लगाता है और घाटा भी होता है लेकिन यह वह व्यवसाय है जिसमें लाभ ही लाभ है।

मंज़िल ५

ताकि वह उनको उनका पूरा–पूरा बदला दे दे और अपने फ़ज़्ल से उनको और बढ़ा दे, निश्चित रूप से वह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा कद्रदान है (30) और आपकी ओर हमने जो किताब भेजी है वही सत्य है जो अपने से पहली किताबों की पुष्टि करती है, बेशक अल्लाह अपने बंदों को खूब जानता है पूरी निगाह रखता है (31) फिर हमने किताब का वारिस अपने उन बंदों को बनाया जिनको हमने चुन लिया तो उनमें कुछ लोग तो अपने ऊपर अत्याचार करने वाले हैं और कुछ बीच वाले हैं और उनमें कुछ अल्लाह के आदेश से भलाई में आगे निकल जाने वाले हैं, यही बड़ी फ़जीलत (उत्कृष्टता) की बात है[1] (32) हमेशा रहने वाले बाग़ों में वे दाख़िल होंगे उसमें उनको सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और वहां उनका पोशाक रेशम का होगा (33) और वे कह उठेंगे कि असल प्रशंसा तो अल्लाह ही के लिए है जिसने हमसे सब दुख दूर कर दिया बेशक हमारा पालनहार बहुत माफ़ करने वाला बड़ा क़द्रदान है (34) जिसने अपने एहसान से हमें रहने के घर में उतारा जिसमें न हमें कोई कठिनाई होती है और न थकान होती है (35) और जिन्होंने इनकार किया उनके लिए दोज़ख की आग है, न ही उनका काम तमाम किया जाएगा कि वे मर जाएं और न उनके अज़ाब में कमी की जाएगी, इसी तरह हम हर इनकार करने वाले को सज़ा देंगे (36) और वे उसमें चिल्ला–चिल्ला कर कहेंगे कि हमारे पालनहार! हमें निकाल दे जो काम हम किया करते थे उनको छोड़ कर हम अच्छे काम करेंगे (कहा जाएगा कि) क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी थी कि जिसमें नसीहत हासिल करने वाला नसीहत हासिल कर ले और डराने वाला भी तुम्हारे पास आया तो अब मज़ा चखो, बस अत्याचारियों का कोई मददगार नहीं[2] (37)

---

(1) यानी मुसलमान जिनको पवित्र कुरआन मिला फिर उनके तीन प्रकार बयान किये, एक वे जो कोताही करने वाले हैं फ़र्ज़ और वाजिब कामों को भी छोड़ देते हैं, दूसरे वे हैं जो फ़र्ज और वाजिब कामों को तो पाबंदी करते हैं लेकिन अल्लाह के करीब कर देने वाले और राज़ी कर देने वाले कामों में ज़्यादा आगे बढ़ने वाले नहीं, और तीसरा प्रकार वे अल्लाह के नेक बुज़ुर्ग बंदों का है जो एक–एक क्षण अल्लाह के लिए गुज़ारते हैं, यह तीनों प्रकार मुसलमानों के ही बयान हुए हैं, अंततः सब ही जन्नत में प्रवेश करेंगे, लेकिन तीसरे प्रकार के बारे में कह दिया गया है कि वे बड़ी फ़ज़ीलत (प्रतिष्ठा) रखने वाले हैं, जन्नत में उन्हें बुलंद मक़ाम हासिल होंगे (2) अल्लाह ने इंसान को जो उम्र दी है वह सोचने के लिए बहुत है, विभिन्न चरण उसकी ज़िन्दगी में ऐसे आते हैं जो उसको चिंतन–मनन पर प्रेरित कर देते हैं, और फिर हज़रत मुहम्मद ने इंसान को आख़िरत के अज़ाब से आगाह करने में कोई कमी न छोड़ी, और हर ज़माने में पैग़म्बरों के ऐसे सहायक पैदा होते रहे और होते रहेंगे जो यह काम करते रहेंगे उसके बाद भी अगर कोई नहीं समझना चाहता है तो दोज़ख़ का मज़ा चखे।

إِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ﴿۳۸﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ ؕ فَمَنْ كَفَرَ
فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ؕ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا
مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ﴿۳۹﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ
شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا
مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا
فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ
بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۴۰﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ
بَعْدِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۱﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ
اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى
الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرَا ﴿۴۲﴾ اِسْتِكْبَارًا
فِي الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا
بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ
لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿۴۳﴾

منزل ۵

बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन के ढके छिपे से अवगत है, निश्चित रूप से वह सीनों में छिपी बातों को भी जानता है (38) उसी ने तुम्हें ज़मीन में उत्तराधिकारी बनाया फिर जिसने कुफ़्र किया तो उसका कुफ़्र उसी के सिर और काफ़िरों के लिए उनका कुफ़्र उनके पालनहार के पास और ज़्यादा गुस्से का ही कारण होगा और काफ़िरों को अपने कुफ़्र से नुक़सान में इज़ाफ़ा ही होता चला जाएगा (39) कह दीजिए कि तुम्हारे उस साझीदारों के बारे में तुम्हारा क्या विचार है जिनको तुम अल्लाह के अलावा पुकारते हो, ज़रा मुझे दिखाओ ज़मीन से उन्होंने क्या पैदा किया या आसमानों में उनकी कोई साझेदारी है या हमने उनको कोई किताब दी है तो उससे वे कोई प्रमाण रखते हैं, बात यह है कि यह ज़ालिम एक दूसरे से जो कुछ वादे करते हैं सब धोखे हैं[1] (40) निश्चित रूप से अल्लाह ही आसमानों और ज़मीन को थामता है कि वे टल न जाएं और अगर वे टल गये तो उसके सिवा कोई उनको संभालने वाला नहीं बेशक वह बड़ा सहनशील माफ करने वाला है (41) और उन्होंने बड़े विश्वास के साथ अल्लाह की क़समें खाई कि अगर उनके पास कोई डराने वाला आया तो वे ज़रूर और उम्मतों (समुदायों) से ज़्यादा राह पर आ जाएंगे, फिर जब उनके पास डराने वाला आ गया तो वे उसकी वजह से और बिदक गये[2] (42) ज़मीन में अकड़ते हुए और बुराई के लिए चालें चलते हुए और बुराई की चाल उन्हीं चाल वालों पर उलट कर रहेगी फिर क्या उनको पिछलों के नियम का इन्तिज़ार है तो आप अल्लाह के नियम को नहीं बदल पाएंगे और न ही अल्लाह के नियम को टलता पाएंगे[3] (43)

(1) यानी उनके पास किसी प्रकार का कोई प्रमाण नहीं, एक दूसरे को यही समझाते चले आए कि वह सब हमारे सिफ़ारिशी बनेंगे, हालांकि यह सर्वथा धोखा है, वहाँ काफ़िरों की सिफ़ारिश के लिए बड़े से बड़े करीबी को भी हिम्मत नहीं कि वह उनके बारे में कुछ बोल सके (2) अरब के लोग जब सुनते थे कि यहूदी आदि दूसरे समुदायों ने अपने पैग़म्बरों की यूं नाफ़रमानी की तो कहते कि हममें जब पैग़म्बर आएगा तो हम उन समुदायों से बेहतर उस पैग़म्बर का अनुसरण करेंगे, लेकिन जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैग़म्बर बन कर आए तो उनके घमण्ड ने उनको मारा और अनुसरण के बजाय दुश्मनी पर उतारू हो गये और तरह–तरह की चालें चलने लगे, अंततः सब चालें उन्हीं पर पड़ीं आर सारे अरब में इस्लाम का वर्चस्व स्थापित हुआ (3) पिछली क़ौमों के साथ जो कुछ अल्लाह का नियम रहा है उसमें न परिवर्तन हुआ और न वह टला है तो क्या उनको उसी का इन्तिज़ार है।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا
كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ
إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿٤٤﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا
كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَىٰ ظَهْرِهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَٰكِنْ
يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ
اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ﴿٤٥﴾

سُورَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلَاثٌ وَثَمَانُونَ آيَةً وَخَمْسُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
يس ﴿١﴾ وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣﴾ عَلَىٰ صِرَاطٍ
مُسْتَقِيمٍ ﴿٤﴾ تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٥﴾ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَا أُنْذِرَ
آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ﴿٦﴾ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٧﴾ إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى
الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ
سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿٩﴾

क्या उन्होंने ज़मीन में चल फिर कर देखा नहीं कि उनसे पहले वालों का कैसा अंजाम हुआ जबकि वे उनसे ज़्यादा बलवान थे और ऐसा नहीं है कि आसमानों और ज़मीन में कोई चीज़ भी अल्लाह को बेबस कर दे, बेशक वह सब कुछ जानता है हर चीज़ की क़ुदरत रखता है (44) और अगर अल्लाह लोगों की उनकी करतूतों पर पकड़ करने लगे तो ज़मीन पर कोई चलने फिरने वाला न छोड़े लेकिन वह तो एक निर्धारित अवधि तक के लिए उन को मोहलत देता है फिर जब उनकी अवधि आ पहुंचेगी तो अल्लाह अपने बंदों को खुद ही देख लेगा (45)

सूरह यासीन

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

यासीन (1) क़ुरआन–ए–हकीम की क़सम (2) निश्चित रूप से आप पैग़म्बरों में से हैं[1] (3) सीधी राह पर हैं (4) (यह क़ुरआन) उस की ओर से उतारा जा रहा है जो ज़बर्दस्त भी है, रहम करने वाला भी है (5) ताकि आप उस क़ौम को सावधान करें जिनके बाप–दादा को सावधान नहीं किया गया तो वे ग़फ़लत (असावधानी) में पड़े रहते हैं[2] (6) उनमें ज़्यादातर लोगों पर बात थुप चुकी है तो वे ईमान नहीं लाएंगे (7) हमने उनकी गर्दनों में हसलियां डाल रखी हैं फिर वे ठोड़ियों तक हैं तो उनके सिर अकड़े पड़े हैं (8) और हमने उनके सामने भी एक आड़ खड़ी कर दी है और उनके पीछे भी एक आड़ खड़ी कर दी है) इस तरह हमने उनको ढाँप दिया है तो उनको (कुछ) सुझाई नहीं देता[3] (9)

(1) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे होने की एक खुली दलील यह है कि वे अनपढ़ पैग़म्बर हाने के बावजूद ऐसे सुदृढ़ व मज़बूत शब्द–अर्थ रखने वाला क़ुरआन आपकी ज़बान से जारी करा दिया गया (2) मक्के और उसके आस पास में एक ज़माने से कोई पैग़म्बर नहीं आया था (3) यह उन लोगों का उल्लेख है जिनकी ढिटाई चरम पर थी और उन्होंने तय कर लिया था कि हम को मानना ही नहीं, अल्लाह ने उनके अंदर मानने की योग्यता रखी थी मगर उन्होंने उस योग्यता को कुचल कर दख दिया था, हाथ में पकड़ने की योग्यता अल्लाह ने रखी है अगर कोई इसको बिल्कुल इस्तेमाल न करे और एक ही हालत में छोड़ दे तो वह धीरे–धीरे कमज़ोर हो कर रह जायेगा और अपनी योग्यता खो देगा, यही उनमें से बड़ी संख्या का हाल था कि उन्होंने स्वीकार करने की योग्यता को बर्बाद कर दिया तो अल्लाह ने उनके लिए महरूमी (वंचन) का फ़ैसला कर दिया, अब उनको कुछ सुझाई नहीं देता, गले में हंसली (तौक़) का पड़ जाना और आगे–पीछे दीवारों का खड़ा हो जाना कि कुछ सुझाई नहीं दे, यह उनकी हठधर्मी को बयान करने की एक शैली है।

وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠﴾
إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ ٱتَّبَعَ ٱلذِّكْرَ وَخَشِىَ ٱلرَّحْمَٰنَ بِٱلْغَيْبِ
فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ﴿١١﴾ إِنَّا نَحْنُ نُحْىِ ٱلْمَوْتَىٰ
وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا۟ وَءَاثَٰرَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَىْءٍ أَحْصَيْنَٰهُ فِىٓ
إِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿١٢﴾ وَٱضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا أَصْحَٰبَ ٱلْقَرْيَةِ إِذْ
جَآءَهَا ٱلْمُرْسَلُونَ ﴿١٣﴾ إِذْ أَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمُ ٱثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا
فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوٓا۟ إِنَّآ إِلَيْكُم مُّرْسَلُونَ ﴿١٤﴾ قَالُوا۟
مَآ أَنتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَمَآ أَنزَلَ ٱلرَّحْمَٰنُ مِن شَىْءٍ
إِنْ أَنتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ﴿١٥﴾ قَالُوا۟ رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّآ إِلَيْكُمْ
لَمُرْسَلُونَ ﴿١٦﴾ وَمَا عَلَيْنَآ إِلَّا ٱلْبَلَٰغُ ٱلْمُبِينُ ﴿١٧﴾ قَالُوٓا۟
إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۖ لَئِن لَّمْ تَنتَهُوا۟ لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُم
مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨﴾ قَالُوا۟ طَٰٓئِرُكُم مَّعَكُمْ ۚ أَئِن
ذُكِّرْتُم ۚ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ مِنْ أَقْصَا
ٱلْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱتَّبِعُوا۟ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿٢٠﴾
ٱتَّبِعُوا۟ مَن لَّا يَسْـَٔلُكُمْ أَجْرًا وَهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٢١﴾

منزل ٥

और उनके लिए बराबर है आप उनको डराएं या न डराएं वे मानेंगे नहीं (10) आप तो उसको सावधान कर सकते हैं जो समझाने पर चले और बिना देखे रहमान से डरे[1] तो आप उसको खुशखबरी सुना दें माफ़ी की और सम्मान जनक बदले की (11) हम ही हैं जो मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं और जो उन्होंने आगे भेजा और जो उनके पीछे उनके निशान रहे हम उसको लिखते रहे हैं और हर चीज़ हमने एक खुली किताब मे गिन–गिन कर रखी है[2] (12) और आप उनके सामने गाँव वालों की मिसाल दीजिए जब पैग़म्बर उनके पास पहुंचे थे (13) जब हमने उनके पास दो पैग़म्बरों को भेजा तो उन्होंने दोनों को झुठला दिया बस हमने तीसरे से उनको ताक़त दी तो उन सब ने कहा "हमको तुम्हारी ओर रसूल बना कर भेजा गया है (14) क़ौम के लोग बोले तुम तो हमारे ही जैसे इंसान हो और रहमान ने कुछ नहीं उतारा तुम सिर्फ झूठ कहते हो[3] (15) उन्होंने कहा कि हमारा पालनहार खूब जानता है कि हम निश्चित रूप से तुम्हारे लिए पैग़म्बर बना कर भेजे गए हैं (16) और हमारे ज़िम्मे तो केवल साफ़–साफ़ (सदेंश) पहुंचा देना है (17) वे बोले हम तो तुम से बुरा शगुन लेते हैं[4] अगर तुम न माने तो हम तुम्हें पत्थर मार–मार कर मार डालेंगे और हमारी तरफ़ से तुम्हें सख़्त सज़ा मिलकर रहेगी (18) उन्होंने कहा तुम्हारा बुरा शगुन तुम्हारे साथ क्या (यह सब कुछ) सिर्फ़ इसलिए है कि तुम्हें समझाया गया, बात यह है कि तुम हद से बढ़ जाने वाले लोग हो (19) और शहर के किनारे से एक आदमी दौड़ता आया, बोला ऐ मेरी क़ौम, पैग़म्बरों का कहा मान लो (20) ऐसे लोगों की बात मान लो जो तुमसे बदला नहीं मांगते और वे सच्चे रास्ते पर हैं[5] (21)

---

(1) जो समझना चाहे और उसके दिल में कुछ खुदा का डर हो तो वह बात सुनता भी है और गौर भी करता है (2) और जो अच्छे या बुरे अमल करके गये या उनके अच्छे या बुरे असर छोड़ गए और वे जारी रहे, सब सुरक्षित किया जा रहा है, जो भलाई का साधन बनते हैं और उनके लिए सदक़–ए–जारिया होता है और जो बुराई का साधन बनते हैं उनका गुनाह उन पर पड़ता रहता है (3) यह किसी बस्ती का उल्लेख है, जिसका वर्णन अल्लाह ने शिक्षा लेने के लिए किया है कि वहां दो पैग़म्बर भेजे गए फिर तीसरे को और भेजा गया लेकिन लोगों ने बात न मानी, जिसके फलस्वरूप वे सब नष्ट (हलाक) कर दिये गये, कुछ तफ़सीर लिखने वालों ने इस बस्ती का नाम सीरिया का मशहूर शहर अंताकिया लिया है मगर न कहीं हदीस में इसको साफ़–साफ़ बयान किया गया है और न कुरआन में इसको स्पष्ट किया गया है (4) बस्ती वालों की नाफ़रमानी पर सूखा पड़ा तो उसको बस्ती वालों ने पैग़म्बरों की नुहूसत बताया (मआज़ल्लाह) (5) यह एक नेक इंसान था जो मुसलमान हो चुका था शहर के किनारे कहीं रहता था, उसको पता चला कि पैग़म्बरों के साथ अपमानजनक व्यवहार हो रहा है और उनको सताया जा रहा है तो वह भागता–भागता आया और बुद्धिजीवियों के रूप में बड़े प्रभावी अंदाज़ में समझाने की कोशिशें कीं मगर लोग उल्टे उसके दुश्मन हो गये और उसको मार डाला।

الجزء ٢٣

وَمَا لِيَ لَآ أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٢﴾
ءَأَتَّخِذُ مِن دُونِهِ ءَالِهَةً إِن يُرِدْنِ الرَّحْمَٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّي
شَفَٰعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَلَا يُنقِذُونِ ﴿٢٣﴾ إِنِّيٓ إِذًا لَّفِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٢٤﴾ إِنِّيٓ
ءَامَنتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ﴿٢٥﴾ قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يَٰلَيْتَ قَوْمِي
يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾ بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٧﴾ وَمَآ
أَنزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنۢ بَعْدِهِ مِن جُندٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنزِلِينَ ﴿٢٨﴾
إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَٰحِدَةً فَإِذَا هُمْ خَٰمِدُونَ ﴿٢٩﴾ يَٰحَسْرَةً عَلَى
الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣٠﴾ أَلَمْ يَرَوْا
كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٣١﴾ وَإِن
كُلٌّ لَّمَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٣٢﴾ وَءَايَةٌ لَّهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ
أَحْيَيْنَٰهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ﴿٣٣﴾ وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّٰتٍ
مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَٰبٍ وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ﴿٣٤﴾ لِيَأْكُلُوا مِن
ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٥﴾ سُبْحَٰنَ الَّذِي خَلَقَ
الْأَزْوَٰجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنۢبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾
وَءَايَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُم مُّظْلِمُونَ ﴿٣٧﴾

وقف غفران — ع ٢

منزل ٥

और मैं आखिर क्यों न उस पालनहार की बन्दगी करूँ जिसने मुझे अनास्तित्व से अस्तित्व प्रदान किया और तुम सब को उसी की ओर लौट कर जाना है (22) क्या मैं उसके अलावा ऐसे माबूद (पूज्य) अपना लूं कि अगर रहमान मुझे नुक़सान पहुंचाने का इरादा कर ले तो न उसकी सिफ़ारिश मेरे काम आ सके और न वे मुझे बचा सकें (23) (अगर मैंने ऐसा कर लिया) तब तो निश्चित रूप से मैं खुली गुमराही में पड़ गया (24) निःसंदेह मैं तो तुम्हारे पालनहार पर ईमान ला चुका हूं तो मुझसे सुन लो[1] (25) कौम के लोगों ने उसको मार–मार कर हलाक कर डाला तो अल्लाह की ओर से आदेश हुआ कि जन्नत में चला जा, कहने लगा काश मेरी क़ौम को पता चल जाता (26) कि मेरे रब ने मेरी क्या ही बख्शिश की और मुझे इज़्ज़त वालों में किया (27) और उसके बाद हमने उसकी कौम पर आसमान से कोई सेना नहीं उतारी और न (सेना) हमें उतारना ही था (28) वह तो केवल एक चिंघाड़ थी बस वे सब बुझ कर रह गये (29) अफ़सोस मेरे उन बंदों पर जब उनके पास कोई पैग़म्बर आता तो वे उसका मज़ाक उड़ाते (30) क्या उन्होंने गौर नहीं किया कि हमने उनसे पहले कितने वंशों को विनष्ट (हलाक) कर दिया, वे उनके पास वापस नहीं आ सकते (31) और निश्चित रूप से सबके सब हमारे पास हाज़िर कर दिये जाएंगे[2] (32) और उनके लिए एक निशानी यह बंजर ज़मीन भी है हमने इसको ज़िन्दा कर दिया और इसमें से दाना निकाला तो उससे वे खाते हैं (33) और हमने इसमें खजूरों और अंगूरों के बाग़ बनाए और इसमें स्रोत जारी कर दिये (34) ताकि वे उसके फल खाएं और उसको उनके हाथों ने नहीं बना लिया फिर भी वे एहसान नहीं मानते[3] (35) वह पवित्र है जिसने सब जोड़े पैदा किये ज़मीन की पैदावार में भी और खुद उनमें भी और कितनी ऐसी चीज़ों में जो वे जानते ही नहीं[4] (36) और उनके लिए एक निशानी रात भी है दिन को हम उससे खींच लेते हैं बस वे अंधेरे में रह जाते हैं (37)

---

(1) निडर होकर उसने ऐलान किया कि पैग़म्बर भी गवाह हों और सुनने वालों पर भी उसका असर पड़े, बस लोग टूट पड़े ओर उसको मार डाला, अल्लाह तआला ने उसी समय उसको जन्नत का परवाना दे दिया, वहां भी इस अल्लाह के बंदे को अपनी क़ौम याद आई और उसने यह कामना की कि काश जो इज़्ज़त मेरी यहां हो रही है क़ौम को मालूम हो जाए तो उनकी समझ में आए, इधर यह हुआ कि उसके बाद अल्लाह का अज़ाब आया और क़ौम हलाक कर दी गई इसके लिए किसी जतन की भी ज़रूरत नहीं पड़ी कि फरिश्तों की सेनाएं उतारनी पड़ी हों, बस फ़रिश्ते ने एक चीख मारी और लोगों के कलेजे फट गए और सब वहीं के वहीं ढेर हो कर रह गये, और किसी भी क़ौम को हलाक करने के लिए अल्लाह को फरिश्तों की सेनाएं उतारने की ज़रूरत नहीं है, हां! जब वह किसी मसलेहत से चाहता है उतारता है, वरना एक इशारा क़ाफ़ी है (2) हलाक होने वाले दुनिया में तो वापस न ही आ सकते मगर अल्लाह के सामने सबको हाज़िर होना है (3) इन्सान संसाधन अपनाता है, ज़मीन जोतता है, बीज डालता है मगर एक ज़मीन में विभिन्न प्रकार के फल–फूल कौन पैदा करता है और अनाज कौन उगाता है इसमें इंसान को क्या दख़्ल (4) हर चीज़ के अल्लाह ने जोड़े रखे हैं, कितनी चीज़ें इनसान नहीं जानता था अब वे उसकी जानकारी में आ रही हैं, बिजली में एक न्युटल एक फेस, अणु में एक न्युट्रान दूसरा प्रोटान और कितनी चीज़ें वह आगे जान लेगा।

وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۚ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ﴿٣٩﴾ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَاۤ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿٤١﴾ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٤٤﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗۤ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٧﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾ مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّلَاۤ اِلٰۤى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ﴿٥١﴾ قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٢﴾

منزل ٥

और सूरज अपने ठिकाने की तरफ़ चला जा रहा है यह उस ज़बरदस्त खूब जानने वाले का निर्धारित किया हुआ है[1] (38) और चाँद की मंजिलें भी हमने तय कर रखी हैं यहां तक कि फिर वह वैसे ही हो जाता है जैसे खजूर की पुरानी डाली (39) न सूरज के लिए वैध है कि वह चाँद को ले जाए और न रात–दिन से पहले आ सकती है और सबके सब अपनी–अपनी कक्षा में तैर रहे हैं (40) और यह भी उनके लिए एक निशानी है कि हमने उनकी संतान को भरी नाव में सवार कराया (41) और उनके लिए इस जैसी और चीज़ें पैदा की जिन पर वे सवार हो सकें[2] (42) और अगर हम चाहें तो उनको डुबों दें तो न कोई उनकी फ़रियाद सुनने वाला हो और न वे बचाएं जा सकें (43) लेकिन यह हमारी कृपा है और एक ज़माने तक फ़ायदा उठाने का अवसर है (44) और जब उनसे कहा जाता है कि डरो उससे जो तुम्हारे सामने है और जो तुम्हारे पीछे है ताकि तुम पर कृपा हो[3] (45) और जब भी उनके पास उनके पालनहार की निशानियों में से कोई निशानी पहुंचती है तो उससे मुँह मोड़ लेते हैं (46) और जब उनसे कहा जाता है कि तुम को अल्लाह ने जो दिया है उसमें से खर्च करो तो काफ़िर ईमान वालों से कहते हैं क्या हम उनको खिलाएं जिनको अल्लाह चाहता तो खुद खिला देता तुम तो साफ़ बहके हुए हो[4] (47) और वे कहते हैं कि वह वादा कब पूरा होगा (बताओ) अगर तुम सच्चे हो (48) क्या उनको उसी एक चिंघाड़ का इन्तिजार है जो उनको आ पकड़े जब कि वे झगड़ रहे होंगे (49) फिर न वे कोई वसीयत कर सकेंगे और न अपने घर वालों के पास वापस जा सकेंगे (50) और सूर फूँक दी जाएगी बस वे कब्रों से निकल कर अपने पालनहार की ओर तेज़ी के साथ चल पड़ेंगे (51) बोलेंगे हाय बरबादी! हमारी क़ब्रों से हमें किसने उठाया? यही वह चीज़ है जिसका रहमान की ओर से वादा था और पैग़म्बरों ने सच कहा था (52)

(1) सूरज की चाल और रास्ता निर्धारित है, आधुनिक विज्ञान के अनुसार वह ग्रह–संगम की ओर तेज़ी से भागा जा रहा है जिसे **Solar Apex** कहा जाता है, और चाँद नज़र आने में घटता–बढ़ता है उसकी भी अल्लाह ने मंज़िलें निर्धारित कर रखी हैं, चौदवीं रात का चाँद पूर्ण होने के बाद घटना शुरु होता है यहाँ तक कि महीने के शुरू में फिर जब वह निकलता है तो पतला झुका हुआ पीला खजूर की पुरानी डाली की तरह और यह सारे ग्रह चाँद–सूरज अल्लाह के बनाए हुए अपने–अपने ध्रुव / परिधि में परिक्रमा कर रहे हैं किसी की मजाल नहीं कि वह कुछ भी इधर से उधर हो, न चाँद अपने समय से पहले निकल सकता है और न सूरज, सब अपने–अपने काम पर लगे हैं यही उनकी बंदगी है (2) अरबों में रिवाज था कि वे अपने नवजवान लड़कों को समुद्री व्यवसायिक कार्य पर भेजा करते थे, अल्लाह ने यह एहसान भी जतलाया कि यात्राएं कैसी खतरों से भरी हुई होती हैं अगर हम नाव डुबों दें तो कौन बचाने वाला है, फिर अल्लाह आगे फ़रमाता है कि इसी जैसी और सवारियाँ भी हमने पैदा की हैं, इसमें तफ़सीर लिखने वालों ने ऊंटों का ज़िक्र किया है जिनको रेगिस्तान का जहाज़ कहा करते थे और आज उनसे ज़्यादा इसका सही रूप हवाई जहाज़ हैं जो हवा में तैरते हैं जिस तरह कश्तियाँ पानी में तैरती हैं(3) यानी जो तुम्हारी नाफ़रमानियाँ गुज़र चुकी हैं और जो तुम कर रहे हो उनकी सज़ा से डरो और यह भी इसका मतलब हो सकता है कि ''व मा ख़ल–फ़ कुम'' का अर्थ कर्म हैं और "व माबैन ऐ दी कुम'' से आशय बदले का दिन हो यानी अपने कर्म और उनके फल यानी सज़ा से डरो(4) उपहास की यह शैली थी कि हम क्यों खिलाएं अल्लाह तआला चाहे तो खुद ही खिला दें।

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾
فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَّلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾ إِنَّ
أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فٰكِهُونَ ﴿٥٥﴾ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلٰلٍ
عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَّكِـُٔونَ ﴿٥٦﴾ لَهُمْ فِيهَا فٰكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُونَ ﴿٥٧﴾
سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيمٍ ﴿٥٨﴾ وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٩﴾
أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يٰبَنِي آدَمَ أَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ
مُّبِينٌ ﴿٦٠﴾ وَّأَنِ اعْبُدُونِي هٰذَا صِرٰطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ أَضَلَّ
مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾ هٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي
كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٦٣﴾ اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٦٤﴾ اَلْيَوْمَ
نَخْتِمُ عَلٰى أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلٰى أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنّٰى
يُبْصِرُونَ ﴿٦٦﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا
مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُونَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ أَفَلَا
يَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْآنٌ
مُّبِينٌ ﴿٦٩﴾ لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِينَ ﴿٧٠﴾

منزل٥

सिर्फ़ एक ही चिंघाड़ होगी बस वह सबके सब हाज़िर कर दिये जाएंगे (53) फिर आज किसी के साथ कोई अन्याय न होगा और तुम्हें उसी के अनुसार बदला मिलेगा जो तुम किया करते थे (54) बेशक जन्नत के लोग उस दिन मज़े उड़ाने में लगे होंगे (55) वे और उनकी पत्नियाँ छाया में टेक लगाए मसहरियों पर बैठे होंगे (56) वहां उनके लिए मेवे होंगे और जो मंगवाएंगे (57) बहुत ही दयालु पालनहार की ओर से उनको सलाम कहा जाएगा (58) और ऐ अपराधियो! आज तुम अलग हो जाओ (59) ऐ आदम के बेटो! क्या हमने तुमको यह ताकीद नहीं की थी कि शैतान की पूजा नहीं करोगे निश्चित रूप से वह तुम्हारा खुला दुश्मन है (60) और सिर्फ़ मेरी ही बंदगी करो, यह सीधा रास्ता है (61) और हाल यह है कि तुममें बड़ी संख्या को शैतान ने गुमराह कर दिया, भला क्या तुम समझ नहीं रखते (62) यही वह दोज़ख़ है जिससे तुम्हें डराया जा रहा है (63) आज इसमें जाकर घुसो इस वजह से कि तुम इनकार करते रहे थे (64) आज हम उनके मुँह पर मोहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे बात करेंगे और उनके पैर इसकी गवाही देंगे कि वे क्या कमाई किया करते थे[1] (65) और अगर हम चाहते तो उनकी आँखें मिटा देते फिर वे रास्ते की ओर लपकते तो भी उनको कहाँ सुझाई देता[2] (66) और हम अगर चाहते तो उन्हीं की जगह पर उनकी सूरतें बिगाड़ देते तो न चलना उनके बस में होता और न वे वापस आते (67) और जिसको हम लम्बी उम्र देते हैं उसकी पैदाइश को उलट देते हैं फिर भी क्या वे बुद्धि से काम नहीं लेते[3] (68) और न हमने उन (पैग़म्बर) को शायरी सिखाई और न वह उनको शोभा देती थी, यह तो केवल एक नसीहत है और ऐसा कुरआन है जो खोल–खोल कर बयान करता है (69) ताकि वह उसको ख़बरदार करे जो जिन्दा हो और काफ़िरों पर बात पूरी हो जाए[4] (70)

(1) जब इनकार करने वाले और अपराधी अपने कुफ़्र (इनकार) और अपराध का इनकार करेंगे तो अल्लाह तआला उनके अंगों को बोलने की शक्ति प्रदान करेगा जो एक–एक अपराध की गवाही पेश करेंगे यहां तक कि खाल भी बोलेगी और गवाही देगी जैसा कि कुरआन में दूसरी जगह मौजूद है (2) यानी जैसे उन्होंने हमारी निशानियों से आँखें बंद कर ली हैं हम चाहेंगे तो दुनिया में उनको बिल्कुल अंधा कर दें और जिस तरह वे सच्चाई के रास्ते पर चलना नहीं चाहते हम चाहेंगे तो उनको बिल्कुल अपाहिज बना दें लेकिन हमने उनको ढील दी, अब क़यामत में यही अंग उनके खिलाफ़ गवाही देंगे (3) बुढ़ापे में आदमी बिल्कुल बच्चों की तरह कमज़ोर हो जाता है जवानी की सारी शक्तियाँ ख़त्म हो जाती हैं, यह इंसान के विकास व उदय और पतन की कहानी है जो उसको नसीहत देती है (4) कुरआन की शुद्धता और अभूतपूर्वता (एजाज़) को देख कर मुश्रिक लोग बातें बनाते, कोई शायरी कहता तो कोई जादू, इसका खण्डन किया जा रहा है, खुद दुश्मन की ज़बान से अल्लाह ने कहलवाया कि कहां शायरी और कहां यह कलाम, जो ज़रा भी ज़िन्दा दिल रखता हो यह उसके लिए अनमोल दौलत है।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُم مِّمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ ﴿٧١﴾
وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ﴿٧٢﴾ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ
وَمَشَارِبُ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾ وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَّعَلَّهُمْ
يُنصَرُونَ ﴿٧٤﴾ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُندٌ مُّحْضَرُونَ ﴿٧٥﴾ فَلَا
يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٦﴾ أَوَلَمْ يَرَ الْإِنسَانُ
أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَ
نَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَن يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي
أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ﴿٧٩﴾ الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ
الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنتُم مِّنْهُ تُوقِدُونَ ﴿٨٠﴾ أَوَلَيْسَ الَّذِي
خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُم ۚ بَلَىٰ وَهُوَ
الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ﴿٨١﴾ إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَن يَقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٨٢﴾
فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾

سُورَةُ الصَّافَّاتِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَالصَّافَّاتِ صَفًّا ﴿١﴾ فَالزَّاجِرَاتِ زَجْرًا ﴿٢﴾ فَالتَّالِيَاتِ ذِكْرًا ﴿٣﴾

وقف لازم — وقف غفران — ع — منزل ٦

منزل ٦

क्या उन्होंने नहीं देखा कि जो चीज़ें अपने हाथों से हमने बनाईं उनमें चौपाए उनके लिए पैदा कर दिये तो वे उनके मालिक बने हुए हैं और उनको हमने अधीन कर दिया तो उनमें उनकी सवारियाँ भी हैं और उनमें कुछ वे भी हैं जिनको वे खाते हैं (71) और उनमें उनके लिए और भी फ़ायदे हैं और पीने की चीज़ें भी हैं, फिर क्यों एहसान नहीं मानते (72) और उन्होंने अल्लाह को छोड़ माबूद (उपास्य) बना रखे हैं कि शायद उनकी मदद हो (73) उनकी वे कुछ मदद नहीं कर सकते और यह उनकी फ़ौज होकर पकड़ लाये जाएंगे[1] (74) तो आप उनकी बात से दुखी न हों निश्चित रूप से हम उनकी हर चीज़ जानते हैं जो वे छिपाते हैं और जो व प्रकट करते हैं (75) भला इंसान ने ग़ौर नहीं किया कि हमने उसको एक बूंद से बनाया बस वह खुल्लम खुल्ला झगड़ा करने वाला हो गया (76) हम पर मिसाल रखता है और अपनी पैदाइश भूल गया (77) कहता है कि कौन हड्डियों में जान डालेगा जबकि वे चूरा–चूरा हो चुकीं (78) कह दीजिए कि उनमें वही जान डालेगा जिसने पहली बार उनको बनाया और वह पैदा करने का हर काम ख़ूब जानता है[2] (79) जिसने तुम्हारे लिए हरे पेड़ो से आग बना दी, बस तुम उससे सुलगाने का काम करते हो (80) भला वह जिसने आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया उसको उसकी कुदरत न होगी कि इन जैसों को पैदा कर दे, क्यों नहीं और वही तो सब कुछ पैदा करने वाला है सब जानने वाला है (81) उसका काम तो यह है कि वह जब किसी चीज़ का इरादा बना ले तो उससे कह देता है, हो जा, बस वह हो जाती है (82) तो वह ज़ात पाक है जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाहत है और उसी की तरफ़ तुम सब को लौट कर जाना है (83)

सूरह साफ़्फ़ात

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

क़सम है क़तार दर क़तार पंक्ति बाँधने वालों की[3] (1) फिर झिड़क कर डांटने वालों की (2) फिर याद कर के पढ़ने वालों की (3)

(1) यानी जिनकी पूजा किया करते थे जब मदद की ज़रूरत होगी तो वे उनके ख़िलाफ़ बोलेंगे और उनसे अपनी बेज़ारी (विमुखता) ज़ाहिर कर देंगे, इसका उल्लेख कुरआन में कई जगह पर है (2) राख और हड्डी और मिट्टी से दोबारा इंसान कैसे बन जाएगा यह तो आपत्ति दिमाग़ में आई यह ख़याल न रहा कि हमारी असल क्या थी सिवाय एक अपवित्र बूंद के, वह कैसे इंसान बन कर खड़ा हो गया? जिसने पहली बार पैदा किया वही दूसरी बार भी पैदा कर देगा! फिर आगे कहा कि जो हरे–भरे पेड़ से आग पैदा कर सकता है, वह पुरानी हड्डियों में जान नहीं डाल सकता, हरे–भरे पेड़ से ईंधन प्राप्त होता है और अरबों में दो पेड़ थे मिर्ख़ और अफ़्फ़ार उनके रगड़ने से आग पैदा होती थी (3) कसमें आमतौर से ताकीद के लिए होती हैं कुरआन मजीद में ताकीद के साथ–साथ उन चीज़ों की क़सम खाई गयी है जो आगे आने वाली चीज़ यानी जिस पर क़सम खाई जा रही है वे गवाह की हैसियत रखती हैं, यहां जहां तक ख़्याल है फ़रिश्ते मुराद हैं जो अल्लाह के सामने क़तार (लाइन) बनाकर खड़े होते हैं, शैतानों को भगाते हैं और अल्लाह के आदेशों को याद करते हैं और उनका वर्णन करते हैं।

إِنَّ إِلَٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ﴿٤﴾ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ
الْمَشَارِقِ ﴿٥﴾ إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ﴿٦﴾ وَحِفْظًا
مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَارِدٍ ﴿٧﴾ لَا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ
مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ﴿٨﴾ دُحُورًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ﴿٩﴾ إِلَّا مَنْ خَطِفَ
الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ﴿١٠﴾ فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ
مَنْ خَلَقْنَا ۚ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِينٍ لَازِبٍ ﴿١١﴾ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ﴿١٢﴾
وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ﴿١٣﴾ وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ﴿١٤﴾ وَقَالُوا إِنْ
هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿١٥﴾ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿١٦﴾
أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ﴿١٧﴾ قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دَاخِرُونَ ﴿١٨﴾ فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ
وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿٢٠﴾ هَٰذَا
يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢١﴾ احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا
وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٢٢﴾ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَىٰ
صِرَاطِ الْجَحِيمِ ﴿٢٣﴾ وَقِفُوهُمْ ۖ إِنَّهُمْ مَسْئُولُونَ ﴿٢٤﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ ﴿٢٥﴾ بَلْ
هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ﴿٢٦﴾ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٧﴾
قَالُوا إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ﴿٢٨﴾ قَالُوا بَلْ لَمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٢٩﴾

منزل٦

निश्चित रूप से तुम्हारा उपास्य केवल एक ही है[1] (4) आसमानों और ज़मीन का और उनके बीच जो कुछ है उन सब का पालनहार है और पूरबों का पालनहार है[2] (5) हमने दुनिया वाले आसमान को सितारों की खूब शोभा दी है (6) और हर उदण्ड शैतान से सुरक्षित रखने के लिए[3] (7) वे मल–ए–आला (ऊपरी दुनिया) की भनक पा नहीं सकते और हर ओर से मारे जाते हैं (8) धुत्कारने को, और उनके लिए हमेशा का अज़ाब है(9) सिवाय इसके की कोई कुछ उचक ले तो चमकता हुआ एक अंगारा उसके पीछे लग जाता है (10) तो आप उनसे पूछिए कि उनका पैदा करना सख़्त है या हमने जो और चीज़ें पैदा कीं, उनको तो हमने चिपकती हुई मिट्टी से बनाया है[4] (11) हाँ आपको तो आश्चर्य होता है और वे मज़ाक़ करते हैं (12) और जब समझाया जाता है तो नसीहत नहीं हासिल करते (13) और जब कोई निशानी देखते हैं तो मज़ाक का माहौल बनाते हैं (14) और कहते हैं कि यह तो खुला जादू है (15) भला जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएंगे तो क्या हम उठाए जाएंगे (16) और क्या हमारे बाप दादा भी जो पहले हुए (17) बता दीजिए कि हाँ (ऐसा ही होगा) और (उस समय) तुम अपमानित होगे (18) बस यह तो सिर्फ़ एक ललकार होगी फिर वे देखने लगेंगे (19) और कहेंगे हाय बर्बादी यही बदले का दिन है (20) (हाँ) यही फ़ैसले का दिन है जिसको तुम झुठलाया करते थे (21) उन सबको घेर लाओ जिन्होंने ज़ुल्म किया और उनके साथियों को और उनको भी जिनको यह पूजा करते थे (22) अल्लाह को छोड़ कर, फिर उन सब को दोज़ख का रास्ता बता दो (23) और ज़रा उनको ठहरा रखो उनसे पूछा जाएगा (24) क्या बात है (अब) एक दूसरे की मदद (क्यों) नहीं करते (25) बल्कि वे तो इस दिन सिर झुकाए खड़े होंगे (26) और वे एक दूसरे की ओर ध्यान दे कर पूछेंगे (27) कहेंगे तुम ही हमारे पास चढ़े चले आते थे[5] (28) वे कहेंगे बल्कि तुम ही कौन से ईमान लाने वाले थे (29)

---

(1) यह तौहीद (एकेश्वरवाद) की हक़ीक़त का बयान है और मक्के के मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) फ़रिश्तों को जो खुदा की बेटियाँ कहते थे उसका खण्डन है और उसके एक प्रमाण के रूप में पिछली आयतें हैं कि फ़रिश्ते हर समय बंदगी के काम में लगे हैं (2) पूरबों से आशय उदय होने के स्थान हैं चाहे वे सूर्योदय होने का स्थान हो जो मौसम के अनुसार बदलते रहते हैं या चाँद सितारों के उदय होने के स्थान हो (3) इसका उल्लेख सूरह हिज्र में हो चुका (4) आसमान, ज़मीन, सूरज व चाँद का पैदा करना कठिन है या एक मुट्ठी भर मिट्टी को दोबारा ज़िन्दगी देना (5) कमज़ोर लोग बलवानों से कहेंगे।

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُم مِّن سُلْطَٰنٍ ۖ بَلْ كُنتُمْ قَوْمًا طَٰغِينَ ﴿٣٠﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا
قَوْلُ رَبِّنَآ ۖ إِنَّا لَذَآئِقُونَ ﴿٣١﴾ فَأَغْوَيْنَٰكُمْ إِنَّا كُنَّا غَٰوِينَ ﴿٣٢﴾ فَإِنَّهُمْ
يَوْمَئِذٍ فِى ٱلْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٣﴾ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِٱلْمُجْرِمِينَ ﴿٣٤﴾
إِنَّهُمْ كَانُوٓا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣٥﴾ وَيَقُولُونَ
أَئِنَّا لَتَارِكُوٓا ءَالِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ ﴿٣٦﴾ بَلْ جَآءَ بِٱلْحَقِّ وَصَدَّقَ
ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿٣٧﴾ إِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا ٱلْعَذَابِ ٱلْأَلِيمِ ﴿٣٨﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا
كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَ ٱللَّهِ ٱلْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾ أُولَٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ
مَّعْلُومٌ ﴿٤١﴾ فَوَٰكِهُ ۖ وَهُم مُّكْرَمُونَ ﴿٤٢﴾ فِى جَنَّٰتِ ٱلنَّعِيمِ ﴿٤٣﴾ عَلَىٰ سُرُرٍ
مُّتَقَٰبِلِينَ ﴿٤٤﴾ يُطَافُ عَلَيْهِم بِكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ﴿٤٥﴾ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ
لِّلشَّٰرِبِينَ ﴿٤٦﴾ لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ ﴿٤٧﴾ وَعِندَهُمْ قَٰصِرَٰتُ
ٱلطَّرْفِ عِينٌ ﴿٤٨﴾ كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ﴿٤٩﴾ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ
يَتَسَآءَلُونَ ﴿٥٠﴾ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّى كَانَ لِى قَرِينٌ ﴿٥١﴾ يَقُولُ
أَءِنَّكَ لَمِنَ ٱلْمُصَدِّقِينَ ﴿٥٢﴾ أَءِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَٰمًا
أَءِنَّا لَمَدِينُونَ ﴿٥٣﴾ قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ﴿٥٤﴾ فَٱطَّلَعَ
فَرَءَاهُ فِى سَوَآءِ ٱلْجَحِيمِ ﴿٥٥﴾ قَالَ تَٱللَّهِ إِن كِدتَّ لَتُرْدِينِ ﴿٥٦﴾

منزل٦

और हमारा तुम पर कोई ज़ोर तो था नहीं बल्कि तुम ही सरकश लोग थे (30) अब तो हमारे पालनहार की बात हम पर थुप गई, अब हमें मज़ा चखना ही है (31) हम तो बहके हुए थे ही, तो हमने तुम को भी बहकाया (32) बस वे सब उस दिन अज़ाब में शरीक होंगे (33) हम अपराधियों के साथ ऐसा ही व्यवहार करते हैं (34) उनका हाल यह था कि जब उनसे कहा जाता था कि अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं तो वे अकड़ते थे (35) और कहते थे कि क्या हम अपने पूज्यों को किसी दीवाने शायर[1] के लिए छोड़ दें (36) जबकि वे तो सच्चाई लेकर आये थे और उन्होंने पैगम्बरों को सच्चा बताया था (37) निश्चित रूप से अब तुम्हें दुखद अज़ाब का मज़ा चखना होगा (38) और तुम्हें उसी की सज़ा मिल रही है जो तुम किया करते थे (39) सिवाय अल्लाह के खास बंदों के (40) वही लोग हैं जिनके लिए रोज़ी निर्धारित है (41) (यानी) मेवे और उनका सम्मान किया जाएगा (42) नेमतों की जन्नतों में (43) आमने सामने मसहरियों पर (44) सुथरी शराब के जाम का उनमें दौर चल रहा होगा (45) बिल्कुल सफेद पीने वालों के लिए स्वादिष्ट (46) न उसमें सिर घूमेगा और न वे बहकेंगे (47) और उनके पास शर्मीली निगाहों वाली, ख़ूबसूरत आँखों वाली हूरें होंगी (48) जैसे वे छिपे हुए अंडे हों[2] (49) फिर वे एक दूसरे की ओर ध्यान देकर पूछेंगे (50) उनमें एक कहने वाला कहेगा कि मेरा एक दोस्त था (51) वह कहता था क्या तुम वास्तव में विश्वास रखते हो (52) भला जब हम मिट्टी और हड्डियां रह जाएंगे फिर क्या हमें बदला मिलेगा (53) वह (अपने जन्नती साथियों से) कहेगा क्या तुम झांक कर देखोगे (54) फिर वह खुद झांक कर देखेगा तो उसे दोज़ख के बीच पाएगा (55) कहेगा खुदा की क़सम तूने तो मुझे मार ही डाला था (56)

(1) मक्के के मुश्रिक आपको शायर (कवि) और मजनून बताया करते थे, आगे इसकी कलई खोली जा रही है कि शायरों का झूठ मशहूर है, ऐसे सच्चे को शायर कैसे कहा जा सकता है जो दुनिया में सच्चाई ही लेकर आया है, क्या मजनू और दीवाने ऐसे सही, सच्चे और पुख्ता नियम पेश किया करते हैं (2) यह सफाई, सुथराई और पारदर्शिता कि मिसाल है।

और अगर मेरे पालनहार का इनआम न होता तो मैं भी पकड़ा जाता[1] (57) तो क्या (सचमुच) अब हम मरने वाले नहीं (58) सिवाय हमारी पहली मौत के, और अब हमें अज़ाब भी नहीं होगा (59) सच्चाई यह है कि यही बड़ी सफलता है (60) ऐसी ही चीज़ों के लिए काम करने वालों को काम करना चाहिए (61) भला यह मेहमानी बेहतर है या ज़क्कूम का पेड़ (62) हमने उसको ज़ालिमों के लिए मुसीबत बना दिया है[2] (63) वह एक पेड़ है जो दोज़ख की जड़ से निकलता है (64) उसके गुच्छे जैसे शैतानों के सिर (65) बस वे (दोज़ख़ वाले) उसी से खाएंगे तो उसी से पेट भरेंगे (66) फिर उस पर उन्हें खौलते हुए पानी का मिश्रण मिलेगा[3] (67) फिर उनको दोज़ख़ ही की ओर ले जाया जाएगा (68) उन्होंने अपने बाप दादा को ग़लत रास्ते पर पाया (69) बस वे उन्हीं के पदचिन्ह पर तेज़ी के साथ भागे चले जा रहे हैं[4] (70) और उनसे पहले गुज़रे हुए लोगों में अधिकतर गुमराह ही हुए (71) और निश्चित रूप से हमने उनमें डराने वाले भेजे (72) फिर देखिए कि जिनको ख़बरदार किया गया था उनका कैसा अंजाम हुआ (73) सिवाय अल्लाह के खास बंदों के (74) और नूह ने हमको पुकारा तो (देख लो कि हम) क्या खूब दुआ क़ुबूल करने वाले हैं (75) और हमने उनको और उनके घर वालों को बड़ी तकलीफ़ से बचाया[5] (76) और उन्हीं की संतान को हमने बाक़ी रखा (77) और उसी को बाद वालों में क़ायम रखा (78) सलाम हो नूह पर दुनिया जहान में (79) हम अच्छे काम करने वालों को इसी तरह बदला दिया करते हैं (80) निश्चित रूप से वे हमारे ईमान वाले बंदों में थे (81) फिर दूसरों को हमने डुबो दिया (82)

---

(1) यानी तूने सारी कोशिश कर डाली कि मैं भी एक अल्लाह को न मानूं और नबियों की बात का इनकार करूं, वह तो अल्लाह की कृपा हुई कि मैं बच गया वरना मैं भी धर लिया गया होता, फिर वह खुशी में कहेगा कि अब मौत तो आनी नहीं, बस अब यह नेमत हमेशा की है, अब हम लोग अज़ाब से सुरक्षित कर दिये गये और यही सबसे बड़ी सफलता है (2) ज़क्कूम दोज़ख के पेड़ का नाम है जो बड़ा कड़वा, स्वादहीन और कांटेदार होगा जैसे थोहड़ का पेड़, वह दोज़ख में भी काफिरों के लिए मुसीबत होगा कि जब भूख लगेगी तो वही खाने में मिलेगा और दुनिया में भी उनके लिए मुसीबत कि जब उसका उल्लेख आया तो उन्होंने तुरंत इनकार कर दिया कि कहीं आग में पेड़ उग सकता है (3) खौलता हुआ पानी जिसमें ज़क्कूम का स्वाद होगा और पीप मिला हुआ होगा (4) बाप–दादा के तरीक़े पर आंख बंद करके दौड़ पड़े, विचार ही न किया कि सही है या ग़लत (5) विवरण गुज़र चुका है कि वे साढ़े नौ सौ साल तक दावत देते (इस्लाम प्रचार करते) रहे मगर कुछ ही लोग ईमान लाये, अंततः सब डुबो दिये गये और ईमान वालों को एक नाव में बचा लिया गया।

وَإِنَّ مِنْ شِيعَتِهِ لَإِبْرَاهِيمَ ﴿٨٣﴾ إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٤﴾
إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ﴿٨٥﴾ أَئِفْكًا آلِهَةً دُونَ اللَّهِ
تُرِيدُونَ ﴿٨٦﴾ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ﴿٨٨﴾
فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ﴿٨٩﴾ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ﴿٩٠﴾ فَرَاغَ إِلَىٰ آلِهَتِهِمْ
فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٩١﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ﴿٩٢﴾ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ
ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ﴿٩٣﴾ فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزِفُّونَ ﴿٩٤﴾ قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا
تَنْحِتُونَ ﴿٩٥﴾ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا
فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ ﴿٩٧﴾ فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ﴿٩٨﴾
وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِي مِنَ
الصَّالِحِينَ ﴿١٠٠﴾ فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ
قَالَ يَا بُنَيَّ إِنِّي أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرَىٰ
قَالَ يَا أَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ
الصَّابِرِينَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ﴿١٠٣﴾ وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ ﴿١٠٤﴾
قَدْ صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٠٥﴾ إِنَّ
هَٰذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ﴿١٠٦﴾ وَفَدَيْنَاهُ بِذِبْحٍ عَظِيمٍ ﴿١٠٧﴾

وقف لازم

منزل ٦

और निश्चित रूप से उन्हीं के रास्ते पर चलने वालों में इब्राहीम भी थे (83) जब वे अपने पालनहार के पास पाक दिल के साथ उपस्थित हुए (84) जब उन्होंने अपने पिता और अपनी क़ौम से कहा कि तुम किस चीज़ की इबादत करते हो (85) क्या अल्लाह को छोड़ कर झूठे खुदा चाहते हो (86) आखिर सारे संसारों के पालनहार के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है (87) फिर उन्होंने एक नज़र सितारों पर डाली[1] (88) तो कहा कि मैं बीमार हूं (89) बस वे उनसे मुंह फेर कर चल दिये (90) फिर उनके उपास्यों के पास जा पहुंचे, पूछा क्या तुम खाते नहीं (91) क्या बात है तुम बोलते क्यों नहीं (92) फिर पूरी शक्ति से उनको मारने के लिए पिल पड़े (93) तो लोग दौड़ते हुए उनके पास आए (94) (इब्राहीम ने) कहा क्या तुम ऐसों को पूजते हो जिनको तुम खुद तराशते हो (95) जब कि अल्लाह ने तुम को पैदा किया और तुम्हारे सब काम–काज को (96) वे बोले उसके लिए एक भवन बनाओ फिर उसको आग में डाल दो (97) तो उन्होंने उनके साथ एक चाल चली तो हमने उन्हीं को नीचा कर दिया (98) और उन्होंने कहा मैं अपने पालनहार की ओर जाता हूं वह जल्द ही मुझे रास्ता देगा (99) ऐ मेरे पालनहार! मुझे भली संतान प्रदान कर (100) तो हमने उनको एक सहनशील बच्चे की खुशख़बरी दी (101) फिर जब वह उनके साथ दौड़ने भागने के क़ाबिल हुआ तो उन्होंने कहाः ऐ मेरे बेटे! मैं सपना देखता हूँ कि मैं तुझे ज़िबह कर रहा हूँ तुम सोच कर बताओ तुम्हारी क्या राय है? वे बोले पिताश्री! आपको जो आदेश हुआ है उसे कर गुज़रिए, अल्लाह चाहेगा तो आप मुझे सब्र करने वालों में ही पाएंगे (102) फिर जब उन दोनों ने माथा टेक दिया और इब्राहीम ने उनको माथे के बल लिटा दिया (103) और हमने उन्हें आवाज़ दी कि ऐ इब्राहीम (104) तुमने सपने को सच कर दिखाया निश्चित रूप से हम अच्छा काम करने वालों को ऐसे ही बदला देते हैं (105) निश्चित रूप से यह एक खुली हुई परीक्षा थी (106) और हमने एक ज़बरदस्त क़ुर्बानी को उसका फ़िदिया बना दिया (107)

---

(1) क़ौम में सितारे देख कर फ़ैसले करने का रिवाज़ था, हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को जब उन्होंने देखा कि सितारों को देखने के बाद यह कह रहे हैं कि मैं बीमार हूं तो उनको विश्वास हो गया कि वे बीमार ही होंगे वरना जल्द ही बीमार हो जाएंगे, इसलिए वे उनको छोड़ कर चल दिये, वह उनके मेले का दिन था, उसमें वे हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को ले जाना चाहते थे, हज़रत इब्राहीम अलै0 अपने उपाय से बच गये और अकेलेपन को अच्छा अवसर जानकर उनके मूर्ति स्थल पहुंच गये और सारी मूर्तियों को तोड़ डाला, लोगों को पता चला तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम बुलवाए गये, उन्होंने साफ़ कहा कि बड़ी मूर्ति मौजूद है उससे पूछो कि और मूर्तियां किसने तोड़ी? इस प्रकार इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने हक़ीक़त खोल दी कि पहली बात तो यह है कि अगर वे पूज्य होते तो पहले अपना बचाव करते, फिर यह कि बड़ी मूर्ति भी यूंही बैठी रही और कुछ न बोल सकी और यह भी नही तो जाकर उस मूर्ति से पूछ लो कि क्या हुआ, सबके सिर शर्म से झुक गये मगर क़िस्मत में हिदायत न थी, उनको आग में डाला, अल्लाह ने रक्षा की और बुद्धिमान बेटा प्रदान किया फिर दोनों बाप–बेटे को परीक्षा से गुज़ारा गया, अपनी जानकारी में हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने छुरी चला दी मगर अल्लाह ने एक मेंढा भेज दिया जो हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की जगह जब्ह हो गया और क़ुर्बानी पूरी हो गई और यह क़ुर्बानी अल्लाह तआला ने क़यामत तक के लिए शरीअत का भाग बना दिया, ऐसा लगता है जिब्ह–ए–अज़ीम (महान क़ुर्बानी) इसी की ओर इशारा है।

और बाद में आने वालों में हमने उसको बाकी रखा (108) सलाम हो इब्राहीम पर (109) अच्छे काम करने वालों को हम ऐसे ही बदला देते हैं (110) निश्चित रूप से वे हमारे ईमान वाले बंदों में थे (111) और हमने उनको इस्हाक़ की खुशख़बरी दी कि वे नेक लोगों में से एक पैग़म्बर होंगे (112) और हमने उन पर और इस्हाक़ पर बरकत उतारी और उनकी संतान में अच्छे काम करने वाले भी होंगे और खुलकर अपने साथ अन्याय करने वाले भी होंगे (113) और हमने मूसा और हारून पर एहसान किया (114) और उनको और उनकी क़ौम को बड़ी तकलीफ़ से बचा लिया (115) और उनकी मदद की तो वही ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) रहे (116) और उन दोनों को खुली किताब दी (117) और उनको सीधा रास्ता चलाया (118) और बाद में आने वालों में हमने उसको बाक़ी रखा (119) सलाम हो मूसा और हारून पर (120) अच्छे काम करने वालों को हम ऐसे ही बदला दिया करते हैं (121) निश्चित रूप से वे दोनों हमारे ईमान वाले बंदों में थे (122) और निश्चित रूप से इलयास भी रसूलों ही में थे (123) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि क्या तुम डरते नहीं (124) क्या तुम बअ्ल (मूर्ति) की दुहाई देते हो और सबसे बेहतर पैदा करने वाले को तुमने छोड़ रखा है[1] (125) अल्लाह को जो तुम्हारा भी पालनहार है और तुम्हारे बाप दादा का भी पालनहार है जो गुज़र चुके (126) तो उन्होंने उनको झुठला दिया बस वे सब धर लिए जाने वाले हैं (127) सिवाय अल्लाह के ख़ास बंदों के (128) और बाद में आने वालों में हमने उसको बाक़ी रखा (129) सलाम हो इलयास पर (130) अच्छे काम करने वालों को हम ऐसे ही बदला देते हैं (131) वे हमारे ईमान वाले बंदों में थे (132) और लूत भी रसूलों ही में थे (133)

(1) हज़रत इलयास अ़लैहिस्सलाम का इतना ही वर्णन पवित्र क़ुरआन में है, इससे ज़्यादा विवरण न पवित्र क़ुरआन में है और न सही हदीसों में, हां! इस्राईली रिवायतों (वर्णनों) में है कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के बाद एक राजा की पत्नी ने "बअ्ल" नामक एक मूर्ति को पूजना शुरु किया था फिर शिर्क फैलने लगा तो हज़रत इलयास अ़लैहिस्सलाम को सुधार के लिए भेजा गया मगर लोगों ने उनकी बात न मानी और उनको क़त्ल करने पर उतारू हो गये और अल्लाह ने उनको सुरक्षित उठा लिया और क़ौम तबाह कर दी गई।

اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۳۴﴾ اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿۱۳۵﴾ ثُمَّ
دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ﴿۱۳۷﴾ وَبِالَّيْلِ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۳۹﴾ اِذْ اَبَقَ اِلَى
الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿۱۴۰﴾ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ﴿۱۴۱﴾
فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿۱۴۲﴾ فَلَوْلَاۤ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ﴿۱۴۳﴾
لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿۱۴۴﴾ فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ
سَقِيْمٌ ﴿۱۴۵﴾ وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ﴿۱۴۶﴾ وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى
مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ﴿۱۴۷﴾ فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿۱۴۸﴾
فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿۱۴۹﴾ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ
اِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ ﴿۱۵۰﴾ اَلَاۤ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿۱۵۱﴾
وَلَدَ اللّٰهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۵۲﴾ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿۱۵۳﴾
مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۵۵﴾ اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ
مُّبِيْنٌ ﴿۱۵۶﴾ فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۵۷﴾ وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ
وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ؕ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿۱۵۸﴾
سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۵۹﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۱۶۰﴾

ع النصف

منزل۶

जब हमने उनको और उनके घर वालों को बचा लिया (134) सिवाय एक बुढ़िया के कि वह निश्चित रूप से पीछे रह जाने वालों में थी (135) फिर औरों को हमने तहस-नहस कर डाला (136) और तुम उन (की बस्तियों) से सुबह को भी गुज़रते हो (137) और शाम को भी, फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते[1] (138) और यूनुस भी रसूलों में थे (139) जब वे भाग कर भरी नाव पर जा पहुँचे (140) फिर वे पांसा डालने[2] में शरीक हुए तो आरोप उन्हीं पर आया (141) तो उनको मछली निगल गई और वे बदहाल हो रहे थे (142) बस अगर वे तस्बीह करने वाले न होते (143) तो निश्चित रूप से क़यामत तक उसी के पेट में पड़े रहते (144) फिर हमने उनको एक खुले मैदान में ला डाला जबकि वे निढ़ाल थे (145) और उन पर बेल[3] का पेड़ उगा दिया (146) और हमने उनको एक लाख या उससे भे ज़्यादा (लोगों) की ओर रसूल बना कर भेजा था (147) बस वे ईमान ले आए तो हमने उनको एक अवधि तक मज़े से रखा (148) अब आप उनसे पूछिए कि भला उनके पालनहार के लिए बेटियाँ हैं और उनके लिए बेटे हैं[4] (149) या हमने फरिश्तों को औरत बनाया और वे देख रहे थे (150) अच्छी तरह सुन लो वे मन में गढ़-गढ़ कर कहते हैं (151) कि अल्लाह के यहां संतान हुई और निश्चित रूप से वे झूठे ही हैं (152) क्या उसने बेटों के मुकाबले में बेटियाँ अपनाईं (153) तुम्हें हुआ क्या है? तुम कैसे फ़ैसले करते हो[5] (154) भला तुम ध्यान नहीं देते (155) या तुम्हारे पास कोई खुली हुई दलील (प्रमाण) मौजूद है (156) तो अगर तुम सच्चे ही होते अपनी किताब ले आओ (157) और वे खुदा और जिन्नों के बीच सम्बन्ध बताते हैं जबकि जिन्नों को पता है कि वे ज़रूर हाज़िर किये जाने वाले हैं (158) अल्लाह उससे बहुत पाक है जो वे बताते हैं (159) सिवाय अल्लाह के चुने हुए बन्दों के[6] (160)

(1) गुज़र चुका है कि यह बस्तियाँ मक्के वालों के शाम (सीरिया) को जाने वाले रास्ते पर थीं, और उनकी निगाहों से गुज़रती थीं (2) हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम का वाक़या विस्तार से गुज़र चुका है कि वे क़ौम के लिए अज़ाब की भविष्यवाणी करके चले गये, उनके जाने के बाद अज़ाब के कुछ लक्षण क़ौम को नज़र आये तो वह सब इकट्ठा होकर बिलक-बिलक कर रोए और अपनी गलतियों की माफ़ी मांगी, अल्लाह ने अज़ाब फेर दिया, हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम ने देखा कि अज़ाब न आया तो शायद शर्मिन्दगी की वजह से वे अपनी बस्ती में वापस नहीं आए, शायद उनको क़ौम के ईमान लाने का भी पता नहीं था, नाव पर पार होने के लिए बैठे तो नाव डोलने लगी, लोगों ने कहा कि कोई गुलाम अपने स्वामी से भाग कर आया है उसको नदी में डाल दिया जाए, पाँसा फेंकने में बार-बार हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम ही का नाम आया तो उनको नदी में डाल दिया गया, एक मछली अल्लाह के आदेश से इन्तिज़ार में थी वह निगल गई, उसके पेट में उन्होंने "लाइला ह इल्ला अं-त सुब्हा न क इन्नी कुंतु मिनज़्ज़ालिमीन" को बार बार पढ़ना शुरु कर दिया, अल्लाह को उनकी विनम्रता पसंद आई और मछली ने उनको तट पर लाकर उगल दिया, उस समय वे बिल्कुल कमज़ोर हो चुके थे, खाल गल गई थी, अल्लाह ने उनकी बीमारी का इलाज उपलब्ध कराया और वे स्वस्थ हो कर बस्ती वापस आए, क़ौम इन्तिज़ार कर रही थी, सब ईमान ले आए और एक ज़माने तक ज़िंदा रहे (3) कद्दू की एक बेल थी जिसको अल्लाह ने उनके क़रीब ही उगा दिया था, जिसने उनके लिए खाद्य और दवा का काम किया (4) हद यह थी कि खुद उनके यहां लड़की पैदा होती तो मुंह उतर जाता, जिंदा दफ़्न कर आते और अल्लाह के लिए लड़कियां बना रहे थे (5) वे कहते थे कि जिन्नों के सरदारों की बेटियाँ फ़रिश्तों की माएं हैं (मआज़ल्लाह) (6) कि वे हर प्रकार की पकड़-धकड़ से सुरक्षित हैं जिन्न हों या इंसान।

فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ﴿١٦١﴾ مَآ أَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ﴿١٦٢﴾ إِلَّا مَنْ هُوَ
صَالِ الْجَحِيْمِ ﴿١٦٣﴾ وَمَا مِنَّآ إِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿١٦٤﴾ وَّإِنَّا لَنَحْنُ
الصَّآفُّوْنَ ﴿١٦٥﴾ وَإِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿١٦٦﴾ وَإِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٦٧﴾
لَوْ أَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ﴿١٦٨﴾ لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٩﴾
فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا
الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧١﴾ إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿١٧٢﴾ وَإِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ
الْغٰلِبُوْنَ ﴿١٧٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٤﴾ وَّأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٥﴾
أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٧٦﴾ فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ
الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٧﴾ وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٨﴾ وَّأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٩﴾
سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى
الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾

سُوْرَةُ صٓ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِي الذِّكْرِ ﴿١﴾ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ﴿٢﴾
كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ﴿٣﴾

منزل ٦

तो तुम और तुम जिनको पूजते हो वे (161) उसके हाथ से किसी को फिसला नहीं सकते[1] (162) सिवाय उसी के जो दोज़ख में जाने ही वाला हो[2] (163) और (फ़रिश्ते कहते हैं) हममें हर एक के लिए निर्धारित स्थान है (164) और हम ही क़तार (लाइन) बांधने वाले हैं (165) और हम ही पवित्रता बयान करने वाले हैं[3] (166) और वे मुश्रिक तो यही कहते हैं (167) कि अगर हमारे सामने पहलों की नसीहत वाली किताब होती (168) तो हम ज़रूर अल्लाह के खास बंदों में होते (169) फिर उन्होंने उसका इनकार किया तो उनको आगे पता चल जाएगा[4] (170) और हमारे उन बंदों के लिए जिनको पैग़म्बर बनाया गया हमारी बात तय है (171) कि निश्चित रूप से मदद तो उन्हीं की होनी है (172) और निश्चित रूप से हमारी सेना ही प्रभुत्वशाली (ग़ालिब) होने वाली है (173) तो एक अवधि तक के लिए आप उनसे मुंह फेरे रहिए (174) और उनको देखते जाइए फिर वे आगे देख लेंगे (175) तो क्या उनको हमारे अज़ाब की जल्दी है (176) बस जब वह उनके मैदान में उतरेगा तो जिनको डराया गया उनकी सुबह बुरी होगी (177) और आप एक अवधि तक के लिए उनसे बेपरवाह हो जाइए (178) और देखते जाइए तो आगे वे भी देख लेंगे (179) आप का पालनहार जो इज़्ज़त का मालिक है उन सारी चीज़ों से पाक है जो वे बताते हैं (180) और रसूलों पर सलाम है (181) और असल प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो सारे जहानों का पालनहार है (182)

सूरह सॉद

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

सॉद, नसीहत वाले कुरआन की क़सम (1) बात यह है कि इनकार करने वाले घमण्ड और विरोध में लगे हैं (2) उनसे पहले हमने कितनी नस्लों को हलाक कर दिया फिर उन्होंने पुकारा तो रिहाई का समय रहा ही न था[5] (3)

---

(1) जिसको अल्लाह ने हिदायत के लिए चुन लिया हो उसको कोई गुमराह नही कर सकता (2) और उसने अपनी हटधर्मी से गलत रास्ते पर रहना तय ही कर लिया हो (3) फ़रिश्तों की ज़बानी साफ़ बता दिया गया कि उनकी अल्लाह से कोई रिश्तेदारी नहीं, वे सब अल्लाह के बंदे पंक्तिबद्ध उसके सामने विनम्रतापूर्वक खड़े हैं (4) मक्के के मुश्रिक यहूदियों और ईसाईयों से कहते थे कि अगर हमको किताब मिली तो हम तुमसे ज़्यादा अमल करने वाले होंगे मगर जब किताब मिली तो तो इनकार कर बैठे (5) जब तक नबी बुलाते रहे इनकार करते रहे और कुछ उदण्डता और दुश्मनी की वजही से, फिर जब अज़ाब आ गया तो लगे पुकारने जब कि तौबा और गुनाहों से लौटने का समय गुज़र चुका।

وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ۡ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٤﴾ اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ﴿٥﴾ وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ يُّرَادُ ﴿٦﴾ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚ اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ﴿٧﴾ ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا ۭ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِيْ ۚ بَلْ لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ ﴿٨﴾ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَاۗىِٕنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ﴿٩﴾ اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۣ فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْاَسْبَابِ ﴿١٠﴾ جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ مِّنَ الْاَحْزَابِ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ﴿١٢﴾ وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّاَصْحٰبُ لْــــَٔيْكَةِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ الْاَحْزَابُ ﴿١٣﴾ اِنْ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ﴿١٤﴾ وَمَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَاۗءِ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ﴿١٥﴾ وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿١٦﴾ اِصْبِرْ عَلٰي مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿١٧﴾ اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ ﴿١٨﴾

ع

منزل٦

और उनको इस पर आश्चर्य है कि उनके पास जो ख़बरदार करने वाला आया वह उन्हीं में से है और काफ़िर बोले यह तो जादूगर है, झूठा है (4) भला इसने सब पूज्यों को एक ही पूज्य बना दिया यह तो बड़ी आश्चर्यजनक बात है[1] (5) और उनमें सम्मानित लोग यह कह कर चलते बने कि चलो और अपने पूज्यों पर जमे रहो, निश्चित रूप से इसके पीछे कोई और ही मक़सद (नज़र आता) है[2] (6) पिछले दीन (धर्म) में भी हमने यह बात नहीं सुनी, कुछ नहीं यह तो मनगढ़ंत बात मालूम होती है (7) क्या हमारे बीच उसी पर नसीहत उतरी है, बात यह है कि वे हमारी नसीहत में संदेह करते हैं बल्कि उन्होंने मेरे अज़ाब का मज़ा चखा नहीं है (8) क्या उनके पास आपके पालनहार की रहमत के ख़ज़ाने हैं जो ज़बरदस्त है, ख़ूब देने वाला है[3] (9) या उनको आसमानों और ज़मीन और दोनों के बीच की बादशाही मिली हुई है तो वे रस्सियां तान कर (आसमान पर) चढ़ जाएं (10) यह तो सेनाओं में एक ऐसी सेना है जो यहीं पराजित हो जाएगी[4] (11) इनसे पहले भी नूह की क़ौम और आद और जबरदस्त पकड़ रखने वाला फिरऔन सब ही झुठला चुके (12) और समूद और कौम–ए–लूत और बाग़ों वाले भी यही वे सेनाएं हैं (जो सब तबाह हुईं) (13) सभी ने पैग़म्बरों को झुठलाया तो मेरी सज़ा उन पर पड़ कर रही (14) और उनको तो उस एक ही चीख का इन्तिज़ार है जिसमें कोई अंतराल नहीं होगा (15) और वे कहते हैं कि ऐ हमारे पालनहार! हमें हिसाब के दिन से पहले ही हमारा हिस्सा दे दे (16) आप तो उनकी बकवास पर सब्र कीजिए और हमारे बंदे दाऊद को याद कीजिए जो शक्ति वाले थे निश्चित रूप से (वे अल्लाह की बारगाह में) बार–बार पलटने और संपर्क साधने वाले थे (17) हमने पहाड़ों को काम पर लगाया वे दिन ढले और दिन चढ़े उनके साथ तस्बीह करते रहते थे (18)

---

(1) अबू तालिब की बीमारी के ज़माने में कुरैश के सरदार उनके पास आये और कहा कि अपने भतीजे को समझाइये वह अपनी दावत देना (इस्लाम प्रचार करना) छोड़ दे, अबू तालिब ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बुलाया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं ऐसी बात उनसे कहलवाना चाहता हूं अगर वे यह बात मान लें तो दुनिया उनके आगे झुक जाए, वे सब तुरंत बोले ज़रूर बताएं, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कलिमा–ए–तय्यिबा का उल्लेख किया तो तुरंत वे सब कपड़े झाड़ कर खड़े हो गये कि सारे पूज्यों को छोड़ कर एक ही पूज्य अपना लें यह तो अजीब बात है, इसी पर यह आयतें उतरीं (2) मुश्रिक बातें बनाने के लिए और दूसरों को रोकने के लिए यह हरबे इस्तेमाल करते थे और इस तरह की बातें करते थे कि दूसरे संदेह में पड़ जाएं हालांकि वे उनकी सेवा में आकर धन, सम्मान, सत्ता हर प्रकार की पेशकश कर चुके थे, जिसके जवाब में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरआन मजीद की कुछ आयतें तिलावत कीं और वे अपना सा मुंह लेकर रह गये (3) पैग़म्बरी पर यह ऐसी आपत्तियां कर रहे हैं कि जैसे सब उन्हीं के हाथ में हो, आगे कहा जा रहा है कि अगर हर चीज़ के मालिक हैं तो आसमान पर चढ़ जाएं और जाकर देख लें (4) कितनी बड़ी–बड़ी क़ौमें तबाह कर दी गईं, उनके सामने इनकी हैसियत ही क्या है जल्द ही यह पराजित हो जाएंगे, मक्का विजय के साथ यह भविष्यवाणी पूरी हुई।

وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً ۖ كُلٌّ لَّهُ أَوَّابٌ ﴿١٩﴾ وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَآتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ
وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾ وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾
إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُودَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ خَصْمَانِ بَغَىٰ
بَعْضُنَا عَلَىٰ بَعْضٍ فَاحْكُم بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَىٰ
سَوَاءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾ إِنَّ هَٰذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً وَلِيَ
نَعْجَةٌ وَاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفِلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾ قَالَ لَقَدْ
ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِ ۖ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْخُلَطَاءِ
لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
وَقَلِيلٌ مَّا هُمْ ۗ وَظَنَّ دَاوُودُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا
وَأَنَابَ ۩ ﴿٢٤﴾ فَغَفَرْنَا لَهُ ذَٰلِكَ ۖ وَإِنَّ لَهُ عِندَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ
مَآبٍ ﴿٢٥﴾ يَا دَاوُودُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُم بَيْنَ
النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ
إِنَّ الَّذِينَ يَضِلُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا
يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ۚ
ذَٰلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِنَ النَّارِ ﴿٢٧﴾

وقف لازم

السجدة

منزل ٦

और पक्षियों को भी इकट्ठा करके (हमने काम पर लगा दिया था) सबके सब उसी के लिए इनाबत (संपर्क साधने) में लगे थे (19) और हमने उनके राज्य को मज़बूत किया था और उनको दानाई (तत्वदर्शिता) और फ़ैसले की ताक़त दी थी[1] (20) और क्या आपको झगड़ा करने वालों की ख़बर पहुंची है जब वे दीवार कूद कर इबादतघर में जा घुसे (21) जब वे दाऊद के पास जा पहुंचे तो वे उनसे घबरा गये उन्होंने कहा डरिये मत हम दो झगड़ने वाले हैं जिनमें एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है तो आप हमारे बीच ठीक–ठीक फ़ैसला कर दीजिए और ज़्यादती मत कीजिए और हमें सीधा रास्ता बता दीजिए (22) यह मेरा भाई है इसके पास निन्नानवे दुंबे हैं और मेरे पास एक ही दुंबा है फिर यह कहता है कि यह भी मेरे हवाले कर दे और इसने बात के ज़ोर से मुझे दबा लिया है (23) उन्होंने कहा निश्चित रूप से इसने तेरे साथ अत्याचार किया है अपने दुंबों में शामिल करने के लिए तेरा दुंबा मांगा और बेशक अधिकतर लोग जिनके बीच साझा होती एक दूसरे पर ज़्यादती ही करते हैं सिवाय ईमान वालों और अच्छे काम करने वालों के और वे तो बहुत कम ही हैं, और दाऊद को ख़्याल हुआ कि हमने उनको आज़माया है तो वे अपने पालनहार से माफ़ी मांगने लगे और झुक कर (सज्दे में) गिर पड़े और रुजू हुए (पलटे) (24) तो हमने उस मामले में उनको माफ़ कर दिया और निश्चित रूप से उनको हमारे दरबार में पहुँच हासिल है और उनके लिए अच्छा ठिकाना है (25) ऐ दाऊद! हमने तुमको देश का ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाया तो लोगों में न्याय के साथ फ़ैसला करना और इच्छा पर मत चलना वरना वह तुम्हें अल्लाह के रास्ते से बहका देगी निश्चित रूप से जो लोग भी अल्लाह के रास्ते से बहकते हैं उनके लिए सख़्त अज़ाब है इसलिए कि उन्होंने हिसाब के दिन को भुला दिया (26) और हमने आसमान और ज़मीन को और उनके बीच जो भी है उसको बेकार नहीं पैदा किया, यह तो उन लोगों का ख्याल है जिन्होंने इनकार किया बस इनकार करने वालों की तो दोज़ख से बर्बादी है (27)

---

(1) अल्लाह तआला ने उनको शक्ति, शासन, धन, पैगम्बरी, फ़ैसला करने की ताक़त और हर तरह की नेमतों से सम्मानित किया था, एक दिन उनको यह ख़्याल आ गया कि सारी व्यवस्थाएं बहुत बेहतर हैं कोई काम इधर से उधर नहीं होता, यह बात अल्लाह को अच्छी न लगी, अल्लाह ने दिखा दिया कि जो दिन उनकी इबादत का था और उसमें उनसे किसी को मिलने की अनुमति न थी दो आदमी सारे पहरों के बावजूद दीवार कूद कर अंदर प्रवेश कर गये जिससे इबादत भी प्रभावित हुई, एकाग्रता न रह सकी, व्यवस्थाओं में भी कमी सामने आई और अल्लाह तआला ने बता दिया कि सब हमारे करने से होता है, अगर एक क्षण भी हम तुम्हें तुम्हारे हवाले कर दें तो सब बिखर कर रह जाए, हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम समझ गये कि उनकी परीक्षा हुई है, वे अपनी गलती पर चेत गये और तुरंत सज्दे में गिर कर तौबा करने लगे और अल्लाह से लौ लगाने में लग गये।

أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ
أَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾ كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ
لِّيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٢٩﴾ وَوَهَبْنَا لِدَاوُودَ سُلَيْمَانَ
نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿٣٠﴾ إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصَّافِنَاتُ
الْجِيَادُ ﴿٣١﴾ فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَن ذِكْرِ رَبِّي حَتَّىٰ
تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾ رُدُّوهَا عَلَيَّ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ وَ
الْأَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَأَلْقَيْنَا عَلَىٰ كُرْسِيِّهِ جَسَدًا ثُمَّ
أَنَابَ ﴿٣٤﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَّا يَنبَغِي لِأَحَدٍ مِّنۢ
بَعْدِي إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ
رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ﴿٣٦﴾ وَالشَّيَاطِينَ كُلَّ بَنَّاءٍ وَغَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾ وَآخَرِينَ
مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٣٨﴾ هَٰذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ
حِسَابٍ ﴿٣٩﴾ وَإِنَّ لَهُ عِندَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ ﴿٤٠﴾ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا
أَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ ﴿٤١﴾
ارْكُضْ بِرِجْلِكَ هَٰذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ ﴿٤٢﴾ وَوَهَبْنَا لَهُ
أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٤٣﴾

منزل٦

क्या हम मानने वालों और अच्छे काम करने वालों को ज़मीन में बिगाड़ करने वालों के बराबर कर देंगे या परहेज़गारों को गुनहगारों के बराबर करार देंगे (28) यह एक पावन पुस्तक है जो हमने आपकी ओर उतारी है ताकि लोग इसकी आयतों पर विचार करें और ताकि बुद्धि रखने वाले इससे नसीहत हासिल करें[1] (29) और हमने दाऊद को सुलैमान प्रदान किये वे क्या ख़ूब बंदे थे बेशक वह (अल्लाह के दरबार में) संपर्क साधने वाले थे (30) (वह समय भी याद करो) जब शाम को उनके सामने उच्चकोटि के घोड़े लाये गये (31) फिर उन्होंने कहा यह तो मैं अपने पालनहार की याद की जगह माल की मोहब्बत में लग गया यहां तक कि (सूरज) डूब गया (32) दोबारा उनको लाओ तो मेरे पास, बस फिर वे उनकी पिंडिलियों और गर्दनों पर वार करने लगे[2] (33) और हमने सुलैमान को जाँचा था और हमने उनके तख़्त पर एक धड़ ला डाला फिर वे रूजु (वापस) हुए[3] (34) दुआ की कि ऐ मेरे पालनहार! मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसा राज (शासन) दे जो मेरे बाद किसी के लिए शोभनीय न हो बेशक तू ही खूब देने वाला है[4] (35) तो हमने उनके लिए हवा को वशीभूत कर दिया, वह उनके आदेश से नर्म व कोमल जहां वे चाहते थे चलती थी (36) और शैतान (भी अधीन कर दिये जिनमें) हर प्रकार के निर्माता और गोताखोर थे (37) और कुछ दूसरे बेड़ियों में जकड़े हुए (38) यह मेरी देन है अब या तो एहसान करो या अपने पास रखो (तुम पर) कोई हिसाब नहीं[5] (39) और निश्चित रूप से उनको हमारे दरबार में निकटता प्राप्त है और उनके लिए अच्छा ठिकाना है (40) और हमारे बंदे अय्यूब को भी याद कीजिए जब उन्होंने अपने पालनहार को पुकारा कि मुझे शैतान ने तकलीफ़ और जंजाल में डाल कर रखा है (41) (अल्लाह ने कहा) अपना पैर मारो यह ठंडा पानी है नहाने को और पीने को (42) और हमने उनको उनके घर के लोग दे दिये और उतने ही और भी (दिये) अपनी रहमत के रूप में और बुद्धिमानों के लिए नसीहत के रूप में(43)

---

(1) अल्लाह इंसाफ़ करने का हुक्म देता है और इसकी अपेक्षा यह है कि अच्छे और बुरे में अंतर किया जाए और अल्लाह ने इसीलिए किताब उतारी ताकि लोग अच्छे–बुरे को समझ कर अच्छाई का रास्ता अपनाएं और उसके अनुसार उनको बदला मिले (2) अस्र के समय का वज़ीफ़ा छूटा तो बेताब हो गये और जिन घोड़ों में व्यस्तता की वजह से ऐसा हुआ था उनको मंगवा कर मारे लज्जा के और अल्लाह के प्रेम में डूब कर उनकी गर्दनें और पिंडिलियां काटने लगे (3) कुछ हदीसों में आता है कि एक बार हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने जोश में कहा कि आज मैं अपनी सब पत्नियों के पास जाऊँगा और सबसे लड़के पैदा होंगे जिनको मैं जिहाद में लगाऊँगा, "इंशाअल्लाह" उन्होंने नहीं कहा, अल्लाह ने पकड़ की और इत्तेफ़ाक़ यह कि किसी पत्नी के यहां संतान न हुई सिवाय एक पत्नी के और वह भी अपूर्ण, शायद इसी की ओर आयत में इशारा है (4) पैग़म्बर की शान यह नहीं कि वह सत्ता मात्र राज करने के लिए मांगे, हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने हुकूमत इसलिए मांगी ताकि हर जगह अल्लाह के नाम का बोल–बाला हो, अल्लाह ने दुआ क़ुबूल कर ली, इंसानों के अलावा जिन्नों और पशु–पक्षी पर भी हुकूमत प्रदान की (5) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने अधिकार दिया कि जितना चाहें सदक़ा करें और जितना चाहें रखें।

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ
نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿٤٤﴾ وَاذْكُرْ عِبٰدَنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ
اُولِي الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ ﴿٤٥﴾ اِنَّاۤ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿٤٦﴾
وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٧﴾ وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَ
الْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٨﴾ هٰذَا ذِكْرٌ ؕ وَاِنَّ
لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٩﴾ جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ﴿٥٠﴾
مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿٥١﴾
وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ
الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾ اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾ هٰذَا ؕ وَاِنَّ
لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ﴿٥٥﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٥٦﴾ هٰذَا ۙ
فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾ وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖۤ اَزْوَاجٌ ﴿٥٨﴾ هٰذَا
فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًۢا بِهِمْ ؕ اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿٥٩﴾ قَالُوْا
بَلْ اَنْتُمْ ۟ لَا مَرْحَبًۢا بِكُمْ ؕ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٠﴾
قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ﴿٦١﴾
وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ﴿٦٢﴾

منزل٦

और (हमने उनसे कहा कि) अपने हाथ में सींकों का मुट्ठा (गट्ठर) ले लो, उससे मार दो और क़सम मत तोड़ो बेशक हमने उनको बर्दाश्त करने वाला पाया, बहुत खूब बंदे थे, बेशक वे रूजू करने (लौटने) वाले थे[1] (44) और हमारे बंदों में इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब को याद कीजिए जो शक्ति वाले थे दूरदर्शी भी (45) हमने उनको एक खास चीज़ (यानी) आख़िरत की याद के लिए चुन लिया था (46) और बेशक वे सब हमारे चुने हुए अति उत्तम लोगों में थे (47) और इस्माईल और यस्आ और जुल्किफ़्ल को भी याद कीजिए, सबसे बेहतरीन लोगों में थे (48) यह एक याद–देहानी (अनुस्मृति) है और बेशक डर रखने वालों ही के लिए अच्छा ठिकाना है (49) हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके दरवाज़े उनके लिए खोल रखे गये हैं (50) उनमें टेक लगाए बैठे होंगे और वहां वे खूब फ़ल और पेय मंगवा रहे होंगे (51) और उनके पास नीची निगाहों वाली हम जोलियाँ होंगी (52) यही वह (चीज़) है जिसका तुमसे हिसाब के दिन के लिए वादा किया जाता था (53) यह हमारी (दी हुई) रोज़ी है जो कभी ख़त्म न होगी (54) यह है (परहेज़गारों के लिए) और सरकशों (उदण्डों) के लिए बहुत बुरा ठिकाना है (55) (यानी) दोज़ख जिसमें वे घुसेंगे तो वह रहने की बुरी जगह है (56) यह है, बस इसका मज़ा चखें गर्म पानी और पीप (57) और कुछ इस जैसी और चीज़ें (58) (जब वे अपने अनुयायियों को देखेंगे तो कहेंगे कि) यह एक और सेना है जो तुम्हारे साथ घुसी चली आ रही है, इन पर फिटकार, यह तो निश्चित रूप से दोज़ख में गिरने वाले हैं (59) वे बोलेंगे खुद तुम पर फिटकार, तुम ही इस मुसीबत को हमारे सामने लाये तो यह बुरा ठिकाना है[2] (60) वे कहेंगे ऐ हमारे पालनहार! जिसने इसको हमारे सामने किया हो दोज़ख में उसके अज़ाब को बढ़ा कर दो गुना कर दे (61) और वे कहेंगे क्या बात है वे लोग हमें दिखाई नहीं दे रहे हैं जिनको हम बहुत बुरे गिनते थे (62)

(1) हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम की बीमारी में शैतान उनकी पत्नी के पास आया, बस वही पास रह गई थीं, और उनकी बीमारी से बहुत परेशान थीं, शैतान ने कहा कि मैं इनका इलाज कर दूँगा बस तुम्हें यह कहना पड़ेगा कि इनको हमने ठीक किया, पत्नी ने हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम से इसका वर्णन किया तो उनको बड़ा दुख हुआ कि वे भी शैतान की चाल में आने लगीं तो उन्होंने गुस्से में कहा कि अगर मैं अच्छा हुआ तो तुझे सौ कोड़े मारूँगा, जब स्वस्थ हुए तो पछतावा हुआ कि ऐसी वफ़ादार दीनदार पत्नी को कैसे मारें, इस पर यह आयत उतरी कि सौ सींकों का गट्ठर लेकर एक बार मार दें क़सम पूरी हो जाएगी, यह भी उन पर अल्लाह की कृपा हुई (2) जब बड़े–बड़े काफ़िरों को दोज़ख में दाख़िल करने के लिए इकट्ठा कर लिया जाएगा तो पीछे उनके अनुयायियों के दल आना शुरु होंगे, उनको देख कर सरदार कहेंगे हमारी ही मुसीबत पड़ी है यह सब कहां मरते खपते चले आ रहे हैं, खुदा की फिटकार हो इन पर, यह सुन कर वे कहेंगे यह सब तुम्हारी ही मुसीबत लाई हुई है, तुम ही ने हमको बहकाया फिर अल्लाह से फरियाद करेंगे कि जो यह मुसीबत हमारे सामने लाया उसको दोहरा अज़ाब दे।

اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ﴿٦٣﴾ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ
تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ
الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ
الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾ قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ﴿٦٧﴾ اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ﴿٦٨﴾ مَا
كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍۭ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٦٩﴾ اِنْ يُّوْحٰٓى
اِلَيَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٠﴾ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ
خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ ﴿٧١﴾ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ
فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّآ
اِبْلِيْسَ ۭ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ
اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۭ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ
الْعَالِيْنَ ﴿٧٥﴾ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۭ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ
مِنْ طِيْنٍ ﴿٧٦﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ﴿٧٧﴾ وَّاِنَّ عَلَيْكَ
لَعْنَتِيْٓ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٧٨﴾ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ
يُبْعَثُوْنَ ﴿٧٩﴾ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِلٰى يَوْمِ
الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿٨١﴾ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٢﴾

منزل٦

क्या हमने उनको हंसी में उड़ाया था या निगाहें उनसे चूक गईं[1] (63) बेशक यह दोज़खियों का झगड़ना सच है (64) आप कह दीजिए निश्चित रूप से मैं तो डराने वाला हूं और पूज्य मात्र अल्लाह है जो अकेला है ज़बरदस्त है (65) आसमानों और ज़मीन का और दोनों के बीच में जो कुछ है उन सब का पालनहार है, प्रभुत्वशाली है, माफ़ करने वाला है (66) बता दीजिए कि यह बहुत बड़ी ख़बर है (67) जिसको तुम ध्यान में नहीं लाते (68) मुझे आलम–ए–बाला (ऊपरी दुनिया) की कुछ ख़बर न थी जब वे आपस में सवाल जवाब कर रहे थे[2] (69) मुझे तो वह्य सिर्फ़ यही की जाती है कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ (70) (याद कीजिए कि) जब आपके पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी का एक इंसान बनाने वाला हूँ (71) फिर जब मैं उसे बना लूं और उसमें अपनी ओर से रूह फूँक दूँ तो तुम उसके सामने सज्दे में पड़ जाना (72) तो सब ही फरिश्तों ने सज्दा किया (73) सिवाय इब्लीस के वह अकड़ा और इनकार करने वालों में हो गया (74) कहा ऐ इब्लीस! जिसे मैंने अपने दोनों हाथों[3] से बनाया उसको सज्दा करने से तुझे किस चीज़ ने रोका, क्या तेरे अंदर अकड़ पैदा हुई या तू दर्जे में बड़ा था (75) वह बोला मैं उससे बेहतर हूं, तूने मुझे आग से बनाया और उसे मिट्टी से (76) अल्लाह तआला ने कहा तू यहां से निकल जा बस निश्चित रूप से तू धुत्कारा हुआ है (77) और तुझ पर क़यामत के दिन तक मेरी फिटकार रहेगी (78) वह बोला ऐ मेरे पालनहार! तू मुझे उस दिन तक के लिए मोहलत दे दे जिस दिन वे उठाए जाएंगे (79) कहा तुझे मोहलत है (80) निर्धारित समय के दिन तक[4] (81) वह बोला बस तेरी इज़्ज़त की क़सम मैं उन सब को बहका कर रहूंगा (82)

(1) ईमान वालों के बारे में यह कहेंगे कि यह सब नज़र आते हैं वे नज़र नहीं आ रहे, क्या हम वास्तव में दुनिया में उनका नाहक़ मज़ाक़ उड़ाते थे? आज वे कहीं और मज़े कर रहे हैं या यह कि हमारी निगाहें खता कर रही हैं, वे भी यहीं कहीं हैं, अंततः हक़ीक़त खुल जाएगी कि वे जन्नत में मज़े कर रहे हैं और इनकार करने वालों के कलेजे कट कर रह जाएंगे (2) इससे फ़रिश्तों की उस बात–चीत की ओर इशारा है जो हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के जन्म के समय हुई थी, आपकी ज़बानी कहलवाया जा रहा है कि मैं उस समय मौजूद नहीं था और न मैं दूसरे गुज़रे हुए फ़रिश्तों के हालात जानता था, यह तो मात्र अल्लाह की वह्य के फल स्वरूप मैं तुमसे बयान कर रहा हूँ जो पैग़म्बर के पास आती है, यह पैग़म्बरी का एक प्रमाण है और तुम इससे मुंह मोड़े हुए हो (3) यह इंसान के लिए अतिसम्मान और इज़्ज़त की बात है, अल्लाह ने कैसे प्यार से कहा कि मैंने उसको अपने दोनों हाथों से बनाया, इससे मानवता के मक़ाम का अंदाज़ा होता है, सारी सृष्टि में अल्लाह ने उसको कैसा सम्मान प्रदान किया (4) यानी सूर फूंकने के दिन तक, आदम अ़लैहिस्सलाम के जन्म की कहानी सूरह बकरह में विस्तार से गुज़र चुकी है।

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٨٣﴾ قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُولُ ﴿٨٤﴾
لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٥﴾ قُلْ
مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ﴿٨٦﴾ إِنْ
هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ﴿٨٨﴾

سُورَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَّسَبْعُونَ آيَةً وَثَمَانِ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١﴾ إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ
الْكِتَابَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ﴿٢﴾ أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ
الْخَالِصُ ۚ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ
إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ
يَخْتَلِفُونَ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ ﴿٣﴾ لَوْ أَرَادَ
اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَاصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ سُبْحَانَهُ ۖ
هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٤﴾ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ
يُكَوِّرُ اللَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى اللَّيْلِ ۖ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُسَمًّى ۗ أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ﴿٥﴾

منزل ٦

सिवाय तेरे उन बंदों के जो उनमें खास हैं (83) कहा बस ठीक है, और मैं ठीक ही कहता हूँ (84) कि मैं तुझसे और तेरे मानने वालों से सबसे दोज़ख़ को भर कर रहूंगा (85) आप कह दीजिए मैं तुमसे कोई बदला नहीं मांगता और न मैं बात बनाने वाला हूँ (86) यह तो सारे संसारों के लिए एक नसीहत है (87) और तुम्हें कुछ ही समय में इस की ख़बर मालूम हो जाएगी (88)

सूरह ज़ुमर

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

यह किताब अल्लाह की ओर से उतारी जा रही है जो ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हिम्मत वाला है (1) हमने आपकी ओर किताब ठीक–ठीक उतारी है तो आप अल्लाह की बंदगी कीजिए उसी के लिए बंदगी को शुद्ध करके (2) अच्छी तरह सुन लो शुद्ध बंदगी अल्लाह ही के लिए है और जिन लोगों ने उसके अलावा काम बनाने वाले बना रखे हैं और कहते हैं कि हम इनकी बंदगी इसलिए करते हैं ताकि यह हमें अल्लाह से मर्तबे में क़रीब कर दें[1] उनके बीच अल्लाह तआला उन बातों का फैसला कर देगा जिनमें झगड़ते हैं, निश्चित रूप से अल्लाह ऐसे व्यक्ति को हिदायत नहीं देता जो झूठा हो, इनकार ही उसका तरीक़ा हो[2] (3) अगर अल्लाह को लड़का ही निर्धारित करना होता तो अपनी सृष्टियों में जिसे चाहता चुन लेता, वह पाक है, वही अल्लाह है जो अकेला है ज़बरदस्त है(4) उसने आसमानों और ज़मीन को ठीक–ठीक पैदा किया, वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है और उसने सूरज और चाँद काम पर लगा दिये हैं सब एक ख़ास अवधि तक चक्कर लगाते रहेंगे, सुन लो वही ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है माफ़ करने वाला है (5)

---

(1) मक्के के मुश्रिक यह कहते थे कि हम दूसरों की इबादत असल खुदा समझ कर नहीं करते बल्कि इसलिए करते हैं ताकि वे हमें अल्लाह से करीब कर दें, यहां बात साफ़ कर दी गई कि इबादत मात्र अल्लाह ही के लिए शोभा देती है, किसी दूसरे की इबादत किसी भी मकसद से की जाए यह भी शिर्क है, जिसके लिए पारिभाषिक शब्द "शिर्क फ़िल उलूहियह" प्रयोग होता है (2) यानी जो हठधर्मी और ज़िद पर आ जाता है वह हिदायत से वंचित कर दिया जाता है।

خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَأَنزَلَ لَكُم
مِّنَ الْأَنْعَامِ ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۚ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا مِّن
بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمَاتٍ ثَلَاثٍ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا
هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُصْرَفُونَ ﴿٦﴾ إِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنكُمْ ۖ وَلَا
يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۖ وَإِن تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ
وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّهُ
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٧﴾ وَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ
مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُو إِلَيْهِ
مِن قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَندَادًا لِّيُضِلَّ عَن سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَمَتَّعْ
بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ﴿٨﴾ أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ
آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّمَا
يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٩﴾ قُلْ يَا عِبَادِ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا
رَبَّكُمْ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ وَأَرْضُ اللَّهِ
وَاسِعَةٌ ۗ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُم بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٠﴾

ع ١٥

منزل٦

उसने तुम को एक अकेली जान से पैदा किया फिर उससे उसका जोड़ा बनाया और उसने तुम्हारे लिए चौपायों के आठ जोड़े उतार दिये[1], वह तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेट में तीन अंधेरों के बीच बनावट के एक चरण के बाद दूसरे चरण से गुज़ार कर पैदा करता है[2], वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है उसी का राज (सत्ता) है उसके सिवाय कोई पूज्य नहीं फिर तुम कहां से फेर दिये जाते हो (6) अगर तुमने इनकार किया तो अल्लाह को तुम्हारी कोई परवाह नहीं और वह अपने बंदों के लिए कुफ़्र (इनकार) पसंद नहीं करता और अगर तुम एहसान मानो तो इससे वह ज़रूर तुमसे खुश होगा और कोई बोझ ढोने वाला दूसरे का बोझ नहीं ढोएगा फिर तुम सबको अपने पालनहार की ओर लौटना है बस वह तुम्हें जो कुछ तुम किया करते थे जतला देगा निश्चित रूप से वह सीनों की (छिपी) चीज़ों को भी खूब जानता है(7) और जब इंसान को कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो वह अपने पालनहार को पूरी तरह उसी की ओर लौ लगा कर पुकारता है फिर जब वह उसको अपने पास से नेमत से नवाज़ता है तो पहले जिस (तकलीफ़) के लिए उसको पुकारा था सब भूल जाता है और अल्लाह के समकक्ष ठहरता है जिसके फलस्वरूप वह दूसरों को भी उसके रास्ते से भटकाता है, कह दीजिए कि अपनी नाशुक्री को कुछ दिन और बरत ले निश्चित रूप से तू दोज़ख़ी है (8) भला क्या (वह उसके बराबर हो सकता है) जो रात के विभिन्न भागों में इबादत में लगा हो, (कभी) सज्दे में (कभी) खड़ा हो, और आख़िरत का डर रखता हो, और अपने पालनहार की कृपा का आशावान हो, पूछिए कि क्या ज्ञान रखने वाले और ज्ञान न रखने वाले बराबर हो सकते हैं[3], निश्चित रूप से नसीहत तो बुद्धिमान ही प्राप्त करते हैं (9) कह दीजिए कि ऐ मेरे ईमान वाले बंदों! अपने पालनहार से डरो, जिन्होंने इस दुनिया में अच्छे काम किये उनके लिए अच्छाई है, और अल्लाह की ज़मीन बड़ी विस्तृत है, निश्चित रूप से सब्र करने वालों को उनका बदला पूरा–पूरा बेहिसाब दिया जाएगा[4] (10)

(1) इससे आशय ऊँट, गाय, बकरी, और भेड़ हैं, इनमें से हर एक के नर–मादा मिलकर आठ हुए, चूंकि यह जानवर सबसे ज़्यादा इंसान के काम आते हैं इसलिए खास तौर पर इनका उल्लेख किया (2) एक अंधेरा पेट का, दूसरा गर्भाशय का, और तीसरा उस झिल्ली का जिसमें बच्चा लिपटा हुआ होता है, अंदर की जो बात अल्लाह ने अपने कलाम में बताई चौदह सौ साल गुज़रने पर आधुनिक विज्ञान भी इसको स्वीकार करता है, बनावट के चरणों का वर्णन पहले सूरह हज और सूरह मुअ्मिनून में गुज़र चुका, आगे सूरह ग़ाफ़िर में आएगा (3) जो अल्लाह की मअ्रिफ़त (पहचान) रखता हो, उसको एक जानता हो, उसके शक्ति–चिन्हों में विचार करता हो, रात–दिन अल्लाह की बंदगी में लगा हो और उससे डरता रहता हो, भला क्या यह अल्लाह का क़रीबी बंदा और वह नाशुक्र जिसका उल्लेख ऊपर हुआ बराबर हो सकते हैं, दुनिया में सब मज़े कर रहे हैं लेकिन आख़िरत को अल्लाह ने इसी इंसाफ़ के लिए बनाया है कि दूध का दूध और पानी का पानी अलग हो जाए (4) सख़्तियों और कठिनाइयों के बावजूद अपनी जगह रह कर अडिगता के साथ कोई धर्म पर अमल कर रहा है उसका बदला बेहिसाब है और अगर अपनी जगह रहकर अमल संभव न हो तो अल्लाह की ज़मीन विस्तृत व विशाल है, हिजरत करके ऐसी जगह चला जाए जहाँ दीन पर अमल करना संभव हो।

قُلْ اِنِّیْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّیْنَ ﴿۱۱﴾ وَاُمِرْتُ لِاَنْ
اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۱۲﴾ قُلْ اِنِّیْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَیْتُ رَبِّیْ عَذَابَ
یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۳﴾ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِیْنِیْ ﴿۱۴﴾ فَاعْبُدُوْا مَا
شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِیْنَ الَّذِیْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَ
اَهْلِیْهِمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِیْنُ ﴿۱۵﴾ لَهُمْ مِّنْ
فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ یُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ
عِبَادَهٗ ؕ یٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿۱۶﴾ وَالَّذِیْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ
یَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰی ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿۱۷﴾ الَّذِیْنَ
یَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَیَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ؕ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِیْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ
وَاُولٰٓىِٕكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۱۸﴾ اَفَمَنْ حَقَّ عَلَیْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ؕ
اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِی النَّارِ ﴿۱۹﴾ لٰكِنِ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ
فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِیَّةٌ ۙ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا یُخْلِفُ
اللّٰهُ الْمِیْعَادَ ﴿۲۰﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ یَنَابِیْعَ
فِی الْاَرْضِ ثُمَّ یُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ یَهِیْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا
ثُمَّ یَجْعَلُهٗ حُطَامًا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰی لِاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿۲۱﴾ ع

منزل۶

आप बता दीजिए कि मुझे तो यही आदेश है कि मैं अल्लाह की बंदगी को उसी के लिए शुद्ध करके करता रहूँ (11) और मुझे आदेश है कि मैं सबसे पहला आज्ञाकारी बनूं (12) कह दीजिए कि अगर मैंने अपने पालनहार की अवज्ञा की तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब का डर है (13) बता दीजिए कि मैं अल्लाह ही की इबादत करता हूँ अपनी बंदगी को उसी के लिए ख़ास करके (14) तो तुम उसके अलावा जिसको[1] चाहो पूजो, कह दीजिए कि घाटे में वही हैं जिन्होंने अपनी जानों और अपने घर वालों का क़यामत के दिन नुक़सान किया, अच्छी तरह सुन लो कि यही खुला हुआ नुक़सान है (15) उनके ऊपर भी आग के बगोले (छतरियां) होंगे और उनके नीचे भी बगोले होंगे, यही (वह चीज़) है जिससे अल्लाह अपने बंदों को डराता है (बस) ऐ मेरे बंदो! मुझ ही से डरो (16) और जो तागूत[2] की इबादत से दूर रहे और अल्लाह की ओर ध्यान दिया उनके लिए खुशखबरी है तो आप मेरे बंदो को खुशखबरी दे दीजिए (17) जो बात अच्छी तरह सुनते हैं फिर उसकी भली बात की पैरवी करते हैं[3] वही लोग हैं जिनको अल्लाह ने राह दी और वही लोग बुद्धिमान हैं (18) भला जिस पर अज़ाब की बात थुप चुकी हो तो क्या जो आग में हो उसको आप बचा सकते हैं[4] (19) लेकिन जिन्होंने अपने पालनहार का डर रखा उनके लिए अटारी (बाला ख़ाने) हैं, उनके ऊपर भी अटारी बने हैं, उनके नीचे नहरें जारी हैं, यह अल्लाह का वादा है अल्लाह वादे के खिलाफ़ नहीं करता (20) भला आपने देखा नहीं कि अल्लाह ही ने ऊपर से पानी बरसाया फिर ज़मीन में उसको स्रोतों में जारी कर दिया फिर वह उससे रंगारंग खेती निकालता है फिर वह पकती है तो आप उसे पीला देखेंगे फिर वह उसे चूरा–चूरा कर देता है निश्चित रूप से इसमें बुद्धिमानों के लिए नसीहत है[5] (21)

(1) अच्छे और बुरे रास्ते साफ़–साफ़ बता दिये गये, उनके परिणाम से भी अवगत करा दिया गया, अल्लाह की पसंद भी साफ़ कर दी गई, अब दुनिया में कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं, जो चाहे अच्छा रास्ता अपना कर कामयाब हो वरना अपने किये का भुगतान भुगतने के लिए तैयार रहे (2) तागूत का मतलब हर वह चीज़ जिसे अल्लाह को छोड़ कर पूजा जाए (3) अच्छी बातों को अपना लेते हैं और जिन बुरी बातों से रोका जाता है उससे रुक जाते हैं (4) अपनी ज़िद और हठधर्मी से उसने कुफ्ऱ और इनकार का रास्ता ही अपने लिए तय कर रखा हो जिसका अनिवार्य परिणाम दोज़ख है (5) इससे बुद्धिमान नसीहत हासिल करता है कि इसी प्रकार दुनिया की शोभाएं और बहारें भी कुछ दिनों की हैं फिर सब चूरा–चूरा हो जाएगा और दुनिया की नेमतें भी अल्लाह की दी हुई हैं, किस तरह वह बारिशें बरसाता है और उससे चश्में (स्रोत) जारी होते हैं और पानी स्रोतों में समाहित हो कर इकट्ठा होता है, फिर उसी के आदेश से फल–फूल पैदा होते हैं, इन नेमतों का शुक्र यह है कि उसी एक अल्लाह की इबादत की जाए और यहाँ की बहारों पर छलित हो कर असल मालिक को आदमी न भुला दे।

أَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ
لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۲﴾ اَللّٰهُ
نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِىَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ
الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ
اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِىْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ
فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿۲۳﴾ اَفَمَنْ يَّتَّقِىْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ؕ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۲۴﴾ كَذَّبَ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۵﴾
فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْىَ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ
اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِىْ هٰذَا
الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۷﴾ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ
ذِىْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۲۸﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ
شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۹﴾ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ
مَّيِّتُوْنَ ﴿۳۰﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿۳۱﴾

وقف لازم

ع ۳

منزل٦

भला जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया तो वह अपने पालनहार की ओर से रोशनी में है (क्या वह उसकी तरह हो सकता है जो अंधेरे में हो) बस तबाही है उन लोगों के लिए जिनके दिल सख़्त हैं अल्लाह की याद से, वही लोग खुली गुमराही में हैं[1] (22) अल्लाह ने बेहतरीन बात उतारी किताब की शक्ल (में जिसकी विषय–सामग्री) एक–दूसरों से मिलती जुलती हैं (जिसकी बातें) बार–बार दोहराई गईं हैं[2] इससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने पालनहार से डरते रहते हैं फिर उनके शरीर और उनके दिल अल्लाह की याद के लिए नर्म पड़ जाते हैं, यह अल्लाह की दी हुई हिदायत है, वह इसके ज़रिये जिसको चाहता है हिदायत देता है और जिसको अल्लाह गुमराह कर दे तो उसको कोई हिदायत देने वालो नहीं (23) भला (उसका क्या हाल होगा) जो क़यामत के दिन अपने चेहरे[3] से बहुत बुरे अज़ाब को रोक रहा होगा और ज़ालिमों से कह दिया जाएगा कि अपनी करतूतों का मज़ा चखो (24) उनसे पहले भी जो लोग गुज़रे हैं वे झुठला चुके हैं तो ऐसी जगह से अज़ाब ने उनको आ दबोचा जहाँ से उनको वहम व गुमान भी न था (25) बस अल्लाह ने दुनिया की ज़िंदगी मे भी उनको अपमान का मज़ा चखाया और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत बड़ा है ही, अगर वे समझ रखते (26) और हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर तरह उदाहरण दे डाले कि शायद वे ध्यान दें (27) यह क़ुरआन है अरबी भाषा में जिसमें ज़रा भी टेढ़ नहीं, कि शायद वे तक़वा अपनाएं (28) अल्लाह एक उदाहरण देता है, एक व्यक्ति (ग़ुलाम) है उसमें बहुत से शरीक हैं आपस में गुत्थम–गुत्था और एक व्यक्ति है जो पूरा का पूरा एक विशेष व्यक्ति (ग़ुलाम) है, क्या उदाहरण में दोनों बराबर हो सकते[4] हैं? असल तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है लेकिन उनमें अधिकतर लोग समझ नहीं रखते (29) आप का भी निधन होना है और उन सब को भी मरना है (30) फिर क़यामत के दिन निश्चित रूप से तुम अपने पालनहार के पास लड़ोगे[5] (31)

---

(1) एक अच्छाई को स्वीकार कर रहा है अच्छी बातें उस पर प्रभाव डाल रही हैं और दूसरे का दिल पत्थर है कि कोई अच्छी चीज़ उसमें घुसती ही नहीं, दोनों कैसे बराबर हो सकते हैं (2) क़ुरआन मजीद की आधारभूत बात ही तौहीद की ओर बुलाना, आख़िरत का ध्यान पैदा करना, रसूलों की पैरवी की ओर बुलाना है, यह चीज़ें विभिन्न शैलियों में बराबर खोल–खोल कर बयान की गई हैं (3) आदमी सख़्त चीज़ का मुक़ाबला हाथ–पाँव को ढाल बना कर करता है, मगर वहां हाथ–पाँव जंजीरों में जकड़ें होंगे जिसके फलस्वरूप मुँह सामने करना पड़ेगा निश्चित रूप से यह कठोरतम दुखदायी रूप होगा (4) जो संयुक्त ग़ुलाम होता है वह खींचा–तानी में रहता है और दोनों ओर से उसे मार सहनी पड़ती है और जो एक ही व्यक्ति का ग़ुलाम होता है उसे एक की बात माननी पड़ती है, इसलिए वह आराम में हैं, इसी तरह जो सिर्फ़ अल्लाह को मानता है, वह एकाग्र हो कर उसकी इबादत में लग जाता है जो शिर्क में लिप्त होता है वह इधर–उधर हाथ पाँव मारता रहता है और उसे एकाग्रता हासिल नहीं होती (5) यानी सबको मरना है अल्लाह के सामने हाज़िर होना है, वहां सारे मुक़दमे पेश होंगे, काफ़िर व मुश्रिक कहेंगे कि हमें सच्ची बात नहीं पहुंचाई गई, फिर दलीलों से उनको ख़ामोश होना पड़ेगा, उन्हीं मुक़द्दमों और तर्क–वितर्क की ओर आयत का इशारा है।

तो उससे बढ़कर अन्याय करने वाला कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे और सच्चाई जब उसके पास आ जाए तो उसे झुठला दे! क्या दोज़ख़ में इनकार करने वालों के लिए ठिकाने की कमी है (32) और जो सच्चाई लेकर आया और जिसने उसको सच माना वही लोग मुत्तक़ी (परहेज़गार)[1] हैं (33) वे जो चाहेंगे अपने पालनहार के पास उनको वह सब मिलेगा यह बड़े काम करने वालों का बदला है (34) ताकि अल्लाह उनके बुरे कामों का कफ़्फ़ारा कर दे और जो अच्छे काम वे किया करते थे उसका बदला उनको दे दे[2] (35) क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं और वे आपको उसके अलावा औरों से डराते हैं[3] और जिसको अल्लाह गुमराह कर दे उसको कोई राह दिखाने वाला नहीं (36) और जिसे अल्लाह राह दिखा दे उसको कोई गुमराह करने वाला नहीं, क्या अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), बदला लेने वाला नहीं (37) और अगर आप उनसे पूछें कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया तो वे यही कहेंगे कि अल्लाह[4] ने, उनसे पूछिये फिर तुम्हारा क्या विचार है जिनको तुम अल्लाह के अलावा पुकारते हो? अगर अल्लाह मुझे तकलीफ़ देना चाहे तो क्या वे उसकी तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं या अगर वह मुझ पर कृपा करना चाहे तो क्या वे उसकी कृपा को रोक सकते हैं? कह दीजिए मुझे अल्लाह काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं (38) कह दीजिए ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम किये जाओ मैं भी कर रहा हूँ, आगे तुम्हें मालूम हो जाएगा (39) कि किस पर अज़ाब (दण्ड) आता है जो उसे अपमानित करके छोड़ेगा और किस पर हमेशा का अज़ाब उतरता है (40)

(1) सच्चाई को लाने वाले "नबी" और मानने वाले अहले ईमान" यह हैं अल्लाह का "तक़वा" (डर) अपनाने वाले (2) मालूम हुआ कि ईमान के साथ अच्छे काम करने वालों की छोटी–मोटी ग़लतियाँ माफ़ कर दी जाती हैं, और उनके साथ अल्लाह की ओर से मेहरबानी वाला व्यवहार होता है (3) मक्के के "मुश्रिक" कहते थे कि मूर्तियों को ग़लत न कहो कहीं वे तुमसे बदला न ले लें मानो नबी को डराते थे, इस से बढ़कर "गुमराही" क्या होगी (4) जब तुम उसी अल्लाह को पैदा करने वाला मानते हो तो यह ढेर सारे मददगार तुमने कहाँ से बना लिए, अतः अगर तुम नहीं मानते तो आगे सब सच्चाई खुल जाएगी, पता चल जाएगा कि अपमानजनक अज़ाब किस पर आता है।

إِنَّآ أَنزَلْنَا عَلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ لِلنَّاسِ بِٱلْحَقِّ ۖ فَمَنِ ٱهْتَدَىٰ
فَلِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَآ أَنتَ عَلَيْهِم
بِوَكِيلٍ ﴿٤١﴾ ٱللَّهُ يَتَوَفَّى ٱلْأَنفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَٱلَّتِى لَمْ
تَمُتْ فِى مَنَامِهَا ۖ فَيُمْسِكُ ٱلَّتِى قَضَىٰ عَلَيْهَا ٱلْمَوْتَ وَ
يُرْسِلُ ٱلْأُخْرَىٰٓ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ
يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٢﴾ أَمِ ٱتَّخَذُوا۟ مِن دُونِ ٱللَّهِ شُفَعَآءَ ۚ قُلْ
أَوَلَوْ كَانُوا۟ لَا يَمْلِكُونَ شَيْـًٔا وَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٣﴾ قُل لِّلَّهِ
ٱلشَّفَٰعَةُ جَمِيعًا ۖ لَّهُۥ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ﴿٤٤﴾ وَإِذَا ذُكِرَ ٱللَّهُ وَحْدَهُ ٱشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ ٱلَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِٱلْءَاخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ ٱلَّذِينَ مِن دُونِهِۦٓ إِذَا هُمْ
يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٥﴾ قُلِ ٱللَّهُمَّ فَاطِرَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ عَٰلِمَ
ٱلْغَيْبِ وَٱلشَّهَٰدَةِ أَنتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِى مَا كَانُوا۟
فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ مَا فِى ٱلْأَرْضِ
جَمِيعًا وَمِثْلَهُۥ مَعَهُۥ لَٱفْتَدَوْا۟ بِهِۦ مِن سُوٓءِ ٱلْعَذَابِ يَوْمَ
ٱلْقِيَٰمَةِ ۚ وَبَدَا لَهُم مِّنَ ٱللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا۟ يَحْتَسِبُونَ ﴿٤٧﴾

ع ٤

منزل ٦

हमने आप पर लोगों के लिए किताब सही–सही उतार दी तो जिसने राह पकड़ी उसने अपने लिए और जो गुमराह हुआ तो उसकी गुमराही उसी के सिर और आप उनके ज़िम्मेदार नहीं हैं (41) अल्लाह जानों को उनकी मौत के समय निकाल लेता है और जिनको मरना नहीं है उनकी नींद में (उनकी रूहें (प्राण) भी क़ब्ज़ कर लेता है) फिर जिनके बारे में मौत का फ़ैसला हुआ उनके (प्राण) रोक लेता है और दूसरे (जानों) को एक निर्धारित अवधि तक के लिए छोड़ देता है, निश्चित रूप से इसमें सोच–विचार करने वालों के लिए निशानियाँ हैं[1] (42) क्या उन्होंने अल्लाह को छोड़कर सिफ़ारिशी बना रखे हैं पूछिये कि चाहे वे न किसी चीज़ के मालिक हों और न समझ रखते हों[2] (43) बता दीजिए कि सारी सिफ़ारिश अल्लाह ही के अधिकार में है, उसी के पास आसमानों और धरती की बादशाही है फिर उसी की ओर तुम्हें लौट कर जाना है (44) और जब केवल अल्लाह का ज़िक्र (उल्लेख) होता है तो जो आख़िरत को नहीं मानते उनके दिल मुर्दा हो जाते हैं और जब उसके अलावा दूसरों का वर्णन होता है तो बस वे खिल जाते हैं[3] (45) कह दीजिए ऐ अल्लाह आसमानों और ज़मीन को वजूद प्रदान करने वाले छिपे और खुले को जानने वाले! अपने बन्दों के बीच तू ही फ़ैसला करेगा जिनमें वह झगड़ते रहे हैं (46) और अगर ज़ालिमों के पास ज़मीन का सबकुछ होता और उतना ही और होता तो वे क़यामत के दिन बुरे अज़ाब से बचने के लिए उसका फ़िदिया दे देते और अल्लाह की तरफ़ से उनके सामने वह सब खुलकर आ जाएगा जिसके बारे में सोचते भी नहीं थे (47)

---

(1) नींद में भी जान निकल जाती है लेकिन उसका विशेष सम्बन्ध शरीर से किरणों के द्वारा रहता है जिससे ज़िदंगी क़ायम रहती है और मौत में यह सम्बन्ध भी क़ायम नहीं रहता, तो शरीर मुर्दा हो जाता है कुछ बुद्धिजीवियों (उलमा) ने इसका विवरण यूँ दिया है कि शरीर का जान से सबंध दो तरह का होता है, एक सम्बंध संवेदना और महसूस करने का और दूसरा व्यवस्था और पोषण का, नींद में संवेदना ख़त्म हो जाती है लेकिन व्यवस्था वाला संबंध क़ायम रहता है इसीलिए शरीर सलामत रहता है और मौत में शरीर में जान दोनों तरह के संबंध ख़त्म हो जाते हैं, न एहसास का संबंध रहता है न व्यवस्था का इसीलिए मौत के बाद शरीर सुरक्षित नहीं रहता, इस तरह ये नींद वास्तव में मौत को याद दिलाती है और यह उसी का एक हिस्सा है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसीलिए नींद से उठने के बाद जो दुआ सिखाई उसमें फ़रमाया "असल प्रशंसा उस अल्लाह की है जिसने हमें मारने के बाद ज़िंदा किया और उसी की ओर लौट कर जाना है।" (2) मुश्रिक मूर्तियों को सिफ़ारिशी कहते थे तो पहली बात तो यह कि सिफ़ारिशी होने से पूज्य (माबूद) होना ज़रूरी नहीं और दूसरी बात यह कि सिफ़ारिशी भी वही बन सकता है कि जिसे अल्लाह की ओर से सिफ़ारिश की अनुमति हो और उसी के सम्बन्ध में सिफ़ारिश कर सकता है जिसको अल्लाह पसन्द करे और शिर्क करने वालों का हाल यह है कि उनके बारे में किसी की सिफ़ारिश स्वीकार न होगी और जिनको यह सिफ़ारिशी समझ रहे हैं उनको सिफ़ारिश की अनुमति नहीं, दोनों बातें प्राप्त नहीं तो बस दावा ही दावा रह गया। (3) तौहीद (एकेश्वरवाद) से उनको ज़रा भी लगाव नहीं होता।

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٨﴾ فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۡ ثُمَّ اِذَا
خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَاۤ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ
وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٩﴾ قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَمَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ
مَا كَسَبُوْا ؕ وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰۤؤُلَاۤءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ
مَا كَسَبُوْا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥١﴾ اَوَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ قُلْ يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ
لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ
اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٣﴾ وَاَنِيْبُوْۤا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ
قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاتَّبِعُوْۤا اَحْسَنَ
مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ
بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٥٥﴾ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى
مَا فَرَّطْتُّ فِىْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾

منزل٦

उनके बुरे कामों की सारी ख़राबियां उनके सामने आ जाएंगी और जिस चीज़ का वे मज़ाक़ उड़ाया करते थे वह उन पर ही उलट पड़ेगा[1] (48) बस जब मनुष्य को तकलीफ़ पहुँचती है तो हमें पुकारता है फिर जब हम अपने पास से नेमत (उपकार) प्रदान करते हैं तो कहता है कि मुझे तो यह अपने ज्ञान (व प्रतिभा) से मिली है, असल यह है कि वह परीक्षा है लेकिन अधिकांश लोग जानते ही नहीं[2] (49) इनसे पहले वाले भी यही बात कहते चले आए हैं तो जो वे किया करते थे कुछ भी उनके काम न आया (50) बस अपनी करतूतों की बुराइयाँ उनको भुगतनी पड़ीं और उनमें भी जो ज़ालिम हैं उनको भी जल्द ही अपनी बुरी करतूत भुगतनी पड़ेगी और वे विवश नहीं कर सकते (51) क्या वे जानते नहीं कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है अपनी रोज़ी बढ़ा देता है और (जिसको चाहता है) नाप–नाप कर देता है निश्चित ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो मानते हैं[3] (52) कह दीजिए ऐ मेरे वे बन्दो! जिन्होंने अपने साथ अत्याचार किया अल्लाह की कृपा से निराश मत हो जाना, निस्संदेह अल्लाह सब पापों को माफ़ कर देता है निस्संदेह वह बहुत माफ़ करने वाला और अति कृपालु है (53) और अपने पालनहार की ओर ध्यान कर लो और उसी के आज्ञाकारी बन जाओ इससे पहले कि तुम्हें अज़ाब आ दबोचे फिर तुम्हारी मदद भी न हो (54) और अपने पालनहार के पास से उतरी अच्छी बातों पर चलो इससे पहले कि अचानक तुम्हें अज़ाब दबोच ले और तुम समझ भी न सको[4] (55) कि कहीं कोई कहने लगे हाय मेरा दुर्भाग्य कि मैंने अल्लाह के सम्बन्ध में कमी की और मैं मज़ाक़ उड़ाने वालों ही में शामिल रहा (56)

---

(1) आख़िरत और अज़ाब का मज़ाक़ उड़ाया जाता था और अज़ाब की बार–बार जल्दी की बात की जाती थी, आख़िरत में वही अज़ाब उन पर उलट पड़ेगा (2) क़ारून ने यही कहा था कि "यह तो मुझे अपनी कौशल से मिला है" और यही क़ारूनी लक्षण बहुत से लोगों में पाए जाते हैं (3) एक वही मेहनत करता है उसी शैली में नीतियाँ बनाता है उसको नहीं मिलता और एक भाग्यशाली है, यह सब अल्लाह की शक्ति के रूप हैं (निशानियाँ हैं) (4) अभी अवसर है उस माफ़ करने वाले पालनहार की ओर बढ़ो और हर प्रकार के कुफ़्र व शिर्क से, पाप से तौबा कर लो इससे पहले कि मौत आ दबोचे या अज़ाब ही आ जाए और समय हाथ से निकल जाए, उस समय सिवाय पछतावे के और कुछ नहीं होगा, उस समय न यह बहाना चलेगा कि हिदायत (मार्ग दर्शन) हम तक नहीं पहुँची और न यह प्रार्थना स्वीकार होगी कि एक बार हमको और दुनिया में भेज दिया जाए, हम अपना सुधार कर लेंगे, हिदायत आ चुकी इसका जानना और इसके लिए प्रयास करना और विचार करना हर उस मनुष्य की ज़िम्मेदारी है जो अल्लाह को नहीं मानता, उसके साथ किसी को साझीदार ठहराता है।

أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٥٧﴾ أَوْ
تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ
الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٨﴾ بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ
وَكُنتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٥٩﴾ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا
عَلَى اللَّهِ وُجُوهُهُم مُّسْوَدَّةٌ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى
لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٦٠﴾ وَيُنَجِّي اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ لَا
يَمَسُّهُمُ السُّوءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦١﴾ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَ
هُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿٦٢﴾ لَّهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَ
الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٦٣﴾ قُلْ
أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَأْمُرُونِّي أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجَاهِلُونَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ
أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ
لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٥﴾ بَلِ اللَّهَ
فَاعْبُدْ وَكُن مِّنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٦٦﴾ وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ
قَدْرِهِ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ
مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٧﴾

منزل ٦

या कोई कह बैठे कि अगर अल्लाह हमें राह दिखा देता तो मैं ज़रूर परहेज़गारों में होता (57) या अज़ाब देखकर यह कहने लगे कि एक अवसर हमें और मिल जाए तो मैं अच्छे काम करने वालों में शामिल हो जाऊँ (58) क्यों नहीं! तेरे पास मेरी आयतें पहुँच चुकी थीं फिर तूने उनको झुठलाया और तू अकड़ा और इनकार करने वालों में शामिल हो गया (59) और क़यामत के दिन आप देखेंगे कि अल्लाह पर झूठ कहने वालों के चेहरे काले पड़े होंगे, क्या दोज़ख़ में घमण्ड करने वालों के लिए ठिकाने की कोई कमी है (60) और अल्लाह परहेज़गारों को उनकी सफ़लता के साथ बचा ले जाएगा, उनका बाल बांका न होगा और न वे दुखी होंगे[1] (61) अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वह हर चीज़ का काम बनाने वाला है (62) आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ उसी के पास हैं और जिन्होंने भी अल्लाह की आयतों को झुठलाया वही लोग घाटे में हैं (63) पूछिये कि ऐ नादानो! क्या तुम मुझसे यह कहते हो कि मैं अल्लाह के अलावा किसी की पूजा करूँ (64) जबकि आपको और आपसे पहले वालों को वह्य आ चुकी है कि अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारे सब काम बेकार चले जाएंगे और तुम ज़रूर नुक़सान उठा जाओगे (65) बल्कि अल्लाह ही की पूजा करो और आभारियों में शामिल हो जाओ (66) और उन्होंने अल्लाह को न पहचाना जैसे पहचानना चाहिए जबकि सारी ज़मीन क़यामत के दिन उसकी मुटठी में होगी और आसमान उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे वह पवित्र है और उनके शिर्क करने से बहुत बुलन्द है[2] (67)

(1) परहेज़गारों को अल्लाह तआला हर प्रकार की तकलीफ़ से बचाकर पूरी सफ़लता प्रदान करेंगे (2) यानी जिस महानता का यह हाल है कि क़यामत के दिन कुल ज़मीन उसकी मुट्ठी और सारे आसमान काग़ज़ की तरह लिपटे हुए एक हाथ में होंगे, उसकी इबादत में किसी असमर्थ व मोहताज प्राणी को साझी करना कैसी अजीब बात है, वे साझीदार तो खुद उसकी मुटठी में पड़े हैं जिस प्रकार चाहे उनमें काम करे, कोई ज़र्रा (कणमात्र) भी चूँ–चरा (क्यों और कैसे) नहीं कर सकता, किसी अल्लाह वाले ने इसका बड़ा अच्छा उदाहरण प्रस्तुत कर दिया कि "दरबार लगा हुआ हो, राजा तीर–कमान लिए बैठा हो और एक गुलाम किसी स्तम्भ से बंधा हुआ हो और राजा उस पर निशाना साध रहा हो, ऐसे में कोई राजा को छोड़कर गुलाम से माँगने लगे, इससे बढ़कर मूर्खता और क्या हो सकती है?

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ
إِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ۗ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ أُخْرٰى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ﴿٦٨﴾
وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ
وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَوُفِّيَتْ
كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَسِيْقَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا إِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ۗ حَتّٰٓى إِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ
أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ
يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ
هٰذَا ۗ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧١﴾
قِيْلَ ادْخُلُوْٓا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى
الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۗ
حَتّٰٓى إِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا
سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿٧٣﴾ وَقَالُوا
الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ
نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٧٤﴾

ع

منزل٦

और सूर फूँका जाएगा तो आसमानों और ज़मीन में सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे सिवाय उसके जिसको अल्लाह चाहे फिर उसमें दोबारा सूर फूँका जाएगा बस वे पल भर में खड़े होकर देखने लगेंगे[1] (68) और ज़मीन अपने पालनहार के रौशनी से रौशन हो जाएगी और रजिस्टर लाकर रख दिये जाएंगे और नबियों को और गवाहों को पेश कर दिया जाएगा और उनमें सही–सही फ़ैसला कर दिया जाएगा और उनके साथ अन्याय न होगा (69) और हर व्यक्ति को उसके काम का पूरा–पूरा बदला दे दिया जाएगा और वह (अल्लाह) उनके कामों को ख़ूब जानता है (70) और काफ़िरों को झुण्ड के झुण्ड खींचकर दोज़ख़ की ओर ले जाया जाएगा यहाँ तक कि जब वहाँ पहुँच जाएंगे तो उसके दरवाज़े खोले जाएंगे[2] और वहाँ के दारोग़ा कहेंगे क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं पहुँचे जो तुम्हारे सामने तुम्हारे पालनहार की आयतें पढ़–पढ़ कर सुनाते थे और इस दिन की मुलाक़ात से तुम्हें डराते थे? वे कहेंगे क्यों नहीं, लेकिन अज़ाब का आदेश इनकार करने वालों पर थुप चुका (71) कहा जाएगा दोज़ख़ के दरवाज़ों में प्रवेश कर जाओ हमेशा उसी में रहने के लिए, बस अकड़ने वालों का ठिकाना बुरा हुआ (72) और डर रखने वालों को गिरोह के गिरोह जन्नत की ओर ले जाया जाएगा यहाँ तक कि जब वे वहाँ जा पहुँचेंगे और उसके दरवाज़े खोल दिये गये होंगे और उसके दारोग़ा उनसे कहेंगे सलाम हो तुम पर क्या कहने तुम्हारे, बस इनमें हमेशा के लिए प्रवेश कर जाओ (73) और वे कहेंगे असल प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने हमसे अपना वादा पूरा किया और ऐसी जगह हमें प्रदान की कि जन्नत में हम जहाँ चाहें ठिकाना बनाएं तो काम करने वालों का बदला ख़ूब है (74)

---

(1) पहली बार जब सूर फूँका जाएगा तो सब मर जाएंगे और रूहों (आत्माओं) पर भी बेहोशी छा जाएगी और दूसरी बार में सब जीवित होकर बदहवासी से इधर–उधर देखने लगेंगे, वह क़यामत का दृश्य होगा, फिर अल्लाह तआला अपने जलाल को उतारेंगे जिससे पूरी ज़मीन चमकने लगेगी फिर हिसाब–किताब शुरु होगा और नबियों को और गवाहों को पेश किया जाएगा, गवाही देने वाले नबी अ़लैहिस्सलाम भी होंगे और दूसरे इंसान भी होंगे, आदमी के शरीर के अंग भी होंगे (2) जिस तरह दुनिया में जेल का फाटक खुला नहीं रहता जब किसी क़ैदी का दाख़िल करना होता है तो खोलकर दाख़िल करते हैं फिर बंद कर देते हैं, इसी तरह दोज़ख़ी जब दोज़ख़ के क़रीब पहुँचेंगे दरवाज़ा खोल कर उनको ढकेल दिया जाएगा और फिर दरवाज़े बंद कर दिये जाएंगे, इसके विपरीत जन्नती जब जन्नत पहुँचेंगे तो दरवाज़े खुले पाएंगे और फ़रिश्तों का दल स्वागत करने के लिए मौजूद होगा जो उनको जन्नत में हमेशा के लिए रहने की ख़ुशख़बरी सुनाएगा और जन्नती ख़ुशी में खिल जाएंगे और अल्लाह की प्रशंसा के गीत गाएंगे।

وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ
رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٥﴾

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٢﴾ غَافِرِ الذَّنْبِ
وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾ مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا
يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ﴿٤﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ
الْاَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍ بِرَسُوْلِهِمْ
لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ
فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٥﴾ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ
كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٦﴾ اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ
حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ
لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ
لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿٧﴾

منزل٦

और आप देखेंगे कि फ़रिश्ते अर्श (सिंहासन) को हर ओर से घेरे होंगे अपने पालनहार की तस्बीह के साथ हम्द (प्रशंसा) में व्यस्त होंगे और ठीक–ठीक उनका फ़ैसला कर दिया जाएगा और एलान (घोषणा) होगा कि असल प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो सारे संसारों का पालनहार है (75)

सूरह मोमिन

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

हा मीम[1] (1) यह किताब अल्लाह की ओर से उतारी जा रही है जो ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है ख़ूब जानता है (2) पाप को माफ़ करने वाला है और तौबा स्वीकार करने वाला है कठोर दण्ड देने वाला और शक्ति वाला है उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं सबको उसी की ओर लौटकर जाना है (3) अल्लाह की आयतों में वही लोग झगड़ा करते हैं जिन्होंने इनकार किया तो शहरों में उनकी दौड़–भाग आपको धोखे में न डाल दे[2] (4) इनसे पहले नूह की क़ौम और उनके बाद बहुत से सम्प्रदाय झुठला चुके हैं और हर क़ौम ने यह चाहा कि अपने रसूल को पकड़ ले और झूठे प्रमाणों से उन्होंने बहस की ताकि उनके द्वारा सत्य को दबा दें तो मैंने उनको धर पकड़ा फिर (देखो) मेरी सज़ा कैसी (कठोर) हुई (5) और इस तरह इनकार करने वालों पर आपके पालनहार का आदेश थुप चुका है कि वे दोज़ख़ ही के लोग हैं (6) जो (फ़रिश्ते) अर्श को उठाए हुए हैं और जो उसके आस पास हैं वे अपने पालनहार की हम्द (प्रशंसा) के साथ तस्बीह में व्यस्त हैं और उस पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों के लिए माफ़ी माँगते रहते हैं कि ऐ हमारे पालनहार! तेरी कृपा और ज्ञान हर चीज़ को घेरे हुए है तो उन लोगों को माफ़ कर दे जिन्होंने तौबा की और तेरा रास्ता चले और उनको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले[3] (7)

(1) यहाँ से सूरह अहक़ाफ़ तक सात सूरतें लगातार "हा मीम" से शुरु हो रही हैं "हा मीम" हुरूफ़े मुक़त्तआत में से है जिसके बारे में अल्लाह ही जानता है, सूरह बक़रा के शुरु में इसके बारे में कुछ बातें बताई जा चुकी हैं। (2) दुनिया काफ़िरों की जन्नत है, वे यहाँ दंदनाते फिरते हैं इससे किसी को धोखा न हो इसलिए स्पष्ट कर दिया कि पिछली उम्मतों (सम्प्रदायों) में भी यही हुआ है अंततः काफ़िर पकड़े गये और दण्डित हुए, और क़ुरआन मजीद ही में यह बात गुज़र चुकी है कि अगर ईमान वालों के ईमान हिल जाने का डर न होता तो अल्लाह काफ़िरों के घरों को सोने चाँदी का बना देता (3) ईमान वालों के लिए बड़े सम्मान की बात है कि अर्श (सिंघासन) के फ़रिश्त उनके लिए दुआएं करते हैं और अल्लाह से माफ़ी माँगते हैं, और फिर यह दुआ केवल ईमान वालों तक सीमित नहीं रहती बल्कि उनकी नेक संतानों के लिए भी करते हैं।

رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ۨالَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ
مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۙ﴿۸﴾ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ؕ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ
فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ
اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ﴿۱۰﴾ قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا
اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى
خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿۱۱﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗۤ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ
كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ؕ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ﴿۱۲﴾
هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ؕ
وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ﴿۱۳﴾ فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ
الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۴﴾ رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ
يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ
يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿۱۵﴾ يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ
مِنْهُمْ شَيْءٌ ؕ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ؕ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿۱۶﴾

منزل٦

ऐ हमारे पालनहार! और उनको हमेशा रहने वाली जन्नतों में प्रवेश करा दे जिनका तूने उनसे वादा किया है और उनके बाप–दादा और पत्नियों और संतान में भी जो इस लायक़ हों, बेशक तू ही ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) हिकमत (युक्ति) रखता है (8) और उनको सारी तकलीफ़ों से बचाकर रख और जिसको भी तूने उस दिन तकलीफ़ों से बचा लिया तो उस पर निश्चित ही कृपा हुई, और यही वह बड़ी सफ़लता है[1] (9) काफ़िरों से पुकार कर कहा जाएगा कि जितना (आज) तुम अपने आप से अप्रसन्न हो उससे अधिक अल्लाह तुम से उस समय अप्रसन्न था जब तुम्हें ईमान के लिए बुलाया जा रहा था तो तुम इनकार करते थे[2] (10) वे कहेंगे ऐ हमारे पालनहार! तूने दो बार हमें मौत दी और दो बार हमें जिलाया[3] बस हमें अपने दोष स्वीकार हैं तो क्या अब बचाव का कोई रास्ता है (11) (कहा जाएगा) यह सब इसलिए हुआ कि जब भी एक अल्लाह की ओर बुलाया गया तो तुमने इनकार किया और जब भी उसके साथ शिर्क हुआ तो तुमने मान लिया, बस अब तो फ़ैसला अल्लाह ही के हाथ में है जो बुलन्द है श्रेष्ठ है (12) वही है जो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है और आसमान से तुम्हारे लिए रोज़ी उतारता है, और नसीहत वही हासिल करता है जो (अल्लाह की ओर) ध्यान लगाए रहता हो (13) तो अल्लाह को इस तरह पुकारो कि बन्दगी उसी के लिए ख़ास हो चाहे काफ़िरों को कैसा ही बुरा लगे (14) वह उच्च श्रेणी वाला अर्श (सिंहासन) का मालिक है वह अपने बन्दों में जिसको चाहता है "वह्य" प्रदान करता है ताकि वे मुलाक़ात के दिन से डराये (15) जिस दिन वे सामने होंगे उनमें से कोई चीज़ भी अल्लाह के लिए छिपी न होगी, आज किसका राज है केवल अल्लाह ही का जो अकेला है ज़बरदस्त है (16)

---

(1) इससे आशय हर प्रकार की तकलीफ़ है विशेष रूप से आख़िरत की (2) काफ़िरों को कुफ़्र की वजह से आख़िरत में अपने आप से नफ़रत महसूस हो रही होगी, कहा जाएगा कि जब तुम दुनिया में कुफ़्र व शिर्क करते थे अल्लाह को इससे अधिक नफ़रत और अप्रसन्नता होती थी (3) पहले वीर्य थे यानी शुक्राणु तो मुर्दा थे फिर जान पड़ी तो जीवित हुए फिर मरे फिर ज़िन्दा करके उठाए गये, दो मौतें हुईं और दो जीवन, जैसा कि अल्लाह ने दूसरी जगह फ़रमाया "तुम कैसे इनकार करते हो जबकि तुम मुर्दा थे तो उसने तुम्हें जीवन प्रदान किया फिर तुम्हें मौत दी फिर तुमको जीवित किया फिर तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे।

اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ ۭ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٧﴾ وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى
الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ۭ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ
يُّطَاعُ ﴿١٨﴾ يَعْلَمُ خَاۗىِٕنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ ﴿١٩﴾
وَاللّٰهُ يَقْضِيْ بِالْحَقِّ ۭ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا
يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٢٠﴾ اَوَلَمْ
يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ
كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي
الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۭ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ
مِنْ وَّاقٍ ﴿٢١﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ۭ اِنَّهٗ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ
اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٣﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ
هَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾ فَلَمَّا جَاۗءَهُمْ
بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوْٓا اَبْنَاۗءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
وَاسْتَحْيُوْا نِسَاۗءَهُمْ ۭ وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿٢٥﴾

منزل٦

आज हर व्यक्ति को जो वह करके आया है उसका बदला मिल जाएगा आज अन्याय नहीं होगा बेशक अल्लाह जल्द हिसाब चुका देने वाला है (17) और आप उनको उस आने वाले दिन से डराइये जब घुट–घुट कर कलेजे मुँह की ओर आ रहे होंगे, और ज़ालिमों का न कोई दोस्त होगा और न कोई ऐसा सिफ़ारिशी होगा जिसकी बात मानी जाए (18) वह आँखों की चोरियों को भी जानता है और सीनों के रहस्यों (राज़) को भी (19) और अल्लाह ही सही–सही फ़ैसला करता है और जो उसके अलावा अन्य की दुहाई देते हैं वे कुछ भी फ़ैसला नहीं कर सकते, निश्चित रूप से अल्लाह ही है जो ख़ूब सुनता, ख़ूब देखता है (20) क्या वे ज़मीन में चले–फिरे नहीं वे देख लेते कि उनसे पहले वालों का अंजाम कैसा हुआ, वे उनसे अधिक बलवान थे और देश में उनसे अधिक स्मृतियाँ रखने वाले थे, बस अल्लाह ने उनको उनके पापों के बदले में गिरफ़्तार कर लिया और कोई उनको अल्लाह से बचाने वाला न हुआ (21) यह इसलिए कि उनके पास उनके रसूल खुली निशानियों के साथ आये तो उन्होंने इनकार किया तो अल्लाह ने उनकी पकड़ की, निश्चित रूप से वह शक्तिशाली है कठोर दण्ड वाला है (22) और हमने मूसा को अपनी निशानियों और खुले प्रमाण के साथ भेजा (23) फ़िरऔन, हामान और क़ारून की ओर तो वे बोले यह झूठा जादूगर है (24) फिर जब वे हमारी ओर से सही बात लेकर आये तो वे बोले जिन्होंने इनकी बात मानी उनके बेटों को मार डालो और उनकी महिलाओं को ज़िन्दा रहने दो और काफ़िरों का दांव तो सीधा लगता नहीं[1] (25)

(1) फ़िरऔन की ओर से बनी इस्राईल के बच्चों का क़त्ल दो बार हुआ, एक हज़रत मूसा के जन्म से पहले जब किसी ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की थी कि बनी इस्राईल के यहाँ एक बच्चा पैदा होने वाला है जिसके द्वारा तुम्हारी सत्ता समाप्त हो जाएगी और दूसरी बार उसने यह आदेश उस समय दिया जब लोग हज़रत मूसा पर ईमान लाने लगे ताकि ईमान लाने वालों का वंश भी न फैले और उनके अंदर डर भी पैदा हो ताकि वे ईमान से फिर जाएं और नये लोग ईमान न लाएं लेकिन अल्लाह का फ़ैसला ही ऊपर रहा, फ़िरऔन डूब गया और ईमान वालों की अल्लाह ने रक्षा की और उसके उपाय असफ़ल हो गए।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّيْٓ
اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ
الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾ وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ
مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾ وَقَالَ رَجُلٌ
مُّؤْمِنٌ ۖ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا
اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ۭ
وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ
بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ
كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾ يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ
فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ۭ قَالَ فِرْعَوْنُ
مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾
وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ
يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿٣٠﴾ مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ
وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۭ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿٣١﴾
وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ﴿٣٢﴾

منزل٦

और फ़िरऔन बोला ज़रा मुझे छोड़ो तो मैं मूसा का काम ही तमाम किये देता हूँ और वह अपने पालनहार को बुलाता रहे मुझे तो यह डर[1] है कि वह तुम्हारा दीन (धर्म) बदल डालेगा या देश में बिगाड़ पैदा करेगा (26) और मूसा ने कहा कि मैंने अपने और तुम्हारे पालनहार की शरण ले ली है हर घमण्डी से जो हिसाब के दिन को न मानता हो (27) और फ़िरऔन के ख़ानदान का एक ईमान वाला व्यक्ति जो अपने ईमान को छिपाता रहा था बोल पड़ा कि क्या तुम एक आदमी को केवल इसलिए क़त्ल कर रहे हो कि वह कहता है कि मेरा पालनहार अल्लाह है जबकि वह तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुली निशानियाँ लेकर आया है और अगर वह झूठा ही है तो उसका झूठ उसके सिर और अगर वह सच्चा है तो जिन चीज़ों से वह डराता है उसमें से कुछ तो तुम पर पड़कर रहेगा बेशक अल्लाह उसको राह नहीं देता जो हद से आगे बढ़ जाने वाला हो (28) ऐ मेरी क़ौम! आज तुम्हें ऐसी सत्ता प्राप्त है कि देश में तुम्हार वर्चस्व क़ायम है फिर अगर अल्लाह का अज़ाब हमारे ऊपर आ गया तो कौन हमारी मदद करेगा, फ़िरऔन बोला जो मुझे सूझी है वह मैं तुम्हें सुझा रहा हूँ और मैं तुम्हे सही रास्ता बता रहा हूँ (29) और ईमान वाले ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! मुझे तुम पर वही डर है जैसे विभिन्न सम्प्रदायों के दिन (गुज़र चुके हैं) (30) जैसे नूह की क़ौम का हाल और आद व समूद और उनके बाद वालों का हाल हो चुका है, और अल्लाह बन्दों के साथ ज़रा भी अन्याय नहीं चाहता (31) और मेरी क़ौम! मुझे तुम पर उस दिन का डर है जो चीख पुकार का होगा (32)

(1) चमत्कारों को देखकर फ़िरऔन भी डर सा गया था, दरबारियों की राय भी क़त्ल की नहीं थी, इसलिए वह सिर्फ़ धमकी देता था, हज़रत मूसा को मालूम हुआ तो उन्होंने बड़े संतोष के साथ कहा मैं तो अपने पालनहार के शरण में हूँ, मुझे कौन क़त्ल कर सकता है, फ़िरऔन ही के ख़ानदान का एक सज्जन व्यक्ति जो अब तक अपना ईमान छिपा रहा था उसने जब फ़िरऔन की धमकी सुनी तो उससे बर्दाश्त न हुआ और उस अल्लाह के बंदे ने ऐसा बुद्धिमय, शुद्ध और प्रभावशाली भाषण फ़िरऔन के सामने दिया कि ढीला तो था ही और ढीला पड़ गया।

يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ
اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ
بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ۭ حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ
لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ
مُسْرِفٌ مُّرْتَابُۨ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ
اَتٰىهُمْ ۭ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ
اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ
لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿٣٦﴾ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ
اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ۭ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْۗءُ
عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ۭ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿٣٧﴾
وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾
يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۡ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ
الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ
عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰۗىِٕكَ
يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾

ع

منزل ٦

जिस दिन तुम उलटे पाँव भागोगे, अल्लाह से तुम्हें कोई बचाने वाला न होगा और जिसको भी अल्लाह गुमराह कर दे तो उसको कोई राह देने वाला नहीं (33) और निश्चित रूप से पहले यूसुफ़ भी तुम्हारे पास खुले प्रमाण के साथ आए थे फिर तुम उन चीज़ों में बराबर शक में पड़े रहे जो वे तुम्हारे पास लेकर आए, यहाँ तक कि जब उनका निधन हो गया तो तुम बोले इनके बाद तो अल्लाह कोई रसूल भेजेगा ही नहीं[1], इसी प्रकार अल्लाह उसको गुमराह कर देता है जो हद से बढ़ने वाला शक में पड़ने वाला हो (34) जो लोग भी अपने पास बिना किसी प्रमाण के आए हुए अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते रहते हैं तो यह अल्लाह के यहाँ बड़ी अप्रसन्नता की बात है और ईमान वालों के यहाँ भी, इसी प्रकार अल्लाह हर अकड़ने वाले, ज़बरदस्ती करने वाले के दिल पर मोहर लगा देता है[2] (35) और फ़िरऔन ने कहा कि ऐ हामान! मेरे लिए एक ऊंचा भवन बनाओ ताकि मैं उन रास्तों तक पहुँच जाऊँ[3] (36) जो आसमानों के रास्ते हैं, फिर मैं मूसा के ख़ुदा को झांक कर देखूँ, और मैं तो उसे झूठा ही समझता हूँ, और इसी प्रकार फ़िरऔन के बुरे काम उसके लिए सुन्दर कर दिये गये और सच्चे रास्ते से उसे रोक दिया गया और फ़िरऔन की चाल मिट कर रह गई (37) और ईमान वाले ने कहा ऐ मेरी क़ौम! मेरी बात मानो! मैं तुम्हें सीधा रास्ता बताऊँगा[4] (38) ऐ मेरी क़ौम! यह दुनिया का जीवन तो अस्थायी सामान है और आख़िरत का घर ही असल ठिकाने का घर है (39) जो भी बुराई करेगा उसको उसी के अनुसार बदला मिलेगा और ईमान के साथ जो भी भला काम करेगा वह मर्द हो या औरत तो ऐसे ही लोगों को जन्नत में प्रवेश कराया जाएगा, वहाँ उनको बेहिसाब रोज़ी दी जाएगी (40)

---

(1) हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के जीवन में मिस्र वालों ने उनके नबी होने को न माना, जब उनके निधन के बाद व्यवस्था बिगड़ी तो कहने लगे कि उनकी शुभ छत्र–छाया थी, ठीक चल रहा था, अब ऐसा नबी कोई न आएगा, या वह इनकार या यह इक़रार (स्वीकार), ईमान वाले मर्द ने यह उदाहरण इसीलिए दिया कि नेमत (अच्छी चीज़) की क़द्र उसके समाप्त होने के बाद होती है, इस समय तुम मूसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में भी इधर–उधर की बातें करते हो बाद में पछताना पड़ेगा इसलिए अभी मान लो। (2) फिर ईमान की तौफ़ीक़ (क्षमता) ही छीन ली जाती है। (3) हामान फ़िरऔन का मंत्री था और अब नये शोध से यह बात भी सामने आई है कि उसके कार्यक्षेत्र में ईंट–भटठा और भवन निर्माण का काम था। (4) फ़िरऔन ने ग़लत रास्ते को "सबीलुर्रशाद" (हिदायत का रास्ता) कहा था, अब नेक मर्द ने खुलकर कहा कि मैं तुम्हें "सबीलुर्रशाद" की ओर बुलाता हूँ जो भी ईमान लाएगा और अच्छे काम करेगा वह सफ़ल होगा।

وَيٰقَوْمِ مَا لِيٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ۝٤١
تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ
وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ۝٤٢ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ
اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَآ
اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝٤٣ فَسَتَذْكُرُوْنَ
مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ۭ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ
بِالْعِبَادِ ۝٤٤ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ
بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْۗءُ الْعَذَابِ ۝٤٥ اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا
غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۣ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ
فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ۝٤٦ وَاِذْ يَتَحَاۗجُّوْنَ فِي النَّارِ
فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰۗؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ
تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ۝٤٧
قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ
بَيْنَ الْعِبَادِ ۝٤٨ وَقَالَ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ
ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ۝٤٩

منزل٦

ऐ मेरी क़ौम! बात क्या है कि मैं तुम्हें नजात की ओर बुला रहा हूँ और तुम मुझे आग की ओर बुलाते हो (41) तुम मुझे बुलाते हो कि मैं अल्लाह का इनकार करूँ और उसके साथ शिर्क करूँ जिसकी मुझको कुछ ख़बर तक नहीं और मैं तुम्हें उसकी ओर बुला रहा हूँ जो ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है बहुत माफ़ करने वाला है (42) निश्चित बात है कि जिसकी ओर तुम मुझे बुला रहे हो वह बुलाये जाने के लायक़ ही नहीं है, न दुनिया में और न आख़िरत में और हमको लौटकर अल्लाह ही की ओर जाना है निश्चित रूप से हद से बढ़ जाने वाले ही दोज़ख़ के लोग हैं (43) फिर आगे तुम याद करोगे जो मैं तुम से कहा करता था और मैं अपना मामला अल्लाह के हवाले करता हूँ बेशक अल्लाह बन्दों पर पूरी निगाह रखता है[1] (44) बस अल्लाह ने उसे उनकी बुरी चालों से बचा लिया और फ़िरऔन वालों पर बुरी तरह का अज़ाब टूट पड़ा (45) वह आग है जिस पर सुबह व शाम उनको तपाया जाता है[2] और जिस दिन क़यामत आएगी (कहा जाएगा) कि फ़िरऔन के लोगों को सख़्त अज़ाब में प्रवेश करा दो (46) और जब वे दोज़ख़ में एक दूसरे से झगड़ेंगे तो कमज़ोर लोग घमंडियों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे ही अनुयायी थे क्या तुम आग का कुछ भाग हम पर से हटा सकते हो (47) घमण्डी कहेंगे हम सब इसी में पड़े हैं अल्लाह बन्दों में फ़ैसला कर चुका (48) और जो आग में पड़े होंगे वे दोज़ख़ के दारोगों से कहेंगे अपने पालनहार से दुआ कर दीजिए कि किसी दिन वह हमारा अज़ाब हलका कर दे[3] (49)

(1) उस अल्लाह के बन्दे ने सारे प्रमाण पेश कर दिये, बोला कि मुझे जो समझाना था समझा चुका तुम नहीं मानते तो तुम जानो, बाद में याद करोगे कि कोई अल्लाह का बन्दा समझाता था अब मैं अपने आपको पूरी तरह अल्लाह के हवाले करता हूँ, तुम अगर मुझे सताना चाहोगे तो अल्लाह ही मेरा मददगार है, बस अल्लाह ने हज़रत मूसा के साथ उसको भी बचा लिया और सबके सामने फ़िरऔन और उसकी पूरी सेना डूब गई। (2) यह "बरज़ख़" का अज़ाब है, हदीस में आया है कि नाफ़रमानों को दोज़ख़ की लपटें क़यामत तक झुलसाती रहेंगी और दोज़ख़ में उनकी जगह उनको दिखाई जाती रहेगी ताकि ज़्यादा तकलीफ़ हो (3) दुनिया में बहकाने वालों से निराश होकर दोज़ख़ के दारोग़ा से प्रार्थना करेंगे।

قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۭ قَالُوْا بَلٰى ۭ
قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰۗؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝50
اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ۝51 يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ
مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْۗءُ الدَّارِ ۝52 وَلَقَدْ
اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ الْكِتٰبَ ۝53
هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ۝54 فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ
اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ۝55 اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ
اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ
مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ
الْبَصِيْرُ ۝56 لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ
النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝57 وَمَا
يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ڏ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْۗءُ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝58

منزل ٦

वे कहेंगे कि क्या तुम्हारे रसूल तुम्हारे पास खुले प्रमाण लेकर नहीं आए थे? वे कहेंगे क्यों नहीं, तो वे कहेंगे कि तुम्हीं दुआ करो और काफ़िरों का दुआ करना बिल्कुल बेकार जाएगा (50) निश्चित रूप से हम अपने रसूलों की और मानने वालों की सांसारिक जीवन में भी मदद करते हैं और उस दिन भी करेंगे जब गवाह खड़े होंगे (51) जिस दिन ज़ालिमों को उनके बहाने काम न आएंगे और उनके भाग में फिटकार होगी और बुरा घर होगा (52) और हमने मूसा को हिदायत (संमार्ग) प्रदान की और बनी इसराईल को किताब का वारिस बनाया (53) जो हिदायत (संमार्ग) व नसीहत है सूझबूझ रखने वालों के लिए (54) तो आप क़दम जमाए रहिये निश्चित रूप से अल्लाह का वादा सच्चा है और अपनी भूल–चूक की माफ़ी माँगिये और अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ शाम और सुबह को तस्बीह (पाकी बयान) करते रहिये[1] (55) निश्चित रूप से जो लोग अल्लाह की बातों में झगड़ा करते हैं बिना किसी प्रमाण के जो उनके पास आई हों, यह केवल उनके भीतर बड़ाई का एहसास है जिस तक वे कभी पहुँच नहीं सकते, तो आप अल्लाह से पनाह चाहें, बेशक वही ख़ूब सुनता ख़ूब देखता है[2] (56) आसमानों और ज़मीन का पैदा करना लोगों के पैदा करने से भी बड़ी बात है लेकिन अधिकांश लोग समझ नहीं रखते[3] (57) अंधा और देखने वाला बराबर नहीं हो सकते और न ईमान लाने वाले और अच्छे काम करने वाले और बुरे काम करने वाले (बराबर हो सकते हैं) बहुत ही कम तुम नसीहत हासिल करते हो[4] (58)

(1) आपको सुनाकर पूरे मुस्लिम समुदाय को इसकी ताकीद की गई है खुद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हाल यह था कि दिन में सौ–सौ बार गुनाहों से माफ़ी माँगते थे जब कि अल्लाह ने आपको गुनाहों से पाक बनाया था, तो गुनाहगारों के लिए इसका कितना महत्व है और उनको कितनी बार तौबा व गुनाहों से माफ़ी माँगनी चाहिए (2) तौहीद (एकेश्वरवाद), आसमानी किताबों और नबियों के मोअजिज़ों और हिदायत के बारे में अकारण झगड़ते हैं और बिना प्रमाण की बातें निकाल कर सत्य की आवाज़ को दबाना चाहते हैं, इस पर उनके पास कोई प्रमाण नहीं केवल घमण्ड रुकावट बना हुआ है कि सत्य के आगे गर्दन झुकाएं उनको जो अपनी बड़ाई का एहसास है वे न उस पर आसीन हैं और न कभी वहाँ पहुँच सकते हैं (3) यानी यह तो मानते हैं कि आसमान व ज़मीन अल्लाह ने पैदा किये लेकिन यह बात नहीं समझ में आती कि अल्लाह मरने के बाद इंसानों को दोबारा उठाएगा (4) जो अल्लाह की निशानियाँ खुली आँखों से देख रहे हैं वे ईमान लाते हैं और जो अंधे है वे बुराइयों में पड़े हैं, अंजाम से बेख़बर हैं, क्या दोनों बराबर हो सकते हैं।

إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيهَا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٩﴾ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ
إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ
دَاخِرِينَ ﴿٦٠﴾ اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ
وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَ
لَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦١﴾ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ
كُلِّ شَيْءٍ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٦٢﴾ كَذَٰلِكَ
يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٦٣﴾ اللَّهُ
الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ
فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ ذَٰلِكُمُ
اللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ فَتَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٤﴾ هُوَ
الْحَيُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ
الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٥﴾ قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ
الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِيَ الْبَيِّنَاتُ
مِن رَّبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٦﴾

منزل٦

क़यामत तो आनी ही है इसमें कोई संदेह ही नहीं लेकिन अधिकांश लोग नहीं मानते (59) और तुम्हारे पालनहार का फ़रमान है कि मुझसे दुआ करो मैं तुम्हारी (दुआ) स्वीकार करूँगा निश्चित रूप से जो लोग मेरी इबादत से अकड़ते हैं जल्द ही वे अपमानित (ज़लील) होकर दोज़ख़ में जाएंगे[1] (60) अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम पाओ और दिन को रौशन बनाया निश्चित रूप से अल्लाह तो लोगों पर बहुत कृपा करने वाला है लेकिन अधिकांश लोग एहसान नहीं मानते (61) वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, हर चीज़ का पैदा करने वाला है, उसके अलावा कोई पूजा के लायक़ नहीं तो फिर तुम कहाँ फेर दिये जाते हो (62) इसी तरह वे लोग फेर दिये जाते हैं जो अल्लाह की निशानियों का इनकार करते रहे हैं (63) वह अल्लाह जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिए ठहरने की जगह और आसमान को छत बनाया[2] और तुम्हें रूप प्रदान किया तो तुम्हें सुन्दर बनाया और पवित्र चीज़ें तुम्हें रोज़ी में दीं, वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है तो वह अल्लाह बड़ी बरकत वाला है, सारे संसारों का पालनहार है (64) वही ज़िंदा है उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं बस बंदगी को उसके लिए शुद्ध करके उसे पुकारो, असल प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो तमाम संसारों का पालनहार है[3] (65) कह दीजिए कि मुझे इससे रोक दिया गया है कि मैं उन चीज़ों की पूजा करूं जिनको तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो जबकि मेरे पास मेरे पालनहार की ओर से खुली निशानियाँ आ चुकी हैं और मुझे यह आदेश है कि मैं सारे जहानों के पालनहार का आज्ञाकारी रहूँ (66)

---

(1) दुआ खुद इबादत (पूजा) का मूल है, उसमें बन्दा अपनी बन्दगी का इज़्हार करता है और अपने मालिक से माँगता है और उसका माँगना कभी भी ख़ाली नहीं जाता, कभी तो वही चीज़ मिल जाती है जो माँगी गई है, कभी उसके कारण मुसीबतें टलती हैं, वरना उस दुआ का इतना बदला लिखा जाता है कि क़यामत में उस बदले को देखकर बंदा कामना करेगा कि काश कि दुनिया में मेरी कोई दुआ स्वीकार ही नहीं हुई होती। (2) 'बेना' भवन को कहते हैं यहाँ इससे आशय छत है। (3) जब वही असली सम्मानित करने वाला है, जीवन की सारी आवश्यकताएं पूरी करता है तो फिर कौन इबादत (पूजा) के लायक़ हो सकता है, केवल उसी से लौ लगाई जाये और उसी को पुकारा जाए।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ
ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا ۚ
وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ مِن قَبْلُ ۖ وَلِتَبْلُغُوا أَجَلًا مُّسَمًّى وَلَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾ هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا
يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٦٨﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي
آيَاتِ اللَّهِ أَنَّىٰ يُصْرَفُونَ ﴿٦٩﴾ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَبِمَا
أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٧٠﴾ إِذِ الْأَغْلَالُ فِي
أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَاسِلُ يُسْحَبُونَ ﴿٧١﴾ فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي
النَّارِ يُسْجَرُونَ ﴿٧٢﴾ ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٧٣﴾
مِن دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَل لَّمْ نَكُن نَّدْعُو مِن
قَبْلُ شَيْئًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ﴿٧٤﴾ ذَٰلِكُم بِمَا كُنتُمْ
تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَمْرَحُونَ ﴿٧٥﴾
ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى
الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٦﴾ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ فَإِمَّا نُرِيَنَّكَ
بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٧٧﴾

منزل٦

वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से बनाया फिर पानी की बूँद से फिर ख़ून के लोथड़े से फिर वह तुम्हें बच्चा बनाकर बाहर निकालता है फिर (वह तुम्हें बाक़ी रखता है) ताकि तुम अपनी पक्की उम्र को पहुँचो फिर (बाक़ी रखता है) ताकि तुम बूढ़े हो और तुम में कुछ पहले ही उठा लिए जाते हैं और (बाक़ी इसलिए रखता है) ताकि तुम अपनी निर्धारित अवधि पूरी कर लो और शायद तुम समझ से काम लो[1] (67) वही है जो जिलाता है और मारता है, तो जब वह किसी चीज़ का फ़ैसला कर लेता है तो उससे कहता है हो जा, बस वह हो जाती है (68) भला आपने उन लोगों को नही देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं, वे कहाँ फेर दिये जाते हैं (69) जिन्होंने किताब को भी झुठलाया और उन चीज़ों को भी जो हमने रसूलों के साथ भेजीं, बस आगे उनको पता चल जाएगा (70) जब हंसली और ज़ंजीरें उनकी गर्दनों में पड़ी होगी वे घसीट कर लाए जाएंगे (71) खौलते पानी में, फिर आग में झोंक दिये जाएंगे (72) फिर उनसे कहा जाएगा कहाँ है वे जिनको तुम साझी बनाया करते थे (73) अल्लाह के अलावा, वे कहेंगे कि वे हमसे बिछड़ गये बल्कि हम तो पहले किसी को पुकारते ही न थे, इसी प्रकार अल्लाह काफ़िरों को पथभ्रष्ट करता है[2] (74) यह परिणाम है उसका जो तुम ज़मीन में अनुचित मस्तियाँ किया करते थे और इसका कि तुम इतराया करते थे (75) दोज़ख़ के दरवाज़ों से हमेशा वहीं पड़े रहने के लिए प्रवेश कर जाओ बस घमण्ड करने वालों का ठिकाना कैसा बुरा हुआ (76) बस आप तो अटल रहिये निश्चित रूप से अल्लाह का वादा सच्चा है फिर या तो हमने उनके बारे में जो वादा किया है कुछ आपको हम वह दिखा ही देंगे या आपको मौत ही दे देंगे तब भी उनको लौटना तो हमारी ही ओर है[3] (77)

---

(1) जो मनुष्य को इतने चरणों से गुज़ारता है उसके लिए दोबारा उसको खड़ा कर देना क्या कठिन है, जबकि उसकी शान यह है कि वह जो चाहता है "कुन" (हो जा) शब्द से कर देता है। (2) शुरु में शिर्क करने वाले इनकार करेंगे कि हमने साझी ठहराया ही नहीं फिर घबरा कर मुँह से निकलेगा कि "ज़ल्लू अन्ना" (वे हम से बिछड़ गये) इसमें कुछ स्वीकृति होगी फिर वही कह देंगे कि हम किसी को पुकारते ही न थे, जैसे यहाँ झूठ बोल रहे हैं इसी प्रकार दुनिया में भी झुठलाते रहे थे और सही रास्ते से दूर थे, इसके परिणाम स्वरूप हमेशा के लिए दोज़ख़ में डाल दिये जाएंगे। (3) अर्थात उनकी गुस्ताख़ियों और कुफ़्र व इनकार पर हमने जिस अज़ाब का वादा किया है वह हर हाल में पूरा होगा वे बचकर निकल नहीं सकते, हो सकता है कि उनके जीवन ही में हम आपको दिखा दें जैसा कि कुछ जंग–ए–बदर और मक्का विजय के अवसर पर हुआ, या आपके निधन के बाद, परिणाम सबका हमारे ही हाथ में है।

और हम ने आपसे पहले बहुत से पैग़म्बर भेजे, उनमें से कुछ के हालात आपको बताये और कुछ के हालात नहीं बताए, और किसी पैग़म्बर के बस में नहीं कि वह अल्लाह के आदेश के बिना कोई निशानी ले आए फिर जब अल्लाह का आदेश आ पहुँचेगा तो ठीक–ठीक फ़ैसला हो जाएगा और वहाँ असत्यवादी घाटा उठा जाएंगे[1] (78) वह अल्लाह जिसने तुम्हारे लिए पशु बनाये ताकि तुम उसमें कुछ पर सवारी करो और उनमें तुम कुछ को खाते भी हो (79) और उनमें तुम्हारे लिए बहुत से फ़ायदे हैं और ताकि तुम उन पर चढ़कर अपनी उस आवश्यकता तक पहुँच जाओ जो तुम्हारे मन में है और तुम उन पर और नावों पर लदे फिरते हो (80) और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है तो तुम उसकी किन–किन निशानियों का इनकार करोगे (81) भला उन्होंने ज़मीन में चल फिर कर देखा नहीं कि उनसे पहले वालों का अंजाम कैसा हुआ वे (संख्या में भी) उनसे अधिक थे और शक्ति में भी उनसे बढ़ कर थे, और देश में (फैली हुई) स्मृतियों में भी, तो उन्होंने जो कुछ कमाया धरा वह उनके कुछ काम न आया (82) बस जब हमारे रसूल उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए तो उनको अपने ज्ञान पर गर्व हुआ और अंततः जिस चीज़ का वे मज़ाक़ उड़ाते थे उसी की लपेट में आ गए (83) फिर जब उन्होंने हमारे अज़ाब को देख लिया तो लगे कहने कि हमने एक अल्लाह को माना और उसके साथ हम जो साझी ठहराया करते थे उसका हमने इनकार किया (84) तो जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया तो उनको उनके ईमान लाने का (उस समय) बिल्कुल फ़ायदा नहीं पहुँचा याद रखो यह अल्लाह का नियम है जो उसके बन्दों में (पहले से) चला आता है, और उस समय इनकार करने वाले घाटे में रहे[2] (85)

---

(1) जिन रसूलों के हालात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बताए गए वह भी एक मोअजिज़ा (इलाही चमत्कार) है कि जो हालात न आपके सामने गुज़रे और न किसी माध्यम से आपको उनकी ख़बर मिली, उनके विवरण आपकी ज़बान से जारी हुए, मक्के के मुश्रिक नए–नए मोअजिज़ों की माँग किया करते थे, अल्लाह ने फ़रमा दिया कि आप कह दीजिए कि यह सब अल्लाह के हाथ में है ऐसा नहीं कि मैं अपने अधिकार से मोअजिज़े दिखाता रहूँ (2) यही होता चला आया है कि लोग शुरु में इनकार करते हैं और मज़ाक़ उड़ाते हैं फिर जब अज़ाब में पकड़े जाते हैं उस सम शोर मचाते हैं और अपनी ग़लतियाँ स्वीकार करते हैं, अल्लाह का यह नियम है कि उस समय की तौबा स्वीकार नहीं करता, अंततः अपराधी और इनकार करने वाले अपने कुफ़्र व इनकार के कारण तबाह होते हैं।

सूरह हा॰ मीम॰ सज्दा

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालू है।

हा॰ मीम॰ (1) (यह किताब) उतारी जा रही है उसकी ओर से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है (2) अरबी कुरआन के रूप में यह ऐसी किताब है जिसकी आयतें खोल दी गई हैं उन लोगों के लिए जो जानना चाहें (3) (यह किताब) ख़ुशख़बरी भी देती है और सावधान भी करती है फिर उनमें अधिकांश लोग मुँह फेर लेते हैं तो वे सुनते ही नहीं (4) और बोले कि तुम जिस चीज़ की ओर हमें बुलाते हो उसके लिए हमारे दिलों पर पर्दे चढ़े हैं और हमारे कानों में बोझ है और हमारे और तुम्हारे बीच एक पर्दा आड़ है तो तुम अपना काम करो हम अपने काम में लगे हैं (5) कह दीजिये निश्चित रूप से मैं तुम्हारे जैसा इंसान हूँ (हाँ) मुझ पर वह्य आती है कि तुम्हारा पूज्य (माबूद) तो बस एक ही पूज्य है तो अपना मुँह उसी की ओर कर लो और उसी से माफ़ी माँगो और शिर्क करने वालों के लिए बड़ी तबाही है (6) जो ज़कात नहीं देते और वे आख़िरत के बिल्कुल ही इनकार करने वाले हैं (7) बेशक जिन्होंने माना और काम किये उनके लिए असीम बदला है (8) पूछिए कि क्या तुम उसका इनकार करते हो जिसने दो दिन में ज़मीन बनाई और

سورة حم السجدة مكية وهي اربع وخمسون آية وست ركوعات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٢﴾ كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا
عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ
لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٤﴾ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ
اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ﴿٥﴾
قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ
فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦﴾ الَّذِيْنَ
لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٧﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٨﴾ قُلْ اَئِنَّكُمْ
لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ
اَنْدَادًا ۭ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩﴾ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا
وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ۭ سَوَاۗءً
لِّلسَّاۗىِٕلِيْنَ ﴿١٠﴾ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَاۗءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ
لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ۭ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَاۗىِٕعِيْنَ ﴿١١﴾

منزل ٦

तुम उसके समकक्ष ठहराते हो वह तो सारे जहानों का पालनहार है (9) और उसने उस (ज़मीन) में ऊपर पहाड़ बनाए और उसमें बरकत रखी[1] और उसने उसमें जीवन के सारे साधन निर्धारित किये सब चार दिन में हुआ[2], सब सवाल करने वालों के लिए समान[3] (10) फिर उसने आकाश की ओर ध्यान दिया और वह धुआँ था तो उससे और ज़मीन से कहा ख़ुशी–ख़ुशी या ताक़त के बल पर दोनों उपस्थित हो जाओ, दोनों बोले हम ख़ुशी–ख़ुशी उपस्थित हैं[4] (11)

(1) इसके भीतर बरकत रखी यानी भाँति–भाँति की खदाने, पेड़ और मेवे और अनाज पैदा किये और जीवन के सारे साधन रखे यानी गैसों का अनुपात पानी की बहुतायत, हर क्षेत्र में वहाँ की आवश्यकताओं के अनुसार खाद्य पदार्थ पैदा किये। (2) दो दिन में असल ज़मीन पैदा की, दो दिन में उसकी आवश्यक सामग्री पैदा की कुल यह चार दिन हुए और दो दिन में सातों आसमान पैदा किये यह सब आसमान व ज़मीन छः दिन में बने जैसा कि विभिन्न आयतों में इसका वर्णन है, दिन से आशय कौन सा दिन है यह अल्लाह ही जानता है इसलिए कि यह सूरज के सृजन से पहले की घटना है, फिर जो अल्लाह जिस चीज़ को जब चाहे क्षणों में पैदा कर दे उसने यह चीज़ें छः दिनों में क्यों पैदा कीं इसकी हिकमत भी वही जानता है जिसने पैदा किया, शायद इसमें इंसान को हिकमत की शिक्षा दी गयी हो यानी सारे ज़रूरतमंदों के लिए बराबर जो भी चाहे उनसे लाभ उठाए (4) यह चीज़ें अल्लाह की व्यवस्था से संबंधित हैं जिनमें कण–मात्र भी अन्तर नहीं हो सकता, सारी सृष्टियाँ इसी तकवीनी (प्राकृतिक) व्यवस्था की प्रतिबद्ध हैं इसके विरूद्ध वे कर ही नहीं सकतीं, यही उनकी तस्बीह है, किन्तु मनुष्य का एक भाग तकवीनी (प्राकृतिक) व्यवस्था से सम्बन्धित है उसमें उसको भी अधिकार नहीं और दूसरा भाग तशरीई व्यवस्था से सम्बद्ध है उसमें उसको अधिकार देकर बता दिया गया है कि इस पर अमल करने में तुम्हारे लिए नजात है और अमल न करने में अल्लाह की अप्रसन्नता और हमेशा की मुसीबत, यही उसकी परीक्षा का भाग है।

فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِىْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِىْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا
وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ۚ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ
الْعَلِيْمِ ﴿١٢﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ
عَادٍ وَّثَمُوْدَ ﴿١٣﴾ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ
خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۖ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً
فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى
الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۖ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ
الَّذِىْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۖ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿١٥﴾
فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِىْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ
عَذَابَ الْخِزْىِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ
لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٦﴾ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى
فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٧﴾ وَ
نَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿١٨﴾ وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ
اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٩﴾ حَتّٰىٓ اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ
عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٠﴾

منزل٦

तो उसने दो दिन में वे (यानी) सात आसमान नियुक्त किये और हर आसमान को उसका काम बता दिया[1] और हमने दुनिया वाले आसमान को चिरागों से सजाया भी और रक्षा के तौर पर भी (उनको रखा) यह ज़बरदस्त खूब जानने वाले की निर्धारित की हुई (व्यवस्था) है[2] (12) फिर अगर वे मुँह फेरें तो आप कहिए कि आद व समूद की चिंघाड़ की तरह मैं तुम्हें एक चिघांड से डराता हूँ[3] (13) जब उनके पास पैग़म्बरों ने उनके आगे से और उनके पीछे से आ–आ कर कहा कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी मत करो, वे बोले कि अगर अल्लाह (यही) चाहता तो फ़रिश्तों को उतार देता, बस तुम्हें जिस चीज़ के साथ भेजा गया है हम तो उसको मानने वाले नहीं (14) बस रहे आद तो उन्होंने धरती में अनुचित रूप से घमण्ड किया और बोले कि हमसे बढ़कर बलवान कौन है? क्या उन्होंने नहीं देखा कि वह अल्लाह जिसने उनको पैदा किया वह उनसे बढ़कर बलवान है? और वे हमारी निशानियों का इनकार ही करते रहे (15) बस हमने उन पर अशुभ दिनों में झन्नाटेदार हवा भेज दी ताकि हम उनको दुनिया के जीवन में भी अपमानजनक अज़ाब का मज़ा चखा दें और निश्चित रूप से आख़िरत का अज़ाब और ज़्यादा अपमानजनक होगा और उनकी कोई मदद न होगी (16) और रहे समूद तो हमने उनको सही रास्ता दिखाया तो उनको हिदायत (संमार्ग) के मुक़ाबले अंधापन ही अच्छा लगा तो उनकी अपनी करतूतों के कारणवश अपमान के अज़ाब की कड़क ने उनको आ दबोचा (17) और ईमान वालों को हमने बचा लिया और वे भी बच–बच कर जीवन गुज़ारते थे (18) और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन सब के सब दोज़ख़ की ओर इकटठा किये जाएंगे तो उनकी टुकड़ियाँ कर दी जाएंगी (19) यहाँ तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे तो उनके कान और उनकी आँखें और उनकी खालें उनके किये हुए कामों पर उनके विरुद्ध गवाही देंगी[4] (20)

---

(1) यानी कहाँ क्या–क्या और कब–कब होना है सब तय कर दिया (2) झिलमिलाते सितारे, चाँद, सूरज सब शोभा व श्रृंगार बढ़ाने वाले हैं और पहरे की ज़बरदस्त व्यवस्था भी है कि शैतान पर नहीं मार सकते (3) अगर वे इतनी निशानियाँ बताने के बाद भी नहीं मानते तो आप कह दीजिए कि तुम्हारा परिणाम भी आद व समूद जैसा हो सकता है कि हज़रत हूद व हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम ने हर–हर तरह समझाया मगर बात उनकी समझ में न आई, परिणामस्वरूप दोनों क़ौमें तबाह कर दी गईं (4) जब काफ़िर और अपराधी अपने पापों से मुकर जाएंगे तो खालें बोलेंगी और गवाही देंगी।

وَقَالُوا لِجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ۖ قَالُوا أَنْطَقَنَا اللَّهُ
الَّذِي أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَإِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ﴿٢١﴾ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ
سَمْعُكُمْ وَلَا أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَٰكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ
لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٢﴾ وَذَٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي
ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدَاكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٢٣﴾ فَإِنْ
يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ۖ وَإِنْ يَسْتَعْتِبُوا فَمَا هُمْ مِنَ
الْمُعْتَبِينَ ﴿٢٤﴾ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ مَا بَيْنَ
أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا
خَاسِرِينَ ﴿٢٥﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَٰذَا الْقُرْآنِ
وَالْغَوْا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ ﴿٢٦﴾ فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾ ذَٰلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ النَّارُ ۖ لَهُمْ فِيهَا
دَارُ الْخُلْدِ ۖ جَزَاءً بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿٢٨﴾

ع ٣

منزل٦

और वे अपनी खालों से कहेंगे तुमने हमारे विरूद्ध क्यों गवाही दी वे (खालें) बोलेंगी हमें उसने बोलने की शक्ति दी जिसने हर एक चीज़ को बोलने की शक्ति प्रदान की है और उसी ने पहली बार भी तुम्हें पैदा किया और उसी की ओर तुम लौट रहे हो (21) और तुम छिपते न थे कि (कहाँ) तुम्हारे कान तुम्हारे विरूद्ध गवाही देंगे और न तुम्हारी आँखें और न तुम्हारी खालें बल्कि तुम्हारा विचार तो यह था कि तुम्हारे अधिकांश कामों से अल्लाह तो अवगत ही नहीं है[1] (22) और यही वह तुम्हारा भ्रम जो तुमने अपने पालनहार (के बारे में) स्थापित किया था इसी ने तुम्हें तबाह किया तो तुम घाटा उठा गये (23) बस अगर यह सब्र करें तो भी इनका ठिकाना दोज़ख़ है और अगर तौबा करना चाहें तो भी यह वे लोग नहीं हैं जिनकी तौबा स्वीकार हो[2] (24) और हमने उन पर कुछ संगी–साथी मुसल्लत किये थे तो उन्होंने उनके सब अगले पिछले काम उनके लिए सुन्दर बनाकर पेश किये और उन क़ौमों के साथ इन पर भी (अज़ाब की) बात थुप गई जो जिन्नातों और इंसानों में उनसे पहले गुज़र चुकी हैं निश्चित रूप से वे घाटे ही में रहे[3] (25) और काफ़िर बोले इस कुरआन को सुनना मत और (जब पढ़ा जाए तो) इसमें शोर–गुल मचाओ ताकि तुम ही ग़ालिब रहो[4] (26) तो हम भी इनकार करने वालों को कठोर दण्ड का स्वाद चखाकर रहेंगे और जो वे बहुत बुरे काम किया करते थे उसका बदला हम उनको ज़रूर देंगे (27) यह अल्लाह के दुश्मनों की सज़ा है दोज़ख़ (के रूप में) उनको हमेशा उसी में रहना है, जो इनकार वे हमारी आयतों का किया करते थे उसकी सज़ा के रूप में (28)

(1) पाप करते समय यह ख़्याल तो था नहीं कि आँख–कान और खाल गवाही देंगे और इनसे छिपना सम्भव भी न था और अल्लाह के सर्वज्ञाता होने का तुम्हें विश्वास न था, तुम सोचते थे कि जो चाहो करो, कौन देखने वाला है, इसी भ्रम ने तुम्हें तबाह किया (2) यानी अब दोज़ख़ से बचाव का कोई उपाय नहीं, सब्र करें, न कर सकें तो तौबा स्वीकार होना सम्भव नहीं (3) शैतान भी मुसल्लत थे जो पापों को सुन्दर और आवश्यक बनाकर पेश करते थे और शैतानी रंग में रंगे हुए बहुत से इंसान भी जो मित्र बनकर दीन (धर्म) से बेख़बर कर रहे थे, दोज़ख़ में जाने वाला कहेगा कि ऐ अल्लाह! उन बहकाने वालों को मुझे दिखा दे तो मैं उनको अपने पाँव से रौंदूँ ताकि वे ज़लील हों, दूसरी जगह कुरआन में उनकी दूसरी इच्छा का भी उल्लेख है कि उन बहकाने वालों को दोगुना अज़ाब दे, वहाँ कहा गया है कि (हर एक के लिए दोगुना अज़ाब है मगर तुम जानते नहीं) दुनिया में तुम्हें बुरे लोगों की बातें अच्छी लगती थीं और अच्छी बातें तुम्हें पसन्द नहीं थीं अब उसका मज़ा चखो। (4) पवित्र कुरआन की आवाज़ जिसके कानों में पड़ जाती वह दीवाना हो जाता, इसके रोकने का काफ़िरों ने यह तरीक़ा अपनाया कि जब कुरआन पढ़ा जाए तो उधर ध्यान न दो और इतना शोर मचाओ कि दूसरे भी न सुन सकें, अब भी झूठे लोग यही नीति अपनाते हैं कि सत्य की बात कान में पड़ने न पाए।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذَيْنِ أَضَلَّانَا مِنَ الْجِنِّ
وَالْإِنسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ﴿٢٩﴾
إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ
الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ
تُوعَدُونَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ
وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ﴿٣١﴾ نُزُلًا مِّنْ
غَفُورٍ رَّحِيمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّن دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ
صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٣﴾ وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَ
لَا السَّيِّئَةُ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ
عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴿٣٤﴾ وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا
يُلَقَّاهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٣٥﴾ وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ
فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٦﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ
وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ
الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿٣٧﴾ فَإِنِ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ
عِندَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ ﴿٣٨﴾

منزل٦

और जिन्होंने इनकार किया वे कहेंगे ऐ हमारे पालनहार! इंसानों और जिन्नों में जिन्होंने हमें गुमराह किया उनको हमें दिखा दीजिए हम उनको अपने पाँव तले रौंद डालें ताकि वे अच्छी तरह अपमानित हों (29) बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है फिर जमे रहे उन पर फ़रिश्ते (यह कहते) उतरेंगे कि न डरो और न ग़म करो और उस जन्नत का शुभ समाचार स्वीकार करो जिसका तुमसे वादा किया जाता था (30) हम दुनिया के जीवन में भी तुम्हारे समर्थक थे और आख़िरत में भी और यहाँ तुम्हारे लिए वह सब कुछ है जो तुम्हारा मन चाहेगा और जो तुम माँगोगे वह तुम्हें मिलेगा (31) मेहमानदारी (की जा रही) है उस माफ़ करने वाले बहुत ही दया करने वाले की ओर से (32) और उससे अच्छी बात किसकी होगी जिसने अल्लाह की ओर बुलाया और अच्छे काम किये और कहा कि मैं तो आज्ञाकारी हूँ (33) और अच्छाई और बुराई दोनों बराबर नहीं हैं, (बुरी बात का) जवाब ऐसा दो जो बहुत अच्छा हो तो देखोगे कि जिसके और तुम्हारे बीच दुश्मनी थी अब मानो वह घनिष्ठ मित्र हैं[1] (34) और यह बात उसी को मिलती है जो सब्र करने वाले हों और उसी को मिलती है जो बड़ा भाग्यशाली हो (35) और अगर शैतान की ओर से तुम्हें कचोका लगे तो अल्लाह की शरण चाहो निश्चित रूप से वह ख़ूब सुनता ख़ूब जानता है[2] (36) और रात व दिन और सूरज और चाँद उसी की निशानियों में से हैं, न सूरज को सज्दा करो और न चाँद को, और सज्दा अल्लाह को करो जिसने इनको पैदा किया, अगर तुम उसी की बन्दगी करते हो (37) फिर अगर वह अकड़े तो जो आपके पालनहार के पास हैं वे रात व दिन उसी की तस्बीह (पवित्रता बयान) करने में लगे हैं और वे उकताते नहीं हैं[3] (38)

(1) एक सच्चे अल्लाह की ओर बुलाने वाले के लिए जिन गुणों और चरित्र की आवश्यकता है यहाँ उसकी शिक्षा दी जा रही है, जो व्यक्ति बुरा व्यवहार कर रहा हो उसके साथ भी अच्छा व्यवहार किया जाए, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवनी में इसके उत्तम आदर्श मौजूद हैं, इसका फ़ायदा यह बताया जा रहा है कि कठोर से कठोर दिल वाले भी नर्म होते देखे गये हैं, दुश्मन भी इससे दोस्त और मददगार बन जाते हैं, लेकिन आगे कह दिया कि यह उच्चतम गुण हैं जो अल्लाह अपने सब्र करने वाले बंदों ही को प्रदान करते हैं जो बड़े भाग्यशाली होते हैं। (2) शैतान के कचोके से आशय उसका वस्वसा है और उसका लक्षण यह है कि गुनाह के काम का विचार पैदा होने लगे तो तुरन्त अल्लाह की पनाह चाहे "अऊज़ु बिल्लाहि मिनश शैतानिर रजीम" को पढ़ ले (3) यह सज्दे की आयत है, इसमें बताया गया है कि सब उसके सामने सज्दे में पड़े हुए हैं, तुम सब उसी को सज्दा करो और अगर कोई घमण्ड के कारण सज्दा नहीं करता है तो उसी का घाटा है किसी और का नहीं।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ
اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۳۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ
اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا مَا
شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۴۰﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا
جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ﴿۴۱﴾ لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ
وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ﴿۴۲﴾ مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا
قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ
اَلِيْمٍ ﴿۴۳﴾ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ
ءَاَعْجَمِيٌّ وَّعَرَبِيٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ وَ
الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ؕ اُولٰٓئِكَ
يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ ﴿۴۴﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۴۵﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا
فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۴۶﴾

منزل٦

और यह भी उसकी निशानियों में है कि ज़मीन को आप मुरझाया हुआ देखते हैं फिर जब हमने उस पर वर्षा की तो वह लहलहा गई और फल–फूल लाई निश्चित रूप से जिसने उसको जीवन दिया वही मुर्दों को जिलाने वाला है निस्संदेह वह हर चीज़ पर पूरी सामर्थ्य रखने वाला है (39) निश्चित रूप से जो लोग हमारी आयतों में हेर–फेर कर रहे हैं[1] वे हमसे छिपे नहीं हैं, भला जो आग में डाला जाए वह बेहतर है या वह जो क़यामत के दिन सुरक्षित निकल आए, जो चाहो किये जाओ, जो भी तुम कर रहे हो उस पर वह पूरी नज़र रखता है (40) (वे बहुत ही बुरे लोग हैं) जिन्होंने नसीहत (की किताब) का इनकार किया जबकि वह उनके पास पहुँच गई थी और वह तो एक उच्च कोटि की किताब है (41) उस पर झूठ का गुज़र नहीं सामने से न पीछे से, उसकी ओर से उतारी गई है जो हिकमत रखने वाला प्रशंसा के योग्य है (42) आप से वही कहा जा रहा है जो आप से पहले रसूलों से कहा जा चुका, निश्चित रूप से आपका पालनहार बड़ा माफ़ करने वाला भी है और दुखद दण्ड देने वाला भी (43) और अगर हम उसे गैर अरबी (भाषा का) कुरआन बनाते तो वे ज़रूर यह कहते कि इसकी आयतें खोली क्यों न गईं क्या (कुरआन) गै़र अरबी[2] और (रसूल) अरबी, कह दीजिए कि वह मानने वालों के लिए हिदायत (संमार्ग) और शिफ़ा है और जो जानते नहीं उनके कानों में बोझ है और वह उनको दिखाई नहीं देता यह वे लोग हैं (जैसे) इनको दूर से आवाज़ दी जा रही हो[3] (44) और हमने मूसा को किताब दी थी वे तो उसमें झगड़ पड़े और अगर पहले से आपके पालनहार की ओर से निर्धारित बात न होती तो (उसी समय) उनका फ़ैसला हो जाता और वे निश्चित रूप से उसके बारे में ऐसे संदेह में पड़े हैं जिसने उनको उलझन में डाल रखा है (45) जिसने अच्छा काम किया तो अपने लिए किया और जिसने बुराई की तो वह उसके सिर और आपका पालनहार ऐसा नहीं कि वह बन्दो के साथ तनिक भी अन्याय करे (46)

(1) यानी जो आयतें सुनकर या निशानियाँ देखकर भी टेढ़ी चाल से नहीं रुकते और उनमें विभिन्न प्रकार के संदेह पैदा करते हैं और तोड़–मरोड़ कर पेश करते हैं। (2) मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) का काम ही आपत्ति जताना है कहने लगे कि उन पर अगर गै़र–अरबी भाषा में कुरआन उतरता तो मोअजिज़ा होता, इसका उत्तर दिया जा रहा है कि तुम्हारा काम तो आपत्ति जताना है उस समय तुम यह कहते कि रसूल अरबी और कुरआन गै़र अरबी यह तो आश्चर्यजनक बात है, अतः बात न माननी हो तो हज़ार बहाने हैं। (3) जैसे दूर से कोई आवाज़ आ रही हो समझ में न आती हो वही हाल इनका पवित्र कुरआन के बारे में है, कारण यह है कि सुनना ही नहीं चाहते।

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ مِّنْ
أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ
يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ ﴿٤٧﴾
وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ ۖ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن
مَّحِيصٍ ﴿٤٨﴾ لَّا يَسْأَمُ الْإِنسَانُ مِن دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ
فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ﴿٤٩﴾ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِن بَعْدِ ضَرَّاءَ
مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن
رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِندَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٠﴾ وَإِذَا
أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ
فَذُو دُعَاءٍ عَرِيضٍ ﴿٥١﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ
ثُمَّ كَفَرْتُم بِهِ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾
سَنُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْآفَاقِ وَفِي أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ
أَنَّهُ الْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٥٣﴾ أَلَا
إِنَّهُمْ فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَاءِ رَبِّهِمْ ۗ أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ﴿٥٤﴾

منزل٦

क़यामत की जानकारी उसी की ओर लौटायी जाती है[1] और उसकी जानकारी के बिना न अपने गुच्छों से फल निकलते हैं और न कोई स्त्री गर्भ धारण करती है और न बच्चा पैदा होता है और जब वह उन्हें आवाज़ देगा कि मेरे साझीदार कहाँ हैं? वे कहेंगे हमने तो बता दिया कि हम में कोई इसका इक़रार नहीं करता[2] (47) और पहले वे जिनको पुकारा करते थे वे सब बिछड़ जाएंगे और वे समझ लेंगे कि अब उनको छुटकारा नहीं (48) इंसान भलाई माँगने से नहीं उकताता और अगर उसे बुराई पहुँचती है तो निराश होकर आशा तोड़ लेता है (49) और अगर हम उसको मुसीबत में पड़ने के बाद अपनी कृपा का स्वाद चखाते हैं तो यही कहता है कि हाँ! यह है मेरे योग्य, और मैं नहीं समझता कि क़यामत आने वाली है और अगर मैं अपने पालनहार के पास पलटा भी तो उसके पास मेरे लिए भलाई ही भलाई है, बस हम इनकार करने वालों को उनका किया धरा जतला देंगे और उनको कठोर दण्ड का मज़ा चखा कर रहेंगे (50) और जब हमने इंसान को पुरस्कार दिया तो उसने मुँह मोड़ा और पहलू बदल लिया और जब मुसीबत में पड़ा तो लगा (लम्बी) चौड़ी दुआएं करने[3] (51) पूछिये भला बताओ अगर यह अल्लाह की ओर से है फिर तुमने इसका इनकार किया तो उससे बड़ा पथभ्रष्ट (गुमराह) कौन होगा जो विरोध में दूर जा पड़ा (52) आगे हम उनको दुनिया में और ख़ुद उनके अन्दर अपनी निशानियाँ दिखा देंगे[4] यहाँ तक कि यह बात उनके सामने खुलकर आ जाएगी कि निश्चित रूप से यही सच है क्या आपके पालनहार के लिए यह काफ़ी नहीं कि वह हर चीज़ पर गवाह है (53) सुन लो वे तो अपने पालनहार से मुलाक़ात के बारे में संदेह में पड़े हैं (और) ख़ूब सुन लो हर चीज़ उसकी (शक्ति) के घेरे में है (54)

---

(1) हज़रत जिब्रईल अ़लैहिस्सलाम ने जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसके बारे में पूछा था तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमा दिया था कि "जिससे पूछा जा रहा है वह सवाल करने वाले से अधिक नहीं जानता" अतः इसकी जानकारी सिर्फ़ अल्लाह के पास है (2) जब सच्चाई सामने आ जाएगी तो मुश्रिक लोग भी शिर्क से अलगाव प्रकट करेंगे मगर उस समय यह चीज़ काम न आएगी (3) मानव प्रवृत्ति अजीब है, मुसीबत में पड़ता है तो ख़ुदा याद आता है और नेमतें मिलती हैं तो सब भूल जाता है और इसको अल्लाह की कृपा क़रार न देकर अपनी बुद्धिमता का फल समझता है, जिसके कारण उसमें बड़ाई का एहसास पैदा हो जाता है फिर वह ख़ुदा को भुला कर कुफ़्र व शिर्क करने लगता है (4) आफ़ाक़ उफ़ुक़ का बहुवचन है यानी आकाश के किनारे, इससे आशय वह बड़ी निशानियाँ हैं जो अल्लाह ने धरती व आकाश में रखी हैं, जैसे पहाड़, नदियाँ, बादल, समुद्र, वनस्पति व जड़ पदार्थ आदि, और अन्फ़ुस नफ़्स का बहुवचन है, यानी ख़ुद इंसान, इससे आशय मानव–शरीर है जो ख़ुद अल्लाह की शक्ति की बहुत बड़ी निशानी है।

سُوْرَةُ الشُّوْرٰى مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثٌ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ﴿۱﴾ عٓسٓقٓ ﴿۲﴾ كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ
اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۳﴾ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَهُوَ
الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿۴﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ
يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ
اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۵﴾ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ اللّٰهُ
حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ڮ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿۶﴾ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ
اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ
الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ﴿۷﴾ وَلَوْ
شَاۗءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَاۗءُ
فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۸﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا
مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ۡ وَهُوَ
عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۹﴾ وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ
اِلَى اللّٰهِ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ڰ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿۱۰﴾

منزل۶

सूरह शूरा

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

हा॰ मीम॰ (1) ऐन॰ सीन॰ क़ाफ़॰ (2) अल्लाह जो ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है, हिकमत (युक्ति) रखता है वह इसी प्रकार आपकी ओर और आपसे पहलों की ओर वह्य भेजता रहा है[1] (3) आसमानों और ज़मीन में जो भी है सब उसी का है और वह श्रेष्ठ है, उत्कृष्ट है (4) लगता है कि आसमान ऊपर से फट पड़ेंगे और फ़रिश्ते अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ पाकी बयान करते रहते हैं और ज़मीन वालों के लिए गुनाहों की माफ़ी चाहते रहते हैं, सुन लो अल्लाह ही है जो बहुत माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है (5) और जो उसके अतिरिक्त मददगार बनाते हैं अल्लाह को सब याद हैं और आप पर उनकी कोई ज़िम्मेदारी नहीं (6) और इसी प्रकार हमने आप पर अरबी कुरआन को वह्य के द्वारा भेजा है ताकि आप उम्मुल कुरा और उसके आस–पास के लोगों को सावधान करें[2] और हशर के दिन से डराएं जिसमें कोई संदेह नहीं, एक गिरोह जन्नत में होगा और एक गिरोह दोज़ख़ में (7) और अल्लाह की चाहत ही होती तो सबको एक ही उम्मत (समुदाय) बना देता लेकिन वह तो जिसको चाहता है अपनी कृपा में ले लेता है और अत्याचारियों के लिए न कोई समर्थक है न मददगार[3] (8) क्या उन्होंने उसके अतिरिक्त मददगार बना लिए हैं जबकि अल्लाह ही मददगार है और वही मुर्दों को ज़िंदा करता है और वह हर चीज़ पर पूरा सामर्थ्य रखता है (9) और तुमने जिस चीज़ में मतभेद किया उसका फ़ैसला अल्लाह ही के हवाले है वह अल्लाह ही मेरा पालनहार है, उसी पर मैंने भरोसा किया है और उसी से मैं लौ लगाता हूँ (10)

(1) अल्लाह की महानता और प्रताप (जलाल) से और फ़रिश्तों की अधिकता से लगता है आकाश फट पड़ेंगे, और धरती वालों पर अल्लाह की कृपा है कि फ़रिश्ते आकाश पर उनके लिए गुनाहों की माफ़ी माँगते रहते हैं (2) उम्मुल कुरा पवित्र मक्के को ही कहते हैं इसका अर्थ है बस्तियों का मूल, क्योंकि यही दुनिया का माथा है, यहीं पर अल्लाह का पहला घर है और भौगोलिक रूप से भी पूरी दुनिया में इसको केन्द्र होने का सम्मान प्राप्त है (3) उसकी हिकमत (युक्ति) और मशीयत (इच्छा) की माँग यह ही हुई कि इंसानों को काम करने की आज़ादी दी जाए फिर जिसने इसका सही प्रयोग किया सफ़ल हुआ और जिसने इसको अल्लाह की नाफ़रमानी में प्रयोग किया वह अत्याचारी हुआ, उसका न कोई समर्थक होगा न मददगार।

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّ
مِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ؕ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ
السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿۱۱﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۲﴾ شَرَعَ لَكُمْ
مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا
وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَ
لَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ؕ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ؕ اَللّٰهُ
يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ﴿۱۳﴾ وَمَا
تَفَرَّقُوْٓا اِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ؕ وَلَوْلَا
كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَ
اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۱۴﴾
فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ
وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ
بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ؕ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؕ لَا
حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۵﴾

منزل۶

वह आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, उसने ख़ुद तुम्हारे अन्दर और पशुओं में जोड़े बनाए, उसके द्वारा वह तुम्हारा वंश फैलाता है, उस जैसा कोई नहीं और वह ख़ूब सुनता, ख़ूब देखता है (11) आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ उसी के पास हैं, जिसकी चाहता है रोज़ी बढ़ा देता है और (जिसको चाहता है) नाप–नाप कर देता है बेशक वह हर चीज़ को ख़ूब जानता है (12) उसने तुम्हारे लिए दीन का वही रास्ता तय किया जिसकी ताकीद उसने नूह को की थी और जिसकी वह्य हमने आपको की और जिसकी हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा को की थी कि दीन (धर्म) को स्थापित करो और उसमें अलग–अलग मत हो जाओ[1], आप उनको जिस चीज़ की ओर बुलाते हैं वह मुश्रिकों पर बहुत भारी है, अल्लाह जिसको चाहता है अपने लिए चुन लेता है और वह उसी को अपना रास्ता देता है जो उसकी ओर ध्यान देता है[2] (13) और वे ज्ञान अपने पास पहुँचने के बाद भी अलग–अलग हो गये मात्र आपकी ज़िद में और अगर एक विशेष समय सीमा के लिए आपके पालनहार के द्वारा निर्धारित की गयी बात न होती तो उनका फ़ैसला ही कर दिया जाता और निश्चित रूप से उनके बाद भी जिनको किताब हाथ लगी वे भी इसके बारे में ऐसे संदेह में पड़े हुए हैं जो उनको चैन नहीं लेने देता है[3] (14) तो आप इसी की ओर बुलाते रहिए और आपको जैसे कहा गया उसी पर जमे रहिए और उनकी इच्छाओं पर मत चलिए और कह दीजिए कि अल्लाह ने जो किताब उतारी है मैं उस पर ईमान लाया और मुझे आदेश है कि मैं तुम्हारे बीच न्याय करूँ, अल्लाह हमारा भी पालनहार है और तुम्हारा भी, हमारे लिए हमारे काम हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे काम, हम में और तुम में कोई बहस नहीं, अल्लाह हम सबको इकटठा करेगा और उसी की ओर लौटकर जाना है (15)

(1) यह पाँच महान पैग़म्बरों का उल्लेख है, बाक़ी सारे पैग़म्बरों का रास्ता भी यही था। (2) जो ख़ुद ध्यान देता है अल्लाह तआला उसको संमार्ग (हिदायत) के लिए स्वीकार कर लेते हैं और जो लोग ज्ञान आने के बाद भी सच्ची बात पहुँचने के बाद भी मात्र हट और उदण्डता में अपनी बात पर अड़े रहते हैं वे अल्लाह की अप्रसन्नता मोल लेते हैं, और चूँकि अल्लाह का फ़ैसला तुरन्त विनाश का नहीं होता वह ढील देता है इसलिए वह बाक़ी रहते हैं वरना तो वे इस लायक़ थे कि तुरन्त ही उनको ख़त्म कर दिया जाता। (3) पहले जिनको किताबें दी गईं उन्होंने भी इनकार किया और बाद में जिनको किताब मिली वे भी शक–संदेह में पड़े हुए हैं और ईमान नहीं लाते, ऐसा लगता है इससे आशय मक्के के मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) हैं, इसीलिए आगे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जमे रहने का आदेश हो रहा है और संतुष्ट भी किया जा रहा है कि आप अपना काम किये जाइये और उनसे कह दीजिए कि जो काम हमारे ज़िम्मे है यानी तब्लीग़ (इस्लाम प्रचार) का, वह हमने कर दिया, अब तुम जानो तुम्हारा काम, आगे सबको अल्लाह के सामने हाज़िर होना है, वहीं सब पता चल जाएगा।

وَالَّذِيْنَ يُحَاجُّوْنَ فِى اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ
دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿١٦﴾
اَللّٰهُ الَّذِىْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ
لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ﴿١٧﴾ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِهَا ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ
اَلَآ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِى السَّاعَةِ لَفِىْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿١٨﴾
اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِىُّ الْعَزِيْزُ ﴿١٩﴾
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِىْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ
كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ
مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿٢٠﴾ اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ
مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ؕ
وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢١﴾ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ
مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ؕ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِىْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا
يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٢٢﴾

منزل٦

और जो अल्लाह के बारे में वाद–विवाद करते हैं जबकि उसको स्वीकार किया जा चुका[1], उनका प्रमाण अल्लाह के यहाँ कमज़ोर है और उन पर (अल्लाह का) प्रकोप है और उनके लिए सख़्त अज़ाब है (16) अल्लाह वह है जिसने ठीक–ठीक यह पुस्तक और तराजू उतारी है[2] और आपको क्या ख़बर शायद क़यामत क़रीब ही हो (17) जो उसको नहीं मानते वही उसमें जल्दी मचाते हैं और जो मानते हैं वे उससे डरते रहते हैं और जानते हैं कि वह सच है, सुन लो जो भी क़यामत के बारे में झगड़ा करते हैं वे गुमराही में दूर जा पड़े हैं (18) अल्लाह अपने बन्दों पर बड़ा मेहरबान है, जिसको चाहता है रोज़ी देता है और वह शक्तिमान है ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है (19) जो आख़िरत की खेती चाहता है हम उसकी खेती उसके लिए बढ़ा देते हैं और जो दुनिया की खेती चाहता है हम उसमें से कुछ उसको दे देते हैं और आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं[3] (20) क्या उनके लिए जो साझीदार हैं उन्होंने उनके लिए दीन (धर्म) का रास्ता निर्धारित किया है, जिसकी अल्लाह ने उनको अनुमति नहीं दी और अगर तय बात न होती तो उनका फ़ैसला भी कर दिया गया होता और निश्चित रूप से जो अत्याचारी हैं उनके लिए दुखद अज़ाब है (21) और आप अत्याचारियों को देखेंगे कि अपने किये पर काँप रहे होंगे और वह तो उन पर पड़ कर रहेगा[4] और जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये वे जन्नत की क्यारियों में होंगे, अपने पालनहार के पास वे जो चाहेंगे पाएंगे यही बड़ी फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) है (22)

(1) इंसानों में ईमान वालों की एक बड़ी संख्या है जो मानती है और सारी सृष्टि उसकी इबादत (उपासना) में लगी है (2) तराजू का मतलब न्याय है, इसलिए कि तराजू ही इसका साधन है (3) जो व्यक्ति मात्र दुनिया की अच्छाई चाहता है तो अल्लाह तआला उसको दुनिया दे देता है मगर हर माँगी हुई चीज़ नहीं मिलती (4) उस समय का काँपना फ़ायदा नहीं पहुँचाएगा फिर अल्लाह का फ़ैसला लागू होकर रहेगा और दुनिया में जो करके गया है उसकी सज़ा उसको भुगतनी ही पड़ेगी।

ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ
قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ؕ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ
حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿۲۳﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ
افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ
اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۲۴﴾
وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ
وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿۲۶﴾ وَلَوْ
بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِي الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ
مَّا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿۲۷﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ
مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۲۸﴾ وَ
مِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ
وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ﴿۲۹﴾ وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا
كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ﴿۳۰﴾ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ
فِي الْاَرْضِ ۚ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۳۱﴾

منزل٦

यही वह चीज़ है जिसकी ख़ुशख़बरी अल्लाह अपने बन्दों को देता है जिन्होंने माना और भले काम किये, कह दीजिए मैं इस पर तुम से बदला नहीं माँगता, मगर सम्बन्धों का तो लिहाज़ हो[1], और जो भी अच्छा कमाएगा तो हम उसके लिए उसमें अच्छाई को और बढ़ा देंगे[2] निश्चित रूप से अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ी क़द्र करने वाला है (23) क्या उनका कहना यह है कि वे अल्लाह पर झूठ गढ़ लाए तो अगर अल्लाह चाहता ही तो आपके दिल पर मोहर लगा देता और अल्लाह अपनी बातों से झूठ को मिटाता है और सच को साबित करता है[3] निश्चित रूप से वह सीनों के भीतर की चीज़ों से भी ख़ूब अवगत है (24) और वही है जो अपने बन्दों की तौबा स्वीकार करता है और बुराइयों को माफ़ करता है और तुम्हारे कामों को जानता है (25) और उन लोगों की दुआ सुनता है जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये और अपनी कृपा से उनको बढ़ा कर देता है, और रहे इनकार करने वाले तो उनके लिए कठोर दण्ड है (26) और अगर अल्लाह अपने बन्दों के लिए रोज़ी ख़ूब खोल देता तो वे देश में उदण्डता मचाते[4] लेकिन अल्लाह नाप कर जो चाहता है उतारता है निश्चित रूप से वह अपने बंदों की ख़ूब ख़बर रखता है (27) और वही लोगों के निराश होने के बाद बारिश बरसाता है और अपनी रहमत आम कर देता है और वही काम बनाने वाला, प्रशंसनीय, गुणवान है (28) और आसमानों और धरती का पैदा करना और उनमें चलने-फिरने वालों को फैलाना उसकी निशानियों में से है और वह जब चाहे उनको इकटठा कर सकता है (29) और तुम पर जो मुसीबत आती है वह तुम्हारे हाथों की कमाई है और कितनी चीज़ें वह माफ़ कर देता है[5] (30) और तुम ज़मीन में (भी अल्लाह को) बेबस नहीं कर सकते और अल्लाह के अतिरिक्त न कोई तुम्हारा समर्थक है और न मददगार (31)

---

(1) कुरैश-ए-मक्का की हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जो रिश्तेदारियां थीं उनका हवाला दिया जा रहा है कि उनका तो तुम्हें कुछ लिहाज़ होना चाहिए (2) हर अच्छे काम का सवाब (पुण्य) कम से कम दस गुना तो मिलता ही है इस से ज़्यादा की सीमा अल्लाह ही जानता है उसके ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं, शर्त यह है कि काम ठीक हो और सही नियत से हो फिर काम में एहसान (निष्ठा) की गुणवत्ता जितनी बढ़ती जाती है बदले में बढ़ोत्तरी होती जाती है। (3) मआज़ अल्लाह (अल्लाह की पनाह) अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गढ़ कर कुरआन मजीद बना रहे होते तो अल्लाह आपके दिल पर मोहर लगा देता, इसलिए कि अल्लाह का तरीक़ा यह है कि अगर कोई पैग़म्बर होने का झूठा दावा करे तो वह उसकी बात चलने नहीं देता और झूठे को मिटा देता है और सच को अपने कलिमों (बातों) से साबित करता है। (4) फिर कोई किसी की न सुनता और पूरी व्यवस्था अस्त-व्यस्त होकर रह जाती। (5) पवित्र क़ुरआन ही में दूसरी जगह आया है कि अगर अल्लाह लोगों की उनकी करतूतों पर पकड़ करने लगता तो धरती पर कोई चलने-फिरने वाला शेष न छोड़ता।

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿۳۲﴾ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ
فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ
شَكُوْرٍ ﴿۳۳﴾ اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ ﴿۳۴﴾ وَّيَعْلَمَ
الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِنَا ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿۳۵﴾ فَمَاۤ اُوْتِيْتُمْ
مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى
لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ
كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ﴿۳۷﴾
وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۪ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى
بَيْنَهُمْ ۪ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۳۸﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَاۤ اَصَابَهُمُ
الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿۳۹﴾ وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ
فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۰﴾
وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ
سَبِيْلٍ ﴿۴۱﴾ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَ
يَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ﴿۴۲﴾ وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۴۳﴾

ع

منزل۶

और पहाड़ों की तरह समुद्र में चलने वाले जहाज़ उसकी निशानियों में से हैं (32) अगर वह चाहे तो हवा रोक दे तो वे उसके पीठ पर खड़े के खड़े रह जाएं, निश्चित रूप से इसमें हर सब्र करने वाले और शुक्र पर क़ायम रहने वालों के लिए निशानियाँ हैं (33) या उनको उनकी करतूतों के कारण तबाह कर दे और वह बहुत से लोगों को माफ़ कर दे (34) और जो हमारी निशानियों में झगड़ा करते हैं वे जान लें कि उनके लिए बचाव का कोई उपाय नहीं (35) बस तुम्हें जो मिला है वह दुनिया के जीवन का थोड़ा सामान है और जो अल्लाह के पास है वह बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और वे अपने पालनहार पर ही भरोसा करते हैं (36) और जो बड़े गुनाहों से और बेहयाई से बचते हैं और जब गुस्सा आता है तो माफ़ कर देते हैं (37) और जो अपने पालनहार की बात मानते हैं और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और उनके मामले आपस के परामर्श से (तय होते) हैं[1] और जो रोज़ी हमने उनको दी है उसमें से वे ख़र्च करते हैं (38) और जब उन पर अत्याचार होता है तो वे मुक़ाबला करते हैं (39) और बुराई का बदला तो उतनी ही बुराई से है फिर जो माफ़ कर दे और सुधार कर ले तो उसका बदला अल्लाह के ज़िम्मे है बेशक वह अत्याचारियों को पसंद नहीं करता (40) और जो अत्याचार के बाद बदला ले तो ऐसे लोगों पर कुछ आरोप नहीं[2] (41) आरोप तो उन लोगों पर है जो लोगों पर अत्याचार करते हैं और देश में नाहक़ उदण्डता मचाते हैं, ऐसे लोगों के लिए दुखद दण्ड है (42) और जिसने सब्र किया और माफ़ कर दिया तो निश्चित रूप से यह बड़ी हिम्मत के काम हैं (43)

---

(1) इसका यह मतलब नहीं है कि हर एक चीज़ के बारे में हर एक से परामर्श किया जाए बल्कि जैसी समस्या हो उसके अनुसार उसके जानने वालों और रूचि रखने वालों से परामर्श लिया जाए। (2) अगर किसी को किसी ने तकलीफ़ पहुँचाई है तो पीड़ित को अनुमति है कि जितनी तकलीफ़ उसको पहुँची है उसके बराबर बदला ले ले लेकिन आगे इससे बड़ी बात बयान की जा रही है कि आदमी बदला लेने के बजाय सब्र करे और माफ़ कर दे, इसको अज़ीमत (हिम्मत) के कामों में गिना गया है, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी इस प्रकार के उदाहरणों से भरी पड़ी है, मक्का विजय के अवसर पर आम माफ़ी का एलान इसका सबसे खुला हुआ उदाहरण है।

और अल्लाह जिसको बेराह कर दे तो उसके लिए उसके बाद कोई समर्थक नहीं और आप अत्याचारियों को देखेंगे कि जब अज़ाब (दण्ड) वे देख लेंगे तो वे कहेंगे कि क्या है कोई भाग जाने का रास्ता (44) और आप उन्हें देखेंगे कि आग के सामने उनको हाज़िर किया जा रहा होगा, अपमानित होकर काँप रहे होंगे, चोरी–छिपे देखते होंगे और जो ईमान लाए वे कहेंगे कि निश्चित रूप से घाटे में तो वही हैं जिन्होंने क़यामत के दिन अपना और अपने घर वालों का नुक़सान किया, सुन लो, अत्याचारी लोग हमेशा हमेश के अज़ाब (यातना) में होंगे (45) और अल्लाह के अतिरिक्त उनका कोई समर्थक न होगा जो उनकी मदद करे और जिसको अल्लाह रास्ते से हटा दे उसके लिए कोई रास्ता नहीं (46) उस दिन के आ पहुँचने से पहले अपने पालनहार की बात मान लो जिसे अल्लाह की ओर से टाला नहीं जाएगा, उस दिन न तुम्हारे लिए कोई शरण की जगह होगी और न अंजान रहने की[1] (47) फिर अगर वे मुँह मोड़ें तो हमने आपको उन पर निगरानी करने वाला बनाकर नहीं भेजा, आप का काम तो केवल पहुँचा देना है, और हम जब मनुष्य को किसी कृपा का स्वाद देते हैं तो उसपर इतरा जाता है और अगर ऐसों को अपने हाथों भेजी (बुराइयों) की मुसीबत पहुँचती है तो बस वही मनुष्य बड़ा ही नाशुक्रा हो जाता है (48) आकाशों और धरती की बादशाही अल्लाह की है, वह जो चाहता है पैदा करता है, जिसको चाहता है लड़कियाँ देता है और जिसको चाहता है लड़के देता है (49) या लड़के–लड़कियाँ (दोनों) मिलाकर दे देता है और जिसको चाहता है बाँझ कर देता है निस्संदेह वह ख़ूब जानता पूरी शक्ति वाला है (50) और किसी मनुष्य के बस में नहीं कि अल्लाह से (आमने–सामने) बात करे सिवाए इसके कि वह वह्य के द्वारा हो या पर्दे के पीछे से हो या वह अपना संदेश वाहक भेजता है जो उसके आदेश उसकी चाहत के अनुसार पहुँचा देता है बेशक वह बड़ा है हिकमत (युक्ति) वाला है[2] (51)

(1) नकीर का अर्थ है अंजान बन जाना है, मतलब यह है कि छुपकर अंजान बन जाना यदि कोई छिपने की जगह न होगी। (2) दुनिया में अल्लाह तआला किसी मनुष्य के आमने–सामने होकर बात नहीं करता या तो वह्य भेजता है यानी दिल में बात डालता है या पर्दे के पीछे से सम्बोधन होता है जैसे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ हुआ था या किसी फ़रिश्ते को भेजकर संदेश पैग़म्बर तक पहुँचा दिया जाता है।

وَكَذٰلِكَ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا ۚ مَا كُنتَ تَدْرِى مَا الْكِتٰبُ
وَلَا الْإِيمٰنُ وَلٰكِن جَعَلْنٰهُ نُورًا نَّهْدِى بِهِۦ مَن نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ۚ
وَإِنَّكَ لَتَهْدِىٓ إِلٰى صِرٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٥٢﴾ صِرٰطِ اللَّهِ الَّذِى لَهُۥ مَا
فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْأَرْضِ ۗ أَلَآ إِلَى اللَّهِ تَصِيرُ الْأُمُورُ ﴿٥٣﴾

سُورَةُ الزُّخْرُفِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

حمٓ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِينِ ﴿٢﴾ إِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ﴿٣﴾ وَإِنَّهُۥ فِىٓ أُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِىٌّ حَكِيمٌ ﴿٤﴾ أَفَنَضْرِبُ
عَنكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا أَن كُنتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ﴿٥﴾ وَكَمْ أَرْسَلْنَا
مِن نَّبِىٍّ فِى الْأَوَّلِينَ ﴿٦﴾ وَمَا يَأْتِيهِم مِّن نَّبِىٍّ إِلَّا كَانُوا۟ بِهِۦ
يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٧﴾ فَأَهْلَكْنَآ أَشَدَّ مِنْهُم بَطْشًا وَمَضٰى مَثَلُ
الْأَوَّلِينَ ﴿٨﴾ وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ
خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٩﴾ الَّذِى جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَ
جَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠﴾ وَالَّذِى نَزَّلَ مِنَ
السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَأَنشَرْنَا بِهِۦ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿١١﴾

منزل٦

और इसी प्रकार हमने आपकी ओर अपने आदेश से वह्य भेजी आपको पता न था कि किताब[1] क्या है और न ईमान (का पता था) हाँ हमने उसको एक नूर (प्रकाश) बनाया है और अपने बंदों में हम जिसको चाहते हैं उसके द्वारा हिदायत (संमार्ग) देते हैं और निश्चित रूप से आप सीधे रास्ते पर ही ले चलते हैं (52) अल्लाह का रास्ता जिसके हाथ में वह सब है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सावधान! सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटते हैं (53)

सूरह ज़ुख़रुफ़

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

हा॰ मीम॰ (1) खुली किताब की क़सम (2) हमने इसको अरबी भाषा का कुरआन बनाया है ताकि तुम समझ सको (3) और निस्संदेह वह हमारे पास असल किताब में बहुत बुलन्द, सर्वथा हिकमत (युक्ति) वाली (किताब) है[2] (4) भला क्या हम उपदेश को तुमसे (इसलिए) फेर देंगे कि तुम हद से बढ़ जाने वाले लोग हो[3] (5) और पहलों में हम कितने पैग़म्बर भेज चुके (6) और उनके पास कोई पैग़म्बर आया तो वे लगे उसका मज़ाक़ उड़ाने (7) तो इनसे अधिक बलवान लोगों को हमने हलाक कर दिया और पहलों के उदाहरण गुज़र चुके(8) और अगर आप उनसे पूछें कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया तो वे यही कहेंगे कि उनको ज़बरदस्त ख़ूब जानने वाले ने पैदा किया (9) जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि तुम रास्ता पा सको (10) और जिसने निर्धारित मात्रा में पानी बरसाया फिर हमने उससे मुर्दा क्षेत्र को नया जीवन प्रदान किया, इसी प्रकार तुम निकाले जाओगे (11)

---

(1) किताब से आशय पवित्र कुरआन है, आगे उसी के बारे में कहा जा रहा है कि हमने उसको नूर बनाया। (2) उम्मुल किताब से आशय "लौह–ए–महफूज़" है, जिसमें पवित्र कुरआन हमेशा से बहुत ही बुलन्द हिकमत (युक्ति) से भरी हुई पुस्तक के रूप में मौजूद है, पहले चरण में इसको दुनिया वाले आसमान पर उतारा गया फिर समय–समय पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरता रहा। (3) अल्लाह तआला ने हर क़ौम के लिए नसीहत (उपदेश) का प्रबन्ध किया, यहाँ मक्के के मुश्रिकों को सम्बोधित करके कहा जा रहा है कि तुम पसन्द करो या न करो हम तुम्हें हिदायत का रास्ता (संमार्ग) बताने के लिए नसीहत करना नहीं छोड़ सकते।

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ
مَا تَرْكَبُونَ ۝١٢ لِتَسْتَوُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا
اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا وَمَا كُنَّا
لَهُ مُقْرِنِينَ ۝١٣ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ۝١٤ وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ
عِبَادِهِ جُزْءًا ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُبِينٌ ۝١٥ أَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ
بَنَاتٍ وَأَصْفَاكُمْ بِالْبَنِينَ ۝١٦ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ
لِلرَّحْمَٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ۝١٧ أَوَمَنْ يُنَشَّأُ
فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ۝١٨ وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ
الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَٰنِ إِنَاثًا ۚ أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ ۚ سَتُكْتَبُ
شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ۝١٩ وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَٰنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ ۗ
مَا لَهُمْ بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝٢٠ أَمْ آتَيْنَاهُمْ
كِتَابًا مِنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ۝٢١ بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا
آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِمْ مُهْتَدُونَ ۝٢٢ وَكَذَٰلِكَ مَا
أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا
إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِمْ مُقْتَدُونَ ۝٢٣

منزل٦

और जिसने हर प्रकार के जोड़े पैदा किये और तुम्हारे लिए ऐसी नावें और जानवर बनाए जिन पर तुम सवारी करते हो (12) ताकि तुम उन पर इत्मिनान से बैठ सको फिर जब अच्छी तरह बैठ जाओ तो अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो और कहो वह पवित्र है जिसने इसको हमारे काम पर लगा दिया और हम ऐसे न थे कि इसको नियंत्रित कर पाते (13) और निश्चित रूप से हम अपने पालनहार ही की ओर पलट कर जाने वाले हैं[1] (14) और (फिर) उसके लिए उन्होंने उसके बन्दों में से उसी के अंश ठहराए निश्चित रूप से मनुष्य खुला नाशुक्रा (कृतघ्न) है (15) भला क्या उसने अपनी सृष्टि में से बेटियाँ ख़ुद पसन्द कर लीं और बेटों के लिए तुम्हें चुना (16) हालाँकि जब उनमें किसी को इसका शुभ समाचार सुनाया जाता है जिसका उदाहरण उस रहमान के लिए दिया है तो उसका चेहरा काला पड़ जाता है और वह घुट कर रह जाता है (17) भला वे जो आभूषणों में पलें बढ़ें और वे तर्क–वितर्क में बात भी साफ़ न कह सकें (18) और उन्होंने फ़रिश्तों को जो रहमान के बंदे हैं औरतें क़रार दिया, क्या वे उनकी उत्पत्ति के समय मौजूद थे, उनकी गवाही ज़रूर लिखी जाएगी और उनसे पूछा भी जाएगा[2] (19) और वे बोले कि अगर रहमान चाह लेता तो हम इन (झूठे उपास्यों) की उपासना न करते, उनको इसका कुछ पता नहीं, वे केवल अटकलें लगा रहे हैं (20) क्या हमने इससे पहले उनको कोई किताब दी थी जिससे वे प्रमाण दे रहे हैं (21) बल्कि उनका कहना तो यह है कि हमने अपने बाप–दादा को एक तरीक़े पर पाया है और हम भी उन्हीं के पीछे ठीक–ठीक चल रहे हैं (22) और इसी प्रकार आप से पहले भी हमने जिस गाँव में कोई डराने वाला भेजा तो वहाँ के ख़ुशहाल लोग बोले हमने अपने बाप–दादा को एक तरीक़े पर पाया है और हम तो उन्हीं के पदचिन्ह पर चलने वाले हैं (23)

(1) यह सवारी पर सवार होने की दुआ है, इसमें एक ओर अल्लाह का शुक्र है और उसकी कृपा को मानना है कि उसने यह सवारियाँ हमारे क़ाबू में दीं और दूसरी ओर यह ध्यान दिलाया गया है कि यात्रा शुरू करते समय आदमी आख़िरत की यात्रा को याद कर ले। (2) अरब के मुश्रिक फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ कहते थे, यहाँ अगली चार आयतों तक विभिन्न प्रकार से उनके इस अक़ीदे (विश्वास) का खण्डन किया गया है, सबसे पहले यह बताया गया कि संतान माता–पिता का अंश होती है और अल्लाह का कोई अंश नहीं हो सकता तो यह फ़रिश्ते कैसे ख़ुदा की बेटियाँ हो सकते हैं, दूसरे यह कि वे बेटियों को लज्जा का कारण समझते हैं तो इस लज्जा को वे ख़ुदा के लिए कैसे स्वीकार करते हैं, तीसरे यह कि इस अक़ीदे (विश्वास) के अनुसार फ़रिश्तों को स्त्रीलिंग होना चाहिए जबकि वे स्त्री नहीं हैं, और चौथे यह कि स्त्रियों का ध्यान श्रृंगार की ओर अधिक होता है दूसरी योग्यताएं उनमें कम होती हैं, अपनी बात भी वे आमतौर पर भले प्रकार से प्रस्तुत नहीं कर सकतीं, तो मान लीजिए अगर अल्लाह को संतान चुनना था तो बेटों के बजाय अपने लिए बेटियों को क्यों चुनता?

قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ؕ قَالُوْۤا اِنَّا
بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۲۴﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۲۵﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖۤ اِنَّنِيْ
بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿۲۶﴾ اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ﴿۲۷﴾ وَ
جَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۲۸﴾ بَلْ مَتَّعْتُ
هٰۤؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿۲۹﴾ وَلَمَّا
جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا
نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿۳۱﴾ اَهُمْ
يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ
بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَلَوْلَاۤ اَنْ
يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ
لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَلِبُيُوْتِهِمْ
اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿۳۴﴾ وَزُخْرُفًا ؕ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا
مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۵﴾

منزل۶

(नबी ने) कहा चाहे मैं उससे सही रास्ता तुम्हारे पास लेकर आया हूँ जिस पर तुमने अपने बाप–दादा को पाया है, वे बोले तुम तो जो लेकर आए हो हम उसको मानने वाले नहीं (24) बस हमने उनसे बदला लिया तो देख लीजिए कि झुठलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ (25) और जब इब्राहीम ने अपने पिता से और अपनी क़ौम से कहा कि तुम जिसकी भी पूजा करते हो मैं उससे अलग हूँ[1] (26) उसके अतिरिक्त जिसने मुझे अस्तित्व (वुजूद) प्रदान किया बस वही मुझे राह भी देगा (27) और यह बात उन्होंने अपने बाद में आने वालों के लिए भी बाक़ी छोड़ी कि शायद वे पलटें (28) बात यह है कि हमने उनको और उनके बाप–दादा को मज़े लेने दिये यहाँ तक कि उनके पास सच्ची बात और साफ़–साफ़ बात बताने वाले पैग़म्बर पहुँच गये[2] (29) और जब सच्ची बात उनके पास पहुँच गई तो उन्होंने कह दिया कि यह जादू है और हम तो इसको मानने वाले नहीं (30) और वे बोले कि यह कुरआन दोनों बस्तियों[3] में से किसी बड़े आदमी पर क्यों न उतरा (31) क्या वे आपके पालनहार की दया को बाँटेंगे,[4] हमने दुनिया के जीवन में भी उनके रोज़गार उनमें बाँटे हैं और एक को दूसरे पर दर्जों (श्रेणियों) की बुलन्दी दी है ताकि वे एक–दूसरे से काम ले सकें और आपके पालनहार की दया कहीं उससे बेहतर है जो कुछ यह समेट रहे हैं (32) और अगर यह (ख़्याल) न होता कि सारे लोग एक ही मिल्लत (यानी कुफ़्र) पर आ जाएंगे तो हम ज़रूर रहमान का इनकार करने वालों के लिए उनके घरों की छतों को चाँदी का कर देते और सीढ़ियाँ भी जिन पर वे चढ़ा करते हैं (33) और उनके घरों के दरवाज़े और मसहरियाँ जिन पर वे टेक लगाते हैं (34) और सोना का कर देते जबकि यह सब कुछ नहीं मात्र दुनिया के जीवन के साधन हैं और आपके पालनहार के निकट आख़िरत परहेज़गारों के लिए है[5] (35)

---

(1) इसमें विशेष रूप से मक्का के मुश्रिकों से यह बात कही जा रही है कि तुम्हें तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का तरीक़ा अपनाना चाहिए था, जिन्होंने यह नहीं देखा कि हमारे बाप–दादा का तरीक़ा क्या है बल्कि उन्होंने सच को तलाश किया और अल्लाह के आदेश से पा लिया (2) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के बाद लोग सच्चे धर्म (दीने हक़) पर क़ायम रहे फिर धीरे–धीरे रास्ते से हटना शुरु हुए, अल्लाह की दी हुई नेमतों में लोग मस्त हो गये और उसी में लगे रहे यहाँ तक कि अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पधारे (3) दो बड़ी बस्तियों से आशय मक्का और तायफ़ है चूँकि उस क्षेत्र में यह दोनों बड़े शहर थे इसलिए मुश्रिकों ने कहा कि इन दो बड़ी बस्तियों में से किसी धनी व्यक्ति पर पवित्र कुरआन क्यों न उतरा (4) रहमत (दया) से आशय पैग़म्बरी है यानी यह अपने आपको इसका अधिकारी समझते थे कि पैग़म्बरी बाँटें जबकि हाल यह है कि दुनिया जो इससे बहुत कम दर्जे की चीज़ है उसको भी हमने इन पर नहीं छोड़ा बल्कि हमने उन में रोज़गार बाँटे और ऐसी व्यवस्था रखी कि एक दूसरे की आवश्यकता पड़े और एक–दूसरे से काम ले, बुद्धि व समझ और योग्यता की इस भिन्नता ही से दुनिया की व्यवस्था चल रही है (5) इससे दुनिया की हक़ीक़त सामने आती है, सब कुछ अल्लाह की खुशी है, दुनिया की दौलत और सरकार यह सब रह जाने वाले सामान हैं।

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿٣٦﴾
وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٧﴾
حَتّٰۤى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ
فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ﴿٣٨﴾ وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ
مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ وَمَنْ كَانَ
فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٠﴾ فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ﴿٤١﴾
اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿٤٢﴾ فَاسْتَمْسِكْ
بِالَّذِيْۤ اُوْحِيَ اِلَيْكَ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ
لَّكَ وَلِقَوْمِكَ وَسَوْفَ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا
مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَاۤ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً
يُّعْبَدُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ
فَقَالَ اِنِّيْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَاۤ اِذَا هُمْ
مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِيَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا وَ
اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَقَالُوْا يٰۤاَيُّهَ
السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

منزل٦

और जो कोई रहमान की याद से अंधा बन जाता है तो हम उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं फिर वह उसका मित्र हो जाता है[1] (36) और वे (शैतान) उनको सही रास्ते से रोकते ही रहते हैं और वे समझते हैं कि वही सही रास्ते पर हैं (37) यहाँ तक कि जब वह हमारे पास पहुँचता है तो (शैतान से) कहता है काश कि मेरे तेरे बीच पूरब व पश्चिम की दूरी होती बस (तू) कितना बुरा साथी था (38) और आज तुम्हें इससे कुछ फ़ायदा नहीं कि तुम सब अज़ाब (दण्ड) में शामिल हो जबकि तुम ज़ालिम ठहरे[2] (39) भला क्या आप गूँगों को सुना सकते हैं या अंधों को रास्ता दिखा सकते हैं या उनको जो साफ़ गुमराही में पड़े हों (40) फिर अगर हम आपको (दुनिया से) ले गए तो हम इनसे बदला लेकर रहेंगे (41) या आपको वह दिखा ही देंगे जो हमने उनको वईदें (धमकियाँ) दे रखी हैं तो उन पर हमें पूरा सामर्थ्य प्राप्त है[3] (42) बस आप तो उसी पर मज़बूत रहिए जो आप पर वह्य आई है निश्चित रूप से आप ही सीधे रास्ते पर हैं (43) और यह आपके लिए और आपकी क़ौम के लिए नसीहत (उपदेश) है और आगे तुमसे पूछा जाएगा (44) और जो रसूल हमने आपसे पहले भेजे उन से पूछ[4] लीजिए कि क्या हम ने रहमान के अतिरिक्त और उपास्य बनाए थे कि उनकी पूजा की जाए (45) और निस्संदेह हमने मूसा को अपनी खुली निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास भेजा तो उन्होंने कहा मैं सारे संसारों के पालनहार का भेजा हुआ हूँ (46) तो जब वे उनके पास खुली निशानियों के साथ पहुँच गये तो वे लगे उनका मज़ाक़ उड़ाने (47) और हम उनको जो भी निशानी दिखाते वह पिछली निशानी से बड़ी होती और हमने उनको मुसीबतों में जकड़ा कि शायद वे पलटें (48) और वे कहते ऐ जादूगर! जैसे तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें बताया है वैसे ही तुम हमारे लिए दुआ करो हम निश्चित रूप से राह पर आ जाएंगे[5] (49)

(1) निश्चिंतता (बेफ़िक्री) और दीन (धर्म) से दूरी के कारण आदमी दूर होता ही चला जाता है ऐसे व्यक्ति पर शैतान नियुक्त कर दिये जाते हैं जो उनको हमेशा सब्ज़ बाग़ दिखाते रहते हैं (धोखे में रखते हैं) फिर गुमराही (पथ भ्रष्टता) गुमराही नज़र नहीं आती, आदमी अपने तरीक़े ही पर मगन रहता है (2) ज़ुल्म का आशय मूलरूप से शिर्क होता है इसका दण्ड इतना कठोर है कि यद्यपि मानव प्रकृति यह है कि अगर कई लोग मुसीबत में शामिल हो जाएं तो वह मुसीबत हल्की हो जाती है किन्तु वहाँ की तकलीफ़ दूसरे के इसमें शामिल होने के बावजूद कम न लगेगी (3) यानी उनको हर हाल में अपने किए की सज़ा मिलेगी, आपके जीवन ही में हम कुछ दिखा दें जैसा कि बद्र में हुआ या आपके निधन के बाद उनको सज़ा मिले और सब से बड़ा अज़ाब (दण्ड) आख़िरत का है (4) यानी उन पर जो आकाशीय ग्रंथ उतरते थे उनमें देख लीजिए (5) इससे आशय वे दण्ड हैं जो तूफ़ान, टिड्डी दल, जूएं, मेंढक और ख़ून आदि के रूप में उनको दिये गये, हर दण्ड पर वे मूसा अ़लैहिस्सलाम से दुआ करवाते और कहते कि अगर यह सज़ा टल गई तो हम ईमान ले आएंगे मगर फिर मुकर जाते, सूरः अअ़राफ़ (132—135) में विवरण गुज़र चुका है।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ﴿٥٠﴾ وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ
فِي قَوْمِهِ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَٰذِهِ الْأَنْهَارُ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِي ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٥١﴾ أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ
مَهِينٌ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ﴿٥٢﴾ فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِنْ ذَهَبٍ
أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَائِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٣﴾ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ ۚ
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٥٤﴾ فَلَمَّا آسَفُونَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ
أَجْمَعِينَ ﴿٥٥﴾ فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِلْآخِرِينَ ﴿٥٦﴾ وَلَمَّا ضُرِبَ
ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ﴿٥٧﴾ وَقَالُوا أَآلِهَتُنَا خَيْرٌ
أَمْ هُوَ ۚ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ﴿٥٨﴾ إِنْ هُوَ
إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٥٩﴾ وَلَوْ
نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَلَائِكَةً فِي الْأَرْضِ يَخْلُفُونَ ﴿٦٠﴾ وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ
لِلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُونِ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾
وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطَانُ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿٦٢﴾ وَ
لَمَّا جَاءَ عِيسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ
لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿٦٣﴾

ع

منزل٦

फिर जब हम उनसे मुसीबतें दूर कर देते तो वे तुरन्त ही वादा तोड़ देते (50) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम में भाषण दिया उसने कहा– कि ऐ मेरी क़ौम! क्या मिस्र की सत्ता मेरे पास नहीं है और यह नदियाँ मेरे नीचे जारी हैं भला तुम देखते नहीं? (51) क्या मैं बेहतर (नज़र नहीं आता) हूँ उससे जो कमतर है और अपनी बात भी साफ़ नहीं कह पाता (52) तो क्यों न सोने के कंगन उसको पहना दिये गये या क्यों न फ़रिश्ते परत बनाकर उसके साथ उतरे[1] (53) बस उसने अपनी क़ौम की बुद्धि मार दी तो उन्होंने उसकी बात मान ली निश्चित रूप से वह नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) क़ौम थी (54) फिर जब उन्होंने हमें अप्रसन्न किया तो हमने भी उनसे बदला लिया, बस उन सबको डुबो दिया (55) फिर हमने उनको गया गुज़रा और दूसरों के लिए कहावत बना दिया (56) और जब ईसा पुत्र मरियम का उदाहरण दिया गया तो आपकी क़ौम उससे चीख़ने–चिल्लाने लगी (57) और बोली हमारे उपास्य बेहतर हैं या यह, उन्होंने आपके सामने यह उदाहरण मात्र कठ हुज्जती के लिए दिया है बल्कि वे हैं ही झगड़ालू लोग[2] (58) वह तो केवल एक बंदा था हमने उस पर इनआम किया था और उसको बनी इस्राईल के लिए आदर्श बनाया था (59) और अगर हम चाहें तो तुममें फ़रिश्ते बना दें, धरती में वे तुम्हारी जगह लें (60) और बेशक वह क़यामत की एक पहचान भी है[3] तो तुम उसमें हरगिज़ संदेह मत करना और मेरा अनुसरण करना, यह एक सीधा रास्ता है (61) और शैतान तुम्हें हरगिज़ (इस रास्ते से) रोक न दे निश्चित रूप से वह तुम्हारा खुला दुश्मन है (62) और जब ईसा खुले प्रमाणों के साथ आए थे उन्होंने कहा था मैं तुम्हारे पास हिकमत (युक्ति) लेकर आया हूँ और ताकि मैं तुम्हारे लिए उन चीज़ों में बात साफ़ कर दूँ जिनमें तुम मतभेद में पड़ रहे हो बस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो (63)

(1) इन निशानियों के बाद फ़िरऔन डरा कि कहीं क़ौम मूसा की ओर न झुक जाए इस लिए उसने यह भाषण दिया (2) जब सूरह अम्बिया की यह आयत उतरी कि "निश्चित रूप से तुम और तुम जिनकी पूजा करते हो सब दोज़ख़ का ईंधन हैं" तो इस पर कुछ मुश्रिकों ने आपत्ति जताई कि ईसाई हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की पूजा करते हैं तो उनको भी दोज़ख़ का ईंधन होना चाहिए जबकि मुसलमान उनको महान पैग़म्बर कहते हैं, यह क्या बात हुई कि हमारे पूजनीय बुरे और यह अच्छे, यह आपत्ति सुनकर मुश्रिकों ने बहुत शोर मचाया जबकि यह आपत्ति इसलिए व्यर्थ थी कि जिस आयत का वे हवाला देकर आपत्ति जता रहे उसमें सम्बोधन ईसाईयों से नहीं मक्के के मुश्रिकों से था, अल्लाह तआला इसी लिए फ़रमा रहा है कि इनका काम ही झगड़ा पैदा करना है, फिर आगे अल्लाह ने कह दिया कि उनको न ख़ुदा होने का दावा था न हमने उनको अपना बेटा बनाया था वे तो हमारी शक्ति की एक निशानी हैं, और इस से अधिक आश्चर्य जनक बात हम कर सकते हैं कि तुम में फ़रिश्ते पैदा कर दें और वे तुम्हारे उत्तराधिकारी हों (3) हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का बिना बाप के पैदा होना क़यामत में इंसानों के दोबारा जीवित होने का एक प्रमाण है और इसमें यह इशारा भी हो सकता है कि वे क़यामत से पहले आकाश से दुनिया में पधारेंगे और यह चीज़ क़यामत की निशानी होगी।

إن الله هو ربي وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم ﴿٦٤﴾
فاختلف الأحزاب من بينهم فويل للذين ظلموا من
عذاب يوم أليم ﴿٦٥﴾ هل ينظرون إلا الساعة أن تأتيهم
بغتة وهم لا يشعرون ﴿٦٦﴾ الأخلاء يومئذ بعضهم لبعض
عدو إلا المتقين ﴿٦٧﴾ يعباد لا خوف عليكم اليوم ولا أنتم
تحزنون ﴿٦٨﴾ الذين آمنوا بآياتنا وكانوا مسلمين ﴿٦٩﴾ ادخلوا
الجنة أنتم وأزواجكم تحبرون ﴿٧٠﴾ يطاف عليهم بصحاف
من ذهب وأكواب وفيها ما تشتهيه الأنفس وتلذ
الأعين وأنتم فيها خالدون ﴿٧١﴾ وتلك الجنة التي أورثتموها
بما كنتم تعملون ﴿٧٢﴾ لكم فيها فاكهة كثيرة منها
تأكلون ﴿٧٣﴾ إن المجرمين في عذاب جهنم خالدون ﴿٧٤﴾
لا يفتر عنهم وهم فيه مبلسون ﴿٧٥﴾ وما ظلمناهم و
لكن كانوا هم الظالمين ﴿٧٦﴾ ونادوا يا مالك ليقض علينا
ربك قال إنكم ماكثون ﴿٧٧﴾ لقد جئناكم بالحق ولكن
أكثركم للحق كارهون ﴿٧٨﴾ أم أبرموا أمرا فإنا مبرمون ﴿٧٩﴾

منزل٦

निश्चित रूप से अल्लाह ही है जो मेरा भी पालनहार है और तुम्हारा भी पालनहार है तो उसी की बंदगी (पूजा) करो, यही सीधा रास्ता है (64) बस उनके विभिन्न गिरोहों ने मतभेद किया[1] तो जिन्होंने अत्याचार किया उनके लिए तबाही है उस दिन के अज़ाब से जो बड़ा दुखद है (65) क्या वे क़यामत की प्रतीक्षा में हैं कि अचानक वह उन पर आ पड़े और वे समझ भी न रहे हों (66) सब मित्र उस दिन एक–दूसरे के दुश्मन होंगे सिवाय परहेज़गारों के (67) (उनसे कहा जाएगा) ऐ मेरे बंदो! तुम पर आज न कोई डर है और न तुम दुखी होगे (68) जिन्होंने हमारी आयतों को माना और वे आज्ञाकारी रहे (69) तुम और तुम्हारी पत्नियाँ सब जन्नत में चले जाएं तुम्हारे लिए सम्मान ही सम्मान है (70) उनके लिए वहाँ सोने की रकाबियों और कटोरों के दौर चलेंगे और वहाँ उनके लिए वह सब कुछ होगा जो उनका मन चाहेगा और आँखों को अच्छा लगेगा और तुम हमेशा उसी में रहोगे (71) और यह वह जन्नत है जिसका तुम्हें अपने कामों के बदले में वारिस बनाया गया है (72) इसमें तुम्हारे लिए बहुत मेवे हैं उसमें से तुम खाते रहोगे (73) लेकिन जो अपराधी हैं वे दोज़ख़ के अज़ाब में हमेशा रहेंगे (74) वह उनसे हलका न किया जाएगा और उसमें उनकी सब आशाएं टूट चुकी होंगी (75) और हमने उनके साथ अन्याय नहीं किया हाँ वे ख़ुद ही अन्यायी थे (76) और वे आवाज़ देंगे कि ऐ मालिक! (दोज़ख़ का दारोग़ा) तुम्हारा पालनहार हमारा काम ही तमाम कर दे वह कहेगा तुम्हें तो यूँ ही पड़े रहना है[2] (77) हम तुम्हारे पास सच्चाई लेकर आ चुके लेकिन तुम में अधिकांश सच्चाई को पसंद ही नहीं करते (78) क्या उन्होंने कुछ तय ही कर लिया है तो हम भी तय करने वाले हैं[3] (79)

---

(1) ख़ुद ईसाइयों ही में उनके बारे में घोर विरोधाभास है, कोई ख़ुदा कहता है, कोई ख़ुदा का बेटा कहता है कोई तीन में का तीसरा और हर गिरोह दूसरे को काफ़िर कहता है (2) दोज़ख़ी लोग दोज़ख़ के दारोग़ा से कहेंगे कि अपने पालनहार से कहो कि हमें मौत ही दे दे, उत्तर में वे कहेंगे कि तुम्हें इसी में इसी तरह रहना होगा (3) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरूद्ध जो गुप्त रणनीतियाँ बनाते थे उसी प्रकार के किसी षड्यंत्र के अवसर पर यह आयत उतरी कि उन्होंने कुछ तय किया है तो हम भी फ़ैसला कर देंगे और यह षड्यंत्र उलटा पड़ेगा।

أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ۚ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ
يَكْتُبُونَ ﴿٨٠﴾ قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَابِدِينَ ﴿٨١﴾
سُبْحَانَ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٨٢﴾
فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٨٣﴾
وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ
الْعَلِيمُ ﴿٨٤﴾ وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٥﴾ وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ
يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ
يَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ
يُؤْفَكُونَ ﴿٨٧﴾ وَقِيلِهِ يَا رَبِّ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾
فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

سُورَةُ الدُّخَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
حم ﴿١﴾ وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿٢﴾ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُبَارَكَةٍ ۚ
إِنَّا كُنَّا مُنْذِرِينَ ﴿٣﴾ فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ﴿٤﴾

منزل ٦

या वे यह समझते हैं कि हम उनके भेद और उनकी काना–फूसियां नहीं सुनते, क्यों नहीं हमारे संदेश वाहक उनके पास (सब कुछ) लिख रहे हैं (80) कह दीजिए कि अगर रहमान का लड़का होता तो मैं ही सबसे पहले इबादत करता (81) पाक है पालनहार आसमानों और ज़मीन का, मालिक अर्श (सिंहासन) का, उन बातों से जो वे बनाते हैं (82) तो छोड़िये उनको बक–बक करें और खेल–कूद में पड़े रहें यहाँ तक कि उनको अपने उस दिन का सामना करना पड़े जिसका उनसे वादा किया जा रहा है (83) और वही है जो आसमानों में भी माबूद है और ज़मीन में भी माबूद है और वह हिकमत (युक्ति) रखता ख़ूब जानता है (84) और वह बड़ी बरकत वाला है जिसके क़ब्ज़े में आसमानों और ज़मीन और उसके बीच की सारी चीज़ों की बादशाही है और उसी के पास क़यामत का ज्ञान है और उसी की ओर तुम सबको लौटकर जाना है (85) और उसके अतिरिक्त जिनको यह पुकारते हैं वे सिफ़ारिश का कुछ अधिकार नहीं रखते सिवाय उनके जिन्होंने सत्य की गवाही दी और वे ज्ञान भी रखते हों[1] (86) और अगर आप उनसे पूछें कि उनको किसने पैदा किया तो निश्चित रूप से वे यही कहेंगे कि अल्लाह ने, फिर वे कहाँ भटके फिर रहे हैं (87) और (वह) उन (पैग़म्बर) की यह बात (ख़ूब जानता है) कि ऐ मेरे पालनहार! यह ऐसे लोग हैं कि मानते नहीं[2] (88) तो आप उनको जाने दीजिए और सलाम कर लीजिए फिर आगे उन सबको पता चल जाएगा (89)

सूरह दुख़ान

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

हा॰ मीम॰ (1) खुली किताब की क़सम (2) निश्चित रूप से हमने उसको बरकत वाली रात में उतारा है,[3] हम ही हैं चेताने वाले (3) उस (रात) में हर हिकमत भरा काम बाँटा जाता है[4] (4)

---

(1) जिनको यह सिफ़ारिशी समझते हैं वे इसका अधिकार नहीं रखते, जो अल्लाह पर पक्का ईमान रखता हो, सही ज्ञान रखता हो, उसको अल्लाह सिफ़ारिश की अनुमति प्रदान करेंगे। (2) यह बात चेतावनी के तौर पर कही जा रही है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो सर्वथा दया हैं, आप अल्लाह के दरबार में उनकी सरकशी (उदण्डता) की शिकायत कर रहे हैं तो वे कितने कठोर दण्ड पाने के योग्य हैं, आगे कहा जा रहा है कि आप उनसे दूरी बना लें फिर आगे उनको सब पता चल जाएगा (3) इसका आशय "शबे क़द्र" है जिसमें क़ुर्आन "लौह–ए–महफ़ूज़" से दुनिया वाले पहले आसमान पर उतारा गया। (4) साल भर जो कुछ अल्लाह के आदेश से होने वाला है वह सम्बद्ध फ़रिश्तों के हवाले किया जाता है, और अल्लाह का हर काम हिकमत (युक्ति) से भरा हुआ है।

أَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۚ إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٥﴾ رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۚ إِنَّهُ
هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦﴾ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ إِنْ
كُنتُم مُّوقِنِينَ ﴿٧﴾ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ
الْأَوَّلِينَ ﴿٨﴾ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ يَلْعَبُونَ ﴿٩﴾ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ
بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ﴿١٠﴾ يَغْشَى النَّاسَ ۖ هٰذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١﴾ رَبَّنَا اكْشِفْ
عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾ أَنَّىٰ لَهُمُ الذِّكْرَىٰ وَقَدْ جَاءَهُمْ
رَسُولٌ مُّبِينٌ ﴿١٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ﴿١٤﴾ إِنَّا
كَاشِفُو الْعَذَابِ قَلِيلًا ۚ إِنَّكُمْ عَائِدُونَ ﴿١٥﴾ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ
الْكُبْرَىٰ إِنَّا مُنتَقِمُونَ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَ
جَاءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ ﴿١٧﴾ أَنْ أَدُّوا إِلَيَّ عِبَادَ اللَّهِ ۖ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ
أَمِينٌ ﴿١٨﴾ وَأَن لَّا تَعْلُوا عَلَى اللَّهِ ۖ إِنِّي آتِيكُم بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿١٩﴾ وَإِنِّي
عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَن تَرْجُمُونِ ﴿٢٠﴾ وَإِن لَّمْ تُؤْمِنُوا لِي فَاعْتَزِلُونِ ﴿٢١﴾
فَدَعَا رَبَّهُ أَنَّ هٰؤُلَاءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ ﴿٢٢﴾ فَأَسْرِ بِعِبَادِي لَيْلًا
إِنَّكُم مُّتَّبَعُونَ ﴿٢٣﴾ وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ۖ إِنَّهُمْ جُندٌ مُّغْرَقُونَ ﴿٢٤﴾
كَمْ تَرَكُوا مِن جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٢٥﴾ وَزُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٢٦﴾

منزل٦

हमारे पास से आदेश होकर, असली भेजने वाले तो हम ही हैं (5) आपके रब की ओर से रहमत (करूणा) के रूप में, निश्चित रूप से वही है सुनने वाला जानने वाला (6) आसमानों और ज़मीन और उनके बीच का पालनहार अगर तुम विश्वास करते हो (7) उसके अतिरिक्त कोई पूजा के लायक़ नहीं वही जिलाता और मारता है, तुम्हारा पालनहार और तुम्हारे गुज़रे हुए बाप–दादा का पालनहार (8) लेकिन वे संदेह में पड़े खेलकूद में लगे हैं (9) तो उस दिन की प्रतीक्षा कीजिए जब आसमान से साफ़–साफ़ धुवाँ निकलेगा (10) वह लोगों पर छा जाएगा, यह दुखद दण्ड है (11) (फिर लोग कहेंगे कि) हमारे पालनहार! इस अज़ाब को हम से दूर कर दे, हम ईमान लाते हैं (12) कहाँ गई उनकी समझ जबकि साफ़–साफ़ बात बताने वाले पैग़म्बर उनके पास आए हैं (13) फिर उन्होंने उनसे मुँह मोड़ लिया और बोले सिखा (पढ़ाया) है, पागल है (14) हम कुछ अज़ाब हटाते हैं तुम फिर वही करोगे (15) जिस दिन हम बड़ी पकड़ करेंगे तो हम बदला लेकर रहेंगे[1] (16) और इनसे पहले हम फ़िरऔन की क़ौम को आज़मा चुके और उनके पास सम्मानित पैग़म्बर आ चुका (17) (वह कहता था कि) अल्लाह के बंदों को हमारे हवाले करो निश्चित रूप से मैं तुम्हारे लिए विश्वसनीय संदेष्टा हूँ (18) और अल्लाह पर अकड़ मत दिखाओ, मैं तुम्हारे पास खुला प्रमाण लेकर आया हूँ (19) और इससे मैंने अपने पालनहार की पनाह ली है जो तुम्हारा भी पालनहार है कि तुम मुझे पत्थर मार–मार कर मार डालो[2] (20) और अगर तुम मेरी बात नहीं मानते तो मुझसे अलग हो जाओ (21) फिर उन्होंने अपने पालनहार को पुकारा कि यह तो अपराधी लोग हैं[3] (22) तो (आदेश हुआ कि) मेरे बंदों को लेकर रातों रात निकल जाओ निश्चित रूप से तुम्हारा पीछा किया जाएगा (23) और समुद्र को थमा हुआ छोड़ (कर पार हो जाओ) निश्चित रूप से यह सेना डुबाई जाने वाली है[4] (24) कितने बाग़ और नहरें वे छोड़ गये (25) और कितनी खेतियाँ और शानदार मकान (26)

(1) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक बार मक्कावासी सूखा पीड़ित हुए यहाँ तक कि उनकी आँखों के सामने अंधेरा छा गया, आकाश को देखते तो धुवाँ ही धुवाँ नज़र आता, इस आयत में उसी की भविष्यवाणी की गई है और बताया गया है कि जब यह मुसीबत दूर होगी तो फिर वह सरकशी (उदण्डता) पर उतर आएंगे, फिर आगे अल्लाह फ़रमाता है कि जब हम असल दण्ड में पकड़ेंगे तो हम बदला लेकर रहेंगे। (2) फ़िरऔन ने जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को मार डालने की धमकी दी थी यह उसका उत्तर है। (3) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि तुम नहीं मानते तो औरों को बुलाने दो, रुकावट न बनो, मगर जब उन्होंने देखा कि धर्म–प्रचार का काम भी नहीं करने देते तो अल्लाह से फ़रियाद की। (4) बीच में रास्ते बन गये और रास्तों की दोनों ओर पानी पहाड़ की तरह खड़ा हो गया था।

وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿۲۷﴾ كَذٰلِكَ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿۲۸﴾
فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَلَقَدْ
نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿۳۰﴾ مِنْ فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ
كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۳۱﴾ وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ عَلَى
الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۲﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ﴿۳۳﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ
لَيَقُوْلُوْنَ ﴿۳۴﴾ اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ﴿۳۵﴾
فَاْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۳۶﴾ اَهُمْ خَيْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ اَهْلَكْنٰهُمْ ۫ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۳۷﴾ وَمَا
خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿۳۸﴾ مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا
بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ
مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۴۰﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْـًٔا وَّلَا
هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۴۱﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۴۲﴾
اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ﴿۴۳﴾ طَعَامُ الْاَثِيْمِ ﴿۴۴﴾ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِيْ
فِي الْبُطُوْنِ ﴿۴۵﴾ كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ ﴿۴۶﴾ خُذُوْهُ فَاعْتِلُوْهُ اِلٰى سَوَآءِ
الْجَحِيْمِ ﴿۴۷﴾ ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَاْسِهٖ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيْمِ ﴿۴۸﴾

منزل۶

और ऐश का कितना वह सामान जिसमें वे मज़े कर रहे थे (27) यही हुआ, और हमने एक दूसरी क़ौम को उसका वारिस बना दिया (28) फिर न आसमान और ज़मीन उनपर रोए और न उनको मोहलत मिल सकी (29) और हमने बनी इस्राईल को अपमान के अज़ाब से बचा लिया (30) फ़िरऔन से, निश्चित रूप से वह अकड़ रहा था, हद को पार करने वालों में से था (31) और हमने जानते बूझते उन (बनी इस्राईल) को सारे संसारों में चुना[1] (32) और हमने उनको ऐसी निशानियाँ दीं जिनमें खुला पुरस्कार था[2] (33) यह (मुशिरक़) यही कहते हैं (34) कुछ नहीं बस यही हमारी पहली मौत होगी और हम उठाए नहीं जाएंगे (35) फिर अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप–दादा को ले आओ[3] (36) क्या वे बेहतर हैं ऐ तुब्बा की क़ौम[4] और जो उनसे पहले गुज़र चुके, हमने उनको विनष्ट कर डाला, निश्चित रूप से वे अपराधी लोग थे (37) और आसमानों और ज़मीन और दोनों के बीच की चीज़ों को हमने खेल करने के लिए नहीं बनाया (38) हमने उनको सत्य के साथ पैदा किया है लेकिन उनमें अधिकांश लोग समझते नहीं (39) बेशक फ़ैसले का दिन उन सबका निर्धारित समय है (40) जिस दिन कोई मित्र अपने मित्र के काम न आ सकेगा और न उनकी मदद होगी (41) सिवाय उसके जिस पर अल्लाह की कृपा हो निश्चित रूप से वह ग़ालिब है मेहरबान है (42) ज़क़्क़ूम का पेड़ ही (43) पापी का खाना है (44) पिघले ताँबे की तरह, वह (लोगों के) पेट में खौलेगा (45) खौलते पानी की तरह (46) पकड़ो इसको फिर धकेल कर दोज़ख़ के बीचो–बीच में ले जाओ (47) फिर उसके सिर के ऊपर खौलते पानी का अज़ाब उंडेल दो (48)

---

(1) अपने ज़माने के अनुसार बनी इस्राईल को यह बड़ाई प्राप्त थी अब इस मुहम्मदी उम्मत को यह बड़ाई प्राप्त है "कुन्तुम ख़ैर उम्मतिन उख़रिजत लिन्नास" (तुम बेहतरीन उम्मत (समुदाय) हो जिसको लोगों के लिए पैदा किया गया है) (2) जैसे मन्न व सल्वा का उतरना, पत्थर से पानी का जारी होना, बादल का छाया करना आदि (3) यह उनकी कटहुज्जती थी वरना मरने के बाद उठाए जाने का अक़ीदा (विश्वास) आख़िरत से सम्बन्धित है और उनकी माँग दुनिया से सम्बन्धित है, दोनों में कोई जोड़ नहीं। (4) तुब्बा यमन के शासकों की उपाधि थी, उनमें कुछ शासक बड़ी आन–बान–शान वाले गुज़रे, उन्हीं की ओर इशारा है कि बड़े–बड़े बलवान नाफ़रमानी के कारण ख़त्म किये गये तुम्हारी क्या हैसियत है?

ले चख, तू है वह बड़ी शक्ति वाला सम्मान वाला (49) निश्चित रूप से यही वह चीज़ है जिसमें तुम संदेह किया करते थे (50) हाँ बेशक परहेज़गार लोग चैन की जगह पर होंगे (51) जन्नतों में और स्रोतों में (52) उनको पतले और मोटे रेशम के कपड़े पहनाए जाएंगे, आमने–सामने बैठे होंगे (53) इसी तरह होगा और हम उनको ख़ूबसूरत आँखों वाली हूरों से जोड़ देंगे (54) वहाँ वे इत्मिनान से हर प्रकार के मेवे मंगवाते होंगे (55) वे सिवाय पहली मौत के फिर वहाँ मौत का मज़ा न चखेंगे[1] और उनको (अल्लाह ने) दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लिया (56) आपके पालनहार की ओर से दया के रूप में यही वह बड़ी सफ़लता है (57) तो हमने इस (कुरआन) को आपकी ज़बान से सरल कर दिया कि शायद वे नसीहत प्राप्त करें (58) बस आप भी प्रतीक्षा करें और वे भी प्रतीक्षा में हैं[2] (59)

सूरह जासिया

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

हा. मीम. (1) यह किताब अल्लाह की ओर से उतारी जा रही है जो ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हिकमत (युक्ति) वाला है (2) निश्चित रूप से आसमानों और ज़मीन में मानने वालों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं (3) और ख़ुद तुम्हारी उत्पत्ति में और उन जानवरों में से जो वह फैला देता है उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो विश्वास करते हैं (4) और रात व दिन के चक्कर लगाने में और अल्लाह के आसमान से रोज़ी उतारने फिर उससे मुर्दा धरती को ज़िंदा कर देने में और हवा के चलने में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि रखते हैं (5) यह वे अल्लाह की निशानियाँ हैं जो हम ठीक–ठीक आपको सुना रहे हैं फिर अल्लाह के और उसकी निशानियों के बाद वे किस बात को मानेंगे (6)

(1) सही हदीस में है कि मौत को एक मेंढे के रूप में लाकर दोज़ख़ और जन्नत के बीच ज़ब्ह कर दिया जाएगा और ऐलान कर दिया जाएगा कि ऐ जन्नतियो! तुम्हारे लिए जन्नत का अनंत जीवन है अब तुम्हारे लिए मौत नहीं। और ऐ दोज़ख़ियो! तुम्हारे लिए दोज़ख़ का अनंत जीवन है, अब मौत नहीं (2) आप उनके अंजाम का इंतेज़ार करें और उनका हाल यह है कि आपकी मौत के इंतेज़ार में हैं कि उसके बाद सब काम समाप्त हो जाएगा।

وَيْلٌ لِّكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٧﴾ يَسْمَعُ آيَاتِ اللَّهِ تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا
كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا ۖ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٨﴾ وَإِذَا عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا
اتَّخَذَهَا هُزُوًا ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٩﴾ مِّن وَرَائِهِمْ جَهَنَّمُ ۖ
وَلَا يُغْنِي عَنْهُم مَّا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ ۖ
وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠﴾ هَٰذَا هُدًى ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ
عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ أَلِيمٌ ﴿١١﴾ اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ
فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾ وَسَخَّرَ لَكُم مَّا
فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ
لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٣﴾ قُل لِّلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ
أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا
فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۖ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ
آتَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَاهُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ
وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾ وَآتَيْنَاهُم بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْأَمْرِ ۖ فَمَا اخْتَلَفُوا
إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ رَبَّكَ
يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٧﴾

ع

منزل٦

हर लपाड़िए पापी के लिए तबाही है (7) जो अल्लाह की आयतें सुनता है जो उसके सामने पढ़ी जा रही हैं फिर अकड़ कर अड़ा रहता है जैसे उसने सुना ही न हो बस आप उसको दुखद दण्ड शुभ समाचार सुना दीजिए (8) और उसको जब हमारी आयतों में से किसी (आयत) का पता चलता है तो वह उसका मज़ाक़ उड़ाता है, ऐसे लोगों के लिए अपमानजनक अज़ाब है (9) उनके पीछे दोज़ख़ है और जो उन्होंने कमा रखा है न वह उनके कुछ काम आएगा और ना वे समर्थक (उनके काम आ सकेंगे) जो उन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त अपना रखे हैं, और उनके लिए बड़ा दण्ड (अज़ाब) है (10) (कुरआन) पूरा का पूरा हिदायत है और जो लोग भी अपने पालनहार की आयतों का इनकार करेंगे उनके लिए हिलाकर रख देने वाला दुखद अज़ाब (दण्ड) है (11) अल्लाह ही है जिसने समुद्र को तुम्हारे लिए काम पर लगा दिया ताकि उसमें उसके आदेश से नाव चल सकें और ताकि तुम उसकी कृपा को तलाश कर सको और शायद कि तुम शुक्र करने वाले हो (12) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है वह सब उसने अपनी ओर से तुम्हारे लिए काम पर लगा दिया निश्चित रूप से इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं जो विचार करते हैं (13) ईमान वालों से कह दीजिए कि वे उन लोगों को माफ़ कर दिया करें जो अल्लाह के दिनों की आशा नहीं रखते ताकि अल्लाह लोगों को उसके अनुसार सज़ा दे जो वे करते–धरते हैं[1] (14) जिसने अच्छाई की उसने अपने लिए की और जिसने बुराई की वह उसके सिर, फिर तुम अपने पालनहार ही की ओर लौटाए जाओगे (15) और हमने बनी इस्राईल को किताब और राज (शासन) और पैग़म्बरी से सम्मानित किया और पवित्र चीज़ें उनको रोज़ी में दीं और सारे संसारों पर उनको बड़ाई प्रदान की (16) और हमने उनको दीन की खुली बातें प्रदान कीं फिर उनके पास ज्ञान आ जाने के बाद मात्र आपस के हठ में उन्होंने मतभेद किया निश्चित रूप से आप का पालनहार क़यामत के दिन उनके बीच उन चीज़ों का फ़ैसला कर देगा जिनमें वे विरोध करते रहे थे (17)

---

(1) "अल्लाह के दिनों" का आशय वे दिन हैं जिनमें अल्लाह लोगों को उनके कामों का बदला देगा वे दुनिया में हों या आख़िरत में, यह उल्लेख है काफ़िरों का, मुसलमानों को आदेश दिया जा रहा है कि वे जो तकलीफ़ें पहुँचाते हैं मुसलमान उसका बदला न लें, आदेश मक्का–युग में दिया गया था, हिजरत के बाद मुक़ाबले की अनुमति फिर जिहाद का आदेश दिया गया।

फिर हमने आपको दीन के एक साफ़ रास्ते पर रखा है बस आप उसी पर चलिए और उन लोगों की इच्छाओं के पीछे मत हो जाइए जो जानते ही नहीं (18) वे अल्लाह के सामने आपके कुछ काम नहीं आ सकते और निश्चित रूप से अन्यायी एक दूसरे के समर्थक हैं और अल्लाह परहेज़गारों का समर्थक है (19) यह (कुरआन) सारे लोगों के लिए सूझ–बूझ की रौशनी है और मार्गदर्शन और रहमत (दया) है उन लोगों के लिए जो विश्वास करते हैं (20) क्या बुराइयाँ करने वाले यह समझते हैं कि हम उनको उन लोगों के बराबर कर देंगे जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये, उनका जीना और उनका मरना एक समान हो जाएगा, बहुत बुरे फ़ैसले वे किया करते हैं (21) और अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को ठीक–ठीक पैदा किया और इसलिए किया ताकि हर किसी को अपनी कमाई का बदला दे दिया जाए और उनके साथ अन्याय न होगा[1] (22) भला आपने उसको देखा जिसने अपनी इच्छा को अपना ख़ुदा बना लिया और अल्लाह ने ज्ञान के बावजूद उसको गुमराह किया और उसके कान पर और उसके दिल पर मोहर लगा दी और उसकी आँख पर परदा डाल दिया फिर अल्लाह के बाद उसको कौन रास्ते पर ला सकता है फिर भी क्या तुम ध्यान नहीं देते (23) और वे कहते हैं कि कुछ नहीं बस यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है (इसी में) हम मरते हैं और जीते हैं और ज़माने ही के हाथों हम समाप्ति के घाट उतरते हैं और इसका उनको कुछ पता नहीं बस वे अटकलें लगाते हैं (24) और जब उनके सामने साफ़–साफ़ हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो उनका तर्क बस इतना होता है कि वे कहने लगते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप–दादा को ले आओ (25) कह दीजिए कि अल्लाह तुम्हें जिलाता है फिर वह तुम्हें मौत देगा फिर वह तुम्हें क़यामत के दिन इकट्ठा करेगा जिसमें कोई संदेह नहीं लेकिन अधिकांश लोग समझते नहीं (26)

(1) आख़िरत का होना अल्लाह के इन्साफ़ की माँग है, अगर आख़िरत का बदला या सज़ा न हो तो अच्छे–बुरे सब बराबर हो जाएं, दुनिया भी अल्लाह ने इसीलिए बनाई कि परीक्षा ले और अच्छों और बुरों को अलग–अलग कर दे और फिर आख़िरत में उनके कामों का बदला दे।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ
الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ
اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۸﴾ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ
بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۹﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْمُبِيْنُ ﴿۳۰﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۟ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ
فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿۳۱﴾ وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ
اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ
اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ﴿۳۲﴾ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا
عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَقِيْلَ الْيَوْمَ
نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ
مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۳۴﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۳۵﴾
فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۶﴾
وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۪ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۳۷﴾

منزل٦

और आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है और जिस दिन क़यामत आएगी उस दिन असत्यवादी नुक़सान उठा जाएंगे (27) और आप हर उम्मत (समुदाय) को देखें वह घुटनों के बल गिरी हुई होगी,[1] हर उम्मत (समुदाय) को उसके नाम (ए–आमाल) (कर्म–पत्र) के लिए बुलाया जा रहा होगा, आज तुम्हें वही बदला दिया जाएगा जो तुम करते रहे थे (28) यह हमारा लेखा–जोखा है जो सच–सच तुम्हें बता रहा है, तुम जो भी करते रहे थे हम निश्चित रूप से सब कुछ लिखवा लिया करते थे (29) फिर जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये तो उनको उनका पालनहार अपनी ही रहमत (कृपा) में दाखि़ल करेगा, यही वह खुली सफ़लता है (30) और रहे वे जिन्होंने इन्कार किया (उनसे कहा जाएगा) क्या तुम्हारे सामने हमारी आयतें नहीं पढ़ी गईं? फिर तुमने घमण्ड किया और तुम थे ही अपराधी लोग (31) और जब कहा जाता था कि बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है और क़यामत में कोई संदेह नहीं तो तुम कहते थे हम नहीं जानते कि क़यामत क्या है हमें तो (वह) सिर्फ़ एक ख़्याल सा मालूम होता है और हम विश्वास नहीं करते (32) और उन्होंने जो बुरे काम किये वे उनके सामने आ जाएंगे और जिस चीज़ का वे मज़ाक़ उड़ाया करते थे वह उन्हीं पर उलट पड़ेगी[2] (33) और कहा जाएगा आज हम तुम्हें भुला देते हैं जैसे तुमने इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया था और तुम्हारा ठिकाना आग है और तुम्हारा कोई मददगार नहीं (34) यह इसलिए कि तुमने अल्लाह की आयतों का मज़ाक़ उड़ाया और दुनिया के जीवन ने तुम्हें धोखे में रखा बस आज न वे वहाँ से निकल सकेंगे और न उन से माफ़ी माँगने के लिए कहा जाएगा[3] (35) बस मूल प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो आसमानों का पालनहार है और ज़मीन का पालनहार है, सारे संसारों का पालनहार है (36) और बड़ाई उसी के लिए है आसमानों में भी और ज़मीन में भी और वही ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है युक्तिवान है (37)

---

(1) यह क़यामत की भयानकता का बयान है एक समय ऐसा आएगा कि सब घुटनों के बल गिर जाएंगे (2) जिस अज़ाब (दण्ड) का दुनिया में मज़ाक़ उड़ाया करते थे और बात–बात में उसकी माँग करते थे वह उन पर उलट पड़ेगा फिर कोई साथ देने वाला न होगा (3) तौबा का समय गुज़र चुका होगा अगर वे खुद माफ़ी चाहेंगे तो भी उनको इसकी अनुमति न दी जाएगी।

سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسٌ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
حٰمٓ ⓵ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ⓶
مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَاۤ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ
مُّسَمًّى ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّاۤ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ⓷ قُلْ اَرَءَيْتُمْ
مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ
اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَاۤ اَوْ
اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ⓸ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗۤ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ
دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ⓹ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّ
كَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ⓺ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ
قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ⓻
اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ
لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ
شَهِيْدًاۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ⓼

منزل ٦

सूरह अहक़ाफ़

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

हा. मीम. (1) यह किताब अल्लाह की ओर से उतारी जा रही है जो ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हिकमत (युक्ति) वाला है (2) हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है उसको ठीक–ठीक और एक निर्धारित अवधि के लिए ही पैदा किया है और जिन्होंने इन्कार किया वे जिन चीज़ों से सावधान किये जाते हैं उनसे मुँह मोड़े हुए हैं (3) पूछिए तुम्हारा क्या विचार है जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो, ज़रा मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में क्या पैदा किया या उनका आसमानों में कोई साझा है? इससे पहले कोई किताब हो या कोई ज्ञान का अवशेष हो तो मेरे पास ले आओ अगर तुम (अपनी बात में) सच्चे ही हो[1] (4) और उससे अधिक गुमराह कौन होगा जो अल्लाह को छोड़कर ऐसों को पुकारे जो क़यामत तक उसका जवाब न दे सकें और उसकी पुकार का उनको पता ही न हो (5) और जब लोग इकटठा होंगे तो वे (उनके शरीक) उनके दुश्मन हो जाएंगे और उनकी पूजा का इनकार कर देंगे[2] (6) और जब उन पर हमारी आयतें साफ़–साफ़ पढ़कर सुनाई जाती हैं तो इनकार करने वाले सच्ची बात उन तक पहुँच जाने के बावजूद कहते हैं यह तो खुला जादू है (7) क्या वे कहते हैं कि उन्होंने इसको गढ़ लिया है?आप कह दीजिए अगर मैंने गढ़ा ही हो तो तुम अल्लाह के सामने मेरे कुछ काम नहीं आ सकते[3] वह ख़ूब जानता है जो तुम उसके बारे में बातें बनाते हो, गवाही के लिए वह हमारे तुम्हारे बीच काफ़ी है और वह बहुत माफ़ करने वाला बहुत ही कृपा करने वाला है (8)

---

(1) यानी पिछली किताबों में या किसी पैग़म्बर के कथन में अगर कोई ऐसी बात मिलती हो तो मुझे दिखाओ (2) पैग़म्बर, बुज़ुर्ग और फ़रिश्ते तो साफ़–साफ़ अपने को इससे अलग कर लेंगे ही कुछ हदीसों में आता कि पत्थर की मूर्तियों को भी अल्लाह तआला बोलने की शक्ति प्रदान कर देंगे और वे भी साफ़–साफ़ अपने को अलग कर लेंगी (3) आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से कहलवाया जा रहा है कि अगर मैंने (अल्लाह की पनाह) यह कलाम खुद गढ़ा है तो अल्लाह खुद ही मेरी पकड़ करेगा फिर तुम भी मेरे काम नहीं आ सकते।

قُلْ مَا كُنتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ
إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٩﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ
إِن كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ وَكَفَرْتُم بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّن بَنِي
إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَآمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظَّالِمِينَ ﴿١٠﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا
سَبَقُونَا إِلَيْهِ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ هَٰذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ ﴿١١﴾
وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً وَهَٰذَا كِتَابٌ مُّصَدِّقٌ
لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ﴿١٢﴾ إِنَّ
الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ﴿١٣﴾ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا جَزَاءً بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾ وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا حَمَلَتْهُ أُمُّهُ
كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ
أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ
الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ
وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٥﴾

ع

منزل ۶

कह दीजिए कि मैं कोई अनोखा पैग़म्बर नहीं हूँ और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या होगा? मैं तो उसी पर चलता हूँ जो मुझ पर वह्य आती है और मैं तो साफ़–साफ़ ख़बरदार कर देने वाला हूँ[1] (9) पूछिए तुम्हारा क्या विचार है अगर वह अल्लाह ही के पास हो और तुमने उसका इन्कार किया और बनी इस्राईल के एक गवाह ने उस जैसी बात की गवाही दे दी तो उसने तो मान लिया और तुम घमण्ड में रह गये (तब तुम्हारा क्या बनेगा) निश्चित रूप से अल्लाह तआला अत्याचारियों को राह नहीं देता[2] (10) और काफ़िर ईमान वालों से कहते हैं कि अगर यह भलाई होती तो इसमें यह हमसे आगे न बढ़ते[3] और इससे जब ख़ुद रास्ते पर न आए तो अब कहते हैं यह तो पुरानी मनगढ़ंत है (11) और इस से पहले मूसा की किताब मार्गदर्शक और दया (रहमत) बनकर (आ चुकी) और यह किताब उसकी पुष्टि करने वाली है अरबी भाषा में ताकि अत्याचारियों को सावधान करे और भलाई करने वालों के लिए शुभ समाचार हो[4] (12) निश्चित रूप से जिन्होंने इक़रार किया कि हमारा पालनहार अल्लाह है फिर वे जमे रहे तो उन पर न भय होगा और न वे दुःखी होंगे (13) वही लोग जन्नत वाले हैं उसी में हमेशा रहेंगे वे जो काम करते थे उसके बदले के रूप में (14) और हमने इंसान को माँ–बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद[5] की, उसकी माँ ने थक–थक कर उसको पेट में उठाए रखा और तकलीफ़ के साथ उसके जना, और उसके गर्भ और दूध छुड़ाने (की अवधि) तीस महीने की है[6] यहाँ तक कि वह अपनी पुख़्ता उम्र को पहुँचा और चालीस साल का हो गया तो उसने दुआ की ऐ हमारे पालनहार! मुझे तू सामर्थ्य दे कि मैं तेरे उस इनआम पर शुक्र अदा करूँ जो तूने मुझ पर किया और मेरे माँ–बाप पर किया और मैं अच्छे काम करूँ जो तुझे ख़ुश करने वाले हों और मेरे लिए मेरी संतान को भी नेक बना दे, मैं तेरी ही ओर ध्यान देता हूँ और आज्ञाकारियों में शामिल हूँ (15)

---

(1) यानी मुझसे पहले भी पैग़म्बर आ चुके हैं, कोई मैं नया पैग़म्बर नहीं हूँ, मैं आलिमुल ग़ैब (ग़ैब की बातें जानने वाला) भी नहीं कि सबका अंजाम बता सकूँ, मेरा काम संदेश पहुँचाना है (2) यह भविष्यवाणी की जा रही है कि बहुत से यहूदी आलिम और ईसाई ज्ञानी इस्लाम स्वीकार करने वाले हैं जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम यहूदियों में, हज़रत अदी बिन हातिम और नजाशी आदि ईसाइयों में, इन्होंने गवाही दी कि क़ुरआन में वही अक़ीदे (विश्वास) हैं जो तौरेत व इंजील में हैं, यहाँ मक्के के मुश्रिकों को शर्म दिलाई जा रही है कि वे तो कलिमा पढ़ लेंगे और तुम घमण्ड में रह जाओगे, यह तुम्हारे लिए कितनी नाकामी की बात होगी कि वे आगे निकल जाएं और तुम पीछे रह जाओ (3) हज़रत बिलाल, सुहैब व सलमान (रज़ि0) आदि को देखकर काफ़िर यह कहते थे कि अगर यह ईमान भलाई होता तो हमें पहले मिलता यह पिछले दर्जे के लोग हमसे आगे न होते, यह उनके घमण्ड की चरम सीमा थी (4) अरबी में होना यह उसके सत्य होने का और बड़ा प्रमाण है इसलिए कि पिछली किताबों में कोई अरबी में न थी, इसके बावजूद आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने वे तथ्य बताए जो पिछली किताबों में मौजूद थे (5) यहाँ तक कि अगर माँ–बाप काफ़िर हों तो भी अच्छा व्यवहार करने की ताकीद है हाँ! न अक़ीदे में साथ दिया जाएगा और न ही पाप की बात मानी जाएगी जैसा कि सूरह अंकबूत में स्पष्टीकरण गुज़र चुका है (6) गर्भ की कम से कम अवधि छः माह है और दूध पिलाने की अधिक से अधिक अवधि दो साल, यह कुछ तीस महीने हुए।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ
فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿١٦﴾ وَالَّذِي
قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَكُمَا أَتَعِدَانِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ
مِنْ قَبْلِي وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ
فَيَقُولُ مَا هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ
الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ ۖ إِنَّهُمْ
كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿١٨﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِمَّا عَمِلُوا ۖ وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٩﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ
أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا فَالْيَوْمَ
تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي
الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ﴿٢٠﴾ وَاذْكُرْ أَخَا
عَادٍ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ
بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ
عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٢١﴾ قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا
عَنْ آلِهَتِنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٢﴾

ع ٢

منزل ٦

यही वे लोग हैं जिनके अच्छे काम हम स्वीकार करते हैं और उनकी भूलों (ग़लतियों) को माफ़ कर देते हैं (वे) जन्नत वालों में (हैं) सच्चा वादा है जो उनसे किया जाता रहा है (16) और जिसने अपने माँ–बाप से कहा अरे तुम दोनों का नास हो! तुम दोनों मुझे इससे डराते हो कि मैं फिर (क़ब्र से) निकाला जाऊँगा जबकि मुझसे पहले क़ौमें गुज़र चुकीं, और वे दोनों फ़रियाद करते हैं (और बेटे से कहते हैं) हाय तेरी बर्बादी! ईमान ले आ निश्चित रूप से अल्लाह का वादा सच्चा है तो वह कहता है कि यह मात्र पहलों की कथाएं हैं[1] (17) यही वे लोग हैं जिन पर बात थुप चुकी उन क़ौमों समेत जो जिन्नातों और इंसानों में पहले गुज़र चुकीं कि निश्चित रूप से यही लोग घाटे में हैं (18) और हर एक के लिए उसके कामों के अनुसार दर्जे हैं ताकि वह उनके कामों का पूरा–पूरा बदला उनको दे दे और उनके साथ अन्याय न होगा (19) और जिस दिन काफ़िरों को आग के सामने लाया जाएगा (और कहा जाएगा) सब अच्छी चीज़ें तुमने अपने दुनिया के जीवन में उड़ा लीं और उनके ख़ूब मज़े कर लिए बस आज तुम्हें अपमानजनक अज़ाब की सज़ा मिलेगी इसलिए कि तुम धरती में नाहक़ घमण्ड करते रहे थे और इसलिए कि तुम नाफ़रमानी (अवज्ञा) करते रहे थे (20) और आद के भाई का वर्णन कीजिए जब अहक़ाफ़[2] (स्थान) में उन्होंने अपनी क़ौम को डराया! और ऐसे डराने वाले उनसे पहले भी गुज़र चुके हैं और उनके बाद भी–कि मात्र अल्लाह ही की इबादत करो मैं तुम पर बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ (21) वे बोले तुम हमारे पास इस लिए आए हो कि हमें अपने उपास्यों (माबूदों) से फेर दो बस तुम हमसे जिसका वादा करते हो अगर तुम सच्चे ही हो तो वह हमारे सामने ले आओ (22)

---

(1) ऊपर आज्ञाकारी संतान का उल्लेख था, और यहाँ अवज्ञाकारी (नाफ़रमान) मुश्रिक संतान का वर्णन किया जा रहा है (2) हक़्फ़ का बहुवचन अहक़ाफ़ है इसका अर्थ है टेढ़ा–टीला, हज़रत हूद (अलैहिस्सलाम) को क़ौम–ए–आद की ओर भेजा गया था, जो ऐसे क्षेत्र में आबाद थी जहाँ इस प्रकार के टीले बहुत थे, शायद यही कारण हो कि इस क्षेत्र का नाम ''अहक़ाफ़'' पड़ गया हो।

قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّاۤ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيْۤ
اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ۝٢٣ فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ
قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ۭ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ۭ رِيْحٌ
فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٢٤ تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍۢ بِاَمْرِ رَبِّهَا
فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰٓى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ
الْمُجْرِمِيْنَ ۝٢٥ وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَاۤ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ
وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً ڮ فَمَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ
سَمْعُهُمْ وَلَاۤ اَبْصَارُهُمْ وَلَاۤ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ اِذْ
كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٢٦ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى
وَصَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝٢٧ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ
الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ۭ بَلْ ضَلُّوْا
عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٢٨ وَاِذْ صَرَفْنَاۤ
اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ
قَالُوْۤا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ۝٢٩

ع ٣

منزل٦

उन्होंने कहा कि वह ज्ञान तो अल्लाह ही के पास है और मुझे तो जिस संदेश के साथ भेजा गया मैं वह तुम्हें पहुँचा रहा हूँ लेकिन मैं तुम्हें देखता हूँ कि तुम बड़े नादान लोग हो (23) फिर जब उन्होंने उसको बादलों के रूप में अपनी घाटियों की ओर बढ़ते देखा तो बोले यह बादल हैं जो हम पर बरसेंगे, कोई, नहीं यह वह चीज़ है जिसकी तुम्हें जल्दी थी, एक आंधी जिसमें दुखद अज़ाब है (24) जो अपने पालनहार के आदेश से हर चीज़ को उखाड़ फेंकेगी, बस उनका हाल यह होगा कि केवल उनकी बस्तियाँ ही दिखाई पड़ती हैं, अपराधी क़ौम को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं (25) और हमने उनको उन चीज़ों की पकड़ दी थी जो तुम्हें भी नहीं दी और उनको कान, आँखें और दिल दिये थे तो उनके कान उनकी आँखें और उनके दिल जब वे अल्लाह की आयतों का इनकार करने लगे उनके कुछ काम न आ सके और जिस चीज़ का मज़ाक़ वे उड़ाया करते थे वह उन्हीं पर उलट पड़ी (26) और तुम्हारे आस पास जो बस्तियाँ हैं उनको भी हमने नष्ट किया है[1] और हमने आयतें फेर–फेर कर सुनाई हैं ताकि शायद वे लौट आएं (27) फिर उन्होंने क्यों न उनकी मदद की जिनको उन्होंने निकटता प्राप्त करने के लिए अल्लाह के अतिरिक्त उपास्य (माबूद) बना रखा था बल्कि वे सब उनसे हवा हो गये और यह तो उनका झूठ था और (मनगढ़ंत बात थी) जो वे गढ़ा करते थे (28) और जब हमने जिन्नों के एक गिरोह को आपकी ओर आकर्षित (मुतवज्जह) किया कि वे कुरआन सुनें बस जब वे उनके पास पहुँचे तो बोले चुप रहो फिर जब वह पूरा हुआ तो वे अपनी क़ौम के पास सावधान करने वाले बनकर पलटे[2] (29)

(1) इसका आशय सालेह (अलैहिस्सलाम) के मदायन और हज़रत लूत (अलैहिस्सलाम) की बस्तियाँ हैं, जो शाम (सीरिया) के रास्ते में पड़ती थीं और मक्के वाले अधिकतर वहाँ से गुज़रते थे (2) सही मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस से मालूम होता है कि यह घटना मक्के के निकट "नख़्लह" घाटी में घटित हुई, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़ज्र की नमाज़ में तिलावत फ़रमा रहे थे कि जिन्नों का एक गिरोह वहाँ से गुज़रा, उन्होंने पवित्र कुरआन सुना तो वे प्रभावित हुए और इस्लाम स्वीकार किया फिर उनके अनेक प्रतिनिधिमण्डल विभिन्न अवसरों पर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सेवा में उपस्थित होते रहे, सूरह जिन्न में इसकी विस्तृत व्याख्या आएगी।

قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۳۰﴾ يٰقَوْمَنَآ
اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ
مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۳۱﴾ وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي
الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ۭ اُولٰۗىِٕكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۳۲﴾
اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ
بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓي اَنْ يُّحْيِۦ الْمَوْتٰى ۭ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۳۳﴾
وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَي النَّارِ ۭ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ قَالُوْا
بَلٰى وَرَبِّنَا ۭ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۴﴾ فَاصْبِرْ
كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ۭ كَاَنَّهُمْ
يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ۭ
بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۳۵﴾

سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٌ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿۱﴾

منزل ۶

उन्होंने कहा ऐ हमारी क़ौम! हमने एक ऐसी किताब सुनी है जो मूसा के बाद उतरी है, सब पहली किताबों की पुष्टि करती है, सच्चाई की ओर और सीधे रास्ते की ओर मार्गदर्शन करती है (30) ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात स्वीकार कर लो और उस पर ईमान ले आओ, अल्लाह तुम्हारे लिए तुम्हारे पापों को माफ़ कर देगा और दुखद दण्ड से बचा लेगा (31) और जो अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात नहीं मानता तो वह ज़मीन में (कहीं भी जाकर अल्लाह को) हरा नहीं सकता और उसके लिए उसके अतिरिक्त कोई समर्थक नहीं, वही लोग खुली गुमराही में हैं (32) क्या उन्होंने देखा नहीं कि वह अल्लाह जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उनको पैदा करके वह थका नहीं वह इसकी ताक़त रखता है कि मुर्दों को जीवित कर दे, क्यों न हो, वह तो हर चीज़ की पूरी ताक़त रखता है (33) और जिस दिन काफ़िरों को आग का सामना कराया जाएगा (पूछा जाएगा कि) क्या यह सच नहीं है?वे कहेंगे हमारे पालनहार की क़सम क्यों नहीं! अल्लाह तआला कहेंगे बस जो तुम कुफ़्र करते रहे थे उसके बदले में अज़ाब (दण्ड) का मज़ा चखो (34) बस आप तो जमे रहिये जिस तरह महान पैग़म्बर जमे रहे और उनके लिए जल्दी न कीजिए जिस चीज़ से उनको डराया जा रहा है, जिस दिन वे उसको देखेंगे तो (सोचेंगे) कि वे दिन का कुछ भाग ही (दुनिया में) ठहरे[1], बात पहुँचा दी गई बस हलाक वही लोग होंगे जो नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) हैं (35)

सूरह मुहम्मद

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

जिन्होंने इनकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका उसने उनके सब काम बेकार कर दिए[2] (1)

(1) क़यामत का भयानक दृश्य देखने के बाद उन्हें दुनिया का जीवन ऐसे ही मालूम होगा जैसे दिन की एक घड़ी हो, वे यहाँ गुज़ार कर गये हैं
(2) काफ़िर जो भी अच्छे काम करते हैं जैसे लोगों की मदद आदि अल्लाह दुनिया ही में उसका बदला दे देते हैं, आख़िरत में उनके सब काम बेकार हैं, इसलिए कि वहाँ स्वीकार होने के लिए ईमान लाना शर्त है।

और जिन्होंने माना और अच्छे काम किये और जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर उतरा उस पर ईमान लाए जबकि उनके पालनहार की ओर से वही सच है, तो उसने उनकी बुराइयाँ धो दीं और उनकी परिस्थितियाँ संवार दीं (2) यह इसलिए कि इनकार करने वाले असत्य की पीछे चले और जो ईमान लाए वे अपने पालनहार के ओर से (भेजे हुए) सच पर चले, अल्लाह इसी प्रकार लोगों के लिए उदाहरण बयान करता है (3) तो जब इनकार करने वालों से तुम्हारा सामना हो तो गर्दनें मारो यहाँ तक कि जब उनको निढाल कर दो तो बेड़ियाँ कस दो फिर बाद में या तो एहसान करके छोड़ दो या फ़िद्या लेकर[1], यहाँ तक कि युद्ध विराम हो जाए[2] यह इसलिए है कि अल्लाह अगर चाहता तो उन से बदला ले लेता लेकिन (वह चाहता है कि) तुमको एक–दूसरे से आज़माए, और जो भी अल्लाह के रास्ते में क़त्ल होंगे तो वह हरगिज़ उनके काम बर्बाद नहीं करेगा[3] (4) आगे वह उनको राह देगा और उनकी परिस्थितियाँ संवार देगा (5) और उनको ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनसे वह उन्हें परिचित करा चुका[4] (6) ऐ ईमान वालो! तुम अगर अल्लाह (के दीन) की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दमों को जमा देगा (7) और जिन्होंने इनकार किया तो उनके लिए तबाही है और उसने उनके सब काम बर्बाद कर दिये (8) यह इसलिए कि अल्लाह ने जो उतारा उन्होंने उसे नापसंद किया तो अल्लाह ने उनके सब काम बर्बाद कर दिये (9) क्या वे धरती पर चले–फिरे नहीं कि वे देखते कि उनसे पहले वालों का अंजाम क्या हुआ अल्लाह ने उन्हें छिन्न–भिन्न कर दिया और इनकार करने वालों के साथ यही होता है (10) यह इसलिए कि अल्लाह उन लोगों का काम बनाने वाला है जो ईमान लाए और इनकार करने वालों का कोई काम बनाने वाला नहीं (11)

---

(1) बद्र युद्ध के कैदियों को फ़िद्या लेकर छोड़ दिया गया था तो उस पर अल्लाह की ओर से पकड़ हुई थी, और कहा गया था कि उन क़ैदियों को क़त्ल क्यों नहीं किया गया, सूरः अंफ़ाल की आयतों में इसका वर्णन है, इससे लगता था कि शायद यही आदेश आगे भी चलेगा और युद्ध बंदियों को छोड़ना वैद्य न होगा, मगर उल्लेखित इस आयत में स्पष्ट किया जा रहा है कि जब दुश्मन की शक्ति कुचली जा चुकी हो तो बंदियों को फ़िद्या लेकर या बिना फ़िद्ये के ही छोड़ देने में कोई हरज नहीं, बद्र की लड़ाई चूँकि पहली लड़ाई थी और उस समय इसकी अति आवश्यकता थी कि दुश्मन की शक्ति को अच्छी तरह कुचल दिया जाए, ताकि आगे वे दंगों के लिए सिर न उठा सकें, इसलिए उस अवसर पर युद्धबंदियों को छोड़ने पर चेतावनी दी गई थी, अब इस प्रकार युद्धबंदियों के बारे में मुसलमानों को चार अधिकार प्राप्त हैं, हालात को देखकर उसके अनुसार अमल किया जाए:–1– अगर शक्ति तोड़ने की आवश्यकता हो और छोड़ देने में ख़तरे हों तो युद्धबंदियों को क़त्ल किया सकता है 2– अगर छोड़ देने में ख़तरा हो लेकिन क़त्ल की आवश्यकता न हो तो गुलाम बनाया जा सकता है 3– अगर इस प्रकार के ख़तरे न हों तो फ़िद्या देकर छोड़ा जा सकता है 4– या बिना फ़िद्ये के छोड़ा जा सकता है (2) इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि ग़ैर मुस्लिमों को युद्ध की परिस्थिति ही में क़त्ल या गिरिफ़्तार किया जा सकता है, जब युद्धबंदी हो जाए और कोई समझौता कर लिया जाए तो इसको मानना अनिवार्य है (3) दुनिया में जो लोग शहीद हो गये यद्यपि विजय को उन्होंने अपनी आँखों से नहीं देखा लेकिन अल्लाह उनके इस बलिदान का उनको बेहतरीन बदला प्रदान करेगा (4) यानी दुनिया में उनसे ऐसी जन्नतों का वर्णन बार–बार किया जा चुका है।

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا
تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ﴿١٢﴾ وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ
قُوَّةً مِنْ قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجَتْكَ أَهْلَكْنَاهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿١٣﴾
أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّهِ كَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ وَ
اتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ﴿١٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ فِيهَا
أَنْهَارٌ مِنْ مَاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ
مِنْ خَمْرٍ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى ۖ وَلَهُمْ
فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي
النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ﴿١٥﴾ وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ
إِلَيْكَ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ
مَاذَا قَالَ آنِفًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَ
اتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ﴿١٦﴾ وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَآتَاهُمْ
تَقْوَاهُمْ ﴿١٧﴾ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۖ
فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا ۚ فَأَنَّىٰ لَهُمْ إِذَا جَاءَتْهُمْ ذِكْرَاهُمْ ﴿١٨﴾

منزل٦

निश्चित रूप से अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये ऐसी जन्नतों में प्रवेश कराएगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और जिन्होंने इनकार किया वे (यहाँ तो) मज़े कर रहे हैं और ऐसे खाते हैं जैसे जानवर खाएं और आग ही उनका ठिकाना है (12) और कितनी ऐसी बस्तियाँ थीं जो आपकी इस बस्ती से अधिक बलवान थीं जिसने आपको निकाल दिया[1], हमने उनका सर्वनाश कर दिया तो कोई उनका मददगार नहीं (13) भला जो अपने पालनहार की ओर से खुले प्रमाण के साथ हो क्या वह उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जिसके बुरे काम उसके लिए सुन्दर कर दिये गये हों और वे लोग अपनी इच्छाओं पर चलते हों (14) उस जन्नत का हाल जिसका परहेज़गारों से वादा है यह है कि उसमें ऐसे पानी की नहरें हैं जो ख़राब न होने वाला है और ऐसे दूध की नहरें हैं जिसका स्वाद बिल्कुल नहीं बदला और ऐसी शराब की नहरें हैं जो पीने वालों के लिए बहुत ही स्वादिष्ट होंगी और साफ़ सुथरे शहर की नहरें हैं और वहाँ उनके लिए हर प्रकार के फल हैं और आपके पालनहार की ओर से बख़्शिश (गुनाहों की माफ़ी) है, क्या वह उसकी तरह होगा जो हमेशा आग में रहेगा और उनको खौलता पानी पिलाया जाएगा तो वह उनकी आँतों को काट कर रख देगा (15) और उनमें वे भी हैं जो कान लगाकर आपकी बात सुनते हैं फिर जब आपके पास से निकलते हैं तो ज्ञान वालों से पूछते हैं कि इन्होंने अभी क्या कहा[2]?यह वे लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मोहर लगा दी है और वे अपनी इच्छाओं पर चले हैं (16) और जो राह पर आए उसने उनकी सूझबूझ और बढ़ा दी और उनको उन (के हिस्से) की परहेज़गारी प्रदान की (17) फिर क्या वे (मुश्रिक) क़यामत के इंतेज़ार में हैं कि वह अचानक उन पर आ ही पड़े तो उसकी निशानियाँ तो आ ही चुकीं फिर जब वह आ ही पड़ेगी तो उनको कहाँ से अपनी समझ हासिल होगी (18)

(1) संकेत मक्का से आप (सल्ललल्लाहु अलैहि वसल्लम) और मुसलमानों के निकाले जाने की ओर है (2) मज़ाक़ की शैली में इस तरह पूछते हैं जैसे उन्होंने खुद सभा में कुछ सुना ही न हो और न सुनने की कोशिश की हो।

فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَ
الْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ﴿١٩﴾ وَيَقُولُ الَّذِينَ
اٰمَنُوا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ ۚ فَإِذَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيهَا
الْقِتَالُ ۙ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ
الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَأَوْلٰى لَهُمْ ﴿٢٠﴾ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ
فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾ فَهَلْ
عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾
أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمٰى أَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾ أَفَلَا
يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْاٰنَ أَمْ عَلٰى قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا
عَلٰى أَدْبَارِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ
وَأَمْلٰى لَهُمْ ﴿٢٥﴾ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيعُكُمْ
فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾ فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ
الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا
مَا أَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ أَمْ حَسِبَ
الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ أَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ أَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾

منزل ٦

तो जान रखिए कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और अपने कुसूर पर माफ़ी माँगते रहिए[1] और ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों के लिए भी, और अल्लाह तुम्हारी चलत–फ़िरत से और तुम्हारे ठिकाने से अवगत है[2] (19) और ईमान वाले कह रहे थे कि कोई सूरह (जिसमें युद्ध की अनुमति हो) क्यों नहीं उतर आती फिर जब खुली हुई सूरः उतर आई और उसमें युद्ध का उल्लेख हुआ तो आप देखेंगे कि जिनके दिलों में रोग है वे आपको ऐसी (फटी) नज़रों से देखते हैं कि जैसे किसी पर मौत की बेहोशी तारी हो, बस उनके लिए बेहतर यही है (20) कि बात मानें और भली बात कहें फिर जब काम की ताकीद हो तो यही उनके लिए बेहतर है कि वे अल्लाह के साथ सच्चे रहें[3] (21) फिर क्या आशा है कि अगर तुमने मुँह मोड़ा तो तुम ज़मीन में बिगाड़ करो और अपने सम्बन्धों की धज्जियाँ उड़ाओ (22) यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने धिक्कार (लानत) की तो उनको बहरा कर दिया और उनकी आँखों को अंधा कर दिया (23) भला वे कुरआन में विचार नहीं करते या उनके दिलों पर ताले पड़े हैं (24) बेशक जो भी अपने लिए संमार्ग (हिदायत का रास्ता) खुल जाने के बाद भी पीछे की ओर पलटे हैं शैतान ने उनको पट्टी पढ़ाई है और उनको उम्मीदों में रखा है (25) यह इसलिए है कि उन्होंने उन लोगों से कहा जिन्होंने अल्लाह की उतारी चीज़ को नापसंद किया कि आगे कुछ मामलों में हम तुम्हारी ही बात मानेंगे जबकि अल्लाह उनके छिपाने से अवगत है[4] (26) फिर कैसा हाल होगा उनका जब फ़रिश्ते उनको मौत देते समय उनके चेहरों और पीठों पर मार रहे होंगे (27) यह इसलिए कि वे उस चीज़ के पीछे चले जो अल्लाह को नाराज़ करने वाली है और उन्होंने उसकी ख़ुशी को पसंद न किया तो अल्लाह ने उनके सब काम बेकार कर दिये (28) क्या वे लोग जिनके दिलों में रोग है यह समझते हैं कि अल्लाह उनके भीतर के कीने (द्वेष) को बिल्कुल प्रकट न करेगा (29)

---

(1) आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मासूम हैं, आप से गुनाह होने की संभावना ही नहीं, यहाँ पर माफ़ी माँगने का आदेश उनकी प्रतिष्ठा को और बुलन्द करने के लिए और मुस्लिम समुदाय को शिक्षा देने के लिए दिया जा रहा है (2) यानी तुम्हारे दिन–रात के कामों से आराम की जगहों से ख़ूब अवगत है (3) मदीना शरीफ़ आने के बाद ईमान वालों की तीव्र इच्छा थी कि जिहाद की अनुमति मिले, मुनाफ़िक़ भी देखा देखी कभी इस इच्छा का इज़्हार कर दिया करते थे, फिर जब जिहाद की आयतें उतरीं तो मुनाफ़िक़ों के मुँह उतर गये, और उनकी सारी क़लई खुल गई, अल्लाह फ़रमाता है कि ज़बानी वादों से क्या लाभ है, आज्ञापालन भी हो, अच्छी बात भी कही जाए और जब किसी चीज़ का आदेश दिया जाए तो उस पर पूरा अमल हो और अल्लाह से किये गये वादे को सच्चा कर दिखाया जाए, फिर आगे एक चेतावनी भी है कि तुम जैसे मुनाफ़िक़ों (अनेकेश्वरवादियों) को अगर जिहाद के फलस्वरूप सत्ता मिल भी जाए तो तुम से भलाई की आशा कब है, तुम तो सुधार के बजाय बिगाड़ का साधन बनोगे और सम्बन्धों की धज्जियाँ बिखेरोगे (4) यहां भी मुनाफ़िक़ों का उल्लेख है जो यहूदियों और मुश्रिकों से भीतर–भीतर साठ–गाँठ करते रहते थे, आगे अल्लाह कहता है कि तुम्हारी यह गुप्त कोशिशें ज़्यादा दिनों तक छिपने वाली नहीं है अल्लाह जब चाहेगा सब प्रकट कर देगा, फिर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सम्बोधित करते हुए कहा जा रहा है कि आप विचार करेंगे तो इन मुनाफ़िक़ों के ढंग से उनकी हरकतों का अंदाज़ा कर लेंगे।

وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ
الْقَوْلِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ﴿۳۰﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ
مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا اَخْبَارَكُمْ ﴿۳۱﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا
تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ﴿۳۲﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْۤا
اَعْمَالَكُمْ ﴿۳۳﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ
مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ﴿۳۴﴾ فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْۤا اِلَى
السَّلْمِ ۖۗ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖۗ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ﴿۳۵﴾
اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ
اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ﴿۳۶﴾ اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا
وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ﴿۳۷﴾ هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۗ
وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا
غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْۤا اَمْثَالَكُمْ ﴿۳۸﴾

منزل ٦

और अगर हम चाहें तो उन सबको आपको दिखा दें फिर आप उनको ज़रूर उनके चिन्हों से पहचान जाएं और बात के ढब से आप उनको ज़रूर पहचान लेंगे और अल्लाह तुम्हारे सब कामों को जानता है (30) और हम तुम्हें ज़रूर आज़माएंगे यहाँ तक कि हम तुम में जिहाद करने वालों और सब्र करने वालों को जान लें और तुम्हारे हालात की जाँच–पड़ताल कर लें (31) बेशक जिन्होंने इनकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका और अपने पास राह–ए–हिदायत (संमार्ग) आने के बाद भी पैग़म्बर से दुश्मनी की वे हरगिज़ अल्लाह को नुक़सान नहीं पहुँचा सकते और वह उनके सारे काम बेकार कर देगा (32) ऐ वे लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह की बात मानो और पैग़म्बर की बात मानो और अपने कामों को बर्बाद मत करो (33) बेशक जिन्होंने इनकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका फिर वे इनकार ही की हालत में मर गए तो अल्लाह हरगिज़ उनको माफ़ न करेगा (34) बस तुम कमज़ोर न पड़ जाओ कि सुलह की दुहाई देने लगो[1] और तुम्ही बुलंद हो और अल्लाह तआला तुम्हारे ही साथ है और वह तुम्हारे कामों की काट–छाँट नहीं करेगा[2] (35) यह दुनिया का जीवन तो बस खेल–तमाशा है और अगर तुम ईमान लाओगे और बचकर चलोगे तो वह तुम्हें तुम्हारा बदला दे देगा और तुमसे तुम्हारे माल का सवाल नहीं करेगा (36) अगर वह तुमसे माल मांगे फिर सब समेट ले तो तुम कंजूसी करने लगोगे और वह तुम्हारे भीतर का लावा बाहर कर देगा[3] (37) देखो तुम वे लोग हो कि तुम्हें अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के लिए बुलाया जाता है तो तुम में कुछ लोग नहीं देते और जो नहीं देता वह अपने आपको नहीं देता और अल्लाह को कोई ज़रूरत नहीं है और तुम्हें आवश्यकता है और अगर तुम पलट जाओगे तो वह तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम को पैदा कर देगा फिर वह तुम्हारी तरह (निकम्मी) न होगी[4] (38)

(1) मतलब यह है कि कायरता की वजह से सुलह न करो, वरना कुरआन मजीद ने खुद सुलह की अनुमति दे दी है, सूरः अंफ़ाल में है कि अगर वे सुलह की ओर झुकें तो तुम भी झुक जाओ, किसी लाभ के कारण सुलह की जा रही हो तो इसकी अनुमति है (2) यानी तुम दीन (धर्म) के लिए जो भी प्रयास करोगे वह बेकार नहीं जाएगा, दुनिया में भी अल्लाह सम्मान प्रदान करेगा और अगर दुनिया में उसके परिणाम न भी निकलें तो भी तुम्हें उसका पूरा–पूरा सवाब (पुण्य) मिलेगा, अल्लाह तआला इसमें कोई कमी नहीं करेगा (3) अगर कुल धन को ख़ैरात कर देने का आदेश आ जाए तो भी आज्ञाकारिता की माँग यह थी कि इस पर अमल किया जाए मगर अल्लाह को मालूम है कि इसको बर्दाश्त न कर सकोगे और भीतर के सब गुस्से खुलकर सामने आ जाएंगे, इसलिए अल्लाह की कृपा हुई कि वह तुम्हारे कुछ धन को ख़र्च करने का आदेश दे रहा है जिसका लाभ तुम्हीं को लौटेगा, जिहाद में ख़र्च होगा और अल्लाह की ओर से विजय प्राप्त होगी तो माल–ए–ग़नीमत (शत्रु–धन) तुम्हें प्राप्त होगा और आख़िरत में इसका बदला निश्चित है, बस अगर तुम कंजूसी करोगे तो इसका नुक़सान खुद तुम्हीं को होगा (4) दीन (धर्म) अल्लाह को प्रिय है, इसकी रक्षा होनी है तुम अगर अपने आपको इससे सम्बद्ध करोगे तो तुम्हारी भी रक्षा होगी वरना अल्लाह तआला दूसरी क़ौम को तुम्हारी जगह खड़ा कर देगा और उससे दीन की रक्षा का काम लेगा।

سُوْرَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ﴿۱﴾ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَ
مَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۲﴾ وَّ
يَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ﴿۳﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ
قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ؕ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۴﴾ لِّيُدْخِلَ
الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا
عَظِيْمًا ﴿۵﴾ وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَ
الْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَ
غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿۶﴾
وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۷﴾
اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿۸﴾ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿۹﴾

منزل ۶

सूरह फ़तह्

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

निश्चित रूप से हमने आपको खुली विजय प्रदान की है[1] (1) ताकि अल्लाह आपकी अगली पिछली सब भूल–चूक माफ़ कर दे और ताकि अपनी नेमत आप पर पूरी कर दे और आपको सीधी राह पर चला रखे (2) और ताकि अल्लाह आपकी ज़बरदस्त मदद करे (3) वही है जिसने ईमान वालों के दिलों में सुकून[2] उतारा ताकि उनके ईमान में और ईमान की बढ़ोतरी हो और आसमानों और ज़मीन की सेनाएं अल्लाह ही के लिए हैं और अल्लाह ख़ूब जानता हिकमत (युक्ति) रखता है (4) ताकि वह ईमान वालों और ईमान वालियों को ऐसी जन्नतों में प्रवेश कराए जिनके नीचे नहरें बह रही हों, हमेशा उसी में रहने के लिए और उनसे उनकी ग़लतियों को धो दे और अल्लाह के यहाँ यही बड़ी सफ़लता है (5) और ताकि वह मुनाफ़िक़ मर्दों और औरतों और शिर्क करने वालों और शिर्क करने वालियों को दण्डित करे जो अल्लाह से बुरा गुमान करने वाले हैं, उन्हीं पर है मुसीबत का चक्कर[3], अल्लाह उन पर गुस्सा हुआ और उनको धिक्कारा और उनके लिए दोज़ख़ तैयार की और वह बुरा ठिकाना है (6) और आसमानों और ज़मीन की सेनाएं अल्लाह ही की हैं और अल्लाह ज़बरदस्त है हिकमत (युक्ति) वाला है (7) बेशक हमने आपको गवाही देने वाला और शुभ समाचार सुनाने वाला और ख़बरदार करने वाला बनाकर भेजा है (8) ताकि तुम अल्लाह पर और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसका आदर करो और सुबह–शाम अल्लाह की पाकी बयान करो (9)

(1) यह आयत सुलह हुदैबिया के अवसर पर उतरी, जब मुसलमान हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ उमरह की नीयत से पवित्र मक्का रवाना हुए मगर जब आप हुदैबिया के स्थान पर पहुँचे तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मालूम हुआ कि मुश्रिकों ने बड़ी सेना तैयार कर रखी है, सही जानकारी के लिए आपने हज़रत उस्मान (रज़ियल्लाहु अन्हु) को भेजा, इधर यह अफ़वाह उड़ गई कि हज़रत उस्मान (रज़ियल्लाहु अन्हु) शहीद कर दिये गये, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सारे मुसलमानों से एक पेड़ के नीचे प्राणों की आहुति का संकल्प लिया, जिसको "बैअत–ए–रिज़वान" कहते हैं, बाद में मालूम हुआ कि अफ़वाह ग़लत थी, फिर आपने मुश्रिकों के सामने एक अवधि तक के लिए युद्धबंदी के समझौते का प्रस्ताव रखा जिसको उन्होंने बड़ी कठोर शर्तों के साथ स्वीकार किया जिसमें यह भी था कि मुसलमान इस साल उमरह नहीं करेंगे और अगर कोई मक्के से मुसलमान होकर मदीने जाएगा तो उसको वापस करना होगा और अगर कोई मदीने से मक्का जाना चाहेगा तो उसको वापस नहीं किया जाएगा, यह लगभग एक पक्षीय शर्तें थीं जो मुसलमानों पर बहुत कठिन गुज़री किन्तु उन्होंने सब्र व संतोष से काम लिया और पूरा आज्ञापालन किया, उनकी कार्य शैली की बड़ी प्रशंसा इस सूरह में की गई है, ऐसी कठिन परिस्थितियों में विजय की भविष्यवाणी विचित्र मालूम हो रही थी, किन्तु तीन सालों के भीतर अल्लाह ने जिस प्रकार इस्लाम को हर लिहाज़ से विजय प्रदान किया वह हर प्रकार से "खुली जीत" थी, एक ओर तो मुश्रिकों को अवसर मिला कि उन्होंने मुसलमानों को क़रीब से देखा, इसके फलस्वरूप इतनी बड़ी संख्या में लोग मुसलमान हुए जो अब तक नहीं हुए थे, दूसरी ओर इस दस वर्षीय समझौते को क़ुरैश ने तीन सालों में तोड़ दिया, जिसके परिणाम स्वरूप हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मक्के की ओर कूच किया और इतनी शक्ति के साथ चढ़ाई की कि मक्का वालों ने हथियार डाल दिये और इस्लाम में भारी संख्या में लोग प्रवेश करने लगे (2) सुलह की शर्तों से मुसलमान बहुत दुखी थे मगर अल्लाह ने उसको शांति प्रदान की (3) काफ़िरों ने सुलह की शर्तें अपने फ़ायदे के लिए रखीं मगर सब उलटी पड़ीं, ⇒

إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ
فَمَن نَّكَثَ فَإِنَّمَا يَنكُثُ عَلَىٰ نَفْسِهِ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهُ
اللَّهَ فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٠﴾ سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ
الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا يَقُولُونَ
بِأَلْسِنَتِهِم مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ لَكُم مِّنَ
اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١١﴾ بَلْ ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَنقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ
إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزُيِّنَ ذَٰلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ
وَكُنتُمْ قَوْمًا بُورًا ﴿١٢﴾ وَمَن لَّمْ يُؤْمِن بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا
أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ﴿١٣﴾ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٤﴾
سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوهَا
ذَرُونَا نَتَّبِعْكُمْ يُرِيدُونَ أَن يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ قُل لَّن
تَتَّبِعُونَا كَذَٰلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِن قَبْلُ فَسَيَقُولُونَ
بَلْ تَحْسُدُونَنَا بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٥﴾

ع ١

منزل ٦

निश्चित रूप से जो लोग आप से बैअत कर रहे हैं वे वास्तव में अल्लाह से बैअत कर रहे हैं, अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर है फिर जो (इसको) तोड़ देगा वह अपने ही बुरे के लिए तोड़ेगा और जो इस संकल्प को पूरा करे जो उसने अल्लाह से किया है तो आगे अल्लाह उसको बड़ा बदला देने वाला है[1] (10) पीछे रह जाने वाले बद्दू अब आप से कहेंगे कि हम अपने मालों और घर वालों में लगे रह गये तो आप हमारे लिए माफ़ी माँग दीजिए, अपनी ज़बानों से वे बातें कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है, कह दीजिए कि अगर अल्लाह ही ने तुम्हें तकलीफ़ देने का इरादा कर लिया हो या तुम्हें फ़ायदा पहुँचाने का इरादा कर लिया हो तो कौन है जो अल्लाह के दरबार में तुम्हारे लिए कुछ करने का अधिकार रखता हो?! बल्कि अल्लाह तो तुम जो कुछ करते हो उसकी पूरी ख़बर रखता है (11) बात यह है कि तुमने तो यह समझा था कि अब रसूल और ईमान वाले कभी अपने घर वालों के पास वापस लौट कर न आ ही सकेंगे और यह बात तुम्हें मन में भली लगती थी और तुमने बुरे गुमान क़ायम कर रखे थे और तुम थे ही बर्बाद लोग[2] (12) और जो भी अल्लाह और उसके पैग़म्बर को न मानेगा तो निश्चित रूप से हमने इनकार करने वालों के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है (13) और आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है जिसको चाहे माफ़ करे और जिसको चाहे दण्डित करे और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है (14) जब तुम लोग माल–ए–ग़नीमत लेने जाओगे तो आपसे पीछे रह जाने वाले अब कहेंगे हमें भी अपने साथ चलने दो[3], वे चाहते हैं कि अल्लाह की बात बदले दें,[4] कह दीजिए तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं आ सकते, इसी प्रकार पहले भी अल्लाह कह चुका है फिर अब वे कहेंगे कि बल्कि तुम हमसे जलते हो, बात यह है कि वे बहुत कम समझ रखते हैं (15)

⟹ मुसलमानों में कोई दीन छोड़कर मक्का नहीं गया और जो मुसलमान होकर मदीने आए उनको शर्त के अनुसार आपने वापस कर दिया तो उन्होंने मक्के से कुछ दूरी पर एक जगह बनाई और धीरे–धीरे वहाँ एक दल इकट्ठा हो गया, उन्होंने मक्का के लोगों को इतना तंग किया कि अंततः उन्होंने यह आग्रह किया कि मुसलमान होने वालों को आप सल्ल0 मदीने बुलवा लें हम इस शर्त को छोड़ते हैं, और भी आगे के हालात सब यह बताते हैं कि किस प्रकार उन पर विपदाओं का चक्कर चला जिसने अंततः उनकी सबसे बड़ी शक्ति जो मक्के में थी उसको तोड़ दिया।

(1) यह उस बैअत–ए–रिज़वान का उल्लेख है जो हज़रत उस्मान की शहादत की ख़बर मशहूर होने पर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ली थी। (2) हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जब सुलह–ए–हुदैबिया के अवसर पर उमरह के लिए निकले थे तो आम ऐलान कर दिया था, अतः देहात के भी सच्चे मुसलमान साथ थे लेकिन जो उनमें मुनाफ़िक़ थे उन्होंने जाने से परहेज़ किया और सोचा कि वहाँ जंग की भी सम्भावना है और हो सकता है कि मक्के के लोग इन सबका काम ही तमाम कर दें और भीतर ही भीतर खुश भी होते थे लेकिन जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) वापस आए तो वो आ–आकर बहाने करने लगे (3) अल्लाह तआला ने सुलह–ए–हुदैबिया के अवसर पर मुसलमानों के सब्र के फलस्वरूप मक्का विजय से पहले एक विजय का वादा किया जिसका उल्लेख इसी सूरह में आगे आ रहा है तो जब मुसलमान ख़ैबर के लिए निकलने लगे तो उनको उसमें अल्लाह के वादे के अनुसार विजय का विश्वास था, इस अवसर पर उन मुनाफ़िक़ों (कपटियों) ने भी साथ जाना चाहा, वे भी समझ रहे थे कि उसमें बहुत माले ग़नीमत (शत्रु–धन) मिलेगा इस आयत में उसका उल्लेख है (4) अल्लाह ने वह्य के द्वारा आपको बता दिया था कि ख़ैबर की जंग में केवल वही लोग भाग लेंगे जिन्होंने हुदैबिया में भाग लिया था, अल्लाह की ⟹

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِىْ بَاْسٍ
شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا
حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶﴾
لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ
حَرَجٌ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۷﴾ لَقَدْ رَضِىَ اللّٰهُ عَنِ
الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِىْ قُلُوْبِهِمْ
فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿۱۸﴾ وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً
يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۹﴾ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ
كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِىَ النَّاسِ
عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۲۰﴾
وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرًا ﴿۲۱﴾ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا
الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۲۲﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِىْ
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿۲۳﴾

منزل ٦

उन पीछे रह जाने वाले बद्दुओं से कह दीजिए कि जल्द तुमको एक बड़ी योद्धा क़ौम के लिए बुलाया जाएगा तुम्हें उन से उस समय तक लड़ना होगा जब तक कि वे इताअत (आज्ञाकारिता) स्वीकार नहीं कर लेते तो अगर तुम बात मानोगे तो अल्लाह तुम्हें बेहतर बदला प्रदान करेगा और अगर उसी प्रकार पलट गये जैसे पहले पलट चुके हो तो वह तुम्हें दुखद दण्ड देगा[1] (16) अंधे के लिए कोई हरज नहीं और न लंगड़े के लिए हरज है और न बीमार के लिए हरज है और जो भी अल्लाह और उसके रसूल की बात मानेगा अल्लाह उसको ऐसी जन्नतों में प्रवेश कराएगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी और जो मुँह मोड़ेगा उसको दुखद दण्ड देगा (17) अल्लाह उन ईमान लाने वालों से खुश हो गया जब वे पेड़ के नीचे आप से बैअत कर रहे थे तो उसने उनके दिलों को परख लिया फिर उन पर सुकून उतारा और क़रीब ही एक विजय उनको इनाम में दी[2] (18) और बहुत सा माले ग़नीमत भी जो उनके हाथ आएगा और अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हिकमत (युक्ति) वाला है (19) अल्लाह ने तुमसे बहुत माले ग़नीमत का वादा किया है[3] जिसे तुम लोग, बस यह (विजय) तो अल्लाह ने तत्काल प्रदान कर दी और लोगों के हाथों को तुमसे[4] रोक दिया ताकि वह ईमान वालों के लिए एक निशानी हो और ताकि वह तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाता रखे (20) और एक और (विजय) जो तुम्हारे निमंत्रण में न आई वह अल्लाह के नियंत्रण में है और अल्लाह हर चीज़ पर पूरा सामर्थ्य रखता है[5] (21) और अगर काफ़िर तुम से लड़ते तो ज़रूर पीठ दिखा कर भागते फिर न उनको कोई समर्थक मिलता न मददगार (22) यह अल्लाह का बनाया नियम है पहले से चला आता है और आप अल्लाह के नियम में कोई परिवर्तन न पाएंगे (23)

⟹ इसी बात की ओर इशारा है कि वह बदली नहीं जा सकती इसलिए तुम साथ नहीं चल सकते, यह वह बात थी जिसका उल्लेख अभी तक पवित्र क़ुरआन में न उतरा था बल्कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अल्लाह के आदेश से यह बात कही थी जिसको पारिभाषिक शब्दों में हदीस कहते हैं, इसके बावजूद इसको "कलिमतुल्लाह" (अल्लाह की बातें) कहा गया, इससे यह चीज़ भी साफ़ हो गयी कि हदीस भी वास्तव में अल्लाह ही के आदेश का भाग है और उस पर भी उसी प्रकार चलना ज़रूरी है जिस प्रकार पवित्र क़ुरआन पर।

(1) उन बद्दुओं (देहातियों) से कहा जा रहा है कि इस अवसर पर तुम्हें भाग लेने की अनुमति नहीं हाँ! आगे बड़े–बड़े ग़ज़्वे और युद्ध होने हैं उनमें तुम्हारी परीक्षा होगी, अगर तुम सच्चे हो तो उनमें भाग लेना, इसका तुम्हें दीन व दुनिया में बदला मिलेगा और अगर वही पुराना हाल रहा तो उसकी सज़ा तुम्हें भुगतनी पड़ेगी, अतः आगे चलकर उनमें बहुत से लोगों ने तौबा कर ली और सच्चे–पक्के मुसलमान बन गये और कुछ उसी पुराने डगर पर क़ायम रहे (2) यह उसी सत्यनिष्ठापूर्ण और त्याग से परिपूर्ण 'बैअत–ए–रिज़वान' का उल्लेख है जिसके परिणाम स्वरूप अल्लाह ने एक क़रीबी विजय का पुरस्कार दिया, जिसका आशय ख़ैबर की विजय है, जिसके परिणाम स्वरूप एक बड़े ख़तरे को जो उन यहूदियों की ओर से लगा रहता था रोक दिया गया और माल–ए–ग़नीमत भी प्राप्त हुआ (3) इसका आशय ख़ैबर के अतिरिक्त ग़ज़्वे हैं जिनमें मुसलमानों को माले ग़नीमत प्राप्त हुआ। (4) यहूदियों के हाथ भी रोक दिये और मक्के के मुश्रिकों के भी (5) यह मक्का–विजय की ओर इशारा है जो आगे होनी थी इसमें इसको भी स्पष्ट किया गया है कि अगर उसी समय मुक़ाबला होता तो भी मुसलमानों ही को विजय प्राप्त होती किन्तु बहुत से भेदों व राज़ के कारण अल्लाह का आदेश नहीं हुआ, जिसमें एक फ़ायदा यह भी था जिसका उल्लेख आगे आता है कि युद्ध के कारण मक्के में क़ैद बहुत से मुसलमान मर्द व औरत भी पिसकर रह जाते, अल्लाह उनकी सुरक्षा चाहता था ⟹

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُم بِبَطْنِ مَكَّةَ
مِن بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿٢٤﴾
هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ
مَعْكُوفًا أَن يَبْلُغَ مَحِلَّهُ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ مُّؤْمِنَاتٌ
لَّمْ تَعْلَمُوهُمْ أَن تَطَئُوهُمْ فَتُصِيبَكُم مِّنْهُم مَّعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ
لِّيُدْخِلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٢٥﴾ إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي
قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ
عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَ
كَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٢٦﴾
لَّقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّؤْيَا بِالْحَقِّ ۖ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ
الْحَرَامَ إِن شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ مُحَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ
لَا تَخَافُونَ ۖ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِن دُونِ ذَٰلِكَ فَتْحًا
قَرِيبًا ﴿٢٧﴾ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿٢٨﴾

ع ٣

منزل٧

और वही है जिसने मक्के की घाटी में तुमको उन पर सफ़लता देने के बाद उनके हाथों को तुम से और तुम्हारे हाथों को उन से रोक दिया[1] और तुम जो कर रहे थे अल्लाह उसको देख रहा था (24) वही है जिन्होंने कुफ़्र किया और तुम्हें मस्जिद–ए–हराम से रोका और क़ुर्बानी के जानवरों को जो ठहरे हुए थे अपनी जगह पहुँचने से (रोका) और अगर कुछ मुसलमान पुरुष और मुसलमान महिलाएं (मक्के में) न होतीं जिनको तुम जानते नहीं कि तुम उनको जानकारी के अभाव में रौंद डालते फिर उनका वबाल तुम पर पड़ता (तो युद्ध अभी अभी हो जाता मगर देर इसलिए की गई) ताकि अल्लाह अपनी दया[2] में जिसको–जिसको चाहे शामिल कर ले, अगर वे अलग हो जाते तो हम उनमें काफ़िरों को ज़रूर सख़्त मार मारते (25) जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद की ठान ली (और) ज़िद भी अज्ञानता की[3] तो अल्लाह ने अपने रसूल पर और ईमान वालों पर सुकून उतारा और उनको परहेज़गारी की बात पर रखा और वे इसी के अधिक हक़दार और इसके पात्र थे और अल्लाह हर चीज़ से ख़ूब अवगत है (26) अल्लाह ने अपने रसूल को बिल्कुल ठीक–ठीक सच्चा ही सपना दिखाया है कि अल्लाह ने चाहा तो तुम इत्मिनान के साथ मस्जिद–ए–हराम में प्रवेश करके रहोगे अपने सिरों को मुंडाए हुए[4] और बालों को कतरवाए हुए, तुम्हें कुछ डर न होगा बस जो बात तुम नहीं जानते उसको वह मालूम थी तो उसने उसके पीछे क़रीब ही एक विजय भी निर्धारित कर दी[5] (27) वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत (संमार्ग) और सच्चे दीन (धर्म) के साथ भेजा ताकि उसको हर धर्म पर ग़ालिब कर दे और अल्लाह ही गवाही के लिए काफ़ी है (28)

⟹ दूसरा फ़ायदा यह भी था कि सुलह के नतीजे में मुसलमानों को साफ़–सुथरा जीवन और उनकी भूमिका का श्रेष्ठ आदर्श मुश्रिकों के सामने आया जिसका पहले उनको आमतौर पर अनुभव नहीं था जिसके परिणाम स्वरूप इस्लाम प्रचार का एक बड़ा दरवाज़ा खुल गया, "शाम विजेता" हज़रत ख़ालिद पुत्र वलीद और "मिस्र विजेता" हज़रत अम्र पुत्र आस का इस्लाम स्वीकार करना इसी समय की यादगार है।

(1) जिस समय हज़रत उस्मान (रज़ियल्लाहु अन्हु) दूत बनकर पवित्र मक्का गये उसी समय मुश्रिकों ने पचास आदमी इस मक़सद से हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास भेजे कि वे गुप्त रूप से हमला करके (अल्लाह की पनाह) आपको शहीद कर दें, मगर वे लोग गिरफ़्तार कर लिए गए, दूसरी ओर क़ुरैश ने उन आदमियों की गिरफ़्तारी की ख़बर सुनी तो हज़रत उस्मान और उनके साथियों को रोक लिया, उस समय अगर मुसलमान उन पचास आदमियों को क़त्ल कर देते तो जवाब में मुश्रिक हज़रत उस्मान और उनके साथियों को शहीद कर देते और फिर जंग छिड़ जाती लेकिन मुसलमानों के दिलों में अल्लाह ने यह बात डाली कि वे क़ैदियों को क़त्ल न करें जबकि वे क़ाबू में आ चुके थे, दूसरी ओर मुश्रिकों पर रौब डाल दिया तो वे सुलह पर तैयार हो गये, इस प्रकार अल्लाह ने दोनों को जंग से रोक दिया (2) जंग न होने की यह दो वजहें और फ़ायदे बयान किये गये जिसका विवरण फ़ुटनोट में भी अभी गुज़र चुका है, अल्लाह की रहमत उन सारे लोगों पर हुई जो इस सुलह की अवधि में इस्लाम लाए (3) समझौते का अनुलेख (इबारत) लिखने में यह बात कई बार पेश आई जैसे जब उसमें मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) लिखा गया तो उनको आपत्ति हुई और उन्होंने मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह लिखने पर ज़िद की, सहाबा को स्वाभाविक रूप से इस चीज़ पर गुस्सा आया लेकिन अल्लाह ने उनको सुकून प्रदान किया और तक़्वे पर क़ायम रखा कि उन्होंने पूर्णरूप से आपका हर अवसर पर आज्ञा पालन किया इसीलिए आयत में उनकी प्राकृतिक योग्यता की गवाही दी जा रही है और इस प्राकृतिक योग्यता की वजह से उन पर अल्लाह के विशेष पुरस्कार का उल्लेख किया जा रहा है (4) उमरह पर आने से पहले ⟹

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ
تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ۖ سِيْمَاهُمْ فِيْ
وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ۚ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۚ وَمَثَلُهُمْ فِي
الْاِنْجِيْلِ ۚ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى
عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۗ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۲۹﴾

سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانِ عَشْرَةَ اٰيَةً وَفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَ
اتَّقُوا اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا
اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ
بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿۲﴾ اِنَّ
الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ۚ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۳﴾ اِنَّ
الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۴﴾

منزل ۶

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं[1] और जो लोग उनके साथ हैं वे इनकार करने वालों के मुक़ाबले बलवान हैं आपस में मेहरबान हैं आप उन्हें रुकूअ़ और सज्दे करते देखेंगे, अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) और ख़ुशी चाहते हैं, उनके चिन्ह सज्दों के असर से उनके चेहरों पर प्रकट हैं, उनका यह उदाहरण तौरेत में है[2] और इंजील में उनका उदाहरण यह है जैसे खेती हो जिसने अखुवा निकाला फिर उसको मज़बूत किया फिर वह मोटा हुआ फिर अपने तने पर खड़ा हो गया, खेती करने वालों को भाने[3] लगा ताकि वह उनसे इनकार करने वालों को झल्ला दे, उनमें से जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये उनसे अल्लाह ने मग़फ़िरत (क्षमादान) और महान बदले का वादा कर रखा है (29)

सूरह हुजुरात

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके पैग़म्बर से आगे मत हुआ करो, और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह ख़ूब सुनता, ख़ूब जानता है (1) ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ों को पैग़म्बर की आवाज़ से ऊंची मत किया करो, और जिस तरह तुम एक दूसरे को ज़ोर–ज़ोर से पुकारते हो उस तरह पैग़म्बर को ज़ोर से मत पुकारा करो कि कहीं तुम्हारे सब काम बेकार चले जाएं और तुम्हें एहसास भी न हो (2) बेशक जो लोग अपनी आवाज़ों को अल्लाह के पैग़म्बर के सामने नीचा रखते हैं, यही वे लोग हैं जिनके दिल अल्लाह ने तक़्वे के लिए परख लिए हैं, उनके लिए मग़फ़िरत (माफ़ी) है और बड़ा बदला है[4] (3) बेशक जो लोग आपको कमरों के बाहर से आवाज़ देते हैं उनमें अधिकांश समझते नहीं (4)

⇒ हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सपना देखा था कि आप सहाबा के दल के साथ उमरह कर रहे हैं, सुलह के परिणाम स्वरूप उस साल उमरह न हो सका तो कुछ लोगों के दिमाग़ में सवाल पैदा हुआ कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का सपना वह्य का मक़ाम रखता है तो बिना उमरह के वापस जाना उचित नहीं है, इस आयत में उसका जवाब दिया जा रहा है कि सपना तो सच्चा ही था मगर उस समय निर्धारित नहीं किया गया था, वह जल्द ही पूरा होगा, अतः अगले साल आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सहाबा के साथ इत्मिनान से उमरह अदा किया (5) यानी ख़ैबर विजय।

(1) हुदैबिया की सुलह में काफ़िरों ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आगे रसूलुल्लाह ज़िद करके मिटवा दिया था और पुत्र अब्दुल्लाह लिखवा दिया था, इस आयत में मुहम्मद रसूलुल्लाह कहकर यह इशारा है कि काफ़िर चाहे जितना ही इनकार करें सच्चाई नहीं बदल सकती (2) असंख्य परिवर्तनों के बावजूद तौरेत में आज भी यह वाक्य मौजूद है "वह फ़ाराँ पहाड़ से प्रकट हुआ और लाखों फ़रिश्तों में से आया और उसके दाहिने हाथ पर उनके लिए अग्निमय शरीयत थी, वह बेशक क़ौमों से प्रेम रखता है" (इस्तिस्ना/23–2, किताबे मुक़द्दस पृष्ठ/201) (3) इंजील के शब्द देखिए "ख़ुदा की बादशाही ऐसी है जैसे कोई आदमी ज़मीन में बीज डाले और रात को सोए और दिन को जागे और वह बीज इस प्रकार उगे और बढ़े कि वह न जाने, ज़मीन आप से आप फल लाती है, पहले पत्ती फिर बालें फिर बालों में तैयार दाने" (4) तमीम क़बीले का प्रतिनिधि मण्डल आया तो दोपहर का समय था, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) घर पर आराम कर रहे थे, प्रतिनिधि मण्डल के कुछ लोगों ने पहुँचते ही आपको ज़ोर–ज़ोर से पुकारना शुरु कर दिया था, उस पर इस आयत में चेतावनी दी गई है ⇒

और अगर वे सब्र करते यहाँ तक कि आप (ख़ुद ही) उनके पास निकल कर आ जाते तो यह उनके लिए बेहतर था, और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, बहुत ही दयावान है (5) ऐ ईमान वालो! अगर कोई फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए तो अच्छी तरह जाँच लो कि कहीं तुम नादानी में किसी क़ौम को नुक़सान पहुँचा बैठो, फिर तुम्हें अपने किये पर पछतावा हो[1] (6) और जान लो कि अल्लाह के रसूल तुममें मौजूद हैं, अगर वे अधिकांश चीज़ों में तुम्हारी बात मानेंगे तो तुम मुश्किल में पड़ जाओगे, लेकिन अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए ईमान में शौक़ पैदा कर दिया और तुम्हारे दिलों में उसे सजा दिया और इनकार और गुनाह व पाप से विमुख (बेज़ार) किया, यही लोग हैं जो सीधे रास्ते पर हैं (7) सिर्फ़ अल्लाह के फ़ज़्ल (कृपा) और उसके इनआम से, और अल्लाह ख़ूब जानने वाला, हिकमत वाला है[2] (8) और अगर ईमान वालों में दो पक्ष आपस में लड़ पड़ें तो उन दोनों में मेल–मिलाप करा दो, फिर अगर उनमें से एक दूसरे पर अत्याचार करे तो अत्याचार करने वाले से लड़ो यहाँ तक कि वह अल्लाह के आदेश के लिए झुक जाए, तो अगर वह झुक जाता है तो फिर दोनों में बराबरी से सुलह करा दो और न्याय से काम लो, निःसंदेह अल्लाह तआला इन्साफ़ करने वालों को पसंद करता है[3] (9) सारे ईमान वाले भाई–भाई हैं तो अपने दोनों भाइयों के बीच सुलह को क़ायम रखो, और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम पर रहमत (दया) हो (10) ऐ ईमान वालो! कोई क़ौम दूसरी क़ौम का मज़ाक़ न उड़ाए, हो सकता है वे उनसे बेहतर हों और न महिलाएं महिलाओं का मज़ाक़ उड़ाएं, हो सकता है वे उनसे बेहतर हों, और एक दूसरे पर ऐब न लगाओ और न बुरे नामों से पुकारो, ईमान के बाद गुनाह का नाम ही बुरा है, और जिन्होंने तौबा नहीं की वे ही अन्यायी हैं (11)

⟹ और क्योंकि आयतों में शब्द आम हैं इसलिए पूरी उम्मत (मुस्लिम समुदाय) को यह आम शिक्षा दी गई है कि किसी भी मामले में कोई आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से आगे न बढ़े यहाँ तक कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आवाज़ पर किसी और की आवाज़ बुलन्द न हो और सख़्त वार्निंग दे दी गई कि आपकी शान में कोई अनादरता ईमान को ख़त्म कर सकती है।

(1) हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने वलीद पुत्र उक़बा को क़बीला बनी मुस्तलिक़ की ज़कात वसूल करने के लिए भेजा, जब क़बीला वालों को हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दूत के आने की ख़बर मिली तो वे स्वागत के लिए बाहर निकल कर आए, किसी शैतान ने आकर हज़रत वलीद से कह दिया कि यह लोग ज़कात देना नहीं चाहते तुम्हें मार डालने के लिए आ रहे हैं, हज़रत वलीद (रज़ियल्लाहु अन्हु) वापस हुए और उन्होंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पूरी बात बताई इस पर कुछ सहाबा की राय हुई कि बनी मुस्तलिक़ पर तुरन्त हमला करना चाहिए, उस पर यह आयतें उतरीं कि ख़बर की पूरी पुष्टि ज़रूरी है बिना पुष्टि के कोई क़दम न उठाया जाए वरना बाद में पछतावा होगा और यह बात भी सामने आ गई कि आपके सामने राय तो दी जा सकती है किन्तु अपनी बात पर ज़िद न की जाए वरना घाटे की आशंका है (2) यह हज़राते सहाबा (रिज़यल्लाहु अन्हुम) की सराहना की जा रही है कि अल्लाह ने उनके दिलों में ईमान को जमा दिया और वे हमेशा पैग़म्बर की आज्ञा का पालन करते रहते हैं (3) यहाँ से समाज सुधार के निर्देश दिये जा रहे हैं, न ख़ुद लड़ाई–झगड़ा करे और अगर दूसरों में झगड़ा हो तो सुलह–सफ़ाई का हर सम्भव प्रयास करे और इसके लिए शक्ति का प्रयोग लाभप्रद हो तो इससे पीछे न हटे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ
اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ
لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲﴾
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ
لِتَعَارَفُوْا اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿۱۳﴾
قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا
يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ
مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْئًا اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ
اَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿۱۵﴾ قُلْ
اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا
فِي الْاَرْضِ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۶﴾ يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا
قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ
هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ
غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸﴾

منزل۶

ऐ ईमान वालो! अकसर गुमानों से बचो, बेशक गुमान पाप होते हैं, और न टोह में रहो और न एक–दूसरे की पीठ–पीछे बुराई करो, क्या तुममें से कोई यह पसन्द करेगा कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए, इससे तो तुम घृणा करोगे ही, और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह तौबा स्वीकार करता है, दया करता है[1] (12) ऐ लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया, और तुम्हारे परिवार और बिरादरियाँ बना दीं ताकि एक दूसरे को पहचान सको, बेशक अल्लाह के यहाँ तुममें से बड़ा सम्मानित वह है जो तुम में सबसे बड़ा परहेज़गार हो, बेशक अल्लाह ख़ूब जानता, ख़ूब ख़बर रखता है[2] (13) बद्दू कहते हैं कि हम ईमान ले आए, कह दीजिए कि तुम ईमान नहीं लाए, यह कहो कि हम मुसलमान हो गये, जबकि ईमान अभी तक तुम्हारे दिलों में उतरा ही नहीं[3], और अगर तुम अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञा का पालन करोगे तो वह तुम्हारे कामों में कुछ भी कम न करेगा, बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, बहुत ही दयालु है (14) ईमान वाले तो वे हैं जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल पर विश्वास किया फिर वे संदेह में नहीं पड़े और अपने मालों और अपनी जानों से उन्होंने अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, सच्चे लोग तो वही हैं (15) कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को अपना दीन (धर्म) जतलाते हो जबकि अल्लाह जो कुछ भी आसमानों और ज़मीन में है वह सब जानता है और अल्लाह हर चीज़ से ख़ूब अवगत है (16) वे आप पर एहसान धरते हैं कि इस्लाम ले आए कह दीजिए कि अपने इस्लाम लाने का एहसान मुझ पर मत रखो, हाँ अल्लाह का तुम पर एहसान है कि उसने तुम्हें ईमान का रास्ता दिखाया अगर तुम (वास्तव में) सच्चे हो (17) बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन के ढके–छिपे से अवगत है, और जो कुछ तुम करते हो उस पर उसकी पूरी नज़र है (18)

---

(1) समाज की बुराइयों का उल्लेख किया गया है जिनके फलस्वरूप बिगाड़ फैलता चला जाता है, किसी का मज़ाक़ उड़ाना, ताना देना, बुरे नामों से पुकारना, दुर्भावना रखना, अनावश्यक टोह में रहना, पीठ पीछे बुराई करना यह सब वे बीमारियाँ हैं जिन से समाज भ्रष्ट होता है, ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) की परिभाषा एक हदीस में आई है कि जो ख़राबी मौजूद हो उसको दूसरों के सामने अनावश्यक बयान करना यह ग़ीबत है, वरना तो झूठा आरोप है, हाँ! गवाही की ज़रूरत हो तो दी जाए (2) मानवीय समानता का यह इस्लामी मानक है, महानता का आधार मात्र अल्लाह का तक़वा (परहेज़गारी) है (3) बहुत से बद्दू ऐसे थे कि केवल फ़ायदा उठाने के लिए उन्होंने कलिमा पढ़ लिया था वे खुद भी नहीं जानते थे कि इस्लाम क्या है, उसकी शिक्षाएं क्या हैं?उनको सम्बोधित करके यह बात कही जा रही है ताकि वे अपना ईमान सुधार लें केवल ज़बानी इस्लाम जतलाना काफ़ी नहीं है और न इस्लाम लाकर कोई अल्लाह पर और उसके रसूल पर उपकार (एहसान) करता है, यह तो मात्र अल्लाह की दया है कि वह सीधा रास्ता चलाता है।

सूरह क़ाफ़

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

क़ाफ़, उस क़ुरआन की क़सम जो बड़ी शान वाला है (1) बात यह है कि उनको केवल इस पर आश्चर्य है कि उनके पास उन्हीं में से एक डराने वाला आ गया[1] बस काफ़िर बोले यह तो एक अजीब चीज़ है (2) भला क्या जब हम मर–खप जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे?फिर यह लौटना (तो बुद्धि से) बहुत दूर (की बात मालूम होती) है (3) ज़मीन उनमें से जो कम करती है वह हम ख़ूब जानते हैं और हमारे पास अच्छी तरह सुरक्षित रखने वाली पुस्तक है[2] (4) बात यह है कि जब सच उनके पास आया तो उन्होंने उसको झुठला दिया, बस वे उलझे हुए मामले में पड़ गये हैं[3] (5) क्या उन्होंने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा कि हमने उसको कैसा बनाया है और उसको ख़ूबसूरती दी है और उसमें कोई फटन नहीं है (6) और धरती को हमने फैला दिया और उसमें भारी पहाड़ रख दिये और उसमें भांति–भांति की सुन्दर चीज़ें उगाईं (7) हर उस बंदे के लिए इसमें देखने और समझने का साधन है जो ध्यान देने वाला हो (8) और आकाश से हमने बरकत वाला पानी बरसाया तो उससे हमने बाग़ और खेती का ग़ल्ला पैदा किया (9) और खजूर के ऊँचे–ऊँचे पेड़ जिनके परत दर परत गुच्छे हैं (10) बंदों की रोज़ी के लिए और उससे हमने मुर्दा क्षेत्रों को जिंदा कर दिया और बस ऐसे ही होगा निकलना (क़ब्रों से)[4] (11) इनसे पहले नूह की क़ौम और कुँवे वाले और समूद झुठला ही चुके (12) और आद और फ़िरऔन और लूत के भाई बंधु भी (13) और बाग़ वाले और तुब्बा की क़ौम सब ही ने रसूलों को झुठलाया तो मेरी वईद (धमकी) पूरी होकर रही (14) क्या हम पहली बार पैदा करके थक गये बल्कि वे नई उत्पत्ति के बारे में संदेह में पड़े हैं[5] (15)

(1) काफ़िरों के पास इनकार का कोई प्रमाण नहीं है बस वे यह कहते हैं कि पैग़म्बर उन्हीं में से एक आदमी कैसे हो गया (2) मिट्टी में मर–खप कर शरीर के जो भाग समाप्त हो जाते हैं वे सब अल्लाह के ज्ञान में हैं, उनका दोबारा पैदा कर देना उसके लिए कुछ मुश्किल नहीं, लौह–ए–महफ़ूज़ में हर चीज़ सुरक्षित है (3) कभी कवि कहते हैं कभी पागल, कभी ज्योतिषी, कोई बात उनकी समझ ही में नहीं आती (4) जिस प्रकार सूखी ज़मीन पर पानी पड़ता है तो जो भी बीज डाल दिया जाए उसका पेड़ निकल आता है इसी प्रकार जो मनुष्य भी मर–खप कर मिट्टी में मिल गया उसकी असल (मूल) मौजूद है जब अल्लाह का आदेश होगा सब निकल खड़े होंगे (5) जब हम पहली बार पैदा करके नहीं थके तो दोबारा पैदा कर देना क्या कठिन है? इसमें उनको क्यों संदेह हो रहा है, बात यह है कि वे आख़िरत ही का इनकार करते हैं।

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ﴿٣٥﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ
مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِى الْبِلَادِ ۭ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٦﴾
اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ
شَهِيْدٌ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ
اَيَّامٍ ۖ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿٣٨﴾ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ
بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ﴿٣٩﴾ وَمِنَ الَّيْلِ
فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ﴿٤٠﴾ وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ
قَرِيْبٍ ﴿٤١﴾ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۭ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ﴿٤٢﴾
اِنَّا نَحْنُ نُحْىٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ﴿٤٣﴾ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ
سِرَاعًا ۭ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ﴿٤٤﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَآ
اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۣ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ﴿٤٥﴾

سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ﴿١﴾ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴿٢﴾ فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ﴿٣﴾ فَالْمُقَسِّمٰتِ
اَمْرًا ﴿٤﴾ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ﴿٥﴾ وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٦﴾

منزل۷

वहाँ उनके लिए जो वे चाहेंगे होगा और हमारे पास और भी है (35) और उनसे पहले हमने कितनी क़ौमें तबाह कर दीं वे उनसे अधिक बलवान थे तो उन्होंने शहरों की ख़ाक छान मारी, क्या है कोई ठिकाना[1]?(36) बेशक इसमें नसीहत है उसके लिए जो दिल रखता हो या कान लगा दे और दिमाग़ हाज़िर रखे (37) और बेशक हमने आसमानों और ज़मीन को और उनके बीच जो कुछ है सब छः दिन में पैदा किया और हमें थकन छू कर नहीं गुज़री[2] (38) तो जो वे कहते हैं आप उस पर सब्र किये जाइये और अपने पालनहार की पाकी प्रशंसा के साथ बयान करते रहिए, सूरज निकलने से पहले और डूबने से पहले (39) और रात के किसी भाग में भी उसकी पाकी बयान कीजिए और सज्दों के बाद भी[3] (40) और उस दिन के लिए कान लगाए रखिए जब निकट ही से पुकारने वाला पुकारेगा (41) जिस दिन वे बिल्कुल ठीक–ठीक चिंघाड़ सुनेंगे वही निकल पड़ने का दिन होगा[4] (42) हम ही हैं जो जिलाते हैं और मारते हैं और हमारे ही पास लौट कर आना है (43) जब ज़मीन उनसे फट पड़ेगी इस हाल में कि वे भाग रहे होंगे, यह इकट्ठा करना हमारे लिए बड़ा ही आसान है (44) और हम ख़ूब जानते हैं जो वे कहा करते हैं और आपका काम उन पर ज़बरदस्ती करना नहीं है बस आप तो क़ुर्आन से उसको नसीहत किए जाइए जो मेरी वईद (धमकी) से डरता हो (45)

सूरह ज़ारियात

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

क़सम है उन (हवाओं)[5] की जो ख़ाक उड़ाती जाती हैं (1) तो बादलों को ढो लाती हैं (2) बस आसानी से चलती जाती हैं (3) फिर हिस्सा बांटती जाती हैं (4) जिसका तुमसे वादा है वह सच्चा होकर रहेगा (5) और बदला मिलकर रहेगा (6)

(1) दुनिया में उनको सब कुछ प्राप्त था दुनिया की सैर–सपाटे करते–फिरते रहे मगर क्या अब उनके बचाव का कोई ठिकाना है (2) अहल–ए–किताब का अक़ीदा (विश्वास) था कि अल्लाह ने छः दिन में आसमान व ज़मीन बनाए और सातवें दिन आराम किया, उसको नकारा जा रहा है (3) तस्बीह का मतलब यहाँ पर नमाज़ है और सूरज निकलने से पहले फ़ज्र की नमाज़ और डूबने से पहले ज़ोहर और अस्र की नमाज़ और रात के विभिन्न भागों में मग़रिब व इशा की नमाज़ें आती हैं और सज्दों के बाद तस्बीह का मतलब नफ़्ल नमाज़ें। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने इसकी यही व्याख्या की है (4) हज़रत इस्राफ़ील का सूर फूँकना इसका मतलब है, पहली बार में सब मर जाएंगे और दूसरी बार में सब ज़िंदा होकर खड़े हो जाएंगे (5) पवित्र क़ुरआन में जहाँ–जहाँ इस प्रकार के क़समों का उल्लेख मिलता है वह बात में ज़ोर देने के लिए होता है और उसमें भी आमतौर पर क़सम के बाद जो बात बयान हो रही होती है उसकी ओर एक इशारा भी होता है, यहाँ हवाओं की क़सम खाई गई है जो बादलों को लाती है फिर वर्षा होती है और मुर्दा ज़मीन में जान पड़ जाती है, उससे आगे आख़िरत के बयान का एक प्रमाण दिया जाता है कि जिस प्रकार वर्षा से मुर्दा ज़मीन जीवित हो जाती है इसी प्रकार अल्लाह तआला एक दिन सबको दोबारा ज़िन्दा करेगा, यह बिल्कुल सच्चा वादा है और उस दिन सबको अपने–अपने किये का बदला दे दिया जाएगा।

لَهُم مَّا يَشَاۤءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ﴿٣٥﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم
مِّن قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُم بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِن مَّحِيصٍ ﴿٣٦﴾
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ
شَهِيدٌ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ
أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ ﴿٣٨﴾ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ
بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ﴿٣٩﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ
فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ﴿٤٠﴾ وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِن مَّكَانٍ
قَرِيبٍ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ﴿٤٢﴾
إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ﴿٤٣﴾ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ
سِرَاعًا ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ﴿٤٤﴾ نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا
أَنتَ عَلَيْهِم بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَن يَخَافُ وَعِيدِ ﴿٤٥﴾

سُورَةُ الذَّارِيَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَالذَّارِيَاتِ ذَرْوًا ﴿١﴾ فَالْحَامِلَاتِ وِقْرًا ﴿٢﴾ فَالْجَارِيَاتِ يُسْرًا ﴿٣﴾ فَالْمُقَسِّمَاتِ
أَمْرًا ﴿٤﴾ إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَصَادِقٌ ﴿٥﴾ وَإِنَّ الدِّينَ لَوَاقِعٌ ﴿٦﴾

منزل ٧

वहाँ उनके लिए जो वे चाहेंगे होगा और हमारे पास और भी है (35) और उनसे पहले हमने कितनी क़ौमें तबाह कर दीं वे उनसे अधिक बलवान थे तो उन्होंने शहरों की ख़ाक छान मारी, क्या है कोई ठिकाना[1]?(36) बेशक इसमें नसीहत है उसके लिए जो दिल रखता हो या कान लगा दे और दिमाग़ हाज़िर रखे (37) और बेशक हमने आसमानों और ज़मीन को और उनके बीच जो कुछ है सब छः दिन में पैदा किया और हमें थकन छू कर नहीं गुज़री[2] (38) तो जो वे कहते हैं आप उस पर सब्र किये जाइये और अपने पालनहार की पाकी प्रशंसा के साथ बयान करते रहिए, सूरज निकलने से पहले और डूबने से पहले (39) और रात के किसी भाग में भी उसकी पाकी बयान कीजिए और सज्दों के बाद भी[3] (40) और उस दिन के लिए कान लगाए रखिए जब निकट ही से पुकारने वाला पुकारेगा (41) जिस दिन वे बिल्कुल ठीक–ठीक चिंघाड़ सुनेंगे वही निकल पड़ने का दिन होगा[4] (42) हम ही हैं जो जिलाते हैं और मारते हैं और हमारे ही पास लौट कर आना है (43) जब ज़मीन उनसे फट पड़ेगी इस हाल में कि वे भाग रहे होंगे, यह इकट्ठा करना हमारे लिए बड़ा ही आसान है (44) और हम ख़ूब जानते हैं जो वे कहा करते हैं और आपका काम उन पर ज़बरदस्ती करना नहीं है बस आप तो क़ुर्आन से उसको नसीहत किए जाइए जो मेरी वईद (धमकी) से डरता हो (45)

सूरह ज़ारियात

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

क़सम है उन (हवाओं)[5] की जो ख़ाक उड़ाती जाती हैं (1) तो बादलों को ढो लाती हैं (2) बस आसानी से चलती जाती हैं (3) फिर हिस्सा बांटती जाती हैं (4) जिसका तुमसे वादा है वह सच्चा होकर रहेगा (5) और बदला मिलकर रहेगा (6)

(1) दुनिया में उनको सब कुछ प्राप्त था दुनिया की सैर–सपाटे करते–फिरते रहे मगर क्या अब उनके बचाव का कोई ठिकाना है (2) अहल–ए–किताब का अक़ीदा (विश्वास) था कि अल्लाह ने छः दिन में आसमान व ज़मीन बनाए और सातवें दिन आराम किया, उसको नकारा जा रहा है (3) तस्बीह का मतलब यहाँ पर नमाज़ है और सूरज निकलने से पहले फ़ज्र की नमाज़ और डूबने से पहले ज़ोहर और अस्र की नमाज़ और रात के विभिन्न भागों में मग़रिब व इशा की नमाज़ें आती हैं और सज्दों के बाद तस्बीह का मतलब नफ़्ल नमाज़ें। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने इसकी यही व्याख्या की है (4) हज़रत इस्राफ़ील का सूर फूँकना इसका मतलब है, पहली बार में सब मर जाएंगे और दूसरी बार में सब ज़िंदा होकर खड़े हो जाएंगे (5) पवित्र क़ुरआन में जहाँ–जहाँ इस प्रकार के क़समों का उल्लेख मिलता है वह बात में ज़ोर देने के लिए होता है और उसमें भी आमतौर पर क़सम के बाद जो बात बयान हो रही होती है उसकी ओर एक इशारा भी होता है, यहाँ हवाओं की क़सम खाई गई है जो बादलों को लाती है फिर वर्षा होती है और मुर्दा ज़मीन में जान पड़ जाती है, उससे आगे आख़िरत के बयान का एक प्रमाण दिया जाता है कि जिस प्रकार वर्षा से मुर्दा ज़मीन जीवित हो जाती है इसी प्रकार अल्लाह तआला एक दिन सबको दोबारा ज़िन्दा करेगा, यह बिल्कुल सच्चा वादा है और उस दिन सबको अपने–अपने किये का बदला दे दिया जाएगा।

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ﴿۷﴾ اِنَّكُمْ لَفِیْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ﴿۸﴾ یُّؤْفَكُ عَنْهُ
مَنْ اُفِكَ ﴿۹﴾ قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ﴿۱۰﴾ الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ﴿۱۱﴾
یَسْـَٔلُوْنَ اَیَّانَ یَوْمُ الدِّیْنِ ﴿۱۲﴾ یَوْمَ هُمْ عَلَی النَّارِ یُفْتَنُوْنَ ﴿۱۳﴾ ذُوْقُوْا
فِتْنَتَكُمْ ؕ هٰذَا الَّذِیْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۱۴﴾ اِنَّ الْمُتَّقِیْنَ فِیْ جَنّٰتٍ
وَّعُیُوْنٍ ﴿۱۵﴾ اٰخِذِیْنَ مَاۤ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ
مُحْسِنِیْنَ ﴿۱۶﴾ كَانُوْا قَلِیْلًا مِّنَ الَّیْلِ مَا یَهْجَعُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ
یَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَفِیْۤ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآىِٕلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿۱۹﴾ وَفِی
الْاَرْضِ اٰیٰتٌ لِّلْمُوْقِنِیْنَ ﴿۲۰﴾ وَفِیْۤ اَنْفُسِكُمْ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَفِی
السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿۲۲﴾ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ
مِّثْلَ مَاۤ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ﴿۲۳﴾ هَلْ اَتٰىكَ حَدِیْثُ ضَیْفِ اِبْرٰهِیْمَ
الْمُكْرَمِیْنَ ﴿۲۴﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلَیْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿۲۵﴾
فَرَاغَ اِلٰۤی اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِیْنٍ ﴿۲۶﴾ فَقَرَّبَهٗۤ اِلَیْهِمْ قَالَ اَلَا
تَاْكُلُوْنَ ﴿۲۷﴾ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِیْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ ؕ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ
عَلِیْمٍ ﴿۲۸﴾ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِیْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ
عَقِیْمٌ ﴿۲۹﴾ قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِیْمُ الْعَلِیْمُ ﴿۳۰﴾

منزل ۷

रास्तों वाले आसमान की क़सम[1] (7) निश्चित रूप से तुम एक–दूसरे कि विरूद्ध बातों में पड़े हो[2] (8) इससे वही मुँह फेरता है जिसका मुँह फेर ही दिया गया हो (9) अटकल लगाने वाले हलाक हुए (10) जो नशे में सब कुछ भुला बैठे हैं (11) पूछते हैं कि बदले का दिन कब आएगा (12) जिस दिन वे आग में तपाए जाएंगे (13) अपने फ़ितने का मज़ा चखो, यही वह चीज़ है जिसकी तुम्हें जल्दी थी (14) निश्चित रूप से परहेज़गार बाग़ों और स्रोतों (चश्मों) में होंगे (15) उनका पालनहार उनको जो देगा वे उसको ले रहे होंगे, इससे पहले वे थे ही भलाई करने वाले (16) रात को वे बहुत कम सोते थे (17) और भोर के समय (अपने गुनाहों की) माफ़ी माँगा करते थे[3] (18) और उनके मालों में मांगने वालों और मोहताजों का अधिकार होता था[4] (19) और ज़मीन में विश्वास करने वालों के लिए निशानियाँ मौजूद हैं[5] (20) और ख़ुद तुम्हारे भीतर भी क्या तुम देखते नहीं (21) और तुम्हारी रोज़ी और जिसका तुम से वादा है वह आसमान में मौजूद है (22) बस आसमान और ज़मीन के पालनहार की क़सम वह बात निश्चित रूप से उसी तरह सच है जिस तरह तुम बोलते हो[6] (23) क्या आपको इब्राहीम के सम्मानित मेहमानों की कहानी मालूम हुई[7] (24) जब वे उनके पास पहुँचे तो उन्होंने सलाम किया, कहा आप लोगों को भी सलाम, (दिल में सोचा) कुछ अजनबी लोग (मालूम होते) हैं (25) चुपके से घर गए और एक मोटा बछड़ा ले आए (26) बस उनके पास रखा, कहा आप लोग खाते नहीं (27) तो उन्हें उनसे कुछ घबराहट महसूस[8] हुई, वे बोले आप घबराएं नहीं और उन्होंने उनको एक बच्चे की ख़ुशख़बरी दी जो बड़ा आलिम होगा (28) बस उनकी पत्नी ज़ोर–ज़ोर से बोलती हुई आई, फिर उन्होंने अपना चेहरा पीट लिया और बोलीं बुढ़िया बांझ (और बच्चे जने) (29) वे बोले यही आपके पालनहार का फ़रमान है, निश्चित रूप से वह बड़ी युक्ति (हिकमत) रखता, ख़ूब जानता है (30)

(1) आसमान में और पूरे ब्रह्माण्ड में अल्लाह ने रास्ते बनाए हैं जिसका विवरण अल्लाह ही जानता है, आधुनिक विज्ञान भी इसको स्वीकार करता है (2) एक ओर अल्लाह को पैदा करने वाला मानते हो, इसको मानते हो कि धरती में वही जान डालता है और दूसरी ओर आख़िरत का इनकार करते हो निश्चित रूप से यही लगता है कि तुम्हें बात माननी ही नहीं वरना अगर किसी को उत्सुकता है तो सत्य के प्रमाण मौजूद हैं उनमें आदमी अगर ज़रा भी विचार करे तो सच्ची बात पा ले (3) ज़िक्र और इबादत में रात बिताने के बाद भी उनको अपनी कमी का ध्यान रहता है, यह सहाबा के गुण थे (4) कुछ ज़रूरत वाले इज़हार कर देते हैं और कुछ नहीं करते दोनों का अधिकार है (5) यानी दुनिया व आख़िरत में जो कुछ भी मिलता है उसके फ़ैसले आसमान पर ही होते हैं (6) जिस प्रकार आदमी बोलता है और उसको अपने बोलने का विश्वास होता है इसी प्रकार आख़िरत सत्य है (7) यह फ़रिश्ते थे जो हज़रत इस्हाक़ (अलैहिस्सलाम) की पैदाइश की ख़ुशख़बरी देने आए थे और हज़रत लूत (अलैहिस्सलाम) की क़ौम पर अज़ाब नाज़िल करने के लिए भेजे गये थे (8) कहा जाता है कि उस क्षेत्र का नियम था कि कोई दुश्मन के यहाँ खा नहीं सकता था, हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को इसीलिए डर हुआ कि यह दुश्मन हैं।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣١﴾ قَالُوا إِنَّا
أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِنْ طِينٍ ﴿٣٣﴾ مُسَوَّمَةً
عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٣٤﴾ فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾
فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٦﴾ وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً
لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٣٧﴾ وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ
فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿٣٨﴾ فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٣٩﴾
فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿٤٠﴾ وَفِي عَادٍ
إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ﴿٤١﴾ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ
عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ ﴿٤٢﴾ وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا
حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٤٣﴾ فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّاعِقَةُ وَ
هُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٤٤﴾ فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُنْتَصِرِينَ ﴿٤٥﴾
وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٤٦﴾ وَ
السَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ﴿٤٧﴾ وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا
فَنِعْمَ الْمَاهِدُونَ ﴿٤٨﴾ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُونَ ﴿٤٩﴾ فَفِرُّوا إِلَى اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥٠﴾

منزل ٧

कहा ऐ दूतो! तुम किस मुहिम पर हो? (31) वे बोले कि हमें एक अपराधी क़ौम की ओर भेजा गया है (32) ताकि हम उन पर मिट्टी के पत्थर बरसाएं (33) जो आप के पालनहार की ओर से हद से गुज़र जाने वालों के लिए चिन्हित हैं (34) फिर हमने जो उनमें ईमान वाले थे उनको निकाल लिया (35) तो हम ने एक घर[1] के अतिरिक्त कोई मुसलमान न पाया (36) और हमने उसमें उन लोगों के लिए एक निशानी छोड़ दी जो दुखद दण्ड से डरते हैं (37) और मूसा में भी (निशानी है) जब हमने उनको खुले प्रमाण के साथ फिरऔन के पास भेजा था (38) तो उसने अपनी शक्ति के कारण मुँह मोड़ा और कहने लगा (यह तो) जादूगर है या दीवाना है (39) बस हमने उसको और उसकी सेना को पकड़ा फिर उसको समुद्र में फेंक दिया और वह था ही निन्दनीय (40) और आद में भी (निशानी है) जब हम ने उन पर अशुभ हवा भेजी[2] (41) जिस चीज़ पर से वह गुज़रती उसको चूरा बनाकर छोड़ देती (42) और समूद में भी जब उनसे कहा गया कि एक अवधि तक मज़े उड़ा लो (43) बस उन्होंने अपने पालनहार के आदेश की अवहेलना की तो उनको कड़क ने आ दबोचा और वे देखते रह गये (44) बस फिर वे उठ न सके और न अपना बचाव कर सके (45) और इससे पहले नूह की क़ौम (का भी यही हाल हुआ) वे भी अवज्ञाकारी लोग थे (46) और हमने आसमान को (अपने) हाथों से बनाया है और हम फैलाते जाते हैं[3] (47) और धरती को हमने फ़र्श बनाया तो क्या ख़ूब हम फ़र्श बनाने वाले हैं (48) और हमने हर चीज़ के जोड़े बनाए कि शायद तुम ध्यान दो[4] (49) बस अल्लाह ही की ओर दौड़ पड़ो मैं तुम्हें उससे साफ़–साफ़ डराने वाला हूँ (50)

---

(1) वह हज़रत लूत का घर था और उसमें भी उनकी पत्नी काफ़िर थी (2) हवा के फ़ायदों से बिल्कुल ख़ाली थी (3) आधुनिक विज्ञान भी अब इसको स्वीकार करता है कि ब्रह्माण्ड का फैलाव लगातार बढ़ रहा है (4) विज्ञान को पहले यह मालूम भी नहीं था मगर अब उसको भी अब इसका ज्ञान हो गया है, वह इसको मानता है।

وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۖ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥١﴾ كَذَٰلِكَ
مَا أَتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٥٢﴾
أَتَوَاصَوْا بِهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٥٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَا أَنْتَ بِمَلُومٍ ﴿٥٤﴾
وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَىٰ تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٥﴾ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ
إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾ مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ
يُطْعِمُونِ ﴿٥٧﴾ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ﴿٥٨﴾ فَإِنَّ
لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِثْلَ ذَنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ﴿٥٩﴾
فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٦٠﴾ ع ٣

سُورَةُ الطُّورِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعٌ وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالطُّورِ ﴿١﴾ وَكِتَابٍ مَسْطُورٍ ﴿٢﴾ فِي رَقٍّ مَنْشُورٍ ﴿٣﴾ وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ﴿٤﴾
وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ﴿٥﴾ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ﴿٦﴾ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾
مَا لَهُ مِنْ دَافِعٍ ﴿٨﴾ يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ﴿٩﴾ وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ﴿١٠﴾
فَوَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿١١﴾ الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ﴿١٢﴾ يَوْمَ (وقف لازم)
يُدَعُّونَ إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ﴿١٣﴾ هَٰذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿١٤﴾

منزل ٧

और अल्लाह के साथ किसी को माबूद (उपास्य) मत बनाना, मैं तुम्हें उसकी ओर से खुल कर सावधान करने वाला हूँ (51) इसी प्रकार उनसे पहले जब भी कोई पैग़म्बर आया उन्होंने (उसको) जादूगर या पागल बताया (52) क्या वे इसी की एक–दूसरे को वसीयत करते आए हैं, बात यह है कि वे हैं ही सरकश (उदण्ड) लोग (53) तो आप उनसे मुँह फेर लीजिए आप पर कोई मलामत (निंदा) नहीं (54) और याद दिलाते रहिए इसलिए कि निश्चित रूप से याद दिलाना मानने वालों को फ़ायदा पहुँचाता है (55) और मैंने इंसानों और जिन्नातों को तो मात्र इसी लिए पैदा किया कि वे मेरी इबादत करें (56) मैं उनसे रोज़ी नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलाएं (57) निश्चित रूप से अल्लाह ही है जो सबको रोज़ी देता है, शक्ति वाला है, मज़बूत है (58) बस निश्चित रूप से जिन्होंने अत्याचार किया उनके हिस्से में भी वही है जैसे उनके साथियों के साथ हो चुका तो वे मुझसे जल्दी न मचाएं (59) बस जिन्होंने इनकार किया उनके लिए उस दिन बड़ी तबाही है जिसका उनसे वादा किया जा रहा है (60)

सूरह तूर

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

तूर की क़सम (1) और लिखी हुई किताब की क़सम (2) खुले पृष्ठ[1] में (3) और बैत–ए–मामूर[2] की क़सम (4) और बुलन्द सायबान[3] की क़सम (5) और धौंके गए समुद्र की क़सम (6) बेशक आपके पालनहार का अज़ाब[4] (दण्ड) आकर रहेगा (7) कोई नहीं है जो उसको रोक सके (8) जब आसमान लरज़–लरज़ जाएगा (9) और पहाड़ एक चाल चलने लगेंगे (10) तो उस दिन झुठलाने वालों के लिए तबाही है (11) जो बक–बक में लगे खेल कर रहे हैं (12) जिस दिन उनको धक्के दे–देकर आग की ओर लाया जाएगा (13) यही वह आग है जिसको तुम झुठलाया करते थे (14)

---

(1) ऐसा लगता है कि इसका मतलब तौरेत है जो तख़्तियों के रूप में तूर पहाड़ पर हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) को दी गई (2) जिस प्रकार दुनिया में बैतुल्लाह (काबा) है इसी प्रकार आलम–ए–बाला (ऊपर वाली दुनिया) में बैत–ए–मामूर है जो इबादत करने वाले फ़रिश्तों से भरा हुआ है (3) अर्थात् आकाश की (4) ऊपर जितनी चीज़ों की क़समें खाई गई हैं सब अल्लाह की शक्ति की निशानियाँ हैं जो इस बात को बताती हैं कि वही अल्लाह दण्ड व पुरस्कार की व्यवस्था स्थापित करेगा और लोगों को दोबारा जीवित करके उनका हिसाब–किताब लेगा और नाफ़रमानों (अवज्ञाकारियों) पर अज़ाब (दण्ड) आकर रहेगा और इनमें भी विशेष रूप से तूर और तौरेत की क़सम खाकर यहूदियों को चेताया गया है जिनका काम ही इस्लाम से दुश्मनी था और यह कि वे अज़ाब से बच न सकेंगे, ऐसे लोगों पर अल्लाह का अज़ाब आकर रहेगा और विशेष रूप से जो अज़ाब को नहीं मानते उनसे कहा जाएगा कि अब देख लो दुनिया में तुम इसका इनकार करते थे, समुद्र के साथ धौंके गये की उपमा लाकर क़यामत की ओर इशारा है जब वह धौंका दिये जाएंगे और भाप बनकर उड़ जाएंगे।

أَفَسِحْرٌ هَٰذَا أَمْ أَنتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ﴿١٥﴾ اصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا
سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ ۖ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾ إِنَّ
الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَعِيمٍ ﴿١٧﴾ فَاكِهِينَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَاهُمْ
رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿١٨﴾ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾
مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ ۖ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِينَ
آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا
أَلَتْنَاهُم مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَيْءٍ ۚ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ﴿٢١﴾
وَأَمْدَدْنَاهُم بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢٢﴾ يَتَنَازَعُونَ فِيهَا
كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْثِيمٌ ﴿٢٣﴾ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ
كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ ﴿٢٤﴾ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ
يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٥﴾ قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾ فَمَنَّ
اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾ إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلُ
نَدْعُوهُ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ﴿٢٨﴾ فَذَكِّرْ فَمَا أَنتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ
بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ﴿٢٩﴾ أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِ
رَيْبَ الْمَنُونِ ﴿٣٠﴾ قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُتَرَبِّصِينَ ﴿٣١﴾

ع

منزل٧

भला क्या यह भी जादू है या तुम्हें (अब भी) दिखाई नहीं देता (15) अब इसी में घुसो तो सब्र करो या न करो तुम्हारे लिए बराबर है, तुम्हें तो वही बदला दिया जा रहा है जो तुम करते चले आए हो (16) बेशक परहेज़गार बाग़ों और नेमतों में होंगे (17) उनको जो उनके पालनहार ने दिया है उसमें मज़े कर रहे होंगे और उनके पालनहार ने उनको दोज़ख़ के दण्ड से सुरक्षित रखा है (18) मज़े से खाओ और पियो, उसके बदले में जो तुम करते चले आए हो (19) पंक्तिबद्ध मस्हरियों पर टेक लगाए बैठे होंगे और हम उनको ख़ूबसूरत आँखों वाली हूरों से जोड़ देंगे (20) और जो ईमान लाए और ईमान में उनकी संतान ने भी उन्हीं का रास्ता अपनाया तो हम उनकी संतान को भी उन्हीं में शामिल कर देंगे और उनके कामों में हम कुछ भी कमी नहीं करेंगे,[1] हर व्यक्ति की जान उसके कामों के बदले गिरवी रखी हुई है[2] (21) और हम उनको उनकी इच्छानुसार मेवे और गोश्त उपलब्ध कराएंगे (22) वहाँ वे जाम के लिए छीना–झपटी करेंगे, इसमें न कोई बेहूदगी होगी न कोई पाप[3] (23) और उनके लिए वे नवयुवक सेवा में लगे होंगे जो विशेष उन्हीं के लिए होंगे (ऐसे सुन्दर) जैसे छिपाकर रखे गये मोती (24) और वे एक–दूसरे की ओर देखकर पूछेंगे (25) कहेंगे कि पहले तो हम अपने घर बार में डरते ही रहते थे (26) बस अल्लाह ने हम पर उपकार किया और हमको गर्म लपटों के अज़ाब से सुरक्षित रखा (27) इससे पहले भी हम उसी को पुकारा करते थे निश्चित रूप से वह वही है जो बहुत अच्छा बर्ताव करने वाला बड़ा मेहरबान है (28) बस आप याद दिलाते जाइये तो आप अपने पालनहार की कृपा से न ज्योतिषी हैं और न पागल हैं (29) भला वे यह कहते हैं कि वे तो कवि हैं जिन पर हम काल–चक्र[4] का इंतेज़ार कर रहे हैं (30) कह दीजिए कर लो इंतेज़ार बस मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार में हूँ (31)

---

(1) उच्च कोटि के लोगों की संतान यदि नेक होगी तो चाहे उनके काम उस कोटि के न हों मगर अल्लाह उनके बाप–दादा को खुश करने के लिए उनकी नेक संतान को भी उन्हीं के मक़ाम पर पहुँचा देंगे (2) बस अगर वह ईमान लाया और भले काम किये तो उसने अपने आपको दोज़ख़ से आज़ाद करा लिया और अगर वह ईमान नहीं लाया या उसके काम बहुत ही बुरे हैं तो उसको दोज़ख़ ही में क़ैद रखा जाएगा, उच्च कोटि के माँ–बाप का भी उसको कुछ फ़ायदा नहीं पहुँचेगा (3) मैत्रीय छीना–झपटी जिसमें एक विशेष आनन्द होता है (4) यानी जिस प्रकार और कवि मर गये और उनकी कृति भी उनके साथ दफ़्न हो गई इनके साथ भी यही होगा।

اَمۡ تَاۡمُرُهُمۡ اَحۡلَامُهُمۡ بِهٰذَاۤ اَمۡ هُمۡ قَوۡمٌ طَاغُوۡنَ ﴿۳۲﴾ اَمۡ يَقُوۡلُوۡنَ
تَقَوَّلَهٗ ۚ بَلۡ لَّا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۳۳﴾ فَلۡيَاۡتُوۡا بِحَدِيۡثٍ مِّثۡلِهٖۤ اِنۡ كَانُوۡا
صٰدِقِيۡنَ ﴿۳۴﴾ اَمۡ خُلِقُوۡا مِنۡ غَيۡرِ شَىۡءٍ اَمۡ هُمُ الۡخٰلِقُوۡنَ ﴿۳۵﴾ اَمۡ خَلَقُوا
السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ ۚ بَلۡ لَّا يُوۡقِنُوۡنَ ﴿۳۶﴾ اَمۡ عِنۡدَهُمۡ خَزَآٮِٕنُ رَبِّكَ
اَمۡ هُمُ الۡمُصَۜيۡطِرُوۡنَ ﴿۳۷﴾ اَمۡ لَهُمۡ سُلَّمٌ يَّسۡتَمِعُوۡنَ فِيۡهِ ۚ فَلۡيَاۡتِ
مُسۡتَمِعُهُمۡ بِسُلۡطٰنٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۳۸﴾ اَمۡ لَهُ الۡبَنٰتُ وَلَـكُمُ الۡبَنُوۡنَ ﴿۳۹﴾ اَمۡ
تَسۡـَٔلُهُمۡ اَجۡرًا فَهُمۡ مِّنۡ مَّغۡرَمٍ مُّثۡقَلُوۡنَ ﴿۴۰﴾ اَمۡ عِنۡدَهُمُ الۡغَيۡبُ
فَهُمۡ يَكۡتُبُوۡنَ ﴿۴۱﴾ اَمۡ يُرِيۡدُوۡنَ كَيۡدًا ؕ فَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا هُمُ
الۡمَكِيۡدُوۡنَ ﴿۴۲﴾ اَمۡ لَهُمۡ اِلٰهٌ غَيۡرُ اللّٰهِ ؕ سُبۡحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ﴿۴۳﴾
وَاِنۡ يَّرَوۡا كِسۡفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوۡلُوۡا سَحَابٌ مَّرۡكُوۡمٌ ﴿۴۴﴾
فَذَرۡهُمۡ حَتّٰى يُلٰقُوۡا يَوۡمَهُمُ الَّذِىۡ فِيۡهِ يُصۡعَقُوۡنَ ﴿۴۵﴾ يَوۡمَ
لَا يُغۡنِىۡ عَنۡهُمۡ كَيۡدُهُمۡ شَيۡـًٔا وَّلَا هُمۡ يُنۡصَرُوۡنَ ﴿۴۶﴾ وَاِنَّ
لِلَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا عَذَابًا دُوۡنَ ذٰلِكَ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۴۷﴾
وَاصۡبِرۡ لِحُكۡمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعۡيُنِنَا وَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ
رَبِّكَ حِيۡنَ تَقُوۡمُ ﴿۴۸﴾ وَمِنَ الَّيۡلِ فَسَبِّحۡهُ وَاِدۡبَارَ النُّجُوۡمِ ﴿۴۹﴾

منزل ۷

क्या उनकी बुद्धि उनको यह बातें सिखाती है या वे हैं ही सरकश[1] (उदण्ड) लोग (32) या उनका कहना यह है कि यह उसको अपनी तरफ़ से बना लाए हैं, बात यह है कि उनको मानना नहीं है (33) बस अगर सच्चे हों तो उस जैसा कोई कलाम वे बना लाएं (34) या बिना किसी के (पैदा किये) खुद–बखुद पैदा हो गये या वे खुद ही पैदा करने वाले हैं (35) या उन्होंने आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया है?बात यह है कि उनको विश्वास ही नहीं है (36) या उनके पास आपके पालनहार के ख़ज़ाने हैं या वे सत्ता रखते हैं (37) या उनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर (चढ़कर) वे कान लगाये रखते हैं, बस उनका सुनने वाला कोई खुला प्रमाण तो ले आए (38) या उसके लिए लड़कियाँ हैं और तुम्हारे लिए लड़के हैं (39) या आप उनसे कोई उजरत (पारिश्रमिक) मांगते हैं तो वे क्षतिपूर्ति के बोझ तले दबे जाते हैं (40) या उनके पास ढकी छिपी बातें हैं तो वे लिखते रहते हैं (41) या वे चाल चल रहे हैं तो जिन्होंने इनकार किया चालें उन्हीं पर उलटने वाली हैं (42) या अल्लाह के अलावा उनकी कोई पूज्य है, अल्लाह तआला उनके हर प्रकार के शिर्क से पाक है (43) और अगर वे आसमान से कोई टुकड़ा गिरता हुआ भी देखें तो कहेंगे कि परत दर परत बादल हैं[2] (44) बस आप उनको (उनके हाल पर) छोड़िये यहाँ तक कि वे उस दिन से जा मिलें जब वे पछाड़ें खाएंगे (45) उस दिन उनकी मक्कारी उनके कुछ काम न आएगी और न उनकी मदद होगी (46) और बेशक जिन्होंने अत्याचार किया उनके लिए इसके अलावा भी अज़ाब है लेकिन उनमें अधिकांश जानते नहीं[3] (47) और आप अपने पालनहार के आदेश पर जमे रहिए, बस आप हमारी निगाहों के सामने ही हैं,[4] और जब उठते हों तो अपने पालनहार की हम्द (प्रशंसा) के साथ तस्बीह (पाकी बयान) कीजिये (48) और रात को भी उसकी तस्बीह कीजिए और सितारों के ढलते समय भी (49)

---

(1) यानी यहीं तक उनकी बुद्धि की पहुँच है कि वे शायरी और अल्लाह की कृति (कलाम) में अन्तर नहीं कर पा रहे हैं, मात्र हठ और दुश्मनी के कारण इनकार कर रहे हैं, आगे खुद ही अल्लाह तआला कहता है कि मात्र हठ के कारण नहीं मानते, हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की जीवनी में दसियों घटनाएं हैं कि उनकी बुद्धि इसको स्वीकार करती थी मगर उन्होंने तय कर लिया था कि हमें मानना नहीं है, फिर आगे अल्लाह की ओर से चुनौती दी जा रही है कि अगर मानवीय कृति कहते हो तो इस जैसी कृति बनाकर दिखाओ, यह चुनौती पवित्र कुरआन में विभिन्न स्थानों पर दी गयी मगर किसी में इसको स्वीकार करने का साहस नहीं हुआ जबकि उनमें भाषा के महारथी मौजूद थे जिनकी भाषा संदर्भ स्रोत की श्रेणी में थी (2) मुश्रिक नये–नये मोजिज़ों की मांग करते रहते थे एक उनकी मांग यह भी थी कि आसमान से कोई टुकड़ा गिराकर दिखाओ, उसी का जवाब दिया जा रहा है कि यह सब उनकी हट है अगर कोई टुकड़ा गिरा भी दिया जाए तो कहेंगे कि यह तो परत दर परत बादल का टुकड़ा है (3) जो दुनिया ही में उनको मिल जाएगा, बद्र युद्ध में उनके सरदार चुन–चुन कर मारे गये, अंततः मक्के से निकलना पड़ा, यह सब छोटे–मोटे अज़ाब के रूप थे जिनका सामना उन्हें करना पड़ा (4) यह आपको सांत्वना दी जा रही है कि आप परेशान न हों, अपना काम किये जाइये हम हर समय आपकी रक्षा कर रहे हैं।

سُوْرَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اثْنَتَانِ وَّسِتُّوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ۙ﴿۱﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ۚ﴿۲﴾ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ
الْهَوٰى ؕ﴿۳﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ۙ﴿۴﴾ عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۙ﴿۵﴾ ذُوْ
مِرَّةٍ ؕ فَاسْتَوٰى ۙ﴿۶﴾ وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ؕ﴿۷﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۙ﴿۸﴾
فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۚ﴿۹﴾ فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى ؕ﴿۱۰﴾ مَا
كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ﴿۱۱﴾ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ﴿۱۲﴾ وَلَقَدْ رَاٰهُ
نَزْلَةً اُخْرٰى ۙ﴿۱۳﴾ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿۱۴﴾ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ؕ﴿۱۵﴾
اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ۙ﴿۱۶﴾ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿۱۷﴾
لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿۱۸﴾ اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ۙ﴿۱۹﴾
وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ﴿۲۰﴾ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ﴿۲۱﴾
تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ﴿۲۲﴾ اِنْ هِيَ اِلَّاۤ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ
وَاٰبَآؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ
اِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ
الْهُدٰى ؕ﴿۲۳﴾ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ﴿ۖ۲۴﴾ فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ﴿۲۵﴾

منزل ۷

सूरह नज्म

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

तारे की[1] क़सम जब वह डूबे (1) तुम्हारे (साथ रहने वाले) साहब न रास्ता भटके न इधर–उधर हुए (2) और वे इच्छा से नहीं कहते (3) वह तो मात्र वह्य है जो उन पर की जाती है (4) उनको एक ज़बरदस्त शक्ति वाले (फ़रिश्ते) ने शिक्षा दी है[2] (5) जो मज़बूत है बस वह आ खड़ा हुआ (6) जबकि वह क्षितिज की बुलन्दियों पर था (7) फिर वह निकट हुआ तो झुक पड़ा (8) बस दो कमानों की दूरी रह गई या और कम (9) फिर अल्लाह ने अपने बंदे पर जो वह्य करनी थी वह उसने की (10) जो उन्होंने देखा दिल ने उसमें कोई ग़लती नहीं की (11) फिर वे जो देख रहे थे क्या उस पर तुम उनसे झगड़ते हो?(12) और उन्होंने तो उसको एक बार और उतरते हुए देखा[3] (13) सिदरतुल मुन्तहा[4] के पास (14) जिसके क़रीब जन्नतुल मावा है[5] (15) जब सिदरह को ढांपने वाली चीज़ ढांप रही थी[6] (16) न निगाह इधर–उधर हुई और न उसने सीमा लांघी[7] (17) उन्होंने निश्चित रूप से अपने पालनहार की बड़ी–बड़ी निशानियाँ देखीं (18) भला तुमने लात व उज़्ज़ा पर विचार किया (19) और तीसरे मनात पर भी जो उसके अलावा है[8] (20) क्या तुम्हारे लिए बेटे हों और उसके लिए बेटियाँ[9] (21) फिर तो यह बड़ा भोंडा विभाजन हुआ (22) यह तो मात्र कुछ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप–दादा ने रख छोड़े हैं, अल्लाह ने इसका कोई प्रमाण नहीं उतारा और वे तो मात्र गुमान पर और इच्छाओं पर चलते हैं जबकि उनके पास उनके पालनहार की ओर से हिदायत आ चुकी (23) क्या मनुष्य की हर कामना (पूरी होती) है (24) बस अंत और शुरुआत सब अल्लाह ही का है[10] (25)

---

(1) तारों से लोग रास्ते मालूम किया करते थे विशेष रूप से जब कोई तारा डूबने वाला होता था, उससे मंज़िल का पता चलाना बहुत आसान होता था, आगे जो बात कही जा रही है उसकी ओर इसमें इशारा है कि वास्तविक मंज़िल का पता तुम्हें उन साहब से मिलेगा जो तुम्हारे बीच ही रहते हैं जिनका पवित्र जीवन तुम्हारी निगाहों के सामने गुज़रा है, वह हिदायत का निशान हैं, वे बिल्कुल सीधी राह पर हैं, न जानबूझ कर रास्ते से इधर–उधर हुए और न भूलकर और वे जो कुछ कहते हैं वह अल्लाह की ओर से कहते हैं, अपनी ओर से कुछ नहीं कहते (2) मक्के के मुश्रिकों को यह आपत्ति थी कि फ़रिश्ता वह्य लेकर आता है तो उसमें शैतान गड़बड़ कर देता होगा, यह उसका जवाब है कि वह इतने शक्तिशाली हैं कि किसी को उसके सामने पर मारने की गुंजाइश नहीं (3) काफ़िरों को यह भी आपत्ति थी कि जिसको वे फ़रिश्ता समझते हैं वह मानव रूप में आता है, पता नहीं वह फ़रिश्ता है भी कि नहीं, इसका जवाब दिया जा रहा है कि अल्लाह के रसूल (सल–लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उसको अपनी असली शक्ल में भी दो बार देखा है (4) सिदरतुल मुन्तहाः सिद्र दुनिया के उस अति सुन्दर पेड़ को कहते हैं जिसको ''शजरतुल्लाह'' भी कहा जाता है, अपनी काया, सुन्दरता, ख़ुश्बूदार लकड़ी की वजह से भी इसको पेड़ों का राजा समझा जाता है, यह अरब प्रायद्वीप में पाय जाता था फिर धीरे–धीरे ख़त्म होता गया और आज जिसको बेरी का पेड़ कहा जाता है, उसको सिदरा कहा जाने लगा। पवित्र कुरआन में जहाँ सिदरा का वर्णन है उससे वही सुन्दर बुलन्द व बाला पेड़ मुराद है, न कि मौजूदा बेरी का पेड़ (5) मावा का अर्थ है ठिकाना, वह जन्नत ईमान वालों का ठिकाना है, इसलिए उसको जन्नतुलमावा कहा गया है (6) हदीसों में आता है कि उस पेड़ पर अनगिनत फ़रिश्ते सोने के पतिंगों के रूप में आपके दर्शन के लिए इस प्रकार एकत्र हो गये थे कि उन्होंने पूरे पेड़ को ढांप लिया था (7) यानी अल्लाह को जितना दिखाना था और जो कुछ दिखाना था आपने वह सब देखा और अल्लाह की बड़ी–बड़ी निशानियाँ देखीं, ⇒

وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْۢ
بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ﴿٢٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ﴿٢٧﴾ وَمَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ
عِلْمٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ
شَيْـًٔا ﴿٢٨﴾ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ
الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ
ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿٣٠﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا
وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ﴿٣١﴾ اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ
وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ
اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا
اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ﴿٣٢﴾ اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ تَوَلّٰى ﴿٣٣﴾ وَاَعْطٰى
قَلِيْلًا وَّاَكْدٰى ﴿٣٤﴾ اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ﴿٣٥﴾ اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ
بِمَا فِيْ صُحُفِ مُوْسٰى ﴿٣٦﴾ وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰٓى ﴿٣٧﴾ اَلَّا تَزِرُ
وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ﴿٣٨﴾ وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿٣٩﴾

منزل٧

और आसमानों में कितने फ़रिश्ते हैं उनकी भी सिफ़ारिश ज़रा फ़ायदा नहीं पहुँचाती हाँ इसके बाद ही (काम आ सकती है) कि अल्लाह जिसके लिए चाहे अनुमति दे दे (और उस पर) सहमति हो जाए (26) बेशक जो आख़िरत को नहीं मानते वे फ़रिश्तों के नाम महिलाओं के नाम पर रखते हैं[1] (27) और उनको इसका कुछ अता–पता नहीं केवल अटकल पर चलते हैं और बेशक गुमान सत्य (को पहचानने) के लिए ज़रा भी काफ़ी नहीं (28) बस जो हमारी याद से मुँह मोड़ता है और सिर्फ़ दुनिया का जीवन ही उसका मक़सद है और आप उससे मुँह मोड़ लीजिए (29) उनके ज्ञान की पहुँच बस यहीं तक है[2], बेशक आपका पालनहार उन लोगों को भी ख़ूब जानता है जो उसके रास्ते से भटक गये और वह उनको भी ख़ूब जानता है जिन्होंने (सत्य) मार्ग पा लिया (30) और आसमान और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह का है ताकि वह बुरा करने वालों को उनकी करतूतों के अनुसार बदला दे दे और जिन्होंने अच्छे काम किये उनको अच्छा बदला प्रदान कर दे (31) जो बड़े पापों से और अश्लीलता से बचते हैं (सिवाय कभी–कभार) हल्के–फुल्के पापों के[3], बेशक आप का पालनहार अत्यधिक क्षमा करने वाला है, वह तुम्हें ख़ूब जानता है, जब उसने तुम्हें धरती से उठाया और जब तुम अपनी माँओं के पेट में गर्भ के रूप में थे, बस अपने आपको परहेज़गार मत बताओ, वह ख़ूब जानता है कि परहेज़गार कौन है (32) भला आप ने उसको देखा जिसने मुँह फेरा (33) और थोड़ा देकर रुक गया (34) क्या उसके पास ढके–छिपे का ज्ञान है तो वह देखता है[4] (35) क्या उसको मूसा के सहीफ़ों की ख़बरें नहीं पहुँचीं (36) और न इब्राहीम (के सहीफ़ों) की जिसने वफ़ादारी का हक़ अदा कर दिया (37) कि कोई भी बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा (38) और इंसान को वही मिलेगा जिसकी उसने मेहनत की (39)

⟹ जन्नत–दोज़ख़ देखी इसका कुछ विवरण हदीसों में मौजूद हैं (8) यह सब पत्थर की मूर्तियों के नाम हैं (9) फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ कहते थे और ख़ुद उनके यहाँ बेटी हो जाती तो मुँह उतर जाता (10) यानी मनुष्य उलटी–सीधी कामनाएं करता है और हर एक से आशा लगा बैठता है मगर दुनिया व आख़िरत सबका मालिक अल्लाह ही है, आग़ाज़ व समापन सब उसी के हाथ में है।

(1) फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ कहते हैं और उनको अपना सिफ़ारिशी समझते हैं जबकि वे थोड़ा भी लाभ नहीं पहुँचा सकते तो दूसरे मनगढ़ंत देवता क्या फ़ायदा पहुँचाएंगे (2) बस दुनिया की सीमा तक, आख़िरत तक उनकी पहुँच ही नहीं, दूसरी जगह कहा "आख़िरत के बारे में उनका ज्ञान ठस हो जाता है" (3) लमम का अर्थ है छू जाना मतलब यह है कि यदा–कदा पाप उनको छू जाते हैं (4) तफ़सीर लिखने वाले इसके अंतर्गत एक घटना लिखते हैं कि एक आदमी इस्लाम से क़रीब हुआ, उसके दोस्त ने कहा कि बाप–दादा के दीन को क्यों छोड़ते हो? वह बोला आख़िरत का डर है, उसके दोस्त ने कहा कुछ पैसे दे दो हम तुम्हें आख़िरत में बचा लेंगे, अल्लाह फ़रमाता है कि क्या वह ग़ैब (परोक्ष) की बातें जानता है जो यह गारंटी ले रहा है, फिर आगे नियम बता दिया कि कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा जो जैसा करेगा उसके अनुसार उसको मिलेगा।

और उसकी मेहनत जल्द ही रंग लाएगी (40) फिर उसको भर–भर कर बदला दिया जाएगा (41) और निश्चित रूप से अंजाम आपके पालनहार ही के पास है (42) और बेशक वही है जिसने हंसाया और रुलाया (43) और वही है जिसने मारा और जिलाया (44) और बेशक उसी ने नर और नारी के जोड़े बनाए (45) वीर्य से जब वह टपकाया जाता है[1] (46) और बेशक दूसरी बार उठाया जाना भी उसी के ज़िम्मे है (47) और बेशक वही है जिसने माल दिया और मालामाल रखा (48) और वही है जो "शेअरा" का मालिक है[2] (49) और पहले आद को उसी ने नष्ट किया (50) और समूद को भी तो किसी को बाक़ी नहीं छोड़ा (51) और उससे पहले नूह की क़ौम को भी बेशक वे बड़े अत्याचारी और उदण्ड (सरकश) लोग थे (52) और उल्टी बस्ती को भी फिर उसको उठा पटका[3] (53) फिर जिस (भयानक) चीज़ ने उसे ढांपा वह ढांप कर रही (54) तो तुम अपने पालनहार की किन–किन नेमतों पर संदेह करोगे (55) यह भी पहले डराने वालों में से एक डराने वाले हैं (56) निकट आने वाली चीज़ निकट आ चुकी (57) अल्लाह के सिवा उसको कोई टाल नहीं सकता (58) भला इस बात से तुम आश्चर्य में पड़ते हो (59) और मज़ाक़ उड़ाते हो और तुमको रोना नहीं आता (60) और खड़े अटखेलियाँ करते हो (61) बस अल्लाह के लिए सज्दे में गिर पड़ो और (उसी की) बंदगी में लग जाओ (62)

सूरह क़मर

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

क़यामत निकट आ चुकी और चाँद टुकड़े हो चुका[4] (1) और वे जब कोई निशानी देखते हैं तो मुँह मोड़ लेते हैं और कहते हैं कि जादू है जो चला आ रहा है (2) और उन्होंने झुठलाया और अपनी इच्छाओं पर चले जबकि हर चीज़ का एक अंजाम है (3)

(1) वीर्य एक ही होता है मगर अल्लाह तआला गुण विभिन्न प्रकार के पैदा कर देता है, कभी बच्चा पैदा होता है कभी बच्ची (2) यह एक सितारे का नाम है जिसको जाहिलियत के युग में पूजा जाता था (3) यानी लूत क़ौम की बस्तियाँ (4) विभिन्न स्थानों पर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी को और चमत्कारों को क़यामत की निशानी बताया गया है, इस लिहाज़ से कि अब कोई पैग़म्बर आने वाला नहीं है, अब क़यामत ही आएगी, यहाँ "शक़्क़ुल क़मर" (चाँद के टुकड़े होने) के चमत्कार को क़यामत क़रीब आने की निशानी बताया गया है, इसका विवरण हदीसों में है कि एक बार चौदहवीं की रात को मुश्रिकों ने चमत्कार की माँग की, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अल्लाह के आदेश से चाँद की ओर इशारा किया तो वह दो टुकड़े हो गया, एक भाग पश्चिम को और एक पूरब को चला गया, जब सबने देख लिया तो दोबारा वे दोनों टुकड़े मिल गये, इसका इनकार तो वे क्या करते इस पर कहने लगे यह तो सब जादू का सिलसिला है जो चला आ रहा है, अल्लाह कहता है कि हर चीज़ का एक अंजाम होता है आगे मालूम हो जाएगा कि क्या जादू है, क्या झूठ है।

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ﴿۴﴾ حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا
تُغْنِ النُّذُرُ ﴿۵﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ ﴿۶﴾
خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ﴿۷﴾
مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ؕ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ﴿۸﴾ كَذَّبَتْ
قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ ﴿۹﴾
فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ﴿۱۰﴾ فَفَتَحْنَاۤ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ
مُّنْهَمِرٍ ﴿۱۱﴾ وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰۤى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ﴿۱۲﴾
وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ﴿۱۳﴾ تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا ۚ جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ
كُفِرَ ﴿۱۴﴾ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَاۤ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿۱۵﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ
وَنُذُرِ ﴿۱۶﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿۱۷﴾ كَذَّبَتْ
عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿۱۸﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا
فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿۱۹﴾ تَنْزِعُ النَّاسَ ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ
مُّنْقَعِرٍ ﴿۲۰﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿۲۱﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا
الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿۲۲﴾ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ﴿۲۳﴾
فَقَالُوْۤا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿۲۴﴾

وقف لازم

منزل ۷

और उनके पास वे ख़बरें आ चुकीं जो उनको झिंझोड़ देने के लिए काफ़ी थीं[1] (4) दिल में उतर जाने वाली बुद्धिमता की बातें थीं फिर भी यह सावधान कर देने वाली चीज़ें उनके लिए काफ़ी नहीं हैं (5) बस आप उनको उस दिन तक के लिए छोड़ दीजिए जब बुलाने वाला भयावह चीज़ की ओर बुलाएगा (6) नज़रें झुकाए वे क़ब्रों से ऐसे निकलेंगे जैसे टिड्डी हों बिखरी हुई (7) तेज़ी से बुलाने वाले के पास भागे जा रहे होंगे, काफ़िर कहेंगे कि यह दिन बड़ा कठोर है (8) उनसे पहले नूह की क़ौम भी झुठला चुकी तो उन्होंने हमारे बंदे को झुठलाया और बोले कि दीवाने हैं और उनको धमकाया गया (9) बस उन्होंने अपने पालनहार को पुकारा कि बेशक मैं तो हार गया अब तू ही बदला ले ले (10) तो हमने फट पड़ने वाले पानी के साथ आकाश के मुँह खोल दिये (11) और धरती से स्रोत फाड़ दिये बस सारा पानी एक ऐसे काम के लिए मिल गया जो मुक़द्दर हो चुका[2] (12) और उनको हमने पटरों और कीलों से बनी (नाव) पर सवार कर दिया (13) जो हमारी नज़रों के सामने चल रही थी, यह बदला उसके लिए था जिसका इनकार किया गया (14) और हमने उसको निशानी बनाकर छोड़ा तो है कोई शिक्षा लेने वाला (15) तो मेरा अज़ाब (दण्ड) और मेरे डरावे कैसे कठोर थे (16) और बेशक हमने कुरआन को उपदेश (नसीहत) के लिए सरल कर रखा है तो है कोई नसीहत (उपदेश) प्राप्त करने वाला (17) आद ने भी झुठलाया तो मेरा अज़ाब (दण्ड) और मेरे डरावे कैसे (कठोर) थे (18) बेशक हमने उन पर तेज़ आँधी वाली हवा भेजी उस दिन जो अशुभ ही अशुभ था (19) वह लोगों को उसी प्रकार उखाड़ फेंक रही थी जैसे वे उखड़े हुए खजूर के पेड़ के तने हों (20) बस मेरा अज़ाब और मेरे डरावे कैसे (कठोर) थे (21) और हम ने कुरआन को नसीहत के लिए सरल रखा है तो है कोई नसीहत प्राप्त करने वाला (22) समूद ने भी डराने वाली चीज़ों को झुठलाया (23) बस वे बोले कि एक आदमी जो हम ही में का है क्या हम उसका अनुसरण करें तब तो हम पथ भ्रष्टता और पागलपन में जा पड़े (24)

---

(1) यानी पिछली क़ौमों की घटनाएं और अवज्ञा (नाफ़रमानी) के फलस्वरूप उन पर अज़ाब आने के विवरण और कुछ वर्णन उसका आगे भी आ रहा है (2) आकाश से भयानक वर्षा और धरती से पानी उबलने का क्रम, उसके फलस्वरूप अल्लाह की आज्ञा से ऐसी बाढ़ आई कि गाँवों के नाम व निशान मिट गये, हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) की कहानी में पहले सारे विवरण गुज़र चुके हैं।

ءَأُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ ﴿٢٥﴾ سَيَعْلَمُونَ
غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْأَشِرُ ﴿٢٦﴾ إِنَّا مُرْسِلُو النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ
فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾ وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ
كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾
فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً
وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ
فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَا
عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَّجَّيْنَاهُم بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾ نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا
كَذَٰلِكَ نَجْزِي مَن شَكَرَ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ أَنذَرَهُم بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا
بِالنُّذُرِ ﴿٣٦﴾ وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا
عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾ فَذُوقُوا
عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن
مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾ وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿٤١﴾ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُلِّهَا
فَأَخَذْنَاهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾ أَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ أُولَٰئِكُمْ
أَمْ لَكُم بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾ أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ ﴿٤٤﴾

منزل۷

हम सब में क्या उसी पर नसीहत उतारी गई, बात यह है कि वह बड़ा झूठा है, शेखी बघारने वाला है (25) कल ही उनको पता चल जाएगा कि झूठा शेखी बघारने वाला कौन है (26) निश्चित रूप से हम उनको आज़माने के लिए ऊँटनी भेजने वाले हैं तो उनकी प्रतीक्षा करो और जमे रहो[1] (27) और उनको बता देना कि पानी उनके (और ऊँटनी के) बीच विभाजित होगा, पानी का हर हिस्सेदार अपनी बारी में उपस्थित होगा (28) फिर उन्होंने अपने आदमी को आवाज़ दी बस उसने पकड़ा और मार डाला (29) फिर मेरा अज़ाब और मेरे डरावे कैसे कठोर हुए (30) बेशक हमने उन पर एक ही चिंघाड़ भेजी तो वे ऐसे होकर रह गये जैसे काँटों की बाढ़ हो जिसे भूसा–भूसा कर दिया गया हो (31) और निश्चित रूप से हमने कुरआन को नसीहत के लिए सरल कर दिया है तो है कोई नसीहत प्राप्त करने वाला (32) लूत की क़ौम ने भी सावधान करने वालों को झुठलाया (33) हम ने उन पर पत्थरों की वर्षा की सिवाय लूत के घर वालों के कि उनको हमने प्रातःकाल बचा लिया (34) हमारी ओर से नेमत के रूप में, एहसान मानने वालों को हम ऐसे ही बदला दिया करते हैं (35) और उन्होंने उनको हमारी पकड़ से डराया था तो उन्होंने डरावे की ख़बरों पर संदेह किया (36) और उन्होंने उनके मेहमानों के बारे उनको फुसलाया था तो हमने उनकी आँखें विकृत कर दीं अब चखो मेरे अज़ाब और डरावे का मज़ा[2] (37) और प्रातःकाल उन पर ऐसा अज़ाब आया जिसे टलना था ही नहीं (38) बस चखो मेरे अज़ाब और मेरी भयानक चीज़ों का मज़ा (39) और निश्चित रूप से हमने कुरआन को नसीहत के लिए सरल रखा है तो है कोई नसीहत प्राप्त करने वाला (40) फिरऔन वालों के पास भी डराने वाले आए (41) उन्होंने भी हमारी सब निशानियों को झुठला दिया तो हमने उनको ज़बरदस्त शक्ति रखने वाले की पकड़ की तरह पकड़ा (42) भला तुम्हारे काफ़िर उनसे अच्छे हैं या तुम्हारे लिए (उतारी हुई) किताबों में बेगुनाही का कोई परवाना है (43) या वे यह कहते हैं कि हम सब मिलकर अपना बचाव ख़ुद ही कर लेंगे[3] (44)

---

(1) यह ऊँटनी उन्हीं की फ़रमाइश पर एक निशानी के रूप में भेजी गई थी और उनसे कह दिया गया था कि कोई उसको हाथ न लगाए (2) हज़रत लूत (अलैहिस्सलाम) के पास जो फ़रिश्ते आए वे सुन्दर नवयुवकों के रूप में आए, क़ौम दुष्कर्म में लिप्त रहती थी, उसने हज़रत लूत (अलैहिस्सलाम) से माँग की कि वे नवयुवकों को उनके हवाले कर दें, इस पर वे से अंधे कर दिये गये, फिर ऐसा कठोर अज़ाब आया कि पूरा गाँव उठाकर पटख़ दिया गया (3) इन दो आयतों में मक्के के काफ़िरों से संबोधन है कि पिछली क़ौमें अपनी सारी शक्ति के बावजूद तबाह कर दी गईं तो तुम्हें किस चीज़ पर भरोसा है? न तुम उनसे बेहतर हो और न तुम्हारे पास कोई ऐसा सर्टिफ़िकेट है जिसके कारण तुम संतुष्ट हो और तुम सब मिलकर भी अपना बचाव नहीं कर सकते।

जल्द ही उन सब की पराजय होगी और वे पीठ फेर–फेर कर भागेंगे[1] (45) बल्कि वास्तविकता यह है कि क़यामत ही उनके असल वायदे का समय है और क़यामत बड़ी भयावह और तीखी है (46) बेशक अपराधी हैरानी में और भड़कती हुई आग में होंगे (47) जिस दिन उनको आग में मुँह के बल घसीटा जाएगा, चखो आग की लपेट का मज़ा (48) हमने हर चीज़ को नाप तौल कर पैदा किया है (49) और हमारा आदेश सिर्फ़ एक ही बार आँख झपकते (पूरा) हो जाता है (50) और हम तुम्हारे जैसे लोगों को हलाक कर चुके हैं तो है कोई नसीहत प्राप्त करने वाला (51) और हर चीज़ जो उन्होंने की वह सहीफ़ों में मौजूद है (52) और हर छोटी–बड़ी बात लिख दी गई है (53) बेशक जो परहेज़गार हैं वे जन्नतों और नहरों में होंगे (54) एक सच्चा (मनचाहा) स्थान में उस मालिक के पास जो मुकम्मल और ज़बरदस्त सत्ता वाला है (55)

सूरह रहमान

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

वही रहमान है[2] (1) जिसने कुरआन सिखाया (2) इनसान को पैदा किया (3) उसको बात स्पष्ट करने की शिक्षा दी (4) सूरज और चाँद एक विशेष हिसाब के साथ (परिक्रमा में) हैं (5) बेलें और पेड़ सब सज्दे में हैं[3] (6) और आकाश को उसने बुलन्द किया और तराजू स्थापित की (7) कि तौलने में अत्याचार मत करो (8) और तौल को न्याय के साथ ठीक रखो और तौलने में कमी मत करो (9) और धरती को उसने प्राणियों के लिए बनाया है (10) जिसमें मेवे हैं और खजूरों के गुच्छेदार पेड़ हैं (11) भूसे वाला दाना भी है और खुश्बू भी (12) बस तुम दोनों अपने रब की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (13)

---

(1) यह भविष्यवाणी उस समय की गयी जब मुसलमान कमज़ोर थे, अपना बचाव करना उनके लिए मुश्किल था, मगर जल्द ही बद्र युद्ध में काफ़िरों की बड़ी पराजय हुई, उनके सत्तर महत्वपूर्ण आदमी मारे गये, वे पीठ फेर–फेर कर भागे फिर भी सत्तर आदमी क़ैदी बनाए गये, फिर आगे कहा जा रहा है कि यह तो कुछ भी नहीं असल पता तो उनको क़यामत में चलेगा जो कठोर और कड़वा है (2) मक्के के मुश्रिकों को रहमान के नाम से चिढ़ थी जैसा कि सरह फ़ुरक़ान के अंत में गुज़र चुका है, यहाँ उसी वास्तविकता को बयान किया जा रहा है कि वही रहमान है जिसकी कृपा–दया और नेमतों से दुनिया भरी पड़ी है, तुम्हारे सब कामों का बनाने वाला वही है तो बस उसी की इबादत करो, इस सूरः को ''ज़ीनतुल कुरआन'' कहते हैं इसमें अल्लाह तआला ने दोनों सृष्टियों इंसान व जिन्नात को सम्बोधित करके अपनी नेमतें जतलाई हैं। (3) हर सृष्टि सज्दे और तस्बीह में अपने–अपने तरीक़े पर लगी है जो तरीक़ा उसके पालनहार ने उसको बताया है।

उसने इंसान को ठेकरे की तरह खंखनाती मिट्टी से पैदा किया (14) और जिन्नों को आग के शोले से पैदा किया (15) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (16) वह दोनों पूरबों का भी पालनहार है और दोनों पश्चिमों[1] का भी पालनहार है (17) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (18) उसने दो समुद्र जारी कर दिये कि दोनों एक दूसरे से मिले हुए हैं (19) (लेकिन) दोनों के बीच ऐसी रुकावट है कि दोनों अपनी सीमा से आगे नहीं बढ़ सकते[2] (20) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (21) दोनों से बड़े–बड़े और छोटे–छोटे मोती निकलते हैं (22) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (23) और उसी के क़ब्ज़े में वे चलते जहाज़ हैं जो समुद्र में पहाड़ों की तरह ऊँचे खड़े हैं (24) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (25) जो कुछ उस पर है वह मिटने वाला है (26) और (सिर्फ़) आपका पालनहार बाक़ी रहेगा जो बड़ी इज़्ज़त वाला और उदारवान है (27) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (28) आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं सब उसी से माँगते हैं, हर दिन उसकी एक शान है (29) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (30) ऐ दोनों भारी (सृष्टियो!) हम जल्द ही तुम्हारे (हिसाब के) लिए फ़ारिग़ (निवृत्त) होने वाले हैं[3] (31) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाआगे (32) ऐ जिन्नों और इनसानों के गिरोह! अगर तुम आसमान और ज़मीन की सीमाओं से भाग निकल सकते हो तो भाग निकलो, तुम बिना ज़बरदस्त शक्ति के भाग नहीं सकते[4] (33) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाआगे (34) तुम दोनों पर आग की लपटें और घोर धुवाँ छोड़ा जाएगा तो तुम दोनों अपना बचाव न कर सकोगे (35) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाआगे (36) फिर जब आकाश फट पड़ेगा तो वह तलछट की तरह लाल हो जाएगा (37) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाआगे (38)

(1) दो पूरब और दो पश्चिम इसलिए कहा कि जाड़े और गर्मी में दिशाएं बदल जाती हैं, जाड़े में जहाँ से सूर्योदय होता है गर्मी के दिनों में उससे ज़रा हट कर उदय होता है इसलिए दो पूरब हुए और इस प्रकार पश्चिम भी (2) विशेष रूप से जहाँ नदी और समुद्र मिलते हैं वहाँ दूर तक यह दृश्य देखा जा सकता है कि पानी मिल जाने के बावजूद दोनों अलग–अलग रहते हैं एक लकीर सी महसूस होती है और पानी के स्वाद में भी अंतर होता है (3) इंसान और जिन्नात ही को अल्लाह की शरीअत माननी है अल्लाह ने उनको बुद्धि दी है इसलिए इन दोनों को भारी कहा गया, हिसाब के लिए फ़ारिग़ होना यह एक कहने की शैली है, मतलब यह है कि बस उसका समय आने ही वाला है (4) सुल्तान से आशय यहाँ ईमान की ताक़त है इसी ताक़त से इंसान ज़मीन व आसमान को पीछे छोड़कर जन्नतवासी बन जाता है और जिसके पास ईमान की यह ताक़त नहीं वह बचकर नहीं जा सकेगा, चाहे उसके पास ईमान के अलावा कैसी ही ताक़तें हों, वह अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकता।

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۞ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَ
الْاَقْدَامِ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۞ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ
بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ۘ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۞ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۙ ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۞ فِيْهِمَا
عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۞ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ
فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۞ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۢ
بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ۗ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۞ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا
جَآنٌّ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۞ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ۚ
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۞ هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا
الْاِحْسَانُ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۞ وَمِنْ دُوْنِهِمَا
جَنَّتٰنِ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۙ مُدْهَآمَّتٰنِ ۚ
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۞ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ۚ

وقف لازم

منزل ۷

फिर उस दिन न किसी मनुष्य से उसके पाप के बारे में पूछा जाएगा न किसी जिन्न से (39) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे(40) अपराधियों को उनकी निशानियों से पहचाना जाएगा फिर (उनके) सिर के बालों और पांव से पकड़ा जाएगा (41) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (42) यही वह दोज़ख़ है जिसको अपराधी लोग झुठलाया करते थे(43) वे उसके और खौलते पानी के आसपास चक्कर काटेंगे (44) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे[1] (45) और जो अपने पालनहार के पास खड़ा होने से डरता था उसके लिए दो जन्नतें हैं(46) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (47) घने पेड़ों वाली (48) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (49) दोनों में दो स्रोत बह रहे होंगे (50) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (51) उनमें हर मेवे के दो–दो प्रकार होंगे (52) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (53) ऐसे बिस्तरों पर आराम से तकिया लगाए होंगे जिनके अस्तर गाढ़े रेशम के होंगे और दोनों बाग़ों के फल झुके पड़ रहे होंगे (54) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (55) उनमें नीची निगाहों वाली वे महिलाए होंगी जिनको उनसे पहले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया होगा न किसी जिन्न ने (56) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (57) जैसे वे याक़ूत (लाल) और मोती हों (58) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (59) (काम की) अच्छाई के बदले (करम की) अच्छाई के अलावा और क्या है[2] (60) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (61) और उन दोनों से कुछ कम दर्जे के दो और बाग़ होंगे (62) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (63) हरियाली ही हरियाली के कारण काले लग रहें होंगे[3] (64) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (65) उन दोनों में दो फूटते, स्रोत होंगे (66)

(1) अज़ाब (दण्ड) के विभिन्न रूपों के बाद भी कहा जा रहा है कि तुम अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे, इसमें वास्तव में यह संकेत है कि उस अज़ाब का पहले वर्णन करना और उससे सावधान कर देना भी अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत है कि आदमी उससे अपना बचाव कर सकता है (2) ऊपर उच्च श्रेणी की जन्नतों का उल्लेख था वे उच्च कोटि के लोगों के लिए होंगी दूसरे प्रकार की साधारण जन्नतें आम मुसलमानों के लिए होंगी (3) हरियाली जब ख़ूब घनी हो तो काला–काला सा नज़र आता है, यह बात मालूम रहनी चाहिए कि सर्वप्रथम सम्बोधित मक्का वासी थे जहाँ तनिक भी हरियाली न थी और वह उनके लिए सबसे बड़ी नेमत थी और वास्तविक्ता यही है कि हरियाली, बाग़, क्यारियाँ और फल–फूल अल्लाह की सबसे बड़ी नेमतों में से हैं।

बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (67) दोनों में मेवे होंगे और खजूर और अनार होंगे (68) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (69) उनमें उत्तम चरित्रवान सुन्दर महिलाएं होंगी (70) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (71) हूरें होंगी जिनको तंबुओं में ठहराया गया होगा[1] (72) बस तुम अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (73) उनसे पहले उनको न किसी इंसान ने छुआ होगा न किसी जिन्न ने (74) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (75) हरे तकियों और अनोखे ख़ूबसूरत क़ालीनों पर टेक लगाए बैठे होंगे (76) बस तुम दोनों अपने पालनहार की किन–किन नेमतों को झुठलाओगे (77) आपके पालनहार का नाम बड़ी बरकत वाला है जो बड़ी शान वाला भी है और उदारवान भी (78)

सूरह वाक़्या

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

जब वह घटित होने वाली घटना घटित होकर रहेगी (1) उसके घटित होने को कोई झुठलाने वाला न होगा[2] (2) उठा–पटक करके रख देगी (3) जब धरती झिंझोड़ कर रख दी जाएगी (4) और पहाड़ पीस कर रख दिये जाएंगे (5) तो वे उड़ती हुई धूल बन जाएंगे (6) और तुम तीन प्रकार में बंट जाओगे (7) बस दाईं ओर वाले, क्या कहने दाईं ओर वालों के (8) और बाईं ओर वाले, क्या जानो बाईं ओर वालों को (9) और जो आगे बढ़ जाने वाले हैं वे तो हैं ही आगे बढ़ जाने वाले[3] (10) वही निकटतम किये जाएंगे (11) नेमतों की जन्नतों में (12) पहलों में वे भारी संख्या में होंगे (13) और बाद वालों में थोड़े (14) ऐसी पलंगों पर जो सोने से बनी हीरे जड़ित होंगी (15) उन पर आमने–सामने टेक लगाए बैठे होंगे (16)

(1) सही बुख़ारी में उन शिविरों का उल्लेख है कि वे मोती के बड़े विशाल शिविर होंगे, जन्नत की नेमतों का हाल एक हदीस में इस प्रकार बयान हुआ है कि वह कल्पना से भी बाहर हैं "जो न आँखों ने देखा न कानों ने सुना और न किसी मनुष्य के दिल में उसका ख़याल गुज़रा" (2) यानी क़यामत जिसको आज लोग झुठला रहे हैं मगर जब सामने होगी तो कोई झुठलाने वाला न रह जाएगा (3) दाईं ओर वाले वे ईमान वाले हैं जिनको आमाल नामा (कर्म–पत्र) उनके दाहिने हाथ में दिया जाएगा और बाईं ओर वाले वे कुफ़्र व शिर्क वाले पापों में डूबे हुए लोग हैं जिनके बाएं हाथ में आमाल नामा दिया जाएगा और आगे बढ़ जाने वालों से मतलब वे उच्च कोटि के लोग हैं जो अल्लाह से निकटतम स्थान पर होंगे जैसे पैग़म्बर (अलैहिमुस्सलाम), सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम), यह लोग अधिकांश प्राचीन युग के होंगे, बाद के युग में ऐसे उच्च कोटि के लोगों की संख्या बहुत कम होगी।

يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ﴿١٧﴾ بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ وَكَأْسٍ
مِّن مَّعِينٍ ﴿١٨﴾ لَّا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنزِفُونَ ﴿١٩﴾ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا
يَتَخَيَّرُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢١﴾ وَحُورٌ عِينٌ ﴿٢٢﴾ كَأَمْثَالِ
اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ﴿٢٣﴾ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا
لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ﴿٢٥﴾ إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ﴿٢٦﴾ وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ مَا أَصْحَابُ
الْيَمِينِ ﴿٢٧﴾ فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ﴿٢٨﴾ وَطَلْحٍ مَّنضُودٍ ﴿٢٩﴾ وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ﴿٣٠﴾ وَ
مَاءٍ مَّسْكُوبٍ ﴿٣١﴾ وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٣﴾ وَ
فُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ﴿٣٤﴾ إِنَّا أَنشَأْنَاهُنَّ إِنشَاءً ﴿٣٥﴾ فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ﴿٣٦﴾
عُرُبًا أَتْرَابًا ﴿٣٧﴾ لِّأَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٣٨﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٩﴾ وَثُلَّةٌ
مِّنَ الْآخِرِينَ ﴿٤٠﴾ وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ مَا أَصْحَابُ الشِّمَالِ ﴿٤١﴾ فِي سَمُومٍ
وَحَمِيمٍ ﴿٤٢﴾ وَظِلٍّ مِّن يَحْمُومٍ ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ﴿٤٤﴾ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ
ذَٰلِكَ مُتْرَفِينَ ﴿٤٥﴾ وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَى الْحِنثِ الْعَظِيمِ ﴿٤٦﴾ وَكَانُوا
يَقُولُونَ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَئِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿٤٧﴾ أَوَآبَاؤُنَا
الْأَوَّلُونَ ﴿٤٨﴾ قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ﴿٤٩﴾ لَمَجْمُوعُونَ إِلَىٰ
مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٥٠﴾ ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيُّهَا الضَّالُّونَ الْمُكَذِّبُونَ ﴿٥١﴾

منزل٧

सदा (बहार) लड़के उनके पास आते जाते होंगे (17) गिलासों और जगों में साफ़–सुथरी (शराब) के जाम लिए (18) ऐसी (शराब) कि जिससे न उनके सिर चकराएंगे और न उनके होश उड़ेंगे (19) और ऐसे मेवे लिए जिनका चुनाव वे ख़ुद करेंगे (20) और ऐसी चिड़ियों का गोश्त लिए जिनकी उन्हें इच्छा होगी (21) और बड़ी–बड़ी आँखों वाली हूरें (22) जैसे छिपा–छिपा कर रखे गये मोती (23) यह सब उनके कामों के बदले के रूप में होगा जो वे किया करते थे (24) उसमें न वे कोई बक–बक सुनेंगे और न कोई पाप की बात (25) सलामती ही सलामती की बात के अलावा (26) और जो दाईं ओर वाले हैं, क्या ख़ूब हैं दाईं ओर वाले (27) काँटों से पाक सिदरा के पेड़ों में[1] (28) और लदे हुए केले के पेड़ों में (29) और फैली हुई छाया में (30) और बहते हुए पानी (31) और बहुत से फलों में (32) जो न समाप्त होने वाले होंगे और न उनमें कोई रोक–टोक होगी (33) और बुलन्द बिस्तरों में (34) हमने उन (महिलाओं) को नई उठान[2] दी है (35) तो हम ने उनको कुँवारियाँ बनाया है (36) मोहब्बत भरी हमजोलियाँ (37) (यह है) दाईं ओर वालों के लिए (38) यह पहलों में भी भारी संख्या में हैं (39) और बाद वालों में भी भारी संख्या में[3] (40) और बाईं ओर वाले, क्या हाल होगा बाईं ओर वालों का (41) (वे होंगे) झुलसा देने वाली हवा में और खौलते हुए पानी में (42) और काले धुएं की छाया में (43) जो न ठंडा होगा और न फ़ायदा पहुँचाने वाला (44) इससे पहले वे बड़े भोग–विलास में पड़े हुए थे (45) और बड़े पाप पर अड़े हुए थे (46) और वे कहा करते कि क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डी रह जाएंगे क्या फिर उठाए जाएंगे (47) क्या हमारे पहले बाप–दादा भी (48) कह दीजिए कि सब अगले और पिछले लोग (49) एक निर्धारित दिन के निर्धारित समय में अवश्य एकत्र किये जाएंगे (50) फिर ज़रूर तुमको ऐ पथ–भ्रष्टो झुठलाने वाले! (51)

(1) सिदरह पर विवरण सूरह वन्नज्म पृ. 527 पर गुज़र चुका है (2) यहाँ महिलाओं का शब्द लाए बिना मात्र सर्वनाम का प्रयोग हुआ है जिसमें उनकी सुन्दरता और छिपा–छिपा कर रखे जाने की ओर संकेत मालूम होता है, यह महिलाएं दुनिया की भली और संयम पत्नियाँ होंगी जिनको अल्लाह तआला वहाँ नई उठान देंगे, अतिसुन्दर और कुँवारी बना देंगे, इसी प्रकार जिन नेक महिलाओं की दुनिया में शादियाँ नहीं हुईं उनको भी वहाँ नई उठान देकर भले जन्नती पुरुषों से जोड़ दिया जाएगा (3) इस प्रकार के जन्नती और बाद के ज़मानों में भी बहुत होंगे।

لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿٥٢﴾ فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٥٣﴾
فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿٥٤﴾ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٥﴾
هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٦﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿٥٧﴾
اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿٥٨﴾ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٥٩﴾
نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٦٠﴾ عَلٰۤى اَنْ
نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ
النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿٦٣﴾ ءَاَنْتُمْ
تَزْرَعُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا
فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٦٧﴾
اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ﴿٦٨﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ
الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا
تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ﴿٧١﴾ ءَاَنْتُمْ
اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَاۤ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً
وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾ فَلَاۤ
اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿٧٥﴾ وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿٧٦﴾

منزل ٧

थोहड़ के पेड़ से खाना ही पड़ेगा (52) बस उसी से पेट भरने पड़ेंगे (53) फिर उसके ऊपर से खौलता हुआ पानी पीना पड़ेगा (54) फिर इस प्रकार पीना पड़ेगा जैसे प्यासे ऊँट पीते चले जाते हैं[1] (55) यह होगी बदले के दिन उनकी मेहमानी (56) हमने तुमको पैदा किया तो तुम क्यों इसको सच नहीं मानते (57) भला तुम्हारा क्या विचार है जो तुम वीर्य की बूँद टपकाते हो (58) क्या तुम उसको पैदा करते हो या हम हैं पैदा करने वाले[2] (59) हमने तुम्हारे बीच मौत (मुक़द्दर) कर रखी है और हमें कोई हरा नहीं सकता (60) इस प्रकार कि हम तुम्हारी जगह तुम्हारे जैसे और लोगों को ले आएं और तुमको वहाँ उठा खड़ा करें जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं (61) और तुम तो पहली पैदाइश जानते हो तो क्यों सबक़ नहीं लेते (62) भला तुम्हारा क्या विचार है जो तुम खेती करते हो[3] (63) क्या तुम उसको उगाते हो या उगाने वाले हम हैं (64) अगर हम चाहें तो उसको भूसा कर डालें तो तुम भौंचक्के रह जाओ (65) कि हम पर तो कर लग गया (66) बल्कि हम बड़े अभागे हैं (67) भला तुम्हारा क्या विचार है जो पानी तुम पीते हो (68) क्या तुमने उसको बादल से उतारा है या हम हैं उसको उतारने वाले (69) अगर हम चाहें तो उसको खारा कर दें फिर तुम क्यों एहसान नहीं मानते (70) भला तुम्हारा क्या विचार वह आग जिसको तुम सुलगाते हो (71) क्या तुम उसके पेड़ उगाते हो या हम हैं उगाने वाले[4] (72) हमने उसको याद दिलाने के लिए और जंगल वालों के फ़ायदे के लिए बनाया (73) बस अपने पालनहार के नाम की तस्बीह पढ़ते रहिए जो बड़ा महान है (74) अब मैं उन स्थानों की क़सम खाकर कहता हूँ जहाँ तारे गिरते हैं[5] (75) और बेशक अगर तुम जानो तो बहुत बड़ी क़सम है (76)

---

(1) ऊँट की यह बीमारी जलंधर है वह पीता चला जाता है और उसकी प्यास नहीं बुझती (2) न तुम्हारे बस में वीर्य की बूँद बनाना है और न उस बूँद को विभिन्न चरणों से गुज़ार कर इंसान पैदा करना है। (3) केवल बीज डाल देना और पानी लगा देना तुम्हारा काम है फिर उसको बढ़ाता कौन है? अंकुर कौन निकालता है और विभिन्न प्रकार के पेड़ कौन उगाता है, फिर आगे उनकी रक्षा कौन करता है, कोई विपदा पड़ जाती है तो रोने को मज़दूर नहीं मिलते (4) यह वही मिर्ख और अफ़्फ़ार के पेड़ हैं जिनकी टहनियों को रगड़ने से आग पैदा होती थी, अरब वासी उसी से आग सुलगाया करते थे और अब भी आमतौर पर जंगलों में रहने वाले इससे लाभ उठाते हैं और नसीहत का साधन इसलिए भी है कि एक पेड़ को अल्लाह ने आग पैदा करने का साधन बना दिया (5) तारों के गिरने की जगहों की क़सम में इशारा है कि यह क़ुरआन हर तरह के शैतान के अमल–दख़ल से पाक है, आसमानों की बातें अगर शैतान मालूम करना चाहते हैं तो उनको शिहाब–ए–साक़िब मारे जाते हैं, जिनको आम बोल–चाल में टूटे हुए तारे कहा जाता है।

कि बेशक यह सम्मान वाला कुरआन है (77) जो एक सुरक्षित किताब में (पहले से मौजूद) है (78) इसको केवल वही हाथ लगा सकता है जो ख़ूब पाक–साफ़ हो[1] (79) संसारों के पालनहार की ओर से (इसको) थोड़ा–थोड़ा उतारा जा रहा है (80) तो क्या तुम इस कलाम से लापरवाही बरतते हो (81) और इसके झुठलाने को अपना काम (व्यस्तता) बना रखा है (82) तो फिर क्यों न जिस समय जान हलक़ को पहुँचती है(83) और तुम उस समय उसको देख रहे होते हो (84) और हम तुमसे अधिक उससे निकट हैं हालांकि तुम नहीं देखते (85) तो अगर तुम किसी के अधीन नहीं हो तो क्यों (ऐसा) नहीं हो जाता (86) कि तुम उसको लौटा दो अगर तुम (अपनी बात में) सच्चे हो[2] (87) फिर अगर वह (मरने वाला) अल्लाह के दरबार में क़रीबियों में हुआ (88) तो मज़े ही मज़े हैं और ख़ुश्बू ही ख़ुश्बू है और नेमतों से भरा बाग़ है (89) और अगर वह दाईं तरफ़ वालों में हुआ (90) तो तेरे लिए सलाम ही सलाम (की भेंट) हैं कि तू दाईं ओर वालों में है (91) और अगर वह झुठलाने वालों, गुमराहों में हुआ (92) तो खौलते पानी से (उसका) सत्कार होगा (93) और (उसे) दोज़ख़ में डाला जाएगा (94) बेशक यही वह बात है जो निश्चित रूप से सच है (95) बस आप अपने पालनहार के नाम की तस्बीह कीजिए जो बड़ा महान है (96)

منزل۷

सूरह हदीद

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अल्लाह की तस्बीह (पाकी बयान करने) में सब लगे हैं जो भी आसमानो और ज़मीन में हैं और वह ज़बरदस्त है हिकमत (युक्ति) वाला है (1) उसी के लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है, वही जिलाता है और वही मारता है और वह हर चीज़ पर पूरी कुदरत (सामर्थ्य) रखता है (2) वही पहला है और वही आख़िर है और वही ज़ाहिर (प्रकट) है और वही बातिन (छिपा हुआ) है[3] और हर चीज़ को अच्छी तरह जानता है (3)

(1) इससे आशय फ़रिश्ते हैं जिनको अल्लाह ने पाक बनाया है, इंसान भी अगर इसको छूना चाहे तो उसके लिए पाक होना ज़रूरी है (2) अगर तुम अल्लाह को शासक और सर्वशक्तिमान और बदले के दिन का मालिक नहीं मानते और अपने आपको किसी के शासन के अधीन नहीं समझते बल्कि आज़ाद समझते हो तो लोगों को मौत से क्यों नहीं बचा लेते? तुम्हारे चहेते लोग दुनिया से जाते हैं और तुम बैठे मुँह तकते रहते हो कुछ नहीं कर पाते, यह खुद प्रमाण है कि अल्लाह की ओर से यह जीवन–मृत्यु का सिलसिला जारी है और अल्लाह ने जीवन परीक्षा के लिए दी है जिसका हिसाब–किताब आख़िरत में होगा, खुद तुम्हारे हाथ में कुछ नहीं (3) एक दुआ में इन गुणों (सिफ़ात) का इस प्रकार हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उल्लेख किया है कि इसके अर्थ निर्धारित हो जाते हैं, दुआ के शब्द यह हैं:– "ऐ अल्लाह तू पहला है तुझसे पहले कुछ नहीं, तू अंतिम है तेरे बाद कुछ नहीं, तू प्रकट (ज़ाहिर) है तुझसे ऊपर कुछ नहीं और तू बातिन (छिपा हुआ) है तुझसे अधिक गुप्त कुछ नहीं।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى
عَلَى الْعَرْشِ ۭ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ
مِنَ السَّمَاۗءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۭ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ٤ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ
الْاُمُوْرُ ٥ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۭ وَهُوَ
عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ٦ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا
جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا
لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ٧ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ
لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ٨
هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰي عَبْدِهٖٓ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ
الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ٩ وَ
مَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۭ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ۭ
اُولٰۗىِٕكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ۭ
وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ١٠

منزل۷

वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया फिर वह अर्श (सिंहासन) पर विराजमान हुआ, वह ख़ूब जानता है हर उस चीज़ को जो ज़मीन के भीतर जाती है और जो ज़मीन से निकलती है और जो आसमान से उतरती है और जो उसमें चढ़ती है, और तुम जहाँ कहीं भी हो वह तुम्हारे साथ है, और अल्लाह तुम्हारे सब कामों पर पूरी नज़र रखता है (4) उसी के लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है और उसी की ओर सारे काम लौटाए जाते हैं (5) वह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है और वह सीनों की छिपी हुई बातों को ख़ूब जानता है (6) अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह ने तुम्हें जिस चीज़ में उत्तराधिकारी बनाया है उसमें से ख़र्च करो[1], बस जो लोग तुम में ईमान लाए, और उन्होंने ख़र्च किया उनके लिए बड़ा बदला है (7) और तुम्हें हुआ क्या है तुम अल्लाह पर ईमान क्यों नहीं लाते जबकि रसूल बराबर तुम्हें इसकी ओर बुला रहे हैं कि तुम अपने पालनहार पर ईमान ले आओ और वह तुम से वचन भी ले चुके हैं[2] अगर तुमको मानना हो (8) वही है जो अपने बंदे पर साफ़–साफ़ आयतें उतार रहा है ताकि वह तुम्हें अंधेरे से निकाल कर रौशनी में लाए और बेशक अल्लाह तुम पर बड़ा ही मेहरबान और बहुत ही दयालु है (9) और तुम्हें हुआ क्या है कि तुम अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते जबकि आसमानों और ज़मीन का सब कुछ उसी को पहुँचता है, तुममें जिन लोगों ने (मक्का) विजय से पहले ख़र्च किया और युद्ध किया वे (बाद वालों के) बराबर नहीं, वे उनके मुक़ाबले में बहुत श्रेष्ठ स्थान वाले हैं जिन्होंने विजय के बाद ख़र्च किया और युद्ध किया और भलाई का वादा तो अल्लाह का हर एक से है[3] और अल्लाह तुम्हारे सब कामों की ख़ूब ख़बर रखता है (10)

(1) यानी वह धन जिसका अल्लाह ने तुम्हें उत्तराधिकारी बनाया पहले वह किसी और के पास था अब तुम्हारे पास है फिर किसी के पास चला जाएगा तो उसको अल्लाह के आदेशानुसार ख़र्च करो ताकि तुम्हें सफ़लता प्राप्त हो (2) ऐसा लगता है यह सम्बोधन उन लोगों के लिए है जो पूरी तरह दिल से मुसलमान नहीं हो सके थे और जब ख़र्च करने की बात आती तो उनको इसमें कठिनाई महसूस होती (3) मक्का विजय से पहले बड़ी कठिनाइयाँ थीं, संसाधन भी कम थे, दुश्मनियाँ भी बहुत थीं, उस अवसर पर जिन लोगों ने कुर्बानियाँ दीं और अल्लाह के रास्ते में माल ख़र्च किया उनको अल्लाह ने बहुत बुलन्द मक़ाम से सम्मानित किया यद्यपि भलाई के सब काम भलाई ही हैं और उन पर अल्लाह की ओर से बदला मिलता है लेकिन जिन्होंने पहले कुर्बानियाँ दीं उनको अल्लाह की विशेष निकटता प्राप्त हुई।

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ
اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿۱۱﴾ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ
بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۲﴾ يَوْمَ يَقُوْلُ
الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ
نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ۗ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ
بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ۗ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿۱۳﴾
يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۗ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَ
تَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَ
غَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۱۴﴾ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ۗ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ۗ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۵﴾
اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ
مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ
عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ۗ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ
اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷﴾

منزل ۷

कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़ तो वह उसके लिए उसको कई गुना बढ़ा दे और उसके लिए सम्मान का बदला है[1] (11) उस दिन आप ईमान वाले पुरुषों और ईमान वाली महिलाओं को देखेंगे कि उनका प्रकाश उनके सामने और उनके दाएं दौड़ता चलेगा, आज तुम्हें ख़ुशख़बरी हो ऐसी जन्नतों की जिनके नीचे नहरें जारी हैं, उन्हीं में हमेशा के लिए रहना है, यही बड़ी सफ़लता है (12) उस दिन मुनाफ़िक़ पुरुष और मुनाफ़िक़ महिलाएं ईमान वालों से कहेंगे ज़रा हमें भी देख लो तुम्हारी कुछ रौशनी हम भी प्राप्त कर लें, कहा जाएगा पीछे लौट जाओ और (जाकर) रौशनी तलाश करो[2], बस उनके बीच एक ऐसी दीवार आड़ कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा होगा जिसके भीतर की ओर रहमत (कृपा) होगी और उधर उसके बाहर की ओर अज़ाब होगा (13) वे (दोज़ख़ वाले) उन (जन्नत वालों) को पुकार कर कहेंगे क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे वे कहेंगे क्यों नहीं लेकिन तुमने अपने आपको फ़ितने में डाला और रास्ता देखते रहे[3] और शक में पड़े रहे और झूठी आकांक्षाओं ने तुम्हें धोखे में डाले रखा यहाँ तक कि अल्लाह का आदेश आ गया और अल्लाह के बारे में धोखेबाज़ ने तुम्हें धोखे में डाले रखा (14) बस आज तुम से किसी प्रकार का फ़िदिया स्वीकार नहीं किया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने इनकार किया, तुम सबका ठिकाना दोज़ख़ है, वही तुम्हारे साथ है और वह बहुत बुरा अंजाम है (15) क्या अब भी ईमान वालों के लिए समय नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद के लिए और जो सच्ची बात उतरी है उसके लिए पिघल जाएं और वे उन लोगों की तरह न हों जिनको पहले किताब दी गई थी उन पर फिर ज़माना लम्बा हुआ तो उनके दिल कठोर हो गये और उनमें अधिकांश अवज्ञाकारी ही (सिद्ध) हुए (16) जान लो कि बेशक अल्लाह ही ज़मीन को मुर्दा होने के बाद जीवित करता है[4], हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ खोल–खोल कर बयान कर दीं ताकि तुम बुद्धि से काम लो (17)

---

(1) आदमी जो अल्लाह के लिए ख़र्च करता है उसको क़र्ज़ इसलिए कहा गया है कि अल्लाह तआला उसका बदला बड़े अच्छे अंदाज़ से अता फ़रमाता है लेकिन उसके साथ "हसन" की शर्त है कि पूरे ख़ुलूस (निष्ठा) के साथ मात्र अल्लाह को ख़ुश करने के लिए ही दे, उसमें दूसरे मक़सद न हो (2) यानी यह फ़ैसला पीछे हो रहा है कि किसको रौशनी दी जाएगी और कौन उससे वंचित (महरूम) रहेगा तो वहीं जाकर अपना मामला तय कर लो, बस उसी बीच में ईमान वालों और काफ़िरों के बीच एक दीवार आड़ बन जाएगी उसका जो भाग ईमान वालों के बीच होगा वह पूर्णरूप से रहमत ही रहमत होगा और जिसकी दिशा काफ़िरों की ओर होगी वह पूरा का पूरा अज़ाब ही अज़ाब होगा (3) यानी यह रास्ता देखते रहे कि मुसलमान सब समाप्त हो जाएं और इस्लाम मिट जाए (4) यह उदाहरण देकर सांत्वना दी जा रही है कि रास्ते बंद नहीं हैं जो भी अपने दिल की ज़मीन को कोमल कर लेगा उस पर अल्लाह की रहमत की बारिश होगी और वह वंचित नहीं रहेगा लेकिन अगर पिछले समुदायों की तरह दिल कठोर हो गये वंचन (महरूमी) ऐसे लोगों का मुक़द्दर बनेगी।

निश्चित रूप से ख़ैरात करने वाले पुरुष और ख़ैरात करने वाली महिलाएं और जिन्होंने अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दे रखा है उनके लिए (उनका माल) कई गुना बढ़ा दिया जाएगा और उनके लिए इज़्ज़त वाला बदला है (18) और जो अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाए वही लोग अपने पालनहार के लिए निकट सिद्दीक़ीन और शहीद[1] (का मक़ाम रखते) हैं उनके लिए उनका बदला होगा और उनका नूर (रौशनी) होगा, और जिन्होंने इनकार किया और हमारी निशानियों को झुठलाया वही लोग जहन्नमवासी हैं (19) जान लो कि दुनिया का जीवन मात्र खेल–तमाशा है और श्रृंगार और एक–दूसरे पर बड़ाई जताना है और धन–संतान में एक दूसरे पर आगे बढ़ जाने का प्रयास है, एक वर्षा की तरह कि किसानों को उसकी पैदावार बहुत अच्छी लगती है बस वह बहार पर होती है फिर आपको पीला नज़र आने लगती है फिर वह भूसा–भूसा होकर रह जाती है और आख़िरत में कठोर दण्ड भी है और अल्लाह की ओर से (गुनाहों की) माफ़ी और ख़ुशी भी है और दुनिया का जीवन धोखे के सामान के सिवा कुछ नहीं[2] (20) दौड़ पड़ो अपने पालनहार की मग़फ़िरत (माफ़ी) की ओर और ऐसी जन्नत की ओर जिसकी चौड़ाई आसमान और ज़मीन के बराबर है जिसको उन लोगों के लिए तैयार किया गया है जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं यह अल्लाह की कृपा है जिसको चाहता है प्रदान करता है और अल्लाह तो बड़ी कृपा वाला है (21) जो भी मुसीबत ज़मीन पर उतरी है या तुम्हारी जानों को (लगती है) वह उस समय से किताब में मौजूद है[3] जब हमने इन (जानों) को पैदा भी नहीं किया था बेशक यह अल्लाह के लिए कुछ मुश्किल नहीं (22) ताकि जो चीज़ तुम से छूट जाए उस पर दुखी न हो और जो वह तुम्हें दे दे[4] उस पर इतराओ नहीं और अल्लाह किसी भी अकड़ने वाले बड़ाई जताने वाले को पसन्द नहीं करता (23) जो कंजूसी करते हैं और लोगों को कंजूसी के लिए कहते हैं और जो भी मुँह फेरेगा तो बेशक अल्लाह ही है जिसको किसकी ज़रूरत नहीं प्रशंस्नीय है (24)

(1) सिद्दीक़ पैग़म्बर के बाद सबसे ऊँचा मक़ाम है, जिसके अन्दर–बाहर और हाल और बातों से सच्चाई फूटती हो उसको सिद्दीक़ कहते हैं और जो अल्लाह के रास्ते में अपनी जान दे दे वह शहीद है (2) यहाँ इंसान के उन कामों का उल्लेख है जिनसे वह जीवन के विभिन्न चरणों में दिल लगाता है, बचपन का ज़माना खेल–तमाशे का होता है, जवानी में बनाव–श्रृंगार, फैशन और एक–दूसरे पर गर्व करने का चरण होता है और बुढ़ापे में यह रह जाता है कि हमारी इतनी संतान, इतनी सम्पत्ति, फिर इसकी मिसाल वर्षा और उसके फलस्वरूप होने वाली पैदावार से दी गई है कि इसी तरह उसमें भी चरण हैं लेकिन परिणाम यही है कि सब भूसा होकर रह जाएगा, इसी प्रकार यह दुनिया की सारी चीज़ें देखने में बहुत भली हैं लेकिन आख़िरत में धोखे के सौदे के सिवा कुछ नहीं (3) यानी लौह–ए–महफ़ूज़ में (4) मुसीबत में यह सोचकर तसल्ली होती है कि अल्लाह ने यही लिखा था और राहत में अल्लाह ही का शुक्र अदा किया जाये कि यह सब उसकी कृपा से मिला।

لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ
وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ
بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَ
رُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿۲۵﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّ
اِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ
وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۲۶﴾ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓي اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا
بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ڏ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ۭ وَرَهْبَانِيَّةَۨ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا
عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَاۗءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ
فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۲۷﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ
كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۸﴾ لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ
عَلٰي شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ
يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۲۹﴾

منزل۷

बेशक हमने अपने पैग़म्बरों को खुले प्रमाणों के साथ भेजा और उनके साथ किताब भी उतारी और तराजू भी ताकि लोग न्याय पर क़ायम रहें और हमने लोहा उतारा[1] जिसमें बड़ी सख़्ती है[2] और लोगों के लिए फ़ायदे हैं और ताकि अल्लाह जान ले कि कौन है जो बिना देखे उसकी और उसके पैग़म्बरों की मदद करता है बेशक अल्लाह बड़ी ताक़त रखता है ज़बरदस्त है (25) और हम ही ने नूह को और इब्राहीम को पैग़म्बर बनाकर भेजा और उन्हीं दोनों की संतान में पैग़म्बरी और किताब को निर्धारित कर दिया बस उनमें कुछ हिदायत पर हुए और अधिकांश उनमें नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) हुए (26) फिर हमने उन्हीं के पीछे उनके पदचिन्ह पर अपने बहुत से पैग़म्बर भेजे और उनके पीछे ईसा पुत्र मरियम को भेजा और उनको इंजील दी और उनके अनुयायियों के दिलों में नर्मी और दया रख दी और रहबानियत (संन्यास) को उन्होंने अपनी ओर से आविष्कार कर लिया, उसको हम ने उन पर अनिवार्य नहीं किया था सिवाय अल्लाह की ख़ुशी चाहने के तो वे उसका पूरा लिहाज़ न कर सके[3] तो हमने उनमें ईमान लाने वालों को उनका बदला प्रदान किया और उनमें अधिकांश नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) रहे (27) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाओ वह तुम्हें अपनी रहमत (कृपा) के दो भारी हिस्से देगा[4] और तुम्हारे लिए ऐसी रौशनी उपलब्ध कराएगा जिसमें तुम चल सकोगे और तुम्हें माफ़ कर देगा और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयावान है (28) ताकि अहल–ए–किताब जान लें कि वे ज़रा भी अल्लाह की फ़ज़्ल (कृपा) पर कुदरत (सामर्थ्य) नहीं रखते[5], और सबका सब फ़ज़्ल (कृपा) अल्लाह ही के हाथ में है जिसको चाहता है देता है और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल (कृपा) वाला है (29)

(1) "अंज़लना" हमने उतारा इससे शायद दिमाग़ में यह बात आए कि लोहा तो ज़मीन से निकलता है तो इसका पहला जवाब तो यह है कि सब अल्लाह ही का उतारा हुआ है फिर ज़मीन उसका ख़ज़ाना है जिससे इंसान ज़रूरत की चीज़ें निकालता रहता है, दूसरी बात यह है कि आधुनिक शोध भी अब यह कहता है कि लोहे के अंश वातावरण से ज़मीन में स्थानान्तरित होते हैं, इस शोध के अनुसार ज़ाहिरी रूप से भी "अंज़लना" पर कोई सवाल बाक़ी नहीं रहता (2) इंसाफ़ और न्याय दो माध्यमों से होता है, पहला कुरआन और इंसाफ़ की अपेक्षाओं पर अमल करना और अगर इसमें ग़फ़लत है तो शक्ति प्रयोग करना पड़ता है, इससे किताब व मीज़ान के साथ हदीद (लोहे) का सम्बन्ध साफ़ हो गया (3) रहबानियत (सन्यास) का इतिहास यह है कि हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) के बाद जब उनके मानने वालों पर अत्याचार हुआ तो उन्होंने जंगलों में शरण ली ताकि धर्म पर चल सकें, वास्तव में यह काम उन्होंने अल्लाह के लिए शुरु किया मगर फिर उसमें बढ़ोतरी होती गई और जो चीज़ें अल्लाह ने उन पर अनिवार्य नहीं की थीं वे उन्होंने अनिवार्य कर लीं, जिसके कारण धर्म के रास्ते से लोग हटने लगे, जब उनको आसानियाँ प्राप्त हुईं तब भी आसानियों को प्राप्त करना उन्होंने अवैध समझा, इबादत (पूजा) में व्यस्तता के लिए उन्होंने विवाह को हराम (अवैध) समझ लिया इस प्रकार ख़राबी बढ़ती चली गई (4) यह अहल–ए–किताब से कहा जा रहा है कि अगर तुम ईमान लाओगे तो तुम्हें दोहरा बदला मिलेगा इसलिये कि तुम हज़रत मूसा, हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) पर भी ईमान रखे और अब अंतिम पैग़म्बर (सल–लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ईमान लाए हो (5) इसमें एक तो कुछ उन अहले–ए–किताब को और संकेत है जो इसलिए ईमान नहीं लाए थे कि पैग़म्बरी इस्हाक़ (अलैहिस्सलाम) के वंश से इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के वंश में कैसे चली गई, अल्लाह कह रहा है कि यह तो उसका फ़ज़्ल (कृपा) है जिसमें किसी का कोई वश नहीं चलता, दूसरे उनकी एक और मूर्खता की ओर संकेत है कि जब उनमें कोई मरता तो उनका धर्म–गुरु एक स्तुति पत्र उसके साथ क़ब्र में रख देता था और समझा जाता था कि इससे गुनाह माफ़ हो जाएंगे, कह दिया गया कि अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) किसी के अधिकार में नहीं है वह जिसको चाहे माफ़ी दे दे किसी और को उसमें दख़ल नहीं।

سورة المجادلة مدنية وهي اثنتان وعشرون اٰية وثلث ركوعات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَ
تَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ①
اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ
اِلَّا الّٰٓـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۭ وَ
اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ② وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ ثُمَّ
يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۭ ذٰلِكُمْ
تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ③ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ
شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ
سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ۭ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ
وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ④ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَاۗدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۭ وَ
لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ⑤ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ
بِمَا عَمِلُوْا ۭ اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ⑥

منزل ٧

सूरह मुजादला

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अल्लाह ने उस महिला की बात सुन ली जो आपसे अपने पति के बारे में बहस कर रही थी और अल्लाह से फ़रियाद करती जाती थी और अल्लाह तुम दोनों की बातचीत सुन रहा था बेशक अल्लाह सुनता, देखता[1] है (1) तुममें जो लोग अपनी महिलाओं को ज़िहार (पत्नी को माँ की उपमा देना) कर लेते हैं वे उनकी माँए नहीं हो जातीं, उनकी माँए तो वही हैं जिन्होंने उनको जना है और बेशक वे लोग बड़ी अनुचित और झूठ बात कहते हैं और बेशक अल्लाह तआला बहुत माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है[2] (2) और जो लोग अपनी औरतों को माँ कह बैठे हैं फिर जो उन्होंने कहा उससे लौटना चाहते हैं तो उनके ज़िम्मे दोनों (पति–पत्नी) के मिलने से पहले एक गर्दन आज़ाद करना है, तुम्हें इसकी नसीहत की जाती है और तुम जो करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है (3) फिर जो (गुलाम या लौण्डी) न पा सके तो उसके ज़िम्मे दोनों के मिलने से पहले ही लगातार दो महीने के रोज़े हैं फिर इसकी भी ताक़त न रखता हो तो उसके ज़िम्मे साठ ग़रीबों (मिस्कीनों) को खाना खिलाना है ताकि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान (को मज़बूत) रखो और यह अल्लाह की (निर्धारित की हुई) हदें हैं और इनकार करने वालों के लिए दुखद अज़ाब है[3] (4) बेशक जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बर से टक्कर लेते हैं वे अपमानित होंगे जैसे उनसे पहले के लोग अपमानित हुए, और हमने खुली आयतें उतार दी हैं और न मानने वालों के लिए अपमानजनक अज़ाब है[4] (5) जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा फिर जो कुछ उन्होंने किया है वह उन पर जतला देगा, अल्लाह ने वह सब गिन–गिन कर रखा है और वे उसको भूल चुके हैं और हर चीज़ अल्लाह के सामने है (6)

(1) यह ख़ौलह पुत्री सालबह की घटना है, उनके पति ने एक बार उन से कह दिया कि तुम मेरी माँ की पीठ की तरह हो, इसको इस्लामी परिभाषा में "ज़िहार" कहते हैं, जाहिलियत में इसको तलाक़ के समान ही समझा जाता था, हज़रत ख़ौलह परेशान हुईं और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से आकर शिकायत की कि मेरे छोटे–छोटे बच्चे हैं और अगर ख़ुद रखूँ तो भुखमरी का डर है, पति को दे दूँ तो वे बर्बाद हो जाएंगे और उन्होंने मुझे तलाक़ तो दी नहीं, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस पर यही फ़रमाते रहे कि इस बारे में मेरे पास कोई आदेश नहीं आया है और पुराने नियमानुसार तुम उन पर हराम हो गईं, वह अपनी बात बार–बार आप से कहती जाती थीं और आसमान की ओर मुँह उठाकर फ़रियाद करती जाती थीं, यह बात चल ही रही थी कि यह आयतें उतर गईं जिसमें "ज़िहार" का आदेश बयान कर दिया गया, उनकी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से इस बातचीत को ही "मुजादलह" और बहस से परिभाषित किया गया है (2) इस आयत में स्पष्ट रूप कर दिया गया कि माँ की तरह कह देने से पत्नी हराम (अवैध) नहीं हो जाती हाँ! इस तरह कहना बड़े पाप का काम है, लेकिन कोई तौबा करे तो अल्लाह माफ़ कर देता है (3) उपरोक्त दोनों आयतों में "ज़िहार" का आदेश बयान हो रहा है कि इस प्रकार कह देने से फिर पति–पत्नी के सम्बन्ध ठीक नहीं रह जाते हाँ रुजू कर लेना (लौट आना) वैध होता है, जिसके लिए कफ़्फ़ारा अदा करना ज़रूरी है, इसके बाद फिर सम्बन्ध बहाल किये जा सकते हैं और कफ़्फ़ारे का क्रम यह है कि गुलाम आज़ाद करे, वह सम्भव न हो तो साठ दिन लगातार रोज़े रखे और यह भी सम्भव न हो तो साठ मिस्कीनाकों (ग़रीबों) खाना खिलाए (4) ऊपर अल्लाह की हदों को मानने वालों का उल्लेख था और यह न मानने वालों और दुश्मनी करने वालों का वर्णन है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ مَا يَكُونُ مِنْ
نَجْوَىٰ ثَلَاثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَىٰ
مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ۖ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا عَنِ
النَّجْوَىٰ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَاجَوْنَ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ
وَيَقُولُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ ۚ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ
يَصْلَوْنَهَا ۖ فَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ
فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا
بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩﴾ إِنَّمَا النَّجْوَىٰ
مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا
بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٠﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللَّهُ
لَكُمْ ۖ وَإِذَا قِيلَ انْشُزُوا فَانْشُزُوا يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا
مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١﴾

منزل ٧

क्या आपने देखा नहीं कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब अल्लाह के ज्ञान में है, जहाँ भी तीन की काना–फूसी होती है उनका चौथा अल्लाह होता है और जहाँ भी पाँच होते हैं उनका छठा अल्लाह होता है और जो भी इससे कम या ज़्यादा होते हैं वह उनके साथ ही होता है, वे जहाँ कहीं भी हों, फिर उन्होंने जो कुछ किया है क़यामत में वह उनको सब कुछ जतला देगा बेशक अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानता है[1] (7) भला आपने उन लोगों को नहीं देखा जिनको कानाफूसी से रोका गया फिर भी वे वही काम करते हैं जिससे उनको रोका गया था, और वे पाप, ज़्यादती और पैग़म्बर की नाफ़रमानी (अवज्ञा) की एक दूसरे से काना–फूंसियाँ करते हैं, और जब आपके पास आते हैं तो इस तरह आपको सलाम करते हैं जिस तरह अल्लाह ने आपको सलाम नहीं किया था और मन ही मन में कहते हैं कि हम जो कुछ कर रहे हैं उस पर हमें अल्लाह सज़ा क्यों नहीं देता, ऐसों के लिए दोज़ख़ काफ़ी है जिसमें वे दाखिल होकर रहेंगे बस वह बहुत ही बुरा अंजाम है[2] (8) ऐ ईमान वालो! तुम जब भी आपस में कानाफूसी करो तो गुनाह और ज़्यादती और पैग़म्बर की नाफ़रमानी (अवज्ञा) की कानाफूसियाँ मत करना, और नेकी और तक़वे की सरगोशी करना और उस अल्लाह से डरते रहना जिसकी ओर तुम सबको जमा किया जाएगा (9) बेशक यह जो कानाफूसी होती है यह शैतान का काम है ताकि वह ईमान वालों को दुख से ग्रस्त करे जबकि वह अल्लाह की अनुमति के बिना उनको तनिक भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकता, और अल्लाह ही पर ईमान वालों को भरोसा रखना चाहिए (10) ऐ ईमान वालो! जब तुमसे कहा जाए कि सभाओं में फैलाव पैदा करो तो फैलाव पैदा कर लिया करो, अल्लाह तुम्हारे साथ गुंजाइश पैदा कर देगा और जब कहा जाए कि उठ जाओ तो उठ जाओ अल्लाह तआला उन लोगों को ऊँचे दर्जे देगा जो तुममें ईमान लाए और जिनको ज्ञान मिला, और तुम्हारे सब कामों की अल्लाह को ख़बर है[3] (11)

---

(1) पवित्र मदीने में यहूदी मुसलमानों को सताने का हर सम्भव प्रयास करते, जब मुसलमानों को देखते तो आपस में इस प्रकार कानाफूसी शुरु करते जैसे वे कोई षड़यन्त्र कर रहे हों स्वाभाविक रूप से मुसलमानों को इससे तकलीफ़ होती थी, उनको इससे रोका गया मगर वे न मानते थे, इस पर यह आयतें उतरीं, फिर आगे आयत न. 10 में मुसलमानों को भी तसल्ली दी गई कि वे ज़रा भी इससे परेशान न हों, मुसलमानों के लिए अल्लाह ही काफ़ी है, वे उसी पर भरोसा करें, अल्लाह की अनुमति के बिना वे कुछ नहीं कर सकते (2) यह यहूदियों की दूसरी शरारत थी कि अगर वे आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सलाम करते तो अस्सलामु अलैकुम के स्थान पर अस्सामु अलैकुम कहते, अस्साम का अर्थ है मौत, सुनने वाले इसको ज़्यादा महसूस भी नहीं कर पाते थे और वे इस प्रकार अपने द्वेष की आग ठंडी करते थे, और अपनी इन दुष्टताओं के बाद यह भी सोचते थे कि अगर यह हमारी ग़लतियाँ हैं तो अल्लाह इससे हमें सज़ा क्यों नहीं देता, इसका जवाब दिया गया कि "जल्दी न करो, ऐसा पूरा अज़ाब आएगा जिसके सामने दूसरे अज़ाब की ज़रूरत न होगी (3) इस आयत में सभा के संस्कार बयान किये गये हैं, एक तो यह कि नये आने वाले के लिए फैलाव पैदा करके उसको बैठने की जगह दी जाए, दूसरे यह कि अगर कुछ प्रतिष्ठित ज्ञानी और धार्मिक रुतबा रखने वाले आ जाएं और जगह न हो तो सभापति को इसकी भी अनुमति है कि वह कुछ लोगों को उठाकर उन नए आने वालों को बैठने का अवसर दे, आयत में ईमान वालों और ज्ञान वालों के उच्च श्रेणी का भी वर्णन है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُولَ فَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ صَدَقَةً ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَطْهَرُ ۚ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾ أَأَشْفَقْتُمْ أَن تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ صَدَقَاتٍ ۚ فَإِذْ لَمْ تَفْعَلُوا وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٣﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِم مَّا هُم مِّنكُمْ وَلَا مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤﴾ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٦﴾ لَّن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٧﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ ۖ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٨﴾ اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنسَاهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ﴿٢٠﴾

منزل۷

ऐ ईमान वालो! जब तुम रसूल से अकेले में बात करना (चाहो) तो तुम अकेले में बात करने से पहले सदक़ा दे दिया करो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर और अधिक पवित्र है फिर अगर तुम्हें (कुछ) न मिल सके तो अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है[1] (12) क्या तुम अकेले में बात करने से पहले सदक़ा देने से घबरा गए तो जब तुमने ऐसा नहीं किया और अल्लाह ने तुम्हें माफ़ कर दिया तो नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात देते रहो और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञापालन करते रहो और अल्लाह तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर रखता है (13) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने ऐसी क़ौम से दोस्ती की जिन पर अल्लाह का प्रकोप हुआ[2] वे न तुम में हैं और न उनमें हैं और वे जानते बूझते झूठ पर क़समें खाते हैं (14) अल्लाह ने उनके लिए कठोर दण्ड तैयार कर रखा है बेशक उनकी करतूत बहुत ही बुरी हैं (15) उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है तो वे अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं बस उनके लिए अपमानजनक दण्ड है (16) उनके धन और संतान अल्लाह के मुक़ाबले में उनके ज़रा भी काम न आएंगे, यही लोग दोज़ख़ी हैं, वे हमेशा उसी में रहेंगे (17) जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा तो वे उसके सामने भी क़समें खाएंगे जैसे तुम्हारे सामने क़समे खाते हैं और वे समझेंगे कि उनको कोई सहारा मिल गया, याद रखो! बेशक यही लोग हैं जो झूठे हैं (18) शैतान ने उन पर डेरे जमा लिए हैं तो अल्लाह की याद से उनको ग़ाफ़िल कर दिया है, वही लोग शैतान के चेले–चापड़ हैं, याद रखो! शैतान के चेले चापड़ ही घाटे में हैं (19) बेशक जो भी अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं वे बहुत ही ज़लील लोग हैं (20)

---

(1) जो लोग अकेले में हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बात करते थे उनमें बहुत से मुनाफ़िक़ (कपटी) भी थे जो अपनी हैसियत जताने के लिए बहुत समय ले लेते थे, और कभी–कभी सीधे–साधे मुसलमान भी अकारण देर तक बात करते रहते थे, ख़ुद आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का व्यवहार इतना अच्छा था कि किसी को उठने के लिए न कहते थे, इस पर यह आयतें उतरीं कि जिसको अकेले में बात करनी हो वह पहले सदक़ा दे, इसका एक फ़ायदा तो यह था कि अगर बात में कुछ अधिक बात हो जाती तो यह सदक़ा कफ़्फ़ारा बनता, दूसरे यह कि फिर लोग बिना ज़रूरत बात करने से बचते, आरम्भ में यह आदेश रहा फिर जब लोग बचने लगे तो इसको निरस्त कर दिया गया, अगली आयत में इसका वर्णन है (2) यानी मुनाफ़िक़ लोग जिन्होंने यहूदियों से दोस्ती कर रखी थी, न वे मुसलमानों के लिए निष्ठावान (मुख़्लिस) थे और न ही यहूदियों में शामिल हुए थे हाँ! मुसलमानों के सामने अपने मुख़्लिस होने की इसलिए क़समें खाते थे ताकि मुसलमानों की जवाबी कार्यवाही से सुरक्षित रहें, अल्लाह कहता है कि यह लोग पूर्णरूप से दोज़ख़ी हैं, वहाँ भी यह क़समें खाएंगे और समझेंगे कि दुनिया की तरह वहाँ भी उनकी बदमाशी छिपी रहेगी, मगर वहाँ सारी हक़ीक़त खुल जाएगी।

अल्लाह ने यह बात लिख दी है कि मैं और मेरे पैग़म्बर ही विजयी होकर रहेंगे, बेशक अल्लाह बड़ी शक्ति वाला है ज़बरदस्त है (21) जो लोग अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं आप उनको ऐसा नहीं पाएंगे कि वे उन लोगों से दोस्ती करते हैं जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया है चाहे वे उनके बाप हों या बेटे हों या उनके भाई हों या उनके क़बीले के लोग हों, यही वे लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श कर दिया है और अपनी विशेष रहमत से उनका समर्थन किया है और वह उनको ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उन्हीं में वे हमेशा रहेंगे अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए, यह हैं अल्लाह के लोग, याद रखो! अल्लाह के लोग ही सफ़ल होन वाले हैं (22)

सूरह हश्र

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अल्लाह ही की तस्बीह में सब लगे हैं जो भी आसमानों में हैं और जो भी ज़मीन में हैं, और वह ज़बरदस्त है हिकमत (युक्ति) वाला है (1) वही है जिसने अह्ल–ए–किताब में से काफ़िरों को पहली ही मुडभेड़ में उनके घरों से निकाल बाहर किया, तुम्हें इसका ख़्याल भी नहीं था कि वे निकलेंगे और खुद उनको गुमान यह था कि उनके क़िले तो उनको अल्लाह से बचा लेंगे तो अल्लाह ने उनकी ऐसी जगह से पकड़ की जिसका उन्हें शान व गुमान[1] भी नहीं था और उनके दिलों में ऐसा रौब डाल दिया कि वे खुद अपने हाथों से और मुसलमानों के हाथों से अपने घरों को उजाड़ने लगे, बस ऐ निगाह वालो! सबक़ लो (2) और अगर अल्लाह ने दुनिया में उनके लिए देश–बदर लिख न दिया होता तो वह दुनिया में भी उनको अज़ाब देता और आख़िरत में तो उनके लिए दोज़ख़ का अज़ाब है ही[2] (3)

(1) यह क़बीला "बनू नज़ीर" का उल्लेख है, यहूदी यद्यपि अंतिम पैग़म्बर की प्रतीक्षा में बैठे हुए थे लेकिन जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नबी बनाकर भेजे गये तो उन्होंने मानने से इनकार कर दिया, जब आपने हिजरत की तो यहूदियों से समझौता किया और उन्होंने बाहर के दुश्मनों के ख़िलाफ़ मुसलमानों का साथ देने का वादा किया मगर अन्दर की इर्ष्या ने उनको ऐसा करने नहीं दिया बल्कि वे लगातार मुसलमानों को तकलीफ़ पहुँचाने का प्रयास करते रहे, कई बार आप (सल–लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को शहीद करने की योजना बनाई, एक बार आप (सल–लल्लाहु अलैहि वसल्लम) क़बीला बनू नज़ीर के क्षेत्र में गये तो उन्होंने आपको एक दीवार के नीचे बैठा दिया और यह षणयंत्र किया कि एक बड़ा पत्थर आप पर गिरा दिया जाए मगर वह्य के द्वारा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इसकी जानकारी हो गई, और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सुरक्षित वापस आ गये, उनकी और दूसरी साज़िशों को भी आपको ज्ञान हुआ तो आपने उनसे समझौता समाप्त कर लिया और एक अवधि निर्धारित कर दी कि इस अवधि में वे मदीना छोड़ दें, उधर मुनाफ़िक़ों ने उन्हें भड़काया कि तुम्हें जाने की आवश्यकता नहीं हम तुम्हारा साथ देंगे, अवधि पूरी होने पर भी जब वे नहीं गये तो आपने उनकी घेराबन्दी कर दी, वे समझते थे कि मुनाफ़िक़ (कपटी) उनका साथ देंगे और वे क़िलों में सुरक्षित रहेंगे मगर पहले ही चरण में वे ढेर हो गये, कोई उनकी मदद के लिए भी नहीं आया, आपने उनको अनुमति दी कि जो सामान ले जा सकें ले जाएं अतः खुद अपने हाथों से उन्होंने अपने घरों को बर्बाद किया, दरवाज़े तक उखाड़–उखाड़ कर ले गये, मुसलमानों ने भी तोड़–फोड़ में उनकी मदद की (2) यानी देश–निकाला उनके लिए निर्धारित न होती तो क़बीला बनू क़ैनक़ाअ की तरह वे सब भी क़त्ल किये जाते।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ
شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۴﴾ مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى
اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۵﴾ وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ
اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۶﴾
مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ
وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا
يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ۚ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَ
مَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۷﴾
لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ
يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿۸﴾ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ
قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ
حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ
خَصَاصَةٌ ۭ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۹﴾

وقف لازم

منزل ٧

यह इसलिए है कि उन्होंने अल्लाह और रसूल से दुश्मनी कर ली और जो अल्लाह से दुश्मनी करता है तो बेशक अल्लाह की मार बड़ी ज़ोर की है (4) तुमने जो भी खजूर के पेड़ काटे या उन्हें अपनी जड़ों पर खड़ा छोड़ दिया तो यह सब अल्लाह की अनुमति से हुआ और (इसलिए हुआ) ताकि वह नाफ़रमानों (अवज्ञाकारियों) को अपमानित करे[1] (5) और अल्लाह ने उनसे जो भी अपने पैग़म्बर के हाथ लगाया[2] तो तुमने न उसके लिए घोड़े दौड़ाये न ऊँट लेकिन अल्लाह अपने पैग़म्बर को जिस पर चाहता है विजयी (ग़ालिब) कर देता है और अल्लाह हर चीज़ पर पूरा सामर्थ्य रखता है (6) अल्लाह बस्ती वालों से जो भी अपने पैग़म्बर के हाथ लगाये तो वह अल्लाह का है और रसूल का है और (उनके) रिश्तेदारों का है और अनाथों का और निर्धनों का है और यात्री का है ताकि वह तुम में धनवानों की जागीर न बनकर रह जाए और पैग़म्बर जो तुम्हें दें वह ले लो और जिस से रोकें उस से रुक जाओ और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह की मार बड़ी सख़्त है (7) (यह फ़य का माल) उन वतन छोड़ने वाले मोहताजों का भी जिनको उनके घरों से और मालों से निकाला गया[3], वे केवल अल्लाह की कृपा और उसकी प्रसन्नता चाहते हैं और अल्लाह और उसके पैग़म्बर की मदद करते हैं, यही लोग हैं जो सच्चे हैं (8) और जो ईमान के साथ पहले से ही इस जगह (यानी मदीने) में ठहरे हैं, जो उनकी ओर हिजरत करके आता है उससे प्यार करते हैं और जो उनको दिया जाता है यह अपने मन में इसकी इच्छा भी महसूस नहीं करते[4] और वे (दूसरों को) अपनी जानों पर वरीयता देते हैं चाहे खुद तंगी का शिकार हों और जो भी अपने मन की लालच से बचा लिया गया तो ऐसे लोग ही सफ़ल हैं(9)

---

(1) घेराबन्दी के बीच कुछ मुसलमानों ने खड़े पेड़ों को काटा और कुछ लोगों ने रोका और इसको ग़लत क़रार दिया, इस पर यह आयत उतरी कि मसलहत और ज़रूरत से जो भी किया गया वह ठीक है (2) उसको फय का माल कहते हैं जिसमें मुसलमानों को युद्ध न करना पड़े और माले ग़नीमत हाथ आये, ऊँट और घोड़े दौड़ाना युद्ध करने को कहते हैं, क़बीला बनू नज़ीर खुद सामान आदि लेकर चले गये मगर ज़मीनें मुसलमानों के हाथ आयीं, आगे आयत में उस माल को ख़र्च करने के स्थान भी बताये जा रहे हैं जो बिना युद्ध के हाथ लगे (3) यानी मुहाजिर लोग जो सब घर–बार छोड़कर केवल अल्लाह के लिए हिजरत करके मदीना आ गये थे (4) मुहाजिरों के बाद अंसार का और उनके बाद उनके दूसरों को अपने से ज़्यादा हक़दार समझने का वर्णन है, विशेष रूप से आगे एक सहाबी (जिनका नाम अबू तलहा बताया जाता है) का वर्णन है जिन्होंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अतिथियों की मेहमानी स्वीकार की और खुद अपने घर वालों के साथ भूखे रात गुज़ार दी।

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا
الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا
يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ
اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ
قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١١﴾ لَئِنْ اُخْرِجُوْا
لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ
لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۣ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢﴾ لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً
فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٣﴾
لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ وَّرَآءِ
جُدُرٍ ۭ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ۭ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ
شَتّٰى ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٤﴾ كَمَثَلِ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ﴿١٥﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ
قَالَ اِنِّيْ بَرِيْۗءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾

منزل ٧

और जो उनके बाद आएं वे यह दुआ करते हैं कि ऐ हमारे पालनहार! हमारी मग़फ़िरत (गुनाहों से माफ़ी) फ़रमा और हमारे उन भाइयों के गुनाहों को माफ़ फ़रमा जो ईमान में हम से आगे गये और ईमान वालों के बारे में हमारे दिलों में कुछ भी कपट न रख, बेशक तू बड़ा मेहरबान और बहुत ही दयालु है[1] (10) भला आपने उन मुनाफ़िक़ों को देखा जो अहल–ए–किताब में से अपने काफ़िर भाइयों से कहते हैं अगर तुम निकाले गये तो हम भी तुम्हारे साथ निकलेंगे और तुम्हारे बारे में हम हरगिज़ किसी की बात न मानेंगे और अगर तुमसे जंग की गई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे और अल्लाह गवाह है कि वे निश्चित रूप से झूठे हैं (11) अगर वे निकाले गये तो यह न उनके साथ निकलेंगे और अगर उनके साथ युद्ध किया गया तो यह न उनकी मदद करेंगे और अगर मदद की भी तो ज़रूर पीठ फेर कर भागेंगे फिर उनकी मदद कहीं से न होगी[2] (12) तुम्हारा भय उनके दिलों में अल्लाह से ज़्यादा है यह इसलिए कि वे नासमझ लोग हैं (13) वे तुमसे एक साथ (खुलेआम) लड़ नहीं सकते सिवाय इसके कि (वे) क़िलाबंद बस्तियों में हों या दीवारों की ओट में हों, उनकी लड़ाई आपस में बड़ी सख़्त हैं, आप उनको एकजुट समझते हैं जबकि उनके दिल फटे हुए हैं यह इसलिए कि यह सब बुद्धिहीन लोग हैं[3] (14) इनसे कुछ ही पहले उन लोगों की तरह जो अपनी करतूत का मज़ा चख चुके और उनके लिए दु:खद अज़ाब है[4] (15) जैसे शैतान की कहावत है कि वह इंसान से कहता है काफ़िर हो जा फिर जब वह काफ़िर हो जाता है तो वह कहता है मेरा तुझ से क्या सम्बन्ध बेशक मैं तो अल्लाह से डरता हूँ जो सारे संसारों का पालनहार है[5] (16)

(1) मुहाजिरों और अंसार के बाद में मुसलमान होने वालों का वर्णन है और विशेष रूप से इसमें सहाबा के बारे में उनके दिल की सफ़ाई का उल्लेख किया जा रहा है, इससे ख़ुदा ही यह बात साफ़ हो जाती है कि जो लोग सहाबा से द्वेष रखते हैं वे इस शुभ क्रम में दाख़िल होने से वंचित कर दिये गये (2) यही हुआ क़बीला बनू नज़ीर निकाले गये और मुनाफ़िक़ीन (कपटी) बैठे मुँह तकते रहे कि कोई उनकी मदद के लिए न आया (3) मुसलमानों के ख़ौफ़ में उनकी सारी एकता थी जहाँ मुसलमानों को भारी देखते थे सारी अकड़ हवा हो जाती थी, ऊपर–ऊपर से एक नज़र आते थे अन्दर से एक–दूसरे के दुश्मन थे (4) ऐसा लगता है कि इससे आशय क़बीला बनू क़ैनक़ाअ के यहूदी हैं जो कुछ ही पहले अपनी करतूतों के कारण मारे गये थे (5) मुनाफ़िक़ों का उदाहरण शैतानों से दिया जा रही है कि जैसे वह लालच देता है और फिर विनाश के बाद कहता है कि मैं क्या जानूँ यह तुम्हारे ही किये की तो सज़ा है, इसी प्रकार उन मुनाफ़िक़ों ने लालच दी और जब यहूदी उसमें फंस गये तो बैठे तमाशा देखते रहे।

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ
جَزٰۗؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ
نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ
اَنْفُسَهُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١٩﴾ لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ
النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۭ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ﴿٢٠﴾
لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰي جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا
مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۭ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا
لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾
هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ
الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۭ سُبْحٰنَ اللّٰهِ
عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ
الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى ۭ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

منزل٧

बस दोनों का अंजाम यह है कि वे दोनों दोज़ख़ में होंगे, उसी में हमेशा रहेंगे और यही अत्याचारियों की सज़ा है[1] (17) ऐ ईमान वालो! अल्लाह का लिहाज़ रखो और हर व्यक्ति ख़ूब देख ले कि उसने कल के लिए क्या तैयारी की है और अल्लाह से डरते रहो बेशक तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसकी ख़ूब ख़बर रखता है (18) और उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने उनको ऐसा बना दिया कि वे अपने आप को भूल गये[2] वही लोग हैं जो नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) हैं (19) दोज़ख़ी और जन्नती बराबर नहीं हो सकते, जन्नत वाले ही हैं जो सफ़ल हैं (20) अगर हम इस कुरआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो बेशक आप देखते कि वह अल्लाह के रौब से दबा जा रहा है, फटा पड़ता है और यह वे उदाहरण हैं जो हम लोगों के सामने इसलिए देते हैं ताकि वे सोचें[3] (21) वही अल्लाह है जिसके सिवाय कोई इबादत के योग्य नहीं, हर गुप्त और खुले का जानने वाला है, वही रहमान (बड़ा मेहरबान) और रहीम (अति दयालु) है (22) वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई पूजा के योग्य नहीं, जो महाराजा है, पवित्र है, सर्वथा सलामती है, शान्ति प्रदान करने वाला है, सबका संरक्षक है, प्रभुत्वशाली (ग़ालिब) है, ज़बरदस्त है बड़ाई का मालिक है, अल्लाह उनके हर प्रकार के शिर्क से पाक है (23) वही अल्लाह है जो पैदा करने वाला है, वजूद प्रदान करने वाला है, रूप देने वाला है, उसके अच्छे–अच्छे नाम हैं उसी की तस्बीह में लगे हैं जो भी आसमानों और ज़मीन में हैं और वही ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हिकमत (युक्ति) वाला है (24)

(1) बहकने वाले का यह बहाना नहीं चलेगा कि मुझे तो अमुक व्यक्ति ने बहकाया, अल्लाह ने हर एक को समझ दी है, कोई किसी को लेकर कुँएं में कूदता है तो दोनों मरेंगे, बहकाने वाला और बहकने वाला दोनों दोज़ख़ी हैं (2) ख़ुदा को भुला देने का परिणाम फिर ख़ुद को भूल जाने के रूप में सामने आता है, फिर आदमी अपने ही अच्छे–बुरे को नहीं समझता और आख़िरत के वास्तविक घाटे को भुगतने के लिए तैयार हो जाता है (3) यह अल्लाह के कलाम की महानता है और प्रताप (जलाल) का वर्णन है और इसमें इंसानों का ध्यान आकृष्ट किया जा रहा है कि कुरआन मजीद पहाड़ों पर उतरता तो वह चूर–चूर हो जाता फिर इंसान को क्या हो गया कि वह इससे प्रभावित नहीं होता फिर आगे ख़ुद अल्लाह के बुलन्द गुणों का बयान है और यह पवित्र कुरआन की विशेषता है कि वह अल्लाह के गुणों को बड़े विस्तृत और स्पष्ट रूप में बयान करता है ताकि उसकी महानता और प्रेम दोनों की छाप भक्तों (बंदों) के दिलों पर गहरी होती जाए।

سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ
اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ
وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَ
ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَاۤ اَخْفَيْتُمْ وَمَاۤ
اَعْلَنْتُمْ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ① اِنْ
يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْۤا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ
بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ② لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ③ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ
اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا
بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا
وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗۤ اِلَّا
قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَاۤ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ
مِنْ شَيْءٍ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ④

منزل۷

सूरह मुमतहिना

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

ऐ ईमान वालो! अगर तुम मेरे रास्ते में जिहाद करने के लिए और मेरी प्रसन्नता की चाहत में निकले हो तो मेरे दुश्मनों और अपने दुश्मनों को दोस्त मत बनाओ कि उनको तुम दोस्ती का संदेश भेजने लगो जबकि वे उस सत्य का इनकार कर चुके जो तुम्हारे पास आ चुका है, वे रसूल को और तुमको केवल इसलिए निकालते रहे हैं कि तुम अल्लाह पर ईमान लाए जो तुम्हारा पालनहार है, तुम चुपके–चुपके उन से प्रेम की बातें करते हो जबकि मैं ख़ूब जानता हूँ जो तुम छिपाते हो और जो तुम व्यक्त करते हो और तुममें से जिसने भी ऐसा काम किया तो वह सीधे रास्ते से भटक गया (1) उनको तुम पर नियंत्रण मिल जाए तो वह तुम्हारे दुश्मन होकर रहें और तुम्हारे साथ बहुत ही बुरे रूप से हाथ और ज़ुबान चलाने लगें और उनकी इच्छा यही है कि तुम काफ़िर हो जाओ (2) तुम्हारे सम्बन्धी और तुम्हारी संतान क़यामत के दिन तुम्हें कुछ फ़ायदा न पहुँचाएंगी वह तुम सबको अलग–अलग कर देगा और अल्लाह तुम्हारे सारे कामों पर नज़र रखता है[1] (3) बेशक तुम्हारे लिए इब्राहीम और उनके साथ वालों में अच्छा आदर्श मौजूद है जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा था हम तुम से भी विमुख (बेज़ार) और उनसे भी जिनको तुम अल्लाह को छोड़कर पूजते हो, हमने तुम्हारा इनकार किया और उस समय तक हमारे तुम्हारे बीच दुश्मनी और घृणा खुल्लम खुल्ला रहेगी जब तक तुम एक अल्लाह पर ईमान नहीं ले आते, हाँ इब्राहीम ने अपने पिता से यह कहा कि मैं ज़रूर आपके लिए माफ़ी माँगूंगा[2] यद्यपि मैं आपके लिए अल्लाह की ओर से ज़रा भी किसी चीज़ का अधिकार नहीं रखता, ऐ हमारे पालनहार! तुझ ही पर हमने भरोसा किया और तेरी ही ओर हम लौटे और तेरी ही ओर पलट कर जाना है (4)

(1) इन आयतों की पृष्ठभूमि यह है कि जब हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने पवित्र मक्के के काफ़िरों पर एक निर्णायक युद्ध की तैयारी की तो यह चाहा कि मक्के वालों को अभी इसकी ख़बर न हो, उधर हातिब पुत्र अबू बल्तअह नामक एक सहाबी जो यमन के रहने वाले थे और उनकी पत्नी व बच्चे मक्के में असुरक्षित थे ने यह सोचा कि अगर हम मक्के के कुछ सरदारों को हमले की सूचना दे दें तो यह उन पर एक एहसान होगा और परिवार की सुरक्षा का एक रास्ता निकल आएगा और क्योंकि मक्का–विजय का वादा अल्लाह की ओर से हो ही चुका है तो सूचित कर देने से कोई अन्तर भी न पड़ेगा, उन्होंने जब एक महिला द्वारा जो मक्का जा रही थी एक पत्र द्वारा यह सूचना भिजवाई, इधर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को वह्य के द्वारा मालूम हो गया, आपने हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हू) और कुछ सहाबा को तलाश के लिए भेजा, रौज़तुल ख़ाख़ नामक स्थान पर वह महिला मिल गई और उसने पर्चा निकाल कर दे दिया, इसी पर यह आयतें उतरीं और काफ़िरों से सम्बन्ध की सीमाएं इसमें बताई गईं, जहाँ तक हज़रत हातिब का सम्बन्ध है आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने जब उनसे पूछा तो उन्होंने साफ़–साफ़ अपनी मजबूरी बता दी, आपने उनकी नीयत ठीक होने के कारण उनको माफ़ कर दिया, इन आयतों में यह चेतावनी भी दे दी गयी कि यह सगे–सम्बन्धी और घर–परिवार काम न आएंगे, जब ईमान का मुक़ाबला हो तो इनकी कोई हैसियत नहीं और इस विषय में हज़रत इब्राहीम के व्यक्तित्व में उत्तम आदर्श है कि वह अपनी क़ौम से और अपने पिता से ⇒

ऐ हमारे पालनहार! हमें काफ़िरों के फितने से बचा ले और हमें माफ़ कर दे, ऐ हमारे पालनहार! बेशक तू ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हिकमत (युक्ति) वाला है (5) बेशक उनमें तुम्हारे लिए उत्तम आदर्श मौजूद है हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और आख़िरत के दिन की आशा लगाये हो और जो मुँह फेरेगा तो बेशक अल्लाह ही है जिसको किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं (वह) प्रशंसनीय है (6) हो सकता है अल्लाह तुम्हारे और तुम्हारे दुश्मनों के बीच दोस्ती करा दे[1] और अल्लाह सब कर सकता है और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बहुत ही कृपालु है (7) अल्लाह तुम्हें उन लोगों से नहीं रोकता जिन्होंने तुमसे धर्म (दीन) के बारे में युद्ध नहीं किया और न तुम्हें अपने घरों से निकाला कि तुम उनके साथ अच्छा बर्ताव करो और न्याय से काम लो, बेशक अल्लाह न्याय करने वालों को पसन्द करता है[2] (8) वह तो तुम्हें उन लोगों से दोस्ती करने से रोकता है जिन्होंने दीन (धर्म) के बारे में तुमसे युद्ध किया और तुमको तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकाले जाने पर उन्होंने मदद की और जो भी उनसे दोस्ती रचाएगा तो ऐसे लोग बड़े ही अन्यायी हैं (9) ऐ ईमान वालो! जब ईमान वाली महिलाएं तुम्हारे पास हिजरत करके आएं तो उनको जाँच लो, अल्लाह तआला को उनके ईमान का ख़ूब पता है, बस अगर तुम जान लो कि वे ईमान वालियाँ हैं तो उनको काफ़िरों के पास वापस मत करो, यह न उनके लिए ठीक हैं और न वे इनके लिए वैध (जायज़) हैं और जो उन्होंने ख़र्च किया है वह उन (के पुरुषों) को दे दो और तुम पर कोई पाप नहीं कि जब तुम उनको महर दे रहे हो तो तुम उनसे निकाह कर लो और काफ़िर महिलाओं की इज़्ज़तें अपने क़ब्ज़े में मत रखो और जो तुमने (उन काफ़िर महिलाओं पर) ख़र्च किया हो वह माँग लो और जो उन (काफ़िरों) ने (मुसलमान हो जाने वाली महिलाओं) पर ख़र्च किया हो वे उसको माँग लें, यह अल्लाह का फ़ैसला है, जो वह तुम्हारे बीच कर रहा है और अल्लाह ख़ूब जानता है हिकमत वाला है[3] (10)

⟹ मात्र इसीलिए अलग हुए कि वे सब शिर्क में लिप्त थे (2) शुरु में हज़रत इब्राहीम ने पिता से पापों से माफ़ी की दुआ का वादा किया था मगर जब उनको पता चल गया कि वह हमेशा के लिए अल्लाह का दुश्मन है तो वे उस से भी अलग हो गये।

(1) अर्थात जो अभी पवित्र मक्के में दुश्मन बने हुए हैं आशा है कि कल वे दोस्त बन जाएंगे, मक्का–विजय के बाद यही हुआ, अधिकांश उसमें से मुसलमान हो गये (2) यानी जो ग़ैर मुस्लिम मुसलमानों के साथ अच्छा बर्ताव करते हैं उनसे अच्छा बर्ताव करना चाहिए, अल्लाह इससे नहीं रोकता, लेकिन जो खुले दुश्मन हैं उनसे बचना ही अनिवार्य है (3) यह आदेश उतरा कि काफ़िर और मुसलमान के बीच वैवाहिक सम्बन्ध वैध (जायज़) नहीं और जो महिलाएं मुसलमान होकर आ जाएं उनको उनके पतियों के पास वापस न किया जाए लेकिन चूंकि मक्के के मुश्रिकों से सुलह हुई थी इसलिये आदेश दिया कि उन महिलाओं से जो मुसलमान शादी करे वह महर इन महिलाओं के पिछले पतियों को अदा कर दे ताकि उन्होंने जो ख़र्च किया है वह उनको वापस मिल जाए, इसी प्रकार यह आदेश भी हुआ कि जो काफ़िर महिलाएं हैं वे मुसलमानों की पत्नी न रहें, अब उनसे जो काफ़िर शादी करें वे उनके पिछले मुसलमान पतियों को महर अदा करें ताकि उनका ख़र्च किया हुआ उनको मिल जाए।

وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا
الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِثْلَ مَا أَنْفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي
أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ
عَلَىٰ أَنْ لَا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا
يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ
أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ ۙ فَبَايِعْهُنَّ
وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٢﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا مِنَ
الْآخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ﴿١٣﴾

سورة الصف

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿٢﴾ كَبُرَ مَقْتًا
عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿٣﴾ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ
يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَأَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَرْصُوصٌ ﴿٤﴾

منزل ٧

और अगर तुम्हारी पत्नियों में से कोई काफ़िरों की ओर जाकर तुम्हारे हाथ से निकल जाए फिर तुम्हारी बारी आए तो जिनकी पत्नियाँ चली गई हैं उनको उनके ख़र्च करने के बराबर दे दो और अल्लाह का लिहाज़ रखो जिस पर तुम ईमान रखते हो[1] (11) ऐ पैग़म्बर! जब आपके पास ईमान वाली महिलाएं आपसे इसकी बैअत करने के लिए आएं कि वे अल्लाह के साथ ज़रा भी शिर्क नहीं करेंगी और न चोरी करेंगी और न व्यभिचार करेंगी और न ही अपनी संतान की हत्या करेंगी और न कोई आरोप लगाएंगी जो उन्होंने अपने हाथ पाँव के बीच गढ़ लिया हो और किसी भलाई के काम में आपकी नाफ़रमानी नहीं करेंगी तो आप उनसे बैअत ले लीजिए और उनके लिए अल्लाह से क्षमा याचना कीजिए बेशक अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला अत्यंत दयावान है (12) ऐ ईमान वालो! ऐसे लोगों से दोस्ती मत करना जिन पर अल्लाह का प्रकोप हुआ, वे आख़िरत से ऐसे ही निराश हैं जैसे काफ़िर क़ब्र वालों से निराश हो चुके[2] (13)

सूरह सफ़

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अल्लाह ही के लिए तस्बीह (पाकी बयान करने) में लगे हैं जो भी आसमानों में हैं और जो भी ज़मीन में हैं, और वह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हिकमत (युक्ति) वाला है (1) ऐ वे लोगो! जो ईमान लाए हो ऐसी बात क्यों कहते हो जो तुम करते नहीं (2) अल्लाह के यहाँ बड़े क्रोध की बात है कि तुम वह कहो जो न करो (3) बेशक अल्लाह उन लोगों से प्रेम करता है जो उसके रास्ते में इस प्रकार पंक्तिबद्ध होकर युद्ध करते हैं मानो वे सीसा पिलाई हुई इमारत हों[3] (4)

---

(1) जब काफ़िरों ने न माना और पिछले मुस्लिम पतियों को उनका ख़र्च किया हुआ अदा न किया तो यह आयत उतरी कि वे अपना अधिकार लेने के लिए यह कर सकते हैं कि अगर कोई महिला मुसलमान होकर आई हो, और उससे किसी मुसलमान ने शादी की हो तो यह मुसलमान पति अपनी पत्नी के पिछले काफ़िर पति को महर देने के स्थान पर उस मुसलमान को दे दे जिसकी पत्नी से काफ़िर होने के कारण किसी काफ़िर ने शादी कर ली हो और वह पिछले मुसलमान पति को महर अदा न कर रहा हो, इस प्रकार मुसलमान को उसका अधिकार मिल जाएगा और काफ़िर लोग आपस में एक दूसरे से निपट लेंगे (2) जिस प्रकार काफ़िर मरने वालों से निराश हैं कि यह वापस नहीं आएंगे इसी तरह वे आख़िरत से निराश हैं, इसका दूसरा अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है कि जिस प्रकार मरने वाले काफ़िर वहाँ पहुँच कर निराश हो जाते हैं इसलिए कि सब कुछ सामने आ जाता है इसी प्रकार काफ़िर दुनिया में आख़िरत से निराश हैं और उसके बारे में सोचते ही नहीं (3) कुछ सहाबा ने आपस में बात की कि अगर हमें मालूम हो जाए कि अल्लाह के यहाँ सबसे ज़्यादा पसन्द किया जाने वाला अमल कौन सा है तो हम उसके लिए जान तक कुर्बान कर दें, आयत में इसी की मनाही है कि कोई बात दावे के रूप में निकलनी न चाहिए, विनम्रता के साथ कहे कि अल्लाह चाहे और अवसर दे तो हम फ़लाँ काम करेंगे, फिर आगे आयत में प्रश्न का उत्तर भी दिया गया कि अल्लाह के यहाँ जिहाद प्रियतम काम है विशेष रूप से जब इसका अवसर और आवश्यकता हो।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ
رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ؕ فَلَمَّا زَاغُوْۤا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥ وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ
رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًۢا
بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا
هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٦ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ
يُدْعٰۤى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧ يُرِيْدُوْنَ
لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨
هُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ
كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝٩ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ
تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝١٠ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝١١ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝١٢
وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٣

منزل۷

और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम (के लोगो!) क्यों तुम मुझे सताते हो जबकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का पैग़म्बर (बनाकर भेजा गया) हूँ, बस जब उन्होंने टेढ़ अपनाई अल्लाह ने उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया और अल्लाह नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) क़ौम को राह पर नहीं लाता[1] (5) और जब ईसा पुत्र मरियम ने कहा ऐ बनी इस्राईल! बेशक मैं अल्लाह का रसूल (बनाकर) तुम्हारी ओर भेजा गया हूँ, मुझसे पहले जो तौरेत (उतरी) थी उसकी पुष्टि करता हूँ, और एक ऐसे रसूल का शुभ समाचार सुनाता हूँ जो मेरे बाद आएगा उसका नाम अहमद है[2] फिर जब वह (रसूल) खुले प्रमाणों के साथ उनके पास आ गये तो वे कहने लगे कि यह तो खुला जादू है (6) और उससे बढ़कर अन्यायी कौन होगा कि जो अल्लाह पर झूठ गढ़े जबकि उसको इस्लाम की ओर बुलाया जा रहा हो और अल्लाह अन्यायी क़ौम को हिदायत नहीं देता (7) वे चाहते हैं कि अपने मुँह से अल्लाह की रौशनी को बुझा दें जबकि अल्लाह अपनी रौशनी को पूरा करके रहेगा चाहे काफ़िरों को कैसा ही अप्रिय ही लगे (8) वही है जिसने अपने पैग़म्बर को हिदायत (संमार्ग) और सच्चे दीन (धर्म) के साथ भेजा ताकि उसको सारे दीनों (धर्मों) पर प्रभुत्व प्रदान कर दे, चाहे शिर्क करने वालों को अत्यंत अप्रिय हो[3] (9) ऐ ईमान वालो! क्या मैं क्या तुमको ऐसा कारोबार बताऊँ जो तुमको दुःखद यातना से बचा ले (10) अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओगे और अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और अपनी प्राणों से जिहाद करते रहोगे, यही तुम्हारे प्रति बेहतर है अगर तुम जानते हो (11) वह तुम्हारे लिए तुम्हारे पापों को माफ़ कर देगा और तुम्हें ऐसी जन्नतों में प्रवेश कराएगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी और ऐसे अच्छे घरों में (तुम को बसाएगा) जो हमेशा रहने वाली जन्नतों में होंगे, यही है बड़ी सफ़लता (12) और दूसरी चीज़ जो तुम चाहते हो (वह यह मिलेगी कि) अल्लाह की ओर से सहायता होगी और जल्द ही विजय होगी और ईमान वालों को शुभ समाचार सुना दीजिए[4] (13)

---

(1) नियम यही है कि बुराइयाँ करते–करते दिल काला होता चला जाता है, यही हाल बनी इस्राईल का हुआ, हर बात में रसूल से ज़िद करते रहे अंततः अल्लाह ने उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया कि सीधी बात स्वीकार करने की उनमें योग्यता ही नहीं रही (2) योहन्ना इंजील में आज भी यह वाक्य मौजूद हैं कि "हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने हवारियों से कहा और मैं बाप से प्रार्थना करूँगा तो वह तुम्हें दूसरा मददगार प्रदान करेगा कि सदैव वह तुम्हारे साथ रहे।" (इंजील–ए–योहन्ना, नया अहदनामा (उर्दू अनुवाद) पृष्ठ 99, बाइबिल सोसाइटी लाहौर द्वारा मुद्रित) (3) दलील के क्षेत्र में तो इस्लाम हमेशा आगे रहा है और रहेगा किन्तु दुनिया में मुसलमानों का वर्चस्व बहुत से शर्तों के साथ जुड़ा हुआ है, जब तक मुसलमानों ने उन शर्तों को पूरा किया वही दुनिया में छाए रहे और जब उन्होंने उन गुणों को छोड़ दिया तो दब गये (4) व्यापार कहते ही हैं लेन–देन को, इस आयत में बात साफ़ कर दी गई कि आदमी जब सब कुछ अल्लाह के हवाले कर देता है और अपनी चाहतों को अल्लाह की खुशी के अनुसार कर देता है तो उसके बदले में अल्लाह तआला उसको इनाम से सम्मानित करता है।

ऐ ईमान वालो! अल्लाह के (दीन के) मददगार बन जाओ जिस प्रकार ईसा पुत्र मरियम ने हवारियों[1] से कहा था कि अल्लाह के लिए मेरा मददगार कौन होगा तो हवारियों ने कहा हम हैं अल्लाह के (दीन के) मददगार, बस बनी इस्राईल का एक गिरोह तो ईमान लाया और एक गिरोह ने इनकार किया फिर हमने ईमान वालों की उनके दुश्मनों पर मदद की तो वे विजयी हुए[2] (14)

सूरह जुमुआ

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

आसमानों और ज़मीन में सब अल्लाह की तस्बीह में लगे हैं जो शंहशाह है पाक है प्रभुत्वशाली है हिकमत (युक्ति) रखता है (1) वही है जिसने अनपढ़ लोगों[3] में उन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजा जो उनके सामने उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है और उनका तज़्किया (मन की शुद्धि) करता है और उनको किताब व हिकमत (युक्ति) सिखाता है जबकि वे इससे पहले खुली गुमराही में पड़े[4] हुए थे (2) और दूसरे भी उनमें शामिल हैं जो अभी तक उनसे न ही मिले[5] और वह (अल्लाह) प्रभुत्वशाली है हिकमत (युक्ति) रखता है (3) यह अल्लाह की कृपा है जिसको चाहता है वह प्रदान करता है और अल्लाह बड़ा कृपालु है (4) उनका उदाहरण जिन पर तौरेत का बोझ रखा गया फिर उन्होंने उसको न उठाया उस गधे के उदाहरण के समान है जो किताबें ही किताबें लाद ले, बहुत बुरा उदाहरण है उस क़ौम का जिसने अल्लाह की आयतों को झुठलाया और अल्लाह अन्यायी क़ौम को हिदायत (संमार्ग) नहीं देता (5) आप कह दीजिए कि ऐ यहूदियो! अगर तुम्हारा दावा यह है कि सारे लोगों को छोड़कर केवल तुम ही अल्लाह के प्रिय हो तो मौत की कामना करो अगर तुम सच्चे हो[6] (6)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ
لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ
اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآىِٕفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآىِٕفَةٌ ۚ
فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ﴿۱۴﴾

سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً وَفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ
الْحَكِيْمِ ﴿۱﴾ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ
وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ﴿۲﴾ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۳﴾ ذٰلِكَ
فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۴﴾ مَثَلُ
الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ؕ
بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵﴾ قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ
مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۶﴾

منزل۷

---

(1) हवारी हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) के साथियों को कहा जाता है, इसकी व्याख्या पहले गुज़र चुकी है (2) कुछ लोगों ने हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) की बात मानी और यहूदियों ने इनकार किया, अंततः अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा पर ईमान लाने वालों को यहूदियों पर विजयी किया फिर धीरे–धीरे उनमें भी गुमराही फैली तो अल्लाह तआला ने अंतिम पैग़म्बर को भेजा जिनके द्वारा सारे संसार में हिदायत (संमार्ग) फैली (3) अनपढ़ क़ौम का मतलब अरबवासी, जिन लोगों में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को नबी बनाकर भेजा गया, बहुत ही कम लोग उनमें लिखने की योग्यता रखते थे, क़लम ढूँढा जाता तो शायद पूरे–पूरे गाँव में न मिलता, उस अनपढ़ क़ौम में ही "उम्मी" (अनपढ़) को ऐसी किताब के साथ भेजा गया जो ज्ञान का स्रोत है जिसमें सुन्दर व सरल शैली की नदियाँ बह रही हैं और जिसमें सबसे पहली वह्य में क़लम का वर्णन किया गया है, यह किताब ही आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का सबसे बड़ा मोअ़जिज़ा है (4) हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पैग़म्बर बनाकर भेजने के इन उद्देश्यों का उल्लेख सूरः बक़रह और सूरह आल–ए–इमरान में पहले गुज़र चुका है (5) हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैग़म्बरी केवल अरबों के लिए सीमित न थी बल्कि दूसरी क़ौमें भी आपकी उम्मत में शामिल हैं और यह अल्लाह का इनाम है कि उसने रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को यह बड़ाई दी और इस उम्मत को इतने ऊँचे मर्तबे का रसूल दिया, अब मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है कि वे रसूल की मदद करें, आगे सबक़ सीखने के लिए यहूदियों की मिसाल दी जिन्होंने अपने रसूल और अपनी किताब से लाभान्वित होने में घोर असावधानी बरती (6) यहूदी अपने गधेपन के बावजूद अपने आपको सबसे बेहतर समझते थे, यहाँ उनको चुनौती दी जा रही है कि अगर तुम सच्चे हो तो मौत की कामना करो ताकि अपने प्रिय के पास पहुँच कर वहाँ की नेमतों से आनंदित हो।

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۷
قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ
اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۸ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى
ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۹ فَاِذَا
قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ
وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۱۰ وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا
انْفَضُّوْۤا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ؕ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ
وَمِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۱۱

سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اِحْدٰى عَشَرَةَ اٰيَةً وَفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۱ اِتَّخَذُوْۤا
اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۲
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ۳

منزل۷

और अपने हाथों जो करतूत वे भेज चुके हैं उसके कारण वे कभी भी मौत की कामना नहीं करेंगे और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है[1] (7) कह दीजिए कि वह मौत जिससे तुम भाग रहे हो वह तो तुम पर आकर रहेगी फिर तुम हर ग़ायब और मौजूद के जानने वाले की ओर लौटाए जाओगे बस वह तुम्हें बतलाएगा कि तुम क्या कुछ किया करते थे (8) ऐ ईमान वालो! जब जुमे के दिन नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए[2] तो अल्लाह की याद की ओर चल पड़ो और कारोबार छोड़ दो, यही तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो (9) फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए तो ज़मीन में फ़ैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) ढूँढो[3] और अल्लाह को ख़ूब याद किया करो ताकि तुम सफ़ल हो (10) और जब (कुछ लोगों ने) कोई व्यापार या खेलकूद देखा तो उसी पर टूट पड़े और आपको उन्होंने खड़ा हुआ छोड़ दिया, कह दीजिए कि जो कुछ अल्लाह के पास है वह खेलकूद और व्यापार से कहीं बेहतर है[4] और अल्लाह सबसे अच्छी रोज़ी देने वाला है। (11)

सूरह मुनाफ़िकून

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

जब मुनाफ़िक़ आपके पास आते हैं तो कहते हैं कि हम इसकी गवाही देते हैं कि आप अल्लाह के रसूल हैं, और अल्लाह जानता है कि निश्चित रूप से आप उसी के रसूल हैं और अल्लाह यह (भी) गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ पक्के झूठे हैं[5] (1) उन्होंने अपनी क़समों को एक ढाल बना रखा है फिर वे अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, बेशक जो कुछ वे कर रहे हैं वह बहुत बुरे काम हैं (2) यह इसलिए कि वे (शुरु में देखने में) ईमान लाए फिर इनकार किया तो उनके दिलों पर मोहर लगा दी गई, तो अब वे समझते ही नहीं (3)

(1) इस चुनौती को स्वीकार करने के लिए एक व्यक्ति भी उनमें आगे न बढ़ा क्योंकि वे जानते थे कि यह अल्लाह की ओर से दी हुई चुनौती है, इसलिए वे जैसे ही मौत की कामना करेंगे मौत आ पड़ेगी, कुछ हदीसों में है कि उस समय यदि कोई यहूदी मौत की कामना कर लेता तो उसी समय उसके गले में फंदा लगता और वह मर जाता (2) वास्तव में यह ख़ुत्बे से पहले वाली अज़ान का ज़िक्र है कि उसके शुरु हो जाने के बाद सब काम–काज अवैध है और पहली अज़ान भी लगभग उसी के समान है उसके बाद भी बस जुमे की तैयारी हो, दूसरा कोई काम न किया जाए, और ज़िक्रुल्लाह का मतलब यहाँ पर नमाज़ और ख़ुत्बा है (3) यानी जुमे से फ़ारिग़ होने के बाद अनुमति है कि अब कारोबार में लग जाओ, यह जुमा यहूदियों के सनीचर की तरह नहीं है कि उसमें पूरे दिन उनको किसी कारोबार की अनुमति नहीं थी आगे यह भी कह दिया गया कि अल्लाह का ध्यान असल है कारोबार में भी इसका ध्यान रखो और कोई काम ग़लत न करो (4) एक बार आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ख़ुत्बा दे रहे थे कि एक व्यापारी क़ाफ़िला बाहर से आ पहुँचा, पहले से शहर में अनाज की कमी थी तो लोग ख़ुत्बे को साधारण वाज़ (धार्मिक भाषण) समझ कर बीच से उठ कर गये ताकि उसको रोक कर आ जाएं और बाद में जाकर उससे सामान ख़रीद लेंगे, इस पर चेतावनी दी गई, उसके बाद सहाबा का हाल दूसरी जगह इस गुण के साथ बयान हुआ "यह वे लोग हैं जिनको व्यापार और क्रय–विक्रय अल्लाह की याद से और नमाज़ क़ायम करने से ग़ाफ़िल नहीं करते। (5) इसी सूरह में मुनाफ़िक़ों की क़लई खोली गई है कि वे ज़बान से जिस विश्वास को ज़ाहिर करते हैं, दिल में उसका छोटा भाग भी नहीं, वे पक्के झूठे हैं और अपने फ़ायदे के लिए झूठी क़समें खाते हैं और

⇒

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِن يَقُولُوا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَأَنَّهُمْ
خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ۖ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۚ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۚ
قَاتَلَهُمُ اللَّهُ ۖ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٤﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ
اللَّهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُم مُّسْتَكْبِرُونَ ﴿٥﴾ سَوَاءٌ
عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ
اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٦﴾ هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنفِقُوا
عَلَىٰ مَنْ عِندَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنفَضُّوا ۗ وَلِلَّهِ خَزَائِنُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٧﴾ يَقُولُونَ لَئِن رَّجَعْنَا
إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ۚ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ
وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَن ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٩﴾ وَأَنفِقُوا مِن مَّا رَزَقْنَاكُم مِّن قَبْلِ أَن
يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ
قَرِيبٍ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُن مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٠﴾ وَلَن يُؤَخِّرَ اللَّهُ
نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١١﴾

منزل ٧

और जब आप उनको देखें तो उनके डील–डोल आपको अच्छे लगें और अगर वे बोलें तो आप उनकी बात सुनते रह जाएं जैसे वे लकड़ियाँ हों जिनको सहारे से खड़ा कर दिया गया हो[1], हर चीख़ को अपने ख़िलाफ़ समझते हैं[2], यही हैं दुश्मन तो आप उनसे सावधान रहें, अल्लाह उनको नष्ट करे, कहाँ से वे फिरे जाते हैं (4) और जब उनसे कहा जाता है कि आओ अल्लाह के पैग़म्बर तुम्हारे गुनाहों की माफ़ी के लिए दुआ कर दें तो वे अपने सिरों को मटकाते हैं और आप देखेंगे कि वे आने से बचते हैं और वे अपने आपको बड़ा समझते हैं[3] (5) उनके लिए बराबर है आप उनके लिए गुनाहों की माफ़ी की दुआ करें या न करें, अल्लाह उनके गुनाहों को हरगिज़ माफ़ नहीं करेगा, अल्लाह नाफ़रमान (अवज्ञाकार) लोगों को सच्चा रास्ता नहीं दिखाया करता (6) यही लोग हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं उन पर ख़र्च मत करो यहाँ तक कि वे बिखर जाएं जबकि आसमानों और ज़मीन के सब ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं, लेकिन मुनाफ़िक़ समझते नहीं (7) वे कहते हैं कि अगर हम मदीने लौटे तो वहाँ जो सम्मानित है वह अपमानित को निकाल बाहर करेगा जबकि सम्मान सबका सब अल्लाह के लिए है और उसके रसूल के लिए है और ईमान वालों के लिए है, लेकिन मुनाफ़िक़ जानते ही नहीं[4] (8) ऐ ईमान वालो! तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान कहीं तुमको अल्लाह की याद और नमाज़ से ग़ाफ़िल (असावधान) न कर दें और जिसने ऐसा किया तो ऐसे लोग ही घाटा उठाने वाले हैं (9) और हमने तुम्हें जो रोज़ी दी है उसमें से ख़र्च करो इससे पहले कि तुममें से किसी के पास मौत आ पहुँचे तो फिर वह कहने लगे कि ऐ मेरे पालनहार! तूने थोड़े समय के लिए मुझे मोहलत क्यों न दे दी तो मैं ख़ूब ख़ैरात करता और भले लोगों में शामिल हो जाता (10) और अल्लाह किसी भी जान को उसका समय आ जाने के बाद हरगिज़ मोहलत नहीं दिया करता, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह को सबकी ख़बर है (11)

⟹ मुसलमानों में ख़राबी निकाल करके दूसरों को इस्लाम में दाख़िल होने से रोकते हैं, शुरु में वे आए और ज़बान से कलिमा पढ़कर मुसलमान हो गये फिर आस्तीन का साँप बनकर उन्होंने डसना शुरु किया तो अल्लाह ने उनके दिलों पर मोहर लगा दी, अब कोई अच्छी बात उनकी समझ में ही नहीं आती।

(1) देखने में बड़े सुन्दर व सुशील मानो लकड़ियाँ सुसज्जित करके रख दी गई हों, बात करें तो ऐसे शब्द कि लोग सुनते रह जाएं मगर वास्तव में ईमान से ख़ाली, उनके मोटे–मोटे शरीर मात्र वाह्य खोल, भीतर से ख़ाली, केवल दोज़ख़ का ईंधन बनने के योग्य "बेशक मुनाफ़िक़ (कपटी) दोज़ख़ के सबसे परले दर्जे में होंगे" वाली आयत उन पर बिल्कुल फिट बैठती है (2) दिल के चोर हमेशा डरते हैं कि कहीं हमारी आपराधिक कृत्यों का खुलासा न हो जाए (3) अगर कभी किसी की वास्तविकता खुलती है और उससे कहा जाता है कि अगर तौबा कर लो और पैग़म्बर से गुनाहों की माफ़ी की दुआ करा लो तो बड़े अहंकारी अन्दाज़ में फिर जाते हैं, आगे कहा जा रहा है कि यह तो ऐसे अभागे हैं कि अगर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इनके गुनाहों की माफ़ी के लिए दुआ करते हैं तो भी अल्लाह ऐसे अभागों को माफ़ नहीं करता (4) इन आयतों के उतरने की पृष्ठभूमि यह बयान की जाती है कि एक यात्रा में किसी बात पर एक अंसारी और एक मुहाजिर में कुछ झगड़ा हो गया, दोनों ने अपनी–अपनी पार्टी को पुकारा, और बात कुछ आगे बढ़ गई, मुनाफ़िक़ों का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई अंसारियों से बोला कि ⟹

سورة التغابن مدنية وهي ثماني عشرة آية وفيها ركوعان

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ
الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝١ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ
فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٢
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ
وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝٣ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ
مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٤
اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ
وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٥ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى
اللّٰهُ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٦ زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اَنْ لَّنْ
يُّبْعَثُوْا قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا
عَمِلْتُمْ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝٧ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ
وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٨

منزل ٧

सूरह तग़ाबुन

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

सब अल्लाह ही की तस्बीह में लगे हैं जो भी आसमानों में हैं और जो भी ज़मीन में हैं उसी का राज है और उसकी असल प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर पूरा सामर्थ्य रखता है (1) वही है जिसने तुमको पैदा किया तो तुममें कुछ इनकार करने वाले हैं और कुछ ईमान रखने वाले हैं और तुम जो कुछ करते हो उस पर अल्लाह की पूरी नज़र है[1] (2) उसने आसमानों और ज़मीन को ठीक–ठीक पैदा किया और तुम्हारे रूप बनाए तो तुम्हें सुन्दर[2] बनाया और उसी की ओर (सबको) लौट कर जाना है (3) जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है वह सब जानता है और जो भी तुम छिपाते हो और दिखाते हो उससे भी वह अवगत है और अल्लाह तो सीनों के भीतर की चीज़ों को भी ख़ूब जानता है (4) भला तुम्हें उन लोगों की ख़बरें नहीं मिलीं जिन्होंने पहले कुफ़्र को अपनाया फिर उन्होंने अपनी करतूत का मज़ा चखा और उनके लिए दुःखद अज़ाब (यातना) है[3] (5) यह इसलिए कि उनके पास उनके पैग़म्बर स्पष्ट प्रमाण लेकर आए तो वे बोले कि क्या मनुष्य हमें रास्ता दिखाएंगे? तो उन्होंने नकार दिया और मुँह फेर लिया और अल्लाह ने भी मुँह फेर लिया और अल्लाह तो है ही बड़ा बेनियाज़, प्रशंसनीय (6) इनकार करने वाले समझते हैं कि उन्हें दोबारा उठाया नहीं जाएगा बता दीजिए क्यों नहीं मेरे पालनहार की क़सम तुम्हें ज़रूर दोबारा उठाया जाएगा फिर तुमने जो कुछ किया वह सब कुछ तुम्हें बताया जाएगा और यह अल्लाह के लिए साधारण बात है (7) बस अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस प्रकाश पर जो हमने उतारा है ईमान लाओ और अल्लाह तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर रखता है (8)

⟹ तुम्हीं ने तो मुहाजिरों को शरण दी जो इतने उदण्डी हो गए, इनका ख़र्च बन्द करो, यह ख़ुद ही बिखर जाएंगे और अब हम मदीने वापस पहुँचेंगे तो जो सम्मानित है वह वह अपमानित को निकाल बाहर करेगा, इसका मतलब यही था कि अंसारी मुहाजिरों को बाहर कर देंगे, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आए तो झगड़ा समाप्त हो गया, हज़रत ज़ैद पुत्र अरक़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मुनाफ़िक़ों के सरदार की बात बताई, उसको बुलाकर पूछा गया तो वह मुकर गया और क़समें खाने लगा, हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इस पर उसको माफ़ कर दिया कि शायद ज़ैद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से समझने में ग़लती हुई हो, उसके बाद आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सहाबा के साथ मदीने रवाना हुए, अभी मदीने में दाख़िल भी नहीं हुए थे कि यह आयतें उतरीं जिनमें हज़रत ज़ैद (रज़ियल्लाहु अन्हु) की पुष्टि और मुनाफ़िक़ों के झूठ का ख़ुलासा हुआ था।

(1) सबको उसी ने बनाया है, चाहिए था कि सब उसी को मानते और उसके साथ दूसरों को साझी न ठहराते मगर कुछ लोगों ने माना और कुछ लोगों ने इनकार ही कर दिया या दूसरों को साझी ठहरा दिया (2) सारी सृष्टि में सबसे सुन्दर मनुष्य को बनाया और वह इसको जानता भी है (3) यह बात मक्के वालों से कही जा रही है और याद दिलाया जा रहा है आद व समूद और उन जैसी दूसरी अवज्ञाकारी जातियों को जो अपने अवज्ञा के कारण नष्ट हुईं और आख़िरत का अज़ाब अपनी जगह पर है।

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ
وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٩﴾ وَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ
وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٠﴾ مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ
يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ۗ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١١﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ
اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٢﴾
اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ
وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِنَّمَآ
اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۗ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۗ
وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنْ
تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ
شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٧﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾

منزل ٧

जिस दिन वह तुम्हें इकट्ठा करेगा इकट्ठा होने वाले दिन के लिए वही होगा हार–जीत[1] का दिन और जो अल्लाह पर ईमान रखता होगा और उसने भले काम किये होंगे तो अल्लाह उसके पापों को उससे मिटा देगा और उसको ऐसी जन्नतों में प्रवेश कराएगा जिसके नीचे नहरें जारी होंगी, हमेशा वे उसी में रहेंगे, यही बड़ी सफ़लता है (9) और जिन्होंने कुफ़्र किया होगा और हमारी आयतों को झुठलाया होगा वे होंगे दोज़ख़वासी उसी में हमेशा रहेंगे और वह बहुत बुरा अंजाम है (10) जो मुसीबत आती है वह अल्लाह के आदेश ही से आती है, और जो भी अल्लाह पर ईमान लाएगा, अल्लाह उसके दिल को सही रास्ता प्रदान करेगा, और अल्लाह हर चीज़ से ख़ूब अवगत है[2] (11) और अल्लाह की और पैग़म्बर की बात मानो फिर अगर तुम मुँह फेरते हो तो हमारे पैग़म्बर की ज़िम्मेदारी तो (संदेश) साफ़–साफ़ पहुँचा देना ही है (12) वही अल्लाह है जिसके अलावा कोई पूजा के लायक़ नहीं और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए (13) ऐ ईमान वालो! निःसन्देह तुम्हारी संतानों में और तुम्हारी पत्नियों में कुछ तुम्हारे दुश्मन भी हैं तो उनसे सावधान रहो और अगर तुम माफ़ कर दो और टाल जाओ तो निश्चित रूप से अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला और बहुत ही दयावान है[3] (14) बेशक तुम्हारा माल और तुम्हारी संतानें एक आज़माइश हैं और अल्लाह ही है जिसके पास बड़ा बदला है[4] (15) तो जितना हो सके तक़्वे को अपनाए रखो और सुनते रहो और मानते रहो और अपनी भलाई के लिए (अल्लाह के रास्ते में) ख़र्च करते रहो, और जो अपने मन की लालच से बचा गया तो ऐसे लोग ही सफ़ल हैं (16) अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगे[5] तो अल्लाह उसको कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा और अल्लाह बड़ी क़द्र करने वाला और बहुत बर्दाश्त करने वाला है (17) हर ग़ायब और मौजूद का जानने वाला है, ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हिकमत (युक्ति) रखता है। (18)

---

(1) ''तग़ाबुन'' का अर्थ है एक दूसरे को घोटाले में लिप्त करना जिसमें एक जीतता है एक हारता है, इसके अनिवार्य परिणाम को सामने रखकर ही शाह अब्दुल क़ादिर (रहमतुल्लाहि अलैह) ने इस शब्द का अनुवाद हार जीत से किया है जिससे अच्छा अनुवाद ऐसा लगता है कि उर्दू भाषा में सम्भव नहीं, ईमान वालों की जीत और काफ़िरों की हार का वह दिन होगा (2) यह विश्वास मनुष्य को बड़ी शान्ति प्रदान करता है कि हर मुसीबत अल्लाह ही की ओर से है और इसमें कोई न कोई हिकमत अवश्य है (3) जो पत्नी और बच्चे अल्लाह की नाफ़रमानी (अवज्ञा) पर प्रेरित करें वे वास्तव में दुश्मन हैं, उनसे बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है कि वे इंसान को गुमराही में न डाल दें लेकिन उनके अधिकारों का ध्यान इस हद तक रखना चाहिए जहाँ तक शरीअत की सीमा है और अगर वे तौबा कर लें तो फिर उनको माफ़ कर दिया जाए और दुश्मन न समझा जाए (4) आज़माइश यह है कि आदमी इन चीज़ों में ऐसा लीन हो जाए कि अल्लाह के आदेशों को भूल जाए और जो इससे अपने आपको बचा लेगा उसके लिए बड़ा बदला है (5) जिस प्रकार क़र्ज़ देने वाला उसको अपना माल समझता है और वापसी का विश्वास रखता है इसी प्रकार अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना भी एक क़र्ज़ समान है जिसका बदला निश्चित है शर्त यह है कि वह ''क़र्ज़े हसन'' हो यानी वह ख़र्च सही नियत से हो और सही तरीक़े पर किया जाए।

सूरह तलाक़[1]

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

ऐ नबी! (आप लोगों को बता दीजिए कि) जब तुम महिलाओं को तलाक़ देने लगो तो उनकी इद्दत के समय उनको तलाक़ दो[2] और इद्दत को गिन लो, और अल्लाह का लिहाज़ रखो जो तुम्हारा पालनहार है, ना तुम उन (औरतों) को उनके घरों से निकालो और ना वे खुद निकलें सिवाय इसके कि वे खुली अश्लीलता कर बैठें[3], और यह अल्लाह की (निर्धारित) सीमाएं हैं और जो अल्लाह की सीमाओं से आगे बढ़ा तो उसने अपने साथ जुल्म किया, आप नहीं जानते शायद अल्लाह उसके बाद कोई नई बात पैदा कर दे[4] (1) फिर जब वे अपनी (इद्दत की) अवधि (के निकट) पहुँच जाएं या तो भले तरीक़े पर उनको (अपने निकाह में) रोके रखो या अच्छे रूप से उनको अलग कर दो और अपने लोगों में दो न्यायप्रिय गवाह[5] बना लो और गवाही अल्लाह के लिए ठीक–ठीक दो, इसकी नसीहत की जाती है उन लोगों को जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, और जो अल्लाह का लिहाज़ करेगा अल्लाह उसको (कठिनाई से) निकलने का कोई रास्ता प्रदान कर देगा (2) और उसको ऐसे मार्ग से रोज़ी देगा जिधर उसका गुमान भी न जाता हो, और जो अल्लाह पर भरोसा रखता है तो वही उसके लिए काफ़ी है, बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करके रहता है, बेशक अल्लाह ने हर चीज़ का एक अनुमान निर्धारित कर रखा है (3) और तुम्हारी जो महिलाएं मासिक धर्म से निराश हो चुकी हों अगर तुम्हें शक हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है, और (यही इद्दत) उन महिलाओं की भी है जिनको मासिक धर्म आया ही नहीं[6] और जो गर्भवती महिलाएं हैं उनकी अवधि यह है कि शिशु–प्रसव हो जाए, और जो अल्लाह का लिहाज़ रखेगा अल्लाह उसके लिए उसके काम आसान कर देगा (4) यह अल्लाह का वह आदेश है जो उसने तुम पर उतारा है और जो अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके पापों को मिटा देगा और उसके लिए बदले को बढ़ा देगा (5)

---

(1) इस सूरह का नाम ही सूरह तलाक़ है, इसमें उसके आदेश थोड़े विस्तार से बयान हुए हैं, इस्लाम तलाक़ को पसन्द नहीं करता लेकिन आवश्यकता के समय इसकी अनुमति देता है, इसके लिए ऐसा क्रम निर्धारित करता है कि इसकी नौबत कम से कम आए (2) यह आदेश है कि तलाक़ पाकी के समय दिया जाए इसलिए कि नापाकी के समय में महिला में भी काफ़ी चिड़चिड़ापन पैदा होता है कभी अनैतिकता का प्रदर्शन हो जाता है और अलगाव के ख़तरे पैदा हो जाते हैं, इसलिए उस समय तलाक़ देने से रोक दिया गया और पाकी के समय भी यह आदेश है कि संभोग न किया हो तो तलाक़ दे इसलिए कि उस समय पति को पत्नी से पूरा प्रेम होता है फिर उस समय अगर तलाक़ देगा तो यह इस बात की निशानी है कि तलाक़ किसी सामायिक अनिच्छा का परिणाम नहीं है, पाकी की अवधि में तलाक़ की अनुमति का एक फ़ायदा यह है कि तीन हैज़ (माहवारी) से जो इद्दत गुज़ारना उस पर अनिवार्य है पाकी के बाद वे तीन ही हैज़ उस पर गुज़रेंगे और इद्दत पूरी हो जाएगी और अगर मासिक धर्म के समय में तलाक़ दी वह मासिक धर्म इद्दत में शमिल नहीं होगा, उसके बाद तीन पूरे–पूरे नापाकी के दिन गुज़ारने पड़ेंगे और इद्दत अनावश्यक लम्बी हो जाएगी, इसलिए भी नापाकी के दिनों में तलाक़ देने से रोका गया है (3) पत्नी, पति के घर में ही इद्दत गुज़ारेगी, उस अवधि का नान–नफ़क़ा (गुज़ारा भत्ता) पति के ज़िम्मे है, हाँ अगर वह महिला अनैतिकता का प्रदर्शन करे या ⟹

اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا
عَلَيْهِنَّ ؕ وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ
فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَاْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَاِنْ
تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗۤ اُخْرٰى ؕ ﴿۶﴾ لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَمَنْ
قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّاۤ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ؕ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَاۤ اٰتٰىهَا ؕ
سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ﴿۷﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ
رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ﴿۸﴾
فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ﴿۹﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ
عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ ۛۚ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛ قَدْ
اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ﴿۱۰﴾ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ
لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَمَنْ
يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ﴿۱۱﴾ اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ سَبْعَ
سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ
اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَىْءٍ عِلْمًا ﴿۱۲﴾

ع ١٧ — مع — عند المتقدمين — ع ١٨

منزل٧

उनको अपनी हैसियत के अनुसार वहीं रखो जहाँ तुम रहते हो और उनको तंग करने के लिए उनको सताओ मत[1], और अगर वे गर्भ वालियाँ हों तो उन पर ख़र्च करते रहो यहाँ तक कि प्रसव हो जाए फिर अगर वे तुम्हारे लिए (बच्चे को) दूध पिलाएं तो उनका बदला उनको अदा करो और आपस में भली–भांति सलाह–मश्वरा कर लो[2] और अगर कठिनाई पैदा करोगे तो कोई दूसरी महिला उसको दूध पिलाएगी (6) गुंजाइश वाला अपनी गुंजाइश के अनुसार ख़र्च करे, और जिस पर रोज़ी तंग हो तो उसको अल्लाह ने जो दिया उसमें से ख़र्च करे, अल्लाह किसी जान पर उतना ही बोझ डालता है जितना उसने उसको दिया है, जल्द ही अल्लाह कठिनाई के बाद आसानी पैदा कर देगा (7) और कितनी बस्तियाँ हैं जिन्होंने अपने पालनहार के और उसके पैग़म्बरों के आदेश से बग़ावत की तो हमने उनका कड़ा हिसाब लिया और उनको एक अंजाने अज़ाब से ग्रस्त किया (8) तो उन्होंने अपनी करतूतों का मज़ा चखा और उनके कामों का परिणाम घाटे का हुआ (9) अल्लाह ने उनके लिए कठोर यातना तैयार कर रखी है बस ऐसे बुद्धिमानो! जो ईमान रखते हो अल्लाह से डरते रहो, अल्लाह ने तुम्हारे लिए नसीहत को उतार दिया है (10) रसूल हैं जो तुम्हें साफ़–साफ़ अल्लाह की आयतें पढ़कर सुनाते हैं ताकि ईमान वालों और अच्छे काम करने वालों को अन्धेरों से निकाल कर रौशनी में लाएं और जो भी अल्लाह पर ईमान लाएगा और अच्छे काम करेगा वह (अल्लाह) उसको ऐसी जन्नतों में प्रवेश कराएगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उसी में सदैव रहेंगे, अल्लाह ने उनके लिए उनकी रोज़ी बहुत ख़ूब तैयार की है (11) अल्लाह ही है जिसने सात आसमान बनाए और उन्हीं की तरह ज़मीन बनाई, उसका आदेश उनके बीच उतरता रहता है ताकि तुम समझ लो कि अल्लाह हर चीज़ को करने में समर्थ है और अल्लाह का ज्ञान हर वस्तु को घेरे में लिए हुए है (12)

⟹ चरित्रहीन हो तो महिला को दूसरे स्थान पर स्थानांतरित किया जा सकता है। (4) यानी पति को पत्नी की इच्छा हो जाए और वह दोबारा उसे अपना ले, इसीलिए अगली आयत में रुजू (दोबारा अपनाने) के आदेश बयान हुए हैं और साथ–साथ यह भी स्पष्ट हो रहा है कि तलाक़ देनी हो तो ''तलाक़–ए–रजई'' देनी चाहिए ताकि इद्दत की अवधि में ख़ुद रुजू करना सम्भव रहे, नये निकाह की आवश्यकता न पड़े, इसलिए कि अगर ''तलाक़–ए–बायन'' दे दे तो दोबारा पत्नी को अपनाने के लिए निकाह करना अनिवार्य होगा और तीन तलाक़ें ''मुग़ल्लज़ह'' दे दे तो मामाला पति–पत्नी के हाथ से निकल गया (5) रुजू करते समय दो गवाह बना लेना बेहतर है ताकि बाद में कोई झगड़ा आदि न हो (6) जो महिलाएं मासिक धर्म से निराश हो चुकीं या जिनको मासिक धर्म आना शुरु ही नहीं हुआ, उनकी इद्दत के बारे में दिमाग़ में सवाल पैदा हुआ, उसी का जवाब है, आगे गर्भवती महिलाओं की इद्दत का उल्लेख है कि उनकी इद्दत की अवधि शिशु–प्रसव का हो जाना है चाहे वह अवधि लम्बी हो या संक्षिप्त, चाहे वह बच्चा पूरा होकर पैदा हो या बीच में ही गर्भपात हो जाए।

(1) तलाक़ दे दी है तो दुश्मनी मत निकालो और सताओ नहीं कि वह मजबूर होकर घर छोड़ दे बल्कि अच्छे तरीक़े से रखो और भली–भांति रवाना करो (2) बच्चे का ख़र्च पति के ज़िम्मे है बच्चे को अगर महिला दूध पिलाए तो बेहतर है वह उसकी माँ है मगर वह उसके ख़र्च की माँग कर सकती है जो सलाह–मश्वरा से तय कर लिया जाए, पति अगर ख़र्च देने पर सहमत न हो तो ज़ाहिर है कि किसी दूसरी महिला को ख़र्च देकर दूध पिलवाना पड़ेगा, इससे बेहतर है कि वह बच्चे की माँ से जो उसकी पूर्व पत्नी है ख़र्च देकर दूध पिलवाए।

सूरह तह़रीम

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً وَفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ
اَزْوَاجِكَ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱﴾ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ
اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿۲﴾ وَاِذْ اَسَرَّ
النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ
اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ
قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿۳﴾ اِنْ تَتُوْبَاۤ
اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ
هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ
ظَهِيْرٌ ﴿۴﴾ عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَيْرًا
مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ
ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ﴿۵﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ
نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ
لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ﴿۶﴾

منزل۷

ऐ नबी! आप क्यों अपनी पत्नियों की ख़ुशी के लिए उस चीज़ को ह़राम कर रहे हैं जिसको अल्लाह ने आपके लिए ह़लाल रखा है? और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला मेहरबान है[1] (1) बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारी क़समों से निकलने का तरीक़ा तय कर दिया है और अल्लाह ही तुम्हारा समर्थक है और वह ख़ूब जानता है हिकमत (युक्ति) रखता है (2) और जब पैग़म्बर ने अपनी पत्नियों में से किसी से एक बात चुपके से कही फिर जब उन (पत्नी) ने उसको ज़ाहिर कर दिया और अल्लाह ने आपके लिए बात खोल दी तो आपने उसमें कुछ बात जतलाई और कुछ भाग छोड़ दिया, तो जब आपने उन पत्नी के सामने वह बात जतला दी तो वे बोलीं आपको किसने ख़बर दी[2], आपने कहा मुझे उसने बताया जो ख़ूब जानने वाला और ख़बर रखने वाला है (3) और तुम दोनों अल्लाह से तौबा कर लो तो तुम्हारे दिल झुके ही हैं और अगर तुम पैग़म्बर के ख़िलाफ़ परस्पर मदद करोगी तो बेशक आपका समर्थक अल्लाह ही है और जिब्रईल और नेक ईमान वाले और उनके अलावा फ़रिश्ते भी (आपके) मददगार हैं[3] (4) अगर वे तुम्हें तलाक़ दे दें तो तुरन्त ही उनका पालनहार (तुम्हारे) बदले में उनको ऐसी पत्नियाँ प्रदान करेगा जो तुम से बेहतर होंगी, आज्ञाकारी, दिल से विश्वास करने वाली, आज्ञाकारी, तौबा करने वाली, इबादत करने वाली, रोज़ेदार, ग़ैर कुँवारी और कुँवारी भी (5) ऐ ईमान वालो! बचाओ अपने आपको और अपने घर वालों को (दोज़ख़ की) उस आग से जिसका ईंधन इंसान और पत्थर होंगे, उस पर कठोर पकड़ करने वाले फ़रिश्ते निर्धारित हैं, जो (अल्लाह के) किसी आदेश की अवमानना नहीं करते और उनसे जो कहा जाता है वह किये जाते हैं (6)

---

(1) आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की दिनचर्या में यह शामिल था कि अस्र की नमाज़ के बाद थोड़ी–थोड़ी देर के लिये सारी पत्नियों के पास जाया करते थे, एक बार हज़रत ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने इस अवसर पर आपका सत्कार शहद से किया, इसमें थोड़ी देर लगी, दो–एक दिन ऐसा हुआ, इस पर हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) और हफ़्सा (रज़ियल्लाहु अन्हा) को स्वाभाविक रूप से कुछ बुरा लगा, जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उनके यहाँ पधारे तो उन्होंने कहा कि आपके मुँह से मग़ाफ़ीर नामक फूल की दुर्गन्ध आ रही है, यह एक फूल है जिससे मधुमक्खी रस चूसती है, आप (सल–लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हाँ मैंने शहद पिया है फिर उन दोनों का दिल ख़ुश करने के लिए कह दिया कि अब कभी न पियूँगा और इस पर क़सम के शब्द भी कह दिये, यह बात आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हज़रत हफ़्सा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से कही और कह दिया कि वह यह बात किसी से न बताएं, उन्होंने हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से बता दिया, उस पर यह आयतें उतरीं, और आपको क़सम तोड़ने और कफ़्फ़ारा अदा करने का आदेश हुआ, फिर आपने सामान्यतः यह बात कही कि जो कोई अनुचित क़सम खा ले तो उस क़सम को तोड़कर कफ़्फ़ारा अदा करना चाहिए (2) आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हज़रत हफ़्सा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से कह दिया कि तुमने आयशा को बता दिया मगर पूरा विवरण नहीं दिया ताकि ज़्यादा लज्जित न हो। (3) यहाँ हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) और हफ़्सा (रज़ियल्लाहु अन्हा) को सम्बोधित किया गया कि तुम दोनों को ग़लती का एहसास है बस तौबा कर लो, और आगे सारी पवित्र पत्नियों से कहा जा रहा है कि तुम पैग़म्बर के सामने अधिक माँग न रखो और उनको परेशानी में मत डालो वरना तुम्हारी जगह अल्लाह उनको बेहतर पत्नियाँ प्रदान कर देगा फिर उसके बारे में ⟹

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لَا تَعْتَذِرُوا۟ ٱلْيَوْمَ ۖ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ٧ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ تُوبُوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا
عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُكَفِّرَ عَنكُمْ سَيِّـَٔاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّٰتٍ تَجْرِى
مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ يَوْمَ لَا يُخْزِى ٱللَّهُ ٱلنَّبِىَّ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَعَهُۥ
نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَٰنِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَآ أَتْمِمْ لَنَا
نُورَنَا وَٱغْفِرْ لَنَآ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ٨ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ جَٰهِدِ
ٱلْكُفَّارَ وَٱلْمُنَٰفِقِينَ وَٱغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ
ٱلْمَصِيرُ ٩ ضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ٱمْرَأَتَ نُوحٍ وَ
ٱمْرَأَتَ لُوطٍ ۖ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَٰلِحَيْنِ
فَخَانَتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ ٱللَّهِ شَيْـًٔا وَقِيلَ ٱدْخُلَا ٱلنَّارَ
مَعَ ٱلدَّٰخِلِينَ ١٠ وَضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱمْرَأَتَ
فِرْعَوْنَ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ٱبْنِ لِى عِندَكَ بَيْتًا فِى ٱلْجَنَّةِ وَنَجِّنِى مِن
فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِۦ وَنَجِّنِى مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ١١ وَمَرْيَمَ
ٱبْنَتَ عِمْرَٰنَ ٱلَّتِىٓ أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِن رُّوحِنَا
وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهِۦ وَكَانَتْ مِنَ ٱلْقَٰنِتِينَ ١٢

ع ١٩ — وقف لازم — ع ٢ ٢٠

منزل٧

ऐ वे लोगो! जिन्होंने इनकार किया आज बहाना पेश मत करो, तुम जो कुछ करते चले आए हो उसी की तुम्हें सज़ा दी जा रही है (7) ऐ ईमान वालो! अल्लाह के सामने सच्ची तौबा करो, आशा है कि अल्लाह तुम्हारी गलतियों को मिटा देगा और तुम्हें ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिस दिन अल्लाह पैग़म्बर को और उनके साथ ईमान वालों को अपमानित नहीं करेगा, उनका प्रकाश उनके सामने और उनके दाएं (उनके साथ) चल रहा होगा वे कहेंगे कि ऐ हमारे पालनहार! हमारे लिए प्रकाश को पूरा कर दे[1], और हमें माफ़ कर दे बेशक तू हर चीज़ पर पूरा सामर्थ्य रखता है (8) ऐ पैग़म्बर! इनकार करने वालों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करते जाइये[2] और उनके साथ कठोर हो जाइये[3] और उनका ठिकाना दोज़ख़ है और बहुत बुरे अंजाम की जगह है (9) अल्लाह काफ़िरों के लिए नूह की पत्नी और लूत की पत्नी की मिसाल देता है दोनों हमारे विशेष बन्दों में से दो बन्दों के निकाह में थीं जो भले थे, तो उन्होंने उनके साथ ख़यानत (विश्वासघात) की तो वे दोनों अल्लाह के मुक़ाबले में उनके ज़रा भी काम न आए और आदेश हुआ और दाख़िल हो जाने वालों के साथ तुम भी दोज़ख़ में दाख़िल हो जाओ[4] (10) और अल्लाह ईमान वालों के लिए फ़िरऔन की पत्नी की मिसाल देता है, जब उन्होंने कहा कि "मेरे पालनहार! मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दे और मुझे फ़िरऔन और उसकी करतूत से छुटकारा दे और अत्याचारी क़ौम से मुझे निजात प्रदान कर[5] (11) और इमरान की बेटी मरियम (का उदाहरण देता है) जिन्होंने अपनी इस्मत को सुरक्षित रखा तो हमने उसमें अपनी रूह[6] (आत्मा) फूँकी और उन्होंने अपने पालनहार की बातों और उसकी किताबों की पुष्टि की और वे आज्ञाकारी लोगों में थीं (12)

⟹ "तख़ईर" की आयत उतरी जो सूरह अहज़ाब में है, उसके बाद ही सारी पत्नियों ने सर्व सहमति से यह बात कही कि हम हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सिवा कुछ सोच ही नहीं सकते, वह तो इस्लाम के निरन्तर विजय क्रम के कारण यह विचार पैदा हुआ था कि हमें भी खुशहाली प्राप्त हो, हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ हर कठिनाई हमारे लिए कृपा समान है।

(1) पुल सिरात से ईमान वाले इसी प्रकाश के साथ गुज़रेंगे (2) जिहाद का अर्थ है कोशिश, हर प्रकार का संघर्ष इसमें शामिल है जो दीन (धर्म) के प्रसार और उसको लागू करने के लिए किया जाए, दुश्मन के मुक़ाबले के लिए अगर सशस्त्र संघर्ष की आवश्यकता हो तो निश्चित तौर पर यह सबसे बड़ा बलिदान है जो एक ईमान वाला अल्लाह के लिए देता है (3) आप (सल–लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नर्मी इस हद तक थी कि दुश्मनों के लिए भी कृपा–दया इतनी बढ़ी हुई थी कि आपको दुश्मनों के लिए कठोर हो जाने का आदेश हो रहा है (4) हज़रत नूह और हज़रत लूत (अलैहिस्सलाम) दोनों की पत्नियाँ पैग़म्बरों के घर में होने के बावजूद मुनाफ़िक़ थीं और अपराधियों से सांठ–गांठ कर रखी थी परिणाम स्वरूप दोज़ख़ में दाख़िल हो जाने का आदेश हुआ, इसमें स्पष्ट कर दिया गया कि किसी सगे–सम्बन्धी का ईमान किसी ग़ैर ईमान वाले को नहीं बचा सकता, हर आदमी अपने ईमान की चिंता करे (5) फ़िरऔन की पत्नी आसिया हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) पर ईमान ले आई थीं उनको भी फ़िरऔन के अत्याचार का सामना करना पड़ा, अंततः अल्लाह ने उनको ईमान के साथ मौत दे दी (6) इसी रूह से हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) पैदा हुए इसी लिए उनको रूहुल्लाह कहा जाता है।

सूरह मुल्क

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

बड़ी बरकत वाला है वह जिसके हाथ में सारी बादशाही है और वह हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाला है (1) जिसने मौत और जीवन को इसलिए पैदा किया ताकि वह तुम्हें आज़मा कर देखे कि तुममें कौन काम में ज़्यादा बेहतर है और वह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है बख़्शने वाला है (2) जिसने ऊपर नीचे सात आसमान बनाए, तुम रहमान की पैदा की हुई चीज़ों में ज़रा भी असंतुलन न पाओगे तो नज़र दौड़ाकर देख लो तुम्हें ज़रा भी बिगाड़ दिखाई देता है? (3) फिर बार–बार नज़र दौड़ाओ नज़र थक हार कर लौट आएगी और उसको कुछ हाथ न आएगा (4) और हमने दुनिया वाले आसमान को रौशन चिराग़ों से सजा दिया है और उनको हमने शैतानों पर पत्थर बरसाने का साधन भी बनाया है और उनके लिए दहकती आग का अज़ाब (यातना) तैयार कर रखा है[1] (5) और जिन्होंने अपने पालअनहार का इनकार किया उनके लिए भी दोज़ख़ का अज़ाब है और वह बहुत बुरा ठिकाना है (6) जब वे उसमें डाले जाएंगे तो वे उसकी दहाड़ें सुनेंगे और वह उबाल मार रही होगी (7) लगेगा कि वह क्रोध से फट पड़ेगी[2], जब–जब उसमें कोई गिरोह डाला जाएगा तो उसके संतरी उनसे पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया (8) वे कहेंगे क्यों नहीं हमारे पास डराने वाला ज़रूर आया तो हमने झुठला दिया और हमने कहा अल्लाह ने कुछ भी नहीं उतारा, कुछ नहीं तुम तो बड़ी गुमराही में पड़े हो (9) और वे कहेंगे कि अगर हम सुन लिया करते और समझ से काम लिया करते तो हम दहकती आग वालों में शामिल न होते[3] (10)

(1) चिराग़ों का मतलब वे सितारे और ग्रह जो रात को चमकते–दमकते नज़र आते हैं और उनसे शैतानों के मारने का काम लिया जाता है और आख़िरत में उनके लिए दोज़ख़ का अज़ाब है (2) यह ऐसी तेज़ आग होगी कि उससे भयानक आवाज़ें निकलेंगी और बहुत ज़्यादा जोश और उत्तेजना के कारण ऐसा मालूम होगा कि जैसे ग़ुस्से से फटी पड़ती है (3) अल्लाह तआला यह इसलिए सुना रहा है कि उस दिन से पहले इंसान विचार कर ले और एक अल्लाह की मानकर अपने बचाव की व्यवस्था कर ले।

فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿۱۱﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ
يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿۱۲﴾ وَاَسِرُّوْا
قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۳﴾ اَلَا يَعْلَمُ
مَنْ خَلَقَ ۭ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿۱۴﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ
الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ۭ وَاِلَيْهِ
النُّشُوْرُ ﴿۱۵﴾ ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَاۗءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ
الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَمُوْرُ ﴿۱۶﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَاۗءِ اَنْ
يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۭ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿۱۷﴾ وَلَقَدْ
كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۱۸﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا
اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰۗفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ۘ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ۭ
اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍۢ بَصِيْرٌ ﴿۱۹﴾ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ
يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ۭ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِيْ غُرُوْرٍ ﴿۲۰﴾
اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا
فِيْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ ﴿۲۱﴾ اَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰي وَجْهِهٖٓ
اَهْدٰٓى اَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۲﴾

منزل ۷

बस वे अपने अपराध को स्वीकार कर लेंगे तो कैसा विनाश है दहकती आग वालों के लिए (11) हाँ जो बिन देखे अपने पालनहार से डरते हैं उनके लिए गुनाहों की माफ़ी है और बड़ा बदला है (12) तुम अपनी बात धीरे कहो या ज़ोर–ज़ोर से बेशक वह सीनों के भीतर की बातों को भी ख़ूब जानता है (13) क्या वही न जानेगा जिसने पैदा किया और वह बड़ा सूक्ष्मदर्शी और पूरी ख़बर रखने वाला है (14) वही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को कोमल बनाया तो तुम उसके कांधों पर चलो और उसकी रोज़ी खाओ और उसकी ओर तुम्हें दोबारा ज़िन्दा होकर जाना है (15) क्या तुम आसमान वाले से निडर हो गए कि वह तुम्हें धरती में धंसा दे तो वे काँपने लगे[1] (16) या तुम आसमान वाले से निडर हो गये कि वह तुम पर धूल भरी आँधी भेज दे फिर तुम्हें पता चल जाएगा कि मेरा डरावा कैसा (भयानक) था (17) और उन से पहले वालों ने भी झुठलाया था तो मेरी पकड़ कैसी (कठोर) थी (18) भला उन्होंने अपने ऊपर पक्षियों को नहीं देखा पंख खोले हुए भी हैं और समेट भी लेते हैं, रहमान के अलावा कौन उनको थामता है[2], बेशक वह हर चीज़ पर पूरी नज़र रखता है (19) भला कौन है रहमान के अलावा जो तुम्हारी सेना बनकर तुम्हारी मदद करेगा, काफ़िर तो बड़े धोखे में हैं[3] (20) भला अगर वह अपनी रोज़ी रोक ले तो कौन है जो तुम्हें रोज़ी पहुँचाए, कोई नहीं, बात यह है कि उदण्डता और बेज़ारी (विमुखता) पर अड़ गए हैं (21) भला जो औंधा होकर मुँह के बल चल रहा हो वह मंज़िल पर पहुँचने वाला होगा या वह जो सीधे रास्ते पर ठीक–ठीक चल रहा हो[4] (22)

(1) पहले सम्मान याद दिलाए गए, अब अल्लाह के क़हर व बदले को याद दिलाकर डराना उद्देश्य है, यानी धरती तुम्हारे लिए नियंत्रित कर दी गई, मगर याद रहे कि उस पर शासन (राज) उसी पैदा करने वाले का है, अगर वह चाहे तो धरती में तुमको धंसा दे या और किसी यातना में ग्रस्त करदे, अतः आदमी के लिए उचित नहीं कि वह उस मालिक से निडर होकर बदमाशी शुरु कर दे और उसके ढील देने पर अहंकारी हो जाए और उसी को भूल जाए फिर आगे इनकार करने वालों और अवज्ञाकारियों का जो अंजाम हो चुका है उसका उल्लेख हुआ है (2) पक्षी भी अल्लाह की कुदरत का एक प्रतीक हैं, घंटों वायु में तैरते रहते हैं (3) इनकार करने वाले यदि यह समझते हैं कि उनके देवताओं की सेना उनको अल्लाह के अज़ाब से बचा लेगी तो वे बड़े धोखे में हैं, उस महाशक्तिमान के सामने सब असहाय है (4) मंज़िल तक वह पहुँचेगा जो सीधे रास्ते पर आदमियों की तरह सीधा होकर चले और जो टेढ़े रास्ते पर औंधा होकर मुँह के बल चलता हो उसके मंज़िल तक पहुँचने की क्या आशा की जा सकती है, यह मिसाल मुवह्हिद (एकेश्वरवादी) और मुश्रिक (बहुदेववादी) की दी गई है।

قُلْ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿۲۳﴾ قُلْ هُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۲۵﴾ قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۪ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۲۶﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿۲۷﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۲۸﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۹﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿۳۰﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ﴿۱﴾ مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ﴿۲﴾ وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿۳﴾ وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ﴿۴﴾ فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ﴿۵﴾ بِاَيِّىكُمُ الْمَفْتُوْنُ ﴿۶﴾

منزل ۷

कह दीजिए कि उसी ने तुमको अस्तित्व प्रदान किया और तुम्हारे कान और आँखें और दिल बनाए, बहुत कम तुम शुक्र अदा करते हो (23) कह दीजिए कि उसी ने तुम्हें ज़मीन में फैला दिया है और उसी के पास तुम सबको इकटठा होना है (24) वे कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो बताओ कि वह वादा कब पूरा होगा (25) आप बता दीजिए कि सारा ज्ञान अल्लाह ही के पास है और मैं तो खुलकर सावधान करने वाला हूँ (26) फिर जब वह उसको क़रीब आता देख लेंगे तो इनकार करने वालों के चेहरे बिगड़ कर रह जाएंगे और कहा जाएगा यही वह चीज़ है जो तुम माँगा करते थे[1] (27) आप पूछिए कि तुम्हारा क्या ख़्याल है अल्लाह मुझे और मेरे साथ वालों को हलाक (विनष्ट) करे या हम पर कृपा करे, आख़िर काफ़िरों को दुखद अज़ाब से कौन पनाह दे सकता है[2] (28) कह दीजिए कि वह रहमान है, हम उसी पर ईमान लाए और हमने उसी पर भरोसा किया, बस जल्द ही तुम्हें मालूम हुआ जाता है कि कौन खुली गुमराही में है (29) आप पूछिए कि तुम्हारा क्या विचार है अगर तुम्हारा पानी तहों में चला जाए तो कौन है जो तुम्हें साफ़ सुथरा पानी लाकर दे दे (30)

सूरह क़लम

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

नून, क़सम है क़लम की और उसकी जो कुछ वे लिखते हैं[3] (1) आप अपने पालनहार की कृपा से पागल नहीं हैं (2) और बेशक आपके लिए ऐसा बदला है जो समाप्त होगा ही नहीं (3) और बेशक आप चरित्र के बहुत बुलन्द मक़ाम पर हैं (4) बस जल्द ही आप भी देख लेंगे और वे भी देख लेंगे (5) कि तुममें कौन पागलपन में पड़ा है (6)

(1) अभी माँग कर रहे हैं लेकिन वादा आ पहुँचेगा तो बड़े–बड़े उदण्डियों के मुँह बिगड़ जाएंगे और चेहरों पर हवाइयाँ उड़ने लगेंगी (2) काफ़िर कामना करते थे कि पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और आपके सब साथी दुनिया से सिधार जाएं और यह दीन (धर्म) मिट जाए, उनसे कहा जा रहा है कि अल्लाह तआला नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और उनके साथियों को समाप्त करे या उन पर वादे के अनुसार कृपा करे और ग़ालिब करे इससे तुम्हारे अंजाम पर क्या अन्तर पड़ता है, तुम्हें तो यातना का मज़ा चखना ही है तो तुम्हें अपने बचाव की चिंता करनी चाहिए (3) ऐसा लगता है कि क़लम का मतलब "भाग्य का क़लम" है जिसने अल्लाह के आदेश से सब कुछ लिखा, इसमें यह संकेत भी मालूम होता है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मक्के में भेजा जाना और दीन की दावत देना और इसके आगे के सारे विवरण पहले दिन से ही भाग्य में लिखा हुआ है, अब अगर कोई आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पागल समझता है या कहता है तो यह खुद उसका पागलपन है और उसकी बुद्धि विकृत है, मक्के के मुश्रिकों में से कुछ लोग जब उनसे कुछ हो न पाया तो यही कहने लगे जबकि इसका खण्डन उसी समय सबसे बड़े दुश्मन वलीद पुत्र मुग़ीरा ही ने कर दी थी और कहा कि हम पागलों से वाक़िफ़ हैं, कहाँ पागलपन और कहाँ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की जीवनशैली दोनों में कोई जोड़ नहीं, फिर आगे आयत में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से कहा जा रहा है कि आपको जो कुछ कहा जाता है और फिर आप उस पर सब्र करते हैं और लोगों को भलाई की ओर बुलाते हैं उसका आपके लिए इतना बदला है कि कभी समाप्त नहीं होगा और आपका चरित्र इतना बुलन्द है कि उसके बाद कोई पागल ही आप पर पागलपन का आरोप लगा सकता है, बस जल्द ही हक़ीक़त खुल जाएगी कि कौन होशियार और परिणाम पर नज़र रखने वाला था और कौन बुद्धिहीन था।

मंज़िल ७

बेशक आपका पालनहार सबसे ज़्यादा जानता है कि कौन उसके रास्ते से भटक गया और वह उन लोगों को भी सबसे ज़्यादा जानता है जिन्होंने सीधा रास्ता पा लिया (7) तो आप झुठलाने वालों की बातों में मत पड़िये (8) वे तो चाहते हैं कि आप ढीले पड़ जाएं तो वे भी ढीले पड़ जाएं[1] (9) और किसी भी बहुत क़सम खाने वाले की बातों में न आ जाइएगा जो बेहैसियत है (10) ताने देना उसका काम है, चुग़लियाँ खाता फिरता है (11) भलाई के लिए रोड़े अटकाने वाला, अत्याचार करने वाला पापी है (12) कठोर हृदय वाला है इसके अलावा बेनाम व गोत्रहीन है (13) केवल इसलिए कि वह बड़े धन–संतान वाला है (14) जब हमारी आयतें उनके सामने पढ़ी जाती हैं तो कहता है कि गुज़रे लोगों की कथाएं हैं (15) हम जल्द ही उसकी सूँढ पर दाग़ लगाएंगे[2] (16) हमने उन (मक्के वालों) को भी आज़माया जिस तरह हमने बाग़ वालों को आज़माया था जब सबने क़समें खाईं कि वे सवेरे ही सवेरे उसके फल तोड़ लेंगे (17) और कुछ अलग नहीं कर रहे थे[3] (18) बस उनके सोते ही सोते आपके पालनहार की ओर से एक मुसीबत उस पर से गुज़र गई (19) तो वह बिल्कुल कटे हुए खेत की तरह होकर रह गया (20) फिर सुबह ही सुबह उन्होंने एक–दूसरे को आवाज़ दी (21) कि अगर तुम्हें फल तोड़ने हैं तो सुबह ही सुबह खेत की ओर चल दो (22) बस वे सब चल दिये और चुपके–चुपके वे कह रहे थे (23) आज तुम्हारे पास कोई मोहताज यहाँ न आने पाए (24) और वे सवेरे ही सवेरे चल दिये (ताकि वे) रोकने में सामर्थ्य हों (25) फिर जब उन्होंने उसको देखा तो बोले कि ज़रूर हम रास्ता भटक गये हैं (26) (फिर जब हक़ीक़त खुली, कहने लगे) हाँ बात यह है कि हम वंचित रह गये (27) उनमें सबसे बेहतर आदमी बोला क्या मैंने कहा नहीं था कि तुम तस्बीह क्यों नहीं करते (28) वे कहने लगे हम अपने पालनहार की तस्बीह बयान करते हैं बेशक हम ही ज़ालिम थे (29) फिर वे एक–दूसरे को मलामत करने लगे (30) बोले हाय हमारी बदनसीबी! बेशक हम ही सरकश (उदण्डी) थे[4] (31)

(1) काफ़िर कहते थे कि आप हमारे पूज्यों को ग़लत कहना छोड़ दें हम भी आपको ख़ुदा का आदर करेंगे, हो सकता था कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जैसी महान चरित्रवान हस्ती के दिमाग़ में आता कि कुछ दिनों के लिए थोड़ी नर्मी अपना ली जाए शायद इन विरोधियों के दिल में भी नर्मी आ जाए, इस पर यह आयतें उतरीं कि मानने वाले और इनकार करने वाले सब अल्लाह को मालूम हैं, लिहाज़ा दावत में मामले में किसी रू–रिआयत की ज़रूरत नहीं, जिसको रास्ते पर आना होगा वह आएगा, जो सदैव के लिए वंचित है वह किसी लिहाज़ व मुरव्वत से मानने वाला नहीं (2) कहा जाता है कि इससे मतलब विशेष रूप से वलीद पुत्र मुग़ीरह है जो क़ुरैश का एक सरदार था और उसमें यह सारे अवगुण मौजूद थे, नाक पर दाग़ने का मतलब उसका अपमान और ज़िल्लत है जो होनी थी और हुई (3) न इन्शा अल्लाह कह रहे थे और न ग़रीबों के लिए किसी अधिकार को अलग करने की बात कह रहे थे (4) एक भला इंसान था जो पैदावार का एक बड़ा भाग ग़रीबों को देता था जो उसके बेटों को अच्छा नहीं लगता था, बाप के मरने पर बेटों ने तय कर लिया कि सब का सब घर लाएंगे और ऐसे समय खेती काट लेंगे कि ग़रीबों को पता ही न चलेगा, जब प्रस्ताव के अनुसार सवेरे ही सवेरे वे खेत पर पहुँचे तो वह तबाह हो चुका था, उस समय उनको शर्मिन्दगी हुई और वे एक–दूसरे को लानत–मलामत करने लगे।

عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿۳۲﴾ كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ۭ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۳﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۳۴﴾ اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿۳۵﴾ مَا لَكُمْ ۣ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿۳۶﴾ اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ ﴿۳۷﴾ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿۳۸﴾ اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُوْنَ ﴿۳۹﴾ سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ﴿۴۰﴾ اَمْ لَهُمْ شُرَكَاۗءُ ڔ فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَاۗىِٕهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿۴۱﴾ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿۴۲﴾ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۭ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿۴۳﴾ فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ۭ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۭ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿۴۵﴾ اَمْ تَسْـَٔــلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿۴۶﴾ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿۴۷﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ﴿۴۸﴾

आशा है कि हमारा पालनहार इससे बेहतर बदल हमें प्रदान करेगा हम अपने पालनहार ही से कामना करते हैं (32) यूँ आता है अज़ाब (यातना) और आख़िरत का अज़ाब सबसे बढ़कर है अगर वे जानते हों[1] (33) बेशक परहेज़गारों के लिए उनके पालनहार के पास नेमतों के बाग़ हैं (34) भला हम आज्ञाकारियों को अपराधियों के बराबर क़रार देंगे[2]? (35) तुम्हें हुआ क्या है तुम कैसे फ़ैसले करते हो (36) क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम पढ़ लेते हो (37) कि तुम्हें वहाँ वह सब मिलेगा जो तुम चुनोगे (38) या तुम्हारे लिए हमारे ज़िम्मे कुछ क़समें हैं जो क़यामत तक बाक़ी रहने वाली हैं कि तुम्हें वही मिलेगा जो तुम फ़ैसला करोगे (39) उनसे पूछिये कि उनमें कौन इसका दावेदार है (40) क्या उनके लिए (ख़ुदाई में) साझीदार हैं तो अगर सच्चे हों तो अपने शरीकों को ले आएं (41) जिस दिन पिंडली खोल दी जाएगी और उनको सज्दे के लिए कहा जाएगा तो वे कर न सकेंगे[3] (42) उनकी आँखें झुकी हुई होंगी, ज़िल्लत उन पर छा रही होगी और पहले भी उनको सज्दों के लिए बुलाया जाता था जबकि वे स्वस्थ थे (43) तो आप उन लोगों की जो इस बात को झुठला रहे हैं मुझ पर छोड़िये हम धीरे–धीरे उनको इस प्रकार खीचेंगे कि उनको पता भी न चल सकेगा (44) और मैं उनको ढील दूँगा बेशक मेरा उपाय बड़ा मज़बूत है (45) क्या आप उनसे कोई मेहनताना माँगते हैं तो वे उस तावान के बोझ तले दबे जा रहे हैं (46) या उनके पास ढकी छिपी बातें हैं जिनको वे लिख रहे हैं[4] (47) तो आप अपने पालनहार के फ़ैसले तक सब्र करते रहें और मछली वाले की तरह न हो जाएं जब उन्होंने अपने पालनहार को घुट कर पुकारा था (48)

---

(1) यानी यह दुनिया के छोटे अज़ाब एक नमूना था जिसको कोई टाल न सका, भला आख़िरत के अज़ाब को कौन टाल सकता है (2) काफ़िर कहते थे कि दुनिया में हम ज़्यादा सम्मानित हैं आख़िरत में भी ज़्यादा सम्मानित होंगे, अल्लाह फ़रमाता है कि आक़ा के सामने आज्ञाकारी और अवज्ञाकारी क्या बराबर हो सकते हैं? ऐसी मूर्खता की बात वे कहाँ से बक रहे हैं, किसी किताब में लिखा हो दिखायें या जिनको उन्होंने ख़ुदाई में साझेदार बना रखा है और उनको वे इस सम्बन्ध में मददगार समझते हैं तो उनको ले आएं (3) सही हदीस में इसका स्पष्टीकरण है कि अल्लाह उस दिन अपनी पिंडली खोल देगा यह अल्लाह का विशेष गुण है जिसकी हक़ीक़त अल्लाह ही जानता है, अतः उसकी ख़ास तजल्ली (प्रकाश) के प्रकट होने के समय सब सज्दे में गिर पड़ेंगे मगर मुनाफ़िक़ों और इनकार करने वालों की कमर अकड़ कर रह जाएगी और ईमान वाले और मुनाफ़िक़ का अन्तर सामने खुलकर आ जाएगा, दुनिया में अधिकार के समय कभी इख़्लास (निष्ठा) के साथ सज्दा न किया, अब महरूमी (वंचन) उनका मुक़द्दर होगी, चाहेंगे तो भी सज्दा न कर सकेंगे (4) यानी आप उनको इख़्लास (निष्ठा) के साथ दावत दे रहे हैं और उनके पास इसके विरूद्ध कोई प्रमाण भी नहीं मगर इनकार किये जाते हैं तो इसका नतीजा ख़ुद भुगतेंगे, आप तो सब्र किये जाएं, आगे हज़रत यूनुस का उदाहरण है कि वे शुरु में क़ौम के इनकार पर गुस्सा होकर चल दिये फिर मछली के पेट में उन्होंने अपने पालनहार को पुकारा तो अल्लाह ने उन पर अपनी ख़ास कृपा की, मछली उनको किनारे उगल गई और अल्लाह ने वहाँ उनके स्वास्थ्य व जीवन के साधन पैदा कर दिये और उनको अपने उन चुनिन्दा बन्दों में बनाया जिनको सारे संसार पर वरीयता प्राप्त है।

لَوْلَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ ﴿٤٩﴾ فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٥١﴾ وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٢﴾

سُوْرَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَآقَّةُ ﴿١﴾ مَا الْحَآقَّةُ ﴿٢﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ﴿٣﴾ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾ وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْ بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ﴿٩﴾ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ﴿١٠﴾ اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِى الْجَارِيَةِ ﴿١١﴾ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ﴿١٢﴾

منزل۷

अगर उनके पालनहार की कृपा ने उनको सम्भाला न होता तो वे चटियल मैदान में बुरी हालत में फेंक दिये गये होते (49) फिर आपके पालनहार ने उनको चुना तो उनको नेक लोगों में बनाया (50) और जब काफ़िर नसीहत की बात सुनते हैं तो ऐसा लगता है कि वे आपको अपनी निगाहों से डगमगा देंगे और वे कहते हैं कि यह तो पागल है[1] (51) जबकि वे तो तमाम जहानों के लिए नसीहत ही नसीहत है (52)

सूरह हाक़्क़ह

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

वह अटल वास्तविकता[2] (1) क्या है वह अटल वास्तविकता (2) आपको पता भी है कि वह अटल वास्तविकता क्या है (3) समूद और आद ने उस हिलाकर रख देने वाली चीज़ को झुठलाया (4) बस समूद तो भूचाल से विनष्ट (हलाक) किये गये[3] (5) और रहे आद तो उनको ऐसी ठिठुरा देने वाली हवा से तबाह किया गया जो बेक़ाबू[4] थी (6) जिसको अल्लाह ने उन पर सात रातें और आठ दिन इस प्रकार लगातार रखा कि उसने हर चीज़ को उखाड़ फेंका, तो आप लोगों को वहाँ पछाड़े खाए हुए पड़ा देखें जैसे वे खजूर के खोखले तने हों (7) तो क्या कोई भी उनमें बचा हुआ दिखाई पड़ता है (8) और फ़िरऔन और उससे पहले के लोग और उल्टी बस्तियों ने भी यही अपराध किया[5] था (9) बस उन्होंने अपने पालनहार के पैग़म्बर की नाफ़रमानी की तो अल्लाह ने उनकी ऐसी पकड़ की जो बढ़ती चली गई (10) जब पानी चढ़ गया तो हमने तुमको चलती हुई नाव पर सवार किया[6] (11) ताकि हम उसको तुम्हारे लिए शिक्षाप्रद बना दें और उसको याद रखने वाले कान याद रखें (12)

---

(1) हिदायत व भलाई की बातें सुनकर काफ़िर आपको तेज़–तेज़ नज़रों से घूरते हैं और विभिन्न प्रकार के ताने देते हैं ताकि आप अपना काम छोड़ दें, बस आप अपने काम में लगे रहें, और इनकार करने वालों के लिए शिक्षाप्रद मक़ाम है कि साफ़–साफ़ शुभ चिंतन के बावजूद वे इस दावत स्वीकार नहीं करते (2) इसका मतलब क़यामत है जो एक अटल वास्तविकता है, पिछली क़ौमों ने उसे झुठलाया तो वे विनष्ट की गईं (3) ऐसा भूचाल जो तेज़ आवाज़ के साथ आया जिससे सबके कलेजे फट गये और सब तबाह व बर्बाद कर दिये गये (4) जो क़ौम ''हम से बढ़कर ताक़तवर कौन होगा'' का नारा लगाती थी वह हवा से ढेर हो गई और हवा भी ऐसी जो किसी के वश में न थी (5) आद व समूद के बाद फ़िरऔन बहुत बढ़–चढ़कर बातें करता हुआ आया, और उससे पहले कितनी क़ौमों ने नाफ़रमानियाँ कीं जैसे क़ौम–ए–नूह, क़ौम–ए–शुऐब और क़ौम–ए–लूत जिनकी बस्तियाँ उलट दी गईं, सब तबाह करके रख दिये गये (6) हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र है।

मंज़िल۷

फिर जब एक ही बार सूर फूँकी जाएगी[1] (13) और ज़मीन और पहाड़ को उठाकर एक ही बार में चकनाचूर कर दिया जाएगा (14) तो उस दिन घटित होने वाली चीज़ घटित हो जाएगी (15) और आकाश फट पड़ेगा तो उस दिन वह फुस–फुसा होगा (16) और फ़रिश्ते उसके किनारों पर होंगे और उस दिन आपके पालनहार का अर्श आठ फ़रिश्ते अपने ऊपर उठाए हुए होंगे (17) उस दिन तुम सबकी पेशी होगी, तुम्हारी कोई भी छिपी बात छिपी न रहेगी (18) बस जिसको भी उसका नाम–ए–(आमाल) उसके दाएं हाथ[2] में दिया जाएगा तो वह कहता फिरेगा लो मेरा (आमाल) नामा पढ़ो (19) मैं समझता था कि मुझे अपने हिसाब का सामना करना पड़ेगा (20) बस वह अपने मन पसन्द जीवन में रहेगा (21) ऊँचे दर्जे की जन्नतों में (22) जिसके फल झुके पड़ रहे होंगे (23) पिछले दिनों में जो करते आए हो उसके बदले में अब मज़े से खाओ पियो (24) और उस दिन जिसको उसका नाम–ए–(आमाल) उसके बाएं हाथ में दिया जाएगा तो वह कहेगा काश! मुझे मेरा नाम–ए–(आमाल) दिया ही न जाता (25) और मुझे पता ही न चलता कि मेरा हिसाब क्या है (26) काश कि उसी (मौत ही) पर काम तमाम हो जाता (27) मेरा माल कुछ मेरे काम न आया (28) मेरी सारी सत्ता समाप्त हो गई (29) (फ़रिश्तों को आदेश होगा कि) पकड़ लो उसे बस उस पर हंसली डालो (30) फिर दोज़ख़ में उसे झोंक दो (31) फिर ऐसी ज़ंजीर में उसे पिरो दो जिसकी नाप सत्तर गज़ हो (32) बेशक वह उस अल्लाह को नहीं मानता था जो महान है (33) और न मोहताज को खिलाने के लिए प्रेरित करता था[3] (34)

---

(1) अब यहाँ से फिर क़यामत का उल्लेख है (2) यह इस बात का चिन्ह होगा कि अल्लाह को उसके आमाल पसन्द हैं, इसके विपरीत जिसको बाएं हाथ में नाम–ए–आमाल मिलेगा यह उसके विनाश की ओर संकेत होगा, और वह व्यक्ति वावेला मचाएगा (3) यानी उसने दुनिया में रहकर न अल्लाह को जाना न बन्दों के अधिकारों को पहचाना, फ़क़ीर व मोहताज की ख़ुद तो क्या सेवा करता दूसरों को भी उधर प्रेरित नहीं किया तो अब नजात कहाँ?

बस आज यहाँ न उसका कोई दोस्त है (35) और न उसके लिए कोई खाना सिवाय ज़ख़्मों के धोवन के (36) उसको अपराधी ही खाएंगे (37) अब मैं उसकी भी क़सम खाता हूँ जो तुम्हारी नज़रों के सामने है (38) और उसकी भी जिसको तुम देखते नहीं (39) कि बेशक यह सम्मानित रसूल की बात है (40) यह किसी कवि का काव्य नहीं है, बहुत ही कम तुम मानते हो (41) और न यह किसी ज्योतिषी की वाणी है, कम ही तुम ध्यान देते हो (42) यह तमाम जहानों के पालनहार की ओर से उतारा जा रहा है[1] (43) और अगर (मान लीजिए) वे हमारी ओर इधर–उधर की बातें जोड़ते (44) तो हम उसको दाहिने हाथ से पकड़ते (45) फिर उनके जीवन की नस काट कर रख देते (46) फिर तुममें कोई भी उनसे रोकने वाला न होता[2] (47) और बेशक यह परहेज़गारों के लिए नसीहत है (48) और हम ख़ूब जानते हैं कि तुममें झुठलाने वाले भी हैं (49) और बेशक यह काफ़िरों के लिए सर्वथा पछतावा है[3] (50) और बेशक यह निश्चित रूप से सच है (51) तो आप अपने पालनहार के नाम की तस्बीह करते रहिये जो बड़ी महानता वाला है (52)

सूरह मआरिज

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

एक माँगने वाले ने वह अज़ाब माँगा जो आएगा ही[4] (1) इनकार करने वालों से, कोई उसको रोक नहीं सकता (2) उस अल्लाह की ओर से जो चढ़ने वाले रास्तों का मालिक है (3) फ़रिश्ते और रूह (रूहुल कुदुस) उसकी ओर उस दिन चढेंगे जिसकी अवधि पच्चास हज़ार साल की है[5] (4)

(1) यानी जो कुछ जन्नत और दोज़ख़ का बयान हुआ, यह कोई शायरी नहीं न ज्योतिषियों की अटकलें हैं, दुनिया में कितनी चीज़ें हैं जो आदमी अपनी आँखों से देखता है और कितनी चीज़ें ऐसी हैं जो नज़र नहीं आतीं मगर उनको मानता है, यह दुनिया, उसके पहाड़, समुद्र, नदियाँ सब आदमी देख रहा है मगर दुनिया की गर्दिश आँखों से यूँ नज़र नहीं आती मगर आधुनिक उपकरणों से यह चीज़ सिद्ध हो चुकी है इसलिए उसको मानता है, बस जो सच्चाइयाँ पैग़म्बरों ने बताईं और पवित्र कुरआन ने उनका उल्लेख किया उनको आदमी क्यों नहीं मानता जबकि वह अल्लाह का कलाम है और एक बुज़ुर्ग फ़रिश्ते के द्वारा जो आँखों से नज़र नहीं आता एक महान पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर उतारा गया जिनका जीवन और गुण लोगों के सामने था (2) पैग़म्बर का यह काम नहीं कि वह कोई बात अपनी ओर से गढ़ कर कहे, मान लीजिए अगर ऐसा कोई करता तो उसका काम तमाम कर दिया जाता (3) जो झुठलाएंगे आज नहीं तो कल वे पछताएंगे कि काश हमने उसको मान लिया होता, मगर उस समय का पछतावा काम न आएगा (4) हदीसों से मालूम होता है कि वह व्यक्ति नज़्र पुत्र हारिस था जिसने मज़ाक़ उड़ाते हुए अज़ाब की माँग की थी (5) यह फ़रिश्तों के मल–ए–आला में आने–जाने के विशेष रास्ते हैं, अधिकांश तफ़सीर लिखने वालों ने इसका मतलब क़यामत लिखा है, यहाँ उसकी अवधि को पच्चास साल कहा, सही हदीस में भी पच्चास हज़ार साल की स्पष्टीकरण है, हाँ! जो जितनी ज़्यादा सख़्ती में होगा उसको यह अवधि उतनी ही लम्बी मालूम होगी, अतः हदीस में सच्चे ईमान वालों के लिए आता है कि यह अवधि उनके लिए एक नमाज़ से भी हल्की होगी।

فاصبر صبرا جميلا ٥ انهم يرونه بعيدا ٦ ونراه
قريبا ٧ يوم تكون السماء كالمهل ٨ وتكون الجبال
كالعهن ٩ ولا يسئل حميم حميما ١٠ يبصرونهم يود
المجرم لو يفتدي من عذاب يومئذ ببنيه ١١ و
صاحبته واخيه ١٢ وفصيلته التي تؤويه ١٣ ومن في
الارض جميعا ثم ينجيه ١٤ كلا انها لظى ١٥ نزاعة
للشوى ١٦ تدعوا من ادبر وتولى ١٧ وجمع فاوعى ١٨ ان
الانسان خلق هلوعا ١٩ اذا مسه الشر جزوعا ٢٠ واذا مسه
الخير منوعا ٢١ الا المصلين ٢٢ الذين هم على صلاتهم
دائمون ٢٣ والذين في اموالهم حق معلوم ٢٤
للسائل والمحروم ٢٥ والذين يصدقون بيوم الدين ٢٦
والذين هم من عذاب ربهم مشفقون ٢٧ ان عذاب
ربهم غير مامون ٢٨ والذين هم لفروجهم حفظون ٢٩
الا على ازواجهم او ما ملكت ايمانهم فانهم غير
ملومين ٣٠ فمن ابتغى وراء ذلك فاولئك هم العدون ٣١

منزل ٧

तो आप अच्छी तरह सब्र कीजिये (5) वे उसको दूर समझते हैं (6) और हम उसको क़रीब ही देखते हैं (7) जिस दिन आसमान तेल की तलछट की तरह होगा (8) और पहाड़ रूई के रंगीन गालों की तरह होंगे (9) और कोई घनिष्ट मित्र अपने घनिष्ट मित्र को न पूछेगा (10) जबकि वे एक–दूसरे को दिखाई पड़ रहे होंगे[1], पापी चाहेगा कि वह उस दिन के अज़ाब से बचने के लिए अपने बेटों को फ़िदया (मुक्ति–प्रतिदान) में दे दे (11) और अपनी पत्नी और भाई को (दे दे) (12) और अपने परिवार को (दे दे) जिनमें उसका ठिकाना था (13) और धरती में जो भी है सब (दे दे) फिर अपने आपको बचा ले (14) हरगिज़ नहीं वह एक भड़कती हुई आग है (15) जो खाल खींचने वाली है[2] (16) हर उस व्यक्ति को पुकारती है जिसने पीठ फेरी और मुँह मोड़ा (17) और (माल) इकट्ठा किया और उसको सहेज–सहेज कर रखा (18) बेशक इंसान को मन का कच्चा बनाया गया है (19) जब दुःख पहुँचे तो वावेला मचाये[3] (20) और जब माल मिले तो कंजूस बन जाए (21) सिवाय उन नमाज़ियों के (22) जो नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं (23) और जिनके मालों में निर्धारित अधिकार होता है (24) माँगने वाले के लिए भी और ग़रीब के लिए भी (25) और जो बदले के दिन को सच मानते हैं (26) और जो अपने पालनहार के अज़ाब (यातना) से काँपते रहते हैं (27) बेशक उनके पालनहार का अज़ाब संतुष्ट रहने की चीज़ नहीं है (28) और जो अपने गुप्तांगों को सुरक्षित रखते हैं (29) सिवाय अपनी पत्नियों के या जिन (लौंडियों) के वे मालिक हुए हों तो उन पर कोई मलामत नहीं (30) फिर इससे आगे जो इच्छा करेगा तो वही लोग सीमा लाँघने वाले हैं[4] (31)

---

(1) दोस्त और सम्बन्धी आमने–सामने भी होंगे तो भी काम न आएंगे, हर एक को अपनी पड़ी होगी, यहाँ तक कि आदमी चाहेगा कि अपने बचाव के लिए कोई भी उपाय निकल आए चाहे पत्नी व बच्चों को ही बदले में देना पड़े (2) "शुवा" कलेजे को भी कहते हैं और सिर के भीतर की खाल को भी और शरीर के अग़ल–बग़ल की खाल को भी (3) साधारण रूप से मनुष्य में सब्र और बर्दाश्त की शक्ति कम होती है हाँ अगर अल्लाह पर विश्वास पैदा हो जाए तो बात अलग है (4) यौन इच्छा अगर पत्नी या लौंडी के अलावा किसी और से पूरी करता है तो वह सीमा से आगे बढ़ जाने वाला अपराधी है।

मंज़िल 7

और जो अपनी धरोहरों और क़रार का लिहाज़ रखने वाले हैं (32) और जो अपनी गवाहियाँ ठीक–ठीक देने वाले हैं (33) और जो अपनी नमाज़ों की पूरी निगरानी रखते हैं (34) यही लोग हैं जो जन्नतों में इज़्ज़त के साथ होंगे[1] (35) उन काफ़िरों को क्या हो गया कि वे आपकी ओर दौड़े चले आ रहे हैं (36) दाएं और बाएं जुट के जुट (37) क्या उनमें हर व्यक्ति को यह लालच है कि वह नेमतों की जन्नत में दाख़िल कर दिया जाए[2] (38) हरगिज़ नहीं! हमने उनको जिस चीज़ से बनाया वे उसको जानते हैं[3] (39) अब मैं पूरबों और पश्चिमों के पालनहार की क़सम खाता हूँ कि हम इस पर पूरा सामर्थ्य रखते हैं (40) कि उनकी जगह उनसे बेहतर लोग ले आएं और हम पीछे रह जाने वाले नहीं हैं[4] (41) तो आप उन्हें जाने दीजिए बातें बनाते रहें और खेलकूद में लगे रहें यहाँ तक कि उस दिन का उनको सामना करना पड़े जिसका उनसे वादा किया जा रहा है (42) जिस दिन वे अपनी क़ब्रों से इस तेज़ी से निकलेंगे कि जैसे वे किसी निशाने पर दौड़े जा रहे हों (43) उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी अपमान उन पर छा रहा होगा, यही वह दिन है जिसका उनसे वादा किया जाता था (44)

सूरह नूह

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

हमने नूह को उनकी क़ौम की ओर भेजा कि अपनी क़ौम को डराओ इससे पहले कि उन पर दुखद अज़ाब आ पड़े (1) उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम्हें खुलकर सावधान करने वाला हूँ (2)

(1) यह आठ गुण हैं जिनमें आरम्भ भी नमाज़ से हुआ और ख़त्म भी नमाज़ पर हुआ, इससे नमाज़ का महत्व मालूम होता है। (2) जब हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कुरआन पढ़ते तो उसको सुनने के लिए जुट–जुट कर काफ़िर इकटठा होते मगर हठधर्मी की अति यह होती कि वे इसके बावजूद कहते कि अगर यह सज्जन जन्नत में जाएंगे तो हम इनसे पहले जाएंगे (3) यानी अपवित्र बूँद से बने हैं यह जन्नत के लायक़ कब हैं? हाँ! अगर ईमान के कारण पाक हो जाएं तो निश्चित रूप से उसके हक़दार हो जाएंगे (4) यानी हम इस्लाम के लिए उनके मोहताज नहीं, जब चाहें हम दूसरी क़ौम को खड़ा कर दें और यही हुआ कि मक्का के मुश्रिकों की जगह मदीना के अंसार खड़े हुए और मुश्रिकों को अपमानित होना पड़ा, पूरबों और पश्चिमों की क़सम शायद इसलिए खाई कि अल्लाह हर दिन पूरब और पश्चिम को बदलता रहता है तो उसके लिए तुमको बदल कर दूसरी क़ौम को ले आना क्या मुश्किल है, पूरब और पश्चिम को बहुवचन में इसलिए प्रयोग किया जा रहा है कि रोज़ाना सूरज के उदय और अस्त होने में कुछ न कुछ अन्तर होता रहता है।

أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَأَطِيْعُوْنِ ۝٣ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ اللّٰهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٤ قَالَ رَبِّ إِنِّيْ دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّنَهَارًا ۝٥ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَاءِيْ إِلَّا فِرَارًا ۝٦ وَإِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْا أَصَابِعَهُمْ فِيْ آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝٧ ثُمَّ إِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝٨ ثُمَّ إِنِّيْ أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۝٩ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۝١٠ يُّرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۝١١ وَّيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ أَنْهَارًا ۝١٢ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۝١٣ وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۝١٤ أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۝١٥ وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ۝١٦ وَاللّٰهُ أَنْبَتَكُمْ مِّنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ۝١٧ ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ۝١٨

منزل۷

कि सिर्फ़ अल्लाह की बन्दगी करो और उसी से डरो और मेरी बात मानो (3) वह तुम्हारे पापों को माफ़ कर देगा और तुम्हें एक निर्धारित अवधि तक के लिए मोहलत दे देगा, बेशक अल्लाह का निर्धारित समय जब आ पहुँचे तो उसको टाला नहीं जा सकता, काश कि तुम समझ[1] लो (4) (फिर जब क़ौम ने बात न मानी तो) उन्होंने कहा ऐ मेरे पालनहार! मैंने अपनी क़ौम को रात–दिन बुलाया (5) तो मेरे बुलाने से वे और भागते ही गए (6) और जब–जब मैंने उनको बुलाया ताकि तू उनको माफ़ कर दे तो उन्होंने अपने कानों में उंगलियाँ दे लीं और अपने कपड़े लपेट लिये और अड़ गये और उन्होंने बड़ी अकड़ दिखाई (7) फिर मैंने उनको साफ़–साफ़ दावत दी (8) फिर मैंने उनको खुलकर भी बुलाया और चुपके–चुपके भी उनको समझाया (9) तो मैंने कहा कि अपने पालनहार से माफ़ी माँगो बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला है (10) वह तुम पर ऊपर से मूसलाधार वर्षा करेगा (11) और तुम्हारे माल व बेटों में बढ़ोतरी करेगा और तुम्हारे लिए बाग़ तैयार कर देगा और तुम्हारे लिए नहरें जारी कर देगा (12) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम्हें अल्लाह की महानता का कुछ ख़्याल नहीं (13) हालांकि उसने तुमको चरणबद्ध पैदा किया[2] (14) भला तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने किस तरह सात आसमान परत दर परत बनाए (15) और उनमें चाँद को रौशनी बनाया और सूरज को चमकता हुआ चिराग़ बनाया (16) और अल्लाह ने ज़मीन से तुम्हें अच्छे ढंग से विकसित किया (17) फिर उसी में वह तुम्हें लौटाएगा और एक विशेष तरीक़े से निकालेगा (18)

(1) यानी ईमान लाओगे तो कुफ़्र व शरारत पर जो अज़ाब आने वाला है वह न आएगा बल्कि ढील दी जाएगी कि प्राकृतिक आयु के अनुसार जीवित रहो और अगर ईमान न लाओगे तो उस स्थिति में अज़ाब का जो वादा है अगर वह सिर पर आ खड़ा हुआ तो किसी के टाले न टलेगा, एक मिनट भी ढील न दी जाएगी, हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) साढ़े नौ सौ वर्ष दावत का काम करते रहे, उन्होंने समझाने का कोई तरीक़ा नहीं छोड़ा, भीड़ में भी समझाया और अकेले में भी बात की लेकिन क़ौम ने सुनना ही न चाहा, कानों में उंगलियाँ दे लीं, अपने कपड़े मुँह पर डाल लिए और घृणा के साथ निकल गये तो हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) ने श्राप (बद्दुआ) दिया कि जिनकी हिदायत नहीं लिखी है उनको ऐसे अज़ाब में ग्रस्त कर जिसमें फिर उनको ढील न मिले और उनमें एक व्यक्ति भी बच न सके कि फिर वह कुफ़्र व शिर्क का साधन बन जाए (2) पवित्र क़ुरआन में कई जगह इसको विस्तार से बताया गया है, नुत्फ़ा, अलक़ा, मुज़्ग़ा, एज़ाम यहाँ तक कि एक सुन्दर इंसान फिर धरती पर उसका पालन–पोषण फिर उसी मिट्टी में दफ़्न फिर एक दिन वहीं से उसको खड़ा किया जाएगा और उसका हिसाब–किताब होगा।

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया (19) ताकि तुम उसमें चौड़े रास्तों पर चलो (20) नूह ने कहा कि ऐ मेरे पालनहार! उन्होंने मेरी तो बात न मानी और उसके पीछे हो लिए जिसको उसके माल और संतान ने सिवाय घाटे के और कुछ न दिया[1] (21) और उन्होंने भारी–भारी चालें चलीं (22) और बोले कि अपने उपास्यों (माबूदों) को हरगिज़ न छोड़ना, हरगिज़–हरगिज़ वूद को न छोड़ना और न सुआ को और न यगूस और यऊक़ और नस्र को[2] (23) और उन्होंने बहुत गुमराही फैलाई और तू ज़ालिमों की गुमराही को और बढ़ाता ही जा (24) (बस वे) अपने पापों के कारण डुबो दिये गये फिर दोज़ख़ में दाख़िल किये जाएंगे बस उन्हें अल्लाह को छोड़कर कोई मददगार न मिल सका (25) और नूह ने कहा मेरे पालनहार! ज़मीन में काफ़िरों में से किसी को भी चलता–फिरता मत छोड़[3] (26) अगर तूने उनको छोड़ा तो वे तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और उनकी संतान भी जो होगी फ़ाजिर (पापी) और काफ़िर ही पैदा होगी (27) ऐ मेरे पालनहार! मुझे माफ़ कर दे और मेरे माँ–बाप को और जो भी मेरे घर में ईमान लाकर दाख़िल हुआ[4], और सब ईमान वाले पुरुषों और महिलाओं को और ज़ालिमों को तबाह ही करता चला जा (28)

والله جعل لكم الأرض بساطا ﴿١٩﴾ لتسلكوا منها سبلا فجاجا ﴿٢٠﴾ قال نوح رب إنهم عصوني واتبعوا من لم يزده ماله وولده إلا خسارا ﴿٢١﴾ ومكروا مكرا كبارا ﴿٢٢﴾ وقالوا لا تذرن آلهتكم ولا تذرن ودا ولا سواعا ولا يغوث ويعوق ونسرا ﴿٢٣﴾ وقد أضلوا كثيرا ولا تزد الظالمين إلا ضلالا ﴿٢٤﴾ مما خطيئاتهم أغرقوا فأدخلوا نارا فلم يجدوا لهم من دون الله أنصارا ﴿٢٥﴾ وقال نوح رب لا تذر على الأرض من الكافرين ديارا ﴿٢٦﴾ إنك إن تذرهم يضلوا عبادك ولا يلدوا إلا فاجرا كفارا ﴿٢٧﴾ رب اغفر لي ولوالدي ولمن دخل بيتي مؤمنا وللمؤمنين والمؤمنات ولا تزد الظالمين إلا تبارا ﴿٢٨﴾

سورة الجن

بسم الله الرحمن الرحيم

قل أوحي إلي أنه استمع نفر من الجن فقالوا إنا سمعنا قرآنا عجبا ﴿١﴾

منزل ٧

सूरह जिन्न

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

बता दीजिए कि मुझ पर यह वह्य आई है कि जिन्नों में से कुछ लोगों ने ध्यानपूर्वक (कुरआन) सुना फिर वे कहने लगे हमने आश्चर्यजनक कुरआन सुना है[5] (1)

(1) यानी ऐसे धनवानों के चक्कर में पड़ गये जिनको उनके धन ने तबाह किया और कुछ भी उनके हाथ न आया, और उन्होंने बड़ी चालें चलीं और अपने माबूदों (उपास्यों) पर डटे रहने की एक–दूसरे को ताकीद करते रहे (2) यह सब उन बुतों (मूर्तियों) के नाम हैं जिनको हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) की क़ौम पूजा करती थी (3) हज़रत (अलैहिस्सलाम) को वह्य द्वारा मालूम हो चुका था कि अब कोई ईमान नहीं लाएगा इसका उल्लेख कुरआन में दूसरी जगह मौजूद है "जो ईमान ला चुके ला चुके अब हरगिज़ कोई ईमान न लाएगा" उसके बाद हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) ने यह श्राप (बद्दुआ) दिया (4) क्योंकि पत्नी और एक बेटा घर में होने के बावजूद ईमान से महरूम (वंचित) रहे इसलिए ईमान की शर्त लगाई। (5) आप (सल–लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सारे संसारों का पैग़म्बर बनाकर भेजा गया, आपने जिन्नों को भी इस्लाम की दावत दी और इसका सिलसिला इस प्रकार शुरु हुआ कि आपको पैग़म्बर बनाए जाने से पहले जिन्नों को आकाश के निकट तक जाने की अनुमति थी लेकिन आपको पैग़म्बर बनाये जाने के बाद उनको रोक दिया गया तो उनका विचार यह हुआ कि निश्चित रूप से धरती में कोई नई बात घटित हुई है जिसकी तलाश के लिए वे निकले थे, उधर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तायफ़ से वापस आ रहे थे कि नख़्लह नामक स्थान पर आप ठहरे और वहाँ फ़ज्र के समय आप तिलावत कर रहे थे कि जिन्नों का उधर से गुज़र हुआ, आवाज़ सुनकर ठहर गये फिर उनको आपकी पैग़म्बरी का विश्वास हो गया और वे सब मुसलमान हो गये और अपनी क़ौम में जाकर उन्होंने तबलीग़ की जिसके नतीजे में कई बार जिन्नों के मण्डल आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास आकर मुसलमान हुए, बुख़ारी शरीफ़ में यह वाक़्या लिखा है, जिन्नों के कुरआन पाक सुन पाने और फिर आपस में इस बारे में बातचीत करने का उल्लेख वह्य द्वारा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से किया जा रहा है और आदेश दिया जा रहा है कि आप यह बातचीत मक्का के मुश्रिकों को सुना दें कि जिस तरह जिन्न आकांक्षा कर मुसलमान हुए तुम्हें भी इस सिलसिले में विचार करना चाहिए।

जो भलाई की ओर ले जाता है बस उस पर हम ईमान ले आए हैं और अब हम हरगिज़ अपने पालनहार के साथ किसी को साझी नहीं मानेंगे (2) और यह कि बेशक हमारे पालनहार की शान बहुत बुलन्द है उसने न कोई पत्नी रखी है और न कोई बेटा (3) और यह कि हमारे मूर्ख लोग अल्लाह की शान से हटी हुई बातें किया करते हैं (4) और यह कि हम यह समझा करते थे कि इंसान और जिन्नात अल्लाह पर झूठ नहीं कहते[1] (5) और यह कि इंसानों में से कुछ लोग जिन्नों में से कुछ लोगों की शरण लिया करते थे तो उन्होंने उनको और ज़्यादा सिर चढ़ा दिया था[2] (6) और यह कि वे यही समझते रहे जैसे तुम समझते थे कि अल्लाह किसी को दोबारा जीवित नहीं करेगा[3] (7) और यह कि हमने आकाश को टटोल कर देखा तो उसको ज़बरदस्त पहरेदारों और आग के गोलों से भरा पाया (8) और यह कि वहाँ सुनगुन लेने के लिए हम कुछ जगहों पर बैठा करते थे बस अब जो कान लगाता है तो आग का गोला घात में लगा पाता है (9) और यह कि हम नहीं जानते थे कि ज़मीन वालों के लिए किसी बुराई का इरादा किया गया है या उनके पालनहार ने उनके लिए भलाई का इरादा किया है[4] (10) और यह कि बेशक हममें अच्छे लोग भी थे और हम में दूसरे भी थे, हम विभिन्न रास्तों पर थे (11) और यह कि हम समझ गये कि हम ज़मीन में अल्लाह को आजिज़ (विवश) नहीं कर सकते और न भाग कर उसको बेबस कर सकते हैं (12) और यह कि जब हमने हिदायत (संमार्ग की बात) सुनी तो हम ईमान ले आये, बस जो भी अपने पालनहार पर ईमान लाएगा तो उसे न घाटे का डर होगा और न किसी अत्याचार का (13) और यह कि बेशक हममें मुसलमान भी हैं और हममें ज़ालिम भी हैं बस जो मुसलमान हो गये तो उन्होंने सही रास्ता ढूँढ निकाला (14)

(1) इंसानों और जिन्नों की भारी संख्या शिर्क में लिप्त थी, कोई खुदा का बेटा कहता था कोई खुदा की पत्नी और कोई बेटियाँ, यह सब अल्लाह की शान से हट कर बातें करते थे और हम भ्रमित थे, अब वास्तविकता सामने आ गई (2) जाहिलियत युग में लोग जंगलों में यात्रा करते तो जिन्नों से पनाह चाहते कि वे जंगल की तकलीफ़ों से उन्हें बचाएं, इससे भी जिन्नों में और अधिक उदण्डता पैदा हो गई (3) यानी जिस तरह तुम आख़िरत को नहीं मानते थे इसी प्रकार इंसानों का भी हाल था (4) इसी परिवर्तन का कारण तलाश करने निकले थे कि सत्य को पा लिया, इसका उल्लेख ऊपर गुज़र चुका।

وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝١٥ وَأَنْ لَوِ اسْتَقَامُوا
عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَاهُمْ مَاءً غَدَقًا ۝١٦ لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ
وَمَنْ يُعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝١٧
وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ۝١٨ وَأَنَّهُ
لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝١٩
قُلْ إِنَّمَا أَدْعُو رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ۝٢٠ قُلْ إِنِّي لَا
أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۝٢١ قُلْ إِنِّي لَنْ يُجِيرَنِي مِنَ
اللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝٢٢ إِلَّا بَلَاغًا
مِنَ اللَّهِ وَرِسَالَاتِهِ ۚ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ
لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۝٢٣ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا
يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ۝٢٤
قُلْ إِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ مَا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ
لَهُ رَبِّي أَمَدًا ۝٢٥ عَالِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ
أَحَدًا ۝٢٦ إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِنْ رَسُولٍ فَإِنَّهُ
يَسْلُكُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصَدًا ۝٢٧

ع ١

منزل ٧

और जो ज़ालिम हैं वे दोज़ख़ का कुंदा बनेंगे (15) और (यह आदेश भी आया है) कि अगर वे रास्ते पर सीधे हो जाएं तो हम उनको मन भर कर पिलाएंगे[1] (16) ताकि हम उनको उसमें आज़मा कर देखें, और जो भी अपने पालनहार की याद से मुँह मोड़ेगा तो वह उसको चढ़ते हुए अज़ाब में डाल देगा (17) और यह कि सज्दे सब अल्लाह ही के लिए हैं तो अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो (18) और यह कि जब अल्लाह का बन्दा खड़ा होकर उसको पुकारता है तो वे उस पर ठठ के ठठ लगा लेते हैं[2] (19) कह दीजिए कि मैं केवल अपने पालनहार को पुकारता हूँ और उसके साथ मैं किसी को साझी नहीं ठहराता (20) कह दीजिए कि मैं तुम्हारे लिए ज़रा भी घाटे का मालिक नहीं हूँ और न ज़रा भी भलाई का (21) कह दीजिए कि मुझे अल्लाह से कोई भी बचा नहीं सकता है और न उसके सिवाय मैं कहीं भी पनाह की जगह पाता हूँ (22) मगर (यह) अल्लाह की ओर से पहुँचाना है और उसके संदेश हैं, और जो भी अल्लाह और उसके पैग़म्बर की नाफ़रमानी (अवज्ञा) करेगा तो निश्चित रूप से उसके लिए दोज़ख़ की आग है, उसी में वह हमेशा हमेश रहेगा (23) यहाँ तक कि जब वे उन चीज़ों को देख लेंगे जिनसे उनको डराया जा रहा है तो उनको पता चल जाएगा कि किसका मददगार सबसे कमज़ोर और किसकी संख्या सबसे कम है[3] (24) कह दीजिए कि मैं नहीं जानता कि जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है वह क़रीब ही है या मेरा पालनहार उसके लिए कोई लम्बी अवधि निर्धारित करता है (25) वह ढके–छिपे का जानने वाला है, तो वह किसी को भी अपने भेद नहीं बताता (26) सिवाय किसी पैग़म्बर के जिसको उसने पसन्द कर लिया हो तो वह उनके सामने से और उनके पीछे से रक्षक लगा देता है[4] (27)

(1) यह वह ज़माना था कि मक्के के मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) सूखे से ग्रस्त थे, उनसे कहा जा रहा है कि अगर तुम भी सच्ची बात को तलाश कर लो ओर सच्चाई पर ईमान ले आओ तो अल्लाह तुमको ख़ूब पिलाएगा (2) इसका मतलब जिन्नात भी हो सकते हैं जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तिलावत के समय इकटठा हो जाया करते थे और इंसान भी हो सकते हैं अतः मक्का के मुश्रिकों का हाल भी यही होता था, बस कहा जा रहा है कि जिसको तुम इतना अधिक पसन्द करते हो उसमें तौहीद की दावत के सिवा और क्या है, फिर आगे उसी तौहीद को खोलकर बयान किया जा रहा है (3) यानी क़यामत का दिन (4) क़यामत सबसे बड़ा रहस्य है जो अल्लाह ने किसी को नहीं बताया और उसके राज़ की बहुत सी बातें वह हैं जो वह अपने विशेष पैग़म्बरों को बताता है और फ़रिश्तों को उनका रक्षक बना देता है ताकि कोई शैतान उसमें गड़बड़ी न कर सके।

لِيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ
وَاَحْصٰى كُلَّ شَىْءٍ عَدَدًا ﴿۲۸﴾

سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ وَهِىَ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿۱﴾ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۲﴾ نِّصْفَهٗۤ اَوِ انْقُصْ
مِنْهُ قَلِيْلًا ﴿۳﴾ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ﴿۴﴾ اِنَّا
سَنُلْقِىْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ﴿۵﴾ اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِىَ
اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ﴿۶﴾ اِنَّ لَكَ فِى النَّهَارِ سَبْحًا
طَوِيْلًا ﴿۷﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ﴿۸﴾
رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ﴿۹﴾
وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ﴿۱۰﴾ وَ
ذَرْنِىْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِى النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ﴿۱۱﴾ اِنَّ
لَدَيْنَاۤ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ﴿۱۲﴾ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۳﴾ يَوْمَ
تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ﴿۱۴﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَاۤ
اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۥ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ﴿۱۵﴾

منزل۷

ताकि वह जान ले कि उन्होंने अपने पालनहार के संदेश पहुँचा दिये और वह उनकी सब चीज़ों को घेरे हुए है और हर चीज़ उसने गिन–गिन कर रखी है (28)

सूरह मुज़्ज़म्मिल

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

ऐ चादर ओढ़ने वाले![1] (1) थोड़ा भाग छोड़ कर बाक़ी रात खड़े रहा कीजिए (2) उसका आधा भाग या उससे भी कुछ कम कर लिया कीजिए (3) या उससे कुछ बढ़ा लीजिये और क़ुरआन को ठहर–ठहर कर पढ़ा कीजिए (4) हम जल्द ही आप पर भारी फ़रमान उतारने वाले हैं[2] (5) निश्चित रूप से रात का उठना है ही ऐसा जो नफ़्स (मन) को कुचल कर रख देता है और बात भी बिल्कुल ठीक–ठीक निकलती है[3] (6) बेशक आपके लिए दिन में लम्बी व्यस्तता है (7) और अपने पालनहार के नाम का ज़िक्र (जाप) किये जाइये और उसी के होकर रह जाइए[4] (8) वह पूरब–पश्चिम का पालनहार उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं तो उसी को अपना काम बनाने वाला बनाए रहिये (9) और उनकी बातों पर सब्र किये जाइये और भले तौर से उनसे अलगाव बनाइये[5] (10) और झुठलाने वालों को मुझ पर छोड़ दीजिए जो मज़े कर रहे हैं और उनको थोड़ी–थोड़ी ढील दिये जाइये (11) बेशक हमारे पास भारी–भारी बेड़ियाँ हैं और दोज़ख़ है (12) और गले में अटकने वाला खाना है और दुखद अज़ाब है (13) जिस दिन ज़मीन और पहाड़ काँप कर रह जाएं और पहाड़ भरभराती रेत के ढेर बन जाएंगे (14) बेशक हमने तुम्हारी ओर एक ऐसे रसूल को भेजा जो तुम पर गवाह होंगे, जैसे फ़िरऔन की ओर हमने रसूल भेजा था[6] (15)

---

(1) जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर पहली वह्य उतरी तो आप पर उसका बहुत असर पड़ा, आप घर तशरीफ़ लाए और हज़रत ख़दीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से फ़रमाया कि "मुझे उढ़ा दो, मुझे उढ़ा दो" पहली वह्य के बाद यह आयतें उतरीं इसमें आपको इसी उपनाम से सम्बोधित किया जा रहा है कि ऐ चादर के ओढ़ने वाले! (2) यह आयतें पहली वह्य के कुछ समय बाद उतरी थीं, उसके बाद लगातार आयतें उतरती थीं, उसकी ओर इशारा है और क्योंकि उसके उतरते समय बहुत ही बोझ मालूम होता था इसलिए इसको भारी "कलाम" कहा गया है, आप उस समय अगर किसी सवारी पर होते तो वह बर्दाश्त नहीं कर पाती थी, इसके अलावा इसको दूसरों तक पहुँचाना, इसका प्रचार–प्रसार और इसके अधिकारों को अदा करना और इसके रास्ते की तकलीफ़ों को बर्दाश्त करना भी बड़ा कठिन और भारी काम था (3) एक ओर यह बहुत बड़ी तपस्या (रियाज़त) है जिससे मन (नफ़्स) को कुचला जाता है दूसरी ओर यह ख़ास अल्लाह की रहमत (कृपा) के उतरने का समय होता है और ज़िक्र व दुआ और तिलावत में ज़बान व दिल दोनों समान रूप से शामिल होते हैं, इसलिए इसके नतीजे में एक विशेष प्रकार का असर पैदा हो जाता है जो अगले दिन दावत की भरपूर व्यस्तता में सहायक बनता है, अगली आयत में इसी की ओर इशारा है (4) यानी उनमें ज़ाहिरी व्यस्तताओं के साथ दिल अल्लाह ही की ओर लगा रहे (5) यानी सत्य को झुठलाने वालों की तकलीफ़ पर सब्र किये जाइये और उनको मुझ पर छोड़ दीजिए (6) इसमें मक्का के मुश्रिकों को चेताया गया है कि फ़िरऔन जैसा शक्तिमान न बच सका तो अगर तुमने इनकार किया तो अपना हश्र ख़ुद ही समझ लो।

فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ﴿١٦﴾
فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ
شِيْبًا ﴿١٧﴾ السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ۚ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿١٨﴾ اِنَّ
هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿١٩﴾
اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ وَ
نِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ۗ وَاللّٰهُ
يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۗ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ
عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ۗ عَلِمَ اَنْ
سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى الْاَرْضِ
يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ۗ وَمَا تُقَدِّمُوْا
لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا
وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ۗ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾

منزل۷

फ़िरऔन ने रसूल का कहा न माना तो हमने उसकी सख़्त पकड़ की (16) बस अगर तुमने भी इन्कार किया तो उस दिन से किस तरह बच पाओगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा (17) आसमान उससे फट पड़ेगा, उसका वादा होकर ही रहता है (18) बेशक यह एक नसीहत है तो जो चाहे अपने पालनहार की ओर जाने वाला रास्ता अपना ले (19) बेशक आपका पालनहार जानता है कि आप और आपके साथ जो लोग हैं उनमें से कुछ लोग दो तिहाई रात के क़रीब खड़े हो जाते हैं और कभी आधी रात को और कभी एक तिहाई रात को और अल्लाह ही रात और दिन की गिनती रखता है, वह जानता है कि तुम उसको पूरा न कर सकोगे तो उसने तुम्हें माफ़ किया बस अब जो आसानी से हो सके कुरआन पढ़ लिया करो[1], वह जानता है कि आगे तुममें बीमार भी होंगे और दूसरे वे लोग भी होंगे जो ज़मीन में अल्लाह की कृपा (फ़ज़्ल) तलाश करते फिरेंगे और कुछ दूसरे वे जो अल्लाह के रास्ते में युद्ध करेंगे, तो जो उसमें से आसानी से हो वह पढ़ लिया करो और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात देते रहो और अल्लाह को क़र्ज़ देते जाओ अच्छा क़र्ज़[2], और जो भी तुम अपने लिए भलाई भेज रखोगे उसकी अल्लाह के पास और ज़्यादा बेहतर और बदले में माफ़ी मांगते रहो, बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बहुत ही मेहरबान है (20)

(1) यानी अल्लाह ने तुम्हारी आज्ञाकारिता देख ली कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने और आपके साथियों ने कैसी तकलीफ़ें बर्दाश्त कीं, पाँव में सूजन आ गई, वे फट गए मगर पूरी रात उन्होंने खड़े होकर गुज़ार दी, अब अल्लाह तआला आसानियाँ पैदा करता है कि न अब इतने ज़्यादा की ज़रूरत रही और न आगे इसको बर्दाश्त कर सकेंगे, जो हो सके रात में पढ़ लो, इसकी फ़ज़ीलत से किसी को इनकार नहीं, किन्तु वह फ़र्ज़ (अनिवार्य) नहीं, हाँ! दिन की पाँच नमाज़ों की पाबन्दी करो, ज़कात देते रहो और भलाइयाँ करते रहो, सबसे शुरु के सहाबा से यह कठोर परिश्रम इसलिए कराया गया कि वे आगे चलकर उम्मत के मार्गदर्शक और गुरु बन बनने वाले थे, आवश्यकता थी कि वे इस प्रकार मंझ जाएं और रूहानियत (अध्यामिकता) में इस प्रकार रंग जाएं कि सारा संसार उनके आईने में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का कमाल देख सके और यह पवित्र व महान आत्माएं सारी उम्मत के सुधार का बोझ अपने कांधों पर उठा सकें (2) पूरी निष्ठा (इख़्लास) के साथ अल्लाह की राह में उसके आदेशानुसार ख़र्च करना ही उसको अच्छी तरह क़र्ज़ देना है।

मंज़िल 7

सूरह मुद्दस्सिर

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

ऐ चादर लपेटने वाले[1] (1) उठ जाइये फिर सावधान कीजिए (2) और अपने पालनहार ही की बड़ाई बयान कीजिए (3) और अपने कपड़ों को पाक रखिए (4) और हर गंदगी से दूर रहिये (5) और इसलिये एहसान न कीजिए कि ज़्यादा मिले (6) और अपने पालनहार की राह देखते रहिए[2] (7) फिर जब सूर फूँका जाएगा (8) बस यही दिन कठोर(तम) दिन है (9) काफ़िरों पर आसान नहीं है (10) मुझ पर छोड़िये जिसको मैंने अकेले पैदा किया (11) और उसको मैंने इतना माल दिया जो दूर तक फैला हुआ है (12) और ऐसे बेटे दिये जो हर समय उपस्थित हैं (13) और उसके लिए रास्ते आसान कर दिये (14) फिर उसे लालच है कि मैं उसे और दूँ (15) हरगिज़ नहीं वह तो हमारी आयतों का दुश्मन हो रहा है (16) मैं उसे सिर तोड़ चढ़ाई चढ़ाऊँगा (17) उसने सोचा और एक बात बनाई (18) बस वह हलाक हो कैसी बात उसने बनाई (19) फिर वह तबाह हो कैसी उसने बात तय की (20) फिर उसने नज़र दौड़ाई (21) फिर त्योरी चढ़ाई और मुँह बिसोरा (22) फिर मुँह मोड़ा और अकड़ गया (23) बस कहने लगा कि यह तो एक जादू है जो चला आया है (24) यह तो इंसान का कलाम है (25) शीघ्र ही उसको दोज़ख़ में पहुँचाऊँगा[3] (26) आप जानते भी हैं दोज़ख़ क्या है (27) न बाक़ी रखेगी न छोड़ेगी (28) शरीर को झुलसा डालेगी (29) उस पर उन्नीस (कामगार) लगे होंगे (30)

(1) यह भी मुज़्ज़म्मिल ही के अर्थ में है, आप (स0) चूँकि पहली वह्य के बाद चादर ओढ़कर बैठ गये थे इसलिए आपको इसी उपमा से प्यार भरे अन्दाज़ से सम्बोधित किया जा रहा है, आगे आप (सल्ल0) को दावत (प्रचार) का आदेश हो रहा है, फिर नमाज़ की तलक़ीन हुई, और चूंकि नमाज़ में जिस्म और कपड़ों की पवित्रता आवश्यक है, इसका आदेश दिया जा रहा है (2) अर्थात किसी को कुछ देकर उसकी ओर से बदले का विचार न रहे और दावत (आवाहन) की रात में जो कठिनाइयाँ आएं उनको बर्दाश्त किया जाए, इसलिए कि यह महान कार्य बिना उच्च साहस और धैर्य तथा स्थिरता के नहीं हो सकता (3) इससे विशेष रूप से वलीद पुत्र मुग़ीरा मुराद लिया गया है जिसके पास बहुत धन था, दस बेटे थे जो उसके पास ही रहते थे और वह हर समय माल बढ़ाने के चक्कर में रहता था, कभी शुक्र उसकी ज़बान पर न आता था, एक बार आप (स0)के पास आया, कुरआन सुनकर प्रभावित हुआ कुरैश के सरदारों के पास पहुँचा तो उन्होंने उसको शर्म दिलाई, बस जाति को खुश करने के लिए कुछ सोचा फिर मुँह बनाया ताकि देखने वाले समझ ले कि उसको कुरआन से प्रेम नहीं अपितु घृणा है और एक बात तय करके कह दी कि यह जादू है हालांकि पहले कह चुका था कि कहाँ जादू और कहाँ यह आला कलाम (श्रेष्ठ वाणी), मगर बात बना गया ताकि सरदारी पर फ़र्क़ न आए।

وَمَا جَعَلْنَآ أَصْحٰبَ النَّارِ إِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ
إِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ
وَيَزْدَادَ الَّذِينَ اٰمَنُوٓا إِيمَانًا ۙ وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُونَ ۙ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ
وَّالْكٰفِرُونَ مَاذَآ أَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۚ كَذٰلِكَ يُضِلُّ
اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِي مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ
رَبِّكَ إِلَّا هُوَ ۚ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾ كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾
وَاللَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ ﴿٣٣﴾ وَالصُّبْحِ إِذَآ أَسْفَرَ ﴿٣٤﴾ إِنَّهَا لَإِحْدَى
الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾ نَذِيرًا لِّلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ أَنْ يَّتَقَدَّمَ
أَوْ يَتَأَخَّرَ ﴿٣٧﴾ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ﴿٣٨﴾ إِلَّآ أَصْحٰبَ
الْيَمِينِ ﴿٣٩﴾ فِي جَنّٰتٍ ۛ يَتَسَآءَلُونَ ﴿٤٠﴾ عَنِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٤١﴾ مَا
سَلَكَكُمْ فِي سَقَرَ ﴿٤٢﴾ قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ﴿٤٣﴾ وَلَمْ
نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِينَ ﴿٤٤﴾ وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَآئِضِينَ ﴿٤٥﴾ وَ
كُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿٤٦﴾ حَتّٰىٓ أَتٰىنَا الْيَقِينُ ﴿٤٧﴾ فَمَا تَنْفَعُهُمْ
شَفَاعَةُ الشّٰفِعِينَ ﴿٤٨﴾ فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِينَ ﴿٤٩﴾

منزل ٧

और हमने दोज़ख़ के यह कारिन्दे कोई और नहीं फ़रिश्ते नियुक्त किये हैं[1] और उनकी संख्या मात्र काफ़िरों की परीक्षा के लिए रखी है ताकि जिनको किताब मिली उनको विश्वास हो जाए और ईमान वालों का ईमान बढ़ जाए और अहले किताब (किताब वालों) और मोमिनों को संदेह न रह जाए[2] और ताकि वे लोग जिनके दिलों में रोग है और जो इनकार करने वाले हैं वे यह कहने लगें अल्लाह यह उदाहरण देकर क्या चाहता है, इसी प्रकार अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट करता है और जिसे चाहता है हिदायत (संमार्ग) से सम्मानित करता है[3] और आपके पालनहार की सेना को सिवाय उसके और कौन जान सकता है और यह तो केवल इन्सानों के लिए एक उपदेश है (31) सावधान! क़सम है चाँद की (32) और रात की जब वह ढलने लगे (33) और सुबह की जब वह रौशन हो (34) बेशक वह बड़ी–बड़ी चीज़ों में से एक है[4] (35) इंसानों को ख़बरदार करने वाली है (36) तुममें से हर उस व्यक्ति के लिए जो आगे बढ़ना चाहता हो या पीछे हट जाना चाहता हो (37) हर व्यक्ति अपने किये में फंसा है[5] (38) सिवाय दाईं ओर वालों के (39) वे जन्नतों में होंगे सब मिलकर पूछेंगे (40) अपराधियों से (41) तुम्हें दोज़ख़ में किस चीज़ ने पहुँचाया (42) वे कहेंगे कि हम नमाज़ी न थे (43) और न हमने ग़रीबों को खाना खिलाया (44) और (बेहूदा बातों में) घुसने वालों के साथ हम भी घुस जाते थे (45) और हम बदले के दिन को झुठलाते थे (46) यहाँ तक कि निश्चित चीज़ (मौत) ने हमको आ दबोचा (47) तो उन लोगों को सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश काम न आएगी (48) बस उन्हें हुआ क्या है कि वे उपदेश से मुँह फेरे हुए हैं (49)

---

(1) उन्नीस की संख्या सुनकर मुश्रिक (बहुदेववादी) मज़ाक़ उड़ाने लगे कि हम हज़ारों हैं उन्नीस हमारा क्या कर लेंगे, एक पहलवान बोला कि सत्तरह के लिए तो मैं अकेला ही काफ़ी हूँ दो से तुम निपट लेना, उस पर यह आयत उतरी कि वे इंसान नहीं फ़रिश्ते हैं जिनकी शक्ति का हाल यह है कि मात्र एक ने लूत (अ0) की पूरी बस्ती पलट दी (2) अहले किताब को पहले से यह संख्या मालूम होगी जैसा कि तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक हदीस में है और इतना तो वे जानते ही थे कि फ़रिश्तों में क्या शक्ति है, अतः इससे उनके दिलों में इस्लाम की सच्चाई का विश्वास हो गया और इनकार करने वाले अपने कुफ़्र और मज़ाक़ उड़ाने में मारे जाएंगे (3) एक ही चीज़ से प्राकृतिक स्वभाव वाला और सही सोच रखने वाला आदमी पा लेता है और दुष्ट प्रवृत्ति वाला जिसको मानना ही नहीं है उसको मज़ाक़ में उड़ा देता है और गुमराही में जा पड़ता है (4) दोज़ख़ जैसी बड़ी मुसीबत का उल्लेख करने से पहले अल्लाह ने पहले चाँद की क़सम खाई वह जिस तरह दिन–प्रतिदिन बढ़ता फिर धीरे–धीरे घटता है और फिर डूब जाता है यही हाल इंसान की शक्ति का है वह बढ़ती है फिर घटना शुरु हो जाती है फिर वह खुद ही मौत के घाट उतर जाता है, उसके बाद रात के ढलने और सुबह की सफ़ेदी प्रकट होने की क़सम खाकर यह संकेत है कि अभी काफ़िरों के सामने ग़फ़लत का अंधेरा छाया हुआ है, शीघ्र ही वह समय आयेगा कि इस्लाम का प्रकाश चमक उठेगा और फिर क़यामत में जो तथ्य छिपे हैं वे भी खुलकर सामने आ जाएंगे। (5) क़यामत इतनी बड़ी चीज़ है कि जो डरे वह आगे बढ़ता है और जो निश्चित हो वह पीछे होता चला जाता है और बुराइयाँ करने वाले अपनी बुराईयों में फंसे हैं, हाँ जिनके नाम–ए–आमाल (कर्म–पत्र) उनकी नेकियों के कारण दाएं हाथ में दिया जाएगा वह निजात पाएंगे, वे जन्नतों में होंगे और दोज़ख़ वालों को सम्बोधित करके सवाल करेंगे जिसका उल्लेख आगे आयतों में आया है।

كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنفِرَةٌ ﴿٥٠﴾ فَرَّتْ مِن قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾ بَلْ يُرِيدُ
كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَن يُؤْتَىٰ صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾ كَلَّا ۖ بَل لَّا
يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ﴿٥٣﴾ كَلَّا إِنَّهُ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾ فَمَن شَاءَ
ذَكَرَهُ ﴿٥٥﴾ وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ ۚ هُوَ أَهْلُ
التَّقْوَىٰ وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

سُورَةُ الْقِيَامَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

لَا أُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَامَةِ ﴿١﴾ وَلَا أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴿٢﴾
أَيَحْسَبُ الْإِنسَانُ أَلَّن نَّجْمَعَ عِظَامَهُ ﴿٣﴾ بَلَىٰ قَادِرِينَ
عَلَىٰ أَن نُّسَوِّيَ بَنَانَهُ ﴿٤﴾ بَلْ يُرِيدُ الْإِنسَانُ لِيَفْجُرَ
أَمَامَهُ ﴿٥﴾ يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ ﴿٦﴾ فَإِذَا بَرِقَ
الْبَصَرُ ﴿٧﴾ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ﴿٨﴾ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ﴿٩﴾
يَقُولُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ﴿١٠﴾ كَلَّا لَا وَزَرَ ﴿١١﴾ إِلَىٰ
رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ﴿١٢﴾ يُنَبَّأُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ
بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ﴿١٣﴾ بَلِ الْإِنسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ﴿١٤﴾

منزل ٧

जैसे बिदके हुए गधे हों (50) जो किसी शेर से भाग खड़े हुए हों[1] (51) किन्तु उनमें से हर एक यह चाहता है कि उसको खुली किताब (सहीफ़े) दी जाए (52) हरगिज़ नहीं हाँ बात यह है कि वे आख़िरत का डर ही नहीं रखते (53) कोई नहीं यह तो एक नसीहत है (54) बस जो चाहे नसीहत हासिल करे (55) और वे नसीहत जब ही हासिल कर सकते हैं जब अल्लाह की मर्ज़ी हो (56) वही है जिससे डरना चाहिए और वही है[2] (गुनाहों को) माफ़ करने के लायक़ (57)

सूरह क़ियामह

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अब मैं क़यामत के दिन की क़सम खाता हूँ[3] (1) और मलामत (निंदा) करने वाले नफ़्स की क़सम खाता हूँ (2) क्या इंसान यह समझता है कि हम उसकी हड्डियों को एकत्र नहीं करेंगे (3) क्यों नहीं हम इस पर पूरे सक्षम हैं कि उसके पोर–पोर को ठीक कर दें[4] (4) बल्कि इंसान तो चाहता है कि वह उसके सामने भी ढिटाई करता रहे (5) पूछता है कि क़यामत का दिन कब है[5] (6) बस जब आँखें चुंधिया जाएंगी (7) और चाँद को ग्रहण लग जाएगा (8) और सूरज और चाँद मिला दिये जाएंगे (9) उस दिन इंसान कहेगा कि अब बचाव का स्थान कहाँ है (10) हरगिज़ नहीं अब शरण का कोई स्थान नहीं (11) उस दिन आपके पालनहार के सामने ही (हर एक को) ठहरना है (12) उस दिन इन्सान ने जो कुछ आगे–पीछे किया है वह सब उसको बतला दिया जाएगा (13) बात यह है कि इंसान ख़ुद अपने आप से ख़ूब वाक़िफ़ है (14)

---

(1) अल्लाह की किताब पर ईमान लाने से उसके बिदकने का यह हाल है और ख़ुद हर व्यक्ति चाहता है कि उसी पर किताब उतर आए और वह पैग़म्बर हो जाए, आगे कहा जा रहा है कि किताब एक पर उतरी तो क्या हुआ उपदेश (नसीहत) तो सबके लिए है (2) एक हदीस में इसकी व्याख्या इस प्रकार आई है कि मैं इस लायक़ हूँ कि बन्दा मुझ से डरे और मेरे साथ कुछ भी शरीक न करे, वह ऐसा करेगा तो मेरी शान यह है कि मैं उसके गुनाहों को माफ़ कर देता हूँ (3) क़यामत के महत्व के लिए उसकी क़सम खाई गई फिर आगे क़यामत के कुछ हालात का बयान है और बीच में "नफ़्से लव्वामह" की क़सम खाकर यह बताया गया कि नफ़्स की यह वह क़िस्म है जो क़यामत के डर से बुराईयों से बचने की चिंता करती है, पहला चरण उस नफ़्स का है जो "अम्मारह बिस्सू" है उसका काम ही बुराइयों पर प्रेरित करना है फिर तरक़्क़ी होती है तो बुराई के बाद तौबा की तौफ़ीक़ होने लगती है और आख़िरत की चिंता पैदा हो जाती है और उसका उच्चतम मुक़ाम "नफ़्से मुतमइन्नह" है कि उसको फिर बुराई करने बल्कि कल्पना से भी तकलीफ़ पहुँचने लगती है (4) पोर–पोर का उल्लेख विशेष रूप से इसलिए किया हर इन्सान के पोर की बनावट अलग–अलग होती है, इसलिए हस्ताक्षर की बजाए अंगूठे का निशान लिया जाता है क्योंकि वह एक का किसी दूसरे की तरह नहीं होता, अल्लाह कहता है कि हड्डियों को एकत्र करके जोड़ देना तो साधारण बात है हम तो उसका पोर–पोर दोबारा वैसे ही बनाकर रख देंगे (5) यह ढीठपने की अति है सोचता है कि जब तक क़यामत नहीं आती आगे भी जो चाहूँ करता रहूँ।

وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ۝١٥ لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ
بِهٖ ۝١٦ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ۝١٧ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ
قُرْاٰنَهٗ ۝١٨ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ۝١٩ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ
الْعَاجِلَةَ ۝٢٠ وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۝٢١ وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ نَّاضِرَةٌ ۝٢٢
اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝٢٣ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍۭ بَاسِرَةٌ ۝٢٤ تَظُنُّ
اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۝٢٥ كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۝٢٦
وَقِيْلَ مَنْ ٚ رَاقٍ ۝٢٧ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ۝٢٨ وَالْتَفَّتِ
السَّاقُ بِالسَّاقِ ۝٢٩ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَىِٕذِ ِۨالْمَسَاقُ ۝٣٠
فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ۝٣١ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝٣٢
ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ۝٣٣ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۝٣٤
ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۝٣٥ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ
يُّتْرَكَ سُدًى ۝٣٦ اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ۝٣٧
ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ۝٣٨ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ
الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝٣٩ اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ
يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ۝٤٠

منزل ٧

चाहे कितने बहाने पेश करे[1] (15) आप उस (कुरआन को पढ़ने में) जल्दी–जल्दी अपनी ज़बान को न हिलाएं (16) उसको सुरक्षित करना और पढ़ना हमारी ज़िम्मेदारी है (17) फिर जब हम (जिब्रईल की ज़बानी) उसको पढ़ें तो आप उसको पढ़ने के साथ–साथ रहें (18) फिर उसकी व्याख्या भी हमारे ज़िम्मे है[2] (19) बात यह है कि तुम्हें तत्काल चीज़ (यानी दुनिया) से प्यार है (20) और आख़िरत को तुम भुला देते हो (21) उस दिन बहुत से चेहरे खिल रहे होंगे (22) अपने पालनहार को देखते होंगे (23) और बहुत से चेहरे कुरूप होंगे (24) समझ रहे होंगे कि (आज) उनकी कमर तोड़कर रख दी जाएगी (25) कोई नहीं जब जान हंसली को आ लगेगी[3] (26) और कहा जाएगा कि है कोई झाड़–फूँक करने वाला[4] (27) और वह समझ लेगा कि जुदाई का समय आ पहुँचा (28) और पाँव पर पाँव चढ़ जाएंगे[5] (29) उस दिन आपके पालनहार की ओर हाँक कर ले जाया जाएगा (30) बस उसने न माना, न नमाज़ पढ़ी (31) लेकिन झुठलाया और मुँह फेरा (32) फिर अकड़ता हुआ अपने घर वालों की ओर चल दिया (33) तेरे लिए तबाही पर तबाही है (34) (हाँ) फिर तेरे लिए तबाही पर तबाही है (35) क्या इन्सान समझता है कि उसको यूँ ही छोड़ दिया जाएगा (36) क्या वह वीर्य की एक बूँद नहीं था जो (माँ के गर्भाशय में) टपकाया गया (37) फिर वह लोथड़ा बन गया फिर (अल्लाह ने उसको) बनाया तो संतुलित बनाया (38) बस उसने उससे दोनों जोड़े बनाए पुरुष भी और स्त्री भी (39) भला उसको इसमें सामर्थ्य (कुदरत) न होगी कि वह मुर्दों को फिर से जीवित कर दे (40)

(1) इनसान अपनी हक़ीक़त ख़ूब समझता है अपनी ग़लतियों को भी जानता है लाख बहाने बनाए (2) शुरु में जब हज़रत जिब्रईल (अ0) आयतें लेकर उतरे और आप (स0) के सामने पढ़ते तो आप (स0) जल्दी–जल्दी अपनी ज़बान से अदा करते ताकि कुछ छूटने न पाये और इसमें आप (सल्ल0) को दिक्कत होती, इस पर यह आयतें उतरीं कि इसका आप (स0) के सीने में सुरक्षित करना और आपकी ज़बान से अदा करवाना फिर उसकी व्याख्या व विवरण सब हमारे ज़िम्मे है, बस जब हम जिब्रईल (अ0) के माध्यम से आयतें पढ़ें तो आप ध्यान से सुन लें और उसके बाद अपनी पवित्र ज़बान से अदा करें (3) अर्थात क़यामत का वह दिन दूर नहीं, जब आदमी मरा, उसकी क़यामत उसके सामने है (4) जब हर प्रकार के बाहय इलाज से निराशा हो जाती है तो आदमी को झाड़–फूँक की सूझती है इसमें उसकी मौत के निकट होने की ओर इशारा है (5) मौत के समय की तकलीफ़ों की ओर इशारा है और अगली आयत में आख़िरत की यात्रा के आरम्भ होने का वर्णन है।

سُوْرَةُ الدَّهْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اِحْدٰى وَثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ﴿١﴾
اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ
سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ﴿٢﴾ اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّ اِمَّا
كَفُوْرًا ﴿٣﴾ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۟ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ﴿٤﴾
اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۚ ﴿٥﴾
عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٦﴾ يُوْفُوْنَ
بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ﴿٧﴾ وَيُطْعِمُوْنَ
الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّ اَسِيْرًا ﴿٨﴾ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ
لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ﴿٩﴾ اِنَّا نَخَافُ مِنْ
رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ﴿١٠﴾ فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَ
لَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ﴿١١﴾ وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۙ ﴿١٢﴾
مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا
زَمْهَرِيْرًا ﴿١٣﴾ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ﴿١٤﴾

منزل ٧

सूरह दह्र

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

क्या इंसान पर एक ज़माना ऐसा नहीं गुज़रा कि वह उल्लेखनीय भी न था (1) हम ही ने इंसान को आज़माने के लिए एक मिले–जुले वीर्य बूँद[1] (नुत्फ़े) से पैदा किया तो हमने उसको सुनता देखता बना दिया (2) हमने सही रास्ता उसे बता दिया अब चाहे वह एहसान माने या इनकार कर दे[2] (3) बेशक हमने इनकार करने वालों के लिए बेड़ियाँ और गले के फंदे और भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है (4) बेशक भले लोगों को ऐसे जाम पिलाए जाएंगे जिनमें काफ़ूर का मिश्रण होगा[3] (5) ऐसे स्रोत से जिससे अल्लाह के ख़ास बन्दे पियेंगे वे ख़ुद (जहाँ से चाहेंगे) उसे जारी कर[4] लेंगे (6) यह (वे लोग हैं जो) मन्नतें पूरी करते हैं और उस दिन से डरते रहते हैं जिसकी बुराई फैली हुई होगी[5] (7) और वे ख़ुद खाने की चाहत के बावजूद इसको ग़रीब अनाथों और क़ैदियों को खिलाते रहते हैं (8) (और यह कहते हैं कि) हम तो तुम्हें मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिए खिला रहे हैं हम तो तुमसे कोई बदला या एहसान नहीं चाहते (9) हम तो अपने पालनहार से सख़्ती के एक उदास दिन से डरते हैं (10) बस अल्लाह उनको उसी दिन की बुराई से बचा लेगा और उनको ताज़गी और प्रसन्नता प्रदान करेगा (11) और उनको उनके सब्र के बदले में बाग़ और रेशम से सम्मानित करेगा (12) वे उनमें आराम से मसहरियों पर तकियों से टेक लगाए होंगे वहाँ उनको धूप की तपिश से पाला पड़ेगा न भीषण ठंड से[6] (13) और उन पर (बाग़ों की) छाया झुकी पड़ी होंगी और उनके गुच्छे झुके हुए लटक रहे होंगे (14)

(1) स्त्री और पुरुष दोनों के वीर्य से मिलकर ही इनसान की उत्पत्ति होती है और उसी की ओर इसमें इशारा है (2) अल्लाह ने इंसान को समझ दी है और सही रास्ता भी बता दिया और परिणाम से भी सावधान कर दिया (3) इसका मतलब काफ़ूर नहीं जिसको हमारे यहाँ काफ़ूर कहते हैं, यह एक विशेष प्रकार की बूटी है जिसमें विशेष प्रकार की ठंडक और सुगंध होती है (4) यानी उनको इसको प्राप्त करने के लिए कहीं आने–जाने की आवश्यकता न होगी, जहाँ से चाहेंगे उसका स्रोत वहीं से जारी कर लेंगे (5) उस दिन की सख़्ती सबको आम होगी कोई उससे बचा न होगा, सिवाय उसके जिसको अल्लाह बचा ले (6) वहाँ का मौसम बिल्कुल संतुलित होगा ताकि किसी प्रकार का दुःख न हो।

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِآنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرَا ﴿١٥﴾
قَوَارِيرَا مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ﴿١٦﴾ وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا
كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيلًا ﴿١٧﴾ عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّىٰ سَلْسَبِيلًا ﴿١٨﴾ وَيَطُوفُ
عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا
مَّنْثُورًا ﴿١٩﴾ وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَّمُلْكًا كَبِيرًا ﴿٢٠﴾
عَالِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّإِسْتَبْرَقٌ وَّحُلُّوا أَسَاوِرَ
مِنْ فِضَّةٍ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ﴿٢١﴾ إِنَّ هَٰذَا كَانَ
لَكُمْ جَزَاءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُورًا ﴿٢٢﴾ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ
الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ﴿٢٣﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آثِمًا
أَوْ كَفُورًا ﴿٢٤﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّأَصِيلًا ﴿٢٥﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ
فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ﴿٢٦﴾ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ يُحِبُّونَ
الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ﴿٢٧﴾ نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ
وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا أَمْثَالَهُمْ تَبْدِيلًا ﴿٢٨﴾
إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٢٩﴾ وَمَا
تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٣٠﴾

منزل ٧

और उन पर चाँदी के बर्तनों और प्यालों के दौर चल रहे होंगे (15) शीशे भी चाँदी के जिनको विशेष शैली में उन्होंने ढाला होगा[1] (16) और वहाँ उनको जाम पिलाये जाएंगे जिसमें सोंठ मिली होगी (17) वहाँ के ऐसे स्रोत से जिसका नाम सलसबील होगा[2] (18) उनके सामने सदा बहार लड़के आ जा रहे होंगे[3] जब आप उनको देखेंगे तो लगेगा कि जैसे बिखरे हुए मोती हों (19) और जब आप देखेंगे तो उस जगह आपको नेमतों (उपकारों) की एक दुनिया और बड़ी बादशाही नज़र आएगी (20) उन पर हरे रंग का हल्का व बारीक व परत दर परत वाली रेशम की पोशाक होगी और उनको चाँदी के कंगन से सुसज्जित किया जाएगा और उनको उनका रब पवित्र शराब पिलायेगा (21) यह है तुम्हारा बदला और तुम्हारी मेहनत रंग लाई (22) हमने आप पर कुरआन थोड़ा–थोड़ा करके उतारा है[4] (23) बस आप अपने पालनहार के आदेश पर जमे रहें और उनमें किसी अपराधी या नाशुक्रे की बातों में न आइये (24) और सुबह–शाम अपने पालनहार का नाम लिये जाइये (25) और रात के कुछ भाग में उसको सज्दे कीजिये और रात के बड़े भाग में उसकी तस्बीह कीजिये (26) बेशक यह वे लोग हैं जो तत्काल वस्तु (यानी दुनिया) से प्रेम करते हैं और अपने सामने बड़े भारी दिन को उन्होंने भुला दिया है (27) हमने उनको पैदा किया है और उनके जोड़ मज़बूत बनाये हैं और हम जब चाहें उनके स्थान पर उनके जैसे दूसरे लोग बदल कर ले आएं[5] (28) बेशक यह एक नसीहत (उपदेश) है बस जो चाहे वह अपने पालनहार की ओर जाने वाला रास्ता अपनाये (29) और तुम वही चाहते हो जो अल्लाह चाहता है[6], बेशक अल्लाह ख़ूब जानता है ख़ूब हिकमत (युक्ति) वाला है (30)

---

(1) यह जन्नत की ही विशेषता है, चाँदी शीशे की तरह पारदर्शी नहीं होती लेकिन वहाँ के चाँदी के गिलास और बर्तन शीशे की तरह पारदर्शी होंगे (2) सलसबील का अर्थ है साफ़ और बहता हुआ पानी (3) ऐसे सुन्दर नवयुवक लड़के जो इसी हालत पर क़ायम रहेंगे, सदाबहार नवयुवक (4) ताकि आप का दिल भी मज़बूत रहे और लोग भी धीरे–धीरे अपनी अच्छाई–बुराई को समझ लें और आख़िरत की तैयारी करें, और दावत (आवाहन) के लिए प्रभावी हथियार ज़िक्र (अल्लाह की याद) और दृढ़ता है इसलिए आगे फिर आप (सल्ल0) को और आपके माध्यम से उम्मत को इसके लिए प्रेरित किया जा रहा है (5) यानी उनको अपनी शक्ति पर गर्व है और वे यह सब भूल गये कि यह सब हमारा दिया हुआ है और अगर वे नहीं मानते तो हम जब चाहेंगे उनकी जगह दूसरे लोगों को ले आएंगे (6) यानी हर चीज़ अल्लाह की तौफ़ीक़ पर निर्भर है।

जिसको चाहता है अपनी रहमत (कृपा) में शामिल कर लेता है और यह जो अत्याचारी लोग हैं इनके लिए उसने दुखद अज़ाब तैयार कर रखा है (31)

सूरह मुरसलात

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

क़सम है उन (हवाओं) की जो एक के बाद एक भेजी जाती हैं (1) फिर आँधी होकर तेज़–तेज़ चलने लगती हैं (2) और क़सम है उन (फ़रिश्तों) की जो (अपनी भुजाओं को) अच्छी तरह फैला देते हैं (3) तो वे (सत्य व असत्य को) अलग–अलग कर देते हैं (4) बस नसीहत की बातें उतारते हैं[1] (5) आरोप उतारने को या डर सुनाने को (6) निश्चित ही तुमसे जिस चीज़ का वादा किया जा रहा है वह चीज़ घटित होकर रहेगी (7) बस जब सितारों की रौशनी समाप्त कर दी जाएगी (8) और जब आकाश को फाड़ दिया जाएगा (9) और जब पहाड़ भुरभुरा दिये जाएंगे (10) और जब सब पैग़म्बरों को एक समय में इकट्ठा किया जायेगा[2] (11) किस दिन के लिए उसको उठा रखा गया है[3] (12) फ़ैसले के दिन के लिए (13) और आप जानते हैं कि फ़ैसले का दिन है क्या (14) उस दिन झुठलाने वालों के लिए तबाही है (15) क्या हमने पहलों को तबाह नहीं किया (16) फिर पिछलों के साथ वही व्यवहार नहीं किया (17) हम अपराधियों के साथ यही व्यवहार करते हैं (18) उस दिन झुठलाने वालों के लिए तबाही है (19) क्या हमने तुमको बेहैसियत पानी से पैदा नहीं किया (20) तो हमने उसको एक मज़बूत जमाव[4] की जगह रखा (21) एक निर्धारित अवधि के लिए (22) फिर हमने अन्दाज़ा निर्धारित किया और हम ख़ूब अंदाज़ा करने वाले हैं (23) उस दिन झुठलाने वालों के लिए तबाही है (24) क्या हमने धरती समेट लेने वाली चीज़ नहीं बनाई (25)

(1) इन पाँच आयतों में मुफ़स्सिरीन (व्याख्याकारों) ने विभिन्न बातें कही हैं, कुछ लोगों का कहना है कि पाँचों आयतों में फ़रिश्तों का उल्लेख है, कुछ लोग कहते हैं कि इसका मतलब हवाएं हैं और कुछ लोग कहते हैं कि शुरु की आयतों में हवाओं का उल्लेख है और बाद वाली आयतों में फ़रिश्तों का बयान है, अतः सारांश यह है कि पहली दो आयतों में हवाओं का बयान है और बाद वाली आयतों में फ़रिश्तों का वर्णन है यानी शुरु में हल्की हवाएं चलती हैं जो आमतौर पर लाभकारी होती हैं फिर वही अल्लाह की आज्ञा से आँधी का रूप धार लेती हैं जो उछाड़–पछाड़ मचाती हैं, मानो दुनिया जो एक व्यवस्था के अंतर्गत चलती है, चली जा रही है क़यामत के दिन वह क्षत–विक्षत होकर रह जाएगी, फिर फ़रिश्तों की क़सम खाई गई जो अल्लाह की आज्ञा से चलते हैं और ऐसी चीज़ लेकर आते हैं जो सत्य–असत्य को अलग–अलग कर देती है और हलाल व हराम (वैध–अवैध) को जुदा कर देती है, तो वे नसीहत की बातें लेकर उतरते हैं आरोप उतारने को ताकि बाद में कोई यह न कहे कि हमें पता न था और डराने को ताकि डरने वाले डरें और ईमान ले आएं (2) ताकि आगे–पीछे निर्धारित समय के अनुसार अपनी–अपनी उम्मतों के साथ अल्लाह की सबसे बड़ी पेशी में हाज़िर हों (3) यानी क़यामत के जो हालात बताए गए वे सब उसी फ़ैसले के दिन होंगे, अल्लाह ने सब उसी दिन के लिए उठा रखा है, आगे उस दिन जो अंजाम होने वाला है उसका उल्लेख किया गया कि फिर उसके बाद इंसान को उसकी हक़ीक़त याद दिलाई गई है (4) वह वीर्य गर्भाशय में पहुँच कर पैदाइश के विभिन्न चरणों से गुज़रता है।

اَحْيَآءً وَّ اَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾ وَّ جَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِىَ شٰمِخٰتٍ وَّ
اَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٨﴾
اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ
ذِىْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾ لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِىْ مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾
اِنَّهَا تَرْمِىْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾ كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾ وَيْلٌ
يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٤﴾ هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَلَا
يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٧﴾
هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۚ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ
كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ﴿٣٩﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٠﴾ اِنَّ
الْمُتَّقِيْنَ فِىْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٤١﴾ وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٤٢﴾
كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ
نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٥﴾ كُلُوْا
وَتَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا يَرْكَعُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَيْلٌ
يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَبِاَىِّ حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

منزل۷

ज़िन्दों और मुर्दों को[1] (26) और उसमें हमने बोझ के लिए ऊँचे–ऊँचे पहाड़ रख दिये[2] और तुमको मीठा पानी पिलाया (27) उस दिन झुठलाने वालों के लिए तबाही है (28) अब उसी की ओर तुमको चलना है जिसको तुम झुठलाया करते थे (29) उस छाया की ओर चलो जिसकी तीन शाखाएं हैं[3] (30) न छाया दे सके और न आग की लपटों से बचा सके (31) वह महल के बराबर अंगारे फेंकेगी (32) जैसे पीले रंग के ऊँट हों (33) उस दिन झुठलाने वालों के लिए बड़ी तबाही है (34) यह वह दिन है जिसमें बात न कर सकेंगे (35) और न उनको अनुमति होगी कि वे विवशता पेश कर सकें (36) उस दिन झुठलाने वालों के लिए बड़ी तबाही है (37) यह फ़ैसले का दिन है हमने तुमको और सब पहलों को इकट्ठा कर लिया है (38) बस अगर तुम्हारे पास कोई चाल है तो मुझसे चल लो (39) उस दिन झुठलाने वालों के लिए बड़ी तबाही है (40) बेशक परहेज़गार छाँवों और स्रोतों में होंगे (41) और ऐसे मेवों के बीच होंगे जो वे चाहेंगे (42) जो तुम करते रहे थे उसके बदले में मज़े से खाओ पियो (43) हम इसी प्रकार अच्छे काम करने वालों को बदला दिया करते हैं (44) उस दिन झुठलाने वालों के लिए बड़ी तबाही है (45) (ऐ इनकार करने वालो!) कुछ खा पी लो, बेशक तुम ही अपराधी हो[4] (46) उस दिन झुठलाने वालों के लिए बड़ी तबाही है (47) और जब उनसे झुकने के लिए कहा गया तो वे झुकते न थे (48) उस दिन झुठलाने वालों के लिए बड़ी तबाही है (49) तो अब इसके बाद कौन सी बात है जिसको वे मानेंगे[5] (50)

---

(1) इंसान इसी धरती पर जीवन–यापन करता है और मर कर इसी में मिल जाता है, इसी से जीवन मिला और मौत के बाद यही उसका ठिकाना है तो दोबारा इसी मिट्टी से उसको उठा देना अल्लाह के लिए क्या मुश्किल है (2) ताकि वह डोलने न लगे, इन नेमतों के बाद भी कोई न माने तो उसकी तबाही में क्या शक है (3) यह दोज़ख़ का धुंवाँ होगा जो तीन भागों में बंट जाएगा और बादल की तरह दिखाई देगा मगर उसकी छाँव न धूप से बचा सकेगी और गर्मी उससे और बढ़ जाएगी, यह इनकार करने वालों के वास्ते होगा, इसके विपरीत ईमान वाले अल्लाह के अर्श (सिंहासन) की छाँव में होंगे, इतने बड़े–बड़े शोले और अंगारे होंगे जैसे बड़े–बड़े मकान और डील–डोल वाले ऊँटों का क़द होता है, बड़े महलों के बराबर और छोटे ऊँटों के बराबर (4) यानी दुनिया में कुछ मज़े कर लो अंततः तुम्हें पता चल जाएगा (5) यानी कुरआन से पूर्ण और प्रभावी बयान और किसका होगा, इस पर ईमान नहीं लाते तो फिर किस बात पर ईमान लाएंगे, क्या किसी और किताब का इन्तिज़ार है जो आकाश से उतरेगी?

सूरह नबा

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

वह लोग आपस में क्या बात पूछते हैं (1) उस बड़ी चीज़ के बारे में (2) जिसमें ख़ुद उनकी बातें अलग–अलग हैं[1] (3) कोई नहीं जल्द ही उनको मालूम हुआ जाता है (4) फिर ख़बरदार अभी उनको मालूम हुआ जाता है (5) क्या हमने धरती को बिछौना नहीं बनाया (6) और पहाड़ों को मेंखें[2] (7) और तुमको जोड़े–जोड़े पैदा किया (8) और तुम्हारी नींद को आराम की चीज़ बनाया (9) और रात को पर्दे का साधन बनाया[3] (10) और दिन को रोज़गार का साधन घोषित किया (11) और तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत (आकाश) निर्मित किये (12) और एक चमकता हुआ चिराग़ बनाया (13) और लदे बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया (14) ताकि उसके द्वारा हम दाना और सब्ज़ियाँ उगाएं (15) और घने बाग़ (16) निस्संदेह फ़ैसले का दिन निर्धारित समय (के साथ तय) है (17) जिस दिन सूर फूँकी जाएगी तो तुम गिरोह के गिरोह चले आओगे (18) और आसमान खोल दिया जाएगा तो बहुत से दरवाज़े हो जाएंगे (19) और पहाड़ खिसका दिये जाएंगे तो वे रेत का रूप धारण कर लेंगे (20) निस्संदेह दोज़ख़ घात में है (21) वह सरकशों का ठिकाना है (22) उसमें वे युगों–युगों[4] तक रहेंगे (23) वहाँ उनको किसी ठंडी और पीने वाली चीज़ का स्वाद भी न मिलेगा (24) सिवाय खौलते हुए पानी और पीप के (25) पूरे–पूरे बदले के तौर पर (26) वे ऐसे थे कि उनको हिसाब की आशा ही नहीं थी (27)

(1) इससे आशय क़यामत है, मुश्रिक आपस में इधर–उधर की बातें करते थे और इसका मज़ाक़ उड़ाते थे, आगे अल्लाह की शक्ति (क़ुदरत) की निशानियाँ बयान की जा रही है कि जिसने यह सब कुछ पैदा किया, क्या वह क़ियामत घटित नहीं कर सकता और फिर यह सब क्या बेकार पैदा किया गया, फिर ताकीद की कि वह दिन अपने समय से तय है, अल्लाह के सिवा कोई उसको नहीं जानता (2) जिस प्रकार कील किसी चीज़ में गाड़ दी जाए तो उसका अधिकतर भाग अन्दर घुसकर मज़बूती पैदा करता है उसी प्रकार पहाड़ों को अल्लाह तआला ने ज़मीन में गाड़ दिया है (3) जिस तरह आदमी कपड़ा ओढ़कर अपना बदन छिपा लेता है उसी प्रकार रात का अंधेरा प्राणियों को ढांक लेता है (4) जिनकी कोई गिनती नहीं, युग–पर–युग गुज़र जाएंगे और उनके दुःखों का समापन न होगा।

और उन्होंने हमारी आयतों को बढ़–चढ़ कर झुठलाया था (28) और हमने हर चीज़ किताब में गिनकर रखी है (29) तो अब मज़ा चखो बस अब सिवाय अज़ाब (यातना) के हम तुम्हारे लिए किसी चीज़ में बढ़ोत्तरी नहीं करेंगे (30) बेशक परहेज़गारों के लिए बड़ी सफ़लता है (31) बाग़ीचे हैं और अंगूर हैं (32) और एक आयु की नवयुवतियाँ हैं (33) और छलकते हुए जाम हैं (34) वहाँ वे न कोई फ़ुज़ूल (व्यर्थ) बात सुनेंगे और न कोई झूठ (35) (यह सब) आपके पालनहार की ओर से बदला होगा जो (कर्मों के) हिसाब से दिया जाएगा[1] (36) जो आसमानों और धरती और दोनों के बीच का पालनहार है बहुत ही मेहरबान है, किसी की मजाल नहीं कि वह उसके सामने मुँह खोल सके[2] (37) जिस दिन रूह और फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध खड़े होंगे वे बोल न सकेंगे सिवाय उसके जिसको रहमान अनुमति दें और वह ठीक बोले (38) वह सच्चा दिन है बस जो भी चाहे अपने पालनहार के पास ठिकाना बना ले[3] (39) बेशक हमने तुमको एक ऐसे अज़ाब (दण्ड) से ख़बरदार किया है जो निकट ही है जिस दिन आदमी वह सब (कर्म) देख लेगा जो उसने आगे भेजे हैं और काफ़िर कहेगा कि काश कि मैं मिट्टी होता[4] (40)

सूरह नाज़िआत

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

क़सम है उन (फ़रिश्तों) की जो (काफ़िरों के प्राण) पोर–पोर से खींचते हैं (1) और उनकी जो (ईमान वालों के प्राण निकालने के लिए केवल) एक गिरह खोल देते हैं[5] (2) और (वायु में) तैरते हुए जाते हैं (3) तो तेज़ी से आगे बढ़ते हैं (4) फिर आदेश पूरा करने में लग जाते हैं (5) जिस दिन भूकंप हिलाकर रख देगा[6] (6) फिर उसके पीछे आने वाली चीज़ आ जाएगी (7) कितने दिल उस दिन काँप रहे होंगे (8)

(1) वहां कण–कण का हिसाब होगा, कणमात्र भी किसी ने नेकी की होगी तो उसका बदला वहां दिया जाएगा (2) अल्लाह के जलाल के आगे कोई नबी या कोई अन्य बोलने का साहस न कर सकेगा, हां! जिसको अल्लाह की ओर से आज्ञा दी जाएगी वह बोलेगा और सिफ़ारिश करेगा, हमारे नबी सल्ल0 को शफ़ाअत–ए–उज़्मा हासिल होगी (3) उसपर ईमान लाकर, उसकी बातें मानकर और उस पर अमल करके (4) बहुत सी रिवायतों में है कि दुनिया में जिन जानवरों ने एक–दूसरे पर ज़ुल्म किया था क़यामत के दिन सबको जमा किया जाएगा और बदला दिलवाया जाएगा यहां तक कि अगर किसी सींग वाली बकरी ने बिना सींग वाली बकरी को मारा था तो उसको भी बदला दिलवाया जाएगा और जब यह बदला पूरा हो जाएगा तो सब जानवरों को मिट्टी में मिला दिया जाएगा, उस समय काफ़िर लोग (इनकार करने वाले) जिन्हें दोज़ख़ का अंजाम नज़र आ रहा होगा यह तमन्ना करेंगे कि काश हम भी मिट्टी हो जाते (मुस्लिम / तिर्मिज़ी) (5) तर्जुमें में क़ौसेने के बीच जो लिखा गया है वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 की व्याख्या के अनुसार है (6) फ़रिश्तों की क़सम खाकर क़यामत का वर्णन किया गया है जो अल्लाह के हुक्म से फ़रिश्तों के सूर फूंकने के बाद आएगी, ''राजिफ़ह'' से पहली सूर का आशय है, जिससे सब मर जाएंगे और ''रादिफ़ह'' से आशय दूसरी सूर है जिससे सब ज़िन्दा होकर हश्र के मैदान में जमा होने लगेंगे।

أَبۡصَٰرُهَا خَٰشِعَةٞ ٩ يَقُولُونَ أَءِنَّا لَمَرۡدُودُونَ فِي ٱلۡحَافِرَةِ ١٠
أَءِذَا كُنَّا عِظَٰمٗا نَّخِرَةٗ ١١ قَالُواْ تِلۡكَ إِذٗا كَرَّةٌ خَاسِرَةٞ ١٢
فَإِنَّمَا هِيَ زَجۡرَةٞ وَٰحِدَةٞ ١٣ فَإِذَا هُم بِٱلسَّاهِرَةِ ١٤ هَلۡ أَتَىٰكَ
حَدِيثُ مُوسَىٰٓ ١٥ إِذۡ نَادَىٰهُ رَبُّهُۥ بِٱلۡوَادِ ٱلۡمُقَدَّسِ طُوًى ١٦
ٱذۡهَبۡ إِلَىٰ فِرۡعَوۡنَ إِنَّهُۥ طَغَىٰ ١٧ فَقُلۡ هَل لَّكَ إِلَىٰٓ أَن
تَزَكَّىٰ ١٨ وَأَهۡدِيَكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخۡشَىٰ ١٩ فَأَرَىٰهُ ٱلۡأٓيَةَ
ٱلۡكُبۡرَىٰ ٢٠ فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ٢١ ثُمَّ أَدۡبَرَ يَسۡعَىٰ ٢٢ فَحَشَرَ
فَنَادَىٰ ٢٣ فَقَالَ أَنَا۠ رَبُّكُمُ ٱلۡأَعۡلَىٰ ٢٤ فَأَخَذَهُ ٱللَّهُ نَكَالَ
ٱلۡأٓخِرَةِ وَٱلۡأُولَىٰٓ ٢٥ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبۡرَةٗ لِّمَن يَخۡشَىٰٓ ٢٦ ءَأَنتُمۡ
أَشَدُّ خَلۡقًا أَمِ ٱلسَّمَآءُۚ بَنَىٰهَا ٢٧ رَفَعَ سَمۡكَهَا فَسَوَّىٰهَا ٢٨ وَ
أَغۡطَشَ لَيۡلَهَا وَأَخۡرَجَ ضُحَىٰهَا ٢٩ وَٱلۡأَرۡضَ بَعۡدَ ذَٰلِكَ
دَحَىٰهَآ ٣٠ أَخۡرَجَ مِنۡهَا مَآءَهَا وَمَرۡعَىٰهَا ٣١ وَٱلۡجِبَالَ أَرۡسَىٰهَا ٣٢
مَتَٰعٗا لَّكُمۡ وَلِأَنۡعَٰمِكُمۡ ٣٣ فَإِذَا جَآءَتِ ٱلطَّآمَّةُ ٱلۡكُبۡرَىٰ ٣٤
يَوۡمَ يَتَذَكَّرُ ٱلۡإِنسَٰنُ مَا سَعَىٰ ٣٥ وَبُرِّزَتِ ٱلۡجَحِيمُ
لِمَن يَرَىٰ ٣٦ فَأَمَّا مَن طَغَىٰ ٣٧ وَءَاثَرَ ٱلۡحَيَوٰةَ ٱلدُّنۡيَا ٣٨

उनकी नज़रें झुकी हुई होंगी (9) लोग कहते हैं क्या हम उल्टे पाँव फिर वापस किये जाएंगे (10) क्या उस समय भी कि जब हम खोखली हड्डियाँ बन चुके होंगे (11) वे कहेंगे तब तो यह बड़े घाटे की वापसी है[1] (12) बस एक ही ज़बरदस्त चीख होगी (13) बस वे एक चटियल मैदान में होंगे[2] (14) क्या आपको मूसा की ख़बर मिली (15) जब उनके पालनहार ने तुवा की पवित्र घाटी में उनको पुकार कर कहा था[3] (16) कि फ़िरऔन के पास जाओ निश्चित ही वह बहुत सरकश (उदण्ड) हो गया (17) तो उससे कहो कि क्या तुम संवरना चाहते हो (18) और मैं तुम्हें तुम्हारे पालनहार का रास्ता बताता हूँ तो क्या तुम्हारे दिल में डर पैदा होगा (19) तो उन्होंने उसको बड़ी निशानी दिखाई(20) तो उसने झुठला दिया और नहीं माना (21) फिर कोशिश के लिए पलटा (22) तो उसने (लोगों को) इकट्ठा किया फिर एलान किया (23) कि मैं तुम्हारा सबसे बड़ा ख़ुदा हूँ (24) बस उसे अल्लाह ने दुनिया व आख़िरत की सज़ा में पकड़ लिया[4] (25) बेशक इसमें उन लोगों के लिए शिक्षा (इबरत) है जो दिल से डरते हैं (26) क्या तुम्हारा पैदा करना कठिन है या आकाश का जिसे उसने बनाया[5] (27) उसे बुलन्द किया फिर उसे संतुलित किया (28) और उसकी रात अंधेरी बनाई और (दिन को) उसकी धूप निकाली (29) और उसके बाद ज़मीन को बराबर किया (30) उसमें से उसका पानी और चारा निकाला (31) और पहाड़ों को उसमें गाड़ दिया (32) तुम्हारे और तुम्हारे पशुओं के लाभ के लिए (33) फिर जब वह सबसे बड़ा हंगामा (क़यामत का) बरपा होगा (34) जिस दिन इंसान को उसका सब किया–धरा याद आ जाएगा (35) और दोज़ख़ प्रकट कर दी जाएगी उसके लिए जो भी उसको देखे[6] (36) तो जिसने सरकशी (उदण्डता) की (37) और दुनिया के जीवन को वरीयता दी (38)

---

(1) मज़ाक़ में कहते थे कि बहुत पुराने होने के बाद हमें उठाया जाए यह बात समझ में नहीं आती और अगर ऐसा हुआ तो हमें बड़ा घाटा होगा, इसलिए कि हमने उसकी तैयारी तो की नहीं (2) यानी जिसको वे कठिन समझ रहे हैं वह अल्लाह के लिए कितना सरल है, एक ही चीख़ काफ़ी होगी, सब उठ खड़े होंगे (3) कई बार विस्तार से इस घटना का विवरण दिया जा चुका (4) दुनिया में डुबोकर और आख़िरत में जलाकर (5) जब तुम बड़ी–बड़ी चीज़ों का पैदा करने वाला उसी को मानते हो तो अपने दोबारा पैदा किये जाने में तुम्हें संदेह होता है? (6) यानी दोज़ख़ बिल्कुल सामने कर दी जाएगी, बीच में कोई रुकावट नहीं होगी, जो चाहेगा देख लेगा।

فَاِنَّ الۡجَحِيۡمَ هِىَ الۡمَاۡوٰىؕ ﴿۳۹﴾ وَاَمَّا مَنۡ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَ
نَهَى النَّفۡسَ عَنِ الۡهَوٰىۙ ﴿۴۰﴾ فَاِنَّ الۡجَـنَّةَ هِىَ الۡمَاۡوٰىؕ ﴿۴۱﴾
يَسۡـئَلُوۡنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرۡسٰٮهَاؕ ﴿۴۲﴾ فِيۡمَ اَنۡتَ مِنۡ ذِكۡرٰٮهَاؕ ﴿۴۳﴾
اِلٰى رَبِّكَ مُنۡتَهٰٮهَاؕ ﴿۴۴﴾ اِنَّمَاۤ اَنۡتَ مُنۡذِرُ مَنۡ يَّخۡشٰٮهَاؕ ﴿۴۵﴾ كَاَنَّهُمۡ
يَوۡمَ يَرَوۡنَهَا لَمۡ يَلۡبَثُوۡۤا اِلَّا عَشِيَّةً اَوۡ ضُحٰٮهَا ﴿۴۶﴾

سُوۡرَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ وَهِىَ اثۡنَتَانِ وَاَرۡبَعُوۡنَ اٰيَةً وَفِيۡهَا رُكُوۡعٌ وَّاحِدٌ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

عَبَسَ وَتَوَلّٰٓىۙ ﴿۱﴾ اَنۡ جَآءَهُ الۡاَعۡمٰىؕ ﴿۲﴾ وَمَا يُدۡرِيۡكَ لَعَلَّهٗ
يَزَّكّٰٓىۙ ﴿۳﴾ اَوۡ يَذَّكَّرُ فَتَنۡفَعَهُ الذِّكۡرٰىؕ ﴿۴﴾ اَمَّا مَنِ اسۡتَغۡنٰىۙ ﴿۵﴾
فَاَنۡتَ لَهٗ تَصَدّٰىؕ ﴿۶﴾ وَمَا عَلَيۡكَ اَلَّا يَزَّكّٰىؕ ﴿۷﴾ وَاَمَّا مَنۡ
جَآءَكَ يَسۡعٰىۙ ﴿۸﴾ وَهُوَ يَخۡشٰىۙ ﴿۹﴾ فَاَنۡتَ عَنۡهُ تَلَهّٰىۚ ﴿۱۰﴾ كَلَّاۤ
اِنَّهَا تَذۡكِرَةٌ ۚ ﴿۱۱﴾ فَمَنۡ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۘ ﴿۱۲﴾ فِىۡ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۙ ﴿۱۳﴾
مَّرۡفُوۡعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۙ ﴿۱۴﴾ بِاَيۡدِىۡ سَفَرَةٍ ۙ ﴿۱۵﴾ كِرَامٍۭ بَرَرَةٍ ؕ ﴿۱۶﴾
قُتِلَ الۡاِنۡسَانُ مَاۤ اَكۡفَرَهٗ ؕ ﴿۱۷﴾ مِنۡ اَىِّ شَىۡءٍ خَلَقَهٗ ؕ ﴿۱۸﴾
مِنۡ نُّطۡفَةٍ ؕ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ۙ ﴿۱۹﴾ ثُمَّ السَّبِيۡلَ يَسَّرَهٗ ۙ ﴿۲۰﴾

منزل ۷

तो निश्चित ही दोज़ख़ उसका ठिकाना है (39) और जो अपने पालनहार के सामने खड़े होने से डरा और मन को उसने इच्छाओं से रोका (40) तो निश्चित रूप से जन्नत ही उसका ठिकाना है (41) वे आप से क़यामत के बारे में पूछते हैं कि उसके घटित होने का समय कौन सा है (42) आपको इस बात की चर्चा से क्या लेना देना (43) उसकी जानकारी आपके पालनहार पर समाप्त है (44) हाँ आप तो जो उसका डर रखता हो उसको ख़बरदार करने वाले हैं[1] (45) जिस दिन लोग उसको देखेंगे (तो वे महसूस करेंगे कि) मानो वे (दुनिया में बस) कुछ शाम के समय या दिन चढते ठहरे थे (46)

सूरह अ ब स

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

उन्होंने त्योरी चढ़ाई और मुँह फेर लिया (1) कि अंधा व्यक्ति उनके पास आया (2) और आपको क्या पता शायद वह संवर जाता (3) या उपदेश ही प्राप्त करता तो यह उपदेश उसको फ़ायदा पहुँचाता (4) रहा वह जो परवाह नहीं करता (5) तो आप उसकी चिंता में पड़े हैं (6) और वह नहीं संवरता तो आप पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं (7) और जो आपकी ओर भाग कर आता है (8) और वह दिल से डरता है (9) तो आप उसके प्रति विमुखता से काम लेते हैं (10) कदापि नहीं यह एक उपदेश है (11) बस जो चाहे शिक्षा[2] ले (12) ऐसे सहीफ़ों (किताबों) में जो बड़े पवित्र हैं[3] (13) श्रेष्ठ स्थान रखते हैं, अति पवित्र हैं (14) ऐसे लिखने वालों के हाथों में हैं (15) जो खुद बड़ी इज़्ज़त वाले हैं बहुत नेक हैं[4] (16) ऐसे इन्सान पर ख़ुदा की मार वह कैसा नाशुक्रा है (17) किस चीज़ से अल्लाह ने उसको पैदा किया (18) नुत्फ़ा (वीर्य) से उसको पैदा किया फिर उसका ख़ास अन्दाज़ा रखा (19) फिर रास्ता उसके लिए आसान कर दिया[5] (20)

(1) आपका काम क़यामत की ख़बर सुनाकर लोगों को डराना है, आपसे वही फ़ायदा उठाएंगे जिनके अन्दर डर होगा, और जो अयोग्य होंगे वे इसी बहस में पड़े रहेंगे कि क़यामत किस तारीख़ में आएगी, किस दिन और किस सन् में आएगी और जब आ जाएगी तो उनको महसूस होगा कि दुनिया में कितनी कम मुद्दत (अवधि) ठहरे (2) एक बार आप (स0) कुरैश क़बीले के सरदारों से दावती (इस्लाम प्रचार की) बात कर रहे थे कि अचानक एक सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम जो नेत्रहीन थे, वह आपकी सेवा में उपस्थित हुए और आपसे कुछ सिखाने की प्रार्थना की, वे न देख सके कि आप एक महत्वपूर्ण बातचीत में व्यस्त हैं, आप (स0) ने उनसे मुँह फेर लिया और बातचीत में व्यस्त रहे तो वे वापस हो गये, इस पर यह आयत उतरी, शुरु की दो आयतों में गायब के सेगे के साथ हैं, यह आप (स0) के बहुत ज़्यादा इज़्ज़त के कारण है कि डांट के आरम्भ में आप (स0) को प्रत्यक्ष रूप से सम्बोधित न किया बल्कि एक ग़लती को चिन्हित किया गया, फिर आप (स0) को साफ़–साफ़ सम्बोधित किया गया कि जिनको खुद परवाह नहीं आप उनकी हिदायत (संमार्ग) के पीछे न पड़ें और जो सच्चाई की तलाश करने वाले आते हैं उनको आप वंचित न करें, हिदायत (संमार्ग) जिसकी क़िस्मत में होगी वह हिदायत पायगा, आगे इन्सान को उसकी हक़ीक़त बताई जा रही है (3) यानी लौहे महफ़ूज़ जिसमें पवित्र कुरआन भी सुरक्षित है (4) जो फ़रिश्ते लौहे महफ़ूज़ पर नियुक्त हैं और आज्ञानुसार लौहे महफ़ूज़ की चीज़ों को लिखकर आसमानों में भेजते हैं और वहाँ से वे चीज़ें अल्लाह की मर्ज़ी से दुनिया में भेजी जाती हैं (5) माँ के पेट से निकलने का रास्ता भी सरल कर दिया और फिर दुनिया में रहने के संसाधन भी दे दिये।

और जब ज़िन्दा दफ़न की जाने वाली से पूछा जाएगा (8) किस पाप में उसको मारा गया[1] (9) और जब आमाल नामे (कर्म–पत्र) खोल दिये जाएंगे (10) और जब आकाश चीर दिया जाएगा (11) और जब दोज़ख़ भड़का दी जाएगी (12) और जब जन्नत क़रीब कर दी जाएगी (13) (उस समय) एक–एक व्यक्ति को पता चल जाएगा कि वह क्या लेकर आया है[2] (14) अब मैं क़सम खाता हूँ उन सितारों की जो छिप कर प्रकट होते हैं (15) चलते हैं (फिर) छिप जाते हैं (16) और रात की जब वह ढलती है (17) और सुबह की जब वह प्रकट होती है[3] (18) बेशक यह एक सम्मानित संदेशवाहक का (लाया हुआ) कलाम है (19) जो ताक़त वाला भी है अर्श वाले के पास मुक़ाम रखने वाला भी (20) वहाँ उसका कहना भी माना जाता है और अमानतदार (विश्वासपात्र) भी है[4] (21) और यह तुम्हारे साथी कुछ भी दीवाने नहीं हैं[5] (22) और इन्होंने तो उस (फ़रिश्ते) को खुले क्षितिज पर देखा है[6] (23) और वे ढकी छिपी बातें बताने में कंजूसी से काम नहीं लेत[7] (24) और यह शैतान मरदूद का कलाम नहीं है (25) फिर तुम किधर चले जाते हो (26) यह तो दुनिया जहान के लिए एक उपदेश है (27) उसके लिए जो तुममें सीधी राह चलता है (28) और तुम जब ही चाहते हो जब अल्लाह चाहता है जो तमाम संसारों का पालनहार है (29)

सूरह इन्फ़ितार

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

जब आसमान फट पड़ेगा (1) और जब सितारे बिखर जाएंगे (2) और जब समुद्र उबाल दिये जाएंगे (3) और जब क़ब्रों को उथल–पुथल कर दिया जाएगा (4) (उस समय) एक–एक व्यक्ति को मालूम हो जाएगा कि उसने क्या भेजा और क्या छोड़ा (5)

(1) जाहिली युग की घिनावनी रीति थी कि लड़कियों को लज्जा के डर से ज़िन्दा दफ़न कर दिया करते थे, क़यामत में उससे पूछा जाएगा कि किसने उसके साथ ऐसी हरकत की ताकि उसको सज़ा मिले (2) यानी अच्छाई और बुराई की क्या पूँजी उसके पास है (3) यह क़समें खाकर अल्लाह की कुदरत (शक्ति) भी बता दी गई और परिस्थितयों का चित्रण भी कर दिया गया कि अभी कहीं रौशनी है कहीं अंधेरा है, अरब में दीन (धर्म) के दीप कहीं–कहीं जगमगाने लगे हैं लेकिन बस अब रात ढल रही है और सुबह की सफ़ेदी प्रकट हो रही है, जल्द ही पूरे अरब में इस्लाम की रौशनी फैल जाएगी और कुफ़्र व शिर्क का अंधेरा छट जाएगा, जैसे रात ढलती है और सुबह के समय ठंडी–ठंडी सुहानी हवा के झोंके चलते हैं (4) यानी हज़रत जिब्रईल (अ0) जो वह्य लेकर आते थे, और फ़रिश्तों में उनको सबसे बुलन्द मुक़ाम प्राप्त था, पवित्र कुरआन इन्सानों तक पहुँचने में यह पहला माध्यम है और दूसरा माध्यम हज़रत मुहम्मद (स0) का है (5) मक्का वालों को सम्बोधित किया गया है कि तुमने जीवन इनमें गुज़ारा, इनकी सत्यनिष्ठा (अमानतदारी) और बुद्धिमता को तुम्हारा दिल जानता है और मुँह से बातें बनाने के लिए इनको दीवाना बताते हो, यह तुम्हारी दीवानगी नहीं तो और क्या है (6) हज़रत जिब्रईल (अ0) हज़रत मुहम्मद (स0) के पास किसी इन्सान के रूप में आया करते थे, एक बार आप (स0) के निवेदन पर अपने वास्तविक रूप में प्रकट हुए आप (सल्ल0) ने उनको देखा (7) जन्नत, दोज़ख़, हश्र, पिछले पैग़म्बरों की कहानियाँ सब आप (स0) बयान करते हैं और जो भी आपको बताया गया उसमें

⟹

يٰۤاَيُّهَا الۡاِنۡسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الۡكَرِيۡمِ ﴿۶﴾ الَّذِىۡ خَلَقَكَ
فَسَوّٰٮكَ فَعَدَلَكَ ﴿۷﴾ فِىۡۤ اَىِّ صُوۡرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ﴿۸﴾ كَلَّا بَلۡ
تُكَذِّبُوۡنَ بِالدِّيۡنِ ﴿۹﴾ وَاِنَّ عَلَيۡكُمۡ لَحٰفِظِيۡنَ ﴿۱۰﴾ كِرَامًا كَاتِبِيۡنَ ﴿۱۱﴾
يَعۡلَمُوۡنَ مَا تَفۡعَلُوۡنَ ﴿۱۲﴾ اِنَّ الۡاَبۡرَارَ لَفِىۡ نَعِيۡمٍ ﴿۱۳﴾ وَّاِنَّ
الۡفُجَّارَ لَفِىۡ جَحِيۡمٍ ﴿۱۴﴾ يَّصۡلَوۡنَهَا يَوۡمَ الدِّيۡنِ ﴿۱۵﴾ وَمَا هُمۡ
عَنۡهَا بِغَآئِبِيۡنَ ﴿۱۶﴾ وَمَاۤ اَدۡرٰٮكَ مَا يَوۡمُ الدِّيۡنِ ﴿۱۷﴾ ثُمَّ مَاۤ
اَدۡرٰٮكَ مَا يَوۡمُ الدِّيۡنِ ﴿۱۸﴾ يَوۡمَ لَا تَمۡلِكُ نَفۡسٌ لِّنَفۡسٍ
شَيۡئًا ؕ وَالۡاَمۡرُ يَوۡمَئِذٍ لِّلّٰهِ ﴿۱۹﴾

سُوۡرَةُ الۡمُطَفِّفِيۡنَ مَكِّيَّةٌ وَّهِىَ سِتٌّ وَّثَلٰثُوۡنَ اٰيَةً

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ
وَيۡلٌ لِّلۡمُطَفِّفِيۡنَ ﴿۱﴾ الَّذِيۡنَ اِذَا اكۡتَالُوۡا عَلَى النَّاسِ يَسۡتَوۡفُوۡنَ ﴿۲﴾
وَاِذَا كَالُوۡهُمۡ اَوْ وَّزَنُوۡهُمۡ يُخۡسِرُوۡنَ ﴿۳﴾ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمۡ
مَّبۡعُوۡثُوۡنَ ﴿۴﴾ لِيَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ﴿۵﴾ يَّوۡمَ يَقُوۡمُ النَّاسُ لِرَبِّ
الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۶﴾ كَلَّاۤ اِنَّ كِتٰبَ الۡفُجَّارِ لَفِىۡ سِجِّيۡنٍ ﴿۷﴾ وَمَاۤ اَدۡرٰٮكَ
مَا سِجِّيۡنٌ ﴿۸﴾ كِتٰبٌ مَّرۡقُوۡمٌ ﴿۹﴾ وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿۱۰﴾

منزل ۷

ऐ इंसान तेरे दयालु पालनहार के बारे में तुझे किस चीज़ ने धोखे में डाला (6) जिसने तुझे पैदा किया फिर तुझे ठीक किया फिर तुझे संतुलित बनाया (7) जिस रूप में चाहा तुझे ढाल दिया (8) कदापि (हरगिज़) नहीं चाहिए था किन्तु तुम बदले के दिन को झुठलाते हो[1] (9) जबकि तुम पर (एक–एक चीज़ को) याद रखने वाले (नियुक्त) हैं (10) वे सम्मानित लिखने वाले[2] (11) वह सब कुछ जानते हैं जो तुम करते हो (12) बेशक भले लोग आराम में होंगे (13) और पापी लोग ज़रूर दोज़ख़ में होंगे (14) बदले के दिन उसमें वे पहुचेंगें (15) और वे उससे छिप कर भाग नही सकते (16) और आपको पता है बदले का दिन क्या चीज़ है (17) फिर आपको पता भी है बदले का दिन क्या चीज़ है (18) जिस दिन कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के लिए कुछ भी न कर सकेगा और हुक्म उस दिन केवल उल्लाह का चलेगा (19)

सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

नाप–तौल में कमी करने वालों के लिए तबाही है (1) जो लोगों से जब नाप कर लेते हैं तो पूरा–पूरा लेते हैं[3] (2) और जब नाप कर या तौल कर उनको देते हैं तो घटा कर देते हैं (3) क्या ऐसे को यह ख़्याल नहीं कि वे उठाए जाने वाले हैं (4) एक बड़े दिन के लिए (5) जब लोग सारे संसारों के पालनहार के सामने खड़े होंगे (6) हरगिज़–हरगिज़ यह नहीं चाहिए था निश्चित ही पापियों का आमाल नामा (कर्म–पत्र) सिज्जीन[4] में होगा (7) और आपको मालूम भी है कि सिज्जीन क्या है (8) एक दफ़्तर (कार्यालय) है लिखा हुआ (9) उस दिन झुठलाने वालों के लिए तबाही है (10)

⟹ कंजूसी से काम नहीं लेते और न कोई पारिश्रमिक माँगते हैं फिर आप (स0) को काहिन (शकुन विचारने वाला) की उपाधि कैसे देते हो जबकि काहिनों का नाम ही कुछ झूठी–मूठी बातें बताकर दक्षिणा वसूल करना होता है।

(1) यानी जिसने इतने उपकार किये उसको न मानना कौन सी होशियारी है (2) यानी किरामन कातिबीन (3) इन आयतों में उन लोगों के लिए बड़ी सख़्त वईद (धमकी) है जो अपना अधिकार वसूल करने में बड़े तत्पर रहते हैं, मगर दूसरों का अधिकार देने में डण्डी मारते हैं (4) सिज्जीन अरबी शब्द सजन से बना है जिसका अर्थ है कारागार, यह वह सख़्त संकीर्ण और अंधेरी जगह है जहाँ दोज़ख़ियों के आमालनामे बड़े–बड़े रजिस्टरों के रूप में मौजूद हैं।

الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿١١﴾ وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ
مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿١٢﴾ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾ كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾
كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّهُمْ
لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ﴿١٦﴾ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٧﴾
كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ﴿١٨﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿١٩﴾
كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٢٠﴾ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ
نَعِيْمٍ ﴿٢٢﴾ عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ
نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٥﴾ خِتٰمُهٗ
مِسْكٌ ۭ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنٰفِسُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَ
مِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٧﴾ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٢٩﴾
وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى
اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْٓا اِنَّ
هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ﴿٣٢﴾ وَمَآ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾

منزل ٧

जो बदले के दिन को झुठलाते हैं (11) और उसको वही झुठलाता है जो सीमा लांघने वाला पापी हो (12) जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो (उनको) पहलों की कथाएं बताता है[1] (13) हरगिज़ नहीं बात यह है कि उनकी करतूतों के कारण उनके दिलों पर जंग लग गया है (14) ख़बरदार! निश्चित रूप से ऐसे लोग अपने पालनहार से उस दिन रोक दिये जाएंगे (15) फिर उन्हें ज़रूर दोज़ख़ में पहुंचना होगा (16) फिर कहा जाएगा कि यही वह चीज़ है जिसको तुम झुठलाया करते थे (17) ख़बरदार भले लोगों का आमाल नामा (कर्म–पत्र) इल्लिय्यीन[2] में होगा (18) और आप जानते भी हैं कि इल्लिय्यीन क्या है (19) एक ऐसा दफ़्तर है लिखा हुआ (20) कि (अल्लाह के) क़रीबी (फ़रिश्ते) वहां उपस्थित रहते हैं[3] (21) निश्चित रूप से नेक लोग आराम में होंगे (22) पलंगों पर बैठे नज़ारा करते होंगे (23) उनके चेहरों पर खुशहाली का असर आप महसूस करेंगे (24) उच्च श्रेणी की सीलबंद शराब उनको पिलाई जाएगी (25) उसकी सील भी कस्तूरी की होगी और यह है वह चीज़ जिसमें मुक़ाबला करने वालों को आगे आना चाहिए (26) और उसमें तस्नीम की मिलावट होगी (27) ऐसा स्रोत जिससे (अल्लाह के दरबार के) क़रीबी पियेंगे (28) बेशक जो अपराधी रहे वे ईमान वालों का मज़ाक़ उड़ाया करते थे (29) और जब उनके पास गुज़रते तो चुटकियाँ लिया करते थे (30) और जब अपने घरों को जाते तो ठठ्ठे लगाते हुए जाते थे (31) और जब उनको देखते तो कहते कि अरे यही सब पथभ्रष्ट हैं (32) जबकि इनको उनकी निगरानी करने वाला बनाकर नहीं भेजा गया था (33)

---

(1) जब ऐसे लोगों को सही बातें बताई जाती हैं तो वे उनको पुराने विचार बतलाते हैं, उनके दिल नाफ़रमानियाँ (अवज्ञाएं) करते–करते इतने मुर्चा युक्त हो गए हैं कि अच्छाई उनको अच्छी नहीं लगती, हदीस में आता है कि बन्दा जब पाप करता है तो एक काला बिन्दू उसके दिल पर लग जाता है, तौबा करता है तो साफ़ हो जाता है वरना बाक़ी रहता है, फिर पाप करते–करते पूरा दिल काला मुर्चा युक्त हो जाता है फिर उस पर कोई अच्छी बात भी प्रभावी नहीं होती (2) अरबी भाषा में उलुव्व बुलन्दी को कहते हैं, इल्लिय्यीन वह जगह है जहाँ ईमान वालों और भलाई करने वालों के आमाल नामे (कर्म–पत्र) सुरक्षित किये जाते हैं (3) अल्लाह के क़रीबी फ़रिश्ते आदर व सम्मान के रूप में उसको देखते हैं और उसकी रक्षा करते हैं।

فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ﴿٣٤﴾ عَلَى
الْأَرَائِكِ يَنظُرُونَ ﴿٣٥﴾ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

سُورَةُ الْانْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَعِشْرُونَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ﴿١﴾ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾ وَإِذَا
الْأَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾ وَأَذِنَتْ
لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٥﴾ يَا أَيُّهَا الْإِنسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ
كَدْحًا فَمُلَاقِيهِ ﴿٦﴾ فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ﴿٧﴾
فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ﴿٨﴾ وَيَنقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ
مَسْرُورًا ﴿٩﴾ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ﴿١٠﴾ فَسَوْفَ
يَدْعُو ثُبُورًا ﴿١١﴾ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ﴿١٢﴾ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ
مَسْرُورًا ﴿١٣﴾ إِنَّهُ ظَنَّ أَن لَّن يَحُورَ ﴿١٤﴾ بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ
كَانَ بِهِ بَصِيرًا ﴿١٥﴾ فَلَا أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿١٦﴾ وَاللَّيْلِ وَمَا
وَسَقَ ﴿١٧﴾ وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ﴿١٩﴾ فَمَا
لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾ وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ﴿٢١﴾

منزل ٧

बस आज जो ईमान वाले हैं वे काफ़िरों पर हंसी करते हैं (34) मसहरियों पर बैठे नज़ारा करते हैं (35) काफ़िर जो किया करते थे क्या उनको उसका बदला मिल गया? (36)

सूरह इंशिक़ाक़

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

जब आसमान फट पड़ेगा (1) और वह अपने पालनहार की बात मान लेगा और यही उस पर ज़रूरी है। (2) और जब धरती फैला दी जाएगी[1] (3) और उसमें जो कुछ है वह उगल देगी[2] और ख़ाली हो जाएगी (4) और वह भी अपने पालनहार की बात मान लेगी और यही उस पर ज़रूरी है (5) ऐ इंसान तू अपने पालनहार (से मुलाक़ात) तक कोशिशों में जुटा हुआ है फिर तू उससे मिलने वाला है[3] (6) बस जिसको उसका आमालनामा (कर्म–पत्र) उसके दाएं हाथ में दे दिया गया (7) तो उसका हिसाब मामूली होगा[4] (8) और वह ख़ुश–ख़ुश अपने घर वालों में लौट जाएगा (9) और जिसको उसका आमाल नामा (कर्म–पत्र) उसके पीछे से दिया जाएगा[5] (10) तो वह आगे मौत को पुकारेगा (11) और दोज़ख़ में प्रवेश करेगा (12) वह अपने घर वालों में मस्त था (13) वह समझता था कि उसको लौटना ही नहीं (14) क्यों नहीं उसके पालनहार की उस पर पूरी निगाह थी (15) अब मैं शफ़क़ (संध्या–लालिमा) की क़सम खाता हूँ (16) और रात की और वह जिन चीज़ों को समेट लेती है (17) और चाँद की जब वह पूरा होता है[6] (18) निश्चित ही तुम्हें एक के बाद दूसरी हालत से गुज़रना है (19) तो उन्हें क्या हो गया है कि वे ईमान नहीं लाते (20) और जब क़ुरआन पढ़ा जाता है तो सज्दे में पड़ नहीं जाते[7] (21)

---

(1) क़यामत के दिन ज़मीन रबर की तरह खींच कर फैला दी जाएगी और पहाड़ और भवन सब बराबर कर दिये जाएंगे ताकि एक बराबर किए हुए मैदान में पूरी सृष्टि समा सके और कोई आड़ बाक़ी न रहे। (2) ख़ासतौर पर जो भी मरने के बाद मिट्टी में मिल चुके हैं उन सबको निकाल बाहर करेगी। (3) यानी आदमी मरने से पहले–पहले विभिन्न प्रकार के कामों में जुटा रहता है और अंततः सबको मर कर अपने मालिक के सामने हाज़िर होना है और अपने किये का हिसाब देना है। (4) यानी बात–बात पर पकड़ न होगी, मामूली कार्यवाही के बाद वह छूट जाएंगे। (5) बाएं हाथ में पीछे से दिया जाएगा, फ़रिश्ते उसकी सूरत देखना भी गवारा न करेंगे। (6) यानी अल्लाह की यह सृष्टियाँ (मख़लूक़ात) विभिन्न चरणों से गुज़रती है, इसी प्रकार तुम भी विभिन्न चरणों से गुज़रते हो, बचपन, जवानी, बुढ़ापा, मस्तिष्क के विभिन्न परिवर्तन, विभिन्न परिस्थितियाँ, यह सब अल्लाह की शक्ति की निशानियाँ हैं (7) इस आयत को कोई पढ़े तो उस पर सज्दा वाजिब हो जाता है।

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ ﴿٢٢﴾ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ﴿٢٣﴾
فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٤﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿٢٥﴾

سُورَةُ الْبُرُوجِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اثْنَتَانِ وَعِشْرُونَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ﴿١﴾ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ﴿٢﴾ وَشَاهِدٍ
وَمَشْهُودٍ ﴿٣﴾ قُتِلَ أَصْحَابُ الْأُخْدُودِ ﴿٤﴾ النَّارِ ذَاتِ
الْوَقُودِ ﴿٥﴾ إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ ﴿٦﴾ وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ
بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ﴿٧﴾ وَمَا نَقَمُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَن يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ
الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ﴿٨﴾ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَ
اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَ
الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ
الْحَرِيقِ ﴿١٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ
تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ﴿١١﴾ إِنَّ
بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ﴿١٢﴾ إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ﴿١٣﴾

منزل٧

बल्कि जिन्होंने इनकार किया वे झुठलाए जाते हैं (22) और अल्लाह ख़ूब जानता है जो वे इकट्ठा करके रख रहे हैं (23) बस आप उनको दुखदायी अज़ाब (यातना) का शुभ समाचार दे दीजिए (24) हाँ जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये उनके लिए अनंत बदला है (25)

सूरह बुरूज

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

क़सम आसमान की जो बुर्जों वाला है[1] (1) और उस दिन की जिसका वादा किया गया है (2) और देखने वाले की और उसकी जिसको देखा जाएगा[2] (3) बर्बाद हों खाइयां खोदने वाले (4) जो ईंधन वाली आग से भरी थीं (5) जब वे वहाँ बैठे थे (6) और वे ईमान वाले के साथ जो कुछ कर रहे थे उसको वे देख रहे थे (7) और उन्होंने उनसे केवल इसका बदला लिया कि वे अल्लाह पर ईमान लाए थे जो ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है प्रशंसनीय है[3] (8) जिसके लिए आसमानों और धरती की बादशाही है और अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है (9) बेशक जिन्होंने मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को आज़माइश में डाला फिर उन्होंने तौबा नहीं की तो ऐसों के लिए दोज़ख़ का अज़ाब है और ऐसों के लिए जलाने वाला (अज़ाब) है (10) हाँ जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये उनके लिए जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं यही है बड़ी सफ़लता (11) निश्चित ही आपके पालनहार की पकड़ बड़ी सख़्त है (12) बेशक वही पहले पैदा करता है और वही दोबारा (उठाएगा) (13)

(1) बुरूज का विवरण सूरह हिज्र (पृष्ठः 263) में देखा जाए (2) यानी सारे इंसानों की और क़यामत के दिन और उसके सब विचित्राओं की (3) इसमें एक घटना की ओर इशारा है जो हदीस की बड़ी किताब "सहीह मुस्लिम" में विस्तार के साथ वर्णित है कि एक राजा था जो किसी जादूगर से काम लेता था, वह बूढ़ा हुआ तो उसने राजा से कहा कि किसी नवयुवक को हमारे पास भेज दिया कीजिए ताकि मैं उसको तैयार कर दूँ, राजा ने एक लड़के को भेजना शुरु कर दिया, रास्ते में एक ईश्वरवादी (खुदा परस्त) इनसान का घर पड़ता था जो सत्य पर था, लड़का उसके पास भी बैठने लगा और धीरे–धीरे ईमान ले आया, एक बार उसने देखा कि रास्ते में एक बड़ा जानवर रुकावट बना हुआ है और सब परेशान हैं उसने लाकर एक पत्थर मारा कि अगर खुदा परस्त (ईश्वरवादी) इनसान सत्य पर है तो रास्ता साफ़ हो जाए, बस उस पत्थर से जानवर का काम तमाम हो गया, लोगों में उसके चमत्कार का शोर हुआ, यह सुनकर एक अंधे ने प्रार्थना की कि मुझे ठीक कर दो, लड़के ने कहा कि मैं ठीक करने वाला नहीं हूँ, यह काम अल्लाह का है, तुम ईमान ले आओ तो मैं दुआ कर दूँ, उसने शर्त मान ली, बस लड़के ने दुआ की तो वह अच्छा हो गया, राजा को जब यह सब ख़बरें पहुँचीं तो उसने तीनों को बुलवा भेजा और तौहीद (एकेश्वरवाद) से फिरने को कहा, जब वे न माने तो उसने ईश्वरवादी (खुदा परस्त) इनसान को और अंधे को लड़के के सामने आरे से चिरवा दिया और लड़के के बारे में आदेश दिया कि पहाड़ पर ले जाकर उसको फेंक दिया जाए, जब लोग उसको ले गये तो लड़के ने एक दुआ की, बस वे सब एक भूकंप से गिर गये और लड़का सकुशल वापस आ गया फिर राजा ने आदेश दिया उसको नदी में डुबो दिया जाए, वहाँ भी यही घटना घटी, ले जाने वाले डूब गये और लड़का बचकर चला आया, अंततः लड़के ने राजा से कहा कि अगर तुम मुझे मारना ही चाहते हो तो इसका एक ही तरीक़ा है कि तुम सबको मैदान में लेकर मुझे फांसी पर लटकाओ और यह कहकर तीर मारो कि "इस लड़के के पालनहार के नाम से" राजा ने यही किया और वह लड़का "शहीद" हो गया, मगर यह देखकर बड़ी संख्या में लोग मुसलमान हो गए, राजा ने क्रोध में आकर बड़े गढ़े खुदवाए और उनमें आग भड़का दी और कहा कि जो इस्लाम से न फिरेगा इसमें डाला जाएगा, लोग डाले जाने लगे मगर दीन से न फिरते थे, एक मुसलमान महिला लाई गई जिसकी गोद में ⟹

وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ﴿١٤﴾ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ﴿١٥﴾ فَعَّالٌ لِّمَا
يُرِيْدُ ﴿١٦﴾ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ﴿١٧﴾ فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ﴿١٨﴾
بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ﴿١٩﴾ وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ﴿٢٠﴾
بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ﴿٢١﴾ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿٢٢﴾

سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سَبْعَ عَشْرَةَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ﴿١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ﴿٢﴾
النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿٣﴾ اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿٤﴾
فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿٥﴾ خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ﴿٦﴾
يَّخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ﴿٧﴾ اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ
لَقَادِرٌ ﴿٨﴾ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ﴿٩﴾ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا
نَاصِرٍ ﴿١٠﴾ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿١١﴾ وَالْاَرْضِ ذَاتِ
الصَّدْعِ ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾ اِنَّهُمْ
يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ﴿١٥﴾ وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ
اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾

منزل ۷

और वह बहुत माफ़ करने वाला बड़ी मुहब्बत करने वाला है[1] (14) अर्श (सिंहासन) का मालिक है, बड़ी शान वाला है (15) जो चाहता है कर डालता है (16) आपकी सेनाओं की ख़बर मिली? (17) फ़िरऔन की और समूद की (18) बात यह है कि जिन्होंने इन्कार किया वे झुठलाने में लगे हैं[2] (19) और अल्लाह ने उनको हर ओर से घेर रखा है (20) हां यह कुरआन है ही बड़ा गौरवशाली (21) लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) में (लिखा हुआ) है (22)

सूरह तारिक़

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

क़सम है आसमान की और रात को आने वाले की (1) आपको मालूम है कि रात को आने वाला कौन है (2) वह चमकदार सितारा है (3) कोई जान ऐसी नहीं है जिसकी रक्षा के लिए कोई नियुक्त न हो[3] (4) तो इन्सान ख़ूब देख ले कि उसे किस चीज़ से पैदा किया गया (5) उसको उछलते हुए पानी[4] से पैदा किया गया है (6) जो पीठ और पसलियों के बीच से निकलता है[5] (7) निश्चित ही वह उसको दोबारा लौटाने में समर्थ है[6] (8) जिस दिन सारे भेद जाँच लिए जाएंगे (9) बस उसके लिए न कोई ज़ोर होगा और न कोई मददगार (10) पलट–पलट कर आने वाले आकाश की क़सम (11) और अखुवे (दरारों) वाली ज़मीन की क़सम[7] (12) बेशक यह दो टूक बात है (13) और यह कोई मज़ाक़ नहीं है (14) वे भी चाल चल रहे हैं (15) और मैं भी उपाय कर रहा हूँ (16) बस आप काफ़िरों को कुछ मोहलत दे दीजिए, थोड़े दिनों उनको ढील दिये जाइये[8] (17)

⟹ बच्चा था, महिला को कुछ संकोच हुआ बच्चा बोला माँ, आग में कूद जा और सब्र कर तू सत्य पर है, यह सब हो रहा था और राजा और उसके सलाहकार बैठे तमाशा देख रहे थे और उनको तनिक दया न आती थी, और मुसलमानों का कुसूर केवल इतना था कि वे एक अल्लाह पर ईमान रखते थे।

(1) वह अपराधियों को कठोर दण्ड देता है और मानने वालों के साथ बड़ा मेहरबान है (2) यानी काफ़िर इन घटनाओं से शिक्षा नहीं प्राप्त करते और झुठलाने लगे हैं जबकि वे ख़ुद अल्लाह की कुदरत (शक्ति) से बाहर नहीं और पवित्र कुरआन में परिवर्तन उनके बस में नहीं, वह हर प्रकार से सुरक्षित है और रहेगा (3) जब सितारों की रक्षा अल्लाह की ओर से होती है तो इन्सान की रक्षा उसके लिए क्या कठिन है (4) यानी वीर्य से (5) वीर्य का असली केन्द्र यही है (6) जब पहली बार वीर्य से वह पैदा करने में समर्थ है तो दोबारा उसके लिए पैदा कर देना क्या कठिन है, बस वही दिन क़यामत का होगा (7) यह दरारें पौधे निकलने पर भी पैदा होती हैं, पहाड़ों और नदियों के निकलने से भी पैदा होती हैं और अल्लाह ने ज़मीन पर जो पत्थर का खोल (कवर) चढ़ाया है उसमें भी हज़ारों मील की लम्बी–लम्बी दरारें हैं, जिससे ज़मीन के अन्दर की गैस बाहर आती रहती है, इससे ज़मीन के अन्दर का लावा फटने से बच जाता है और वह गैस ऊपर की ज़मीन को शक्ति प्रदान करती है (8) यानी अभी उनको दण्डित करने का समय नहीं आया, अभी उनको अपनी हालत पर छोड़ दीजिए जब समय आएगा तो अल्लाह तआला उनको अपनी पकड़ में ले लेगा।

سُوْرَةُ الْاَعْلٰى مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۙ﴿١﴾ الَّذِيْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۙ﴿٢﴾ وَالَّذِيْ قَدَّرَ فَهَدٰى ۙ﴿٣﴾ وَالَّذِيْ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۙ﴿٤﴾ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ۙ﴿٥﴾ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ۙ﴿٦﴾ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ؕ﴿٧﴾ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۚ﴿٨﴾ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ؕ﴿٩﴾ سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۙ﴿١٠﴾ وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۙ﴿١١﴾ الَّذِيْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۚ﴿١٢﴾ ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ؕ﴿١٣﴾ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۙ﴿١٤﴾ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ؕ﴿١٥﴾ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۙ﴿١٦﴾ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ؕ﴿١٧﴾ اِنَّ هٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۙ﴿١٨﴾ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ﴿١٩﴾

سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتٌّ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ؕ﴿١﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۙ﴿٢﴾ عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۙ﴿٣﴾ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۙ﴿٤﴾ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ؕ﴿٥﴾ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۙ﴿٦﴾ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ؕ﴿٧﴾

منزل۷

सूरह आला

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अपने पालनहार की तस्बीह कीजिए जो सबसे बड़ा गौरवशाली (शान वाला) है[1] (1) जिसने पैदा किया तो ठीक–ठीक बनाया (2) और जिसने हर चीज़ तय कर दी तो उसके अनुसार चलाया (3) और जिसने चारा (धरती से) निकाला (4) फिर उसको काला भूसा[2] बना डाला (5) हाँ हम आपको पढ़ाएंगे तो आप भूलेंगे नहीं[3] (6) सिवाय उसके कि जिसको अल्लाह चाहे, बेशक वह खुले और छिपे सबको जानता है (7) और हम आपको धीरे–धीरे आसानी तक पहुँचाते जाएंगे (8) बस आप तो नसीहत किये जाइये अगर नसीहत (उपदेश) फ़ायदा पहुँचाती हो (9) उससे वह फ़ायदा उठाएगा जिसे डर (ख़शियत) हो (10) और दुर्भाग्य वाला उससे दूर रहेगा (11) जो सबसे बड़ी आग में प्रवेश करेगा (12) फिर वहाँ न मरेगा न जियेगा, बेशक जो संवरा वह सफ़ल हुआ (13) और उसने अल्लाह का नाम लिया फिर नमाज़ पढ़ी (14) बात यह है कि तुम दुनियावी जीवन को वरीयता देते हो (15) जबकि आख़िरत बेहतरीन है और शेष रहने वाली है (16) यही बात पहली किताबों (सहीफ़ों) में भी थी (17) इब्राहीम और मूसा की किताबों (सहीफ़ों) में (18)

सूरह ग़ाशियह

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

आपको उस चीज़ की ख़बर मिली जो छा जाने वाली है[4] (1) उस दिन कुछ चेहरे उतरे हुए होंगे (2) थके–हारे (3) भड़कती हुई आग में प्रवेश करेंगे (4) उन्हें खौलते हुए स्रोत से पानी पिलाया जाएगा (5) काँटों के अलावा उनके पास कोई खाना न होगा (6) जो न शरीर को लगेगा और न भूख को मिटाएगा (7)

---

(1) हदीस में आता है कि जब यह आयत उतरी तो आप (सल्ल) ने फ़रमाया कि "इसको सज्दे में रखो" यानी उसमें "सुब्हान रब्बियल आला" पढ़ा करो (2) इसमें इशारा है कि दुनिया में हर चीज़ अल्लाह ने ऐसी बनाई है कि वह कुछ समय तक अपनी शोभा दिखाने के बाद कुरूप और समाप्त हो जाती है (3) आप (स0) को संतुष्ट कर दिया गया कि सब सुरक्षित रहेगा हाँ! अल्लाह जिन आयतों को मंसूख़ (निरस्त) करना चाहेगा वे भुलाई जा सकती हैं, आगे और अधिक संतुष्ट किया गया है कि यह शरीयत (इस्लामिक विधान) सरल ही है बाक़ी और बातें भी हम सरल करते चले जाएंगे (4) यानी क़यामत जो सब सृष्टि पर छा जाएगी।

وُجُوهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ﴿٨﴾ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ﴿٩﴾ فِي جَنَّةٍ
عَالِيَةٍ ﴿١٠﴾ لَّا تَسْمَعُ فِيهَا لَاغِيَةً ﴿١١﴾ فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ﴿١٢﴾ فِيهَا
سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ﴿١٣﴾ وَّأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ﴿١٤﴾ وَّنَمَارِقُ
مَصْفُوفَةٌ ﴿١٥﴾ وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ﴿١٦﴾ أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ
كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾ وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾ وَإِلَى الْجِبَالِ
كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿١٩﴾ وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾ فَذَكِّرْ
إِنَّمَا أَنتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾ لَّسْتَ عَلَيْهِم بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾ إِلَّا مَن
تَوَلَّىٰ وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾ فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ﴿٢٤﴾ إِنَّ إِلَيْنَا
إِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُم ﴿٢٦﴾

سُورَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثُونَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾ وَاللَّيْلِ إِذَا
يَسْرِ ﴿٤﴾ هَلْ فِي ذَٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حِجْرٍ ﴿٥﴾ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ
رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾ إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿٧﴾ الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا
فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾ وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾

منزل ٧

और कुछ चेहरे उस दिन खिले होंगे (8) अपने प्रयास से ख़ुश होंगे (9) आलीशान जन्नत में (10) जहाँ कोई फ़ुज़ूल बात उनके कान में न पड़ेगी (11) उसमें स्रोत जारी होंगे (12) उसमें बुलन्द मसहरियाँ हैं (13) और प्याले रखे हुए हैं (14) और नर्म तकिये ढंग से लगे हुए हैं (15) और क़ालीन बिछे हुए हैं (16) भला वे ऊँट पर विचार नहीं करते कि कैसे वह पैदा किया गया (17) आसमान पर कि किस तरह उसको ऊंचा किया गया (18) और पहाड़ों पर कि वे कैसे खड़े किये गये (19) और ज़मीन पर कि किस प्रकार उसको हमवार किया गया[1] (20) बस आप तो नसीहत किये जाइये आप का काम ही नसीहत (उपदेश) करना है (21) आप उन पर दारोग़ा नहीं हैं[2] (22) हाँ जिसने मुँह मोड़ा और इनकार किया (23) तो अल्लाह उसको सबसे बड़े अज़ाब (यातना) से ग्रस्त करेगा (24) बेशक हमारी ही ओर सबको लौट कर आना है (25) फिर उन सबका हिसाब हमारे ज़िम्मे है (26)

सूरह फ़ज्र

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

क़सम है फ़ज्र (उषा काल) की (1) और दस रातों की (2) और सम संख्या (जुफ़्त) और विषम संख्या (ताक़) की (3) और रात की जब वह जाने लगे[3] (4) क्या बुद्धिमान के लिए यह क़समें (काफ़ी नहीं) हैं (5) भला आपने देखा नहीं कि आपके पालनहार ने आद (क़ौम) के साथ क्या किया (6) अर्थात इरम (वाले) (जो प्रसिद्ध थे) बड़े–बड़े स्तम्भों वाले[4] (7) उन जैसे लोग देशों में पैदा नहीं हुए थे (8) और समूद (के साथ क्या किया) जो वादी में बड़ी–बड़ी चट्टानें काटते–छाँटते थे[5] (9)

(1) यहाँ विशेष रूप से बड़ी निशानियों का उल्लेख किया गया जिनसे अरब में रहने वाले हर व्यक्ति को वास्ता पड़ता था, ऊँट, आकाश, पहाड़ और धरती (2) यानी आपका काम ज़बरदस्ती हिदायत दे देना नहीं है, तब्लीग़ (इस्लाम के संदेश को पहुँचाने का काम) किये जाना आपका काम है बस जो नहीं मानेगा वह ख़ुद भुगतेगा (3) तफ़सीर लिखने वालों (व्याख्याकारों) ने इन आयतों का अर्थ निर्धारित रातें और दिन बताया है लेकिन ऐसा लगता है कि इनका अर्थ कोई भी दिन व रातें हैं, और उनके उलट–फेर की ओर इशारा किया गया है, पहले फ़ज्र (उषाकाल) की क़सम खाई गई जिससे दिन शुरु होता है, फिर दस रातों की क़सम खाई गई और महीने में तीन बार दस–दस रातों का चरण आता है और सबका अनुमान अलग–अलग होता है, चाँद के उतार–चढ़ाव के अंतर पड़ता है और उन रातों में कुछ की संख्या सम (जुफ़्त) होती है और कुछ की विषम, इससे भी रात की हालत बदलती है और फिर अंत में फ़ज्र (उषाकाल) के अनुकूल रात की क़सम खाई गई है जब वह जा रही हो, फिर उसके बाद कहा गया कि क्या यह सब परिवर्तन एक बुद्धि वाले के लिए काफ़ी नहीं है कि वह इनसे सीख ले, फिर आगे इतिहास के परिवर्तनों का उल्लेख है कि बड़ी–बड़ी शक्तिशाली क़ौमें अस्तित्व में आईं किन्तु अपनी नाफ़रमानियों (अवज्ञा) के कारण अंततः विनष्ट कर दी गईं (4) इरम आद क़ौम के पितामह का नाम है, उससे आशय आद क़ौम (प्रथम) है जिनको आदे इरम भी कहते हैं, हज़रत हूद (अ0) उनमें पैग़म्बर बनाकर भेजे गये थे, यह उस समय दुनिया की सर्वाधिक शक्तिशाली क़ौम थी, स्तम्भों वाले उनको शायद इस कारण कहा गया है कि वे शारीरिक रूप से बड़े डील–डोल वाले थे या यह कारण भी हो सकता है कि वे बड़े–बड़े स्तम्भों वाले आली शान महल बनाया करते थे। (5) समूद के पास हज़रत सालेह (अ0) पैग़म्बर बनाकर भेजे गये, "वादिउल कुरा" उनके निवास स्थान का नाम बताया जाता है जहाँ वे पहाड़ों को काट–छाँट कर घर बनाया करते थे।

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ﴿١٠﴾ الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ﴿١١﴾
فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ﴿١٢﴾ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ
عَذَابٍ ﴿١٣﴾ إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿١٤﴾ فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا مَا
ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ﴿١٥﴾
وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي
أَهَانَنِ ﴿١٦﴾ كَلَّا بَلْ لَا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ ﴿١٧﴾ وَلَا تَحَاضُّونَ
عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿١٨﴾ وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَمًّا ﴿١٩﴾
وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢٠﴾ كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا
دَكًّا ﴿٢١﴾ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾ وَجِيءَ
يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ
الذِّكْرَىٰ ﴿٢٣﴾ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ﴿٢٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ
لَا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ ﴿٢٥﴾ وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ
أَحَدٌ ﴿٢٦﴾ يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾ ارْجِعِي إِلَىٰ
رَبِّكِ رَاضِيَةً مَرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾ فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ﴿٢٩﴾
وَادْخُلِي جَنَّتِي ﴿٣٠﴾

منزل٧

और फ़िरऔन के साथ जो मेखों वाला (जबरदस्त पकड़ वाला) था[1] (10) जिन्होंने देशों में सरकशी (उदण्डता) मचा रखी थी (11) तो वहाँ उन्होंने ज़बरदस्त बिगाड़ फैला रखा था (12) बस आपके पालनहार ने उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया[2] (13) बेशक आपका रब घात लगाए हुए है (14) बस इंसान का हाल यह है कि जब उसके पालनहार ने उसको आज़माया फिर उसको इज़्ज़त दी और नेमत दी तो कहने लगा मेरे पालनहार ने मुझे सम्मानित किया (15) और जब उसको उसके पालनहार ने आज़माइश में डाला तो उसकी रोज़ी में तंगी कर दी तो वह कहने लगा कि मेरे पालनहार ने मुझे अपमानित किया[3] (16) हरगिज़ नहीं! बात यह है कि तुम अनाथ की इज़्ज़त नहीं करते (17) और मोहताज को खाना खिलाने पर एक–दूसरे को नहीं उभारते (18) और उत्तराधिकार (विरासत) का माल समेट–समेट कर खाते हो (19) और माल से मुहब्बत तुम्हारी घुट्टी में पड़ी है (20) हरगिज़ ऐसा नहीं चाहिए, जब ज़मीन पीस कर चूर–चूर कर दी जाएगी (21) और आपका पालनहार और फ़रिश्ते पंक्ति बनाकर (सामने) आ जाएंगे (22) और उस दिन दोज़ख़ को भी ले आया जाएगा, उस दिन इंसान सोचेगा और अब कहाँ रहा सोचने का समय (23) वह कहेगा काश मैंने अपने इस जीवन के लिए कुछ भेज दिया होता (24) बस उस दिन न उस जैसा अज़ाब (यातना) कोई देगा (25) और न कोई उस जैसी बेड़ियाँ कसेगा (26) (दूसरी ओर ईमान वाले के लिए ऐलान होगा) ऐ वह जान जो चैन पा चुकी है[4] (27) अपने पालनहार की ओर इस प्रकार लौट जा कि तू उससे प्रसन्न वह तुझसे प्रसन्न (28) बस मेरे विशेष बंदों में सम्मिलित हो जा (29) और मेरी जन्नत में प्रवेश कर जा (30)

⟹ बताया जाता है जहाँ वे पहाड़ों को काट–छाँट कर घर बनाया करते थे।

(1) मेखों वाला उसको उसकी ज़बरदस्त पकड़ के कारण भी कहते हैं और इसलिए भी कि वह सज़ा देने में मेखों (कीलों) का ज़्यादा से ज़्यादा प्रयोग करता था (2) अपने–अपने युगों में लगता था कि उन क़ौमों का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता लेकिन सब तबाह व बर्बाद हो गये (3) यानी दुनिया ही की इज़्ज़त और दौलत पर उनकी निगाह टिकी हुई है और उसी को मानक समझते थे, आगे अल्लाह ने इज़्ज़त के मानक को बयान कर दिया कि जो अनाथ के काम आए, मोहताज को खाना खिलाए, वह है इज़्ज़त वाला (4) पहले अपराधियों और अत्याचारियों का उल्लेख हुआ, अब उन लोगों का ज़िक्र (उल्लेख) है जिनको अल्लाह की याद से चैन मिलता है।

سُورَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ عِشْرُونَ آيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾ وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ﴿٣﴾ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ﴿٤﴾ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ﴿٥﴾ يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ﴿٦﴾ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ اَحَدٌ ﴿٧﴾ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَيْنَيْنِ ﴿٨﴾ وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ﴿٩﴾ وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ﴿١٠﴾ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ﴿١١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾ فَكُّ رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾ اَوْ اِطْعٰمٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾ يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾ اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿١٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ﴿١٩﴾ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ﴿٢٠﴾

سُورَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسَ عَشْرَةَ آيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالشَّمْسِ وَضُحٰىهَا ﴿١﴾ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ﴿٢﴾ وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰىهَا ﴿٣﴾ وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰىهَا ﴿٤﴾ وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰىهَا ﴿٥﴾

وقف لازم

ركوع

منزل ٧

सूरह बलद

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

मैं इस शहर की क़सम खाता हूँ (1) जब कि आप इसी शहर में ठहरे हैं[1] (2) और क़सम है पिता की और उसकी संतान की (3) बेशक हमने इनसान को कठिनाइयों में डालकर पैदा किया है[2] (4) क्या वह समझता है कि उस पर किसी का ज़ोर न चलेगा (5) कहता है कि मैंने तो ढेरों माल उड़ा दिया (6) क्या उसका विचार यह है कि उसको किसी ने देखा ही नहीं (7) भला क्या हमने उसके लिए दो आँखें नहीं बनाईं (8) और ज़बान और दो होंठ[3] (नहीं बनाए) (9) और दोनों रास्ते उसको बता दिये (10) बस वह घाटी पार न कर सका[4] (11) और आप को मालूम है कि वह घाटी क्या है (12) किसी गुलाम का आज़ाद करना (13) या भूख के दिनों में खाना खिलाना (14) ऐसे अनाथ को जो सम्बंधी भी है (15) या ऐसे मोहताज को जो धूल में अटा हुआ है (16) फिर वह उन लोगों में हो जो ईमान लाए और उन्होंने एक–दूसरे को धैर्य की ताकीद की और एक दूसरे को मेहरबानी की ताकीद की (17) यही लोग दाईं ओर वाले हैं (18) और जिन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया वे बाईं ओर वाले हैं (19) उन पर चारों ओर से आग ही आग होगी (20)

सूरह शम्स

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

क़सम है[5] सूरज की और उसकी चमक की (1) और चाँद की जब वह उसके पीछे–पीछे आता है (2) और दिन की जब वह उसको रौशन कर देता है (3) और रात की जब वह उस पर छा जाती है (4) और आकाश की और जैसा उसने उसको बनाया (5)

---

(1) यह आयतें पवित्र मक्का में उतरीं जब कि आप वहीं रहते थे और ईमान वाले बड़ी मुसीबत के साथ ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे (2) यानी आदम (अ0) और उनकी सारी संतान, मानो कुल मानव जाति की क़सम खाकर कहा गया है कि इंसान दुनिया में आता है तो चाहे कितना भी ऐश–आराम हासिल हो कुछ न कुछ परेशानी उसको बर्दाश्त करनी ही पड़ती है, इस तरह इन आयतों में ईमान वालों को सांत्वना का साधन है (3) बड़े धन–बल वाले बड़े घमण्ड से कहते थे कि हमारा कोई क्या बिगाड़ सकता है, आगे अल्लाह कहता है कि जिसने आँखें और होंठ दिये क्या वह खुद नहीं देखेगा (4) घाटी पार करना एक कठिन काम है, इसमें इशारा है कि भलाई के काम करने में कुछ न कुछ मन को मारना पड़ता है (5) यहाँ विलोम की क़समें खाई गई हैं, दिन की और रात की, फिर आगे आसमान और ज़मीन की, इसमें इंसान की दोनों योग्यताओं की ओर इशारा है उसकी प्रकाशीय (नूरानी) योग्यता और उसके अंधेर वाली हालात, इसीलिए आगे कहा गया है कि अल्लाह ने उसको दोनों रास्ते बता दिये, फ़िस्क़ व फ़ुजूर (पाप और पुण्य) क्या है और तक़वा और नेकी क्या है, अतः जो भलाई का रास्ता चले और मन को संवार ले वह सफ़ल और जो दुनिया ही का होकर रह जाए वह नाकाम व असफ़ल।

وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا ۝٦ وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۝٧ فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا
وَتَقْوٰىهَا ۝٨ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝٩ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ۝١٠
كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَا ۝١١ اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ۝١٢ فَقَالَ لَهُمْ
رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ۝١٣ فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۙ فَدَمْدَمَ
عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ۝١٤ وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ۝١٥

سُوْرَةُ اللَّيْلِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اِحْدٰى وَعِشْرُوْنَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ۝١ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۝٢ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ
وَالْاُنْثٰٓى ۝٣ اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝٤ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ۝٥
وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝٦ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ۝٧ وَاَمَّا مَنْۢ
بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۝٨ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۝٩ فَسَنُيَسِّرُهٗ
لِلْعُسْرٰى ۝١٠ وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُهٗٓ اِذَا تَرَدّٰى ۝١١ اِنَّ عَلَيْنَا
لَلْهُدٰى ۝١٢ وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ۝١٣ فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا
تَلَظّٰى ۝١٤ لَا يَصْلٰىهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ۝١٥ الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝١٦
وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۝١٧ الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۝١٨

منزل ٧

और ज़मीन की और जैसा उसने उसको फैलाया (6) और नफ़्स (मन) की और जैसा उसने उसको ठीक किया (7) बस उसको उसके पाप और उसका तक़्वा बता दिया (8) वह सफ़ल हो गया जिसने उसको संवार लिया (9) और वह नाकाम हुआ जिसने उसे मिट्टी में मिला दिया (10) समूद ने सरकशी (उदण्डता) से झुठलाया (11) जब उनका सबसे बुरी क़िस्मत वाला व्यक्ति उठा (12) तो अल्लाह के रसूल ने उनसे कहा सावधान! अल्लाह की ऊँटनी और उसके पीने की बारी (का ख़्याल रखना) (13) तो उन्होंने उनको झुठला दिया फिर उन्होंने उसको मार[1] डाला बस उनके पाप के कारण उनके पालनहार ने (अज़ाब) उन पर उंडेल दिया तो उनको बराबर करके रख दिया (14) और उसको उसके परिणाम की क्या परवाह (15)

सूरह लैल

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

रात की क़सम जब वह छा जाती है (1) और दिन की जब वह रौशन होता है (2) और उसकी जिसने पुरुष और स्त्री पैदा किये (3) बेशक तुम्हारी कोशिशें अलग–अलग हैं[2] (4) तो जहाँ तक उसका सम्बन्ध है जिसने (अल्लाह के रास्ते में कुछ) दिया और तक़्वा (निग्रह व संयम) अपनाया (5) और भली बात को सच माना (6) तो हम धीरे–धीरे उसको आसानी की ओर ले चलेंगे[3] (7) और जिसने कंजूसी की और लापरवाह रहा (8) और उसने भली बात न मानी (9) तो हम उसको धीरे–धीरे कठिनाई की ओर ले चलेंगे[4] (10) और उसका माल उसके तनिक भी काम न आएगा जब वह गड्ढे में गिरेगा (11) निश्चित रूप से रास्ता बता देना हमारे ही ज़िम्मे है (12) और बेशक आख़िरत और दुनिया के मालिक हम ही हैं (13) बस मैंने तुम्हें उस आग से सावधान किया जो भड़क रही है (14) उसमें वह अभागा इंसान प्रवेश करेगा (15) जिसने झुठलाया और मुँह मोड़ा (16) और वह पूरा परहेज़गार उससे सुरक्षित रहेगा (17) जो अपना धन पवित्र हो जाने के लिए देता है (18)

---

(1) समूद क़ौम की माँग पर अल्लाह ने ऊँटनी पैदा की थी और यह कह दिया गया था कि एक दिन कुँएं से यह पानी पियेगी और एक दिन तुम पानी लिया करना और कोई इसको हाथ न लगाए, लेकिन उनमें एक दुष्ट व बड़ा अभागा इंसान उठा और क़ौम की राय–मश्वरा से उसे क़त्ल कर दिया, जिसके फ़लस्वरूप पूरी क़ौम तबाह कर दी गई (2) यानी इंसान के काम अलग–अलग हैं, रात के अंधेर की तरह काले करतूत भी हैं और दिन के उजाले की तरह रौशन काम भी हैं और जिस प्रकार रात और दिन की और नर–नारी की विशेषताएं अलग हैं उसी प्रकार अच्छे और बुरे कामों की विशेषताएं भी अलग–अलग हैं। (3) आसानी से आशय जन्नत है कि अल्लाह की तौफ़ीक़ से उसकी प्राप्ति आसान होती चली जाएगी। (4) कठिनाई का अर्थ यहाँ पर दोज़ख़ है, ढीठ लोगों को अल्लाह इसी रास्ते पर डालता चला जाता है।

وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزَىٰ ﴿١٩﴾ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ
رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ﴿٢٠﴾ وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ﴿٢١﴾

سُورَةُ الضُّحَىٰ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ إِحْدَىٰ عَشْرَةَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَالضُّحَىٰ ﴿١﴾ وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ ﴿٢﴾ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ ﴿٣﴾
وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَكَ مِنَ الْأُولَىٰ ﴿٤﴾ وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ
فَتَرْضَىٰ ﴿٥﴾ أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ ﴿٦﴾ وَوَجَدَكَ ضَالًّا
فَهَدَىٰ ﴿٧﴾ وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَىٰ ﴿٨﴾ فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ﴿٩﴾
وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿١٠﴾ وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿١١﴾

سُورَةُ الشَّرْحِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانِ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ﴿١﴾ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ﴿٢﴾
الَّذِي أَنْقَضَ ظَهْرَكَ ﴿٣﴾ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ﴿٤﴾ فَإِنَّ مَعَ
الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٥﴾ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٦﴾ فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ﴿٧﴾
وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ﴿٨﴾

منزل ٧

और उस पर किसी का एहसान नहीं जिसका बदला (उसको) दिया जा रहा हो (19) सिवाय अपने (सर्वोच्च) पालनहार की ख़ुशी के[1] (20) और वह शीघ्र ही ख़ुश हो जाएगा (21)

सूरह ज़ुहा

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

चढ़ते हुए दिन की रौशनी की क़सम (1) और रात की क़सम जब वह अंधेरी हो जाए (2) आपके पालनहार ने न आपको छोड़ा और न वह अप्रसन्न हुआ[2] (3) और बाद में आने वाले हालात आपके लिए पहले वाले हालात से ज़्यादा बेहतर हैं[3] (4) और शीघ्र ही आपको आपका पालनहार इतना सम्मानित करेगा कि बस आप ख़ुश हो जाएंगे (5) क्या उसने आपको अनाथ नहीं पाया तो उसने ठिकाना दिया[4] (6) और आपको रास्ते से अपरिचित पाया तो रास्ता दिया[5] (7) और आपको निर्धन पाया तो धनी कर दिया[6] (8) बस जो अनाथ हो उस पर ज़बरदस्ती न करें (9) और जो माँगने वाला हो उसे न झिड़कें[7] (10) और जो आप पर उनके पालनहार की नेमत है उसको बयान करते रहें[8] (11)

सूरह इनशिराह

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

क्या हमने आपका सीना आपके लिए खोल नहीं दिया (1) और आपके बोझ[9] को आप से उतार दिया (2) जिसने आपकी कमर तोड़ रखी थी (3) और आपके लिए आपके वर्णन (तक़रीर) को बुलन्दी प्रदान की[10] (4) बस हर सख़्ती के साथ आसानी है (5) बेशक हर सख़्ती के साथ आसानी है[11] (6) तो आप (कामों से) फ़ारिग़ हों तो (इबादत में) अपने आपको थकाएं (7) और अपने पालनहार की ओर दिल लगाएं[12] (8)

(1) यानी वह किसी के एहसान का बदला चुकाने के लिए ही ख़र्च नहीं करता बल्कि यूँ ही अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिए ख़र्च करता है और उसमें दिखावा नहीं होता, ऐसे इंसान को परहेज़गारी व पवित्रता (पाकी) हासिल होती है और जन्नत में उसको अपने कर्मों का ऐसा बदला मिलेगा कि बस वह ख़ुश हो जाएगा (2) पैग़म्बरी मिलने के बाद आप (स0) पर कुछ दिन ऐसे गुज़रे कि वह्य नहीं आई तो अबू लहब की पत्नी ने कटाक्ष किया कि तुम्हारा पालनहार तुम से नाराज़ (अप्रसन्न) हो गया है, उस पर यह आयतें उतरीं, चढ़ते हुए दिन और अंधेरी रात की क़सम में शायद इस ओर इशारा है कि रात के अंधेरे के बाद यह नहीं होता कि दिन की रौशनी न आए, अगर किसी कारण से वह्य भेजने में देर की गई तो किसी का यह समझना कि अब वह्य नहीं आएगी मूर्खता के अलावा कुछ नहीं (3) हर लिहाज़ से कामयाबी व सफ़लता में बढ़ोत्तरी होती जाएगी यहाँ तक कि आख़िरत में मक़ामे महमूद हासिल होगा जो बहुत बुलन्द मुक़ाम है, मक़ामे शिफ़ाअत हासिल होगा जो बहुत प्रतिष्ठित पदवी (मंसब) है (4) पवित्र जन्म से पूर्व ही पिता का निधन हो गया, छः वर्ष की आयु में माँ भी चल बसीं लेकिन दादा और चचा के दिल में अल्लाह ने ऐसी मुहब्बत डाल दी कि उन्होंने अपनी संतान से ज़्यादा हुज़ूर (स0) को चाहा (5) वह्य से पहले आप (स0) शरीअत (इस्लामिक क़ानून) के विवरण नहीं जानते थे, अल्लाह ने वे विवरण आपको प्रदान किये (6) हज़रत ख़दीजा (रज़ि0) के साथ व्यापार में आपको अच्छा लाभ हुआ (7) माँगने वाला माल माँगे या ज्ञान माँगे (8) दीन की नेमत को बयान करते रहें, इस्लामिक विद्वान कहते हैं कि दीन बयान करने को अरबी शब्द "तहदीस" का प्रयोग किया गया है, इसीलिए आप (स0) की बातों को हदीस कहते हैं (9) पैग़म्बरी की महान ज़िम्मेदारी का शुरु में आपको बोझ महसूस होता था, फिर अल्लाह तआला ने आपको वह साहस प्रदान किया कि कठिन से कठिन काम भी आप (स0) के लिए आसान हो गये (10) दुरूद शरीफ़ का ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा जाना उसका सवाब, पाँचों अज़ानों में आपका वर्णन (तज़किरा), ⟹

सूरह तीन

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

क़सम इंजीर की और ज़ैतून की (1) और तूरे सीना (सीना पर्वत) की (2) और इस शांति वाले शहर[1] की (3) हमने इंसान को बेहतरीन साँचे में (ढाल कर) पैदा किया (4) फिर हमने उसको नीचों से नीचा गिरा दिया[2] (5) सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये तो उनके लिए न समाप्त होने वाला बदला है (6) फिर तुझे इसके बाद कौन सी चीज़ बदला व सज़ा को झुठलाने पर उभार रही है (7) भला क्या अल्लाह सबसे बेहतर हाकिम है कि नहीं है (8)

सूरह अलक़

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

पढ़िये अपने उस पालनहार के नाम से जिसने पैदा किया (1) जिसने इंसान को ख़ून के एक लोथड़े से बनाया (2) पढ़ते जाइये और आपका पालनहार सबसे ज़्यादा करम करने वाला है (3) जिसने क़लम से ज्ञान दिया (4) इंसान को वह सिखाया जो वह जानता न था[3] (5) सावधान! इंसान ही है जो सरकशी (उदण्डता) कर रहा है (6) इसलिए कि उसने अपने आप को

سُوْرَةُ التِّيْنِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانِي اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ① وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ② وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ③ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ④ ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ⑤ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ⑥ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ⑦ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ⑧

سُوْرَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ① خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ② اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ③ الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ④ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ⑤ كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰىٓ ⑥ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ⑦ اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ⑧ اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يَنْهٰى ⑨ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ⑩ اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰىٓ ⑪ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ⑫ اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ⑬ اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ⑭ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ⑮ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ⑯ فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ⑰

منزل ٧

बेनियाज़ (निःस्पृह) समझ लिया है (7) निश्चित ही (सबको) आपके पालनहार ही की ओर लौटना है (8) आपने उसको देखा जो रोकता है (9) एक बंदे को जब वह नमाज़ पढ़ता है (10) बताइये अगर वह हिदायत (संमार्ग) पर होता (11) या तक़्वे की बात कहता (12) भला बताइये अगर उसने झुठलाया या मुँह[4] मोड़ा (13) क्या उसने नहीं जाना कि अल्लाह उसको देख ही रहा है (14) सावधान! अगर वह बाज़ न आया तो हम उसके माथे के बाल पकड़ कर घसीटेंगे (15) वह माथा जो झूठा है पापी है (16) बस वह अपनी सभा वालों को बुला ले (17)

⟹ यह सारी चीज़ें "व–र–फ़अ्ना ल–क ज़िक्–रक" में दाख़िल हैं (11) इसमें आप (स0) को सात्वना दी जा रही है और आपके माध्यम से पूरे मुस्लिम समुदाय (उम्मत) को कि कठिनाई हमेशा नहीं होती (12) दावत (इस्लाम प्रचार) की सारी व्यस्तता इबादत थी मगर इसके बावजूद ख़ालिस (शुद्ध) इबादत जैसे नफ़्ली नमाज़ों और ज़िक्र आदि में व्यस्तता का विशेष आदेश दिया जा रहा है, इसमें हर काम में बरकत पैदा होती है, मालूम हुआ कि दीन का काम करने वालों को इसका अधिकाधिक ख़्याल करना चाहिए और इस पर अमल करना चाहिए।

(1) इंजीर और ज़ैतून शाम (सीरिया) देश की पैदावार है, जहाँ हज़रत ईसा (अ0) भेजे गये थे और तूर–ए–सीना की क़सम खाकर हज़रत मूसा (अ0) की ओर इशारा है और अल–बलदुल अमीन (शान्ति वाले शहर) से मुराद (आशय) है पवित्र मक्का शहर जहाँ आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (स0) आये, हज़रत ईसा (अ0) को इंजील, हज़रत मूसा (अ0) को तौरात और हुज़ूर (स0) को आख़िर में खुली किताब पवित्र क़ुरआन के रूप में मिली, इसमें इशारा है कि आगे जो बातें कही जा रही हैं वे तीनों महान पैग़म्बरों की दावत का केन्द्र रही है और तीनों किताबों में इसको बयान किया गया है (2) हर इन्सान सही प्रकृति लेकर आता है लेकिन फिर वह आसपास से प्रभावित होकर गिरता चला जाता है सिवाय उन लोगों के जिनके अन्दर चार गुण हों: ईमान, अच्छे काम, सच्चाई की ओर बुलाना और उसका माहौल बनाने की चिंता और धैर्य की ओर बुलाना और उसका माहौल बनाने की चिंता (3) यह पाँच आयतें वे हैं जो सबसे पहले हज़रत मुहम्मद (स0) पर उतरीं जब आप (स0) हिरा ⟹

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۝١٨ كَلَّا ۚ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِب ۩ ۝١٩

سُورَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝١ وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝٢ لَيْلَةُ
الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ۝٣ تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا
بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ۝٤ سَلَامٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝٥

سُورَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانِ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ مُنفَكِّينَ
حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝١ رَسُولٌ مِّنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝٢
فِيهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝٣ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِن
بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝٤ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ
مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاءَ وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ
وَذَٰلِكَ دِينُ الْقَيِّمَةِ ۝٥ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَ
الْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ أُولَٰئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝٦

منزل٧

हम दोज़ख़ के फ़रिश्तों को बुला[1] लेंगे (18) हरगिज़ नहीं आप उसकी बातों में मत आइए और सज्दे किये जाइये और क़रीब होते जाइए (19)

सूरह क़द्र

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

बेशक हमने उस (कुरआन) को शबे क़द्र में उतारा है[2] (1) आपको मालूम भी है शबे क़द्र क्या चीज़ है (2) शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है (3) उसमें फ़रिश्ते और रूहुल (अमीन) सारे मुआमलात लेकर अपने पालनहार के आदेश से उतरते हैं[3] (4) वह सर्वथा सलामती है यही (सिलसिला) रहता है सुबह के निकलने तक (5)

सूरह बय्यिना

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

मुश्रिकों और अह्ले किताब में जो काफ़िर थे वे उस समय तक बाज़ आने वाले नहीं यह जब तक उनके पास खुला प्रमाण[4] नहीं आ जाता (1) अल्लाह की ओर से एक ऐसा पैग़म्बर जो पवित्र सहीफ़े पढ़कर सुनाए[5] (2) जिसमें बिल्कुल ठीक-ठाक लेख हों (3) और अहले किताब ने अलग रास्ता उसके बाद ही अपनाया जब उनके पास खुला प्रमाण[6] आ गया (4) जबकि उनको केवल यह आदेश दिया गया था कि वे अल्लाह की बन्दगी दीन (धर्म) को उसके लिए एकाग्र होकर करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें और ठीक उम्मत का यही दीन (धर्म) है (5) बेशक मुश्रिक और अहले किताब में से जिन्होंने इनकार किया वे सब दोज़ख़ की आग में हमेशा-हमेश रहेंगे वे सबसे बुरी सृष्टि हैं (6)

⟹ गुफ़ा (ग़ारे हिरा) में इबादत में व्यस्त थे, हज़रत जिबरईल (अ0) पधारे और कहा कि "इक़रअ्" (पढ़िये) आप (स0) ने कहा कि मैं पढ़ा नहीं हूँ, हज़रत जिबरईल (अ0) ने आप (सल्ल0) को पकड़कर भींचा और फिर वही कहा, आप (स0) ने वही जवाब दिया, तीसरी बार खुद उन्होंने पाँचों आयतें पढ़ीं, इस प्रकार इस पहली वह्य से यह बता दिया गया कि इस दीन (धर्म) का आधार ज्ञान (इल्म) पर है और इस उम्मी पैग़म्बर के द्वारा यह मोअजिज़ा प्रकट होगा कि ज्ञान का साधन क़लम है लेकिन आप (सल्ल0) को अल्लाह की ओर से बिना किसी माध्यम के वे ज्ञान प्राप्त होंगे जिनसे क़यामत तक दुनिया फ़ायदा उठाती रहेगी, साथ-साथ यह बात भी साफ़ कर दी गई कि ज्ञान लाभ जब ही पहुँचाएगा जब वह अल्लाह के नाम की छाया में होगा, इसी लिए "इक़रअ्" के साथ "बिस्मि रब्बिक" की क़ैद भी लगा दी गई। (4) यानी भले रास्ते पर होता अच्छे काम सिखाता तो क्या अच्छा आदमी होता, अब जो मुँह मोड़ा तो हमारा क्या बिगाड़ा।

(1) यह ग्यारह आयतें पहली पाँच आयतों के बहुत बाद उतरीं आप (स0) नमाज़ पढ़ते तो अबू जहल रोकने की कोशिश करता, एक दिन इस अभागे ने यहाँ तक कह डाला कि अगर आपने सज्दा किया तो मैं आपकी गर्दन पर पाँव रख दूँगा, आप (स0) ने झिड़क दिया तो बोला कि मेरी पार्टी बड़ी है, मैं लोगों को बुला लूँगा, अल्लाह कहता है कि अब करके देखे, उसके माथे के बाल पकड़ कर हम उसको घसीटेंगे जो माथा झूठ और मक्कारी से भरा हुआ है, और वह अपनी पार्टी के लोगों को बुलाए, हम दोज़ख़ के सख़्त पकड़ करने वाले फ़रिश्तों को बुला लेंगे, हदीस में आता है कि एक बार वह रोकने के लिए आगे बढ़ा फिर अचानक रुक गया, पूछने पर कहने लगा कि मुझे अपने और मुहम्मद (स0) के बीच एक आग से भरा गढ़ढा नज़र आया, जिसमें पंख वाला कोई प्राणी था, इसलिए मैं आगे न बढ़ सका, हुज़ूर (स0) ने कहा ⟹

हाँ निश्चित ही जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये वे सबसे अच्छे प्राणी (मख़लूक़) हैं (7) उनका बदला उनके पालनहार के पास है, ऐसी सदाबहार जन्नतें जिनके नीचे नहरें बह रही हैं वे हमेशा–हमेश उसी में रहेंगे, अल्लाह उनसे खुश हुआ और वे अल्लाह से खुश, यह सब उसको मिलता है जो अपने पालनहार से डर (ख़शियत) रखता है (8)

सूरह ज़िलज़ाल[1]

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

जब ज़मीन अपने भूंचाल से झिंझोड़ कर रख दी जाएगी (1) और ज़मीन अपने बोझ बाहर निकाल देगी (2) और इंसान कहेगा कि इसको हुआ क्या है (3) उस दिन वह अपनी सारी ख़बरें बता देगी (4) कि आपके पालनहार ने उसको यही आदेश दिया होगा (5) उस दिन लोग समूह दर समूह लौटेंगे ताकि उनको सब काम दिखा दिये जाएं (6) बस जिसने कण मात्र भी भलाई की होगी वह उसको देख लेगा (7) और जिसने कणमात्र भी बुराई की होगी वह उसको देख लेगा (8)

सूरह आदियात

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

उन घोड़ों की क़सम जो हाँप–हाँप कर दौड़ते हैं (1) फिर (अपनी टापों से) चिंगारियाँ उड़ाते हैं (2) फिर सुबह के समय हमला करते हैं (3) तो उससे धूल उड़ाते जाते हैं (4) फिर उसी के साथ सेना के बीच घुस जाते हैं[2] (5) सच्चाई यह है कि इंसान अपने पालनहार का बहुत ज़्यादा नाशुक्रा है (6) और बेशक वह इस पर गवाह है (7) और बेशक वह माल का बड़ा मतवाला है (8)

منزل۷

⇒ अगर वह आगे बढ़ता तो फ़रिश्ते उसकी बोटी–बोटी कर डालते, फिर आख़िरी आयत में मुहब्बत भरे अन्दाज़ में आप (स0) से कहा जा रहा है कि आप निडर होकर सज्दे किये जाइये और आगे बढ़ते जाइये (2) लौहे महफ़ूज़ से पहले आसमान पर इसी रात में उतारा गया, और दुनिया में भी इसी रात उतरना शुरु हुआ (3) अल्लाह तआला की ओर से साल भर के मुआमलात इसी रात में फ़रिश्तों के हवाले होते हैं कि वे अपने–अपने समय पर पूरा करते रहें, वे इन मुआमलात को लेकर इस रात में उतरते हैं और जो लोग इबादत में लीन होते हैं उनके लिए रहमत की दुआएं करते हैं (4) हुज़ूर (स0) की पैग़म्बरी से पहले सारे लोग सच्चे रास्ते से फिर चुके थे और इसकी आवश्यकता थी कि एक महान पैग़म्बर भेजा जाए जो सबको सही रास्ता बताए, इसके बिना कोई सही रास्ते पर आ ही नहीं सकता था (5) पवित्र कुरआन की विभिन्न सूरतें कि हर सूरत अपनी जगह एक सहीफ़ा है (6) अतः जब सच्ची दावत आ गई तो लोगों में दो गिरोह हो गये एक मानने वाला और दूसरा अपनी ज़िद और हटधर्मी के कारण इनकार करने वाला, जबकि सबको आदेश एक ही दिया गया था कि वे अल्लाह को मानें और पैग़म्बर का अनुसरण (इताअत) करें।

(1) यह इतनी महान सूरत है कि हदीस में इसको आधे कुरआन के बराबर बताया गया है, इसमें क़यामत का उल्लेख है, पहली सूर फूँकी जाएगी तो क़यामत बरपा हो जाएगी, सब कुछ तोड़–फोड़ कर रख दिया जाएगा और फिर जब दूसरी सूर फूँकी जाएगी तो सारे मुर्दे उठ खड़े होंगे और ज़मीन अपने सारे ख़ज़ाने उगल देगी, मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस में आता है कि "जिस किसी ने भी माल के लिए किसी को क़त्ल किया होगा या सम्बन्धियों के अधिकारों का हनन किया होगा या चोरी की होगी वह उस माल को देखकर कहेगा, यह वह माल है जिसके लिए मैंने यह पाप किये, फिर कोई भी उस सोने–चाँदी की ओर ध्यान नहीं देगा" उस दिन जिसने जो कुछ किया होगा ज़मीन उसकी ⇒

اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُوْرِ ﴿۹﴾ وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُوْرِ ﴿۱۰﴾

اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ﴿۱۱﴾

سُوْرَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْقَارِعَةُ ﴿۱﴾ مَا الْقَارِعَةُ ﴿۲﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ﴿۳﴾

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ﴿۴﴾ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ

كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ﴿۵﴾ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ﴿۶﴾ فَهُوَ

فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿۷﴾ وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ﴿۸﴾ فَاُمُّهٗ

هَاوِيَةٌ ﴿۹﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ﴿۱۰﴾ نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿۱۱﴾

سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ ﴿۱﴾ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ﴿۲﴾ كَلَّا سَوْفَ

تَعْلَمُوْنَ ﴿۳﴾ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۴﴾ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ

الْيَقِيْنِ ﴿۵﴾ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ﴿۶﴾ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ﴿۷﴾

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ﴿۸﴾

منزل ۷

क्या उसको पता नहीं कि क़ब्रों में जो कुछ है वह सब उथल–पुथल कर दिया जाएगा (9) और जो कुछ भी है वह सब ज़ाहिर कर दिया जाएगा (10) बेशक उनका पालनहार उस दिन उनकी पूरी ख़बर रखता है[1] (11)

सूरह क़ारिअह

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

झिंझोड़ कर रख देने वाली चीज़ (1) क्या है वह झिंझोड़ कर रख देने वाली चीज़ (2) और आपको मालूम भी है कि वह झिंझोड़ कर रख देने वाली चीज़ क्या है[2] (3) जिस दिन लोग बिखरे हुए पतिंगों की तरह हो जाएंगे (4) और पहाड़ धुनकी हुई रूई की तरह हो जाएंगे (5) वह जिसकी तराज़ू भारी रही (6) तो वह मनपसंद जीवन में होगा (7) और जिसकी तराज़ू हलकी रही तो उसका ठिकाना एक गहरा गड्ढ़ा है (8) और आपको पता भी है वह गहरा गड्ढ़ा क्या है (9) वह एक दहकती हुई आग है (10)

सूरह तकासुर

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

(दुनिया में) एक दूसरे से आगे बढ़ जाने (की हवस) तुम्हें ग़ाफ़िल (असावधान) किये रखती है (1) यहाँ तक कि तुम क़ब्रों में जा पहुँचते हो[3] (2) ऐसा हरगिज़ नहीं चाहिए, जल्द ही तुम्हें मालूम हो जाएगा (3) फिर (सुन लो) ऐसा हरगिज़ न चाहिए अभी तुम्हें मालूम हो जाएगा (4) सावधान! काश कि तुम इल्मे यक़ीन (विश्वसनीय ज्ञान) के साथ जानते (5) तुम दोज़ख़ को ज़रूर देखोगे (6) फिर तुम उसको बिल्कुल यक़ीन के साथ देख लोगे (7) फिर उस दिन तुमसे नेमतों के बारे में पूछ होकर रहेगी (8)

⇒ गवाही देगी फिर हिसाब–किताब के बाद लोग अपनी असल जगहों की ओर वापस होंगे, जन्नती जन्नत की ओर और दोज़ख़ी दोज़ख़ की ओर और जिसने भी अच्छा या बुरा काम किया है उसको वह जन्नत या दोज़ख़ में देख लेगा और ज़ाहिर है कि बुरा अमल (कर्म) जब ही बुराई के रूप में बाक़ी रहता है जब उस पर तौबा न की गई हो और अगर तौबा कर ली गई तो वह बुराई अच्छाई बनकर वहाँ सामने आएगी (2) यह सम्पूर्ण दृश्य अरबों के लिए प्रेरणा का काम करता है, घोड़ों से उनका सम्बन्ध अभूतपूर्व था, अपने आक़ा के साथ उनकी वफ़ादारी का वर्णन करके अपने मालिक के साथ इंसान की बेवफ़ाई का उल्लेख किया जा रहा है और इस प्रकार उसके दिल के साज़ को छेड़कर उसके सृष्टा और मालिक की ओर ध्यान दिया जा रहा है।

(1) इन सब हालात का इंसान को आगे सामना करना है तो दुनिया से अधिक प्रेम जो उसको ग़लत रास्ते पर डाल कर उस आने वाले दिन में तबाह कर दे, यह कहाँ की अक़्लमन्दी है (2) अरबी भाषा की यह शैली है और अन्य भाषाओं में भी है कि प्रश्नों के द्वारा बात में ज़ोर पैदा किया जाता है। (3) दुनिया की दौलतें, इज़्ज़तें उन पर गर्व और घमण्ड और उनकी चाहत व प्रेम एक आख़िरत को भूले हुए व्यक्ति के दिल पर ग़फ़लत के पर्दे डाले रहती हैं, और उसमें अल्लाह से डर, भय पैदा होने नहीं देतीं यहाँ तक कि मौत का समय आ जाता है और आदमी क़ब्र में पहुँच जाता है, फिर आगे चेताया जा रहा है कि पहले ही उसके बारे में सोच लेने की आवश्यकता है ताकि आदमी वहाँ की तैयारी कर ले और दोज़ख़ की आग से बच सके।

सूरह अस्र

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

ज़माने (युग) की क़सम[1] (1) वास्तव में इंसान घाटे में है (2) सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये और उन्होंने एक–दूसरे को हक़ (सत्य) की ताकीद की और एक–दूसरे को धैर्य (सब्र) की ताकीद की (3)

सूरह हु–म–ज़ह

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

हर उस व्यक्ति के लिए बर्बादी है जो पीठ–पीछे कमी निकालने वाला, मुँह पर ताना देने वाला हो (1) जिसने माल इकट्ठा किया हो और वह उसको गिन–गिन कर रखता हो[2] (2) वह समझता है कि उसका माल हमेशा उसके साथ रहेगा (3) हरगिज़ नहीं वह ज़रूर तोड़–फोड़ कर रख देने वाली (दोज़ख़) में फेंक दिया जाएगा (4) और आपको पता भी है कि वह तोड़–फोड़ कर रख देने वाली चीज़ क्या है (5) वह अल्लाह की सुलगाई हुई आग है (6) जो दिलों तक जा पहुँचेगी (7) बेशक वह उन पर बंद कर दी जाएगी (8) लम्बे–चौड़े स्तम्भों में[3] (9)

सूरह फ़ील

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

سُوْرَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْعَصْرِ ① اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ② اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ③

سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ ① الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۙ ② يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗٓ اَخْلَدَهٗ ۚ ③ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ④ ۖ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ⑤ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۙ ⑥ الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ⑦ ۭ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۙ ⑧ فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ⑨

سُوْرَةُ الْفِيْلِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۭ ① اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۙ ② وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۙ ③ تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ④ ۽ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ⑤

منزل۷

क्या आप ने नहीं देखा कि आपके पालनहार ने हाथी वालों का क्या हश्र किया (1) क्या उसने उनकी चाल मिट्टी में नहीं मिला दी (2) और उन पर झुण्ड के झुण्ड पक्षी भेज दिये (3) जो उनको पकी हुई मिट्टी के पत्थर से निशाना लेकर मार रहे थे (4) बस उनको ऐसा बना दिया जैसे खाया हुआ भूसा[4] (5)

---

(1) अल्लाह तआला ने हर इंसान को जीवन गुज़ारने के लिए एक ज़माना (युग) दिया है लेकिन आमतौर पर इंसान इस नेमत की नाशुक्री करता है और कुफ़्र व शिर्क और गुनाह करके फ़ायदा उठाने के बजाय नुक़सान उठाता है, इसलिए ज़माने की क़सम खाकर यह बात साधारण शैली में कही गई कि इंसान घाटे में है फिर आगे उन लोगों को इस वर्ग से अलग किया गया जो अपने अन्दर चार गुण रखते हों: (1) वे ईमान रखते हों, यानी उनके अक़ीदे ठीक हों, (2) उनके आमाल (कर्म) ठीक हों, (3) वे केवल अपनी चिंता तक सीमित न रहें बल्कि सच्ची बात को आम करने की चिंता और प्रयास करते हों और इसका वातावरण बनाते हों, (4) इस रास्ते की सारी परेशानियों को बर्दाश्त करते हों और दूसरों को इसकी ताकीद करते हों (2) यह बार–बार गिनना विशेष रूची और प्रेम के कारण से होता है, जो निंदनीय है और ग़लत मानसिकता की एक पहचान है, यह चीज़ उसको ग़लत रास्ते पर डाल देती है और वह इसी को कठिनाइयों का समाधान समझने लगता है और दीन (धर्म) से पूरी तरह ग़ाफ़िल (अचेत) हो जाता है (3) यानी आग के ऐसे–ऐसे अंगारे होंगे जैसे लम्बे स्तम्भ और वे आग के इन स्तम्भों में घिर कर रह जाएंगे (4) यह अबरहा की सेना की ओर इशारा है जो यमन का शासक था और उसने हज़रत मुहम्मद (स0) के जन्म से एक वर्ष पहले बैतुल्लाह (काबा) पर हमला किया था और उसकी इच्छा बैतुल्लाह (काबा) को ढाने की थी, रास्ते में जिसने भी उससे मुक़ाबला किया परास्त हुआ, जब वह मक्का के निकट पहुँचा तो अब्दुल मुत्तलिब ने अनुमान लगा लिया कि उसका मुक़ाबला सम्भव नहीं और वह सबको लेकर एक पहाड़ी पर चले गये और कहा कि इस घर का एक मालिक है जो इसकी रक्षा खुद करेगा और वही हुआ वह "मग़मस" नामक स्थान से आगे न बढ़ सका और पक्षियों की कंकरियों से पूरी सेना तबाह हो गई और अबरहा बुरी मौत मरा।

سُورَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

لِإِيلَافِ قُرَيْشٍ ﴿١﴾ إِيلَافِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ﴿٢﴾ فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَٰذَا الْبَيْتِ ﴿٣﴾ الَّذِي أَطْعَمَهُمْ مِنْ جُوعٍ وَآمَنَهُمْ مِنْ خَوْفٍ ﴿٤﴾

سُورَةُ الْمَاعُونِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سَبْعُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالدِّينِ ﴿١﴾ فَذَٰلِكَ الَّذِي يَدُعُّ الْيَتِيمَ ﴿٢﴾ وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿٣﴾ فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ ﴿٤﴾ الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ﴿٥﴾ الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ﴿٦﴾ وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ﴿٧﴾

سُورَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلَاثُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ﴿١﴾ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ﴿٢﴾ إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ﴿٣﴾

سُورَةُ الْكَافِرُونَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتُّ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ﴿١﴾ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٢﴾

منزل ٧

सूरह कुरैश

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

कुरैश के मानूस (प्रिय) होने के कारण (1) जो वे जाड़े और गर्मी की यात्रा से मानूस हैं (2) बस उन्हें चाहिए कि वे इस घर के पालनहार की इबादत करें (3) जिसने उनको भूख में खाना खिलाया और भय में शान्ति दी[1] (4)

सूरह माऊन

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

क्या आपने उसे देखा जो बदले (के दिन) को झुठलाता है (1) बस वही तो है जो अनाथ को धक्के देता है (2) और मोहताज को खिलाने पर नहीं उभारता[2] (3) तो ऐसे नमाज़ पढ़ने वालों के लिए बर्बादी है (4) जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल (अचेत) रहते हैं (5) जो दिखावा करते हैं (6) और साधारण चीज़ देने में भी रुकावट डालते हैं (7)

सूरह कौसर

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

वास्तव में हम ने आपको कौसर प्रदान कर दी है[3] (1) तो आप अपने पालनहार के लिए नमाज़ें पढ़ें और कुर्बानी करें (2) आपका दुश्मन ही वह है जिसकी जड़ कटी हुई है (3)

सूरह काफ़िरुन

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

कह दीजिए ऐ इनकार करने वालो (1) मैं उसकी उपासना नहीं करता जिसकी तुम उपासना करते हो (2)

(1) जाहिलियत के ज़माने में लूटमार और क़त्ल का बाज़ार गर्म था और लोग यात्रा करते हुए डरते थे लेकिन कुरैश क्योंकि बैतुल्लाह (काबा) के सेवक समझे जाते थे और हज यात्रियों की मेहमानदारी करते थे इसलिए उनको कोई छेड़ता न था, उनका यह नित्य नियम बन गया था कि वे जाड़ों में यमन की और गर्मियों में शाम (सीरिया) की व्यापारिक यात्रा किया करते थे, इसके कारण वह समृद्ध और शान्ति का जीवन बसर कर रहे थे, अल्लाह तआला उन पर एहसान को याद दिला रहा है कि यह सब इसी बैतुल्लाह (काबा) की बरकत है जो उन्हें प्राप्त है तो उनको भी चाहिए कि वे केवल इस घर के मालिक की इबादत करें जिसने उनको अमन–शान्ति और समृद्धि प्रदान की (2) इसमें यह स्पष्टीकरण है कि अनाथ को धुत्कारना, मोहताजों की मदद न करना और दूसरों को उनकी मदद के लिए न तैयार करना यह सब काम ऐसे लोगों के हैं जो आख़िरत को नहीं मानते और दुनिया ही को उन्होंने सब कुछ समझ रखा है, किसी सही मुसलमान से इसकी आशा नहीं की जा सकती, आगे ऐसे मुसलमानों की बर्बादी का उल्लेख है जो नमाज़ का ध्यान नहीं रखते, दिखावा करते हैं और अनैतिकता का प्रदर्शन करते हैं कि ज़रूरत की साधारण चीज़ भी उनको दूसरों को देना कठिन होता है, अरबी भाषा में "माऊन" घरेलू ज़रूरत की साधारण चीज़ को कहते हैं (3) "कौसर" बहुत ज़्यादा भलाई को कहते हैं जिसमें यहाँ ख़ासतौर पर "हौज़े कौसर" आशय लिया गया है जो केवल आप (स0) को प्रदान किया जाएगा और इससे आप ईमान वालों की प्यास बुझाएंगे, इस महानतम नेमत के मिल जाने पर आप (स0) को शुक्रिये के रूप में नमाज़ और कुर्बानी का आदेश हो रहा है और इसके साथ–साथ यह सांत्वना दी जा रही है कि आप ही की हिदायत का सिलसिला चलेगा और दुश्मन की जड़ कट कर रह जाएगी और उसका कोई नाम लेवा न रहेगा।

और न तुम उसकी उपासना करने वाले हो जिसकी उपासना मैं करता हूँ (3) और न मुझे उसकी उपासना करनी है जिसकी उपासना तुम करते रहे हो (4) और न तुम्हें उसकी उपासना करनी है जिसकी इबादत मैं करता हूँ (5) तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (धर्म) और मेरे लिए मेरा दीन[1] (6)

सूरह नस्र

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

जब अल्लाह की मदद आ गई और विजय (हो गई) (1) और आपने देख लिया कि लोग दीन (धर्म) में समूह दर समूह प्रवेश कर रहे हैं[2] (2) तो आप अपने पालनहार की हम्द (प्रशंसा) के साथ तस्बीह (पाकी बयान) कीजिए और उससे माफ़ी माँगिये बेशक वह बहुत ज़्यादा तौबा स्वीकार करने वाला है (3)

सूरह लहब

अल्लाह के नाम से
जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

अबू लहब के दोनों हाथ टूट गये और वह तबाह हो ही चुका (1) न उसका माल उसके काम आया और न उसकी कमाई (2) अब वह भड़कती आग में प्रवेश करेगा (3) और उसकी पत्नी भी अभागन लकड़ियाँ ढोने वाली (4) अपनी गर्दन में मूँझ की रस्सी लिये हुए[3] (5)

منزل ٧

सूरह इख़्लास

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालु है।

कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है (1) वह अल्लाह जो किसी का मोहताज नहीं और सब उसके मोहताज हैं (2) न वह किसी का बाप है न किसी का बेटा (3) और कोई भी उसके जोड़ का नहीं[4] (4)

(1) मक्के के कुछ सरदारों ने आप (सल्ल0) के सामने यह प्रस्ताव रखा कि कुछ दिन आप मेरे माबूदों (उपास्यों) की पूजा कर लिया करें तो हम आपके खुदा की इबादत कर लिया करेंगे इस पर यह सूरह उतरी और इसमें बात साफ़ कर दी गई कि गै़रों के साथ कोई ऐसा समझौता सही नहीं हो सकता जिसमें उनकी निशानियाँ अपनानी पड़ें, शिर्क की मिलावट करनी पड़े, अतः इस सूरः में साफ़ कह दिया गया कि ऐसा समझौता सम्भव ही नहीं, तुम जो कर रहे हो उसके परिणाम तुम खुद ही देख लोगे और मैं जिस दीन (धर्म) पर हूँ उसके परिणाम का मैं खुद ज़िम्मेदार हूँ (2) मक्का–विजय इससे आशय है जिस पर अरब के क़बीलों की नज़र थी, उसके बाद ही लोग भारी संख्या में दीन (धर्म) में प्रवेश करने लगे, अगली आयतों में आप (सल्ल0) के दुनिया से आख़िरत के लिए सिधारने का इशारा कर दिया गया कि पैग़म्बर बनाकर भेजने का काम पूरा हुआ, अब अल्लाह का शुक्र अदा कीजिए और अपने लिए और उम्मत (मुसलमानों) के लिए ख़ूब इस्तिग़फ़ार कीजिए (गुनाहों से माफ़ी माँगिए) और इसमें दावत का कार्य करने वालों को सीख भी दे दी गई कि इस क्षेत्र की विजय और सफ़लता के बाद घमण्ड और गर्व पैदा न हो बल्कि बन्दगी में और बढ़ोत्तरी हो और इन्सान अल्लाह की प्रशंसा और गुनाहों से माफ़ी माँगने में लग जाए (3) अबू लहब आप (सल्ल0) का चचा था मगर सबसे ज़्यादा दुश्मनी रखता था और उसकी पत्नी इस दुश्मनी को और भड़काती थी, आप (सल्ल0) के रास्ते में काँटे बिछाती थी, आप (स0) ने सफ़ा पहाड़ पर जब पहली बार लोगों को इस्लाम की ओर बुलाया तो अबू लहब ने कहा "तेरी बर्बादी हो सारे दिन" इस पर यह सूरः उतरी कि बर्बाद तो वह खुद हुआ, मरा तो उसका शरीर सड़ गया तीन दिन पड़ा सड़ता रहा और उसकी पत्नी जो खुद कंजूसी के कारण लकड़ियाँ जंगल से लाती और काँटे लाकर आप (सल्ल0) के रास्ते में बिछाती वह उसी रस्सी में जकड़ गई और उसका दम घुट गया, और क़यामत में भी फंदे और ज़ंजीरों में जकड़ी जाएगी (4) यह सूरह इख़्लास से जिसकी बड़ी फ़ज़ीलतें (श्रेष्ठताएं) हदीसों में आई

सूरह फ़लक़

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालू है।

कहिए कि मैं सुबह के निकालने वाले पालनहार की शरण में आता हूँ (1) हर चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की (2) और रात के अंधेरे की बुराई से जब वह फैल जाए (3) और गाठों में फूँक मारने वालियों की बुराई से (4) और ईर्ष्यालु की बुराई से जब भी वह ईर्ष्या (हसद) करे[1] (5)

सूरह नास

अल्लाह के नाम से

जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालू है।

कहिए कि मैं पनाह में आता हूँ सारे लोगों के पालनहार की (1) लोगों के महाराजा की (2) लोगों के उपास्य (माबूद) की (3) वसवसा (बुरी शंका) डालने वाले ख़न्नास की बुराई से[2] (4) जो लोगों के सीनों में वसवसे (बुरी शंकाएं) डालता है (5) जिन्नों और मनुष्य में से[3] (6)

⇒ और इसको तिहाई कुरआन कहा गया है, इसमें उन कुछ काफ़िरों का जवाब है जिन्होंने आप (सल्ल0) से कहा था कि ज़रा अपने खुदा का हसब व नसब तो बताइये, "समद" शब्द का एक शब्द में अनुवाद सम्भव नहीं इसलिए इसका मिश्रित शब्दों से अनुवाद किया गया है, इस अतिसंक्षिप्त सूरह में अल्लाह की तौहीद को बहुत ही व्यापक शैली में बयान किया है, पहली आयत में उन लोगों का खण्डन है जो एक से अधिक खुदाओं के पक्षधर हैं, दूसरी आयत में उन लोगों का खण्डन है जो एक खुदा को मानने के बावजूद किसी और को भी संकटमोचन (मुश्किल कुशा) या ज़रूरतों का पूरा करने वाला समझते हैं, तीसरी आयत में उन लोगों का खण्डन है जो खुदा के लिए बेटा मानते हैं और चौथी आयत में उन लोगों का खण्डन है जो किसी भी स्तर पर किसी को भी खुदा के बराबर ठहराते हैं।

(1) यह दो आख़िरी सूरतें "मुऔव्वज़तैन" कहलाती हैं, यह उस समय उतरी थी जब आप (सल्ल0) पर यहूदियों की ओर से जादू किया गया था और उसके कुछ प्रभाव आप (सल्ल0) पर प्रकट हुए थे इनमें उसका इलाज बताया गया है, हदीसों से मालूम होता है कि इन सूरतों की तिलावत और इनसे दम करना (फूँकना) जादू के प्रभाव दूर करने के लिए बेहतरीन अमल है, आप (सल्ल0) का मामूल (नित्यनियम) रात को इन सूरतों की तिलावत करके दम करने का रहा है, रात के अंधेरे का उल्लेख इसलिए किया गया है कि आमतौर पर यही समय जादू–टोने का होता है, आप (स0) पर क्योंकि एक औरत ने जादू किया था और एक धागे पर फूँक मारकर गाठें लगाई थीं इसलिए विशेष रूप से "नफ़्फ़ासात" (फूँक मारने वालियों) का उल्लेख किया गया है, अब वह जादुई काम मर्द करे या औरत दोनों से इसमें पनाह माँगी गई है। (2) "ख़न्नास" शैतान की उपाधि है, इसका अर्थ है छिपने वाला, जब अल्लाह का ज़िक्र होता है तो वह छिप जाता है फिर मौक़ा मिलता है तो वस्वसे (बुरी शंकाएं) डालता है (3) जिन्नों में शैतान तो होते ही हैं इंसानों में भी शैतान होते हैं जो बहकाते रहते हैं, उनकी बातें सुनकर विभिन्न प्रकार के बुरे विचार और वस्वसे पैदा होते हैं, इसलिए आयत में दोनों प्रकार के वस्वसे डालने वालों से पनाह माँगी गई है। अल्लाह तआला सबको अपनी पनाह में रखे और हर प्रकार की बुराई से रक्षा करे, आमीन! इस आख़िरी सूरः में बार–बार "अन्नास" का शब्द लाकर सारी मानव जाति को संसार के पालनहार से जुड़ने की ओर बुलाया गया कि वही सारे इंसानों का पालनहार भी है, राजा भी है उपास्य (माबूद) भी है, बस सबको उसी से लौ लगाने और उसी की पनाह में आने की आवश्यकता है।

بسم الله الرحمن الرحيم

विषय–सूची

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल–हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी बिइज़्ज़तिही व जलालिही ततिम्मुस्सालिहात वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यिदिना व नबिय्यिना व मौलाना मुहम्मदिंव व अला आलिही व सहबिही अजमईन।

कुरआन मजीद की जिस सेवा का आरम्भ केवल अल्लाह की कृपा और उसके उपकार से जुमा (शुक्रवार) के शुभ दिन 14, शाबानुल मुअज़्ज़म सन् 1429 हि0 को मस्जिदे हराम मक्का मुकर्रमह से हुई थी, आज 8 रमज़ानुल मुबारक सन् 1432 हि0 को वह मस्जिदे नबवी में केवल अल्लाह ही की कृपा और उसकी तौफ़ीक़ से पूरा हुई।(1)

वास्तव में अल्लाह के कलाम (ईशवाणी) का अनुवाद न कोई कर सका है और न कर सकेगा। जिन लोगों को अल्लाह के कलाम से जितना संबंध और अल्लाह से जितनी निकटता व लगाव रहा है वह उतना ही क़रीब पहुंचा है। इसीलिए इसको साधारणतयः कुरआन के अनुवाद के बजाए कुरआन के अर्थ का अनुवाद कहा जाता है। इस क्रम में सबसे पहला और विख्यात नाम हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर देहलवी रह0 का है जिनका अनुवाद बाद के सभी अनुवादों के लिए मार्गदर्शक का स्थान रखता है।

इस गुनहगार ने इस शुभ सूची में सम्मिलित होने के लिए केवल अल्लाह की कृपा से इस काम की हिम्मत की और विशेषतया तीन बातों को ध्यान में रखने का प्रयास किया। एक तो यह कि अनुवाद शब्दों के निकट हो, दूसरे यह कि सरल हो, और तीसरे यह कि यह किसी हद तक धारा प्रवाह भी हो। फिर भी यह केवल एक प्रयास मात्र है एक बहुत ही अयोग्य बन्दे की ओर से।

कोई क़लम और कोई ज़बान उस मालिकों के मालिक और दयालु व कृपालु अल्लाह का शुक्र करने में असमर्थ है जिसने अपने एक गुनाहगार बंदे को इस महान कार्य का सौभाग्य प्रदान किया।

ऐ अल्लाह जो कुछ हुआ तेरी कृपा से हुआ बस तू ही इस काम को स्वीकार कर ले और इसको इस गुनहगार के लिए माफ़ी का साधन बना दे और इसको इसके मशाइख़ व गुरुओं, माता–पिता परिवार और सम्बंधियों और इस कार्य में किसी भी प्रकार से सहयोग करने वालों के लिए भी सदक़–ए–जारिया बना दे(2), इसको कुरआन के सन्देश के आम होने का और हिदायत का साधन बना और बरकत व स्वीकृति प्रदान कर।

वल्हम्दुलिल्लाहि अव्वलन व आख़िरन व ज़ाहिरन व बातिनन, सल–लल्लाहु तआला अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव व अला आलिही व सह्बिही अजमईन बि रहमतिक या अरहमर्राहिमीन।

बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

सुफ़्फ़–ए–नबवी अला साहिबिहा
अल्फ़ु अल्फ़ु सलातिंव व सलाम
मग़रिब नमाज़ से थोड़ा पहले
दिनः सोमवार (8 रमज़ानुल मुबारक सनः 1432हि0)

1– अनुवाद का कार्य दो साल पहले ही सम्पूर्ण हो गया था किन्तु संक्षिप्त टिप्पणियों का कार्य जारी रहा जो आज दिन सोमवार/ 15 ज़िलहिज्जा/ 1434 हिजरी को सम्पूर्ण हुआ।

2– विशेष रूप से हमारे बड़े भाई मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0 के लिए इसको दरजात की तरक़्क़ी का साधन बना जो इस कार्य के लिए बहुत चिन्तित थे और हमेशा साहस बढ़ाते रहे और कुछ माह पहले लम्बी बीमारी के बाद 17 रबीउल अव्वल 1434 हिजरी को स्वर्गवासी हुए।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
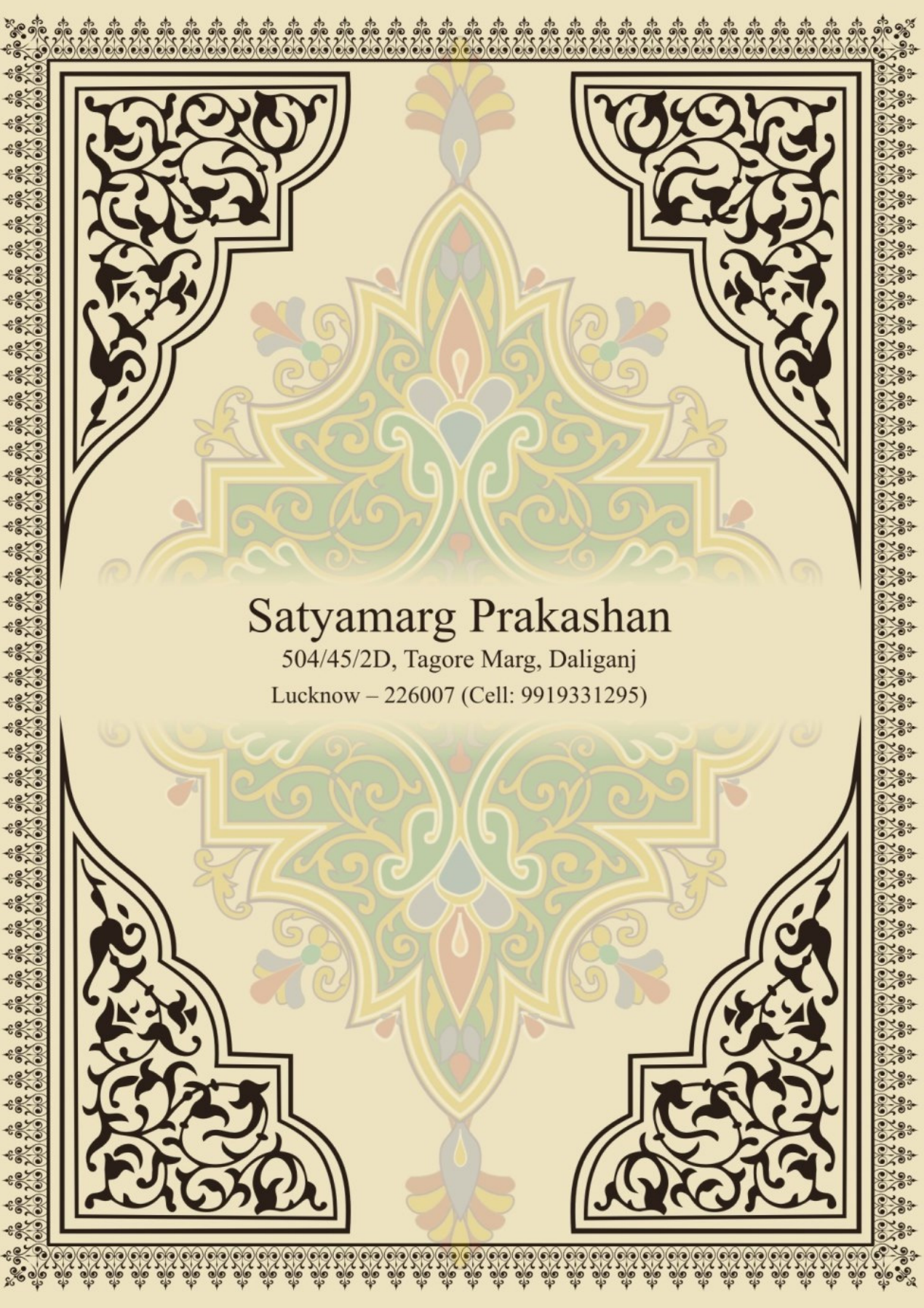
“आसान मआनी—ए—कुरआन” के नाम से उर्दू में जो तरजुमा प्रकाशित हुआ था। अब उसका हिन्दी एडिशन “पवित्र कुरआन का सरल अनुवाद” के नाम से पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है। उर्दू में जब काम शुरू हुआ था तो लेखक के बड़े भाई मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी जीवित थे। उन्होंने इसके हिन्दी अनुवाद पर ज़ोर दिया और इसकी आवश्यकता भी प्रकट की। उर्दू के साथ—साथ हिन्दी का काम भी जारी रहा। उर्दू में अल्हम्दुलिल्लाह इसके कई संस्करण आ चुके लेकिन हिन्दी एडिशन निकलने में अत्यधिक समय लग गया। इसका विशेष कारण हिन्दी में अनुवाद और फिर उसका संशोधन था। अल्लाह का शुक्र है कि यह कार्य भी सम्पन्न हुआ। अल्लाह तआला इसको भी लाभदायक बनाए और लोगों की हिदायत का साधन बनाए और कार्य में भाग लेने वाले लोगों के लिए सदक़—ए—जारिया बनाए।

अज़ीज व मुकर्रम मौलवी सैय्यद मुहम्मद जुबैर अहमद नदवी विशेषतय: धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने उर्दू से हिन्दी में अनुवाद का भार संभाला और बड़ी मेहनत व लगन से इसको पूरा किया। इनके अतिरिक्त विशेष रूप से प्रिय मौलवी मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी धन्यवाद के पात्र हैं जिनको हिन्दी का भी अच्छा ज्ञान है, उन्होंने और बिरादर—ए—अज़ीज़ मौलवी सैय्यद मुहम्मद मक्की हसनी नदवी और प्रिय मास्टर मुहम्मद सैफ़ साहब ने मिलकर इसके संशोधन का बेड़ा उठाया और इसके लिए बड़ी मेहनत की इसके अतिरिक्त सेटिंग और फिर प्रकाशन का कार्य भी इन अज़ीज़ों ने सम्पन्न किया। अल्लाह तआला भाई साहब रहमतुल्लाहि अलैह के लिए इसको सदक़—ए—जारिया बनाए और उन सभी सहयोगियों और अज़ीज़ों को भी दीनी उन्नति और दुनिया व आख़िरत की सफलता का साधन बनाए और इस गुनहगार के लिए भी इसको मग़फ़िरत व रहमत का ज़रिया बनाए और इसके वालिदैन को इस सवाब में हिस्सा अता फ़रमाए। आमीन!

बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

25 नवम्बर 2015